

HIKAYATEN AUR NASIHATEN (HINDI)



56 इस्लाही बयानात का मदनी गुलदस्ता



الرَّوْضُ الْفَائِقُ فِي الْمَوَاعِظِ وَالرَّقَائِقِ

तर्जमा बनाम

# हिकायतें और नसीहतें

मुसन्निफ़ :- मुबल्लिग़े इस्लाम अशशौख़ शोऐब हरीफ़ीश رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ

(अल-मुतवफ़्फ़ा सि. 810 हि.)

मुतर्जिमीन : मदनी उ-लमा ( शो 'बए तराजिमे कुतुब )



MAKTABATUL MADINA

421, URDU MARKET, MATYA MAHAL, JAMA MASJID

DELHI - 110006, PH : 011-23284560



SC 1286



الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

## किताब पढ़ने की दुआ

दीनी किताब या इस्लामी सबक पढ़ने से पहले जैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ यह है :

**اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ  
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ**

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाजे खोल दे और हम पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ-ज़मत और बुजुर्गी वाले ।



तालिबे गुमे  
मदीना  
बकीअ व  
मगफ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

(مُسْتَطَرَف ج ١ ص ٤٠ دار الفكر بيروت)

( अक्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये )

## क़ियामत के रोज़ हसरत

फ़रमाने मुस्तफ़ा **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** : सब से ज़ियादा हसरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म हासिल करने का मौक़अ मिला मगर उस ने हासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म हासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ उठाया लेकिन उस ने न उठाया ( या 'नी इस इल्म पर अमल न किया )

( تاريخ دمشق لابن عساکر ج ١ ص ٣٨١ دار الفكر بيروت )

## किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअत में नुमायां ख़राबी हो या सफ़हात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक्तबतुल मदीना से रुजूअ फ़रमाइये ।

## मजलिसे तशजिम (हिन्दी-गुजराती)

### दा'वते इस्लामी

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰی تَبَلٰوِیْهِ کُورْआَنُو سُنَنَتِ کِی اٰلَمْ مَیْمَرِی گُیرِ سِیْآَسِی تَهْرِیْکِ دَا'وَتِ اِیْسْلَامِی کی مَجْلِسِ "اَلْاَلْ مَدِیْنَتُْل اِیْمِیْیَا" ने येह किताब "हिक्वयतें औऱ नशीहतें" उर्दू ज़बान में पेश की है। मजलिसे तराजिम, बरोडा (हिन्दी-गुजराती) ने इस किताब को हिन्द (INDIA) की राष्ट्रिय भाषा "हिन्दी" में रस्मुल ख़त (लीपियांतर) करने की सज़ादत हासिल की है [भाषांतर नहीं बल्कि सिर्फ़ लीपियांतर या'नी ज़बान (या'नी बोली) तो उर्दू ही है जब कि लीपि (या'नी लिखाई) हिन्दी रखी है] और मक्तबतुल मदीना से शा'अ करवाया है।

इस किताब का हिन्दी रस्मुल ख़त करते हुए दर्जे ज़ैल मुआमलात को पेशे नज़र रखने की कोशिश की गई है :-

❶ कमो बेश दस<sup>(10)</sup> मराहिल सर अन्जाम दिये गए हैं, जो येह हैं :-

(1) कम्पोजिंग (2) सेटिंग (3) कम्प्यूटर तकाबुल (4) तकाबुल बिल किताब (5) सिंगल रीडिंग (6) कम्प्यूटर करेक्शन (7) करेक्शन चेंकिंग (8) फाइनल रीडिंग (9) फाइनल करेक्शन (10) फाइनल करेक्शन चेंकिंग।

❷ क़रीबुस्सौत (या'नी मिलती झुलती आवाज़ वाले) हुरूफ़ के आपसी इमतिआज़ (या'नी फ़र्क) को वाजेह करने के लिये हिन्दी के चन्द मख़सूस हुरूफ़ के नीचे डोट (.) लगाने का खुसूसी एहतियाम किया गया है जिस की तफ़्सीली मा'लूमात के लिये तशजिम चार्ट का बग़ैर मुतालआ फ़रमाएं।

❸ हिन्दी पढ़ने वालों को सहीह उर्दू तलफ़फ़ुज़ भी हिन्दी पढ़ने ही में हासिल हो जाएं इस लिये आसान मगर अस्ल उर्दू लुग़त के तलफ़फ़ुज़ के ऐन मुताबिक़ ही हिन्दी-जोडणी रखी गई है और बतौर ज़रूरत ब्रेकेट में उर्दू लफ़्ज़ हिज्जे के साथ ऐ'राब लगा कर रखा गया है। नीज़ उर्दू के मफ़तूह (ज़बर वाले) हर्फ़ को वाजेह करने के लिये हिन्दी के अक्षर (हर्फ़) के पहले डेश (-) और साकिन (जज़्म वाले) हर्फ़ को वाजेह करने के लिये हिन्दी के अक्षर के नीचे खोड़ा (؁) इस्ति'माल किया गया है। मषलन उ-लमा (عَلَمَاء) में "-ल" मफ़तूह और रहूम (رُحْم) में "हू" साकिन है।

❹ उर्दू में लफ़्ज़ के बीच में जहां कहीं ऐन साकिन (ض) आता है उस की जगह पर हिन्दी में सिंगल इन्वर्टेड कोमा (') इस्ति'माल किया गया है। जैसे : दा'वत (دَعْوَت)

❺ अरबी-फ़ारसी मतन के साथ साथ अरबी किताबों के हवालाजात भी अरबी ही रखे गए हैं जब कि "عَزَّوَجَلَّ", "صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم" और "رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْہُ" वगैरा को भी अरबी ही में रखा गया है।

इस किताब में अगर किसी जगह कमी-बेशी या ग़-लती पाएं तो मजलिसे तशजिम को (ब ज़रीअए मक्तूब, e-mail या sms) मुत्तलअ फ़रमा कर षवाब कमाइये।

त = ت	फ = ف	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
झ = جھ	ज = ج	ष = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ	थ = تھ
ढ = ڈھ	ध = دھ	ड = ڈ	द = د	ख = خ	ह = ح
ज़ = ز	ज़ = ز	ढ = ڈھ	ड = ڈ	र = ر	ज़ = ز
अ = ع	ज़ = ظ	त = ط	ज़ = ض	س = ص	ش = ش
ग = گ	ख = کھ	क = ک	क = ق	फ = ف	ग = غ
य = ی	ह = ہ	व = و	ن = ن	م = م	ل = ل
و = و	و = و	ف = ف	- = -	ی = ی	ز = ز
ا = ا	ا = ا	ا = ا	ا = ا	ا = ا	ا = ا

### उर्दू से हिन्दी तशजिम चार्ट

-: राबिता :-

मजलिसे तशजिम, मक्तबतुल मदीना  
(दा'वते इस्लामी)

मदनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद, सेकंड फ़्लोर,  
नागर वाड़ा, मेन रोड, बरोडा, गुजरात, अल हिन्द

Mo. +91 9327776311

E-mail: translation.baroda@dawateislami.net

56 इस्लामी बयानात का मदीनी गुलदस्ता

# الرَّوْضُ الْفَائِقُ فِي الْمَوَاعِظِ وَالرَّقَائِقِ

तर्जमा बनाम

## हिक्कयतें और नशीहतें

—: मुशन्निफ़ :—

मुबल्लिगे इस्लाम अशशैख़ शोऐब हरीफीश رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ

(अल मुतवफ़्फ़ा 810 हि.)

पेशाकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (शोबए तराजुमे कुतुब)

—: नाशिऱ :—

मक्तबतुल मदीना

421, उर्दू मार्केट, मटया महल, जामेअ मस्जिद,

देहली-110006 फ़ोन : 011-23284560



وَعَلَى الْوَعْدِ وَالْوَاعْدِ بِمَا حَبِيبَ اللَّهِ

الصلوة والسلام على رسول الله

नाम किताब	: الرَّوْضُ الْفَائِقُ فِي الْمَوَاعِظِ وَالرَّقَائِقِ
तर्जमा बनाम	: हिक्कयतें और नशीहतें
मुअल्लिफ़	: मुबल्लिगे इस्लाम अशशैख़ शोऐब हरीफ़ीश رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ
मुतर्जिमीन	: मदनी उ-लमा शो 'बए तराजुमे कुतुब (अल मदीनतुल इल्मिय्या)
सिने त़बाअत	: 1, रबीउल आख़िर, सि.1435 हि.
नाशिर	: मक्तबतुल मदीना, देहली-6, फ़ोन : 011-23284560
कीमत	: - - -

### तस्दीक़ नामा

तारीख़ : 27 शव्वालुल मुकर्रम सि. 1429 हि.

हवाला : 153

الحمد لله رب العالمين والصلوة والسلام على سيد المرسلين وعلى آله واصحابه اجمعين

तस्दीक़ की जाती है कि अरबी किताब

“الرَّوْضُ الْفَائِقُ فِي الْمَوَاعِظِ وَالرَّقَائِقِ” के उर्दू तर्जमे

“हिक्कयतें और नशीहतें”

( मतबूआ मक्तबतुल मदीना ) पर मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल की जानिब से नज़रे षानी की कोशिश की गई है । मजलिस ने इसे मतालिब व मफ़ाहीम के ए'तिबार से मक्दूर भर मुलाहज़ा कर लिया है, अलबत्ता कम्पोज़िंग या किताबत की ग़लतियों का ज़िम्मा मजलिस पर नहीं ।

मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल

(दा'वते इस्लामी)

27-10-2008

E - mail : [ilmia@dawateislami.net](mailto:ilmia@dawateislami.net)

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं ।

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

## याद द्वाशत

(दौराने मुतालआ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्हा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** इल्म में तरक्की होगी।)

[illegible]



اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ  
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

“वा'ज व नशीहत शुन्नते मुस्तफ़ा है” के उन्नीस हुरूफ़ की  
निस्बत से इस किताब को पढ़ने की 19 नियतें

نَبِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهِ : صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم مُسْتَفَا

या'नी मुसलमान की नियत उस के अमल से बेहतर है। (معجم كبير طبرانی ج ٦ ص ١٨٥ حديث ٥٩٤٢ بیروت)

दो मदनी फूल : (1) बिगैर अच्छी नियत के किसी भी अमले खैर का षवाब नहीं मिलता।

(2) जितनी अच्छी नियतें ज़ियादा, उतना षवाब भी ज़ियादा।

﴿1﴾ हर बार हम्द व ﴿2﴾ सलात और ﴿3﴾ तअव्वुज व ﴿4﴾ तस्मिया से आगाज़ करूंगा  
(इसी सफ़हे पर ऊपर दी हुई दो अरबी इबारात पढ़ लेने से चारों नियतों पर अमल हो जाएगा)  
﴿5﴾ रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये इस किताब का अव्वल ता आखिर मुतालआ करूंगा। ﴿6﴾ हत्तल  
वस्अ इस का बावुजू और ﴿7﴾ क़िब्ला रू मुतालआ करूंगा ﴿8﴾ कुरआनी आयात और  
﴿9﴾ अहदीषे मुबारका की ज़ियारत करूंगा ﴿19﴾ जहां जहां “**अब्बाह**” का नामे पाक आएगा  
وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم वहां मुबारक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और ﴿11﴾ जहां जहां “सरकार” का इस्मे मुबारक आएगा वहां رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ पढ़ूंगा  
पढ़ूंगा और ﴿12﴾ जहां जहां किसी सहबी का नामे मुबारक आएगा वहां رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ पढ़ूंगा  
﴿13﴾ इस किताब का मुतालआ शुरू करने से पहले इस के मोअल्लिफ़ को ईसाले षवाब करूंगा  
﴿14﴾ अपनी इस्लाह के लिये इस किताब के ज़रीए इल्म हासिल करूंगा ﴿15﴾ (अपने ज़ाती  
नुस्खे के) “याद दाश्त” वाले सफ़हे पर ज़रूरी निकात लिखूंगा ﴿16﴾ दूसरों को यह किताब पढ़ने की  
तरगीब दिलाऊंगा ﴿17,18﴾ इस हदीषे पाक “تَهَادَوْا تَحَابُّوْا” एक दुसरे को तोहफ़ा दो आपस में  
महब्बत बढ़ेगी। ﴿موطا امام مالك ج ٢ ص ٤٠٧ حديث ١٧٣١﴾ पर अमल की नियत से (एक या हस्बे तौफ़ीक़)  
येह किताब ख़रीद कर दूसरों को तोहफ़तन दूंगा ﴿19﴾ किताबत वगैरा में शरई ग़लती मिली तो  
नाशिरीन को तहरीरी तौर पर मुत्तलअ करूंगा।

(नाशिरीन वगैरा को किताबों की अग़लात् सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ  
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

## अल मदीनतुल इल्मिया

अज : शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना

अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरि रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

الحمد لله على احسانه وبقضلي رسول صلى الله تعالى عليه وسلم

तबलीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक “दा'वते इस्लामी” नेकी की दा'वत, एहयाए सुन्नत और इशाअते इल्मे शरीअत को दुन्या भर में आम करने का अज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब हुस्ने खूबी सर अन्जाम देने के लिये मुतअहद मजालिस का क़ियाम अमल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस “अल मदीनतुल इल्मिया” भी है जो दा'वते इस्लामी के उ-लमा व मुफ़्तयाने किराम كَثَرَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इल्मी, तहकीकी और इशाअती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए जैल छे शो'बे हैं :

﴿1﴾ शो'बए कुतुबे आ'ला हज़रत

﴿2﴾ शो'बए तराजुमे कुतुब

﴿3﴾ शो'बए दर्सी कुतुब

﴿4﴾ शो'बए इस्लाही कुतुब

﴿5﴾ शो'बए तफ़तीशे कुतुब

﴿6﴾ शो'बए तख़रीज

“अल मदीनतुल इल्मिया” की अव्वलीन तरजीह सरकारे आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अज़ीमुल बरकत, अज़ीमुल मर्तबत, परवानए शमए रिसालत, मुजहिदे दीनो मिल्लत, हामिये सुन्नत, माहिये बिदअत, आलिमे शरीअत, पीरे तरीक़त, बाइषे ख़ैरो बरकत, हज़रते अल्लामा मौलाना अलहाज़ अल हाफ़िज़ अल क़ारी अश्शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की गिरां माया तसानीफ़ को असरे हाज़िर के तकाज़ों के मुताबिक़ हत्तल वस्अ सहल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इल्मी, तहकीकी और इशाअती मदनी काम में हर मुमकिन तआवुन फ़रमाएं और मजलिस की तरफ़ से शाएअ होने वाली कुतुब का खुद भी मुतालआ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरगीब दिलाएं।

अब्बाह عَزَّوَجَلَّ “दा'वते इस्लामी” की तमाम मजालिस ब शुमूल “अल मदीनतुल इल्मिया” को दिन ग्यारहवीं और रात बारहवीं तरक्की अता फ़रमाए और हमारे हर अ-मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़लास से आरास्ता फ़रमा कर दोनों जहां की भलाई का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बकीअ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में जगह नसीब फ़रमाए। اٰمِيْنَ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم



रजनातुल ग़ुबारक 1425 हि.



## पहले इसे पढ़ लीजिये !

हज़रते सय्यिदुना इमाम फ़ख़्ख़ुद्दीन राज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي इरशाद फ़रमाते हैं :  
 “وَأَمَّا الْمَوْعِظَةُ فَهِيَ الْكَلَامُ الَّذِي يُفِيدُ الرّجُلَ عَمَّا لَا يُبْغِي فِي طَرِيقِ الدِّينِ،  
 ना रवा और ना मुनासिब बातों से रोके।” (تفسير كبير، سورة آل عمران، تحت الآية ١٣٨، ج ٣ ص ٣٧٠)

वा'ज व नसीहत की अहमियत व अफ़ादियत एक मुसल्लमा हकीकत है। हर दौर में इस की ज़रूरत पेश आई। इस के फ़वाइद व षमरात बे शुमार व बे हिसाब हैं। खुद **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ ने कुरआने मजीद फुरकाने हमीद का एक नाम मौइज़त या'नी नसीहत रखा है।  
 चुनान्चे, इरशादे बारी तआला है :

﴿١﴾ هَذَا بَيَانٌ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَمَوْعِظَةٌ لِّلْمُتَّقِينَ

(پ ٤، آل عمران: ١٣٨)

﴿٢﴾ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَ تَكْمُلُكُمْ مَّوْعِظَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ

وَشِفَاءٌ لِّمَا فِي الصُّدُورِ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ ۝

(پ ١١، یونس: ٥٧)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** येह लोगों को बताना और राह दिखाना और परहेज़गारों को नसीहत है।

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ लोगो ! तुम्हारे पास तुम्हारे रब्ब की तरफ़ से नसीहत आई और दिलों की सिद्दहत और हिदायत और रहमत ईमान वालों के लिये।

मुफ़स्सिरे शहीर, सदरुल अफ़ज़िल, फ़ख़रुल अमाषिल हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي इस आयते मुबारका के तहत “ख़ज़ाइनुल इरफ़ान” में इरशाद फ़रमाते हैं : “इस आयत में कुरआने करीम के आने और इस के मौइज़त (مَوْعِظَة या'नी नसीहत) व शिफ़ा व हिदायत व रहमत होने का बयान है कि येह किताब इन फ़वाइदे अज़ीमा की जामेअ है। मौइज़त के मा'ना हैं वोह चीज़ जो इन्सान को मरग़ूब की तरफ़ बुलाए, और ख़तरे से बचाए। ख़लील ने कहा कि मौइज़त नेकी की नसीहत करना है जिस से दिल में नरमी पैदा हो। (خزائن العرفان، سورة یونس، تحت الآية ٥٧)

वा'ज व नसीहत हज़रते अम्बियाए किराम व मुर्सलीने इज़ाम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की अज़ीम सुन्नत है जिस को तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरोबर **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ ने कमाल की बुलन्दियों पर पहुंचाया और क्यूं न हो कि **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ ने इन्हें जवामिडल कलिम अता फ़रमाए या'नी ऐसे कलिमात जो इबारत के लिहाज़ से मुख़्तसर और मअानी व मतालिब के लिहाज़ से जामेअ हों। बुख़ारी शरीफ़ की पहली हदीष इस पर (صحيح البخارى، الحديث ١، ص ١) (١) اِنَّمَا الْأَعْمَالُ بِالنِّيَّاتِ या'नी आ'माल का दारो मदार निय्यतों पर है। हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के वा'ज व नसीहत का अन्दाज़ इन्तिहाई दिल नशीन हुवा करता। कभी ख़ौफ़े खुदा **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ का बयान होता तो कभी रहमते इलाही **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ की बिशारतें, कभी जन्नत की खुश ख़बरियां सुनाते तो कभी दोज़ख़ से डराते और कभी साबिका उम्मतों के हालात से आगाह फ़रमाते तो कभी आने वाले फ़ित्तों की ख़बर इरशाद फ़रमाते

अल ग़रज़ कलाम हाज़िरीन की हालत और वक़्त के तकाज़े के ऐन मुताबिक़ होता। सिर्फ़ एक हदीषे पाक और इस की मुख़्तसर शर्ह मुलाहज़ा फ़रमाएं। चुनान्वे,

हज़रते सय्यिदुना इरबाज़ बिन सारिया رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि एक दिन नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने हमें नमाज़ पढ़ाई फिर अपना चेहरा मुबारक हमारी तरफ़ कर के ऐसा बयान फ़रमाया कि जिस से आसूँ बह पड़े और दिल ख़ौफ़ज़दा हो गए तो एक सहाबी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अर्ज़ किया : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ यूँ लगता है कि येह बयान, अल वदाअ कहने वाले की नसीहत की तरह है। आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ हमें किस चीज़ की वसिय्यत फ़रमाते हैं ?” आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “मैं तुम्हें **अब्बाह** غَرْوَجْل से डरने और अमीर की बात सुन कर इताअत करने की वसिय्यत करता हूँ अगर्चे वोह अमीर हब्शी गुलाम ही क्यूँ न हो। तुम में से जो शख्स जिन्दा रहेगा वोह कषीर इख़िलाफ़ात देखेगा तो (उस वक़्त) तुम पर मेरी सुन्नत और मेरे हिदायत याफ़ता, राहनुमाई करने वाले खुलफ़ा की पैरवी लाज़िम है, पस सुन्नत का दामन मज़बूती से थाम लेना इस तरह कि जैसे कोई चीज़ दाढ़ों से पकड़ते हो और खुद को नए पैदा होने वाले कामों से बचा कर रखना क्यूँकि हर नया (ख़िलाफ़े शरीअत) काम बिदअत है और हर बिदअत गुमराही है और हर गुमराही जहन्म में (ले जाने वाली) है।”

(सनن अबुदाउद, کتاب السنة, باب فی لزوم السنة, رقم الحديث ६०७, ج ६, ص २६७)

इमामे जलील, आरिफ़ बिल्लाह हज़रते सय्यिदुना अब्दुल ग़नी नाबलुसी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی ने अल वदाअ कहने वाले की तरह नसीहत फ़रमाई या'नी ऐसे शख्स की वसिय्यत की तरह जो अपनी क़ौम को छोड़ कर जा रहा हो और चाहता हो कि अपने जाने से पहले इन्हें उन बातों की वसिय्यत कर जाए कि इस के बाद उन्हें उन बातों की इन्तिहाई ज़रूरत पड़ेगी। तो वोह इन्हें वसिय्यत व नसीहत करता है, ख़ौफ़ दिलाता है और ज़ज्रो तौबीख़ करता है और अपनी मुख़ालफ़त से डराता है। और येह सिर्फ़ उन की भलाई की इन्तिहाई चाहत के सबब करता है कि कहीं वोह इस के बा'द गुमराह न हो जाएं। (मज़ीद फ़रमाते हैं) इस हदीषे पाक में येह इशारा भी है कि वाइज़ को चाहिये कि ब वक़्ते वा'ज़ अपने पास मौजूद हाज़िरीन को नसीहत करने में पूरी कोशिश सर्फ़ करे और ऐसी कोई भी फ़ाइदा मन्द बात तर्क न करे जिस के मुतअल्लिक़ जानता हो कि हाज़िरीन उस के लिये दूसरी मजलिस के मोहताज होंगे क्यूँकि दूसरी मजलिस तक जिन्दा रहने का कोई भरोसा नहीं। और वाइज़ के लिये येह जाइज़ है कि बिगैर कोई मशक्क़त उठाए हाज़िरीन की हालत के मुताबिक़ कभी कभार उन को डराए और ज़ज्रो तौबीख़ करे, अलबत्ता ! इस की आदत न बनाए जैसा कि हुज़ूर नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का मुबारक अमल था कि कभी डराते और कभी न डराते।

(الحديقة الندية شرح الطريقة المحمدية، الباب الاول فی الاعتصام بالكتاب والسنة --- الخ، ج १، ص ९०)



वा'ज व नसीहत के बेशुमार फ़वाइद हैं, इस के ज़रीए कुफ़र दौलते इस्लाम से मुशरफ़ होते, मुसलमानों के दिल खौफ़े खुदा عَزَّوَجَلَّ से लबरेज और इश्के मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सरशार होते, ईमान को ताजगी मिलती, इस्लाम की महबूबत में तरक्की आती, नेकियों का ज़ब्बा मिलता, गुनाहों से नफ़रत पैदा होती, षवाब की तलब में इज़ाफ़ा होता, गुनाह से बचने का ज़ेहन बनता और दीन सीखने सिखाने के लिये राहे खुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र का ज़ब्बा मिलता है। अल ग़रज़ वा'ज व नसीहत हर तरह से फ़ाइदा मन्द है। चुनान्वे, **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَذَكِّرْ فَإِنَّ الذِّكْرَ تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِينَ  
(प २७, अल-अन'ब: ५०)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और समझाओ कि समझाना मुसलमानों को फ़ाइदा देता है।

हज़रते सय्यिदुना इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِي ने इस की तफ़सीर में इरशाद फ़रमाया : “अगर समझाना किसी काफ़िर को शरफ़ ईमान का फ़ाइदा दे तो येह मुसलमान ही को नफ़ा देना है क्यूंकि वोह मुसलमान हो चुका है।” (तफ़सीर क़ैर, सूरत अल-अन'ब, तहत अल-अय ५०, ज १०, व १९)

फ़िर येह कि वा'ज व नसीहत के कुछ आदाब हैं अगर इन्हें मदे नज़र रख कर इस फ़रीजे को अन्जाम दिया जाए तो मक़सूद हासिल होगा वरना सारी कोशिश राइग़ां जाएगी। लिहाज़ा यहां शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्य़ास अत्तार क़ादिरि रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के फ़रामीन की रोशनी में इनफ़िरादी व इज्तिमाई वा'ज व नसीहत, अम्र बिल मा'रूफ़ और वाइज़ीन व मुबल्लिगीन के 26 आदाब बयान किये जाते हैं :

- (1)....मुबल्लिग़ बा अमल हो। क्यूंकि बा अमल की बात जल्द अषर करती है।
- (2)....उ-लमाए अहले सुन्नत की किताबों का मुतालआ करते रहें। (3)....जब किसी को नेकी की दा'वत दें (या'नी नसीहत करें) तो उस के साथ महबूबत से पेश आएँ और गुनाह करते देखें तो निहायत ही नरमी के साथ उसे मन्अ करें और बड़ी महबूबत के साथ उसे समझाएं। (4)....बेजा ज़ब्बाती न बनें। अगर झिड़क कर समझाने की कोशिश करेंगे तो उल्टा ज़िद पैदा हो जाने का अन्देशा है। लोग आप से नफ़रत करने लगेंगे। किसी को डांट कर समझाने की मिषाल यूँ समझें कि गोया जिस बरतन में कुछ डालना था उस में पहले ही से आप ने छेद कर डाला। (5)....अगर कोई ग़लती कर दे तो उसे सब के सामने हरगिज़ न टोके। इस से आप की बात बे अषर हो जाएगी और उस की दिल आज़ारी हो जाने का भी क़वी इम्कान है। लिहाज़ा मौक़अ पा कर समझाएं। हज़रते सय्यिदुना अबू दर्दा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है : “जिस ने अपने भाई को सब के सामने नसीहत की उस ने उस को ज़लील कर दिया और जिस ने तन्हाई में नसीहत की उस ने उस को मुज़य्यन (आरास्ता) कर दिया। (६९) (تنبيه الغافلين، باب الامر بالمعروف والنهي عن المنكر، ص ६९) या'नी ज़ाहिर है उसे अकेले में महबूबत के साथ समझाएं तो क़वी उम्मीद है कि वोह अपनी ग़लती की इस्लाह कर लेगा। और यूँ वोह इस्लाह के साथ मुज़य्यन हो जाएगा। (6)....वालिदैन अपनी औलाद को, शौहर अपनी बीवी को, और उस्ताद अपने शागिर्द को ज़रूरतन सख़्ती से भी समझाएं तो हरज नहीं। (7)....कोई बुराई

में मस्रूफ है, गुनाह कर रहा है और हमारा गुमान ग़ालिब है कि अगर हम समझाएंगे तो बुराई से बाज़ आ जाएगा। ऐसी सूरत में **أَمْرٌ بِالْمَعْرُوفِ وَنَهْيٌ عَنِ الْمُنْكَرِ** वाजिब है। अगर हम ने येह न किया तो गुनाहगार होंगे। (बहारे शरीअत हिस्सा 16, स. 259) (8)....अम्र बिल मा'रूफ करने वाले मुबल्लिग़ के पास इल्म होना ज़रूरी है वरना किस तरह समझाएगा? इस लिये इस्लामी किताबों का मुतालआ करना ज़रूरी है। (अवाम मुबल्लिगीन) जितना किताब में पढ़ें या उलमाए हक्का से सुनें वोही बयान करें। अपनी तरफ़ से आयात व अहादीष की तफ़्सीर व तशरीह न करें। (9)....मुबल्लिग़ की निय्यत सिर्फ़ रिज़ाए इलाही **عَزَّوَجَلَّ** का हुसूल और इस्लाम की सरबुलन्दी हो। (10)....मुबल्लिग़ का बा अख़्लाक़ और मिलनसार और बाकिर्दार होना बेहद ज़रूरी है। (11)....मुबल्लिग़ साबिर और बुर्दबार भी हो, हो सकता है जिस को समझाया जा रहा है वोह बिफर जाए या गाली वगैरा बक दे। मुबल्लिग़ के लिये येह मौक़अ इम्तिहान का होता है। अगर दामने सब्र हाथ से जाता रहा और आप ने भी खुदा न ख़्वास्ता गुस्से का मुज़ाहरा किया तो आप बाज़ी हार गए। (12)....मुबल्लिग़ के मिज़ाज में बे जा गुस्सा हो ही ना, नरमी ही नरमी होनी चाहिये। (13)....अवाम (या'नी जो आलिम न हो) हरगिज़ मशहूर व मा'रूफ़ उलमाए हक्का और मुफ़्तियाने किराम की टोह में न रहें। उन की ग़लतियां न निकालें। उन को **أَمْرٌ بِالْمَعْرُوفِ وَنَهْيٌ عَنِ الْمُنْكَرِ** न करें कियेह बे अदबी है हो सकता है कि वोह हज़रात किसी ख़ास मस्लेहत के तहत ऐसा कर रहे हों और अवाम की नज़र वहां तक न पहुंचे।

(الفتاوى الهندية، كتاب الكراهة، الباب السابع عشر في الغناء.....الخ، ج 5، ص 303)

(14)....किसी को गुनाह करता देखें और **مَعَاذَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ** खुद भी वोही गुनाह करते हैं फिर भी उसे गुनाह से मन्अ करें। क्यूंकि आप के ज़िम्मे तो दो चीज़ें वाजिब हैं : (1) बुरे काम से बचना और (2) दूसरे को बुरे काम से मन्अ करना। अगर एक वाजिब के तारिक हैं तो दूसरे के तारिक क्यूं बनें?

(الفتاوى الهندية، كتاب الكراهة، الباب السابع عشر في الغناء.....الخ، ج 5، ص 303) सरकारे मदीना **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** सरकारी एजिन्ताब करते रहें और अपनी ज़िन्दगी सादगी के साथ गुज़ारें। (17)....खुशी, ग़मी और बीमारी वगैरा के मवाक़ेअ पर लोगों के साथ हमदर्दानी रक्क्या इख़्तियार करें। (18)....लोगों को उन की नफ़िसयात के मुताबिक़ महबूत भरे लहजे में समझाएं। (19)....दक़ीक़ मज़ामीन और पेचीदा मसाइल न छेड़ें। **اَللّٰهُمَّ** (عَزَّوَجَلَّ) का फ़रमाने आलीशान है :

“يَلْفُوْا عَنِّيْ وَلَوْ اَنِيْ” पहुंचा दो मेरी तरफ़ से अगर्चे एक ही आयत हो। (مشکوّة المصابيح، كتاب العلم، الحديث 198، ج 1، ص 59) (15)....जो कुछ दूसरों को कहें सब से पहले अपने आप को उस का मुखातब बनाएं। (16)....ऐश कोशियों से इज्तिनाब करते रहें और अपनी ज़िन्दगी सादगी के साथ गुज़ारें। (17)....खुशी, ग़मी और बीमारी वगैरा के मवाक़ेअ पर लोगों के साथ हमदर्दानी रक्क्या इख़्तियार करें। (18)....लोगों को उन की नफ़िसयात के मुताबिक़ महबूत भरे लहजे में समझाएं। (19)....दक़ीक़ मज़ामीन और पेचीदा मसाइल न छेड़ें। **اَللّٰهُمَّ** (عَزَّوَجَلَّ) का फ़रमाने आलीशान है :

**تَرْजُمَةُ كَنْزُ الْجُلُ إِيمَان :** اذْعُ إِلَى سَبِيلِ رَبِّكَ بِالْحُكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ (ب 14، النحل: 120) : अपने रब्ब की राह की तरफ़ बुलाओ पक्की तदबीर और अच्छी नसीहत से।” (और) मन्कूल है :

**تَرْजُمَا :** लोगों से उन की अक्लों के मुताबिक़ कलाम करो।” (और) हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** फ़रमाते हैं : “मैं ने सरकारे मदीना **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** से कुछ बातें ऐसी भी सुनी हैं कि अगर तुम्हारे सामने ज़ाहिर कर दूं तो तुम मेरा गला काट दो।”

(صحيح البخارى، كتاب العلم، باب حفظ العلم، الحديث: 120، ص 13) (20)....नेकी की दा'वत देने की राह में



पेश आने वाली मुश्किलात, तकालीफ़ और आजमाइशों का ख़न्दा पेशानी से इस्तिफ़ाल करें और सब्रो इस्तिफ़ामत का पहाड़ बन जाएं। (चुनान्वे) ताजदारे मदीना صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : “जिस पर मुसीबत आए और सब्र करना दुश्वार मा'लूम हो वोह मेरे मसाइब को याद कर ले।” (تنبيه الغافلين، باب الصبر على البلاء والشدة ص ۱۳۸) ज़ाहिर है जब सरकारे मदीना صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का राहे खुदा عَزَّوَجَلَّ में तकालीफ़ उठाना याद करेंगे तो हमें अपनी तकालीफ़ इस के आगे हेच नज़र आएंगी। (21)....इहयाए सुन्नत की खातिर हर क़िस्म की कुरबानी देने के लिये अपने आप को तय्यार रखें। (22)....सुन्नतें सीखने और सिखाने की पाकीज़ा आरजू और इस राह में इख़लास व ईषार का ज़ब्बा अपने अन्दर बेदार रखें (23)....आमी मुबल्लिगीन को चाहिये कि वोह बहूष व मबाहूषा (जदलो मुनाज़रा) में न पड़ें बल्कि ऐसे मौक़अ पर उ-लमाए हक्का की तरफ़ रुजूअ करें कि येह इन्हीं हज़रात का शो'बा है। अलबत्ता ! अपने अक़ाइद व आ'माल में पुख़्ता ज़रूर रहें। (24)....अपने बयान में हमेशा इस अम्र का एहतिमाम रखें कि **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ की बे पायां रहूमत से उम्मीद की कैफ़ियत भी तारी रहे और क़हर व ग़ज़ब की भी। (25)....अपने बाल बच्चों की इस्लाह भी करते रहें। (चुनान्वे) **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ कुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाता है : **يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قُوا أَنْفُسَكُمْ وَأَهْلِيكُمْ نَارًا (پ ۲۸، التحريم: ۶)** “ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान** : ऐ ईमान वालो ! अपनी जानों और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ।” (26)....वालिदैन् या बड़े बहन भाई अगर ख़ता के मुर्तकिब हों तो हरगिज़ उन पर शिद्दत न करें, निहायत ही अज़िज़ी और नरमी के साथ इस्लाह की दरख़्वास्त करें। उन से उलझा न करें।

हुज़ूर सय्यिदे आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के बा'द खुलफ़ाए राशिदीन, सहाबए किराम, औलियाए उज़्ज़ाम और उ-लमाए जुल एहतिराम رَضُوا اللَّهَ عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ ने भी वा'ज़ व नसीहत के अमल को बरक़रार रखा। जिन की मुसलसल कोशिशों से चमने इस्लाम की बहारें अब भी काइम हैं। चुनान्वे,

उस्ताजुल उ-लमा हज़रते अल्लामा मौलाना मुहम्मद मन्शा ताबिश कुसूरी مَدَّ ظِلُّهُ الْعَالِي फ़रमाते हैं : “दुन्याए इस्लाम में बड़े बड़े अज़ीमुल बयान मुक़र्ररीन व वाइज़ीन और खुतबा ने अपनी फ़साहतो बलागत और खुदादाद ताषीर से यगानों और बेगानों को इस अन्दाज़ से मुतअष्विर किया कि वोह इस्लाम और बानिये इस्लाम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के लिये हमेशा हमेशा के लिये शैदाई व फ़िदाई बने। जिन्हें तारीख़ ने ख़ूब ख़ूब पज़ीराई बख़्शी और सफ़हाते दहर में उन का नाम ज़िन्दा व पाइन्दा हो गया। मगर लिसानी मवाइज़ व तब्तीग़ का दाइरा, वाइज़ व ख़तीब और मुक़र्रर व मुबल्लिग़ की हयाते ज़ाहिरी तक महदूद रहता है। जब आंख बन्द हुई उन के पन्द व नसाएह का सिल्सिला मुन्क़तेअ हो गया। इस के बर अक्स उन मुबल्लिगीन व वाइज़ीन, खुतबा और मुक़र्ररीन के कारनामे हमेशा ज़िन्दा रहते हैं जिन्होंने ने अपने मवाइज़े हसना के लिये कलम को वसीला बनाया और इस सिल्सिले में निहायत नुक्ता रस, ईमान अफ़रोज़, रूह परवर और दिलकश खुतबात व मवाइज़ को किताबों की सूरत दी। तसानीफ़ को मन्सए शुहूद पर जल्वागर किया और न सिर्फ़ उन की

हसीन हयात से लोगों ने इस्तिफ़ादा किया बल्कि सदियां गुज़र गईं, ज़माने बीत गए, मगर उन की क़लमी तब्तीग़ से अहले इल्मो अमल, खासो आम सभी मुस्तफ़ीद होते आ रहे हैं।" (مقدمه دُرة الناصحين (مترجم)، ج ۱، ص ۳)

ज़ेरे नज़र किताब "हिक्कायतें और नसीहतें" अपने ज़माने के मुस्ताज़ वाइज़ व मुबल्लिग़े इस्लाम हज़रते सय्यिदुना शोएब हरीफ़ीश رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ (मुतवफ़्फ़ा : हि. 810) की तसनीफ़ "الرُّؤُوسُ الْفَائِقُ فِي الْمَوَاعِظِ وَالرَّقَائِقِ" का उर्दू तर्जमा है। खैरुद्दीन ज़रकली की "अल आ'लाम" में हज़रते मुसनिफ़ عَلَيْهِ الرِّحْمَةُ के मुतअल्लिक सिर्फ़ इतना ज़िक्र मिलता है : नाम : शोएब बिन अब्दुल्लाह बिन सा'द बिन अब्दुल काफ़ी। कुन्यत : अबू मदन। उर्फ़ : हरीफ़ीश। काहिरा मिस्र के सूफ़िया से थे, मक्काए मुकर्रमा (رَادَا اللهُ شَرْفًا وَتَعْظِيمًا) में रिहाइश इख़्तियार फ़रमाई। उन्होंने एक किताब "مَنْ ذَاقَ طَعْمَ شَرَابِ الْقَوْمِ يَذْرِوهُ" और औकाफ़े बग़दाद के मुतअल्लिक क़सीदा "الرُّؤُوسُ الْفَائِقُ فِي الْمَوَاعِظِ وَالرَّقَائِقِ" की शर्ह लिखी। हि. 810 में विसाल हुवा। (الاعلام للزركلي، ج ۳، ص ۱۶۷) और "मो'जमुल मुअल्लिफ़ीन" में इस तरह है : शोएब बिन सा'द बिन अब्दुल काफ़ी मिस्री मक्की हरीफ़ीशी सूफ़ी, उन्होंने एक किताब "الرُّؤُوسَةُ النَّصْرَةُ فِي خَصَائِصِ الْعَشْرَةِ" तसनीफ़ फ़रमाई और "الرُّؤُوسُ الْفَائِقُ فِي الْمَوَاعِظِ وَالرَّقَائِقِ" का ततिम्मा लिखा। हि. 801 में इन्तिक़ाल फ़रमाया।<sup>(1)</sup> (मो'जमुल मुअल्लिफ़ीन जि. 1, स. 815)

हज़रते सय्यिदुना शोएब हरीफ़ीश عَلَيْهِ الرِّحْمَةُ की वा'ज़ व नसीहत पर मुश्तमिल पेशे नज़र किताब "الرُّؤُوسُ الْفَائِقُ" ज़ाहिर की तह़ीर और बातिन की सफ़ाई के लिये इन्तिहाई अहम है। येह नादिर किताब 56 इस्लाही बयानात पर मुश्तमिल है। जिन में आयाते कुरआनिय्या, अह्दादीषे मुबारका और सहाबए किराम व औलियाए उज़्ज़ाम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के दिलों को जिला देने वाले फ़रामीने मुबारका बयान किये गए हैं। नीज़ जा बजा हज़रते अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام, सहाबए किराम, अइम्माए अरबआ और औलियाए उज़्ज़ाम عَلَيْهِمُ الرِّحْمَةُ وَالرِّضْوَان के फ़ज़ाइल और उन के ख़ौफ़े खुदा عَزَّ وَجَلَّ से भरपूर और नसीहत आमेज़ वाकिआत व हिक्कायत मौजूद हैं। मषलन : हज़रते सय्यिदुना अय्यूब رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ का इम्तिहान, हज़रते सय्यिदुना क़तादा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की नसीहत, तज़किए इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ, हज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِي के वाकिआत वगैरा और येह बात दुरुस्त है कि जिस तरह अब्बास عَزَّ وَجَلَّ के मुकर्रब बन्दों की ज़ियारत और उन की ख़िदमत में हाज़िरी इन्सान की ज़ाहिरी व बातिनी इस्लाह के लिये इक्सीर का दरजा रखती है इसी तरह इन बुजुर्गों के अक्वाल व अहवाल को पढ़ना और सुनना भी इन्तिहाई मुफ़ीद है। नीज़ इन नुफ़ूसे कुदसिय्या का ज़िक्रे खैर तो इबादत और कफ़फ़ारए सय्यिआत का दरजा रखता है। जैसा कि,

हज़रते सय्यिदुना मुआज़ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़लाक صَلَّی اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने जीशान है : "अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام का ज़िक्र इबादत, सालिहीन (औलियाए किराम) का ज़िक्र (गुनाहों का) कफ़फ़ारा और मौत का ज़िक्र सदका है और क़ब्र का ज़िक्र तुम्हें जन्नत से करीब कर देगा।"

(الجامع الصغير، الحديث: ۴۳۳۱، ص ۲۶۴)

“मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिया” ने इस किताब की इन्ही खूबियों को मद्दे नज़र रखते हुए “अपनी और सारी दुनिया के लोगों की इस्लाह की कोशिश” के मुकद्दस जज़्बे के तहत इस का इन्तिखाब किया और शो 'बए तराजुमे कुतुब के मदनी उ-लमा كَثَرَهُمُ اللَّهُ تَعَالَى को इस के उर्दू तर्जमे का काम सौंपा। **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** ! इन मदनी उ-लमा كَثَرَهُمُ اللَّهُ تَعَالَى की दिन रात मुसलसल कोशिशों और अन्थक काविशों से इस का उर्दू तर्जमा बनाम “हिक्कायतें और नसीहतें” आप के हाथों में है। इस में जो भी खूबियां हैं वोह यकीनन **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** और उस के प्यारे हबीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अताओं, औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللَّهُ تَعَالَى की इनायतों और शैखे तरीकत, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना **मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरि** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की पुर खुलूस दुआओं का नतीजा है और जो खामियां हैं उन में हमारी कोताह फ़हमी का दख़ल है।

मुसन्निफ़े किताब हज़रते सय्यिदुना शोऐब हरीफ़ीश رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने चूंकि इस किताब को बयानात (या'नी तक़रीरों) की शक़ल में तरतीब दिया था। लिहाज़ा इन का अन्दाज़ बर क़रार रखने की पूरी कोशिश की गई है। येह किताब उ-लमाए किराम كَثَرَهُمُ اللَّهُ تَعَالَى वाइजीन, खुतबा और आम मुबल्लिगीन इस्लामी भाइयों के लिये बहुत मुआविन षाबित होगी। तर्जमे के लिये “**دَارُ اَحْيَاءِ التُّرَاثِ الْعَرَبِيِّ**” (बैरूत, लबनान) का नुस्खा इस्ति'माल किया गया है।

तर्जमा करते हुए दर्जे ज़ैल उमूर का ख़ास ख़याल रखा गया है :

★....सलीस और बा मुहावरा तर्जमा किया गया है ताकि कम पढ़े लिखे इस्लामी भाई भी अच्छी तरह समझ सकें।

★....आयाते मुबारका का तर्जमा आ'ला हज़रत इमामे अहले सुन्नत अश्शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के तर्जमाए कुरआन कन्जुल ईमान से लिया गया है।

★....बयान कर्दा अहदीषे मुबारका की तख़रीज का हत्तल मक़दूर एहतिमाम किया गया है। बा'ज तख़रीज इन्तिहाई कोशिश के बा वुजूद न मिल सकी।

★....बा'ज मक़ामात पर मुफ़ीद हवाशी का एहतिमाम किया गया है, बिलखुसूस “**ख़ज़ाइनुल इरफ़ान**” से कई आयाते मुबारका की तफ़्सीर हाशिय्या में लिख दी गई है।

★....कई मक़ामात पर मुश्किल अल्फ़ाज़ के मआनी ब्रेकेट में लिख दिये गए हैं। नीज़ कई अल्फ़ाज़ पर ए'राब भी लगाए गए हैं।

★....अलामते तरकीम (रुमूजे अवकाफ़) का भी ख़याल रखा गया है।

**اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की बारगाह में दुआ है कि हमें “अपनी और सारी दुनिया के लोगों की इस्लाह की कोशिश” करने के लिये मदनी इन्आमात पर अमल और मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और दा'वते इस्लामी की तमाम मजालिस ब शुमूल “मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिया” को दिन पच्चीसवीं रात छब्बीसवीं तरक्की अता फ़रमाए। اٰمِيْنُ بِحَبْلِ النَّبِيِّ الْاَوْفِيِّنَ صَلَّ اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ

शो 'बए तराजुमे कुतुब ( मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिया )



जिमनी फेहरिस्त

मजामीन	क्र.	मजामीन	क्र.	मजामीन	क्र.
बयान 1 : दुरुदे पाक और बिस्मिल्लाह शरीफ के फज़ाइल	20	बयान 18 : कियामत की सज़ियां	201	बयान 38 : तज़किए इमाम शाफ़ेई	394
बयान 2 : इल्म का बयान	31	बयान 19 : मनाकिबे सालिहीन	208	बयान 39 : तज़किए इमाम मालिक	409
बयान 3 : मौत और ज़ियारते कुबूर	49	बयान 20 : खौफ़े महशर का बयान	216	बयान 40 : तज़किए इमाम अहमद बिन हम्बल	427
बयान 4 : फ़ज़ाइले औलिया	68	बयान 21 : माल की मजम्मत	224	बयान 41 : चन्द हिक्कायात	434
बयान 5 : फ़ैज़ाने रमज़ान	77	बयान 22 : नफ़ली सदके का बयान	233	बयान 42 : आशूरा के फ़ज़ाइल	449
बयान 6 : रुख़सते माहे रमज़ान	93	बयान 23 : स-दक़ए फ़ित्र के फ़ज़ाइल	241	बयान 43 : मीलादे मुस्तफ़ा	463
बयान 7 : शबे क़द्र के फ़ज़ाइल	100	बयान 24 : मे'राजुन्नबी	250	बयान 44 : अल्लाह वालों की बातें	475
बयान 8 : हाजियों के फ़ज़ाइल और उन पर इन्ज़ाम का बयान	108	बयान 25 : सालिहीन की हिक्कायात	263	बयान 45 : महबूबते इलाही का बयान	484
बयान 9 : ख़ानए का'बा की शानें	120	बयान 26 : सालिहीन के फ़ज़ाइल	274	बयान 46 : विसाले मुस्तफ़ा	501
बयान 10 : खौफ़े खुदा में रोने वालों का बयान	129	बयान 27 : नेक औरतों का ज़िक्र	282	बयान 47 : अनोखे वाकिआत	516
बयान 11 : फ़ुकराए किराम के फ़ज़ाइल	138	बयान 28 : सूर फूंकने का बयान	293	बयान 48 : निकाहे अली व फ़ातिमा	531
बयान 12 : बा'ज सलफ़े सालिहीन के वाकिआत	144	बयान 29 : नेकों के वाकिआत	304	बयान 49 : मौत और इस में ग़ौरो फ़िक्र का बयान	544
बयान 13 : जहन्नम का बयान	150	बयान 30 : औलियाए किराम के अहूवाले ज़िन्दगी	310	बयान 50 : आली रुत्बा ख़वातीन	558
बयान 14 : अम्बियाए किराम व औलिया की मुबारक ज़िन्दगियां	165	बयान 31 : कुर्बे हकीकी का बयान	316	बयान 51 : ईदों की ईद	569
बयान 15 : औलियाए किराम के औसाफ़	176	बयान 32 : तज़किए इमामे आ'जम अबू हनीफ़ा	324	बयान 52 : ज़ियारते रौज़ए रसूल	586
बयान 16 : मौत की सज़ियां	182	बयान 33 : करामाते औलिया	337	बयान 53 : मनाकिबे खुलफ़ाए राशिदीन	596
बयान 17 : करामाते औलिया का धुबूत	194	बयान 34 : तज़किए मा'रुफ़ करखी	345	बयान 54 : सलातो सलाम का बयान	608
		बयान 35 : नेक लोगों की निराली शानें	359	बयान 55 : कहने के फ़ज़ाइल व कमालात	620
		बयान 36 : मुबारक "दरयाए नील" का जिक्रे ख़ैर	371	बयान 56 : रहूमेते इलाही की वुस्हत का बयान	629
		बयान 37 : फ़ज़ाइले सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़	378	माख़ज़ो मराजेअ इल्मिया कुतुब	644
					648

**पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इलिमिया (दा' वते इस्लामी)**

लैलतुल क़द कहने की वजह	100	एक महबूब बन्दी के तुफ़ैल सब का हज़ क़बूल हो गया	119	औलियाए क़िराम के लिये ज़मीन सिमट जाती है	147
क्या लैलतुल क़द अब भी बाक़ी है ?	101	बयान 9 : ख़ानए क़ब' बाक़ी शानें	120	बयान 13 : जहन्नम क़ब बयान	150
कौन सी रात लैलतुल क़द है ?	101	हम्दे बारी तआला	120	हम्दे बारी तआला	150
शबे क़द हज़ार महीनों से बेहतर है	101	अतीक़ कहने की वजह	125	जहन्नम तारीक़ रात की तरह सियाह है	152
आख़िरी सात रातों में तलाश करो	102	ज़बान और आंखों वाला बादल	126	जहन्नम क़ब आग़ दुन्या क़ब आग़ से सत्तर गुना तेज़ है	152
शबे क़द की अलामात	103	ख़ानए क़ब' बा शरीफ़ शफ़अत फ़रमाएगा	127	जहन्नम की सत्तर हज़ार लगामें होंगी	152
लैलतुल क़द की दुआ	103	बयान 10 : ख़त्रैफ़े शुबा में रोने वालों क़ब		समाअते मुस्तफ़ि صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم	153
सत्ताईसवीं रात शबे क़द है	103	बयान	129	जहन्नमी अहले जन्नत से खाना और पानी मांगेंगे	153
शबे क़द के नूर के मुतअल्लिक़ मुख़ल्लिफ़ अक़वाल	104	हम्दे बारी तआला	129	जहन्नम में काफ़िर की हालत	154
शबे क़द फ़िरिश्ते झन्डे ले कर उतरते हैं	105	बयान 11 : फ़ुक़राए क़िराम के फ़ज़ाइल		जहन्नमियों का गोश्त झड़ जाएगा	155
बयान 8 : हाजियों के फ़ज़ाइल और		फ़ज़ाइल	138	जहन्नमियों की पुक़र का जवाब	156
इज़ पर इन्क़़ाज़ क़ब बयान	108	हम्दे बारी तआला	138	हज़रते सय्यिदुना क़तादा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْہُ की नसीहत	157
हम्दे बारी तआला	108	फ़क़्र क्या है ?	139	ख़च्चर जैसे बिच्छू और उंट जैसे सांप	157
हज़ की फ़ज़ीलत	109	अम्बियाए क़िराम عَلَيْهِمُ السَّلَام और पुक़रा की		पुर असरार आ' राबी	159
यौमे अरफ़ जहन्नम से आज़ादी का दिन	109	तख़लीक़ जन्नत की मिट्टी से हुई	139	फ़कीर के औसाफ़	162
फ़ुज़ूल सुवालात से बचो	109	उ-लमा हुज़ूर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के वारिष		जन्नत का ख़ज़ाना	164
हज़ व उमरह इक़ठ्ठा करने की फ़ज़ीलत	110	और फ़ुक़रा दोस्त हैं	140	छे कामों में जल्दी करो	164
हज़्जे मबरूर की ता'रीफ़	110	फ़कीर, ग़नी के लिये तबीब, धोबी, क़ासिद और		बयान 14 : अम्बियाए क़िराम عَلَيْهِمُ السَّلَام	
वालिदैन की तरफ़ से हज़ करो	111	निगहबान है	140	औलिया की मुबारक ज़िन्दगियां	165
हज़ और उमरह औरतों का जिहाद है	111	अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ का वली क़ब से गाइब हो गया	141	हम्दे बारी तआला	165
इल्मे ग़ैबे मुस्तफ़ि صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم	111	नौजवान बुजुर्ग	141	हज़रते सय्यिदुना अय्यूब عَلَيْهِ السَّلَام का इम्तिहान	166
हज़ के दो हुरूफ़ से मुराद	114	हंसने वाला मुख़्लिस नौजवान	142	हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام	
किन लोगों की दुआ रद्द नहीं होती ?	114	एक नौजवान की मुनाजात	142	का परन्दों को ज़िन्दा करना	168
नेकियां कमाने और गुनाह धोने का नुस्खा	115	बयान 12 : बा' ज़ शलफ़े शालिहीन		मक़मे फ़ना	170
अफ़्शाले हज़ की हिक़मतें	115	हम्दे बारी तआला	144	फ़रमांबरदार बेटे की मौत से मां भी फ़ौत हो गई	171
बुद्धूफ़ अरफ़ात करने वालों की माफ़िज़त हो गई	118	हम्दे बारी तआला	144	इस्लीस को खुश करने वाले काम	173
छे के सदके छे लाख का हज़ क़बूल कर लिया गया	118	पूरा शहर मुसलमान हो गया	145	पुनरा को नसीहत	173



फ़कीर के तीन अवसाफ़	173	दाइरे से पानी रवां हो गया !	196	मीज़ान पर मुक़र्र फ़िरिश्ते का ए'लान	219
तमाम मख़्लूक की नेकियों के बराबर नेकियां	174	दरिन्दा भी ताबेअ हो गया !	197	औलिया का क़फ़िला और समन्दर की मौंजे	220
फ़क़ में चार चीज़ों का होना ज़रूरी है	174	फ़ुक़रा पर सदक़ा न करने की सज़ा	197	हज़रते सय्यिदुना सर्री सक्ती का विसाल	221
एक क़मीस दुखूले जन्त का सबब बनी	174	मय्यित ने हाथ पकड़ लिया !	197	नफ़स के मुहासबे का अनाखा तरीक़ा	221
फ़िरिश्ते फ़ुक़रा के हाथों पर पानी डालते हैं	175	दरख़ा बोल उठा !	198	बयान 21 : माल की मज़मूत	224
बयान 15 : औलियाए क़िशाम के		ऊंट जिन्दा हो गया !	198	हम्दे बारी तआला	224
औसाफ़	176	हज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र का खाना खिलाना	199	बयान 22 : नफ़ली शब्दों का बयान	233
हम्दे बारी तआला	176	वली की हिफ़ज़त का खुदाई इन्तिज़ाम	199	सदक़े के फ़ज़ाइल पर आयाते मुबारका	233
अल्लाह वालों के आ'माल	176	फ़रमां बरदार ग़धा	199	सदक़े के फ़ज़ाइल पर अहादीषे तय्यिबा	233
नाफ़रमान अब्बाह وعمل का वली बन गया	177	रैत सत्तू बन गई !	199	इम्तिहान में कामयाब होने वाला नौजवान	236
ज़मीन से दीनार निकल आए	179	बयान 18 : क़ियामत की शरिहतें	201	खुदा तरस औरत को डूबे हुवे बच्चे कैसे मिले ?	237
बयान 16 : मौत की शरिहतें	182	हम्दे बारी तआला	201	अहले हक़ का बे मिपाल गुराह	239
हम्दे बारी तआला	182	भेड़ियों और बकरियों में सुल्ह	204	दो रोटियां सदक़ा करने की बरक़त	239
क़ब्र जन्त का बाग़ या जहन्म का ग़दा है	183	क़ब्र की दिल हिला देने वाली कहानी	206	बयान 23 : शब्दों फ़िर के फ़ज़ाइल	241
सक्राते मौत	184	बयान 19 : मनाक़िबे शालिहीन	208	हम्दे बारी तआला	241
मौत की कड़वाहट	184	हम्दे बारी तआला	208	सदक़ा फ़िन्न नमाज़े ईद से पहले अदा करना	242
आ'माल लिखने वाले फ़िरिश्तों की ज़ियारत	185	वसीलए औलिया ज़रीअए शिफ़ा	208	इंदुल फ़िन्न के मुस्तहब्बात	243
मोमिन और काफ़िर की मौत में फ़रक़	185	मुतवक्कलीन का हल	209	ईद में रोज़े महशर की याद है	244
मौत के बा'द भी सत्तर हौलनाकियां हैं	188	एक आबिद की आरिफ़ाना गुफ़्तू	211	आंखों का कुफ़ले मदीना	245
बयान 17 : क़रामाते औलिया का धुबूत	194	समन्दर पर चलने वाला शख़्स	211	इन्आमो इकराम की रात	248
हम्दे बारी तआला	194	सियाहफ़म मुतकी गुलाम का तवक्कुल	213	बयान 24 : में शजुन्नबी عليه و آله و سلم	250
गाय बोल उठी !	195	जब दिल भर जाए तो ज़िक्क़ुल्लाह ज़बान पर .....	214	हम्दे बारी तआला	250
ज़मीन सोना बन गई !	195	बयान 20 : औफ़ैमहशर का बयान	216	बयान 25 : शालिहीन की हक़ायत	263
वादी के पथर जवाहिरात बन गए !	195	हम्दे बारी तआला	216	व वक्किआत	263
सब से बड़ी क़रामत	195	क़ियामत का मन्ज़र	218	घर में क़ब्र	263
मग़फ़िरत का परवाना	196	अज़ाबे जहन्म की कैफ़ियत	218	ख़ौफ़ खुदा وعمل से रोने वाला मदीनी मुन्ना	264
कीकर के दरख़ से खजूरें	196	हौजे कौषर से मायूस लौटने वाले	219	अब्बाह के नाम पर वक्फ़ कर के वापस न लो	264

वासिल बिल्लाह नौजवान	265	मिप्पिल्यत से पाक जात	296	जोहदो तक्वए इमामे आ'ज़म	327
एक राहब का कबूले इस्लाम	265	एक मुरीद की तौबा	302	आप का इल्मी मक़ाम	328
मरीजे इश्के इलाही عَزَّوَجَلَّ	268	रिक्कत अंगेज़ दुआ	302	खारिजी गुराह ताइब हो गया	329
वज़ारत क्यूं तर्क की ?	269	बयान 29 : नेक्वें के वाक्किझात	304	मजालिसे उ-लमा का अदब	331
दुन्या व आखिरत की पसन्दीदा चीज़ें	269	हम्दे बारी तआला	304	क्रियामे हक के लिये कोशिशें	331
शराब खाना और सदाए हक	270	गैबी अशरफियां	305	जूदो करमे इमामे आ'ज़म	332
बयान 26 : सालिहीन के फज़ाइल	274	चोर वली बन गया	305	कपड़ों की कीमत सदक कर दी	333
हम्दे बारी तआला	274	अस्माए हुस्ना का वसीला क्रम आ गया	307	विसाले इमामे आ'ज़म	335
क़मयाब नौमुस्लिम	275	रिक्कत अंगेज़ दुआ	308	इमामे आ'ज़म को बख़्श दिया गया	336
गुदड़ी में ला'ल	276	बयान 30 : औलियाए क़िराम के अहवाल		बयान 33 : क़रामाते औलिया	337
एक जन्नती नौजवान	277	ज़िक्की	310	हम्दे बारी तआला	337
सल्तनत दे कर दुखेशी खरीदी	279	हम्दे बारी तआला	310	तज़किए इदरीस बिन अबी खौला	338
बयान 27 : नेक औरतों का ज़िक्र	282	लकड़ी का बुरादा मैदा बन गया	311	हज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी और काले	
हम्दे बारी तआला	282	दिल होश में न रहा	312	रंग का आदमी	339
तज़किए हज़रते सय्यिदतुना राबिआ बसरिया	283	राहियों का कबूले इस्लाम	313	मक़ामे मा'रुफ़	340
दीदारे इलाही عَزَّوَجَلَّ की तालिबा	284	रिक्कत अंगेज़ दुआ	314	सय्यिदुना फुज़ैल बिन इयाज़ की तौबा	340
हज़रते सय्यिदतुना राबिआ बसरिया के		बयान 31 : कुर्बे हक्कीकी का बयान	316	राज़ी ब रिज़ाए इलाही रहने वाला आबिद	341
चार सुवालात	285	हम्दे बारी तआला	316	बयान 34 : तज़किए मा'रुफ़ क़स्री	345
सितार बजाने वाली की तौबा	286	सियाहफ़म गुलाम	316	हम्दे बारी तआला	345
ज़ियारते बैतुल्लाह शरीफ़ का अनोखा शौक	286	चट्टान से चश्मा बह निकला	319	इब्तिदाई हलात	345
चार मक़बूल लड़कियां	287	फ़नाफ़िरुल्लाह नौजवान	320	आप से मरविख्यात	347
एक ख़ादफ़ का खौफ़े खुदा	289	हमेशा दीदारे इलाही करने वाला लड़का	321	आप की क़ामात	348
एक खुदा शनास मजनूना	290	बयान 32 : तज़किए इमामे आ'ज़म		आप के इश्शादते आलिया	349
एक आरिफ़ का आरिफ़ना कलाम	290	अबू हनीफ़	324	आप का खौफ़े खुदा	351
एक आबिदा की नसीहत भरी बातें	291	हम्दे बारी तआला	324	एक नौजवान की हिक्कयत	351
बयान 28 : सुए फूक्कने का बयान	293	ता'रुफ़े इमामे आ'ज़म	326	दुआए मा'रुफ़ की बरकात	353
हम्दे बारी तआला	293	इबादते इमामे आ'ज़म	326	ईसाई वालिदैन का कबूले इस्लाम	354

**पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इलिमिया (दा' वते इस्लामी)**



सरकारे दो आलम ॐ ने अंगूठी पहनाई	419	हम अपने आप को खिलाते तो येह मछली न निकलती	438	बयान 44 : अब्बाह वालों की बातें	475
इमाम मालिक ॐ और ता'जीमे खाके मदीना	421	दरया पर चलने वाला कुतुब	439	हम्दे बारी तआला	475
जहन्नम से नजात की विशारत	422	बनी इसराईल का एक गुनहगार	441	हम ने तेरी खातिर शराबी का दिल धो दिया	476
रूए ज़मीन का सब से बड़ा आलम	423	खौफे खुदा के सबब आंख निकाल दी	443	एक आशिके इलाही	477
एक कलिमे के सबब बख़्शाश	423	नदामत हो तो ऐसी हो	443	दानिशमन्दाना जवाब	477
आप का विसाल व तजहीज़ व तक्फ़ीन	423	हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान पौरी ॐ पर एक रुक़ए		ऐसी जन्मत कैद ख़ाना है जिस में	
आप के विसाल पर अहले इराक़ का सदमा	424	का अषर	445	कुर्बे इलाही न हो	478
आदमी का नसब ही उस का मकान है	424	बयान 42 : आशूरा के फ़ज़ाइल	449	सय्यिदुना हबीब नज्जारा की ईमान अप्रोज़ हिक्कयत	478
इमाम मालिक ॐ ने मकान न बनाया	425	हम्दे बारी तआला	449	कुरआन सुन कर रूह निकल गई	480
अहमए अरबआ और मज़हिबे अरबआ हक़ है	426	"याहुदेन, याशहीदे करबला हो दूर हर ख़जो बला"		बरगद के दरख़्त से ख़जूरे उतार लीं	481
बयान 40 : तज़क़िएउ इमाम अहमद बिन		के इकतीस हुरुफ़ की निस्वत से यौमे आशूरा की		बयान 45 : महब्वते इलाही का बयान	484
हम्बल ॐ	427	इकतीस खुसूसियात	450	हम्दे बारी तआला	484
हम्दे बारी तआला	427	यौमे आशूरा के मुस्तहब्वत	454	महब्वत क्या है ?	485
तआरुफ़े इमाम अहमद बिन हम्बल ॐ	427	आशूरा सदके का दिन है	455	काफ़िर और मोमिन की महब्वत का मुवाज़ना	485
सय्यिदुना शैबान राई ॐ का जवाबे ला		आशूरा में सदके की बरक़त से यहूदी मुसलमान		महबूबाने खुदा महबूबाने आलिया	488
जवाब	429	हो गया	455	अज़ीम ख़ादिमा	489
मश्अल की रोशनी में सूत न कातो	430	शबे आशूरा का वसीला काम आ गया	457	अनोखी मुनाज़ात	490
इमाम अहमद ॐ का आंखों का कुफ़ले मदीना	431	सेब से जन्नती पोशाक वर आमद हुवा	458	जन्मत में याकूत का घर	491
आठ लाख, साठ हज़ार शूरकाए जनाज़ा	432	हज़रते सय्यिदुना नूह ॐ का मो'जिज़ा	459	भेड़िये बक़रियों के मुहाफ़िज़ बन गए	492
दस लाख अहादीष लिखने वाला इमाम	432	बयान 43 : मीलादे मुस्तफ़ ॐ	463	मैं तेरी महब्वत में कमज़ोर नहीं	494
बयान 41 : चन्द हिक्कयात	434	हम्दे बारी तआला	463	रूहानी बदन और आस्मानी अक्लें	494
हम्दे बारी तआला	434	नूरे मुहम्मदी ॐ की जौफ़िशानियां	468	सय्यिदुना जुनून मिरी ॐ का रिक्कत अमेज़ बयान	496
शेर से पर्दा करने वाली वलिय्या	435	सरकार ॐ का पाकीज़ा नसब	470	दिल की सियाही कैसे दूर हो ?	498
आबे ज़म ज़म सत्तू, दूध और शहद बन गया	436	नूरे मुस्तफ़ ॐ की मुन्तक़िली पर ज़शन का समां	472	सय्यिदुना उतबा गुलाम ॐ का हिक्कयत	500
तीन चीज़ों के सबब बख़्शाश हो गई	436	हर चोपाया बोलने लगा	472	बयान 46 : विशाले मुस्तफ़ ॐ	501
अंगूरों की ग़ैबी टोकरी	437	विलादते मुबारक और अज़ाइबते विलादत	473	हम्दे बारी तआला	501

सरकार ॐ ने कब पर्दा फरमाया ?	506	इबादत हो तो ऐसी	541	सरकार ॐ ने रोटी अता फरमाई	591
सय्यिदुना सिद्दीक अकबर को इमामत का हुक्म	507	हज़रते अली ॐ को आका <small>صلی الله تعالی علیه و آله وسلم</small>	542	ज़ियारते रौज़ए अक़दस करने के दस फ़वाइद	593
प्यारे आका ॐ का आखिरी खुतबा	508	की नसीहत	542	तमन्नाए ज़ियारत की दुआ	594
मलकुल मौत का इजाज़त तलब करना	508	बयान 49 : मौत और इश में ग़ौरे फ़िक्र	544	बयान 53 : मनाकिबे शुलफ़ए शशिदीन	596
सरकार आली वकार ॐ का पसीनए खुशबूदार	510	क़ बयान	544	हम्दे बारी तआला	596
अज़मते सय्यिदा आइशा <small>رضی الله تعالی عنها</small>	510	हम्दे बारी तआला	544	इन्सानी चेहरे वाला जानवर	605
उम्मेते मुस्तफ़ा पर खुसूसी करम	511	मलकुल मौत <small>صلی الله علیه و آله وسلم</small> का ए'लान	545	बयान 54 : शलातो शलाम क़ बयान	608
सरकार का विसाल और सहाबए क़्राम का		हर उच्च मौत का शिकार	546	हम्दे बारी तआला	608
हुज्जो मलाल	513	खौफ़नाक सूरत	548	रुखे मुस्तफ़ा ॐ की नूरानियत	610
बयान 47 : अन्नोखे वाकिफ़ात	516	क़न्न की डांट (क़न्न की पुकार)	550	हज़रते सय्यिदतुना हव्वा का हक्के महर	614
हम्दे बारी तआला	516	गिर्यए उषमानी	550	ऊंट बोल उठा	615
क़मरते इबादत करने वाला जन्नती	516	रूह की दर्दनाक बातें	551	ब आवाजे बुलन्द दुरूद पढ़ने वालों की बख़्शिश हो गई	616
सरकार ॐ का वसीला राहबों के काम आ गया	520	इन्ने आदम की हिर्स	552	सरकार ॐ ने चेहरे की सियाही दूर फ़रमा दी	617
राहब के 62 सुवालात और अबू यज़ीद बिस्तामी		बयान 50 : आली रुत्बा ख़वातीन	558	बयान 55 : <small>قوله لا اله الا الله</small> कहने के फ़ज़ाइल	
के जवाबात	521	हम्दे बारी तआला	558	व कमालात	620
एक महफूज़ क़त्आ और उम्दा ज़िह	530	दोनों हाथ सोने की अशरफ़ियों से भर गए	560	हम्दे बारी तआला	620
बयान 48 : निक्कहे अली व फ़तिमा	531	इश्के इलाही में दीवानी	563	बाज़ार में दाख़िल होने की दुआ	626
हम्दे बारी तआला	531	बयान 51 : ईदों की ईद	569	बयान 56 : रहमते इलाही की मुश्क़त	
इन्सानी हूर	531	हम्दे बारी तआला	569	क़ बयान	629
सय्यिदा फ़तिमा <small>رضی الله تعالی عنها</small> का निकह	532	नूरे मुहम्मदी की चमक दमक	571	हम्दे बारी तआला	629
हज़रते अली ॐ की बारगाहे मुस्तफ़ा ॐ में		जिस सुहानी घड़ी चमक तयबा का चांद	573	सय्यिदुना वहशी और उन के दोस्तों का क़बूले इस्लाम	632
हज़िरी	534	सय्यिदतुना हलीमा सा'दिय्या की सआदत मन्दी	580	बे अमल लोगों पर भी रहमते खुदावन्दी	636
आस्मान पर निकह और फ़िरिशतों की बारत	535	प्यारी प्यारी दुआ	584	क़न्न की तन्हाई और रहमते खुदावन्दी	640
खुतबए निकह	537	बयान 52 : ज़ियारते रौज़ए २शूल	586	रहमते इलाही हर गुनहगार व नेक़्कर को शामिल है	641
सय्यिदा फ़तिमा <small>رضی الله تعالی عنها</small> का जहेज़	538	हम्दे बारी तआला	586	अब्लाह <small>عز وجل</small> के पांच पसन्दीदा क़लामात	642
सय्यिदा फ़तिमा <small>رضی الله تعالی عنها</small> की रुख़्सती	539	जन्नत की क्यारी	589	माख़जो मराजेअ	644
हज़रते सय्यिदुना अली ॐ का वलीमा	540	आ'राबी को नवीदे बख़्शिश मिल गई	590	अल मदीनतुल इल्मिय्या की कुतुबो रसाइल का तआरुफ़	648

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ  
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

## इब्तिदाइय्या

(हज़रते सय्यिदुना अल्लामा शोऐब हरीफ़ीश عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं) येह किताब (الروض الفائق فی المواعظ والرفائق) चन्द तकारीर, अहादीष, क़साइद, हिक्कयात, नसीहत आमोज़ बातों, सालिहीन के उम्दा आदात व ख़साइल, मशाइख़ व अरिफ़ीन के ज़िक्र और ग़फ़लत की नींद सोने वाले गुनहगारों को ज़िक्रे इलाही याद दिलाने नीज़ इन को बेदार करने पर मुश्तमिल है। मैं ने इस किताब को सय्यिदुल मुर्सलीन صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के ज़िक्रे ख़ैर से मुज़य्यन किया है। और क़साइद या'नी औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللَّهُ تَعَالَى اَجْمَعِينَ की नज़्मों और फु-ज़लाए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के कलाम के इशारों से आरास्ता किया है, जो सुनने वाले को खुश करते हैं, उसे लज़ज़त देते हैं और खुशूअ पैदा करने और आंसू बहाने का सबब बनते हैं। इस से अपनी जान पर जुल्म करने वाले, अपने गुनाहों का ए'तिराफ़ करने वाले, अपने रब्ब عَزَّ وَجَلَّ की रहूमत की उम्मीद रखने वाले कि लिये अरहूमुराहिमीन की रहूमत और तमाम मुसलमानों के लिये नफ़अ मक़सूद है। **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस को, उस के वालिदैन को और उस शख़्स को बख़्शिश अता फ़रमाए जो इन सब के लिये रहूमत व मग़फ़िरत की दुआ करे।

(اٰمِيْنَ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم)



**पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इलिमिया (दा' वते इस्लामी)**

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अपने दिलों को हाज़िर रख कर ख़ूब ग़ौरो फ़िक्क करो, और अपनी अक्लों से इम्तियाज़ करो और देखो ! वोह हस्ती जो तुम पर रहूम फ़रमाए, तुम्हें किफ़ायत करे और एक दुरूद के बदले दस रहूमतों की जज़ा अता फ़रमाए तो कौन सा नफ़अ इस से बढ़ कर है ? और इस से ज़ियादा नफ़अ बख़्श कौन सा सौदा है ? ऐ ताजिरों के वोह गुरौह जो दिरहमो दीनार कमाने में रग़बत रखते हो ! अगर तुम में से किसी से कहा जाए कि फुलां शहर में एक दिरहम के सामान से दो दिरहम कमा सकते हो और एक दीनार के सामान से दो दीनार तो तुम लोग वहां जाने में जल्दी करोगे, तकलीफ़ बर्दाश्त करोगे, एक दूसरे से बढ़ कर कोशिश करोगे, इस लिये कि इस में नफ़अ व फ़ाइदा है (येह तो दुन्यवी तिजारत है) पस उस नफ़अ बख़्श (उख़वी) सामान और सहल व आसान तिजारत के इवज़ कैसा नफ़अ मिलेगा ? जिस के मुतअल्लिक़ तुम्हें सादिको अमीन ज़ात ने रब्बुल आलमीन عَزَّوَجَلَّ के हवाले से ख़बर दी कि जब भी तुम अपने नबी (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ोगे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम पर इस के बदले दस रहूमतें नाज़िल फ़रमाएगा। तो ज़रा इस नफ़अ को भी देखो और हाथ बढ़ा कर इस फल को भी तोड़ कर चखो।

इस मा'ना में चन्द अश'आर हैं, जिन का मफ़हूम येह है : “जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मुआमला किया उस की तिजारत में घाटा नहीं, हर वीरान दिल अपनी उम्र में तक्वा से आबाद होता है और तू नबिय्ये मुख़्तार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ता है मगर रब्ब عَزَّوَجَلَّ तुझ पर दस रहूमतें नाज़िल फ़रमाता है। ऐ शख़्स ! आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर अपने दुरूदे पाक पढ़ने को ग़नीमत जान ! तू **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हां नफ़अ पाने में कामयाब हो जाएगा कि कामयाब वोही है जो उस का शुक्र बजा लाता है।”

ऐ अज़ीम सच्चे फुक़राए किराम के गुरौह ! हम ने तुम से फ़ाइदा उठाया और तुम से अहादीष रिवायत कीं, तुम्हारी वजह से हम पर रहूम किया गया। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं तुम्हारा ज़िक़रे ख़ैर इस लिये नहीं कर रहा कि तुम्हें भलाई का हुक्म दूं और बुराई से मन्अ करूं। बल्कि मेरे सामने तो किसी कहने वाले का येह कौल है : “إِحْيَاءُ الْقُلُوبِ إِزْحَمُوا أَمْوَاتِ الْقُلُوبِ” या'नी ऐ ज़िन्दा दिल वालो ! मुर्दा दिल वालों पर रहूम करो।” और तुम्हारे लिये शर्फ़ व फ़ख़्र के तौर पर येही फ़ज़ीलत काफ़ी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपनी किताब में तुम्हारी ता'रीफ़ फ़रमाई और तुम्हें अपने ख़िताब से मुशरफ़ फ़रमाया। चुनान्चे इरशादे बारी तअ़ाला है :

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** उन फ़कीरों के लिये जो **﴿١﴾ لِلْفُقَرَاءِ الَّذِينَ أَحْصَرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ لَا يَسْتَطِيعُونَ صَرْبًا فِي الْأَرْضِ ذ (ب) ٣، البقرة: ११३﴾** राहे खुदा में रोके गए ज़मीन में चल नहीं सकते। **(1)**

①...मुफ़सिरे शहीर ख़लीफ़ आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ज़िल सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِي तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका .....(बक़िय्या हाशिय्या अगले सफ़हे पर)

और तुम्हें मुबारक हो कि हुजूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ्लाक  
 صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने तुम्हारा जिक्र करते हुए इरशाद फरमाया : “ऐ फुकरा के गुरोह ! सब्र करो यहां  
 तक कि तुम हौजे (कौषर) पर मुझ से मिलो और बेशक तुम सब से पहले मेरे पास आओगे।”

(فضائل الصحابة لابن حنبل، الحديث ١٤٤٩، الجزء ٢، ص ٨٠٥، بدون “يامعشر الفقراء”)

पस पाक है वोह जात जिस ने तुम्हें खुशी व मसरत और कमाल अता फरमाया ! तुम से  
 महब्बत की और तुम्हें फ़क्र इख़्तियार करने की तरगीब दी और नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर,  
 दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के इस फ़रमाने अलीशान के साथ तुम्हें  
 इस के मांगने का हुक्म फ़रमाया कि “मेरी उम्मत के फुकरा, अमीरों से निस्फ़ दिन पहले जन्त में  
 दाखिल हो जाएंगे और वोह (निस्फ़ दिन) पांच सो साल का होगा, वोह खाएंगे, पियेंगे, ने’मते लूटेंगे,  
 और लोग हिसाब के ग़म में होंगे।” (المسند للإمام أحمد بن حنبل، مسند أبي هريرة، الحديث ١٠٧٣٥، ج ٣، ص ٦٠٥)

(جامع الترمذی، ابواب الزهد، باب ما جاء ان فقراء..... الخ، الحديث ٢٣٥٤، ص ٨٨)

पाक है वोह जात जिस ने फुकरा के मक़ाम को बुलन्द किया ! उन के ज़िक्र को आ़म किया,  
 सब्र अता किया, उन के लिये अज़्र व षवाब दुगना कर दिया। और क्या ही अच्छा कलाम है जो उन  
 के गुलाम हरीफीश رَحِمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने उन की शान में कहा है :

وَقَدْ حَازُوا بِرَيْقِ الْفَقْرِ فُخْرًا	هُمْ الْفُقَرَاءُ أَهْلُ اللَّهِ حَقًّا
فَعَوَّضَهُمْ بِذَلِكَ الصَّبْرُ أَجْرًا	هُمْ الْفُقَرَاءُ قَدْ صَبَرُوا وَأَوْدُوا
وَمِنْهُمْ تَكْنِيسِي الْأَكْوَانِ عَطْرًا	هُمْ الْفُقَرَاءُ وَالسَّادَاتِ حَقًّا
وَحَدَّثَ عَنْهُمْ سِرًّا وَجَهْرًا	هُمْ الْفُقَرَاءُ عَنْهُمْ فَارٍ وَذِكْرًا
فَعَوَّضَهُمْ بِذَلِكَ الْكُسْرُ جَبْرًا	فَكَمْ صَبَرُوا عَلَى ضَيْمِ اللَّيَالِي
وَقَدْ سَحَّذُوا لَهُ حَمْدًا وَشُكْرًا	وَقَدْ زَارُوا الْحَيِّبَ وَشَافَهُوهُ

तर्जमा : (1).....यकीनन फुकरा ही **अब्लाह** वाले हैं, तहकीक़ फ़क्र की तंगी के बदले उन्होंने ने फ़क्र  
 (या'नी बुलन्द मक़ाम) को पा लिया।

(2).....उन्होंने ने सब्र किया और अज़िय्यतें झेलीं तो **अब्लाह** तआला ने उन्हें इस सब्र पर  
 अज़्र अता फ़रमाया।

(3).....येही लोग हकीकी फुकरा और सरदार हैं और इन्ही की ब दौलत काइनात ख़ुशबू में  
 लिपटी हुई है।

(बक़िय्या हाशिया)..... के तहत फ़रमाते हैं : “या'नी सद्क़ाते मज़क़ूरा जो आयए “وَمَا تَنْفِقُوا مِنْ خَيْرٍ” में ज़िक्र हुए इन का  
 बेहतरीन मसरफ़ वोह फुकरा हैं जिन्होंने ने अपने नुफूस को जिहाद व ताअते इलाही पर रोका। शाने नुज़ूल : येह आयत अहले सुफ़्फ़ा  
 के हक़ में नाज़िल हुई, इन हज़रात की ता'दाद चार सो के करीब थी, येह हिज़रत कर के मदीनए तय्यिबा हाज़िर हुए थे। न यहां  
 इन का मकान था, न कबीला, न कुम्बा, न इन हज़रात ने शादी की थी। इन के तमाम अवक़ात इबादत में सफ़ होते थे, रात में  
 कुरआने करीम सीखना दिन में जिहाद के काम में रहना। आयत में इन के बा'ज़ औसाफ़ का बयान है।”



(4)....येही फुकरा हैं कि जिन से खुशबू फैली और येह लोग सिरन व जहरन (या'नी आहिस्ता और बुलन्द आवाज से) ज़िक्रे इलाही عَزَّوَجَلَّ में मशगूल रहते हैं।

(5)....कितनी ही बार इन्होंने ने ज़माने की सख्खियों पर सब्र किया लिहाज़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस सब्र के इवज इन को दुरुस्ती अता फ़रमा दी।

(6)....इन्होंने ने **अल्लाह** तआला का मुशाहदा और दीदार किया और उस की हम्द और शुक्र बजा लाते हुए उस की बारगाह में सजदा रेज़ हो गए।

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मुकर्रब बन्दो ! उस ज़ात की क़सम जिस ने तुम पर इन्आम और एहसाने अज़ीम फ़रमाया ! बेशक हम चाहते हैं कि तुम हमारी ख़ामियां दूर करो, हमारी मदद करो, और नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ने में हमारे साथ अपनी आवाज़ों को बुलन्द करो। बेशक जो आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रहूमतें नाज़िल फ़रमाता है, तो येह नव (9) गुना मज़ीद रहूमत नाज़िल होगी, तो क्या कोई नफ़अ या फ़ाइदा इस से बढ़ कर है ?

हुज़ूर सय्यिदुल मुबल्लिगीन, जनाबे रहूमतुल्लिल आलमीन صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने तक़्रूब निशान है : “जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रहूमतें नाज़िल फ़रमाता है, और जिस ने दस बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रहूमतें भेजता है, और जिस ने सो बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर हज़ार रहूमतें नाज़िल फ़रमाता है, और जिस ने हज़ार बार दुरूदे पाक पढ़ा मैं और वोह जन्नत के दरवाज़े पर एक साथ होंगे।”

(المعجم الاوسط، الحديث ٧٢٣٥، ج ٥، ص ٢٥٢، مختصر القول البديع فی الصلاة علی الحبيب الشفیع للسخاوی، الباب الثانی فی ثواب الصلاة والسلام علی رسول اللّٰه، ص ٢٤١)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! अब क्या कोई दुरूदे पाक पढ़ने वाले खुश नसीब के फ़ज़ाइल बयान कर सकता है ? जब कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरोबर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है कि “जिस ने हज़ार बार मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ा मैं और वोह जन्नत के दरवाज़े पर एक साथ होंगे।”

صَلُّوا عَلَى الْهَادِي الْبَيْتِ مُحَمَّدٍ      تَحْطُوا مِنَ الرَّحْمَنِ بِالْغُفْرَانِ  
فَاللّٰهُ قَدْ أَثْنَى عَلَيْهِ مُصَرَّحًا      فِي مُحْكَمِ الْآيَاتِ وَالْقُرْآنِ

तर्जमा : (1)....तुम हिदायत और खुश ख़बरी देने वाले हज़रते सय्यिदुना मुहम्मदे मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ो रहमान عَزَّوَجَلَّ से मग़फ़िरत का हिस्सा पाओगे।

(2)....तहक़ीक़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने वाज़ेह निशानियों और कुरआने पाक में आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सराहतन ता'रीफ़ फ़रमाई।

मन्कूल है कि जो शख्स आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर खड़ा हो कर दुरूदे पाक पढ़े तो बैठने से पहले और अगर बैठ कर पढ़े तो खड़े होने से पहले बख़्श दिया जाता है। और जो नींद की हालत में आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़े बेदार होने से पहले बख़्श दिया जाता है।

और येह इस तरह है कि बन्दा जब तक **अल्लाह** عزَّوَجَلَّ चाहे कुफ़्र की हालत में ज़िन्दगी बसर करता रहता है, और जब **अल्लाह** عزَّوَجَلَّ उस के लिये भलाई का इरादा फ़रमाता है तो उस को कलिमए शहादत इल्हाम कर देता है, और कोई मुसलमान उस के पास जा कर उसे कलिमए शहादत की तल्कीन करता है और उस के सामने बार बार कलिमा पढ़ता है। फिर वोह (मुसलमान) उस को कहता है: “हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम وَسَلَّم اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّم” पर दुरूदे पाक पढ़।” जब वोह ऐसा करता है और अपने इस्लाम में हुस्न पैदा करता है और नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर وَسَلَّم اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ता है, तो अगर खड़ा था तो बैठने से पहले और बैठा था तो खड़े होने से पहले बख़्श दिया जाता है।

صَلُّوا عَلَى خَيْرِ الْأَنَامِ مُحَمَّدٍ  
إِنَّ الصَّلَاةَ عَلَيْهِ نُورٌ يَعْقِدُ  
مَنْ كَانَ صَلَّي قَاعِدًا يُغْفَرُ لَهُ  
قَبْلَ الْقِيَامِ وَلِلْمَتَابِ يُحَدِّدُ  
وَكَذَلِكَ إِنْ صَلَّي عَلَيْهِ قَائِمًا  
يُغْفَرُ لَهُ قَبْلَ الْقُعُودِ وَيُرْشَدُ

**तर्जमा :** (1)....मख़्लूक में सब से बेहतर हज़रते सय्यिदुना मुहम्मदे मुस्तफ़ा وَسَلَّم اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ो, बेशक उन पर दुरूदे पाक पढ़ना ऐसा नूर है जो ज़ामिन है। या'नी बख़्शिश की गेरंटी है।

(2)....जो बैठने की हालत में दुरूदे पाक पढ़े उसे खड़ा होने से पहले बख़्श दिया जाता है। और तौबा करने वाले को गुनाहों से पाक कर दिया जाता है।

(3)....और ऐसे ही अगर खड़े हो कर दुरूदे पाक पढ़े तो बैठने से पहले बख़्श दिया जाता और उस की रहनुमाई की जाती है।

**उम्मे अबी बक्र रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا का कबूले इस्लाम :**

हदीषे पाक में है कि “जो शख्स हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** पर नींद की हालत में दुरूदे पाक पढ़ता है उसे बेदार होने से पहले बख़्श दिया जाता है।” जैसा कि अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिदीक **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** की वालिदए माजिदा **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا** के साथ हुवा (आप **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** की वालिदा हज़रते सय्यिदतुना सलमा बित्ते सुख **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا** अभी मुसलमान नहीं हुई थीं) आप **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** रात के इब्तिदाई हिस्से में अपनी वालिदए मोहतरमा के साथ सरकारे दो आलम **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّم** की बारगाह में हाज़िर हुए, नबिय्ये करीम **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّم** ने हज़रते सय्यिदुना सिदीके अक्बर **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** से कुछ गुफ़्तगू फ़रमाई, उन्हें आप **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّم** की बातें बहुत भली लग्गीं, रात तवील हो गई और आप **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** की वालिदए माजिदा सो गई। जब उन्होंने ने लौटने का इरादा किया तो आप **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّم** ने हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिदीक **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** से इस्तिफ़सार फ़रमाया: “तुम्हारा क्या हाल है?” अर्ज़ की: “या रसूलल्लाह **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّم** मैं तो ख़ैरियत से हूं मगर येह मेरी मां है, इस के बिग़ैर मेरा कोई चारा नहीं, ऐ तमाम लोगों के सरदार **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّم**”

आप ﷺ इन के लिये दुआ फ़रमाइये कि **اَللّٰهُمَّ** عَزَّ وَجَلَّ इन को इस्लाम की तौफ़ीक़ अता फ़रमा दे ।” पस आप ﷺ ने अपने हाथों को कुशादा किया, होंटों से धीमी धीमी आवाज़ निकाली, और उन केलिये दुआ की, तो वहां मौजूद एक सहाबिये रसूल (ﷺ) का कहना है कि “**اَللّٰهُمَّ** عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! हम ने हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ (ﷺ) की वालिदए माजिदा को हालते नींद में कलिमए शहादत पढ़ते सुना ।” और जब वोह बेदार हुई तो बुलन्द आवाज़ से पढ़ा : **اَشْهَدُ اَنْ لَا اِلَهَ اِلَّا اللّٰهُ وَ اَشْهَدُ اَنْ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ** : या'नी मैं गवाही देती हूं कि **اَللّٰهُمَّ** के सिवा कोई मा'बूद नहीं और (हज़रते सय्यिदुना) मुहम्मद ﷺ की वालिदए माजिदा को हदीषे रसूल ﷺ की तस्दीक़ में बेदारी से पहले ही बख़्श दिया गया ।

इसी की मिष्ल कई लोगों के बे शुमार वाकिआत हैं, जो पहले मुसलमान न थे फिर उन्होंने ने ख़्वाब में सरकारे वाला तबार, हम बेकसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो अ़लम के मालिको मुख़्तार बि इज़े परवर दगार ﷺ का दीदार किया, और आप ﷺ के हाथ पर इस्लाम क़बूल कर लिया, आप ﷺ पर दुरुदे पाक पढ़ा फिर जब वोह बेदार हुए तो उन की बख़्शिश हो चुकी थी :

هَيِّئْ لِعَيْنٍ قَدْ رَأَتْ نُورَ أَحْمَدَ  
وَقَدْ اسْعَدَ الرَّحْمَنُ عَبْدًا دَعَا لَهُ  
وَبَدَّلَ دِينَ الْفُرْكَ بِالنُّورِ وَالْهُدَى  
وَقَارَ بِرُؤْيَا الْمُصْطَفَى سَيِّدِ الْوَرَى  
عَلَيْهِ صَلَاةُ اللَّهِ مَا طَافَتْ طَائِفٌ  
صَلَاةً شَدَّاهَا عِطْرُ الْكَوْنِ جَهْرَةً  
وَفَارَتْ جِهَارًا مِنْهُ بِالْحُسْنِ وَالرُّؤْيَا  
فَاضْحَى سَعِيدًا فِي الْمَمَاتِ وَفِي الْمَخْيَا  
بَلَعَ مَا يَهْوَى مِنَ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ  
نَبِيٌّ حَبَّاهُ اللَّهُ بِالرَّحْمَةِ الْعُلْيَا  
بِمَكَّةَ بَيَّتَ اللَّهُ قَصْدًا آتَى سَعْيَا  
فَمَنْ قَاسَهَا بِالْمَسْكِ يَوْمًا فَمَا اسْتَحْيَا

**तर्जमा :** (1)....मुबारक हो उस आंख को जिस ने नूरे मुहम्मदी ﷺ का जल्वा देखा और ख़्वाब में हुज़ूर पुरनूर ﷺ के हुस्ने सरमदी (या'नी दाइमी हुस्न) को बिला हिजाब देखने में कामयाब हो गई ।

(2)....रहमान ﷺ ने उस बन्दे को नेक बख़्त किया जिस ने आप ﷺ के लिये दुआ की (या'नी आप ﷺ पर दुरुदे पाक पढ़ा) तो वोह ज़िन्दगी और मौत में सआदत मन्द हो गया ।

(3)....और उस ने शिर्क वाले दीन को नूर व हिदायत से बदल लिया और दीनो दुन्या की बुलन्दियों को पा लिया ।

(4)....और वोह मख़्तूक़ के सरदार मुस्तफ़ा करीम ﷺ के दीदार की ब दौलत कामयाब हो गया, जो ऐसे नबी ﷺ हैं जिन्हें **اَللّٰهُمَّ** ने बिग़ैर किसी बदले के बुलन्द व बाला मरतबा अता फ़रमाया ।

(5)....आप ﷺ पर **اَللّٰهُمَّ** की रहमतें नाज़िल होती रहें जब तक मक्काए मुक़र्रमा में **زَادَهَا اللَّهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا** में तवाफ़ करने वाले बैतुल्लाह शरीफ़ के तवाफ़ का क़स्द करते रहें ।



(6)....दुरुदे पाक की खुशबू वाजेह तौर पर काइनात का इत्र है, तो जिस ने किसी दिन कस्तूरी के साथ इस का मुवाजना किया तो क्या उस को शर्म न आई ।

### दुरुदे पाक पढ़ने वाले पर इब्नामे खुदावन्दी :

एक बुजुर्ग رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फरमाते हैं : “मेरा एक गुनाहगार पड़ोसी था, नशे की वजह से उसे सुब्हो शाम का इल्म न होता, मैं उसे वा’ज व नसीहत करता लेकिन वोह क़बूल न करता, तौबा की तरगीब देता मगर वोह तौबा न करता, उस के इन्तिकाल के बा’द मैं ने उस को ख़्वाब में बुलन्द मक़ाम पर फ़ाइज़ देखा, उस पर जन्नत के ए’जाजो इकराम का लिबास था । मैं ने उस से दर्याफ़्त किया : “किस काम के सबब तू ने येह मक़ामो मर्तबा पाया ?” तो उस ने जवाब दिया : “मैं एक दिन महफ़िले ज़िक्र में हाज़िर हुवा तो मैं ने एक मुहदिष (या’नी हदीष बयान करने वाले) को कहते हुए सुना कि “जिस शख्स ने हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफुरहीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर बुलन्द आवाज़ से दुरुदे पाक पढ़ा उस के लिये जन्नत लाज़िम हो गई ।” फिर उन्होंने प्यारे प्यारे आका, मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर ब आवाजे बुलन्द दुरुदे पाक पढ़ा, मैं ने भी उन के साथ बुलन्द आवाज़ से दुरुदे पाक पढ़ा और दीगर लोगों ने भी अपनी आवाज़ों को बुलन्द किया तो उसी दिन हम सब को बख़्श दिया गया । मग़फ़िरत का मेरा येह हिस्सा **اَللّٰهُمَّ** عَزَّ وَجَلَّ ने मुझे इस ने’मत (या’नी दुरुदे पाक के पढ़ने) की बरकत से अता किया है ।”

يَا قَوْزَ مَنْ صَلَّى عَلَيْهِ فَإِنَّهُ	يُحْيِي الْأَمَانِي بِالنَّعِيمِ السَّرْمَدِي
إِنْ شِئْتَ بَعْدَ الضَّلَالَةِ تَهْتَدِي	صَلَّى عَلَى الْهَادِي النَّبِيِّ مُحَمَّدٍ
يَا قَوْمَنَا صَلُّوا عَلَيْهِ لِنُظْفِرُوا	بِالْبُشْرِ وَالْعَيْشِ الْهَنِيِّ الْأَرْغَدِ
وَيُخَصِّصْكُمْ رَبُّ الْأَنَامِ بِفَضْلِهِ	وَالْقَوْزَ بِالْجَنَاتِ يَوْمَ الْمَوْعَدِ
صَلَّى عَلَيْهِ اللَّهُ حَلَّ جَلَالُهُ	مَا لَاحَ فِي الْأَفَاقِ نَجْمُ الْفَرْقَدِ

तर्जमा : (1)....कामयाब वोह है जिस ने आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर दुरुदे पाक पढ़ा इस लिये कि वोह हमेशा रहने वाली और ने’मत वाली जगह (या’नी जन्नत) में ख़्वाहिशात जम्अ करता है ।

(2)....अगर तू गुमराही के बा’द हिदायत हासिल करना चाहे तो हिदायत देने वाले नबी हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर दुरुदे पाक पढ़ ।

(3)....ऐ लोगो ! दुरुदे पाक पढ़ो ताकि कुशादा रूई और आराम देह मुबारक ज़िन्दगी पा कर कामयाबी हासिल कर लो ।

(4)....और ताकि तुम्हें रब्बुल अनाम عَزَّ وَجَلَّ बरोजे क़ियामत अपने फज़ल और जन्नत (को हासिल करने) की कामयाबी के साथ ख़ास कर दे ।

(5)....आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर **اَللّٰهُمَّ** عَزَّ وَجَلَّ दुरुदे पाक भेजे जब तक आसमान के कनारों में फ़रक़द (या’नी कुतबी) सितारा चमकता रहे ।

## ईशाले षवाब ने अज़ाबे क़ब्र से बचा लिया :

सरकारे दो आलम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर दुरूदे पाक पढ़ने के फ़ज़ाइल में बयान किया गया है कि “एक औरत का बेटा था जो बहुत गुनहगार था। वोह उस को नेकी का हुक्म देती, बे हयाई और बुरे कामों से मन्अ करती (लेकिन वोह बाज़ न आता) आखिरे कार तक्दीर उस पर ग़ालिब आई और वोह गुनाहों की हालत में मर गया। उस की मां को बहुत सदमा हुवा कि उस का बेटा बिगैर तौबा किये मर गया। उस ने तमन्ना की, कि उसे ख़्वाब में देखे। एक दफ़आ उस ने ख़्वाब में अपने बेटे को अज़ाब में मुब्तला देखा तो वोह मज़ीद ग़मगीन हो गई। जब कुछ मुहत के बा'द उस ने दोबारा अपने बेटे को देखा तो उस की हालत अच्छी थी और वोह खुश व ख़ुर्रम था। उस ने अपने बेटे से इस हालत के मुतअल्लिक पूछा कि “ऐ मेरे बेटे ! मैं ने तुझे अज़ाब में मुब्तला देखा था, येह मरतबा व मक़ाम कैसे मिला ?” तो उस ने जवाब दिया : “ऐ मेरी मां ! एक गुनहगार शख्स हमारे क़ब्रिस्तान से गुज़रा, उस ने क़ब्रों की तरफ़ देखा और दोबारा ज़िन्दा उठाए जाने के मुतअल्लिक ग़ौरो फ़िक्क किया। मुर्दों से नसीहत हासिल की, अपनी लगज़िश पर रोया और अपनी ख़ताओं पर नादिम हो कर **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ की बारगाह में तौबा की, कि अब वोह कभी गुनाहों की तरफ़ न पलटेगा। तो उस की तौबा से आसमान के फ़िरिश्ते बहुत खुश हुए और कहने लगे : **سُبْحَنَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ !** इस शख्स ने अपने रब्ब عَزَّ وَجَلَّ के साथ क्या ही ख़ूब सुल्ह की है। जब उस ने सच्ची तौबा कर ली तो **अब्बाह** عَزَّ وَजَلَّ ने उस की तौबा क़बूल फ़रमा ली, फिर उस ने कुछ कुरआने हकीम पढ़ा और हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़रहीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर बीस मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा और उस का षवाब हम सब क़ब्रिस्तान वालों को पहुंचाया। उस का षवाब हम पर तक्सीम किया गया तो मुझे भी उस से भलाई मिली जिस के सबब **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ ने मुझे बख़्श दिया और मुझे वोह मक़ाम अता किया गया जो आप मुलाहज़ा फ़रमा रही हैं। ऐ अम्मी जान ! याद रखिये ! हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर दुरूदे पाक पढ़ना दिलों का नूर, गुनाहों का कफ़ारा और ज़िन्दों और मुर्दों के लिये रहूमत है।”

**शाने मुस्तफ़** صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ :

ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मख़्जने ज़ूदो सखावत, पैकारे अज़मतो शराफ़त, महबूबे रब्बुल इज़ज़त, मोहसिने इन्सानिय्यत صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ उस फ़ज़ीलत के मालिक हैं जो हद्दो शुमार से बाहर है, और आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की शान मख़्लूक के दरमियान हमेशा बुलन्द होती रहेगी। क़रशी व हाशमी नबी صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने मस्जिदे ह़राम से मस्जिदे अक्सा तक सैर की, पस जब आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ जाते बारी तआला के क़रीब हुए तो दो हाथ जितना फ़ासिला भी न था, पाक है वोह जात जिस ने आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ को अता फ़रमाया जो कुछ भी अता फ़रमाया। आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ पर **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ की तरफ़ ऐसी बेहद व बे शुमार रहूमतें नाज़िल हों जिन रहूमतों की ता'रीफ़ की इन्तिहा नहीं। पाक है वोह जात जिस ने हुज़ूर सय्यिदुल मुर्सलीन

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को तमाम मख़्लूक पर शर्फ़ बख़्शा और मोअमिनीन पर मेहरबान बनाया, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को फ़ज़ले अज़ीम और ख़ल्फ़े करीम अता फ़रमाया, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के ज़रीए दिलों और जिस्मों की जहालतो गुमराही के अमराज़ से शिफ़ा अता फ़रमाई और **अल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ को मक़सद तक पहुंचाया और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के ज़रीए बन्दों को सीधे रास्ते की हिदायत दी और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के मुतअल्लिक हमें ता'ज़ीम का हुक्म फ़रमाया और आप صَلَّى اللّٰهُ तَعَالٰی عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ही के लिये तकरीम और ता'ज़ीम है।

﴿2﴾ إِنَّ اللّٰهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا

الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا

(प २२, अलअज़ाब: ५१)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक **अल्लाह** और उस के फ़िरिश्ते दुरुद भेजते हैं उस ग़ैब बताने वाले (नबी) पर ऐ ईमान वालो ! उन पर दुरुद और ख़ूब सलाम भेजो। (1)

**बाएगाहे रिशालत** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ **में हदिय्यउ दुस्बदो सलाम**

اللّٰهُ زَادُ مُحَمَّدًا تَكْرِيْمًا      حَبَاهُ فَضْلًا مِنْ لَّدُنْهُ عَظِيْمًا  
وَاخْتَارَهُ فِي الْمُرْسَلِيْنَ كَرِيْمًا      ذَارَافَةً بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَحِيْمًا  
صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا  
يَا اُمَّةَ الْهَادِيْ خُصِّصْتُمْ بِالْوَفَا      بَيْنَ الْوَرَى وَالصِّدْقِ اَيْضًا وَالصَّفَا  
صَلُّوْا عَلَى النَّبِيِّ الْهَادِيِّ الْمُصْطَفٰى      فَاللّٰهُ قَدْ صَلَّى عَلَيْهِ قَدِيْمًا  
صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا

①...मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी हम्दी हम्दी हम्दी पर दुरुदो **तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इफ़ान** में इस आयते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं : "सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ तَعَالٰی عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का ज़िक्र करने वाले पर भी और सुनने वाले पर भी एक सलाम भेजना वाजिब है, हर एक मजलिस में आप صَلَّى اللّٰهُ तَعَالٰی عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ का ज़िक्र करने वाले पर भी और सुनने वाले पर भी एक मरतबा, और इस से ज़ियादा मुस्तहब है। येही कौल मो'तमद है और इस पर जम्हूर हैं, और नमाज़ के का'द अख़ीरा में बा'दे तशहहुद दुरुद शरीफ़ पढ़ना सुन्नत है, और आप صَلَّى اللّٰهُ तَعَالٰی عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के ताबेअ कर के आप صَلَّى اللّٰهُ तَعَالٰी عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के आल व अस्हाब व दूसरे मोअमिनीन पर भी दुरुद भेजा जा सकता है या'नी दुरुद शरीफ़ में आप صَلَّى اللّٰهُ तَعَالٰी عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के नामे अक़दस के बा'द इन को शामिल किया जा सकता है और मुस्तक़िल तौर पर हुज़ूर के सिवा इन में से किसी पर दुरुद भेजना मकरूह है। **मस्अला :** दुरुद शरीफ़ में आल व अस्हाब का ज़िक्र मुतवारिष है। और येह भी कहा गया है कि आल के ज़िक्र के बिग़ैर मक्बूल नहीं। दुरुद शरीफ़ **अल्लाह** तआला की तरफ़ से नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ तَعَالٰी عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की तकरीम है। उ-लमा ने **अल्लाह** के मा'ना येह बयान किये हैं कि या रब्ब ! मुहम्मदे मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ तَعَالٰी عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ को अज़मत अता फ़रमा, दुन्या में उन का दीन बुलन्द और उन की दा'वत ग़ालिब फ़रमा कर और उन की शरीअत को बका इनायत कर के और आख़िरत में उन की शफ़ाअत क़बूल फ़रमा कर और उन का षवाब ज़ियादा कर के और अव्वलीनो आख़िरीन पर उन की फ़ज़ीलत का इज़हार फ़रमा कर और अम्बिया, मुर्सलीन व मलाइका और तमाम ख़ल्फ़ पर उन की शान बुलन्द कर के। **मस्अला :** दुरुद शरीफ़ की बहुत बरकतें और फ़ज़ीलतें हैं, **हदीष शरीफ़** में है : सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ तَعَالٰी عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया कि जब दुरुद भेजने वाला मुझ पर दुरुद भेजता है तो फ़िरिश्ते उस के लिये दुआए मग़फ़िरत करते हैं। मुस्लिम की हदीष शरीफ़ में है : जो मुझ पर एक बार दुरुद भेजता है **अल्लाह** तआला उस पर दस बार भेजता है। तिरमिज़ी की हदीष शरीफ़ में है : बख़ील वोह है जिस के सामने मेरा ज़िक्र किया जाए और वोह दुरुद न भेजे।"



فَمَشَىٰ أَرَىٰ الْحَادِيَّ يُبَشِّرُ بِاللِّقَاءِ وَيَضُمُّنَا بَابَ الْمُحْصَبِ وَالنَّقَا  
وَأَرَىٰ ضَرْبَ الْمُصْطَفَىٰ قَدْ أَشْرَقَا مَوْلَىٰ رَجِيمًا لَا يَزَالُ حَلِيمًا  
صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا  
ثُمَّ الرِّضَاعُ عَنِ الْإِلَهِ الْكَرَمَاءِ وَكَذَلِكَ عَنْ أَصْحَابِهِ الْخُلَفَاءِ  
فَهُمُ هُمُ دِينِي وَعَقْدُ وَلَايِي قَوْمًا تَرَاهُمْ فِي الْمَعَادِ نَجُومًا  
صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا

**तर्जमा :** (1)....**अल्लाह** ने हज़रते सय्यिदुना मुहम्मदे मुस्तफ़ा صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ و آلہ و سلم کی इज़ज़त बढ़ाई और अपनी तरफ़ से फज़ले अज़ीम फ़रमाया और आप صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ و آلہ و سلم को तमाम रसूलों में करम वाला बनाया। येह मोअमिनीन के साथ मेहरबान और रह़ीम हैं, पस उन पर दुरुद और ख़ूब सलाम भेजो।

(2)....ऐ हादी **अल्लाह** صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ و آلہ و سلم की उम्मत ! तुम्हें तमाम मख़्लूक में से वफ़ा और सिदक़ो सफ़ा के साथ ख़ास किया गया है पस तुम हिदायत देने वाले नबी صَلَّय اللہ تعالیٰ علیہ و آلہ و سلم पर दुरुदे पाक पढो, क्यूँकि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ भी आप صَلَّय اللہ تعالیٰ علیہ و آلہ و سلم पर हमेशा दुरुद भेजता है लिहाज़ा तुम भी उन पर दुरुद और ख़ूब सलाम भेजो।

(3)....मैं कब हबीबे खुदा صَلَّय اللہ تعالیٰ علیہ و آلہ و سلم के दीदार की खुशख़बरी देने वाले सुवार को पाऊंगा जो हमें बाबे मुहस्सब और रैत के टीलों की जानिब ले जाएगा और मैं मज़ारे मुस्तफ़ा صَلَّय اللہ تعالیٰ علیہ و آلہ و سلم का दीदार कर लूंगा जिस को रह़ीम व हलीम मौला ने मुनव्वर फ़रमा दिया है। पस उन पर दुरुद और ख़ूब सलाम भेजो।

(4)....फिर **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ आप صَلَّय اللہ تعالیٰ علیہ و آلہ و سلم की करीम आल और आप صَلَّय اللہ تعالیٰ علیہ و آلہ و سلم के खुलफ़ाए राशिदीन सहाबए किराम الرّضوان عَلَيْهِم الرّضوان से राज़ी हो, वोह मेरा दीन और मेरी महब्वत की गिरह हैं, वोह ऐसे लोग हैं कि तुम उन्हें बरोजे क़ियामत सितारों की तरह देखोगे। पस उन पर दुरुद और ख़ूब सलाम भेजो।

**बिस्मिल्लाह शरीफ़ की फज़ीलत :**

बेशक सब से पहले जिस कलाम से ज़बान गुफ़्तगू का आगाज़ करे, वोह येह है कि इन्सान बादशाहे हक़ीक़ी عَزَّ وَجَلَّ के नाम से इब्तिदा करे। जिस की हमें काइनात के सरदार, महबूबे परवर दगार صَلَّय اللہ تعالیٰ علیہ و آلہ و سلم ने अपने इस फ़रमान से ख़बर दी कि “जो भी अहम काम بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ से शुरू नहीं किया जाता वोह ना मुकम्मल रहता है।

(الدر المشور، سورة الفاتحه، ج ۱ ص ۲۶)

या'नी वोह काम हर आन बरकत से ख़ाली होता है क्यूँकि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के नाम में ऐसी बरकत है कि हर जगह उस के ज़रीए खुशबू हासिल की जाती है, और वोह ज़ाहिरो पोशीदा ख़ूबसूरत नूर है और रुकावटें दूर करता और अमान देता है।”

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है कि “**अब्बाह** के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज्जहुन अनिल उयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “जो भी अहम काम **بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ** से शुरूअ नहीं किया जाता वोह अधूरा रह जाता है।” (المرجع السابق)

एक रिवायत में **أَقْطَعُ** की जगह **أَجْلَمُ** का लफ़ज़ है। इस का मा'ना है, नाक़िस और कम बरकत वाला।

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से मरवी है, फ़रमाते हैं कि मैं ने हुस्ने अख़्लाक के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को येह इरशाद फ़रमाते सुना : “लोगों में और रूए ज़मीन पर चलने वालों में सब से बेहतर इल्म सिखाने वाले हैं। क्योंकि जब से दीन ज़ाहिर हुवा इन्हों ने इस की तजदीद की, लोगों को दीन सिखाया लेकिन इन से उजरत त़लब न की। और जब उस्ताज़ बच्चे को कहता है : “**بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ** पढ़।” तो **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ उस बच्चे, उस के वालिदैन और उस्ताज़ के लिये जहन्नम से बराअत (या'नी रिहाई) लिख देता है।”

(تفسير القرطبي، البقرة، تحت الآية ٤١، الجزء الاول تحت ج ١، ص ٢٧٧)

हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अब्दुल्लाह رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने इरशाद फ़रमाया : जब **بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ** नाज़िल हुई तो बादल मशिरक़ से मग़रिब की سمت दौड़े, हवाएं साकिन हो गई, समन्दर जोश में आ गया, चोपायों ने ग़ौर से सुनने के लिये अपने कान लगा दिये, शैतानों पर पथ्थर बरसाए गए, और **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : “मुझे मेरी इज्ज़तो जलाल की क़सम ! जिस शै पर **بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ** पढ़ी गई मैं उस में बरकत डाल दूंगा, और जिस ने **بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ** पढ़ी वोह जन्नत में दाख़िल होगा।”

(الدر المثور، الفاتحه، ج ١، ص ٢٦، مختصراً)

हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है कि “जब कोई शख़्स अपने घर में दाख़िल होते वक़्त **بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ** पढ़ता है तो शैतान अपने आप से कहता है : “तुम्हारे लिये यहां न रात बसर करने की जगह है और न ही रात का खाना।” और जब कोई शख़्स दाख़िल होते वक़्त बिस्मिल्लाह न पढ़े तो शैतान अपने आप से कहता है : “तुम्हें रात गुज़ारने की जगह मिल गई।” और जब खाने के वक़्त बिस्मिल्लाह न पढ़े तो कहता है : “तुम्हें रात गुज़ारने की जगह भी मिल गई और रात का खाना भी मिल गया।” (صحيح مسلم، كتاب الاشارة، باب آداب الطعام والشراب واحكامهما، الحديث ٢٠١٨، ص ١٠٣٨)

**अब्बाह** तबारक व तअ़ाला का नाम शैतान को भगाता और मकान में बरकत ज़ियादा करता है, और **بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ** के फ़ज़ाइलो बरकात बहुत ज़ियादा हैं, अगर आस्मानो ज़मीन वाले इन को लिखना शुरूअ कर दें तो इस के फ़ज़ाइल के दसवें हिस्से को भी नहीं पढ़ुंच सकते।

اللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ



बयान 2 :

## इल्म का बयान

﴿الرَّحْمَنُ ۝ عَلَّمَ الْقُرْآنَ ۝﴾ (प २७, الرحمن: १-२) **तर्जमए कन्जुल ईमान :** रहमान ने अपने महबूब को कुरआन सिखाया ।

**हम्दे बारी तआला :**

तमाम ता'रीफें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये जो बहुत रहीम व करीम, बहुत ज़ियादा एहसान फ़रमाने वाला, इज्जत वाला, हमेशा रहने वाला, बुलन्द, ग़नी, कुव्वत वाला, सुल्तान, सब से अव्वल कि जब ज़माना भी न था, सब से आख़िर कि जब काइनात न होगी, बाक़ी रहने वाला कि जब न इन्सान होगा, न जिन्न, वोह जिस ने लौहे महफूज़ में क़लम से मख़्लूक की अरवाह के मुतअल्लिक अहक़ाम और तौहीदो ईमान की आयात को लिखा ।

जिस ने तौफीक के चराग़ों को अहले तस्दीक के दिलों के लिये जिलाया तो उन्होंने ने वोह जमाल देखा जिस की मिश्ल किसी इन्सान की आंख ने न देखा और न ही जिन्नो को उस का ख़याल हुवा । उस ने हज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيَّهِ السَّلَام की औलाद को ने'मतों वाली ज़मीन में पैदा किया, फिर उन ने'मतों को वुरषा के माबैन तक्सीम किया । कितने ही हकीर अफ़राद को इज्जत का ताज पहनाया और कितने ही मुअज़्ज़िज़ीन को ज़लील किया । उस ने एक क़ौम को उम्दा आदातो ख़साइल से नवाज़ा तो दूसरी क़ौम को ग़ैर मुहज़ज़ब ख़साइल वाला बनाया । जो लोग ग़ैर मुहज़ज़ब थे और जिन के दिलों में कजी थी, वोह हद से तजावुज़ कर गए, जब कि उम्दा ख़ूबियों वाले अफ़राद मुहज़ज़ब और हिदायत याफ़ता हुए, और एक दूसरे को भाइयों की तरह बुलाते हैं वतन दूर भी हों तब भी खुलूसे दिल से एक दूसरे से मुलाक़ात करते हैं । और बिन देखे एक दूसरे को पहचानते हैं और उन के दिल एक दूसरे के लिये मुश्ताक़ रहते हैं । एक दूसरे को गुनाह और ख़सारे की जगहों से बचाते हैं, नेकी, ईषार और फ़ज़्लो एहसान में एक दूसरे की मदद करते हैं, जिस तरह ख़ालिके काइनात عَزَّوَجَلَّ ने उन को इस का हुक्म दिया । चुनान्चे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

**तर्जमए कन्जुल ईमान :** और नेकी **وَتَعَاوَنُوا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوَىٰ ۖ وَلَا تَعَاوَنُوا عَلَى الْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ** (प ६, المائدة: २) और परहेज़ारी पर एक दूसरे की मदद करो और गुनाह और ज़ियादती पर बाहम मदद न दो ।<sup>(१)</sup>

पाक है वोह ज़ात जो रहमान عَزَّوَجَلَّ है, जिस ने अपने महबूब को कुरआन सिखाया और अपनी ता'ज़ीम की ता'लीम में बयान के राज़ ज़ाहिर किये, जिस ने इन्सानियत की जान हज़रते सय्यिदुना मुहम्मदे मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को पैदा किया, उन्हें **ماکان وما یمکن** (या'नी जो कुछ हो चुका और जो आयन्दा होगा) का बयान सिखाया, उन की ता'लीम के लिये इल्हाम की लगी हुई लाइनों को अफ़हाम के क़लम से लिखा, उस ने तमाम ज़मानों का इन्तिज़ाम अन्दाज़े से किया, दिन रात में से एक के बा'द दूसरे को रखा, सूरज और चांद हिसाब से रखे, पथ्थर और मिट्टी के ढेर उस की पाकी बोलते हैं, शम्सो क़मर

①...मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِي** तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तहूत फ़रमाते हैं : “बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया : जिस का हुक्म दिया गया उस का बजा लाना **بِر**, और जिस से मन्अ फ़रमाया गया उस को तर्क करना **تَقْوٰی**, और जिस का हुक्म दिया गया उस को न करना **اِثْم** (गुनाह), और जिस से मन्अ किया गया उस का करना **عُدْوَان** (ज़ियादती) कहलाता है ।”



और नज्मो शजर उस की बारगाह में सजदा रेज हैं। येह ज़ाहिर निशानियां हैं जिन को अहले मा'रिफ़त की आंखों के लिये आरास्ता किया, उस ने बड़े बड़े अक़ल वालों को अपनी कुदरत के बयाबान (या'नी जहन्नम) में औंधा गिरा दिया। पस डरने वाले मेहरबानियों के क़दमों पर खड़े हैं, अच्छे औसाफ़ के साथ मुत्तसिफ़ हैं और अदलो इन्साफ़ काइम करने वाली ज़ात ए'लान फ़रमा रही है :

“وَلَمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ جَنَّاتٍ ۝ (پ ۲۷، الرحمن: ۴۶) ”

उस के लिये दो जन्नतें हैं।” और अरिफ़ीन हमेशा वा'दे की तस्दीक़ की ख़िदमत पर मुहाफ़िज़ हैं :

“هَلْ جَزَاءُ الْإِحْسَانِ إِلَّا الْإِحْسَانُ ۝ (پ ۲۷، الرحمن: ۶۰) ”

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** नेकी का बदला क्या है मगर नेकी।

जिस तरह दरख़्त टेहनियों की वजह से ज़मीन पर झुक जाते हैं इसी तरह वोह अपने इबादत ख़ानों में सहरी के वक़्त झुकते हैं। शौक़ उन के दिलों की सीधी शाख़ को हिलाता है तो वोह शाखें बिखर जाती हैं, ज़बान कमज़ोर होती है, दिल अज़िज़ी का इज़हार करता है, आंखें बहने लगती हैं, उन का अपने महबूब के साथ ख़ल्वत में होना उन को दुनियावी ने'मतों से ग़ाफ़िल कर देता है, उन का सुरूर ही उन के कंगन हैं, खुशूअ ही उन के ताज हैं, उन का खुजुअ ही उन को मोतियों और मरजान से आरास्ता करता है, उन्होंने ने हिर्स को बेच कर क़नाअत को ले लिया तो अब बादशाह कौन है? क्या नौशीरवान? (नहीं! उस वक़्त तो **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ के महबूब बन्दे, बादशाह होंगे) उन की ज़िन्दगी के अय्याम तवील हो गए और मुहिब्ब महबूब के दीदार का प्यासा होता है। जब क़ियामत में आएंगे तो उन्हें बिशारत देने वाले आका मुहम्मदे मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपना जल्वा दिखाएंगे, अगर आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم न होते तो जन्नत आरास्ता न की जाती। **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ अपने महबूब बन्दों के मुतअल्लिक़ इरशाद फ़रमाता है :

“يُسِّرُهُمْ رَبُّهُمْ بِرَحْمَةٍ مِّنْهُ وَرِضْوَانٍ (پ ۱۰، التوبة: ۲۱) ”

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** उन का रब्ब उन्हें खुशी सुनाता है अपनी रहमत और अपनी रिज़ा की।”

**ऐ इन्सान !** ज़रा बसीरत की आंख से देख और दिल के आईने को साफ़ कर ताकि तू दलील देख पाए, तुझे **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ के मक्बूल बन्दों से क्या निस्बत है? सोने वाला बेदार रहने वाले की तरह नहीं हो सकता, तेरे और उन के दरमियान कितना फ़र्क़ है? बुज़्दिल को बहादुरी से क्या निस्बत है? तुझ में वा'ज व नसीहत के लिये कोई जगह नहीं क्यूंकि तेरा दिल ख़्वाहिशात से भरा हुवा है, हबीब की बारगाह में शिद्दते ग़म से हैरानी के आलम में खड़े होने वाले की तरह खड़ा हो जा और अपनी ज़बीने नियाज़ को ऐसे झुका जैसे शर्मसार झुका कर खड़े होते हैं और सच्चाई की क़श्ती पर सुवार हो जा क्यूंकि येह मौत तूफ़ान है और ख़्वाहिशात के खुमार से निकल आ। कब तक तू ख़्वाहिशात के नशे में बे होश रहेगा? क्या तू बाक़ी रहने वाली शै को फ़ानी शै के इवज़ बेच देगा? **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! येह तो घाटा ही घाटा है। **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर तू उम्मीद की वादी पर बुलन्द हो जाए तो ज़रूर बहादुरों और घुड़ सुवारों को देख लेगा, अगर अहबाब की सुवारियों पर तेरा गुज़र हो तो ज़रूर ऊंटों के हुदीख़्वानों (या'नी मख़्सूस नग़मों के ज़रीए ऊंटों को हांकने वालों) को सुनेगा और अगर तू अहबाब के रास्ते पर ठहर जाए तो ज़रूर सुवारों का मुशाहदा करेगा।

## सांप ने नरगिस के फूलों का गुलदस्ता पेश किया :

हज़रते सय्यिदुना अबू इस्हाक़ इब्राहीम ख़व्वास عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الرَّزَّاق फ़रमाते हैं : “मैं मक्का के रास्ते में अकेला ही चला जा रहा था कि रास्ता भूल गया, दो दिन और दो रातें चलता रहा, यहां तक कि शाम हो गई, वुजू के लिये मैं परेशान हुवा क्योंकि पानी मौजूद न था। चांदनी रात थी कि अचानक मैं ने एक हल्की सी आवाज़ सुनी, कोई कह रहा था : “ऐ अबू इस्हाक़ ! मेरे करीब आइये।” मैं उस के करीब गया तो क्या देखता हूं कि वोह साफ़ सुथरे कपड़ों में मल्बूस एक ख़ूबसूरत नौजवान है, उस के सर के करीब दो मुख़लिफ़ रंग के खुशबूदार फूल पड़े हैं। मुझे उस से बहुत तअज्जुब हुवा कि इस बयाबान में इस के पास फूल कहां से आए ? हालांकि येह रेत पर पड़ा है और हरकत भी नहीं कर सकता, उस ने मुझे मुख़ातब करते हुए फ़रमाया : “ऐ अबू इस्हाक़ ! मेरी वफ़ात का वक़्त करीब आया तो मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से सुवाल किया कि मेरी वफ़ात के वक़्त अपने औलियाए किराम رَحْمَتُهُمُ اللَّهُ تَعَالَى में से किसी वली की ज़ियारत करा दे।” तो एक आवाज़ आई कि अभी तेरी वफ़ात के वक़्त तुझे अबू इस्हाक़ ख़व्वास की ज़ियारत होगी। मुझे यकीन है कि वोह आप ही हैं और मैं आप का मुन्तज़िर था।”

मैं ने दर्याफ़्त किया : “ऐ मेरे भाई ! तेरा क्या मुआमला है ?” उस ने जवाबन कहा : “मैं अपने घर वालों में इज्ज़त और आसूदगी की ज़िन्दगी बसर कर रहा था कि मुझे एक सफ़र दरपेश हुवा, वतन से दूरी की ख़्वाहिश हुई तो मैं हज़ के इरादे से शहरे शम्शात से निकला लेकिन एक माह से यहां पड़ा हूं और अब वफ़ात का वक़्त करीब आ गया है।” मैं ने उस नौजवान से पूछा : “क्या तेरे वालिदैन हैं ?” उस नौजवान ने कहा : “जी हां ! और एक नेक बख़्त बहन भी है।” मैं ने पूछा : “क्या कभी अपने घर वालों को मिलना भी पसंद किया या उन्होंने ने कभी तुम्हारे बारे में जानने की कोशिश की ?” उस नौजवान ने कहा : “नहीं, मगर आज मैं उन की महक सूंघना चाहता था तो मेरे पास बहुत से दरिन्दे आए और येह खुशबूदार फूल लाए और मेरे साथ मिल कर रोने लगे।” मैं उस नौजवान के मुआमले में हैरान व मुतफ़क्किर था क्योंकि वोह मेरे दिल में उतर गया था। और मेरा दिल भी उस की तरफ़ माइल हो चुका था कि इतने में एक बहुत बड़ा सांप नरगिस के फूलों का एक गुलदस्ता ले कर आया कि उस से ज़ियादा ख़ूबसूरत और खुशबूदार गुलदस्ता मैं ने कभी न देखा था। सांप ने वोह गुलदस्ता उस नौजवान के सर के करीब रख दिया और बड़ी फ़सीह ज़बान में बोला : “ऐ इब्राहीम ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के वली के पास से लौट जा क्योंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ग़यूर है।” येह सब कुछ देख कर मेरी हालत अजीब हो गई, मैं ने एक जोरदार चीख़ मारी फिर मुझ पर ग़शी तारी हो गई, जब होश आया तो वोह नौजवान इस दुनिया से कूच कर चुका था। मैं ने पढ़ा : **تَرْجَمَةُ كَنْزِ الْإِيمَانِ** : हम **अल्लाह** के माल हैं और हम को उसी की तरफ़ फिरना।” और कहा : येह बहुत बड़ी आजमाइश है, मैं इस के गुस्ल और कफ़न दफ़न का इन्तिज़ाम कैसे करूंगा। तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझ पर ऊंघ तारी कर दी जिस के ग़लबे की वजह से मैं सो गया।

तुलूए आफ़ताब के वक़्त मुझे होश आया तो देखा कि मैं तो उसी हालत पर था लेकिन उस नौजवान का कोई नामो निशान बाकी न था, मैं परेशान हो गया। बहर हाल जब हज़ अदा कर के शम्शात पहुँचा तो चन्द निकाब पोश औरतें मेरे पास आईं, उन में सब से आगे एक लम्बे बालों वाली औरत थी, जिस के हाथ में एक छागल थी और वोह मुसलसल **اَعْلَاهُ** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र कर रही थी। जब मैं ने उस को गौर से देखा तो उन तमाम औरतों में उस के इलावा किसी औरत को उस नौजवान के मुशाबेह न पाया। उस ने मुझे पुकार कर कहा : “ऐ अबू इस्हाक़ ! मैं कई दिनों से आप के इन्तिज़ार में हूँ, आप मुझे मेरी आंखों की ठंडक, मेरे भाई के मुतअल्लिक़ बताइये।”

फिर वोह बुलन्द आवाज़ से रोने लगी, उस के रोने की वजह से मुझे भी रोना आ गया, फिर मैं ने उस को नौजवान और जो कुछ मैं ने देखा था, सब कुछ बता दिया, और जब मैं उस के भाई की इस बात कि “आज मैं उन की खुशबू सूंघना चाहता था” पर पहुँचा तो उस औरत ने कहा : “भाईजान ! खुशबू पहुँच गई, खुशबू पहुँच गई।” फिर ज़मीन पर गिरी और उस की रूढ़ कपड़े उन्सुरी से परवाज़ कर गई। उस के साथ आने वाली औरतों ने जम्अ हो कर कहा : “ऐ अबू इस्हाक़ ! **اَعْلَاهُ** عَزَّوَجَلَّ आप को जज़ाए ख़ैर अता फ़रमाए।” जब उस को दफ़न किया गया तो मैं उस की क़ब्र के क़रीब रात तक खड़ा रहा, मैं ने रात ख़्वाब में उसे एक सर सब्जो शादाब बाग़ में देखा और उस का भाई भी उस के क़रीब खड़ा था, वोह दोनों कुरआने पाक की येह आयते मुबारक पढ़ रहे थे :

لِمِثْلِ هَذَا فَلْيَعْمَلِ الْعَمِلُونَ  
(۲۳، الصّفت: ۶۱)

तर्जमा कन्ज़ुल ईमान : ऐसी ही बात के लिये कामियों को काम करना चाहिये।

قَوْمٌ إِذَا عَيْتَ الزَّمَانُ بِأَهْلِهِ  
جَادُوا عَلَيْكَ بِمَا يَكُونُ لَدَيْهِمْ

तर्जमा : (1)....वोह ऐसी क़ौम है कि जब ज़माना लोगों को मसाइब में मुब्तला करे तो उस के मज़ालिम से बचने के लिये उन की पनाह ली जाती है।

(2)....जब तू किसी मुसीबत को दूर करने के लिये उन के पास आएगा तो वोह अपने माल से तुझ पर सखावत करेंगे।

**महब्बत की हकीकत :**

हज़रते सय्यिदुना शिब्ली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : एक दफ़आ मैं ने एक मज्ज़ूब (या'नी मजनून, दीवाना) देखा जिसे बच्चे पथ्थर मार रहे थे, उस का चेहरा और सर लहू लुहान और शदीद ज़ख्मी था। हज़रते सय्यिदुना शिब्ली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي उन बच्चों को डांटने लगे तो उन्होंने ने कहा : “हमें छोड़ दो ! हम इसे क़त्ल करेंगे क्यूँकि येह काफ़िर है और कहता है कि उस ने अपने रब्ब **عَزَّوَجَلَّ** को देखा है और वोह उस से क़लाम भी करता है।” तो आप **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى** عَلَيْهِ ने बच्चों से फ़रमाया : इसे छोड़ दो, फिर आप **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى** عَلَيْهِ उस के पास तशरीफ़ ले गए तो वोह मुस्कुरा कर बातें कर रहा था



और कहने लगा : “ऐ खूबसूरत नौजवान ! आप का एहसान है, येह बच्चे तो मुझे बुरा भला कह रहे थे ।” इस के बा’द उस ने पूछा : “वोह मेरे मुतअल्लिक क्या कह रहे थे ?” आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि मैं ने उस को बताया : “वोह कहते हैं कि तुम अपने रब्ब عَزَّ وَجَلَّ को देखने का दा’वा करते हो और येह कि वोह तुम से कलाम भी करता है ।” येह सुन कर उस ने एक ज़ोरदार चीख़ मारी, फिर कहने लगा, “ऐ शिब्ली ! हक़ तआला की महब्बत व कुर्बत से मुझे सुकून मिलता है, अगर लम्हे भर भी वोह मुझ से छुप जाए तो मैं दर्दे फ़िराक़ से पारा पारा हो जाऊँ ।”

हज़रते सय्यिदुना शिब्ली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْفَوْى फ़रमाते हैं मैं समझ गया कि येह मज्ज़ूब इख़्लास वाले ख़ास बन्दों में से है । मैं ने उस से पूछा : “ऐ मेरे दोस्त ! महब्बत की हकीक़त क्या है ?” तो उस ने जवाब दिया : “ऐ शिब्ली ! अगर महब्बत का एक क़तरा समन्दर में डाल दिया जाए (तो वोह खुश्क हो कर) या पहाड़ पर रख दिया जाए तो वोह गुबार के बिखरे हुए बारीक ज़र्रे हो जाएँ ।” लिहाज़ा उस दिल पर कैसा तूफ़ान गुज़रेगा जिस को महब्बत ने इज्तिराब और गिर्या व ज़ारी का लिबास पहना दिया हो, और सख़्त प्यास ने उस के अन्दर जलन और हसरते दीदार को बढ़ा दिया हो ।”

मेरे प्यारे इस्लामी भाइयो ! महब्बत एक ऐसा दाना है जिस को दिलों की ज़मीन में बोया जाता है, गुनाहों से तौबा के पानी से सैराब किया जाता है, फिर वोह महब्बत की बालियों को उगाता है । हर बाली में सो दाने लगते हैं, अगर उन में से एक दाना दिलों के परन्दों के लिये रख दिया जाए तो वोह महबूब की महब्बत में सख़्त प्यासे हो जाएँ । अब्बाह عَزَّ وَجَلَّ ही के लिये सब ख़ूबियां हैं कि उस के ऐसे बन्दे भी हैं जिन्होंने ने अपने दिल में अपने महबूब के सिवा किसी के लिये कोई जगह न छोड़ी अब्बाह عَزَّ وَजَلَّ ही के लिये उन लोगों की ख़ूबियां हैं जो अब्बाह عَزَّ وَजَلَّ की तरफ़ माइल हुए, मालो दौलत को छोड़ दिया, दुन्यावी माल की मशगूलियत से ए’राज़ किया, माज़ी और हाल की तब्दीली से इब्रत हासिल की और हलाल खाने ने जागने में उन की मदद की ।

## अब्बाह عَزَّ وَजَلَّ की ख़ुप्पा तढ़वीर

रब्ब عَزَّ وَजَلَّ को राजी करने का अनोखा तरीक़ा :

हज़रते सय्यिदुना जुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْفَوْى फ़रमाते हैं कि “एक दिन मैं एक बाज़ार से गुज़रा तो मैं ने चार आदमियों के कन्धों पर एक जनाज़ा देखा, उन के साथ और कोई न था ।” मैं ने कहा : “अब्बाह عَزَّ وَजَلَّ की क़सम ! मैं इन का पांचवां रफ़ीक़ बन कर ज़रूर अज़्रो षवाब हासिल करूंगा ।” जब वोह क़ब्रिस्तान पहुंचे तो मैं ने कहा : “ऐ लोगो ! इस शख्स का वली कहां है ?” जो कि इस पर नमाज़े जनाज़ा पढ़े ।” तो उन्होंने ने जवाब दिया : “ऐ मोहतरम बुजुर्ग ! हम में से कोई इस को नहीं जानता ।” फिर मैं आगे बढ़ा और उस की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई । हम ने उसे लहद में उतार कर उस पर मिट्टी डाल दी, जब उन्होंने ने लौटने का इरादा किया तो मैं ने कहा : “इस मय्यित का क्या मुआमला है ?” तो उन्होंने ने बताया कि “हम इस के मुतअल्लिक कुछ नहीं जानते, हां ! एक औरत

ने इस को यहां तक पहुंचाने के लिये हमें किराए पर लिया और वोह अब आने ही वाली है। इतने में वोह औरत आ गई जब वोह रोते हुए और परेशान दिल के साथ क़ब्र के करीब रुकी तो अपने चेहरे से पर्दा हटाया, बाल फैलाए, अपने हाथ आसमान की तरफ़ बुलन्द कर के गिर्या व ज़ारी करने लगी। फिर उस ने दुआ मांगी और बेहोश हो कर ज़मीन पर गिर गई। कुछ देर के बाद जब होश आया तो हंसने लगी।

मैं ने उस से पूछा : “मुझे अपने और इस मय्यित के मुतअल्लिक बताइये ! इतना शदीद रोने के बाद येह हंसना कैसा ?” तो उस ने मुझ से पूछा : “आप कौन हैं ?” मैं ने जवाब दिया : “जुन्नून। तो वोह कहने लगी : “**اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर आप सालिहीन में से न होते तो मैं आप को कभी न बताती, येह मेरा बेटा और मेरी आंखों की टंडक है, येह अपनी जवानी को ज़ाएअ करता और फ़ख़्रिया लिबास पहना करता, कोई बुराई ऐसी नहीं जिस का इस ने इर्तिकाब न किया हो और कोई गुनाह ऐसा नहीं जिसे करने की इस ने कोशिश न की हो। इस के गुनाहों को जानने वाले मौला **عَزَّوَجَلَّ** ने इसे गुनाहों की सज़ा येह दी कि एक दिन इसे शदीद दर्द हुवा, जो तीन दिन रहा, जब इस को अपनी मौत का यकीन हो गया तो कहने लगा : ऐ मेरी मां ! मैं तुझे **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ का वासिता देता हूं मेरी वसियत क़बूल करना, जब मैं मर जाऊं तो मेरी मौत की ख़बर मेरे दोस्तों, भाइयों, घर वालों और पड़ोसियों में से किसी को न देना क्यूंकि वोह मेरे बुरे अफ़आल, गुनाहों की क़षरत, और जहालत की वजह से मुझ पर रहम नहीं करेंगे। फिर उस ने रोते हुए येह अशआर पढ़े :

لِيْ ذُّنُوْبٌ شَغَلْتَنِيْ	عَنْ صِيَامِيْ وَصَلَاتِيْ
تَرَكْتُ جِسْمِيْ عَلِيْلًا	مَاتَ مِنْ قَبْلِ وَفَاتِيْ
لَيْتَنِيْ تُبْتُ لِرَبِّيْ	مِنْ جَمِيْعِ السَّيِّئَاتِ
اَنَا عَبْدٌ يَا اِلٰهِيْ !	هَائِمٌ فِي الْفُلُوَاتِ
بَحْتُ جَهْرًا بِعُيُوْبِيْ	وَذُنُوْبِيْ قَاتِلَاتِيْ
قَدْ تَوَالَتْ سَيِّئَاتِيْ	وَتَلَاشْتُ حَسَنَاتِيْ

तर्जमा : (1)....मेरे गुनाहों ने मुझे नमाज़ रोज़े से ग़ाफ़िल कर दिया।

(2)....मैं ने अपने जिस्म को इतना अलीलो कमज़ोर कर दिया कि वोह मौत से पहले ही मर चुका है।

(3)....काश ! मैं अपने रब्ब **عَزَّوَجَلَّ** की बारगाह में तमाम गुनाहों से तौबा कर लेता।

(4)....ऐ मेरे मा'बूद **عَزَّوَجَلَّ** ! वसीअ बयाबान में तेरा येह बन्दा हैरत ज़दा है।

(5)....मेरे उयूब सब पर ज़ाहिर हो गए गुनाहों ने मेरी कमर तोड़ डाली।

(6)....मेरी बुराइयां बहुत ज़ियादा हो चुकी हैं और नेकियां बरबाद हो चुकी हैं।

फिर वोह रोते हुए कहने लगा : “ऐ मेरी मां ! अफ़सोस है इस पर कि मैं **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के नाफ़रमानों में हद से बढ़ गया अफ़सोस इस दिल पर जिसे मैं सख़्त करता रहा, ऐ मेरी मां ! तुझे **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** की क़सम ! जब मैं मर जाऊं तो मेरे रुख़्सार को ज़मीन और मिट्टी पर रख कर मेरे दूसरे रुख़्सार पर अपना क़दम रख देना और कहना कि येह जज़ा है उस बन्दे की जिस ने अपने मौला की नाफ़रमानी व मुख़ालफ़त की, उस के हुक्म को तर्क किया, अपनी ख़्वाहिश के पीछे चला । जब आप मुझे दफ़न कर लें तो अपने हाथों को **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** की जनाब में बुलन्द कर के कहना : “اللّٰهُمَّ اِنِّیْ رَضِیْتُ عَنْهُ فَارْضَ عَنْهُ” या’नी ऐ **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** मैं इस से राज़ी हूं तू भी इस से राज़ी हो जा ।” जब येह मरा तो मैं ने इस की तमाम वसिय्यतों को पूरा किया । अब जब मैं ने अपना सर आस्मान की तरफ़ उठाया तो मुझे एक आवाज़ सुनाई दी : “ऐ मेरी मां ! अब लौट जा, मैं अपने रब्ब **عَزَّوَجَلَّ** के हुज़ूर इस हाल में आया कि वोह मुझ पर नाराज़ न था ।” जब मैं ने येह आवाज़ सुनी तो मुस्कुराने लगी ।”

हज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन अम्मार **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار** फ़रमाते हैं : “जब बन्दे की मौत का वक़्त क़रीब आता है तो मरने वाले की हालत पांच तरह की होती है : (1)....माल वारिष के लिये (2)....रूढ़ मलकुल मौत **عَلَيْهِ السَّلَام** के लिये (3)....गोश्त कीड़ों के लिये (4)....हड्डियां मिट्टी के लिये और (5)....नेकियां खुसूम या’नी क़ियामत के दिन अपने हक़ का मुतालबा करने वालों के लिये होती हैं ।

मज़ीद फ़रमाते हैं कि “वारिष माल ले जाए तो क़ाबिले बर्दाश्त है, इसी तरह मलकुल मौत **عَلَيْهِ السَّلَام** रूढ़ ले जाएं तो भी दुरुस्त है मगर ऐ काश ! मौत के वक़्त शैतान ईमान न ले जाए वरना **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** से जुदाई हो जाएगी, हम इस से **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** की पनाह त़लब करते हैं क्यूंकि अगर सब फ़िराक़ एक तरफ़ जम्अ हो जाएं और रब्ब **عَزَّوَجَلَّ** का फ़िराक़ एक तरफ़ हो तो येह तमाम फ़िराकों से ज़ियादा भारी है जिसे कोई बर्दाश्त नहीं कर सकता ।

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन नईम **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الرَّحِیْم** से मरवी है कि शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइषे नुजूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** का फ़रमाने अलीशान है : “जिब्राईले अमीन **(عَلَيْهِ السَّلَام)** जब भी मेरे पास हाज़िर होते तो वोह **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के ख़ौफ़ से कांप रहे होते । जब शैतान की मुख़ालफ़त ज़ाहिर हुई और कुर्ब, बुलन्द मर्तबा और इबादत के बा’द उसे धुत्कारा गया तो जिब्रील व मीकाईल **(عليهما السلام)** दोनों रोने लगे, **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ने उन से इस्तिफ़सार फ़रमाया : “तुम्हें क्या हुवा ?” क्यूं रोते हो ? हालांकि मैं किसी पर जुल्म नहीं करता ।” तो उन्होंने अर्ज़ की : “ऐ हमारे रब्ब **عَزَّوَجَلَّ** ! हम तेरी खुफ़्या तदबीर या’नी तेरी क़ज़ा, तेरे कुर्ब के बा’द दूरी और सअ़ादत मन्दी के बा’द शक़ावत से ख़ौफ़ ज़दा हैं ।” तो **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ने उन से इरशाद फ़रमाया : “इसी तरह मेरी खुफ़्या तदबीर से डरते रहो ।”

(العظمة لابی الشیخ الاصبهانی، ذکر میکائیل علیہ السلام، الحدیث ۳۸۵، ص ۳۶، مختصر)



## बूढ़े आबिद की शक्ल में शैतान :

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ इरशाद फ़रमाते हैं कि एक दफ़आ मैं नमाज़े जुमुआ के लिये निकला तो मुझे एक बूढ़े आबिद की शक्ल में इब्लीस मिला, उस ने मुझ से पूछा : “ऐ उमर ! कहां का इरादा है ?” मैं ने कहा : “नमाज़ के लिये जा रहा हूं।” कहने लगा : “नमाज़ तो हो चुकी, अब आप की नमाज़े जुमुआ फ़ौत हो गई है।” आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि मैं ने उस को पहचान लिया और उसे गर्दन और गुद्दी से पकड़ कर कहा : “तेरा सत्यानास हो ! क्या तू आबिदों और ज़ाहिदों का सरदार न था ? तुझे एक सजदे का हुक्म दिया गया मगर तू ने इन्कार किया, तकबुर किया, और काफ़िरो में से हुवा, अब क्रियामत तक तू **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दूर रहेगा।” तो वोह कहने लगा : “ऐ उमर ! ज़रा ख़याल से बोल, क्या फ़रमांबरदारी मेरे बस में है या बद बख़्ती मेरी मशिय्यत के तहत है ? मैं ने अर्श के नीचे बहुत सजदे किये, यहां तक कि आस्मान का कोई हिस्सा ऐसा नहीं जिस पर मैं ने रुकूअ व सुजूद न किये हों। इतने कुर्ब के बावजूद मुझे कहा गया :

﴿2﴾ فَاعْرِجْ مِنْهَا فَإِنَّكَ رَجِيمٌ وَإِنَّ عَلَيْكَ

الْعَنَةَ إِلَى يَوْمِ الدِّينِ (پ ۱۴، الحجر: ۳۴-۳۵)

तर्जमए कन्जुल ईमान : तू जन्नत से निकल जा कि तू मरदूद है। और बेशक क्रियामत तक तुझ पर ला'नत है। (1)

(फिर कहने लगा) “ऐ उमर ! क्या तुम्हें यकीन है कि तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़या तदबीर से अम्न में हो ?”

﴿3﴾ فَلَا يَأْمَنُ مَكْرَ اللَّهِ إِلَّا الْقَوْمُ الْخَاسِرُونَ

(پ ۹، الاعراف: ۹۹)

तर्जमए कन्जुल ईमान : तो **अल्लाह** की ख़फ़ी तदबीर से निडर नहीं होते मगर तबाही वाले। (2)

तो मैं ने उस से कहा : “मेरी नज़रों से औझल हो जा ! मुझे ताक़त नहीं कि (इस मस्अले में) तुझ से कलाम करूं।

प्यारे इस्लामी भाइयो ! कहां हैं वोह लोग जो लज़्ज़तों से लुत्फ़ अन्दोज़ हुवा करते थे, मख़्लूक पर जुल्म व ग़ुरूर व तकबुर किया करते थे ? उन को मौत के जाम दिये गए तो वोह उन जामों को घूट घूट पीते रहे, उन्होंने ने उस माल को तर्क कर दिया जो वोह जम्अ किया करते थे, इस ऐश व इश्रत

① .....मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़े आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِي तफ़सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं : “आस्मानो ज़मीन वाले तुझ पर ला'नत करेंगे और जब क्रियामत का दिन आएगा तो उस ला'नत के साथ हमेशगी के अज़ाब में गिरफ़तार किया जाएगा जिस से कभी रिहाई न होगी।”

② .....मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़े आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ज़िल सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِي तफ़सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं : “और उस के मुख़्लिस बन्दे उस का ख़ौफ़ रखते हैं। रबीअ बिन ख़ुषैम की साहिबज़ादी ने उन से कहा : क्या सबब है, मैं देखती हूं सब लोग सोते हैं और आप नहीं सोते हैं ? फ़रमाया : ऐ नूरे नज़र ! तेरा बाप शब को सोने से डरता है या'नी येह कि गाफ़िल हो कर सो जाना कहीं सबबे अज़ाब न हो।”

से मुफ़ारक़त व जुदाई इख़्तियार कर ली जिस से लुफ़ अन्दोज़ हुवा करते थे। काश ! तू उन्हें नदामत के जुबों में हांके जाते हुए देखता कि वोह मौत की तरफ़ हांके जा रहे हैं हालांकि वोह देख रहे हैं।

﴿4﴾ أَفَأَمِنُوا مَكْرَ اللَّهِ فَلَا يَأْمَنُ مَكْرَ اللَّهِ إِلَّا

الْقَوْمُ الْخَاسِرُونَ (प. ९, अ. ९९)

तर्जमए कन्जुल ईमान : क्या **अल्लाह** की ख़फ़ी तदबीर से बे ख़बर हैं ? तो **अल्लाह** की ख़फ़ी तदबीर से निडर नहीं होते मगर तबाही वाले ।

### दो अम्रद पसन्द मुअज़्ज़िनों की बरबादी :

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अहमद मुअज़्ज़िन رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : “मैं तवाफ़े का’बा में मशगूल था कि एक शख्स पर नज़र पड़ी जो ग़िलाफ़े का’बा से लिपट कर एक ही दुआ की तकरार कर रहा था : “या **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ! मुझे दुनिया से मुसलमान ही रुख़सत करना” मैं ने उस से पूछा : तुम इस के इलावा कोई और दुआ क्यूं नहीं मांगते ? उस ने कहा : “काश ! आप को मेरे वाक़िए का इल्म होता ।” मैं ने दर्याफ़्त किया : “तुम्हारा क्या वाक़िआ है ?” तो उस ने बताया : “मेरे दो भाई थे, बड़े भाई ने चालीस साल तक मस्जिद में बिला मुआवज़ा अज़ान दी, जब उस की मौत का वक़्त आया तो उस ने कुरआने पाक मांगा । हम ने उसे दिया ताकि उस से बरकतें हासिल करे मगर कुरआन शरीफ़ हाथ में ले कर कहने लगा : तुम सब गवाह हो जाओ कि मैं कुरआन के तमाम ए’तिकादातो अहकामात से बेज़ारी और नस्रानी (ईसाई) मज़हब इख़्तियार करता हूं फिर वोह मर गया । इस के बा’द दूसरे भाई ने तीस बरस तक मस्जिद में फ़ी सबीलिल्लाह अज़ान दी मगर उस ने भी आख़िरी वक़्त नस्रानी होने का ए’तिराफ़ किया और मर गया । लिहाज़ा मैं अपने ख़ातिमे के बारे में बेहद फ़िक्रमन्द हूं और हर वक़्त ख़ातिमा बिलख़ैर की दुआ मांगता रहता हूं तो हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अहमद मुअज़्ज़िन رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने उस से इस्तिफ़सार फ़रमाया : “तुम्हारे दोनों भाई ऐसा कौन सा गुनाह करते थे ? उस ने बताया : “वोह ग़ैर औरतों में दिलचस्पी लेते थे और अम्रदों (बेरीश लड़कों) को (शहवत से) देखा करते थे ।”<sup>(1)</sup>

① ....शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत हज़रते अब्दुल्लाह मौलाना मुहम्मद इल्यास अतार क़ादिरि دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ इस हिक्कयत को नक़ल करने के बा’द फ़रमाते हैं : “मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़ज़ब हो गया ! क्या अब भी ग़ैर औरतों से बेपर्दगी और बे तकल्लुफ़ी से बाज़ नहीं आएंगे ? क्या अब भी ग़ैर औरतों नीज़ अपनी भाभी, चची, ताई, मुमानी (कि येह भी शरअन सब ग़ैर औरतें ही हैं इन) से अपनी निगाहों को नहीं बचाएंगे ? इसी तरह चचाज़ाद, तायाज़ाद, मामूज़ाद, फूफ़ीज़ाद और ख़ालाज़ाद का नीज़ बीबी की बहन और बहनों का आपस में पर्दा है । ना महरम पीर और मुरीदनी का भी पर्दा है । मुरीदनी अपने ना महरम पीर का हाथ नहीं चूम सकती । ख़बरदार ! अम्रद तो आग है आग ! अम्रद का कुर्व, उस की दोस्ती उस के साथ मज़ाक़ मसख़री, आपस में कुशती, ख़ीचातानी और लपटा लपटी जहन्नम में झोंक सकती है । अम्रद से दूर रहने ही में आफ़ियत है अगर्चे उस बेचारे का कोई कुसूर नहीं, अम्रद होने के सबब उस की दिल आज़ारी भी मत कीजिये । मगर उस से अपने आप को बचाना बेहद ज़रूरी है । हरगिज़ अम्रद को स्कूटर पर अपने पीछे मत बिठाइये, खुद भी उस के पीछे मत बैठिये कि आग आगे हो या पीछे उस की तपिश हर सूत में पहुंचेगी । शहवत न हो जब भी अम्रद से गले मिलना महल्ले फ़िल्ना (या’नी फ़िल्ने की जगह) है, और शहवत होने की सूत में गले मिलना बल्कि हाथ मिलाना बल्कि फुक़हाए किराम رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمُ ..... (बक़िय्या अगले सफ़हे पर)

ऐ अपनी नज़र को शहवतों में मुस्तगरक रखने वाले ! ऐ महरमात के चाहने वाले ! ऐ फना होने वाली लज़्ज़तों से धोका खाने वाले ! तू ने उन कौमों से नसीहत हासिल क्यूं न की जिन को उन के घरों से निकाला गया और उन्होंने ने गुफ़लत की रस्सी को पकड़े रखा । पस उन का येह उज़्र क़बूल नहीं किया जाएगा कि हमें तो किसी ने डराया न था ।

**اللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

﴿5﴾ قُلْ لِلْمُؤْمِنِينَ يَغُضُّوا مِنْ أَبْصَارِهِمْ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : मुसलमान मदों को हुक्म दो अपनी निगाहें कुछ नीची रखें ।** <sup>(1)</sup>

(प. १८, नूर: ३०)

हज़रते सय्यिदुना अबू यज़ीद बिस्तामी قُدْسُ سِرِّهِ الرَّيَّانِ के बारे में मन्कूल है कि “आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ जब वुज़ू फ़रमाते तो आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के आ'ज़ा पर एक कपकपी सी तारी हो जाती यहां तक कि जब नमाज़ के लिये खड़े हो कर तकबीर कहते तो कपकपी ख़त्म होती । आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से इस के मुतअल्लिक अर्ज़ की गई तो इरशाद फ़रमाया : “मैं इस बात से ख़ौफ़ खाता हूं कि कहीं मुझे बदबख़्ती न घेर ले और मैं यहूदो नसारा के गिर्जों में न जा पड़ूं ।” يَا'नी हम **اللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ की खुफ़्या तदबीर से उस की पनाह मांगते हैं ।

हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के मुतअल्लिक मन्कूल है कि आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ हज़ के इरादे से मक्कए मुकर्रमा रवाना हुए, और पूरी रात कजावे में रोते रहे, हज़रते सय्यिदुना शैबान राई رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने अर्ज़ की : “ऐ सुफ़यान ! आप के रोने की वजह क्या है ?

(बक़िय्या हशिया).... फ़रमाते हैं : अम्रद की तरफ़ शहवत के साथ देखना भी ह़राम है । (तफ़सीरत अहमदिये ص ५५९) उस के बदन के हर हिस्से हत्ता कि लिबास से भी निगाहों को बचाइये । उस के तसव्वुर से अगर शहवत आती हो तो उस से भी बचिये, उस की तहरीर या किसी चीज़ से शहवत भड़कती हो तो उस से निस्वत रखने वाली हर चीज़ से नज़र की हिफ़ाज़त कीजिये, हत्ता कि उस के मकान को भी मत देखिये । अगर उस के वालिद या बड़े भाई वग़ैरा को देखने से उस का तसव्वुर काइम होता है और शहवत चढ़ती है तो उन को भी मत देखिये । अम्रद के ज़रीए किये जाने वाले शैताने अय्यारो मक्कार के तबाहकार वार से ख़बरदार करते हुए मेरे आका, आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : मन्कूल है, औरत के साथ दो शैतान होते हैं और अम्रद के साथ सत्तर । (फ़तावा रज़विय्या जि. 23, स. 721) बहरहाल अजनबिय्या औरत (या'नी जिस से शादी जाइज़ हो) उस से और अम्रद से अपनी आंखों और अपने वुजूद को दूर रखना सख़्त ज़रूरी है वरना अभी आप ने उन दो भाइयों की अम्वात के तशवीशनाक मुआमलात पढ़े जो ब ज़ाहिर नेक थे । मेहरबानी फ़रमा कर मक्तबतुल मदीना का मत्बूआ रिसाला अम्रद पसन्दी की तबाहकारियां का मुतालआ फ़रमा लीजिये ।”

नफ़से बे लगाम तो गुनाहों पे उक्साता है तौबा तौबा करने की भी आदत होनी चाहिये

(बुरे ख़ातिमे के अस्बाब स. 17)

①....मुफ़स्सिरे शहीर, हकीमुल उम्मत, मुफ़्ती अहमद यार खान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَنِي तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तहत “मदारिक व अहमदी” के हवाले से फ़रमाते हैं : “इस तरह कि जिन चीज़ों का देखना जाइज़ नहीं उन्हें न देखें । ख़याल रहे कि अम्रद लड़के को शहवत से देखना ह़राम है । इसी तरह अजनबिय्या का बदन देखना ह़राम, अलबत्ता ! तबीब (के लिये ज़रूरतन) मरज़ की जगह को और जिस औरत से निकाह करना हो, उसे छुप कर देखना जाइज़ है ।”



अगर मा'सलत की वजह से है तो आप तो **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के नाफरमान नहीं ।" हज़रते सय्यदुना सुफ़यान **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने येह सुन कर फ़रमाया : "ऐ शैबान ! गुनाह छोटे हों या बड़े, वोह तो कभी मेरे दिल में नहीं खटके, मेरा रोना मा'सलत के सबब नहीं बल्कि मैं तो बुरे ख़ातिमे के ख़ौफ़ से रो रहा हूं क्यूंकि मैं ने एक बहुत ही नेक बुजुर्ग को देखा, जिस से हम ने इल्म हासिल किया, उस ने लोगों को चालीस साल तक इल्म सिखाया, बैतुल्लाह शरीफ़ की कई साल मुजावरत करता और बरकतें लूटता रहा, उस शख्स के वसीले से बारिश त़लब की जाती, मगर वोह काफ़िर हो कर मरा और उस का चेहरा क़िल्ले से फिर कर मशरिफ़ की तरफ़ हो गया । लिहाज़ा मुझे बुरे ख़ातिमे के सिवा किसी चीज़ का ख़ौफ़ नहीं ।" हज़रते सय्यदुना शैबान ने अर्ज़ की : "अगर ऐसा नाफ़रमानी और गुनाहों पर इसरार की नुहूसत की वजह से है तो आप एक लम्हे के लिये भी अपने रब्ब **عَزَّوَجَلَّ** की ना फ़रमानी न कीजियेगा ।"

हज़रते सय्यदुना हम्ज़ा बिन अब्दुल्लाह **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** फ़रमाते हैं : "मैं हज़रते सय्यदुना अबू बक्र शाशी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي** के विसाल के वक़्त उन के पास हाज़िर हुवा और पूछा : "अपने आप को कैसा महसूस करते हैं ?" तो उन्होंने ने जवाबन इरशाद फ़रमाया : "उस कशती की तरह जो ग़र्क़ होने से पहले चकरा रही होती है । मैं नहीं जानता कि क्या मेरी नजात होगी ? क्या मलाइका येह खुशख़बरी ले कर आएंगे : **الَّا تَخَافُوا وَلَا تَحْزَنُوا (پ २६, حم السجدة: ३०)** तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : कि न डरो और न ग़म करो ।" या कशती ग़र्क़ हो जाएगी और फिरिश्ते येह कहते हुए आएंगे : **لَا بُشْرَىٰ يَوْمَئِذٍ لِلْمُجْرِمِينَ وَيَقُولُونَ حَجْرًا مَّحْجُورًا (پ १९, الفرقان: २२)** तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : वोह दिन मुजरिमों की कोई खुशी का न होगा और कहेंगे इलाही ! हम में उन में कोई आड़ कर दे रुकी हुई ।" या'नी दूर हो जा, तू हम से सुल्ह के काबिल नहीं ।"

**ऐ ना फ़रमान !** अपने दिल की तारीकी पर रोता कि वोह रोशन हो जाए क्यूंकि जब बादल टीले पर बरसते हैं तो वोह चमक जाता है, हलाकत है तेरे लिये ! तू कहता है : मैं तौबा करने वाला और हक़ को पूरा करने वाला हूं । खड़ा हो और जल्दी कर, नेकियों को जाएअ न कर, फिर मौक़अ न मिलेगा । जब बन्दा अपनी तौबा में सच्चा होता है तो **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ! किरामन कातिबीन (या'नी बन्दे के आ'माल लिखने वाले फिरिश्तों) को उन के लिखे हुए आ'माल भुला देता है और ज़मीन को हुक्म फ़रमाता है कि मेरे बन्दे पर वसीअ हो जा ।

**प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो !** शैतान तमाम मकासिद में तुम्हारी ताक में है ।

**﴿6﴾** **يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اخْذُوا حِذْرَكُمْ** तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! होशियारी से काम लो ।

(پ ७५, النساء: ७५)

तो तुम उस की बात न सुनना इस लिये कि वोह झूठा और शरीर है और उस की नसीहत क़बूल न करना क्यूंकि वोह धोके बाज़ है :

**﴿7﴾** **إِنَّمَا يَدْعُوا حِزْبَهُ لِيَكُونُوا مِنْ أَصْحَابِ السَّعِيرِ** तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : वोह तो अपने गुरौह को इसी लिये बुलाता है कि दोज़खियों में हों ।

(پ २२, फातर: ६)

इन्ने आदम पर तअज्जुब है कि (जब शैतान ने उस के बाप को सजदा करने से इन्कार किया उस वक्त) वोह अपने बाप की पुश्त में था, तो वोह कैसे उस जहन्नम में दाखिल हो जाएगा जिस का ईन्धन आदमी और पथ्थर हैं, ऐ इन्ने आदम ! हम ने इब्लीस को धुत्कारा इस लिये कि उस ने तेरे बाप को सजदा करने से इन्कार किया, तुझ पर तअज्जुब है कि तू ने उस से सुल्ह कैसे कर ली और हमें छोड़ दिया ।

### बढ़ निगाही का वबाल :

एक मुअज्जिन जिस ने चालीस साल तक मनारे पर चढ़ कर अज्ञान दी, एक दिन अज्ञान देने के लिये मनारे पर चढ़ा, अज्ञान देते हुए जब حَى عَلَى الْفَلَاحِ पर पहुंचा तो उस की नज़र एक नस्रानी औरत पर पड़ी । उस की अक्ल और दिल जवाब दे गए । अज्ञान छोड़ कर नस्रानी औरत के पास जा पहुंचा और उसे निकाह का पैगाम दिया तो वोह कहने लगी : “मेरा महर तुझ पर भारी होगा ।” उस ने कहा : “तेरा महर क्या है ?” नस्रानी औरत ने कहा : “दीने इस्लाम को छोड़ कर मेरे मज़हब में दाखिल हो जा ।” तो मुअज्जिन ने **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ का इन्कार कर के उस औरत का मज़हब इख़्तियार कर लिया । नस्रानी औरत ने उसे कहा : “मेरा बाप घर के सब से निचले कमरे में है, तुम उस से निकाह की बात करो ।” जब वोह उतरने लगा तो उस का पाउं फिसल गया जिस की वजह से वोह कुफ़्र की हालत में गिर कर मर गया और अपनी शहवत भी पूरी न कर सका । نَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ سُوْءِ الْخَاتِمَةِ या'नी हम बुरे ख़ातिमे से **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ की पनाह त़लब करते हैं । (आमीन)

### अच्छी निय्यत का फल और बुरी का वबाल :

मन्कूल है कि “दो भाई थे, उन में से एक आबिद और दूसरा फ़ासिक था । आबिद की आरजू थी कि वोह शैतान को अपनी मेहराब में देखे, एक दिन उस के पास इन्सानी शक्ल में इब्लीस आया और कहने लगा : “अफ़्सोस है तुझ पर ! तू ने अपनी उम्र के चालीस साल नफ़्स को कैद और बदन को मशक्कत में डाल कर ज़ाएअ कर दिये । तुम्हारी जितनी उम्र गुज़र चुकी उतनी अभी बाकी है, अपने नफ़्स की ख़्वाहिशात पूरी कर के लज़्ज़त हासिल कर ले, इस के बा'द दोबारा तौबा कर लेना और वापस इबादत की तरफ़ लौट आना । बेशक **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ बख़्शने वाला मेहरबान है । येह सुन कर आबिद ने अपने दिल में कहा : “मैं नीचे जा कर अपने भाई के पास बीस साल लज़्ज़ात हासिल करूंगा और ख़्वाहिशात पूरी करूंगा फिर तौबा कर लूंगा और अपनी उम्र के बक़िय्या बीस साल इबादत में सर्फ़ कर दूंगा अब येह नीचे उतरने लगा । इधर उस के गुनहगार भाई ने अपने नफ़्स से कहा : “तू ने अपनी उम्र को नाफ़रमानी में ज़ाएअ कर दिया और तेरा भाई जन्नत में जब कि तू जहन्नम में जाएगा । **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं ज़रूर तौबा करूंगा और अपने भाई के साथ ऊपर वाले कमरे में जा कर अपनी बक़िय्या उम्र इबादत में गुज़ारूंगा, शायद ! **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ मुझे बख़्श दे ।” इधर वोह तौबा की निय्यत ले कर ऊपर को चढ़ने लगा और उस का आबिद भाई ना फ़रमानी की निय्यत ले कर उतरने लगा कि अचानक उस का पाउं फिसला और वोह अपने भाई पर गिर पड़ा और दोनों सीढ़ियों पर इकट्ठे मर गए । अब आबिद का ह़शर नाफ़रमानी की निय्यत पर होगा और गुनहगार का ह़शर तौबा की निय्यत पर होगा ।”

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! दिन रात होने वाले वाकिआत से इब्रत पकड़ने के लिये अपने दिलों को फ़ारिग़ कर लो, कितने ही लोग जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दूर थे, क़रीब हो गए और बहुत से कुर्ब वाले दूर कर दिये गए। उन के घर वालों और पड़ोसियों ने उन से जफ़ा की। कुर्ब हासिल करने वालों के लिये जन्नत और दूरी इख़्तियार करने वालों के लिये दोज़ख़ है तो ऐ अक्ल वालो ! इब्रत हासिल करो। बिलाशुबा जब आबिद ठोकर खा कर फिसला तो अपनी निय्यत तब्दील करने और इबादत के बा'द हृद से बढ़ने और गुनाह करने पर रोया, वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से महबूब तो करता था लेकिन अगर उस की महबूबत ख़ालिस होती तो वोह ज़रूर वफ़ा की तरफ़ लौटता और अज़ क़रीब जान लेगा कि उस ने गिरने वाले कनारे पर बुन्याद रखी। पस ऐ अक्ल वालो ! नसीहत हासिल करो।

### शैतान का ख़तरेनाक जाल :

हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू मुहम्मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الصَّمَد फ़रमाते हैं : “तीन ज़ाहिद दौराने साल फ़क़त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के भरोसे पर ज़ादे राह लिये बिग़ैर हज़ के इरादे से बैतुल्लाह शरीफ़ की तरफ़ रवाना हुए। रास्ते में उन्होंने ईसाइयों की एक बस्ती में क़ियाम किया, तीनों (ज़ाहिदों) में से एक की नज़र एक ख़ूबसूरत नस्रानी औरत पर पड़ी तो उस का दिल उस की तरफ़ माइल हो गया, जब तीनों ने सफ़र का इरादा किया, तो उस ने हीले बहाने से उन को टाल दिया और खुद वहीं बैठ गया, उस के दोनों रफ़ीक़ चले गए और उस को बस्ती ही में छोड़ दिया, अब उस ने अपने दिल की बात उस औरत के वालिद से की, उस ने कहा : “उस का महर तुझ पर बहुत भारी है तुम उस की ताक़त नहीं रखते।” उस ने पूछा : “क्या महर है ?” उस के वालिद ने कहा : “तू दीने इस्लाम को छोड़ कर ईसाइय्यत में दाख़िल हो जा।” चुनान्वे उस ज़ाहिद ने नस्रानी हो कर उस औरत से निकाह कर लिया और दो बच्चे भी पैदा हुए। आख़िर कार वोह नस्रानिय्यत पर ही मर गया। जब उस के दोनों साथी सफ़र से वापस आए तो उस के मुतअल्लिक़ दर्याफ़्त किया तो उन्हें बताया गया कि वोह तो नस्रानिय्यत पर मर चुका है और नसरानियों ने उसे अपने क़ब्रिस्तान में दफ़न कर दिया है तो वोह उस की क़ब्र पर तशरीफ़ ले गए, वहां एक औरत और दो बच्चों को क़ब्र पर रोते हुए पाया। वोह दोनों भी दूर से रोने लगे। औरत ने उन से पूछा : “आप क्यूं रो रहे हैं ?” उन्होंने उस की इबादत, नमाज़, और ज़ोहद का तज़िक़रा किया। जब औरत ने येह सुना तो उस का दिल इस्लाम की तरफ़ माइल हो गया और वोह अपने दोनों बच्चों समेत इस्लाम ले आई। हज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू मुहम्मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الصَّمَد येह वाकिआ बयान करने के बा'द फ़रमाते हैं : “سُبْحَنَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ ! जो मुसलमान था कुफ़र पर मरा और जो काफ़िर था इस्लाम ले आया। तो मुसलमान को चाहिये कि अपने अन्जाम से डरता रहे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से हुस्ने ख़ातिमा का सुवाल करता रहे।”



## गुनाहों की नुहस्त :

हज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन अम्मार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَفَّار इरशाद फ़रमाते हैं : “मेरा एक दीनी भाई था जो कि मेरा बहुत मो’तकिद था।” वोह हर दुख सुख में मुझ से मुलाकात करता। मैं उस को इन्तिहाई इबादत गुज़ार, तहज्जुद गुज़ार, और गिर्या व ज़ारी करने वाला समझता था। मैं ने कुछ दिनों तक उसे न पाया और मुझे बताया गया कि वोह तो बेहद कमज़ोर हो गया है। मैं ने उस के घर के मुतअल्लिक दर्याफ़्त कर के उस के दरवाज़े पर दस्तक दी तो उस की बेटी आई और पूछा : “किस से मिलना चाहते हैं ?” मैं ने कहा : “फुलां से।” वोह मेरे आने की इजाज़त त़लब करने अन्दर गई, फिर लौट कर आई और कहने लगी : “आप अन्दर आ जाएं।” मैं ने दाख़िल हो कर देखा कि वोह घर के वस्त् में बिस्तर पर लेटा हुआ है। चेहरा सियाह, आंखें नीली और होंट मोटे हो चुके हैं। मैं ने उसे डरते डरते कहा : “ऐ मेरे भाई ! لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ की क़षरत करो।” उस ने अपनी आंखें खोलीं और बड़ी मुश्किल से मेरी तरफ़ देखा, फिर उस पर ग़शी त़ारी हो गई। मैं ने दूसरी मरतबा येही तल्कीन की तो उस ने मुझे ब मुश्किल आंखें खोल कर देखा लेकिन दोबारा उस पर ग़शी त़ारी हो गई।

जब मैं ने तीसरी मरतबा कलिमा पढ़ने की तल्कीन की और कहा कि “अगर तू ने येह कलिमा न पढ़ा तो मैं तुझे गुस्ल दूंगा, न कफ़न और न ही तेरा नमाज़े जनाज़ा पढ़ूंगा।” येह सुन कर उस ने अपनी आंखें खोलीं और कहने लगा : “ऐ मेरे भाई ! ऐ मन्सूर ! इस कलिमे के और मेरे दरमियान रुकावट खड़ी कर दी गई है।” मैं ने कहा : “لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ” कहां गई वोह नमाज़ें, वोह रोज़े, तहज्जुद और रातों का क़ियाम ?” तो उस ने मुझे हसरत से बताया : “ऐ मेरे भाई ! येह सब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये नहीं थे, बल्कि मैं येह इबादतें इस लिये किया करता था ताकि लोग मुझे नमाज़ी, रोज़ेदार, और तहज्जुद गुज़ार कहें और मैं लोगों को दिखाने के लिये ज़िक्रे इलाही عَزَّوَجَلَّ किया करता था। जब मैं तन्हाई में होता तो दरवाज़ा बन्द कर लेता, बरहना हो कर शराब पीता, और नाफ़रमानियों से अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ का मुकाबला करता। एक अर्से तक मैं इसी तरह करता रहा फिर ऐसा बीमार हुआ कि बचने की उम्मीद न रही, मैं ने अपनी इसी बेटी से कहा कि कुरआने पाक ले कर आओ, उस ने ऐसा ही किया, मैं मुस्हफ़ शरीफ़ के एक एक हर्फ़ को पढ़ता रहा यहां तक कि जब सूरए यासिन तक पहुंचा तो मुस्हफ़ शरीफ़ को बुलन्द कर के बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में अर्ज़ की : “ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इस कुरआने अज़ीम के सदके मुझे शिफ़ा अता फ़रमा, मैं आयन्दा गुनाह नहीं करूंगा।” **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझ से बीमारी को दूर कर दिया। जब मैं शिफ़ायाब हुआ, तो दाबारा लह्व व ला’ब और लज़्ज़ात व ख़्वाहिशात में पड़ गया। शैतान लईन ने मुझे वोह अहद भुला दिया जो मेरे रब्ब عَزَّوَجَلَّ के और मेरे दरमियान हुआ था, अर्से दराज़ तक गुनाह करता रहा, फिर अचानक उसी बीमारी में मुब्तला हो गया जिस में मैं ने मौत के साए देखे तो घर वालों से कहा कि मुझे मेरी आदत के मुताबिक़ वस्ते मकान में निकाल दें। मैं ने मुस्हफ़ शरीफ़ मंगवा कर पढ़ा और बुलन्द कर के अर्ज़ की : “या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इस की अज़मत का वासिता जो इस मुस्हफ़ शरीफ़ में है, मुझे इस मरज़ से नजात अता फ़रमा।”

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मेरी दुआ कबूल फ़रमाई और दोबारा उस बीमारी से मुझे शिफा अता फ़रमा दी। लेकिन मैं फिर इसी तरह नफ़्सानी ख़्वाहिशात और नाफ़रमानियों में पड़ गया यहां तक कि अब इस मरज़ में मुब्तला यहां पड़ा हूँ, मैं ने अपने घर वालों को हुक्म दिया कि इस दफ़आ भी मुझे वस्ते मकान में निकाल दो जैसा कि आप मुझे देख रहे हैं। फिर जब मैं मुस्हफ़ शरीफ़ मंगवा कर पढ़ने लगा तो एक हर्फ़ भी न पढ़ सका। मैं समझ गया कि **अल्लाह** तबारक व तआला मुझ पर सख़्त नाराज़ है, मैं ने अपना सर आस्मान की तरफ़ उठा कर अर्ज़ की : “**या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इस मुस्हफ़ शरीफ़ की अज़मत का सदका ! मुझ से इस मरज़ को ज़ाइल फ़रमा दे।” तो मैं ने हातिफ़े ग़ैबी की आवाज़ सुनी मगर उसे देख न सका। येह आवाज़ अश्आर की सूरत में थी, जिन का मफ़हूम येह है :

“जब तू बीमारी में मुब्तला होता है तो अपने गुनाहों से तौबा कर लेता है और जब तन्दुरस्त होता है तो फिर गुनाह करने लग जाता है। तू जब तक तकलीफ़ में मुब्तला रहता है तो रोता रहता है और जब कुव्वत हासिल कर लेता है तो बुरे काम करने लगता है। कितनी ही मुसीबतों और आज़्माइशों में तू मुब्तला हुवा मगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुझे उन सब से नजात अता फ़रमाई। उस के मन्अ करने और रोकने के बावुजूद तू गुनाहों में मुस्तगरक़ रहा और अर्सए दराज़ तक उस से गाफ़िल रहा क्या तुझे मौत का खोफ़ न था ? तू अक्ल और समझ रखने के बावुजूद गुनाहों पर डटा रहा। और तुझ पर जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़ज़्लो करम था, तू ने उसे भुला दिया और कभी भी तुझ पर न कप कपी तारी हुई, न ही ख़ौफ़ लाहिक् हुवा। कितनी मरतबा तू ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ अहद किया लेकिन फिर तोड़ दिया, बल्कि हर भली और अच्छी बात को तू भूल चुका है। इस जहाने फ़ानी से मुन्तक़िल होने से पहले पहले जान ले कि तेरा ठिकाना कब्र है, जो हर लम्हे तुझे मौत की आमद की ख़बर सुना रही है।”

हज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन अम्मार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : “**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं उस से इस हाल में जुदा हुवा कि मेरी आंखों से आंसू बह रहे थे और अभी घर के दरवाज़े तक भी न पहुंचा था कि मुझे बताया गया कि वोह शख्स इन्तिक़ाल कर चुका है। हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से हुस्ने ख़ातिमा की दुआ करते हैं क्यूंकि बहुत से रोज़ेदार और रातों को क़ियाम करने वाले बुरे ख़ातिमे से दो चार हो गए।”

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़या तदबीर से डरते रहो !

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह मोसिली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفّی फ़रमाते हैं : हमारे ज़माने में एक ग़मज़दा शख्स था, जिस को क़ज़ीबुल बान (या'नी बान नामी दरख़्त की शाख़) के नाम के पुकारा जाता था। उस के एहतिराम और रो'बो दबदबे के बाइष कोई उस से कलाम करने की जुरअत नहीं करता था। वोह बहुत ज़ियादा रोया करता। तक़दीर उस शख्स की तन्हाई में मुझे उस के पास ले गई तो मैं ने उस से पूछा : “ऐ मेरे मोहतरम ! उस ज़ात की क़सम जिस ने आप को अपनी ज़ात के सिवा हर चीज़ से बेनियाज़ कर दिया है ! आप के ग़म और लोगों से जुदा रहने का सबब क्या है ?” उस

ने मुझे देखा और बहुत ज़ियादा रोया फिर उस का रंग मुतगय्यिर हो गया। कुछ इज़तिराब के बा'द उस पर ग़शी तारी हो गई। मुझे गुमान हुआ कि वोह इन्तिकाल कर गया है। बहरहाल जब उसे होश आया तो मैं ने बातों ही बातों में उसे मानूस कर लिया और उसे मुखातब कर के उस का दिल बहलाया और उसे क़सम दे कर उस की हालत के मुतअल्लिक़ दर्याफ़्त किया तो वोह रोते रोते अपना वाकिआ बयान करने लगा : “मैं अपने शैख़ की ख़िदमत किया करता था, वोह अब्दाल में से था, मैं ने चालीस साल उस की ख़िदमत की, वोह बहुत इबादत गुज़ार था। उस ने अपनी वफ़ात से तीन दिन क़ब्ल मुझे बुला कर कहा : “ऐ मेरे बेटे ! ऐ **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** के बन्दे ! मेरा तुझ पर और तेरा मुझ पर हक़ है। और तुझ पर मेरे मुकम्मल हुक्कूक में से एक येह है कि तू मेरी बातें ग़ौर से सुने और मेरी वसिय्यत को पूरा करे।”

मैं ने अर्ज की : “महब्बत और इज़ज़त से आप की वसिय्यत पूरी करूंगा।” तो उस ने कहा : “मेरी उम्र के तीन दिन बाक़ी हैं और मैं काफ़िर मरूंगा। जब मैं मर जाऊं तो मुझे मेरे कपड़ों समेत रात की तारीकी में एक ताबूत में रख शहर से बाहर फुलां जगह ले जाना और तुलूए अफ़ताब तक वहीं ठहरे रहना, जब तू किसी काफ़िले को आते हुए देखे कि जिन के पास भी एक ताबूत होगा वोह उस को मेरे ताबूत के पहलू में रख देंगे और मेरा ताबूत ले जाएंगे, तुम वोह दूसरा ताबूत ले कर वापस आ जाना। फिर उस ताबूत को खोल कर उस में मौजूद शख्स को निकालना और उस के साथ वोही सुलूक करना जो तुम पर लाज़िम था कि तुम मेरे साथ करते (या'नी उस की तजहीज़ो तक्फ़ीन और तदफ़ीन वग़ैरा करना)।” येह सुन कर मैं रो रो कर पूछने लगा : “ऐसा मुआमला होने की वजह क्या है ?” तो उन्होंने ने जवाब दिया : “ऐ मेरे बेटे ! येह सब कुछ लोहे महफूज़ में लिखा हुआ है, और पहले भी और बा'द में भी **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** ही का हुक्म है।”

(<sup>(1)</sup> **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान** : उस से नहीं पूछा जाता जो वोह करे।) **﴿8﴾ لَا يُسْأَلُ عَمَّا يَفْعَلُ** (پ ۱۷، الانبیاء: ۲۳)

जब तीन दिन गुज़र गए तो मेरा शैख़ मुजतरिब हो गया, रंग मुतगय्यिर हो गया और उस का चेहरा सियाह हो कर मशरिक़ की तरफ़ घूम गया और वोह ओंधे मुंह गिर कर मर गया। मैं बहुत रोया और मुझे इतना ग़म लाहिक़ हुआ जिसे **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** के सिवा कोई नहीं जानता। फिर मुझे वसिय्यत याद आई तो मैं ने उन को एक ताबूत में रखा और जब रात हुई तो मैं ने ताबूत को उस मक़ाम पर ले जा कर रख दिया जिस का मेरे शैख़ ने नाम लिया था और ठहरा रहा यहां तक कि जब सूरज तुलूअ हुआ तो एक जमाअत गिर्या व ज़ारी करते हुए आई, उन के पास भी एक ताबूत था, उन्होंने

①....मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी **तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में इस आयते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं : “क्यूंकि वोह मालिके हक़ीकी है जो चाहे करे, जिसे चाहे इज़ज़त दे, जिसे चाहे ज़िल्लत दे, जिसे चाहे सअ़ादत दे, जिसे चाहे शक़ी करे। वोह सब का हाकिम है, कोई उस का हाकिम नहीं जो उस से पूछ सके।”



ने अपना ताबूत इस ताबूत की एक जानिब रख दिया। उन में से एक शख्स आगे बढ़ा और मेरे लाए हुए ताबूत को उठा कर जाने लगा तो मैं ने उसे पकड़ लिया और कहा : “जब तक तुम मुझे अपने मुतअल्लिक कुछ न बताओगे मैं तुम्हें नहीं छोड़ूंगा।” तो उस ने बताया : “मैं इस पादरी का चालीस साल से खादिम रहा हूं।” इस ने अपनी मौत से तीन दिन कब्ल मुझे बुला कर कहा : “ऐ मेरे बच्चे ! मेरा तुझ पर और तेरा मुझ पर हक है, तुझ पर मेरे मुकम्मल हुक्क में से एक येह है कि जब मैं तीन दिन बा'द मर जाऊं तो तुम मुझे एक ताबूत में रख देना और उठा कर फुलां जगह रख देना और इस जगह का जिक्र किया और कहा कि अगर तू वहां रखा हुवा कोई दूसरा ताबूत पाए तो मेरे ताबूत को उस की जगह रख देना और उस को उठा कर गिर्जे में ले जाना और मेरे साथ जो मुआमला करना तुझ पर वाजिब है वोही उस के साथ करना (या'नी ईसाइयों के तरीके पर दफन करना)।” जब तीन दिन गुजर गए तो इन का चेहरा खुशी से खिल उठा, कलिमाए शहादत पढ़ा और मुसलमान हो कर इन्तिकाल कर गए। फिर मैं ने इन के हुक्म के मुताबिक अमल किया और इन को यहां ले आया।”

(वोह बुजुर्ग फरमाते हैं कि) जो ताबूत वोह लोग ले कर आए थे मैं ने उसे उठाया और घर के एक कोने में रख कर खोला तो देखा कि उस में एक ऐसे बुजुर्ग थे, जिन के चेहरे पर अन्वार की बारिश बरस रही थी, उन के सारे बाल सफेद थे। मैं ने उन को ताबूत से निकाला, उन के कपड़े उतारे और फिर फुकरा के साथ मिल कर उन को गुस्ल दिया, हम ने उन पर नमाजे जनाजा पढ़ी और एक कोने में दफन कर दिया। वोह दिन गवाह है कि मैं जब भी बाहर निकलता हूं तो मेरे चेहरे पर बुरे खातिमे के खौफ से ग़म के बादल बरसने लगते हैं। मेरा लोगों से जुदा रहने का सबब येही है।”

### रिक्कत अंगेज दुआ :

हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से हुस्ने खातिमा का सुवाल करते हैं और उस की खुफ़्या तदबीर से डरते हैं, बेशक हद से बढ़ने वाले ही उस की खुफ़्या तदबीर से बे खौफ रहते हैं। **या अल्लाह** صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का वसीला पेश करते हैं, और हमारा ईमान है कि तेरे महबूब صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तेरी बारगाह में हम आसियों और गुनाहगारों की शफ़ाअत फ़रमाएंगे। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम को खौफ से अम्न अता फ़रमा दे, हमारे उयूब की पर्दा पोशी फ़रमा और हमारे गुनाह मुआफ़ फ़रमा दे। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! अगर तू भी सिर्फ़ उन्हें ही अपनी बारगाह में शफ़े कबूलियत अता फ़रमाएगा जो तेरे नेक बन्दे हैं तो फिर हमें बता कि हम जैसे गुनाहगारों को कौन कबूल करेगा ? **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! अगर तू इताअत गुज़ार बन्दों पर ही रहमो करम की बारिश नाज़िल फ़रमाएगा तो कोताही करने वालों और आसियों पर कौन करम करेगा ? **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम अपने नफ़्सों की बुराई को अच्छी तरह जान चुके लिहाज़ा हम पर नज़रे करम फ़रमा और हमारी तौबा कबूल फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर ऐसा फ़ज़लो करम

फ़रमा जो हमें तेरी ज़ात के सिवा हर चीज़ से बे परवाह कर दे, हमें इताअत की तौफ़ीक़, मा'सिय्यत से नफ़रत और पुर खुलूस निय्यत की दौलत से नवाज़ दे, हमें अपनी ऐसी रहूमत से नवाज़ कि जो हमारी कमी और कोताही को पूरा कर दे हमारे फ़क़ को गुना से बदल दे, हमारे गुनाहों को मिटा दे और हमारी क़द्रो मन्ज़िलत में इज़ाफ़ा फ़रमा दे, हमें अपने और अपने हबीब صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हबीब के मुबारक फ़रामीन सुन कर उन से नफ़अ हासिल करने की सअादत अता फ़रमा और हम ख़ताकारों के हक़ में आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअत क़बूल फ़रमा कि जिस दिन माल काम आएगा, न औलाद । ऐ सब से बढ़ कर रहूम फ़रमाने वाले ! हम पर अपनी ख़ास रहूमत नाज़िल फ़रमा । (आमीन)

اللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَعَلَىٰ آلِهِ وَصَحْبِهِ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ



### हुक्मरानों पर हि़साब की सख़्तियां

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : “बरोज़े क़ियामत लोग जम्अ होंगे, तो कहा जाएगा : “इस उम्मत के फ़क़रा और मसाकीन कहां हैं ?” तो वोह खड़े हो जाएंगे पूछा जाएगा : “तुम ने क्या अमल किये ?” वोह अर्ज़ करेंगे : “ऐ **अल्लाह** ! तू ने हमें आजमाइश में मुब्तला किया तो हम ने सब्र किया और हुक्मरानी व सल्तनत का वाली हमारे इलावा दूसरों को बना दिया ।” **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : “तुम ने सच कहा ।” या इसी की मिष्ल इरशाद फ़रमाएगा (येह रावी का शक है) फिर वोह दूसरे लोगों से बहुत पहले जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे और हि़साब की सख़्तियां हुक्मरानों और साहिबे सल्तनत लोगों पर बाकी रह जाएंगी ।” सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَانُ ने अर्ज़ की : “उस दिन मोअमिनीन कहां होंगे ?” हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़रहीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “उन के लिये नूर के मिम्बर रखे जाएंगे और उन पर बादलों से साया किया जाएगा ।”

(صحيح ابن حبان، باب وصف الجنة واهلها، الحديث ٧٣٧٦، ج ٩، ص ٢٥٣)

### बयान 3 : मौत और गियाहते कुबूर वगैरा का बयान हम्दे बारी तझाला :

सब खूबियां उस जात के लिये हैं जो हम्द की मुस्तहिक है, अपनी क़िब्रियाई में वाहिद है, उस का न कोई हम पल्ला है और न ही उस की कोई हद है, बुलन्द है, क़वी है, मददगार है, हमीद है, ग़नी है, ग़नी करने वाला है, पैदा करने और लौटाने वाला है, ऐसा अता करने वाला है जिस की अता कभी फ़ना और ख़त्म होने वाली नहीं, ऐसा रोकने वाला है कि जिस से वोह रोक ले उसे कोई देने वाला नहीं और अपने इरादे में किसी का मोहताज नहीं, मख़्लूक को पैदा कर के अहसन तरीक़े से राहे रास्त पर चलाने वाला है और उस ने मख़्लूक की सूरतों को अच्छा बनाया और उन को जन्मत में ने'मतों और हमेशा रहने की खुशख़बरी दी और इब्रत वाली आंखों से नवाज़ा और अज़ाबे नार और वर्इद से डराया और शुक्र को लाज़िम किया और उस ने उन के लिये अपने मजीद फ़ज़ल के ख़ज़ाने का ज़िम्मा लिया और उन पर मौत को मुसल्लत किया पस कोई भी उस से बरियुज़्जिम्मा नहीं, कितने ही लोगों को मौत ने अपने दोस्तों की जुदाई में रुलाया ? कितनों को नौ मौलूद छोड़ा और उन सब को गिर्या व ज़ारी में मशगूल कर दिया, हालांकि **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** ने किसी को ग़मज़दा पैदा किया, न ग़मज़दा लोटाएगा। मौत के सबब मज़बूत इमारतें बरबाद हो गई और मौत ने फ़ना के सबब उस घर के रहने वालों पर हुकूमत की और रूहों के परन्दे अपने घोंसलों से उड़ गए और उन की ऐश की ज़िन्दगी को तंगी में बदल दिया तो अब बे आबो गियाह ज़मीन में बादशाहों, गुलामों, ग़नियों और मोहताजों की कब्रें एक जैसी हैं।

पाक है वोह जात ! जिस ने मौत के ज़रीए मगरूरों में से हर एक को मुसलसल ज़लील किया और मौत के ज़रीए बड़े बड़े बहादुर बादशाहों को शिकस्त दी और उन को वसीअ महल्लात से उठा कर अन्धेरी कब्रों में पहुंचा दिया और उन की लम्बी लम्बी उम्मीदों को काट कर रख दिया, मौत ने उन के आबा व अज्दाद को पकड़ लिया। और बच्चों को झूलों से उठा कर कब्रों को उन का घर बना दिया और चेहरों को खाक में मिला कर रख दिया, मौत छोटे बड़े, अमीर फ़कीर, हाकिम महकूम और बाप औलाद सब के लिये बराबर है और उस ने मर्दों औरतों सब को फ़ना कर दिया और अब क़ियामत तक उन की याद बाकी है।

क्या ग़ाफ़िल इन्सान उन की हलाकतो बरबादी से इब्रत हासिल नहीं करेगा ? हालांकि मौत ने उन सब को फ़ना और उन की जमइय्यत को तित्तर बित्तर कर दिया। इन्सान कैसे धोके में रहता है हालांकि वोह जानता है कि **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** ज़ालिम को मोहलत देता है मगर जब वोह गिरिफ्त फ़रमाता है तो कोई उस से नहीं बचा सकता। क्या लोग येह बात नहीं जानते ? और उन की जानें मौत से महफूज़ नहीं। (जैसा कि फ़रमाने इलाही **عَزَّوَجَلَّ** है :)

وَكَذٰلِكَ اَخَذَ رَبُّكَ اِذَا اَخَذَ الْقُرْاٰى وَهِيَ ظَالِمَةٌ اَنْ اَخْذَهُ الْيَمُّ شَدِيْدًا (پ ۱۲، هود: ۱۰۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और ऐसी ही पकड़ है तेरे रब्ब की जब बस्तियों को पकड़ता है उन के जुल्म पर बेशक उस की पकड़ दर्दनाक करी (सख़्त) है।



कहां हैं शहरों और मज्बूत किलों वाले ? कहां हैं मआनी और फुनून वाले ? कहां है वोह मज्बूत किल् जिन के रहने वाले मज्बूत थे ? कहां हैं साबिका उम्मतें ? कहां हैं ऊंचे ऊंचे महल्लात में रहने वाले ? उन पर मौत का वा'दा सच हुवा पस अगर तू उन की कब्रों को बगौर देखे तो जरूर उन के अन्जाम से तअज्जुब करेगा कि अभी उन के अहवाल बोसीदा न हुए थे कि कब्र ने उन के जोड़ जोड़ को बिखेर कर रख दिया और अब हालत येह है कि न उन में से आजाद पहचाने जाते हैं, न गुलाम । बहरहाल वोह उन्सियत और कुर्ब हासिल करने के बा'द कब्र की तारीकी में बदहाल पड़े हैं । हालांकि मौत खुश रहने वालों, बदनसीबों, करीब और दूर वालों को पकड़ कर उन्हें नसीहत करती रही और **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ के इस फरमान से खबरदार करती रही :

وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ذَلِكُمْ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيدُ ۝ (پ: ۲۶، ق: ۱۹)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :** और आई मौत की सख्ती हक के साथ येह है जिस से तू भागता था ।

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर बिन खत्ताब رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है कि हम दस आदमी सरकारे मदीना, करारे क़ल्बो सीना, बाइषे नुजूल सकीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में हाज़िर हुए, एक अन्सारी ने अर्ज की : “या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم लोगों में सब से अक्लमन्द कौन है ?” आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फरमाया : “मौत को सब से ज़ियादा याद करने वाला और उस के लिये सब से अच्छी तय्यारी करने वाला, येही लोग अक्लमन्द हैं जो दुन्या की भलाई और अख़िरत की इज़त ले गए ।”

(مكارم الاخلاق لابن ابی الدنيا، الحديث ۳، ص ۶-۵- رواه ابن عمر رضي الله تعالى عنهما- سنن ابن ماجة، ابواب الزهد، باب ذكر الموت والا استعداد له ،

الحديث ۴۲۵۹ ، ص ۲۷۳۵- رواه ابن عمر رضي الله تعالى عنهما)

उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीका رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا से मरवी है, हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफुर्रहीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फरमाया : “जो **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ से मुलाक़ात पसन्द करता है, **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ भी उस की मुलाक़ात को पसन्द करता है और जो **اَلलّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ से मुलाक़ात को ना पसन्द करता है **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ भी उस की मुलाक़ात को ना पसन्द फरमाता है ।” तो मैं ने अर्ज की : “या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क्या आप मौत को ना पसन्द करने की बात कर रहे हैं ? इसे तो हम सब नापसन्द करते हैं ।” तो आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फरमाया : “ऐसा नहीं ! बल्कि जब मोमिन को **اَلलّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ की रहमत, रिज़ा और जन्नत की खुशख़बरी दी जाती है तो वोह **اَلलّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ से मुलाक़ात पसन्द करता है और **اَلलّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ उस की मुलाक़ात को पसन्द करता है और जब काफ़िर को **اَلलّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ के अज़ाब और उस की नाराज़ी की ख़बर दी जाती है तो वोह **اَلलّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ की मुलाक़ात को ना पसन्द करता है और **اَلलّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ उस की मुलाक़ात को नापसन्द फरमाता है ।”

(صحيح مسلم، كتاب الذكر والدعاء، باب من احب لقاء الله..... الخ، الحديث ۲۶۸۴، ص ۱۱۴۵)

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है, हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फरमाने हक़ बयान है : “तुम में से

कोई किसी ऐसी मुसीबत की वजह से मौत की तमन्ना न करे जो उस पर उतरी।” मजीद इरशाद फ़रमाया : “अगर तमन्ना करना ही है तो यूँ कहे : **مَا كَانَتْ الْوَفَاءُ خَيْرًا لِّيَ وَتَوَفَّيْ مَا كَانَتْ الْوَفَاءُ خَيْرًا لِّيَ**” या’नी ऐ **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ ! जब तक ज़िन्दगी मेरे लिये बेहतर हो मुझे ज़िन्दा रख और जब मौत मेरे लिये बेहतर हो तो मुझे मौत अता फ़रमा दे।” (आमीन)

(المرجع السابق، باب كراهة تمنى الموت ..... نزل به، الحديث ٢٦٨٠، ص ١١٤٥)

**मेरे मीठे मीठे इस्लामी भाई !** ज़ियादा से ज़ियादा अमले सालेह कर, और उस मौत के प्याले से डर जिस को तू ज़रूर चखने वाला है, और ऐसी ऐशो इशरत को तर्क कर दे जिस से तू लाज़िमी तौर पर जुदा होने वाला है, ऐ मौत को भूलने वाले ! मौत ने तो बड़े बड़े पहलवानों को पछाड़ दिया है, उन से इब्रत हासिल कर जो तुझ से पहले मौत का जाम पी चुके हैं।

मिले खाक में अहले शां कैसे कैसे

मर्की हो गए ला मकां कैसे कैसे

हुए नाम वर बे निशां कैसे कैसे

जर्मी खा गई नौजवां कैसे कैसे

जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है

येह इब्रत की जा है तमाशा नहीं है

नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** का फ़रमाने इब्रत निशान है : “मय्यित अपनी क़ब्र में ऐसे है जैसे गर्क होने वाला मदद का तालिब, वोह अपने बेटे, भाई या दोस्त की तरफ़ से पहुंचने वाली दुआ की मुन्तज़िर होती है। जब उसे दुआ पहुंचती है तो वोह उसे दुन्या व मा फ़ीहा (या’नी दुन्या और जो कुछ इस में है) से ज़ियादा महबूब होती है।”

(شعب الایمان للبيهقي، باب في الصلاة على من مات ..... البخ، الحديث ٩٢٩٥، ج ٧، ص ١٦، بدون “ابنه”)

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरोबर **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** का फ़रमाने इब्रत निशान है : जब मय्यित को क़ब्र में रखा जाता है तो क़ब्र कहती है : “ऐ इब्ने आदम ! तेरे लिये ख़राबी है, तुझे किस चीज़ ने मुझ से धोके में रखा ? क्या तुझे इल्म न था कि मैं आज्माइश का घर हूं ? तारीकी, तन्हाई और कीड़े मकोड़ों का घर हूं, जब तू मेरे पास से गुज़रता था तो किस चीज़ ने तुझे मेरे मुतअल्लिक़ फ़रेब में मुब्तला रखा ?” अगर मुर्दा नेक हो तो एक जवाब देने वाला उस की तरफ़ से जवाब देता है : “क्या तू देखती नहीं कि येह भलाई का हुक्म देता और बुराई से मन्अ करता था।” तो क़ब्र कहती है : “तब तो मैं इस की खातिर सर सब्ज़ो शादाब बाग़ बन जाती हूं, उस का जिस्म नूर बन जाता है और उस की रूह **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में हाज़िर हो जाती है।”

(المعجم الكبير، الحديث ٩٤٢، ج ٢٢، ص ٣٧٧)

हज़रते सय्यिदुना इस्माईल बिन मुहम्मद **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الصَّمَد** हज़रते सय्यिदुना का’बुल अहबार **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** से रिवायत फ़रमाते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** का फ़रमाने ग़ैब निशान है : जब कोई शख्स क़ब्रिस्तान से गुज़रता है तो क़ब्र वाले उस को पुकार कर कहते हैं : “ऐ ग़ाफ़िल इन्सान ! अगर तू वोह जानता जो हम जानते हैं तो तेरा गोश्त और जिस्म यूँ पिघल जाता जैसे बर्फ़ आग पर पिघलती है।”

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरोबर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने जीशान है : “जो क़ब्र की ज़ियारत करना चाहे उसे चाहिये कि उस की ज़ियारत करे, लेकिन वहां अच्छी बात के इलावा कुछ न कहे, क्योंकि मय्यित को भी उन चीज़ों से अजि़य्यत होती है जिन से ज़िन्दा को अजि़य्यत होती है।” (السنن الكبرى للنسائي، كتاب الجنائز، باب زيارة القبور، الحديث २१६०، ج १، ص ६०६ مختصر)

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से मरवी है कि “कोई भी शख्स जब अपने किसी जानने वाले मोमिन भाई की क़ब्र पर से गुज़रता है और उसे सलाम करता है तो वोह उसे पहचानता और सलाम का जवाब देता है।” (تفسير ابن كثير، سورة الروم، تحت الآية ५२، ج ६، ص २९१)

खलीफ़ सुलैमान बिन अब्दुल मलिक ने हज़रते सय्यिदुना अबू हाज़िम رَحِمَهُ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ से दर्याफ़्त किया : “**ऐ अबू हाज़िम!** हम मौत को क्यूं नापसन्द करते हैं?” तो आप ने इरशाद फ़रमाया : “इस लिये कि तुम ने दुन्या को आबाद और आख़िरत को बरबाद कर दिया है, और तुम आबादी से बरबादी की तरफ़ मुन्तक़िल होने को ना पसन्द करते हो।” फिर पूछने लगा : “**ऐ अबू हाज़िम! अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ के सामने हाज़िरी कैसे होगी?” तो आप ने इरशाद फ़रमाया : “**ऐ अमीरल मोअमिनीन!** नेक आदमी गुमशुदा शख्स की तरह है जो अपने घर वालों के पास खुशी खुशी आता है और गुनहगार शख्स भागे हुए गुलाम की तरह है जो अपने आका के पास ख़ौफ़ज़दा और ग़मज़दा आता है।”

हज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान दारानी رَحِمَهُ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि मैं ने इबादत गुज़ार खातून उम्मे हारून رَحِمَهُ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهَا से पूछा : “क्या आप मरना पसन्द करती हैं?” तो उन्होंने ने फ़रमाया : “नहीं।” मैं ने पूछा : “वोह क्यूं?” तो कहने लगीं : “**अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ की क़सम! अगर मैं मख़्लूक की नाफ़रमानी करूं तो उस से मिलना पसन्द नहीं करती तो ख़ालिफ़ عَزَّ وَجَلَّ (की नाफ़रमानी कर के उस) से मिलना कैसे पसन्द करूंगी।”

**फ़िक्रे मदीना (मुहासबा) करने वाला ख़ुश नशीब :**

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र कत्तानी قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِي फ़रमाते हैं : “एक शख्स बुराइयों और ख़ताओं पर अपने नफ़्स का मुहासबा किया करता था। एक दिन उस ने अपनी ज़िन्दगी के सालों का हिसाब लगाया तो साठ साल बने फिर दिनों का हिसाब किया तो इक्कीस हज़ार पांच सो दिन (21,500) बने तो उस ने एक ज़ोरदार चीख़ मारी और बे होश हो कर गिर पड़ा। जब होश में आया तो कहने लगा : “हाए अफ़सोस! अगर रोज़ाना एक गुनाह भी किया हो तो अपने रब्ब عَزَّ وَجَلَّ के हुज़ूर इक्कीस हज़ार पांच सो गुनाह ले कर हाज़िर होउंगा तो उन गुनाहों का क्या हाल होगा जिन का शुमार ही नहीं? हाए अफ़सोस! मैं ने अपनी दुन्या आबाद की और आख़िरत बरबाद की और अपने परवर दगार عَزَّ وَجَلَّ की नाफ़रमानी करता रहा, मैं दुन्या में तो आबादी से बरबादी की तरफ़ मुन्तक़िल होना पसन्द नहीं करता तो बरोजे क़ियामत बिगैर षवाबो अमल के हिसाब व किताब कैसे दूंगा? और अज़ाब का सामना कैसे करूंगा? फिर उस ने एक ज़ोरदार चीख़ मारी और ज़मीन पर गिर गया, जब हरकत दी गई तो उस की जान जाने आफ़री के सिपुर्द हो चुकी थी।”



مَنَازِلُ دُنْيَايَ عَمَّرْتُهَا وَخَرَبْتُ دَارِي فِي الْآخِرَةِ  
أَصْبَحْتُ أَنْكَرُ دَارِي الْخَرَابِ وَأَرْغَبْتُ فِي دَارِي الْعَامِرَةِ

तर्जमा : (1)....मैं ने अपनी दुनिया के घरों को आबाद किया और आखिरत के घर को वीरान कर दिया ।

(2)....अब मैं अपने वीरान घर को नापसन्द करने लगा हूं और अपने आबाद घर में रगबत रखता हूं ।

### हुस्ने ज़न की बरकत :

हज़रते सय्यिदुना अबू उमर ज़रीर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَدِيرُ फ़रमाते हैं कि मुझे हज़रते सय्यिदुना हाज़िम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى के भाई हज़रते सय्यिदुना सहल عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى ने बताया कि “मैं ने हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَفَّار को विसाल के बा’द ख़्वाब में देखा तो पूछा : “ऐ अबू यहया عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى ! आप **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में किस हालत में हाज़िर हुए ? हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ الْغَفَّار ने इरशाद फ़रमाया : “मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में बहुत ज़ियादा गुनाहों के साथ हाज़िर हुवा जिन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मुतअल्लिक मेरे हुस्ने ज़न ने ख़त्म कर दिया ।”

एक ज़ाहिद से सुवाल किया गया : “आप कैसे हैं ?” तो उन्होंने ने येह हिक्मत भरा जवाब इरशाद फ़रमाया : “उस शख्स का हाल कैसा होगा जो बिला ज़ादे राह सफ़र का इरादा रखता है, वहशत नाक क़ब्र में बिगैर मूनिसो ग़मख़्बार के रहेगा और अपने क़ादिर मालिक की बारगाह में बिगैर हुज्जत के हाज़िर होगा ।”

### आखिरत की पहली मन्ज़िल :

हज़रते सय्यिदुना उषमान बिन अफ़फ़ान رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के बारे में है कि आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ क़ब्र पर खड़े हो कर रो रहे थे । आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से अर्ज़ की गई : “जन्नत व दोज़ख़ का ज़िक्र कर के तो आप नहीं रोते मगर क़ब्र को याद कर के रोते हैं ?” तो आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इरशाद फ़रमाया : मैं ने हुज़ूर सय्यिदुल मुबल्लिगीन, जनाबे रहूमतुल्लिल अलमीन صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को येह फ़रमाते सुना कि “क़ब्र आखिरत की मनाज़िल में से पहली मन्ज़िल है, अगर कोई इस से नजात पा गया तो बा’द वाला मुअमला इस से आसान होगा और अगर इस से नजात न हुई तो बा’द वाला मुअमला इस से भी ज़ियादा मुश्किल होगा ।”

(جامع الترمذی، ابواب الزهد، باب ماجاء فی فطاعة القبر وانه اول منازل الآخرة، الحديث ۲۳۰۸، ص ۱۸۸۴)

एक क़ब्र पर चन्द अशआर लिखे हुए थे, जिन का मफ़हूम येह है :

“बोसीदा और टूटी फूटी क़ब्रों में रहनेवालों पर सलाम हो, उन की हालत ऐसी हो चुकी है गोया वोह दुनिया की मजालिस में कभी नहीं बैठे, कभी भी उस का ठन्डा पानी नहीं पिया और न ही

कभी कुछ मजेदार खाना खाया है, ज़िन्दगी में उन का मदे मुक़ाबिल कोई न था, तबील उम्मीदें दुनिया में बांध रखी थी, लेकिन उन उम्मीदों में भी बहुत से तो शैतानी वस्वसे थे, **ऐ इन्सान !** सुन लो ! मैं नहीं जानता कि तुम्हारी क़ब्र कहां होगी ? और वोह जो बड़े दाना और अक्लमन्द हैं उन की क़ब्र कहां होगी ? बस इतना जान लो कि सब को मिट्टी तले तन्हाई व वहशत के घर में बसेरा करना है, हाए ! वोह लोग जो हमेशा उम्मीद व ना उम्मीदी की दरमियानी कैफ़ियत से दो चार रहे, अगर दुनिया में रह जाने वाले मालो मताअ में बढ़ चढ़ कर एक दूसरे से मुक़ाबला करने वाले लोग अक्ल रखते तो (इस फ़ानी दुनिया में) कभी एक दूसरे से मुक़ाबला न करते ।”

हज़रते सय्यिदुना यज़ीद रक्काशी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي अपने आप से फ़रमाया करते थे : “हलाकत हो तुझ पर ऐ यज़ीद ! तेरे मरने के बा’द कौन तेरी तरफ़ से नमाज़ पढ़ेगा ? कौन रोजे रखेगा ? कौन वुजू करेगा ?” फिर फ़रमाते : “ऐ लोगो ! तुम अपनी बक़िय्या ज़िन्दगी में अपने आप पर क्यूं नहीं रोते ? वोह शख्स जिस से मौत का वा’दा किया गया हो, जिस का घर क़ब्र हो, जिस का बिछौना मिट्टी हो, और जिस के साथी कीड़े मकोड़े हों और उस के साथ साथ वोह बड़ी घबराहट के दिन का भी इन्तिज़ार कर रहा हो तो उस का हाल कैसा होगा ? और उस का अन्जाम कैसा होगा ?” फिर आप रोने लग जाते यहां तक कि बे होश हो कर ज़मीन पर तशरीफ़ ले आते ।”

मरवी है कि एक औरत ने उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीका رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا से क़सावते क़ल्बी (या’नी दिल की सख्ती) का ज़िक्र किया तो आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا ने इरशाद फ़रमाया : “मौत को क़षरत से याद किया कर तेरा दिल नर्म हो जाएगा ।” जब उस औरत ने ऐसा किया तो उस का दिल नर्म हो गया पस उस ने उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीका رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا का शुक्रिया अदा किया ।”

हज़रते सय्यिदुना अबू दर्दा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ बीमार हो गए तो लोगों ने अर्ज़ की : “किसी चीज़ की ख़्वाहिश हो तो फ़रमाइये ।” आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इरशाद फ़रमाया : “जन्नत की ।” तो उन्होंने ने फिर अर्ज़ की : “क्या हम आप के लिये तबीब लाएं ?” तो आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इरशाद फ़रमाया : “तबीब ने ही तो मुझे मरज़ लाहिक़ फ़रमाया है ।” आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के किसी दोस्त ने अर्ज़ की : “ऐ अबू दर्दा ! क्या आप चाहते हैं कि मैं आप के साथ रात भर जागता रहूं ?” तो आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इरशाद फ़रमाया : “तुम्हें मरज़ से अफ़ियत है जब कि मैं मरज़ में मुब्तला हूं, लिहाज़ा अफ़ियत तुम्हें जागने नहीं देगी और बला मुझे सोने नहीं देगी । फिर फ़रमाया : “मैं **अब्बाह** वहदहू ला शरीक की बारगाह में दुआ करता हूं कि वोह अहले अफ़ियत को शुक्र और अहले बला को सब्र की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए ।” (आमीन)

एक ख़ुत्बे में है : “**ऐ लोगो !** उम्मीदें लपेट दी जाएंगी, उम्रें फ़ना हो जाएंगी, जिस्म मिट्टी के नीचे बोसीदा हो जाएंगे, जब कि रात और दिन (मौत के) क़ासिद की तरह तेज़ी से दौड़े चले जा रहे हैं । हर दूर को क़रीब करते और नए को पुराना करते हैं । **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ के बन्दे तो वोह हैं जो ख़्वाहिशात से ग़ाफ़िल, लज़ात से कनाराक़श और बाक़ी रहने वाले आ’माल की तरफ़ राग़िब होते हैं ।”

हदीषे पाक में है : “नेक बन्दा जब मौत की सख्तियों से दो चार होता है तो उस के आ’ज्जा एक दूसरे को कहते हैं : السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللَّهِ”

(تفسير القرطبي، سورة ق، تحت الآية: ١٩، الجزء السابع عشر، ج ٩، ص ١١)

हज़रते सय्यिदुना हस्सान बिन अबी सिनान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ से पूछा गया : “अपने आप को कैसा महसूस करते हैं? तो आप ने फ़रमाया : अगर मैं जहन्नम से नजात पा जाऊं तो खैरियत है।” फिर अर्ज की गई : “आप की ख्वाहिश क्या है? तो आप ने इरशाद फ़रमाया : “मुझे एक तबील रात की ख्वाहिश है कि जिस में सारी रात नमाज़ अदा करता रहूं।”

(حلية الاولياء، حسان بن ابی سنان، الحديث ٣٤٦٧، ج ٣، ص ١٣٩، بتغير قليل)

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उतबा رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ इरशाद फ़रमाते हैं : “मैं ने एक मरीज़ की इयादत की। जब मैं उस के पास बैठा तो मैं ने उस से पूछा : “अपने आप को कैसा महसूस करते हैं?” तो उस ने जवाब में चन्द अशआर पढ़े :

خَرَجْتُ مِنَ الدُّنْيَا وَقَامْتُ قِيَامَتِي  
عَدَاةً أَقَلَّ الْحَامِلُونَ جَنَائِزِي  
وَعَجَلُ أَهْلِي حَفَرُ قَبْرِي وَصَبْرُؤَا  
خُرُوجِي وَتَعْجِيلِي إِلَيْهِ كَرَامَتِي  
كَانَهُمْ لَمْ يَعْرِفُوا قَطُّ صُحْبَتِي  
عَدَاةً أَتَى يَوْمِي عَلَيْهِ وَسَاعَتِي

तर्जमा : (1)....मेरे कूच का वक्त आ गया और मैं दुनिया से निकल खड़ा हुवा, कल थोड़े से लोग मेरे जनाजे की चारपाई उठाए होंगे।

(2)....मेरे घर वाले जल्दी जल्दी मेरी कब्र खुदवाएंगे फिर मेरी ता’जीम करते हुए जल्दी जल्दी मुझे कब्र की तरफ ले जाएंगे।

(3)....जिस सुब्ह मेरी मौत की घड़ी आई तो ऐसा लगा जैसे मेरी सोहबत को वोह कभी पहचानते ही न थे।

हज़रते सय्यिदुना मुज़नी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَنِي ने हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई الكافي से पूछा : “ए अबू अब्दुल्लाह ! आप की हालत कैसी है?” आप रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने इरशाद फ़रमाया : “मैं दुनिया से कूच करने वाला, भाइयों से जुदा होने वाला, अपने बुरे आ’माल की सज़ा पाने वाला, मौत का प्याला पीने वाला और रब्ब عَزَّ وَجَلَّ की बारगाह में हाज़िर होने वाला हूं और मैं नहीं जानता कि मेरी रूह जन्नत में जाएगी कि मैं उसे मुबारक बाद दूं या जहन्नम में जाएगी कि उस से ता’जियत करूं।”

(الزهّد الكبير للبيهقي، فصل آخر في قصر الآمل والمبادرة..... الخ، الحديث ٥٧٥، ص ٢٢٢)

फिर आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने कुछ अशआर पढ़े जिन का मफ़हूम येह है :

“ए मेरे **اَبُو** ! عَزَّ وَجَلَّ जब मेरा दिल सख्त हो गया और रास्ते तंग हो गए तो मैं ने अपनी उम्मीद तुझी से बांध ली ताकि तेरे अफ़वो करम के सदके महफूज़ रहूं, ए मेरे परवर दगार मेरे गुनाह मुझ पर संगीन सूरते हाल इख़्तियार कर गए तो मैं ने इन को तेरे अफ़वो करम से मिला दिया, पस तेरा अफ़वो करम इन पर अपनी अज़मत में ग़ालिब आ गया। अब मैं ऐसा शख्स



बन गया हूं जिस के गुनाह मुआफ़ कर दिये गए हैं और तू ने महज़ अपने फज़्लो करम से मुआफ़ फ़रमा दिया, ऐ काश ! मैं जान सकता कि मैं जन्नत में जाऊंगा कि मुबारक बाद वुसूल करूं या जहन्नम में जाऊंगा कि शर्मसार किया जाऊं ।”

मन्कूल है कि एक शख्स किसी क़ब्र के करीब दो रकअत नमाज़ अदा करने के बा'द लैट गया । ख़्वाब में उस ने साहिबे क़ब्र को येह कहते हुए सुना : “ऐ शख्स ! तुम अमल कर सकते हो लेकिन इल्म नहीं रखते, हमारे पास इल्म है लेकिन हम अमल नहीं कर सकते, खुदा की क़सम ! मेरे नाम ए आ'माल में नमाज़ की दो रकअतें मुझे दुन्या व मा फ़ीहा (या'नी दुन्या और जो कुछ इस में है) से ज़ियादा महबूब है ।”

मन्कूल है कि “एक अबिद अपने एक दोस्त की क़ब्र पर आया जिस से उसे महब्वत थी और चन्द अशआर पढ़े, जिन का मफ़हम येह है :

“मुझे क्या हुवा कि जब मैं क़ब्रों पर सलाम करते हुए अपने दोस्त की क़ब्र से गुज़रता हूं तो वोह मेरे सलाम का जवाब नहीं देता, ऐ मेरे हबीब ! तुझे क्या हुवा कि पुकारने वाले का जवाब नहीं देता ? क्या तू मुझ से जुदा होने के बा'द दोस्तों से उक्ता गया ? अगर वोह जवाब देने के लिये बोल सकता तो मुझ से येही कहता कि मिट्टी मेरे ख़ूबसूरत आ'ज़ा और जवानी को खा गई । वोह अबिद कहता है कि क़ब्र से एक गैबी आवाज़ आई, वोह कह रहा था : हबीब ने कहा : मैं कैसे तुम्हारा जवाब दूं ? हालांकि मैं मिट्टी और एक ताक़तवर के हां कैद हूं । मिट्टी मेरे हसीन जिस्म को खा गई पस मैं तुम को भूल गया और मिट्टी ने मुझे अपने घर वालों और दोस्तों से पोशीदा कर दिया । पस तुम पर मेरा सलाम हो, हमारी और तुम्हारी दोस्तियां ख़त्म हो गई, मेरी जिल्द और रुख़सार गल सड़ गए, मैं ने दुन्या में कितनी ही बार आ'ला किस्म के लिबास ज़ैबेतन किये, मेरे हाथ की उंगलियां जुदा हो गई जो तहरीर के लिये कितनी ही ख़ूबसूरत थीं, मोतियों जैसे दांत गिर गए जो जवाब देने के लिये कितने ही अच्छे थे और मेरी आंखें रुख़सारों पर बह गई, मैं ने कितनी ही बार उन से अपने दोस्तों का दिदार किया ।”

हज़रते सय्यिदुना षाबित बुनानी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि “मैं क़ब्रों की ज़ियारत, मुर्दों से इब्रत हासिल करने, दोबारा जी उठने के मुआमले में ग़ौरो फ़िक्क करने और अपने नफ़्स को नसीहत करने के लिये एक क़ब्रिस्तान में दाख़िल हुवा ताकि मेरा नफ़्स सरकशी और गुनाहों से रुक जाए, मैं ने क़ब्र वालों को इतना तन्हा और ख़ामोश पाया कि वोह एक दूसरे से मिलते हैं, न आपस में हम कलाम होते हैं । लिहाज़ा मैं उन की गुफ़्तगू सुनने से मायूस हो गया और उन के अहवाल देख कर इब्रत हासिल की । जब मैं ने निकलने का इरादा किया तो एक आवाज़ सुनाई दी : “ऐ षाबित ! क़ब्र वालों की ख़ामोशी तुझे धोके में न डाले, इन में कितने ही ऐसे हैं जिन को उन की क़ब्रों में अज़ाब दिया जा रहा है ।”

मन्कूल है कि हज़रते सय्यिदुना दावूद त़ाई رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِ एक औरत के पास से गुज़रे जो एक क़ब्र पर बैठी रो रही थी और येह अशआर पढ़ रही थी :

عَدِمْتُ الْحَيَاةَ فَلَا يَنْتَهَى  
وَكَيفَ اللَّهُ يَطْعِمُ الْكَرَى  
إِذْ أَنْتَ فِي الْقَبْرِ قَدْ أَوْسَدُوا  
وَهَا أَنْتَ فِي الْقَبْرِ قَدْ أَفْرَدُوا

**तर्जमा :** (1)....तुम्हारी ज़िन्दगी ख़त्म हो गई, अब तू उस को न पा सकेगा जब कि तू क़ब्र में है और लोगों ने तुझे यहां पहुंचाने में जल्दी की।

(2)....और मैं क्यूंकर सुकून की नींद से लुप्त अन्दोज़ हो सकती हूं, अब जब कि तू अपनी क़ब्र में है और लोगों ने तुझे तन्हा छोड़ दिया।

इस के बा'द उस औरत ने कहा : “हाए, मेरे बाप ! तेरे किस रुख़सार से कीड़ों ने इब्तिदा की ?” हज़रते सय्यिदुना दावूद ताई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ येह सुन कर बेहोश हो गए और ज़मीन पर तशरीफ़ ले आए।”

**प्यारे इस्लामी भाइयो !** सुकून की नींद से बेदार हो जाओ और अज़िज़ी व इन्किसारी के साथ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में हाज़िर हो कर पनाह त़लब करो। यूं समझो कि तुम्हें मौत आ चुकी है जिस ने इत्तिमाइयत को ख़त्म कर के रख दिया और महल्लात और मकानात को ख़ाली कर दिया और उन लोगों पर आसूओं के बादलों ने बारिश बरसाई और उन के गिरवीदा लोगों ने रोती आंखों और दिले पुर दर्द से उन्हें पुकारा।

**मिले खाक में अहले शां कैसे कैसे ?**

हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّارُ फ़रमाते हैं कि मैं एक क़ब्रिस्तान में ज़ियारत व नसीहत और मौत के मुतअल्लिक़ ग़ौरो फ़िक्क़ और इब्रत हासिल करने की खातिर आया। मैं ने तमन्ना की, कि कोई शख्स मुझे इन के मुतअल्लिक़ कुछ बताए या इन का कोई इब्रत नाक वाकिआ बयान करे। चुनान्चे, मैं ने ऐसी ग़म भरी आवाज़ में दर्जे ज़ैल शे'र पढ़ा कि जिस ने ग़ौरो फ़िक्क़ से मेरे ग़मों के चक़माक़ को आग लगा दी (चक़माक़ एक मख़सूस पथ्थर है जिस को रगड़ने से आग पैदा होती है) :

أَتَيْتُ الْقُبُورَ فَتَذَيُّنُهَا فَأَيِّنَ الْمُعْظَمِ وَالْمَحْتَقَرِ  
وَأَيِّنَ الْمُدُلِّ سُلْطَانِهِ وَأَيِّنَ الْعَزِيزِ إِذَا مَا افْتَحَرَ

**तर्जमा :** (1)....मैं क़ब्रों का पास आया और उन्हें पुकार कर कहा : कहां हैं वोह लोग, दुन्या में जिन की इज़्ज़त की जाती थी और वोह जिन को हकीर समझा जाता था ?

(2)....और कहां हैं वोह जिन्हें अपनी सल्तनत पर बहुत भरोसा था ? कहां हैं वोह इज़्ज़तदार जो फ़ख़्र किया करते थे ?

आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : “मैं वज्द से बेहोश था कि मुझे एक क़ब्र से जवाब मिला जिस का मफ़हूम येह है :

“वोह सब फ़ना हो गए, अब उन की ख़बर देने वाला भी कोई नहीं, वोह सब मर कर इब्रत का निशान बन गए और बारगाहे रब्बुल इज़्ज़त में हाज़िर हो गए। ऐ गुज़रे हुए लोगों के बारे में मुझ से पूछने वाले ! क्या तेरे पास उन गुज़रे हुआं की इब्रत वाली कोई बात नहीं।” हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّارُ फ़रमाते हैं : “जब मैं वापस आया तो मुसल्लसल आंसू बहा रहा था और मुझे इस से बहुत इब्रत हासिल हुई।”

एक मर्दे सालेह फ़रमाते हैं : “एक मरतबा मैं ने क़ब्रों की ज़ियारत की तो मेरे दिल में नारे जहन्म के ख़ौफ़ का शो'ला भड़क उठा । मैं एक लम्हे के लिये क़ब्रों के पास ठहर गया और निगाहे इब्रत से उन को देखने लगा और इस के बा'द सुब्हो शाम के दोनों कनारों में अहले क़ब्र से सर गोशियां करता और बैठा रहता । पस मेरी सोच ग़ौरो फ़िक्क और इब्रत के मैदान में घूमने लगी तो मैं ने उन को मुखा़तब कर के कुछ बातें की जिन्हें मैं ने प्यारे प्यारे अश'आर की लड़ी में इस तरह पिरो दिया :

أَحِبَّائِنَا فَارْتَمُونَا فَأَوْحَشَتْ	قُلُوبُنَا لِمَا بَعْدَكُمْ وَدَيَّرَ
فَكُمُ قَدْ تَذَاكُرْنَا مَحَابِينَ مَنْ مَضَى	فَجَاءَتْ دُمُوعٌ لِفِرَاقِ عَزَائِرِ
فَضُّوْا وَقَضَيْتُمْ ثُمَّ نَقَضَى فَلَا بَقَا	لِحَيٍّ وَكَأْسَاتُ الْمُتُونِ تَدَارُ
وَكُنَّا وَإِلَّاكُمْ نَزُورُ مَقَابِرًا	وَمُتُّمْ فَزُرْنَاكُمْ وَسَوْفَ نُزَارُ
سَقَتْ دِيمَةُ الرِّضْوَانِ رِيًّا تَرَاكُمُوْ	وَسَحَّتْ لَهَا فِي سَاحَتِيهِ بَحَارُ

तर्जमा : (1)....ऐ हमारे अज़ीजो ! तुम हमें छोड़ कर चले गए तुम्हारे बा'द हमारे दिल और घर वीरान हो गए ।

(2)....जितनी मरतबा भी हम ने चले जाने वालों की खूबियां याद कीं तो उन दोस्तों की जुदाई की वजह से हमारे आंसू कषरत से बहने लगे ।

(3)....तुम से पहले लोगों को भी मौत ने आ लिया तुम भी चल बसे और हम भी फ़ना के घाट उतर जाएंगे । पस किसी भी ज़िन्दा के लिये बका नहीं क्योंकि मौत के प्याले घूमते रहते हैं ।

(4)....हम और तुम क़ब्रिस्तान की ज़ियारत करते थे पस तुम मर गए तो हम तुम्हारी (क़ब्रों की) ज़ियारत कर रहे हैं अंन क़रीब (हम भी मर जाएंगे और) लोग हमारी (क़ब्रों की) ज़ियारत करेंगे ।

(5)....तुम पर बख़्शिश की बारिश हमेशा हमेशा बरसती रहे इस तरह कि इस में समन्दर समा जाएं ।

वोह सालेह बुजुर्ग फ़रमाते हैं :

“पस उसी वक़्त जबाने हाल ने जवाब दिया जिन को मैं अश'आर में बयान करता हूं :

يَقُولُ لِسَانُ الْحَالِ إِذْ أَخْرَسَ الرَّدَى	لِسَانًا لَهُمْ مِنْهُ الْفَصِيحُ يَغَارُ
شَرِبْنَا بِكَاسِ اسْكُرْنَا مَرِيْرَةً	أَلَا رَبُّ سَكِرَ مَا حَوَاهُ عَقَارُ
فَلَا يَغْتَرَّرُ بِاللَّهِ مَنْ عَاشَ بَعْدَنَا	بِعَمِيشٍ فَأَيَّامُ الْحَيَاةِ قِصَارُ
وَإِنَّا وَجَدْنَا خَيْرَ أَزْوَادِنَا التَّقَى	هُوَ الرِّبْحُ خَفَا مَا عَدَاهُ خَسَارُ
وَمَا الْعَمِيشُ إِلَّا زُرَّةُ الطَّيْفِ فِي الْكَرَى	وَمَا هَذِهِ الدُّنْيَا الدَّيْبَةُ دَارُ

तर्जमा : (1)....जब मौत ने उन की ज़बान को बन्द कर दिया तो उस की तरफ़ से फ़सीह ज़बाने हाल जवाब देती है कि,

(2)....हम ने एक प्याला पिया जिस ने हमें ज़बरदस्त नशा दिया । ख़बरदार ! कितने ही नशे ऐसे हैं जिन को शराब ने अपनी लपेट में लिया हुवा है ।

(3)....हमारे बा'द ज़िन्दा रहने वाला ज़िन्दगी के ऐशो इश्रत की वजह से **अब्लाह** غَرَّ وَجَلَّ से ग़फ़लत न बरते पस ज़िन्दगी के दिन बहुत ही कम हैं ।



(4)....और हम ने अपने जादे राह में से तक्वा को सब से बेहतर पाया, येही हकीकी नफ़अ है, इस के इलावा सब कुछ ख़सारा है।

(5)....और ज़िन्दगी तो सिर्फ़ नींद में आने वाले ख़्वाब की तरह है और यह ज़लील दुनिया (मुस्तक़िल) घर नहीं।

**ऐ दुनिया में रहने वाले !** मौत के शेर से डर, बेशक येह हमला आवर होगा, फिर येह लज़्ज़ात की तरफ़ माइल होना कैसा ? और तहकीक़ मौत तेरी तलाश में है, ऐ शख्स ! इन हलाक होने वाले पहलवानों से इब्रत पकड़ पस इन में ग़ौर करने वाले के लिये नसीहतें हैं।

لَقَدْ زُرْتُ أَقْوَامًا كَرَامًا أُجِبُّهُمْ وَهُمْ تَحْتَ أَطْبَاقِ الثَّرَى فِيهِ أَمَوَاتٌ  
وَوَاصَلَتْهُمْ مِنْ بَعْدِ بَيْنٍ وَفُرْقَةٍ فَكَانَ لَنَا فِيهِمْ عِظَاتٌ وَأَنْصَاتٌ  
وَأَعَجَبُ شَيْءٍ فِي الْوُجُودِ اجْتِمَاعُنَا وَنَحْنُ عَلَى ذَلِكَ التَّوَاصِلِ أَشْنَاتٌ

**तर्जमा :** (1)....बेशक मैं बहुत से मुअज़्ज़ज लोगों से मिला जिन से मुझे महब्वत थी और अब वोह मिट्टी के ढेर तले मुर्दा पड़े हैं।

(2)....कुछ अर्से बा'द मैं भी उन से जा मिलूंगा, पस उन में हमारे लिये नसीहतें और ग़ौर से सुनने वाली बातें हैं।

(3)....और मौत इन्तिहाई तअज्जुब खेज़ चीज़ है कि मरने में तो हम सब इकठ्ठे हैं मगर उसे पाने में (वक्त के ए'तिबार से) हम सब मुख़लिफ़ हैं।

मन्कूल है कि उसी सालेह बुजुर्ग ने एक क़ब्र पर इस तरह लिखा हुवा पाया :

إِصْبِرْ لِدَهْرِ نَالٍ مِنْ لَكَ فَهَكَذَا مَضَتْ الدُّهُورُ  
فَرَحًا وَحُزْنًا مَرَّةً لَا الْحُزْنَ دَامَ وَلَا السُّرُورُ

**तर्जमा :** (1)....उस ज़माने पर सब्र कर जिस ने तुझे रुस्वा किया, इसी तरह बहुत सारे ज़माने गुज़र चुके हैं।

(2)....खुशी और ग़मी एक ही मरतबा होती है, न ग़मी हमेशा रहती है, न ही खुशी। हज़रते सय्यिदुना इस्मई'ल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوَى फ़रमाते हैं : “मैं हैरत अंगेज़ उमूर और हशरो नशर में बड़ा ग़ौरो फ़िक्क़ किया करता था और मैं क़ब्रों पर लिखा हुवा पढ़ कर सुकून हासिल करता था पस इस दौरान मैं ने तीन क़ब्रें देखीं उन पर तख़्तायां थीं जिन पर येह लिखा हुवा था :

أَلَا قَلَّ لِمَاشٍ عَلَى قَبْرِنَا غُفُورٌ لِأَشْيَاءٍ حُلَّتْ بِنَا  
سَيِّئُكُمْ يَوْمًا لَتَفْرِيطِهِ كَمَا قَدْ نَدِمْنَا لَتَفْرِيطِنَا

**तर्जमा :** (1)....सुन लो ! हमारी क़ब्र के पास से गुज़रने वाले के लिये कम मुदत है, वोह उन चीज़ों से बहुत ज़ियादा गाफ़िल है जो हमें पहनाई गई हैं।

(2)....अन क़रीब एक दिन वोह अपनी ग़फ़लत की वजह से शर्मसार होगा जैसा कि हम अपनी ग़फ़लत की वजह से शर्मिन्दा हुए।

और आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं : “इसी तरह मैं ने क़ब्र पर लगे हुए एक पथ्थर पर भी येह लिखा हुवा पाया :

وَقَفْتُ عَلَى الْأَجْبَةِ حِينَ صَفَّتْ قُبُورُهُمْ كَأَفْرَاسِ الرِّهَانِ  
فَلَمَّا أَنْ بَكَيْتُ وَفَاضَ دَمْعِي رَأَتْ عَيْنَايَ بَيْنَهُمْ مَكَانِي

तर्जमा : (1)....मैं दोस्तों के पास रुका, उन की क़ब्रें दौड़ लगाने वाले घुड़ सुवारों की तरफ़ सफ़ बस्ता थीं ।

(2)....पस जब मैं रोया और मेरे आंसू बहने लगे तो मेरी आंखों ने उन के दरमियान मेरा मकान देख लिया ।

आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ मज़ीद फ़रमाते हैं : “इसी तरह मैं थोड़ा सा चला मेरे आंसू बह रहे थे और मेरा दिल फ़िराके अहबाब से छलनी था, मैं ने एक क़ब्र पर लगी तख़्ती पर येह अशआर लिखे हुए देखे :

يَا أَيُّهَا النَّاسُ كَانَ لِي أَمَلٌ      قَصَرْتُ عَنْ بُلُوغِهِ الْأَجَلُ  
فَلْيَقِ اللَّهَ رَبُّهُ رَجُلٌ      أَمَكْنَهُ فِي حَيَاتِهِ الْعَمَلُ  
مَا أَنَا وَحْدِي جُعِلْتُ حَيْثُ تَرَى      كُلُّ إِلَى مَا نُقِلْتُ يَنْتَقِلُ

तर्जमा : (1)...ऐ लोगो ! मेरी बहुत सी उम्मीदें थीं मेरे मर जाने से वोह ना मुकम्मल रह गई ।

(2)....पस **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ जिस शख्स पर रहूम फ़रमाता है उसे दुन्यावी ज़िन्दगी में अमल का मौक़अ अता फ़रमा देता है ।

(3)....सिर्फ़ मुझे ही यहां नहीं रखा गया बल्कि तू देखेगा कि जिधर मुझे भेजा गया हर एक उधर ही मुन्तक़िल होगा ।

और आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : “इसी तरह मैं ने एक और क़ब्र पर लिखा हुवा देखा :

قِفْ وَاعْتَبِرْ فَقَرِيبًا      تَحِلُّ هَذَا الْمَحَلًّا  
هَذَا مَكَانٌ يُسَاوِي      فِيهِ الْأَعْزُ الْأَذَلًّا

तर्जमा : (1)....(ऐ गुज़रने वाले !) ज़रा ठहर जा ! और इब्रत हासिल कर, अंन क़रीब तुझे भी इस मकान में उतरना है ।

(2)....येह ऐसा मकान है जिस में इज़्ज़तो ज़िल्लत वाले सब बराबर हैं ।  
और फ़रमाते हैं : “मैं ने एक औरत को देखा जो अपने बेटे की क़ब्र पर रो रो कर येह अशआर पढ़ रही थी :

بِاللَّهِ يَا قَبْرُ هَلْ زَالَتْ مَحَاسِنُهُ      وَهَلْ تَغَيَّرَ ذَاكَ الْمَنْظَرُ النَّصْرُ  
يَا قَبْرُ مَا أَنْتِ لَا رَوْضٌ وَلَا فَلَكُ      فَكَيْفَ يَجْمَعُ فِيكَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ

तर्जमा : (1)....**अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! ऐ क़ब्र ! क्या इस के ख़ूबसूरत आ'जा बरबाद हो गए ? और क्या इस का पुर कशिश और तरो ताज़ा (चेहरा) तब्दील हो गया ?

(2)....ऐ क़ब्र ! तू क्या है ? तू बाग़ है, न आस्मान फिर कैसे तुझ में चांद सूरज (जैसे लोग) जम्अ हो जाते हैं ।

और फ़रमाते हैं : “इसी तरह एक दिन मैं कुछ ऐसी क़ब्रों के पास से गुज़रा जिन को मैं पहचानता था और वोह सब ऐसे थे जिन्हों ने बहुत खुश व ख़ुर्रम, ऐशो इशरत और लज़्ज़ातो शहवात में ज़िन्दगी गुज़ारी । मैं ने उन की क़ब्रों की एक तख़्ती पर येह अशआर लिखे हुए पाए :

أَيُّهَا الْمَاشِيُ بَيْنَ هَذِي الْقُبُورِ  
أَذُلُّ مِنِّي أُنَيْبِكَ عَنِّي وَلَا يُنْ  
أَنَا مَيِّتٌ كَمَا تَرَانِي طَرِيحٌ  
أَنَا فِي بَيْتِ غُرْبَةٍ وَأَنْفِرَادٍ  
لَيْسَ لِي فِيهِ مُؤَيِّسٌ غَيْرَ سَعْيٍ  
فَكَذًا أَنْتَ فَاعْتَبِرْ بِي وَلَا  
عَافِلًا عَنْ مُعَقَّبَاتِ الْأُمُورِ  
بَيْكَ عَنِّي يَا صَاحِبَ مِثْلِ خَبِيرِ  
بَيْنَ أَطْبَاقِ جُنْدَلٍ وَصَحُورِ  
مَعَ قُرْبَى مِنْ جِيرَتِي وَعَشِيرِ  
مِنْ صَلاَحِ سَعْيَتِهِ أَوْ فُجُورِ  
صِرْتُ مِثْلِي رَهْمِينَ يَوْمَ النُّشُورِ

**तर्जमा :** (1)....ऐ उमूरे आखिरत से गाफिल हो कर इन कब्रों के दरमियान चलने वाले !

(2)....मेरे क़रीब आ कि मैं तुझे अपने हालात से बा ख़बर करूं, ऐ मोहतरम ! जानने वाले की तरह तुझे कोई नहीं बताएगा ।

(3)....मैं मुर्दा हूं जैसा कि तू देख रहा है कि मुझे बन्जर और चटियल मैदान में डाल दिया गया है ।

(4)....अपने पड़ोसियों और घर वालों के बा वुजूद मैं इस वीरान घर में अकेला हूं ।

(5)....नेकियों और गुनाहों के इलावा क़ब्र में मेरे साथ कोई नहीं ।

(6)....इसी तरह तुझे भी यौमे क़ियामत के लिये यहां गिरवी रखा जाएगा लिहाज़ा मुझ से इब्रत हासिल कर, वरना तेरा भी मेरे जैसा हाल होगा ।

**मख़ियत क़ब्र पर आने वाले को देखती है :**

हज़रते सय्यिदुना फुज़ैल बिन इयाज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الرَّزَّاق से मन्कूल है, बा'ज ने कहा है कि इन्हे मुवफ़फ़क़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى ने फ़रमाया : “मैं अपने वालिद साहिब की क़ब्र की अक़षर ज़ियारत किया करता था, एक दिन मैं एक जनाज़े के हमराह उस क़ब्रिस्तान की तरफ़ गया जिस में मेरे वालिद मदफून थे मुझे कोई काम था जिस की वजह से मैं ने वापसी में जल्दी की और अपने वालिद की क़ब्र की ज़ियारत न कर सका, रात ख़्वाब में वालिद साहिब को देखा, उन्होंने ने फ़रमाया : “ऐ मेरे बेटे ! कल तू क़ब्रिस्तान आया था लेकिन मेरे पास न आया ।” मैं ने कहा : “अब्बाजान ! क्या आप जानते हैं कि मैं आप के पास आया था ?” तो उन्होंने ने फ़रमाया : “जी हां ! **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तू मेरे पास आता है तो मैं तुझे लगातार देखता रहता हूं यहां तक कि तू पुल पार कर के मेरे पास पहुंचता है और मेरे पास बैठता है फिर खड़ा होता है तो वापसी में भी मैं तुम्हें देखता रहता हूं यहां तक कि तू पुल पार कर जाता है ।”

मन्कूल है कि “एक घुड़ सुवार एक लड़के के क़रीब से गुज़रा तो उस से पूछा : “ऐ लड़के ! आबादी कहां है ? लड़के ने कहा : “उस घाटी पर चढ़ जाएं ।” जब वोह घाटी पर चढ़ा तो उसे एक क़ब्रिस्तान नज़र आया, कहने लगा : यकीनन येह लड़का या तो जाहिल है या फिर कोई दाना व अक्लमन्द । वोह उस की तरफ़ वापस आया और कहा : “मैं ने तुझ से आबादी के मुतअल्लिक़ पूछा था लेकिन तू ने मुझे क़ब्रिस्तातन वालों का रास्ता दिखाया ।” तो उस लड़के ने कहा : “मैं ने इस तरफ़



के अफ़राद को उधर जाते तो देखा है लेकिन उधर वालों को इस तरफ़ आते कभी नहीं देखा बल्कि येह वीराना (या'नी क़ब्रिस्तान) तो अब आबादी में बदल चुका है। अगर आप मुझ से पूछते कि मुझे और मेरे जानवर को ठिकाना कहां मिल सकता है तो मैं आप को उस आबादी का पता बताता।" फिर उस ने चन्द अश'अर पढ़े :

نَفْسٌ رُّوْرَى الْقُبُورَ وَاعْتَبَرَهَا	حَيْثُ فِيهَا لِمَنْ يَرْوُرُ عِظَاتُ
وَانْظُرِي كَيْفَ حَالُ مَنْ حَلَّ فِيهَا	بَعْدَ عِزِّوَهُمْ بِهَا اَمَوَاتُ
حَرَصُوا اَمَلُوا كَجِرْحِكَ يَا نَفْسُ	وَوَافَاهُمْ الْجِجَامُ فَمَا نُوا
فَالسَّرَاةُ الْعِظَامُ مِنْهُمْ عِظَامُ	فِي بَطُونِ الشَّرَى حِطَامُ رُقَاتُ
فَكَانَ قَدْ حَلَلَتْ فِي مَصْرِعِ الْقَوُ	مَ وَحُلَّتْ بِجِسْمِكَ الْمَثَلَاتُ

**तर्जमा :** (1)....ऐ नफ़्स ! क़ब्रों की ज़ियारत कर के इब्रत हासिल किया कर क्योंकि इन में ज़ियारत करने वाले के लिये बहुत नसीहतें हैं।

(2)....और देख कि इन में उतरने वाले इज़्ज़त के बा'द कैसी ज़िल्लत में हैं और वोह इस में मुर्दा पड़े हैं।

(3)....ऐ नफ़्स ! वोह भी तेरी तरह लम्बी लम्बी उम्मीदों वाले और हरीस थे लेकिन मौत ने उन के दिन पूरे कर दिये पस वोह मर गए।

(4)....बहुत शानदार और मज़्बूत जिस्म वालों की हड्डियां मिट्टी के पेट में रेज़ा रेज़ा हो गई।

(5)....गोया तू लोगों के मैदाने कारज़ार में आ चुका है और तेरे जिस्म का मुल्ला कर दिया गया (या'नी नाक, कान वगैरा काट कर शकल बिगाड़ दी गई) है।

**मलकुल मौत का ए'लान :**

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से मरवी है कि सरकारे वाला तबार, हम बेकसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख्तार बि इज़्ने परवर दगार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने इब्रत निशान है : “कोई दिन ऐसा नहीं कि जिस में मलकुल मौत (عَلَيْهِ السَّلَام) क़ब्रिस्तान में येह ए'लान न करता हो : “ऐ क़ब्र वालो ! आज तुम्हें किन लोगों पर रश्क है ?” तो वोह जवाब देते हुए कहते हैं : “हमें मस्जिद वालों पर रश्क है कि वोह मस्जिदों में नमाज़ पढ़ते हैं और हम नमाज़ नहीं पढ़ सकते। वोह रोज़े रखते हैं और हम नहीं रख सकते। वोह सदका करते हैं और हम नहीं कर सकते। वोह **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ का ज़िक्र करते हैं और हम नहीं कर सकते।” फिर अहले क़ब्र अपने गुज़श्ता ज़माने पर नादिम (या'नी शर्मसार) होते हैं।”

**एक महीने में चार हज़ :**

हज़रते सय्यिदुना इमाम औज़ाई رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना मैसरा बिन हुसैन رَحِمَهُ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ एक दिन क़ब्रिस्तान के रास्ते से गुज़रे, आप رَحِمَهُ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ की नज़र

कमजोर थी जिस की वजह से एक शख्स आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ का हाथ पकड़ कर आगे आगे जा रहा था यहां तक कि क़ब्रिस्तान आ गया। उस शख्स ने अर्ज़ की : “ऐ मैसरा ! येह क़ब्रिस्तान है।” तो आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने कहा :

السَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا أَهْلَ الْقُبُورِ! أَنْتُمْ لِنَاسِلَفٍ وَنَحْنُ لَكُمْ خَلَفٌ فَرَحِمْنَا اللَّهَ وَإِيَّاكُمْ وَغَفَرَ لَنَا وَلَكُمْ وَبَارَكَ لَنَا وَلَكُمْ فِي الْقُدُومِ عَلَيْهِ إِذَا صِرْنَا إِلَى مَا صِرْتُمْ إِلَيْهِ  
या'नी ऐ क़ब्र वालो ! तुम पर सलामती हो तुम हमारे अगले हो और हम तुम्हारे बा'द आने वाले हैं। हम यहां आए तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ हम पर और तुम पर रहम फ़रमाए, हमारी और तुम्हारी बख़्शिश फ़रमाए और अपनी बरकत से नवाजे जब हम भी वहां पहुंचें जहां तुम पहुंचे हो।”

हज़रते सय्यिदुना इमाम औज़ाई رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : “**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने क़ब्र वालों में से एक शख्स की रूह लौटा दी तो उस ने फ़सीह ज़बान में जवाब देते हुए कहा : “ऐ दुन्या वालो ! तुम्हें मुबारक हो ! तुम एक माह में चार मरतबा हज़ करते हो।” हज़रते सय्यिदुना मैसरा रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने दर्याफ़्त फ़रमाया : “**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ तुम पर रहम फ़रमाए, चार मरतबा कैसे ?” तो जवाब मिला : “नमाज़े जुमुआ अदा करना, क्या तुम नहीं जानते कि येह हज़्जे मक्बूल है।”

फिर हज़रते सय्यिदुना मैसरा रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने पूछा : **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ तुम पर रहम फ़रमाए, मुझे उस अमल के मुतअल्लिक़ बताओ जो तुम ने दुन्या में किया हो और उस ने तुम को नफ़अ दिया हो ?” तो उस ने जवाब दिया : “बख़्शिश की दुआ करना दुन्या वालों के लिये आखिरत में सब से ज़ियादा नफ़अ बख़्श है।” आप रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने फिर उस से पूछा : किस चीज़ ने तुम्हें हमारे सलाम का जवाब देने से रोक रखा है ?” तो उस ने जवाब दिया : “सलाम का जवाब देना एक नेकी है और अब हम नेकियां नहीं कर सकते, हमारी नेकियां न तो बढ़ती हैं और न ही बुराइयां कम होती हैं। और हम तुम्हारी इस दुआ से खुश होते हैं : “رَحِمَ اللَّهُ فَلَانًا الْمُتَوَفَّى” या'नी **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ फुलां मरने वाले पर रहम फ़रमाए।” **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ तुम पर रहम फ़रमाए ! नेक आ'माल में जल्दी करो और बुरे आ'माल से इज्तिनाब करो और फ़ना होने वाली इमारत से नई ता'मीर होने वाली इमारत की तरफ़ पलटने की तय्यारी करो गोया तुम मौत का प्याला पीने वाले हो क्यूंकि मौत का जाम हर मर्द व औरत पर गर्दिश करता रहता है।”

हज़रते सय्यिदुना आइशा अन्दलुसिय्या رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهَا एक नेक सिफ़त और सालिहा ख़ातून थी, आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهَا फ़रमाती हैं : “मेरा बेटा इन्तिक़ाल कर गया और मैं हफ़्ते में एक बार उस की (क़ब्र की) ज़ियारत<sup>(1)</sup> करने जाती। जब मैं उस की क़ब्र के करीब पहुंचती तो उस के पड़ोसी मुर्दों को कहते हुए सुनती : “ऐ फुलां ! येह तेरी मां है, तेरे पास आई है।” मैं अपने बेटे की क़ब्र को देखती तो ऐसा लगता जैसे वोह हंस रहा हो, मैं उस से बहुत खुश होती।”

①....औरतों की क़ब्रों पर हाज़िरी के मस्अले की वज़ाहत करते हुए, हज़रते सदरुशशरीआ मुफ़्ती अमजद अली आ'ज़मी फ़तावा रज़बिय्या शरीफ़ के हवाले से तहरीर फ़रमाते हैं : “और अस्लम येह है कि औरतें मुल्लक़न मन्अ की जाएं कि अपनों की कुबूर की ज़ियारत में तो वोही जज़अ व फ़ज़अ है और सालिहीन की कुबूर पर या ता'ज़ीम में हद से गुज़र जाएंगी या बे अदबी करेगी कि औरतों में येह दोनों बातें ब क़षरत पाई जाती हैं।” (बहारे शरीअत, जि. 1, हिस्सा 4, स. 89)

**मुर्दे को बेटियों की रिक्कत अंगेज हुआ काम आ गई :**

हज़रते सय्यिदुना हारिष बिन नब्हान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْمَنَان फ़रमाते हैं : “मैं क़ब्रिस्तान जाया करता, क़ब्र वालों के लिये रहम की दुआ मांगता और ग़ौरो फ़िक्क करता, उन के अहवाल से नसीहत हासिल करता। मैं उन्हें देखता कि वोह ख़ामोश हैं, कलाम नहीं करते और न ही उन (मरने वालों) के पड़ोसी उन की मुलाक़ात को आते हैं, ज़मीन का पेट उन का बिछौना है और ज़मीन की पीठ उन का ओढ़ना है और मैं उन्हें पुकारा करता : “ऐ क़ब्र वालो ! दुनिया से तुम्हारे नामो निशान मिट चुके हैं लेकिन तुम्हारे गुनाह नहीं मिटे। तुम ने बोसीदा घरों में डेरे लगा लिये हैं पस तुम्हारे पाउं वरम ज़दा हैं।” फिर मैं बहुत ज़ियादा रोता और उस के बा’द एक गुम्बद की तरफ़ चला जाता जिस में एक क़ब्र थी और उस के साए में सो जाता। एक मरतबा मैं एक क़ब्र के पास सोया हुआ था कि अचानक साहिबे क़ब्र को देखा कि उस की गरदन में जन्जीर थी, आंखें नीली और चेहरा सियाह हो चुका था और कह रहा था : “हाए ! मेरी बरबादी व हलाकत ! अगर दुनिया वाले मुझे देख लें तो कभी भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी न करें। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मुझ से उन लज़्ज़ात और उन ख़ताओं के मुतअल्लिक पूछा गया जिन्हों ने मुझे इन जन्जीरों में जकड़वाया और मुझे गर्क कर दिया है, तो है कोई मेरी फ़रियाद सुनने वाला ? या मेरे घर वालों को मेरी इस हालत की ख़बर देने वाला ?”

हज़रते सय्यिदुना हारिष عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं : “जब मैं बेदार हुआ तो बहुत ख़ौफ़ज़दा था क़रीब था कि इस हौलनाक मन्ज़र से मेरा दिल निकल जाता जो मैं ने देखा था, मैं घर गया, और सारी रात उसी के मुतअल्लिक ग़ौरो फ़िक्क करता रहा। जब सुब्द हुई तो घर वालों को कहा : “मैं कल जहां गया था मुझे दोबारा वहां जाने दो, शायद ! कोई क़ब्र की ज़ियारत करने के लिये आए तो जो मैं ने देखा उस को बताऊं।” जब मैं वहां गया तो किसी को न पाया, मैं सो गया, मैं ने फिर देखा कि क़ब्र वाले को चेहरे के बल घसीटा जा रहा है और वोह कह रहा है : “हाए हलाकत ! दुनिया में मेरे आ’माल बुरे और उग्र तवील थी, मुझ पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सख़्त नाराज़ है, अगर रब्ब عَزَّوَجَلَّ ने मुझ पर रहम न किया और मुझे अज़ाब से न बचाया तो मेरे लिये हलाकत व बरबादी है।” जब मैं बेदार हुआ तो उस आंखों देखे इब्रतनाक वाकिअ की वजह से ख़ौफ़ज़दा था, बहर हाल मैं घर वापस आ गया और रात बसर की, जब सुब्द हुई तो मैं फिर क़ब्र के पास चला गया कि शायद ! कोई क़ब्र की ज़ियारत के लिये आया हो तो मैं उस को येह सारा वाकिआ सुनाऊं लेकिन मैं ने क़ब्र की ज़ियारत करने वाले किसी शख्स को न पाया। मुझे नींद आ गई, तो मैं ने इस दफ़आ साहिबे क़ब्र को देखा कि उस के दोनों क़दमों को बांधा जा रहा है और वोह कह रहा है : “दुनिया वाले मुझ से कितने बे ख़बर हो चुके हैं, मुझ पर अज़ाब बढ़ाया जा रहा है, अस्बाब और हीले सब मुन्क़तेअ हो गए, रब्ब عَزَّوَجَلَّ मुझ से नाराज़ है, मुझ पर हर सम्त से (रहमत के) दरवाज़े बन्द हैं, हलाकत है मेरे लिये ! अगर रब्ब عَزَّوَجَلَّ मुझ पर रहम न करे।”

हज़रते सय्यिदुना हारिष عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं : “मैं ख़ौफ़ के आलम में नींद से बेदार हुआ, मैं ने लौटने का इरादा ही किया था कि चांद जैसी तीन लड़कियां आईं, मैं उन से दूर हो गया



और क़ब्र की आड़ में छुप गया ताकि मैं उन की गुफ्तगू सुन सकूं। उन में से सब से छोटी लड़की आगे बढ़ी और क़ब्र के पास रुक कर कहा : “السَّلَامُ عَلَيْكَ” आप पर सलामती हो।” ऐ अब्बाजान ! आप ने सुब्ह कैसे की ? आप अपनी आराम गाह में कैसे हैं ? और आप का अपने ठिकाने में ठहरना कैसा है ? आप हमारे पास अपनी महबूबत छोड़ कर चले गए और आप की ख़बरगिरी करना हम से मुन्क़तेअ हो गई, आप पर हमें बहुत ज़ियादा ग़म है और आप से मिलने का बहुत शौक़ है।” फिर वोह बहुत ज़ियादा रोई। उस के बा’द दूसरी दोनों लड़कियां आगे बढ़ीं, सलाम कर के कहने लगीं : “येह हमारे उस बाप की क़ब्र है जो हम पर बहुत शफ़ीक़ और बहुत मेहरबान था। **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** आप को अपनी रहमत से खुश रखे, आप को अपने अज़ाब के शर और सज़ा से बचाए। ऐ अब्बाजान ! हमें आप के बा’द ऐसी तकालीफ़ और ग़म लाहिक़ हुए कि अगर आप उन्हें देख लेते तो ग़मगीन हो जाते और अगर आप उन से आगाह हो जाते तो वोह आप को रन्जीदए खातिर कर देते। मर्दों ने हमारे चेहरों को बेपर्दा कर दिया है जिन्हें आप ढांपा करते थे।”

हज़रते सय्यिदुना हारिष **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ** फ़रमाते हैं : “उन की येह बातें सुन कर मुझे रोना आ गया फिर मैं तेज़ी से उन के पास गया और सलाम करने के बा’द कहा : “ऐ लड़कियों ! बेशक बा’ज अवकात आ’माल क़बूल किये जाते हैं और बा’ज अवकात रद्द कर दिये जाते हैं, मैं इस क़ब्र में रहने वाले तुम्हारे बाप के आ’माल को देख कर दुख में मुब्तला हो गया हूं और बुरे आ’माल के सबब इस की इब्रतनाक हालत ने मुझे मज़ीद ग़मज़दा कर दिया है। आप **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ** फ़रमाते हैं कि जब उन लड़कियों ने मेरी गुफ्तगू सुनी तो कहने लगीं : “ऐ **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** के नेक बन्दे ! आप ने क्या देखा ? मैं ने बताया : “मैं तीन दिन से बार बार यहां आ रहा हूं और लोहे के गुर्ज और जन्जीरों की आवाज़ सुनता हूं।” जब उन्होंने ने येह सुना तो कहने लगीं : “इस से बढ़ कर भी कोई दुख और मुसीबत हो सकती है कि हम अपनी हाजात को पूरा करने और घरों को आबाद करने में मशगूल हैं जब कि हमारे बाप को आग का अज़ाब दिया जा रहा है। **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की क़सम ! हमें चैन आएगा, न नींद और न ही सब्र यहां तक कि हम **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की बारगाह में गिर्या व ज़ारी करेंगी, शायद ! वोह हमारे बाप को आग से आज़ाद कर दे।” फिर वोह अपनी चादरों में गिरती पड़ती चली गई।

हज़रते सय्यिदुना हारिष **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ** फ़रमाते हैं : “मैं घर लौटा और रात गुज़ारी। जब सुब्ह हुई तो मैं फिर क़ब्र के पास चला गया और उसी शख्स की क़ब्र के पास बैठ कर उस के हाल के मुतअल्लिक़ ग़ौरो फ़िक्र करने लगा कि अचानक मुझ पर नींद का ग़लबा हुवा और मैं सो गया, मैं ने क़ब्र वाले को हसीनो जमील सूरत में देखा, उस के पाउं में सोने के जूते हैं और उस के पास खुद्दाम और गुलाम हैं। आप **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ** फ़रमाते हैं कि मैं ने उस को सलाम किया और कहा : “**اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** आप पर रहम करे, आप कौन हैं ?” उस ने जवाब दिया : “मैं वोही शख्स हूं जिस के मुआमले को देख कर आप ग़मगीन हो गए थे, **اَلलّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** आप को जज़ाए ख़ैर अता फ़रमाए।” (आमीन)

मैं ने पूछा : “आप का ये हाल कैसे हुवा ?” तो उस ने कहा : “जब आप ने मुझे देखा था और कल मेरी बेटियों को मेरे बारे में बताया था तो वोह अपने घरों को जा कर आंसू बहाने लगीं, बालों को बिखेर दिया, अपने रुख्सारों को ज़मीन पर रख दिया और **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** की बारगाह में गिर्या व ज़ारी करने लगीं और मेरे लिये **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** से बख़्शिश की दुआ मांगने लगीं तो **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ने मेरे गुनाहों की बख़्शिश फ़रमा कर मुझे आग से आज़ाद कर दिया और मुझे दिलों के चैन, सरवरे कौनैन **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** का पड़ोस अता फ़रमाया। जब आप मेरी बेटियों से मिलें तो उन को मेरी इस हालत के मुतअल्लिक बता दें ताकि वोह गुमगीन न हों। उन को बताएं कि मैं बागात व महल्लात, हूरो ग़िल्मां, मुश्को काफ़ूर और फ़र्हों सुरूर में हूं और येह भी बता दें कि **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ने मुझे मुआफ़ फ़रमा दिया है।”

हज़रते सय्यिदुना हरिष **رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِ** फ़रमाते हैं : “पस जब मैं बेदार हुवा तो उस मन्ज़र से बहुत खुश था घर वापस आया, रात गुज़ारी जब सुबह हुई तो फिर सूप कब्रिस्तान चल पड़ा, वहां पहुंचा तो क्या देखता हूं कि वोह लड़कियां नंगे पाउं मौजूद हैं और उन के ऊपर गुम के आधार नुमायां हैं। मैं ने उन को सलाम किया और कहा : “तुम्हें मुबारक हो ! मैं ने तुम्हारे बाप को बहुत बड़ी भलाई और वसीअ मुल्क में देखा है, और तुम्हारे बाप ने मुझे बताया कि **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ने तुम्हारी दुआ क़बूल फ़रमा ली और तुम्हारी कोशिशों को रद्द नहीं किया और **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ने तुम्हारी खातिर तुम्हारे बाप को बख़्श दिया है। लिहाज़ा तुम इस की हक़दार हो कि उस का शुक्रिया अदा करो।” येह सुनते ही उन में सब से छोटी लड़की ने दुआ शुरूअ कर दी : “ऐ **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ! ऐ दिलों को खुश करने वाले ! ऐबों को छुपाने वाले ! हमारे गुमों को दूर करने वाले ! गुनाहों को बख़्शाने वाले ! ग़ैबों के जानने वाले ! तू मेरी हाज़त को इसी तरह जानता है जिस तरह तन्हाई में मेरे गुनाहों से मुआफ़ी मांगने को जानता है, तू मेरे इरादे, मेरी निय्यत और दिल को बेहतर जानता है। तू ही मेरा मालिको मौला है, मेरी पकड़ फ़रमाने वाली ज़ात भी तेरी ही है, मेरी मुसीबतों का हाज़त रवा भी तू ही है, मेरी तन्हाई का मूनिसो ग़मख़वार, मेरी लज़िज़ों को मिटाने वाला और मेरी दुआओं को क़बूल फ़रमाने वाला भी तू ही है। अगर मैं अपनी ताअत में कोई कोताही करूं और तेरे मन्अ कर्दा कामों का इर्तिक़ाब कर बैठूं तो अपना फ़ज़्लो करम करते हुए मुझे महफूज़ रख और मेरी पर्दापोशी फ़रमा। ऐ सब से बड़े करीम ! ऐ मांगने वालों की आखिरी उम्मीद और रोज़े जज़ा के मालिक ! तू अच्छी तरह जानता है जो मैं अपने दिल में छुपाए हुए हूं, अगर तू ने महज़ अपने फ़ज़्लो करम से मेरी हाज़त को क़बूल फ़रमाया है और मेरे बाप के हक़ में मेरी शफ़ाअत को क़बूल फ़रमा लिया है तो मेरी रूह भी क़ब्ज़ फ़रमा ले कि तू हर चाहे पर कादिर है।” फिर उस ने एक ज़ोरदार चीख़ मारी और अपने ख़ालिके हकीकी से जा मिली।

फिर दूसरी आगे बढ़ी, उस ने भी बुलन्द आवाज़ से पुकारा : “ऐ **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ! ऐ गरदनों को आग के अज़ाब से आज़ाद करने वाले ! मेरी मुसीबत भी दूर कर दे, मेरे दिल से तमाम शुक्को शुब्हात मिटा दे, ऐ वोह ज़ात जिस ने मुझे सहारा दिया जब मैं लड़खड़ा गई, और मेरी रहनुमाई फ़रमाई जब मैं हैरानी के अ़ालम में सरगर्दा थी और मुसीबतो तंगदस्ती के वक़्त मेरी

दस्तगीरी फ़रमाई, अगर तू ने मेरी दुआ को क़बूल फ़रमा लिया है और मेरी हाजत पूरी कर दी है और मेरे दिल को अपने ज़िक्र से आबाद कर दिया है तो मुझे भी मेरी बहन से मिला दे ।” उस ने भी एक जोरदार चीख़ मारी और अपनी जान जाने आफ़रीं के सिपुर्द कर दी ।

फिर तीसरी आगे बढ़ी उस ने भी बुलन्द आवाज़ से दुआ की : “ऐ **اَللّٰهُ** ! عَزَّوَجَلَّ तू हर एक की ख़ामोशी और गुफ़्तगू को जानने वाला है और तू ही फ़ज़्ले अज़ीम का मालिक है, इज़ज़त वाला वोही है जिस को तू इज़ज़त दे, ज़िल्लत वाला वोही है जिस को तू ज़िल्लत का लिबास पहना दे, शराफ़त उसी का ख़ास्सा है जिस को तू अता करे, सआदत मन्दी व बदबख़्ती उसी के हिस्से में है जिस के मुकद्दर में जो तू लिख दे, कुर्ब की लज़ज़ात वोही हासिल कर सकता है जिस को तू कुर्ब अता फ़रमाए, दूरी व जुदाई का ग़म वोही जानता है जिस को तू अपनी रहमत से दूर कर दे, तेरे फ़ज़्लो करम से वोही महरूम हो सकता है जिसे तू खुद महरूम रखे, जिस को तू नवाज़ दे वोह नफ़अ हासिल करने वाला और जिस को न नवाजे वोह नुक़सान उठाने वाला हो जाता है । मैं तुझ से तेरे उस इस्मे आ'ज़म के वासिते से सुवाल करती हूँ कि जिस को तू ने रात पर रखा तो वोह तारीक हो गई, दिन पर रखा तो वोह रोशन हो गया, पहाड़ों पर रखा तो वोह गिर कर हमवार हो गए, हवाओं पर रखा तो वोह चलने लगीं, आस्मानों पर रखा तो वोह बुलन्द हो गए, ज़मीन पर रखा तो वोह बिछौना बन गई, और फ़िश्तों पर रखा तो वोह सजदा रेज़ हो गए, ऐ **اَللّٰهُ** ! عَزَّوَجَلَّ अगर तू ने मेरी हाजत पूरी कर दी है और मेरी दुआ क़बूल फ़रमा ली है तो मुझे भी मेरी बहनों से मिला दे ।” फिर उस ने एक जोरदार चीख़ मारी और उस की रुह भी क़फ़से इन्सुरी से परवाज़ कर गई । हज़रते सय्यिदुना हारिष رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि मुझे उन के अहवाल से और उन की मौत के इस तरह एक दूसरे के करीब करीब होने से तअज्जुब हुवा ।

**اَللّٰهُ** ! عَزَّوَجَلَّ उन लोगों को देखो ! जिन को हुक्म दिया गया तो उन्होंने ने इताअत की और अमल किये तो उन के आ'माल क़बूल किये गए, उन्हें अपनी मुराद मिली, उन्होंने ने विसाल त़लब किया तो **اَللّٰهُ** ! عَزَّوَجَلَّ ने उन को अपनी महब्वत की रस्सी से विसाल अता फ़रमाया, दुआ की तो **اَلलّٰهُ** ! عَزَّوَجَلَّ ने उन की दुआ क़बूल फ़रमाई, वोह उस की बारगाह में कौलन फे'लन मुख़्लिस रहे, उस की इताअत में फ़राइज़ो नवाफ़िल पूरे पूरे अदा किये, उन्होंने ने **اَلलّٰهُ** ! عَزَّوَجَلَّ की मुलाक़ात पसन्द की तो **اَلलّٰهُ** ! عَزَّوَجَلَّ ने भी उन से मिलना पसन्द किया और उन को कुर्बो वस्ल अता फ़रमा कर उन पर बड़ा एहसान फ़रमाया पस वोह उस के प्यारे दीन पर इन्तिक़ाल कर गए क्यूँकि वोह इसी के अहल थे ।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ نَّبِيِّكَ الْعَظِيمِ وَرَسُولِكَ الْكَرِيمِ وَالِدَاعِي إِلَى الصِّرَاطِ الْمُسْتَقِيمِ





## बयान 4 : फनाइले औलिया رَحْمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی का बयान हम्दे बारी तआला :

तमाम ता'रीफें उस **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये जिस ने अपने बन्दों में से उन को चुना जो इबादत के काबिल थे और उन को खिदमतगार बनाया, उन के कई गुरौह बनाए, उन्हें अपनी खास नजरे इनायत से नवाज़ा, उन से पुख़्ता अहद लिया, उन को साफ़ किया और उन्हें चुन लिया, उन को बुला कर करीब किया और उन को वस्ल और लिका के साथ ज़िन्दगी बख़्शी, उन को नफ़्स की पस्ती से बारगाहे उन्सियत में बुलन्द किया, तस्बीह व तक्दीस के जाम में शराबे तहूर (या'नी पाकीज़ा शराब) से उन्हें सैराब किया तो उन में से हर एक उस शराब के सुरूर में खुश और उस का ख़िताब सुनने में मदहोश है और उन में से हर एक अपने हल्क़ए अहबाब में बुलन्द रुत्बा हुवा और उस ने अपने प्यारों के लिये सहरी के वक़्त तजल्ली फ़रमाई पस मुहिब्ब ने ज़िन्दगी का मज़ा उठाया और दीदार करने में कामयाब हो गया जब कि उन में से वज्द का ज़ख्मी किया हुवा कांप कर ज़मीन पर तशरीफ़ ले आया, **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन के ज़ाहिरी वुजूद को फ़ना किया और हमेशा की बका से नवाज़ा, और उन्होंने ने आखिरी सांस भी उस के नाम पर कुरबान कर दिया, **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन को अपनी महब्बत के राज़ अता किये तो उन्होंने ने उस की गैरत से ख़ौफ़ खाते हुए अपने ऊपर गैर के दरवाजे बन्द कर दिये, पस उस की मुश्क दिलों के मशाम की तरफ़ से महकी तो दिलों ने अपने महबूब की तरफ़ से उस मुश्क को सूँघ लिया, और एक ख़फ़ी राज़ और उस की पाकीज़ा महक हज़रते सय्यिदुना सिर्री सक्ती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِي के राज़ की तरफ़ से गुज़र गई तो वोह उस के आधार पर सीधे चलते गए, और हज़रते सय्यिदुना शिब्ली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِي की तरफ़ से गुज़री तो वोह महब्बत की दुल्हनों की तरह आरास्ता हो कर रात गुज़ारने लगे, हज़रते सय्यिदुना अबू यज़ीद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَجِيد की तरफ़ से गुज़री तो उन्होंने ने मज़ीद की सदा लगाई और उन की हरात बढ़ गई और हज़रते सय्यिदुना जुनेद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِي की तरफ़ से गुज़री तो वोह महब्बते इलाही की कैद में मज़ीद पुख़्ता हो गए और हज़रते सय्यिदुना फुज़ैल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی की तरफ़ से गुज़री तो पूरी रात डाकाज़नी के बा'द तौफीक के घोड़ों पर सुवार हो गए और उन्होंने ने अपनी तमाम तर कोशिश इबादते इलाही में लगा दी, और हज़रते सय्यिदुना ख़व्वास عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللّٰهِ الرَّزّاق की तरफ़ से गुज़री तो वोह इख़्लास के समन्दरों में गौता ज़न हो कर ख़ालिस जवाहिर चुनने लगे, हज़रते सय्यिदुना समनून عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقُدُّوس की तरफ़ से गुज़री तो उन पर महब्बत और वज्द के तरीक़े ज़ाहिर हो गए और वोह पहाड़ में दीवानों की तरह फिरने लगे और महब्बते इलाही عَزَّوَجَلَّ में आवाज़ें लगाने और सिस्कियां ले कर मुसलसल आंसू बहाने लगे । (शाइर **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ के सच्चे मुहिब्बीन को मुखातब कर के कहता है :)

وَهَجَرْتُمُونِي فَالْتَهَيْتُ تَحَرُّقًا

رِفْقًا فَقَدْ ذَابَ الْغَوَاذُ تَشَوُّقًا

وَبِحَبِيْكُمْ قَلْبِيْ عَدَا مُتَعَلِّقًا

اَطَعْتُمُونِيْ فِي الْوَصَالِ وَفِي الْبَقَا

يَا مَالِكِيْ رِقِيْ وَغَايَةَ مَطْلَبِيْ

حَاشَا كُمُوْا اَنْ تَطْرُدُوْنِيْ سَادَتِيْ

عَيْشٌ وَلَا عَايَتْ شَيْئًا مُؤْنَقَا  
شَوْقًا إِلَى رُؤْيَاكُمْ لَكُمْ الْبَقَا  
بِوَصَالٍ مَنْ نَهَوَى فَقَدْ زَالَ الشَّقَا  
أَصْبَحَتْ مِنْ وَجْدِي بِهِ مُتَمَزَقَا  
فِيهِ لِعَيْرِ كُفُو هَوَى وَتَشَوُّقَا  
يَا مَنِيَّتِي إِنْ خَانَ يَوْمًا مُوْتَقَا  
إِنَّ الْفَنَاءَ بِحُبِّكُمْ عَيْنَ الْبَقَا

يَا سَادَتِي لَمْ يَهِنْ لِي مِنْ بَعْدِكُمْ  
إِنْ مِثُّ مِنْ وَجْدِي وَقَرِطُ صَبَابَتِي  
يَا نَفْسُ قَدْ زَالَ الْعَنَا فَتَمَتَّعِي  
وَجَلَا الْحَبِيبُ جَمَالَهُ فَلَا جُلْ دَا  
هَآكُمُ فُؤَادِي تَشْوُهُ فَإِنْ تَرَوْا  
فَتَحَرَّكُمُوا فِيهِ بِمَا يَرْضِيكُمْ  
وَإِذَا فَنَيْتُ بِحُبِّكُمْ فَيَحِقُّ لِي

**तर्जमा :** (1)....तुम ने मुझे विसाल और मुलाकात का शर्फ बख़्शा फिर मुझे छोड़ दिया तो मैं महबूबत की आग में जलने लगा ।

(2)....ऐ मेरे मालिको और मेरे मक्सद की इन्तिहा ! मेहरबानी फ़रमाओ क्यूंकि मेरा दिल शौके दीदार से पिघल रहा है ।

(3)....ऐ मेरे सरदारो ! मैं **अबूबाह** तआला से पनाह त़लब करता हूं कि तुम मुझे धुत्कार दो क्यूंकि मेरे दिल को तुम से महबूबत हो चुकी है ।

(4)....ऐ मेरे सरदारो ! तुम्हारे बा'द मेरे लिये कोई मज़ा नहीं और न ही मुझे कोई चीज़ दिलकश लगी ।

(5)..अगर मैं तेरे दीदार की शदीद महबूबत और अपने वज्द से मर जाऊं तो येह तेरे लिये बका है ।

(6)....ऐ नफ़्स ! अब मशक्कत और शकावत ज़ाइल हो चुकी है इस लिये तू अपने महबूब के विसाल से लुत्फ़ उठा ले ।...

(7)....हबीब ने अपना जमाल ज़ाहिर किया तो उस जमाल को देख कर मैं उस की महबूबत की वजह से तार तार हो गया ।

(8).....(ऐ महबूबो !) येह मेरा दिल हाज़िर है, अगर इस में अपने ग़ैर की महबूबत पाओ तो जला डालो ।

(9)....और अगर उस में किसी और की महबूबत पाओ तो अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ जो चाहो सज़ा दो । हाए काश ! मैं मर जाऊं अगर मेरा दिल किसी दिन (महबूबत के) पुख़्ता वा'दे में ख़ियानत करे ।

(10)....अगर मैं तुम्हारी महबूबत में फ़ना हो जाऊं तो मैं उस का सज़ावार हूं क्यूंकि तुम्हारी महबूबत में फ़ना होना हकीकत में बका है ।

**बिकने वाला गुलाम मजनुन नहीं, मजज़ूब था :**

हज़रते सय्यिदुना अब्दुर्रहमान बिन मुहजज़ब رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं : “एक दफ़आ मैं गुलामों के बाज़ार से गुज़रा, दलाल को देखा कि वोह एक गुलाम को बेचते हुए कह रहा था : “मैं इस को इस के ऐब पर बेचता हूं ।” मैं ने दलाल से पूछा : “इस में क्या ऐब है ?” उस ने कहा :

“इसी से पूछ लीजिये।” मैं ने गुलाम के करीब जा कर उस से दर्याफ्त किया : “तुझे में क्या ऐब है ?” उस ने बताया : “ऐ मेरे आका ! मेरे उयूब बहुत ज़ियादा हैं, मुझे नहीं मा’लूम कि मैं लोगों में किस ऐब से मशहूर हूं।” मैं ने दलाल से कहा : “मुझे येह बताओ कि इस में क्या ऐब है ?” उस ने कहा : “इसे जुनून की बीमारी है।” मैं ने गुलाम से पूछा : “तुझे मिर्गी कब होती है ? क्या हर साल या हर माह या हर जुमुआ ?” उस ने कहा : “ऐ मेरे आका ! जब महब्बत की बीमारी दिल पर ग़ालिब होती है तो तमाम आ’ज़ा में सरायत कर जाती है और जब दूसरे आ’ज़ा पर ग़ालिब आती है तो महब्बत का खुमार तमाम जिस्म में फैल जाता है और अक्ल महबूब की याद में खो जाती है, दिल मुस्तगरक हो जाता है, बदन साकिन हो जाता है और जाहिल उस को जुनून समझते हैं।”

हज़रते सय्यिदुना अब्दुर्रहमान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ फ़रमाते हैं मुझे मा’लूम हो गया कि येह गुलाम **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ के औलिया में से है। मैं ने दलाल से कहा : “येह गुलाम कितने में बेचोगे ?” उस ने दो सो (200) दिरहम बताए तो मैं ने दो सो बीस दिरहम दे दिये और गुलाम को घर के करीब ला कर उस से कहा : “अन्दर दाखिल हो जाओ।” उस ने इन्कार करते हुए पूछा : “क्या आप के घर वाले हैं ?” मैं ने कहा : “जी हां।” उस ने कहा : “ग़ैर महरम की तरफ़ कौन देख सकता है ?” मैं ने उसे कहा : “तुझे इजाज़त है।” उस ने कहा : “**अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ पनाह अता फ़रमाए ! जब भी आप की कोई हाज़त होगी तो मैं उस को दरवाज़े के बाहर ही से पूरा कर दूंगा।” बहर हाल मैं ख़ामोश हो गया और उसे उस के हाल पर छोड़ दिया फिर उस के लिये खाना लाया तो उस ने कहा : “मैं रोज़ेदार हूं।” जब रात हुई, मैं रात का खाना लाया तो उस ने कहा : “मुझे भूक नहीं।” और वोह घर की चोखट पर ही ठहर गया, आधी रात को जब मैं उस के पास गया तो देखा कि वोह क़ियाम की हालत में नमाज़ पढ़ रहा है और उसे मेरे आने का इल्म न हुवा, जब नमाज़ से फ़ारिग हुवा तो सजदा किया और बहुत रोया। मैं ने उस की मुनाजात सुनी, वोह कह रहा था : “ऐ मेरे रब्ब عَزَّوَجَلَّ ! सब बादशाहों ने अपने दरवाज़े बन्द कर दिये हैं लेकिन तेरा दरवाज़ा साइलों के लिये खुला हुवा है। ऐ मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ ! सितारे डूब रहे हैं, आंखें सो गई हैं, तू ऐसा ज़िन्दा और दूसरों को काइम रखने वाला है जिस को न ऊंघ आती है, न नींद। ऐ मेरे मालिक عَزَّوَجَلَّ ! तू ने ज़मीन बिछा कर हर महबूब को उस के मुहिब्ब से मिला दिया और तू खुद सारे महब्बत के मारों का महबूब है। ऐ तन्हाई के मारों के ग़मगुसार ! ऐ मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! अगर तू ने मुझे अपने दरवाज़े से दूर कर दिया तो फिर किस के दरवाज़े पर जा कर इल्तिजा करूंगा। या इलाहल आलामीन عَزَّوَجَلَّ ! अगर तू मुझे अज़ाब दे तो बेशक मैं मुस्तहिक्के अज़ाब हूं और अगर तू मुआफ़ फ़रमा दे तो तू जूदो करम वाला है।” फिर वोह गुलाम बैठ गया, अपने हाथों को बुलन्द कर के रोया और कहा : “ऐ मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ ! तेरे फ़ज़ल से ही सालिहीनो अरिफ़ीन ने नजात हासिल की, कोताही करने वालों ने तेरी ही रहमत के बाइष तौबा की। ऐ मुआफ़ फ़रमाने वाले ! मुझे भी अपने अफ़व व मग़फ़िरत का ज़ाइका चखा दे, अगर्चे मैं इस का अहल नहीं मगर तू तो मुआफ़ फ़रमाने वाला है।”



फिर मैं कमरे में दाखिल हो गया और किसी किस्म की हैरत का इज़हार न किया, जब सुबह हुई तो मैं ने उस के पास जा कर कहा : “रात को कैसी नींद आई ?” तो उस ने जवाब दिया : “ऐ मेरे आका ! क्या वोह शख्स सो सकता है ? जिस को आग के अज़ाब, खुदाए जब्बार عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में पेशी और गुनाहों पर मलामत का खौफ हो ।” फिर वोह बहुत देर तक रोता रहा तो मैं ने कहा : “जा, तू रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये आज़ाद है ।” तो वोह दोबारा रो कर कहने लगा : “ऐ मेरे आका ! पहले मेरे लिये दो अज़्र थे, एक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बन्दगी का और दूसरा आप की खिदमत का । अब सिर्फ एक अज़्र है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप को अज़ाबे नार से आज़ादी अता फ़रमाए ।” हज़रते सय्यिदुना अब्दुर्रहमान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ फ़रमाते हैं : “फिर मैं ने उस को कुछ खर्च दिया मगर उस ने क़बूल न किया और कहने लगा : “रिज़्क की ज़िम्मेदार वोह ज़िन्दा हस्ती है जिस को मौत नहीं ।” फिर वोह निकल खड़ा हुवा इस हाल में कि उस के चेहरे पर ग़म का अपर इयां था । मैं नहीं जानता कि वोह कहां गया ।

سُبْحَانَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ ! उस गुलाम को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मुलाक़ात का किस क़दर शौक़ था और मत्लूब के फ़ौत होने पर किस क़दर ग़म । ऐ ग़फ़लत की कैद में जकड़े हुए ! अगर तू उम्मीद की वादी में झांके तो देखेगा कि इबादत गुज़ारों के ख़ैमे समन्दर के साहिल पर टूटे हुए हैं । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿١﴾ كَانُوا قَلِيلًا مِّنَ اللَّيْلِ مَا يَهْجَعُونَ ۝

(प २६, अल-ज़ुमर: १७)

और तू ग़मज़दा परन्दों को ग़म की टहनियों पर मस्तुर कुन आवाज़ में येह गुनगुनाते हुए सुनेगा :

﴿٢﴾ وَبِالْأَسْحَارِ هُمْ يَسْتَغْفِرُونَ ۝

(प २६, अल-ज़ुमर: १८)

**तर्जमए कन्जुल इमान** : वोह रात में कम सोया करते ।

**तर्जमए कन्जुल इमान** : और पिछली रात इस्तिग़फ़ार करते ।

रात पवे ते बे दर्दा नूं नींद प्यारी आवे  
दर्दमन्दां नूं याद सजन दी सुतियां आन जगावे

**उबैद मजनून की मा'रिफ़त भरी बातें :**

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन फुज़ैल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं : “मैं ने एक नौजवान को ज़मीन पर लैटे हुए देखा, वोह बहुत ज़ियादा रो रहा था, मैं ने अपने एक दोस्त से कहा : “आओ ! उस के पास चलें, यकीनन येह बीमार है ।” तो मेरे दोस्त ने कहा : “येह बीमार नहीं, बल्कि बातिन में आशिक और ज़ाहिरन मजनून है । इस का दिल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की महबूबत में डूबा हुवा है और इसे उबैद मजनून के नाम से पुकारा जाता है । हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन फुज़ैल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं : “मैं उस के क़रीब हुवा तो देखा कि उस नौजवान का जिस्म कमज़ोर था, और उस पर ऊन का एक जुब्बा था और वोह कह रहा था, “तअज्जुब है उस पर जिस ने तेरी महबूबत की हलावत को चख लिया ! वोह कैसे तेरी बारगाह से दूर हो सकता है ? फिर वोह उसी बात को दोहराता रहा

यहां तक कि बेहोश हो गया, मैं ने अपने दोस्त को कहा : “**اَللّٰهُمَّ** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मजनून वोह होता है जो इस मक़ाम तक न पहुंचा हो, जब उस को होश आया तो पूछने लगा : “आप मुझे क्यूं देख रहे हैं ?” हम ने कहा : “शायद आप को दवा की ज़रूरत है जो आप को इस बीमारी से शिफ़ाय़ाब कर दे।” उस ने कहा : “जिस ज़ात ने मुझे इस बीमारी में मुब्तला किया है दवा भी उसी के पास है, लेकिन जो भी इस बीमारी का इलाज कराना चाहता है वोह मज़ीद बीमार हो जाता है।” मैं ने कहा : “वोह इलाज क्या है ?” तो उस ने बताया कि “इस बीमारी का इलाज हराम को तर्क करने, गुनाहों से इज्तिनाब करने, मुराक़बा करने, रात को नमाज़े तहज्जुद अदा करने में है जब कि लोग सोए हुए हों। येह कहने के बा’द वोह बहुत ज़ियादा रोया और हम भी उस के साथ रोने लगे फिर हम ने उस से कहा : “हम आप के मेहमान हैं, हमारे लिये दुआ फ़रमाइये।” तो उस ने कहा : “मैं इस मैदान के शहसुवारों में से नहीं हूं।” हम ने उस को क़सम दी तो उस ने दुआ की : “**اَللّٰهُمَّ** عَزَّوَجَلَّ हमारे और आप के आ’माले सालिहा क़बूल फ़रमाए और मग़फ़िरत के साथ तुम्हारी मेज़बानी फ़रमाए, जन्नत को तुम्हारा ठिकाना बनाए और तुम्हारे और मेरे दिल में मौत की याद डाल दे।” फिर हम उस से जुदा हो गए इस हाल में कि हमें उस की अच्छे अल्फ़ाज़ पर मुश्तमिल दुआ बड़ी भली लगी और उस के कलाम व नसीहत से हमारे दिल ज़िन्दा हो गए।”

**प्यारे इस्लामी भाइयो !** येह तो एक दीवाने की हालत है जो कि हबीब से महबूबत करता है। तो तुम जैसे अक़लमन्द और दाना का क्या हाल होना चाहिये ? तुम्हारा रब्ब **عَزَّوَجَلَّ** तुम्हें बुलाता है लेकिन तुम जवाब नहीं देते, तुम्हें तौबा का हुक्म देता है मगर तुम तौबा नहीं करते। वोह चाहता है कि तुम उस की बारगाह में हाज़िर रहो और तुम हो कि हर वक़्त गाइब रहते हो, कब तक तुम अपनी उम्र जाएअ करते रहोगे ? हालांकि इस से तुम्हें कुछ नहीं मिला, कब तक अपनी लग़िज़श का बहाना बनाते रहोगे ? और तुम्हारे गले में अटकने वाली मौत के मुआमले को तबीब के पास नहीं लाया जाएगा। तुम्हारी हलाकतो बरबादी ! उस की बारगाह में तौबा के लिये जल्दी करो, वोह तुम्हारे करीब है तुम उस से हिदायतो तौफीक़ का सुवाल करो, ग़मो तंगी को दूर करने में उसी का क़स्द करो कि वोह अपनी बारगाह का इरादा करने वालों को रुस्वा नहीं फ़रमाता, और उस अमल के ज़रीए कुर्ब हासिल करो जो उस को पसन्द हो, उस की नाफ़रमानियों से डरो इस लिये कि वोह हाज़िर है, गाइब नहीं, और उसी से मांगो इस लिये कि वोह अपने मांगने वालों को अता फ़रमाता है, इसी वक़्त उस की बारगाह में तौबा करो और उस के सामने गिर्या व ज़ारी करो, करीब है कि वोह तुम्हें अपनी इताअत के लिये चुन ले और तुम्हें हिदायत की तौफीक़ अता फ़रमा दे, **اَللّٰهُمَّ** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿٣﴾ اَللّٰهُ يَجْتَبِيْ اِلَيْهِ مَنْ يَّشَاءُ وَيَهْدِيْ اِلَيْهِ

(٢٥٣، الشورى ١٣)

مَنْ يَّشَاءُ ٠

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और **اَللّٰهُ** अपने करीब के लिये चुन लेता है जिसे चाहे और अपनी तरफ़ राह देता है उसे जो रुजूअ लाए।

## एक दिन में साल का सफर तै कर लिया :

हज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي फ़रमाते हैं : “मैं अपने दोस्तों के दरमियान बैठा हुआ था और हम **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ के नेक बन्दों का तज़िकरा कर रहे थे तो हज़रते सय्यिदुना सर्री सक़ती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي ने बताया कि “एक दफ़्ता मैं बैतुल मुक़द्दस में एक चट्टान के पास बैठा हुआ था और उस साल हज़ की सआदत न मिलने पर अफ़सोस कर रहा था क्योंकि हज़ में सिर्फ़ दस दिन बाकी रह गए थे, जब मैं ने अपने दिल में सोचा कि लोगों का रुख़ बैतुल्लाह शरीफ़ की तरफ़ है और दिन भी बहुत थोड़े हैं जब कि मैं यहां ठहरा हुआ हूं।” पस मैं पीछे रह जाने पर रोने लगा। अचानक मैं ने एक ग़ैबी आवाज़ सुनी, कोई कहने वाला कह रहा था : “ऐ सर्री सक़ती ! मत रो ! बेशक **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ ने ऐसे लोगों को तुम्हारे लिये मुक़र्रर कर दिया है जो तुम्हें मक़ामे हज़ तक पहुंचा देंगे।” मैं ने सोचा : “येह कैसे होगा हालांकि मैं बैतुल मुक़द्दस में हूं और दिन भी थोड़े रह गए हैं।” तो उस ग़ैबी आवाज़ ने कहा : “ग़मगीन न हो, **अब्बाह** عَزَّ وَजَلَّ तुम पर मुश्किल काम को आसान फ़रमा देगा।” मैं ने **अब्बाह** عَزَّ وَजَلَّ की बारगाह में सजदए शुक्र अदा किया और उस ग़ैबी आवाज़ की सच्चाई जानने के लिये इन्तिज़ार में बैठ गया। अचानक मैं ने देखा कि मस्जिद के दरवाज़े से चार नौजवान दाख़िल हुए (उन के चेहरे इतने नूरानी थे) गोया सूरज उन के चेहरों से तुलूअ हो रहा था और नूर उन की पेशानियों से चमक रहा था। उन में एक बा रो’ब और बा जलाल नौजवान आगे बढ़ा और बाकी उस के पीछे हो गए, उन सब ने बालों का लिबास और पाउं में खज़ूर के पत्तों के जूते पहने हुए थे, वोह चट्टान के करीब हुए और **अब्बाह** عَزَّ وَजَلَّ की बारगाह में दुआ की तो उन के अन्वार से मस्जिद भर गई। मैं भी उन के साथ जा कर खड़ा हो गया और अर्ज़ की : “ऐ रब्ब عَزَّ وَجَلَّ ! शायद येह वोही लोग हैं जिन की वजह से तू मुझ पर रहूम फ़रमाएगा और जिन की सोहबत मुझे इनायत करेगा।”

वोह गुम्बद में दाख़िल हुए, नौजवान उन के आगे आगे था और वोह उस के पीछे थे, हर एक ने दो दो रकअतें अदा कीं, फिर वोह नौजवान अपने रब्ब عَزَّ وَजَلَّ से मुनाजात करने लगा, मैं उस की मुनाजात सुनने की खातिर उस के करीब हो गया फिर उस ने गिर्या व ज़ारी की और तक्बीर कही और ऐसी नमाज़ पढ़ी जिस ने मेरा दिल और दिमाग़ सल्ब कर लिया, जब वोह फ़ारिग़ हुआ तो बैठ गया, बाकी तीन उस के सामने बैठ गए तो मैं ने उन के करीब जा कर सलाम पेश किया, नौजवान ने कहा : “وَعَلَيْكَ السَّلَامُ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ” ऐ सर्री सक़ती ! ऐ वोह शख़्स जिसे आज ग़ैबी आवाज़ के ज़रीए खुशख़बरी दी गई कि उस का हज़ इस साल फ़ौत नहीं होगा।” उस की येह बात सुन कर मैं बेहोश होने के करीब पहुंच गया, मेरा दिल खुशी से भर गया, मैं ने अर्ज़ की : “ऐ मेरे आका ! जी हां ! आप की आमद से कुछ देर पहले मुझे ग़ैब से बताया गया है।” तो उस ने कहा : “ऐ सर्री सक़ती ! आप को हातिफ़े ग़ैबी के आवाज़ देने से एक लम्हा पहले हम ख़ुरासान शहर से बग़दाद की तरफ़ जा रहे थे, वहां हम ने अपनी ज़रूरियात पूरी कीं और बैतुल्लाह शरीफ़ जाने का इरादा हुआ फिर ख़्वाहिश हुई कि शाम में अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام के मज़ारात की ज़ियारत कर लें। फिर मक्काए



मुकर्रमा हाज़िरी देंगे, हम मज़ारात की ज़ियारत करने के बा'द अब यहां बैतुल मुक़द्दस की ज़ियारत के लिये आए हैं।" मैं ने अर्ज़ की : "ऐ मेरे सरदार ! आप खुरासान में क्या कर रहे थे ?" उस नौजवान ने बताया : "हम अपने दीनी भाइयों हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم और हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्खी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم के साथ इकठ्ठे बैतुल हुराम के इरादे से बग़दाद आए, मैं बैतुल मुक़द्दस की ज़ियारत करने आ गया और वोह दोनों देहात के रास्ते से चले गए।" मैं ने कहा : "अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ आप पर रहम फ़रमाए, खुरासान से बैतुल मुक़द्दस तक एक साल की मसाफ़त है।" उस ने कहा : "अगरचे एक हज़ार साल की मसाफ़त हो, बन्दा उस का हो, ज़मीन भी उस की हो, आस्मान भी उस का हो, ज़ियारत भी उस के घर की हो और इरादा भी उसी की बारगाह में हाज़िरी का हो तो फिर पहुंचाना और कुव्वतो कुदरत मुहय्या करना भी उसी के ज़िम्माए करम पर है। क्या तुम नहीं देखते कि सूरज कैसे मशरिफ़ से मग़रिब तक का सफ़र एक दिन में तै कर लेता है ? क्या वोह अपनी कुव्वत से इतनी मसाफ़त तै करता है या क़ादिर عَزَّ وَجَلَّ की कुव्वतो इरादे से ? जब एक बे जान ज़ामिद सूरज जिस पर न हिसाब है, न अज़ाब, एक दिन में मशरिफ़ से मग़रिब तक पहुंच जाता है तो येह कोई हैरानगी की बात नहीं कि उस का एक बन्दा एक दिन में खुरासान से बैतुल मुक़द्दस पहुंच जाए। अल्लाह عَزَّ وَजَلَّ ही कुदरतो कुव्वत का मालिक है, और ख़िलाफ़े आदत काम उसी से सादिर होता है जो उस का महबूब और मुख़्तार हो, ऐ सर्री सक़ती ! दुन्या व आख़िरत की इज़्ज़त इख़्तियार कर और दुन्या व आख़िरत की ज़िल्लत तक पहुंचने से बच।"

मैं ने अर्ज़ की : "अल्लाह عَزَّ وَजَلَّ आप पर रहम फ़रमाए ! दुन्या व आख़िरत की इज़्ज़त की तरफ़ मेरी रहनुमाई फ़रमा दीजिये ?" तो उस ने कहा : "जो बिग़ैर माल के अमीरी, बिग़ैर सीखे इल्म, बिग़ैर ख़ानदान के इज़्ज़त चाहता हो तो उसे चाहिये कि अपने दिल से दुन्या की महब्वत निकाल दे, उस की तरफ़ माइल न हो, और न उस से मुतमइन हो, इस लिये कि दुन्या की सफ़ाई में मैल की मिलावट, और उस के मीठे पन में कड़वाहट है।" मैं ने फिर अर्ज़ की : "ऐ मेरे सरदार ! उस ज़ात की क़सम जिस ने आप को अपने अन्वार के साथ ख़ास किया और अपने असरार से आगाह फ़रमाया ! अब कहां का इरादा है ?" उस ने बताया : "अब हज़्जे बैतुल्लाह और सय्यिदुल अनाम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के मज़ारे पुर अन्वार की ज़ियारत मक़सूद है।" मैं ने अर्ज़ की : "अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! मैं आप से जुदा नहीं होऊंगा क्यूंकि आप से जुदा होना, रूह के जिस्म से जुदा होने से भी ज़ियादा सख़्त है।" उस ने बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़ी और मैं भी उन के हमराह बैतुल मुक़द्दस से बस्ती की तरफ़ चल पड़ा, हम चलते रहे यहां तक कि उस ने कहा : "ऐ सर्री सक़ती ! ज़ोहर का वक़्त हो गया है तो क्या नमाज़ न पढ़ लें ?" मैं ने कहा : "क्यूं नहीं।" मैं ने मिट्टी से तयम्मूम का इरादा किया तो उस ने कहा : "यहां पानी का एक चश्मा है।" फिर वोह रास्ते से कुछ हटा और ऐसे चश्मे पर ले गया जिस का पानी शहद से भी ज़ियादा मीठा था। मैं ने वुजू किया और पानी पी कर कहा : "अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! मैं इस रास्ते से कई मरतबा गुज़रा लेकिन पानी का चश्मा यहां कभी नहीं पाया।"

उस ने कहा : “सब ता’रीफें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने अपने बन्दों पर करम फ़रमाया । हम ने नमाज़े जोहर अदा की, फिर अस् तक चलते रहे । फिर अचानक हिजाज़ के पहाड़ और दीवारें हमारे सामने ज़ाहिर हो गए, मैं ने कहा : “येह तो हिजाज़े मुक़द्दस की ज़मीन है ।” “उस ने मुझ से कहा : “आप मक्कए मुकर्रमा में पहुंच चुके हैं ।” मैं गिर्या व ज़ारी करने लगा, फिर उस ने मुझ से पूछा : “ऐ सर्री सक़ती ! क्या तुम हमारे साथ दाख़िल होगे ?” मैं ने कहा : “जी हां ।” जब हम बाबुनदवह से दाख़िल हुए तो मैं ने दो शख्स देखे, उन में से एक बुढ़ा और दूसरा जवान था । जब उन्होंने ने उस को देखा तो मुस्कुआए और खड़े हो कर मुआनका किया, और कहा : “الْحَمْدُ لِلَّهِ عَلَى السَّلَامَةِ.” मैं ने अपने रफ़ीक़ नौजवान से पूछा : “**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप पर रहूम फ़रमाए ! येह कौन हैं ?” उस ने जवाब दिया : “उम्र रसीदा बुजुर्ग हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم और जवान हज़रते सय्यिदुना मारूफ़ कर्खी عليه رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم हैं ।” फिर हम ने मगरिब व इशा की नमाज़ पढ़ी, हम सब अपनी ताक़त के मुताबिक़ नमाज़ के लिये खड़े हुए, मैं उन के साथ नमाज़ पढ़ता रहा यहां तक कि हालते सजदे में मुझे नींद आ गई । जब मैं बेदार हुवा तो वहां कोई न था, मैं गुमज़दा शख्स की तरह तन्हा रह गया, उन को मस्जिदे हराम, मक्कए मुकर्रमा और मिना शरीफ़ में बहुत तलाश किया लेकिन कहीं न मिले । मैं उन से बिछड़ने की वजह से रोता हुवा वापस आ गया ।”

**प्यारे इस्लामी भाइयो !** उन लोगों की सिफ़ात सुनो जिन्होंने ने इश्क़ को छुपाया और हमेशा इश्क़ करते भी रहे, सलाम आम किया, खाना ख़ैरात किया, हमेशा रोज़े रखे, रातों में नमाज़ पढ़ते रहे जब कि लोग सोए हुए होते, गुनाहों से इज्तिनाब करते रहे, मख़्लूक से कनाराकश रहे और मौला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मुनाजात के लिये ख़ल्वत इख़्तियार की और ख़ल्वतो तन्हाई में भी इताअत करते रहे लिहाज़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन की ख़ताएं मुआफ़ फ़रमा दीं, उन के दरजात बुलन्द किये । जब वोह नदामत के समन्दर पर सुवार हुए, और मलामत की हवा से बचते हुए सलामती की सर ज़मीन में पहुंचे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन के दिलों को पाक कर दिया और उन के ऐबों पर पर्दा डाल दिया, उन के गुनाह बख़्शा दिये और उन्हें उन के मत्लूब तक पहुंचा दिया तो उन्होंने ने उस को पहचान लिया और उस को इबादत के लाइक़ समझा तो उस की इबादत करने लगे, और उन्होंने ने उस से मुआमला करने में नफ़अ पाया तो उस से मुआमला किया, और सिद्को वफ़ा पर उस की बैअत की, उन्होंने ने क़त्ल करने वाले और कैदी के दरमियान तक्दीर के फैसले से हैरान हो कर रुख़्सारों पर आसूं बहाए और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में निदा दी : “ऐ अपने बन्दों की तौबा क़बूल फ़रमाने और बुराइयों को मिटाने वाले ! ऐ वोह ज़ात सम्तें जिस का इहाता नहीं कर सकती और जिस पर आवाज़ें मुख़लिफ़ नहीं होती ! हमें आफ़ात की तारीकी से निकाल कर सिफ़ात के इदराक़ का नूर अता फ़रमा । (आमीन)

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़ज़हुन अनिल उयूब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने आलीशान है : “الشَّابُّ النَّائِبُ حَبِيبُ اللَّهِ” या’नी जवानी में तौबा करने वाला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का हबीब है ।”

(حلیۃ الاولیاء، عبد المالك بن عمر بن عبد العزيز، الحديث ۷۴۹۶ ج ۵، ص ۳۹۴، مفهوما)

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बन्दे से येह महब्बत उस वक़्त होती है जब कि वोह जवानी में तौबा करने वाला हो क्यूंकि नौजवान तर और सर सब्ज़ टहनी की तरह होता है। जब वोह अपनी जवानी और हर तरफ़ से शहवातो लज़्ज़ात से लुफ़्त उठाने और उन की रग़बत पैदा होने की उम्र में तौबा करता है, और येह ऐसा वक़्त होता है कि दुन्या उस की तरफ़ मुतवज्जेह होती है। इस के बावुजूद महज़ रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये वोह उन तमाम चीज़ों को तर्क कर देता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की महब्बत का मुस्तहिक् बन जाता है और उस के मक्बूल बन्दों में उस का शुमार होने लगता है।

**मन्कूल** है कि “एक नौजवान जब तौबा कर के **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ रुजूअ करता है तो उस के लिये ज़मीनो आस्मान के दरमियान सत्तर किन्दीलें रोशन की जाती हैं और मलाइका सफ़ बस्ता हो कर बुलन्द आवाज़ से तस्बीह तक्दीस करते हुए उसे मुबारकबाद देते हैं। जब इब्लीसे लईन उस को सुनता है तो कहता है: “क्या ख़बर है?” आस्मान से एक मुनादी निदा देता है: “एक बन्दे ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से सुल्ह कर ली है।” तो इब्लीस मल्लूज़ इस तरह पिघलता है जिस तरह नमक पानी में पिघलता है।”

**मन्कूल** है कि जब बन्दे का गुनाहों से भरा हुवा नामए आ'माल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में पेश होता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़िरिश्तों से फ़रमाता है: “मेरे बन्दे के नामए आ'माल में क्या है?” हालांकि वोह सब से ज़ियादा जानता है। तो फ़िरिश्ते अर्ज़ करते हैं: “ऐ हमारे मा'बूद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ! उस का नामए आ'माल तेरी बारगाह में पेश करने के काबिल नहीं।” तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है: “अगर उस का नामए आ'माल मेरी बारगाह में पेश किये जाने के लाइक़ नहीं (तो क्या हुवा) मेरी रहमत तो उस के लाइक़ है, ऐ फ़िरिश्तो! गवाह हो जाओ! बेशक मैं ने उस को बख़्श दिया और मुआफ़ फ़रमा दिया और मैं तौबा क़बूल करने वाला, मेहरबान हूँ।”

اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِهِ وَصَحْبِهِ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ



दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तर्बियत के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए मदनी इन्आमात का रिसाला पुर कर के हर मदनी (इस्लामी) माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के (दा'वते इस्लामी के) ज़िम्मादार को जम्अ करवाने का मा'मूल बना लीजिये إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।



बयान 5 :

## फैनाले रमजान

### हम्दे बारी तआला :

तमाम ता'रीफें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जो अपने अज़ीमुशान होने, और हमेशा रहने में यक्ता है, ज़वालो फ़ना से पाक है, मां बाप और औलाद से मुनज़्ज़ह है। अज़मतो किब्रियाई की चादर वाला है, तमाम अश्या को जानने वाला है, इब्तिदा व इन्तिहा से पाक है, वोह ऐसा सुनने वाला है कि दुआएं करने वालों की मुख़्तलिफ़ आवाज़ें उस पर मुश्तबा नहीं होतीं, वोह ऐसा देखने वाला है कि रात की तारीकी में रैत पर रेंगती च्यूटी को भी देख लेता है, ऐसा अलीम है कि ज़मीनो आस्मान में कोई ज़रा बराबर चीज़ भी उस के इल्म से पोशीदा नहीं और ऐसा हलीम है कि अपने नाफ़रमान की बेहतरीन पर्दापोशी फ़रमाता है, वोह अपना ख़ौफ़ रखने वालों को बहुत ज़ियादा ने'मतें देने वाला है, वोह ऐसा हकीम (या'नी हिक्मत वाला) है जिस ने आस्मान को बिगैर सुतून के फ़ज़ा में बुलन्द किया और अपनी हिक्मत से फ़र्शें ज़मीं को जारी पानी पर बिछाया। वोह किसी मद्दे मुक़ाबिल, जिद्द और नज़ीर से पाक है, वोह बीवी, औलाद और शरीकों से पाक है। वोह ऐसा जानने वाला है कि जिस से दिलों के राज़ किसी भी वक़्त पोशीदा नहीं रहते और न उस पर ज़मीनो आस्मान में कोई शै मख़्फ़ी है।

पाक है वोह जिस ने ज़मानों को एक हिसाब से रखा और मोसिमों को मुक़रर फ़रमाया, उस ने अपनी मा'रिफ़त के समन्दर में अक्लों और सोचों को मुस्तगरक़ किया। उस की हकीक़त में अक्लें हैरान हैं। उस की बुलन्दी की मा'रिफ़त तक पहुंचने वाला कोई नहीं। उस ने माहे रमज़ान को अफ़व, मग़फ़िरत, बिशारत, रिज़ा, सुरूर और क़बूलिय्यत के साथ ख़ास किया, उस ने रोज़े रखने वाले को उस की मुराद तक पहुंचाने का वा'दा किया, उस के लिये खुशख़बरी है जिस ने अपने आ'ज़ा को शको शुबा से पाक किया और नेक आ'माल के साथ माहे रमज़ान का इस्तिक्बाल किया।

**ऐ ग़ाफ़िल इन्सान !** ग़फ़लत की नींद से बेदार हो जा और जल्दी कर। अभी वक़्त है इस से पहले कि दरे रहूमत बन्द हो जाए, पाक है वोह जिस ने लोगों को अपने दीन की ख़िदमत और उस की महबूबत में मशगूल रखा, अब उस के सिवा उन की कोई और मस्रूफ़िय्यत नहीं, वोह शहवात से बचते रहे तो उन को गुनाहों को मिटा दिया और उन को उन के मक़सिद और उम्मीदों तक पहुंचाया। उन की रोज़े रखने पर मदद की तो उन्होंने ने रोज़े रखे, उन को तारीकियों में खड़ा किया तो वोह उस की इबादत में लम्बी लम्बी रातें क़ियाम करते रहे। उन्होंने ने हदीषे पाक सुनी कि **“أَنَّ الصَّوْمَ جَنَّةٌ”** (الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان، كتاب الصوم، باب فضل الصوم، الحديث ३४१८، ج २، ص १८०) **या'नी रोज़ा ढाल है।”**

तो वोह बुरे अफ़ालो अक्वाल से अपनी जानों को बचाते रहे। कितनी बड़ी सआदत है उस शख़्स के लिये जिस के माहे रमज़ान में आ'माल क़बूल हुए और कितनी बड़ी बदबख़्ती है उस के लिये जिस ने रोज़ों में ग़फ़लतो कोताही बरती, उस शख़्स का सदक़ए फ़ित्र क़बूल नहीं अगर्चे हलाल चीज़ से दे। वोह हमेशा सीधी राह से हट कर बुराइयों में पड़ा रहा तो ऐसी ख़स्लतों वाला शख़्स सुन ले कि उस की मौत करीब है और वोह लहव व ला'ब में पड़ा हुवा है।

**पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इलिमिया (दा'वते इस्लामी)**

تَرْجَمَةُ كَنْزِ الْإِيمَانِ : तो तुम में जो कोई  
 (۱) فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَرِيضًا أَوْ عَلَى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِنْ أَيَّامٍ أُخَرَ (البقرة: ۱۸۴)  
 बीमार या सफ़र में हो तो उतने रोज़े और दिनों में ।

पाक है वोह जिस ने इस उम्मत पर एहसान फ़रमाया और इस को बहुत ज़ियादा फ़ज़ीलत  
 अता फ़रमाई और माहे रमज़ान को इस की मग़फ़िरत के साथ खास कर दिया :  
 (۲) تَرْجَمَةُ كَنْزِ الْإِيمَانِ :  
 (البقرة: ۱۸۵) رَمَضَانَ الَّذِي أُنْزِلَ فِيهِ الْقُرْآنُ هُدًى لِلنَّاسِ وَبَيِّنَاتٍ مِنَ الْهُدَى وَالْفُرْقَانِ  
 रमज़ान का महीना जिस में कुरआन उतरा लोगों के लिये हिदायत और रहनुमाई और फ़ैसले की  
 रोशन बातें ।

فَدَجَاءَ شَهْرُ الصَّوْمِ فِيهِ الْإِيمَانُ وَالْعَتَقُ وَالْفَوْزُ بِسُكْنَى الْجَنَانِ  
 شَهْرٌ شَرِيفٌ فِيهِ نَيْلُ الْمُئْتَنَى وَهُوَ طِرَازٌ فَوْقَ كَمِّ الرِّمَانِ  
 طُوبَى لِمَنْ صَامَهُ وَاتَّقَى مَوْلَاهُ فِي الْفِعْلِ وَنُطِقِ اللِّسَانِ  
 وَيَا هُنَا مَنْ قَامَ فِي لَيْلِهِ وَدَمَعُهُ فِي الْخَلْدِ يَحْكِي الْحَمَانَ  
 ذَاكَ الَّذِي قَدْ خَصَّصَهُ رَبُّهُ بِجَنَّةِ الْخُلْدِ وَخُورِ الْحُسْنَانِ

तर्जमा : (1)....बेशक रमज़ान का महीना आ गया, इस में अम्न, जहन्नम से आज़ादी और जन्नत  
 में ठहरने के साथ कामयाबी है ।

(2)....इस माहे मुबारक में बन्दा अपनी आरज़ूएं पूरी करता है और येह कितने ही ज़मानों से  
 बेहतर नुमूना है ।

①..... मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़े आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي  
 तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं : “सफ़र से वोह मुराद है जिस की मसाफ़त तीन दिन  
 से कम न हो । इस आयत में अल्लाह तआला ने मरीज़ व मुसाफ़िर को रुख़सत दी कि अगर उस को रमज़ान मुबारक में रोज़ा  
 रखने से मरज़ की ज़ियादती या हलाक का अन्देश हो या सफ़र में शिद्दत तकलीफ़ का तो वोह मरज़ व सफ़र के अय्याम में  
 इफ़तार करे और बजाए इस के (या'नी उस की जगह) अय्यामे मन्हिय्या (या'नी मम्नुअ दिनों) के सिवा और दिनों में उस की क़ज़ा  
 करे । अय्यामे मन्हिय्या पांच दिन हैं जिन में रोज़ा रखना जाइज़ नहीं । दोनों ईदें और ज़िलहिज्जा की ग्यारहवीं, बारहवीं, तेरहवीं  
 तारीखें । मस्अला : मरीज़ को महज़ वहम पर रोज़े का इफ़तार जाइज़ नहीं जब तक दलील या तज़रिबा या ग़ैर ज़ाहिरुल फ़िस्क  
 तबीब (या'नी जो ज़ाहिरी तौर पर फ़ासिक न हो) की ख़बर से उस का ग़ुलबए ज़न्न हासिल न हो कि रोज़ा मरज़ के तूल या  
 ज़ियादती का सबब होगा । मस्अला : जो बिल फ़े'ल बीमार न हो लेकिन मुसलमान तबीब येह कहे कि वोह रोज़े रखने से  
 बीमार हो जाएगा वोह भी मरीज़ के हुक्म में है । मस्अला : हामिला या दूध पिलाने वाली औरत को अगर रोज़ा रखने से अपनी  
 या बच्चे की जान का या उस के बीमार हो जाने का अन्देश हो तो उस को भी इफ़तार (या'नी छोड़ देना) जाइज़ है ।  
 मस्अला : जिस मुसाफ़िर ने तुलूए फ़ज़ से क़ब्ल सफ़र शुरू किया उस को तो रोज़े का इफ़तार जाइज़ है लेकिन जिस ने बा'दे  
 तुलूअ सफ़र किया उस को उस दिन का इफ़तार जाइज़ नहीं ।”

②.....मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़े आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي  
 तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं : “इस के मा'ना में मुफ़स्सिरीन के चन्द अक्वाल हैं । येह  
 कि रमज़ान वोह है जिस की शानो शराफ़त में कुरआने पाक नाज़िल हुवा । येह कि कुरआने करीम में नुज़ूल की इब्तिदा रमज़ान  
 में हुई । येह कि कुरआने करीम बित्तमामेह (या'नी मुकम्मल) रमज़ानुल मुबारक की शबे क़द्र में लौहे महफूज़ से आस्माने दुन्या की  
 तरफ़ उतारा गया और बैतुल इज़ज़त में रहा येह उसी आस्मान पर एक मक़ाम है यहां से वक़्तन फ़ वक़्तन हस्बे इक़तज़ाए हिकमत  
 जितना जितना मन्ज़ूरे इलाही हुवा जिब्रिले अमीन लाते रहे । येह नुज़ूल तेईस साल के अंस में पूरा हुवा ।”



(3)....उस के लिये खुशख़बरी है जिस ने माहे रमज़ान के रोज़े रखे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उसे बुरे कामों और ज़बान की लगज़िश से महफूज़ फ़रमाया ।

(4)....ऐ वोह शख्स जिस ने उस की रातों में क़ियाम किया और जिस के रुख़्सारों पर आंसू मोतियों की मानिन्द हैं ।

(5)....येह वोह शख्स है जिसे रब्ब عَزَّوَجَلَّ जन्नते खुल्द और इन्तिहाई हसीनो जमील हूरें अता फ़रमाएगा ।

हर किस्म के इन्आमातो एहसानात पर मैं अपने रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ की हम्द करता हूं और मैं गवाही देता हूं कि “**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, वोह यक्ता है, उस का कोई शरीक नहीं, ऐसी गवाही जो ज़बान पर हल्की है लेकिन मीज़ान में भारी बहुत भारी है । और मैं गवाही देता हूं कि हज़रते सय्यिदुना मुहम्मदे मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस के खास बन्दे और रसूल हैं । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर, आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आल, सहाबए किराम, तमाम अज़्वाजे मुतहहरात رِضْوَانُ اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اٰجْمَعِیْن पर, आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की औलाद और भलाई के साथ उन की पैरवी करने वालों पर दुरूद भेजे ।

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : (البقرة: १८०) “شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِي أُنْزِلَ فِيهِ الْقُرْآنُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَبَيِّنَاتٍ مِّنَ الْهُدَىٰ وَالْفُرْقَانِ” **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान** : रमज़ान का महीना जिस में कुरआन उतरा लोगों के लिये हिदायत और रहनुमाई और फैसले की रोशन बातें ।

(हज़रते सय्यिदुना शोऐब हरीफ़ीश رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِ इस आयत के तहत फ़रमाते हैं कि) महीने को मशहूर होने की वजह से शहर कहा जाता है और माहे रमज़ान को रमज़ान इस लिये कहते हैं कि येह गुनाहों को मिटा देता है । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़रमाने आलीशान “أُنْزِلَ فِيهِ الْقُرْآنُ” से मुराद येह है कि इस के फ़र्ज़ रोज़ों में कुरआने करीम उतारा गया ।

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास व इब्ने शिहाब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : “मुकम्मल कुरआने हकीम लौहे महफूज़ से आस्माने दुन्या पर एक ही दफ़आ माहे रमज़ान, शबे क़द्र में नाज़िल किया गया । फिर हज़रते सय्यिदुना जिब्राईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام वक़तन फ़ वक़तन वाकिआतो हवादिषात के मुताबिक़ इसे हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास लाते रहे ।”

**शयातीन जन्जीरों में जकड़ दिये जाते हैं :**

हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : “जब माहे रमज़ान आता है तो जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं, जहन्नम के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं और शयातीन जन्जीरों में जकड़ दिये जाते हैं ।”

(صحيح مسلم، كتاب الصيام، باب فضل شهر رمضان الحديث १०७९، ص ८०)

**जन्नत के दरवाज़े खुल जाते हैं :**

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : “जब माहे रमज़ान की पहली रात आती है तो जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और उन में से कोई दरवाज़ा बन्द नहीं होता और जहन्नम

के दरवाजे बन्द कर दिये जाते हैं और उन में से कोई दरवाजा नहीं खुलता। और एक मुनादी निदा करता है : “ऐ अच्छाई मांगने वाले ! (अल्लाह तआला की इताअत की तरफ) आगे बढ़ और ऐ शरीर ! (शर से) बाज़ आ जा ।” **अब्ल्लाह** عَزَّوَجَلَّ माहे रमज़ान की हर रात में कई लोगों को आग से आज़ादी अता फ़रमाता है । (جامع الترمذی، ابواب الصوم، باب ما جاء فی فضل شهر رمضان، الحديث ٦٨٢، ص ١٧١-)

شعب الايمان للبيهقي، باب فی الصيام، فضائل شهر رمضان، الحديث ٣٦٠٦، ج ٣، ص ٣٠٤)

### सगीरा गुनाहों का कफ़ारा :

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि हुज़ूर सय्यिदुल मुबल्लिगीन, जनाबे रहमतुल्लिल आलमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “जिस ने ईमान की वजह से और षवाब के लिये माहे रमज़ान का रोज़ा रखा तो उस के अगले पिछले सब गुनाह बख़्श दिये जाएंगे ।” (السنن الكبرى للنسائي، كتاب الصيام، باب ثواب من قام رمضان وصامه.....الخ، الحديث ٢٥١٣، ج ٢، ص ٨٨)

### शबे क़द्र में इबादत की फ़ज़ीलत :

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि शहनशाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिषाल, बीबी आमेना के लाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : “जो ईमान की वजह से और षवाब के लिये शबे क़द्र का क़ियाम करे उस के गुज़श्ता गुनाह बख़्श दिये जाएंगे ।”<sup>(1)</sup>

(صحيح البخارى، كتاب الصوم، باب من صام رمضان ايمان واحتساب وفيه، الحديث ١٩٠١، ص ١٤٨)

### मैं रोज़ादार हूँ :

सरकारे वाला तबार, हम बेकसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख्तार, बिइज़्ने परवर दगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते हैं कि **अब्ल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आलीशान है : “रोज़े के इलावा बन्दे की हर नेकी दस से सात सो गुना तक बढ़ा दी जाती है क्योंकि रोज़ा मेरे लिये है और मैं ही उस की जज़ा दूंगा। बन्दा अपनी ख़्वाहिश और खाने पीने को मेरे लिये तर्क कर देता है। रोज़ा जहन्नम से ढाल है और रोज़ेदार के मुंह की बू **अब्ल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के

①...शैख़े तरीक़्त, अमीरे अहले सुन्नत हज़रते अल्लामा मौलाना मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरِي دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ फ़रमाते हैं : रमज़ानुल मुबारक में रहमतों की छमाछम बारिशें और गुनाहे सगीरा के कफ़रों का सामान हो जाता है। गुनाहे कबीरा तौबा से मुआफ़ होते हैं। तौबा करने का तरीक़ा यह है कि जो गुनाह हुवा ख़ास उस गुनाह का ज़िक्र कर के दिल की बेज़ारी और आयन्दा इस से बचने का अहद कर के तौबा करे। मषलन झूट बोला, तो बारगाहे खुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में अर्ज़ करे, या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं ने जो येह झूट बोला इस से तौबा करता हूँ और आयन्दा नहीं बोलूंगा। तौबा के दौरान दिल में झूट से नफ़रत हो और “आयन्दा नहीं बोलूंगा” कहते वक़्त दिल में येह इरादा भी हो कि जो कुछ कह रहा हूँ ऐसा ही करूंगा ज़भी तौबा है। अगर बन्दे की हक़ तलफ़ी की है तो तौबा के साथ साथ उस बन्दे से मुआफ़ करवाना भी ज़रूरी है।” (फ़ैज़ाने सुन्नत, बाब फ़ैज़ाने रमज़ान, जिल्द अब्वल, स. 855)

नज़्दीक मुश्क से ज़ियादा पाकीज़ा है। जब तुम में से किसी के रोज़े का दिन हो तो वोह न बेहूदा बके, न ही जाहिलाना काम करे। अगर कोई उस से लड़ाई करे या उसे गाली दे तो वोह कह दे कि मैं रोज़े से हूँ।” (1) (جامع الترمذی، ابواب الصوم، باب ما جاء فی فضل الصوم، الحديث ۷۶۴، ص ۱۷۲۲ - سنن ابن ماجه، ابواب الصيام،

باب ما جاء فی فضل الصيام، الحديث ۱۶۳۸، ص ۲۵۷۵ - صحيح مسلم، کتاب الصيام، باب فضل الصيام، الحديث ۱۱۵۱، ص ۸۶۲)   
 हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबूवत, मख़्ज़ने जूदो सखावत, पैकरे अज़मतो शराफ़त, महबूबे रब्बुल इज़ज़त, मोहसिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : “जो बुरी बात कहना और उस पर अमल करना न छोड़े तो उस के भूका प्यासा रहने की **اَللّٰہُ** عَزَّ وَجَلَّ को कुछ हाज़त नहीं।”

(صحيح البخاری، کتاب الصوم، باب من لم يدع قول الزور والعمل به فی الصوم، الحديث ۱۹۰۳، ص ۱۴۹)

हदीषे पाक में है कि “गीबत रोज़ेदार का रोज़ा ख़त्म कर देती है।” (2)

(فتح الباری لابن حجر العسقلانی شرح صحيح البخاری، کتاب الصوم، باب فضل الصوم، تحت الحديث ۱۸۹۴، ج ۵، ص ۹۲)

## रोजेदार के लिये दो खुशियां :

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि **اَللّٰہُ** عَزَّ وَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब صَلَّی اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने फ़रहत निशान है : “रोजेदार के लिये दो खुशियां हैं : एक इफ़्तार के वक़्त और दूसरी अपने रब्ब **عَزَّ وَجَلَّ** से मुलाक़ात के वक़्त।”

(صحيح مسلم، کتاب الصيام، باب فضل الصيام، الحديث ۱۱۵۱، ص ۸۶۲)

وَقَدْ صُمْتُ عَنِ اللَّذَاتِ ذَهَرْتُ كُلَّهَا وَيَوْمَ لِقَاكُمْ ذَاكَ فِطْرُ صَيَامِي

तर्जमा : (1)....बेशक मैं ने अपनी सारी ज़िन्दगी लज़्ज़ात से रोज़ा रखा (या'नी उन्हें छोड़े रखा) और तेरे दीदार के दिन ही मेरा रोज़ा इफ़्तार होगा।

①....शैख़े त्रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत हज़रते अल्लामा मौलाना मुहम्मद इल्ल्यास अन्तार कादिरि دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ التَّالِيَةِ फ़रमाते हैं : **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** आज कल तो मुअमला ही उल्टा हो गया है या'नी अगर कोई किसी से लड़ भी पड़ता है तो गरज कर यूँ गोया होता है, “चुप हो जा ! वरना याद रखना ! मैं रोज़े से हूँ और रोज़ा तुझ ही से खोलूंगा।” या'नी तुझे खा जाऊंगा। (فَعَاذَ اللّٰهُ عَزَّ وَجَلَّ) तौबा ! तौबा ! इस किस्म की बात हरगिज़ ज़बान से न निकलनी चाहिये बल्कि अज़िज़ी का मुज़ाहरा करना चाहिये। (फ़ैज़ाने सुन्नत, बाब फ़ैज़ाने रमज़ान, जिल्द अव्वल, स. 968)

②....सदरुशशीरा, बदरुत्तरीका मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِي तहरीर फ़रमाते हैं : “एहतिлам हुवा या गीबत की तो रोज़ा न गया अगर्चे गीबत बहुत सख़्त कबीरा (गुनाह) है कुरआने मजीद में गीबत करने की निस्बत फ़रमाया “जैसे अपने मुर्दा भाई का गोशत खाना।” (الحجرات: ۱۲) और हदीष में फ़रमाया : “गीबत ज़िना से भी सख़्त तर है।” (المعجم الاوسط، الحديث ۶۵۹۰، ج ۵، ص ۶۳)

(बहारे शरीअत, हिस्सा 5, स. 119)



मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! माहे रमज़ान दिल की सफ़ाई, मुआमला और वफ़ा का महीना है, उन लोगों को मुबारक हो जो ख्वाहिशाते नफ़सानी से बचते रहे और तन्हाई में आयाते कुरआन की तिलावत करते रहे, उन के लिये उन के रोज़ों के इवज़ पवाब दुगना कर दिया गया और उन से जन्नती महल्लात और बालाख़ानों का वा'दा किया गया। उन के थोड़े से अच्छे आ'माल भी क़बूल कर लिये गए और बुरे अफ़आल से दर गुज़र कर दिया गया। हाए अफ़सोस ! गाफ़िलों की महरूमि ! उन्होंने ने रब्ब عَزَّوَجَلَّ की मुलाक़ात को ह़राम कर लिया और क़तए तअल्लुकी व वा'दा ख़िलाफ़ी करने वाले हो गए :

يَا نَافِضِينَ الْعَهْدَ كُمْ هَذَا الْحَفَا  
شَهْرُ الرِّضَا وَالْعُقُودِ عَنْ زَلَاتِكُمْ  
شَهْرٌ عَلَى الْآيَّامِ فَضَّلَ قَدْرُهُ  
فَاحْيُوا لِيَالِيهِ الْمُتَمِيرَةَ كُلَّهَا  
فَعَسَى الْإِلَهِ يَجُودُ فِيهِ بِفَضْلِهِ  
تَوْبُوا فَقَدْ وَافَاكُمْ شَهْرُ الصَّفَا  
وَاللَّهُ فِيهِ عَنِ الْحَرَائِمِ قَدْ عَفَا  
وَعَلَا عَلَى كُلِّ الشُّهُورِ مَشْرِقًا  
وَأَجْرُوا لِفُرْقَتِهِ الدُّمُوعَ تَأْسَفَا  
فَهُوَ الَّذِي يَهَبُ الدُّنُوبَ تَلْطُفَا

तर्जमा : (1)....ऐ अहद तोड़ने वालो ! कब तक जफ़ा करते रहोगे अब तौबा कर लो तहकीक़ तुम्हारे पास पाक करने वाला महीना तशरीफ़ ला चुका है।

(2)....येह रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ और तुम्हारी लग़िज़शों से अफ़व व दरगुज़र का महीना है और **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ इस महीने में जुर्मों को मुआफ़ फ़रमाता है।

(3)....येह वोह महीना है जिस की क़द्रो मन्ज़िलत तमाम महीनों से बढ़ कर है और जो अज़मत के ए'तिबार से तमाम महीनों से बुलन्द है।

(4)....इस की तमाम नूरानी रातें जाग कर गुज़ारो और इस की जुदाई में अफ़सोस कर के आसू बहाओ।

(5)....क़रीब है कि **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ अपना फ़ज़्लो करम फ़रमाए और वोह ऐसा मेहरबान है जो अपनी मेहरबानी से तमाम गुनाहों को मिटा देता है।

**सख़ियदे आलम** صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सख़ावत :

हज़रते सख़ियदुना इब्ने अब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी है कि हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक़बर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم भलाई में तमाम लोगों से ज़ियादा सख़ी थे और रमज़ानुल मुबारक में जब हज़रते सख़ियदुना जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मुलाक़ात करते तो और ज़ियादा सख़ावत फ़रमाया करते, और हज़रते सख़ियदुना जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم से माहे रमज़ान की हर रात मुलाक़ात किया करते यहां तक कि पूरा महीना गुज़र जाता। हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक़ صَلَّय़ुन अल्लैहि व सलाम उन के साथ कुरआने पाक का दौर फ़रमाते। जब हज़रते सख़ियदुना जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام आप صَلَّय़ुन अल्लैहि व सलाम से मिलते तो आप صَلَّय़ुन अल्लैहि व सलाम तेज़ चलने वाली हवा से भी ज़ियादा भलाई में सख़ावत फ़रमाते।”

(صحيح البخارى، كتاب الصوم، باب اجود ما كان النبي صلى الله تعالى عليه وسلم يكون في رمضان، الحديث ١٩٠٢، ص ٤٨)

## रमज़ानुल मुबारक की बिशारत और शबे क़दर की फ़ज़ीलत :

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइषे नुज़ूले सकीना, फ़ैजे गंजीना وَاللَّهُ وَاسَّلَمُ ने सहाबाए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को बिशारत देते हुए इरशाद फ़रमाया : “तुम्हारे पास बरकत वाला महीना आ चुका है। **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने तुम पर इस के रोज़े फ़र्ज फ़रमाए हैं और तुम्हारे लिये इस महीने का क़ियाम (या'नी नमाज़े तरावीह) सुन्नत है। जब माहे रमज़ान आता है तो जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं, जहन्नम के दरवाज़े बंद कर दिये जाते हैं, शयातीन जकड़ दिये जाते हैं और इस में एक रात ऐसी है जो हज़ार महीनों से अफ़ज़ल है।”

(مصنف ابن ابی شبيبہ، کتاب الصیام، باب ۱، ما ذکر فی فضل رمضان وثوابہ، الحدیث ۱، ج ۲، ص ۴۱۹)

(جامع الترمذی، ابواب الصوم، باب ما جاء فی فضل شهر رمضان، الحدیث ۶۸۲، ص ۱۷۱)

**प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो !** मोअमिनीन के लिये जन्नत की येह बिशारत रोज़ों के ज़रीए शहवात के तर्क करने और ताअ़त पर सब्र करने का इन्आम है, जो सब्र करेगा उसे अज़्र मिलेगा, जो शुक्र करेगा उसे तंगी के बा'द आसानी मिलेगी, जो सदका करेगा उसे फ़ज़ल व नेकी मिलेगी, जिस ने लोगों से नेकी की उस ने अपनी आख़िरत के लिये नेकियों का ज़ख़ीरा कर लिया और जिस ने **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की रिज़ा के लिये रोज़े रखे और क़ियाम किया उस के गुनाह बख़्श दिये जाएंगे और जिस ने **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ को अपने दिल में याद किया **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ अपने फ़िरिशतों में उस का चर्चा करेगा और जिस ने तक्वा इख़्तियार किया उस ने कामयाबी और बिशारत को पा लिया :

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो **अल्लाह** से डरे **अल्लाह** उस के काम में आसानी फ़रमा देगा ।**

**﴿ ۱ ﴾ وَمَنْ يَتَّقِ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مِنْ أَمْرِهِ يُسْرًا ۝**  
(پ ۲۸، الطلاق : ۴)

**ऐ भाई !** ज़मानए रहमत को ग़नीमत जान कि येह खुशगवार अय्याम गिनती के हैं । रोज़े की रातों में नजात त़लब कर कि उस की घड़ियां बरोज़े क़ियामत गवाही देंगी, और बिला मशक्कत हासिल होने वाली नेकियां पाने की कोशिश कर पस रोज़ेदार के आ'माल का अज़्र फ़ौरन मिलता है । चुनान्वे मन्कूल है कि “रोज़ेदार की नींद इबादत और उस का सांस तस्बीह है, उस की दुआ क़बूल होती है और उस के अमल (के षवाब) को कई गुना बढ़ा दिया जाता है ।”

(شعب الایمان للبيهقي، باب فی الصیام، الحدیث ۳۹۳۷، ج ۳، ص ۴۱۵ “ونفسه” بدلہ “وصمته”)

उस पर इतना करम क्यूं न हो जब कि उस ने अपने नफ़्स को शहवात से रोका और लज़ज़ात को तर्क किया और अपने मौला عَزَّ وَجَلَّ के हिस्से को अपनी लज़ज़ातो शुब्हात के हिस्से पर तरजीह दी और उस के अहकाम की इताअ़त और रुकूअ व सुजूद से लज़ज़त हासिल की । जैसा कि

मन्कूल है : “बन्दा जब सजदे में सो जाता है तो **अब्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के इस हाल पर मलाइका के सामने फ़ख़ करता है और फ़रमाता है : “ऐ मेरे फ़िरिश्तो ! मेरे इस बन्दे को देखो, इस की रूह मेरे पास है और उस का जिस्म मेरे सामने है, गवाह हो जाओ कि मैं ने उसे बख़्श दिया ।”

(الزهّد للإمام أحمد بن حنبل، أخبار الحسن بن أبي الحسن، الحديث ١٦٠٦، ص ٢٨٨، مختصر)

कितने ही अच्छे हैं साजिदीन के सजदे ! कितनी ही इज़्ज़त वाली हैं रोज़ेदारों की सांसें ! और कितनी ही फ़ाइदामन्द हैं क़ियाम करने वालों की मुनाजात ! कितना ही नफ़अ बख़्श है इबादत करने वालों का सरमाया ! कितनी ही अच्छी है महबूबत करने वालों की नदामत ! और कितनी ही नफ़अ बख़्श है रोज़ेदारों की भूक ! जैसा कि मन्कूल है कि बन्दा जब भूक की हालत में सोता है तो शैतान उस से भाग जाता है ।”

जब रोज़ेदार जाग रहा होता है उस वक़्त शैतान का क्या हाल होता होगा ? और बन्दा जब सैरी की हालत में जाग रहा होता है तो शैतान उस की रगों में ख़ून की तरह गर्दिश करता है तो जब बन्दा पेट भर कर सोता होगा तो उस वक़्त उस का क्या हाल होता होगा ? ऐ बन्दे ! भूक की बरकत और उस में इन्सान का फ़ाइदा देख ! शैतान उस से कैसे भागता है ।

### रोज़ेदार की सांसों और शैतान का डरना :

एक नेक शख़्स मस्जिद की तरफ़ जा रहा था, उस ने मस्जिद में दो आदमी देखे जिन में से एक नमाज़ पढ़ रहा था और दूसरा मस्जिद के दरवाज़े पर सोया हुवा था जब कि शैतान बाहर हैरानो परेशान खड़ा, आग में जल रहा था । उस मर्दे सालेह ने शैतान से पूछा : “मैं तुझे हैरान क्यूं देख रहा हूं ?” शैतान ने जवाब दिया : “इस मस्जिद में एक शख़्स नमाज़ पढ़ रहा है जब भी मैं उस को नमाज़ से बहकाने और गाफ़िल करने के लिये दाख़िल होने का इरादा करता हूं तो मस्जिद के दरवाज़े पर सोने वाले शख़्स के सांस मुझे रोक देते हैं ।”

देखो ! रोज़ेदारों की सांसों कैसे शैतान के मक्र से दिलों और जिस्मों की निगेहबानी करती हैं कि शैतान उन तक नहीं पहुंच सकता और न उन के पास आ सकता है । पाक है वोह जिस ने अपने पसन्दीदा बन्दों को हिदायत व सवाब (या'नी दुरुस्तगी) की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई :

أَنْتَ أَصْلَحْتَ مَنْ أَصَابَ الصَّوَابَ	أَنْتَ وَفَّقْتَ مَنْ إِلَيْكَ آتَا
ثُمَّ أَعْطَيْتَهُمْ عَلَيْهِ ثَوَابًا	أَنْتَ حَبَبْتَ مَا تُحِبُّ إِلَيْهِمْ
فَعَدُّوا يَبْحَثُونَ عَنْهَا طَلَابًا	أَنْتَ عَرَفْتَهُمْ كُنُوزَ الْمَعَالِي

तर्जमा : (1)....ऐ **अब्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तू ने अपनी तरफ़ रुजूअ करने वाले को तौबा की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई, तू ने ही हक़ तक पहुंचने वाले को हिदायत अता फ़रमाई ।



(2)....जो चीज़ (या'नी तौबा) तुझे पसन्द है उस की महबूबत तू ने बन्दों के दिलों में डाल दी फिर उस पर इन्हें अज़्रो षवाब भी अता फ़रमा दिया ।

(3)....तू ने उन को इज़्ज़त व मर्तबे के ख़ज़ानों की पहचान कराई पस वोह उन ख़ज़ानों की बहुत ज़ियादा जुस्तज़ु करने लगे ।

**मन्कूल है कि “**اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ ने माहे रमज़ान को बहुत सी खुसूसिय्यात के साथ ख़ास फ़रमाया, उन में से एक येह कि इस को अज़मत और बरकत वाला महीना बनाया, इस में एक रात ऐसी है जो हज़ार महीनों से बेहतर है, **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** ने इस महीने के रोज़े फ़र्ज़ फ़रमाए और रातों के कियाम को नफ़ल बनाया, जिस ने माहे रमज़ान में नेकी के ज़रीए **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** का कुर्ब चाहा गोया उस ने ग़ैरे रमज़ान में फ़र्ज़ अदा किया । येह महीना सब्र का है और सब्र का षवाब जन्नत है । जिस ने इस में फ़र्ज़ अदा किया गोया उस ने ग़ैरे रमज़ान में सत्तर फ़र्ज़ अदा किये, येह एक दूसरे की मदद करने का महीना है, येह ऐसा महीना है जिस में मोमिन का रिज़्क बढ़ा दिया जाता है, जिस ने इस में रोज़ेदार को इफ़्तार कराया गोया उस ने एक गुलाम आज़ाद किया और जिस ने उसे पेट भर कर खाना खिलाया और पिलाया तो **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** उस को मोहर लगी हुई साफ़ शफ़फ़ाफ़ पाकीज़ा शराब पिलाएगा जिस के बा'द वोह कभी प्यासा न होगा और येह षवाब उस शख़्स को मिलेगा जो रोज़ेदार को दूध, पानी या खजूर से इफ़्तार कराए । येह ऐसा महीना है जिस का पहला अशरा रहूमत, दरमियाना मग़फ़िरत और आख़िरी जहन्नम से आज़ादी है । लिहाज़ा तुम इस में चार चीज़ों की क़षरत करो, दो वोह हैं जिन से तुम अपने रब्ब **عَزَّوَجَلَّ** को राज़ी कर सकते हो : (1) इस बात की गवाही देना कि **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं (2) हर वक़्त उस की बारगाह में इस्तिफ़ार करते रहना । और दो ऐसी हैं जिन से तुम बे नियाज़ नहीं हो सकते : (1) तुम्हारा **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** से जन्नत का सुवाल करना और (2) जहन्नम से पनाह मांगना ।

**प्यारे इस्लामी भाइयो !** अफ़सोस उस पर जिस का ठिकाना जहन्नम है, जिस ने अपने मौला **عَزَّوَجَلَّ** की नाफ़रमानी की, जिस ने अपनी आख़िरत को दुनिया के बदले बेच दिया और जिस का अन्जाम अज़ाब है । अफ़सोस उस पर जो गुमराही के जाल में फंस कर ख़्वाहिशात का गुलाम बन गया, अफ़सोस उस पर जिसे इस मुबारक महीने में भी रब्ब **عَزَّوَجَلَّ** की बारगाह से धुत्कार दिया गया फिर उस की पनाह चाहे ।

آه عَلَى مَنْ جَفَاهُ مَوْلَاهُ

جَهْرًا وَمَا تَابَ مِنْ خَطَايَاهُ

لَمْ يَخَفِ اللَّهَ ثُمَّ يَخْشَاهُ

فِي مِثْلِ هَذَا الشَّهْرِ عَفْوُ مَوْلَاهُ

يَدَارِ دُنْيَاهُ دَارَ آخِرَاهُ

آه عَلَى الْمُذْنِبِينَ أَوَّاهُ

آه عَلَى مَنْ عَصَا بِغَفْلَتِهِ

آه عَلَى الْمُذْنِبِ الْحَزِينِ إِذَا

آه عَلَى مَنْ يَفُوتُهُ أَسْفَا

آه مَنْ يَبِيعُ مُغْتَنِبًا

وَحَصَّكُمْ بِالْعَطَايَا يَا أُمَّةَ الْمُخْتَارِ  
حَيْثُ إِنجَحْتُمْ تَوَجَّهَ وَحَيْثُ سَرُّتُمْ سَارَ  
شُعَاعُهُ يَتَلَالَا مِنْ كَثْرَةِ الْأَنْوَارِ  
مِثْلَ الشَّمْسِ وَفِيكُمْ مِنْ يُشْبِهُ الْأَقْمَارِ  
فُؤَمُوا تَعَالَوْا تَمْلُوا بِالْوَصْلِ يَا زَوَارِ  
وَنُورُنَا قَدْ تَجَلَّى وَرَأَيْتِ الْكَذَّارِ

سُبْحَانَ مَنْ تَصَدَّقَ عَلَيْكُمْ بِصِيَامِكُمْ  
تَأْتُونَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَصُومُكُمْ مِنْ فُؤُوكُمْ  
مَحْمُولٌ فَوْقَ الْغَنَائِمِ عَلَى يَدِ الْمَلَائِكَةِ  
وَتَقْلِبُومُونَ الْمَوْقِفَ تَحْلُوا عَلَى كُلِّ الْأُمَمِ  
وَقَدْ صَفَا الْوَقْتُ لِمَا نَادَاكُمْ مَوْلَاكُمْ  
هَذَا جَمَالِي تَبْدَى وَالْحُبُّ عَنْكُمْ رَفَعْتُ

**तर्जमा :** (1)....अफ़सोस ना फ़रमानों पर कि (नाफ़रमानी के बावजूद) रब्ब की पनाह तलब करते हैं, अफ़सोस उस पर जिस का रब्ब उस से नाराज़ हो ।

(2)....अफ़सोस उस पर जिस ने अपनी ग़फ़लत के सबब खुले आम नाफ़रमानी की और अपनी ख़ताओं से तौबा न की ।

(3)....अफ़सोस उस ग़मज़दा गुनहगार पर जो (गुनाह करते वक़्त) तो **अल्लाह** عزّ وجلّ से नहीं डरता फिर ख़ौफ़ज़दा होता है ।

(4)....अफ़सोस उस पर जो ऐसे बा बरकत महीने में भी **अल्लाह** عزّ وجلّ की बारगाह से मुआफ़ी न पा सका ।

(5)....अफ़सोस उस पर जिस ने धोके में दारे आख़िरत को दुनिया के घर के बदले बेच दिया ।

(6)....ऐ उम्मत मुहम्मदिय्या ! पाक है वोह ज़ात जिस ने तुम पर रोज़ों के सबब एहसान फ़रमाया और तुम्हें अपनी ख़ास इनायात से नवाज़ा ।

(7)....क़ियामत के दिन तुम आओगे और तुम्हारा रोज़ा तुम्हारे ऊपर इस तरह होगा कि तुम जिधर मुतवज्जेह होगे वोह भी होगा और तुम जिधर चलोगे वोह भी चलेगा ।

(8)....फ़िरिश्ते अपने हाथों में इन्आमात उठाए होंगे और उन की, किरनें कषरते अन्वार से जगमगा रही होंगी ।

(9)....तुम सब से पहले मैदाने महशर में पहुंचोगे और तमाम उम्मतों के सामने सूरज की तरह चमक रहे होगे और तुम में से बा'ज़ के चेहरे चांद की तरह रोशन होंगे ।

(10)....जब तुम्हारा रब्ब عزّ وجلّ तुम्हें फ़रमाएगा : ऐ मेरा दीदार करने वालो ! खड़े हो जाओ और आ कर मेरे दीदार से लुफ़्फ़ अन्दोज़ हो जाओ ।

(11)....मैं ने अपना जमाल तुम पर ज़ाहिर कर दिया है और तुम्हारे सामने से तमाम पर्दे उठा दिये । पस उस वक़्त हमारा नूर चमक उठेगा और तमाम कषाफ़तें ख़त्म हो जाएंगी ।

**ऐ मेरे इस्लामी भाइयो !** कहां हैं हराम से बचने और हलाल इख़्तियार करने वाले ? कहां हैं अपनी ज़बान को ग़ीबतो चुगली से बचाने वाले और ए'तिराज़ात से ए'राज़ करने वाले ? कहां हैं अपनी नज़र को शहवात से रोकने और हलाल की पैरवी करने वाले ? कहां हैं रिज़ाए इलाही عزّ وجلّ के लिये रोज़े रखने वाले और रातों के क़ियाम करने वाले ?

## माहे रमज़ान में अहलो इयाल पर खर्च करने की फज़ीलत :

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से मरवी है, जब माहे रमज़ान की पहली रात आती तो आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाया करते : “रमज़ानुल मुबारक के पूरे महीने को मरहबा ! इस के दिन में रोज़े हैं और रातों में क़ियाम और इस में बीवी बच्चों पर खर्च करना **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की राह में खर्च करने की तरह है ।”

## रोज़ेदारों की शान :

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है, आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : “बरोज़े क़ियामत रोज़ेदार अपनी क़ब्रों से निकलेंगे तो अपने रोज़े की खुशबू से पहचाने जाएंगे और उन के मूंहों से मुश्क से भी तेज़ खुशबू निकल रही होगी । उन के पास दस्तरख़्वान और सुराहियां लाई जाएंगी जिन के मुंह मुश्क से बंधे हुए होंगे, फिर उन से कहा जाएगा : “खाओ कि तुम उस वक़्त भूके रहते थे जब लोग पेट भर कर खाते थे और पियो कि तुम उस वक़्त प्यासे रहते थे जब लोग सैराब होते थे और आराम करो कि तुम उस वक़्त थकते थे जब लोग आराम कर रहे होते थे । तो वोह खाएं पियेंगे और आराम करेंगे हालांकि लोग थके मांदे और प्यासे हिसाब किताब में मशगूल होंगे ।”

(کنز العمال، کتاب الصوم، الباب الاول، الفصل الاول، الحديث ۲۳۶۳۹، ج ۸، ص ۲۱۳، بتغییر قلیل)

**प्यारे इस्लामी भाइयो !** येह माहे रमज़ान के रोज़ादारों के लिये बिशारत है जब तक कि वोह अपने आप को ख़ताओं और नाफ़रमानियों से बचाते रहेंगे और **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की रिज़ा के लिये रोज़े रखेंगे । पस उस गुनहगार का क्या हाल होगा जो रोज़ा रखने के बावुजूद अपने भाइयों का गोश्त खाता है और नमाज़ इस तरह पढ़ता है कि उस का जिस्म एक जगह होता है और दिल दूसरी जगह । ज़बान से तो ज़िक्रे इलाही عَزَّ وَجَلَّ करता है मगर दिल फुलां फुलां की याद में मशगूल होता है ? और ऐ वोह शख्स जो इस हाल में सुब्ह करता है कि ख़सारे का सबब बनने वाले आ'माल का इर्तिकाब करता है और शाम इस उम्मीद पर करता है जिस की दीवार मौत के हाथों गिरने वाली होती है पस अज़ क़रीब तू जान लेगा कि कल बरोज़े क़ियामत कौन शर्मिन्दा हो कर आएगा और इस माहे मुबारक में गुनाह की वजह से वोह उस वक़्त खून के आंसू रो रहा होगा ।

**ऐ रोज़े तर्क करने वाले !** क्या तू ने अपनी तंग क़ब्र के लिये तय्यारी कर ली है ? या तेरे पास कोई ऐसा अमल है जो हश्र में तेरी नजात का ज़रीअ़ा बने ? या माहे रमज़ान में रोज़े की हुदूद की हिफ़ाज़त की है या इस की हुर्मत पामाल कर दी ? कितने ही रोज़े फ़ासिद हो गए लेकिन फ़र्ज साक़ित न हुवा ? कितने ही रोज़ेदार हैं जिन्हें बरोज़े क़ियामत हिसाबो किताब ज़लीलो ख़वार करेगा । कितने ही ना फ़रमान हैं जिन से इस महीने में ज़मीन पनाह मांगती है और आस्मान उस के आ'माल का शिकवा करता है । **ऐ काश ! मुझे मा'लूम होता कि मैं बारगाहे इलाही عَزَّ وَجَلَّ में मक़बूल हूं या मरदूद, बदबख़्त हूं या खुशबख़्त । मगर येह मुआमला पोशीदा है ।** **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की क़सम !



सअदत मन्द है वोह जिस ने इस महीने की क़द्र की और अपने आ'ज़ा को गुनाहों से बाज़ रखा ।  
और बदबख़्त है वोह जिसे अपने रोज़ों से भूक व प्यास के सिवा कुछ न मिला :

وَعَدَوْتُ مِنْ بَيْنِ الشُّهُورِ مُعْظَمًا      شَهْرُ الصِّيَامِ لَقَدْ عَلَوْتُ مُكْرَمًا  
فِيهِ أَبَاكُمْ الْمُهِمِّينُ مَغْتَمًا      يَا صَائِمِي رَمَضَانَ هَذَا شَهْرُكُمْ  
مُتَقَرِّبًا مُتَجَنِّبًا مَا حَرَّمَ      يَا فَوْزَ مَنْ فِيهِ أَطَاعَ إِلَهَهُ  
فِي شَهْرِهِ أَكَلَ الْحَرَامَ وَاجْرَمًا      فَالْوَيْلُ كُلُّ الْوَيْلِ لِلْعَاصِي الذِّئِي

तर्जमा : (1)....ऐ माहे रमज़ान ! तू इज़्ज़तो शान के साथ बुलन्द हुवा और तमाम महीनों से ज़ियादा अज़मत वाला हो गया ।

(2)....ऐ माहे रमज़ान के रोज़े रखने वालो ! येह तुम्हारा महीना है, इस में **अल्लाह** عزّ وجلّ ने तुम्हारे लिये अपनी ने'मतें आ़म फ़रमा दी हैं ।

(3)....ऐ कामयाब शख़्स ! जिस ने इस महीने अपने रब्ब का कुर्ब हासिल करते हुए उस की इताअत की और उस की ह़राम कर्दा चीज़ों से इज्तिनाब किया ।

(4)....पस उस नाफ़रमान की हलाकतो बरबादी है जिस ने इस महीने में भी ह़राम ख़ाया और जुर्म का मुर्तकिब हुवा ।

क्या शान है उन लोगों की ! **अल्लाह** عزّ وجلّ ने उन को तौफ़ीक़ दी तो उन्होंने ने रोज़े रखे और क़ियाम की ताक़त दी तो उन्होंने ने तवील क़ियाम किया, उन्होंने ने **अल्लाह** عزّ وجلّ के लिये अपने कलेजों को प्यासा रखा तो उस ने उन्हें हर परेशानी से राहत बख़्शी और उन की मुरादों को पूरा करने के लिये **अल्लाह** عزّ وجلّ उन्हें काफ़ी हो गया और वोह सब कुछ छोड़ कर इताअते इलाही में मस्रूफ़ हो गए । खुश नसीब हैं वोह जिन्होंने ने ताअते इलाही में रातें बसर कीं तो **अल्लाह** عزّ وجلّ ने उन को उम्दा मुनाजात की लज़्ज़ात से ताजगी अता फ़रमाई यहां तक कि उन्होंने ने बहुत बड़े अज़्र को पा लिया । ऐ लोगो ! तुम माहे रमज़ान की जुदाई में अफ़सुर्दा हो और तहज़्जुद और तरावीह की रातें ख़त्म हो जाने पर ग़मज़दा हो क्यूंकि येह ऐसा मोसिम है जिस में तुम रहूमत की बारिश और दुआओं की क़बूलियत पाते हो ।

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! माहे रमज़ान के रोज़ों और रातों के क़ियाम में क्यूंकर रग़बत न की जाए ? उस महीने के जाने पर क्यूंकर अफ़सोस न किया जाए जिस में तमाम गुनाह मुआफ़ कर दिये जाते हैं ? और उस महीने पर क्यूंकर न रोया जाए जिस में नेकी करने वाले का नफ़अ और ग़नीमत का मौक़अ फ़ौत हो जाए ?

**मलाइक़ु अर्श की नमाज़े तरावीह में हाज़िरी :**

मन्कूल है कि **अल्लाह** عزّ وجلّ के अर्श के गिर्द "हज़ीरतुल कुदस" नामी एक जगह है जो कि नूर की है, उस में इतने फ़िरिशते हैं कि जिन की ता'दाद **अल्लाह** عزّ وجلّ ही जानता है, वोह

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत करते हैं और एक लम्हा भी ग़ाफ़िल नहीं होते, जब रमज़ान की रातें आती हैं तो वोह अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ से ज़मीन पर उतरने की इजाज़त त़लब करते हैं और आकाए दो ज़हां صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत के साथ नमाज़े तरावीह में हाज़िर होते हैं, अगर कोई उन को छूए या वोह उस को मस करें तो वोह ऐसा सआदत मन्द हो जाएगा कि उस के बा'द कभी बद बख़्त न होगा।" जब अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने येह हदीष सुनी तो इरशाद फ़रमाया : हम इस फ़ज़्लो अज़्र के ज़ियादा हक़दार हैं। चुनान्चे आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने माहे रमज़ान में लोगों को बा जमाअत नमाज़े तरावीह का हुक्म फ़रमाया।

### अवामो ख़्वाश की ईद की ज़रूरियात :

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन अबी फ़रज رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِ फ़रमाते हैं : "मुझे माहे रमज़ान में एक ख़ादिमा की ज़रूरत पड़ी जो हमें खाना तय्यार कर दे, मैं ने बाज़ार में एक ख़ादिमा को देखा जिस की कम कीमत में बोली दी जा रही थी, उस का चेहरा ज़र्द, बदन कमज़ोर और जिल्द खुश्क थी। मैं उस पर तरस खाते हुए उसे ख़रीद कर घर ले आया और कहा : "बरतन पकड़ो और रमज़ान की ज़रूरी अश्या की ख़रीदारी के लिये मेरे साथ बाज़ार चलो।" तो वोह कहने लगी : "ऐ मेरे आका ! मैं तो ऐसे लोगों के पास थी जिन का पूरा ज़माना रमज़ान हुवा करता था।" उस की येह बात सुन कर मैं समझ गया कि येह ज़रूर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नेक बन्दी होगी। वोह माहे रमज़ान में सारी रात इबादत करती और जब आख़िरी रात आई तो मैंने उस को कहा : "ईद की ज़रूरी अश्या ख़रीदने के लिये हमारे साथ बाज़ार चलो।" तो वोह पूछने लगी : "ऐ मेरे आका ! आम लोगों की ज़रूरियात ख़रीदेंगे या ख़ास लोगों की ?" मैं ने उस से कहा : "अपनी बात की वज़ाहत करो ?" तो उस ने कहा : "आम लोगों की ज़रूरियात तो ईद के मश्हूर खाने हैं, जब कि ख़ास लोगों की ज़रूरियात मख़्लूक से कनारा कश होना, ख़िदमत के लिये फ़ारिग़ होना, नवाफ़िल के ज़रीए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का कुर्ब हासिल करना और आजिजी व इन्किसारी करना है।"

येह सुन कर मैं ने कहा : "मेरी मुराद खाने की ज़रूरी अश्या हैं।" उस ने फिर पूछा : "कौन सा खाना ? जो जिस्मों की ग़िज़ा है या दिलों की ?" तो मैं ने कहा : "अपनी बात वाज़ेह करो।" तो उस ने मुझे बताया : "जिस्मों की ग़िज़ा तो मा'रूफ़ खाना और ख़ूराक है जब कि दिलों की ग़िज़ा गुनाहों को छोड़ना, अपने ऐब दूर करना, महबूब के मुशाहदे से लुत्फ़ अन्दोज़ होना और मक्सूद के हुसूल पर राज़ी होना लेकिन इन चीज़ों के लिये खुशूअ, परहेज़गारी, तकब्बुर को छोड़ना, मौला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ रुजूअ करना और ज़ाहिरो बातिन में उस पर भरोसा करना ज़रूरी है।" फिर वोह लोंडी नमाज़ के लिये खड़ी हो गई, उस ने पहली रकअत में पूरी सूरए बक़रह पढ़ी, फिर आले इमरान

शुरूअ कर दी, फिर एक सूरत खत्म कर के दूसरी सूरत शुरूअ करती रही यहां तक कि सूरए इब्राहीम की इस आयत तक पहुंच गई :

(2) يَتَجَرَّعُهُ وَلَا يَكَادُ يُسِيغُهُ وَيَأْتِيهِ الْمَوْتُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَمَا هُوَ بِمَيِّتٍ وَمِنْ وَرَائِهِ عَذَابٌ غَلِيظٌ

(प १३, अ १७)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :** ब मुश्किल उस का थोड़ा थोड़ा घूंट लेगा और गले से नीचे उतारने की उम्मीद न होगी और उसे हर तरफ से मौत आएगी और मरेगा नहीं और उस के पीछे एक गाढ़ा अज़ाब । (1)

फिर वोह रोती हुई इसी आयत को दोहराती रही यहां तक कि बेहोश हो कर ज़मीन पर गिर पड़ी जब मैं ने उसे हरकत दी तो उस की रूढ़ कफ़से उन्सुरी से परवाज़ कर चुकी थी ।

**उन लोगों की खूबियां हैं** जिन्होंने ने अपने चेहरों को ग़म व हुज़्म के आसूओं से धोया, ज़िक्रे इलाही **عَزَّ وَجَلَّ** और तिलावते कलामे बारी तआला से रातों में अपनी आंखों को बेदार रखा और **अल्लाह** **عَزَّ وَجَلَّ** की बारगाह में अपने कदमों पर खड़े रहे और अच्छे आ'माल बजा लाने की कोशिश करते रहे । पस उन का हर लम्हा रमज़ानुल मुबारक की मुबारक साअतों जैसा है ।

**मेरे प्यारे इस्लामी भाइयो !** कितना नेक बख़्त है वोह शख़्स ! जिस को **अल्लाह** **عَزَّ وَجَلَّ** ने क़बूलियत की ख़लअत बख़्शी, कितना इन्आमो इकराम है उस शख़्स पर ! जिसे **अल्लाह** तआला ने इन्तिहाए मक़सूद तक पहुंचाया और कितना बदबख़्त है वोह शख़्स ! जिस के रोज़े मरदूद हो गए और गुनाहों पर उस की पकड़ हो गई, उस के माहो साल बेकार गुज़र गए और उस ने अपने नफ़्स की ख़्वाहिश को रब्ब **عَزَّ وَجَلَّ** की बारगाह में हाज़िरी पर तरजीह दी यहां तक कि उस की मौत का वक़्त आ गया ।

**हरीसा खाने की ख़्वाहिश :**

**मन्कूल है** कि हज़रते सय्यिदुना बिशर हाफ़ी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي** ने पचास साल तक हरिसा ( जो आटे में घी और शकर मिला कर बनाया जाता है) तनावुल न फ़रमाया, एक दिन आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** के पास एक दिरहम था जिस से हरीसा ख़रीदने के लिये बाज़ार गए तो हरीसा बेचने वाले को येह कहते हुए सुना कि : “रोज़ेदारों के लिये कौन सी चीज़ छुपाई गई है ? तो आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** रोते हुए वापस लौट आए और हरीसा न ख़रीदा । कुछ अर्से के बा'द नफ़्स फिर मुतालबा करने लगा, चुनान्वे फिर बाज़ार हरीसा ख़रीदने गए तो मुलाहज़ा फ़रमाया कि वोही हरीसा बेचने वाला कह रहा था : “बहुत थोड़ा बाक़ी रह गया है ।” तो आप फिर रोते हुए वापस हो गए और **अल्लाह** **عَزَّ وَجَلَّ** से अ़हद कर लिया कि आयन्दा कभी भी इस को न चखूंगा ।

①...मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ज़िल सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي** तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं : “हदीष शरीफ़ में है कि जहन्नमी को पीप का पानी पिलाया जाएगा । जब वोह मुंह के पास आएगा तो उस को बहुत ना गवार मा'लूम होगा । जब और क़रीब होगा तो उस से चेहरा भुन जाएगा और सर तक की खाल जल कर गिर पड़ेगी । जब पियेगा तो आंठें कट कर निकल जाएंगी । (अल्लाह **عَزَّ وَجَلَّ** की पनाह) या'नी हर अज़ाब के बा'द उस से ज़ियादा शदीदो ग़लीज़ अज़ाब होगा । **نَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ عَذَابِ النَّارِ وَمِنْ غَضَبِ الْحَبَّارِ** ।



يا اِلٰهَ الْعٰلَمِيْنَ عَزَّوَجَلَّ ! मांगने वाले तेरे दरवाजे पर खड़े हैं और फुकरा तेरी बारगाह की पनाह लिये हुए हैं, साइलीन की कश्ती तेरे बहरे करम के साहिल पर खड़ी है, सब उस इजाजत नामे की उम्मीद किये हुए हैं जो तेरी रहमत के कनारे तक पहुंचा दे। **या इलाही** عَزَّوَجَلَّ ! अगर तू इस महीने सिर्फ उन लोगों की ही इज्जत बुलन्द फ़रमाएगा जिन्होंने तेरी रिज़ा की खातिर रोज़े रखे तो गुनाहों के समन्दर में डूबे हुए गुनहगार कहां जाएंगे ? अगर तू सिर्फ़ इताअत शिआरों पर रहूम फ़रमाएगा तो ना फ़रमानों का क्या बनेगा ? अगर तू सिर्फ़ अमल करने वालों को क़बूल फ़रमाएगा तो कोताहियां करने वालों को कौन सहारा देगा ? **या इलाही** عَزَّوَجَلَّ ! रोज़ेदार नफ़अ हासिल कर गए, रातों को क़ियाम करने वाले कामयाबी की चोटी पर पहुंच गए, इख़्लास वाले नजात पा गए। हम तेरे गुनहगार बन्दे हैं, हम पर रहूम फ़रमा और हमें अपने फज़लो एहसान से नवाज़ दे और हम सब को महज़ अपनी रहमत से बख़्श दे। يٰاَرْحَمَ الرَّحِمِيْنَ عَزَّوَجَلَّ.

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَعَلٰى اٰلِهِ وَصَحْبِهِ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ



**फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : “**अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ सात अशख़ास को अपने अर्श के साए में जगह अता फ़रमाएगा जिस दिन **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ के अर्श के साए के इलावा कोई साया न होगा (1) अ़दिल हुक्मरान (2) वोह नौजवान जिस की जवानी इबादते इलाही में गुज़री (3) वोह शख़्स जिस का दिल मस्जिद से निकलते वक़्त मस्जिद में लगा रहे हत्ता कि वापस लौट आए (4) वोह दो शख़्स जो **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये महब्बत करते हुए जम्अ हुए और महब्बत करते हुए जुदा हो गए (5) वोह शख़्स जो ख़ल्वत में **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करता हो और उस की आंखों से आंसू बह निकलें (6) वोह शख़्स जिसे कोई मालो जमाल वाली औरत गुनाह के लिये बुलाए और वोह कहे कि मैं **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ से डरता हूं (7) वोह शख़्स जो इस तरह छुपा कर सदका दे कि उस के बाएं हाथ को ख़बर न हो कि दाएं ने क्या सदका किया।”

(صحیح مسلم، کتاب الزکاة، باب فسل اخفاء الصدقة، الحديث ۲۳۸۰، ص ۸۴۰ بتقدم وتاخر)

बयान नम्बर 6 :

रुख्खबे माहे रमजान

हम्बे बारी तअाला :

सब खूबियां **अल्लाह** عزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस की मा'रिफ़त बुलन्दो बाला है, तुझे अक्ली दलाइल से उस के राजों का इदराक नहीं हो सकता और उस की सिफ़त वाजेह है जिसे नक्ली दलाइल से कोई गदला नहीं कर सकता और उस का फ़ैसला मुकम्मल हो चुका जिसे कोई टाल नहीं सकता, उस की बादशाहत बहुत बुलन्द और वोह बुजुर्ग व बरतर है, उस की अज़लियत दाइमी है जिस का मुक़ाबला कोई नहीं कर सकता, उस ने तन्हा तमाम काइनात, उस के मुतअल्लिकात, ज़मीनो आस्मान और सितारों को बनाया और माहो साल और दिन रात को एक मिक्दार के मुताबिक बनाया। और तमाम खूबियां उस के लिये हैं जिस ने माहे रमज़ान को सब दिनों से अफ़ज़ल बनाया, इस को अज़मत से नवाज़ा और इस में अपनी ला रैब किताब नाज़िल फ़रमाई और इज़ज़त का दरवाज़ा खोला। चुनान्वे **अल्लाह** عزَّوَجَلَّ अपनी पुख़्ता व वाजेह आयाते बय्यिनात में इस उम्मत की फ़ज़ीलत बयान करते हुए इरशाद फ़रमाता है : **تَرْجَمَةُ** **يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ** (प. २, البقرة: १८३) **कन्ज़ुल ईमान** : ऐ ईमान वालो तुम पर रोज़े फ़र्ज़ किये गए। क्यूँकि इस उम्मत के इलावा किसी उम्मत को अय्यामे रमज़ान जैसे अफ़ज़ल दिन और रातें अता न की गईं। क्या साबिका उम्मतें इस फ़रमान पर फ़ख़र कर सकती हैं ? **“يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ وَإِنَّا أُجْرِي بِهِ”** हूँ।” (صحیح البخاری، کتاب التوحید، باب قول الله تعالى “يُرِيدُونَ أَنْ يُبَدِّلُوا كَلَامَ اللَّهِ” الحديث ७४९२، ص ७२६)

इस की जज़ा येह है कि आंखें नूरे बारी तअाला के दीदार से लुत्फ़ अन्दोज़ होंगी। क्या साबिका उम्मतों के लिये येह ए'लान किया गया ? जिसे हर दूरो नज़दीक वाले ने सुना : **“لِلصَّائِمِ فَرْحَتَانِ”** या'नी रोज़ादार के लिये दो खुशियां हैं।”

(صحیح البخاری، کتاب التوحید، باب قول الله تعالى “يُرِيدُونَ أَنْ يُبَدِّلُوا كَلَامَ اللَّهِ” الحديث ७४९२، ص ७२६)

क्या उम्मते मुहम्मदिय्या علی صاحبها الصلوٰة والسلام के इलावा किसी उम्मत को शबे क़द्र की खुशख़बरी दी गई कि जिस में जिब्रिले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام और दीगर फ़िरिश्ते ज़मीन पर तशरीफ़ लाते हैं ? क्या साबिका उम्मतों को माहे रमज़ान जैसे अफ़ज़ल दिन और रातें अता की गईं ? इस महीने की पहली रात में जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं जिस के अतराफ़ से हूरें और जन्नती बच्चे दौड़ते चले आते हैं और रिज़वाने जन्नत (या'नी जन्नत के दरबान) से पूछते हैं : **“ऐ रहमान عزَّوَجَلَّ के अमीन ! जन्नत को क्या हुवा कि उस के बालाख़ाने बुलन्द हो रहे हैं ?”** रिज़वाने जन्नत की तरफ़ से जवाब मिलता है : **“येह माहे रमज़ान की पहली रात है जिस में हर जान की ख़्वाहिश पूरी होती है।”** फिर जहन्नम के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं और सरकश शयातीन को जकड़ दिया जाता है और उन्हें इधर उधर फिरने से रोक दिया जाता है, जहन्नम से आज़ाद होने वालों के नाम

**पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इलिमिया (दा' वते इस्लामी)**



प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! दुन्या व आखिरत में माहे रमज़ान की बरकात और उस के नफ़अ की तरफ़ मु-तवज्जेह हो जाओ । दुन्यवी बरकतो नफ़अ येह है कि येह तुम्हें अज़ाब और जहन्म का मूजिब बनने वाली ख़्वाहिशात से बचाता है और उख़रवी बरकतो नफ़अ येह है कि तुम मालिके वहहाब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह से मुआफ़ी और रिज़ा की ख़ैरात पाने में कामयाब हो जाओगे ।

**रोज़े का षवाब दीदारे इलाही (عَزَّوَجَلَّ) है :**

हज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान दारानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने एक मरतबा गर्मियों में रोज़ा रखा फिर सो गए । ख़्वाब में एक शख्स को देखा जो येह कह रहा था : “ऐ अबू सुलैमान दारानी (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ) ! क्या आप आज के रोज़े का षवाब एक हज़ार दीनार के इवज़ बेचते हैं ?” आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने जवाबन फ़रमाया : “मेरे रब्ब عَزَّوَجَلَّ की इज़्ज़त की क़सम ! मैं नहीं बेचता ।” फिर पूछा गया : “किस चीज़ के इवज़ बेचेंगे ?” आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने इरशाद फ़रमाया : “मैं येह षवाब दुन्या व मा फ़ीहा (या'नी दुन्या और जो कुछ इस में है) के बदले भी नहीं बेचता । अलबत्ता ! अपने मौला عَزَّوَجَلَّ के दीदार के इवज़ बेच दूंगा ।” आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से कहा गया : “फिर रोज़ा रखिये ! اِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ ! अंन क़रीब आप अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ का दीदार करेंगे ।”

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आस्मानी किताबों में इरशाद फ़रमाया : “ऐ मेरे बन्दे ! मेरी मुलाक़ात के लिये तय्यार हो जा, अंन क़रीब तू मुझ से मिलेगा । और मेरी बन्दगी बजा ला क्यूंकि मैं ही तेरा मालिक हूं, वोह शख्स मुझे किस आंख से देखेगा जिस ने मेरी नाफ़रमानी की ? या वोह शख्स किस मुंह से मिलेगा जो मेरी अज़मते शान को भूल चुका है ? वोह बन्दा ख़सारे में है जिसे मैं अपने दीदार से महरूम कर दूंगा । जब सच्चाई के पैकर मेरे क़रीब होंगे और बदबख़्त मेरी बारगाह से धुत्कार दिये जाएंगे, फिर मैं हिजाब उठा कर उन परहेज़गारों पर तजल्ली फ़रमाऊंगा जो मुझे महबूब रखते हैं । ऐ मेरे बन्दे ! मेरे दरवाज़े पर खड़ा हो जा कि मैं करीम हूं और मेरी पनाह मांग कि मेरा रास्ता ही सीधा है ।”

प्यारे इस्लामी भाइयो ! रमज़ान शरीफ़ का येह मुबारक महीना अब तुम से लौटना चाहता है और कूच का इरादा किये हुए है, येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तुम्हारे हक़ में या तुम्हारे ख़िलाफ़ उन आ'माल की गवाही देगा जो तुम ने किये या छोड़ दिये, अगर इस महीने से तुम्हारे दिल आबाद हो गए और गुनाहों के अषरात ख़त्म हो गए तो येह तुम्हारा कितना अच्छा मेहमान है ? तो क्या तुम ने इस का हक़ ज़ाएअ कर दिया या इस की ऐसी इज़्ज़त की जो तुम पर वाजिब

थी ? शायद ! तौबा करने वाले को येह साल दोबारा न मिले और अगर मौत ने ग़ाफ़िल को मोहलत न दी तो वोह उस वक़्त नादिम होगा जब नदामत कोई फ़ाइदा न देगी, और जब क़ियामत के दिन उस के क़दम डगमगा जाएंगे तो अपने गुनाहों पर अफ़सोस करेगा ।

यकीनन मुक़द्दर का सिकन्दर है वोह शख़्स जिस ने बक़िय्या ज़िन्दगी को ग़नीमत जान कर नेकियों में जल्दी की और बदबख़्त है वोह शख़्स जिस ने अपनी ज़िन्दगी ग़फ़लत में गुज़ार दी, उस शख़्स को भलाई क्यूं कर न मिलेगी जो लैलतुल क़द्र में क़ियाम करता है ? क्या येह क़बूलिय्यत की रात नहीं ? पस ऐ ग़ाफ़िल ! तू क्यूं ग़फ़लत में है ? क्या येह क़द्र की रात नहीं ? तू कब तक नींद में पड़ा रहेगा ?

**ताइबीन के लिये बख़्शिश की नवीद :**

एक बुजुर्ग رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि मैं माहे रमज़ान के आख़िरी जुमुआ हज़रते मन्सूर बिन अम्मार वाइज़ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की महफ़िल में हाज़िर हुवा । आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने उस के रोज़ों की फ़ज़ीलत, रातों की इबादत और मुख़िलसीन के लिये जो अज़्र तय्यार किया गया है उस के मुतअल्लिक़ बयान फ़रमाया तो ऐसे लग रहा था गोया आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के बयान के अषर से ठोस पथ्थरों से आग़ ज़ाहिर हो रही है । बिलाशुबा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! (ऐसा हो सकता है) क्यूंकि, इरशादे बारी तआला है :

**(1) وَإِنَّ مِنَ الْحِجَارَةِ لَمَا يَتَفَجَّرُ مِنْهُ الْأَنْهَارُ** **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और पथ्थरों में तो कुछ वोह हैं जिन से नदियां बह निकलती हैं ।  
(پ ۱۰۱، البقرة: ۷۴)

लेकिन आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की महफ़िल में न किसी ने हरकत की, न ही किसी ने अपने गुनाहों की शिकायत की जब आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने महफ़िल की ख़ामोशी को मुलाहज़ा फ़रमाया तो इरशाद फ़रमाया : “ऐ लोगो ! क्या अपने उयूब से आगाह हो कर कोई भी रोने वाला नहीं ? क्या येह महीना तौबा व बख़्शिश का नहीं ? क्या येह महीना अफ़वो रिज़ा का सर चश्मा नहीं ? क्या इस में जन्नत के दरवाज़े नहीं खोले जाते ? क्या इस में जहन्नम के दरवाज़े बन्द नहीं किये जाते ? क्या इस में शयातीन को जकड़ा नहीं जाता ? क्या इस में इन्आमो इकराम की बारिश नहीं होती ? क्या इस में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तजल्ली नहीं फ़रमाता ? क्या इस में हर रात इफ़्तारी के वक़्त दस लाख जहन्नमी जहन्नम से आज़ाद नहीं किये जाते ? तुम्हें क्या हो गया है कि इस षवाब से महरूम होते हो ? और मुख़ालफ़त के लिबादे में तकब्बुर करते हो । इरशादे रब्बानी है :

**(2) أَفَسِحْرٌ هَذَا أَمْ أَنْتُمْ لَا تُبْصِرُونَ** **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो क्या येह जादू है या तुम्हें सूझता नहीं ।  
(پ ۲۷، الطور: ۱۵۰)

(इस के बा'द आप ने फ़रमाया :) सब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में हाज़िर हो कर तौबा

करो, तो सब अहले मजलिस बुलन्द आवाज़ से गिर्या व ज़ारी करने लगे और एक नौजवान अपने गुनाहों की वजह से रोता हुआ ग़म की हालत में खड़ा हो गया और अर्ज़ की : “या सय्यिदी ! बताइये कि क्या मेरे रोज़े मक़बूल हैं ? क्या मेरा रातों का क़ियाम दूसरे क़ियाम करने वालों के साथ लिखा जाएगा ? हालांकि मुझ से बहुत गुनाह सरज़द हुए, मैं ने अपनी उम्र नाफ़रमानियों में बरबाद कर दी, अज़ाब के दिन से ग़ाफ़िल रहा ।” तो आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने इरशाद फ़रमाया : “ऐ लड़के ! **اَللّٰهُ** की बारगाह में तोबा करो, क्यूंकि उस ने कुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाया है :

﴿3﴾ وَإِنِّي لَغَفَّارٌ لِّمَن تَابَ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और बेशक मैं बहुत बख़्शाने वाला हूं उसे जिस ने तौबा की ।

(प १६, १७: ८२)

आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने क़ारी को येह आयते मुबारका पढ़ने का हुक्म फ़रमाया :

﴿4﴾ وَهُوَ الَّذِي يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهِ وَيَعْفُو عَنِ السَّيِّئَاتِ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और वोही है जो अपने बन्दों की तौबा क़बूल फ़रमाता और गुनाहों से दरगुज़र फ़रमाता है । (1)

(प २५, २६: २५)

उस नौजवान ने एक ज़ोरदार चीख़ मारी और कहा : “मेरी खुश नसीबी है कि उस का एहसान मुझ तक पहुंचता रहा लेकिन इस के बावुजूद मैं नाफ़रमानियों में इज़ाफ़ा करता रहा और गुमराही के रास्ते से न लौटा । क्या गुज़रे हुए वक़्त की जगह कोई और वक़्त होगा कि जिस में **اَللّٰهُ** तआला ने दरगुज़र फ़रमाया ।” उस ने दोबारा चीख़ मारी और अपनी जान जाने आफ़रीं के सिपुर्द कर दी ।

**प्यारे इस्लामी भाइयो !** माहे रमज़ान के फ़िराक़ पर क्यूं न रोया जाए ? और अफ़वो मग़फ़िरत के महीने पर क्यूं न अफ़सोस किया जाए ? इस महीने की जुदाई पर क्यूं न ग़म किया जाए जिस में जहन्नम से आज़ादी नसीब होती है ?

**रोज़ाना दस लाख गुनहगारों की दोज़ख़ से रिहाई :**

मन्कूल है कि जब माहे रमज़ान आता है तो जन्नत को एक कनारे से दूसरे कनारे तक सजाया जाता है यहां तक कि जब उस की पहली रात आती है तो अर्श के नीचे “मुषीरह” नामी तेज़ हवा चलती है तो जन्नती दरख़्तों के पत्ते फड़फड़ाते हुए जन्नत के दरवाज़ों पर लगते हैं तो उन की

①...मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं : “**मस्अला :** तौबा हर एक गुनाह से वाजिब है और तौबा की हक़ीक़त येह है कि आदमी बदी व मा'सियत से बाज़ आए और जो गुनाह उस से सादिर हुवा उस पर नादिम हो और हमेशा गुनाह से मुज्तानिब रहने का पुख़्ता इरादा करे और अगर गुनाह में किसी बन्दे की हक़ तलफ़ी भी थी तो उस हक़ से ब तरीके शरई ओहदा बरआ हो ।”



ऐसी आवाज़ सुनाई देती है कि किसी सुनने वाले ने उस से ज़ियादा दिलकश आवाज़ न सुनी होगी। फिर ज़ीनत से आरास्ता बड़ी बड़ी आंखों वाली हूरें जन्नत के बालाख़ानों में खड़ी हो कर पुकारती हैं : “क्या कोई खुश नसीब है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को हमारे निकाह का पैग़ाम दे ताकी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारा निकाह उस से कर दे।” फिर दरबाने जन्नत से पूछती हैं : “ऐ रिज़वान ! येह कौन सी रात है ?” तो वोह उन को लब्बैक कहते हुए जवाब देता है : “ऐ हसीन सूरतो सीरत वालियो ! येह माहे रमज़ान की पहली रात है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया है कि “ऐ रिज़वान ! मेरे महबूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत के रोज़ेदारों के लिये जन्नत के दरवाज़े खोल दो। ऐ जिब्रील ! ज़मीन की तरफ़ जाओ मरदूद शयातीन को ज़न्जीरों में जकड़ दो और उन के गले में तौक डाल कर उन्हें समन्दर की गहराई में फेंक दो ताकि येह मेरे महबूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत के रोज़े फ़ासिद करने की कोशिश न करें।” **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ माहे रमज़ान की हर रात तीन मरतबा इरशाद फ़रमाता है : “है कोई तौबा करने वाला कि मैं उस की तौबा क़बूल करूं ? है कोई मग़फ़िरत त़लब करने वाला कि मैं उसे मुआफ़ कर दूं ? है कोई सुवाल करने वाला कि उसे अ़ता करूं ? है कोई दुआ करने वाला कि उस की दुआ क़बूल फ़रमाऊं ?” **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ माहे रमज़ान की हर रात इफ़्तार के वक़्त **दस लाख जहन्नमी** कि जिन पर अज़ाब वाजिब हो चुका होता है, दोज़ख़ से आज़ाद फ़रमाता है। जब माहे रमज़ान का आख़िरी दिन आता है तो उस दिन महीने के शुरूअ से आख़िर तक आज़ाद किये हुआं की ता’दाद के बराबर जहन्नम से आज़ाद फ़रमाता है।

**प्यारे इस्लामी भाइयो !** **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हां अज़्रो षवाब में रग़बत करो और माहे रमज़ान को अलवदाअ करो, रहूमत का दरवाज़ा बन्द होने से पहले ही आ’माले सालिहा बजा लाने में जल्दी करो, येह माहे रमज़ान है, अब इस की रुख़सती का वक़्त आ चुका है, इस का क़ियाम रात को आने वाले मेहमान जैसा है, या उस महबूब जैसा है जो थोड़ी देर क़ियाम कर के जुदा होने वाला हो, पस इस महीने अमले सालेह की क़षरत करो, आख़िरत का तोशा तय्यार कर लो, अफ़सोस और गिर्या व ज़ारी करते हुए इसे अलवदाअ करो।

**سُبْحَنَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ !** वोह लोग ख़ूब हैं जो शहवात को छोड़ कर तन्हाई में क़ियाम करते हैं, कुरआने हकीम ठहर ठहर कर पढ़ते हैं, अगर तुम उन्हें सहरी के वक़्त देखो तो रोता हुवा पाओगे, बार बार कुरआन पढ़ते हैं, सुरीली आवाज़ में कुरआने पाक की तिलावत कर के कानों को राहतो सुकून पहुंचाते हैं, वोह ग़मों की चादरो लिहाफ़ ओढ़ लेते हैं और जब रोते हैं तो उन की आंखों से सैले अश्क रवां हो जाता है।

**प्यारे इस्लामी भाइयो !** माहे रमज़ान तो ऐसे गुज़र गया जैसे वोह आया ही न था, वोह कोताहों की कोताहियों और नेकोकारों की नेकियों पर गवाह बन चुका है, जिस के हिस्से में नफ़अ या नुक्सान आया वोह उसे हासिल होगा, हाए ! गुनहगार की हसरत ! उस ने वक़्त जाएअ कर दिया । हाए ! इख़्तियार रखने वाले की मह़रूम ! ऐसा लगता है गोया उस ने मौत से अमान ले रखी है या शायद तक़दीर उसे दूसरे रमज़ान तक मोहलत दे देगी । येह तुम्हारा महीना रुख़्सत हो रहा है कि जिस ने तुम्हारे आंसू ख़त्म कर दिये हैं और खुद बड़ी तेज़ी से जा रहा है, अब जुदा होने वाले के लिये रोना कहां है ? भलाई करने वाले और उस की तरफ़ रहनुमाई करने वाले की पैरवी कहां हो रही है ? **اَللّٰهُمَّ** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! माहे रमज़ान के रोज़ों और शब बेदारी का ज़माना कितना अच्छा है, उस के अवका़त मैल कुचैल की आफ़ात से कितने साफ़ो शफ़ाफ़ हैं, इस में तिलावते कलामे पाक में मशगूल होने में कितनी लज़ज़त है ।

ऐ काश ! मैं जान लेता कि किस ने माहे रमज़ान में वाजिबात और सुन्नतों का एहतिमाम किया ? किस ने इस में अपने अमल की इमारत को ता'मीर करने की कोशिश की ? किस ने लोगों के सामने और छुप कर इख़्लास से इबादत की ? और कौन रोज़े की आफ़ात और आज़माइश से महफूज़ रहा ?

**प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो !** जिस का घर नहीं उस की राहत गिर्या व ज़ारी में है । उस शख़्स की हालत कैसी होगी जिसे उस के घर वाले, भाई और पीछे वाले भूल जाएंगे ? गुनाहों ने हमारे चेहरों को सियाह कर दिया है, येह कब नेकियों से सफ़ेद होंगे ? अब वक़्त है कि **اَللّٰهُمَّ** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में गिर्या व ज़ारी की कषरत कर लो और बुलन्द आवाज़ से इस तरह दुआ़ करो : “**يا इलाही عَزَّوَجَلَّ ! हमें अपने शफ़ीज़ल मुज़निबीन नबी صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअत से महरूम न कर और तक्वा को हमारे लिये सब से ज़ियादा नफ़अ बख़्शा सामान बना दे और इस माहे गुफ़्रान में हमें गुनाहगारों में शुमार न कर और ऐ अरहमर्राहिमीन ! बरोज़े क़ियामत हमें ख़ौफ़ से अमन अता फ़रमा ।**”

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی سَيِّدِنَاوَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَعَلٰی اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ



दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तर्बियत के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र और रोज़ाना फ़िक़रे मदीना के ज़रीए मदनी इन्आमात का रिसाला पुर कर के हर मदनी (इस्लामी) माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के (दा'वते इस्लामी के) ज़िम्मेदार को जम्अ करवाने का मा'मूल बना लीजिये **اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** इस की बरक़त से पाबन्दे सुन्नत बनने गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुदने का ज़ेहन बनेगा ।

बयान 7 :

## शबे क़द्र के फ़ज़ल

हम्दे बारी तआला :

सब खूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने दिलोंको पाक और मुनव्वर किया, सितारों को रोशनी दी, हवाओं को मुसख़्ख़र किया, बादलों को फैलाया फिर उन को बरसा दिया, बागात में बारिश भेज कर दरख़्तों को ज़िन्दगी बख़्शी, फलों को पैदा किया। उस ने इबादात के दिनों को दीगर तमाम अवकात पर फ़ज़ीलत दी, ख़ैरात व बरकात के हुसूल को आसान फ़रमा दिया और माहे रमज़ान को तमाम महीनों पर शर्फ़ बख़्शा और उस की रातों को फ़ज़ीलत अता फ़रमाई और इस महीने को शबे क़द्र के ज़रीए मुमताज़ फ़रमा दिया जो हजार महीनों (या'नी तिरासी साल और चार माह) से बेहतर है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का इरशादे रहूमत बुन्याद है : (البقره: १८५) اِنَّا اَنْزَلْنَاهُ فِى لَيْلَةِ الْقَدْرِ 0 (پ: ३, القدر: १)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक हम ने इसे शबे क़द्र में उतारा।<sup>(1)</sup>

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : “**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने लोहे महफूज़ से बैतुल इज़ज़त की तरफ़ एक ही दफ़आ पूरा कुरआने हकीम माहे रमज़ान, शबे क़द्र में नाज़िल फ़रमाया।” मुफ़स्सरीने किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالَى फ़रमाते हैं : “बैतुल इज़ज़त आस्माने दुन्या में है।”

**लैलतुल क़द्र कहने की वजह :**

इसे लैलतुल क़द्र कहने की पांच वजूहात हैं :

(1).....क़द्र का मा'ना अज़मत है, और चूँकि येह रात भी अज़मत वाली है इस लिये इसे लैलतुल क़द्र कहा जाता है।

(2).....क़द्र का मा'ना तंगी है, चूँकि इस रात ज़मीन अपनी वुस्अत के बावुजूद फ़िरिशतों की कषरत की वजह से तंग हो जाती है, इस लिये इसे लैलतुल क़द्र कहा जाता है।

①.....मुफ़स्सरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ज़िल सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْيَهْدَى तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारक के तहत फ़रमाते हैं : “शबे क़द्र शर्फ़ व बरकत वाली रात है। इस को शबे क़द्र इस लिये कहते हैं कि इस शब में साल भर के अहकाम नाफ़िज़ किये जाते हैं और मलाइका को साल भर के वज़ाइफ़ व ख़िदमात पर मामूर किया जाता है। येह भी कहा गया है कि इस रात की शराफ़त व क़द्र के बाइफ़ इस को शबे क़द्र कहते हैं। और येह भी मन्कूल है कि चूँकि इस शब में आ'माले सालेहा मन्कूल होते हैं और बारगाहे इलाही में इन की क़द्र की जाती है इस लिये इस को शबे क़द्र कहते हैं। अहादीष में इस शब की बहुत फ़ज़ीलतें वारिद हुई हैं, बुख़ारी व मुस्लिम की हदीष में है कि जिस ने इस रात में ईमान व इख़्लास के साथ शब बेदारी कर के इबादत की **अल्लाह** तआला उस के साल भर के गुनाह बख़्श देता है। आदमी को चाहिये कि इस शब में कषरत से इस्तिग़फ़ार करे और रात इबादत में गुज़ारे। साल भर में शबे क़द्र एक मरतबा आती है और रिवायते क़यीरा से पाबित है कि वोह रमज़ानुल मुबारक के अशरए अख़ीरा में होती है। और अकषर इस की भी ताक़ रातों में से किसी रात में। बा'ज़ उ-लमा के नज़्दीक रमज़ानुल मुबारक की सत्ताईसवीं रात शबे क़द्र होती है। येही हज़रते इमामे आ'ज़म رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है।”



(3).....क़द्र का मा'ना हुक्म है, चूँकि इस रात अश्या के मुतअल्लिक़ उन की हकीकतों के मुताबिक़ फ़ैसले किये जाते हैं इस लिये इसे लैलतुल क़द्र कहा जाता है।

(4).....क़द्र का मा'ना इज़ज़त है या'नी जिस की कोई क़द्रो कीमत न हो वोह भी इस रात की बरकत से साहिबे क़द्र हो जाता है। इस लिये इस का नाम लैलतुल क़द्र है।

(5).....या इस की वजह येह है कि इस में क़द्र वाली किताब नाज़िल हुई, या येह कि इस में क़द्र वाले फ़िरिश्ते नाज़िल होते हैं।

**क्या लैलतुल क़द्र अब भी बाकी है ?**

इस में उ-लमा का इख़िलाफ़ है कि क्या शबे क़द्र अब भी बाकी है या येह सिर्फ़ हुज़ूर नबिय्ये करीम ﷺ के ज़माने के साथ ख़ास थी ? इस बारे में दो अक्वाल हैं जिन में से सहीद तरीन येही है कि येह अब भी बाकी है और माहे रमज़ान में आती है।

**कौन सी रात लैलतुल क़द्र है ?**

इस में इख़िलाफ़ है कि शबे क़द्र कौन सी रात है, इस के मुतअल्लिक़ छे अक्वाल हैं :

(1).....रमज़ानुल मुबारक की पहली रात (2).....इक्कीसवीं रात (3).....तेईसवीं रात (4).....पच्चीसवीं रात (5)..... सत्ताईसवीं रात और (6).....उन्तीसवीं रात। और बा'ज का कौल है कि शबे क़द्र माहे रमज़ान के आख़िरी अशरे की ताक़ रातों में मुन्तक़िल होती रहती है।

**शबे क़द्र हज़ार महीनों से बेहतर है :**

इरशादे बारी तआला है :

﴿١﴾ وَمَا أَذْرَاكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ لَيْلَةُ الْقَدْرِ تَرْجَمُ عَ كَنْزُ لُ إِمَان : أَوْر تُم نَ كَیَا جَانَا كَیَا  
خَيْرٌ مِنْ أَلْفِ شَهْرٍ (پ ۳۰، القادر: ۲-۳)

शबे क़द्र, शबे क़द्र हज़ार महीनों से बेहतर। (१)

①.....मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ज़िल सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं : “(या'नी ऐसे हज़ार महीनों से बेहतर) जो शबे क़द्रसे ख़ाली हों। इस एक रात में नेक अमल करना हज़ार रातों के अमल से बेहतर है। हदीष शरीफ़ में है कि “नबिय्ये करीम ﷺ ने उममे गुज़श्ता के एक शख्स का ज़िक़्र फ़रमाया जो तमाम रात इबादत करता था और तमाम दिन जिहाद में मस्कूफ़ रहता था। इस तरह उस ने हज़ार महीने गुज़ारे थे। मुसलमानों को इस से तअज्जुब हुवा तो **अब्बाह** तआलाने आप ﷺ को शबे क़द्र अता फ़रमाई और येह आयत नाज़िल की, कि शबे क़द्र हज़ार महीनों से बेहतर है (اخرجه ابن جرير عن طريق مجاهد) येह **अब्बाह** तआला का अपने हबीब ﷺ पर करम है कि आप ﷺ के उम्मती शबे क़द्र की एक रात इबादत करें तो उन का पवाब पिछली उम्मत के हज़ार माह इबादत करने वालों से ज़ियादा हो।”

हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَاحِد फ़रमाते हैं कि शबे क़द्र में इबादत और नेक अमल ऐसे हज़ार महीनों की इबादत और नेक अमल से बेहतर है जिस में शबे क़द्र न हो।

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुरहीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के पास बनी इस्राईल के एक शख्स का तज़क़िरा हुवा, जिस ने एक हज़ार माह **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ की राह में जिहाद किया। सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को उस से बहुत तअज्जुब हुवा और तमन्ना करने लगे : “काश ! उन के लिये भी ऐसा मुमकिन होता।” तो आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अर्ज़ की : “ऐ मेरे रब्ब عَزَّ وَجَلَّ ! तू ने मेरी उम्मत को कम उम्र अता फ़रमाई अब इन के आ'माल भी कम होंगे।” तो **अब्बाह** عَزَّ وَजَلَّ ने आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को शबे क़द्र अता फ़रमाई और इरशाद फ़रमाया : “ऐ मुहम्मद (صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) ! शबे क़द्र हज़ार महीनों से बेहतर है जो मैं ने तुझे और तेरी उम्मत को हर साल अता फ़रमाई है। येह रात माहे रमज़ान में तुम्हारे लिये और क़ियामत तक आने वाले तुम्हारे उम्मतियों के लिये है जो हज़ार महीनों से बेहतर है।” **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿2﴾ تَنْزِلُ الْمَلَائِكَةُ وَالرُّوحُ فِيهَا بِإِذْنِ رَبِّهِمْ مِنْ كُلِّ

أَمْرٍ ۚ سَلَّمَ تَ هِيَ حَتَّى مَطْلَعِ الْفَجْرِ

(ب. ३०، القدر: ६)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** इस में फ़िरिश्ते और जिब्रील उतरते हैं, अपने रब्ब के हुक्म से हर काम के लिये। वोह सलामती है सुब्ह चमकने तक।

मुफ़स्सिरीने किराम رَحِمَهُمُ اللَّهُ تَعَالَى फ़रमाते हैं : “इस रात फ़िरिश्ते अगले साल तक के लिये हर वोह हुक्म ले कर उतरते हैं जिस का **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ ने फ़ैसला फ़रमा दिया है।” और येह रात तुलूए फ़ज्र तक ऐसी सलामती वाली है कि इस में न कोई बीमारी होगी, न कोई शैतान भेजा जाएगा।

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ के प्यारे हबीब, हबीबे लबीब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने जन्नत निशान है : “जो ईमान की वजह से और षवाब के लिये शबे क़द्र में क़ियाम करे उस के गुज़श्ता गुनाह बख़्श दिये जाएंगे।”

(صحيح البخارى، كتاب فضل ليلة القدر، باب فضل ليلة القدر، الحديث २०१६، ص १०७)

## आखिरी सात रातों में तलाश करो :

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि “कुछ सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने आखिरी सात रातों में ख़्वाब में शबे क़द्र देखी तो हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़लाक صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “मैं देखता हूँ कि तुम्हारे ख़्वाब रमज़ान की आखिरी सात रातों में मुत्तफ़ि़क़ हो गए हैं पस जो इसे तलाश करना चाहे वोह आखिरी सात रातों में तलाश करे।

(صحيح البخارى، كتاب فضل ليلة القدر، باب التماس ليلة القدر.....الخ، الحديث २०१५، ص १०७)

उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا से मरवी है कि “नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रमज़ानुल मुबारक के आखिरी दस दिनों में इबादत के लिये कमर बस्ता हो जाते, खुद भी तमाम रातें जाग कर गुज़ारते और घर वालों को भी जगाते ।”

(صحيح البخارى، كتاب فضل ليلة القدر، باب العمل في العشر الاواخر من رمضان، الحديث ٢٠٢٤، ص ١٥٨ - صحيح ابن خزيمة، كتاب الصيام، باب استحباب احياء ليلالى العشر الاواخر من شهر رمضان..... الخ، الحديث ٢٢١٤، ج ٣، ص ٣٤١)

### शबे क़द्र की अलामात :

हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अब्दुल्लाह رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रहूमत निशान है : “मैं ने शबे क़द्र को देखा फिर मुझे भुला दी गई । लिहाज़ा तुम इसे रमज़ान के आखिरी अंशरे की ताक़ रातों में तलाश करो और (इस की पहचान यह है कि) येह एक खुशगवार रात है, न गर्म, न सर्द, इस रात चांद के साथ शैतान नहीं निकलता यहां तक कि फ़ज़्र तुलूअ हो जाती है ।”

(صحيح ابن خزيمة، كتاب الصيام، باب صفة ليلة القدر بنفى الحرو البرد..... الخ، الحديث ٢١٩٠، ج ٣، ص ٣३०، مختصر)

### लैलतुल क़द्र की दुआ :

हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अगर मुझे शबे क़द्र का इल्म हो जाए तो मैं क्या दुआ करूं ? तो हुज़ूर सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, जनाबे रहूमतुल्लिल अलमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तुम येह दुआ करो : “اللّٰهُمَّ اِنِّكَ عَفُوٌّ كَرِيْمٌ تُحِبُّ الْعَفْوَ فَاعْفُ عَنِّي” या’नी ऐ **अब्बाह** ! तू बहुत मुआफ़ करने वाला, करम फ़रमाने वाला है । मुआफ़ करने को पसन्द फ़रमाता है पस मुझे मुआफ़ फ़रमा दे ।”

(جامع الترمذی، كتاب الدعوات، باب فی فضل سؤال العافیة والمعافة، الحديث ٣٥١٣، ص ٢٠١٣)

### सत्ताईशवीं रात शबे क़द्र है :

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन का’ब رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना उमर मुहाजिरीन सहाबा के गुरौह में तशरीफ़ फ़रमा थे । हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ भी मौजूद थे कि शबे क़द्र का तज़क़िरा हुवा, पस उन हज़रात ने शबे क़द्र के मुतअल्लिक़ जो कुछ सुन रखा था, कह दिया लेकिन हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ख़ामोश रहे । हज़रते सय्यिदुना उमर रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने आप रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से इस्तिफ़सार फ़रमाया : “ऐ अब्दुल्लाह बिन अब्बास ! आप गुफ़्तगू क्यूं नहीं कर रहे ? आप भी कुछ बोलिये ! बोलने पर पाबन्दी नहीं ।” तो आप रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ कुछ यूं गोया हुए : “बेशक **अब्बाह** ! त़ाक़ है और त़ाक़ को पसन्द फ़रमाता है । उस ने अय्यामे दुन्या को इस तरह बनाया कि वोह सात के गिर्द चक्कर



लगा रहे हैं (या'नी हफ्ते में सात दिन हैं), इन्सान को भी सात चीजों से पैदा किया। हमारे रिज़्क को भी सात चीजों से पैदा किया, हमारे ऊपर सात आस्मान बनाए और नीचे सात ज़मीनें बिछाईं, सात समन्दर बनाए, सजदे में ज़मीन पर लगने वाले आ'ज़ा सात बनाए, कुरआने मजीद में सात किस्म के रिश्तेदारों से निकाह हराम फ़रमाया और सात किस्म के वुरषा पर विराषत तक्सीम फ़रमाई, हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को सूरए फ़ातिहा की सात आयात अता फ़रमाई और शयातीन को भी सात कंकरियां मारी जाती हैं। लिहाज़ा मेरा ख़याल है कि शबे क़द्र रमज़ान की सत्ताईसवीं रात है और **अल्लाह** तअ़ला ज़ियादा बेहतर जानता है।” अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ मुतअज्जिब हुए और इरशाद फ़रमाया : “ऐ लोगो ! इब्ने अब्बास की तरह कौन रिवायत बयान कर सकता है ?”

(حلیۃ الاولیاء، عبداللّٰہ بن عباس، الحدیث ۱۱۲۳، ج ۱، ص ۳۹۲، بتغییر)

मन्कूल है कि इस सूरत के कलिमात की ता'दाद तीस है और **حَتَّىٰ مَطْلَعِ الْفَجْرِ** पर इस का इख़िताम है और “**هِيَ**” सत्ताईसवां कलिमा है, येह इस बात पर दलील है कि शबे क़द्र सत्ताईसवीं रात है।

(تفسیر ابن کثیر، سورۃ القدر، تحت الآیۃ ۵، ج ۸، ص ۴۳)

### शबे क़द्र के नूर के मुतअल्लिक़ मुश्तलिफ़ अक्वाल :

एक कौल येह है कि इस रात को नूर के साथ खास किया गया और फ़ज़ीलत दी गई है जो आस्मान से **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के नूरी झन्डे की मिष्ल नाज़िल होता है। एक कौल येह है कि वोह नूर बड़े ख़ैमे की मिष्ल है, बा'ज़ ने कहा कि वोह तूबा दरख़्त का नूर है, बा'ज़ ने कहा कि रहूमत का नूर है, बा'ज़ ने कहा कि हम्द के झन्डे का नूर है, बा'ज़ का कौल है कि मलाइका के परो का नूर है, एक कौल येह भी है कि इबादते इलाही عَزَّ وَجَلَّ का नूर है, एक कौल येह है कि अहले मा'रिफ़त के असरार का नूर है। एक कौल येह है कि येह हैबत का नूर है।

फिर शबे क़द्र ऐसी पसन्दीदा रात है जो तमाम रातों से अफ़ज़ल है। बा'ज़ उ-लमाए किराम رَحْمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ने **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के इस फ़रमान : “**لَيْلَةُ الْقَدْرِ خَيْرٌ مِّنْ أَلْفِ شَهْرٍ**” की येह तफ़्सीर की है कि इस से मुराद है कि इस एक रात में हज़ार महीनों से ज़ियादा रहूमत होती है। इस का मतलब येह है (गोया **अल्लाह** तअ़ला फ़रमा रहा है) इस एक रात में नाफ़रमानों और गुनाहगारों पर मेरी इस से ज़ियादा रहूमत होती है जितनी हज़ार महीनों में उन पर होती है। इस रात को शबे क़द्र कहने की एक वजह येह भी है कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के हां इस की क़द्रो मन्ज़िलत और अज़मत बहुत ज़ियादा है। हज़रते सय्यिदुना अबुल फ़ज़ल رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِ का कौल है कि शबे क़द्र में रिज़्क, मौत, अमराज़, मसाइब, बलाएं, अफ़ि़य्यत, फ़रहत, सुरूर, नफ़अ व नुक़सान और आयन्दा साल की शबे क़द्र तक की तमाम बातें लिख दी जाती हैं।

**शबे क़द्र फिरिश्ते झन्डे ले कर उतरते हैं :**

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा और अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُم से मरवी है कि शहनशाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिषाल, बीबी आमिना के लाल صلى الله تعالى عليه وآله وسلم का फ़रमाने जन्नत निशान है : “जब शबे क़द्र आती है तो सिद्रतुल मुन्तहा में रहने वाले फिरिश्ते अपने साथ चार झन्डे ले कर उतरते हैं। हज़रते जिब्राईल (عَلَيْهِ السَّلَام) भी उन के साथ होते हैं। उन में से एक झन्डा मेरे दफ़्न की जगह पर, एक तूरे सीना पर, एक मस्जिदे हराम पर और एक बैतुल मुक़द्दस पर नस्ब करते हैं, फिर वोह हर मोमिन और मोमिना के घर दाख़िल हो कर उन्हें सलाम कहते हैं : “ऐ मोमिन मर्द और औरत ! **अल्लाह** (تفسير قرطبي، سورة القدر، تحت الآية ٥، الجزء العشرون، ج ١٠، ص ٩٧) और जब फ़ज़्र तुलूअ होती है तो सब से पहले हज़रते जिब्राईल (عَلَيْهِ السَّلَام) ज़मीनो आस्मां के दरमियान बुलन्दी पर चले जाते हैं और अपने बाजू फैला देते हैं और सूरज बिगैर शुआओं के तुलूअ होता है, फिर जिब्राईल अमीन (عَلَيْهِ السَّلَام) फिरिश्तों को एक एक कर के बुलाते हैं और फिरिश्तों का नूर और जिब्राईल के परों का नूर इकठ्ठा हो जाता है और बिगैर शुआओं के दूधिया सूरज तुलूअ होता है पस जिब्राइले अमीन और दीगर फिरिश्ते मोअमिनीन व मोअमिनात के लिये दुआए मग़फ़िरत करने के लिये ज़मीनो आस्मां के दरमियान ठहर जाते हैं। जब शाम होती है तो आस्माने दुन्या पर जाते हैं तो आस्मान के फिरिश्ते उन से पूछते हैं : “हमारे क़ाबिले एहतिराम फिरिश्तों को मरहबा ! कहां से आ रहे हो ?” तो येह कहते हैं : “हम उम्मते मुहम्मदिय्या (على صاحبها الصلوة والسلام) के पास से आ रहे हैं।”

आस्माने दुन्या के फिरिश्ते पूछते हैं : “**अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ने उन के साथ क्या मुआमला फ़रमाया है ?” तो वोह जवाब देते हैं : “उम्मते मुहम्मदिय्या (على صاحبها الصلوة والسلام) के नेक लोगों को बख़्श दिया गया और गुनहगारों के हक़ में उन की शफ़ाअत क़बूल कर ली गई। तो वोह फिरिश्ते सुब्ह तक उस ने’मत के शुक्र में **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की तस्बीहो तहमीद और पाकी बयान करते रहते हैं जो उस ने उम्मते मुहम्मदिय्या (على صاحبها الصلوة والسلام) को अता फ़रमाई। फिर आस्माने दुन्या के फिरिश्ते उन से एक एक मर्दों औरत के मुतअल्लिक़ पूछते हुए कहते हैं : “फुलां मर्द ने क्या किया ?”, “फुलां औरत ने क्या किया ?” तो वोह कहते हैं : “हम ने फुलां शख़्स को गुज़श्ता साल इबादत करते हुए पाया था और इस साल बिदअत पर अमल करते पाया।” तो आस्माने दुन्या के फिरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार करना छोड़ देते हैं। फिर वोह कहते हैं : “गुज़श्ता साल हम ने फुलां शख़्स को बिदअती पाया था मगर इस साल इबादत करते हुए पाया।” तो फिरिश्ते उस के लिये दुआ व इस्तिग़फ़ार करने लगते हैं। फिर कहते हैं : “हम ने देखा कि कोई ज़िक्रे इलाही कर रहा है, कोई रूक़अ में है, कोई सजदे में है, कोई तिलावते कुरआन में मगन है और कोई रो रहा है।” तो फिरिश्ते उन के लिये भी दुआ व इस्तिग़फ़ार शुरू कर देते हैं।

फिर वोह दूसरे आस्मान की तरफ जाते हैं और इस तरह वोह हर आस्मान में एक दिन रात उम्मेते मुहम्मदिय्या के लिये इस्तिग़फ़ार करते रहते हैं यहां तक कि अपने क़ियाम की जगह सिद्रतुल मुन्तहा में पहुंच जाते हैं। सिद्रतुल मुन्तहा उन से पूछता है : “आज कल कहां गाइब हो ?” तो वोह कहते हैं : “हम शबे क़द्र में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रहमत के नुज़ूल के वक़्त अहले ज़मीन के पास थे।” सिद्रतुल मुन्तहा कहता है : “रब्ब عَزَّوَجَلَّ ने उन के साथ क्या मुआमला फ़रमाया ?” कहते हैं : “नेकों को बख़्श दिया गया और बुरों के हक़ में उन की शफ़ाअत क़बूल कर ली गई।” तो सिद्रतुल मुन्तहा खुशी से झूमने लगता है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तस्बीह और हर ऐब से उस की पाकी बयान करता है, और उस पर शुक्र करता है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उम्मेते मुहम्मदिय्या (على صاحبها الصلوة والسلام) को अता फ़रमाया। तो जन्नतुल मावा झांक कर पूछती है : “ऐ सिद्रतुल मुन्तहा ! क्यूं झूम रहा है ?” वोह जवाब देता है : “मुझे मेरे रहने वालों ने हज़रते ज़िब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام के हवाले से ख़बर दी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उम्मेते मुहम्मदिय्या (على صاحبها الصلوة والسلام) को बख़्श दिया और बुरों के हक़ में नेकों की शफ़ाअत क़बूल फ़रमा ली है।” तो जन्नतुल मावा बुलन्द आवाज़ से **अल्लाह** तआला की तस्बीह व तहमीद और तक़दीस करती है, और इस पर शुक्र अदा करती है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस उम्मत को अता फ़रमाया।

जब “जन्नते नईम” सुनती है तो झांक कर पूछती है : “ऐ जन्नतुल मावा ! क्या हुवा ?” तो वोह कहती है : “मुझे सिद्रतुल मुन्तहा ने अपने रहने वालों के हवाले से हज़रते ज़िब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام से सुन कर ख़बर दी है कि “**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उम्मेते मुहम्मदिय्या (على صاحبها الصلوة والسلام) को बख़्श दिया और गुनहगारों के हक़ में नेकों की शफ़ाअत क़बूल फ़रमा ली है।” तो जन्नते नईम भी इसी तरह पुकारती है फिर जन्नते अदन फिर इस से कुर्सी सुनती है तो इसी तरह कहती फिर अर्श सुनता है तो पुछता है ऐ कुर्सी क्या हुवा ? तो कुर्सी कहती है मुझे जन्नते अदन ने जन्नते नईम के हवाले से, जन्नतुल मावा से सुन कर कि उस ने सिद्रतुल मुन्तहा से, उस ने अपने रहने वालों से, उन्होंने ने हज़रते ज़िब्राईल (عَلَيْهِ السَّلَام) से सुन कर ख़बर दी कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उम्मेते मुहम्मदिय्या (على صاحبها الصلوة والسلام) को बख़्श दिया और नाफ़रमानों के हक़ में नेकों की शफ़ाअत क़बूल फ़रमा ली है।” येह सुन कर अर्श भी खुशी से झूमने लगता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पूछता है : “क्या हुवा ?” हालांकि वोह जानता है। अर्श कहता है : “या रब्ब عَزَّوَجَلَّ ! मुझे कुर्सी ने हज़रते ज़िब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام के हवाले से ख़बर दी कि तू ने उम्मेते मुहम्मदिय्या (على صاحبها الصلوة والسلام) को बख़्श दिया और बुरों के हक़ में नेकों की शफ़ाअत क़बूल फ़रमा ली है।” तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है ज़िब्राईल ने सच कहा, सिद्रतुल मुन्तहा ने सच कहा, जन्नतुल मावा ने सच कहा, जन्नते नईम, जन्नते अदन, कुर्सी और ऐ अर्श ! तू ने भी सच कहा। मैं ने उम्मेते मुहम्मदिय्या (على صاحبها الصلوة والسلام) के लिये वोह अज़्रो षवाब तय्यार किया है जो न तो किसी आंख ने देखा, न किसी कान ने सुना और न ही किसी के दिल में इस का ख़याल गुज़रा।”



प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखो ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम पर अपना खास इन्आमो इकराम फ़रमाया और बिगैर किसी बदले के बड़ी बड़ी ने'मतें अता फ़रमाई और अपने महबूब, नबिय्ये रहमत صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से नवाज़ा और इन की बरकत से हलाकत से बचाया और गुनाहगारों को बख़्श कर नेकों में शामिल फ़रमाया और हिदायत अता फ़रमाई । **अल्लाह** तअ़ाला तुम पर रहम फ़रमाए ! अपनी ज़िन्दगी के अय्याम में रहमते इलाही عَزَّوَجَلَّ हासिल करने की कोशिश करो क्यूंकि मौत के फ़िरिश्ते ने कूच का ए'लान कर दिया है और शबे क़द्र को ग़नीमत जानो, शायद ! तुम सआदत मन्दों के गुरौह में शामिल हो जाओ इस लिये कि येह रात ज़माने की तमाम रातों से अफ़ज़ल है और हज़ार महीनों से बेहतर है । जो भी इस रात में दुआ करता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की दुआ क़बूल फ़रमाता और उस की आरजू और मक्सद पूरा फ़रमाता है । जो भी कुछ मांगता है **अल्लाह** तअ़ाला उस को अता करता और उस पर फ़ज़्लो करम फ़रमाता है । जिस ने शबे क़द्र को इबादत में गुज़ारा वोह कामयाब हो गया । कितना सआदत मन्द है वोह शख्स जिस ने इस को देख लिया बिला शुबा उस ने क़ाबिले फ़ख़्र भलाई को पा लिया । सहीह सनद के साथ मरवी है कि शबे क़द्र ताक़ रातों में तलाश की जाती है पस इसे ताक़ रातों में तलाश करो तो कामयाब हो जाओगे ।

ऐ सीधी राह से भटकने वाले ! क्या तू हलाकत के अंजाम से नहीं डरता ? क्या मौत की आवाज़ नहीं सुनता ? क्या तू अब भी सीधे रास्ते का सुवाल नहीं करेगा ? क्या तू शबे क़द्र को ग़नीमत नहीं समझता जो तेरे दिल से जंग को दूर कर दे ।

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! सुवाली तेरी रहमत के दरवाज़े पर खड़े हैं और फुकरा तेरी बारगाह में हाज़िर हैं और मसाकीन का सफ़ीना तेरे बहरे करम के साहिल पर खड़ा है जो तेरी वसीअ रहमत की उम्मीद रखते हैं । या इलाहल आलमीन عَزَّوَجَلَّ इस महीने अगर तू सिर्फ़ उन लोगों की ही इज़्ज़त बुलन्द करेगा जिन्होंने तेरी रिज़ा के लिये रोज़े रखे और क़ियाम किया तो गुनाहों के समन्दर में ग़र्क़ लोग कहां जाएंगे ? अगर तू सिर्फ़ इताअत करने वालों पर रहम फ़रमाएगा तो नाफ़रमानों का क्या बनेगा ? अगर तू सिर्फ़ नेकों को क़बूल फ़रमाएगा तो नाफ़रमानों को कौन सहारा देगा ? या इलाही عَزَّوَجَلَّ ! रोज़ेदार कामयाब हो गए, रातों को क़ियाम करने वाले कामयाबी की चोटी पर पहुंच गए और इख़्लास वाले नजात पा गए, **يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ عَزَّوَجَلَّ** ! हम तेरे गुनहगार बन्दे हैं, हम पर रहम फ़रमा और हमें अपने फ़ज़्लो एहसान से नवाज़ दे और हम सब को अपनी रहमत के ज़रीए बख़्श दे । (आमीन)

اللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَعَلٰی اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ



## बयान 8 : हाजियों के फनाइल और इन पर इब्नाम का बयान

**अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ हम सब को उन लोगों में शामिल फरमा दे जो हज्जे बैतुल्लाह और जियारते रोज़ए अक़दस عَلَى صَاحِبِهَا الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की सआदत से बहरामन्द हुए । (आमीन)  
**हम्दे बारी तआला :**

सब खूबियां **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं, वोह खुद ज़िन्दा और दूसरों का काइम रखने वाला है, वोह पाक और बुलन्द है, उसे न ऊंघ आती है, न नींद, उसे फना नहीं, आस्मानों और ज़मीन में जो कुछ है सब उसी का है, ज़मीनो आस्मां की हर चीज़ उस की अज़मत पर गवाह है, अक्ल उस की मिष्ल या शबीह नहीं पा सकती, कौन है जो उस की इजाज़त के बिगैर उस के यहां सिफ़ारिश करे, उस की बारगाह में किसी को सुवालो जवाब करने की ज़ुरअत नहीं, मख़्लूक के आगे पीछे दाएं बाएं, ऊपर नीचे हर चीज़ का उस को इल्म है, और उस के इल्म में से इतना ही पा सकते हैं जितना वोह चाहे, कोई उस के इल्म में से उस की हकीकत की तमषील भी नहीं पा सकता, ज़मीनो आस्मां उस की कुर्सी में समाए हुए हैं, उस की हैबत से हर चीज़ का खौफ़ ज़ाहिर है, और उन की निगहबानी उसे भारी नहीं, और वोह उन की हिफ़ाज़त से नहीं थकता, वोही है बुलन्द बड़ाई वाला जो बुलन्द व बरतर अज़मत वाला है ।

पाक है वोह ज़ात जिस ने अपने बन्दों पर हज्जे बैतुल्लाह फ़र्ज फ़रमाया तो इन्होंने ने अपनी सुवारियों को तय्यार कर लिया । इन को अपने कुर्ब में बुलाया तो इन्होंने ने उस की महबूबत में दूरी को दूर न समझा और न ही मसाइब की परवाह की, इन के चेहरे रात की तारीकी में चमकते हैं । पाक है वोह ज़ात जिस ने ख़ानए का'बा को रुक्ने इस्लाम (या'नी हज) से मुशर्रफ़ फ़रमाया तो जिस ने इस रुक्न को अदा किया वोह ग़म और तंगी से नजात पा गया । जो उस के दरवाजे से दाख़िल हुवा वोह अमान पा गया, भलाई करने और सीधे रास्ते पर चलने वालों पर उस के मीज़ाब से रहूमत का नुज़ूल होता है और हज़रे अस्वद उस शख्स की गवाही देगा जो उसे सिद्को वफ़ा के साथ बोसा देगा ।

**अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَلِلّٰهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ اِلَيْهِ سَبِيْلًا وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ عَنِ الْعَالَمِيْنَ (پ: ٥٤، ٥٥، ٥٦)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :** और **अब्बाह** के लिये लोगों पर उस घर का हज करना है जो उस तक चल सके और जो मुन्किर हो तो **अब्बाह** सारे जहान से बे परवाह है ।<sup>(1)</sup>

①.....मुफ़स्सिरे शहीर, खलीफ़ए आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِي तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तहूत फ़रमाते हैं : “**मस्अला** : इस आयत में हज की फ़र्जियत का बयान है और इस का कि इस्तिताअत शर्त है । हदीष शरीफ़ में सय्यिदे आलम وَسَلَّم وَاللّٰهُ عَلَيْهِ وَالْآلُ وَسَلَّمَ ने इस की तफ़्सीर जाद व राहिला से फ़रमाई । जाद या'नी तोशा, खाने पीने का इन्तिज़ाम इस क़दर होना चाहिये कि जा कर वापस आने तक इस के लिये काफ़ी हो और येह वापसी के वक़्त तक अहलो इयाल के नफ़के के इलावा होना चाहिये । राह का अम्न भी ज़रूरी है क्यूंकि बिगैर इस के इस्तिताअत षाबित नहीं होती । इस (ومن كفر) से **अब्बाह** तआला की नाराज़ी ज़ाहिर होती है और येह मस्अला भी षाबित होता है कि फ़र्जे क़तई का मुन्किर काफ़िर है ।”

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا इरशाद फ़रमाते हैं : “सिील” का मा'ना येह है कि बदन तन्दुरुस्त हो, ज़ादे राह मौजूद हो और ऐसी सुवारी पर हो जो उस को हलाक न करे ।” और “وَمَنْ كَفَرَ” का मतलब येह है कि जो हज़ करने को नेकी न समझे और न करने को गुनाह न जाने ।

### हज़ की फ़ज़ीलत :

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मख़ज़ने जूदो सखावत, पैकरे अज़मतो शराफ़त, महबूबे रब्बुल इज़ज़त, मोहसिने इन्सानिय्यत नबी का फ़रमाने मग़फ़िरत निशान है : “जिस ने हज़ किया और फुहश कलामी न की और फ़िस्क़ न किया तो वोह (गुनाहों से पाक हो कर) ऐसा लौटा जैसे उस दिन कि मां के पेट से पैदा हुवा था ।”

(صحیح مسلم، کتاب الحج، باب فضل الحج ولعمره، الحديث ۱۳۵۰، ص ۱۹۰۳)

### यौमे अरफ़ा जहन्नम से आज़ादी का दिन :

उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना आइशा सिद्दीका रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا फ़रमाती हैं, रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “यौमे अरफ़ा से ज़ियादा किसी दिन जहन्नमियों को आज़ाद नहीं किया जाता फिर **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ क़रीब (या'नी अपनी रहमत के साथ मुतवज्जेह) होता है और फ़िरिश्तों के सामने अपने बन्दों पर फ़ख़्र करता है और इस्तिफ़्सार फ़रमाता है कि “मेरे बन्दे क्या चाहते हैं ?” फ़िरिश्ते अर्ज़ करते हैं : “या रब्ब عَزَّ وَجَلَّ ! येह अफ़वो मग़फ़िरत चाहते हैं ।” **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : “ऐ फ़िरिश्तो ! गवाह हो जाओ ! मैं ने इन सब को बख़्शा दिया और इन से दरगुज़र किया ।”

(صحیح مسلم، کتاب الحج، باب فـل يوم عرفه، الحديث ۱۳۴۸، ص ۹۰۲-شعب الایمان للبيهقي، باب فی المناسک، فـل

الوقوف بعرفات، الحديث ۴۰۶۸، ج ۳، ص ۴۶۰)

**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उन लोगों को भलाई अता फ़रमाता है जिन्होंने ने दुन्या में उस की इबादत को नफ़अ और ग़नीमत ख़याल किया और जिन्होंने ने येह देखा कि नाफ़रमानियों में सरासर वक़्त बरबाद करने से बहुत ज़ियादा नुक्सान है तो इन को **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ ने अरफ़े के दिन अपने क़रीब किया । जिन्होंने ने उस की महबूबत की रस्सी को मज़बूती से थाम लिया तो **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ ने इन के गुनाहों से दरगुज़र फ़रमा कर इन की मग़फ़िरत फ़रमा दी और इन के सबब इल्म को फैलाया ताकि वोह सआदतमन्द हो जाएं ।

### फ़जूल सुवालात से बचो :

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने हमें खुतबा देते हुए इरशाद फ़रमाया : “ऐ लोगो ! **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ ने तुम पर हज़ फ़र्ज़ किया है पस तुम हज़ करो ।” एक शख़्स ने अर्ज़



की : “या رسولل्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क्या हर साल ?” तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क्या हर खामोशी इख्तियार फ़रमाई, उस ने फिर अर्ज की : “या رسولल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क्या हर साल ?” तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “नहीं, अगर मैं हां कह देता तो वाजिब हो जाता और अगर (हर साल) वाजिब हो जाता तो तुम इस्तिताअत न रखते ।”

(सहीح مسلم، کتاب الحج، باب فرض الحج مرة فی العمر، الحدیث ۱۳۳۷، ص ۹۰)

### हज व उमरह इकठ्ठा करने की फज़ीलत :

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “हज व उमरह इकठ्ठा करो कि येह मोहताजी और गुनाहों को इस तरह दूर कर देता है जिस तरह भट्टी लोहे के मैल को ।”

(सनन النسائي، کتاب مناسک الحج، باب فضل المتابعه بين الحج والعمره، الحدیث ۲۶۳۱، ص ۲۲۵۸)

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइषे नुजूले सकीना, फ़ैज़ गंजीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़फ़िरत निशान है : “हज और उमरह करने वाले **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ का गुरौह हैं, अगर वोह उस से कोई दुआ करें तो वोह क़बूल फ़रमाता है और अगर मग़फ़िरत त़लब करें तो बख़्श देता है ।”

(सनن ابن ماجه، ابواب المناسک، باب فضل دعاء الحج، الحدیث ۲۸۹۲، ص ۲۶۵۲)

दूसरी रिवायत यूं है कि “हज व उमरह करने वाले **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ का गुरौह हैं, अगर वोह उस से कोई चीज़ मांगें तो वोह अता फ़रमाता है, और अगर उस से मग़फ़िरत त़लब करें तो वोह उन्हें मुआफ़ फ़रमा देता है, अगर वोह उस से दुआ करें तो क़बूल फ़रमाता है और अगर सिफ़ारिश करें तो भी क़बूल फ़रमाता है ।”

(احياء علوم الدين، کتاب اسرار الحج، الباب الاول، الفصل الاول، فی فضائل الحج، ج ۱، ص ۳۲۲)

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “एक उमरह दूसरे उमरह के माबैन गुनाहों का कफ़ारा है और हज्जे मबरूर की जज़ा जन्नत ही है ।”

(सहीح البخاری، کتاب العمره، باب وجوب العمره وفضلها، الحدیث ۱۷۷۳، ص ۱۳۹)

### हज्जे मबरूर की ता'रीफ़ :

उ-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللہُ تَعَالٰی फ़रमाते हैं कि हज्जे मबरूर वोह है जिस के बा'द गुनाह न हो, जैसा कि हज़रते सय्यिदुना फुजैल बिन इयाज़ رَحِمَهُ اللہُ تَعَالٰی عَلَيْهِ ने एक हाजी से फ़रमाया : “ऐ हाजी ! बिलाशुबा **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ हाजी के अमल पर नूर की मुहर लगा देता है, लिहाज़ा तू इस से बच कि **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ की नाफ़रमानी कर के इस मुहर को तोड़ दे ।”

## वालिदैन की तरफ से हज करो :

हजरते सय्यिदुना अबू रजीन अकीली رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि मैं ने शहनशाहे मदीना, करारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइषे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गंजीना صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ख़िदमते अक़दस में हाज़िर हो कर अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! मेरे वालिद बुढ़े हैं और हज की इस्तिताअत नहीं रखते ।” तो आप صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “अपने बाप की तरफ़ से हज व उमरह कर लो ।”

(جامع الترمذی، ابواب الحج، باب منه ٨٧، الحديث ٩٣٠، ص ١٧٤٠)

## हज और उमरह औरतों का जिहाद है :

उम्मुल मोअमिनीन हजरते सय्यिदतुना अइशा सिद्दीक़ा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا से मरवी है, आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا फ़रमाती हैं कि मैं ने अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ क्या औरतों पर भी जिहाद फ़र्ज़ है ?” तो आप صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “हां ! उन पर ऐसा जिहाद है जिस में लड़ना नहीं (या'नी) हज व उमरह ।”

(سنن ابن ماجه، ابواب المناسك، باب الحج جهاد النساء، الحديث ٢٩٠١، ص ٢٦٥٢)

ऐ मेरे मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! तुम कैसे हज से पीछे रह जाते हो हालांकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम पर हज फ़र्ज़ किया है और तुम इस में रग़बत क्यूं नहीं रखते हालांकि येह तुम्हारे लिये रोज़े महशर का ज़ख़ीरा है और क्यूंकर इस का एहतिमाम नहीं करते हालांकि मन्कूल है कि “सिर्फ़ एक हज की बरकत से तीन अफ़राद जन्नत में दाख़िल होंगे : (1).....हज की वसियत करने वाला (2).....वसियत पूरी करने वाला और (3).....मरने वाले की तरफ़ से हज करने वाला ।”

## इल्मे ग़ैबे मुस्तफ़ा صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ :

हजरते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से मरवी है कि एक अन्सारी ने सरकारे मदीना, करारे क़ल्बो सीना, बाइषे नुज़ूले सकीना صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ख़िदमते सरापा अज़मत में हाज़िर हो कर अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ! चन्द अश्या के मुतअल्लिक़ आप صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ से पूछने के लिये हाज़िरे ख़िदमत हुवा हूं ।” आप صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “बैठ जाओ ।” थोड़ी देर में क़बीला षक़ीफ़ से भी एक शख़्स हाज़िर हो कर अर्ज़ गुज़ार हुवा : “या रसूलल्लाह صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ! चन्द अश्या के मुतअल्लिक़ सुवाल करना चाहता हूं ।” तो आप صَلَّی اللَّهُ तَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “अन्सारी तुझ पर सबक़त ले गया है ।” तो उस अन्सारी ने अर्ज़ की : “येह शख़्स मुसाफ़िर है और मुसाफ़िर ज़ियादा हक़दार है । आप इसी से इब्तिदा कीजिये ।” आप صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ षक़फ़ी

की तरफ़ मुतवज्जेह हुए और इरशाद फ़रमाया : “अगर तुम चाहो तो मैं ही तुम्हें बता दूँ कि क्या पूछने आए हो और अगर चाहो तो तुम्हीं सुवाल करो मैं जवाब देता हूँ।” उस ने अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं जो पूछने आया हूँ आप खुद ही फ़रमा दीजिये क्योंकि येह ज़ियादा हैरान कुन है।” आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “तुम मुझ से रूकूअ व सुजूद और नमाज़ रोज़े के मुतअल्लिक़ पूछने आए हो।” तो उस ने अर्ज़ की : “उस ज़ात की क़सम जिस ने आप को हक़ के साथ भेजा ! आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने वोह बताने में कुछ भी ख़ता न की जो मेरे दिल में था।” फिर आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “जब तुम रुकूअ करो तो हथेलियों को घुटनों पर रख कर उंगलियों को कुशादा करो फिर इतना ठहरो कि हर उज़्व अपनी जगह क़रार पकड़ ले। सजदा करने वक़्त पेशानी को अच्छी तरह जमाओ और चोंच न मारो और दिन के अव्वलो आख़िर में नमाज़ अदा करो।” अर्ज़ की : “या नबिय्यल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم ! अगर मैं उन के दरमियान (वक़्त) पाउं?” तो आप صَلَّय اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “तो उस वक़्त नमाज़ पढ़ लो और हर महीने की तेरह, चौदह और पन्दरह तारीख़ का रोज़ा रखो। रात के पहले हिस्से में आराम, दरमियाने में क़ियाम और आख़िरी में फिर सो जाओ, अगर तुम दरमियान से आख़िर तक जागते रहो तो भी नमाज़ पढ़ते रहो।” वोह षक़फ़ी उठ खड़ा हुवा।

फिर आप صَلَّय اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم अन्सारी की तरफ़ मुतवज्जेह हुए और उसे भी इरशाद फ़रमाया : “अगर तुम चाहो तो मैं ही तुम्हें बता दूँ कि क्या पूछने आए हो और अगर चाहो तो तुम्हीं सुवाल करो मैं जवाब देता हूँ।” उस ने अर्ज़ की : “या नबिय्यल्लाह صَلَّय اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم ! मैं जो पूछने आया हूँ आप खुद ही फ़रमा दीजिये।” तो आप صَلَّय اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “तुम येह पूछने आए हो कि हाजी के लिये क्या अज़्रो षवाब है जब वोह घर से निकले? वुकूफ़े अरफ़ा का षवाब क्या है? रमिये ज़िमार करने (या'नी शैतान को कंकरियां मारने) का अज़्र क्या है? सर का हल्क़ करवाने का अज़्र क्या है? और आख़िरी तवाफ़ करने का क्या षवाब मिलेगा?” तो उस ने अर्ज़ की : “क़सम उस ज़ात की जिस ने आप को हक़ के साथ मबऊष फ़रमाया ! आप ने मेरे दिल की बात बताने में कुछ ख़ता न की।” फिर आप صَلَّय اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “जब हाजी घर से निकलता है तो उस के हर क़दम के इवज़ एक हसना (नेकी) लिख दी जाती और गुनाह मिटा दिया जाता है। वुकूफ़े अरफ़ा के वक़्त **اَللّٰهُمَّ** عَزَّوَجَلَّ आस्माने दुन्या पर ख़ास तजल्ली फ़रमा कर इरशाद फ़रमाता है : “मेरे गुबार आलूद और परागन्दा सर बन्दों को देखो ! गवाह हो जाओ कि मैं ने उन के गुनाहों को बख़्श दिया अगर्चे बारिश के क़तरों और रैत के ज़रों के बराबर हों।” और जब वोह जमरों पर कंकरियां मारता है तो कोई नहीं जानता कि उस का क्या अज़्र है? यहां तक कि रोज़े क़ियामत उस को पूरा बदला दिया जाएगा और जब आख़िरी तवाफ़ करता है तो वोह गुनाहों से ऐसा पाक हो जाता है जैसे उस दिन कि उस की मां ने उसे जना था।”



येही हदीष हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से इन अल्फ़ाज़ में मरवी है कि एक अन्सारी हुज़ूर नबिय्ये करीम, رُكُوفُ رَحْمَتِهِ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ख़िदमत में कुछ पूछने के लिये हाज़िर हुवा, इसी अफ़्ना में एक षक़फ़ी भी इस गरज़ से हाज़िर हुवा, रसूले करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “ऐ षक़फ़ी भाई ! अन्सारी तुझ से सबक़त ले गया है लिहाज़ा तुम बैठ जाओ, हम पहले अन्सारी की हाज़त से इब्तिदा करेंगे ।” उस षक़फ़ी का चेहरा मुतग़य्यिर हो गया तो अन्सारी ने ख़ड़े हो कर अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पहले इस षक़फ़ी की हाज़त पूछ लीजिये क्यूँकि मैं इस के चेहरे को बदलता हुवा देख रहा हूं, मुझे ख़ौफ़ है कि कहीं येह आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के मुतअल्लिक़ ऐसी बात न कह दे जो मुझे नागवार गुज़रे ।” सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो अ़ालम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर दगार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने उस अन्सारी के लिये भलाई की दुआ फ़रमाई । फिर इरशाद फ़रमाया : “ऐ षक़फ़ी भाई ! तुम सुवाल करो जो चाहो और अगर चाहो तो मैं तुम्हारा सुवाल बता कर उस का जवाब दूं ।” उस ने अर्ज़ की : “मुझे येह बात ज़ियादा पसन्द है कि आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ खुद ही इरशाद फ़रमा दें ।” चुनान्चे आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “तुम येह पूछने आए हो कि तुम किस माह रोज़े रखो ? किस रात क़ियाम करो ? रुकूअ़ किस तरह करो ? और सजदे में तुम्हारी हालत कैसी हो ?” उस ने अर्ज़ की : “उस ज़ात की क़सम जिस ने आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ को हक़ के साथ मबरूष फ़रमाया ! मैं इन्हीं चीज़ों के मुतअल्लिक़ पूछना चाहता हूं ।” तो आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “हर महीने की तेरह, चौदह और पन्दरह तारीख़ का रोज़ा रखो । रात के पहले और तीसरे हिस्से में आराम और दूसरे हिस्से में क़ियाम करो और अगर दूसरे से आख़िर रात तक तुम बेदार रहो तो भी नमाज़ पढ़ सकते हो । रुकूअ़ के वक़्त हाथों को घुटनों पर रख कर उंगलियां कुशादा रखो । सजदे के वक़्त पेशानी को ज़मीन पर जमा कर रखो और ठोंगें न मारो ।”

फिर इरशाद फ़रमाया : “ऐ अन्सारी ! अब तुम सुवाल करो और अगर चाहो तो मैं खुद तुम्हारा सुवाल बता कर जवाब दूं ।” तो उस ने भी अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ खुद ही बता दीजिये जिस तरह मेरे रफ़ीक़ को बताया है, मुझे भी येही पसन्द है ।” तो आप صَلَّى اللَّهُ تَعालَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “तुम घर से मस्जिदे हराम के इरादे से निकलने का अज़्र पूछने आए हो और वुकूफ़े अरफ़ा, रमिये ज़िमार, सर मुन्डवाने और त्वाफ़ वगैरा का अज़्रो षवाब पूछना चाहते हो ।” अन्सारी सहाबी ने भी इसी तरह अर्ज़ की : “उस ज़ात की क़सम जिस ने आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ को हक़ के साथ मबरूष फ़रमाया ! मैं इन्हीं चीज़ों के बारे में पूछना चाहता था ।” फिर आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “तुम्हारे मस्जिदे हराम के लिये घर से निकलने पर हर क़दम पर एक हसना (नेकी) लिखी जाएगी, एक गुनाह मिटा दिया जाएगा और एक दर्जा बुलन्द कर दिया जाएगा और तेरा त्वाफ़ की दो रकअ़तें पढ़ना गुलाम आज़ाद करने के बराबर है, और सफ़ा व मरवह के दरमियान सअय सत्तर गुलाम

आज़ाद करने की तरह है और तेरा अरफ़ात में ठहरने की फ़ज़ीलत यह है कि **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ अहले अरफ़ात पर खास तजल्ली फ़रमाता और इरशाद फ़रमाता है : “मेरे बन्दे दूर दूर से परागन्दा सर और गुबार आलूद मेरी बारगाह में हाज़िर हुए हैं ।” पस **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ अपने फ़िरिश्तों के सामने उन पर फ़ख़्र फ़रमाता और इरशाद फ़रमाता है : “अगर्चे तुम्हारे गुनाह रैत के ज़रों, आस्मान के सितारों, समन्दर और बारिश के क़तरों के बराबर भी हों तब भी मैं इन्हें बख़्श दूंगा ।” और रमिये ज़िमार तेरे रब्ब **عَزَّوَجَلَّ** के हां तेरे लिये ज़ख़ीरा है जिस की तुझे सब से ज़ियादा बरोज़े क़ियामत हाज़त होगी । सर का हल्क़ करवाने में हर बाल के इवज़ क़ियामत के दिन नूर होगा । और इस के बा’द तू तवाफ़े सदर (या’नी तवाफ़े ज़ियारत जो अरफ़ात से वापसी के बा’द किया जाता है) इस हाल में करेगा कि तुझ पर कोई गुनाह बाक़ी न होगा और एक फ़िरिश्ता आ कर अपना हाथ तेरे कन्धों के दरमियान रख देगा फिर कहेगा : “**اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ ने तेरे गुज़िशता गुनाहों को बख़्श दिया है पस आयन्दा दिनों में अच्छे आ’माल कर और वापस लौट जा क्यूंकि तुझे भी बख़्श दिया गया और उसे भी बख़्श दिया जाएगा जिस की तू शफ़ाअत करेगा ।”

(المعجم الكبير، الحديث ١٣٥٦٦، ج ١٢، ص ٣٢٥- الترغيب والترهيب، كتاب الحج، باب الترغيب في الحج والعمرة، الحديث ١٧١٧، ج ٢، ص ٧٨- مجمع الزوائد، كتاب الحج، باب فضل الحج، الحديث ٥٦٥٠، ج ٣، ص ٦٠١)

### हज़ के दो हुरूफ़ से मुराद :

हज़रते सय्यिदुना शिब्ली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि हज़ के दो हुरूफ़ हैं : पहला **ح** और दूसरा **ج** । **ح** से मुराद हिल्म और **ج** से मुराद जुर्म है । इस से मुराद यह है कि गोया बन्दा कहता है : “ऐ मेरे रब्ब **عَزَّوَجَلَّ** ! मैं तेरे हिल्म और तेरी रहूमत की उम्मीद ले कर तेरी बारगाह में अपने जुर्म के साथ हाज़िर हूं अगर तू भी मेरे जुर्म न बख़्शेगा तो कौन बख़्शेगा ?”

**मेरे मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** हर मुसाफ़िर हाजी नहीं, हर पहाड़ का नाम अरफ़ात नहीं, हर बैत का नाम बैतुल्लाह नहीं और न ही हर जादे राह मन्ज़िल तक पहुंचाने वाला है । महबूबाने बारगाह पुख़्ता इरादे की रात में चले और तुम सोए रहे । उन्होंने ने अपने मुआमलात में नफ़अ पाया मगर तुम ने कुछ हासिल न किया । अगर तुम इस की फ़िक्र करते जो तुम ने जाएअ कर दिया तो ज़रूर नादिम होते । ऐ लोगों से पीछे रह जाने वालो ! अगर तुम ने अपने भाइयों को पा लेने की तय्यारी न की तो अपनी महरूमी और बदबख़्ती पर मेरे साथ मिल कर आंसू बहाओ ।

### किन् ज़ लोगों की दुआ रद्द नहीं होती ?

मन्कूल है कि “तीन किस्म के लोगों की दुआ रद्द नहीं होती : (1).....रोज़ादार यहां तक कि इफ़्तार करे (سنن ابن ماجه، ابواب الصيام، باب في الصائم لا ترد دعوته، الحديث ١٧٥٢، ص ٢٥٨) (2).....मरीज़ यहां तक कि तन्दुरुस्त हो जाए और (3).....हाजी यहां तक कि वापस आ जाए ।

(شعب الایمان للبيهقي، باب في الرجاء من الله، الحديث ١١٢٥، ج ٢، ص ٤٦)

## नेकियां कमाने और गुनाह धोने का नुस्खा :

मन्कूल है कि जो अच्छी तरह वुजू करे फिर रुकने यमानी के पास आए और बोसा दे कर कहे :  
 “بِسْمِ اللَّهِ وَاللَّهُ أَكْبَرُ أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ”  
 शरीफ का तवाफ़ करता है तो **अल्लाह** عزّ وجلّ उस के लिये हर क़दम के इवज़ सत्तर हजार नेकियां लिखता और सत्तर हजार गुनाह मिटा देता है ।”

(الترغيب والترهيب، كتاب الحج، باب التروغيب في الطواف ..... الخ، الحديث ١٧٧٣، ج ٢، ص ٩٢)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** बयान किये गए फ़वाइदो मनाफ़अ को ग़नीमत जानो । जिस ने मेहनत व कोशिश की उस ने पा लिया । बेदार शख्स सोने वाले की तरह नहीं और इन फ़ज़ाइलो फ़वाइद को पाने के लिये शेर की तरह चोकन्ना होना ज़रूरी है । जिस ने ज़िक्र का चराग़ रोशन किया उस के सामने रास्ते के निशानात ज़ाहिर हो गए और जो शौक के जंगल में परदेसी बन गया उस के लिये मकानात ज़ाहिर हो गए ।

## अफ़आले हज़ की हिक्मतें :

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से अफ़आले हज़ की हिक्मतों और मनासिके हज़ के बारीक मअानी के मुतअल्लिक पूछा गया तो आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इरशाद फ़रमाया : “अफ़आले हज़ और लवाज़िमे हज़ में से हर एक में हिक्मते बालिगा, ने'मते कामिला और कई राज़ हैं जिन की ता'रीफ़ करने से हर ज़बान आजिज़ है ।

**एहराम के वक़्त** (सिला हुवा) **लिबास न पहनने की हिक्मत** यह है कि लोगों की आदत है कि जब मख़्लूक के पास जाते हैं तो उम्दा और फ़ख़्रिया लिबास ज़ेबेतन कर लेते हैं गोया **अल्लाह** عزّ وجلّ इरशाद फ़रमाता है : “मेरी बारगाह में हाज़िरी का इरादा मख़्लूक के पास जाने के इरादे के ख़िलाफ़ हो ताकि मैं उन के लिये अज़्रो षवाब बढ़ा दूं और इस में एक हिक्मत यह भी है कि बन्दा एहराम के वक़्त कपड़ों की कमी से मौत के वक़्त दुनिया से रुख़सती की हालत को याद करे जैसा कि पहले दिन था जब मां के पेट से बरहना पैदा हुवा था । और इस हालत में हिसाब के दिन बरहना खड़ा होने से मुशाबहत भी है (और यह कोई जुल्म नहीं) चुनान्चे,

**अल्लाह** عزّ وجلّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿١﴾ إِنَّ اللَّهَ لَا يُظْلِمُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ

(پ ٥، النساء: ٤٠)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** **अल्लाह** एक ज़रा भर जुल्म नहीं फ़रमाता ।



﴿2﴾ وَلَقَدْ جِئْتُمُونَا فَرَادَى كَمَا خَلَقْتُمْ أَوَّلَ

(प १०७, الانعام: ९६)

مَرَّةٍ

तर्जमए कन्जुल ईमान : और बेशक तुम हमारे पास अकेले आए जैसा हम ने तुम्हें पहली बार पैदा किया था ।

एहराम के वक्त (या'नी बांधने से पहले) गुस्ल करने की हिक्मत बिल्कुल जाहिर और वाजेह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ चाहता है कि हुज्जाज को मलाइका पर जाहिर करे ताकि इन के सबब फख्र करे, लिहाजा हुज्जाज मलाइका किराम के सामने गुनाहों और मैल कुचैल से पाको साफ़ कर के पेश किये जाते हैं । इस में दूसरी हिक्मत येह है कि हुज्जाज अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام के क़दमों की जगह अपने क़दम रखते हैं तो इस से पहले गुस्ल कर लेते हैं ताकि इन आधार की बरकात हासिल कर लें । जैसा कि,

असदकुस्सादिकीन (या'नी सब से ज़ियादा सच्चा) रब्ब عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿3﴾ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ التَّوَّابِينَ وَيُحِبُّ

الْمُتَطَهِّرِينَ 0 (प २, البقرة: २२२)

तर्जमए कन्जुल ईमान : बेशक **अल्लाह** पसन्द रखता है बहुत तौबा करने वालों को और पसन्द रखता है सुथरों को ।

**तल्बिया कहने में हिक्मत :**

तल्बिया कहने में हिक्मत येह है कि एक इन्सान को जब कोई मुअज़्ज़ज़ इन्सान बुलाता है तो वोह उस को लब्बैक और अच्छे कलाम से जवाब देता है । लिहाजा उस शख्स का जवाब क्या होना चाहिये जिस को खुद मलिकुल अल्लाम عَزَّوَجَلَّ पुकारे और उसे अपनी जानिब बुलाए ताकि उस के गुनाह और बुराइयां मिटा दे । जब बन्दा लब्बैक कहता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : “हां ! मैं तेरे क़रीब हूं और तुझ पर तजल्ली फ़रमाने वाला हूं, पस तू जो चाहता है मांग ले, मैं तेरी शह रग से भी ज़ियादा क़रीब हूं ।”

**क़ियामे अरफ़ात में हिक्मत :**

मुज्दलिफ़ा से कंकरियां लेने और अरफ़ा में ठहरने में हिक्मत येह है कि इस में साहिबे इल्मो मा'रिफ़त के लिये पोशीदा बातें हैं । इस का मतलब येह है कि गोया बन्दा अर्ज करता है : मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ मैं ने गुनाहों और ख़ताओं की कंकरियां उठाई और तेरे हुक्म पर अमल करते हुए जमरों को कंकरियां मारीं । बेशक तू करम व बख़्शिश वाला है ।

मशअरे हराम के पास जिक्र की हिक्मत और अज़े अज़ीम के मुतअल्लिक गोया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमा रहा है : “तुम मेरी याद करो मैं तुम्हारा चर्चा करूंगा, जो मुझे अकेला याद करे मैं भी उसे अकेला याद करता हूं और जो मुझे किसी इजतिमाअ में याद करे तो मैं उसे उस से बेहतर इजतिमाअ में याद करता हूं । पस जब तुम मशअरे हराम के पास मुझे याद करते हो तो मैं तुम्हें मुअज़्ज़ज़ फ़िरिशतों में याद करता हूं और तुम्हारे लिये इन्तिक़ाम के बदले अमान की मुहर लगा देता हूं ।”

मिना में सर मुन्डवाने में ऐसी हिकमत है जिस से बन्दे की तमाम उम्मीदें पूरी होती हैं। इस की वजह यह है कि इस में बेदारी और नसीहत है जिसे सिर्फ़ आलिम ही समझ सकता है, क्योंकि हाजी जब अरफ़े में ठहरता है, मशअरे हुराम के पास **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का जिक्र करता, मिना में कुरबानी कर के हल्क़ करवाता और अपने बदन को मैल कुचेल और गुनाहों से पाको साफ़ करता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये षवाब लिख देता, दर्जे बढ़ा देता और जहन्नम से पनाह दे देता है और बरोजे क़ियामत उस के हर बाल के इवज़ एक नूर बनाएगा और उसे अम्न का परवाना अता फ़रमाएगा। जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आलीशान है :

﴿4﴾ مَحْلِقِينَ رُءُوسَكُمْ وَمَقْصِرِينَ لَا تَخَافُونَ ط **तर्जमए कन्जुल ईमान :** अपने सरों के बाल मुन्डवाते या तरशवाते बे खौफ़।  
(प २६, الفتح: २७)

**तवाफ़ में कई हिकमतें और लतीफ़ इशारे हैं,** बैतुल्लाह शरीफ़ का तवाफ़ करने वाला गिड़गिड़ाते और दुआ करते वक़्त ज़बाने हाल से कहता है : “ऐ मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ ! तू ही मक्सूद है, तू ही मर्तबए कमाल तक पहुंचाने वाला मा'बूदे हकीकी है। मैं तमाम लोगों के साथ तेरी बारगाह में हाज़िर हुवा, तेरे घर का तवाफ़ किया और तेरी रहमत के दरवाज़े पर जूदो करम की उम्मीद लिये खड़ा हूं और तू खुद अपने ख़लील हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَيْ نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام को अपनी ला रैब किताब में फ़रमा चुका है :

﴿5﴾ وَطَهَّرَ بَيْتِي لِلطَّائِفِينَ وَالْقَائِمِينَ وَالرُّكَّعِ السُّجُودِ **तर्जमए कन्जुल ईमान :** और मेरा घर सुथरा रख तवाफ़ वालों और ए'तिकाफ़ वालों और रुकूअ सजदे वालों के लिये।  
(प १७, الحج: २६)

**वुकूफ़े अरफ़ात में हिकमत और** अनोखे मआनी हैं, बिलाशुबा इस में बन्दे के लिये तम्बीह है और यह कि बन्दे बरोजे क़ियामत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में नंगे पाउं, नंगे बदन और बरहना सर हसरतो नदामत के क़दमों पर खड़े होंगे, गिर्या व ज़ारी करते होंगे और अपने मौला عَزَّوَجَلَّ से इस तरह दुआ करते होंगे जिस तरह एक ज़लील गुलाम दुआ करता है।

سُبْحَانَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ उन लोगों को देखो जिन्हें उन के मौला عَزَّوَجَلَّ ने अपने घर की तरफ़ बुलाया तो उन्होंने ने वजदो शोक के आलम में उस की दा'वत पर लब्बैक कहा और तस्दीक़ के क़दमों पर उस की तरफ़ पैदल चल पड़े, और हर दुबली ऊंटनी पर दूर दूर से हाज़िर हो गए।

**हज़रते सय्यिदुना अली बिन मुवफ़फ़क़** رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं कि मैं ने बैतुल्लाह का हज़ किया का'बा मुशर्रफ़ा के गिर्द सात चक्कर लगाए, हज़रे अस्वद को बोसा दिया, दो रकअत नमाज़ पढ़ी, का'बा की दीवार के साथ टेक लगाई और रोते हुए अर्ज की : “मैं ने इस बैतुल्लाह के कितने चक्कर लगाए लेकिन मा'लूम नहीं कि क़बूल हुए या नहीं।” फिर मुझ पर हल्की सी नींद ग़ालिब आ गई। मैं सोने और जागने की दरमियानी हालत में था कि मैं ने एक गैबी आवाज़ सुनी :

“ऐ अली बिन मुवफ़फ़ ! हम ने तेरी बात सुन ली है। क्या तू अपने घर में उसी को नहीं बुलाता जिस से तू महबूबत करता है।”

मन्कूल है कि हज़रते सय्यिदुना बक्र और हज़रते सय्यिदुना मुतरफ़ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمَا ने अरफ़ात में वुकूफ़ किया। जब हाजियों ने गिर्या व ज़ारी और चीखो पुकार शुरू की तो हज़रते सय्यिदुना बक्र رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ रो रो कर कहने लगे : “येह कितना बड़ा मर्तबा है, ऐ काश ! मैं इन लोगों में से होता।” और हज़रते सय्यिदुना मुतरफ़ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने इस हाल में अर्ज की, कि आप के चेहरे का रंग मुतगय्यिर हो चुका था : “ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरी (नाफ़रमानियों की) वजह से इन को मरदूद न करना।

**वुकूफ़े अरफ़ात करने वालों की मग़फ़िरत हो गई :**

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन मुन्कदिर رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से मरवी है कि उन्होंने ने तैतीस (33) हज किये जब आखिरी हज किया तो अरफ़ात के मक़ाम पर अर्ज की : “**या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तू जानता है कि मैं ने अरफ़ात में तैतीस (33) बार वुकूफ़ किया। एक मरतबा अपनी तरफ़ से, एक मरतबा अपने बाप की तरफ़ से और एक मरतबा अपनी मां की तरफ़ से, या रब्ब عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझे गवाह बनाता हूँ कि मैं ने बाकी तीस उस शख्स को हिबा कर दिये जो यहां अरफ़ात में ठहरा लेकिन उस का वुकूफ़े अरफ़ात क़बूल न किया गया।” जब आप रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ अरफ़ात से मुज्दलिफ़ा पहुंचे तो ख़ाब में निदा दी गई : “ऐ इब्ने मुन्कदिर ! क्या तू उस पर करम करता है जिस ने करम को पैदा किया ? क्या तू उस पर सखावत करता है जिस ने सखावत को पैदा किया ? हालांकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तो तुझ से फ़रमाता है : “मुझे अपनी इज़ज़त व जलाल की क़सम ! मैं ने वुकूफ़े अरफ़ात करने वालों को अरफ़ात पैदा करने से दो हज़ार साल पहले ही बख़्श दिया था।

**छे के सड़के छे लाख का हज क़बूल कर लिया गया :**

हज़रते सय्यिदुना अली बिन मुवफ़फ़ रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि एक साल फ़रीज़ए हज अदा करने के बा'द मैं मस्जिदे खैफ़ व मिना के दरमियान सो गया। मैं ने आस्मान से उतरते दो फ़िरिश्ते देखे, एक ने दूसरे से कहा : “ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दे ! क्या तू जानता है कि इस साल कितने लोगों ने बैतुल्लाह शरीफ़ का हज किया ? तो उस ने कहा : “नहीं।” फिर पहले ने खुद ही बताया : “छे लाख अफ़राद ने।” फिर उस ने पूछा : “क्या तू जानता है कि कितने अफ़राद का हज क़बूल हुवा ?” उस ने जवाब दिया : “नहीं।” तो उस ने बताया कि इस बार सिर्फ़ छे अफ़राद का हज क़बूल हुवा है। फिर वोह दोनों फ़ज़ा में परवाज़ कर गए। मैं बेदार हुवा इस हाल में कि मैं डर रहा था। मैं ने कहा : “हाए अफ़सोस ! मैं उन छे में से कहां होऊंगा ?” जब मैं ने अरफ़ात में वुकूफ़ किया और मुज्दलिफ़ा में रात गुज़ारी तो इन्हीं दोनों फ़िरिश्तों को देखा कि वोह हस्बे अ़दत आस्मान से नाज़िल हुए। एक ने दूसरे को सलाम किया और कहा : “ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दे ! क्या तू



**पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इलिमिया (दा' वते इस्लामी)**

बयान 9 :

## खाबा का बा की शानें

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम सब को उन लोगों में शामिल फ़रमा दे जो इस साल हजे बैतुल्लाह और जियारते रौज़ए अक़दस عَلَى صَاحِبِهَا الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की सआदत से बहरामन्द हों । (आमीन)  
**हम्दे बाशी तअ़ाला :**

सब ता'रीफें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने अक़लों की अपनी तौहीद की तरफ़ रहनुमाई फ़रमाई और उन्हें हिदायत दी और अपनी तौहीद को सलामती के सफ़ीने में नजात का सबब बनाया पस **अल्लाह** तअ़ाला को यक्ता मानने वाला कहता है : “उस (सलामती की) कशती का चलना और ठहरना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम से है ।” पस वोह अपने महबूब तक पहुंच गई और मक्सूद को पाने में कामयाब हो गई और उस जाते इलाही عَزَّوَجَلَّ के मुशाहदों के समन्दर में तैरने लगी पस जब उस जात ने उसे निदा दी तो वोह उस की लज़ज़त में मुन्हमिक हो गई ।

पाक है वोह जात जिस ने का'बा मुशरफ़ा को शानो शौकत अता फ़रमाई और उसे अपनी अज़मत और जलाल के साथ खास किया और उसे दाख़िल होने वालों के लिये अम्न वाला घर बना दिया । और येह वोही मुबारक घर है जिस से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब, हबीबे लबीब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने हिजरत फ़रमाई मगर आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने उसे छोड़ा, न उस से तअल्लुक तोड़ा और न ही आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का दिल इस से हट कर दूसरे क़िले की तरफ़ मुतवज्जेह हुवा यहां तक कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ पर येह आयाते मुबारका नाज़िल फ़रमाई जिन्हें आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने सुना और तिलावत फ़रमाया :

فَدَرَى تَقَلُّبٌ وَجْهَكَ فِي السَّمَاوَاتِ فَلَنُؤَيِّنَنَّكَ قِبْلَةً تَرْضَاهَا (پ ۲، البقرة: ۱۴۴)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** हम देख रहे हैं बार बार तुम्हारा आस्मान की तरफ़ मुंह करना तो ज़रूर हम तुम्हें फेर देंगे उस क़िले की तरफ़ जिस में तुम्हारी खुशी है । <sup>(1)</sup>

और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बैतुल्लाह शरीफ़ की अज़मतो शान यूं बयान फ़रमाता है :  
”إِنَّ أَوَّلَ بَيْتٍ وُضِعَ لِلنَّاسِ لَلَّذِي بِبَكَّةَ مُبَرَّكَاً وَهُدًى لِلْعَالَمِينَ ۚ فِيهِ آيَاتٌ بَيِّنَاتٌ مَّقَامُ إِبْرَاهِيمَ ۚ وَمَنْ دَخَلَهُ كَانَ آمِنًا وَلِلَّهِ عَلَى النَّاسِ حُجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ إِلَيْهِ سَبِيلًا ۚ وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ عَنِ الْعَالَمِينَ ۝ (پ ۴، آل عمران: ۹۶-۹۷)

①.....मुफ़्सिरे शहीर, ख़लीफ़ आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ज़िल सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي  
तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं : “शाने नुज़ूल : सय्यिदे अलाम وَسَلَّم وَاللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को का'बा का क़िल्ला बनाया जाना पसन्दे खातिर था और हुज़ूर इस उम्मीद में आस्मान की तरफ़ नज़र फ़रमाते थे, इस पर येह आयत नाज़िल हुई । आप صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ नमाज़ ही में का'बा की तरफ़ फिर गए, मुसलमानों ने भी आप صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के साथ इसी तरफ़ रुख़ किया । **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** तअ़ाला को आप صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की रिज़ा मन्ज़ूर है और आप صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ही की खातिर का'बा को क़िल्ला बनाया गया ।”

**तर्जमए कञ्जुल ईमान :** बेशक सब में पहला घर जो लोगों की इबादत को मुक़र्रर हुवा वोह है जो मक्का में है बरकत वाला और सारे जहान का राहनुमा । इस में खुली निशानियां हैं, इब्राहीम के खड़े होने की जगह और जो इस में आए अमान में हो और **अल्लाह** के लिये लोगों पर इस घर का हज करना है जो उस तक चल सके और जो मुन्किर हो तो **अल्लाह** सारे जहान से बे परवाह है । <sup>(1)</sup>

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : “इस आयते मुबारका में “बैत” से मुराद का’बातुल्लाह शरीफ़ है । जिस को **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने बैतुल मा’मूर की सीध में ज़मीन में रखा । जैसा कि मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ السَّلَام को जन्नत से (ज़मीन पर) उतारा गया और आप عَلَيْهِ السَّلَام ने हज़्जे बैतुल्लाह फ़रमाया फिर फ़िरिशतों से मुलाक़ात हुई तो उन्होंने ने अर्ज़ की : “ऐ आदम عَلَيْهِ السَّلَام ! आप का हज क़बूल हो गया । और हम ने आप से दो हज़ार साल पहले बैतुल्लाह शरीफ़ का हज किया था । आप عَلَيْهِ السَّلَام ने उन से दर्याफ़्त फ़रमाया : “तुम हज में क्या पढ़ते थे ?” उन्होंने ने अर्ज़ की : “हम سُبْحَانَ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ पढ़ा करते थे ।” फिर हज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ السَّلَام भी तवाफ़ में येही पढ़ते और **अल्लाह** तआला की बारगाह में अर्ज़ करते : “ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ! मेरी अवलाद में इस घर को ता’मीर करने वाला बना । तो **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ ने वहय़ फ़रमाई कि “मैं अपना घर तेरी अवलाद में से अपने ख़लील (हज़रते) इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام से बनवाऊंगा । मैं उस के हाथों इस की ता’मीर का फ़ैसला कर चुका हूं ।” जब हज़रते सय्यिदुना नूह عَلَيْهِ السَّلَام के अहद में तूफ़ान आया तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने बैतुल्लाह शरीफ़ को चौथे आस्मान पर उठा लिया, वोह सब्ज़ जुमुरद का था और उस में जन्नत के चराग़ों में से एक चराग़ था ।

**1.....** मुफ़स्सरे शहीर, ख़लीफ़ आ’ला हज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي तप्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तहूत फ़रमाते हैं : **शाने नुज़ूल :** यहूद ने मुसलमानों से कहा था कि बैतुल मुक़दस हमारा क़िब्ला है, का’बा से अफ़ज़ल और उस से पहला है । अम्बिया का मक़ामे हिज्रत व क़िब्लाए इबादत है । मुसलमानों ने कहा कि का’बा अफ़ज़ल है । इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और इस में बताया गया कि सब से पहला इमकान जिस को **अल्लाह** तआला ने ताअतो इबादत के लिये मुक़र्रर किया, नमाज़ का क़िब्ला, हज और तवाफ़ का मौज़ेअ बनाया जिस में नेकियों के पवाब ज़ियादा होते हैं, वोह का’बाए मुअज़्ज़मा है जो शहरे मक्काए मुअज़्ज़मा में वाकेअ है । हदीष शरीफ़ में है कि का’बाए मुअज़्ज़मा बैतुल मुक़दस से चालीस साल क़ब्ल बनाया गया । (उस में ऐसी निशानियां हैं) जो उस की हुर्मतो फ़ज़ीलत पर दलालत करती हैं । इन निशानियों में से बा’ज येह है कि परन्दे का’बा शरीफ़ के ऊपर नहीं बैठते और उस के ऊपर से परवाज़ नहीं करते बल्कि परवाज़ करते हुए आते हैं तो इधर उधर हट जाते हैं और जो परन्द बीमार हो जाते हैं वोह अपना इलाज़ येही करते हैं कि हवाए का’बा में हो कर गुज़र जाएं, उसी से उन्हें शिफ़ा होती है । और वुहूश एक दुसरे को हरम में ईज़ा नहीं देते हत्ता कि कुत्ते उस सर ज़मीन में हरन पर नहीं दोड़ते और वहां शिकार नहीं करते और लोगों के दिल का’बाए मुअज़्ज़मा की तरफ़ खिंचते हैं और उस की तरफ़ नज़र करने से आंसू जारी होते हैं और हर शबे जुमुआ को अरवाहे औलिया उस के गिर्द हाज़िर होती हैं और जो कोई उस की बेहुर्मती का क़स्द करता है बरबाद हो जाता है । इन्हीं आयात में से मक़ामे इब्राहीम वगैरा वोह चीज़ें हैं जिन का आयत में बयान फ़रमाया गया । और मक़ामे इब्राहीम वोह पथ्थर है जिस पर हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام का’बा शरीफ़ की ता’मीर के वक़्त खड़े होते थे और उस में आप के क़दम मुबारक के निशान थे जो बा वुजूद तबील ज़माना गुज़रने और ब क़षरत हाथों से मस होने के अभी तक कुछ बाक़ी हैं । यहां तक कि अगर कोई शख़्स क़त्लो जिनायत कर के हरम में दाख़िल हो तो वहां न उस को क़त्ल किया जाए, न उस पर हद् काइम की जाए । हज़रते उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया कि अगर मैं अपने वालिद ख़त्ताब के कातिल को भी हरम शरीफ़ में पाऊं तो उस को हाथ न लगाऊं यहां तक कि वोह वहां से बाहर आए ।”



हज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَى نَبِيِّنا وَعَلَيْهِ الصَّلَوةُ وَالسَّلَام हज़रे अस्वद को उठा कर जबले अबू कुबैस में छोड़ आए ताकि गर्क होने से महफूज़ हो जाए। हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَى نَبِيِّنا وَعَلَيْهِ الصَّلَوةُ وَالسَّلَام के ज़माने तक बैतुल्लाह की जगह ख़ाली रही। जब आप عَلَيْهِ الصَّلَوةُ وَالسَّلَام के हां हज़रते सय्यिदुना इस्माईल عَلَى نَبِيِّنا وَعَلَيْهِ الصَّلَوةُ وَالسَّلَام पैदा हुए तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने आप عَلَيْهِ الصَّلَوةُ وَالسَّلَام को बैतुल्लाह शरीफ़ की बुन्याद रखने का हुक्म दिया। आप عَلَيْهِ الصَّلَوةُ وَالसَّلَام ने अर्ज़ की : “**या अल्लाह** ! मुझे इस की निशानी बयान फ़रमा दे।” तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने बैतुल्लाह शरीफ़ की मिक्दार एक बादल भेजा जो आप عَلَيْهِ الصَّلَوةُ وَالسَّلَام के साथ साथ चलता रहा यहां तक कि आप عَلَيْهِ الصَّلَوةُ وَالسَّلَام मक्कए मुकर्रमा رَآدَهَا اللَّهُ شَرْفًا وَتَعْظِيمًا पहुंचे तो बैतुल्लाह शरीफ़ के मक़ाम पर वोह बादल रुक गया। आप को पुकारा गया : “ऐ इब्राहीम (عَلَى نَبِيِّنا وَعَلَيْهِ الصَّلَوةُ وَالسَّلَام) ! इस बादल के साए पर बुन्याद रखो, न कम करना न ज़ियादा।” हज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَى نَبِيِّنا وَعَلَيْهِ الصَّلَوةُ وَالسَّلَام हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَى نَبِيِّنا وَعَلَيْهِ الصَّلَوةُ وَالسَّلَام को बताते जाते और वोह इमारत बनाते जाते। हज़रते सय्यिदुना इस्माईल عَلَى نَبِيِّنا وَعَلَيْهِ الصَّلَوةُ وَالسَّلَام आप عَلَى نَبِيِّنا وَعَلَيْهِ الصَّلَوةُ وَالسَّلَام को पथर उठा उठा कर पकड़ाते।”

**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के मज़क़ूरा फ़रमान में “**إِيْتِ بَيْتَک**” से मुराद वाजेह आयात हैं जो अज़्रो षवाब के इज़ाफ़े पर दलालत करती हैं। और “**وَمَنْ دَخَلَهُ كَانَ آمِنًا**” से मुराद येह है कि वोह जहन्नम से अम्न में हो गया, बा’ज ने कहा कि बड़ी घबराहट से अम्न में हो गया, बा’ज ने कहा कि शिर्क से महफूज़ हो गया। और “**إِسْتِثْنَاهُ**” से मुराद येह है कि ज़ादे राह और सफ़र पर कादिर हो और बदन सहीह हो नीज़ रास्ता भी पुर अम्न हो। और “**وَمَنْ كَفَرَ**” का मतलब येह है कि जो हज़ करने को नेकी और न करने को गुनाह न समझे।

**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के प्यारे हबीब, हबीबे लबीब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने मग़फ़िरत निशान है : “जिस ने हज़ किया और फ़ोहश कलामी न की और फ़िस्क़ न किया तो वोह गुनाहों से ऐसा निकल गया जैसे उस दिन कि मां के पेट से पैदा हुवा था।”

(صحيح البخارى، كتاب الحج، باب قول الله “فلا رفث” الحديث ١٨١٩، ص ١٤٢)

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने आलीशान है : “जो हरमैन शरीफ़ैन (या’नी मक्कए मुकर्रमा और मदीनए मुनव्वरा) में से किसी हरम में मरे उसे क़ियामत के दिन अम्न वालों में से उठाया जाएगा।” (شعب الایمان للبيهقي، باب في المناسك، فضل الحج والعمرة، الحديث ٤١٥٨، ج ٣، ص ٤٩٠)

हदीषे पाक में है कि “बैतुल्लाह शरीफ़ का तवाफ़ कषरत से करो क्यूंकि तुम बरोजे क़ियामत अपने नामए आ’माल में उसे सब से अफ़ज़ल और सब से काबिले रश्क अमल पाओगे।” और एक रिवायत में है कि “जो बारिश में तवाफ़ के सात चक्कर लगाए उस के गुज़स्ता गुनाह बख़्श दिये जाएंगे।” (احياء علوم الدين، كتاب اسرار الحج، الفصل الاول، في فضائل الحج، ج ١، ص ٣٢٣)

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से मरवी है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जिस ने पचास बार बैतुल्लाह शरीफ़ का तवाफ़ किया तो वोह गुनाहों से ऐसा निकल गया जैसे उस दिन कि मां के पेट से पैदा हुवा था ।” (جامع الترمذی، ابواب الحج، باب ماجاء فی فضل الطواف، الحديث ۸۶۶، ص ۱۷۳۳)

मन्कूल है कि “**अब्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने बैतुल्लाह से वा'दा फ़रमाया कि हर साल छे लाख अफ़राद इस का हज़ करेंगे, अगर कम हुए तो **अब्लाह** तअ़ाला फ़िरिश्तों से उन की कमी पूरी फ़रमा देगा और बरोज़े क़ियामत का'बए मुशर्रफ़ا رَآدَهَا اللَّهُ شَرَفًا وَعَظِيمًا पहली रात की दुल्हन की तरह उठाया जाएगा तो जिन लोगों ने इस का हज़ किया वोह इस के पर्दों के साथ लटके होंगे और इस के गिर्द चक्कर लगा रहे होंगे यहां तक कि येह जन्नत में दाख़िल होगा तो वोह भी उस के साथ दाख़िल हो जाएंगे ।” (احیاء علوم الدین، کتاب اسرار الحج، الباب الاول، الفصل الاول، فضيلة البيت ومكة المشرفة، ج ۱، ص ۳۲۴)

हदीषे पाक में है कि “हज़रे अस्वद एक जन्नती पथ्थर है । उसे क़ियामत के दिन उठाया जाएगा । उस की दो आंखें और ज़बान होगी जिस से वोह कलाम करेगा और हर उस शख्स की गवाही देगा जिस ने उसे हक़ व सदाक़त के साथ बोसा दिया होगा । नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ उस को अकषर बोसा दिया करते थे । अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमरे फ़ारूक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने एक बार उसे बोसा देते हुए इरशाद फ़रमाया : “मैं जानता हूं कि तू एक पथ्थर है, न नुक्सान देता है न नफ़अ, अगर मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को तुझे बोसा देते हुए न देखा होता तो तुझे कभी बोसा न देता । अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمُ ने अर्ज़ की : “ऐ अमीरुल मोअमिनीन ! येह नफ़अ भी देता है और नुक्सान भी ।” तो हज़रते सय्यिदुना उमरे फ़ारूक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इरशाद फ़रमाया : “ऐ अबल हसन ! यहां आसूं बहाए जाते हैं और दुआएं क़बूल होती हैं ।”

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمُ ने अर्ज़ की : “ऐ अमीरुल मोअमिनीन ! येह नफ़अ व नुक्सान **अब्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के इज़्ज़ से देता है ।” तो हज़रते सय्यिदुना उमरे फ़ारूक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने पूछा : “वोह कैसे ?” तो अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمُ ने अर्ज़ की : “वोह यूं कि **अब्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने जब हज़रते सय्यिदुना आदम عَلٰی نَبِیِّنا وَعَلَيْهِ السَّلَامُ की अवलाद से अहद लिया तो उस अहदनामे की एक तहरीर लिख कर इस पथ्थर को खिला दी । अब येह मोमिनो के लिये वफ़ाए अहद की गवाही देगा और काफ़िरों के ख़िलाफ़ इन्कार की ।” हज़रे अस्वद को बोसा देते वक़्त लोग जो कलिमात पढ़ते हैं, उन का येही मा'ना है (और वोह येह हैं) :

اَللّٰهُمَّ اِيْمَانًا بِكَ وَتَصَدِيقًا بِكِتَابِكَ وَوَفَاءً بِعَهْدِكَ وَاتِّبَاعًا لِّسُنَّةِ نَبِيِّكَ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

या'नी ऐ **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ मैं तुझ पर ईमान लाते हुए, तेरी किताब की तस्दीक करते हुए, तेरे अहद को पूरा करते हुए और तेरे नबी हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की पैरवी करते हुए (इसे बोसा देता हूँ)।" और हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी رَحْمَةُ اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ फ़रमाते हैं : "मक्काए मुकर्रमा में एक नमाज़ एक लाख नमाज़ों के बराबर है, एक रोज़ा एक लाख रोज़ों के बराबर है और एक दिरहम सदका करना एक लाख दिरहम सदका करने की तरह है। इसी तरह हर नेकी एक लाख नेकियों के बराबर है।" (احیاء علوم الدین، کتاب اسرار الحج، الباب الاول، الفصل الاول، فضيلة البيت ومكة المشرفة، ج ۱، ص ۳۲۴-۳۲۵)

हदीषे पाक में है कि **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ हर रात अहले ज़मीन की तरफ़ नज़रे रहमत फ़रमाता है और सब से पहले अहले हरम की तरफ़ नज़रे रहमत फ़रमाता है और अहले हरम में भी सब से पहले मस्जिदे हराम वालों पर नज़रे रहमत फ़रमाता है। फिर जिस को तवाफ़ करते हुए पाता है उसे बख़्श देता है और जिसे नमाज़ में मशगूल पाता है उस की मग़फ़िरत फ़रमा देता है और जिसे का'बे की तरफ़ रुख़ किये हुए पाता है उसे भी मुआफ़ फ़रमा देता है।"

(احیاء علوم الدین، کتاب اسرار الحج، الباب الاول، الفصل الاول، فضيلة البيت ومكة المشرفة، ج ۱، ص ۳۲۵)

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि सय्यिदुल मुबल्लिगीन, जनाबे रहमतुल्लिल आलमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "इस बैतुल्लाह शरीफ़ पर हर दिन एक सो बीस रहमतें नाज़िल होती हैं। साठ तवाफ़ करने वालों के लिये, चालीस नमाज़ पढ़ने वालों के लिये और बीस उसे देखने वालों के लिये।"

(احیاء علوم الدین، کتاب اسرار الحج، الباب الاول، الفصل الاول، فی فضائل الحج، ج ۱، ص ۳۲۲-المعجم الكبير، الحديث ۱۱۴۷۵، ج ۱، ص ۱۵۶)

शहनशाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिषाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने हकीकत बयान है : "हज़ून और बकीअ को उन के अतराफ़ से पकड़ा जाएगा और जन्नत में बिखेर दिया जाएगा और येह दोनों मक्काए मुकर्रमा और मदीनए मुनव्वरा के क़ब्रिस्तान हैं।"

(کشف الخفاء، حرف الحاء المهملة، الحديث ۱۱۱۰، ج ۱، ص ۳۱۲، الحجر بدله الحجون)

हज़रते सय्यिदुना इब्ने मसऊद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार, बिइज्ने परवर दगार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क़ब्रिस्तान के कनारे तशरीफ़ फ़रमा थे जब कि उस वक़्त वहां क़ब्रिस्तान न था, और इरशाद फ़रमाया : **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ ज़मीन के इस टुकड़े और इस हरम से सत्तर हज़ार ऐसे अफ़राद उठाएगा जिन के चेहरे चौदहवीं के चांद की तरह होंगे, वोह सब बिला हिसाब जन्नत में दाख़िल होंगे, उन में से हर एक सत्तर हज़ार अफ़राद की शफ़ाअत करेगा।"

(اخبار مكة للفاکھی، ذکر فضل مقبرة..... الخ، الحديث ۲۳۷۰، ج ۴، ص ۵۱)



हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सखावत, पैकरे अज़मतो शराफ़त, महबूबे रब्बुल इज़ज़त, मोहसिने इन्सानिय्यत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जो मक्के की गरमी पर एक घड़ी सन्न करेगा जहन्नम उस से एक सो साल की मसाफ़त दूर हो जाएगी।”

(अخبار مكة للفاكهي، ذكر الصبر على حر مكة، الحديث ١٥٦٦/١٥٦٥، ج ٢، ص ٣١٠-٣١١)

हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अब्दुल्लाह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ का फ़रमाने आलीशान है : “ये घर इस्लाम का सुतून है, जो हज़ या उमरह करने वाला अपने घर से बैतुल्लाह शरीफ़ के इरादे से निकले, अगर उस की रूह कब्ज़ हो जाए तो **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ के ज़िम्मे करम पर है कि उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमा दे, और अगर वोह (हज़ कर के) पलटा तो अज़्रो ग़नीमत के साथ लौटेगा।”

(المعجم الاوسط، الحديث ٩٠٣٣، ج ٦، ص ٣٥٢-٣٥٣، باب الهاء، الحديث ٧٢٠٨، ج ٢، ص ٣٨٢)

तवाफ़े का'बा के बारे में इरशादे बारी तआला है :

﴿١﴾ وَلَيَطُورُوا بِالْبَيْتِ الْعَتِيقِ

(ب ١٧، الحج: ٢٩)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और उस आज़ाद घर का तवाफ़ करें।

**अतीक कहने की वजह :**

बैतुल्लाह शरीफ़ को अतीक इस लिये कहते हैं कि “**اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ ने इसे ज़मीन से दो हज़ार साल पहले पैदा फ़रमाया और इस को ज़ालिम और जाबिर लोगों के कब्ज़े से आज़ाद रखा और इस पर किसी ज़ालिमो जाबिर को मुसल्लत न किया बल्कि जिस ने भी बुरा इरादा किया वोह हलाक हो गया।” हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र वासिती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं कि इस को अतीक कहने की वजह येह भी है कि जिस ने भी इस का तवाफ़ किया वोह जहन्नम से आज़ाद हो गया।”

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को भी अतीक कहा जाता है। पस जो शख्स नमाज़ में किब्ला शरीफ़ की तरफ़ रुख़ न करे उस की नमाज़ कबूल नहीं और जो अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की विलायत की गवाही न दे उस की ज़कात कबूल नहीं।

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन सुलैमान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ फ़रमाते हैं कि “जब हज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ السّلام ज़मीन पर जल्वा फ़रमा हुए तो आप عَلَيْهِ السّلام ने बैतुल्लाह शरीफ़ के सात चक्कर लगाए, फिर दो रकअत नमाज़ पढ़ कर मुल्लतजिम के पास आए और अर्ज़ की : “ऐ **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ ! तू मेरे ज़ाहिरो बातिन को जानता है, मेरी मा'ज़िरत कबूल फ़रमा ले और तू जानता है जो कुछ मेरे दिल में है पस मेरे गुनाहों को बख़्श दे और तू मेरी हाज़त भी जानता है लिहाज़ा वोह भी पूरी फ़रमा दे। ऐ **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ ! मैं तुझ से ऐसे ईमान और यकीने सादिक़ का

सुवाल करता हूं जो मेरे दिल में बस जाए यहां तक कि मैं यकीन कर लूं कि मुझे वोही तकलीफ़ पहुंच सकती है जो तू ने मेरे लिये लिख दी है और उस पर राजी रहने का सुवाल करता हूं जिस का तू ने मेरे बारे में फैसला फ़रमा दिया है।” तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने वही फ़रमाई : “ऐ आदम (عَلَيْهِ السَّلَام) ! मैं ने तेरी तमाम दुआएं क़बूल फ़रमाई और तेरी अवलाद में से जो शख्स भी दुआ करेगा मैं उस के ग़मो अलम और तंगी दूर कर दूंगा, उस के दिल से फ़क्र का ग़म निकाल कर उसे बे नियाज़ कर दूंगा और उसे वहां से रिज़क़ दूंगा जहां उसे गुमान भी न होगा और दुनिया उस के पास ज़लील हो कर आएगी अगरचें वोह उस की ख़्वाहिश न रखता हो।”

(अखबार मकّة للآزرقي، باب ما جاء في الملتزم والقيام في ظهر الكعبة، الحديث ٤٩٤، ج ٢، ص ٩٢ - المعجم الاوسط، الحديث ٥٩٧٤، ج ٤، ص ٢٧٥)

### जबान और आंखों वाला बादल :

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से मरवी है कि “जब तूफ़ाने नूह के बा’द बैतुल मा’मूर जिस की बुन्याद हज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ السَّلَام ने रखी थी, को छटे आस्मान पर उठाया गया तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام को हुक्म दिया कि वोह बैतुल्लाह शरीफ़ की जगह आ कर उस के निशानात पर बुन्याद रखें। हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام वहां तशरीफ़ ले गए मगर वोह आप عَلَيْهِ السَّلَام से पोशीदा था और आप عَلَيْهِ السَّلَام को उस का कोई निशान दिखाई न दे रहा था तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने एक बादल भेजा जो लम्बाई, चौड़ाई में बैतुल्लाह शरीफ़ की मिक्दार के बराबर था, उस का सर, जबान और दो आंखें थीं। वोह बैतुल्लाह शरीफ़ के मक़ाम पर खड़ा हो गया और अर्ज़ की : “ऐ इब्राहीम (عَلَيْهِ السَّلَام) मेरी मिक्दार के बराबर बुन्याद रख दें।” हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने उस के कहने के मुताबिक़ बुन्याद रखी फिर बादल चला गया। जब आप عَلَيْهِ السَّلَام उस के बनाने से फ़ारिग़ हुए तो तवाफ़ किया। **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने आप عَلَيْهِ السَّلَام की तरफ़ वही फ़रमाई कि “लोगों में हज़ का ए’लान करें।” आप عَلَيْهِ السَّلَام ने अर्ज़ की : “मेरी आवाज़ कैसे पहुंचेगी?” तो **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : “ऐ इब्राहीम (عَلَيْهِ السَّلَام) ! तेरा काम है निदा करना पहुंचाना हमारे ज़िम्मे है।” तो हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने जबले अबू कुबैस पर चढ़ कर बुलन्द आवाज़ से पुकारा : “ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के बन्दो ! तुम्हारे रब्ब عَزَّ وَجَلَّ ने घर बनाया और तुम्हें उस का हज़ करने का हुक्म दिया है।” तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने सब ज़मीन वालों को आप عَلَيْهِ السَّلَام की आवाज़ सुनाई तो जिनों, इन्सानों, पथर और मिट्टी के ढेलों, पहाड़ों और रेतिले मैदानों और हर खुशको तर ने जवाब दिया। मशरिफ़ो मग़रिब वालों को आवाज़ पहुंचाई तो माओं के पेटों से और मर्दों की पुष्टों से सब ने येह कहते हुए जवाब दिया : اَللّٰهُمَّ لَبَّيْكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ لَبَّيْكَ اِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَكَ وَالْمُلْكُ لَا شَرِيْكَ لَكَ

तो आज वोही शख्स हज करेगा जिस ने उस दिन जवाब दिया था। जिस ने एक मरतबा लब्बैक कहा तो वोह एक मरतबा हज करेगा, जिस ने दो मरतबा कहा वोह दो मरतबा और जिस ने तीन मरतबा लब्बैक कहा वोह तीन मरतबा हज करेगा और जिस ने इस से भी ज़ियादा बार लब्बैक कहा वोह उतनी ही बार हज करेगा।”

(شعب الإيمان للبيهقي، باب في المناسك، حيث الكعبة والمسجد الحرام، الحديث ٣٩٨٩، ج ٣، ص ٤٣٦، مفهوماً اخبار مكة للفاكهي، ذكر ابراهيم عليه السلام على المقام..... الخ، الحديث ٩٧٣، ج ١، ص ٤٤٥ - فردوس الاخبار للديلمي، باب اللام، الحديث ٥٣٤٣، ج ٢، ص ٢١٧)

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा फ़रमाते हैं कि “मैं हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के साथ बैतुल्लाह शरीफ़ का तवाफ़ कर रहा था। मैं ने अर्ज़ की : “मेरे मां बाप आप (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पर कुरबान ! इस घर की शान क्या है ?” तो आप (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने इरशाद फ़रमाया : “ऐ अ़ली ! **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ ने मेरी उम्मत के गुनाहों के कफ़फ़ारे के लिये दुन्या में अपना घर बनाया।” मैं ने अर्ज़ की : “मेरे मां बाप आप (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पर कुरबान ! इस हज़रे अस्वद का मक़ामो मर्तबा क्या है ?” तो आप (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने इरशाद फ़रमाया : “येह कीमती पथर जन्नत में था, **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ ने इसे दुन्या में उतारा तो इस की रोशनी सूरज जैसी थी लेकिन जब से इसे मुश्किन के (नापाक) हाथ लगे इस का रंग तब्दील हो गया और अब येह सख़्त सियाह हो गया है।”

(اخبار مكة للفاكهي، ذكر المقام وفضله، الحديث ٩٦٨، ج ١، ص ٤٤٣، مختصر وبتغير)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** हर घर बैतुल्लाह नहीं और न ही हर पहाड़ अरफ़ात है, न हर तोशा मक्के तक पहुंचाता है। ऐ वोह शख्स जिस ने हज फ़ौत कर दिया। उस की तरफ़ रास्ता न पाया। अपनी उम्र खेल कूद में गुज़ार दी और गुनाहों का भारी बोझ उठाए रखा। इस्त्यां के मैदान में ग़फ़लत से अपने दामन को घसीटा, नजात त़लब की लेकिन उस तक न पहुंचा लिहाज़ा तू हज में जल्दी कर और अपने लिये इस्लाम को रहनुमा बना जिस का इदराक़ न कोई आंख कर सकती है और न ही अक्लें और फ़िक्रें उस की मिषाल व नज़ीर ला सकती हैं।

**ख़ानए का'बा शरीफ़ शफ़ाअत फ़रमाएगा :**

हज़रते सय्यिदुना वहब बिन मुनब्बेह رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं, तौरात शरीफ़ में है कि “**अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ बरोजे क़ियामत अपने सात लाख मुक़र्रब फ़िरिश्तों को भेजेगा, जिन में से हर एक के हाथ में सोने की एक ज़न्जीर होगी। **अब्बाह** عَزَّ وَजَلَّ फ़रमाएगा : “जाओ ! और बैतुल्लाह शरीफ़ को इन ज़न्जीरों में बांध कर महशर की तरफ़ ले आओ।” फ़िरिश्ते जाएंगे, उन ज़न्जीरों से बांध कर खींचेंगे और एक फ़िरिश्ता पुकारेगा : “ऐ का'बतुल्लाह ! चल।” तो का'बए मुबारका कहेगा : “मैं नहीं चलूंगा जब तक मेरा सुवाल पूरा न हो जाए।” फ़ज़ाए आस्मानी से एक फ़िरिश्ता



पुकारेगा : “तू सुवाल कर ।” तो का’बा अर्ज करेगा : “ऐ **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ ! तू मेरे पड़ोस में दफ्न मोअमिनीन के हक़ में मेरी शफ़ाअत क़बूल फ़रमा ।” तो का’बा शरीफ़ को एक आवाज़ सुनाई देगी : “मैं ने तेरी दरख़्वास्त क़बूल फ़रमा ली ।”

हज़रते सय्यिदुना वहब बिन मुनब्बेह **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی** عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : “फिर मक्के के मुर्दों को उठाया जाएगा जिन के चेहरे सफ़ेद होंगे । वोह सब एहराम की हालत में का’बा के गिर्द जम्अ हो कर तल्बिया (या’नी लब्बैक) कह रहे होंगे । फिर फ़िरिश्ते कहेंगे : “ऐ का’बा ! अब चल ।” तो वोह कहेगा : “मैं नहीं चलूंगा यहां तक कि मेरी दरख़्वास्त क़बूल हो जाए ।” तो फ़ज़ाए आस्मानी से एक फ़िरिश्ता पुकारेगा : “तू मांग, तुझे दिया जाएगा ।” तो का’बा शरीफ़ कहेगा : “ऐ **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ ! तेरे गुनहगार बन्दे जो इकठ्ठे हो कर दूर दूर से गुबार आलूद हो कर मेरे पास आए । उन्होंने ने अपने अहलो इयाल और अहबाब को छोड़ा । उन्होंने ने फ़रमां बरदारी और ज़ियारत के शौक में निकल कर तेरे हुक्म के मुताबिक़ मनासिके हज़ अदा किये । तो मैं तुझ से सुवाल करता हूं कि उन के हक़ में मेरी शफ़ाअत क़बूल फ़रमा, उन को क़ियामत की घबराहट से अम्न में रख और उन्हें मेरे गिर्द जम्अ फ़रमा दे ।”

तो एक फ़िरिश्ता निदा देगा : “उन में ऐसे लोग भी होंगे जिन्होंने ने तेरे त्वाफ़ के बा’द गुनाहों का इर्तीकाब किया होगा और उन पर इसरार कर के अपने ऊपर जहन्नम वाजिब कर ली होगी ।” तो का’बा अर्ज करेगा : “ऐ **اَلलّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ से उन गुनहगारों के हक़ में शफ़ाअत क़बूल होने का सुवाल करता हूं जिन पर जहन्नम वाजिब हो चुकी है ।” तो **اَلलّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : “मैं ने उन के हक़ में तेरी शफ़ाअत क़बूल फ़रमाई ।” तो वोही फ़िरिश्ता निदा करेगा : “जिस ने का’बे की ज़ियारत की थी वोह लोगों से अलग हो जाए ।” **اَلलّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ उन सब को का’बे के गिर्द जम्अ कर देगा । उन के चेहरे सफ़ेद होंगे और वोह जहन्नम से बे ख़ौफ़ हो कर त्वाफ़ करते हुए तल्बिया कहेंगे । फिर फ़िरिश्ता पुकारेगा : ऐ का’बतुल्लाह ! चल तो का’बा शरीफ़ तल्बिय्या कहेगा :

لَّيْسَ إِلَهُكَ إِلَّا اللَّهُمَّ لَيْسَ لَكَ شَرِيكَ، وَالْخَيْرُ كُلُّهُ بِيَدَيْكَ، لَيْسَ لَكَ شَرِيكَ لَكَ لَيْسَ لَكَ، إِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَكَ وَالْمُلْكُ لَا شَرِيكَ لَكَ  
फिर फ़िरिश्ते उस को खींच कर महशर तक ले जाएंगे ।

(احياء علوم الدين، كتاب اسرار الحج، الباب الثاني، ج ١، ص ٣٣٣، مختصر)

पाक है वोह ज़ात जिस ने का’बा मुशर्रफ़ को अम्न और इज़ज़त वाला घर बनाया और उस में रहने वाले इन्सानों और जानवरों को अमान दी और आबे ज़मज़म के साथ ख़ास किया और मक़ामे इब्राहीम **عَلَيْهِ السَّلَام** को फ़र्जों वाजिब और नवाफ़िल की अदाएगी के लिये क़ाइम किया और सअूय के लिये सफ़ा व मरवह का इन्तिख़ाब फ़रमाया और जफ़ा के बदले सिलए रहूमी को पैदा फ़रमाया ।

وَصَلَّى اللهُ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِهِ وَصَحْبِهِ وَسَلَّمَ تَسْلِيمًا كَثِيرًا



## बयान 10 : खौफे खुदा عز وجل में रोने वालों का बयान हम्मे बारी तअलाला :

सब खूबियां **अल्लाह** عز وجل के लिये हैं जिस ने खाइफीन की आंखों को खौफे वईद से रुलाया तो उन की आंखों से चशमों की मानिन्द आसूं जारी हो गए और उन हस्तियों की आंखों से आंसूओं के बादल बरसाए जिन के पहलू बिस्तरों से जुदा रहते हैं, उन्होंने ने “तक्वा” को अपना फ़ख्रिया लिबास बनाया, खौफ ने उन की नींद और ऊंघ उड़ा दी, जब लोग खुश होते हैं तो वोह ग़मगीन होते हैं। आसूओं ने उन की नींद और सुकून ख़त्म कर दिया पस वोह ग़मगीन और दर्द भरे दिल से रोते हैं, उन्होंने ने आहो बुका को अपनी आदत और आसूओं को पानी बना लिया। उन के दिन ग़म में कटते और रातें फूट फूट कर रोने में गुज़रती हैं, वोह आहो ज़ारी से सैर नहीं होते। पाक है वोह ज़ात जिस ने इन्सान को हंसाया और रुलाया और ज़िन्दगी और मौत अता फ़रमाई और माज़ी व मुस्तक़बल का इल्म सिखाया। उन्होंने ने अपने रब्ब عز وجل से अहद किया तो उस को वफ़ा करने वाला पाया। उस से मुआमला किया तो सारी ज़िन्दगी नफ़ा देने वाला पाया। येही वोह लोग हैं जिन के बारे में रब्बे अज़ीम ने इरशाद फ़रमाया : (پ ۱۶، مريم: ۵۸) : **تَرْجَمَةُ** إِذَا تَطَلَّى عَلَيْهِمْ إِيَّتِ الرَّحْمَنُ خَرُّوا سُجَّدًا وَبُكِيًّا 0 **कन्ज़ुल ईमान** : जब उन पर रहमान की आयतें पढ़ी जातीं गिर पड़ते सजदा करते और रोते हैं।<sup>(1)</sup> (येह आयते सजदा है इसे पढ़ने, सुनने वाले पर सजदा करना वाजिब है)

उन में से हर एक अपना चेहरा खाक पर रख देता है और जब वोह अपने आप को रन्जीदगी से ख़ाली पाते हैं तो रोते और गिर्या व ज़ारी करते हैं और जब अपने गुनाहों के मुतअल्लिक सोचते हैं तो ख़ूब गिड़गिड़ाते हैं और आसूओं से उन की पलकें ज़ख्मी हो जाती हैं। वोह सब बादशाहे हकीकी की बारगाह में पलकों के बादलों से आसू बहाते और रोते रोते ठोड़ी के बल गिर पड़ते हैं और अहल सिद्को वफ़ा के मुतअल्लिक सरकार عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام का येह फ़रमान कि “अगर तुम्हें रोना न आए तो रोने वाली सूरत बना लो।” (سنن ابن ماجه، ابواب الزهد، باب الحزن والبكاء، الحديث ۴۱۹۶، ص ۲۷۳۲) सुनते हैं तो रोने से नहीं उक्ताते। और उन में से हर एक अपनी लज़िज़ पर रोता है। सभी उस की सतवतो इक्तिदार से खौफ ज़दा रहते हैं जैसा कि **अल्लाह** तबारक व तअलाला ने इरशाद फ़रमाया : **تَرْجَمَةُ** وَهُمْ مِنْ خَشْيَتِهِ مُشْفِقُونَ 0 (پ ۱۷، الانبياء: ۲۸) और वोह उस के खौफ से डर रहे हैं।

①.....मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ज़िल सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं : “**अल्लाह** तअलाला ने इन आयत (ये और गुज़शता आयत) में ख़बर दी कि अम्बिया الصَّلَاةُ وَالسَّلَام عَلَيْهِم **अल्लाह** तअलाला की आयतों को सुन कर खुजूअ व खुशूअ और खौफ से रोते और सजदे करते थे। **मसअला** : इस से पाबित हुवा कि कुरआने पाक ब खुशूअ क़ल्ब सुनना और रोना मुस्तहब है।”

**पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इलिमिया (दा'वते इस्लामी)**



हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफुरहीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم येह दुआ फ़रमाया करते : “ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे रोने वाली आंखें अता फ़रमा जो तेरे ख़ौफ़ से आसूं बहाती रहें इस से पहले कि खून के आंसू रोना पड़े और दाढ़ें पथ्थर हो जाएं।” (الزهد للإمام احمد بن حنبل، الحديث ٤٨، ص ٣٤)

रोने वाली आंखें मांगो रोना सब का काम नहीं

ज़िक्रे महब्वत आम है लेकिन सोज़े महब्वत आम नहीं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपनी किसी आस्मानी किताब में इरशाद फ़रमाया : “मेरे इज़्ज़त व जलाल की क़सम ! जो बन्दा मेरे ख़ौफ़ से रोएगा मैं उस के बदले मुक़द्दस नूर से उसे खुशी अता करूंगा। मेरे ख़ौफ़ से रोने वालों को बिशारत हो कि जब रहमत नाज़िल होती है तो सब से पहले उन्हीं पर नाज़िल होती है और मेरे गुनहगार बन्दों से कह दो कि वोह मेरे ख़ौफ़ से आहो बुका करने वालों की महफ़िल इख़्तियार करें ताकी जब रोने वालों पर रहमत नाज़िल हो तो उन को भी रहमत पहुंचे।”

(موسوعة للإمام ابن ابي الدنيا، كتاب الرقة والبكاء، الحديث ١٨/٨/٢٧، ج ٣، ص ١٧١ تا ١٧٤)

हज़रते सय्यिदुना नज़र बिन सा'द رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْہِ फ़रमाते हैं कि किसी की आंख से ख़शिय्यते इलाही عَزَّوَجَلَّ से आसूं बहते हैं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के चेहरे को जहन्नम पर हुराम फ़रमा देता है। अगर उस के रुख़्सार पर बह जाए तो क़ियामत के दिन न वोह ज़लील होगा और न उस पर कोई जुल्म होगा। और अगर कोई ग़मगीन शख्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ से कुछ लोगों में रोए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के रोने के सबब उन लोगों पर भी रहम फ़रमाता है। आंसू के इलावा हर अमल का वज़्न किया जाएगा और आंसूओं का एक क़तरा आग के समन्दरों को बुझा देता है।”

(المرجع السابق، الحديث ١٤، ج ٣، ص ١٧٢)

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने इरशाद फ़रमाया : “**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ से आंसू का एक क़तरा बहाना मुझे एक हज़ार दीनार सदक़ा करने से ज़ियादा पसन्द है।”

(احياء علوم الدين، كتاب الخوف والرجاء، بيان فضيلة الخوف، ج ٤، ص ٢٠١)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब दिलों की ज़मीन से ख़ौफ़ पैदा हो, आंसू बह कर ख़शिय्यत के बागीचे को सैराब करें तो नदामत की कली खिल उठती है और तौबा का फल नसीब हो जाता है। हज़रते सय्यिदुना दावूद عَلَیْہِ السَّلَام अपनी लग़िज़श पर दिन रात रोते रहते थे गोया आप عَلَیْہِ السَّلَام ने खुशी का हुल्ला उतार कर ग़म का लिबास ज़ेबेतन कर लिया था, कबूतर आप عَلَیْہِ السَّلَام की आवाज़ से ख़ामोश हो जाते, दिल आप عَلَیْہِ السَّلَام की चीखों से मुज़्तरिब हो जाते, आप عَلَیْہِ السَّلَام के आंसूओं से घास सैराब हो जाती। आप عَلَیْہِ السَّلَام अपनी मुनाजात में अर्ज़ करते : “मैं तेरे बन्दों के तबीबों से इलाज कराने के लिये निकला कि वोह मेरे दिल की बीमारी का इलाज

करें लेकिन सब ने तेरी राह बताई। ऐ **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ मेरी आंखों को आंसू बहाने की तौफीक अता फ़रमा और मेरी कमजोरी को कुव्वत से बदल डाल ताकि मैं तुझे राज़ी कर सकूं।”

हज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान दारानी **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى** عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि रोना ख़ौफ़ से आता है और बेकरारी रिज़ा व शौक़ से होती है। जब हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद मुन्कदिर **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى** عَلَيْهِ रोया करते तो अपने चेहरे और दाढ़ी पर आसू मल लिया करते। उन से इस के मुतअल्लिक अर्ज की गई तो इरशाद फ़रमाया : “मुझे पता चला है कि आग उस जगह को न खाएगी जिसे आसू छूएं।”

(سير اعلام النبلاء، الرقم ٧٧٧، محمد بن مكندر بن عبد الله، ج ٦، ص ١٥٩) ऐ मेरे अज़ीज़ ! येह रोना गुनाहों की आग को बुझाता, दिलों की खेती को ज़िन्दा करता और मल्लूब तक पहुंचाता है। अपनी तन्हाइयों में बे वफ़ाइयों पर रोता रह और दिन रात लगज़िशों और गुनाहों पर आंसू बहाता रह।

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र किनानी **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى** عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि मैं ने ख़्वाब में एक ऐसा नौजवान देखा जिस से ज़ियादा ख़ूबसूरत किसी को न देखा था। मैं ने उस से पूछा : “तू कौन है ?” तो उस ने जवाब दिया : “मैं तक्वा हूं।” मैं ने उस से इस्तिफ़सार किया : “तू कहां रहता है ?” तो उस ने बताया : “हर गुमगीन रोने वाले के दिल में।”

मन्कूल है कि हज़रते सय्यिदुना यज़ीद रक्फ़ाशी **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى** عَلَيْهِ ने ख़्वाब में **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब, हबीबे लबीब **صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की ज़ियारत की। आप **صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के सामने क़िराअत की तो आप **صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इरशाद फ़रमाया : “येह क़िराअत है तो रोना कहां है ?” हज़रते सय्यिदुना अहमद बिन अबी हवारी **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى** عَلَيْهِ इरशाद फ़रमाते हैं : “मैं ने अपनी लौंडी को ख़्वाब में देखा कि उस से ज़ियादा हसीन कोई औरत न देखी थी। उस का चेहरा हुस्नो जमाल से दमक रहा था। मैं ने उस से पूछा : “तेरा चेहरा इतना रोशन क्यूं है ?” तो वोह कहने लगी : “आप को वोह रात याद है जब आप **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ से रोए थे ?” मैं ने कहा : “जी हां।” उस ने कहा : “आप के आंसूओं का एक क़तरा मैं ने उठा कर अपने चेहरे पर मल लिया तो चेहरा ऐसा हो गया जैसा कि आप मुलाहज़ा फ़रमा रहे हैं।”

हज़रते सय्यिदुना अता सुलमी **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى** عَلَيْهِ के बारे में मन्कूल है कि आप **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى** عَلَيْهِ बहुत ज़ियाद गिर्या व ज़ारी फ़रमाते। आप **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى** عَلَيْهِ से इस के मुतअल्लिक पूछा गया तो आप **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى** عَلَيْهِ ने इरशाद फ़रमाया : “मैं क्यूं न रोऊं हालांकि मौत के फन्दे मेरी गरदन में हैं, क़ब्र मेरा घर है और क़ियामत मेरा ठिकाना है और अपना अपना हक़ मांगने वाले मेरे इर्द गिर्द खड़े हो कर पुकार रहे हैं : “ऐ शख़्स ! हमारे और तुम्हारे दरमियान मैदाने महशर में फैसला होगा।”

हज़रते सय्यिदुना यज़ीद रक्फ़ाशी **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى** عَلَيْهِ अपनी मौत के वक़्त रोने लगे तो उन से अर्ज की गई : “आप क्यूं रोते हैं ?” तो इरशाद फ़रमाया : “मैं इस वजह से रोता हूं कि अब मुझे रातों के क़ियाम, दिन के रोज़ों और ज़िक्र की मजालिस में हाज़िरी का मौक़अ न मिलेगा।”

हज़रते सय्यिदुना अमिर बिन कैस رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ का वक्ते विसाल करीब आया तो रोने लगे। आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से अर्ज की गई : “कौन सी चीज़ आप को रुला रही है ?” तो आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने इरशाद फ़रमाया : “मैं सख़्त गर्मियों के रोज़ों और सर्दियों में क़ियाम पर रो रहा हूँ।” (क्यूंकि अब दोबारा येह मौक़अ हाथ न आएगा)

हज़रते सय्यिदुना अबू शा'शा رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ अपनी मौत के वक्ते रोने लगे। आप रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से दर्याफ़्त किया गया : “कौन सी चीज़ आप को रुला रही है ?” तो आप रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने इरशाद फ़रमाया : “मुझे रातों के क़ियाम का शौक़ था।”

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم फ़रमाते हैं कि एक इबादत गुज़ार शख़्स बीमार हो गया तो हम उस की इयादत के लिये उस के पास गए। वोह लम्बी लम्बी सांसें ले कर अफ़सोस करने लगा। मैं ने उस को कहा : “किस बात पर अफ़सोस कर रहे हो ?” तो उस ने बताया : “उस रात पर जो मैं ने सो कर गुज़ारी और उस दिन पर जिस दिन मैं ने रोज़ा न रखा और उस घड़ी पर जिस में मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र से ग़ाफ़िल रहा।”

एक आबिद अपनी मौत के वक्ते रोने लगा। उस से वजह दर्याफ़्त की गई तो उस ने जवाब दिया कि “मैं इस बात पर रोता हूँ कि रोज़ेदार रोज़े रखेंगे लेकिन मैं उन में न होऊंगा। ज़ाकिरीन ज़िक्र करेंगे लेकिन मैं उन में न होऊंगा। नमाज़ी नमाज़ें पढ़ेंगे लेकिन मैं उन में न होऊंगा।”

**ऐ ग़ाफ़िल इन्सान !** इन बुजुर्गों को देख ! मरने पर कैसे अफ़सुर्दा और नादिम हो रहे हैं कि मौत के बा'द अमले सालेह न कर सकेंगे। अपनी बक़िय्या उम्र से कुछ हासिल कर ले और जान ले कि जैसा करेगा वैसा भरेगा। क्या तू इन लोगों की क़ब्रों से गुज़रते हुए इब्रत हासिल नहीं करता ? क्या तू नहीं देखता कि वोह अपनी क़ब्रों में इतमीनान से हैं लेकिन फिर भी तुम्हारी तरफ़ लौटने की ख़्वाहिश करते हैं, वोह फ़ौतशुदा आ'माल की तलाफ़ी चाहते हैं। कितने वाइज़ीन ने वा'ज किया, डराया और मौत ने कितनी मिट्टी को आबाद कर दिया ? क्या तेरे पास ऐसा कान नहीं जो नसीहत को सुनें ? क्या तू ऐसी आंख नहीं रखता जो अपने महबूब के जुदा होने पर आंसू बहाए ? क्या तेरे पास ऐसा दिल नहीं जो खोफ़े खुदा عَزَّوَجَلَّ से गिड़गिड़ाए ? क्या तुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा करने की तम्अ नहीं ?

मन्कूल है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हज़रते सय्यिदुना शोएब عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की तरफ़ वह्य फ़रमाई : “ऐ शोएब (عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام) ! मेरे लिये अपनी गरदन अज़िजी से झुका ले और अपने दिल में खुशूअ पैदा कर, अपनी आंखों से आंसू बहा और मुझ से दुआ कर कि मैं तेरे करीब हूँ।” मन्कूल है कि हज़रते सय्यिदुना शोएब عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام सो साल रोते रहे यहां तक कि उन की बीनाई चली गई। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने दोबारा बीनाई अता फ़रमाई तो फिर सो साल रोते रहे यहां तक



कि आप عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की बीनाई फिर जाएअ हो गई तो **اَعَزَّ وَجَلَّ** ने वहुय फरमाई : “ऐ शोऐब (عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام) ! येह रोना अगर जहन्नम के खौफ से है तो मैं ने तुझे जहन्नम से अमान अता कर दी और अगर जन्नत के शौक में है तो मैं ने तुझे जन्नत बख्श दी ।” तो आप عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने अर्ज की : “ऐ رب **عَزَّ وَجَلَّ** ! तेरे इज्जत जलाल की कसम ! मैं ने तेरे जहन्नम के खौफ से और न ही तेरी जन्नत के शौक में रो रहा हूं बल्कि तेरी महब्बत की गिरह मेरे दिल में लगी हुई है । इसे तेरे दीदार के इलावा कोई चीज नहीं खोल सकती ।” तो **اَعَزَّ وَجَلَّ** ने इरशाद फरमाया : “जब ऐसा है तो मैं तुझे जरूर अपना दीदार कराऊंगा और (वोह यूं कि) मैं तेरे पास अपना एक बन्दा भेजूंगा जो दस साल तेरी खिदमत करेगा फिर उसे तेरी मुनाजात की बरकत से कलीम बना दूंगा ।” (कलीम से मुराद हजरते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام हैं)

आह ! वोह दिल जिस को ग़म की गर्मी ने पिघला दिया । आह ! वोह लोग जिन्हें गिराया व ज़ारी ने फना कर दिया । आह ! वोह आ'जा जिन्होंने ने बुरे कामों के बदले अच्छे कामों को क़बूल किया । आह ! वोह जिगर कि मलिके जलील **عَزَّ وَجَلَّ** के खौफ से टुकड़े टुकड़े हो गए । हाए ! वोह दिल जिन को कूच और मौत के दिन की फिक्र नहीं ? हाए ! वोह दिल की सख्ती जिस ने दिल को जहन्नम की बुरी राह पर चलाया । हाए ! वोह दिल जो गुनाहों से बीमार हुवा । जिस ने इताअत के लिये कमर बांधी तो वोह कामयाब हो गया । ऐ मिस्कीन ! क्या अब भी तू अपनी ख्वाहिश से बाज़ न आएगा ? क्या अब भी अपने मौला **عَزَّ وَجَلَّ** के दरवाजे की तरफ न लौटेगा ? क्या तू भूल गया कि तेरे मौला **عَزَّ وَजَلَّ** ने तुझे क्या क्या ने'मतें अता कीं ? क्या तुझ पर दिलों को मेहरबान न किया ? क्या तुझे रिज़क से गिज़ा न बख्शी ? क्या तेरे दिल में इस्लाम डाल कर तुझे हिदायत न दी ? क्या तुझे अपने फज़ल से क़रीब न किया ? क्या उस का एहसान लम्हा भर भी तुझ से हटा ? लेकिन तू ने ग़फ़लत को क़बूल किया, ख्वाहिशत पर सुवार हुवा, ख़ताओं में जल्दी की, उस का अहद तोड़ डाला, उस के हुक्म की ना फरमानी की, गुनाहों पर डटा रहा, अपने नफ़्स की इताअत और **اَعَزَّ وَجَلَّ** की मुख़ालफ़त की । क्या तुझे हया नहीं कि वोह तेरी ना फरमानी को देख रहा है । इस महरूम व दूरी के बा वुजूद अगर तू उस की तरफ रुजूअ करेगा तो वोह तुझे क़बूल फरमा लेगा, तुझ से राजी हो जाएगा । अगर तू हमेशा उस की इताअत में रहे तो वोह तुझे अपना कुर्ब अता फरमाएगा । (अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फरमाते हैं)

गुनाहों ने मेरी कमर तोड़ डाली

मेरा हश्र में होगा क्या या इलाही **عَزَّ وَجَلَّ**

तू अपनी विलायत की खैरात दे दे

मेरे गौष का वासिता या इलाही **عَزَّ وَجَلَّ**

हजरते सय्यिदुना अहमद बिन अबी हवारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِي फरमाते हैं कि मैं हजरते सय्यिदुना अबू सुलैमान दारानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی के पास गया और उन को रोता हुवा पा कर रोने की वजह दर्याफ़्त की तो उन्होंने ने इरशाद फरमाया : “ऐ अहमद ! मेरी आंखें पुरनम क्यूं न हों जब कि मुझे येह बात पहुंची है कि जब रात तारीक हो जाती है, लोग सो जाते हैं और हर दोस्त अपने दोस्त के साथ तन्हाई इख़्तियार कर लेता है, तो अहले मा'रिफ़त के दिल रोशन हो जाते हैं । वोह अपने رب **عَزَّ وَجَلَّ** के ज़िक्र से लुत्फ़ अन्दोज़ होते हैं, उन के अज़म मालिके अर्श **عَزَّ وَجَلَّ** तक बुलन्द होते हैं और अहले

महब्बत मुनाजात में अपने मालिक عَزَّوَجَلَّ के सामने कदम बिछा देते हैं, पुर दर्द आवाज़ से उस के कलाम को दोहराते हैं, उन के आंसू रुख़्सारों पर बह पड़ते हैं, ख़ौफ़ और उस की मुलाकात के इशितयाक़ में रफ़्ता रफ़्ता मेहराबों में गिरते रहते हैं। मालिक عَزَّوَجَلَّ उन की तरफ़ नज़रे रहमत फ़रमाते हुए पुकारता है : “ऐ मेरे अहले मा’रिफ़त अहबाब ! तुम्हारे दिल मेरी ज़ात में मशगूल हैं और तुम ने अपने दिलों से मेरे इलावा सब को निकाल दिया है। तुम्हें बशारत हो ! जिस दिन तुम मुझ से मिलोगे तो सुरूर व कुर्ब पाओगे। फिर हज़रते सय्यिदुना जिब्राईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام से फ़रमाता है : ऐ जिब्राईल ! जिन्होंने मेरे कलाम से लज़्ज़त हासिल की, मुझ से राहत चाही मैं उन की ख़ल्त्वों में उन से बाख़बर होता हूँ, उन की गिर्या व ज़ारी और आहो बुका सुनता हूँ, उन के बे चैनी से चेहरा फेरने और कोशिश करने को देखता हूँ। फिर **अल्लाह** तआला उन से पूछता है : येह रोना कैसा है जो मैं सुन रहा हूँ ? येह गिर्या व ज़ारी क्यूँ है जो मैं देख रहा हूँ ? क्या तुम ने कभी सुना है या तुम्हें किसी ने कहा है कि मुहिब्ब अपने महबूबों को आग का अज़ाब देगा ? क्या तुम्हें किसी ने बताया है कि मैं अपने पनाह मांगने वालों को धुत्कार दूंगा ? मेरी इज़्ज़त की क़सम ! मैं तुम्हें ज़रूर जन्नत अता करूंगा। तुम्हारे लिये हिजाब और पर्दे उठा दूंगा और आंसूओं के इवज़ खुशियां और बिशारतें अता करूंगा।

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** ने इरशाद फ़रमाया : “जिस बन्दे की आंखों से ख़ौफ़े खुदा عَزَّوَجَلَّ के सबब आंसू निकल कर चेहरे तक पहुँचते हैं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को आग पर हराम फ़रमा देता है अगर्चे वोह मख़बी के सर के बराबर हों।”

(سنن ابن ماجه، ابواب الزهد، باب الحزن والبكاء، الحديث ٤١٩٧، ص ٢٧٣٢)

हज़रते सय्यिदुना वहब बिन मुनब्बे **رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِ** इरशाद फ़रमाते हैं : “हज़रते सय्यिदुना आदम **عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام** हिन्द के पहाड़ पर सो साल सजदे में रोते रहे यहां तक कि आप के आंसू सरनदीब (सीलोन, श्रीलंका) की वादी में बहने लगे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस वादी में आप **عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام** के आंसूओं से दारचीनी और लौंग वगैरा की फ़स्लें उगाई और उस वादी में मोर पैदा किये। फिर हज़रते सय्यिदुना जिब्राईल **عَلَيْهِ السَّلَام** हाज़िर हुए और अर्ज़ की : अपना सरे अन्वर उठाइये, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप **(عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام)** को बख़्श दिया है।” आप **عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام** ने अपना सर उठाया। फिर ख़ानए का’बा के पास आ कर तवाफ़ किया, अभी तवाफ़ के सात चक्कर मुकम्मल न किये थे कि आप **عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام** आंसूओं में भीग गए।”

(موسوعة للامام ابن ابي الدنيا، كتاب الرقة والبكاء، الحديث ٣٢٤، ج ٣، ص ٢٣٥)

**ऐ गुनहगार इन्सान !** अपने ज़दे अमजद की हालत में ग़ौरो फ़िक्र कर और जो कुछ उन के साथ मुआमला हुवा उसे याद कर तेरे लिये इतना ही काफ़ी होगा। हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद **عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام** फ़रमाते हैं : “हज़रते सय्यिदुना दावूद **عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام** चालीस दिन तक सजदे की हालत में रोते रहे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से हया के सबब कभी (आस्मान की तरफ़) अपना सर न उठाया और इतना रोए कि आप **عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام** के आंसूओं से घास उग आई और आप **عَلَيْهِ السَّلَام** के सर को ढांप लिया। फिर आप **عَلَيْهِ السَّلَام** को आवाज़ दी गई : “ऐ दावूद ! क्या तू भूका है कि तुझे

खाना खिलाया जाए या प्यासा है कि तुझे सेराब किया जाए या बे लिबास है कि तुझे कपड़े पहनाए जाएं या मज़्लूम है कि तेरी मदद की जाए ?” तो आप عَلَيْهِ السَّلَام ने बुलन्द आवाज़ से ऐसी गिर्या व ज़ारी की जिस की तपिश से घास सूख गई। फिर **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने आप عَلَيْهِ السَّلَام की तौबा क़बूल फ़रमाई और लज़िज़ मुआफ़ फ़रमा दी। फिर आप عَلَيْهِ السَّلَام ने अर्ज़ की : “ऐ रब्ब عَزَّ وَجَلَّ ! तू मेरी लज़िज़ मेरी हथेली में ज़ाहिर फ़रमा दे।”

तो आप عَلَيْهِ السَّلَام की लज़िज़ हथेली में लिख दी गई। जब आप عَلَيْهِ السَّلَام अपनी हथेली खाने वगैरा के लिये दराज़ करते तो आप عَلَيْهِ السَّلَام के सामने बैठा हुआ शख्स उस को देख लेता। आप عَلَيْهِ السَّلَام के पास गिलास लाया जाता जिस में दो तिहाई पानी होता। उसे पकड़ने के लिये अपना हाथ दराज़ करते और अपनी लज़िज़ देखते तो गिलास न रखते यहां तक कि वोह आप عَلَيْهِ السَّلَام के आंसूओं से भर जाता। फिर आप عَلَيْهِ السَّلَام ने अर्ज़ की : “या **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ! क्या तू मेरे रोने पर रहम नहीं फ़रमाएगा ?” **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ ने वहय़ फ़रमाई : “ऐ दावूद (عَلَيْهِ السَّلَام) ! तुझे अपनी लज़िज़ याद नहीं और रोना याद है ? तो आप عَلَيْهِ السَّلَام ने अर्ज़ की : “या इलाही عَزَّ وَجَلَّ ! मैं अपनी लज़िज़ कैसे भूल सकता हूं। जब मैं ज़बूर की तिलावत करता था तो पानी का बहाऊं रुक जाता, तेज़ हवा साकिन हो जाती, परन्दे मेरे सर पर साया करते और जंगली जानवर मेरे मेहराब के पास आ जाया करते थे। या इलाही عَزَّ وَجَلَّ ! क्या येह मेरे और तेरे दरमियान दूरी नहीं ?” **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ ने वहय़ फ़रमाई : “ऐ दावूद (عَلَيْهِ السَّلَام) ! वोह इताअत की महबूत थी और येह मा'सियत की वहशत है। ऐ दावूद (عَلَيْهِ السَّلَام) ! आदम (عَلَيْهِ السَّلَام) को मैं ने अपने दस्ते कुदरत से बनाया, उस में अपनी तरफ़ से खास रूह फूँकी, मलाइका से उस को सजदा करवाया, उसे इज़्ज़त का लिबास पहनाया और ताज अता किया। जब मेरी बारगाह में उस ने तन्हाई की शिकायत की तो मैं ने उस से अपनी बन्दी हव्वा का निकाह कर दिया, उसे जन्नत में ठहराया हत्ता कि उस से लज़िज़ हुई तो मैं ने उसे बे सरो सामानी की हालत में जन्नत से उतार दिया कि वोह अपनी समझ से नहीं जानता था कि कहां जाए, वोह चालीस साल तक रोता रहा अगर उस के आंसूओं का वज़ किया जाए तो तमाम मख़्लूक के आंसूओं के बराबर हो जाए।”

(الموسوعة للإمام ابن أبي الدنيا، كتاب الرقة والبكاء، الحديث ٣٨٥، ج ٣، ص ٢٤٧، مختصراً)

हज़रते सय्यिदुना फ़तह मूसिली खून के आंसू रोया करते थे जब आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَلِي खून के आंसू रोया करते थे जब आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَلِي का इन्तिक़ाल हुवा तो किसी ने ख़्वाब में देख कर अर्ज़ की : “**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ! आप के साथ क्या मुआमला फ़रमाया ?” तो आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَلِي ने जवाब दिया : “**अल्लाह** तआला ने मुझे अपनी बारगाह में खड़ा कर के पूछा : “ऐ फ़तह ! तेरे रोने की वजह क्या थी ? मैं ने अर्ज़ की : “या रब्ब عَزَّ وَجَلَّ ! तेरे वाजिब हक़ से पीछे रह जाने पर।” तो उस ने फिर इस्तिफ़सार फ़रमाया : “तू खून के आंसू क्यूं रोता था ?” मैं ने अर्ज़ की : “या रब्ब عَزَّ وَجَلَّ ! अपने आंसूओं पर ख़ौफ़ था कि येह सहीह नहीं।” **अल्लाह** तआला ने फिर इस्तिफ़सार फ़रमाया : “इस से तेरा क्या



इरादा था ?” मैं ने अर्ज की : “ऐ मेरे मौला **عَزَّوَجَلَّ** ! इस से मेरा मक्सद सिर्फ तेरा दीदार था कि तू मुझे अपना जल्वा दिखा दे, इस के बा'द तेरी मरजी जो भी मुआमला फरमाए ।” तो **अब्बाह** **عَزَّوَجَلَّ** ने इरशाद फरमाया : “मुझे अपनी इज्जत व जलाल की कसम ! तेरे मुहाफिज फ़िरिश्ते चालीस साल से मेरी बारगाह में तेरा नाम आ'माल ला रहे हैं जिस में एक गुनाह भी नहीं । पस मैं जरूर तुझे इज्जत का लिबास पहनाऊंगा और अपने दीदार से तेरी आंखें ठंडी करूंगा ।”

खुदा **عَزَّوَجَلَّ** की कसम ! यह रब्बे मजीद **عَزَّوَجَلَّ** के खास और पसन्दीदा बन्दे हैं । मक्सूद की तरफ सबक़्त लेने वाले और रब्ब **عَزَّوَجَلَّ** के नज़्दीक पाको साफ़ हैं । ऐ धुत्कारे हुए बदबख़्त शख्स ! तेरा क्या बनेगा कि तू मा'बूदे हकीक़ी **عَزَّوَجَلَّ** की नाफ़रमानी करने की वजह से इन से जुदा है । **अब्बाह** **عَزَّوَجَلَّ** की कसम ! तुझे अपने नफ़्स पर गिर्या व ज़ारी करनी चाहिये और उस शख्स की तरह आहो बुका करनी चाहिये जिसे रब्बे करीम **عَزَّوَجَلَّ** की बारगाह से धुत्कार कर दूर कर दिया गया हो ।

وَصَلَّى اللّٰهُ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِهِ وَصَحْبِهِ وَسَلَّمَ تَسْلِيمًا كَثِيرًا



## चार नसीहतें

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم** इरशाद फ़रमाते हैं :

“मैं कोहे लुबनान में कई औलियाए किराम **رَحْمَتُهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی** की सोहबत में रहा उन में से हर एक ने मुझे यही वसियत की कि जब लोगों में जाओ तो इन चार बातों की नसीहत करना : (1) जो **पेट भर कर** खाएगा उसे इबादत की लज़्ज़त नसीब नहीं होगी । (2) जो **ज़ियादा सोएगा** उस की उम्र में बरकत न होगी । (3) जो सिर्फ़ **लोगों की खुश्नूदी** चाहे वोह रिज़ाए इलाही **عَزَّوَجَلَّ** से मायूस हो जाएगा । (4) जो ग़ीबत और **फुज़ूल गोई** ज़ियादा करेगा वोह दीने इस्लाम पर नहीं मरेगा ।”

(मिन्हाजुल आबिदीन स. 107)

बयान 11: **फ़ुक़राह किराम** رِضْوَانُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ के फ़नाइल  
हम्दे बारी तआला :

सब खूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने अपनी मख़्लूक में से औलियाए किराम رَحْمَهُمُ اللَّهُ تَعَالَى को पसन्द फ़रमाया पस वोह उस की मुलाकात के मुश्ताक हैं। उस की महब्बत उन के दिलों में महफूज है। उन के चेहरे तेरे सामने उन के दिलों के अन्वार जाहिर करेंगे। वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नूरे जमाल से मा'रिफ़त हासिल करते हैं। उन की सांसों की कस्तूरी से पूरी काइनात मुअत्तर है। वोह गोशा नशीनी के खैमों में रिहाइश पज़ीर हैं। सहरी की मीठी हवा उन की खुशबू को उठा ले जाती है और तमाम मख़्लूक उस मुअत्तर हवा में सांस लेती है। अगर बादशाह उन की मए इश्क का एक क़तरा चख लें तो दुनिया को ठुकरा दें। जब वोह अपनी नगमगी आवाज़ में रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ का कलाम पढ़ते हैं तो तू उन्हें बेदार, मदहोश और गाईबो हाज़िर की तरह पाएगा। जब उन का इश्क जोश मारता है तो वोह पहाड़ों में मारे मारे फिरते हैं। अगर तू उन में से किसी को देखेगा तो दीवाना समझेगा बिला शुबा वोह अपने मौला عَزَّوَجَلَّ की महब्बत में गिरवीदा हैं। पस पहाड़ ज़मीन की मैखें और वोह पहाड़ों की मैखें हैं। अगर वोह न हों तो लोगों की नाफ़रमानियों की वजह से ज़मीन हिलने लगे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ज़मीन को उन से ख़ाली नहीं रखा और न ही नेक लोग हम से अलग होते हैं। पहाड़ उन पर सलामती भेजते हैं। वहशी जानवर उन से मानूस होते हैं। चोपाए उन से बरकत हासिल करते, दरख़्त उन का कुर्ब पाते हैं। नसीमे सहर उन से मुलाकात करती है। उन की सांसें शयातीन को जला देती हैं। शैतान उन की सजदागाहों की तरफ़ नहीं जाता और न ही उन के क़रीब जाता है। अहले दुनिया उन्हें दुनिया के ख़ज़ाने पेश करते हैं मगर वोह उन की तरफ़ आंख उठा कर भी नहीं देखते। जिन पहाड़ों पर उन के क़दम पड़ते हैं वोह दीगर पहाड़ों पर फ़ख़र करते हैं। उन के क़दमों की खाक आंखों का सुर्मा है।

जब फ़िरिश्ते उन के आ'माल नामे ले कर आसमान की तरफ़ बुलन्द होते हैं तो उन की खुशबू से आस्मान मुअत्तर हो जाते हैं, फ़िरिश्ते उन को देख कर मुतअज्जिब होते हैं और उन के असरारे मा'रिफ़त पर मुक़र्रब फ़िरिश्ते और ख़ास इन्सान भी आगाह नहीं होते। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन से इरशाद फ़रमाता है : “तुम्हारे पास मेरी महब्बत के सिवा कुछ नहीं, मैं हबीब हूं और तुम मुझ से महब्बत करते हो।” जब वोह दुनिया से तशरीफ़ ले जाते हैं तो अहले दुनिया उन की जुदाई पर ग़मगीन होते हैं लेकिन जन्नत उन के इश्तियाक़ में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से अर्ज़ करती है, “तेरे महबूब बन्दे कब मुझ में जल्वा अफ़रोज़ होंगे।” वोह जन्नत के महल्लात में रहेंगे। उस के बरतनों में मशरूब पिएंगे। उस की हूरों से नफ़ा़ हासिल करेंगे। उस के बागा़त में सैर करेंगे। उस के बालाख़ानों में रहेंगे। उम्दा क़िस्म की सुवारियों पर सुवार होंगे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के कलाम को सुनेंगे और उस के दीदार से

मुशरफ़ होंगे। येह उन हस्तियों का मक़ामो मर्तबा है। ऐ सुस्ती और ग़फ़लत बरतने वालो ! तुम ने क्या ज़ख़ीरा किया ? **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ का फ़रमाने अज़ीम है :

(يُمِثِّلُ هَذَا فَلْيَعْمَلِ الْعَمَلُونَ) (٣٢: الصّٰفّٰت: ٦١)  
तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐसी ही बात के लिये कामियों को काम करना चाहिये।

सरकारे वाला तबार, हम बेकसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार, बिइज्ने परवर दगार **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** का फ़रमाने आलीशान है :  
“तीन चीज़ें अफ़ज़ल हैं : (1).....फ़क्र (2).....इल्म और (3).....जोहद।”

**फ़क्र क्या है ?**

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से मरवी है कि एक शख़्स नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अर्ज गुज़ार हुवा : “या रसूलल्लाह **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** फ़क्र क्या है ?” आप **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** ने इरशाद फ़रमाया : “**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाना है।” उस ने दोबारा अर्ज की : “या रसूलल्लाह **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** फ़क्र क्या है ?” तो आप **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** ने इरशाद फ़रमाया : “**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की अताओं में से एक अता है।” उस ने तीसरी बार फिर अर्ज की : “या रसूलल्लाह **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** फ़क्र क्या है ?” तो आप **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** ने इरशाद फ़रमाया : “येह वोह चीज़ है जो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ अपने नबी, रसूल और मुअज़्ज़ज व मुकर्रम बन्दे के सिवा किसी को अता नहीं फ़रमाता।”

**अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام और फ़ुकरा की तख़लीक जन्नत की मिट्टी से हुई :**

हुज़ूर सय्यिदुल अम्बिया व मुर्सलीन, जनाबे रहमतुल्लिल आलमीन **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** का फ़रमाने ज़ीशान है : “फ़कीर वोह है जिस की भूक और मरज़ का लोगों को इल्म न हो। **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने मख़्लूक को ज़मीन की मिट्टी से और अम्बिया व फ़ुकरा को जन्नत की मिट्टी से पैदा फ़रमाया। तो जो **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ की अमान चाहे उसे चाहिये कि फ़ुकरा की इज़्ज़त करे।”

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरोबर **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** का फ़रमाने हक़ीक़त बयान है : “जन्नत के आठ दरवाज़े हैं, उन में से सात फ़ुकरा के लिये और एक अग्निना के लिये है और जहन्नम के सात दरवाज़े हैं, उन में से छे फ़ुकरा पर हराम और अग्निना के लिये हलाल हैं और एक दरवाज़ा फ़ुकरा के लिये है।”

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से मरवी है कि हुज़ूर सय्यिदुल मुबल्लिगीन, जनाबे रहमतुल्लिल आलमीन **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** ने इरशाद फ़रमाया : “**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के नज़्दीक सब से पसन्दीदा लोग फ़ुकरा हैं। क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ को सब से ज़ियादा महबूब अम्बियाए किराम हैं और उस ने उन्हें फ़क्र में मुब्तला फ़रमाया।”



हज़रते सय्यिदुना अबू सईद खुदरी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ रिवायत फ़रमाते हैं : “ऐ लोगो ! तुम्हें फ़ाका व तंगदस्ती इस बात पर न उभाये कि तुम हराम तरीक़े पर रिज़्क़ तलब करने लगे। बेशक मैं ने शहनशाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिषाल, बीबी आमेना के लाल صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को येह दुआ फ़रमाते हुए सुना : “عَزَّ وَجَلَّ اللَّهُمَّ تَوَفَّنِي فَقِيرًا وَلَا تَتَوَفَّنِي غَنِيًّا وَاحْشُرْنِي فِي زُمْرَةِ الْمَسْكِينِ يا'नी ऐ **اَللّٰهُ** ! मुझे फ़कीरी में मौत अता फ़रमा, अमीरी में मौत न दे और मुझे मसाकीन की जमाअत में उठा।”

(شعب الايمان للبيهقي، باب في قبض اليد عن الاموال المحرمة، الحديث ٥٤٩٩، ج ٤، ص ٣٨٩)

**उ-लमा हुजूर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के वारिष और फुकरा दोस्त हैं :**

सरकारे वाला तबार, हम बेकसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख्तार, बिइज़े परवर दगार صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जीशान है : “**اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ इस उम्मत के उ-लमा और फुकरा की तरफ़ नज़रे रहमत फ़रमाता है। उ-लमा मेरे वारिष और फुकरा मेरे दोस्त हैं।”

(فردوس الاخبار للديلمي، باب الطاء، الحديث ٣٧٥١، ج ٢، ص ٤٧، مختصر)

हज़रते सय्यिदुना शफ़ीक़ ज़ाहिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَاحِد से मरवी है कि “**फुकरा ने तीन चीज़ें इख़्तियार कीं :** (1).....राहते नफ़्स (2).....दिल की फ़राग़त और (3).....हल्का हिसाब। और अग़िनया ने भी तीन चीज़ें इख़्तियार कीं (1).....नफ़्स की थकावट (2).....दिल की मशग़ूलियत और (3).....हिसाब की सख़्ती।”

(احياء علوم الدين، كتاب الفقر والزهّد، بيان فضيلة الفقر على الغنى، ج ٤، ص ٢٥١)

एक बुजुर्ग عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى इरशाद फ़रमाते हैं : फुकरा की फ़ज़ीलत पर **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ का येह फ़रमाने आलीशान दलील है, चुनान्वे **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

(1) **﴿١﴾ تَرْجَمَ عَ كَنْزُ لَ إِمَان : और नमाज़ काइम रखो और ज़कात दो।**

या'नी नमाज़ मेरे लिये काइम करो और ज़कात फुकरा को दो। यहां **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ ने अपने हक़ के साथ फुकरा का हक़ मिला दिया।

**फ़कीर, ग़नी के लिये तबीब, धोबी, कासिद और निगहबान है :**

मन्कूल है कि फ़कीर ग़नी के लिये तबीब, धोबी, कासिद और निगहबान है। तबीब इस लिये कि जब ग़नी बीमार होता है तो फ़कीर पर सदका करता है और जब फ़कीर उस के लिये दुआ करता है तो वोह मरज़ से बरी हो जाता है। धोबी इस लिये कि ग़नी जब फ़कीर पर सदका करता है तो येह उस के लिये दुआ करता है तो ग़नी गुनाहों से पाक हो जाता है और उस का माल भी साफ़ हो

①....मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़े आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ज़िल सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَاحِد तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं : “इस आयत में नमाज़ व ज़कात की फ़र्ज़ियत का बयान है और इस तरफ़ भी इशारा है कि नमाज़ों को उन के हुक्क की रिआयत और अरकान की हिफ़ाज़त के साथ अदा करो। **मस्अला :** जमाअत की तरगीब भी है, हदीष शरीफ़ में है : जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ना तन्हा पढ़ने से सत्ताईस दर्जा ज़ियादा फ़ज़ीलत रखता है।”

जाता है। कासिद इस लिये कि ग़नी जब फ़कीर पर अपने मर्हूम वालिदैन या अक़रबा की तरफ़ से सदका करता है और इस का षवाब मुर्दों को पहुंचता है तो यूँ फ़कीर उस का कासिद बन जाता है। निगहबान इस लिये कि ग़नी जब सदका करता है और फ़कीर उस के लिये दुआ करता है तो उस की दुआ से ग़नी का माल महफूज़ हो जाता है।

**अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का वली क़ब्र से गाइब हो गया :**

जब हज़रते सय्यिदुना षाबित बुनानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ का विसाल हुवा और उन्हें दफ़न किया गया तो ईंटें बराबर करते हुए एक ईंट गिर गई। हज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन हुसैन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि मैं ने ईंट निकालने के लिये क़ब्र में हाथ डाला तो किसी को न पाया। मैं बड़ा हैरान हुवा लेकिन किसी को ये बात न बताई और इसी सोच में हज़रते सय्यिदुना षाबित बुनानी रَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के घर आ गया। मैं ने आप रَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की बेटी से ता'ज़ियत की और उस से दर्याफ़्त किया : “वोह कौन सी दुआ या बात अक़षर कहा करते थे।” तो उन की बेटी ने जवाब दिया : “मैं उन्हें अक़षर रोते और येह आयते करीमा तिलावत करते हुए देखती थी : “ رَبِّ لَا تَذَرْنِي فَرْدًا وَأَنْتَ خَيْرُ الْوَارِثِينَ (پ ۱۷، الانبیاء: ۸۹) ”

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ मेरे रब्ब ! मुझे अकेला न छोड़ और तू सब से बेहतर वारिष।” तो मैं ने कहा : यकीनन **अल्लाह عَزَّوَجَلَّ** ने हज़रते सय्यिदुना षाबित رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की दुआ क़बूल फ़रमा ली है।

**नौजवान बुजुर्ग :**

एक बुजुर्ग़ फ़रमाते हैं कि मैं ने एक पहाड़ के दामन में परेशान हाल नौजवान देखा जिस के आंसू रुख़्सारों पर बह रहे थे। मैं ने उस से पूछा : “**अल्लाह عَزَّوَجَلَّ** तुम पर रहम फ़रमाए, तुम कौन हो ?” उस ने जवाब दिया : “मैं अपने आका से भागा हुवा एक गुलाम हूँ।” तो मैं ने उस से कहा : “वापस लौट जा और मुआफ़ी मांग ले।” तो उस ने कहा : “मा'ज़िरत के लिये कोई दलील होनी चाहिये एक ना फ़रमान कौन सा उज़्र पेश करे ?” तो मैं ने उसे मश्वरा दिया : “ऐसे शख़्स से राबिता क़ाइम कर जो उस के हां तेरी सिफ़ारिश करे।” तो वोह कहने लगा : “सब सिफ़ारिश करने वाले उस से डरते हैं।” उस की ये बात सुन कर मैं ने उस से पूछा : “वोह कौन है ?” तो उस ने बताया कि “कि वोह मेरा मौला عَزَّوَجَلَّ है जिस ने बचपन में मुझे पाला लेकिन जवान हो कर मैं ने उस की ना फ़रमानी की। मुझे उस से शर्मिन्दगी होती है कि मैं उस से ख़ूबसूरत शक़ल और बुरे फ़े'ल से मिलूंगा।” फिर उस ने एक चीख़ मारी और उस के साथ ही उस की रूढ़ क़फ़से उन्सुरी से परवाज़ कर गई। उसी वक़्त एक बुढ़ी औरत कहीं से आ पहुंची और कहने लगी : “इस ग़म और मुसीबत के मारे हुए इन्सान की मरने पर किस ने मदद की ?” मैं ने उस से अज़र्ज की : “इस की तजहीज़ो तक्फ़ीन पर मैं आप की मदद करूंगा।” तो वोह बोली : “इस को अपने मारने वाले के सामने इसी हालत में छोड़ दो, मुमकिन है कि इस हालत में देख कर वोह उस पर रहम फ़रमा दे।”

## हंसने वाला मुख़्लिस नौजवान :

हज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ बिन हुसैन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं कि मैं हज़रते सय्यिदुना जुन्नून मिसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي की बारगाह में हाज़िर था और आप इर्द गिर्द बैठे हुए लोगों को बयान फ़रमा रहे थे। सब लोग रो रहे थे मगर एक नौजवान हंस रहा था। हज़रते सय्यिदुना जुन्नून मिसरी عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي ने उस से पूछा : “ऐ नौजवान ! तुझे क्या है ?” लोग रो रहे और तुम हंस रहे हो ?” तो उस ने जवाब दिया : “लोग या तो जहन्म के ख़ौफ़ से इबादत करते हैं और नजात को ही अपना अज़्र समझते हैं या जन्नत में जाने के लिये इबादत करते हैं ताकि उस के बाग़ों में रहें और उस की नहरों से पियें। लेकिन मेरा ठिकाना न तो जन्नत है और न ही जहन्म। मैं अपनी महबूबत का बदला नहीं चाहता।” हज़रते सय्यिदुना जुन्नून मिसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي ने दोबारा उस से पूछा : “अगर उस ने तुम्हें धुत्कार दिया तो क्या करोगे ?” तो उस ने चन्द अशआर सुनाए जिन का मफ़हूम येह है : “जब मैं ने महबूबत के बावुजूद विसाल हासिल न किया तो दोज़ख़ में ठिकाना बना लूंगा। फिर जब मुझे सुब्हो शाम अज़ाब होगा तो मेरी चीख़ो पुकार से अहले दोज़ख़ भी तंग आ जाएंगे। जब मैं विसाले यार पाने की कोई राह न पा सका तो गुनहगारों की टोलियां भी मुझ पर गिर्या व ज़ारी करेंगी। ऐ मेरे मालिक عَزَّوَجَلَّ ! चाहे तू मुझे अज़ाब में मुब्तला कर दे या आज़ाद कर दे, मुझे तेरी मर्जी क़बूल है। अगर मैं अपने दा'वए महबूबत में सच्चा हूं तो महज़ अपने करम से मेरी हालत को तब्दील कर दे और अगर मेरा दा'वए महबूबत झूठा है तो मुझे इस की सज़ा में तवील अज़ाब से दो चार कर दे।” जब वोह चुप हुवा तो एक ग़ैबी आवाज़ आई : “ऐ जुन्नून ! मुख़्लिसीन की अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ से ऐसी महबूबत होती है कि वोह खुशहाली व तंगदस्ती में भी उस से महबूबत करते, ने'मतों और मुसीबतों पर भी उस का शुक्र अदा करते हैं।”

नेक लोग इस लिये सआदत मन्द हो गए क्यूंकि उन्होंने ने दुन्या को छोड़ कर अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ को मक्सूद बनाया जब उन्होंने ने इस मक्सद में रग़बत इख़्तियार की तो इन्हें उस तक पहुंचने से बीवी बच्चों की महबूबत न रोक सकी, उन्होंने ने इस राह में आने वाली मशक्क़त को शहद से ज़ियादा मीठा पाया, उन के लिये शहद भी उन तकालीफ़ जैसा मीठा नहीं, वोह हमेशा अपने महबूब की महबूबत में मसाइब झेलते रहे फिर भी कुर्ब की त़लब से पीछे न हटे, और उन की अज़मत का येह आलम है कि जब वोह किसी शहर से कूच करते हैं तो वोह शहर भी उन के फ़िराक़ में आंसू बहाता है।

## एक नौजवान की मुनाजात :

हज़रते सय्यिदुना जुन्नून मिसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं कि मैं एक पहाड़ पर चल रहा था। अचानक मुझे किसी के रोने और फ़रियाद करने की आवाज़ सुनाई दी मैं उस आवाज़ के पीछे चल पड़ा। येह आवाज़ मोटे कपड़ों में मल्बूस एक नौजवान की थी, जो ज़मीन पर राख बिछा कर



उस पर लोट पोट हो कर यूँ मुनाजात कर रहा था : “ऐ मेरे मा'बूद और मेरे मालिक ! तेरी इज़्ज़त व जलाल की क़सम ! मैं ने हरगिज़ तेरी मुख़ालफ़त करते हुए तेरी नाफ़रमानी न की बल्कि उस वक़्त मैं तुझ से गा़फ़िल था और मैं तेरे अज़ाब को हल्का भी नहीं समझता । मेरे नफ़्स की सरकशी के सबब शकावत व बदबख़्ती मुझ पर ग़ालिब आ गई । तू ने मेरे गुनाहों पर पर्दा डाला तो मैं धोके में पड़ गया और अपनी जहालत और बे वकूफ़ी के सबब तेरी ना फ़रमानी की ।” अब मुझे तेरे अज़ाब से कौन बचाएगा ? जब तू अपनी रस्सी मुझ से क़त्अ कर देगा और मुझे अपनी बारगाह से दूर कर देगा तो मैं किस की रस्सी थामूंगा ? हाए अफ़सोस ! तेरी बारगाह में खड़ा होना पड़ेगा, हाए नदामत ! तेरी बारगाह में पेशी होगी, मैं ने कितनी बार तौबा की लेकिन फिर गुनाहों की तरफ़ लौट आया, कितनी बार अहद किया फिर अहद तोड़ दिया ।”

कर के तौबा फिर गुनाह करता है जो

मैं वोही बदकार हूँ कर दे करम !

وَصَلَّى اللّٰهُ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِهِ وَصَحْبِهِ وَسَلَّم تَسْلِيمًا كَثِيرًا



दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तर्बियत के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए मदनी इन्आमात का रिसाला पुर कर के हर मदनी (इस्लामी) माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के (दा'वते इस्लामी के) जिम्मादार को जम्अ करवाने का मा'मूल बना लीजिये إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा ।

**बयान 12 :** **बा'ब अलफे आलिहीन** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى **के बाकि आब**  
( इस बाब में हज़रते सय्यिदुना शोऐब हरीफीश رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى ने हज़रते सय्यिदुना  
शैख अज़्ज़ुहीन मक़दसी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَلِيِّ का कलाम नक्ल फ़रमाया है । )

**हम्दे बारी तआला :**

सब खूबियां **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ के लिये हैं जो हक़ को ज़ाहिर फ़रमाने वाला है, अपने वा'दों को पूरा करने वाला है। बन्दे की सआदत व शक़ावत उसी के दस्ते कुदरत में है, गुनाहों को मिटाने वाला, पर्दापोशी फ़रमाने वाला, दिलों की प्यास बुझाने वाला, अपने इश्क़ की बीमारी लगाने वाला और शिफ़ा देने वाला है, गुमों को दूर करने वाला है, बादल को पैदा करने वाला और उसे भेजने वाला है। बिजली को चमकाने वाला और उस से रोशनी ज़ाहिर करने वाला है, बिजली को गरज की आवाज़ देने वाला है, दरख़्तों को पत्ते देने वाला और उन्हें परवान चढ़ाने वाला है, कलियों को हुस्न और ख़ूबसूरती देने वाला है, फलों को कड़वा और मीठा बनाने वाला है, मां के पेट में बच्चे की तस्वीर बनाने वाला और उसे गिज़ा देने वाला है, हक़ को षाबित करने वाला और उसे बाकी रखने वाला है, बातिल को ग़लत षाबित करने वाला मिटाने वाला है। उस ने मख़्लूक को अपनी पहचान कराई तो उस के बन्दे हैरानो परेशान हो गए और उस की मा'रिफ़त की राहें दुश्वार हो गईं और सालिकीन ने मैदानों में बिस्तर जमा दिये और फिर अक्लों की तरफ़ माइल हुए तो अक्लों ने जवाब दिया : हम तो येह भी नहीं जानतें कि हम कहां से आए, तो सालिकीन ने फ़िक्लों की तरफ़ अपना क़ासिद भेजा मगर वोह ऐसी जगह भटक गया जहां हर समझदार भी भटक जाता है। फिर उन्होंने ने अक्लों के साथ बसीरतों के चराग़ रोशन किये और नूरे ईमान के साथ रहनुमाई हासिल की, जब भी चराग़ उन के लिये रोशन होते हैं तो वोह चलने लगते हैं। जब वोह इरफ़ान की मन्ज़िल तक पहुंचे तो **अब्बाह** तआला की बड़ाई उन के लिये ग़ैर मानूस हो गई और उस की किब्रियाई उन से छुप गई। फिर वोह दिलों की तरफ़ पलटे तो दिलों ने कहा : हम तो हर ऐब से मुनज़्ज़ा व मुबर्रा عَزَّ وَجَلَّ के घर हैं, और घर वाला ही उस में मौजूद शै के मुतअल्लिक़ ज़ियादा जानता है।

फिर उन्होंने ने अस्माए इलाहिyya عَزَّ وَجَلَّ से रहनुमाई चाही तो अस्मा ने जवाब दिया : हम तो उस को नाम देने की ताक़त नहीं रखते फिर वोह सिफ़ात की तरफ़ मुतवज्जेह हुए तो सिफ़ात ने भी येही कहा कि हम उसे ज़ाहिर करने की ताक़त नहीं रखतें फिर वोह कलिमात की तरफ़ बढ़े तो कलिमात ने कहा : हम तो सिर्फ़ कलिमात हैं जो वहुय किये जाते हैं। इस के बा'द उन्होंने ने अर्श से इल्तिमास करते हुए अर्ज की : “क्या तू अपने कुर्ब के सबब उस की ज़ात तक पहुंचा सकता है या उस के क़रीब कर सकता है ?” तो मदहोशी में डूबे हुए और हैरत में फ़ना अर्श ने उन्हें पुकार कर कहा : “मैं उस का इहाता नहीं कर सकता कि उस की पहचान हासिल कर सकूं, और मैं उस को

उठाए हुए नहीं कि उस के मुतअल्लिक कुछ बता सकूं, मैं उस के साथ मिला हुवा भी नहीं कि मेरा मक़ाम उस से क़रीब हो और न उस से जुदा हूं कि मेरा मक़ाम उस से दूर हो। यकीनन तुम ने मुझे से ऐसे अम्र का सुवाल किया है जो मैं नहीं जान सकता और तुम ने ऐसे राज़ से पर्दा उठाया है कि मैं भी हमेशा उस की तलाश और सुराग़ में रहा मगर मुझे हैरत और भटकने के सिवा कुछ न मिला।" येह सुन कर सालिकीन कहने लगे : "अगर तू भी उस की मा'रिफ़त हासिल न कर सका तो उस बुलन्द व बरतर ज़ात से तेरे कुर्ब का क्या फ़ाइदा ! हालांकि लोगों ने तो तुझे बुलन्द रुत्बा क़रार दिया है?"

तो अर्श बोला : "मेरा **अव्वल** **عَزَّوَجَلَّ** से ऐसा ही कुर्ब है जैसा सांस का अपनी नालियों से है और मेरी उस से ऐसी ही दूरी है जैसी तीर चलाने वाले से तीर की होती है, मैं उस की बारगाह में ऐसा ही हकीर हूं जैसे गुलाम अपने मालिकों के सामने होता है, मुझे भी उस का इतना ही इश्तियाक़ है जितना अशिक़ को अपने महबूब से मुलाक़ात के अय्याम का शौक़ होता है।" उन्होंने ने दोबारा कहा : "फिर तू रब्ब **عَزَّوَجَلَّ** के मुतअल्लिक क्या कहता है?" तो अर्श कहने लगा : मैं वोही कहता हूं जो उस की तलाश में सर गर्दा और अपनी उम्मीदें न पाने वाला कहता है।" सालिकीन ने कहा : "जब तू उस की ता'रीफ़ करे तो हर ऐब से उस की पाकी बयान कर और किसी शै को उस के मुशाबे क़रार देने से बच और यूं कह : वोह ऐसा अव्वल है कि कोई अव्वल उस का षानी नहीं और ऐसा आख़िर है कि कोई आख़िर उस के क़रीब नहीं, ऐसा ज़ाहिर है कि कोई ज़ाहिर उस के मुशाबे नहीं, ऐसा बातिन है कि कोई बातिन उस की बराबरी नहीं कर सकता, ऐसा दूर है कि कोई मसाफ़त उस जितनी नहीं हो सकती, ऐसा क़रीब है कि तू जब चाहे उस से मुलाक़ात कर ले, ऐसा वाहिद है कि कोई वाहिद उस के मुक़ाबिल नहीं, वोह ऐसा यक्ता है जिस की कोई इन्तिहा नहीं कि उस की हद ख़त्म हो जाए, अगर तू उस से ख़ालिस दोस्ती रखे तो वोह तुझे अपने पसन्दीदा जाम से पाको साफ़ शरबत पिलाएगा और अगर उस की महबूबत का जाम पी लिया जाए तो पीने वाला दूसरों को पिलाने वाला बन जाता है।

या इलाही ! मेरा मक़सूद बस तू ही तू है, और तारीकियों में मेरे लिये नूर और रोशनी है। या इलाही ! तेरे तो मेरे इलावा भी बहुत बन्दे हैं मगर मेरे लिये तेरे सिवा कोई नहीं, मैं ने जहालत के सबब तेरी ना फ़रमानी की और बुरे अफ़आल के बा वुजूद तुझ से दुआ की फिर भी तू ने अपने फ़ज़्लो करम से मेरी दुआ क़बूल फ़रमाई और मैं ने तेरी तरफ़ रुजूअ़ किया तो तू ने मेरी उम्मीद पूरी कर दी, मैं ने तेरी बारगाह में अपने दिल की बीमारी का शिकवा किया तो तू ने मेरी तकलीफ़ ज़ाइल फ़रमा दी और मुझे फ़ौरन शिफ़ा अता फ़रमा दी, कितने ही ख़तरात और मुश्किलात ने मुझे घेरा मगर तू ने मेरी भरपूर इआनत की और दुश्मनों के ख़िलाफ़ मेरी मदद फ़रमाई। ऐ मुश्किलात और तकालीफ़ में मेरी उम्मीदगाह ! तेरे लिये ही सब ता'रीफ़ें हैं।

**पूरा शहर मुसलमान हो गया :**

हज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي** फ़रमाते हैं कि "मैं ने एक साल हज़ का अज़म किया। जब ऊंटनी पर सुवार हुवा तो उस का रुख़ का'बा की तरफ़ ही था लेकिन जब मैं ने



उस की गरदन पर हाथ मारा तो वोह कुस्तुनतुन्या (इस्तम्बूल) की तरफ मुड़ गई। मैं ने कई मरतबा उस का रुख मोड़ा मगर वोह क़िब्ला की तरफ न मुड़ी, मैं ने अपने दिल में कहा : “ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इस में ज़रूर कोई राज़ पोशीदा है।” मैं ने उस की मर्जी के मुताबिक उसे जाने दिया और **अल्लाह** तआला की बारगाह में अर्ज़ की : “ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! अगर तू मुझे अपने घर न जाने दे तो मेरे पास उस का कोई हल नहीं, तमाम मुआमला तेरे ही पास है।” फ़रमाते हैं कि ऊंटनी तेज़ी से चलती हुई कुस्तुनतुन्या में दाख़िल हो गई। जब मैं शहर में दाख़िल हुवा तो देखा कि लोग फ़ित्ना व फ़साद में मुब्तला हैं। मैं ने एक शख्स से दर्याफ़्त किया कि इस का सबब क्या है ? तो उस ने बताया : “बादशाह की बेटी की अक्ल जाइल हो गई है और लोग कोई ऐसा तबीब तलाश कर रहे हैं जो उस का इलाज कर सके।”

मैं ने दिल में कहा : “मेरे रब्ब عَزَّوَجَلَّ की इज़्ज़त की क़सम ! इसी काम के लिये मेरे रब्ब عَزَّوَجَلَّ ने मुझे इस साल हज़ से रोक दिया है।” मैं ने उन लोगों को बताया : “मैं तबीब हूं।” उन्होंने ने पूछा : “क्या आप इलाज करेंगे ?” मैं ने कहा : “हां ! اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ !” लोगों ने मेरा हाथ पकड़ा और मुझे बादशाह के पास ले गए। उस ने अपनी बेटी का इलाज मेरे ज़िम्मे लगा दिया। मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मदद तलब की और कमरे में दाख़िल हो गया, मैं ने वहां लोहे की खनक सुनी और कोई कहने वाला कह रहा था : “ऐ जुनैद (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ) ! ऊंटनी ने तुझे हमारी तरफ़ लाने की कितनी कोशिश की जब कि तू उसे का'बए मुशरफ़ा की तरफ़ फैरता रहा।” इस कलाम से मेरी अक्ल खो गई फिर मैं अन्दर दाख़िल हुवा तो ऐसी लड़की देखी कि देखने वालों ने उस से ज़ियादा हसीन लड़की न देखी होगी, वोह ज़न्जीरों में जकड़ी हुई थी, मैं ने उस से पूछा : “येह कैसी हालत है ?” तो उस ने जवाब दिया : “ऐ दिलों के तबीब ! मुझे कोई ऐसा काम बताइये जिस से मैं ग़म से नजात पा जाऊं।” “मैं ने उसे कहा : (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَآلِهٖ وَسَلَّم) : पढ़।” उस ने बुलन्द आवाज़ से कलिमा पढ़ा तो हथकड़ियां और बेड़ियां खुल गईं। जब उस के बाप ने देखा तो कहने लगा : “आप कितने अच्छे तबीब हैं और आप की दवा कितनी अच्छी है। मेरा इलाज भी इसी दवा से कर दीजिये जिस से इस का इलाज किया है।”

तो मैं ने कहा : “तुम भी पढ़ो : (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَآلِهٖ وَسَلَّم) फिर उस की मां आई, वोह भी देख कर बहुत खुश हुई और मुसलमान हो गई। फिर उस शहर में रहने वाले सब लोग मुसलमान हो गए। इस पर मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की हम्द की और रवानगी का इरादा किया तो वोह लड़की कहने लगी : “ऐ जुनैद (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ) ! जाने की जल्दी न कीजिये, मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अर्ज़ की है कि आप की मौजूदगी में मेरा इन्तिकाल हो, आप मेरी नमाज़े जनाज़ा पढ़ाएं और दफ़न करें।” फिर उस ने कलिमाए शहादत पढ़ कर मौत का जाम नोश कर लिया।

## औलियाउ किराम के लिये ज़मीन सिमट जाती है :

हज़रते सय्यिदुना अब्दुर्रहमान बिन जा'फ़र رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : “मैं बसरा में पांचों नमाज़ें मक़ामी मस्जिद में पढ़ा करता था जो “मस्जिदुल ख़श्शाबीन या'नी लकड़ियां बेचने वालों की मस्जिद” के नाम से मा'रूफ़ थी और उस के इमाम मग़रिब से तअल्लुक़ रखते थे, जिन को अबू सईद कहा जाता था जो नेकी के कामों में मशहूर थे और मस्जिद में नमाज़े फ़ज्र के बा'द बयान किया करते थे। एक साल मैं हज़ के लिये रवाना हुवा। वोह शदीद गरमी का साल था। आम तौर पर रात को मैं अपने रुफ़का से आगे निकल जाता और सो जाता फिर मेरे दोस्त मुझे आ मिलते, एक रात इसी तरह मैं रास्ते से हट कर सोया हुवा था कि क़ाफ़िला आगे निकल गया और मेरे दोस्तों को मेरी ख़बर तक न हुई, मैं सोया रहा यहां तक कि सूरज तुलूअ हो गया। जब बेदार हुवा तो मैं नहीं जानता था कि येह कौन सा रास्ता है, मैं ने अपने रब्ब عَزَّ وَجَلَّ से अर्ज़ की : “ऐ मेरे मौला ! तू मुझे कहां ले आया और अपने घर से भी दूर कर दिया।” बहर हाल मैं चलता रहा यहां तक कि थक गया। गरमी भी शदीद थी, मैं ज़िन्दगी से मायूस हो गया और रैत के टीले पर मौत का इन्तिज़ार करने लगा। अचानक मैं ने देखा कि एक शख्स मुझे पुकार रहा है, मैं खड़ा हुवा, देखा तो वोह हमारे इमामे मस्जिद हज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू सईद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَجِيد थे। उन्होंने ने पूछा : “क्या आप भूके हैं ? मैं ने अर्ज़ की : “जी हां।” तो उन्होंने ने मुझे एक गरमा गरम रोटी दी, मैं ने खाई तो मेरी सांस बहाल हो गई, मुझे प्यास लगी तो उन्होंने ने मुझे एक चमड़े का थैला दिया जिस में शहद से ज़ियादा मीठा और बर्फ़ से ज़ियादा ठंडा पानी था। मैं ने पिया और चेहरे को भी धोया तो मेरी ताज़गी और राहत लौट आई।

फिर उन्होंने ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : “मेरे पीछे चलो।” मैं थोड़ी देर तक आप के पीछे चला तो मक्कए मुक़र्रमा जा पहुंचा। उन्होंने ने इरशाद फ़रमाया : “यहीं ठहर जाओ, तीन दिन बा'द तुम्हारे दोस्त यहां पहुंच जायेंगे।” फिर मुझे एक रोटी दे कर चले गए मैं ने उस रोटी का एक ही लुक़्मा खाया तो सैर हो गया। मैं ने वोह रोटी तीन दिन अपने पास रखी यहां तक कि मेरे रुफ़का आ गए। जब मैं ने अरफ़ा में वुकूफ़ किया तो हज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू सईद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَجِيد को एक चट्टान के करीब दुआ में मशगूल खड़े हुए देखा। मैं ने सलाम अर्ज़ किया, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने फ़ारिग़ हो कर सलाम का जवाब दिया और पूछा : “किसी चीज़ की ज़रूरत तो नहीं ?” मैं ने अर्ज़ की : “दुआ फ़रमा दें।” उन्होंने ने दुआ की फिर हम पहाड़ से उतर आए। इस के बा'द आप عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى मुझे नज़र न आए। मैं हज़ अदा कर के बसरा वापस आ गया और घर में रात गुज़ारी। जब सुब्ह हुई तो हज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू सईद عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللهِ الْمَجِيد के पीछे मस्जिद में सुब्ह की नमाज़ पढ़ी। जब आप عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो मैं ने सलाम और मुसाफ़हा किया। आप عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى ने मुझ से मुसाफ़हा किया और मेरे हाथ को दबाया। मैं समझ गया कि राज़ को ज़ाहिर नहीं करना। मस्जिद का मुअज़्ज़िन आप عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى की बहुत ख़िदमत किया करता था,

मैं ने उस से अय्यामे हज में मस्जिद से हजरते सय्यिदुना शैख अबू सईद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْمَجِيد की अदमे मौजूदगी के मुतअल्लिक पूछा तो उस ने कसम खाई कि आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने पांचों नमाजें इसी मस्जिद में अदा फरमाई। तो मैं ने जान लिया कि येह बुजुर्ग, इन्सानों के सरदार अब्दाल में से हैं।”

हजरते सय्यिदुना अब्दुस्समद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي फरमाते हैं : “मैं बग़दाद से यमन समन्दर के रास्ते सफ़र करता था और हर साल हज किया करता। एक साल मिना व अरफ़ा के दरमियान रास्ते में ख़ूबसूरत, साफ़ सुथरे लिबास में मल्बूस एक नौजवान को देखा गोया उस का चेहरा रोशन चराग़ था। वोह सर के नीचे पथ्थर रख कर रैत पर लैटा हुआ मौत से लड़ रहा था या'नी मरने के करीब था। मैं ने आगे बढ़ कर उसे सलाम किया और पूछा : “क्या आप को किसी चीज़ की ज़रूरत है ?” तो उस ने जवाब दिया : “हां ! आप मेरे पास खड़े रहें यहां तक कि मैं सांस पूरे कर के अपने रब्ब عَزَّ وَجَلَّ से जा मिलूं।” मैं ने अर्ज़ की : “आप मुझ से क्या चाहते हैं ?” उस ने कहा : “जब मैं मर जाऊं तो मुझे दफ़न कर देना और मेरे कन्धे से येह थेली ले लेना, जब आप यमन में मक़ामे सनआ पर पहुंचें तो “दारुल वज़ारह” के मुतअल्लिक पूछना। वहां से एक बुढ़िया और उस की बेटियां निकलेंगी, उन को येह थेली दे कर कहना कि मुसाफ़िर उष्मान ने आप को सलाम भेजा है। फिर वोह नौजवान बेहोश हो गया। कुछ देर बा'द जब होश में आया तो येह आयते मुबारका तिलावत कर रहा था :

﴿١﴾ هَذَا مَا وَعَدَ الرَّحْمَنُ وَصَدَقَ

الْمُرْسَلُونَ 0 (प १३, स ५२)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : येह है वोह जिस का रहमान ने वा'दा दिया था और रसूलों ने हक़ फरमाया।

फिर उस ने एक चीख़ मारी और दुनिया से कूच कर गया, मैं ने उस को गुस्ल दिया और कफ़न पहनाया, उस का चेहरा नूर से दमक रहा था। मैं ने लोगों के साथ मिल कर नमाज़े जनाज़ा पढ़ी और उसे दफ़न कर दिया। उस के बा'द थेली ली और यमन पहुंच कर जब उस के बताए हुए घर के मुतअल्लिक पूछा तो एक बुढ़ी औरत और उस की बेटियां बाहर आईं, मैं ने उन को वोह थेली दी तो वोह उसे देख कर रोने लगीं। बुढ़िया बेहोश हो कर गिर पड़ी। जब उसे होश आया तो मुझ से पूछने लगी : “इस थेली का मालिक कहां है ?” मैं ने उस के मुतअल्लिक सब कुछ बता दिया तो वोह कहने लगी : “**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की कसम ! वोह मेरा बेटा उष्मान (عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَن) था और येह उस की बहनें हैं, उस ने अपने घर वालों, अज़ीजों और ख़दिमों को छोड़ा और चेहरे पर निकाब कर के निकल गया, मा'लूम नहीं कहां गया। **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ तुम्हें मेरी और मेरे बेटे की तरफ़ से जज़ाए ख़ैर अता फरमाए।” फिर वोह रोने लगी।

या **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ! अगर तू सिर्फ़ इबादत गुज़ारों पर रहूम फरमाएगा तो इबादत में कोताही करने वालों का वाली कौन होगा ? अगर तू सिर्फ़ इख़लास वालों को क़बूल करेगा तो ख़ताकारों का वारिष कौन बनेगा ? अगर तू सिर्फ़ नेक़कारों पर करम करेगा तो आसियों पर करम कौन



करेगा ? या **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ! मेरी हसरत कितनी बड़ी है कि मैं दूसरों को नसीहत करता हूं और खुद तुझ से ग़फ़िल हूं। या **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ! मेरी मुसीबत कितनी शदीद है कि मैं दूसरों को बेदार करता हूं और खुद ग़फ़लत की नींद सोया हुआ हूं। या **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ! मेरा किस्सा व माजरा कितना अजीब है कि मैं राहे हक़ की तरफ़ दूसरों की रहनुमाई करता हूं और खुद उस की तलाश में हैरान व सर गर्दा हूं। या **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ! अपने इस बन्दे पर जूदो करम की बारिश बरसा दे। या **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ! जब मैं किसी को तेरी बारगाह का रास्ता दिखाऊं और वोह वहां तक रसाई हासिल कर ले तो क्या तू उसे क़बूल कर लेगा जिस की रहनुमाई की गई है और रहनुमाई करने वाले को धुत्कार देगा ? या **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ! अगर मेरा कलाम ख़ालिसतन तेरी रिज़ा के लिये नहीं तो मेरे इजतिमाअ में कोई ऐसा शख्स भी तो होगा जो सिर्फ़ और सिर्फ़ तेरी रिज़ा के लिये आया होगा। ऐ मेरे परवर दगार **عَزَّوَجَلَّ** ! उस के सदके मेरी तक्सीरो कोताही मुआफ़ फ़रमा दे और हम सब पर अपना रहमो करम फ़रमा।

وَصَلَّى اللّٰهُ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِهِ وَصَحْبِهِ وَسَلَّمَ تَسْلِيمًا كَثِيرًا



### नरमी की फज़ीलत

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ  
 सय्यिदुल मुबल्लिगीन, रहमतुल्लिल आलमीन  
 ने उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीका رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالَى عَنْهَا से इरशाद  
 फ़रमाया : “जिस शख्स को नरमी से हिस्सा मिला उसे दुनिया व आख़िरत की भलाई से  
 हिस्सा मिला और जो शख्स नरमी से महरूम रहा वोह दुनिया व आख़िरत की भलाई से  
 महरूम रहा।”

(مسند ابی یعلیٰ الموصلی، مسند عائشه، بالحديث ٤٥١٣، ج ٤، ص ١١٨)

बयान 13 :

## जहन्नम का बयान

हम्दे बारी तआला :

तमाम खूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने इताअत गुज़ार बन्दों से जन्नत की ने'मतों का वा'दा फ़रमाया और मुन्किरीन को अज़ाबे जहन्नम की वईद सुनाई और जिस ने उस की मज्बूत बादशाहत का इन्कार किया उस पर अपना ग़ज़ब फ़रमाया, नाफ़रमानों की पर्दापोशी फ़रमाई, अपने गुनाहों का उज़्र पेश करने वालों का उज़्र क़बूल फ़रमाया, जिस ने उस की बारगाह में आंसू बहाए उस की मग़फ़िरत फ़रमा दी, जो उस की रिज़ा के लिये शिकस्ता दिल हुवा रब्ब عَزَّوَجَلَّ ने उसे दुरुस्त कर दिया, जो कामयाब हुवा उसी की मदद से हुवा, जिस ने उस के अज़ीम एहसानात को याद रखा उस को अच्छा बदला अता फ़रमाया । तमाम नूरी मख़्लूक, दाइरे में घूमता आस्मान, बिजली अपनी चमक दमक के साथ, चलते हुए बादल और हवा, बहती नहरें, दरख़्तों की टहनियां, रंगबेरंगी कलियां, परन्दे अपनी ग़मज़दा आवाज़ में, बागात अपने सब्जे के साथ, खुश्क मैदान अपने टीलों के साथ और समन्दर अपनी मछलियों के साथ उस की पाकी बयान करते हैं, हर एक अपनी अनोखी ज़बान में उस की पाकी बयान करता है ।

पाक है वोह ज़ात जो मा'बूदे अज़ीम, ज़िन्दा और क़ाइम रखने वाला है, जिस ने रिज़क़ की तक्सीम, तै शुदा मौत और हर चीज़ के लिये मुक़र्रर वक़्त का अन्दाज़ा लगाया, जिस की मा'रिफ़त पाने में अक्ल व समझ हैरान व शशदर है, जिस ने अपने नूरे रहमत से अपने ख़ास बन्दों के लिये जन्नत बनाई जिन्हें वोह मुहर लगी हुई साफ़ व शफ़फ़ाफ़ पाकीज़ा शराब से सैराब करेगा और जहन्नम को अपने शदीद ग़ज़ब से उन नाफ़रमान बन्दों के लिये पैदा किया जिन के लिये शकावत लिख दी गई थी, उस में इन्हें हलाकत व बरबादी, अलमनाक अज़ाब और सख़्त डांट डपट होगी, उस के सात दरवाज़े हैं हर दरवाज़े के लिये जहन्नम का एक हिस्सा तक्सीम किया हुवा है । पाक है वोह ज़ात जो सब का खुदा है, हमेशा से अज़ीम, कुव्वत वाला, शानो शोकेत और हुस्नो जमाल वाला है, अपनी बादशाही में यक्ता है, और वोह हमेशा रहेगा । अपने इताअत गुज़ार के लिये जन्नत बनाई अगर्चे वोह हब्शी गुलाम ही हो, और नाफ़रमान के लिये जहन्नम बनाई अगर्चे वोह कुरैश का आज़ाद शख़्स ही क्यूं न हो और उस को मुशरिकीन व कुफ़्फ़ार का ठिकाना, बदबख़्तों और फ़ासिकों के रहने की जगह बना दिया । जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आलीशान है :

(٤٦: المؤمن: ٢٤) **तर्जमए कन्जुल ईमान** : आग जिस पर सुब्हो शाम पेश किये जाते हैं । (1)

①.....मुफ़सिरे शहीर, ख़लीफ़ा आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ज़िल सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी علیه رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِي तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तहूत फ़रमाते हैं : “उस (आग) में जलाए जाते हैं । हज़रते इब्ने मसऊद रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : “फ़िरऔनियों की रूढ़ें सियाह परन्दों के क़ालिब में हर रोज़ दो मरतबा सुब्हो शाम आग पर पेश की जाती हैं और उन से कहा जाता है कि येह आग तुम्हारा मक़ाम है और क़ियामत तक उन के साथ येही मा'मूल रहेगा । मस्अला : इस आयत से अज़ाबे क़ब्र के षुबूत पर इस्तिदलाल किया जाता है । बुख़ारी व मुस्लिम की हदीष में है कि हर मरने वाले पर उस का मक़ाम सुब्हो शाम पेश किया जाता है । जन्नती पर जन्नत का और दोज़ख़ी पर दोज़ख़ का, और उस से कहा जाता है कि येह तेरा ठिकाना है ता आंक़ि रोज़े क़ियामत **अल्लाह** तआला तुझ को उस की तरफ़ उठाए ।”

इस से छुटकारा भी कैसे हो सकता है क्योंकि **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

(٧١: مريم: ١٦) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान** : और तुम में कोई ऐसा नहीं जिस का गुज़र दोज़ख़ पर न हो तुम्हारे रब्ब के ज़िम्मे पर यह ज़रूर ठहरी हुई बात है । (1)

जहन्म रंजो अलम और ज़िल्लतो रुस्वाई का घर है, इस का इन्कार करने वालों को भी इस से अमान नहीं होगी, उन के लिये हमेशा उस में रहना और उसे भूले रहना लिख दिया गया है, उन्हें उस में निदा दी जाएगी और वोह सुन रहे होंगे :

(٤٤: الرحمن: ٢٧) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान** : यह है वोह जहन्म जिसे मुजरिम झुटलाते हैं, फेरे करेंगे उस में और इन्तिहा के जलते खोलते पानी में ।

हाए ! अफ़सोस ! वोह ऐसा घर है जिस की तकालीफ़ पहुंच कर रहने वाली हैं, जिस की उम्मीदें पूरी नहीं होतीं, जिस के रास्ते तारीक हैं, जिस की हलाकतें ग़ैर वाज़ेह हैं, उस के रहने वाले जलता, खोलता हुवा पानी पियेंगे, और हमेशा उस के अज़ाब में मुब्तला रहेंगे, उस में अपनी हलाकत व बरबादी को पुकारेंगे मगर उस में उन की उम्मीदें भी हलाक हो जाएंगी, उन्हें उस की कैद से कभी रिहाई न मिलेगी, पे दर पे अज़ाब के सबब वोह उस के कुशादा रास्तों और मुख़ालिफ़ हिस्सों से फ़रियाद करेंगे : ऐ मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ ! हम पर तेरी वईद षाबित हो गई, ऐ हमारे रब्ब عَزَّوَجَلَّ ! लोहे के गुर्जों ने हमारे टुकड़े टुकड़े कर दिये । ऐ हमारे ख़ालिको मालिक عَزَّوَجَلَّ ! अज़ाब से हमारी खालें पक गई हैं । ऐ मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ ! हमें जहन्म से निकाल दे, हम दोबारा नाफ़रमानी नहीं करेंगे । तहकीक़ वोह कैद जहन्मियों का कचूमर निकाल देगी, फिर उन्हें उस में हमेशा रहने का यकीन हो जाएगा, वोह मा'बूदे हकीकी के ग़ज़ब में लौटेंगे क्योंकि दुन्या में उन्होंने ने फ़िस्को फुजूर का बाज़ार गर्म किया, कुफ़ार के साथ मेल जोल बढ़ाया लिहाज़ा जहन्म को उन का ठिकाना बना दिया जाएगा, यह कितना बुरा ठिकाना है, मुन्किरीन और शुक्को शुब्हात की वादियों में भटकने वालों के लिये कितनी बुरी जगह है, उस में उन का खाना ज़कूम (जहन्म का कांटेदार दरख़्त), पीना जहन्मियों की पीप और पिघला हुवा सीसा होगा :

(٥٦: النساء: ٥) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान** : जब कभी उन की खालें पक जाएंगी हम उन के सिवा और खालें उन्हें बदल देंगे कि अज़ाब का मज़ा लें ।

①.....मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ज़िल सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी علیه رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِي तप्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं : “नेक हो या बद । मगर नेक सलामत रहेंगे और जब उन का गुज़र दोज़ख़ पर होगा तो दोज़ख़ से सदा उठेगी कि ऐ मोमिन गुज़र जा कि तेरे नूर ने मेरी लपट सर्द कर दी । हसन व क़तादा से मरवी है कि दोज़ख़ पर गुज़रने से पुल सिरात पर गुज़रना मुराद है जो दोज़ख़ पर है ।”



## जहन्नम तारीक रात की तरह सियाह है :

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक وَسَلَّم وَالِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने इब्रत निशान है : “**أَبْلَاحُ** عَزَّ وَجَلَّ ने हज़रते जिब्राईल (عَلَيْهِ السَّلَام) को बुला कर जन्नत की तरफ़ भेजा और इरशाद फ़रमाया कि जन्नत और अहले जन्नत के लिये मेरी तय्यार कर्दा ने'मतें देख । जब हज़रते जिब्राईल (عَلَيْهِ السَّلَام) ने देखा तो वापस आ कर अर्ज की : “मुझे तेरी इज़्ज़त व जलाल की क़सम ! जो कोई इस के मुतअल्लिक सुनेगा ज़रूर इस में दाख़िल होने की कोशिश करेगा ।” तो उसे नफ़्स पर गिरा गुज़रने वाली बातों से ढांप दिया गया । फिर इरशाद फ़रमाया : “दोबारा जाओ ।” तो हज़रते जिब्राईल (عَلَيْهِ السَّلَام) ने वापस आ कर अर्ज की : “तेरी इज़्ज़त व जलाल की क़सम ! मुझे डर है कि अब कोई भी इस में दाख़िल न हो सकेगा ।” फिर हज़रते जिब्राईल (عَلَيْهِ السَّلَام) को जहन्नम की तरफ़ भेज कर इरशाद फ़रमाया : “दोज़ख़ और अहले दोज़ख़ के लिये मेरा तय्यार कर्दा अज़ाब देख ।” जब हज़रते जिब्राईल (عَلَيْهِ السَّلَام) ने देखा तो अर्ज की : “मुझे तेरी इज़्ज़त व जलाल की क़सम ! कोई शख्स उस में दाख़िल न हो सकेगा ।” तो उसे नफ़्सानी ख़्वाहिशात से घेर दिया गया । फिर इरशाद फ़रमाया : “दोबारा जा कर देख ।” वोह दोबारा गए और लौट कर अर्ज की : “तेरी इज़्ज़त व जलाल की क़सम ! मुझे ख़ौफ़ है कि सभी उस में दाख़िल हो जाएंगे ।

(جامع الترمذی، ابواب صفة الجنة، باب ماجاء حفت الجنة بالمكاره.....الخ، الحديث ۲۵۶۰، ص ۱۹۰۹)

फिर जहन्नम को हज़ार साल जलाया गया यहां तक कि सफ़ेद हो गई, फिर हज़ार साल जलाया गया तो सुर्ख़ हो गई, फिर हज़ार साल जलाया गया हत्ता कि सियाह हो गई, अब येह तारीक रात की तरह सियाह है ।”

(سنن ابن ماجه، ابواب الزهد، باب صفة النار، الحديث ۴۳۲۰، ص ۲۷۴۰)

## जहन्नम की आग दुन्या की आग से सत्तर गुना तेज़ है :

हज़रते सय्यिदुना इब्ने मसऊद رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है, हुज़ूर नबिय्ये मुक़र्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अक़रम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने इब्रत निशान है : “दुन्या की आग जहन्नम की आग से सत्तर दर्जे कम है और अगर इस को दो मरतबा समन्दर में न डाला गया होता तो तुम इस से कुछ भी नफ़अ न उठा सकते ।”

(سنن ابن ماجه، ابواب الزهد، باب صفة النار، الحديث ۴۳۱۸، ص ۲۷۴۰، بتغییر قلیل)

## जहन्नम की सत्तर हज़ार लगामें होंगी :

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरोबर صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने ग़ैब निशान है : “क़ियामत के दिन जहन्नम को लाया जाएगा, उस की सत्तर हज़ार लगामें होंगी, हर लगाम के साथ सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते होंगे जो उस को खींच रहे होंगे ।”

(صحيح مسلم، كتاب الجنة، باب جهنم اعا ذنا الله منها، الحديث ۲۸۴۲، ص ۱۱۷۱)

سَمَاعُتُهُ مُسْتَفْهَمٌ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ :

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि हम हुज़ूर सय्यिदुल मुबल्लिगीन, जनाबे रहूमतुल्लिल आलमीन صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के साथ थे, हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने एक गरजदार आवाज़ सुनी तो हम से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : “क्या तुम जानते हो कि येह आवाज़ कैसी थी ?” हम ने अर्ज़ की : “اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ” **अब्बाह** और उस का रसूल صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “येह एक पथ्थर था जिस को सत्तर साल पहले जहन्नम में फेंका गया था वोह अब तक उस में गिर रहा था यहां तक कि अब उस की तह में पहुंच गया ।”

(صحيح مسلم، كتاب الجنة، باب جهنم اعا ذنا الله منها، الحديث ٢٨٤٤، ص ١٧١)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** क्या तुम्हें इन अहवाल से इब्रत हासिल नहीं होती ? क्या तुम जहन्नम की आग और उस की होलनाकियों से नहीं डरते ? क्या उस की जन्जीरों और तोकों से तुम्हें खौफ़ नहीं आता ? तअज्जुब है उस शख्स पर जो जन्नत में अपने बाप हज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की पुश्ते मुबारक में था फिर भी वोह कैसे उस जहन्नम में दाख़िल हो जाएगा जिस का इंधन आदमी और पथ्थर हैं ।

**जहन्नमी अहले जन्नत से खाना और पानी मांगेंगे :**

मरवी है : “आग के शो'ले जहन्नमियों को बुलन्द करेंगे यहां तक कि वोह चिंगारियों की तरह उड़ने लगेंगे, जब वोह बुलन्द होंगे तो अहले जन्नत पर झाकेंगे, उन के दरमियान पर्दा होगा, जन्नती, जहन्नमियों से कहेंगे : “हम ने पा लिया जिस का हमारे रब्ब عَزَّوَجَلَّ ने हम से वा'दा फ़रमाया था तो क्या तुम ने भी पा लिया जिस का तुम्हारे रब्ब عَزَّوَجَلَّ ने तुम से वा'दा किया था ?” वोह कहेंगे : “हां हम ने भी पा लिया ।” फिर एक ए'लान करने वाला ए'लान करेगा : “जालिमों पर **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ की ला'नत है ।” जहन्नमी जब बहती नहरें देखेंगे तो अहले जन्नत से कहेंगे : “हमें पानी या **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ ने जो रिज़क़ तुम्हें अता फ़रमाया है उस में से कुछ दो ।” तो अहले जन्नत कहेंगे : “बेशक **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ ने येह दोनों चीजें काफ़िरों पर हराम फ़रमा दी हैं ।” फिर अज़ाब के फ़िरिश्ते उन्हें लोहे के गुर्जों से जहन्नम की तह तक लौटा देंगे ।” बा'ज मुफ़स्सरीन ने **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान के तहत मज़क़ूरा रिवायत नक्ल फ़रमाई है :

كُلَّمَا أَرَادُوا أَنْ يَخْرُجُوا مِنْهَا أُعِيدُوا ﴿١﴾  
فِيهَا وَقِيلَ لَهُمْ ذُقُوا عَذَابِ النَّارِ الَّذِي  
كُنْتُمْ بِهِ تكَذِّبُونَ ﴿٢٠﴾ (پ ٢٠: السجدة: ٢٠)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :** जब कभी उस में से निकलना चाहेंगे फिर उसी में फेर दिये जाएंगे और उन से कहा जाएगा चखो उस आग का अज़ाब जिसे तुम झुटलाते थे ।

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि शहनशाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रंजो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिषाल, बीबी आमना के लाल صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई :

﴿2﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقَاتِهِ وَلَا تَمُوْتُنَّ  
اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ 0 (پ ۴، مال عمران: ۱۰۲)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :** ऐ ईमान वालो ! **अब्बाह** से  
उरो जैसा उस से डरने का हक है और हरगिज़ न मरना  
मगर मुसलमान ।

फिर इरशाद फरमाया : “अगर जकूम (जहन्नम के एक कांटेदार ज़हरीले दरख्त के फल) का  
एक कतरा दुन्या में उन्डेल दिया जाए तो सारी दुन्या को तबाहो बरबाद कर दे और अहले ज़मीन पर  
उन की ज़िन्दगी अजीरन कर दे तो उन की हालत कैसी होगी जिन का खाना ही येह होगा ।”

(جامع الترمذی، ابواب صفة جهنم، باب ماجاء فی صفة ثراب اهل النار، الحديث ۲۵۸۵، ص ۱۹۱۲)

### जहन्नम में काफ़िर की हालत :

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं कि सरकारे वाला तबार, हम  
बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख्तार, बिइज़्ने परवर दगार  
صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरशादे हकीकत बुन्याद है : “काफ़िर की खाल की मोटाई बहत्तर (72)  
गज़ होगी, उस की दाढ़ उहुद पहाड़ जितनी होगी और जहन्नम में उस के बैठने की जगह मक्का व  
मदीना के दरमियानी फ़ासिले जितनी होगी ।”

(جامع الترمذی، ابواب صفة جهنم، باب ماجاء فی ..... اهل النار، الحديث ۲۵۷۷، ص ۱۹۱۱)

**अब्बाह** हम सब को जहन्नम की आग और उस में कुफ़ारो फुज्जार के ठिकाने से  
बचाए । काश ! तू जहन्नमियों को और उन के खोलते पानी को देख लेता तो ज़रूर उस से बहुत  
ज़ियादा पनाह त़लब करता । जब भी उन की भूक सख़्त होगी तो उन के लिये आग के कांटों के सिवा  
कोई खाना न होगा । ऐ गुनहगारो ! क्या तुम जहन्नम की आग बर्दाश्त कर सकोगे ? हरगिज़ नहीं  
बल्कि वोह तो भड़कती आग है कि लोग जिस की तरफ़ हर सप्त से हांके जाएंगे ।

﴿3﴾ اِذَا رَأَوْهُمْ مِنْ مَّكَانٍ يَّعْبُدُوْنَ لَهَا تَغِيْطًا وَرَفِيْرًا 0  
وَاِذَا الْاَنْفُسُ مِنْهَا مَكَانًا ضَيِّقًا مُّقْرَنَيْنِ دَعَوْا  
هُنَالِكَ ثُبُوْرًا 0 لَا تَدْعُوْا الْيَوْمَ ثُبُوْرًا وَّاحِدًا وَّ  
ادْعُوْا ثُبُوْرًا كَثِيْرًا 0 (پ ۱۸، الفرقان: ۱۴ تا ۱۶)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :** जब वोह उन्हें दूर जगह से  
देखेगी तो सुनेंगे उस का जोश मारना और चिंघाड़ना,  
और जब उस की किसी तंग जगह में डाले जाएंगे ज़न्जीरों  
में जकड़े हुए तो वहां मौत मांगेंगे । फ़रमाया जाएगा : आज  
एक मौत न मांगो और बहुत सी मौतें मांगो । (1)

① عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِيْ  
तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इफ़ान में इस आयते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं : “(वोह जहन्नम को) एक बरस की राह से या सो  
बरस की राह से (देखेंगे) दोनों कौल हैं और आग का देखना कुछ बईद नहीं । **अब्बाह** तआला तो उस को हयात व अक़ल  
और रूयत अता फ़रमाए और बा'ज मुफ़स्सरीन ने कहा कि मुराद मलाइकए जहन्नम का देखना है । (इस तरह जकड़े होंगे  
कि) उन के हाथ गरदनो से मिला कर बांध दिये गए हों या इस तरह कि हर हर काफ़िर अपने अपने शैतान के साथ ज़न्जीरों  
में जकड़ा हुवा हो और **واثورا واثورا** का शोर मचाएंगे बईमा'ना कि हाए ऐ मौत आ जा । हदीष शरीफ़ में है कि पहले जिस शख्स  
को आतशी (या'नी आग का) लिबास पहनाया जाएगा वोह इब्लीस है और उस की ज़ुरियत उस के पीछे होगी और येह सब मौत  
मौत पुकारते होंगे ।”



और अगर उस दिन तू लोगों को देखता :

﴿4﴾ يَوْمَ تُبَدَّلُ الْأَرْضُ غَيْرَ الْأَرْضِ وَالسَّمَوَاتُ  
وَبَرَزُوا لِلَّهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ (پ ۱۳، ابراهيم: ۴۸)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :** जिस दिन बदल दी जाएगी ज़मीन उस ज़मीन के सिवा और आस्मान और लोग सब निकल खड़े होंगे एक **अव्वाह** के सामने जो सब पर गालिब है । (1)

जहन्नमियों पर सख़्त मसाइब नाज़िल होंगे और गर्दों गुबार छा जाएगा, उन की पल्कों के पर्दों से बारिश की तरह खून बरसेगा और बेचैनी व आज़ुर्दगी उन्हें हर जानिब से घेर लेगी ।

**जहन्नमियों का गोश्त झड़ जाएगा :**

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि **अव्वाह** عَزَّ وَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जब अहले दोज़ख़ को दोज़ख़ की तरफ़ हांका जाएगा तो जहन्नम उन से सख़्ती से पेश आएगी और उन पर ऐसी भड़केगी कि किसी हड्डी पर गोश्त न रहने देगी यहां तक कि कूचों तक जा पहुंचेगी ।”

(المعجم الاوسط، الحديث ۲۷۸، ج ۱، ص ۹۲ - بتغير)

उस वक़्त जहन्नमी इस हाल में होंगे कि उन्हें गुनाहों की वजह से डांटा जा रहा होगा, वोह शदीद इताब में होंगे, उन की कैद और अज़ाब में हर लम्हा इज़ाफ़ा होता जाएगा और वोह शदीद दुख और तकलीफ़ में होंगे । **अव्वाह** عَزَّ وَجَلَّ अपनी सच्ची किताब में इरशाद फ़रमाता है :

﴿5﴾ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِنَا سَوْفَ نُصْلِيهِمْ  
نَارًا كُلَّمَا نَضِجَتْ جُلُودُهُمْ بَدَّلْنَاهُمْ جُلُودًا  
غَيْرَهَا لِيَذُوقُوا الْعَذَابَ (پ ۵، النساء: ۵۶)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :** जिन्होंने ने हमारी आयतों का इन्कार किया अंन करीब हम उन को आग में दाख़िल करेंगे जब कभी उन की खालें पक जाएंगी हम उन के सिवा और खालें उन्हें बदल देंगे कि अज़ाब का मज़ा लें ।

वोह दुन्यवी जिन्दगी पर खुश हो गए, सूर फूँके जाने को भूल बैठे और झूटी उम्मीदों के धोके में आ गए ।

①.....मुफ़स्सिरे शहीर, खलीफ़ए आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ाजिल सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي तफ़्सीर खज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं : “उस दिन से रोज़े क़ियामत मुराद है । ज़मीनो आस्मान की तब्दीली में मुफ़स्सिरीन के दो कौल हैं :

एक येह कि उन के औसाफ़ बदल दिये जाएंगे, मषलन ज़मीन एक सत्त हो जाएगी न उस पर पहाड़ बाकी रहेंगे, न बुलन्द टीले, न गहरे ग़ार, न दरख़्त, न इमारत, न किसी बस्ती और अक़लीम का निशान । और आस्मान पर कोई सितारा न रहेगा और आफ़ताबो माहताब की रोशनियां मा'दूम (या'नी न) होंगी । येह तब्दीली औसाफ़ की है ज़ात की नहीं ।

दूसरा कौल येह है कि आस्मानो ज़मीन की ज़ात ही बदल दी जाएगी । उस ज़मीन की जगह एक दूसरी चांदी की ज़मीन होगी सफ़ेद व साफ़ । जिस पर न कभी खून बहाया गया हो, न गुनाह किया गया हो । और आस्मान सोने का होगा । येह दो कौल अगर्चे बज़ाहिर बाहम मुख़लिफ़ मा'लूम होते हैं मगर इन में से हर एक सहीह है और वजहे जम्अ येह है कि अव्वल तब्दील सिफ़ात होगी और दूसरी मरतबा बा'द हिसाब तब्दीले शानी होगी । इस में ज़मीनो आस्मान की ज़ातें ही बदल जाएंगी ।

﴿6﴾ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ نَارُ جَهَنَّمَ لَا يُقْضَىٰ

عَلَيْهِمْ فِيمَوْتُهَا وَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ مِنْ عَذَابِهَا

كَذَٰلِكَ نَجْزِي كُلَّ كَافِرٍ ۝ (प २२: पाठ: ३६)

उन के लिये जहन्नम में रोना ही रोना और भड़कने वाली आग का अज़ाब है।

﴿7﴾ وَهُمْ يَصْطَرِّحُونَ فِيهَا رَبَّنَا أَخْرِجْنَا نَعْمَلْ

صَالِحًا غَيْرَ الَّذِي كُنَّا نَعْمَلُ ۖ أَوَلَمْ نُعَمِّرْكُم مَّا

يَتَذَكَّرُ فِيهِ مِنْ تَذَكُّرٍ وَجَاءَكُمْ النَّذِيرُ فَذُوقُوا

فَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ نَصِيرٍ ۝ (प २२: पाठ: ३७)

हुस्ने अख़लाक के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “तुम्हारी येह आग जहन्नम की आग से सत्तर दर्जे कम है और येह (दुन्या की आग) भी जहन्नम की आग से रोज़ाना सत्तर मरतबा पनाह मांगती है।”

(सनن ابن ماجه، ابواب الزهد، باب صفة النار، الحديث ४३१८، ص २७६०، مختصر)

नबिये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़लाक صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने आलीशान है : “जहन्नम की आग को तुम जितना चाहो बयान करो तुम उस को जितना भी बयान करोगे येह उस से भी सख़्त होगी।”

(سير اعلام النبلاء، الرقم ५२० ابو جعفر الباقر، ج ५، ص ३६०)

**जहन्नमियों की पुकार का जवाब :**

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से मरवी है कि : “जहन्नमी दारोगा जहन्नम को पुकारेंगे लेकिन उन्हें चालीस साल तक कोई जवाब न मिलेगा फिर जवाब दिया जाएगा : “तर्जमए कन्जुल ईमान : तुम्हें तो ठहरना है।” या'नी हमेशा यहीं रहना है। वोह दोबारा अपने रब्ब عَزَّ وَجَلَّ की बारगाह में पुकारते हुए इल्तिजा करेंगे :

﴿8﴾ قَالُوا رَبَّنَا عَلَبْتُ عَلَيْهَا شَقَوْنَا وَكُنَّا قَوْمًا

صَالِحِينَ ۝ رَبَّنَا أَخْرِجْنَا مِنْهَا فَإِنْ عُدْنَا فَإِنَّا

ظَالِمُونَ ۝ (प १८: المؤمنون: १०-११)

तर्जमए कन्जुल ईमान : कहेंगे ऐ हमारे रब्ब ! हम पर हमारी बदबख़्ती ग़ालिब आई और हम गुमराह लोग थे। ऐ रब्ब हमारे ! हम को दोज़ख़ से निकाल दे फिर अगर हम वैसे ही करें तो हम ज़ालिम हैं। <sup>(१)</sup>

① .....मुफ़सिरे शहीर, ख़लीफ़ आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ज़िल सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي तफ़सीर ख़ुजाइनुल इफ़फ़न में इस आयते मुबारक के तहत फ़रमाते हैं : “तिरमिज़ी की हदीष में है कि दोज़ख़ी लोग जहन्नम के दारोगा मालिक को चालीस बरसों तक पुकारते रहेंगे। उस के बाद वोह कहेगा कि तुम जहन्नम ही में पड़े रहोगे फिर वोह परवर दगार को पुकारेंगे और कहेंगे, ऐ रब्ब हमारे ! हमें दोज़ख़ से निकाल और येह पुकार उन की दुन्या से दूनी उम्र की मुदत तक जारी रहेगी। इस के बाद उन्हें येह जवाब दिया जाएगा जो अगली आयत में है (ख़ाज़िन) और दुन्या की उम्र कितनी है, इस में कई कौल हैं। बा'ज ने कहा कि दुन्या की उम्र सात हज़ार बरस है, बा'ज ने कहा बारह हज़ार बरस, बा'ज ने कहा तीन लाख साठ बरस। (तुकररुफ़ी)

﴿9﴾ قَالَ احْسَنُوا فِيهَا وَلَا تَكَلِمُونَ 0

(پ ۱۸، المؤمنون: ۱۰۸)

तर्जमए कन्जुल ईमान : रब्ब फरमाएगा : धुत्कारे (खाइबो खासिर) पड़े रहो उस में और मुझ से बात न करो । (1)

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फरमाते हैं : **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! इस के बा'द वोह एक कलिमा भी न कहेंगे, फिर उन के लिये जहन्नम में चीखना चिल्लाना ही रह जाएगा, उन की आवाज़ गधों जैसी होगी, पहले चीखें चिल्लाएं और आखिर में रेकेंगे ।”

(جامع الترمذی، ابواب صفة جہنم، باب ماجاء فی صفة طعام اهل النار، الحديث ۲۵۸۶، ص ۱۹۱۲ - الترغیب والترہیب، کتاب صفة الجنة والنار، فصل فی بکا ئہم وشہیقہم، الحديث ۵۶۸۵، ج ۴، ص ۲۹۲، بتغییر قليل مختصر)

**हज़रते सय्यिदुना क़तादा की नसीहत :**

हज़रते सय्यिदुना क़तादा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फरमाया करते : “ऐ लोगो ! क्या तुम में इस की ताक़त है ? क्या तुम जहन्नम की आग बर्दाश्त कर सकते हो ? ऐ लोगो ! **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ की इताअत तुम्हारे लिये इस से बहुत आसान है लिहाज़ा तुम उस की इताअत करो ।”

(حلیۃ الاولیاء، کعب الاحبار، الحديث ۷۵۴۲، ج ۵، ص ۴۰۸)

हज़रते सय्यिदुना मैमून बिन मेहरान रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है : “जब येह आयते मुबारका नाज़िल हुई : **﴿10﴾ وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمَوْعِدُهُمْ أَجْمَعِينَ 0﴾** (الحجر: ४३) तो हज़रते सय्यिदुना सुलैमान रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अपना हाथ सर पर रख लिया, फिर तीन दिन तक इस तरह हैरानी व परेशानी के आलम में घर से बाहर रहे कि कोई भी आप रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को संभाल न सकता था, यहां तक कि आप रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को लाया गया ।”

**ख़च्चर जैसे बिच्छू और ऊंट जैसे सांप :**

मरवी है कि अहले दोज़ख़ हज़ार साल जज़़्ज़ करते रहेंगे लेकिन उन के अज़ाब में कोई कमी न होगी तो कहेंगे :

﴿10﴾ سَوَاءٌ عَلَيْنَا أَجْرُ غَنًا أَمْ صَبْرًا مَا لَنَا

مِنْ مَحْصُصٍ 0 (پ ۱۳، ابراهيم: ۲۱)

तर्जमए कन्जुल ईमान : हम पर एक सा है चाहे बे क़रारी करें या सब्र से रहें हमें कहीं पनाह नहीं ।

①.....मुफ़सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ज़िल सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی

तफ़सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तहूत फरमाते हैं : “अब उन की उम्मीदें मुन्कतेअ हो जाएंगी और येह अहले जहन्नम का आखिर कलाम होगा । फिर इस के बा'द उन्हें कलाम करना नसीब न होगा रोते चीखते डकारते भोंकते रहेंगे ।”



फिर प्यास और शिदते अज़ाब के सबब हज़ार साल पुकारते रहेंगे ताकि उन की प्यास में कुछ कमी हो जाए लेकिन बारिश न आएगी तो वोह मज़ीद हज़ार साल रोते चिल्लाते रहेंगे जब वोह रोएंगे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام से इस्तिफ़सार फ़रमाएगा : “ऐ जिब्राईल (عَلَيْهِ السَّلَام) ! येह क्या मांगते हैं ?” हालांकि वोह बेहतर जानता है । हज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام अर्ज़ करेंगे : “ऐ मेरे रब्ब عَزَّوَجَلَّ ! येह बारिश त़लब करते हैं ।” तो उन के लिये एक सुख़ बादल ज़ाहिर होगा वोह ख़याल करेंगे कि इस बादल से हम पर बारिश बरसेगी लेकिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस में से उन पर ख़च्चरों जैसे बड़े बड़े बिच्छू मुसल्लत कर देगा वोह उन को ऐसा डंक मारेंगे जिस का दर्द एक हज़ार साल तक नहीं जाएगा फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से बारिश का सुवाल करेंगे तो उन के लिये सियाह बादल ज़ाहिर होगा तो वोह कहेंगे : येह बारिश वाला बादल है लेकिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस में से उन की तरफ़ ऊंट जैसे बड़े बड़े सांप भेज देगा । जब भी वोह उन को डसेंगे तो उस का दर्द एक हज़ार साल तक न जाएगा । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमाने आलीशान का येही मा'ना है :

زَدْنَهُمْ عَذَابًا فَوْقَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوا ﴿١١﴾  
يُفْسِدُونَ 0 (پ ١٤، النحل : ٨٨)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : हम ने अज़ाब पर अज़ाब बढ़ाया बदला उन के फ़साद का ।

“بِمَا كَانُوا يُفْسِدُونَ” से मुराद येह है कि येह (अज़ाब की ज़ियादती) उन के कुफ़र और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी करने का बदला है । तो जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अज़ाब से नजात और षवाब पाना चाहे तो उसे चाहिये कि दुन्या की तकालीफ़ पर सब्र करे क्यूंकि (हदीषे पाक का मफ़हूम है कि) “जन्नत को नफ़्स के नापसन्दीदा उमूर से घेर दिया गया है और जहन्नम को शहवात के साथ ढांप दिया गया है ।” (جامع الترمذی، ابواب صفة الجنة، باب ماجاء حفت الجنة بالمكاره وحفت النار بالشهوات، الحديث ٢٥٥٩، ص ١٩٠)

ऐ मेरे इस्लामी भाइयो ! तसव्वुर करो गोया कि तुम जहन्नम में खड़े यूं कह रहे हो :

﴿١٢﴾ يَلَيِّنَا نُرْدُّ وَلَا نَكْذِبُ بِأَيْتِ رَبِّنَا  
(پ ٧، الانعام : ٢٧)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : काश ! किसी तरह हम वापस भेजे जाएं और अपने रब्ब की आयतें न झुटलाएं ।

﴿١٣﴾ يَحْصِرَتْنَا عَلَى مَا فَرَطْنَا فِيهَا  
(پ ٧، الانعام : ٢٧)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : हाए ! अफ़सोस हमारा इस पर कि इस के मानने में हम ने तक्सीर की ।

और तुम ने अपनी सारी कोशिश त़लबे दुन्या में सर्फ़ कर दी और अपनी आख़िरत से बिल्कुल मुंह मोड़ लिया । तो तुम्हारी हालत कैसी होगी :

﴿١٤﴾ إِنْ أَخَذَ اللَّهُ سَمْعَكُمْ وَأَبْصَارَكُمْ وَخَتَمَ عَلَى قُلُوبِكُمْ  
(پ ٧، الانعام : ٤٦)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अगर **अल्लाह** तुम्हारे कान, आंख ले ले और तुम्हारे दिलों पर मुहर कर दे ।

## पुर अशरार आ'राबी :

एक दफ़ा खलीफ़ा हारुनुरशीद ने हरमे मक्का में दाख़िल हो कर तवाफ़ शुरू किया और आम लोगों को तवाफ़ से मन्अ कर दिया लेकिन एक आ'राबी खलीफ़ा के आगे आगे चलते हुए उस के साथ तवाफ़ करने लगा, खलीफ़ा पर येह बात ना गवार गुज़री, अपने दरबान की तरफ़ मुतवज्जेह हुवा गोया कि येह इशारा था कि इस को मन्अ करे, दरबान ने आगे बढ़ कर उस आ'राबी से कहा : “ऐ बहू ! तवाफ़ न कर ताकि मुसलमानों का अमीर तवाफ़ कर ले ।” आ'राबी ने जवाब दिया : “इस मक़ाम और बैते हराम में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सब लोग बराबर हैं । चुनान्चे, **अल्लाह** तअ़ला इरशाद फ़रमाता है :

﴿٥﴾ سَوَاءَنِ الْعَاكِفُ فِيهِ وَالْبَادِئُ وَمَنْ يَرُدَّ

فِيهِ بِالْحَادِ بِظُلْمٍ نُدَقَهُ مِنْ عَذَابِ إِلِيمٍ

(پ ۱۷، الحج ۲۵)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** कि उस में एक सा हक़ है वहां के रहने वाले और परदेसी का और जो उस में किसी ज़ियादती का ना हक़ इरादा करे हम उसे दर्दनाक अज़ाब चखाएंगे ।

जब हारुनुरशीद ने आ'राबी का येह जवाब सुना तो दरबान को रोकने से मन्अ कर दिया फिर बोसा देने के लिये हज़रे अस्वद के पास आया तो आ'राबी ने उस से पहले बोसा दे लिया, जब मक़ामे इब्राहीम पर नमाज़ पढ़ी तो आ'राबी ने फिर आगे बढ़ कर उस से पहले नमाज़ अदा कर ली । जब हारुनुरशीद नमाज़ व तवाफ़ से फ़ारिग़ हुवा तो दरबान को हुक्म दिया : “आ'राबी को मेरे पास लाओ ।” दरबान आ'राबी के पास आया और कहने लगा : “अमीरुल मोअमिनीन के पास चलो ।” आ'राबी ने जवाब दिया : “मुझे उस की हाज़त नहीं, अगर उसे कोई हाज़त है तो वोह खुद ही पूरी करने की कोशिश करे ।” दरबान गुस्से में पलटा और खलीफ़ा को उस की बात बताई । येह सुन कर हारुनुरशीद ने कहा : “उस ने सच कहा है, हम हाज़तमन्द हैं तो हमें ही उस के पास जाना चाहिये ।” फिर हारुनुरशीद उठा जब कि दरबान उस के सामने खड़ा था और आ'राबी के पास जा कर उसे सलाम किया, उस ने जवाब दिया । खलीफ़ा ने उस से पूछा : “ऐ अरबी भाई ! क्या मैं तुम्हारी इजाज़त से यहां बैठ सकता हूं ?” तो आ'राबी ने बिला ख़ौफ़ो ख़तर जवाब दिया : “येह घर मेरा नहीं, न ही हरम मेरा है, येह घर भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का है और हरम भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का, यहां हम सब बराबर हैं । तू अगर चाहे तो बैठ जा और चाहे तो लौट जा ।”

हारुनुरशीद ने जब ऐसी बात सुनी जो उस के ज़ेहन में खटकी भी न थी तो उसे इन्तिहाई नागवार गुज़रा, वोह सोच भी न सकता था कि कोई शख्स मेरे साथ यूं गुफ़्तगू करेगा । बहरहाल वोह उस आ'राबी के पहलू में बैठ गया और उस से पूछने लगा : “ऐ आ'राबी ! मैं तुम से तुम्हारे फ़र्ज के मुतअल्लिक़ पूछता हूं, अगर तुम उसे बजा लाते हो तो दीगर फ़राइज़ को भी अच्छी तरह अदा करते होगे और अगर उसे ही अदा नहीं करते तो दीगर फ़राइज़ में भी कोताही करते होगे ।” आ'राबी ने उल्टा खलीफ़ा से सुवाल कर दिया : “तुम येह सुवाल सीखने के लिये कर रहे हो या शरारत के

ललये ?" हारुनुरशीद उस के फौरन जवाब देने से बहुत हैरान हुवा और कहने लगा : "नहीं, मैं ने तो हुसूले इल्म के ललये सुवाल कलया है ।" येह सुन कर आ'राबी बोला : "तो फलर उठ और सुवाल करने वाले के मक़ाम पर बैठ जा ।" ख़लीफ़ा हारुनुरशीद खड़ा हुवा और आ'राबी के सामने दो जानू बैठ गया तो आ'राबी ने कहा : "अब तू सहीह जगह बैठा अब जो पूछना है पूछ ।" तो हारुनुरशीद ने सुवाल कलया : "मुझे इस के मुतअल्ललक़ बताइये जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप पर फ़र्ज कलया है ।" आ'राबी कहने लगा : "तुम किस फ़र्ज के मुतअल्ललक़ पूछ रहे हो ? एक फ़र्ज के मुतअल्ललक़ या पांच के मुतअल्ललक़ ? या सत्तरह के मुतअल्ललक़ ? या चौतीस के मुतअल्ललक़ ? या चोरानवे के मुतअल्ललक़ ? या चालीस में से एक के मुतअल्ललक़ ? या ज़लन्दगी भर में एक के मुतअल्ललक़ ? या दो सो में से पांच के मुतअल्ललक़ ?" हारुनुरशीद बतौरै मुज़ाह हंस पड़ा, फलर कहने लगा : "मैं ने तुम से सलर्फ़ फ़र्ज के मुतअल्ललक़ पूछा और तुम ने मुझे पूरे ज़माने का हलसाब दे दलया ।" आ'राबी बोला : "ऐ हारुन ! अगर दीन में हलसाब न होता तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बरोजे क़लयामत तमाम मख़लूक से हलसाब न लेता । चुनान्चे,

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿16﴾ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान** : तो कलसी जान पर कुछ जुल्म न होगा और अगर कोई चीज़ राई के दाने के बराबर हो तो हम उसे ले आएंगे और हम काफ़ी हैं हलसाब को ।  
 خَرْدَلٌ أَتَيْنَاهَا وَقَفَىٰ بِنَا حُسَيْنٍ ۝ (١٧٠-١٧١)

जब आ'राबी ने ख़लीफ़ा को "या हारुन" कह कर मुखातब कलया और "या अमीरल मोअमिनीन" न कहा तो हारुनुरशीद के चेहरे पर गुस्से के आधार नुमायां हो गए, उस की हालत मुतग़थ़ीर हो गई और उसे सख़्त तकलीफ़ पहुंची मगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ग़ज़ब से उस की हलफ़ाजत फ़रमाई और जब उस ने जान ललया कल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस आ'राबी को इस कललाम की ताक़त व तौफ़ीक़ अता फ़रमाई है तो वोह अपनी हालत पर लौट आया । फलर हारुनुरशीद ने कहा : "मेरे आबा व अज्दाद की मलट्टी की क़सम ! अगर तूने अपनी बात की वज़ाहत न की तो सफ़ा व मरवा के दरमलयां मैं तेरी गरदन मारने का हुक्म दे दूंगा ।" दरबान ने गुज़ारलश की : "ऐ अमीरल मोअमिनीन ! इस मुक़द्दस मक़ाम की अज़मत के पेशे नज़र **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ललये इसे मुआफ़ कर दीजलये ।" आ'राबी उन दोनों की बात सुन कर हंसने लगा हत्ता कल वोह चलत लैट गया, हारुनुरशीद ने पूछा : "क्यूं हंस रहे हो ?" तो उस ने जवाब दलया : "तुम दोनों पर हैरत करते हुए हंस रहा हूं कल एक यक़ीनी मौत को बख़्शवाना चाहता है और दूसरा उस मौत के लाने में जल्दी कर रहा है जलस का वक़्त नहीं आया ।" जब हारुनुरशीद ने उस की येह बात सुनी तो दुन्या को हक़ीर समझने लगा । फलर उस ने कहा : "मैं तुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का वलसलता देता हूं कल अपनी बात की वज़ाहत कर दे, मेरा दलल इस की वज़ाहत सुनने के ललये बेचैन है ।"

तो आ'राबी ने जवाब देते हुए कहा : "तुम ने पूछा था कल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझ पर क़्या फ़र्ज कलया है तो सुनो ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझ पर क़पीर उमूर फ़र्ज कलये हैं । जो मैं ने तुम्हें एक



फ़र्ज़ के मुतअल्लिक कहा है तो वोह दीने इस्लाम है, पांच फ़राइज़ से मुराद पांच नमाज़ें हैं, सत्तरह फ़राइज़ से मुराद दिन रात की नमाज़ों की सत्तरह रकअतें हैं, चौतीस फ़राइज़ से मुराद इन रकअतों के चौतीस सजदे हैं, चोरानवे फ़राइज़ से मुराद इन नमाज़ की तक्बीरात हैं और चालीस में से एक से मुराद चालीस दीनार में से एक दीनार ज़कात है और ज़िन्दगी भर में एक फ़र्ज़, हज़ है और दो सो में से पांच से मुराद चांदी की ज़कात है।" ख़लीफ़ा हारूनुरशीद इन मसाइल की वज़ाहत और आ'राबी की उम्दा गुफ़्तगू से बहुत खुश हुवा और उस को बहुत ज़हीन समझा और आ'राबी उस की नज़र में बहुत अज़ीम हो गया। फिर आ'राबी ने कहा : "तुम ने मुझ से सुवाल किया, मैं ने जवाब दे दिया, अब मैं सुवाल करता हूं और तुम जवाब दो।"

हारूनुरशीद ने कहा : "आप पूछिये।" आ'राबी ने सुवाल किया : "मुसलमानों का अमीर उस शख्स के मुतअल्लिक क्या कहता है जिस पर सुब्ह के वक़्त एक औरत को देखना हराम हो लेकिन जब ज़ोहर हो तो वोह औरत उस पर हलाल हो जाए और जब अस्र हो तो फिर हराम हो जाए, जब मग़रिब हो तो हलाल हो जाए और इशा के वक़्त फिर हराम हो जाए और फ़ज़्र के वक़्त फिर हलाल, इसी तरह ज़ोहर के वक़्त हराम, अस्स के वक़्त हलाल, मग़रिब के वक़्त हराम और इशा के वक़्त फिर हलाल हो जाए?" आ'राबी का सुवाल सुन कर हारूनुरशीद ने कहा : "आप ने मुझे ऐसे समन्दर में डाल दिया है जिस से आप के इलावा कोई नहीं निकाल सकता।" आ'राबी ने कहा : "तुम तो मुसलमानों के अमीर हो, तुम से बढ़ कर कोई नहीं हो सकता और तुम्हें किसी बात में ला जवाब नहीं होना चाहिये फिर मेरे सुवाल से कैसे आजिज़ आ गए हो?" हारूनुरशीद अर्ज करने लगा : "आप के इल्म की कद्रो मन्ज़िलत अज़ीम है और आप का ज़िक्र बुलन्द है, इस बैतुल्लाह शरीफ़ की इज़ज़त का सदका ! मैं चाहता हूं कि आप खुद इस की वज़ाहत फ़रमा दें।" उस आ'राबी ने कहा : "मैं बसद महबबतो एहतिराम बयान किये देता हूं। मैं ने एक शख्स के मुतअल्लिक सुवाल किया कि उस का सुब्ह के वक़्त एक औरत को देखना हराम है तो येह वोह है जो ग़ैर की लौंडी को देखे कि येह लौंडी उस पर हराम है और जब ज़ोहर हो तो उस को ख़रीद ले, अब वोह उस के लिये हलाल हो गई लेकिन जब अस्र हो तो आज़ाद कर दे अब वोह उस पर हराम हो गई लेकिन जब मग़रिब हो तो उस से निकाह कर ले तो वोह फिर उस पर हलाल हो गई। जब इशा हो तो त़लाक़ दे दे अब फिर वोह हराम हो गई लेकिन जब फ़ज़्र हो तो रुजूअ कर ले वोह दोबारा हलाल हो गई। जब ज़ोहर हो तो वोह शख्स इस्लाम से फिर जाए तो वोह उस पर हराम हो गई लेकिन जब अस्र हो तो तौबा कर के औरत से रुजूअ कर ले तो वोह उस के लिये हलाल हो गई। जब मग़रिब हो तो औरत मुरतद हो जाए तो वोह उस पर हराम हो गई लेकिन जब इशा हो तो तौबा कर के रुजूअ कर ले तो फिर हलाल हो गई।" हारूनुरशीद आ'राबी के इस सुवाल और फिर खुद ही जवाब देने से इन्तिहाई मुतअज्जिब और खुश हुवा फिर उस ने उस आ'राबी को दस हज़ार दिरहम देने का हुक्म दिया जब वोह दिरहम लाए गए तो आ'राबी ने कहा : "मुझे इस की ज़रूरत नहीं।" और दिरहम वापस कर दिये। हारूनुरशीद ने कहा : "क्या आप चाहते हो कि मैं आप का वज़ीफ़ा मुक़र्रर कर दूं जो सारी ज़िन्दगी आप को काफ़ी हो?" तो आ'राबी ने कहा : "जो ज़ात तुम्हें रोज़ी देती है वोही मुझे भी देती

है।" खलीफ़ा ने कहा : "अगर आप पर कोई कर्ज़ हो तो हम अदा कर देते हैं।" बहर हाल आ'राबी ने उस से कुछ क़बूल न किया फिर उस ने चन्द अश'आर कहे, जिन का मफ़हम यह है :

"दुन्या के अतिथ्यात कई सालों से लगातार हमारे पास आ रहे हैं कभी तो मैले कुचेले होते हैं और कभी लज्ज़त बख़्श होते हैं लेकिन मैं उन में से किसी भी ऐसी शै को क़बूल करने को तय्यार नहीं जो मेरे मरने के बा'द बाक़ी न रहे और मैं कल उसे अपने वारिषों के लिये छोड़ जाऊं, गोया क़ब्र में मुझ पर मिट्टी डाली जा रही है और मेरे दोस्त अहबाब मेरे इर्द गिर्द खड़े नोहा कनां हैं और गोया वोह दिन आ चुका जिस में आग के शो'ले भड़क कर लोगों को अपनी लपेट में ले रहे हैं और वोह दिन सुनने वालों को क़सम दे रहा है कि मेरे रब्ब عَزَّوَجَلَّ की इज्ज़तो जलाल की क़सम ! मैं तुम सब से ज़रूर इन्तिकाम लूंगा।"

जब आ'राबी अश'आर कह चुका तो हारूरुशीद ने अफ़सोस नाक आह खींची और उस से उस के घर और शहर के मुतअल्लिक़ दर्याफ़्त किया तो लोगों ने बताया कि येह हज़रते सय्यिदुना मूसा रज़ा बिन जा'फ़र सादिक़ बिन मुहम्मद बिन अली बिन हुसैन बिन अली बिन अबी तालिब हैं, देहातियों के लिबास में मल्बूस रहते हैं और ज़ोहदो वरअू के पैकर हैं। येह सुन कर खलीफ़ा हारूरुशीद खड़ा हो गया और उन की आंखों के दरमियान बोसा दिया फिर (हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तरफ़ निस्वत करते हुए) येह आयते मुबारका तिलावत की :

﴿۱۷﴾ اَللّٰهُ اَعْلَمُ حَيْثُ يَجْعَلُ رِسَالَتَهُ

(प ८१, अलानعام : १२६)

तर्जमा कन्जुल इमान : **अल्लाह** खूब जानता है जहां अपनी रिसालत रखे। (१)

येह ऐसे बरगुज़ीदा बन्दे हैं जो लोगों के दरमियान अपनी हालत मख़फ़ी रखते हैं, वोह परागन्दा सर और गुबार आलूद होते हैं, लोग उन की परवाह नहीं करते हालांकि उन का **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हां बहुत बुलन्द मक़ाम होता है। येह तो मक्बूल बन्दों की सिफ़ात हैं तो ऐ रान्दए दरगाह ! तेरी कैसी सिफ़ात हैं ? येह तो मुक़रबीन की सिफ़ात हैं तो ऐ रब्ब की बारगाह से धुत्कारे हुए शख़्स ! तेरी सिफ़ात कैसी हैं ? येह तो नेक बन्दों की सिफ़ात हैं तो ऐ महरूम शख़्स ! अपने नफ़्स पर रो। ऐ मिस्कीन ! तेरा बुरा हो कि तू दिन के वक़्त बेकार कामों में मस्रूफ़ रहता और रात सोने में गुज़ारता है।

**फ़कीर के औसाफ़ :**

दुन्या में फ़कीर के औसाफ़ येह होने चाहियें : दिन को रोज़ा रखे, रात को क़ियाम करे, रुकूअ व सुजूद करने वाला, रब्ब عَزَّوَجَلَّ की रहमत का तालिब, उस की बख़्शिश में रग़बत रखने वाला, सब्रो शुक्र करने वाला, दूसरों से नरमी व शफ़क़त से पेश आने वाला, तन्हाई इख़्तियार करने वाला, कम गुफ़्तगू करने वाला, कम खाने वाला और ज़िक़्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़षरत करने वाला,

①.....मुफ़सिरे शहीर, खलीफ़ा आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़जिल सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं : "या'नी **अल्लाह** जानता है कि नबुव्वत की अहलिय्यत और उस का इस्तिह़काक़ किस को है, किस को नहीं। उम्र व माल से कोई मुस्तहिक्के नबुव्वत नहीं हो सकता।"

अच्छी सोच का मालिक हो, लोगों से दूर रहे, दोस्त कम बनाए और हुज्जो मलाल की कषरत करे, दुन्या के मालो मताअ और उस के शुब्हात से बचने वाला हो। ख्वाहिशात और दुन्या की हीला साज़ी और मक्रो फ़रेब से इज्तिनाब करने वाला हो और ख़रीदो फ़रोख़्त में मशगूल रहने वाला न हो, उस के लिये किसी से लिया जाए, न ही किसी को दिया जाए, अगर मौजूद हो तो पहचाना न जाए और अगर ग़ाइब हो तो याद न किया जाए, बहुत ज़ियादा तन्हाई इख़्तियार करने वाला, कषरत से आंसू बहाने वाला हो, खुद भी किसी चीज़ का मालिक न हो, और कोई दूसरा भी उस पर इख़्तियार न रखता हो, अपने नफ़्स का मुहासबा करने वाला, रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ को पेशे नज़र रखने वाला हो।

उस की सांसे ह़राम सूंघने से महफूज़ हों, दिल इताअते इलाही عَزَّوَجَلَّ से मानूस हो, बहुत ज़ियादा दुन्यवी फ़िक्कें न करे बल्कि दुन्या को इब्रत की निगाह से देखे, कम ख्वाहिशात रखने वाला और शुबा वाली चीज़ों को तर्क करने वाला हो, हमेशा इबादत पर कमरबस्ता, बहुत ज़ियादा क़नाअत करने वाला, हीलों को छोड़ देने वाला, बन्दों के वसीलों का बहुत कम मोहताज हो, उसे कभी भी लोगों की ज़रूरत व हाज़त न पड़े, अपने मौला عَزَّوَجَلَّ पर भरोसा करते हुए कल पर नज़र न रखे, सिर्फ़ उसी की इबादत करे, दुन्या से मुकम्मल तौर पर कनाराकश रहे और अपने आप को सिर्फ़ रब्ब عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ मुतवज्जेह रखे, उस के पास बक़द्रे ज़रूरत माल भी न हो और न ही ज़र्रा बराबर किसी शै का मालिक हो, सिर्फ़ रब्ब عَزَّوَجَلَّ की इबादत तो अत में मसरूफ़ रहे और उस के ग़ैर से मुस्तग़नी हो जाए, उसे मुनाफ़क़त की हवा भी न लगी हो और न ही बाज़ारों में घूमता फिरता हो, रुकावट बने बिग़ैर रास्ते पर चलने वाला हो। उस का बदन कमज़ोर, जिस्म हल्का फुल्का, नज़र पाक हो, इल्मो अमल का पैकर और दुन्या से कनाराकश हो, मुजाहदात में मगन रहे और जाते बारी तअाला के जल्वों में मुस्तगरक़ रहने वाला और मलकूत की तरफ़ सबक़त ले जाने वाला हो, उस जाते हक़ को हर लम्हा पेशे नज़र रखे जो ज़िन्दा है जिसे कभी फ़ना नहीं, अकड़ कर न चलने वाला और न ही खुश व ख़ुर्रम नज़र आने वाला हो।

लोगों से दूर रहने वाला, उन पर उम्मीदें न रखने वाला, तकब्बुर न करने वाला, सच्ची बात कहने वाला, अच्छे काम करने वाला हो। दुन्या वालों से अलाहिदगी में सुकून महसूस करे, जंगलात के दरन्दों से मानूस हो, मैदानों और पहाड़ों में घूमने वाला हो, दुन्या की महब्बत से ख़ाली हो और महब्बत की आंख से उसे कभी न देखे, अपने अज़ीज़ो अक़रबा और अहबाब को **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की ख़ातिर छोड़ दे, अपने नफ़्स पर ह़द काइम करे और मेहनत को लाज़िम पकड़े, इस बात का यकीन रखे कि दिल **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** का घर है लिहाज़ा उस की पाकी व तह़ारत का ख़याल रखे ताकि वोह उस में जाते बारी तअाला की तजल्लियात पाए और उस के दिल में खुदा के सिवा कोई न हो और अगर उसे दुन्या और उस की तमाम ने'मते दे दी जाएं तो उन की तरफ़ आंख उठा कर भी न देखे। मज़क़ूरा औसाफ़ का ह़ामिल शख़्स ही फ़कीर हो सकता है।



### जन्नत का खज़ाना :

मन्कूल है कि चार चीज़ें जन्नत का खज़ाना हैं : (1).....मुसीबत को छुपाना (2).....फ़का कशी को छुपाना (3).....छुपा कर सदका देना और (4).....दुख तकलीफ़ को छुपाना । एक कौल येह है कि कामिल इन्सान में दो खूबियां होती हैं : (1).....वोह बातिल से राज़ी नहीं होता और (2).....हक़ से मुंह नहीं मोड़ता ।

### छे कामों में जल्दी करो :

मन्कूल है कि जल्दबाज़ी शैतान की तरफ़ से है मगर इन छे कामों में जल्दी करना शैतान की तरफ़ से नहीं, वोह येह हैं : (1).....जब नमाज़ का वक़्त हो जाए तो उस में जल्दी करना (2).....मेहमान आए तो उस की मेहमान नवाज़ी करना (3).....किसी के मरने पर उस की तज्हीज़ व तक्फ़ीन करना (4).....बच्ची के बालिग़ होने पर उस की शादी करना (5).....क़र्ज़ की अदाएगी का वक़्त आ जाए तो उसे जल्दी जल्दी अदा करना और (6).....कोई गुनाह हो जाए तो फ़ौरन तौबा करना ।

اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِهِ وَصَحْبِهِ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ



### जन्नत से महश्म

हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है, नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : لَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ قَتَاتٌ : या'नी "चुग़लख़ोर जन्नत में दाख़िल नहीं होगा ।"

(صحيح البخارى، حديث ٦٠٥٦، ص ٥١٢)

**बयान 14 : अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام व औलिया की मुबारक निब्बगियां हम्मे बारी तआला :**

सब ता'रीफें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने सारी काइनात को पैदा फरमाया और मुख्तलिफ चीजों को मुख्तलिफ सूरतें अता फरमाई। इन्सान को पानी से बनाया और उसे कुव्वते समाअत व बसारत अता की और अपनी कुदरत से तक्दीर को मुकर्रर फरमाया और अपनी हिकमत से अपनी निशानियों से इब्रतें ज़ाहिर फरमाई और नेक अमल करने वालों को आ'माल का क़ाबिले फख्र लिबास पहनाया जो उस की बारगाह में खुशूअ व खुजूअ और शिकस्ता दिली के साथ खड़ा हुवा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस के दिल को जोड़ दिया, जिस ने उस की रस्सी को मज़बूती से थामे रखा और मोहताजी में उस की तरफ़ रुजूअ किया उस ने उसे अपने फज़ल से माला माल कर दिया।

पाक है वोह ज़ात जिस की कुदरत से न कोई आगे बढ़ सकता है, न ही उस की वहदानिय्यत के क़रीब पहुंच सकता है, वोह समीओ बसीर है जो सुनता और देखता है, उस ने पानी की तरफ़ नज़र फरमाई तो वोह उस की हैबतो जलाल से पथ्थर बन गया, पथ्थरों की तरफ़ नज़र फरमाई तो वोह उस की रहूमत से सैलाब की तरह बहने लगे। उस ने निलगूं आस्मान को बिगैर सुतूनों के बुलन्द किया और उस में सूरज, चांद को बनाया और उसे चमकते हुए सितारों से सजाया वोह चमकदार मोतियों के मुशाबेह हैं और अपनी रहूमत से हवाएं भेजीं, और सितारे को रात के वक़्त चलने का हुक्म दिया तो वोह चलने लगा, और बादल को बारिश बरसाने का हुक्म दिया, और आस्मानी क़ल्ए की हिफ़ाज़त पर शहाबे षाकिब को मामूर फरमाया लिहाज़ा अब चोरी छुपे सुनने वाले शयातीन कुछ नहीं सुन सकते। इन्सानी फ़िक्क उस ज़ात को न समझ सकी और नाकाम हो कर वापस लौट आई और चटीयल मैदान में हैरान परेशान भटकने लगी, जिस ने उस का इन्कार किया और सरकशी की उसे उस ने अज़ाब में मुब्तला फरमा दिया, और जिस ने उस की तरफ़ रुजूअ किया, उस की वहदानिय्यत का ए'तिराफ़ किया, अज़िज़ी की और तकब्बुर न किया तो उस ने उसे अपना कुर्ब अता फरमा दिया। नाफ़रमानों को सज़ा देने से पहले इब्रत के लिये कड़क भेजी, और बारिश की खुशख़बरी देते हुए बिजली चमकाई और अपनी कुदरत की तेज़ हवाओं से बादल को गर्ज अता फरमाई, अपने करम के ख़ज़ानों से अपनी ने'मत की ठंडी हवाएं चलाई तो अहले मा'रिफ़त ने उस से मुश्को अम्बर को सूँघ लिया और उन्हें नेकी और बुराई का खुफ़या राज़ मा'लूम हो गया।

फिर हज़रते सय्यिदुना अबू यज़ीद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْمَجِيد को नुसरते खुदावन्दी की वोह दौलते सरमदी अता हुई कि आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने अपने तक्वा की बदौलत दुन्या को ताबेअ कर लिया। हज़रते सय्यिदुना शिब्ली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي ने महब्बत की दुल्हनों के लिये आरास्ता व पेरास्ता रात गुज़ारी तो महब्बते इलाही में दीवाने और टुकड़े टुकड़े हो गए। और हज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَزَّوَجَلَّ ने अपने सिपाहियों के साथ दुश्मन के ख़िलाफ़ चढ़ाई की और इबादते इलाही

के लिये तय्यार हो गए और हसरत के अलम में रोते रोते तमाम रात बसर कर दी। जब **अब्बाह** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي ने अपने वली हज़रते सय्यिदुना जुन्नून मिस्री पर अपना पोशीदा राज ज़ाहिर किया तो वोह महबूबते इलाही عَزَّ وَجَلَّ में दीवानावार फिरने लगे। और हज़रते सय्यिदुना मन्सूर हल्लाज عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الرَّزَّاق ने महबूबते इलाही عَزَّ وَجَلَّ का खालिस जाम पिया तो उन की ज़बां पर जारी हो गया।<sup>(1)</sup> जब औलियाए किराम رَحْمَتُهُمُ اللَّهُ تَعَالَى ने महबूबत का मज़ा चख लिया तो उन पर शौके दीदार की हवाएं चलने लग गईं, और उन्हें ख़बर दी गई कि **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ उन पर निगाहे करम और दिलकश तजल्ली फ़रमा रहा है। येह सुन कर उम्मीद रखने वालों ने तारीक रात में अज़िज़ी व इन्किसारी करते हुए अपने हाथ फैला दिये और मुजरिम ने उज़्र पेश करते हुए हकीर दिल के साथ अपना सर झुका लिया और गुनहगार पेशानियों से पकड़े जाने वाले दिन से ख़ौफ़ज़दा हो गया और **अब्बाह** तआला से हया और ख़ौफ़ करते हुए निगाहें नीचे कर लीं, अपने गुनाहों पर गिर्या व ज़ारी करने लगा और अपने ऐबों पर रोने धोने और आहो बुका करने में रातें काट दीं।

**हज़रते सय्यिदुना अय्यूब का इम्तिहान :**

मन्कूल है कि हज़रते सय्यिदुना अय्यूब عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की आजमाइश का वक़्त करीब आया तो हज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने हाज़िर हो कर अर्ज़ की : “ऐ अय्यूब (عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام) ! अंन करीब आप का रब्ब عَزَّ وَجَلَّ आप पर ऐसी आजमाइश और हौलनाक मुआमला नाज़िल फ़रमाएगा कि जिसे पहाड़ भी बर्दाश्त नहीं कर सकते।” तो हज़रते सय्यिदुना अय्यूब عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : “अगर मैं महबूब के साथ तअल्लुक में षाबित क़दम रहा तो ज़रूर सब्र करूंगा यहां तक कि कहा जाएगा : “येह इन्तिहाई तअज़्जुब खेज़

①.....अवाम में मशहूर है कि हज़रते सय्यिदुना हुसैन बिन मन्सूर हल्लाज عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الرَّزَّاق ने “أَنَا الْحَقُّ” (या’नी मैं हक़ हूँ) कहा था इस का रद्द करते हुए आ’ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदी दीनो मिल्लत अशशाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान फ़तावा रज़विय्या शरीफ़ में तहरीर फ़रमाते हैं : “हज़रते सय्यिदी हुसैन बिन मन्सूर हल्लाज قُدِّسَ سِرُّهُ जिन को अवाम “मन्सूर” कहते हैं, मन्सूर इन के वालिद का नाम था, और इन का इस्मे गिरामी हुसैन। (आप) अकाबिरे अहले हाल से थे, उन की एक बहन उन से ब दरजहा मर्तबए विलायतो मा’रिफ़त में जाइद थीं। वोह आखिर शब को जंगल तशरीफ़ ले जातीं और यादे इलाही (عَزَّ وَجَلَّ) में मस्रूफ़ होतीं। एक दिन उन की आंख खुली, बहन को न पाया, घर में हर जगह तलाश किया, पता न चला, उन को वस्वसा गुज़रा, दूसरी शब में क़स्दन सोते में जान डाल कर जागते रहे। वोह अपने वक़्त पर उठ कर चलीं, येह आहिस्ता आहिस्ता पीछे हो लिये, देखते रहे। आस्मान से सोने की ज़न्जीर में याकूत का जाम उतरा और उन के दहने मुबारक (या’नी मुंह शरीफ़) के बराबर आ लगा, उन्होंने ने पीना शुरू अ किया, इन से सब्र न हो सका कि येह जन्नत की ने’मत न मिले। वे इख़्तियार कह उठे कि बहन ! तुम्हें **अब्बाह** (عَزَّ وَجَلَّ) की क़सम कि थोड़ा मेरे लिये छोड़ दो, उन्होंने ने एक जुरआ (या’नी एक घूंट) छोड़ दिया, उन्होंने ने पिया, उस के पीते ही हर जड़ी बूटी, हर दरो दीवार से उन को येह आवाज़ आने लगी कि कौन उस का ज़ियादा मुस्तहिक़ है कि हमारी राह में क़त्ल किया जाए। उन्होंने ने कहना शुरू अ किया, “أَنَا لَأَحَقُّ” बेशक मैं सब से ज़ियादा इस का सज़ावार (या’नी हक़दार) हूँ।” लोगों के सुनने में आया, “أَنَا الْحَقُّ” (या’नी मैं हक़ हूँ) वोह (लोग) दा’वए खुदाई समझे, और येह (या’नी खुदाई का दा’वा) कुफ़्र है। और मुसलमान हो कर जो कुफ़्र करे मुरतद है और मुरतद की सज़ा क़त्ल है।”

(صحيح البخارى، كتاب استنابة المرتدين والمعاندين وقتالهم، ص ٥٧٧، حديث نمبر ٦٩٢٢) फ़रमाते हैं : **تَرْجَمًا : जो अपना दीन बदल दे उसे क़त्ल करो।** (फ़तावा रज़विय्या, जि. 26, स. 400)



बन्दा है।” तो उन्हें एक आवाज़ सुनाई दी : “ऐ अय्यूब (عَلَيْ نَبِيْنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام) ! मेरी आजमाइश के लिये तय्यार हो जाओ और मेरा हुक्म व फैसला नाज़िल होने तक सब्र करते रहो।” आप की आजमाइश का सबब यह था कि इब्लीस लईन ने हसद की वजह से तरह तरह के मक्रो हीले से आप पर ग़ालिब होना चाहा लेकिन न हो सका तो कहने लगा : “**يَا اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ ! अय्यूब शुक्र गुज़ार बन्दा है और इस लिये तेरा फ़रमां बरदार है कि तू ने उसे माल, रिज़क और अवलाद में वुस्अत अता फ़रमाई और सिह्हत बख़्शी है, अगर तू ये सब कुछ वापस ले ले तो एक लम्हा भी तेरी इताअत न करेगा।” तो **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : “जा, मैं ने तुझे उस पर मुसल्लत कर दिया और वोह अपनी हालत हरगिज़ तब्दील न करेगा।” पस पहले दिन अवलाद ले कर आजमाइश हुई तो आप **عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** और ज़ियादा मेहनत करने लगे। दूसरे दिन माल को जला दिया गया तो हज़रते सय्यिदुना अय्यूब **عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** ने फ़रमाया : “तमाम अताएं उसी की हैं, चाहे तो ले ले और चाहे तो अता कर दे।” तीसरे दिन इब्लीस मल्लुन ने आप **عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** के जिस्म में फूंक मारी जब कि आप **عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** नमाज़े फ़ज़्र अदा फ़रमा रहे थे कि आप जिस्मानी बीमारी में मुब्तला हो गए, सारे बदन में आबले पड़ गए लेकिन आप **عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** ज़ाहिरो बातिन में **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ का ज़िक्र करते रहे। मालो अवलाद चले जाने के बा’द जब आप जिस्म की आजमाइश में मुब्तला हुए तो फ़रमाया : “तमाम ख़ूबियां **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ के लिये जिस ने मुझे अपनी इबादत के लिये चुन लिया और मुझ पर अपना ख़ास फ़ज़ल और भलाई फ़रमाई और मुझे अपने इलावा किसी चीज़ में मशगूल न रखा।” हज़रते सय्यिदुना अय्यूब **عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** हमेशा ज़िक्र करते रहे और अपने रब्ब **عَزَّ وَجَلَّ** की हम्द और शुक्र बजा लाते रहे।

**प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो !** आजमाइश इन्सान के अहवाल को ज़ाहिर कर देती है और महब्बत के दा’वेदार की हालत बहुत जल्द वाजेह कर देती है। **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ ने अपने प्यारे नबी हज़रते सय्यिदुना अय्यूब **عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** पर सत्तर हज़ार किस्म की आजमाइशें नाज़िल फ़रमाई लेकिन आप **عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالसَّلَام** ने सब्रो शुक्र किया और शिक्वा न किया। तो सुन लो, ऐ भाइयो ! तुम तो एक कांटा भी बर्दाश्त नहीं कर सकते जब कि हज़रते सय्यिदुना अय्यूब **عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** को अवलाद ले कर आजमाया गया मगर आप **عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالसَّلَام** ने इबादत में इज़ाफ़ा कर दिया, माल ले लिया गया मगर महब्बते इलाही **عَزَّ وَجَلَّ** में ज़री बराबर कमी न आई, ज़ियादा से ज़ियादा इबादत करते रहे और तमाम आजमाइशों पर राजी रहे और ज़ाहिरी व बातिनी तौर पर बिल्कुल कोई शिक्वा न किया। चुनान्चे, आप **عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالसَّلَام** को निदा दी गई : “ऐ अय्यूब (عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام) ! तू ने हमारी आजमाइशों पर सब्र किया तो हम तुझे तेरा माल और अवलाद लौटा देंगे और तेरे जिस्म को आजमाइश से आफ़ियत बख़्श देंगे और तेरा नाम अपनी आख़िरी किताब में लिख देंगे और तेरा ज़िक्र महबूब बन्दों के रजिस्टर में फैला देंगे।”

(चुनान्चे, **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है)

﴿1﴾ اُرْكُضْ بِرِجْلِكَ هَذَا مُغْتَسَلٌ بَارِدٌ وَشَرَابٌ 0 (प: २३, स: ६२)

तर्जमए कन्जुल ईमान : हम ने फ़रमाया ज़मीन पर अपना पाउं मार, येह है ठंडा चश्मा नहाने और पीने को ।

**हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम** عَلَيَّ نَبِيَّنا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام **क** परन्धों के ज़िन्दा करना :

मन्कूल है कि जब हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम **अब्बाह** عَلَيَّ नَبِيَّنا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने अर्ज़ की : “ऐ मेरे मौला **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे दिखा तू मुर्दों को कैसे ज़िन्दा फ़रमाता है ?” तो **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया : “ऐ इब्राहीम (عَلَيْهِ السَّلَام) ! तुझे हमारी कुदरत में शक है जो तू दलील तलब करते हुए कहता है कि मुझे दिखा ?” तो आप **अब्बाह** عَلَيَّ नَبِيَّنا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالसَّلَام ने अर्ज़ की : “ऐ मेरे रब्ब **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ ! तू ने मुझे दिल की आंख से दिखाया, अब मैं ज़ाहिरी आंख से देखना चाहता हूं ताकि मैं ज़ाहिरी व बातिनी निगाह से देख लूं।” तो **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ ने हुक्म फ़रमाया : “चार परन्दे पकड़ कर ज़ब्ह कर और उन्हें टुकड़े टुकड़े कर के हर पहाड़ पर एक एक टुकड़ा रख दे और उन के सरों को अपनी उंगलियों के दरमियान रख कर उन को बुला ।”

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम **अब्बाह** عَلَيَّ नَبِيَّنا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالसَّلَام ने ऐसा ही किया तो कुदरते खुदावन्दी से एक ऐसी हवा चली कि बिखरे हुए अज्जा और टुकड़े टुकड़े किया हुवा गोशत जम्अ हो कर हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम **अब्बाह** عَلَيَّ नَبِيَّنا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالसَّلَام के पास हाज़िर हो गए और उन में से हर एक परन्दे ने अपना सर आप **अब्बाह** عَلَيَّ नَبِيَّنا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالसَّلَام की उंगलियों से ले लिया । जब वोह **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ की कुदरत से ज़िन्दा हो गए तो हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम **अब्बाह** عَلَيَّ नَبِيَّنا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالसَّلَام के पास रुक कर अर्ज़ करने लगे : “ऐ इब्राहीम (عَلَيْهِ السَّلَام) ! आप हम से क्या चाहते थे कि आप ने हमें ज़ब्ह कर दिया ? याद रखें ! जो कुछ आप ने हमारे साथ किया है हो सकता है आप के साथ भी ऐसा ही हो । चुनान्चे उसी रात आप **अब्बाह** عَلَيَّ नَبِيَّنا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالसَّلَام ने ख़्वाब में अपने बेटे को ज़ब्ह करते हुए देखा, गोया **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमा रहा है : “ऐ इब्राहीम (عَلَيْهِ السَّلَام) ! हम ने तुझे मुर्दे ज़िन्दा कर के दिखाए अब तुम हमें ज़िन्दों को मार कर दिखाओ ।” तो आप **अब्बाह** عَلَيَّ नَبِيَّنا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالसَّلَام ने अपने बेटे हज़रते सय्यिदुना इस्माईल **अब्बाह** عَلَيَّ नَبِيَّنا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالसَّلَام से इरशाद फ़रमाया :

﴿2﴾ يٰبُنَيَّ اِنِّىٓ اَرٰى فِى الْمَنَامِ اَنِّىٓ اَذْبَحُكَ فَانْظُرْ مَاذَا تَرٰى ط (प: २३, स: १०२)

तर्जमए कन्जुल ईमान : ऐ मेरे बेटे मैं ने ख़्वाब देखा मैं तुझे ज़ब्ह करता हूं अब तू देख तेरी क्या राए है ।

तो उन्होंने ने **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ैसले के आगे सर झुका दिया और सब्र करते हुए अर्ज़ की :

﴿3﴾ قَالَ يٰاَبَتِ افْعَلْ مَا تُؤْمُرُ سَتَجِدُنِيْ اِنْ

شَاءَ اللّٰهُ مِنَ الصّٰبِرِيْنَ 0 (प: २३, स: १०२)

तर्जमए कन्जुल ईमान : कहा : ऐ मेरे बाप ! कीजिये जिस बात का आप को हुक्म होता है खुदा ने चाहा तो करीब है कि आप मुझे साबिर पाएंगे ।

ऐ मेरे बाप ! कौन है जो हक़िमे आ'ला عَزَّوَجَلَّ के हुक्म पर ए'तिराज करने की ताक़त रखता हो । ऐ मेरे बाप ! अगर मेरा मौला عَزَّوَجَلَّ मुझ से राज़ी हो जाए तो आप वोह काम कर गुज़रिये जिस का आप को हुक्म दिया गया । बेशक मौत बड़ी अच्छी और मीठी है ।

मन्कूल है कि जब हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने कलामे खुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ का लज़ीज़ जाम नोश फ़रमा लिया और आग लेने के लिये निकले तो जब्बार की इनायत से आप عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की क़द्र बढ़ गई और जब आप عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالसَّلَام दरख़्त के पास पहुंचे जब कि आप عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالसَّلَام का दिल अन्वारे खुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ का मुन्तज़िर था कि एक निदा सुनी : “ऐ मूसा ।” तो उस से आप عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالसَّلَام को मज़ीद कुर्ब और उन्स मिला । चुनान्चे, आप उस पर ग़ौरो फ़िक्क करते हुए हर सम्त की तरफ़ बढ़ने लगे । तो आप عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالसَّلَام को फिर एक निदा सुनाई दी : “ऐ मूसा ! फ़िक्क न कीजिये ।” फिर इरशाद हुवा :

﴿4﴾ فَاخْلَعْ نَعْلَيْكَ إِنَّكَ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طوى 0 (प १६, १७: १२)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो तू अपने जूते उतार डाल, बेशक तू पाक जंगल तुवा में है ।

जो ऐसा मक़ाम है जहां गुनाहों से आलूदा बन्दा नहीं आ सकता और वहशत ज़दा आए तो मानूस हो जाता है आप عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالसَّلَام ने फिर निदा सुनी : “ऐ मूसा ! तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक मैं ही हूं अब्बाह कि मेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं, तू मेरी बन्दगी कर ।” लिहाज़ा मुझे पहचान, मैं तेरा अज़ीम मा'बूद हूं, मुझे ही अज़मत वाला जान, और मैं रिज़क देने वाला मालिक हूं लिहाज़ा मेरे सिवा किसी से सुवाल न कर बल्कि मुझ से मांग, और मैं शदीद सज़ा देने वाला हूं लिहाज़ा मेरे अज़ाब से डर, और जो मुझे याद करे मैं उस के क़रीब होता हूं लिहाज़ा मुझे याद कर ।

हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالसَّلَام ने अर्ज़ की : ऐ मेरे मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ ! तू ने अपनी तरफ़ मेरी रहनुमाई फ़रमाई और मुझे अपना कुर्ब अता फ़रमाया, (फिर आप عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالसَّلَام ने अर्ज़ की :)

رَبِّ ارْنِيْٓ اَنْظُرْ اِلَيْكَ ط قَالَ لَنْ تَرٰنِيْ ﴿5﴾ وَلٰكِنْ اَنْظُرْ اِلَى الْجَبَلِ فَاِنْ اسْتَقَرَّ مَكَانَهٗ فَسَوْفَ تَرٰنِيْٓ ج فَلَمَّا تَجَلٰٓى رَبُّهٗ لِلْجَبَلِ جَعَلَهٗ دَكَّا وَّخَرَّ مُوسٰٓى صَعِيْقًا ج (प ९, १०: १६३)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ रब्ब मेरे ! मुझे अपना दीदार दिखा कि मैं तुझे देखूं । फ़रमाया : तू मुझे हरगिज़ न देख सकेगा हां ! उस पहाड़ की तरफ़ देख यह अगर अपनी जगह पर ठहरा रहा तो अज़न क़रीब तू मुझे देख लेगा फिर जब उस के रब्ब ने पहाड़ पर अपना नूर चमकाया उसे पाश पाश कर दिया और मूसा गिरा बेहोश । (1)

①.....मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ज़िल सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِي तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं : “لَنْ تَرٰنِيْ” का मा'ना यह है कि तू मुझे हरगिज़ न देख सकेगा या'नी इन आंखों से सुवाल कर के । बल्कि दीदारे इलाही बिग़ैर सुवाल के महज़ उस की..... (बक़िय्या अगले सफ़हे पर)



प्यारे इस्लामी भाइयो ! राहे सुलूक बहुत दुश्वार गुज़ार और सालिक के लिये बहुत मुश्किल है। इसी राह में हज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام आंसू बहाते रहे, हज़रते सय्यिदुना नूह عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने गिर्या व ज़ारी की, **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के खलील हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام को आग में डाला गया, हज़रते सय्यिदुना इस्माईल عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالसَّلَام को ज़ब्ड किया गया, हज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالसَّلَام को फ़रोख़्त किया गया, हज़रते सय्यिदुना ज़करिय्या عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالसَّلَام पर आरा चलाया गया, हज़रते सय्यिदुना यहूया عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالसَّلَام को शहीद किया गया, हज़रते सय्यिदुना अय्यूब عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالसَّلَام को आजमाया गया, हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالसَّلَام ख़ौफ़े इलाही में घूमते रहे और नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां हज़रते सय्यिदुना मुहम्मदे मुस्तफ़ा, अहमदे मुत्तबा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सारी ज़िन्दगी फ़क़ अपनाया।

**ऐ मेरे भाई !** इस राह में पहला क़दम रूह को फ़ना करना है। शाहराह तो मौजूद है सालिक कहां है ? क़मीस तो मौजूद है पहनने वाले कहां है ? तूरे सीना तो मौजूद है उस पर फ़ाइज़ होने वाले कहां है ? ऐ जुनैद बग़दादी की सी तड़प रखने वालो ! आओ और इस राह पे चलो, ऐ शैख़ अबू बक्र शिब्ली की महबूत के दा'वेदारो ! हमारी बात सुनो और ऐ इब्राहीम बिन अदहम के दीवानो ! इधर मुतवज्जेह हो जाओ। (رحمهم اللہ تعالیٰ علیہم اجمعین)

**मक़ामे फ़ना :**

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र शिब्ली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि मैं ने एक पहाड़ पर रैहाना आबिदा عليها رحمة الله تعالى को येह शे'र पढ़ते सुना :

أَحْضَرْتَنِيْ فِيْكَ وَلَكِنْ غَيَّبْتَنِيْ فِي التَّحْلِی

**तर्जमा :** (ऐ मेरे रब्ब ! ) तू ने मुझे अपनी बारगाह में हुजूरी अता फ़रमाई मगर मैं तेरी तजल्लियात में गुम हो गई।

मैं ने उसे दाएं बाएं तलाश किया तो नज़र आई मैं ने सलाम किया उस ने सलाम का जवाब दिया। मैं ने कहा : “ऐ रैहाना !” उस ने जवाब दिया : “ऐ शिब्ली (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی) ! मैं हाज़िर (बक़िय्या हाशिया).....अता व फ़ज़ल से हासिल होगा वोह भी इस फ़ानी आंख से नहीं बल्कि बाकी आंख से या'नी कोई बशर मुझे दुन्या में देखने की ताक़त नहीं रखता। **अल्लाह** तआला ने येह नहीं फ़रमाया कि मेरा देखना मुमकिन नहीं। इस से पाबित हुवा कि दीदारे इलाही मुमकिन है अगर्चे दुन्या में न हो क्यूंकि सहीह हदीषों में है कि रोज़े क़ियामत मोअमिनीन अपने रब्ब عَزَّ وَجَلَّ के दीदार से फ़ैज़याब किये जाएंगे इलावा बरी येह कि हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام आरिफ़ बिल्लाह हैं। अगर दीदारे इलाही मुमकिन न होता तो आप हरगिज़ सुवाल न फ़रमाते। और पहाड़ का पाबित रहना अग्रे मुमकिन है क्यूंकि उस की निस्वत फ़रमाया, “جَعَلَهُ دَكًّا” उस को पाश पाश कर दिया तो जो चीज़ **अल्लाह** तआला की मजक़ूल (बनी हुई) हो और जिस को वोह मौजूद फ़रमाए मुमकिन है कि वोह न मौजूद हो अगर उस को न मौजूद करे क्यूंकि वोह अपने फ़ै'ल में मुख़्तार है। इस से पाबित हुवा कि पहाड़ का इस्तिफ़रार अग्रे मुमकिन है, मुहाल नहीं और जो चीज़ अग्रे मुमकिन पर मुअल्लक़ की जाए वोह भी मुमकिन ही होती है मुहाल नहीं होती। लिहाज़ा दीदारे इलाही जिस को पहाड़ के पाबित रहने पर मुअल्लक़ फ़रमाया गया वोह मुमकिन हुवा तो उन का कौल बातिल है जो **अल्लाह** तआला का दीदार मुहाल बताते हैं।”

हूँ।" मैं ने पूछा : "किस को ढूँड रही हो ?" तो उस ने जवाब दिया : "रैहाना को।" मैं ने हैरान हो कर उस से पूछा : "क्या तू रैहाना नहीं ?" उस ने जवाब दिया : "ऐ शिब्ली (رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ) ! क्यों नहीं, मगर जब से मुझे **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ का कुर्ब मिला है मैं कैद हो गई हूँ और मुझे ये भी खबर नहीं कि मैं कहां हूँ ? मैं अपने आप से गाइब हो चुकी और अपने आप को भूल चुकी हूँ, और अब मुसाफ़िरी से अपने मुतअल्लिक पृछती रहती हूँ मगर मैं ने कोई शख्स ऐसा न पाया जो मुझे मेरे बारे में बता दे।" येह सुन कर मैं ने उसे कहा : "अब मैं भी तेरी तरफ़ रुजूअ करता हूँ क्योंकि तुझ पर निशानियां ज़ाहिर हो चुकी हैं।" तो वोह कहने लगी : "ऐ शिब्ली (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي) ! मैं ने इस सिलसिले में अपने अनासिर से पूछा तो किसी को अपना मददगार न पाया। मैं ने हवास से पूछा तो उन को बिगैर जामे महबबत पिये मदहोश पाया। अपनी फ़हम से पूछा तो उस ने वहम की तरफ़ मेरी रहनुमाई की। मैं ने अपने राज़ से पूछा तो उस ने कहा : मैं नहीं जानता। मैं ने दिल से पूछा तो उस ने भी मुझे मेरी मुराद तक न पहुंचाया। अपने क़ल्ब से पूछा तो वोह गहरी सोच में डूब गया फिर कहने लगा : मुझे इजाज़त नहीं, मैं न तो बता सकता हूँ और न ही ज़ाहिर कर सकता हूँ।"

फिर रैहाना आबिदा **عليها رحمة الله تعالى** कहने लगी : "ऐ शिब्ली (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي) ! मैं ने हर ज़िन्दा से कहा कि मुझे मेरी ज़ात तक पहुंचा दे और मुझ पर मेरी रहनुमाई कर दे लेकिन कोई भी मेरी बातें न समझ सका, ऐ शिब्ली (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي) ! अगर तुझे मेरा ठिकाना मा'लूम है तो मेरे तर्जुमान को इधर ले आ।" मैं ने उसे कहा : "तेरा ठिकाना रहीम व रहमान के कुर्ब में है।" येह सुनते ही उस ने एक चीख़ मारी और उस के बा'द लम्बा सांस लिया। मैं ने उसे हरकत दी तो उस की रूह क़फ़से उन्सुरी से परवाज़ कर चुकी थी। मैं ने उसे एक चट्टान के सहारे लिटाया और खुद इस उम्मीद पर वसीओ अरीज़ मैदान में चला गया ताकि कोई ऐसा शख्स पाऊं जो इस की तज्हीज़ो तक्फ़ीन पर मेरी मदद करे मगर मुझे कोई न मिला। मैं वापस आया तो उस का कुछ पता न चला कि कहां गई। हां ! मैं ने वहां एक नूर देखा जो शुआएं दे रहा था और बिजली चमक रही थी। मैं दिल में कहने लगा : काश ! मैं जान लेता कि इस नेक बन्दी के साथ क्या हुवा तो मुझे निदा दी गई : "ऐ शिब्ली ! हम जिस को उस की ज़िन्दगी में उस से ले लेते हैं तो मौत के बा'द भी उसे लोगों की आंखों से छुपा देते हैं।"

हज़रते सय्यिदुना शिब्ली **عليه رحمة الله القوي** फ़रमाते हैं, मैं ने उसी रात उस को ख़्वाब में देखा और पूछा : "**अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ ने तेरे साथ क्या मुआमला फ़रमाया ?" उस ने जवाब दिया : "ऐ नौ जवान ! कैद ख़त्म हो गई, मैं ने अपनी मुराद और ने'मतें पा लीं और मेरा मक्सद पूरा हो गया। अगर तुम भी हमेशा की इज़्ज़त चाहते हो तो मेरी तरह मौत को गले लगा लो।"

**फ़रमांबश्दार् बेटे की मौत से मां भी फ़ौत हो गई :**

एक बुजुर्ग **عليه رحمة الله تعالى** का बयान है कि एक साल मैं ने बैतुल्लाह शरीफ़ का हज़ किया। जब लौटने का इरादा किया तो देखा कि एक नौजवान जिस का जिस्म दुबला पतला, रंग ज़र्द, ऊंट

के करीब खड़ा ग़म के सांस लेते हुए कह रहा था : “क्या तुम में कोई ऐसा शख्स है जो मेरा पैग़ाम उस बुढ़ी औरत तक पहुंचा दे जिस ने सारी ज़िन्दगी मेरी तर्बियत फ़रमाई, अब वोह मुझे देखने की मुश्ताक़ है।” क्या तुम में से कोई शख्स मेरे अहबाब को मेरा पैग़ाम पहुंचा कर अज़्रो षवाब लेना चाहता है ?” फिर कहने लगा : “मैं तुम्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम देता हूं, जब तुम अफ़ियत के साथ पहुंच जाओ तो मेरा ख़त फुलां बुढ़िया को पहुंचा देना और उसे मेरे मुतअल्लिक़ बताना कि हम ने “अमिरी” को इश्क़ की आग में जलते हुए छोड़ा, वोह अपना मक़सूद पा चुका है और अगर वोह तुम से मेरी हालत के मुतअल्लिक़ पूछे तो उन से कहना : “**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से किया हुवा अहद नहीं तोड़ा।” वोह बुजुर्ग رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि मुझे उस पर बड़ा तरस आया मैं ने उस से ख़त ले लिया और पूछा : “आप को अपनी वालिदा के पास जाने में क्या रुकावट है ?” तो उस ने कहा : “ऐ मेरे मोहतरम ! जब तक्दीर साथ न दे तो मख़्लूक क्या करे। मैं इस उम्मीद पर निकला था कि लौट आऊंगा लेकिन येह न जानता था कि कब लौटूंगा। अगर्चे मैं ने अपने महबूब को पा कर अपनी अजनबियत में सुरूर हासिल किया लेकिन मैं आने वाले उस कल की उम्मीद बांधे हुए हूं जब हम मिलेंगे जिस तरह जुदा हुए थे।”

जब उस ने अपनी बात मुकम्मल कर ली तो एक ज़ोरदार चीख़ मारी और बेहोश हो कर गिर पड़ा। क़ाफ़िले वाले उस के इर्द गिर्द जम्अ हो गए फिर कुछ देर के बा'द उसे होश आया तो कहने लगा : “हाए अफ़सोस ! जिस मौत का तुम से वा'दा किया गया है वोह आने वाली है, क़ब्र करीब है और दारुल बक़ा की तरफ़ कूच करने का वक़्त आ गया है।” फिर उस ने दोबारा एक ज़ोरदार चीख़ मारी और उस की रूह ख़ालिके हकीकी से जा मिली। वोह बुजुर्ग رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि हम ने उस की तज्हीजो तक्फ़ीन की और नमाज़े जनाज़ा पढ़ कर दफ़न कर दिया। फिर बसरा की जानिब रुख़ किया। जब हम शहर के करीब पहुंचे तो वहां के लोग दूर से आने वालों के इस्तिक़बाल और अपने दोस्तों को सलामती की मुबारक बाद देने के लिये निकल आए।

सब लोगों से पीछे एक बुढ़िया आ रही थी जिस की नज़र कमज़ोर थी, उस का दिल ज़िक्रे इलाही عَزَّوَجَلَّ में मशगूल था, वोह चलते हुए कांप रही थी और कह रही थी : “क्या उस के आने का वक़्त नहीं आया जिस का मैं इन्तिज़ार कर रही हूं या क़ाफ़िले में कोई ऐसा शख्स है जो उस के मुतअल्लिक़ बताए ?” फिर उस ने निदा दी : “ऐ क़ाफ़िले वालो ! तुम में कोई मेरे बेटे का ख़त लाने वाला है जिस में उस की ख़ैर ख़बर हो ?” फिर उस ने चन्द अशआर पढ़े, जिन का मफ़हूम येह है :

“वतन से दूर जाने वाला हर शख्स आख़िर वापस आता है लेकिन मेरा बेटा दूर जाने वालों के साथ अभी तक न आया। बहुत ज़ियादा रोने से मेरी आंखें चली गईं और उस की जुदाई के ग़म में मेरे दिल की आग तेज़ हो गई। मैं तो उस की वापसी और मुलाक़ात की तमन्ना कर रही थी लेकिन लगता है कि मेरी उम्मीद बहुत दूर है।”



वोह बुजुर्ग رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि मैं ने आगे बढ़ कर कहा : “ऐ कमज़ोर और ग़मगीन बुढ़िया ! मेरे पास उस नौजवान का ख़त है, वोह दूरी का शिक्वा कर रहा था और कह रहा था कि इस शहर में उस के घर वाले हैं, वोह अपनी वालिदा के दीदार का बहुत मुश्ताक़ था जो उस से काफ़ी महबूबतो मुवद्दत रखती है।” उस वक़्त उस बुढ़ी ख़ातून ने एक चीख़ मारी और कहने लगी : “**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! येह मेरे ही मुसाफ़िर बेटे की सिफ़त है।” उस ने मुझ से ख़त लिया ताकि अपने शिकस्ता दिल को जोड़े। वोह बुजुर्ग़ फ़रमाते हैं कि वोह मुझ से ख़त ले कर चूमने लगी और अपने दिल और आंखों पर रख कर पूछा : “ऐ मेरे परदेसी बेटे के कासिद ! मेरे महबूब बेटे का क्या हुवा ?” मैं ने उसे बताया कि “वोह अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ से जा मिला है।” जब उस ने सुना कि उस का बेटा तन्हा राहे हक़ का मुसाफ़िर हो गया है तो बहुत ज़ियादा रोई फिर अपना सर आस्मान की तरफ़ उठा कर कहने लगी :

“ऐ मेरे मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ ! मुझे दुन्या में ज़िन्दा रहना इस लिये पसन्द था कि अपने बेटे से मुलाक़ात की उम्मीद थी लेकिन अब मुझे दुन्या में रहने की कोई हाज़त नहीं।” फिर उस ने एक जोरदार चीख़ मारी और ज़मीन पर गिर गई और अपनी जान जाने आफ़री के सिपुर्द कर दी। मैं ने उस की तज्हीज़ो तक्फ़ीन का इरादा किया तो कोई कहने वाला जिस की सूरत नज़र न आई कह रहा था : “ऐ शख़्स ! ठहर जा, इस का मुआमला तेरे ज़िम्मे नहीं।”

### इब्लीस को खुश करने वाले काम :

हज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू मुहम्मद फ़र्रा رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : “जब इब्लीसे लईन और उस का लश्कर इक़्ठ्ठा होता है तो वोह किसी शै पर इतने खुश नहीं होते जितने तीन चीज़ों पर खुश होते हैं : (1).....मुसलमान मुसलमान को क़त्ल करे (2).....कोई शख़्स कुफ़्र पर मर जाए और (3).....ऐसा शख़्स जिस के दिल में फ़क्र का ख़ौफ़ हो।”

### फ़ुक़रा को नशीहत :

हज़रते सय्यिदुना शैख़ जुनैद رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : “ऐ गुरौहे फ़ुक़रा ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से तुम्हारे तअल्लुक की वजह से तुम्हारी इज़ज़त की जाती है और इसी वजह से तुम पहचाने जाते हो लिहाज़ा अपने आप को देखो कि जब तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तन्हा होते हो तो तुम्हारा उस के साथ कैसा तअल्लुक होता है ?”

### फ़क़ीर के तीन औसाफ़ :

मन्कूल है कि फ़क़ीर के तीन औसाफ़ हैं :

- (1) अपना राज़ छुपाना (2) अपना फ़र्ज अदा करना और (3) अपने फ़क्र की हिफ़ाज़त करना।

## तमाम मख्लूक की नेकियों के बराबर नेकियां :

मन्कूल है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की तरफ़ वहूय फ़रमाई : “क्या तुम चाहते हो कि बरोज़े क़ियामत तुम्हारी नेकियां तमाम मख्लूक की नेकियों के बराबर हों ?” तो उन्होंने ने अर्ज़ की : “जी हां ! ऐ मेरे रब्ब عَزَّوَجَلَّ !” तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : “मरीजों की इयादत कर और फुकरा के कपड़ों का एहतियाम कर ।” पस हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने अपने ऊपर लाज़िम कर लिया कि हर माह सात दिन फुकरा के लिबास का एहतियाम करते और मरीजों की इयादत फ़रमाते ।

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मुबारक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं : “फ़क्र में गुना को ज़ाहिर करना फ़क्र ज़ाहिर करने से अफ़ज़ल है ।”

## फ़क्र में चार चीज़ों का होना ज़रूरी है :

मन्कूल है कि फ़कीर के पास फ़क्र में कम अज़ कम चार चीज़ों का होना ज़रूरी है : (1).....ऐसा इल्म जो उसे मुज़य्यन कर दे (2).....ऐसा तक्वा जो उस की हिफ़ाज़त करे (3).....ऐसा यकीन जो उसे खुश अख़्लाक बना दे और (4).....ऐसा ज़िक्र जो उसे मानूस करे ।

हज़रते सय्यिदुना अबू हफ़्स عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं : “किसी का फ़क्र उस वक़्त तक सहीह नहीं हो सकता जब तक कि वोह लेने से ज़ियादा देने को महबूब न रखे और सखावत इस चीज़ का नाम नहीं कि माल पाने वाला न पाने वाले को दे ।” हज़रते सय्यिदुना इब्ने जलाल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं : “अगर अज़िज़ी व इन्किसारी काबिले फ़ख्र शै न होती तो फ़कीर को हुक्म दिया जाता कि वोह मुतकब्बिराना चाल चले ।”

## एक क़मीस दुख़ूले जन्नत का सबब बनी :

एक बुजुर्ग़ फ़रमाते हैं : मैं ने ख़्वाब में देखा कि क़ियामत काइम हो गई और कोई कहने वाला कह रहा है : “ऐ मालिक बिन दीनार ! ऐ मुहम्मद बिन वासेअ (رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمَا) ! जन्नत में दाख़िल हो जाओ ।” मैं देखने लगा कि दोनों में से कौन पहले जाता है तो हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन वासेअ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى जन्नत में पहले दाख़िल हुए । मैं ने इस का सबब दर्याफ़्त किया तो मुझे बताया गया : “मुहम्मद बिन वासेअ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى के पास एक क़मीस थी और मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى दो क़मीसों के मालिक थे ।”

हज़रते सय्यिदुना यहूया बिन मुअज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं : “कल मीज़ान में फ़क्रो गुना नहीं रखा जाएगा बल्कि सब्रो शुक्र रखा जाएगा लिहाज़ा आओ ! हम सब्रो शुक्र करने वाले बन जाएं ।”

ऐ प्यारे इस्लामी भाई ! जो शख़्स इन बुजुर्ग़ों के औसाफ़ अपनाए हुए हो लेकिन इन की पैरवी न करे तो वोह इन से महबूबत करने वाला नहीं ।

**फ़िरिशते फ़ुक़रा के हाथों पर पानी डालते हैं :**

मन्कूल है कि एक बुजुर्ग के साथ मुसलमान सूफ़िया व फ़ुक़रा का एक गुरौह था। उस ने ख़्वाब में देखा कि गोया आस्मान शक़ हो गया और हज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام और उन के साथ दीगर फ़िरिशते सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइषे नुज़ूले सकीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर हुए। फ़िरिशतों के हाथों में थाल और जग थे और वोह फ़ुक़रा के हाथों और पाउं पर पानी डाल रहे थे। जब वोह मेरे क़रीब आए तो मैं ने भी अपना हाथ दराज़ किया ताकि वोह पानी डालें। उन्होंने ने मुझ पर और मेरे साथ मौजूद फ़ुक़रा के हाथों पर पानी डाला।

हज़रते सय्यिदुना सहल رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِ इरशाद फ़रमाते हैं : “अगर किसी शख़्स में सहीह तौर पर सिफ़ते फ़क़र सिर्फ़ एक ही दिन के लिये पाई जाए। फिर वोह चोरी या कोई और जुर्म करे तो फिर भी मुझ पर उस की मदद करना लाज़िम है अगर्चे ऐसा करने पर मेरा हाथ काट दिया जाए।”

وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰی سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی آلِهٖ وَ صَحْبِهٖ وَسَلَّم تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا



### जन्नत में दाख़िला

नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : “जिस मुसलमान के तीन बच्चे बालिग़ होने से पहले मर जाएं **अब्लाह** غُرَّ وَجَلَّ अपनी रहमत से उसे और उन बच्चों को जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा।” और एक रिवायत में यूं है कि “जिस के तीन बच्चों का इन्तिक़ाल हो जाए वोह जन्नत में दाख़िल होगा।”

(بخاری، کتاب الجنائز، باب ما قبل فی اولاد المسلمین الخ، رقم ۱۳۸۱، ج ۱، ص ۵۶۵)



बयान 15 : **औलियाए किराम** رضى الله عنهم **के औआफ**  
**हम्दे बारी तआला :**

तमाम खूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने अपनी मख्लूक में से औलियाए किराम को पसन्द फरमाया और उन को बुलन्द मक़ाम व मर्तबा अता फरमाया जिन्होंने उस से किये हुए अहद को पूरा किया तो उस ने उन का तजक़िरा पूरी काइनात में फैला दिया, ज़माने को उन की बरकत से ज़ीनत अता फरमाई, उन के इरफ़ान की महक से तमाम आलम को मुअत्तर फरमा दिया, उन्हें अपना कुर्ब अता फरमा कर उन का मुतालबा पूरा कर दिया, उन की महब्वत को उन के टूटे हुए दिलों को जोड़ने वाला बना दिया, उन्होंने ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अपने सर झुका दिये और अपनी ख्वाहिशात की कुरबानी दे दी तो उस ने भी उन्हें अज़्रो षवाब के ख़ज़ाने अता फरमा दिये, उन्होंने ने अपने महबूबे हकीकी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये बख़ुशी तकालीफ़ बर्दाश्त की और कड़वी चीज़ को मीठा समझा, रब्ब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तलाश में दीवानों की तरह घूमते रहे और उस को पाने में अपनी जान तक कुरबान कर दी और महब्वत की बेड़ियों में असीर हो गए, उन को ख़ज़ाने पेश किये गए मगर उन्होंने ने ठुकरा दिये, दुनिया उन पर फ़िदा होने की कोशिश करती रही लेकिन उन्होंने ने उस से कनाराकशी इख़्तियार कर ली, उन्होंने ने फ़क्रो फ़ाका इख़्तियार किया। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें आजमाइश में मुब्तला फरमाया तो उन्होंने ने उन एहसानात पर शुक्र अदा किया और सब्र का दामन मज्बूती से थामे रखा। शैतान ने उन पर अपने मक्रो फ़रैब का जाल डालने की कोशिश की लेकिन उस का उन पर कोई बस न चल सका और वोह उन्हें धोका देने की ताक़त नहीं रखता। येह सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मोहताज हैं और उस की अता से ग़नी हो गए जिन्हें ग़ैरे खुदा से मुस्तग़नी कर दिया गया और सहरी के वक़्त उन के लिये पर्दे उठा दिये गए।

**अल्लाह वालों के आ'माल :**

हज़रते सय्यिदुना अबू शहल साएह رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं : “मैं ने मक्कए मुकर्रमा से चन्द मील के फ़ासिले पर एक नौजवान को नमाज़ पढ़ते हुए देखा, वोह क़ाफ़िले से बिछड़ गया था। मैं उस के नमाज़ से फ़ारिग़ होने का इन्तिज़ार करने लगा लेकिन उस की नमाज़ तवील हो गई। जब उस ने सलाम फेरा तो मैं ने उसे **وَعَلَيْكَ السَّلَامُ** कहा। उस ने **وَعَلَيْكَ السَّلَامُ** कहते हुए सलाम का जवाब दिया। मैं ने उस से पूछा : “मा'लूम होता है कि आप अपने हम सफ़रों से पीछे रह गए हैं, क्या आप का कोई रफ़ीक़ है जो आप को उन से मिलाने में मदद करे ?” तो वोह रो दिया और कहने लगा : “हां, है।” मैं ने पूछा : “कहां है ?” तो उस ने जवाब दिया : “वोह मेरे आगे पीछे और दाएं बाएं मौजूद है।” आप फ़रमाते हैं कि मैं ने पहचान लिया कि येह अरिफ़ है।” फिर



पुकारने वाले ने निदा दी : “उसे बद दुआ न दे क्योंकि येह हमारे औलिया में से है।” जब उस ने येह सुना तो बहुत रोया और सच्चे दिल से ताइब हो गया। लोग उस की ज़ियारत करने और उस से बरकत हासिल करने के लिये कषरत से जम्अ होने शुरू हो गए। फिर वोह पैदल मक्कए मुकर्रमा चला गया और वहीं मुक़ीम हो गया। अगले साल मैं ने हज किया। ज़ोहर के वक़्त मस्जिदे हराम की दीवार के साए में बैठा था कि मैं ने मस्जिद के कोने में एक गुरौह देखा। मैं खड़ा हुवा और देखा कि लोग एक शख्स के गिर्द जम्अ हैं। गौर करने पर मा’लूम हुवा कि वोह तो मेरा वोही पड़ोसी था। वोह मिट्टी पर लैटा हुवा लम्बी लम्बी सांसें ले रहा था। मैं उस के सर के करीब बैठ कर रोने लगा। उस ने अपनी आंखें खोलीं और मुझे देख कर कहने लगा : “ऐ मालिक (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْخَالِقِ) ! देखो ! वोह रब्ब عَزَّ وَجَلَّ बुराइयों से दरगुज़र करता है और आंसू बहाने वालों पर रहम फ़रमाता है। मैं उस महल्ले से निकला और तुझ से हया करते हुए अपने वतन और घरवालों को छोड़ दिया हालांकि तू भी मेरी तरह मख़्लूक है, (मगर मैं ने ख़ालिक عَزَّ وَجَلَّ से हया न की तो) मैं कल बरोजे क़ियामत उस की बारगाह में कैसे खड़ा होऊंगा ? फिर उस ने एक आहे सर्द दिले पुर दर्द से खींची और उस के साथ ही उस का ताइरे रूह कफ़से उन्सुरी से परवाज़ कर गया।

हज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي फ़रमाते हैं कि “मैं एक साल बैतुल्लाह शरीफ़ के सफ़र पर था। रास्ते में एक शख्स की इन्तिहाई पुर सोज़ आवाज़ सुनाई दी। मैं जल्दी से उस की तरफ़ गया और जा कर उसे सलाम किया। उस ने मेरा नाम ले कर मुझे जवाब दिया तो मैं ने उस से पूछा : ऐ मेरे दोस्त ! आप को मेरा नाम किस ने बताया ?” उस ने जवाब दिया : “अलमे मलकूत में मेरी और आप की रूह की मुलाक़ात हुई थी लिहाज़ा मुझे आप का नाम हमेशा रहने वाली उस ज़ात ने बताया जिस को मौत नहीं।” फिर उस ने कहा : “ऐ जुनैद (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى) ! जब मैं मर जाऊं तो मुझे गुस्ल देना और इन्हीं कपड़ों में कफ़न दे कर उस टीले पर चढ़ कर ए’लान करना : “الصَّلَاةُ عَلَى الْغَرِيبِ يَرْحَمُكُمُ اللَّهُ” या’नी ऐ लोगो ! **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ तुम पर रहम फ़रमाए, इस अजनबी और ग़रीबुद्दियार की नमाज़े जनाज़ा पढ़ लो।” उस के बा’द उस नौजवान की पेशानी पर पसीना आ गया, वोह ज़ारो क़ितार रो कर कहने लगा : “आप को **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! जब हज कर के वापस पलटो तो बग़दाद ज़रूर जाना और ज़ा’फ़रानी के घर के मुतअल्लिक़ दर्याफ़्त कर के मेरी मां और मेरे बेटे के मुतअल्लिक़ पूछना और फिर उन्हें कहना कि “तुम्हें एक ऐसे मुसाफ़िर ने सलाम भेजा है जिस को न तो उस के घर पहुंचाया गया और न ही तुम्हारे पास छोड़ा गया।” उस के बा’द वोह नौजवान इस दुन्या से कूच कर गया।

हज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي फ़रमाते हैं कि “मैं ने उस को गुस्ल व कफ़न दे कर उस टीले पर चढ़ कर जब येह ए’लान किया : “الصَّلَاةُ عَلَى الْغَرِيبِ يَرْحَمُكُمُ اللَّهُ” तो मैं ने देखा कि एक जमाअत पहाड़ों से आ रही है, हम सब ने उस की नमाज़े जनाज़ा पढ़ कर उसे दफ़न कर दिया। मैं ने हज अदा करने के बा’द बग़दाद जा कर जब ज़ा’फ़रानी के घर से मुतअल्लिक़



दर्याफ्त किया तो मुझे जो रास्ता बताया गया था मैं ने उस पर चन्द बच्चों को खेलते हुए देखा, उन में से एक बच्चा मेरे पास आया और कहने लगा : ऐ मेरे बुजुर्ग ! शायद आप हमारे वालिद की मौत की ख़बर देने आए हैं ।” हज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي फ़रमाते हैं : मुझे उस बच्चे के कलाम से बड़ा तअज़्जुब हुवा, उस ने मेरा हाथ पकड़ा और घर जा कर दरवाज़ा खट खटाया तो एक बूढ़ी औरत बाहर आई और कहने लगी : “ऐ जुनैद (رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ) ! मेरे बेटे का इन्तिक़ाल कहां हुवा ? शायद अरफ़ा में ।” तो मैं ने कहा : “नहीं ।” यह सुन कर कहने लगी : “तो फिर शायद किसी वादी में दरख़्त के नीचे या किसी जंगल में ।” तो मैं ने कहा : “जी हां ।” तो बोली : “हाए अफ़सोस उस लड़के पर ! जिसे न तो उस के घर पहुंचाया गया और न हमारे पास छोड़ा गया ।” फिर उस के मुंह से एक आह निकली और उस ने चन्द अशआर पढ़े, जिन का मफ़हूम यह है :

“क्या तू नहीं देख रहा कि ज़माने ने मुझ पर कैसे कैसे सितम ढाए और जुदाई के तीर मारे और मेरे दोस्त, अहबाब को मुझ से दूर कर दिया । वोह सब मेरे दिल में मुअज़्जज़ मक़ामो मर्तबा रखते थे । उन की जुदाई के बा’द मैं ने खुद को बड़ा मजबूरो बेकस पाया कि मेरे दिल के राज़ छुपाने के सारे उसूल भी ख़त्म हो गए । जिस दिन वोह मुझ से जुदा हुए थे उस दिन मेरी आंख ने खून के आंसू बहाए और उन की जुदाई ने मुझे सख़्त दिल न बनाया तो लोगों ने गहरा सांस ले कर कहा : “ऐ नौजवान ! तू अपनी आंखों की पलकों को रो रो कर वरम आलूद बना रहा है । तू पहला इन्सान नहीं कि जिस के अहबाब उस से बिछड़ गए और जो हवादिषाते ज़माना का शिकार हुवा । ज़माना हमेशा एक हाल पर नहीं रहता बल्कि उस में खुशी, ग़मी आती रहती है ।”

फिर उस ने एक जोरदार चीख़ मारी और अपनी जान जाने आफ़रीं के सिपुर्द कर दी ।

### ज़मीन से दीनार निकल आए :

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र बिन फ़ज़ल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं कि “मैं ने अपने एक रूमीयुनस्ल दोस्त से इस्लाम लाने का सबब पूछा तो उस ने बयान करने से इन्कार कर दिया । जब मैं ने इसरार किया तो उस ने बताया कि हमारे मुल्क पर मुसलमानों का लश्कर हम्ला आवर हुवा, उन्होंने ने चन्द साल तक हमारा मुहासरा किये रखा । आख़िरे कार हम ने बाहर निकल कर उन से जंग की, हमारे कुछ लोग क़त्ल हुए और कुछ उन के । हम ने उन की एक जमाअत को क़त्ल कर दिया और एक को कैदी बना लिया । और मैं ने अकेले दस मुसलमानों को घर में कैद कर लिया । रूम में मेरा बहुत बड़ा घर था लिहाज़ा मैं ने उन सब को अपने ख़ादिमीन के सिपुर्द कर दिया । उन्होंने ने उन को बेड़ियों में बांध कर ख़च्चरों पर सामान लादने के काम पर लगा दिया । एक दिन मैं ने उन कैदियों पर मुक़र्रर एक ख़ादिम को देखा कि उस ने एक कैदी से कुछ लिया और उस को नमाज़ पढ़ने के लिये छोड़ दिया, मैं ने उस ख़ादिम को पकड़ कर मारा और पूछा : “बताओ ! तुम इस कैदी से क्या लेते हो ?” तो उस ने बताया : “येह हर नमाज़ के वक़्त मुझे एक दीनार देता है और मैं इसे नमाज़ पढ़ने के लिये छोड़ देता हूं ।” मैं ने उस से पूछा : “क्या इस के पास दीनार हैं ?” तो उस ख़ादिम ने बताया : “नहीं, मगर जब येह नमाज़ से फ़ारिग़ होता है तो अपना हाथ ज़मीन पर मारता है और उस

से एक दीनार निकाल कर मुझे दे देता है।” मुझे शौक हुआ कि मैं उस की हकीकत जानूं। लिहाजा जब दूसरा दिन हुआ तो मैं उस निगरान के कपड़े पहन कर उस की जगह खड़ा हो गया और उसे कहा : “तुम जाओ ! आज इस की निगरानी मैं खुद करूंगा ताकि इस बात की हकीकत जानूं जो तुम ने मुझे बताई थी।” जब जोहर का वक्त हुआ तो उस ने मुझे इशारा किया कि मुझे नमाज़ पढ़ने दे तो मैं तुझे एक दीनार दूंगा।” मैं ने कहा : “मैं दो दीनार से कम नहीं लूंगा।” उस ने कहा : “ठीक है।” मैं ने उसे छोड़ दिया, उस ने नमाज़ पढ़ी। जब फ़ारिग़ हुआ तो मैं ने देखा कि उस ने अपना हाथ ज़मीन पर मारा और वहां से नए दो दीनार निकाल कर मुझे दे दिये। जब अस्स का वक्त हुआ तो उस ने मुझे पहली मरतबा की तरह इशारा किया। मैं ने उसे इशारा किया कि “मैं पांच दीनार से कम नहीं लूंगा।” उस ने मान लिया। फिर जब मगरिब का वक्त हुआ तो हस्बे मा’मूल मुझे इशारा किया तो मैं ने कहा : “मैं दस दीनार से कम नहीं लूंगा।” उस ने मेरी बात मान ली। और जब नमाज़ से फ़ारिग़ हुआ तो ज़मीन से दस दीनार निकाल कर मुझे दे दिये और फिर जब इशा की नमाज़ का वक्त हुआ तो हस्बे आदत उस ने मुझे इशारा किया, मैं ने कहा : “मैं बीस दीनार से कम नहीं लूंगा।” फिर भी उस ने मेरी बात तस्लीम कर ली और नमाज़ से फ़राग़त पा कर उस ने ज़मीन से बीस दीनार निकाले और मुझे थमा कर कहने लगा : “जो मांगना है मांगो ! मेरा मौला عَزَّوَجَلَّ बहुत ग़नी और करीम है, मैं उस से जो मांगूंगा वोह बुख़ल नहीं करेगा।” मैं ने वोह रात रो कर गुज़ारी, उस का येह मुआमला देख कर मुझे बड़ा धचका लगा और मुझे यकीन हो गया कि येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का वली है, मुझ पर उस का रो’ब तारी हो गया और मैं ने उस को ज़न्जीरों से आज़ाद कर दिया।

जब सुबह हुई तो मैं ने उसे बुला कर उस की ता’जीमो तकरीम की, उसे अपना पसन्दीदा नया लिबास पहनाया। मैं ने उसे इख़्तियार दिया कि वोह चाहे तो हमारे शहर में इज्जत वाले मकान या महल में रहे और उस की इन्तिहाई ता’जीमो तकरीम की जाएगी और चाहे तो अपने शहर चला जाए। उस ने अपने शहर जाना पसन्द किया। लिहाजा मैं ने एक ख़च्चर मंगवाया और ज़ादे राह दे कर उसे ख़च्चर पर खुद सुवार किया। उस ने मुझे दुआ दी : “**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने पसन्दीदा दीन पर तेरा ख़ातिमा फ़रमाए।” उस का येह जुम्ला मुकम्मल न हुआ था कि मेरे दिल में दीने इस्लाम घर कर गया फिर मैं ने उस के साथ अपने दस गुलाम और खादिम भेजे। उन्हें हुक्म दिया कि वोह सब उस की बहुत ज़ियादा ता’जीमो तकरीम करें और उसे किसी किस्म की कोई तकलीफ़ न होने दें और येह कि वोह लोग उस के हुक्म की इत्ताअत करें, और वोही करें जो येह पसन्द करे और उस की मुख़ालफ़त बिल्कुल न करें। फिर उस को एक दवात और काग़ज़ दिया और एक निशानी मुक़र्रर कर ली कि जब वोह अपने मक़ाम पर महफूज़ पहुंच जाए तो वोह निशानी लिख कर मेरी तरफ़ भेज दे। हमारे और उस के शहर के दरमियान पांच दिन की मसाफ़त थी। जब छद्दा दिन आया तो मेरे खुद्दाम मेरे पास आए, उन के पास रुक़आ भी था जिस में उस का ख़त और वोह अ़लामत भी थी। मैं ने अपने गुलामों से जल्दी पहुंचने का सबब दर्याफ़्त किया तो उन्होंने बताया कि जब हम उस के

साथ यहां से निकले तो हम किसी थकावट और मशक्कत के बिगैर एक घड़ी के अन्दर अन्दर वहां पहुंच गए लेकिन वापसी पर वोही सफ़र की थकावट और तकलीफ़ के साथ पांच दिनों में तै हुवा । उन की येह बात सुनते ही मैं ने उसी वक़्त पढ़ा : “أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ وَأَنَّ دِينَ الْإِسْلَامُ حَقٌّ.” फिर मैं रूम से निकल कर मुसलमानों के शहर आ गया ।

ऐ मेरे मौला ! अगर तू सिर्फ़ बा अमल लोगों पर रहूँ फ़रमाएगा तो हमारे जैसे कोताह किधर जाएंगे, अगर तू सिर्फ़ मुख़्लिसीन की नमाज़ें क़बूल फ़रमाएगा तो रियाकारों के आ'माल कौन क़बूल करेगा, अगर तू सिर्फ़ मोहसिनीन पर करम फ़रमाएगा तो गुनहगारों पर कौन करम करेगा । ऐ **अल्लाह** غَرْوَجَل ! हम तुझ से हुस्ने ज़न रखते हैं । ऐ वोह जात जिसे हमारी आंखें नहीं देख सकती ! हमारी तमाम लज़िशें मुआफ़ फ़रमा ।

صَلَّى اللَّهُ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَآلِهِ وَصَحْبِهِ أَجْمَعِينَ



### ऊपर वाला हाथ नीचे वाले हाथ से बेहतर है

हज़रते सय्यिदुना हकीम बिन हिज़ाम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं मैं ने हुज़ूर नबिय्ये अकरम, शफ़ीए मुअज़्ज़म صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से माल का सुवाल किया आप صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने मुझे अ़ता फ़रमाया, मैं ने दोबारा सुवाल किया आप صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने फिर अ़ता फ़रमाया, मैं ने तीसरी बार सुवाल किया तो आप صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने फिर मुझे अ़ता फ़रमाया और इरशाद फ़रमाया : “बेशक येह माल सर सब्ज़ और मीठा है पस जिस ने इसे अच्छी निय्यत से लिया तो उसे इस में बरकत दी जाएगी और जिस ने दिल के हिर्सों लालच से हासिल किया उसे इस में बरकत नहीं दी जाएगी और वोह ऐसा है कि खा कर भी सैर नहीं होता और (आगाह रहो कि) ऊपर वाला हाथ नीचे वाले हाथ से अफ़ज़ल है ।”

(صحيح البخارى، كتاب الرقاق، باب قول النبي صلى الله عليه وسلم هذا المال..... الخ، الحديث: ٦٤٤١، ص ٥٤١)



बयान 16 :

## मौत की अखिबतियां

हम्दे बारी तआला :

तमाम ता'रीफें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जो बुलन्दो बाला और बुजुर्गी वाला है, सब खूबियों वाला है, पैदा करने वाला और लौटाने वाला है, अपने इरादे को पूरा करने वाला है, अपने जलाले क़िब्रियाई में यक्ता है, जिस की कोई कैफ़ियतो हृदबन्दी नहीं, उस के मुल्क की कोई इब्तिदा है न इन्तिहा, उस ने तमाम इन्सानों को पैदा फ़रमाया और हिदायत की तरफ़ रहनुमाई के लिये उन को सहीह रास्तों पर चलाया, और उन्हें अपनी पसन्दीदा सूरत पर पैदा फ़रमाया और हमेशा की ज़िन्दगी और ने'मतों वाली जन्नत की बिशारत अता फ़रमाई, निगाहे इब्रत अता फ़रमाई, और अज़ाबे जहन्न्म और वईदों के ज़रीए उसे डराया और इन्सान पर अपना शुक्र अदा करना लाज़िम फ़रमाया और उन्हें अपने मज़ीद फ़ज़लो करम की ज़मानत अता फ़रमाई और उन पर मौत मुक़र्रर कर दी पस उस से किसी को छुटकारा नहीं और न ही भागने की कोई जगह है। उस ने कितने दोस्तों को अपने दोस्तों की जुदाई पर रुलाया ? कितने बच्चों को यतीम किया और उन्हें आहो बुका और गिर्या व ज़ारी में मुब्तला फ़रमाया ? वोह इन्सान को मौत देने के बा'द न ज़ाहिर करता है न वापस लौटाता है, उस ने अहले दुन्या पर मौत मुक़र्रर फ़रमाई और हर आज़ाद व गुलाम को तक्दीर के तीरों का हदफ़ बनाया, और चांद की मनाज़िल को उस से दूर कर दिया, और ताइरे रूह को क़फ़से उन्सुरी से जुदा कर दिया। इन्सान को ज़िन्दगी की लज़्ज़त के बदले क़ब्र की बे कैफ़ो दमकदर ज़िन्दगी दी। पस बादशाह और मोहताजो ग़नी सब के सब फ़क्र और मौत में बराबर हैं।

पाक है वोह ज़ात जिस ने हर जाबिर व सरकश को मौत की ज़िल्लत में गिरिफ़्तार किया और हर बातिल परस्त को तोड़ दिया, उन को वसीअ महलों से तंग क़ब्र में डाल दिया, उन की लम्बी मुद्दत की रस्सी को काट कर उन के आबा व अज्दाद को उन से ले लिया और बच्चों को पिंघोड़ों से उठाया और क़ब्र को उन का ठिकाना बना दिया। उन के चेहरे मिट्टी में मिल गए, मौत के मुआमले में छोटे बड़े, अमीर ग़रीब, आका व गुलाम और बच्चे सब बराबर हैं, इस से मर्दों औरतों का ज़िक्र भी ख़ामोश हो गया। पस वोह क़ियामत तक क़ब्रों की कैद में रहेंगे। क्या अक्लमन्द उन की हलाकत से इब्रत हासिल नहीं करता। तमाम लोग तन्हा कोठरी में चले गए, कहां गए बड़े बड़े शहरों और मज़बूत क़ल्ओं वाले ! कहां गए तरह तरह के फुनून में महारत रखने वाले ! कहां गए मज़बूत हिसारों में बन्द और मज़बूत महल्लात में महफूज़ रहने वाले ! अब तो उन में मज़बूत तरीन और ताक़तवर लोग क़ब्र की तारीकी में अकेले पड़े हैं। क्या उन्हें बुजुर्गी वाले परवर दगार عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान ने नहीं डराया : **وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ذَلِكَ مَا كُنْتُمْ مِنْهُ تَحِيدُونَ** (प: २६, १९) : **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और आई मौत की सख़्ती हक़ के साथ, येह है जिस से तू भागता था।''

**ऐ मौत से गाफ़िल इन्सान !** देख तो सही ! तेरी मज़बूत उम्र का एक हिस्सा गुज़र चुका है। कब तक तू ग़फ़लत की नींद सोता रहेगा ? क्या तुझे वा'दे ने जोश नहीं दिलाया या वईद से तुझे ख़ौफ़े खुदा **عَزَّوَجَلَّ** पैदा न हुवा ? क्या तू ने इज़्ज़तो बुजुर्गी वाले परवर दगार **عَزَّوَجَلَّ** का येह फ़रमान नहीं सुना :

“तर्जमए कन्जुल ईमान : और आई  
“وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ذَلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيدُ” (پ ۲۶: ۱۹)  
मौत की सख्ती हक के साथ, यह है जिस से तू भागता था।”

### आयते मुबारक की तफ्सीर :

“وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ” से मुराद नबिये करीम, रऊफुरहीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़बाने मुबारक पर किया गया **اَللّٰہُ** عَزَّوَجَلَّ का वा'दा है, और वोह यह है कि मलकुल मौत ज़बाने मुबारक पर किया गया **اَللّٰہُ** عَزَّوَجَلَّ का अपने लश्कर के साथ ज़ाहिर होना, आस्मान का शक होना और बन्दे को मा'लूम हो जाना कि उस का ठिकाना जन्नत में होगा या जहन्नम में। यह सब कुछ नज़्ज़ के वक़्त होता है। और यह हक़ है जिस को नबिये पाक, साहिबे लौलाक **اَللّٰہُ** تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ईमान बिलग़ैब में बयान फ़रमाया। फिर उस के बा'द क़ब्र में नकीरैन (या'नी मुन्कर-नकीर) का सुवाल करना। जब मय्यित को क़ब्र में उतारा जाता है तो सब से पहली सख्ती येही होती है। **سَكْرَةُ** में **سَكْرَةُ الْمَوْتِ** को शामिल इसमे मुफ़रद है (या'नी मौत की हर किस्म की सख्ती) क्यूंकि मौत की सख्तीयां बहुत ज़ियादा हैं।

जब हुज़ूर नबिये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़लाक **اَللّٰہُ** تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मरजे मौत में मुब्तला हुए तो इरशाद फ़रमाया : “मौत की बहुत सख्तीयां हैं।”

(صحیح البخاری، کتاب الرقاق، باب سكرات الموت، الحدیث ۶۵۱، ص ۵۴۶)

हर शख्स पर मौत की सख्तीयां उस के दुनिया में किये हुए आ'माल के मुताबिक़ होंगी। इन सख्तीयों को **سَكْرَةُ** कहने की एक वजह यह भी है कि इन के जुहूर के वक़्त अक़लें ज़ा़इल हो जाती हैं तो इन्सान ऐसा हो जाता है जैसा कि नशे में मदहोश शख्स होता है क्यूंकि मौत के वक़्त बन्दे पर उस के अच्छे बुरे आ'माल ज़ा़हिर हो जाते हैं जिन के मुताबिक़ उस को जज़ा मिलेगी। पस गीबत करने वाले के होंट आग की कैचियों से काटे जाएंगे और गीबत सुनने वाले के कानों में जहन्नम की आग भर दी जाएगी, ज़ालिम की रूह हर मज़्लूम पर तक्सीम कर दी जाएगी, हराम खाने वाले के लिये खाने में ज़कूम (या'नी जहन्नम के एक कांटेदार दरख़्त का इन्तिहाई कड़वा फल) दिया जाएगा। इसी तरह नज़्ज़ की सख्तीयों के वक़्त बन्दे पर उस के दीगर आ'माल भी ज़ा़हिर हो जाएंगे और मय्यित पर तमाम सख्तीयां एक एक कर के गुज़रेंगी। आखिरी सख्ती गुज़रते वक़्त उस की रूह क़ब्ज़ हो जाएगी। और **اَللّٰہُ** عَزَّوَجَلَّ के इरशाद **ذَلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيدُ** का मतलब यह है कि “लम्बी उम्मीदों और दुनिया में हमेशा रहने की हिर्स के साथ तू मौत से भागता था।”

### क़ब्र जन्नत का बाग़ या जहन्नम का गढा है :

हज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि **اَللّٰہُ** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब, हबीबे लबीब **اَللّٰہُ** تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कुछ लोगों को हंसते हुए देखा तो इरशाद फ़रमाया : “अगर तुम लज़्ज़तों को ख़त्म करने वाली (मौत) को याद करते तो इस से गा़फ़िल हो जाते जो मैं देख रहा हूं (या'नी हंसने से)।” फिर इरशाद फ़रमाया : “लज़्ज़ात को काटने वाली

(मौत) को कषरत से याद करो । और बेशक क़ब्र जन्नत के बागों में से एक बाग़ है या जहन्नम के गढ़ों में से एक गढ़ ।”  
(المعجم الاوسط، الحديث ٦٩١، ج ١، ص ٢٠٤)

(جامع الترمذی، ابواب صفة القيامة، باب حديث اكثروا من..... الخ، الحديث ٢٤٦٠، ص ١٨٩٩، "يضحكون" بدله "يكشرون")

## शक़रते मौत :

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर बिन ख़त्ताब رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने हज़रते सय्यिदुना का'बुल अहबार رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से इरशाद फ़रमाया : “ऐ का'ब (رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ) ! हमें मौत के मुतअल्लिक़ बताइये ।” तो हज़रते सय्यिदुना का'बुल अहबार रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अर्ज़ की : “ऐ अमीरल मोअमिनीन (رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ) ! मौत एक ऐसी कांटेदार टहनी की मानिन्द है जिस को किसी आदमी के पेट में दाख़िल किया जाए और हर कांटा एक एक रग में पैवस्त हो जाए फिर कोई ताक़तवर शख़्स उस टहनी को अपनी पूरी ताक़त से खींचे तो उस टहनी की ज़द में आने वाली हर चीज़ कट जाए और जो ज़द में न आए वोह बच जाए ।”

(احياء علوم الدين، كتاب ذكر الموت وما بعده، الباب الثالث: فى سكرات الموت..... الخ، ج ٥، ص ٢١٠)

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अग्र बिन आस رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं कि मेरे वालिदे मोहतरम रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाया करते थे : “मुझे मरने वाले इन्सान पर तअज़्जुब होता है कि अक्ल और ज़बान होने के बावुजूद वोह क्यूँ मौत और उस की कैफ़ियत बयान नहीं करता ।” आप रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि जब मेरे वालिदे मोहतरम रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का वक्ते विसाल क़रीब आया तो मैं ने अर्ज़ की : “ऐ बाबाजान (رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ) ! आप तो ऐसे ऐसे फ़रमाया करते थे ।” तो उन्होंने ने इरशाद फ़रमाया : “ऐ मेरे बेटे ! मौत इस से ज़ियादा सख़्त है कि उस को बयान किया जाए फिर भी मैं कुछ बयान किये देता हूँ । **اَللّٰهُ** عزّ وجلّ की कसम ! गोया मेरे कन्धों पर रज़वय (यम्बुअ का एक मशहूर पहाड़) और तहामा के पहाड़ रख दिये गए हैं और गोया मेरी रूह सूई के नाके से निकाली जा रही है, गोया मेरे पेट में एक कांटेदार टहनी है और गोया आस्मान ज़मीन से मिल गया है और मैं इन दोनों के दरमियान हूँ ।”

(المستدرک، کتاب معرفة الصحابة، باب وصف الموت فى حالة النزاع، الحديث ٥٩٦٩، ج ٤، ص ٥٦٩-الطبقات الكبرى لابن سعد، الرقم ٤٤٦ عمرو بن العاص، ج ٤، ص ١٩٦)

## मौत की कड़वाहट :

मन्कूल है कि बनी इस्राईल हज़रते सय्यिदुना साम बिन नूह علیهما الصلوٰة والسلام की क़ब्रे अन्वर पर हाज़िर हुए और हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلَیْهِ السَّلَام की बारगाह में अर्ज़ की : “ऐ रूहुल्लाह (عَلَيْهِ السَّلَام) ! आप **اَللّٰهُ** عزّ وجلّ से दुआ फ़रमाएं कि वोह इस क़ब्र वाले को ज़िन्दा फ़रमाए ताकि हम इस से मौत का बयान सुनें ।” हज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام उस क़ब्र पर तशरीफ़ लाए और दो रकअत नमाज़ अदा कर के **اَللّٰهُ** عزّ وجلّ से हज़रते सय्यिदुना साम बिन नूह علیهما الصلوٰة والسلام को ज़िन्दा करने की दुआ फ़रमाई तो **اَللّٰهُ** عزّ وجلّ ने उन को ज़िन्दा फ़रमा दिया, वोह खड़े हुए तो हज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ने देखा कि उन के सर और



दाढ़ी के बाल सफेद थे तो आप عَلَيْهِ السَّلَام ने दर्याफ्त फरमाया : “येह बुढ़ापा तो आप के ज़माने में नहीं था ?” तो उन्होंने ने जवाब दिया : “जब मैं ने निदा सुनी तो गुमान हुवा कि शायद क़ियामत काइम हो गई है, इस की हैबत से मेरे सर और दाढ़ी के बाल सफेद हो गए हैं।” हज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ने दर्याफ्त फरमाया : “आप को इस दारे फ़ानी से कूच किये हुए कितनी मुद्दत हो गई है ?” तो उन्होंने ने बताया : “मुझे इस दुन्या से रुख़्सत हुए चार हज़ार साल हो गए हैं लेकिन मौत की कड़वाहट अभी तक मुझे से दूर नहीं हुई।”

(تفسير القرطبي، آل عمران، تحت الآية ٤٩، الجزء الرابع، ج ٢، ص ٧٤، بتغير)

गर तेरे प्यारे का जल्वा न रहा पेशे नज़र सख़ियां नज़्म की क्यूं कर मैं सहंगा या रब्ब  
नज़्म के वक़्त मुझे जल्वाए महबूब दिखा तेरा क्या जाएगा मैं शाद मरुंगा या रब्ब

### आ'माल लिखने वाले फ़िरिश्तों की ज़ियारत :

हज़रते सय्यिदुना वहब बिन मुनब्बेह رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं कि “हमें येह बात मा'लूम हुई है कि इस जहाने फ़ानी से कूच करने वाला मरने से पहले उन दोनों फ़िरिश्तों को देख लेता है जो उस के आ'माल को दुन्या में महफूज़ किया करते थे, अगर वोह शख्स भलाई के काम करता था तो फ़िरिश्ते कहेंगे : “**اَللّٰهُمَّ** عَزَّ وَجَلَّ तुम्हें हमारी तरफ़ से बेहतरीन जज़ा अता फ़रमाए तू ने हमें ख़ैरो बरकत की बहुत सी मजलिसों में बिठाया और हमारे पास आ'माले सालिहा का ज़ख़ीरा जम्अ किया।” और अगर वोह शख्स बुरे काम करता था तो फ़िरिश्ते कहेंगे : “**اَللّٰهُمَّ** عَزَّ وَجَلَّ तुझे हमारी तरफ़ से अच्छी जज़ा न दे तू ने हमें शर की बहुत सी मजलिसों में बिठाया और बुरी गुफ़्तगू सुनवाई।” उस वक़्त उस की आंखें पिथरा जाती हैं फिर वोह दुन्या की तरफ़ कभी नहीं लौटता।

(موسوعة لاین ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، باب ملک الموت واعوانه، الحديث ٢٣٩، ج ٦، ص ٤٦٦ - حلیۃ الاولیاء، وهیب بن الورد، الحديث ١١٧٦، ج ٨، ص ١٦٠، بتغير)

### मोमिन और क़ाफ़िर की मौत में फ़र्क :

हज़रते सय्यिदुना बरा बिन अज़िब رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि हम नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की मइय्यत में एक अन्सारी शख्स के जनाज़े में शरीक हुए। जब हम क़ब्र के करीब पहुंचे तो रसूले खुदा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ तशरीफ़ फ़रमा हो गए। हम भी आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के गिर्द इस तरह बैठ गए गोया हमारे सरों पर परन्दे बैठे हुए हों। आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के दस्ते अक़दस में एक लकड़ी थी जिस से आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ज़मीन कुरैद रहे थे। फिर आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने अपना सरे अन्वर उठा कर इरशाद फ़रमाया : “क़ब्र की आजमाइश और उस के अज़ाब से **اَللّٰهُمَّ** عَزَّ وَجَلَّ की पनाह मांगो।” दो या तीन मरतबा येही इरशाद फ़रमाया। फिर फ़रमाया : “बेशक बन्दए मोमिन जब दुन्या से कूच कर रहा होता है तो सूरज की तरह सफेद चेहरे वाले फ़िरिश्ते उस के पास आते हैं, उन के पास जन्नत का कफ़न और खुशबू होती है, वोह उस के पास हद्दे निगाह तक बैठ जाते हैं। फिर मलकुल मौत हज़रते सय्यिदुना इज़ाईल عَلَيْهِ السَّلَام तशरीफ़ लाते हैं और

उस के सर के करीब बैठ कर फरमाते हैं : “ऐ इत्मीनान वाली पाकीजा जान ! **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ की मग़फ़िरत और उस की रिज़ा की तरफ़ निकल ।” आप **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** ने इरशाद फ़रमाया : “उस की रूह मशकीज़े से क़तरे की तरह निकल जाती है । फ़िरिश्ते उस रूह को थाम लेते हैं और हज़रते मलकुल मौत **عَلَيْهِ السَّلَام** के हाथ में लम्हा भर भी नहीं छोड़ते फिर वोही जन्नती कफ़न पहनाते और खुशबू लगाते हैं तो इस रूह से दुन्यवी कस्तूरी से भी प्यारी खुशबू निकलती है । फ़िरिश्ते उस को ले कर आस्मान पर चढ़ते हुए फ़िरिश्तों के जिस गु़रौह के पास से गुज़रते हैं वोह पूछते हैं : “येह पाकीजा रूह किस की है ?” फ़िरिश्ते जवाब देते हैं : “येह फुलां बिन फुलां की रूह है और अच्छे अच्छे अल्काबात से उस का नाम लेते हैं यहां तक कि वोह आस्माने दुन्या तक पहुंच जाते हैं और उस का दरवाज़ा खुलवाते हैं तो उन के लिये दरवाज़ा खोल दिया जाता है । इसी तरह हर आस्मान वाले उस को दूसरे आस्मान तक पहुंचाते हैं यहां तक कि वोह सातवें आस्मान तक पहुंच जाता है । तो **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : “इस का नाम आ’माल इल्लिय्यीन (येह वोह मक़ाम है जहां नेक लोगों के आ’माल लिखे जाते हैं) में लिख दो और उस की रूह को ज़मीन की तरफ़ लौटा दो ।”

**﴿1﴾ مِنْهَا خَلَقْنٰكُمْ وَفِيْهَا نُعِيْدُكُمْ وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ** **तर्जमए कज़ुल ईमान :** हम ने ज़मीन ही से तुम्हें बनाया और उसी में तुम्हें फिर ले जाएंगे और उसी से तुम्हें दोबारा निकालेंगे ।  
**تَارَةً اٰخَرٰى 0 (پ ۱۶، ط۵: ۵۵)**

फिर उस की रूह जिस्म में लौटा दी जाती है और उस के पास दो फ़िरिश्ते आ कर पूछते हैं : “**مَنْ رَّبُّكَ** या’नी तेरा रब्ब कौन है ?” वोह जवाब देता है : “**رَبِّی اللّٰهُ** या’नी मेरा रब्ब **اَللّٰهُ** **عَزَّوَجَلَّ** है ।” फिर वोह पूछते हैं : “**مَا دِيْنُكَ** या’नी तेरा दीन क्या है ?” तो वोह जवाब देता है : “**دِيْنِی الْاِسْلَام** या’नी मेरा दीन इस्लाम है ।” इस के बा’द फ़िरिश्ते उस से पूछते हैं : “**مَا تَقُوْلُ فِیْ هٰذَا الرَّجُلِ الَّذِیْ بَعَثَ فِیْكُمْ اَهُوَ رَسُوْلُ اللّٰهِ** या’नी दुन्या में इस शख़्सियत के मतअल्लिक क्या कहा करता था जो तुम में मबऊष हुई, क्या येह **اَللّٰهُ** **عَزَّوَجَلَّ** के रसूल **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** हैं ? तो वोह जवाब देता है : “**هُوَ رَسُوْلُ اللّٰهِ** या’नी (हां ! ) येह रसूलुल्लाह **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** हैं ।” वोह पूछते हैं : “तुझे किस ने बताया ?” वोह जवाब देता है : “मैं ने कुरआने हकीम पढ़ा, उस पर ईमान लाया और उस की तस्दीक की ।” सरकारे अब्दे क़रार, शाफ़ेए रोज़े शुमार **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** इरशाद फ़रमाते हैं कि आस्मान से एक मुनादी ए’लान करता है : “मेरे बन्दे ने सच कहा है, इस के लिये जन्नत का बिछौना बिछाओ, इसे जन्नती लिबास पहनाओ और इस के लिये जन्नत का दरवाज़ा खोल दो ।” पस उस को जन्नत की हवा और खुशबू पहुंचेगी, उस की क़ब्र ता हद्दे नज़र वसीअ कर दी जाएगी और खुबसूरत चेहरे वाला एक शख़्स उस के पास आ कर कहेगा : “मैं तुझे ऐसी बिशारत देता हूं जो तुझे खुश कर देगी, येह वोही दिन है जिस का तुझ

से वा'दा किया गया था ।” बन्दए मोमिन पूछता है : “आप कौन हैं ?” तो वोह जवाब देता है : “मैं तेरा नेक अमल हूं ।” जन्नती ने'मतों को देख कर दिल में पैदा होने वाले शौक की बिना पर मोमिन कहता है : “या ربِّ عَزَّوَجَلَّ ! कियामत काइम फ़रमा ।”

हुजूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते हैं : “काफ़िर जब दुन्या से जा रहा होता है तो उस के पास सियाह चेहरों वाले फ़िरिश्ते आते हैं जिन के पास बालों से बने हुए कम्बल होते हैं । वोह ता हद्दे निगाह बैठ जाते हैं । फिर मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام आ कर उस के सर के क़रीब बैठ कर कहते हैं : “ए ख़बीष जान ! **اَبْلَاح** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी और ग़ज़ब की तरफ़ निकल ।” उस की रूह तमाम आ'ज़ा में बिखरी होती है जिस को जिस्म में से इस तरह निकाला जाता है जिस तरह गोश्त भूनने वाली तरसीख़ ऊन में डाल कर खींची जाए तो वोह ऊन को उधेड़ देती है, उस के तमाम आ'ज़ा टुकड़े टुकड़े हो जाते हैं, मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام उस की रूह निकालते हैं लेकिन फ़िरिश्ते उन के हाथ में एक लम्हा भी नहीं रहने देते बल्कि उसे ले कर उस कम्बल में डाल देते हैं जिस से इन्तिहाई नागवार बू निकल कर पूरी रुप ज़मीन पर फैल जाती है । फिर वोह उस को पकड़ कर मलाइका के जिस गुरौह के पास से गुज़रते हैं तो वोह पूछते हैं : “येह ख़बीष रूह किस की है ?” वोह फ़िरिश्ते जवाब देते हैं : “येह फुलां बिन फुलां की रूह है ।” और बुरे बुरे अल्काबात से उस का नाम लेते हैं यहां तक कि वोह आस्माने दुन्या तक पहुंच जाते हैं । आस्मान का दरवाज़ा खुलवाना चाहते हैं लेकिन उन के लिये नहीं खोला जाता । येह इरशाद फ़रमाने के बा'द शहनशाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिषाल, बीबी आमेना के लाल صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस आयते मुबारका की तिलावत फ़रमाई :

﴿٢﴾ لَا تَفْتَحْ لَهُمُ أَبْوَابَ السَّمَاءِ وَلَا يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ حَتَّى يَلِجَ الْجَمَلُ فِي سَمِّ الْخِيَاطِ (پ ۸: الاعراف: ۴۰)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :** उन के लिये आस्मान के दरवाज़े न खोले जाएंगे । और न वोह जन्नत में दाख़िल हों जब तक सूई के नाके में ऊंट दाख़िल न हो । (१)

(फिर फ़रमाया कि) **اَبْلَاح** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : “उस का नामए आ'माल सिज्जीन (येह वोह मक़म है जहां बदकारों के आ'माल लिखे जाते हैं) में लिख दो ।” फिर उस की रूह को छोड़ दिया जाता है ।

①.....मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ज़िल सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللہ الْہَادِی तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तहूत फ़रमाते हैं : “न उन के आ'माल के लिये, न उन की अरवाह के लिये क्यूंकि उन के आ'मालो अरवाह दोनों ख़बीष हैं । हज़रते इब्ने अब्बास رَضِیَ اللہ عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि : “कुफ़्फ़ार की अरवाह के लिये आस्मान के दरवाज़े नहीं खोले जाते और मोअमिनीन की अरवाह के लिये खोले जाते हैं । इब्ने ज़ुरैज ने कहा कि “आस्मान के दरवाज़े न काफ़िरों के आ'माल के लिये खोले जाएंगे, न अरवाह के लिये या'नी न ज़िन्दगी में उन का अमल ही आस्मान पर जा सकता है, न बा'दे मौत रूह । इस आयत की तफ़्सीर में एक कौल येह भी है कि “आस्मान के दरवाज़े न खोले जाने के येह मा'ना है कि वोह ख़ैरो बरकत और रहमत के नुज़ूल से महरूम रहते हैं । और येह मुहाल तो कुफ़्फ़ार का जन्नत में दाख़िल होना मुहाल ।”



فیر سय्यیدل मुबल्लिगीन, रहमतुल्लिल अलमीन صَلَّى اللہ تعالیٰ علیہ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुबारका तिलावत फरमाई :

﴿3﴾ وَمَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَكَأَنَّمَا خَرَّ مِنَ السَّمَاءِ

فَتَخَطَّفُهُ الطَّيْرُ أَوْ تَهْوِي بِهِ الرِّيحُ فِي مَكَانٍ سَحِيقٍ

(प १७, الحج: ३१)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और जो **अल्लाह** का शरीक करे वोह गोया गिरा आस्मान से कि परन्दे उसे उचक ले जाते हैं। या हवा उसे किसी दूर जगह फैंकती है। (1)

फिर उस की रूह जिस्म में लौटा दी जाती है और दो फिरिश्ते उस के पास आ कर बैठ जाते हैं और पूछते हैं : “हा हा ला अद्री या’नी तेरा रब्ब कौन है ?” वोह कहता है : “हा हा ला अद्री ! मुझे नहीं मा’लूम।” फिर वोह पूछते हैं : “मा दीनक तेरा दीन क्या है ?” वोह जवाब देता है : “मा त्फोलु फी हद्दा रर्रुलु लद्दी यूँत फीकूम”। फिर वोह पूछते हैं : “मा’नी दुन्या में इस शख्सियत के मुतअल्लिक क्या कहा करता था जो तुम में मबरुष हुई ?” तो वोह जवाब में कहता है : “हा हा ला अद्री या’नी हाए अफ्सोस ! मैं नहीं जानता।” फिर वोह पूछते हैं : “इस ने झूट बोला, इस के लिये आग का बिछौना बिछाओ और आग का लिबास पहना कर जहन्नम का दरवाजा खोल दो।” पस जहन्नम की सख्त गरमी उसे आ पहुंचती है, उस पर क़ब्र तंग हो जाती है यहां तक कि उस की पसलियां बिखर जाती हैं फिर उस के पास एक बदसूरत, गन्दे कपड़ों और इन्तिहाई नागवार बू वाला शख्स आ कर कहता है : “मैं तुझे ऐसी ख़बर देता हूँ जो तुझे ग़मगीन कर देगी, जान लो ! येह वोह दिन है जिस का तुम से वा’दा किया गया था।” तो वोह उस से पूछता है : “तू कौन है ?” वोह जवाब देते हुए कहता है : “मैं तेरा दुन्या में किया हुवा ख़बीष अमल हूँ।” तो वोह मुर्दा कहता है : “ऐ मेरे रब्ब عَزَّ وَجَلَّ ! कियामत काइम न कर।” (المسند للإمام أحمد بن حنبل، حديث البراء بن عازب، الحديث १८५९، ج ६، ص ६१३، بتغير قليل)

**मौत के बा’द भी सत्तर होलनाकियां हैं :**

सरकारे वाला तबार, हम बेकसों के मददगार, शफीए रोज़े शुमार, दो अलम के मालिको मुख्तार बिइज़ने परवर दगार صَلَّى اللہ تعالیٰ علیہ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फरमाने इब्रत निशान है : “मौत की सख्तियां तलवार की हज़ार ज़र्बों से भी ज़ियादा शदीद हैं और बेशक इस के बा’द भी सत्तर होलनाकियां हैं जिन में से हर एक मौत से सत्तर गुना ज़ियादा सख्त है।”

(حلیۃ الاولیاء، عبد العزیز بن ابی رواد، الحديث ११९३، ج ۸، ص ۲۱۸ مختصراً)

①.....मुफ़्स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ’ला हज़रत, सदरुल अफ़ज़िल सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْہَادِی तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं : “और (परन्दे) बोटी बोटी कर के खा जाते हैं। मुराद येह है कि शिर्क करने वाला अपनी जान को बदतरीन हलाकत में डालता है। ईमान को बुलन्दी में आस्मान से तश्बीह दी गई। और ईमान तर्क करने वाले को आस्मान से गिरने वाले के साथ, और उस की ख़्वाहिशाते नफ़सानिय्या को जो उस की फ़िक्कों को मुन्तशिर करती हैं बोटी बोटी ले जाने वाले परन्दे के साथ, और शयातीन को जो उस को वादिये ज़लालत में फैंकते हैं हवा के साथ तश्बीह दी गई और उस नफ़ीस तश्बीह से शिर्क का अन्जामे बद समझाया गया।”

हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : “मैं ने एक रात क़ब्र और मौत के मुतअल्लिक़ ख़ूब ग़ौरो फ़िक्र किया तो उसी रात मैं ने ख़्वाब देखा गोया मैं क़ब्रिस्तान में हूँ और मुर्दे अपनी क़ब्रों में इस हाल में हैं कि उन के बिस्तर बिछे हुए हैं और उन की भीनी भीनी खुशबू फैली हुई है।” मैं ने पूछा : “येह कौन है ?” मुझे बताया गया : “येह फ़रमां बरदार हैं जो क़ियामत तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़ास फ़ज़्लो करम में रहेंगे।” मैं ने पूछा : “ना फ़रमान कहां हैं ?” तो बताया गया : “”ज़मीन ने उन्हें वहशत की तारिकियों में धंसा दिया अब तो वोह देख सकते हैं, न ही दिखाए जाएंगे। नेक और बदकार दोनों में फ़र्क़ येह है कि एक के लिये दुन्या कैदख़ाना और क़ब्र आज़ादी है और दूसरे के लिये दुन्या आज़ादी और क़ब्र कैदख़ाना है। उन्होंने ने दुन्या में खुद को थका कर विसाल की हलावत और वज्दान की राहत पाई है, कानों को नापसन्दीदा बातों से बंद कर के नज़रें झुकाते हुए जमाले खुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ का मुशाहदा किया और महबूबते इलाही عَزَّوَجَلَّ का जाम पी कर मदहोश हो गए।”

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** इतना कुछ जान लेने के बावजूद येह ग़फ़लत कैसी ? हालांकि तुम्हें बोसीदा ठिकाने की तरफ़ लौटना है ? लापरवाही कैसी ? हालांकि ज़िन्दगी मुख़्तसर है। कब तक सरकशी और कोताही करते रहोगे ? येह काहिली कैसी ? हालांकि तुम्हें डराने वाले ने भी डराया ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! हबीब के दरवाज़े से तुम्हारा पीछे रहना तुम्हारी बुरी तदबीर है। कब तक तुम तकब्बुर करते रहोगे ? हालांकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ देख रहा है ? ऐ भाइयो ! जवानी में तुम्हारा घूमना फिरना तुम्हें परेशान कर देगा और अपने नफ़्स के धोके की तरफ़ माइल होना तुम्हें बदल देगा और तुम्हारा नेमतों वाले घर को छोड़ कर जहन्नम की तरफ़ भागना तुम्हारी हालत को तब्दील कर देगा। क्या तुम क़ब्र में अपने ठिकाने को भूल गए ? हां ! गुनाहों ने तुम्हारे दिल को सियाह कर के तुम्हें बदल कर रख दिया। क्या तुम उस घड़ी को याद नहीं करते जिस की हौलनाकी से तुम्हारी पेशानी से पसीना बहने लग जाएगा ? जिस के अचानक आने से ज़बानें गुंग (गूंगी) हो जाएंगी और आंखों से अफ़सोस के क़तरे टपकने लगेंगे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम पर रहम फ़रमाए, क़ियामत के होशरुबा मन्ज़र को याद रखो ! क्यूंकि मुआमला बहुत सख़्त है और अपनी बक़िय्या उम्र जल्दी जल्दी नेकियां करने में गुज़ारो। वरना मौत के बा'द नदामत फ़ाइदा न देगी।

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿4﴾ وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ذَلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيدُ (پ: ۲۶, ق: ۱۹) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और आई मौत की सख़्ती हक़ के साथ, येह है जिस से तू भागता था।

**प्यारे इस्लामी भाइयो !** कहां हैं तुम से पहले वाले लोग ? कहां हैं तुम्हारे हम उम्र जो कूच कर गए ? कहां हैं साहिबे माल और उन के जानशीन ? अब वोह सब अपने गुनाहों पर नादिम हो रहे हैं। हाए अफ़सोस ! ऐ काश ! वोह इस मक़ाम की हौलनाकी को जान लेते जिस से बच्चा भी बुढ़ा हो जाता है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ذَلِكَ  
مَا كُنْتُ مِنْهُ تَحِيدُ ۝ (پ ۲۶: ۱۹)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और आई मौत की सख्ती हक़  
के साथ, येह है जिस से तू भागता था ।

प्यारे इस्लामी भाइयो ! तअज्जुब है जब तुम्हें **अल्लाह** عزّوجلّ की तरफ़ बुलाया जाता है तो तुम लापरवाही करने लगते हो और जब तुम्हें नसीहतें नेकियों की तरफ़ राग़िब करती हैं तो तुम अकड़ते हो । याद रखो ! तुम से पहले कितनों को मौत ने पछाड़ा कि अब उन का नामो निशान भी बाक़ी नहीं । ऐ वोह लोगो जिन का जिस्म तो ज़िन्दा है लेकिन दिल मुर्दा है । अन् क़रीब हसरतों के वक़्त तुम उस चीज़ का मुशाहदा कर लोगे जिस को देखना नहीं चाहते । चुनान्चे, **अल्लाह** عزّوجلّ इरशाद फ़रमाता है :

وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ذَلِكَ  
مَا كُنْتُ مِنْهُ تَحِيدُ ۝ (پ ۲۶: ۱۹)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और आई मौत की सख्ती हक़  
के साथ, येह है जिस से तू भागता था ।

प्यारे इस्लामी भाइयो ! कितनी ही जानों को मौत ने उन के घरों में बे आराम किया ! कितनी ही आजमाइशों और बलाओं को उन जिस्मों में आबाद किया जो नाज़ो नेअम में पले बड़े थे ! कितनों की अरवाह को अपने बोझ से क़ब्र के गढ़ों की तरफ़ मुन्तक़िल किया ! और बहुत से अफ़राद के रुख़्सारों को क़ब्र की मिट्टी में ज़लील किया । ऐ मेरे भाइयो ! अपनी जान पर रोओ उस रोज़े से पहले जो फ़ाइदा न देगा । **अल्लाह** عزّوجلّ इरशाद फ़रमाता है :

وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ذَلِكَ  
مَا كُنْتُ مِنْهُ تَحِيدُ ۝ (پ ۲۶: ۱۹)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और आई मौत की सख्ती हक़  
के साथ, येह है जिस से तू भागता था ।

प्यारे इस्लामी भाइयो ! होशियार हो जाओ ! दुन्या अहमक़ों के लिये सर सब्जो शादाब है, अन् क़रीब कुछ दिनों के बा'द तुम मेरी बात समझ जाओगे जब तुम्हारी रूह निकल रही होगी, जब वोह सब कुछ खुल कर सामने आ जाएगा जो तुम्हारी आंखों से ओझल है और फिर अमल का मौक़अ न मिलेगा । **अल्लाह** عزّوجلّ इरशाद फ़रमाता है :

وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ذَلِكَ  
مَا كُنْتُ مِنْهُ تَحِيدُ ۝ (پ ۲۶: ۱۹)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और आई मौत की सख्ती हक़  
के साथ, येह है जिस से तू भागता था ।

प्यारे इस्लामी भाइयो ! अफ़सोस है तुम पर ! क्या तुम्हें इल्म नहीं कि तुम हर लम्हा मौत की तरफ़ सफ़र कर रहे हो ? क्या तुम्हें इल्म नहीं कि तुम्हारे बुरे आ'माल शुमार किये जा रहे हैं ? कितने ही उम्मीद रखने वाले रुस्वा हुए ! उन्होंने ने उम्मीदें बांध रखी थीं कि अचानक मौत का गुज़र हुवा और वोह अपनी उम्मीदों को न पहुंच सके जिन की उन को चाहत थी । **अल्लाह** عزّوجلّ इरशाद फ़रमाता है :



وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ذَلِكَ  
مَا كُنْتُ مِنْهُ تَحِيدُ ۝ (پ ۲۶، ق ۱۹)

ऐ मौला ए'राज करने वाले ! कब तक येह ए'राज करता रहेगा ? क्या तुझे इल्म

है कि तेरी जवानी तलबे माल में गुजर गई और अब तेरे लिये हलाकत है ? क्योंकि तेरी उम्र गुजर चुकी है और तेरे आ'जा हर लम्हा तुझ से बगावत पर आमादा हैं । अफ़सोस ! अब तू जादे राह जम्अ कर ले । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! सफ़र बहुत तबील है । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ذَلِكَ  
مَا كُنْتُ مِنْهُ تَحِيدُ ۝ (پ ۲۶، ق ۱۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और आई मौत की सख़्ती हक़ के साथ, येह है जिस से तू भागता था ।

ऐ वोह शख्स जिस का दिल नेक महफ़िल में भी अस्बाब में मशगूल रहता है ! ऐ वोह शख्स जो वा'जो नसीहत सुन कर भी तौबा नहीं करता ! ऐ वोह शख्स जिस पर नाफ़रमानियों ने तारीक पर्दा डाल दिया ! ऐ वोह शख्स जिस पर ख़्वाहिशाते नफ़सानिय्या ने जन्नत के दरवाजे बंद कर दिये ! अपने नफ़्स पर रो क्यूँकि रोना अकषर फ़ाइदा देता है । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ذَلِكَ  
مَا كُنْتُ مِنْهُ تَحِيدُ ۝ (پ ۲۶، ق ۱۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और आई मौत की सख़्ती हक़ के साथ, येह है जिस से तू भागता था ।

क्या तुझे इल्म नहीं कि मौत तुझे टिक-टिकी बांध कर देख रही है ? उस ने दूसरों का शिकार किया और अज़ करीब तुझे भी शिकार करेगी । क्या तुझे उस का इल्म न हुवा जो दूसरों के साथ किया गया ? क्या तेरी ग़फ़लत ने हर वादी व घाटी में तुझे मौत से ख़बरदार न किया ? क्या तू ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमान नहीं सुना ?

وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ذَلِكَ  
مَا كُنْتُ مِنْهُ تَحِيدُ ۝ (پ ۲۶، ق ۱۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और आई मौत की सख़्ती हक़ के साथ, येह है जिस से तू भागता था ।

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दो ! कुरआने करीम में ग़ौरो फ़िक्क करो, वा'दा व वईद को समझने के लिये अपने दिलों को हाज़िर रखो और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इताअत को लाज़िम पकड़ो क्यूँकि येही फ़रमां बरदार बन्दों की शान है और उस के ग़ज़ब से डरो, कितने ही लोग खुदाए जब्बारो क़हहार **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाफ़रमान हैं, जब कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿۵﴾ إِنَّ بَطْشَ رَبِّكَ لَشَدِيدٌ (پ ۳۰، البروج: ۱۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक तेरे रब्ब की गिरिफ़्त बहुत सख़्त है ।

कहां हैं जिन्हों ने मज़बूत मज़बूत महल्लात की बुन्याद रखी ? ब खुशी अरसए दराज़ तक लोगों पर हुक्मरानी करते रहे और खुद उन लोगों से पहले ही इस दुन्या से चल बसे । अपनी जहालत से समझ बैठे कि उन्हें यहां से कूच नहीं करना फिर जब उन्होंने ने हलाकत का जाम पिया तो वोह चिख़ते रह गए । क्या तू नहीं देखता कि उन्होंने ने मौत से डराने वाले के डराने को नहीं सुना ।

जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ذَلِكَ  
مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيدُ ۝ (प. २६: १९)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और आई मौत की सख़्ती हक़  
के साथ, येह है जिस से तू भागता था ।

ऐ शख़्स ! तुझे तेरा गुज़श्ता और आयन्दा आने वाला दिन डरा रहा है । सूरज चांद तेरे सामने इब्रत के नुमूने हैं और तू ख़ताओं पर डटा हुवा है । बेशक तू क़ब्र के क़रीब है और फिर भी उस वईद से ग़ाफ़िल है जो तुझे सुनाई जाती है ।

وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ذَلِكَ  
مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيدُ ۝ (प. २६: १९)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और आई मौत की सख़्ती हक़  
के साथ, येह है जिस से तू भागता था ।

क्या तुझे इल्म नहीं कि ज़बान के मुतअल्लिक सब कुछ पूछा जाएगा, क़दम के निशानात का हिसाब लिया जाएगा और ज़बान की लगज़िशों का भी हिसाब होगा, तेरे आ'जा तेरे दुन्या में किये हुए आ'माल की गवाही देंगे, क्या तू नहीं जानता कि मौत तेरी ताक में तेरी शहरग से भी ज़ियादा क़रीब है ? चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ذَلِكَ  
مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيدُ ۝ (प. २६: १९)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और आई मौत की सख़्ती हक़  
के साथ, येह है जिस से तू भागता था ।

ऐ अपनी आंखों से इब्रत के नुमूनों का मुशाहदा करने वाले ! और ऐ अपने कानों से नसीहतों को सुनने वाले ! तुझे हर लम्हा मौत से डराया जा रहा है । चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ذَلِكَ  
مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيدُ ۝ (प. २६: १९)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और आई मौत की सख़्ती हक़  
के साथ, येह है जिस से तू भागता था ।

गोया तू मौत के दहाने पर खड़ा है और मौत तुझे इस तरह उचक लेगी जिस तरह बिजली बीनाई छीन लेती है और अफ़सोस तू उस को खुद से दूर भी न कर सकेगा अगर्चे तू मशरिको मगरिब का भी मालिक बन जाए । उस वक़्त तुझे येह सब कुछ छूट जाने पर बहुत ज़ियादा अफ़सोस और हसरत होगी । और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ذَلِكَ  
مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيدُ ۝ (प. २६: १९)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और आई मौत की सख़्ती हक़  
के साथ, येह है जिस से तू भागता था ।

### रिक्कत भरी दुआ :

ऐ मेरे मालिको मौला **عَزَّوَجَلَّ** ! अगर हम गुनाहों की वजह से तेरे अज़ाब से डरते हैं तो हुस्ने ज़न ने हमें तेरे षवाब की भी तम्ह दे रखी है। अगर तू मुआफ़ फ़रमा दे तो तुझ से ज़ियादा कौन इस का हक़ रखता है ? और अगर तू अज़ाब दे तो तुझ से ज़ियादा अद्ल करने वाला कौन है ? ऐ मेरे परवर दगार **عَزَّوَجَلَّ** ! अगर तू इबादतो रियाज़त करने वालों पर रहम फ़रमाएगा तो ख़ताकारों पर कर्म कौन करेगा ? अगर तू सिर्फ़ मुख़्लिसीन के आ'माल क़बूल फ़रमाएगा तो हम जैसे रियाकारों का क्या बनेगा ? अगर तू सिर्फ़ मोहसिनीन को इज़्ज़त से नवाजेगा तो हम जैसे बदकार कहाँ जाएंगे ? या इलाही **عَزَّوَجَلَّ** ! मेरी हसरत कितनी ज़ियादा है कि मैं ने दूसरों को तो नसीहत की लेकिन खुद गाफ़िल रहा। ऐ मेरे मौला **عَزَّوَجَلَّ** ! कितनी सख़्त मुसीबत है मुझ पर कि दूसरे बेदार हैं और मैं सोया हुवा हूँ। ऐ मेरे मालिक **عَزَّوَجَلَّ** ! मेरा मुआमला कितना शदीद है कि दूसरों की रहनुमाई कर रहा हूँ और खुद हैरानो परेशान हूँ। ऐ मेरे रब्बे क़दीर **عَزَّوَجَلَّ** ! अफ़वो दरगुज़र के साथ पुर ख़तर और तकलीफ़ देह रास्ते में मेरी मदद फ़रमा। या इलाही **عَزَّوَجَلَّ** ! जब तू ने अपनी राह पर चलने वालों की रहनुमाई फ़रमाई तो वोह तुझ तक पहुंच गए। ऐ मेरे ख़ालिके हकीकी **عَزَّوَجَلَّ** ! अगर मेरा कलाम ख़ालिस तेरी रिज़ा के लिये नहीं तो मेरे इजतिमाअ में कोई ऐसा शख्स तो होगा जो ख़ालिस तेरी रिज़ा के लिये हाज़िर हुवा होगा अपने नूर के वासिते मुझ ख़ताकार के हक़ में उस की शफ़ाअत क़बूल फ़रमा और या अरहमर्राहिमीन ! हम सब को अपनी रहमत में ढांप ले।

صَلَّى اللّٰهُ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَآلِهِ وَصَحْبِهِ وَسَلَّمَ





बयान 17 :

## करामातें औलिया का पुबूत

हम्मे बारी तआला :

सब खूबियां **अल्लाह** عز وجل के लिये हैं जिस ने अहले महब्बत (या'नी अपने औलियाए किराम **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِم**) के लिये इबादत का दरवाजा ख़ास कर दिया जिस से वोह पहचाने जाते हैं। जब मख़्लूक सो जाती है तो वोह उन को अपने दरवाजे की तरफ़ ले आता है और वोह उस की बारगाह में क़ियाम व सुजूद में रात बसर करते हैं। वोह रात के इब्तिदाई हिस्से में कितने अच्छे अन्दाज़ में इबादत करते हैं और आखिरी हिस्से में कितने प्यारे अन्दाज़ में नादिम होते हैं। अगर तू उन को देखेगा तो इस हाल में पाएगा कि उन के लिये दरवाजे खोल दिये गए और पर्दे हटा दिये गए और उन्हें जाते इलाही के मुशाहदे का इन्आम अता किया गया।

याद रखो ! औलियाए किराम की सब से बड़ी करामत इताअते इलाही عز وجل पर हमेशगी की तौफीक़ और मा'सिय्यत व मुख़ालफ़ते शरअ से महफूज़ रहना है और कुरआने मजीद में हज़रते सय्यिदतुना मरियम **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا** का वाकिआ करामाते औलिया के इज़हार पर शाहिद है। हालांकि आप **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا** रसूल या नबी न थीं। चुनान्वे, **अल्लाह** عز وجل इरशाद फ़रमाता है :

كُلَّمَا دَخَلَ عَلَيْهَا زَكَرِيَّا الْمِحْرَابَ وَجَدَ عِنْدَهَا رِزْقًا قَالَ يَمْرُؤُا أَنَّى لَكَ هَذَا قَالَتْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ يَرْزُقُ مَنْ يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ 0 (٣: 3٧) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान** : जब ज़करिय्या उस के पास उस की नमाज़ पढ़ने की जगह जाते उस के पास नया रिज़क़ पाते, कहा ऐ मरियम येह तेरे पास कहां से आया बोलीं वोह **अल्लाह** के पास से है बेशक **अल्लाह** जिसे चाहे बे गिनती दे।<sup>(1)</sup>

और **अल्लाह** عز وجل हज़रते सय्यिदतुना मरियम **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا** से इरशाद फ़रमाता है : **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान** : और खज़ूर की जड़ पकड़ कर अपनी तरफ़ हिला तुझ पर ताज़ी पक्की खज़ूरें गिरेंगी।

इन्हीं करामात में से एक येह भी है जो हज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र **عَلَيْهِ السَّلَام** से ज़ाहिर हुई या'नी आप **عَلَيْهِ السَّلَام** ने दीवार को सीधा कर दिया और इस के इलावा दीगर कई अज़ाइबात जिन की

①.....मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ज़िल सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي** तफ़सीरे ख़जाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तहूत फ़रमाते हैं : “हज़रते मरियम ने सिगरे सिन्नी में कलाम किया जब कि वोह पालने (झूले) में परवरिश पा रही थीं जैसा कि उन के फ़रज़न्द हज़रते ईसा **عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** ने इसी हाल में कलाम फ़रमाया। **मस्अला** : येह आयत करामाते औलिया के पुबूत की दलील है कि **अल्लाह** तआला उन के हाथों पर ख़वारिक़ ज़ाहिर फ़रमाता है। हज़रते ज़करिय्या ने जब येह देखा तो फ़रमाया : जो जाते पाक मरियम को बे वक़्त, बे फ़स्ल और बिग़ैर सबब के मेवा अता फ़रमाने पर क़ादिर है वोह बेशक इस पर क़ादिर है कि मेरी बांझ बीबी को नई तन्दुरुस्ती दे और मुझे इस बुढ़ापे की उम्र में उम्मीद मुन्कतेअ हो जाने के बा'द फ़रज़न्द अता करे बई ख़याल आप ने दुआ की जिस का अगली आयत में बयान है।”

मा'रिफ़त हज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام को हासिल थी और हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام पर वोह उमूर आदतन मख़्फ़ी थे। येह सब करामात हज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام के साथ ख़ास थीं हालांकि आप عَلَيْهِ السَّلَام नबी नहीं बल्कि वली थे।<sup>(1)</sup>

### गाय बोल उठी :

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि “सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने बयान फ़रमाया : “एक शख्स गाय पर बोझ उठाए उसे हांकता जा रहा था कि गाय उस की तरफ़ मुतवज्जेह हो कर (ब ज़बाने फ़सीह) कहने लगी : “मैं इस लिये पैदा नहीं की गई, मुझे तो खेती के लिये पैदा किया गया है।”

(صحيح مسلم، كتاب فضائل الصحابة، باب فضائل أبي بكر الصديق، الحديث ۲۳۸۸، ص ۱۰۹۸)

### जमीन सोना बन गई :

हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि “अब्बादान शहर में एक हब्शी फ़कीर था जो अ़म तौर पर खन्डरात में रहता था। एक दिन मैं अपनी ज़रूरियात व हाजात की तलाश में निकला। जब उस ने मुझे देखा तो मुस्कुराने लगा और अपने हाथ से ज़मीन की तरफ़ इशारा किया तो देखते ही देखते वोह ज़मीन चमकदार सोना बन गई। फिर मुझ से कहने लगा। “अपनी ज़रूरत पूरी कर लो।” मैं ने अपनी ज़रूरत के मुताबिक़ ले लिया लेकिन इस वाक़िए ने मुझे ख़ौफ़ज़दा कर दिया इस लिये मैं वहां से भाग खड़ा हुवा।

### वादी के पश्चर जवाहिरात बन गए :

हज़रते सय्यिदुना अबू यज़ीद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَحِيد से मन्कूल है कि “मेरे पास मेरे उस्ताज़ हज़रते अबू अली सनदी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ तशरीफ़ लाए, उन के हाथ में एक थेली थी, उन्होंने ने उसे उन्डेला तो उस से जवाहिर नुमूदार हुए, मैं ने अर्ज़ की : “येह मोती आप को कहां से मिले?” इरशाद फ़रमाया : “मैं यहां एक वादी में उतरा तो अचानक चराग़ की तरह टिमटिमाते हुए येह मोती देखे, मैं ने इन को उठा लिया।” मैं ने अर्ज़ की : “जब आप वादी में गए थे तो आप की कैफ़ियत कैसी थी?” उन्होंने ने इरशाद फ़रमाया : “उस वक़्त मैं इस हाल में नहीं था जिस में इस वक़्त हूं।”

### सब से बड़ी करामत :

हज़रते सय्यिदुना सहल बिन अब्दुल्लाह رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : “सब से बड़ी करामत येह है कि तू अपने बुरे अख़्लाक़ को अच्छे अख़्लाक़ से बदल डाल।”

①.....मुजहिदे आ'ज़म, इमामे अहले सुन्नत, हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ फ़रमाते हैं : “सय्यिदुना ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام जम्हूर के नज़्दीक नबी हैं।” (फ़तावा रज़विय्या, जि. 26, स. 401)

## महफ़ि़रत का परवाना :

हज़रते सय्यिदुना जुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي इरशाद फ़रमाते हैं : “मैं ने एक नौजवान को देखा जो का’बए मुकर्रमा رَازِهَا اللَّهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا के नज़्दीक कषरत से रुकूअ व सुजूद कर रहा था। मैं ने उस के पास जा कर कहा : “बिलाशुबा तुम कषरत से नमाज़ पढ़ रहे हो।” तो वोह कहने लगा : “मैं अपने **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से यहां से वापस जाने के परवाने का इन्तिज़ार कर रहा हूं।” हज़रते सय्यिदुना जुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : “मैं ने देखा कि ऊपर से कागज़ का एक टुकड़ा गिरा जिस में लिखा हुआ था : “येह पैग़ाम अज़ीज़ व ग़फ़ार की जानिब से अपने सच्चे बन्दे की तरफ़ है, अब तू इस हाल में लौट जा कि तेरे अगले पिछले सारे गुनाह मुआफ़ कर दिये गए हैं।”

## मुन्किरीने करामात श्री मान गए :

हज़रते सय्यिदुना जाबिर रजी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं कि “रहबा के अकषर लोग करामाते औलिया के मुन्किर थे। एक दिन मैं एक दरिन्दे पर सुवार हो कर रहबा में दाख़िल हो गया और पूछा : “कहां हैं वोह लोग जो औलियाए किराम رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ की करामात को झुटलाते हैं?” आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं : “इस के बा’द वोह मेरे बारे में ऐसी यावहगोइयों से बाज़ आ गए।”

## कीकर के दरख़्त से ख़जूरें :

हज़रते सय्यिदुना बक्र बिन अब्दुरहमान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْخَنَّان फ़रमाते हैं कि “हम एक जंगल में हज़रते सय्यिदुना जुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي के साथ महूवे सफ़र थे। हम ने कीकर के एक दरख़्त के नीचे पड़ाव किया और कहा : “येह जगह कितनी उम्दा है, काश ! इस दरख़्त पर तरो ताज़ा ख़जूरें होतीं।” हज़रते सय्यिदुना जुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي मुस्कुराने और पूछने लगे : “क्या तरो ताज़ा ख़जूरें खाना चाहते हो?” इस के साथ ही आप ने दरख़्त को हरकत दे कर कहा : “मैं तुझे उस ज़ात की क़सम देता हूं जिस ने तुझे पैदा किया और तनावर दरख़्त बनाया ! हमारी तरफ़ ताज़ा ख़जूरें फेंक।”

फिर आप ने उस दरख़्त को हिलाया तो उस से वाकिअतन ताज़ा ख़जूरें गिरने लगीं। हम ने ख़ूब सैर हो कर खाई फिर हम सो गए और बेदार हो कर जब हम ने दोबारा दरख़्त को हरकत दी तो हम पर कांटे गिरे।”

## ढाड़रे से पानी स्वां हो गया :

एक क़ाफ़िला हज़रते सय्यिदुना अय्यूब सख़्तियानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى के साथ सफ़र पर था। जब क़ाफ़िले वाले पैदल चलने से अज़िज़ आ गए तो शिदते प्यास की वजह से पानी त़लब किया। हज़रते सय्यिदुना अय्यूब عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى ने उन से पूछा : “क्या तुम मेरी ज़िन्दगी में इस राज़



को पोशीदा रखोगे ?” उन्होंने ने कहा : “जी हां ! रखेंगे ।” तो आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने एक गोल दाइरा खींचा तो उस से पानी जारी हो गया । उन सब ने जी भर कर पानी पिया । जब काफ़िला बसरा पहुंचा और हज़रते सय्यिदुना हम्माद बिन जैद رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने येह बात बताई तो हज़रते सय्यिदुना अब्दुल वाहिद बिन जैद رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने फ़रमाया : “उस दिन मैं भी उन के साथ मौजूद था ।”

**दरिन्दा भी ताबेझ हो गया :**

हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान घौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي और हज़रते सय्यिदुना शैबान राई عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ दोनों हज़ के इरादे से निकले तो उन के सामने एक दरिन्दा आ गया । हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान घौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي ने हज़रते सय्यिदुना शैबान राई عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से फ़रमाया : “क्या आप इस दरिन्दे को नहीं देख रहे ?” तो उन्होंने ने फ़रमाया : “डरिये मत ।” फिर हज़रते सय्यिदुना शैबान राई عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने उस का कान पकड़ कर दबाया तो वोह दुम हिलाने लगा, आप عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने उस की दुम पकड़ी तो हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान घौरी عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي ने फ़रमाया : “क्या येह शोहरत नहीं ?” तो उन्होंने ने जवाब दिया : “अगर मुझे शोहरत का ख़ौफ़ न होता तो मैं अपना ज़ादे राह इस की पीठ पर रख देता यहां तक कि मक्काए मुकर्रमा पहुंच जाता ।”

**फुक़रा पर सदक्का न करने की सज़ा :**

हज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन तरकान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ फ़रमाते हैं : “मैं फुक़रा की सोहबत में बैठा करता था । एक दफ़्आ मुझे एक दीनार मिला तो मैं ने इरादा किया कि येह दीनार उन फुक़रा को दे दूँ फिर मेरे दिल में येह ख़याल आया कि शायद मुझे इस की उन से ज़ियादा हाज़त है । तो अचानक मुझे दांत का दर्द महसूस हुवा । मैं ने अपने दांत को जड़ से उखेड़ दिया फिर दूसरा दर्द करने लगा । उस को भी जड़ से उखेड़ दिया तो हातिफ़े ग़ैबी से आवाज़ आई : “अगर तुम उन फुक़रा को वोह दीनार न दोगे तो तुम्हारे मुंह में एक दांत भी बाकी न रहेगा ।”

**मय्यित ने हाथ पकड़ लिया :**

हज़रते सय्यिदुना अहमद बिन मन्सूर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि “मेरे उस्ताज़ हज़रते सय्यिदुना अबू या'कूब सूसी عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने इरशाद फ़रमाया : “मैं ने अपने एक मुरीद को गुस्ल दिया तो उस ने तख़्तए गुस्ल पर मेरा हाथ पकड़ लिया । मैं ने उस से कहा : “ऐ मेरे बेटे ! मेरा हाथ छोड़ दे, मैं जानता हूँ कि तू मुर्दा नहीं तू तो सिर्फ़ एक घर से दूसरे घर की तरफ़ मुन्तक़िल हुवा है ।” तो उस ने मेरा हाथ छोड़ दिया ।

## दरख्त बोल उठा :

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र शिब्ली رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि “मैं ने **अल्लाह** عزّوجلّ से यह अहद किया कि मैं हलाल के सिवा कुछ न खाऊंगा। एक दिन मैं जंगल से गुज़र रहा था कि मुझे अन्जीर का एक दरख्त नज़र आया, मैं ने खाने के लिये जूँ ही उस की तरफ़ हाथ बढ़ाया तो दरख्त बोल उठा और कहने लगा : “अपना वा'दा पूरा करो और मुझ से न खाओ क्योंकि मेरा मालिक यहूदी है।”

## सब्र करते तो क़दमों से चश्मा जारी हो जाता :

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन हनीफ़ رَحْمَةُ اللَّهِ الْلطيف عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि “मैं हज़ के इरादे से जब बग़दाद पहुंचा तो मेरी हालत यह थी कि लगातार चालीस दिन तक कुछ न खाया और न ही वहां हज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की बारगाह में हाज़िरी दी। फिर मैं एक कुंवें पर पानी पीने की गरज़ से गया तो वहां एक हिरन को कुंवें के ऊपर देखा जो कि पानी पी रहा था, मैं भी बहुत प्यासा था। जब मैं हिरन की जगह कुंवें के करीब हुवा तो वोह मुझे देख कर भाग गया। जब मैंने कुंवें में देखा तो पानी कुंवें में नीचे तक था कि निकाला नहीं जा सकता था तो मैं येह कहते हुए चल दिया कि “ऐ मेरे मालिको मौला عزّوجلّ ! मेरा मर्तबा उस हिरन के बराबर भी नहीं।” तो मुझे पीछे से निदा दी गई : “हम ने तुझे आजमाया था लेकिन तू ने सब्र न किया, अब वापस जा और पानी पी ले।” जब मैं वापस गया तो कुंवां वाकेई पानी से भरा हुवा था। मैं ने अपना मश्कीज़ा भी भर लिया और शहर जाते हुए उसी से पानी भी पीता रहा और वुजू भी करता रहा लेकिन वोह ख़त्म न हुवा। जब मैं ख़ूब सैराब हो गया तो ग़ैब से एक आवाज़ सुनी : “हिरन तो बिग़ैर मश्कीजे और रस्सी के साथ आया था लेकिन तुम मश्कीजे के साथ आए हो।” जब मैं हज़ से लौट कर आया और जामेअ मस्जिद में दाख़िल हुवा तो जूँ ही हज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी की नज़र मुझ पर पड़ी तो उन्होंने ने इरशाद फ़रमाया : “अगर तुम लम्हा भर भी सब्र करते तो तुम्हारे क़दमों से चश्मा जारी हो जाता।”

## ऊंट ज़िन्दा हो गया :

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन सईद बसरी رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि “मैं बसरा के रास्ते में पैदल चल रहा था कि मैं ने एक आ'राबी को अपने ऊंट को हांकते हुए देखा। मैं उस की तरफ़ मुतवज्जेह हुवा तो क्या देखता हूँ कि अचानक ऊंट गिर कर मर गया और वोह शख्स और कजावा गिर गया तो वोह आ'राबी **अल्लाह** عزّوجلّ की बारगाह में अर्ज़ करने लगा : “ऐ तमाम अस्बाब को पैदा करने वाले ! और हर तलबगार की तलब को पूरा करने वाले ! मुझे उसी हालत पर लौटा दे।” तो क्या देखता हूँ कि वोह ऊंट दोबारा उठ खड़ा हुवा और वोह शख्स और कजावा भी उस के ऊपर हो गया।

## हज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र (عَلَيْهِ السَّلَام) का खाना खिलाना :

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र हम्दानी قُدِّسَ سِرُّهُ الثُّورَانِ फ़रमाते हैं कि “एक दफ़ा मैं कुछ खाए पिये बिग़ैर हज्जाज़ के जंगल में चालीस दिन रहा। फिर एक दिन मुझे गर्म साग और रोटी खाने की ख़्वाहिश हुई तो मैं ने अपने दिल में कहा : “मैं जंगल में हूँ, मेरे और इराक़ के दरमियान तवील मसाफ़त है।” अभी मेरी बात भी पूरी न हुई थी कि मैं ने एक आ'राबी को दूर से येह निदा देते हुए सुना : “ऐ गर्म साग और रोटी के ख़्वाहिशमन्द !” मैं ने उस के पास जा कर पूछा : “क्या आप के पास गर्म साग और रोटी है ?” उस ने जवाब दिया : “जी हां।” फिर उस ने चादर बिछा कर रोटी और साग निकाला और मुझे खाने को कहा, मैं ने खा लिया। उस ने फिर कहा : “मज़ीद खाएं।” मैं ने फिर खा लिया। उस ने तीसरी बार खाने को कहा तो मैं ने खा लिया लेकिन जब चौथी मरतबा उस ने कहा तो मैं ने उस से पूछा : “उस ज़ात की क़सम जिस ने आप को मेरे पास भेजा ! आप कौन हैं ?” तो उस ने जवाब दिया : “मैं ख़िज़्र (عَلَيْهِ السَّلَام) हूँ।” फिर वोह गा़इब हो गए इस के बा'द मैं उन की ज़ियारत न कर सका।

## वली की हिफ़ाज़त का खुदाई इन्तिज़ाम :

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़व्वास رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि “सफ़रे मक्का के दौरान रात के वक़्त मेरा गुज़र एक वीरान खन्डर से हुवा, उस में एक बहुत बड़ा दरिन्दा देख कर मैं डर गया। अचानक ग़ैब से एक आवाज़ आई : “षाबित क़दम रहो, क्यूंकि तुम्हारे इर्द गिर्द हिफ़ाज़त के लिये सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते मौजूद हैं।”

## फ़रमां बरदार ग़धा :

हज़रते सय्यिदुना अय्यूब हम्माल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الرَّزَّاقِ फ़रमाते हैं कि “हज़रते सय्यिदुना अबू अब्दुल्लाह दैलमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَنَى जब सफ़र में किसी जगह ठहरते तो अपने गधे के कान में फ़रमाया करते : “मैं तुझे बांधना चाहता था लेकिन अब नहीं बांधूंगा बल्कि तुझे उस सेहरा में भेज रहा हूँ ताकि तू घास खा ले। लिहाज़ा जब हम यहां से कूच का इरादा करें तो वापस आ जाना।” और जब खानगी का वक़्त होता तो वोह गधा हकीकतन आप के पास वापस आ जाता।”

## रैत सत्तू बन गई :

हज़रते सय्यिदुना आदम बिन अबी अय्यास رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ इरशाद फ़रमाते हैं कि “मैं अस्क़लान में था और हमारे पास एक नौजवान शख्स आता, हमारे पास बैठता, गुफ़्तगू करता रहता और जब हम फ़ारिग़ होते तो नमाज़ पढ़ने लग जाता। उस ने एक दिन हमें अलवदाअ कहते हुए कहा :



“मैं अस्कन्दरिया जा रहा हूं।” मैं भी उस के साथ निकल पड़ा और उस को कुछ दिरहम दिये लेकिन उस ने लेने से इन्कार कर दिया। जब मैं ने उस को मजबूर किया तो उस ने अपने मशकीजे में मुठ्ठी भर रैत डाल कर ऊपर से समन्दर का पानी डाल दिया फिर मुझे कहा : “खाओ।” मैं ने देखा तो येह इन्तिहाई लजीज़ और मीठे सत्तू थे।” उस ने कहा : “जिस की हालत ऐसी हो उसे दिरहमों की क्या ज़रूरत है ?” फिर उस ने चन्द अशआर कहे, जिन का मफहूम येह है :

“दिल में कोई जगह ऐसी नहीं जो महबूब के इलावा किसी की महबूबत के लिये खाली हो। मेरा सुवाल और उम्मीद व मुराद सब वोही मेरा हबीब है। जब तक मैं जिन्दा हूं मेरी जिन्दगी उसी के लिये है। जब कभी कोई बीमारी मेरे दिल पर उतरी तो उस के इलावा इस बीमारी का इलाज किसी ने न किया।”

**प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो !** जब एक कौम पर इनायते बारी तआला की हवा चली तो उस ने उन के जहालतो ग़फ़लत से मरे हुए दिलों को जिन्दा कर दिया। उन को तौफीक के प्याले में पाकीज़ा शराब से सैराब किया तो उन की अरवाह में खुशी व मसरत के आधार नुमूदार हो गए और वज्दो राहत का अषर चमक उठा। उन्होंने दुन्या को निगाहे इब्रत से देखा तो इस हकीकत को पालिया कि यहां कोई हकीकी घर नहीं और उन्होंने दौलत व इक़्तदार की बजाए आख़िरत की तय्यारी में जल्दी करने को ग़नीमत जाना। उन के दिन रोज़े में और रातें ज़िक्रो अज़्कार में गुज़रीं। जब गाफ़िल नींद से लुत्फ़ अन्दोज़ हो रहे होते तो वोह मौला करीम عَزَّوَجَلَّ से मुनाजात में मशगूल रहते। महबूबे हकीकी عَزَّوَجَلَّ ने उन को अपनी रिज़ा अता की तो उन्होंने उस की महबूबत को हर शै पर तरजीह दी। उस ने उन को महबूबत के प्याले से सैराब कर के रात की तन्हाई में उन पर तजल्ली फ़रमाई तो वोह उस के मुशाहदे और दीदार से लुत्फ़ अन्दोज़ हुए। फिर महबूब ने उन को निदा दी : “ऐ मेरे महबूब बन्दो ! मेरे दरवाज़े पर आ जाओ, मैं ने तुम्हारे लिये हिजाब उठा कर जन्नत के दरवाज़े खोल दिये हैं और तुम में से हर एक को उस की मन मानती मुरादें अता कर दी हैं।”

وَصَلَّى اللّٰهُ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَآلِهِ وَصَحْبِهِ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا دَائِمًا إِلَى يَوْمِ الدِّينِ



बयान 18 :

## क़ियामत की अख़्बियां

﴿يَوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوهٌ وَتَسْوَدُّ وُجُوهٌ﴾ (پ ۴، ال عمران: ۱۰۶)

“तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जिस दिन कुछ मुंह ऊंजाले (रोशन) होंगे और कुछ मुंह काले ।”

हम्दे बारी तअ़ाला :

तमाम ख़ूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने अपने औलियाए किराम رَحْمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی को सिफ़ते जमाल की मा'रिफ़त अता फ़रमाई तो उन्होंने ने इरफ़ाने खुदावन्दी की ला ज़वाल दौलत हासिल कर ली, इस के ज़रीए **अल्लाह** तअ़ाला ने उन की रहनुमाई फ़रमाई और उन्हें उन्सियत अता फ़रमाई तो वोह उस से मानूस हो गए, उन के दिलों में अपने राज़ डाले तो उस की तौफ़ीक़ से वोह उस का ज़िक्र करने लगे । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन के अहवाल बयान कर के मलाइका के सामने फ़ख़्र फ़रमाता है और ऐसा क्यूं न हो जब कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन से महब्वत करता है और वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से महब्वत करते हैं । उस ने उन के दिलों की सल्तनत ग़फ़लत से महफूज फ़रमाई तो उन्होंने ने उस की बारगाह को लाज़िम पकड़ लिया और अपनी सारी ज़िन्दगी इख़लास को अपनाया और इसी पर दुन्या से रुख़्सत हुए । उन्होंने ने अपने नामए आ'माल को नाफ़रमानियों से ख़ाली रखा और उसे सहीह रखने की पूरी कोशिश की । वोह रोज़े जज़ा की रुस्वाई से ख़ौफ़ज़दा हुए तो उन्होंने ने उस अमानत की हिफ़ाज़त की जो उन के सिपुर्द की गई थी । उन्होंने ने अपने महबूबे हकीकी عَزَّوَجَلَّ से अपना मक्सूद भी पाया और त़लब से भी सिवा पाया । मगर महरूम को बद नसीबी के मैदान में छोड़ दिया जाएगा, उस पर रहूम न किया जाएगा, उसे मैदाने महशर में शर्मसारी होगी और उसे उस दिन ज़िल्लत का लिबास पहनाया जाएगा जिस दिन कुछ मुंह रोशन और कुछ सियाह होंगे ।

तमाम ख़ूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने काइनात को बिगैर किसी शरीको मददगार के पैदा किया, वोह अपनी बुलन्द शान में इस से पाक है कि उसे ताक़तो कुदरत और वुजूद दिया जाए । उस ने अपनी शान के मुताबिक़ अर्श पर इस्तिवा फ़रमाया । वोह इस्तिग़फ़ार करने वालों के लिये आस्मान पर नुज़ूल फ़रमाता है । वोह बरोज़े क़ियामत सब ज़मीनों को समेट देगा और उस के हुक्म से सब आस्मान लपेट दिये जाएंगे, वोह फ़रमाता है : (پ ۲۱، السجدة: ۷) :

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जिस ने जो चीज़ बनाई ख़ूब बनाई और पैदाइशे इन्सान की इब्तिदा मिट्टी से फ़रमाई ।” उस ने इन्सान को एक हकीर नुत्फ़े से पैदा किया और उसे पूरी दुन्या में फैला दिया । **अल्लाह** तअ़ाला इन्सान के मुतअल्लिक़ फ़रमाता है :

(1) "जभी वोह सरीह झगडालू है।" **तर्जमए कन्जुल ईमान** : فَإِذَا هُوَ خَصِيمٌ مُّتِينٌ (प: २३, य: ७७)

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस पर शहवत मुसल्लत की ताकि इसे अपना इन्तिहाई जलील होना मा'लूम हो जाए। नाफरमानों की आंखों से इब्रत के आंसू खुशक हो गए फिर भी उन का कोई मददगार नहीं लेकिन उस के दरवाजे पर पहुंचने वाले महबूब बन्दों को उन का महबूब हकीकी येह निदा देता है : **وَسَارِعُوا إِلَىٰ مَغْفِرَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمُوتُ وَالْأَرْضُ لَا أَعِدُّ لِلْمُتَّقِينَ** (प: ४, य: १३३) "तर्जमए कन्जुल ईमान : और दौड़ो अपने रब की बख्शिश और ऐसी जन्नत की तरफ जिस की चौड़ान में सब आस्मानो ज़मीन आ जाएं, परहेजगारों के लिये तय्यार रखी है।" (2)

सब खूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस को ह्वादिषाते ज़माना नहीं बदल सकते, और न ही ज़मानों की तब्दीली उस को पुराना कर सकती है, वोही अब्वलो आखिर और ज़ाहिरो बातिन है :

①.....मुफस्सिरे शहीर, खलीफ़ आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ज़िल सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي तफ़्सीरे ख़ुज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं :

"शाने नुज़ूल : येह आयत आस बिन वाइल या अबू जहल और ब कौले मशहूर उबय्य बिन खलफ़ हु-मजी के हक़ में नाज़िल हुई जो इन्कारे बा'ष में या'नी मरने के बा'द उठने के इन्कार में सय्यिदे आलम وَاللَّهُ وَسَلَّمَ से बहोष तकरार करने आया था, उस के हाथ में एक गली हुई हड्डी थी, उस को तोड़ता जाता था और सय्यिदे आलम وَاللَّهُ وَسَلَّمَ से कहता जाता था कि क्या आप का खयाल है कि इस हड्डी को गल जाने और रेज़ा रेज़ा हो जाने के बा'द भी **अल्लाह** तआला ज़िन्दा करेगा ?" हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : हां, और तुझे भी मरने के बा'द उठाएगा और जहन्नम में दाख़िल फ़रमाएगा। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और उस के जहल का इज़हार फ़रमाया गया कि "गली हुई हड्डी का बिखरने के बा'द **अल्लाह** तआला की कुदरत से ज़िन्दगी क़बूल करना, अपनी नादानी से ना मुमकिन समझता है। कितना अहमक है अपने आप को नहीं देखता कि इब्तिदा में एक गन्दा नुत्फ़ा था, गली हुई हड्डी से भी हकीर तर। **अल्लाह** तआला की कुदरत कामिला ने इस में जान डाल दी, इन्सान बनाया तो ऐसा मग़रूरो मुतकब्बिर इन्सान हुवा कि उस की कुदरत ही का मुन्किर हो कर झगड़ने आ गया। इतना नहीं देखता कि जो क़ादिरे बर हक़ पानी की बूंद को कवी और तवाना इन्सान बना देता है, उस की कुदरत से गली हुई हड्डी को दोबारा ज़िन्दगी बख़्श देना क्या बईद है ? और इस को ना मुमकिन समझना कितनी खुली हुई जहालत है।"

②.....मुफस्सिरे शहीर, खलीफ़ आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ज़िल सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي तफ़्सीरे ख़ुज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं : "तौबा व अदाए फ़राइज व ताआत व इख़लासे अमल इख़्तियार कर के। येह जन्नत की वुस्अत का बयान है इस तरह कि लोग समझ सकें। क्यूंकि उन्हीं ने सब से वसीअ चीज़ जो देखी है वोह आस्मानो ज़मीन ही है। इस से वोह अन्दाज़ा कर सकते हैं कि अगर आस्मानो ज़मीन के तबके तबके और परत परत बना कर जोड़ दिये जाएं और सब का एक परत कर दिया जाए इस से जन्नत के अर्ज़ का अन्दाज़ा होता है कि जन्नत कितनी वसीअ है। हरकुल बादशाह ने सय्यिदे आलम وَاللَّهُ وَسَلَّمَ की ख़िदमत में लिखा कि जब जन्नत की येह वुस्अत है कि आस्मानो ज़मीन उस में आ जाएं तो फिर दोज़ख़ कहाँ है। हुज़ूरे अक़दस وَاللَّهُ وَسَلَّمَ ने जवाब में फ़रमाया कि "سُبْحَانَ اللَّهِ ! जब दिन आता है तो रात कहाँ होती है। इस कलामे बलाग़त निज़ाम के मा'ना निहायत दक्कीक़ हैं। ज़ाहिर पहलू येह है कि दौरए फ़लकी से एक जानिब में दिन हासिल होता है तो उस के जानिबे मुक़ाबिल में शब होती है। इसी तरह जन्नत जानिबे बाला में है और दोज़ख़ जहते पस्ती में। यहूद ने येही सुवाल हज़रते उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से किया था तो आप ने भी येही जवाब दिया था। इस पर उन्हीं ने कहा कि तोरैत में भी इसी तरह समझाया गया है। मा'ना येह है कि **अल्लाह** की कुदरत इख़्तियार से कुछ बईद नहीं, जिस शै को जहां चाहे रखे। येह इन्सान की तंगिये नज़र है कि किसी चीज़ की वुस्अत से हेरान होता है तो पूछने लगता है कि ऐसी बड़ी चीज़ कहाँ समाएगी हज़रते अनस बिन मालिक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से दर्याफ़्त किया गया कि जन्नत आस्मान में है या ज़मीन में। फ़रमाया : कौन सी ज़मीन और कौन सा आस्मान है जिस में जन्नत समा सके। अर्ज़ किया गया : फिर कहाँ है ? फ़रमाया : आस्मानों के ऊपर जैरे अर्श। इस आयत और इस से ऊपर की आयत "وَاتَّقُوا يَوْمَ تُأْتَىٰ السَّاعَةُ أَعَدَّ لِلْكَافِرِينَ" से षाबित हुवा कि जन्नत व दोज़ख़ पैदा हो चुकी मौजूद हैं।"



يَعْلَمُ حَاشَةَ الْأَعْيُنِ وَمَا تُخْفِي الصُّدُورُ (پ ۲۴، المؤمن: ۱۹)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :** **अल्लाह** जानता है चोरी छुपे की निगाह और जो कुछ सीनों में छुपा है ।”

वोह न जिस्म है, न जोहर, न अर्ज, न उन्सर । वोह नूरानी पर्दे से पाक है । उसे फ़ारिग़ समझने वाला अन्धा है, उस का इन्कार करने वाला बे बसीरत है, उस के लिये जिस्म षाबित करने वाला कमजोर नज़र वाला है और किसी को उस के मुशाबे क़रार देने वाला जहालत की जेल में कैद है । उस ने बादलों से ज़ोर का पानी बरसाया और उस के ज़रीए बहुत सी इकठ्ठी और बिखरी हुई नबातात को पैदा फ़रमाया और उन की ग़िज़ाएं बनाई और हैवानात से मुज़क्करो मुअन्नष पैदा करने के लिये पानी से माहए मनविथ्या बनाया ताकि इस में उस का फ़ज़ल और अदल ज़ाहिर हो और पैदा होने वाली मख़्लूक तो आजिज़ो मजबूर है । उस ने इब्तिदाए ओफ़रीनिश ( पैदाइश ) से लौहे महफूज़ में इन्सान की नजातो हलाकत के कलिमात लिख दिये । पस सब के साथ वोह मुअमला होगा जो वोह अपने अन्दाज़े से नहीं जान सकते और उमूर का अन्जाम उन से मख़फ़ी कर दिया गया । फिर मौत का तीर उन की तरफ़ फेंका तो उस ने उन्हें हलाक कर दिया फिर अपने इस फ़रमान से उसे नसीहत की ताकि वोह जान ले कि **अल्लाह** तआला अपने फैसले में अदल करने वाला है और वोह जुल्म नहीं करता :

كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ وَأَنَّمَا تُوَفَّوْنَ أَجُورَ كُم يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَمَن رُّحِزَ عَنِ النَّارِ وَأُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا مَتَاعُ الْغُرُورِ (پ ۴، آل عمران: ۱८۵)

**“तर्जमए कन्जुल ईमान :** हर जान को मौत चखनी है और तुम्हारे बदले तो क़ियामत ही को पूरे मिलेंगे जो आग से बचा कर जन्नत में दाख़िल किया गया वोह मुराद को पहुंचा और दुन्या की ज़िन्दगी तो येही धोके का माल है ।”<sup>(१)</sup>

पाक है वोह रब्ब عزّوجلّ जो फैसला करता है लेकिन उस पर फैसला नहीं किया जाता, जो सहीह को तोड़ता और टूटे हुए को जोड़ता है, मैं उस की रहमत की उम्मीद रखने वाले जैसी हम्द करता हूं क्योंकि वोह उसे गुफ़ूरो रहीम जानता है और मैं गवाही देता हूं कि **अल्लाह** عزّوجلّ के सिवा कोई इबादत के लाइक नहीं, वोह यक्ता है उस का कोई शरीक नहीं, मैं ने येह गवाही रोज़े महशर के लिये तय्यार कर रखी है और मैं गवाही देता हूं कि हज़रते सय्यिदुना मुहम्मदे मुस्तफ़ि صَلَّی اللّهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कीयामत के दिन तमाम **अल्लाह** عزّوجلّ के खास बन्दे और रसूल हैं, आप صَلَّی اللّهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कीयामत के दिन तमाम उम्मतों की शफ़ाअत फ़रमाएंगे ।

①.....मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ज़िल सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّهِ الْبَارِی तपसीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारक के तहत फ़रमाते हैं : “दुन्या की हकीकत इस मुबारक जुम्ले ने बे हिजाब कर दी । आदमी ज़िन्दगानी पर मफ़तू (या'नी फ़रेफ़ता, शैदा) होता है । इसी को सरमाया समझता है और इस फ़ुर्सत को बेकार जाएअ कर देता है । वक्ते अख़ीर उसे मा'लूम होता है कि उस में बक़ा न थी । उस के साथ दिल लगाना हयाते बाक़ी और उख़वी ज़िन्दगी के लिये सख़्त मुज़रत रसां हुवा । हज़रते सईद बिन जुबैर ने फ़रमाया कि “दुन्या तालिबे दुन्या के लिये मताअ, गुरूर और धोके का सरमाया है । लेकिन आख़िरत के तलबगार के लिये दौलत बाक़ी के हुसूल का ज़रीआ और नफ़अ देने वाला सरमाया है ।”

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! फ़ानी शै का तालिब ख़सारे में है क्यूँकि अ़न क़रीब वोह उसे छोड़ कर रुख़्सत हो जाएगा । क्या वोह शख़्स आने वाले लम्हात में ग़ौर नहीं करता कि वोह उस की उम्र के मुख़्तलिफ़ मराहिल को लपेट रहे हैं ? क्या दिन और रात आंखें फाड़े उस का पीछा नहीं कर रहे ? क्या तू उन लोगों को नहीं देखता जिन की उम्रें हज़ार साल थीं ? जब उन से पूछा गया तो उन्होंने ने येही जवाब दिया कि हम तो कुछ दिन ही इस दारे फ़ानी में ठहरे थे । क्या तू उन लोगों से ना वाकिफ़ है जिन्होंने ने मज़बूत क़ल्ए बनाए और बड़े बड़े सरदारों को हिफ़ाज़त में रखा, उन्हें आबाद करने वालों को मौत की तलवार ने तबाहो बरबाद कर दिया और सब कुछ उन की मिल्कियत से ज़ाइल हो गया ? कौमे नूह, कौमे आदो षमूद और कौमे तुब्बअ और पहले वाले बादशाह कहां हैं ? कहां हैं वोह लोग जो कभी मशरिफ़ो मगरिब के मालिक थे ? वोह सब रुख़्सत हो गए और उन का सब कुछ बेकार हो गया और वोह खुद उस अन्धेरे घर में मुन्तकिल हो गए, जिस में शाहो गदा सब बराबर हैं । क्या तू उन की पुकार नहीं सुनता हालांकि वोह ख़ामोश मा'लूम होते हैं ? ऐ अक्लमन्द ! क्या तू उन से नसीहत हासिल नहीं करता ? शद्दाद और नो'मान कहां चले गए ? बादशाहे ईरान और उस के महल्लात कहां गए ? बाबिल के बादशाहों को किस ने गुमनाम कर दिया ? मौत ने उन सब का काम तमाम कर दिया : “يَوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوهٌ وَتَسْوَدُّ وُجُوهٌ (پ ۴، ۵، ۶، ۷، ۸، ۹، ۱۰، ۱۱، ۱۲، ۱۳، ۱۴، ۱۵، ۱۶، ۱۷، ۱۸، ۱۹، ۲۰، ۲۱، ۲۲، ۲۳، ۲۴، ۲۵، ۲۶، ۲۷، ۲۸، ۲۹، ۳۰، ۳۱، ۳۲، ۳۳، ۳۴، ۳۵، ۳۶، ۳۷، ۳۸، ۳۹، ۴۰، ۴۱، ۴۲، ۴۳، ۴۴، ۴۵، ۴۶، ۴۷، ۴۸، ۴۹، ۵۰، ۵۱، ۵۲، ۵۳، ۵۴، ۵۵، ۵۶، ۵۷، ۵۸، ۵۹، ۶۰، ۶۱، ۶۲، ۶۳، ۶۴، ۶۵، ۶۶، ۶۷، ۶۸، ۶۹، ۷۰، ۷۱، ۷۲، ۷۳، ۷۴، ۷۵، ۷۶، ۷۷، ۷۸، ۷۹، ۸۰، ۸۱، ۸۲، ۸۳، ۸۴، ۸۵، ۸۶، ۸۷، ۸۸، ۸۹، ۹۰، ۹۱، ۹۲، ۹۳، ۹۴، ۹۵، ۹۶، ۹۷، ۹۸، ۹۹، ۱۰۰، ۱۰۱، ۱۰۲، ۱۰۳، ۱۰۴، ۱۰۵، ۱۰۶، ۱۰۷، ۱۰۸، ۱۰۹، ۱۱۰، ۱۱۱، ۱۱۲، ۱۱۳، ۱۱۴، ۱۱۵، ۱۱۶، ۱۱۷، ۱۱۸، ۱۱۹، ۱۲۰، ۱۲۱، ۱۲۲، ۱۲۳، ۱۲۴، ۱۲۵، ۱۲۶، ۱۲۷، ۱۲۸، ۱۲۹، ۱۳۰، ۱۳۱، ۱۳۲، ۱۳۳، ۱۳۴، ۱۳۵، ۱۳۶، ۱۳۷، ۱۳۸، ۱۳۹، ۱۴۰، ۱۴۱، ۱۴۲، ۱۴۳، ۱۴۴، ۱۴۵، ۱۴۶، ۱۴۷، ۱۴۸، ۱۴۹، ۱۵۰، ۱۵۱، ۱۵۲، ۱۵۳، ۱۵۴، ۱۵۵، ۱۵۶، ۱۵۷، ۱۵۸، ۱۵۹، ۱۶۰، ۱۶۱، ۱۶۲، ۱۶۳، ۱۶۴، ۱۶۵، ۱۶۶، ۱۶۷، ۱۶۸، ۱۶۹، ۱۷۰، ۱۷۱، ۱۷۲، ۱۷۳، ۱۷۴، ۱۷۵، ۱۷۶، ۱۷۷، ۱۷۸، ۱۷۹، ۱۸۰، ۱۸۱، ۱۸۲، ۱۸۳، ۱۸۴، ۱۸۵، ۱۸۶، ۱۸۷، ۱۸۸، ۱۸۹، ۱۹۰، ۱۹۱، ۱۹۲، ۱۹۳، ۱۹۴، ۱۹۵، ۱۹۶، ۱۹۷، ۱۹۸، ۱۹۹، ۲۰۰، ۲۰۱، ۲۰۲، ۲۰۳، ۲۰۴، ۲۰۵، ۲۰۶، ۲۰۷، ۲۰۸، ۲۰۹، ۲۱۰، ۲۱۱، ۲۱۲، ۲۱۳، ۲۱۴، ۲۱۵، ۲۱۶، ۲۱۷، ۲۱۸، ۲۱۹، ۲۲۰، ۲۲۱، ۲۲۲، ۲۲۳، ۲۲۴، ۲۲۵، ۲۲۶، ۲۲۷، ۲۲۸، ۲۲۹، ۲۳۰، ۲۳۱، ۲۳۲، ۲۳۳، ۲۳۴، ۲۳۵، ۲۳۶، ۲۳۷، ۲۳۸، ۲۳۹، ۲۴۰، ۲۴۱، ۲۴۲، ۲۴۳، ۲۴۴، ۲۴۵، ۲۴۶، ۲۴۷، ۲۴۸، ۲۴۹، ۲۵۰، ۲۵۱، ۲۵۲، ۲۵۳، ۲۵۴، ۲۵۵، ۲۵۶، ۲۵۷، ۲۵۸، ۲۵۹، ۲۶۰، ۲۶۱، ۲۶۲، ۲۶۳، ۲۶۴، ۲۶۵، ۲۶۶، ۲۶۷، ۲۶۸، ۲۶۹، ۲۷۰، ۲۷۱، ۲۷۲، ۲۷۳، ۲۷۴، ۲۷۵، ۲۷۶، ۲۷۷، ۲۷۸، ۲۷۹، ۲۸۰، ۲۸۱، ۲۸۲، ۲۸۳، ۲۸۴، ۲۸۵، ۲۸۶، ۲۸۷، ۲۸۸، ۲۸۹، ۲۹۰، ۲۹۱، ۲۹۲، ۲۹۳، ۲۹۴، ۲۹۵، ۲۹۶، ۲۹۷، ۲۹۸، ۲۹۹، ۳۰۰، ۳۰۱، ۳۰۲، ۳۰۳، ۳۰۴، ۳۰۵، ۳۰۶، ۳۰۷، ۳۰۸، ۳۰۹، ۳۱۰، ۳۱۱، ۳۱۲، ۳۱۳، ۳۱۴، ۳۱۵، ۳۱۶، ۳۱۷، ۳۱۸، ۳۱۹، ۳۲۰، ۳۲۱، ۳۲۲، ۳۲۳، ۳۲۴، ۳۲۵، ۳۲۶، ۳۲۷، ۳۲۸، ۳۲۹، ۳۳۰، ۳۳۱، ۳۳۲، ۳۳۳، ۳۳۴، ۳۳۵، ۳۳۶، ۳۳۷، ۳۳۸، ۳۳۹، ۳۴۰، ۳۴۱، ۳۴۲، ۳۴۳، ۳۴۴، ۳۴۵، ۳۴۶، ۳۴۷، ۳۴۸، ۳۴۹، ۳۵۰، ۳۵۱، ۳۵۲، ۳۵۳، ۳۵۴، ۳۵۵، ۳۵۶، ۳۵۷، ۳۵۸، ۳۵۹، ۳۶۰، ۳۶۱، ۳۶۲، ۳۶۳، ۳۶۴، ۳۶۵، ۳۶۶، ۳۶۷، ۳۶۸، ۳۶۹، ۳۷۰، ۳۷۱، ۳۷۲، ۳۷۳، ۳۷۴، ۳۷۵، ۳۷۶، ۳۷۷، ۳۷۸، ۳۷۹، ۳۸۰، ۳۸۱، ۳۸۲، ۳۸۳، ۳۸۴، ۳۸۵، ۳۸۶، ۳۸۷، ۳۸۸، ۳۸۹، ۳۹۰، ۳۹۱، ۳۹۲، ۳۹۳، ۳۹۴، ۳۹۵، ۳۹۶، ۳۹۷، ۳۹۸، ۳۹۹، ۴۰۰، ۴۰۱، ۴۰۲، ۴۰۳، ۴۰۴، ۴۰۵، ۴۰۶، ۴۰۷، ۴۰۸، ۴۰۹، ۴۱۰، ۴۱۱، ۴۱۲، ۴۱۳، ۴۱۴، ۴۱۵، ۴۱۶، ۴۱۷، ۴۱۸، ۴۱۹، ۴۲۰، ۴۲۱، ۴۲۲، ۴۲۳، ۴۲۴، ۴۲۵، ۴۲۶، ۴۲۷، ۴۲۸، ۴۲۹، ۴۳۰، ۴۳۱، ۴۳۲، ۴۳۳، ۴۳۴، ۴۳۵، ۴۳۶، ۴۳۷، ۴۳۸، ۴۳۹، ۴۴۰، ۴۴۱، ۴۴۲، ۴۴۳، ۴۴۴، ۴۴۵، ۴۴۶، ۴۴۷، ۴۴۸، ۴۴۹، ۴۵۰، ۴۵۱، ۴۵۲، ۴۵۳، ۴۵۴، ۴۵۵، ۴۵۶، ۴۵۷، ۴۵۸، ۴۵۹، ۴۶۰، ۴۶۱، ۴۶۲، ۴۶۳، ۴۶۴، ۴۶۵، ۴۶۶، ۴۶۷، ۴۶۸، ۴۶۹، ۴۷۰، ۴۷۱، ۴۷۲، ۴۷۳، ۴۷۴، ۴۷۵، ۴۷۶، ۴۷۷، ۴۷۸، ۴۷۹، ۴۸۰، ۴۸۱، ۴۸۲، ۴۸۳، ۴۸۴، ۴۸۵، ۴۸۶، ۴۸۷، ۴۸۸، ۴۸۹، ۴۹۰، ۴۹۱، ۴۹۲، ۴۹۳، ۴۹۴، ۴۹۵، ۴۹۶، ۴۹۷، ۴۹۸، ۴۹۹، ۵۰۰، ۵۰۱، ۵۰۲، ۵۰۳، ۵۰۴، ۵۰۵، ۵۰۶، ۵۰۷، ۵۰۸، ۵۰۹، ۵۱۰، ۵۱۱، ۵۱۲، ۵۱۳، ۵۱۴، ۵۱۵، ۵۱۶، ۵۱۷، ۵۱۸، ۵۱۹، ۵۲۰، ۵۲۱، ۵۲۲، ۵۲۳، ۵۲۴، ۵۲۵، ۵۲۶، ۵۲۷، ۵۲۸، ۵۲۹، ۵۳۰، ۵۳۱، ۵۳۲، ۵۳۳، ۵۳۴، ۵۳۵، ۵۳۶، ۵۳۷، ۵۳۸، ۵۳۹، ۵۴۰، ۵۴۱، ۵۴۲، ۵۴۳، ۵۴۴، ۵۴۵، ۵۴۶، ۵۴۷، ۵۴۸، ۵۴۹، ۵۵۰، ۵۵۱، ۵۵۲، ۵۵۳، ۵۵۴، ۵۵۵، ۵۵۶، ۵۵۷، ۵۵۸، ۵۵۹، ۵۶۰، ۵۶۱، ۵۶۲، ۵۶۳، ۵۶۴، ۵۶۵، ۵۶۶، ۵۶۷، ۵۶۸، ۵۶۹، ۵۷۰، ۵۷۱، ۵۷۲، ۵۷۳، ۵۷۴، ۵۷۵، ۵۷۶، ۵۷۷، ۵۷۸، ۵۷۹، ۵۸۰، ۵۸۱، ۵۸۲، ۵۸۳، ۵۸۴، ۵۸۵، ۵۸۶، ۵۸۷، ۵۸۸، ۵۸۹، ۵۹۰، ۵۹۱، ۵۹۲، ۵۹۳، ۵۹۴، ۵۹۵، ۵۹۶، ۵۹۷، ۵۹۸، ۵۹۹، ۶۰۰، ۶۰۱، ۶۰۲، ۶۰۳، ۶۰۴، ۶۰۵، ۶۰۶، ۶۰۷، ۶۰۸، ۶۰۹، ۶۱۰، ۶۱۱، ۶۱۲، ۶۱۳، ۶۱۴، ۶۱۵، ۶۱۶، ۶۱۷، ۶۱۸، ۶۱۹، ۶۲۰، ۶۲۱، ۶۲۲، ۶۲۳، ۶۲۴، ۶۲۵، ۶۲۶، ۶۲۷، ۶۲۸، ۶۲۹، ۶۳۰، ۶۳۱، ۶۳۲، ۶۳۳، ۶۳۴، ۶۳۵، ۶۳۶، ۶۳۷، ۶۳۸، ۶۳۹، ۶۴۰، ۶۴۱، ۶۴۲، ۶۴۳، ۶۴۴، ۶۴۵، ۶۴۶، ۶۴۷، ۶۴۸، ۶۴۹، ۶۵۰، ۶۵۱، ۶۵۲، ۶۵۳، ۶۵۴، ۶۵۵، ۶۵۶، ۶۵۷، ۶۵۸، ۶۵۹، ۶۶۰، ۶۶۱، ۶۶۲، ۶۶۳، ۶۶۴، ۶۶۵، ۶۶۶، ۶۶۷، ۶۶۸، ۶۶۹، ۶۷۰، ۶۷۱، ۶۷۲، ۶۷۳، ۶۷۴، ۶۷۵، ۶۷۶، ۶۷۷، ۶۷۸، ۶۷۹، ۶۸۰، ۶۸۱، ۶۸۲، ۶۸۳، ۶۸۴، ۶۸۵، ۶۸۶، ۶۸۷، ۶۸۸، ۶۸۹، ۶۹۰، ۶۹۱، ۶۹۲، ۶۹۳، ۶۹۴، ۶۹۵، ۶۹۶، ۶۹۷، ۶۹۸، ۶۹۹، ۷۰۰، ۷۰۱، ۷۰۲، ۷۰۳، ۷۰۴، ۷۰۵، ۷۰۶، ۷۰۷، ۷۰۸، ۷۰۹، ۷۱۰، ۷۱۱، ۷۱۲، ۷۱۳، ۷۱۴، ۷۱۵، ۷۱۶، ۷۱۷، ۷۱۸، ۷۱۹، ۷۲۰، ۷۲۱، ۷۲۲، ۷۲۳، ۷۲۴، ۷۲۵، ۷۲۶، ۷۲۷، ۷۲۸، ۷۲۹، ۷۳۰، ۷۳۱، ۷۳۲، ۷۳۳، ۷۳۴، ۷۳۵، ۷۳۶، ۷۳۷، ۷۳۸، ۷۳۹، ۷۴۰، ۷۴۱، ۷۴۲، ۷۴۳، ۷۴۴، ۷۴۵، ۷۴۶، ۷۴۷، ۷۴۸، ۷۴۹، ۷۵۰، ۷۵۱، ۷۵۲، ۷۵۳، ۷۵۴، ۷۵۵، ۷۵۶، ۷۵۷، ۷۵۸، ۷۵۹، ۷۶۰، ۷۶۱، ۷۶۲، ۷۶۳، ۷۶۴، ۷۶۵، ۷۶۶، ۷۶۷، ۷۶۸، ۷۶۹، ۷۷۰، ۷۷۱، ۷۷۲، ۷۷۳، ۷۷۴، ۷۷۵، ۷۷۶، ۷۷۷، ۷۷۸، ۷۷۹، ۷۸۰، ۷۸۱، ۷۸۲، ۷۸۳، ۷۸۴، ۷۸۵، ۷۸۶، ۷۸۷، ۷۸۸، ۷۸۹، ۷۹۰، ۷۹۱، ۷۹۲، ۷۹۳، ۷۹۴، ۷۹۵، ۷۹۶، ۷۹۷، ۷۹۸، ۷۹۹، ۸۰۰، ۸۰۱، ۸۰۲، ۸۰۳، ۸۰۴، ۸۰۵، ۸۰۶، ۸۰۷، ۸۰۸، ۸۰۹، ۸۱۰، ۸۱۱، ۸۱۲، ۸۱۳، ۸۱۴، ۸۱۵، ۸۱۶، ۸۱۷، ۸۱۸، ۸۱۹، ۸۲۰، ۸۲۱، ۸۲۲، ۸۲۳، ۸۲۴، ۸۲۵، ۸۲۶، ۸۲۷، ۸۲۸، ۸۲۹، ۸۳۰، ۸۳۱، ۸۳۲، ۸۳۳، ۸۳۴، ۸۳۵، ۸۳۶، ۸۳۷، ۸۳۸، ۸۳۹، ۸۴۰، ۸۴۱، ۸۴۲، ۸۴۳، ۸۴۴، ۸۴۵، ۸۴۶، ۸۴۷، ۸۴۸، ۸۴۹، ۸۵۰، ۸۵۱، ۸۵۲، ۸۵۳، ۸۵۴، ۸۵۵، ۸۵۶، ۸۵۷، ۸۵۸، ۸۵۹، ۸۶۰، ۸۶۱، ۸۶۲، ۸۶۳، ۸۶۴، ۸۶۵، ۸۶۶، ۸۶۷، ۸۶۸، ۸۶۹، ۸۷۰، ۸۷۱، ۸۷۲، ۸۷۳، ۸۷۴، ۸۷۵، ۸۷۶، ۸۷۷، ۸۷۸، ۸۷۹، ۸۸۰، ۸۸۱، ۸۸۲، ۸۸۳، ۸۸۴، ۸۸۵، ۸۸۶، ۸۸۷، ۸۸۸، ۸۸۹، ۸۹۰، ۸۹۱، ۸۹۲، ۸۹۳، ۸۹۴، ۸۹۵، ۸۹۶، ۸۹۷، ۸۹۸، ۸۹۹، ۹۰۰، ۹۰۱، ۹۰۲، ۹۰۳، ۹۰۴، ۹۰۵، ۹۰۶، ۹۰۷، ۹۰۸، ۹۰۹، ۹۱۰، ۹۱۱، ۹۱۲، ۹۱۳، ۹۱۴، ۹۱۵، ۹۱۶، ۹۱۷، ۹۱۸، ۹۱۹، ۹۲۰، ۹۲۱، ۹۲۲، ۹۲۳، ۹۲۴، ۹۲۵، ۹۲۶، ۹۲۷، ۹۲۸، ۹۲۹، ۹۳۰، ۹۳۱، ۹۳۲، ۹۳۳، ۹۳۴، ۹۳۵، ۹۳۶، ۹۳۷، ۹۳۸، ۹۳۹، ۹۴۰، ۹۴۱، ۹۴۲، ۹۴۳، ۹۴۴، ۹۴۵، ۹۴۶، ۹۴۷، ۹۴۸، ۹۴۹، ۹۵۰، ۹۵۱، ۹۵۲، ۹۵۳، ۹۵۴، ۹۵۵، ۹۵۶، ۹۵۷، ۹۵۸، ۹۵۹، ۹۶۰، ۹۶۱، ۹۶۲، ۹۶۳، ۹۶۴، ۹۶۵، ۹۶۶، ۹۶۷، ۹۶۸، ۹۶۹، ۹۷۰، ۹۷۱، ۹۷۲، ۹۷۳، ۹۷۴، ۹۷۵، ۹۷۶، ۹۷۷، ۹۷۸، ۹۷۹، ۹۸۰، ۹۸۱، ۹۸۲، ۹۸۳، ۹۸۴، ۹۸۵، ۹۸۶، ۹۸۷، ۹۸۸، ۹۸۹، ۹۹۰، ۹۹۱، ۹۹۲، ۹۹۳، ۹۹۴، ۹۹۵، ۹۹۶، ۹۹۷، ۹۹۸، ۹۹۹، ۱۰۰०) ” जिस दिन कुछ मुंह ऊंजाले (रोशन) होंगे और कुछ मुंह काले ।”

**भेड़ियों और बकरियों में शुल्ह :**

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल वाहिद बिन जैद رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि “मैं तीन रोज़ रात के वक़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में येही इल्तिजा करता रहा कि वोह मुझे जन्नत में मेरा रफ़ीक़ दिखा दे तो मैं ने देखा कि कोई कहने वाला कह रहा है : “ऐ अब्दुल वाहिद ! जन्नत में तेरी रफ़ीक़ मैमूना सौदा होगी ।” मैं ने दर्याफ़्त किया : “वोह कहां रहती है ?” तो मुझे बताया गया कि वोह कूफ़ा के फुलां कबीले में रहती है । आप फ़रमाते हैं कि फिर मैं कूफ़ा चल पड़ा । उस के मुतअल्लिक़ लोगों से दर्याफ़्त करने पर उन्होंने ने मुझे बताया कि “वोह तो दीवानी है और हमारी बकरियां चराती है ।” मैं ने उन से कहा : “मैं उसे देखना चाहता हूं ।” तो लोगों ने कहा : “आप पहाड़ की तरफ़ जाएं ।” मैं ने वहां जा कर देखा कि वोह अपने सामने डन्डा नस्ब किये नमाज़ में खड़ी है, उस पर ऊन का जुब्बा लटक रहा था जिस पर लिखा था : “येह ख़रीदो फ़रोख़्त के लिये नहीं ।” और येह भी देखा कि बकरियां भेड़ियों के साथ मिल कर चर रही हैं । न तो भेड़िये इन को खाते हैं और न ही येह भेड़ियों से डरती हैं । जब उस ने मुझे देखा तो नमाज़ मुख़्तसर कर के कहा : “लौट जाएं, ऐ इब्ने जैद ! आप वापस चले जाएं, वा'दे की जगह यहां नहीं बल्कि वा'दे की जगह तो जन्नत है ।” मैं ने कहा : “**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप पर रहम फ़रमाए ! आप को किस ने बताया कि मैं इब्ने जैद हूं ?” तो उस ने जवाब देते हुए कहा : आप को मा'लूम नहीं कि रूहें एक इकठ्ठा लश्कर थीं जो एक दूसरे से मुतअरिफ़ हो गईं वोह बाहम महबूबत करती हैं और जिन्होंने ने एक दूसरे को न पहचाना वोह अलग रहती हैं ।” फिर मैं ने उस से कहा : “मुझे नसीहत करो ?” तो उस ने कहा :

“तअज्जुब है ! नसीहत करने वाले को भी भला नसीहत की जाएगी। बहर हाल ऐ इब्ने जैद ! अगर तुम अपने आ'जा पर अदल की कसोटी नाफिज कर लो तो मैं तुम्हें अपने आ'जा में छुपे हुए एक राज़ से आगाह करती हूं, ऐ इब्ने जैद ! मुझे यह बात मा'लूम हुई है कि जिस बन्दे को दुनिया की कोई शै अता की गई फिर उस को दूसरी मरतबा उस ने तलब किया तो **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ इस के साथ ही खल्वत की महब्वत उस से सलब कर लेता है और उस को कुर्ब के बदले जुदाई और उन्स के बदले वहशत दे देता है।” फिर उस ने चन्द अशआर कहे, जिन का मफहूम यह है :

“ऐ वाइज ! तू खुद नाफरमान है और लोगों को गुनाहों से रोकता और डांटता है। हकीकत में तू ही बीमार व कमजोर है कि गुनाहों को नापसन्द करने वाले से इन का वुकूअ बड़ा ही अजीब है। ऐ मेरे रफीक ! अगर तू ने जल्द ही अपने इन उयूब से दागदार होने से पहले पहले तौबा कर ली और अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ से सुल्ह कर ली तो जान ले कि तू जो भी कहेगा उस का मकामो मर्तबा दिलों में सच्चा होगा। लेकिन उस वक्त तेरी हालत यह है कि तू दूसरों को तो गुमराही व सरकशी से मन्अ करता है और खुद मन्अ करने में शक में मुब्तला है।”

अशआर कहने के बा'द वोह खामोश हुई तो मैं ने उस से इस्तिफ़सार किया : “मैं इन भेड़ियों को बकरियों के साथ देख रहा हूं कि न बकरियां भेड़ियों से डरती हैं और न ही भेड़िये बकरियों को खाते हैं।” तो उस ने कहा : “मैं ने अपने और अपने मालिक के दरमियान रुकावट को दूर कर के उस से सुल्ह कर ली तो उस ने भी भेड़ियों और बकरियों के दरमियान रुकावट दूर कर के इन की सुल्ह करवा दी।”

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** येह सादिकीन की अलामात, मोअमिनीन के फ़ज़ाइलो आदात, मुत्तकीन के आधार और बुजुर्गों के लगाए हुए बागात हैं। **ऐ वोह शख्स !** जो नाफ़रमानियों की राह में हैरान खड़ा है ! जान ले कि नेकी का रास्ता भी बहुत क़रीब है और ऐ वोह शख्स जिस को गुनाहों ने तौबा से रोक रखा है ! जल्दी से हमेशा के लिये तौबा कर ले। ऐ वोह शख्स जो मुसलसल ना फ़रमानियों में गुर्क होता जा रहा है ! लौट आ और जिस ने तुझे अपनी तरफ़ बुलाया है वोह तेरी पुकार सुन कर तुझे जवाब से नवाजेगा।

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** गोया तुम उम्मीदों के कांटने वाली मौत के बहुत क़रीब हो, वोह आएगी तो तुम कीड़ों और तारीकी के घरों की तरफ़ मुन्तक़िल हो जाओगे, वोह तुम्हें दोस्तों की महफ़िल से उचक लेगी फिर नाफ़रमान को शर्मिन्दगी का सामना करना पड़ेगा लेकिन अफ़्सोस ! उस वक्त उसे आ'माल से ख़ाली उम्र ज़ाएअ करने पर नदामत नफ़अ न देगी।

﴿1﴾ يَوْمَئِذٍ تُعْرَضُونَ لَا تَخْفَىٰ مِنْكُمْ خَافِيَةٌ

(प २९, हाफ़ा: १८)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :** उस दिन तुम सब पेश होगे कि तुम में कोई छुपने वाली जान छुप न सकेगी।

**ऐ इन्सान !** तुझ पर अफ़्सोस है, क्या तुझे वईदों से न डराया गया लेकिन तू फिर भी ख़ौफ़ नहीं करता। क्या तू उस ज़ात से हया नहीं करता जिस ने तुझे वुजूद बख़्शा और तेरी ख़ूब सूरत शकल बनाई, **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तुझे तेरे चाहने वाले भुला देंगे और तंग क़ब्र में डाल कर अकेला छोड़ देंगे।



## क़ब्र की दिल हिला देने वाली कहानी :

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ एक जनाज़े के साथ क़ब्रिस्तान तशरीफ़ ले गए, जब लोगों ने सफ़ें बना लीं तो आप सब से पीछे चले गए (वहां एक क़ब्र के पास बैठ कर ग़ौरो फ़िक्क में डूब गए), आप के दोस्तों ने इस्तिफ़्सार किया : “ऐ अमीरल मोअमिनीन ! आप तो मय्यित के वली हैं और आप ही पीछे चले गए।” किसी ने अर्ज़ की, “या अमीरल मोअमिनीन ! आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ यहां तन्हा कैसे तशरीफ़ फ़रमा हैं ?” फ़रमाया, “अभी अभी एक क़ब्र ने मुझे पुकार कर बुलाया और बोली, ऐ उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) ! मुझ से क्यूं नहीं पूछते कि मैं अपने अन्दर आने वालों के साथ क्या बरताव करती हूं ? मैं ने उस क़ब्र से कहा : मुझे ज़रूर बता। वोह कहने लगी, जब कोई मेरे अन्दर आता है तो मैं उस का कफ़न फाड़ कर जिस्म के टुकड़े टुकड़े कर डालती और उस का गोश्त खा जाती हूं, क्या आप मुझ से येह नहीं पूछेंगे कि मैं उस के जोड़ों के साथ क्या करती हूं ? मैं ने कहा, ज़रूर बता। तो कहने लगी, “हथेलियों को कलाइयों से, घुटनों को पिन्डलियों से और पिन्डलियों को क़दमों से जुदा कर देती हूं।” इतना कहने के बा’द हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ हिचकियां ले कर रोने लगे। जब कुछ इफ़ाका हुवा तो कुछ इस तरह इब्रत के मदनी फूल लुटाने लगे, “ऐ इस्लामी भाइयो ! इस दुन्या में हमें बहुत थोड़ा अर्सा रहना है, जो इस दुन्या में (सख़्त गुनहगार होने के बा वुजूद) साहिबे इक्तिदार है वोह (आख़िरत में) इन्तिहाई ज़लीलो ख़्बार है। जो इस जहां में मालदार है वोह (आख़िरत में) फ़कीर होगा। इस का जवान बुढ़ा हो जाएगा और जो ज़िन्दा है वोह मर जाएगा। दुन्या का तुम्हारी तरफ़ आना तुम्हें धोके में न डाल दे, क्यूंकि तुम जानते हो कि येह बहुत जल्द रुख़्सत हो जाती है। कहां गए तिलावते कुरआन करने वाले ? कहां गए बैतुल्लाह का हज़ करने वाले ? कहां गए माहे रमज़ान के रोज़े रखने वाले ? ख़ाक ने उन के जिस्मों का क्या हाल कर दिया ? क़ब्र के कीड़ों ने उन के गोश्त का क्या अन्जाम कर दिया ? उन की हड्डियों और जोड़ों के साथ क्या हुवा ? **اَللّٰهُمَّ** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! दुन्या में वोह आराम देह नर्म नर्म बिस्तर पर होते थे लेकिन अब वोह अपने घर वालों और वतन को छोड़ कर राहत के बा’द तंगी में हैं, उन की बेवाओं ने दूसरे निकाह कर के दोबारा घर बसा लिये, उन की अवलाद गलियों में दर बदर है, उन के रिश्तेदारों ने उन के मकानातो मीराष आपस में बांट ली। वल्लाह ! उन में कुछ खुश नसीब हैं जो क़ब्रों में मजे लूट रहे हैं और **वल्लाह !** बा’ज क़ब्र में अज़ाब में गरिफ़तार हैं।”

**अफ़सोस सद हज़ार अफ़सोस !** ऐ नादान ! जो आज मरते वक़्त कभी अपने वालिद की, कभी अपने बेटे की तो कभी सगे भाई की आंखें बंद कर रहा है, उन में से किसी को नहला रहा है, किसी को कफ़न पहना रहा है, किसी के जनाज़े को कन्धे पर उठा रहा है, किसी के जनाज़े के साथ जा रहा है, किसी को क़ब्र के गढ़े में उतार कर दफ़ना रहा है। (याद रख ! कल येह सभी कुछ तेरे साथ भी

होने वाला है) काश ! मुझे इल्म होता ! कौन सा गाल (क़ब्र में) पहले ख़राब होगा” फिर हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ रोज़े लगे और रोज़े रोज़े बेहोश हो गए और एक हफ़्ते के बा’द इस दुनिया से तशरीफ़ ले गए ।

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तुम्हारी बोई हुई फ़सल की कटाई का वक़्त क़रीब आ गया है, तुम कब तक इस ग़फ़लत का शिकार रहोगे ? क़ियामत की हौलनाकियां तुम्हारे सामने हैं कि जिस दिन बाप अपनी अवलाद से भागेगा, तुम्हें उस वक़्त इन्तिहाई अफ़सोस होगा जब तुम्हारे आ’माल का हिसाब होगा, तुम सुखी हुई उस घास की मानिन्द हो जाओगे जिस को हवाएं इधर उधर फेंक रही होती हैं । तुम कब तक इस ग़फ़लत में मुब्तला रहोगे हालांकि तौबा की क़बूलियत का इल्म तो ज़ाहिर हो चुका है । ऐ ख़्वाहिशात के समन्दर में ग़र्क़ रहने वालो ! नजात की कश्ती पर सुवार हो जाओ और अपने अफ़आल से बुराइयों का जड़ से ख़ातिमा कर दो, अपने नफ़्स को नदामत के साहिल पर डाल दो फिर तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को बहुत ज़ियादा करम फ़रमाने वाला पाओगे ।

**प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो !** **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ज़िल्लत और आजिज़ी के साथ अपने हाथ फैलाओ और इस घड़ी गिर्या व ज़ारी करते हुए पुकारो ! ऐ वोह ज़ात जिस की नाफ़रमानी करना उस को नुक़सान नहीं देती और न ही जिस की इत्ताअत करना उस को कोई फ़ाइदा देती है ! या अरहमर्राहिमीन ! हम तुझ से सुवाल करते हैं कि तू हमारी ख़राबियों के बदले दुरुस्ती अता फ़रमा और ख़सारे के इवज़ नफ़अ अता फ़रमा । ऐ वोह ज़ात जिस के नूर की मिषाल ऐसी है जैसे एक ताक़ जिस में चराग़ है ! अपनी रहमत से हमारे मुआमले में दरगुज़र फ़रमा ।

وَصَلَّى اللّٰهُ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَآلِهِ وَصَحْبِهِ وَسَلَّمَ تَسْلِيمًا دَائِمًا إِلَى يَوْمِ الدِّينِ



बयान 19 :

مناقبیہ شامیہ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی

हम्मे बारी तझाला :

तमाम खूबियां **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जो कभी मुफ़्लिस व मोहताज नहीं होता, वोह करम फ़रमाने वाला, क़दीम और यक्ता है, बाप बेटे से मुनज़्ज़ह है, हिस्सेदार और मददगार से पाक है, किसी हाकिम, मुमाषिल (या'नी मुशाबा), हटधर्म और सरकश से बहुत बुलन्द है, तमाम अच्छी ने'मतों पर तमाम ता'रीफ़ों के साथ उस का शुक्र अदा किया जाता है, वोह नाफ़रमान पर अपना पर्दा डाल देता है हालांकि वोह उसे नाफ़रमानी करते हुए देख रहा होता और मुलाहज़ा कर रहा होता है और वोह अपने ज़लील बन्दे पर अपने बे पायां एहसानात फ़रमाता है और उस के तमाम मकासिद पूरे फ़रमाता है। पाक है वोह जो मज़बूत चट्टानों और पथरीली ज़मीन से नहरें निकालता है, खुश्क बेजान लकड़ी से दरख़्त और खुशनुमा कलियां उगाता है और एक ही पानी से सैराब होने वाली बाहम मिली हुई या जुदा जुदा सीधी शाखों से मुख़्तलिफ़ ज़ाइकों और रंगों के तरो ताज़ा फ़ल पैदा फ़रमाता है। येह उस की कुदरत की बा'ज़ निशानियां और उस की हिक्मतो कारीगरी के बा'ज़ अज़ाइबात हैं। इन्सान को इस का मुशाहदा करना चाहिये।

वशीलउ औलिया ज़रीअउ शिफ़ा :

हज़रते सय्यिदुना यहूया बिन जलाद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि “मैं ने अपने वालिदे मोहतरम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ को येह फ़रमाते सुना : “मैं हज़रते सय्यिदुना मारूफ़ कर्खी रَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ के पास हाज़िर था कि एक शख्स ने हाज़िर हो कर उन से अर्ज़ की : ऐ अबू महफूज़ ! (येह आप की कुन्यत है) मैं ने इस रात अजीब चीज़ देखी।” उन्होंने ने दर्याफ़्त फ़रमाया : क्या देखा ?” अर्ज़ की : “मेरे घर वालों को मछली खाने की ख़्वाहिश हुई, मैं बाज़ार गया और मछली ख़रीद कर एक मज़दूर बच्चे को साथ लिया कि वोह मछली उठा कर घर तक मेरे साथ चले। चुनान्वे, वोह मेरे साथ चल पड़ा, रास्ते में जब उस ने जोहर की अज़ान सुनी तो मुझे कहा : ऐ मोहतरम ! क्या आप नमाज़ नहीं पढ़ेंगे ?” गोया उस ने अचानक मुझे ग़फ़्लत से बेदार कर दिया हो, मैं ने कहा : “हां ! हां ! क्यूं नहीं ! ज़रूर पढ़ेंगे।” उस ने मछली वाला बरतन मस्जिद के दरवाज़े पर रखा और मस्जिद में दाख़िल हो गया, मैं ने अपने दिल में कहा : “इस बच्चे ने त़श्त को नमाज़ पर कुरबान कर दिया तो क्या मैं मछली कुरबान नहीं कर सकता।” बहर हाल वोह नमाज़ पढ़ता रहा यहां तक कि इक़ामत कही गई और हम ने जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ी और नमाज़ के बा'द चन्द रकअतें भी अदा कीं। जब बाहर निकले तो देखा कि त़श्त अपनी जगह मौजूद था। मैं ने घर आ कर येह वाकिअ़ा घर वालों को सुनाया तो वोह कहने लगे : “इस बच्चे को हमारे साथ मछली खाने की दा'वत दें।” जब मैं ने उसे दा'वत दी तो उस ने कहा : “मैं रोज़े से हूं।” मैं ने उस से कहा : “फिर तुम हमारे हां रोज़ा इफ़्तार करो।” उस ने कहा : “मुझे आप की दा'वत क़बूल है, अब मुझे मस्जिद का रास्ता दिखा दीजिये।” मैं ने उसे रास्ता दिखाया तो वोह मस्जिद में जा कर बैठ गया। जब हम ने नमाज़े मग़रिब अदा कर



ली तो मैं ने उसे कहा : “अब हमारे घर चलिये ।” उस ने जवाब दिया : “नमाज़े इशा पढ़ कर चलेंगे ।” नमाज़े इशा पढ़ने के बा’द मैं उस को अपने घर ले आया जिस में तीन कमरे थे : एक मेरा और मेरे बच्चों की अम्मी का था, दूसरे में हमारी बीस साल से मा’ज़ूर लड़की रहती थी और तीसरे में हमारा मेहमान था । रात के आखिरी हिस्से में, मैं अपनी बीवी के पास बैठा हुआ था कि अचानक किसी ने दरवाज़ा खट-खटाया । मैं ने पूछा : “कौन है ?” तो बाहर से आवाज़ आई : “मैं आप की फुलां बेटी हूं ?” मैं ने कहा : “वोह तो बीस साल से मा’ज़ूर है और घर में पड़ा हुआ महज़ गोश्त का एक टुकड़ा है, वोह कैसे सीधी हो कर चल सकती है ?” यह सुन कर वोह कहने लगी : “मैं आप की वोही बेटी हूं, आप दरवाज़ा तो खोलें ।” जब मैं ने दरवाज़ा खोल कर देखा तो बिल्कुल सीधी खड़ी थी । हम ने उस से कहा : “हमें बताओ कि तुम कैसे शिफायाब हुई हो ?” तो उस ने बताया कि “मैं ने आप को अपने उस मेहमान का भलाई के साथ तज़क़िरा करते हुए सुना तो मेरे दिल में यह बात आई कि मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में इस का वसीला पेश करूं कि वोह मेरी तकलीफ़ दूर कर दे लिहाज़ा मैं ने अर्ज़ की : “या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तेरी बारगाह में हमारे इस मेहमान की अज़मत का सदका ! मेरी तकलीफ़ दूर फ़रमा और मुझे अफ़ियत अता फ़रमा ।” यह दुआ करते ही मैं सीधी खड़ी हो गई जैसा कि आप मुझे देख रहे हैं ।” उस की यह बात सुन कर मैं अपने मेहमान की तरफ़ गया तो घर में उस को न पाया, दरवाज़े पर आया तो उस को भी बन्द पाया ।” यह सारा वाक़िआ समाअत फ़रमाने के बा’द हज़रते सय्यिदुना मा’रूफ़ कर्खी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने इरशाद फ़रमाया : “हां ! वाक़ेई औलियाए किराम رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ में छोटे बड़े सभी होते हैं (और येह भी उन्हीं में से थे) ।”

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क्या शान है उन लोगों की जिन्होंने ने महबूबते इलाही عَزَّوَجَلَّ की वजह से इबादत की, न कि जन्नत के लिये और वोह खुदा को पाने के लिये उस की बारगाह में हाज़िर रहे, न कि बख़्शिश के लिये । पस वोही लोग मा’रिफ़त के नूर से उस का दीदार करते हैं, शौक़ के परों से उस की तरफ़ उड़ते हैं और सहरी के वक़्त उस की मुनाजात से लज़ज़त हासिल करते हैं । चुनान्वे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿إِنَّمَا لِلَّذِينَ آمَنُوا وَلَا يَخَافُونَ عَذَابَ اللَّهِ﴾  
يَعَزَّوَنُونَ (پ ۱۱ یونس: ۶۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : सुन लो बेशक **अल्लाह** के वलियों पर न कुछ ख़ौफ़ है न कुछ ग़म ।

### मुतवक्कलीन का हाल :

हज़रते सय्यिदुना अबू अमिर वाइज़ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि एक रात मैं एक पहाड़ में चल रहा था कि मैं ने एक ज़ख़मी दिल वाले की चीखो पुकार सुनी जो कह रहा था : “ऐ बयाबानों में हैरतज़दों की रहनुमाई फ़रमाने वाले ! ऐ खल्वतों में वहशत महसूस करने वालों की वहशत दूर करने वाले ! जब बहादुरों को तवानाई की तलाश होती है मैं तुझ से तवानाई का सुवाल

करता हूं और जब जाहिल फ़ख़्रो नाज़ करते हैं तो मैं तुझ से फ़ख़्र त़लब करता हूं।" आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि मैं जल्दी से उस तरफ़ बढ़ा और उस शख्स को जा कर सलाम किया उस ने सलाम का जवाब दिया और पूछा : "इस रात की तारीकी में आप कहां से आए हैं और कहां जाना चाहते हैं ?" मैं ने कहा : "सीधी राह से भटका हुआ हूं, मैं ने आप से ऐसा कलाम सुना है कि जिस ने मेरे दिल के ज़ख़्मों को ताज़ा कर दिया है और वज्दो ग़म को हरकत दे दी है।" येह सुन कर उस ने एक जोरदार चीख़ मारी और बेहोश हो कर गिर पड़ा। होश आने के बा'द रोने लगा। मैं ने उस से रोने का सबब पूछा तो उस ने जवाब दिया : "मैं तमन्नाओं और फ़ानी ज़िन्दगी में वक़्त ज़ाएअ़ करने को ना पसन्द करता हूं।" फिर वोह मुंह फेर कर चल दिया। मैं भी उस के पीछे हो लिया। एक वादी में झुक कर बैठने के बा'द वोह दोबारा रोने लगा तो मैं ने कहा : "اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ आप पर रहूँ फ़रमाए, मुझे भी रास्ता दिखाइये।" तो उस की आहो बुका में ज़ियादती हो गई और कहने लगा : "अफ़सोस है तुझ पर ! कहां है रास्ता ? कहां हैं दाई तरफ़ वाले और कहां हैं आ'ला इल्लियीन के मरातिब ?" फिर उस ने मेरे हाथ पर ज़र्ब लगाई और आगे ले गया तो अचानक हम एक वादी के کنارे पर पहुंच गए।

मैं ने कहा : "फ़ज़्र तुलूअ हो गई है और हमें वुजू करना है।" तो उस ने अपना हाथ ज़मीन पर मारा जिस से मीठे पानी का एक चश्मा फूट पड़ा और मुझे कहा : "लीजिये, वुजू कीजिये।" हम दोनों ने वुजू किया फिर उस ने अज़ानो इक़ामत कही और हम ने नमाज़ पढ़ी, जब सलाम फेरा तो उस ने कहा : "ऐ اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ के बन्दे ! तुम सलामत रहो, अब जुदाई का वक़्त आ गया है।" मैं ने कहा : "उस ज़ात की क़सम जिस ने आप के लिये अपनी बारगाह तक रसाई आसान फ़रमा दी है ! मेरे लिये दुआ फ़रमाएं।" फिर मैं ने अपने तोशादान की तरफ़ इशारा किया तो उस ने पूछा : "क्या आप भूक से हैं ?" मैं ने कहा : "जी हां।" तो उस ने कहा : "ग़िज़ा त़लब कर के आप ने अपने दिल को काइनात में ग़ौरो फ़िक्क़ से ग़ाफ़िल कर दिया है, अगर आप यकीन का ज़ाइका चख़ लेते और मुत्तकीन के लिये اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ की तय्यार की गई ने'मतें मुलाहज़ा कर लेते तो आप का खुशूअ हमेशा रहता और आप की भूक ख़त्म हो जाती।" फिर उस ने अपना हाथ ज़मीन पर मारा तो यकायक गर्म गर्म रोटी बर आमद हुई गोया कि आग से निकली हो और उस ने मुझ से कहा : "खाइये।" मैं ने हैरान हो कर उसे खाया और दिल में उस के मुतअल्लिक़ पूछने का इरादा ही किया था कि वोह खुद ही कहने लगा : "ऐ नौजवान ! बेशक اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ के ऐसे बन्दे भी हैं जिन्होंने ने सच्चे दिल से ख़्वाहिशाते नफ़सानिया को तर्क किया तो अब पूरी काइनात ज़िन्दगी व मौत में उन की ख़िदमत करती है।" इस के बा'द अचानक वोह मेरे पास से ग़ाइब हो गया फिर मैं उस को न देख सका।

سُبْحَنَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ ! क्या ख़ूब हैं वोह लोग जिन्होंने ने अपने दिल में महबूबे हकीकी के इलावा किसी के लिये कोई जगह न छोड़ी।

اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहूँमत हो और उन के सदके हमारी मग़फ़िरत हो। ﴿مَنْ سَجَدَ لِلَّهِ الْمَلِكِ الْحَمْدُ﴾

## एक आबिद की आरिफ़ाना गुफ़्तगू :

हज़रते सय्यिदुना जुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं कि “एक दफ़आ मैं एक पहाड़ में घूम फिर रहा था। जब मैं एक ऐसी वादी से गुज़रा जिस में बहुत से दरख़्त, नबातात और फल थे तो मैं **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की कुदरत और हुस्ने कारीगरी के बारे में ग़ौरो फ़िक्र करने लगा। अचानक मुझे एक आवाज़ सुनाई दी जिस ने मेरे सब आंसूओं को बहा दिया और मेरी आतशे इश्क़ भड़क उठी। चूनाच्चे, मैं उस आवाज़ के पीछे पहाड़ के निचले हिस्से में एक ग़ार के दहाने तक पहुंच गया। वोह कलाम ग़ार के अन्दर से सुनाई दे रहा था। मैं अन्दर गया तो वहां एक इबादत गुज़ार शख्स को पाया जो निहायत ही कमज़ोर था और उस पर मक्बूलियत के आधार नुमायां थे, मैं ने उस को येह कहते हुए सुना : “पाक है वोह ज़ात जिस ने इश्शाक़ के दिलों को अपनी बारगाह में मुनाजात के ज़रीए ज़िन्दा किया और उन को तलबे मुआश की मशक्कत से बेनियाज़ कर दिया। अब वोह सिर्फ़ उसी पर भरोसा करते हैं और उस ने उन्हें अपनी महब्वत के लिये चुन लिया तो अब वोह सिर्फ़ उसी के मुश्ताक़ हैं।” जब उस ने मुझे महसूस किया तो मैं ने कहा : “السلام عليكم, ऐ ग़मों के रफ़ीक़ और दुखों के हमनशीन !” तो उस ने जवाब दिया : “وعلیکم السلام, आप को किस ने उस शख्स का रास्ता दिखाया जिसे ख़ौफ़े इलाही ने मख़्लूक से अ़लाहिदा कर रखा है और जो अपने नफ़्स के मुहासबे की वजह से कलाम में फ़साहत से ग़ाफ़िल है ?” तो मैं ने कहा : “मुझे ग़ौरो फ़िक्र की रग़बत और पुर असरार औलियाए किराम رَحْمَتُهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی के बारे में जानने की ख़्वाहिश आप के पास लाई है।” तो उस ने कहा : “ऐ नौजवान ! बेशक **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** के कुछ बन्दे ऐसे हैं कि जिन के दिलों में उन की अपने महबूबे हकीकी से इन्तिहाई महब्वत अषर अन्दाज़ होती है तो उस के साथ शदीद महब्वत की बिना पर उन की अरवाह अ़ालमे मलकूत में सैर करती हैं और **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** के जम्अ शुदा ख़ज़ानों को देखती हैं तो ज़ाते बारी तअ़ाला उन को अपने जमाल का मुशाहदा कराती है और वोह उस को इस तरह देखते हैं कि उन के दिल उस की महब्वत में आबाद होते हैं और उन की अरवाह उस से मुलाक़ात के लिये उड़ती रहती हैं, वोह दुन्या व आख़िरत के बादशाह हैं।” फिर उस शख्स ने रोना शुरू कर दिया और दुआ की : “**يَا اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ !** उन औलियाए किराम जैसे आ’माल की मुझे भी तौफ़ीक़ दे और मुझे भी उन के साथ मिला दे।” फिर उस ने एक जोरदार चीख़ मारी और ज़मीन पर तशरीफ़ ले आया और उस की रूह कफ़से इत्सुरी से परवाज़ कर गई।

**اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की कसम ! येह ख़ाइफ़ीन की सिफ़ात और आरिफ़ीन की अ़लामात हैं।

## समन्दर पर चलने वाला शख्स :

हज़रते सय्यिदुना अब्दुर्रहमान अज़दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالٰی फ़रमाते हैं कि “मैं बैरूत के साहिल पर चलते हुए समन्दर पर बैठे एक शख्स के पास से गुज़रा जिस की दोनों टांगें पानी में थीं और वोह कह रहा था : “पाक है वोह ज़ात जिस का अर्श आस्मान में और हुक्म ज़मीन पर है, पाक है वोह ज़ात जिस की कुदरत हवा में और हुक्मत समन्दर पर है।” फिर वोह ख़ामोश हो गया।



मैं ने उस से दर्याफ्त किया : “क्या हुवा, आप अकेले क्यूं बैठे हैं ?” तो वोह कहने लगा : “**اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ से डरो और हक़ के सिवा कुछ न कहो, जब से मैं पैदा हुवा हूं कभी भी अकेला नहीं रहा। बेशक मैं जहां भी रहूं मेरा खुदा **عَزَّوَجَلَّ** मेरे साथ होता है और दो फिरिश्ते मेरी हिफ़ाज़त और निगहबानी करते हैं।” मैं ने पूछा : “आप कहां रहते हैं ?” जवाब दिया : “मेरा कोई मा'रूफ़ मक़ाम नहीं, न ही कोई मख़सूस ठिकाना है।” मैं ने अर्ज़ की : “कहां से खाते हैं ?” तो उस ने कहा : “जब मुझे कोई हाज़त दरपेश होती है तो मैं अपने रब्ब **عَزَّوَجَلَّ** की बारगाहे ख़ास में अपने दिल से सुवाल करता हूं, सिर्फ़ ज़बान से दुआ नहीं करता तो वोह मेरी हाज़त पूरी कर देता है।” मैं ने पूछा : “आप को येह मर्तबा कैसे मिला ?” तो उस ने जवाब दिया : “उस ज़ात **عَزَّوَجَلَّ** पर सिद्क़, तवक्कुल और लोगों को छोड़ कर उसी की तरफ़ इल्तिजा के ज़रीए।” मैं ने अर्ज़ की : “मेरे लिये दुआ फ़रमाएं।” तो उस ने कहा : “मैं इस मैदान का शहसुवार नहीं, बल्कि आप इस के ज़ियादा हक़दार हैं।” तो मैं ने कहा : “मुझे कोई ताकीदी हुक्म फ़रमा दें।” उस ने कहा : “उस ज़ात के दरवाज़े पर ज़िल्लत का इज़हार करते हुए खड़े हो जाओ और उस की बारगाह से न हटो, वोह आप को अपने महबूब बन्दों का कुर्ब अता फ़रमा देगा।” फिर वोह शख्स समन्दर पर चलते हुए मेरी आंखों से औझल हो गया।

**प्यारे इस्लामी भाइयो !** बादे नसीम के अल्फ़ाज़ को सिवाए मुहिब्ब के कोई नहीं समझ सकता और बिजलियों की गुफ़्तगू सिवाए उश्शाक़ के किसी को खुश नहीं कर सकती। **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! येह लोग दारे मुनाजात में महबूब की बारगाह में तन्हाई इख़्तियार करते हैं तो उन को विसाल का जामा पहना दिया जाता है, और इन को मुआमले की खुशबू और इन्तिहाई महंगी ग़ालिय्या (मुश्क, अम्बर और काफूर से बनी हुई एक मुश्कब खुशबू) से आरास्ता किया जाता है। चुनान्चे, **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में औलियाए किराम की शान बयान करते हुए इरशाद फ़रमाता है :

﴿2﴾ وَالَّذِينَ يَبْتُغُونَ لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَقِيَامًا

(پ ۱۹، الفرقان: ۶۴)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :** और वोह जो रात काटते हैं अपने रब्ब कि लिये सजदे और क़ियाम में । (1)

वोह इस हाल में सुब्ह करते हैं कि सहरी उन को लाग़री व बीमारी का लिबास पहनाती है। लेकिन वोह **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ के विसाल से और फिर नफ़ व गुनाइम पा कर कामयाब हैं, और ऐ मिस्कीन ! तू ग़फ़लत के मैदान में सोया हुवा है, ऐ ग़फ़लत और नींद के कैदी ! क्या तुझे लोगों के साथ होने वाले मुआमले का इल्म है ?

①.....मुफ़स्सिरे शहीर, खलीफ़े आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ज़िल सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْبَارِي तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं : “या'नी नमाज़ और इबादत में शब बेदारी करते हैं और रात अपने रब्ब की इबादत में गुज़ारते हैं और **اَللّٰهُ** तबारक व तआला अपने करम से थोड़ी इबादत वालों को भी शब बेदारी का षवाब अता फ़रमाता है।” हज़रते इब्ने अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि “जिस किसी ने बा'दे इशा दो रक़अत या ज़ियादा नफ़ल पढ़े वोह शब बेदारी करने वालों में दाख़िल है।” मुस्लिम शरीफ़ में हज़रते उ़ध्माने ग़नी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है : “जिस ने इशा की नमाज़ बा जमाअत अदा की उस ने निस्फ़ शब के क़ियाम का षवाब पाया और जिस ने फ़ज़्र भी बा जमाअत अदा की वोह तमाम शब के इबादत करने वाले की मिष्ल है।”

## सियाहफ़ाम मुत्तकी गुलाम का तवक्कुल :

हज़रते सय्यिदुना अली बिन बकार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَفَّار और हज़रते सय्यिदुना अबू इस्हाक़ फ़ज़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْبَارِئ जो कि औलिया व सालिहीन में से थे, लकड़ियां काट कर उस की कमाई से खाते थे। एक दिन उन दोनों ने बाहम इत्तिफ़ाक़ किया कि कल सुबह पहाड़ पर चढ़ने और लकड़ियां काटने में एक दूसरे की मदद करेंगे। हज़रते सय्यिदुना अली बिन बकार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى पहाड़ पर चढ़ने में सब्कत ले गए और लकड़ियों का गठ्ठा भी जम्अ कर लिया लेकिन जब उन के रफ़ीक़ ने उन के पास पहुंचने में देर कर दी तो वोह उन को पहाड़ में तलाश करने लगे। उन्होंने ने देखा कि हज़रते सय्यिदुना अबू इस्हाक़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الرَّزَّاق चार ज़ानू तशरीफ़ फ़रमा हैं और एक शेर का सर उन की गोद में है और वोह खुद उस शेर से मख़िब्रयों को दूर कर रहे हैं। हज़रते सय्यिदुना अली बिन बकार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى ने इस्तिफ़सार फ़रमाया : “ऐ अबू इस्हाक़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الرَّزَّاق ! येह क्या है ?” फ़रमाया : “शेर ने मुझे से इल्लिजा की तो मुझे उस पर तरस आ गया। अब मैं इन्तिज़ार कर रहा था कि येह बेदार हो और मैं आप के पास जा सकूं।” हज़रते सय्यिदुना अली बिन बकार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى उन को उसी हालत में छोड़ कर आगे चले गए। अचानक उन्होंने ने चट्टान पर एक थेली देखी जिस में एक हज़ार दीनार थे। उस पर गुबार और मिट्टी पड़ी हुई थी। उन्होंने ने दिल में सोचा : “मैं इस को ले जा कर सदका करूंगा।” चुनान्चे, पहाड़ से उतरे तो एक सियाहफ़ाम गुलाम का पास से गुज़र हुवा जो पाउं से मा'ज़ूर था और चेहरे के क़रीब लकड़ियों का एक गठ्ठा पड़ा था, जिसे वोह बेचना चाहता था। उन्होंने ने सोचा कि “इस सोने का हक़दार इस गुलाम से ज़ियादा कौन हो सकता है। चुनान्चे, उन्होंने ने थेली से दस दीनार निकाले और उस के पास आ कर कहा : “येह लीजिये और अपनी हालत दुरुस्त कर लीजिये।” गुलाम ने अपना सर उठाया और कहा : “इस सोने को उस की जगह पर वापस रख दें और जो अपने हाथ की कमाई नहीं उसे सदका न करें। **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं एक साल से इस चट्टान पर पड़ी हुई थेली के पास से गुज़र रहा हूं मगर मुझे येह भी मा'लूम न हुवा कि इस में क्या है ? तो आप दुन्या में कैसे राग़िब हो गए और जिस को लेना जाइज़ न था उस को ले लिया ?” आप फ़रमाते हैं कि मुझे उस की बातों से बड़ी शर्मिन्दगी हुई और मैं ने जान लिया कि येह औलियाए किराम رَحْمَتُهُمُ اللَّهُ تَعَالَى में से है लिहाज़ा मैं थेली को उस की जगह पर रख कर वापस आया तो वोह अपनी जगह पर न था। मैं ने दर्याफ़्त किया तो बताया गया कि येह हर हफ़्ते एक मरतबा लकड़ियों का गठ्ठा ले कर आता है और फिर उसे एक दिरहम के इवज़ फ़रोख़्त करता है और इसी से हफ़्ते के बाकी अय्याम ग़िज़ा हासिल करता है और किसी से कोई चीज़ नहीं मांगता।

**اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! येह ज़ाहिदीन के अहवाल और सालिहीन की सिफ़ात हैं।

**दिल जब भर जाए तो जिक्रुल्लाह ज़बान पर जारी हो जाता है :**

एक बुजुर्ग फ़रमाते हैं कि “मैं रात के वक़्त मस्जिदे हराम से जबले अबी कुबैस जाने के इरादे से निकला, रास्ते में एक बड़ी नाक वाले हब्शी गुलाम से मेरी मुलाक़ात हुई जो यूँ कह रहा था : “أَنْتَ أَنْتَ يَا هُوَ يَا هُوَ” या’नी बस तू ही तू है, ऐ वोह ज़ात, ऐ वोह ज़ात।” इस के इलावा कुछ न कहता जब कई बार कह चुका तो मैं ने पूछा : “ऐ शख्स ! क्या तू दीवाना है ?” कहने लगा : “ऐ शैख़ ! दीवाना तो वोह होता है जो हज़ार क़दम चलता है फिर भी अपने परवर दगारे हक़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र नहीं करता।” तो मैं ने कहा : “मुहक्किकीन के नज़्दीक तो अफ़ज़ल ज़िक्र वोह है जो दिल से हो।” तो उस ने कहा : “आप ने सच कहा है लेकिन दिल जब भर जाए तो ज़िक्र ज़बान पर जारी हो जाता है।” फिर वोह मेरी आंखों से गा़इब हो गया तो उस के साथ सख़्त ख़वय्या इख़्तियार करने पर मैं बेहद नादिम हुवा। जब रात हुई और मैं सो गया तो ग़ैब से किसी पुकारने वाले ने निदा दी : “बेशक बरोज़े क़ियामत उस गुलाम के लिये ऐसा नूर होगा जो ज़मीनो आस्मान के दरमियान को भर देगा।”

سُبْحَنَ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ ! क्या ख़ूब हैं येह लोग जिन की ईदें उस के अहक़ाम की बजा आवरी, जिन की मुराद मक़ासिद तक पहुंचना, जिन के अहवाल कमाल का हासिल करना और जिन का कमाल तक्वा है। वोह कैसे अनोखे लोग हैं कि जब लोग लज़्ज़ात की तरफ़ माइल होते हैं तो वोह **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत में मस्रूफ़ हो जाते हैं। जब मख़्लूक अपने घरों पर आराम कर रही होती है तो वोह महब्बते हक़ीक़ी के गुमों में मुब्तला होते हैं और जब तुज्ज़ार अपने माल की तरफ़ माइल होते हैं तो वोह अपने गुमशुदा अहवाल की तरफ़ मुतवज्जेह हो जाते हैं। जब गाफ़िल नींद के ज़रीए लज़्ज़त हासिल करते हैं तो वोह तारीकी में अपने महबूब के कलाम से लुत्फ़ अन्दोज़ होते हैं। आख़िरत को अपने पेशे नज़र रखते हैं तो उस के लिये जिद्दो जहद करते हैं और मौत की निदा देने वाले को सुनते हैं कि “तय्यार हो जाओ।” तो वोह अपने आका व मौला عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में सच्चाई का नज़राना ले कर आते हैं तो फिर रद्द नहीं किये जाते और जब उन्हें अपने गुनाह याद आते हैं तो मुज़्तरिब हो जाते हैं और उन्हें नींद नहीं आती, उन को मक़सूद की उम्मीद हरक़त देती है तो वोह खड़े हो जाते हैं और फिर **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ के सामने पेश होने को याद करते हैं तो सीधे हो जाते हैं। उस की मन्ज़रकशी कुरआने पाक यूँ करता है :

﴿3﴾ يَوْمَ يُبَدِّلُ الْأَرْضَ غَيْرَ الْأَرْضِ

(پ ۱۳: ابراهيم: ۴۸)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :** जिस दिन बदल दी जाएगी ज़मीन उस ज़मीन के सिवा।

जब मौत के बारे में सोचते हैं तो अहक़ाम की बजा आवरी में हमेशा जिद्दो जहद करते रहते हैं। और जब अपने गुज़श्ता गुनाहों को याद करते हैं तो अपने नफ़्स को मलामत करते हैं।



ऐ ग़फ़लत व ला परवाही की नींद सोने वाले ! बेदार हो जा और परहेज़गारी से अपने ज़हिर की इस्लाह कर, इस से पहले कि तेरे लिये तलाफ़ी मुश्किल हो जाए और कूच करने के लिये ख़ूब ज़ादे राह इकठ्ठा कर ले क्यूँकि थोड़ा सा ज़ादे राह तबील सफ़र में तुझे काफ़ी न होगा। अपने गुनाहों को नेकी से मिटा दे, मुमकिन है कि तेरा रब्ब عَزَّوَجَلَّ तेरी ख़ताओं से दरगुज़र फ़रमा दे और मौत की याद की साफ़ रैत से अपनी उम्मीद की बीमारियों का इलाज कर और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से शिफ़ा तलब कर, उम्मीद है कि वोह तुझे शिफ़ा अता फ़रमाएगा।

وَصَلَّى اللّٰهُ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِهِ وَصَحْبِهِ أَجْمَعِينَ



### अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये बाहम महब्वत करने वाले नूर के मिम्बरों पर होंगे

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : “बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ऐसे बन्दे भी हैं जो न अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام और शोहदाए इज्जाम उन के मक़ामो मर्तबा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से उन के कुर्ब पर रश्क करेंगे।” एक आ'राबी ने अर्ज की : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم येह कौन लोग होंगे ?” हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़रहीम ने इरशाद फ़रमाया : “येह मुख़्तलिफ़ शहरों के लोग होंगे, उन के दरमियान कोई ख़ूनी रिश्ता न होगा मगर वोह एक दूसरे से सिर्फ़ रिज़ाए इलाही की खातिर महब्वत करते और तअल्लुक़ रखते होंगे। बरोज़े क़ियामत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन के लिये अपने (अर्श के) सामने नूर के मिम्बर रखने का हुक्म फ़रमाएगा। और उन का हिसाब भी उन्हीं मिम्बरों पर फ़रमाएगा। लोग तो ख़ौफ़ज़दा होंगे लेकिन वोह बे ख़ौफ़ होंगे।”

(المعجم الكبير، الحديث ٣٤٣٣، ج ٣، ص ٢٩٠ بتغير)

बयान 20 :

## खूँके महशार का बयान

﴿وَأَنذِرْهُمْ يَوْمَ الْحَسْرَةِ إِذْ قُضِيَ الْأَمْرُ وَهُمْ فِي غَفْلَةٍ وَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ﴾ (प १६ मरिम: ३९)

“तर्जमए कन्जुल ईमान : और उन्हें डर सुनाओ पछतावे के दिन का जब काम हो चुकेगा और वोह ग़फ़लत में हैं और नहीं मानते ।”

### हम्दे बारी तझाला :

तमाम खूबियां **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के लिये हैं जिस ने अज़ाइबाते इब्रत के मुशाहदे के लिये अपने औलियाए किराम **رَحْمَتُهُمُ اللَّهُ تَعَالَى** की निगाहें खोल दीं और उन के रन्जो ग़म को मुनाजात की सफ़ाई और महब्बत की लज़्ज़त के ज़रीए अस्बाब की मस्रूफ़िय्यात और परेशानियों की आमेज़िश से नजात अता फ़रमाई। उन पर मेहरबानियों के पिंघोड़े में अपना दस्ते करम फेरा, उन्हें अपनी करम नवाज़ियों के जाम पिलाए और उन के नूरे बसीरतो बसारत को मम्मूअ ख़्वाहिशात से रोका तो उन के दिल खुदा के पै दर पै अहकाम, उस की तदबीर, इरादा मुक़द्दर करने और तक्दीरों के फेरने पर राज़ी हो गए। उन के दिल साफ़ होने की वजह से **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ने उन के लिये आ'माल का बिस्तर तय्यार किया तो उन्होंने ने अपने महबूबे हकीकी **عَزَّوَجَلَّ** के साथ तन्हाई इख़्तियार करने को पसन्द किया और दुन्यवी बिस्तरों को छोड़ दिया जैसा कि **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** इरशाद फ़रमाता है :

تَتَجَافَى جُنُوبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ (پ २१، السجدة: १६)

“तर्जमए कन्जुल ईमान : उन की करवटें जुदा होती हैं ख़्वाबगाहों से ।”

वोह शब बेदारी से लुत्फ़ अन्दोज़ होते हैं, नई नई चीज़ों के वुजूद में आने और हालात बदलने से उन में कोई तब्दीली वाक़ेअ नहीं होती इस लिये कि उन के दिल यादे इलाही **عَزَّوَجَلَّ** की वादियों और कुदरते खुदावन्दी के अज़ाइबात में ग़ौरो फ़िक्र के दरयाओं में मुस्तगरक़ रहते हैं। उन्होंने ने नफ़्स की पैरवी से खुद को बचा लिया जिस के सबब उन की रूहों के परन्दे **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** की मा'रिफ़त के बागात में अज़ीमुशान सलत्नत की शादाब ज़मीन और नहरों में सैर करते हैं। काइनात का हर ज़र्अ उन्हें तौहीद के नग्मात में महव नज़र आता है। उन के हां इमारतो गुर्बत, इज़्ज़तो ज़िल्लत, मिदहतो मज़म्मत, सहूलतो सुक़ुबत सब यक्सां हैं। पाक है वोह ज़ात जिस ने उन्हें राहे नजात पर इख़लास के साथ चलने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई तो उन्होंने ने दुन्या के जाल से छुटकारा पा कर कुर्बे इलाही **عَزَّوَجَلَّ** पा लिया, लिहाज़ा उन्हें बड़ी घबराहट ग़मगीन न करेगी। मैं **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** की हम्द करता हूं, उस का शुक्र बजा लाता हूं, उस पर ईमान लाता हूं, उसी पर भरोसा करता हूं और हर तरह की ताक़तो कुव्वत से उस शख़्स की तरह बराअत का इज़हार करता हूं जो अपने जराइम का ए'तिराफ़ व इक़रार करता है। और मैं जमाले इलाही **عَزَّوَجَلَّ** का मुशाहदा करने वाले और हुस्ने ख़ातिमा के साथ उस की बारगाह में कामयाब होने वाले की तरह गवाही देता हूं कि **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, वोह यक्ता है, उस का कोई हमसर नहीं, और येह गवाही देता हूं कि ख़ातमुन्नबिय्यीन, सफ़वतुल मुर्सलीन, इमामुल मुत्तकीन, सय्यिदुल अव्वलीनो आख़िरीन हज़रते

**पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इलिमिया (दा' वते इस्लामी)**



“إِنْدَار” का मतलब है, डर सुनाना और “يَوْمَ الْحُسْرَةِ” से मुराद क़ियामत का दिन है जिस दिन गुनहगार नेकी न होने की वजह से हसरत ज़दा होगा और नेकियों में सुस्ती करने वाला नेक आ'माल में कमी की वजह से हसरत ज़दा होगा। और “قُضِيَ الْأَمْرُ” से मुराद यह है कि जब हिसाब से फ़रागत होगी अहले जन्नत को जन्नत में दाख़िल कर दिया जाएगा और मुस्तहिक्के नार को जहन्नम में। “وَهُمْ فِي غَفْلَةٍ” यह ख़िताब दुनिया में है और “وَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ” यह आख़िरत में ख़िताब है या'नी उन को दोबारा नहीं भेजा जाएगा कि वोह ईमान लाएं।

### क़ियामत का मन्ज़र :

हज़रते सय्यिदुना अदी बिन हातिम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने इब्रत निशान है : “क़ियामत के दिन कुछ लोगों को जन्नत की तरफ़ बुलाया जाएगा यहां तक कि जब वोह क़रीब पहुंचेंगे और उस की खुशबू सूधेंगे और उस के महल्लात देखेंगे तो निदा की जाएगी : “इन लोगों को जन्नत से लौटा दो, इन के लिये जन्नत में कोई हिस्सा नहीं।” तो वोह ऐसी हसरत के साथ लौटेंगे कि उस जैसी हसरत से अगलों पिछलों में से कोई न लौटा होगा तो वोह अर्ज़ करेंगे : “ऐ हमारे रब्ब عَزَّ وَجَلَّ ! अगर तू येह दिखाने से क़ब्ल ही जहन्नम में दाख़िल कर देता तो हम पर आसान था।” **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ फ़रमाएगा : “मैं ने येह इस लिये किया क्यूंकि तुम ख़ल्वत में नाफ़रमानियों से मेरा मुकाबला किया करते थे और जब तुम लोगों से मिलते तो लोगों को दिखाने के लिये बड़ी आज़िज़ी से मुलाक़ात करते और जो तुम्हारे दिलों में मेरे लिये था वोह उस के बरअक्स था। तुम लोगों से डरते और मुझ से न डरते, लोगों की ता'ज़ीम करते और मेरी ता'ज़ीम न करते। तो आज मैं तुम्हें अपना दर्दनाक अज़ाब चखाऊंगा मज़ीद येह कि मैं ने तुम पर आख़िरत का षवाब ह़राम कर दिया है।”

(المعجم الكبير، الحديث ١٩٩/٢٠٠، ج ١٧/١٥، ص ٨٥-٨٦- بتغییر قلیل)

### अज़ाबे जहन्नम की कैफ़ियत :

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मसऊद رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ इरशाद फ़रमाते हैं : “जब जहन्नम में हमेशा रहने वाले बाक़ी रह जाएंगे तो उन्हें ताबूतों में रखा जाएगा फिर उन ताबूतों को दूसरे ताबूतों में रखा जाएगा। कोई शख्स भी येह गुमान न करेगा कि मेरे इलावा भी किसी को अज़ाब दिया जा रहा है और क़ियामत के दिन हर शख्स इस इन्तिज़ार में होगा कि आया उस का ठिकाना जन्नत होगा या जहन्नम ?” जहन्नमियों से कहा जाएगा : “अगर तुम अमल करते (तो अज़ाब के हक़दार न होते)।” और जन्नतियों से कहा जाएगा : “अगर तुम पर **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ का फ़ज़्लो करम न होता (तो जहन्नम का ईधन बनते)।”

(المعجم الكبير، الحديث ٩٠٨٧-٩٧٦١، ج ٩، ص ٢٢٤-٣٥٤- بتغییر قلیل)

## हौजे कौषर से मायूस लौटने वाले :

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : “गोया मैं देख रहा हूं कि हम हौजे कौषर से पलट रहे हैं, एक शख्स दूसरे से मिल कर पूछता है : “क्या तूने (हौजे कौषर से जाम) पी लिया ?” वोह कहता है : “जी हां ! (मैं ने पी लिया) ।” और दूसरी तरफ़ एक शख्स दूसरे से मिल कर येही सुवाल करता है तो वोह जवाब में कहता है : “हाए प्यास ।”

(الزهّد للإمام أحمد بن حنبل، في فضل أبي هريرة، الحديث ٨٣٤، ص ١٧٦ - بتغير)

## मीज़ान पर मुक़र्रर फिरिश्ते का ए'लान :

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : “मीज़ान पर एक फिरिश्ते की ज़िम्मेदारी है, जब किसी इन्सान की नेकियों का पलड़ा भारी होगा तो वोह फिरिश्ता ऐसी बुलन्द आवाज़ से ए'लान करेगा जिस को तमाम मख़्लूक सुन लेगी : “फुलां सअ़ादत मन्द है, आज के बा'द वोह कभी बदबख़्त न होगा ।” और अगर उस का पलड़ा हल्का होगा तो वोही फिरिश्ता वैसी ही बुलन्द आवाज़ से ए'लान करेगा : “फुलां शख्स बदबख़्त है, आज के बा'द वोह कभी सअ़ादत मन्द न होगा ।”

(حلیة الاولیاء، صالح بن بشیر المرّی، الحديث ٨٢٤١، ج ٦، ص ١٨٧ - بتغير قليل)

हज़रते सय्यिदुना क़तादा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : “कोई शख्स ऐसा नहीं कि जो जुर्म करे और उस का जुर्म रोज़े क़ियामत किसी एक पर भी मख़फ़ी रहे ।”

**प्यारे इस्लामी भाइयो !** क़ब्र वालों को कैद कर लिया गया और उन में अक़षर लोगों को अपनी तिजारत में ख़सारा हुवा लिहाज़ा जब तुम उन के पास से गुज़रो तो इब्रत पकड़ो और उन के अहवाल में ग़ौरो फ़िक्र करो, वोह वापस लौटने की तमन्ना करते हैं और हाथ से गई हुई चीज़ को पाने का सुवाल करते हैं । ऐ आज़ाद शख्स ! उन की बेड़ियों को याद कर । ऐ हरकत करने वाले शख्स ! तू ने उन की परेशानियों को जान लिया तो अब अपने नफ़्स को भी गुनाहों के कैदख़ाने से छुटकारा दे दे और तय्यार हो जा कि तू मत्लूब है । अपने दिल में उस दिन को याद कर जिस दिन कुलूब उलट पलट रहे होंगे इस से पहले कि ज़बान को पकड़ लिया जाए और इन्सान हैरतज़दा हो जाए, पहचान ख़त्म हो जाए और कफ़न फैल जाएं, क़ियाम ख़त्म हो जाए और सफ़र तवील हो जाए । मुन्कर नकीर आएँ और चीख़ो पुकार बुलन्द हो जाए यहां तक कि बन्दा पहलों से जा मिलेगा और उस के पीछे रहने वाले उस को भूल जाएंगे, वोह बेचारा वहां कैदी हो कर रह जाएगा, फिर वोह क़ियामत के दिन खड़ा होगा । उस की हालत येह होगी कि नंगे बदन और हसरत ज़दा होगा, उस वक़्त उस से सारी इज़्जतें छीन ली जाएंगी, मसाइब बढ़ जाएंगे और भागने के तमाम रास्ते बंद हो जाएंगे । इस के इलावा और भी बहुत से अज़ाइब का जुहूर होगा, चेहरे सियाह होंगे और नाफ़रमान अपनी उम्मीदों से हाथ धो बैठेगा, पीठों पर भारी बोझ रख दिया जाएगा और नामए आ'माल दाएं या बाएं हाथ में पकड़ा दिया जाएगा और किसी शख्स के लिये जन्नत या दोज़ख़ के सिवा वहां कोई क़ियाम गाह न होगी ।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जल्दी से **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा कर लो ।

**अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ तुम पर रहम फ़रमाए ! इस से पहले कि तुम इन हौलनाकियों का मुआयना व मुशाहदा करो ।

وَأَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْحَسْرَةِ إِذْ قُضِيَ الْأَمْرُ

(प १६, मरियम: ३९)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और उन्हें डर सुनाओ पछतावे के दिन का, जब काम हो चुकेगा ।

**औलिया का क़ाफ़िला और समन्दर की मौजें :**

हज़रते सय्यिदुना मस्मअ बिन आसिम رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि मैं “हज़रते सय्यिदुना अब्दुल अज़ीज़ बिन सुलैमान رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ, हज़रते सय्यिदुना कलाब बिन हर्ब रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ, हज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन आ'रिज रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने एक रात समन्दर के साहिल पर गुज़ारी । हज़रते सय्यिदुना कलाब रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ रोने लगे हत्ता कि मुझे येह ख़ौफ़ लाहिक़ हुवा कि कहीं वोह हलाक न हो जाएं, उन के रोने की वजह से हज़रते सय्यिदुना अब्दुल अज़ीज़ रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ भी रोने लगे, उन के रोने की वजह से हज़रते सय्यिदुना सुलैमान रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ भी रो दिये । **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! उन सब के रोने की वजह से मुझे भी रोना आ गया हालांकि मुझे उन के रोने का सबब मा'लूम न था ? जब मैं ने हज़रते सय्यिदुना अब्दुल अज़ीज़ रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से पूछा “किस चीज़ ने आप को रुलाया ?” तो उन्होंने ने फ़रमाया : “**अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं ने समन्दर की मौजों को देखा तो मुझे जहन्नम की हौलनाकियां और उस के लम्बे लम्बे सांस याद आ गए तो उस चीज़ ने मुझे रुला दिया ।” फिर मैं ने हज़रते सय्यिदुना कलाब रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से पूछा तो उन्होंने ने भी येही जवाब दिया और जब मैं ने हज़रते सय्यिदुना सुलैमान रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से पूछा तो उन्होंने ने फ़रमाया : “लोगों में मुझ से ज़ियादा बुरा कोई नहीं, मैं उन पर तरस खाते हुए रो रहा था जो वोह अपनी जानों के साथ कर रहे थे ।”

**प्यारे इस्लामी भाइयो !** तसव्वुर कीजिये गोया मैं देख रहा हूं कि तुम्हारा वोह दिन आ चुका है जिस का तुम से वा'दा किया गया था और तुम्हें अचानक उस चीज़ ने पकड़ लिया है जिस से तुम अपनी अवलाद और वालिद के ज़रीए छुटकारा नहीं पा सकते, वोह ऐसा मक़ाम है कि जिस में ज़बानें, आ'ज़ा और जिल्द तुम्हारे ख़िलाफ़ गवाही देंगे और कोई शख्स जहन्नम और उस के अंगारों को बर्दाश्त नहीं कर पाएगा ।

وَأَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْحَسْرَةِ إِذْ قُضِيَ الْأَمْرُ وَهُمْ فِي

غَفْلَةٍ وَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ 0 (प १६, मरियम: ३९)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और उन्हें डर सुनाओ पछतावे के दिन का, जब काम हो चुकेगा और वोह ग़फ़लत में हैं, और वोह नहीं मानते ।



## हज़रते सय्यिदुना शरीफ़ सक्ती رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ का विशाल :

हज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي फ़रमाते हैं कि “मैं हज़रते सय्यिदुना शरीफ़ सक्ती رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के इन्तिक़ाल के वक़्त आप की ख़िदमत में हाज़िर हुवा, आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ उन लोगों में से थे जिन के दिल को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ और इश्क़े इलाही ने जला दिया था। मैं ने अर्ज़ की : “अपने आप को कैसा पाते हैं ?” तो आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने ये शेर पढ़ा :

كَيْفَ أَشْكُو إِلَى طَبِيبِي مَا بِي وَالَّذِي بِي أَصَابَنِي مَنْ طَبِيبِي

**तर्जमा :**.....मैं अपने तबीब से इस बीमारी की शिकायत कैसे करूँ जिस में उस ने खुद ही मुझे मुब्तला किया है।

फिर मैं ने पंखा लिया ताकि आप को हवा दूँ तो आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने इरशाद फ़रमाया : “पंखे की हवा उस शख्स को कैसे राहत पहुंचाएगी जिस का दिल जल रहा हो ?” फिर आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने चन्द अशर पढ़े, जिन का मफ़हूम ये है :

“दिल जल रहा है, आंसू बह रहे हैं, ग़म जम्भ हो रहे हैं और सब्र टूट रहा है। उस शख्स को कैसे इतमीनान आए जिस के लिये राहतो सुकून की कोई जगह ही न हो क्योंकि वोह तो बेचैनी व इज़्तिराब और इश्क़े इलाही عَزَّوَجَلَّ में गिरफ़्तार है।”

फिर आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने ज़िक़रे इलाही عَزَّوَجَلَّ करते हुए दाइए अजल को लब्बैक कहा और इस दुन्याए फ़ानी से कूच फ़रमा गए।

**प्यारे इस्लामी भाइयो !** इताअत की मिठास में से तुम ने क्या तय्यार किया कि तुम मौत का कड़वा घूंट पी सको ? और मौत के आने से पहले तक्वा के तोशे में तुम ने कौन सी चीज़ आगे कर रखी है ? और किस चीज़ ने हक़ की आवाज़ सुनने से गाफ़िलों के कानों पर पर्दा डाल रखा है ? ऐ तन्हाई में गुनाह करने वाले ! काश ! तू ने ख़ल्वत इख़्तियार न की होती। कितने ही वा'जो नसीहत करने वाले अहले ग़फ़लत को पुकार रहे हैं मगर वोह नसीहत क़बूल नहीं करते। चुनान्वे,

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَأَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْحَسْرَةِ إِذْ قُضِيَ الْأَمْرُ وَهُمْ فِي غَفْلَةٍ وَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ (प १७, मरिम: ३९)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और उन्हें डर सुनाओ पछतावे के दिन का, जब काम हो चुकेगा और वोह ग़फ़लत में हैं, और वोह नहीं मानते।

## नफ़्स के मुहासबे का अनोखा तरीक़ा :

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम तैमी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ (अपने नफ़्स का मुहासबा करने का अन्दाज़ बयान करते हुए) फ़रमाते हैं, एक मरतबा मैं ने येह तसव्वुर बांधा कि मैं जन्नत में हूँ, वहां के फल खा रहा हूँ और उस की नहरों से मशरूब पी रहा हूँ। उस के बा'द मैं ने येह ख़याल जमाया कि मैं जहन्नम में हूँ और थोहड़ (कांटेदार दरख़्त) खा रहा हूँ और दोज़ख़ियों का पीप पी रहा हूँ। इन

तसव्वुरात के बा'द मैं ने अपने नफ़्स से पूछा : “तुझे किस चीज़ की ख़्वाहिश है ?” (जन्नत की या दोज़ख़ की ?)” नफ़्स ने कहा : “(जन्नत की इस लिये) मैं चाहता हूँ कि दुनिया में जा कर नेक अमल कर के आऊँ ।” तब मैं ने अपने नफ़्स से कहा : “फ़िलहाल तुझे मोहलत (مهلت) मिली हुई है । (या'नी ऐ नफ़्स ! अब तुझे खुद ही राह मुतअय्यन करनी है कि सुधर कर जन्नत में जाना है या बिगड़ कर दोज़ख़ में ! लिहाज़ा) इसी हिसाब से अमल कर ।” (حلیۃ الاولیاء، ج ۴، ص ۲۳۵، رقم ۵۳۶۱ - مکاشفة القلوب، ص ۲۶۵)

**प्यारे इस्लामी भाइयो !** फुज़ूल दिनों में तुम ने जो वक़्त बरबाद किया उस की तलाफ़ी करो, अज़ क़रीब हर अमल करने वाला अपने आ'माल का बदला पाएगा उस दिन नाफ़रमान मुआफ़ी चाहेगा लेकिन उसे मुआफ़ी न मिलेगी और अपनी गुमराही पर नदामत करते हुए अपनी उंगलियां काटेगा । हाए, अफ़सोस ! उस दिन कैसी हसरत छई होगी और उस दिन की होलनाकियां कितनी शदीद होंगी । **अल्लाह** عزّوجلّ की क़सम ! अपने ग़फ़लत के अय्याम पर गिर्या व ज़ारी करो, मौत की सख़्तियों में ग़ौरो फ़िक्र करो, मरने से पहले पहले महबूबे हकीकी عزّوجلّ के दरवाज़े पर हाज़िर हो जाओ गोया मैं देख रहा हूँ कि तुम्हें अचानक मौत आ चुकी है । चुनान्वे, **अल्लाह** عزّوجلّ इरशाद फ़रमाता है :

وَأَنذِرْهُمْ يَوْمَ الْحَسْرَةِ إِذْ قُضِيَ الْأَمْرُ وَهُمْ فِي غَفْلَةٍ وَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ (پ ۱۶، مریم: ۳۹)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और उन्हें डर सुनाओ पछतावे के दिन का, जब काम हो चुकेगा और वोह ग़फ़लत में हैं, और वोह नहीं मानते ।

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** अपने नफ़्स को शहवात की कैद से आज़ाद कर लो और अपनी अक्लों को ग़फ़लत के नशे से बेदार कर लो और मौत से पहले दारे बका के लिये तय्यार हो जाओ । गोया मैं तुम्हारे साथ हूँ और मौत का मुनादी तुम्हारे पास आ चुका है :

وَأَنذِرْهُمْ يَوْمَ الْحَسْرَةِ إِذْ قُضِيَ الْأَمْرُ وَهُمْ فِي غَفْلَةٍ وَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ (پ ۱۶، مریم: ۳۹)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और उन्हें डर सुनाओ पछतावे के दिन का, जब काम हो चुकेगा और वोह ग़फ़लत में हैं, और वोह नहीं मानते ।

**अल्लाह** عزّوجلّ की क़सम ! अज़ क़रीब अफ़सोस और ग़म में तुम्हारे आंसू जारी होंगे और जब हमारे नूर को देखने वाला मलकुल मौत को देखेगा तो हक्का बक्का रह जाएगा और तू पुल सिरात पर अपने आ'माल के साथ मुक़य्यद हो कर रह जाएगा और तुम्हारे पोशीदा व ज़ाहिर तमाम बुरे आ'माल ज़ाहिर हो जाएंगे । **अल्लाह** عزّوجلّ की क़सम ! उस वक़्त तुम्हारी आंखें आंसू बहाएंगी । चुनान्वे,

**अल्लाह** عزّوجلّ इरशाद फ़रमाता है :

وَأَنذِرْهُمْ يَوْمَ الْحَسْرَةِ إِذْ قُضِيَ الْأَمْرُ وَهُمْ فِي غَفْلَةٍ وَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ (پ ۱۶، مریم: ۳۹)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और उन्हें डर सुनाओ पछतावे के दिन का, जब काम हो चुकेगा और वोह ग़फ़लत में हैं, और वोह नहीं मानते ।

हाए, अफ़सोस ! अब उम्र जाएअ होने के बा'द तुझे हसरत कोई फ़ाइदा न देगी और उम्मीदें

ख़त्म होने के बा'द फ़िक्र तुझे कोई फ़ाइदा न देगी। मा'लूम नहीं, हैरत के दिन तेरा क्या जवाब होगा ? जब यह पुकारा जाएगा :

﴿2﴾ هَذَا يَوْمٌ لَا يَنْطِقُونَ (प २९, المرسلات: ३०)

तर्जमए कन्जुल ईमान : येह दिन है कि वोह बोल न सकेंगे । (1)

उस बन्दे का वारिष कौन होगा जिस को मा'सिय्यत और गुनाहों ने शर्मिन्दा कर दिया है ? उस भागे हुए का वाली कौन होगा जिस को लग्ज़िशों और ऐबों ने तेरे दरवाज़े से दूर कर दिया है ?

**रिक्कत अंगेज दुआ :**

ऐ अल्लामुल गुयूब **عَزَّوَجَلَّ** ! दरगुज़र फ़रमा कि हम तेरी रहूमत से अच्छा गुमान रखते हैं । या **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ! मेरी हसरत कितनी अज़ीम है कि मैं दूसरों को नसीहत करता हूं और खुद ग़ाफ़िल हूं । या **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ! मुझ पर कितनी सख़्त मुसीबत है कि मैं दूसरों को जगाता हूं और खुद सोया हुवा हूं, ऐ मेरे मालिक **عَزَّوَجَلَّ** ! मेरा मुआमला कितना अज़ीब है कि मैं दूसरों की रहनुमाई करता हूं और खुद हैरतज़दा हूं । या इलाही **عَزَّوَجَلَّ** ! नसीहत करने वाले और बेकार बातों में पड़ने वाले से दरगुज़र फ़रमा । या इलाही **عَزَّوَجَلَّ** ! अगर मेरा कलाम ख़ालिस तेरी रिज़ा के लिये नहीं तो मेरे इजतिमाअ में कोई तो ऐसा शख्स होगा जो ख़ालिस तेरी रिज़ा के लिये हाज़िर हुवा होगा लिहाज़ा अपने वजहे करीम के सदके मेरी कोताही के मुआमले में उस की शफ़अत क़बूल फ़रमा । और ऐ सब से बढ़ कर रहूम फ़रमाने वाले ! हम सब पर अपनी ख़ास रहूमत फ़रमा । (आमीन)

وَصَلَّى اللّٰهُ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِهِ وَصَحْبِهِ أَجْمَعِينَ



①.....मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ज़िल सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِئ** तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं : “न कोई ऐसी हुज्जत पेश कर सकेंगे जो उन्हें काम दे । हज़रते इब्ने अब्बास **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالَى عَنْهُمَا** ने फ़रमाया कि “रोज़े क़ियामत बहुत से मौक़ेअ होंगे, बा'ज में कलाम करेंगे, बा'ज में कुछ बोल न सकेंगे ।”



बयान 21 :

## माल की मज्जमल

﴿الْهٰكُمُ التَّكَاثُرُ ۚ حَتّٰی زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ ۝﴾ (प ३०, التكاثر)

“तर्जमए कन्जुल ईमान : तुम्हें ग़ाफ़िल रखा माल की ज़ियादा तलबी ने  
यहां तक कि तुम ने क़ब्रों का मुंह देखा ।”

### हम्दे बारी तअ़ाला :

सब ख़ूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने अपनी पुख़्ता वह्दानियत के षुबूत पर ज़ाहिरी व बातिनी मौजूदात के दलाइल के साथ अपनी कुदरते कामिला को दलील बनाया और काइनात में होने वाली तब्दीलियों में ग़ौरो फ़िक्र करने वाले इन्सान के लिये पुर हिक्मत दलाइल और मुख़्तलिफ़ अश्या के ईजादो इख़्तिराअ को मुंह बोलता षुबूत बनाया । क़ज़ा के कासिद ने तकदीर के क़लम से तेज़ी से गुज़रने वाले मौजूदात पर लिख दिया है कि उन के असरारो रूमूज़ को सिवाए अरवाहे तय्यिबा की ज़बां के कोई नहीं पढ़ सकता । अक्लमन्दों की आंखों के लिये फ़हमो इदराक के सितारे जगमगाए तो उन्होंने ने कुरआने हकीम में जब्बारो क़हहार के अज़ाइबो ग़राइब का मुशाहदा किया । चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : “(پ ६४: १) مِّنْكُمْ مَّن يُرِيدُ الدُّنْيَا وَمِنْكُمْ مَّن يُرِيدُ الْآخِرَةَ ج (پ ६४: १) ”

तर्जमए कन्जुल ईमान : तुम में कोई दुन्या चाहता था और तुम में कोई आख़िरत चाहता था ।”

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अक्ल को इज्ज के नशे से मदहोश किया और उस के लिये हरकातो सकनात की बिसात पर पर्दे ग़ैब के पीछे से ख़यालात के ऐसे ख़ाके ज़ाहिर किये जिन का बातिन मग़लूब और ज़ाहिर ग़ालिब है, फिर फ़िक्र की ज़मीन पर अक्ल के पैरोकार को खुला छोड़ दिया ताकि वोह इदराक के शहर तक पहुंच जाए । लेकिन अचानक तकदीर के घोड़े ने उस पर चढ़ाई कर दी और उस को उस हृद पर रोक दिया जहां तक अक्ल की रसाई है, तो उस पैरोकार ने जान लिया कि उस के ज़ाहिरी ज़राएअ हकीकत का इदराक करने से कासिर हैं ।

**अल्लाह** तबारक व तअ़ाला ने अक्ल को रिफ़अत अ़ता फ़रमाई, आंखों को बसारत से नवाज़ा और इन्सान ने मरातिबे अफ़लाक में फ़िरिशतों के दर्जात का मुशाहदा किया तो वोह हैबते इलाही عَزَّوَجَلَّ से सर ब सुजूद हो गया और अज़मते इलाही عَزَّوَجَلَّ देख कर खड़ा हो गया, कुदरत के साथ काइम हो गया, महब्बत में दीवाना हो गया और अहकामे खुदावन्दी की बजा आवरी के लिये कमर बस्ता हो गया ।

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मख़्लूक को आईनए इब्रत दिखाया पस काइनात की सूरतें अदम से वुजूद में आ गईं, ताकि इन्सान अपनी कोताहियों पर नादिम हो, इस से बाहम मुतज़ादो मुख़ालिफ़ तबीअतों के ज़रीए दलाइल काइम करने से तख़्तीके खुदावन्दी के राज़ ज़ाहिर हो गए पस हम ने मुशाहदा किया कि हैवान में ह़रारतो बुरुदत को यूं ज़म्अ किया गया है कि ह़रारत ठंडक से नहीं बचाती और ठंडक ह़रारत से नहीं बचाती । **अल्लाह** क़दीर عَزَّوَجَلَّ की कुदरत मक़दूरत में बिल्कुल

ज़ाहिरो बाहिर है। एक ही गिज़ा के अज्ज़ा की तक्सीम कारी ने अक्ल वालों को हैरत में डाल दिया कि किस तरह एक ही गिज़ा से गर्म तबीअत वाले को गर्म और सर्द तबीअत वाले को ठंडी गिज़ा मिलती है। और हर गिज़ा अपनी मत्लूबा मिक्दार के बराबर ही हासिल होती है। जब कि पानी भी एक है और गिज़ा भी एक है। और इस तक्सीम में मुख़लिफ़ राज़ हैं जिन्हें देखने वाली निगाहें नहीं देख सकती। **अल्लाह** हकीम **عَزَّوَجَلَّ** ने अपनी हिक्मत के साथ अक्ल के कानों को निदा फ़रमाई: “(٢٧:٤٩، القمر) **إِنَّا كُلُّ شَيْءٍ خَلَقْنَاهُ بِقَدَرٍ**”  
**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान** : बेशक हम ने हर चीज़ एक अन्दाज़े से पैदा फ़रमाई।”

“हर चीज़” से मुराद रिज़्क़, मुद्दे ह्यात, सआदतो शकावत और कुर्ब व बा’द हैं। काश ! मैं इस आयते मुबारका का हकीकी मा’ना जान लेता ? और इन चीज़ों से छुटकारा कैसे मुमकिन है ? **अल्लाह** कादिर **عَزَّوَجَلَّ** की कुदरत की हिक्मत का दामन ख़ामियों से पाक है, हलाकत की उंगलियां उस की बे नियाज़ी में तब्दीली नहीं कर सकती, कोई उस के कलिमात को बदलने की ख़्वाहिश नहीं कर सकता। इन्सानी अक्ल उस की मशिय्यत के असरार की हुज्जत समझने से कासिर है और अगर समझने की कोशिश करे तो जहालत की तारीकी में हैरान हो कर रह जाए। उस ने लौहे महफूज़ की लगाम अपनी तकदीर के हाथ में दे दी। और तकदीर के क़लम के साथ क़ज़ा लिखने वाले को अपने मक्बूल व मर्दूद बन्दों के असरार लिखने का हुक्म सादिर फ़रमाया। वोह बे नियाज़ **عَزَّوَجَلَّ** बिगैर किसी सबब के अपना कुर्ब अता फ़रमा सकता है और अपनी बारगाह से दूर कर देता है और उस ने इस बात को अपने अज़ली फैसले से लिख दिया है पस कभी येह फैसला ज़ाहिर हो जाता है और कभी पोशीदा रहता है, वोह मिटाता और लिखता है, मन्सूख़ और षाबित फ़रमाता है, दूर और क़रीब करता है, हिदायत देता और गुमराह करता है और इज्ज़तो ज़िल्लत देता है।

और उस ने फ़हमों और अक्लों को इन रुमूज़ के समझने का हुक्म दिया मगर अक्लों की बसीरत इन का इदराक कहां कर सकती है ? खुदा **عَزَّوَجَلَّ** की क़सम ! ऐ मेरे इस्लामी भाई ! उस की बारगाह में कैसा हीला और कौन सा सबब ? तकदीरें क्यूं बनाई गईं ? अपने आ’माल से नफ़अ किस को हुवा ? और किस ने अपने आ’माल से नुक़सान उठाया ? पाक है वोह ज़ात जिस ने अपने ज़ाहिरी निज़ामे काइनात के पर्दों के साथ देखने वालों की निगाहें असरारे खुदावन्दी का मुशाहदा करने से बन्द कर दीं, और तबाअ-ए-इन्सानी शरई पाबन्दियों के ख़ैमों के साथ छुपा दी गईं तो वोह हमेशा के लिये रसूल की मोहताज हो गईं।

मैं उस ज़ाते वहदहू ला शरीक की हम्द करता, उस पर ईमान लाता और उसी पर तवक्कुल करता हूं और हर कुव्वतो ताक़त में उस अज़िज़ बन्दे की तरह बरी हूं जो अपनी ना फ़रमानियों का मो’तरिफ़ है और **अल्लाह** तआला की रहमत का मोहताज है और गवाही देता हूं कि उस के सिवा कोई मा’बूद नहीं। वोह यक्ता है उस का कोई शरीक नहीं। वोह कमिय्यतो कैफ़िय्यत, सम्त, ज़मान व मकां, जुव्वो कुल, दाएं बाएं, ऊपर नीचे और आगे पीछे की सिफ़ात से मुनज़्ज़हो मुबर्रा है, क्यूंकि येह तो फ़ानी अजसाम की सिफ़ात हैं और येह भी गवाही देता हूं कि हज़रते सय्यिदुना मुहम्मदे

मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस के खास बन्दे और रसूल हैं, वोह अब्बलीनो आखिरीन और तमाम मुर्सलीन के सरदार हैं, सिद्दीकीन के सुल्तान, खासाने बारगाहे इलाहिय्या के इमाम और रोशनो चमकदार पेशानी वालों को उन अब्दी ने'मतों में ले जाने वाले हैं जिन के बारे में **अब्बाह** وَجُوۡةٌ یُّوۡمِنُ بِہَا نَاصِرَةٌۭۭۭ اِلٰی رَبِّہَا نَاطِرَةٌۭۭ (प. २९, القیامة: २२-२३) है : “**عَزَّوَجَلَّ** इरशाद फ़रमाता है :

**तर्जमए कन्जुल ईमान** : कुछ मुंह उस दिन तरो ताज़ा होंगे अपने रब्ब को देखते ।”<sup>(१)</sup>

**अब्बाह** **عَزَّوَجَلَّ** आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर, आप के आल व अस्हाब, अज्वाजे मुतहहरात और अन्सार رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اٰجْمَعِیْنَ पर रहूमत नाज़िल फ़रमाए । (आमीन) जो उस वक्त हमारे दिलों की हिफाज़त फ़रमाएगा जब तू देखेगा कि क़ियामत की हौलनाकियों से दिल ख़ौफ़ के आलम में उड़ रहे होंगे ।

**प्यारे इस्लामी भाइयो !** ज़रा उन लोगों के मुतअल्लिक तो बताओ जो सारी ज़िन्दगी मालो दौलत जम्अ करते रहे लेकिन उन के जम्अ शुदा माल ने मरने के बा'द उन्हें कोई फ़ाइदा न दिया । क्या वोह सब के सब क़ब्रों में इकठ्ठे नहीं हो गए ? वोह लोग जिन्होंने ने सारी ज़िन्दगी ख़्वाहिशाते नफ़्सानिय्या की पैरवी में बसर की मगर फिर भी सैर न हुए, अब वोह कहां चले गए ? क्या तुम उन को देख कर येह ख़याल करते हो कि वोह बड़ी अच्छी जगह पर हैं या फिर वोह कैद कर दिये गए हैं कि वापस नहीं लौटेंगे । कहां हैं वोह लोग जिन्हें दुन्या ने धोके में मुब्तला रखा ? **अब्बाह** **عَزَّوَجَلَّ** की क़सम ! वोह महज़ शहवात की वजह से ज़लीलो रुस्वा हुए । कहां हैं वोह जिन की ख़ातिर अस्बाब ने ग़फ़लत के जाल बुने यहां तक कि वोह उन में फंस गए ? जब उन के पास प्यारों में जुदाई डालने वाला (मौत का फ़िरिश्ता) आया तो वोह उस की हैबत से लड़-खड़ा कर इज्जो इन्किसारी करने लगे, लेकिन फिर भी उस ने उन के दर्दों अलम की कोई परवाह न की और उन्हें उन के अहलो इयाल से दूर कर दिया तो उन के घर वाले और दोस्त उन पर रोने लगे । अफ़सोस उन पर कि खुद तो ज़िन्दगी पाने में कामयाब हो गए लेकिन उन को उन के आ'माल के साथ तन्हा छोड़ दिया और उन्हें भुला दिया, सारे रिश्ते नाते तोड़ डाले तो मरने वाले ने हसरत की ज़बान से अपने उन अहबाब को पुकारा : “ऐ काश ! तुम सुन लो और उस इन्सान पर रहूम करो जो क़ब्र में दफ़न है, जिस के पास न तो कोई ऐसा अमल है जो उस की नजात का बाइष हो और न ही कोई ग़म गुसार कि उस के ग़म का मदावा करे ।”

उन्हें अफ़सोस व नदामत का जाम घूंट घूंट कर के पीना पड़ा, कीड़ों ने उन के आ'ज़ा को टुकड़े टुकड़े कर दिया । अब वोह दुन्या में वापस आने की तमन्ना करते हैं ताकि दिन को रोज़ा रखें और रातों को जाग कर बारगाहे इलाही **عَزَّوَجَلَّ** में हाज़िर हों । हाए, अफ़सोस ! वोह अपने बोए हुए आ'माल की खेती काट रहे हैं ।

.....<sup>①</sup>.....मुफ़स्सिर शहीर, ख़लीफ़ आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ज़िल सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْبَارِی तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारक के तहत फ़रमाते हैं : “येह मोअमिनीन का हाल है । उन्हें दीदारे इलाही की ने'मत से सरफ़राज़ फ़रमाया जाएगा ।

**मस्अला** : इस आयत से षाबित हुवा कि आखिरत में मोअमिनीन को दीदारे इलाही मुयस्सर आएगा । येही अहले सुन्नत का अक़ीदा व कुरआनो हदीष व इम्माअ के दलाइले क़ीरा इस पर काइम हैं और येह दीदार बे कैफ़ और बे जहत होगा ।”



प्यारे इस्लामी भाइयो ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे हाल पर रहम फ़रमाए ! जल्दी करो, तुम्हारे सामने पुल सिरात और हिसाबो किताब का मन्ज़र दिखाई दे रहा है। नज़्म की सख़्त्रियां सर पे खड़ी हैं, वोह दिन आया चाहता है जिस में तमाम रिश्ते ख़त्म हो जाएंगे, न अहलो इयाल नफ़अ देंगे, न ही मालो दौलत और कोई दूसरे अस्बाब। या तो जन्नत की ने'मते मिलेंगी या फिर जहन्नम का अज़ाब। हर एक ज़बाने हसरत से पुकार रहा होगा : हाए अफ़सोस ! येह कैसा नामए आ'माल मेरे हाथ में थमा दिया गया है। ऐ वोह शख्स जिस को शहवाते नफ़सानिय्या ने ग़दों में धकेल दिया है, और ऐ वोह शख्स जिस ने अपने ज़ाहिरो बातिन को ह़राम अश्या से आलूदा कर दिया है और ऐ वोह शख्स जिस के नामए आ'माल को देखने से आंखें भी कतराती हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿١﴾ اَلْهٰكُمُ التَّكَاثُرُ ۚ حَتّٰی زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ ۚ  
(پ ३०، التّکاثّر: ۱-۲)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :** तुम्हें गाफ़िल रखा माल की ज़ियादा त़लबी ने, यहां तक कि तुम ने क़ब्रों का मुंह देखा । (१)

“اَلْهٰكُمُ” का मा'ना है, तुम्हें गाफ़िल कर दिया और “تَّكَاثُرُ” का मा'ना है, ज़ियादा त़लबी। इस का मा'ना येह भी है कि नसब, माल और अवलाद में कषरत के सबब एक दूसरे पर फ़ख़ करना। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ माल जम्अ करने वालों और बाहम फ़ख़ करने वालों को इरशाद फ़रमाता है :

اَلْهٰكُمُ التَّكَاثُرُ ۚ حَتّٰی زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ ۚ  
(پ ३०، التّکاثّر: ۱-۲)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :** तुम्हें गाफ़िल रखा माल की ज़ियादा त़लबी ने यहां तक कि तुम ने क़ब्रों का मुंह देखा ।

या'नी जिस माल की वजह से तुम एक दूसरे पर फ़ख़ करते हो उस की हकीकत कुछ भी नहीं। और यहां पर एहतिमाल है कि येह क़सम के काइम मक़ाम ताकीद है और येह भी एहतिमाल है कि माल की ज़ियादा त़लबी और एक दूसरे पर फ़ख़ करने पर ज़ज़्रो तौबीख़ की गई है।

﴿٢﴾ کَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۚ  
(پ ३०، التّکاثّر: ۳)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :** हां ! हां ! जल्द जान जाओगे ।

या'नी क़ियामत के दिन माल के मतवालों का मुहासबा होने के बा'द तुम जान लोगे ।

﴿٣﴾ ثُمَّ کَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۚ  
(پ ३०، التّکاثّر: ۴)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :** फिर हां ! हां ! जल्द जान जाओगे ।

मुफ़स्सरीने किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی फ़रमाते हैं कि इस आयते मुबारका में एक बात को दो बार फ़रमाना वर्ईद की ताकीद और मन्अ कर्दा फ़े'ल पर सख़्त्री के लिये है ।

①.....मुफ़स्सरे शहीर, ख़लीफ़ आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ाजिल सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِی तफ़सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तह़त फ़रमाते हैं : “इस से मा'लूम हुवा कि कषरते माल की हिर्स और इस पर मुफ़ख़रत (या'नी एक दूसरे पर फ़ख़ करना) मज़मूम है और इस में मुब्तला हो कर आदमी सआदते उख़विय्या से महरूम रह जाता है। या'नी मौत के वक़्त हिर्स तुम्हारे दामन गीर ख़ातिर रही। हदीष शरीफ़ में है, सय्यिदे आलम عَلَیْهِمُ السَّلَام ने फ़रमाया : “मुर्दे के साथ तीन होते हैं, दो लौट आते हैं, एक उस के साथ रह जाता है। एक माल, एक उस के अहलो अकारिब और एक उस का अमल साथ रह जाता है। बाक़ी दोनों वापस हो जाते हैं।”

(4) ﴿كَلَّا لَوْ تَعْلَمُونَ عِلْمَ الْيَقِينِ﴾ (प. ३०, स. ५)

तर्जमए कन्जुल ईमान : हां ! हां ! अगर यकीन का जानना जानते तो माल की महबूत न रखते ।

ऐ लोगो ! **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ के हां तुम्हारी हैषियत क्या होगी जब सकराते मौत का जुहर होगा और नामए आ'माल फैला दिया जाएगा जो न किसी छोटे गुनाह को छोड़ेगा न बड़े को । “**عِلْمَ الْيَقِينِ**” से मुराद दिलों का उस चीज़ पर इतमीनान हासिल करना है जिस से शक दूर हो जाता है ।

(5) ﴿لَتَرَوُنَّ الْجَحِيمَ﴾ (प. ३०, स. ६)

तर्जमए कन्जुल ईमान : बेशक ज़रूर जहन्नम को देखोगे ।

इस से मुराद येह है कि कब्र में हर आदमी को जहन्नम में उस का ठिकाना दिखाया जाता है, अगर वोह सआदत मन्द हो तो उसे वोह ठिकाना दिखा कर उस से नजात की खुशख़बरी दी जाती है और अगर बदबख़्त व शक़ियुल क़ल्ब हो तो उस के लिये जहन्नम को बरक़रार रखा जाता है ।

(6) ﴿ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا عَيْنَ الْيَقِينِ﴾ (प. ३०, स. ७-८)

तर्जमए कन्जुल ईमान : फिर बेशक ज़रूर उसे यकीनी देखना देखोगे, फिर बेशक ज़रूर उस दिन तुम से ने'मतों की पुरसिश होगी । (1)

या'नी बरोजे कियामत सिह्हत और फ़राग़त के मुतअल्लिक़ पूछा जाएगा । हज़राते मुजाहिद व क़तादा (رَحِمَهُمَا اللّٰهُ تَعَالٰی) फ़रमाते हैं : “नईम में हर वोह चीज़ दाख़िल है जिस से लुत्फ़ अन्दोज़ हुवा जाए ।”

ऐ वोह शख़्स जिस पर लोग नेकियों में सबक़त ले गए हैं और वोह ख़्वाहिशात में घिरा हुवा पीछे रह गया है ! जिस ने अपनी उम्र टाल मटोल करते हुए और बेहूदा कामों में गुज़ार दी । ऐ वोह शख़्स गुनाहों पर जिस का दिल सख़्त हो चुका है और जिस की आंखों से ख़ौफ़े खुदा **عَزَّوَجَلَّ** से आसू नही बहते ! ऐ वोह शख़्स जिस के बाल सफ़ेद हो गए फिर भी वोह नाफ़रमानियों पर डटा हुवा है ! कितनी ही बार तू ने अल्लामुल गुयूब रब्ब **عَزَّوَجَلَّ** की नाफ़रमानी कर के उस का मुक़ाबला किया ? तेरी ग़फ़लत के मुतअल्लिक़ **اَللّٰهُ** **عَزَّوَجَلَّ** यूँ इरशाद फ़रमाता है :

اَلْهَيْكُمُ التَّكَاثُرُ حَتّٰی زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ

(प. ३०, स. १-२)

तर्जमए कन्जुल ईमान : तुम्हें गाफ़िल रखा माल की ज़ियादा तलबी ने यहां तक कि तुम ने कब्रों का मुंह देखा ।

हुस्ने अख़लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** का फ़रमाने इब्रत निशान है कि “जिस ने ह़राम माल कमाया फिर उस को सदक़ा किया या उस के साथ सिलए रहूमी की या राहे खुदा **عَزَّوَجَلَّ** में ख़र्च किया तो उस का येह सारा माल जम्अ कर के उस के साथ जहन्नम में फैंक दिया जाएगा ।”

(मरासिल ابی داؤد، باب زکوة الفطرو، ص ۹- بتغیر قلیل)

.....मुफ़रिस्से शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ज़िल सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी **عَلِیْهِ وَحَمَةُ اللّٰهِ الْبَارِی** तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तह़त फ़रमाते हैं : “जो **اَللّٰهُ** तआला ने तुम्हें अता फ़रमाई थीं, सिह्हत व फ़राग़त व अम्म व माल वग़ैरा जिन से दुन्या में लज़ज़तें उठाते थे । पूछा जाएगा : येह चीज़ें किस काम में ख़र्च कीं ? इन का क्या शुक्र अदा किया ? और तर्कें शुक्र पर अज़ाब किया जाएगा ।”

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मसऊद رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि शहनशाहे मदीना, कराये क़ल्बो सीना, साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइषे नुजूले सकीना, फैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : “बन्दा माले हराम में से जो भी कमाए और उसे ख़ैरात करे तो वोह क़बूल नहीं होता और उसे ख़र्च करे तो उस में बरकत नहीं होती और उसे अपने बा'द वालों के लिये छोड़े तो वोह उस के लिये आग का तोशा होगा ।”

(المسند للإمام أحمد بن حنبل، مسند عبد الله بن مسعود، الحديث ۳۶۷۲، ج ۲، ص ۳۳، بتغییر قلیل)

हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अब्दुल्लाह رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ रिवायत करते हैं कि सरकारे मदीना, कराये क़ल्बो सीना, बाइषे नुजूले सकीना, बाइषे नुजूल सकीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने हकीकत निशान है : “ऐ लोगो ! तुम में से हरगिज़ कोई मौत का शिकार न होगा जब तक कि वोह अपना मुकम्मल रिज़क न पा ले लिहाज़ा तुम रिज़क के मुतअल्लिक तंग दिल न हो और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरो और उम्दा तरीके से रिज़क त़लब करो, और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की हलाल कर्दा चीज़ें ले लो और हराम कर्दा छोड़ दो ।”

(المستدرک، کتاب الرقاق، باب الحسب المال والکرم التقوی، الحديث ۷۹۹۲، ج ۵، ص ۲۶۲)

अफ़सोस ! तअज़ुब है तुझ पर ! जब भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ने'मतों की बिसात बिछाई तो तू ने नाफ़रमानी कर के उस का मुक़ाबला किया । **अल्लाह** तआला फ़रमाता है कि “ऐ मेरे बन्दे ! कितनी ही बार हम ने देखा कि तू ने हमारी महफ़िल छोड़ कर शैतान की मजलिस अपनाई, मैं ने तुझ पर कितने एहसानात व इन्आमात फ़रमाए और मैं मन्नान हूं । ऐ मेरे बन्दे ! मैं तो तुझे अपने विसाल की दौलत से नवाज़ना चाहता हूं और तू है कि हिज़्रो फ़िराक़ को महबूब रखता है, उस वक़्त तेरे पास क्या हिला होगा जब तुझ पर मेरा ग़ज़ब होगा और तेरे अहलो इयाल भी तुझ से दूर भाग रहे होंगे ।”

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

اَلْهٰکُمُ السَّکَاوَةُ حَتّٰی زُرْتُمْ الْمَقَابِرَ ۝

(پ ۳۰، السّکائر: ۱-۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम्हें गाफ़िल रखा माल की ज़ियादा त़लबी ने यहां तक कि तुम ने क़ब्रों का मुंह देखा ।

हज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन अम्मार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْعَفَّار इरशाद फ़रमाते हैं कि “मैं एक साल हज़ की सआदत से बहरा मन्द न हो सका, और कूफ़ा की एक तंग गली में ठहर गया । एक अंधेरी रात में घर से बाहर निकला कि अचानक रात की तारीकी को चीरती हुई एक तेज़ आवाज़ मेरे कानों से टकराई, कोई **अल्लाह** तआला की बारगाह में महूवे इल्लिजा था : “ऐ मेरे मौला **عَزَّوَجَلَّ** ! तेरे इज़्ज़तो जलाल की कसम ! मैं ने गुनाहों से तेरी मुख़ालफ़त मोल लेने का इरादा न किया था बल्कि जब मैं ने येह गुनाह किये थे तो मैं तेरे मक़ामो मर्तबे से ना वाकिफ़ था लेकिन जब मैं ने गुनाह किये और मेरे नफ़्स ने मुझे बुराई को अच्छाई ज़ाहिर कर के धोका दिया और मेरी बदबख़्ती मुझ पर ग़ालिब आ गई फिर भी तेरी रहूमत ने मेरी पर्दापोशी की और तेरी इस पर्दापोशी से मैं धोका खा गया और अपनी जहालत की वजह से तेरी नाफ़रमानी करने लगा और महज़ अपनी बदबख़्ती की वजह से तेरी मुख़ालफ़त की लेकिन अब तो मैं जान चुका हूं कि मुझे तेरे अज़ाब से नजात दिलाने वाला



कोई नहीं ? ऐ मेरे मालिको मौला **عَزَّوَجَلَّ** ! अगर तू ने मुझे अपनी रहमत से दूर कर दिया तो मुझे कौन संभालेगा ? हाए हसरतो अफ़सोस ! मेरी उम्र बढ़ने के साथ साथ मेरे गुनाहों में भी इज़ाफ़ा होता रहा । हलाकतो बरबादी हो मुझ पर ! कितनी ही मरतबा मैं ने तौबा की फिर तोड़ दी । अब वक़्त है कि मैं अल्लामुल गुयूब परवर दगार **عَزَّوَجَلَّ** से हया करूँ ।”

कर के तौबा फिर गुनाह करता है जो मैं वोही बदकार हूँ कर दे करम  
फिर उस ने चन्द अशआर कहे, जिन का मफ़हम येह है :

“अफ़सोस ! मैं ने अपने रब्ब **عَزَّوَجَلَّ** की नाफ़रमानी की पस जब मेरा नामए आ'माल ज़ाहिर होगा तो मेरे पास कौन सा उज़्र होगा ? जब मुझे उस की बारगाह में ज़लील खड़ा किया जाएगा तो गुनाहों का इर्तिकाब करने पर क्या उज़्र पेश करूंगा ? ऐ तमाम लोगों से बे नियाज़ और मेरे तमाम करतूतों पर ख़बरदार ! मेरे पास अपने उन गुनाहों और जुर्मों का कोई उज़्र नहीं, मौला ! बस अपनी रहमत से मेरी ख़ताएं मुआफ़ फ़रमा दे । ऐ मेरे मालिको मौला **عَزَّوَجَلَّ** ! तू ने मुझे सीधे रास्ते पर चलने का हुक्म दिया और गुमराही के रास्ते से मन्अ फ़रमाया और तू येह भी जानता था कि मैं इस रास्ते से भाग नहीं सकता था खैरो शर में से जो तू ने मेरे लिये मुक़द्दर कर रखा था । लिहाज़ा मैं बिला इख़्तियार उसी पर चल पड़ा क्यूंकि बन्दा तो महकूम होता है । लिहाज़ा ऐ मेरे मालिको मौला **عَزَّوَجَلَّ** ! मेरी तौबा को अपनी बारगाह में क़बूल फ़रमा और अपने गुनाहों का ए'तिराफ़ करने वाले बन्दे से दरगुज़र फ़रमा ।”

हज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन अम्मार **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَفَّار** फ़रमाते हैं कि “मैं इस कलाम को सुन कर रोने लगा और **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के इस फ़रमाने अ़लीशान की तिलावत करने लगा :

﴿7﴾ قُلْ يَبَادِي الدِّينِ أَسْرَفُوا عَلَىٰ أَنفُسِهِمْ  
لَا تَفْنَوْنَ رَحْمَةَ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ  
جَمِيعًا إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ 0 (پ ۴ ۲ الزمر: ۵۳)

तर्जमए कन्जुल ईमान : तुम फ़रमाओ ! ऐ मेरे वोह बन्दो जिन्हों ने अपनी जानों पर ज़ियादती की **अल्लाह** की रहमत से ना उम्मीद न हो, बेशक **अल्लाह** सब गुनाह बख़्श देता है, बेशक वोही बख़्शने वाला मेहरबान है ।

आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** फ़रमाते हैं : “अचानक मैं ने इन्तिहाई इज्तिराब की हालत में किसी के गिरने की आवाज़ सुनी । जब सुब्ह के वक़्त मैं उसी दरवाजे के पास से गुज़रा तो मैं ने देखा कि एक शख्स का जनाज़ा रखा हुआ है और एक औरत घर के अन्दर और बाहर आ जा रही है और येह कह रही है : “ऐ मेरे बेटे ! ऐ ग़मों के मारे हुए बेटे ! ऐ कुरआन सुन कर शहीद होने वाले बेटे ! मैं ने उस के क़रीब हो कर पूछा : “ऐ **अल्लाह** की बन्दी ! ज़रा येह तो बता कि मरने वाला कौन है ?” तो वोह बोली, “येह मेरा बेटा और मेरी आंखों की ठंडक है । येह खज़ूर के पत्ते बेचा करता था और उस कमाई में से एक तिहाई मुझे देता, एक तिहाई अपनी ज़रूरत के लिये रखता और एक तिहाई सद्का कर देता । आज इस के पास से कोई शख्स गुज़रा और उस ने कुरआने पाक की एक आयते मुबारका तिलावत की जिस को सुनते ही इस की रूह क़फ़से उन्सुरी से परवाज़ कर गई । अब मेरे पास कोई हीला व तदबीर नहीं ।”



मौला عَزَّوَجَلَّ ! जब मैं सालिकीने राहे हक् को तेरी बारगाह तक पहुंचने का सहीह रास्ता बताऊं और वोह मेरे इस वा'ज को सुन कर तेरी बारगाह तक पहुंच जाएं तो क्या तू उन लोगों को कबूल कर लेगा कि जिन की रहनुमाई की गई है और रहनुमाई करने वाले को धुत्कार देगा ? ऐ मेरे मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ ! अगर मेरा येह कलाम ख़ालिस तेरी रिज़ा के लिये नहीं तो इस इजतिमाए पाक में कोई तो ऐसा होगा जो सिर्फ तेरी रिज़ा का तालिब होगा लिहाज़ा अपने वज्हे करीम के वासिते मेरी कोताहियों के मुतअल्लिक उस की सिफ़ारिश कबूल फ़रमा और ऐ सब से बढ़ कर रहूम फ़रमाने वाले ! हम सब पर अपना ख़ास रहूमो करम फ़रमा । (आमीन)

وَصَلَّى اللّٰهُ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِهِ وَصَحْبِهِ وَسَلَّمَ تَسْلِيمًا كَثِيرًا



### अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दे हाजात पूरी करते हैं

दो फ़रामैने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم :

(1)..... “बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने वा'ज बन्दों को अपनी रिज़ा के लिये लोगों की हाजात पूरा करने के लिये ख़ास कर लिया है और उस ने अहद फ़रमाया है कि उन्हें अज़ाब न देगा, फिर जब क़ियामत का दिन होगा तो उन्हें नूर के मिम्बरों पर बिठाया जाएगा, वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से कलाम करते होंगे जब कि लोग हिसाब में होंगे ।”

(فيض القدير، حرف الهمزة تحت الحديث ٢٣٥٠، ج ٢، ص ٦-٦٠٥)

(2)..... “**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के कुछ बन्दे हैं कि लोग घबराए हुए अपनी हाजात उन के पास लाते हैं, येह बन्दे क़ियामत के दिन अज़ाबे इलाही से अम्म में होंगे ।”

(کنز العمال، کتاب الزکاة، الحديث ١٦٤٦١، ج ٦، ص ١٩٠)



बयान 22 :

## नफ़ली सदक़े का बयान

सदक़े के फ़ज़ाइल पर आयाते मुबारक :

अल्लाह عزّوجلّ का फ़रमाने आलीशान है :

﴿١﴾ إِنَّ الْمُسْلِمِينَ وَالْمُسْلِمَاتِ وَأَقْرَضُوا اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضْعَفَ لَهُمْ وَلَهُمْ أَجْرٌ كَرِيمٌ 0  
(प २७, الحديد: १८)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक सदका देने वाले मर्द और सदका देने वाली औरतें और वोह जिन्हों ने अल्लाह को अच्छा कर्ज़ दिया उन के दूने (दुगने) हैं और उन के लिये इज़्ज़त का षवाब है ।

एक और मक़ाम पर अल्लाह عزّوجلّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿٢﴾ الَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ لَا يَتَّبِعُونَ مِمَّا انْفَقَوْا مَنًّا وَلَا أَذًى لَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ 0  
(प ३, البقرة: २६२)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो अपने माल अल्लाह की राह में खर्च करते हैं, फिर दिये पीछे न एहसान रखें न तकलीफ़ दें, उन का नेग (इन्आम) उन के रब्ब के पास है, और उन्हें न कुछ अन्देशा हो न कुछ ग़म ।<sup>(१)</sup>

सदक़े के फ़ज़ाइल पर अहादीषे तख़ियबा :

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुरहीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है :  
“जिस मुसलमान ने किसी बे लिबास मुसलमान को कपड़ा पहनाया अल्लाह عزّوجلّ उसे जन्नती लिबास पहनाएगा और जिस ने किसी भूके मुसलमान को खाना खिलाया अल्लाह عزّوجلّ उसे जन्नती फल खिलाएगा और जिस ने किसी प्यासे मुसलमान को पानी पिलाया अल्लाह عزّوجلّ उसे मोहर लगी हुई पाकीज़ा शराब पिलाएगा ।”

(सनن ابی داؤद، کتاب الزکاة، باب فی فضل سقى الماء، الحديث १६८२، ص १३६८ “حل” بدله “خضر”)

①.....मुफ़सिरे शहीर, खलीफ़ए आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ज़िल सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِی तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं :

“शाने नुज़ूल : येह आयत हज़रते उषमाने ग़नी व हज़रते अब्दुरहमान बिन औफ़ के हक़ में नाज़िल हुई । हज़रते उषमान ने रَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने ग़ज़वए तबूक के मौक़अ पर लश्करे इस्लाम के लिये एक हज़ार ऊंट मअ सामान पेश किये और अब्दुरहमान बिन औफ़ ने चार हज़ार दिरहम सदक़े के बारगाहे रिसालत में हाज़िर किये और अर्ज़ किया कि मेरे पास कुल आठ हज़ार दिरहम थे, निस्फ़ मैं ने अपने और अपने अहलो इयाल के लिये रख लिये और निस्फ़ राहे खुदा में हाज़िर हैं । सय्यिदे आलम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो तुम ने दिये और जो तुम ने रखे अल्लाह तआला दोनों में बरकत फ़रमाए । एहसान रखना तो येह कि देने के बा'द दूसरों के सामने इज़हार करें कि हम ने तेरे साथ ऐसे ऐसे सुलूक किये और उस को मुक़दर करें और तकलीफ़ देना येह कि उस को आर दिलाएं कि तू नादार था, मुफ़्लिस था, मज्बूर था, निकम्मा था, हमने तेरी ख़बरगोरी की या और तरह दबाव दें, येह ममनूअ फ़रमाया गया ।”

हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के प्यारे हबीब, हबीबे लबीब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने आलीशान है : “सदका और सिलए रहमी से **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उम्र में बरकत देता, बुरी मौत को दफ़अ करता और नापसन्दीदा और क़ाबिले एहतिराज़ शै को दूर करता है।” (مسند ابی یعلی الموصلی، مسند انس بن مالک، الحديث ٤٠٩٠، ج ٣، ص ٣٩٧)

हज़रते सय्यिदुना सईद बिन मसऊद किन्दी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़लाक صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने जीशान है : “जो शख़्स दिन या रात को सदका करता है तो वोह सांप या बिच्छू के कांटने, गिर कर मरने या अचानक मौत से महफूज़ रहता है।”

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने शफ़ाअत निशान है : “सुब्ह सवेरे सदका किया करो क्यूंकि मुसीबत सदके से सबक़त नहीं ले जा सकती।”

(السنن الكبرى للبيهقي، كتاب الزكاة، باب فضل من أصبح صائماً..... الخ، الحديث ٧٨٣١، ج ٤، ص ٣١٨)

बा'ज उ-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللَّهُ تَعَالَى फ़रमाते हैं : “बन्दा सदका करता है और बला नाज़िल हो रही होती है तो सदका ऊपर बुलन्द होता है, इन दोनों का आमना सामना होता है, न बला सदके पर ग़लबा पा सकती है न सदका बला पर। जब तक **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ चाहे दोनों ज़मीनो आस्मान के दरमियान एक दूसरे से लड़ते रहते हैं।”

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरोबर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने आलीशान है : “**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ (क़ियामत के दिन) फ़रमाएगा : “ऐ मेरे बन्दे ! मैं ने तुझ से खाना त़लब किया, तू ने मुझे न खिलाया। मैं ने तुझ से पानी त़लब किया, तू ने मुझे न पिलाया। मैं ने तुझ से कपड़े त़लब किये तू ने मुझे न दिये।” तो बन्दा अर्ज़ करेगा : “ऐ मेरे रब्ब था मगर तू ने अपने माल में से कोई चीज़ उसे न दी, आज मैं तुझ से अपना फ़ज़ल रोक लूंगा जैसा कि तू ने रोक लिया था।” (صحيح مسلم، كتاب البر والصلة والآداب، باب فضل عيادة المريض، الحديث ٢٥٦٩، ص ١٢٨، مختصراً)

हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : “अगर **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ चाहे तो तुम्हें फ़कीर बना दे कि तुम में कोई अमीर न रहे और अगर चाहे तो तुम्हें ग़नी बना दे कि तुम में कोई मोहताज न रहे लेकिन वोह तुम्हें एक दूसरे के ज़रीए आजमाता है।”

हज़रते सय्यिदुना इब्ने उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि हुज़ूर सय्यिदुल मुबल्लिगीन, जनाबे रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने मग़फ़िरत निशान है : “पोशीदा तौर पर सदका देना **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ के ग़ज़ब को ठन्डा करता है, और नेकियां बुराई के दरवाज़ों से बचाती हैं। सिलए रहमी से उम्र में इज़ाफ़ा और रिज़क़ में कुशादगी होती है।”

(المعجم الاوسط، الحديث ٩٤٣، ج ١، ص ٢٧٣، بتغير قليل)

हज़रते सय्यिदुना सालिम बिन जा'द رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि “सदका बुराई के सत्तर दरवाजों को बन्द कर देता है और पोशीदा सदका ए'लानिय्या सदके से सत्तर गुना अफ़ज़ल है।”

(المتجر الرابع في ثواب العمل الصالح، ابواب الصدقات، ثواب صدقة السر، ص २८७)

मन्कूल है कि सदके के हुरूफ़ चार हैं : ص , و , ق , और هـ । ص से मुराद येह है कि सदका करने वाला दुन्या व आख़िरत की तकालीफ़ से महफूज़ रहता है । و से मुराद येह है कि बरोजे क़ियामत जब सारी मख़लूक़ हैरानो परेशान होगी तो सदका करने वाले की जन्नत की तरफ़ रहनुमाई की जाएगी । ق से मुराद येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे अपना ख़ास कुर्ब अता फ़रमाता है । هـ से मुराद येह है कि उसे आ'माले सालिहा की हिदायत से नवाज़ा जाता है ताकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से राजी हो जाए ।

हज़रते सय्यिदुना अबुल कासिम मज़कूर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَفُور फ़रमाते हैं कि “हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के अख़्लाक़ में से येह था कि वोह अपने पास मौजूद सब से अच्छी, बेहतर और ख़ूब सूरत शै सदका करते, आप से अर्ज़ की गई : “अगर आप इस से कम सदका करें तब भी आप عَلَيْهِ السَّلَام को क़िफ़ायत करेगा ।” तो आप عَلَيْهِ السَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : “क्या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे मुलाहज़ा नहीं फ़रमा रहा कि मैं उस से अपने पास मौजूद घटिया चीज़ के बदले बेहतर त़लब करता हूं।”

हज़रते सय्यिदुना इकरमा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ, हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से रिवायत करते हैं कि शहनशाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिषाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने हकीकत निशान है : “दो चीज़ें शैतान की तरफ़ से हैं और दो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से ।” फिर आप صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई :

﴿3﴾ الشَّيْطَانُ يَعِدُكُمُ الْفَقْرَ وَيَأْمُرُكُمْ

بِالْفَحْشَاءِ وَاللَّهُ يَعِدُكُم مَّغْفِرَةً وَمِنَّةً وَفَضْلًا

وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ 0 (ب ३, البقرة: २६८)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : शैतान तुम्हें अन्देशा दिलाता है मोहताजी का और हुक्म देता है बे ह्याई का, और **अल्लाह** तुम से वा'दा फ़रमाता है बख़्शिश और फ़ज़ल का, और **अल्लाह** वुस्अत वाला, इल्म वाला है ।

(हज़रते सय्यिदुना शोएब हरीफ़ीश عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى इस आयते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं कि) शैतान तुम्हें सदका व ख़ैरात से मन्अ करता और गुनाहों का हुक्म देता है जब कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें फ़रमां बरदारी और सदका करने का हुक्म देता है ताकि इस के ज़रीए तुम उस से मग़फ़िरत और उस का फ़ज़ल पाओ और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सदका करने वाले का षवाब जानता है ।

(النर المنثور، البقرة، تحت الآية २६८، ج २، ص ६०)

हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़फ़ारी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि ज़मीन पर जो भी सदका निकाला जाता है वोह सत्तर शैतानों के जबड़ों से छुड़ा कर दिया जाता है वोह सब बन्दे को सदका देने से रोकते हैं ।”

(الزهّد لابن المبارك، باب الصدقة، الحديث ६६९، ص २२८)



## इमतिहान में कामयाब होने वाला नौजवान :

हज़रते सय्यिदुना इकरिमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि “बनी इस्राईल में एक मालदार शख्स था जो अपना माल भलाई के कामों में खर्च करता था, वोह अपनी बीवी और एक बेटे को छोड़ कर दुनिया से रुख़्सत हो गया तो उस की बीवी ने दिल में कहा : “मैं अपने शोहर के छोड़े हुए माल के लिये इस से अफ़ज़ल जगह नहीं पाती जहां वोह खर्च किया करता था। लिहाज़ा उस ने तमाम माल सदका कर दिया सिवाए दो सो दिरहमों के जो उस ने अपने बेटे के लिये जम्अ कर रखे थे। जब बच्चा बड़ा हुवा तो उस ने पूछा : “ऐ मेरी मां ! मेरा बाप कौन था ?” उस ने जवाब दिया : “तेरा बाप बनी इस्राईल के मुअज़्ज़िज़ीन में से था।” बेटे ने फिर पूछा : “क्या उस ने कोई माल छोड़ा है ?” मां ने जवाब दिया : क्यूं नहीं, लेकिन वोह हमेशा भलाई के रास्ते में खर्च करता था तो मैं ने भी इसी रास्ते में खर्च कर डाला।” बेटे ने पूछा : “आप ने मेरे हिस्से का सारा माल क्यूं सदका कर दिया और इस में से कुछ न बचाया ? उस की मा ने कहा : “तुम्हारे हिस्से के दोसो दिरहम बाकी हैं।” तो लड़के ने अर्ज़ की : “लाइयें, मेरा माल मुझे दें ताकि इस के ज़रीए मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़ज़ल तलाश करूं।” चुनान्चे, वोह अपनी मां से दिरहम ले कर घर से निकल खड़ा हुवा, चलते चलते एक बरहना मुर्दे के पास से गुज़रा जो ज़मीन पर पड़ा हुवा था। उस ने सोचा कि माल खर्च करने की इस से अफ़ज़ल जगह कोई नहीं। उस के लिये एक सो अस्सी (180) दिरहम का कफ़न ख़रीद कर उस के कफ़न दफ़न का एहतिमाम किया और कब्र पर मिट्टी डाली और बक़िया बीस दिरहम ले कर रवाना हो गया। रास्ते में एक शख्स से मुलाकात हुई, उस ने पूछा : “कहां का इरादा है ?” लड़के ने जवाब दिया : “**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़ज़ल तलाश करने निकला हूं।” उस ने कहा : “अगर मैं ऐसी चीज़ की तरफ़ तेरी रहनुमाई करूं जिस से तू **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़ज़ल पाए तो उस में से निस्फ़ मेरा होगा।” लड़का रिज़ा मन्द हो गया। तो उस शख्स ने कहा : “उस शहर की तरफ़ चले जाओ, वहां तुम एक औरत को पाओगे जिस के पास एक बिल्ली होगी, वोह उसे फ़रोख़्त कर रही होगी, तुम उस से बीस दिरहम में ख़रीद कर ज़ब्द कर देना और आग में जला देना। फिर उस की राख जम्अ कर के दूसरे शहर की तरफ़ रवाना हो जाना, वहां के बादशाह की बसarat ज़ाइल हो चुकी है। तुम ब तौरे सुर्मा उस की आंखों में राख लगाना उस की बीनाई लौट आएगी, वोह लड़का गया और बिल्ली की राख ले कर जब बादशाह के पास आया तो बादशाह ने कहा : “इस को उस वादी में ले जाओ जिस में सुरमा लगाने वाले हैं, फिर उस को बताना कि अगर उस ने मुझे ठीक कर दिया तो मुंह मांगा इन्आम पाएगा और ठीक न कर सका तो मैं उसे क़त्ल कर दूंगा, फिर अगर वोह चाहे तो इलाज के लिये आगे बढ़े और चाहे तो वहीं से लौट आए। जब लड़का वादी में गया तो वहां सुरमा लगाने वालों की लाशें देखीं, फिर भी उस ने कहा : “मैं सुरमा लगाऊंगा। चुनान्चे, इस ने सुरमा लगाया तो बादशाह कहने लगा : “गोया मुझे कुछ कुछ नज़र आ रहा है, फिर दूसरी मरतबा लगाया तो बादशाह ने कहा : “अब मैं कुछ कुछ देख रहा हूं।” फिर जब तीसरी मरतबा सुरमा लगाया तो उस की बीनाई

मुकम्मल तौर पर लौट आई। बादशाह ने कहा : मैं तुझ पर इस से बढ़ कर एहसान नहीं कर सकता कि तेरी शादी अपनी बेटी से कर दूँ। फिर बादशाह ने उस की हाज़त पूछ कर अपना सब से पसन्दीदा माल उसे दे दिया, वोह लड़का उस के पास कुछ अर्सा रहा। फिर उसे अपनी मां की याद सताई तो उस ने बादशाह से जाने की इजाज़त चाही। बादशाह ने कहा : “ठीक है, अपने साथ अपनी बीवी और माल को भी ले जाओ।” वापसी में वोह लड़का उसी शख्स के पास से गुज़रा तो उस ने पूछा : “क्या मुझे पहचानते हो?” लड़के ने नफ़ी में जवाब दिया तो उस ने कहा : “मैं वोही हूँ जिस ने तुझे फुलां फुलां बात बताई थी।” फिर वोह लड़का सुवारी से उतर आया और जो कुछ इस के पास था दो हिस्सों में तक्सीम कर दिया। वोह शख्स कहने लगा : “मेरे हिस्से की एक चीज़ अभी बाकी है।” लड़के ने पूछा : “वोह क्या?” तो वोह बोला : “तेरी बीवी, मैं तुझे **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** की क़सम देता हूँ कि अपना वा'दा पूरा कर।” उस लड़के ने कहा : “फिर हम उस की तक्सीम कैसे करें?” उस शख्स ने कहा : “इस को आरे से चीर दो।” लड़के ने हामी भर ली कि मैं ऐसा ही करता हूँ।” जब उस ने आरा अपनी बीवी के सर पर रखा तो वोह शख्स कहने लगा : “रुक जाओ बेशक मुझे **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ने तेरे पास भेजा है। **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** इसी तरह तेरी हिफ़ाज़त फ़रमाए जैसे तू ने उस से किये हुए अहद को पूरा किया।” फिर उस शख्स ने लड़के का सारा माल उसे वापस कर दिया।

### ख़ुदा तरस औरत को डूबे हुवे बच्चे कैसे मिले ?

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا** से मरवी है कि “सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार बिइज़ने परवर दगार **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** इरशाद फ़रमाते हैं : “बनी इसराईल की एक औरत का शोहर घर से बाहर था। उस शख्स की मां ने अपनी बहु को जुदाई पर उभारा तो उस की बीवी उसे नापसन्द करने लगी, फिर उस की मां ने अपने बेटे की जानिब से एक झूटा तलाक़ नामा अपनी बहु को लिखा, उस औरत के दो बेटे थे। जब वोह ख़त उसे मिला तो वोह अपने बच्चों को ले कर वालिदैन् के पास चली गई। वहां का ज़ालिम बादशाह मिस्कीनों को खाना खिलाना नापसन्द करता था। एक दिन एक मिस्कीन उस औरत के करीब से गुज़रा, वोह रोटी पका रही थी। मिस्कीन ने सुवाल किया : “मुझे कुछ रोटी खिला दो।” औरत ने कहा : “क्या तुझे मा'लूम नहीं कि बादशाह ने सख़्ती के साथ मसाकीन को खाना खिलाने से मन्अ किया हुवा है?” उस ने कहा : “मुझे येह बात मा'लूम है लेकिन अगर तुम मुझे खाना न खिलाओगी तो मैं हलाक हो जाऊंगा।” येह सुन कर उस औरत को तरस आ गया और उस ने दो रोटियां मिस्कीन को दे दी और कहा : “किसी को पता न चले की मैं ने तुझे खाना दिया है।” वोह रोटियां ले कर पहरेदारों के पास से गुज़रा। जब उन्होंने ने उस की तलाशी ली तो इस से रोटियां बर आमद हुईं। उन्होंने ने उस से पूछा : “येह तुझे कहा से मिलीं?” उस ने कहा : “फुलां औरत ने दी हैं।” पहरे दार उस मिस्कीन को उस औरत के पास ले आए और पूछा : “क्या इस मिस्कीन को येह रोटियां तू ने दी हैं?” उस औरत ने जवाब दिया : “जी हां।” उन्होंने ने पूछा : “क्या तू नहीं जानती कि बादशाह

ने सख्ती के साथ मसाकीन को खाना खिलाने से मन्अ कर रखा है?" उस औरत ने कहा : "हां, येह मुझे मा'लूम है।" तो उन्होंने ने पूछा : "फिर किस चीज़ ने तुम्हें इस पर उभारा?" वोह बोली : "मुझे इस पर तरस आ गया और मुझे उम्मीद थी कि येह किसी को न बताएगा।" बहर हाल पहरेदारों ने उस को बादशाह के दरबार में पेश करते हुए बताया : "इस औरत ने मिस्कीन को खाना दिया है।" बादशाह ने उस से पूछा : "क्या तू ने ऐसा किया है?" उस ने "हां" में जवाब दिया। बादशाह ने कहा : "क्या तू नहीं जानती थी कि मैं ने मसाकीन को खाना खिलाने से मन्अ कर रखा है?" उस ने कहा : "जी हां, मुझे मा'लूम था।" बादशाह ने पूछा : "फिर तुम्हें किस चीज़ ने इस पर उभारा?" औरत बोली : "मुझे इस पर तरस आ गया और मुझे उम्मीद थी कि येह किसी को न बताएगा और मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का खौफ़ हुवा कि कहीं येह हलाक न हो जाए।" फिर बादशाह ने उस के दोनों हाथ काटने का हुक्म दे दिया। चुनान्चे, उस के दोनों हाथ काट दिये गए। वोह अपने बच्चों को ले कर घर की तरफ़ रवाना हो गई यहां तक कि एक बहती नहर के कनारे पहुंची। उस ने अपने एक बेटे को पानी पिलाने का कहा। जब बच्चा पानी लेने के लिये उतरा तो डूब गया। उस ने दूसरे बेटे को कहा : "ऐ बेटे ! अपने भाई को थामो।" वोह भाई को बचाने के लिये नीचे उतरा लेकिन वोह भी डूब गया। अब वोह बीचारी तन्हा रह गई।

अचनाक उस के पास एक शख्स आया और कहने लगा : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बन्दी ! तुझे क्या हुवा ? मैं तेरी हालत बहुत बुरी देख रहा हूं।" उस ने जवाब दिया : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दे ! मुझे छोड़ दे, क्योंकि मेरे साथ जो कुछ हुवा उस ने मुझे तुझ से बे ख़बर कर दिया है।" उस ने इसरार किया : "मुझे अपना हाल तो बताइये।" तो उस औरत ने सारा वाक़िआ बयान कर दिया और येह भी बताया कि उस के दोनों बच्चे डूब गए हैं। येह सुन कर उस शख्स ने कहा : "तुम अपने हाथों और बच्चों में से किस की वापसी चाहती हो ?" औरत ने कहा : "तू मेरे दोनों बच्चों को ज़िन्दा निकाल दे।" चुनान्चे, उस ने दोनों लड़कों को ज़िन्दा निकाल दिया, फिर उस के हाथ भी लौटा दिये और कहने लगा : "मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से तेरी तरफ़ भेजा गया है, उस ने तुझ पर रहम करते हुए मुझे भेजा है। पस उन दो रोटियों के इवज़ तेरे हाथ लौटा दिये गए हैं और उस मिस्कीन पर तरस खाने और मुसीबत पर सब्र करने की वजह से तेरे दोनों बेटे लौटा दिये गए हैं, और तुझे येह भी बता दूं कि तेरे शोहर ने तुझे त़लाक़ नहीं दी थी, तू उस के पास लौट जा, वोह अपने घर में ही है और उस की मां का भी इन्तिक़ाल हो चुका है। जब वोह औरत अपने शोहर के घर गई तो तमाम मुआमला ऐसा ही पाया जैसा कहा गया था।"

(عیون الحکایات، الحکایة العشرون بعد المائة، المعروف لا یضیع، ص ۱۳۸ ملخصاً)

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿4﴾ وَمِنْ قَوْمٍ مُّوسَىٰ أُمَمَةٌ يّهْدُونَ بِالْحَقِّ

وَبِهِ يّعْدِلُونَ 0 (प ९, अलअरफ १०९)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और मूसा की क़ौम से एक गुरौह है कि हक़ की राह बताता और उसी से इन्साफ़ करता।



## अहले हक का बे मिषाल गुरौह :

मुफ़स्सरीने किराम رَحْمَهُمُ اللَّهُ تَعَالَى फ़रमाते हैं कि “हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَامُ के इन्तिकाल के बा’द बनी इसराईल ने दीन में बातिल चीज़ों की आमेज़िश कर दी तो एक गुरौह उन से जुदा हो गया, इन्होंने ने **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ से दुआ की, कि वोह इन को दीन में बातिल चीज़ों की मिलावट करने वालों से दूर कर दे। चुनान्चे, ज़मीन के नीचे एक सूराख़ ज़ाहिर हुवा, उस में चलते हुए उन्होंने ने एक कुशादा और वसीअ मैदान देखा, तो उन्होंने ने वहीं पड़ाव डाल दिया। उन के बेटे और सब नस्लें मुस्तक़िल तौर पर वही क़ियाम पज़ीर हो गईं, यहां तक कि हज़रते सय्यिदुना जुलक़रनैन एक दिन सैर करते हुए जब वहां पहुंचे, तो उन्होंने ने देखा कि यहां लोगों की उम्रें दराज़ हैं, कोई फ़कीर नहीं, क़ब्रें घर के दरवाज़ों के क़रीब और इबादतगाहें घरों से दूर हैं। घरों पर दरवाज़े भी नहीं हैं, न उन पर कोई हाकिम है, न उन का कोई अमीर है। आप ने दरयाफ़्त फ़रमाया : “इन सब बातों का राज़ क्या है ?” तो अर्ज़ की गई : “ऐ बादशाह ! हमारी उम्रों में बरकत का सबब हमारा एक दूसरे की मदद करना है। हम में से जब कोई मोहताज हो जाता है तो हम मिल कर उस की मोहताजी दूर करते हैं, इस तरह हम सब अगुनिया हैं, और हमारी क़ब्रों के घर के क़रीब होने का सबब येह है कि हम ने अपने उ-लमाए किराम رَحْمَهُمُ اللَّهُ تَعَالَى से सुना है कि क़ब्र ज़िन्दों को मौत की याद दिलाती है, और इबादत गाहों के दूर होने का सबब हमें अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام और उ-लमाए किराम رَحْمَهُمُ اللَّهُ تَعَالَى ने येह बताया है कि “इन की तरफ़ क़दमों की क़षरत से नेकियों में इज़ाफ़ा होता है, और हमारे घरों के दरवाज़े इस लिये नहीं कि हम किसी की चोरी नहीं करते, तो हमें दरवाज़ों की हाजत नहीं होती, और हम पर कोई हाकिम या अमीर न होने की वजह येह है कि हम एक दूसरे पर जुल्म नहीं करते, बल्कि हम बाहम अदलो इन्साफ़ से काम लेते हैं तो हमें फिर अमीर व हाकिम की ज़रूरत भी नहीं पड़ती।” हज़रते सय्यिदुना जुलक़रनैन ने इरशाद फ़रमाया : “मैं ने तुम्हारी मिष्ल कोई क़ौम नहीं देखी, और अगर मैं ने किसी शहर को वतन बनाने का इरादा किया, तो तुम्हारे हुस्ने मुआशरत और अख़्लाक़े जमीला की वजह से इस शहर को वतन बनाऊंगा।

## दो रोटियां सदक्क करने की बरकत :

मरवी है कि बनी इसराईल का एक आबिद कई साल अपनी झोपड़ी में **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की इबादत करता रहा। एक दिन उस ने झोंपड़ी से निकल कर सामने सहून के दरमियान जारी पानी को देखा तो उसे नफ़्स ने झोंपड़ी से उतरने पर उभारा। चुनान्चे, वोह उतरा और पानी पी कर वहीं बैठ गया। अचानक उस के पास से एक ज़ेवर से आरास्ता औरत गुज़री, जो एक बस्ती से दूसरी की तरफ़ जा रही थी। वोह आबिद उस के फ़ितने में मुब्तला हो कर ज़िना कर बैठा। फिर उस के क़रीब से एक साइल गुज़रा, आबिद को रोज़ाना ग़ैब से दो रोटियां मिलती थी, उस ने वोह रोटियां इस साइल को दे

दीं और खुद भूका रहा। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस ज़माने के नबी عَلَيْهِ السَّلَام की तरफ़ वही फ़रमाई :  
 “उस से कहो कि ज़िना के सबब तुम्हारे सब आ'माल बरबाद हो गए, फिर तेरी सड़के की दो रोटियों और खुद पर मिस्कीन को तरजीह देने ने तमाम आ'माल को ज़िन्दा कर दिया, पस येह तेरे सड़के का षवाब है, मैं ने इसे क़बूल कर के तुम्हें तुम्हारी साबिका हालत पर लौटा दिया है।

(الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان، كتاب البر والاحسان، باب ما جاء في الطاعات وثوابها، الحديث ٣٧٩، ج ١، ص ٢٩٨، بتغير)

وَصَلَّى اللّٰهُ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِهِ وَصَحْبِهِ أَجْمَعِينَ



### रहम दिल लोगों की बरकत औऱ संग दिल लोगों की नुहसत

(1).....अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अली बिन अबी तालिब कَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيم का फ़रमाने मरवी है कि शहनशाहे खुश ख़िसाल पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अलीशान है : “मेरी उम्मत के रहम दिल लोगों से भलाई त़लब करो, इन के क़रीब रहा करो और संग दिल लोगों से भलाई न मांगो क्यूंकि इन पर ला'नत उतरती है। ऐ अली! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने भलाई को पैदा फ़रमाया तो उस के अहल (या'नी अफ़राद) को भी पैदा फ़रमाया, फिर भलाई को उन का महबूब कर दिया और इस पर अमल करना इन्हें महबूब बना दिया नीज़ इन्हें इस की त़लब में यूं लगा दिया जैसे वोह पानी को क़हूत ज़दा ज़मीन की तरफ़ फेर देता है कि उस पानी के ज़रीए वहां वालों को जिला बख़्शे और बेशक जो लोग दुन्या में भलाई वाले होंगे वोही आख़िरत में भी भलाई वाले होंगे।”

(المستدرک، کتاب الرقاق، باب اشقى الاشقیاء من اجمع.....الخ، الحديث: ٧٩٧٨، ج ٥، ص ٤٥٨)

(2).....दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अलीशान है : “मेरी उम्मत के रहम दिल लोगों से अपनी मुरादें मांगो, उन के क़रीब रहा करो क्यूंकि मेरी रहमत उन्हीं में है और संग दिल लोगों से मुरादें न मांगो क्यूंकि वोह मेरी नाराज़ी के मुन्तज़िर हैं।” (کنز العمال، کتاب الزکاة، قسم الاقوال، الحديث: ١٦٨٠٢، ج ٦، ص ٢٢٠ “الفضل” بدله “الحوائج”)

बयान 23 :

## सदक़ु फ़िर् के फ़ज़ाइल

हम्दे बारी तझाला :

सब ख़ूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जो इताअत गुज़ारों को पूरा पूरा अज़्रो षवाब अता फ़रमाता है, और रात की तारीकियों को पैदा फ़रमाता है जिन्हें सुब्ह की रोशनी ख़त्म कर देती है, उस का इल्म चोरी छुपे की निगाहों और सीनों में पोशीदा बातों को घेरे हुए है। इन्सानों को वोह सिखाता है जो वोह नहीं जानते, उस बात से बुलन्द तर और पाक है कि नफ़्स के ख़यालात और ग़ौरो फ़िर् के अन्देशे उस का इदराक़ करें, सब को रिज़्क तक्सीम करता है यहां तक कि बिल में च्यूटी को, घोंसले में परन्दे के बच्चे को भी नहीं भूलता, वोह उस से बाला तर है कि गर्दिशे ज़माने की वजह से पैदा होने वाले हवादिसात उस तक पहुंच सके, और वोह उस चीज़ से पाक है कि इन्तिहाई पोशीदा और ज़ाहिर बातें उस पर मख़फ़ी रहें, उस के एहसानात सरो के ताज और सीनों के हार हैं। कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

(هُوَ الَّذِي يُسِرُّكُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ) (प ११, योन्स: २२) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान** : वोही है कि तुम्हें खुशकी और तरी में चलाता है।

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जंगलात में रैत के ज़रों और बे आब व गयाह विरान जंगलों में च्यूटियों की ता'दाद जानता है, वोह ईमान व कुफ़्र की तक्दीर को जैसे चाहता है जारी फ़रमाता है, अपने इरादे से ग़नी को फ़कीर और फ़कीर को ग़नी करता है, अपनी मशिय्यत से बोलने वाले को कुव्वते गोयाई से महरूम करता है सुनने की कुव्वत को ज़ाइल करता और अता करता है, वोह ऐसा देखने वाला है कि खुशकी में रैंगने वाला छोटा बड़ा कोई भी कीड़ा उस से पोशीदा नहीं, वोह ऐसा सुनने वाला है कि किसी मजबूर की दिल में मांगी हुई दुआ भी उस से पोशीदा नहीं, वोह क़ादिरे मुतलक़ है कि किसी मुआविन व मददगार की उसे हाजत नहीं जो उस की मदद करे, वोह जिसे चाहता है बन्दों की तक्दीर बनाता है, सहूलत व सुज़बत के ज़राएअ जैसे चाहता है लोगों में तक्सीम फ़रमाता है, अपनी सल्तनत के समन्दरों में भी रिज़्क पहुंचाता है और अगर न चाहे तो न पहुंचाए, उस ने हुसूले रिज़्क की तरफ़ मो'तदिल बयान और सहीह वज़ाहत के साथ हमारी रहनुमाई फ़रमाई, रोज़ो और सब्र के महीने के साथ सारी उम्मतों में हमें ख़ास फ़रमाया, इस महीने की बरकत से गुनहगारों के गुनाहों को इस तरह धो दिया जैसे बारिश के पानी से कपड़े धुल जाते हैं।

तमाम ख़ूबियों का मालिक वोही है जिस ने हमें येह मुबारक महीना पूरा करने की तौफ़ीक़ और ईदुल फ़िर् की ने'मत अता फ़रमाई, मैं उस की बे इन्तिहा हम्द करता हूं और उस का शुक्र बजा लाता हूं जिस की मदद पाने वाले बेहद व बे शुमार हैं, मैं उस पर ऐसा भरोसा करता हूं जैसा गुलाम अपने आका पर करता है, अपने ए'तिकाद में मुख़्लिस शख़्स की तरह गवाही देता हूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, वोह यक्ता है उस का कोई शरीक़ नहीं, और गवाही देता



हूं कि हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के खास बन्दे और रसूल हैं। जिन्होंने ने अपने मुक़द्दस हाथ की मुबारक उंगलियों से पानी के चश्मे जारी फ़रमा दिये, आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की आल, अवलाद, सहाबए किराम, अज़वाजे मुतहहरात عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان और इन की इत्तिबाअ करने वाले हर उम्मत पर उस वक़्त तक रहूमते कामिला नाज़िल होती रहे जब बाप बेटे से भाग रहा होगा, और आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ पर ख़ूब सलाम हो जो ज़माने के ख़त्म होने से ख़त्म न हो बल्कि हर नए ज़माने में आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ पर नया सलाम हो।

हज़रते सय्यिदुना अबू सईद खुदरी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि हम हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की हयाते ज़ाहिरी में एक साअ़ खाना या एक साअ़ जव या एक साअ़ खजूर सदक़ए फ़ित्र निकालते थे।” (جامع الترمذی، ابواب الزکاة، باب ماجاء فی صدقة الفطر، الحديث ٦٧٣، ص ١٧١٣)

हज़रते सय्यिदुना अम्र बिन शोऐब رَحِمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْه अपने बाप से और वोह उन के दादा से रिवायत करते हैं कि **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनील उयूब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने मक्के की शाहराहों पर एक ए’लान करने वाला भेजा (उस ने ए’लान किया) “सुन लो ! बेशक सदक़ए फ़ित्र दो मुद गन्दुम या एक साअ़ खाना हर मुसलमान मर्द व औरत, आज़ाद व गुलाम, छोटे बड़े पर वाजिब है।” (المرجع السابق، الحديث ٦٧٤)

हज़रते सय्यिदुना इब्ने उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से मरवी है कि हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अकबर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने हर मर्द, औरत, आज़ाद और गुलाम पर एक साअ़ खजूर या एक साअ़ जव सदक़ए फ़ित्र वाजिब फ़रमाया।

(صحيح البخارى، ابواب صدقة الفطر، باب صدقة الفطر على الحر والمملوك، الحديث ١٥١١، ص ١١٩)

### सदक़ए फ़ित्र नमाज़े ईद से पहले अदा करना :

हज़रते सय्यिदुना नाफ़िअ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ हज़रते सय्यिदुना इब्ने उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से रिवायत करते हैं कि “शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइषे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ हमें हुक्म फ़रमाते कि ईदुल फ़ित्र के दिन नमाज़े ईद से पहले सदक़ए फ़ित्र अदा करें।” और उ-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللَّهُ تَعَالَى फ़रमाते हैं कि सदक़ए फ़ित्र नमाज़े ईद से पहले देना मुस्तहब है। (جامع الترمذی، ابواب الزکاة، باب ماجاء فی تقديمها قبل الصلاة، الحديث ٦٧٧، ص ١٧١٣)

सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइषे नुज़ूले सकीना صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमान है : “फ़ुकरा को ऐसे दिनों में सुवाल करने से ग़नी कर दो।”

(سنن الدارقطنی، کتاب زکوة الفطر، الحديث ٢١١٤، ج ٢، ص ١٩٢ - البناية شرح الهداية، کتاب الزکاة، باب صدقة الفطر،

فصل فی مقدار الواجب ووقته، ج ٣، ص ٥٠٤)

## ईदुल फ़ित्र के मुस्तहब्बात :

ईदुल फ़ित्र के दिन मुस्तहब्ब है कि बन्दा गुस्ल करे, मिस्वाक करे, अच्छे कपड़े पहने और सदक़ा फ़ित्र अदा करे और फिर कुछ खा कर पैदल ईदगाह का रुख़ करे, सुवार हो कर न जाए, अलबत्ता ! कोई उज़्र हो तो सुवार हो कर जा सकता है, और ईदगाह की तरफ़ एक रास्ते से जाए और दूसरे से वापस आए, क्योंकि **अब्लूह** **عَزَّ وَجَلَّ** मलाइका को भेजता है, वोह रास्तों में बैठ जाते हैं और अपने पास से गुज़रने वाले हर शख्स का नाम लिखते हैं, इस लिये एक रास्ते से जाना और दूसरे से वापस आना मुस्तहब्ब है ।

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** से मरवी है कि हुजूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ईद के दिन एक रास्ते से जाते और दूसरे से वापस आते थे ।

(جامع الترمذی، ابواب العیدین، باب ماجاء فی خروج النبی صلی اللہ علیہ وسلم..... الخ، الحدیث ۵۴۱، ص ۱۶۹۸)

हज़रते सय्यिदुना बुरैदा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** अपने वालिद **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** से रिवायत करते हैं कि **अब्लूह** **عَزَّ وَجَلَّ** के प्यारे हबीब, हबीबे लबीब **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ईदुल फ़ित्र के दिन जब तक कुछ खा न लेते (ईदगाह की तरफ़) न निकलते, और ईदुल अज़्हा के दिन जब तक नमाज़ न पढ़ लेते कुछ न खाते । (المرجع السابق، الحدیث ۵۴۲)

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** से मरवी है कि हुजूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़लाक **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ईदुल फ़ित्र के दिन ईदगाह की तरफ़ निकलने से पहले चन्द खजूरें तनावुल फ़रमाते थे । (المرجع السابق، الحدیث ۵۴۳)

हज़रते सय्यिदुना उम्मे अतिय्या **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا** से मरवी है कि नबिय्ये मुक़र्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के हुक्म से इंदैन में कुंवारियां, बालिगात, पर्दे वालियां और हैज़ वालियां (नमाज़े ईद के लिये) निकलती थीं, और हैज़ वालियां ईदगाह से अलग होतीं और मुसलमानों की दुआ में हाज़िर होतीं । उन में से किसी एक ने अर्ज़ की : “या **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** अगर किसी के पास चादर न हो तो ?” आप **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इरशाद फ़रमाया : “उस की बहन अपनी चादर उस को उधार दे दे ।” (المرجع السابق، الحدیث ۵۳۹)

उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीका **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا** से मरवी है, फ़रमाती हैं कि अगर **अब्लूह** **عَزَّ وَجَلَّ** के प्यारे रसूल **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ** हमारे ज़माने की औरतों की नई नई बातें मुलाहज़ा फ़रमाते तो इन को मस्जिद में जाने से मन्अ फ़रमा देते, जैसे बनी इसराईल की औरतों को मन्अ किया गया था । “हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान घौरी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي** फ़रमाते हैं : “मैं आज के दौर में इंदैन में औरतों के निकलने को नापसन्द जानता हूं ।”

(جامع الترمذی، ابواب العیدین، باب ماجاء فی خروج النبی صلی اللہ علیہ وسلم..... الخ، الحدیث ۵۴۰، ص ۱۶۹۸)

अगर कोई औरत (नमाज़े ईद के लिये) निकलने पर ब-ज़िद हो तो उस का शोहर उसे फटे पुराने कपड़ों में निकलने की इजाज़त दे और वोह ज़ीनत भी न करे। अगर वोह इस तरह निकलने से इन्कार करे तो शोहर उसे निकलने से मन्अ कर दे।

हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि हुजूर सय्यिदुल मुबल्लिगीन, जनाबे रहमतुल्लिल आलमीन صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने फ़रहत निशान है : “जिस ने ईदैन (या’नी ईदुल फ़ित्र व ईदुल अज़्हा) में शब बेदारी की तो उस का दिल उस दिन न मरेगा जिस दिन लोगों के दिल मर जाएंगे।” (سنن ابن ماجه، ابواب الصيام، باب فيمن قام ليلتي العيدين، الحديث ١٧٨٢، ص ٣٥٨٣)

हज़रते सय्यिदुना इब्ने उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से मरवी है, शहनशाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिषाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने हकीक़त निशान है : “सब से ज़ियादा अज़मत वाली रातें ईदुल अज़्हा और ईदुल फ़ित्र की रातें हैं।”

### रहमत वाली चार रातें :

हज़रते सय्यिदुना हसन رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार, बिइज़ने परवर दगार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने जन्नत निशान है : “चार रातों में **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ अपने बन्दों पर बहुत ज़ियादा रहमत नाज़िल फ़रमाता है : रजबुल मुरज्जब की पहली रात, शा’बान की पन्दरहवीं रात, ईदुल फ़ित्र की रात और ईदुल अज़्हा की रात।” (شعب الايمان للبيهقي، باب الصيام في ليلة العيد ويومهما، الحديث ٣٧١٣، ج ٣، ص ٣٤٢، بتغير)

### ईद को ईद कहने की वजह :

ईद को इस लिये ईद कहते हैं क्यूंकि इस में खुशी व सुरूर लौट आते हैं। बा’ज के नज़दीक इसे ईद कहने की वजह येह है कि येह शरफ़ व अज़मत वाला दिन है। लिहाज़ा एक अक्ल मन्द इन्सान के लिये ज़रूरी है कि वोह **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ की ता’ज़ीम करते हुए, क़िब्ला रू हो कर क़षरत से उस का ज़िक्र करे।

### ईद में रोज़े महशर की याद है :

ईद का दिन यौमे क़ियामत के मुशाबेह है जिस दिन गरज दार कड़क और सूर फूंकने की आवाज़ सुनाई देगी, और तबलों का बजना गरज दार कड़क की याद दिलाता है और ब्युगल का बजना सूर फूंकने की याद दिलाता है, ईदगाह में लोगों का इजतिमाअ मैदाने महशर में लोगों के इजतिमाअ की याद है कि वोह मुख़्तलिफ़ रंग व नस्ल के होंगे और इन के अहवाल भी मुख़्तलिफ़ होंगे। कुछ के लिबास सफ़ेद और कुछ के सियाह, कुछ पैदल और कुछ सुवार, कुछ खुश और कुछ



ग़मगीन, कुछ जन्नत की ने'मतों की तरफ़ और कुछ जहन्नम के अज़ाब की तरफ़ पलटेंगे। ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मख़ज़ने जूदो सखावत, पैकरे अज़मतो शराफ़त, मोहसिने इन्सानिय्यत, महबूबे रब्बुल इज़ज़त صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : “लोगों को अपनी क़ब्रों से तीन हिस्सों में उठाया जाएगा, एक तिहाई सुवारियों पर और एक तिहाई पैदल होंगे और एक तिहाई चेहरों के बल घसीटे जाएंगे।”  
(फ़रदुसुल अख़बार लिलिमी, باب الباء، الحديث ۹۸، ج ۲، ص ۵۰۱، بتغییر)

जिस तरह लोग ईदगाह में इमाम का इन्तिज़ार करते हैं, इसी तरह बरोज़े क़ियामत महशर के खुले मैदान में ठहर कर उस जज़ा व सज़ा का इन्तिज़ार होगा जिस का **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ ने वा'दा फ़रमा रखा है। और खुतबे में इशारा है कि जब इमाम खुतबा देता है तो लोग ख़ामोश हो जाते हैं इसी तरह **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ लोगों से हिसाब किताब लेगा और सज़ा सुनाएगा जब कि हम ख़ामोश होंगे। और ईदगाह में लोगों के मुख़लिफ़ दर्जे, क़ियामत में लोगों के मुख़लिफ़ दर्जों के मुशाबे हैं। कुछ साए में बैठते हैं और कुछ धूप में इसी तरह बरोज़े क़ियामत कुछ पसीने में शराबोर होंगे और कुछ अर्श के साए में मज़े लूट रहे होंगे। इसी तरह लोगों का ईदगाह से लौटना भी क़ियामत की याद दिलाता है कि बा'ज की इबादत क़बूल हो जाती है जब कि बा'ज की मर्दूद।

हज़रते सय्यिदुना वहब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ के बारे में मरवी है कि आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ ईद के दिन निकले तो अपने सर पर मिट्टी और राख डालने लगे। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ से अर्ज़ की गई : “आज तो खुशी और ज़ीनत का दिन है।” तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ ने जवाबन इरशाद फ़रमाया : “येह उस शख़्स के लिये सुरूर व ज़ीनत का दिन है जिस के रोज़े मक़बूल हो गए।”

### आंखों का कुपले मदीना :<sup>(1)</sup>

हज़रते सय्यिदुना हस्सान बिन अबी सनान رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ ईद के दिन घर से बाहर तशरीफ़ ले गए जब आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ वापस आए तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ की जौजा कहने लगी : “आज आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ ने कितनी हसीन औरतों को देखा ?” आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعालٰی عَلَيْهِ ने इरशाद फ़रमाया : “**اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं यहां से जाने के बा'द वापस आने तक अपने पाउं के अंगूठे पर ही देखता रहा।”

सलफ़े सालिहीन नज़र के फ़ितने से बचने के लिये और बुरे ख़ातिमे के ख़ौफ़ से अपनी निगाहें बहुत ज़ियादा झुका कर रखते। बा'ज उ-लमाए किराम رَحْمَتُهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی फ़रमाते हैं : “नज़र के फ़ितनों से बचो ! क्यूंकि येह देखी जाने वाली सूरत को दिल में नक़्श कर देती है। और बेशक दुन्या के उयूब ज़ाहिर हैं, कितने ही आज़माइश के दरवाज़े खोल दिये गए और आंख के धोके जैसा कोई धोका नहीं।”

①.....“कुपले मदीना” दा'वते इस्लामी के मदीनी माहोल में बोली जाने वाली एक इस्तिलाह है। किसी भी उज़्व को गुनाह और फुजुलिय्यात से बचाने को “कुपले मदीना” लगाना कहते हैं।

हज़रते सय्यिदुना रबीअ बिन खैषम رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ नज़र की हिफ़ाज़त के लिये अपनी आंखों को बहुत ज़ियादा झुकाए रखते यहां तक कि लोग आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ को नाबीना गुमान करते। हज़रते सय्यिदुना इब्ने मसऊद رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के घर बीस साल तक आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ का जाना रहा। जब भी आप रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ दरवाज़ा खट-खटाते तो लौंडी बाहर निकल कर आप रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ को इस हाल में देखती कि आप रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ अपनी नज़र को झुकाए हुए होते तो वोह अपने आका से कहती, आप का नाबीना दोस्त आया है। हज़रते सय्यिदुना इब्ने मसऊद रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ लौंडी की इस बात से मुस्कुरा दिया करते। और जब हज़रते सय्यिदुना रबीअ बिन खैषम رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ को देखते तो फ़रमाते : “وَيَسِّرَ الْمُحْسِنِينَ ۝ (پ ۱۷، الحج: ۳۴)“

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ महबूब ! खुशी सुना दो उन तवाज़ोअ वालों को ।” **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर हज़रते सय्यिदुना मुहम्मदे मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आप को देखते तो आप से खुश होते और आप को बहुत पसन्द फ़रमाते ।”

(احیاء علوم الدین، کتاب اسرار الصلاة، الباب الثالث، حکایات و اخبار فی صلاة العاشعین، ج ۱، ص ۲۳۲)

बा'ज सालिहीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ اَلْمُحْسِنِينَ फ़रमाते हैं : “ऐ लोगो ! कशती ग़र्क हो रही है फिर भी हम सो रहे हैं न जाने हमारे साथ कैसा मुआमला किया जाएगा ? जब कि हमारे अप्पआल क़बीह और बातें बुरी हैं, हम सख़्त वबाल और अज़ाब में घिरे हुए हैं और हर वक़्त हराम को देखते हैं।

हज़रते सय्यिदुना शैख़ जमालुद्दीन अबुल फ़रज़ बिन जौज़ी نَکَل عَنْهُ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि “नज़र की सज़ा के बारे में हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से मरवी है कि एक शख्स **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़ज़हुन अनिल उयूब صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में हाज़िर हुवा, उस से खून टपक रहा था। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़सार फ़रमाया : “तुझे क्या हुवा ?” उस ने अर्ज़ की : “मेरे क़रीब से एक औरत गुज़री, मैं ने उस की तरफ़ देखा, मेरी नज़र मुसलसल उस का पीछा कर रही थी कि मैं एक दीवार से टकरा गया और मेरे साथ वोह हुवा जो आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुलाहज़ा फ़रमा रहे हैं।” रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “बेशक **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ जब किसी बन्दे से भलाई का इरादा फ़रमाता है तो दुन्या में ही उसे सज़ा दे देता है ।”

(جامع الترمذی، ابواب الزهد، باب ماجاء فی الصبر علی البلاء، الحديث ۲۳۹۶، ص ۱۸۹۲)

माहे रमज़ान के आगाज़ में बहुत से लोगों ने नमाज़े तरावीह पढ़नी शुरूअ कर दी और तलबे षवाब के लिय मसाजिद में चराग़ जलाए, वसीअ व अरीज़ मक़ामात को इबादत से भर दिया और अपनी नेकियों के ज़रीए हर बुराई का ख़ातिमा कर दिया। लेकिन इस मुक़द्दस महीने के इख़िताम पर जब बुराई का हम्ला करने वाले ने उन पर हम्ला किया तो वोह मग़लूब हो गए। शिकार करने वाले ने इन को बांध दिया तो वोह कैदी हो गए। हलाकत ने अपने समन्दर में इन को ग़ौता ज़न किया तो वोह डूब गए। जब वोह इन्तिक़ाल कर गए तो उन्हें माल ने कुछ नफ़ा दिया न उम्मीदों ने।

**अल्लाह** عز وجل की कसम ! वोह रफ़ता रफ़ता हम से कूच कर गए, इन की दुनिया में बनाई हुई सब इमारतें टूट गई, इन पर मौत की चक्की घूमी और इन के चेहरों को मिट्टी तले दबा कर ख़त्म कर दिया गया, और आफ़त ने बिगैर किसी बदले के इन का सब कुछ ले लिया और ज़िल्लत व रुस्वाई इन का मुक़द्दर बन गई, मौत ने इन की उम्मीदों को खाक में मिला दिया। **अल्लाह** عز وجل की कसम ! इन के रोज़ों और सदक़ा व ख़ैरात का सिलसिला ख़त्म हो गया और आन्धियों ने इन की क़ब्रों को मिसमार कर के बराबर कर दिया और क़ब्रों में इन के जिस्म बिखर गए। अ़न क़रीब तेरा और तेरे अहलो इयाल का भी येही हाल होगा, पस ऐ इब्रत न पकड़ने वाले ! जाग जा और अपनी हिफ़ाज़त की कोशिश कर। कितनी बार मौत की हौलनाकी को तू सुन और देख चुका है। ऐ लम्बी उम्मीद वाले ! ऐ नर्मी से महरूम और फुज़ूल कामों में मशगूल शख्स ! ऐ मौत के सबब फ़ना होने वाले और ऐ अ़किबत को बरबाद कर देने वाले कामों में मशगूल शख्स ! अब भी तौबा की तय्यारी न करेगा तो फिर कब करेगा ? बेशक मौत का क़ासिद “बुढ़ापा” आ चुका है। क्या तू ने अकषर उम्र टाल मटोल में नहीं गुज़ारी ? ऐ कषरत से गुनाहों में मुस्तगरक़ रहने वाले ! क्या तू तक्दीर के हमलों का शिकार नहीं होगा ? कल बरोज़े क़ियामत सब का मुआमला इकठ्ठा हो जाएगा और अ़न क़रीब फैसला कर दिया जाएगा। ऐ कम ज़ादेराह वाले ! मौत का हुदी ख़्वां ए’लान कर चुका है, पस तू ज़ाएअ और बेकार होने के लिये तय्यार हो जा।

हज़रते सय्यिदुना अबू या’कूब नहर जोरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि “मैं ने दौराने त्वाफ़ एक शख्स को देखा, वोह येही दुआ किये जा रहा था : “मैं तुझ से तेरी पनाह मांगता हूं।” मैं ने उस से पुछा : “येह कौन सी दुआ है ?” वोह बोला : “मैं पचास साल से मक्का शरीफ़ में रह रहा हूं। एकदिन मैं ने एक ख़ूब सूरत शख्स को देखा तो वोह मुझे पसन्द आ गया। अचानक मुझे एक थप्पड़ पड़ा, मेरी आंखों से आंसू बहने लगे, मैं ने आह भरी तो एक दूसरा थप्पड़ आ लगा, फिर किसी ने कहा : “अगर तू ज़ियादा करता तो हम भी ज़ियादा करते।”

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि “मैं अपने उस्ताज़ हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र दक्काफ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की मइय्यत में था कि एक अम्रद गुजरा, मैं ने उस की तरफ़ देखा तो मेरे उस्ताज़ मोहतरम ने मुझे ऐसा करते हुए देख लिया। तो इन्हों ने फ़रमाया : “ऐ मेरे बेटे ! तुझे इस की सज़ा ज़रूर मिलेगी, अगर्चे कुछ अर्से बा’द ही हो।” चुनान्चे, मैं बीस साल तक इस सज़ा का इन्तिज़ार करता रहा। एक रात इसी परेशानी में सोया। जब सुब्ह हुई तो मुझे सारा कुरआन भुला दिया गया था, और कोई कहने वाला कह रहा था : “येह उस एक नज़र की सज़ा है।” (غذاء الالباب في شرح منظومة الآداب، مطلب في فوائد غرض البصر، المقام الثاني، ج ١، ص ١٣٢)

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र कत्तानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि “मैं ने एक दोस्त को ख़्वाब में देख कर पूछा : “يَا مَا فَعَلَ اللهُ بِكَ؟” **अल्लाह** عز وجل ने आप के साथ क्या मुआमला फ़रमाया ?” तो उस ने जवाब दिया : “मेरे गुनाह मेरे सामने ला कर पूछा गया : “तू ने येह गुनाह



किया था ?” मैं ने अर्ज की : “जी हां ।” फिर पूछा गया : “क्या तू ने फुलां फुलां गुनाह भी किया था ?” मैं ने फिर इक़रार कर लिया । लेकिन जब तीसरी बार पूछा गया कि क्या तू ने फुलां गुनाह भी किया था ? तो मुझे उस का इक़रार करने से बहुत शर्मसारी हुई ।” आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं, मैं ने अपने दोस्त से पूछा : “वोह गुनाह क्या था ?” बोला : “मेरे क़रीब से एक ख़ूब सूरत लड़का गुज़रा तो मैं ने उस की तरफ़ देख लिया, जिस के सबब मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सामने सत्तर साल खड़ा रखा गया और इस गुनाह से शर्मिन्दगी की वजह से पसीना बहता रहा, फिर उस ने अपने फज़ल से मुझे मुआफ़ फ़रमा दिया ।”

हज़रते सय्यिदुना अबू अब्दुल्लाह ज़र्राद عليه رَحْمَةُ اللَّهِ الجَوَاد को ख़्वाब में देख कर पूछा गया : “مَا فَعَلَ اللَّهُ بِكَ؟” या’नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआमला फ़रमाया ?” तो उन्होंने ने फ़रमाया : “मैं ने तमाम गुनाहों का इक़रार किया और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें बख़्श दिया सिवाए एक गुनाह के कि मुझे उस का इक़रार करने से हया आई और मुझे पसीने में खड़ा कर दिया गया यहां तक कि मेरे चेहरे का गोश्त झड़ गया ।” उन से अर्ज की गई : “वोह गुनाह क्या था ?” तो उन्होंने ने फ़रमाया : “मैं ने एक ख़ूब सूरत शख्स को देखा था ।”

ऐ इब्ने आदम ! तेरी आंखें ह़राम में आज़ाद हैं और तेरी ज़बान गुनाहों में तवील हो रही है, तेरा जिस्म दुन्या की दौलत कमाने में थकावट क़बूल कर रहा है । बहुत सी बद निगाहियां ऐसी हैं कि जिन की वजह से क़दम फिसल जाते हैं । ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दो ! जान लो ! ईद का दिन सआदत का दिन है । इस में कुछ लोग नेक बख़्त होते हैं और कुछ बद बख़्त । उस बन्दे को मुबारक बाद हो जिस के आ’माल उस दिन क़बूल कर लिये गए, और उस के लिये हलाकत है जिस के आ’माल रद्द कर दिये गए । येह तो ऐसा दिन है जिस में मक़बूल को मुबारक बाद दी जाती है और मर्दूद को तसल्ली । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम पर रहूम फ़रमाए ! बुरे आ’माल से इजतिनाब करो और रिज़ाए इलाही **عَزَّوَجَلَّ** वाले कामों की कोशिश करो, अंन क़रीब वोह तुम्हें बुरे आ’माल से नजात अता फ़रमा देगा ।

### इन्आमो इक्शाम की रात :

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़रहीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने जन्नत निशान है : “ईदुल फ़ित्र की रात का नाम “लैलतुल जाइज़ह” (या’नी इन्आम व बख़्शिश की रात) रखा गया है । जब सुब्ह होती है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मलाइका को हर शहर में भेजता है, वोह ज़मीन पर उतरते हैं और गली कूचों पर खड़े हो कर ऐसी आवाज़ से ए’लान करते हैं जो जिनो इन्स के इलावा तमाम मख़्लूक सुनती है, वोह कहते हैं : “ऐ उम्माते मुहम्मदिय्या عَلَى صَاحِبِهَا الصَّلَاةُ وَالسَّلَام **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में हाज़िर हो जाओ जो कबीरा गुनाहों को भी बख़्श देता है ।” जब लोग ईदगाह की तरफ़ निकलते हैं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : “ऐ मेरे फ़िरिशतो ! मज़दूर जब अपना काम पूरा कर ले तो उस की जज़ा क्या है ?” मलाइका अर्ज करते हैं : “ऐ हमारे मा’बूद और ऐ हमारे रब्ब **عَزَّوَجَلَّ** उस

की जज़ा येह है कि उस को पूरा पूरा अज़्र दिया जाए ।” चुनान्वे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : “ऐ मेरे मलाइका ! गवाह हो जाओ कि मैं ने उन्हें माहे रमज़ान के रोज़ों और नमाज़ों का षवाब येह दिया कि मैं उन से राज़ी हो गया और उन्हें बख़्श दिया ।” फिर **अल्लाह** तआला फ़रमाता है : “मुझ से सुवाल करो, मेरी इज़्ज़तो जलाल की क़सम ! जब तक तुम मुझ से डरते रहोगे मैं ज़रूर तुम्हारे गुनाहों पर पर्दा डाले रखूंगा । मेरी इज़्ज़तो जलाल की क़सम ! आज के इस इजतिमाअ में मुझ से दुन्या व आख़िरत की जो भी चीज़ मांगोंगे मैं तुम्हें अता कर दूंगा । मेरी इज़्ज़तो जलाल की क़सम ! मैं ज़रूर तुम्हारे उयूब की पर्दा पोशी करूंगा, मैं तुम्हें मुजरिमों के सामने ज़लीलो रुस्वा न करूंगा । पस अब मग़फ़िरत याफ़ता लौट जाओ, तुम ने मुझे राज़ी कर दिया और मैं तुम से राज़ी हो गया ।” फ़िरिश्ते खुश होते हैं, और उस इन्आम की मुबारक बाद देते हैं जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस उम्मत को रोज़ों से फ़ारिग़ होने पर अता फ़रमाता है ।”

(شعب الايمان للبيهقي، باب في الصيام، فصل في ليلة القدر، الحديث ٣٦٩٥، ج ٣، ص ٣٦٦، بتقديم وتأخر)

**ऐ मेरे इस्लामी भाइयो !** कितना अच्छा हाल है उस शख्स का जिसे क़बूलियत की पोशाक औढ़ा दी गई, और उस ने अपना मक़सद पा लिया । और कितना बद बख़्त है वोह शख्स जिस के गुज़स्ता रोज़े क़बूल न किये गए उस की गुज़री हुई थकावट में उसे सिवाए दर्द की शिद्दत के कोई हिस्सा न मिला । तअज़्जुब है उस पर जिस को धुतकार दिया गया फिर भी वोह कैसे ईद पर खुशियां मनाता है ?

हज़रते सय्यिदुना वहब बिन मुनब्बेह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं कि “एक दफ़आ तीन नेक आलिम ईद के दिन निकले, उन में से एक ने यू दुआ की : “या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तू ने अपनी नाज़िल कर्दा किताब में हमें हुक्म दिया कि हम इस दिन गुलाम आज़ाद करें, हम तेरे गुलाम हैं लिहाज़ा तू हमारी गर्दनों को जहन्नम से आज़ाद फ़रमा दे ।” फिर दूसरे ने यू दुआ की : “या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तू ने कुरआने पाक में हमें हुक्म दिया कि हम मसाकीन को ख़ाली हाथ न लौटाएं, हम तेरे मिस्कीन बन्दे हैं लिहाज़ा तू हमें ख़ाली हाथ न लौटा ।” इस के बा’द तीसरे ने अर्ज की : “या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तू ने अपनी नाज़िल कर्दा मुक़द्दस किताब में हुक्म दिया है कि हम ज़ालिमों से दरगुज़र करें, हम तेरे बन्दे हैं, हम ने अपनी जानों पर जुल्म किया है लिहाज़ा तू हमारी मग़फ़िरत फ़रमा और हम पर रहम फ़रमा, बेशक तू सब से बढ़ कर रहम फ़रमाने वाला है ।

وَصَلَّى اللهُ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِهِ وَصَحْبِهِ أَجْمَعِينَ



बयान 24 :

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اِلٰهٍ وَسَلَّم

हम्मे बारी तझाला :

सब खूबियां **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के लिये हैं जिस ने अपने बरगुज़ीदा बन्दों को अपनी महबूत के लिये इख़्तियार फ़रमाया और उन को अपना महबूब बनाया जो उस की बारगाहे कुर्ब में हाज़िर होने की सलाहियत रखते थे, उन्हें ख़ालिस शराबे तहूर पिलाई, और फिर अपनी मख़्लूक में से मुन्तख़ब हस्तियों में से बा'ज को अम्बिया, बा'ज को अस्फ़िया, बा'ज को औलिया और बा'ज को खुलफ़ा का मक़ाम अता फ़रमाया। फिर इन सब में अपनी बारगाहे नाज़ के लिये जिस हस्ती का इन्तिखाब फ़रमाया वोह हमारे आका व मौला, हबीबे खुदा, हज़रते सय्यिदुना मुहम्मदे मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اِلٰهٍ وَسَلَّم हैं। आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اِلٰहٍ وَسَلَّم को पाक पुश्तों में रखने से पहले ही सारी मख़्लूक पर मुमताज़ फ़रमा कर आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اِلٰहٍ وَسَلَّم पर अपने इन्आमात की बरसात कर दी, और अपने करम से मक़ामे फ़ख़्र अता फ़रमाया और अपनी ताईद व नुसरत फ़रमाई। हज़रते सय्यिदुना आदम सफ़ियुल्लाह وَالسَّلَام ने आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اِلٰहٍ وَسَلَّم के वसीले से दुआ की तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने आप عَلَيْهِ السَّلَام की दुआ कबूल फ़रमा ली।

हज़रते सय्यिदुना नूह नजियुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام ने आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اِلٰहٍ وَسَلَّم के वसीले से दुआ मांगी तो समन्दर के तूफ़ान से नजात पाई, जब की आप عَلَيْهِ السَّلَام की बाकी कौम गर्क हो गई। हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام ने आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اِلٰहٍ وَسَلَّم को आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اِلٰहٍ وَسَلَّم की बाकी कौम गर्क हो गई। हज़रते सय्यिदुना इस्माईल ज़बीहुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام के फ़िदये में जानवर की कुरबानी दी गई और आप عَلَيْهِ السَّلَام को ज़बह होने से बचा लिया गया। हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام ने आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اِلٰहٍ وَسَلَّم के वसीले से **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ का लुत्फ़े करम तलब किया तो उन पर भी **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ ने मेहरबानी फ़रमाई। जब हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام की बिशारत देते हुए तशरीफ़ लाए और आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اِلٰहٍ وَسَلَّم की बरकत तलब की तो **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ ने इन्हें अपने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اِلٰहٍ وَسَلَّم का उम्मीती होने का शरफ़ अता फ़रमा दिया।

आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اِلٰहٍ وَسَلَّم तमाम काइनात के सरदार और ज़िन्नो इन्स के इमाम हैं, जिन्हें (रात के थोड़े हिस्से में) मस्जिदे ह़राम से मस्जिदे अक्सा तक, फिर वहां से "सिद्रतुल मुन्ताहा" तक और वहां से क़ाबा कौसैन तक सैर कराई गई। आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اِلٰहٍ وَسَلَّم की सुवारी बुराक़ थी, हज़रते सय्यिदुना जिब्रईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام लगाम पकड़े हुए थे और तमाम नूरी मख़्लूक आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اِلٰहٍ وَسَلَّم की राह देख रही थी। जब आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اِلٰहٍ وَسَلَّم की सुवारी मस्जिदे अक्सा पहुंची तो अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام को सफ़ों में खड़े पाया।



**पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इलिमिया (दा' वते इस्लामी)**

येह भी देखा कि हर रोज़ सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते इस में दाख़िल होते हैं (जो एक बार दाख़िल हो जाए) दोबारा उस दिन तक उस की बारी नहीं आएगी : “يَوْمَ يَعْصِي الظَّالِمُ عَلَى يَدَيْهِ (پ ۱۹، الفرقان: ۲۷)”

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** जिस दिन ज़ालिम अपना हाथ चबा चबा लेगा ।”

हज़रते सय्यिदुना जिब्राईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के साथ “सिद्रतुल मुन्ताहा” पर पहुंचे तो पीछे हट गए। हुस्ने अख़्लाक के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “ऐ जिब्रील ! क्या यहां पर दोस्त दोस्त को छोड़ देगा ?” जिब्राईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ने अर्ज की : “ऐ तमाम रसूलों के सरदार और रब्बुल आलमीन के हबीब (صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) आप तो पोशीदा राजों और लिखे हुए इल्म को जानते हैं कि इस मक़ाम पर हुदूद ख़त्म हो जाती और उलूम मिट जाते हैं। मेरा येही मक़ाम है और हम में से हर एक का मख़सूस मक़ाम है। लिहाज़ा आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ आगे तशरीफ़ ले चलिये और अपने इज़्ज़त व वक़ार के अन्वार में मज़ीद इज़ाफ़ा फ़रमाइये ।”

चुनान्चे, नबिय्ये मुख्तार, रसूलों के सालार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ अन्वार के हिजाबात से तजावुज़ करते गए हता कि वहां पहुंच गए जहां कोई मक़ाम नहीं, जुदाई ख़त्म हो गई और आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ हुस्ने अदब के रास्ते पर चलते हुए, उस ज़ाते हक़ के जमाल का मुशाहदा करने लगे जिस की पहचान, वहदानिय्यत और वस्फ़, यक्ताई है। आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अपने रब्ब عَزَّ وَجَلَّ की बारगाह में हाज़िर हो कर अन्वार व तजल्लियात का हुल्ला सजा लिया पस विसाल की रस्सी मिल गई और दूरी ख़त्म हो गई। **अल्लाह** ने गुफ़्तगू की इब्तिदा सलामती भेजने से की और लुत्फ़ फ़रमाते हुए इन्आमो इकराम अता फ़रमाए।

**अल्लाह** अपने महबूब से इरशाद फ़रमाता है :

﴿2﴾ يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا وَمُبَشِّرًا  
وَنَذِيرًا ۝ وَدَاعِيًا إِلَى اللَّهِ بِأَذْنِهِ وَسِرَاجًا مُنِيرًا ۝  
وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ بِأَنَّهُمْ مِنَ اللَّهِ فَضْلًا كَبِيرًا ۝

(پ ۲۲، الاحزاب: ۴۵ تا ۴۷)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ ग़ैब की ख़बरें बताने वाले (नबी) बेशक हम ने तुम्हें भेजा हाज़िर नाज़िर और खुश ख़बरी देता और डर सुनाता। और **अल्लाह** की तरफ़ उस के हुक्म से बुलाता और चमका देने वाला आफ़ताब और ईमान वालों को खुश ख़बरी दो कि उन के लिये **अल्लाह** का बड़ा फ़ज़ल है।

या'नी आप (صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) की नबुव्वत का चराग़ क़ियामत तक आने वाले लोगों पर इसी तरह रोशन रहेगा। न उस की रोशनी कम होगी और न ही वोह बुझेगा, और येह कि आप (صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) शाहिद या'नी गवाही देने वाले हैं और मैं वोह हूं जिस की आप (صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ) गवाही देंगे।” क्यूंकि आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ सब से आ'ला ज़ात का मुशाहदा करने में कामयाब हो गए हैं। नीज़ शाहिद को अपनी शहादत में किसी किस्म का तरहुद व तज़बज़ुब नहीं होना चाहिये। लिहाज़ा मे'राज की रात जो कुछ आप (صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ) ने देखा उस की गवाही दें ताकि लोग मेरी वहदानिय्यत का इरफ़न हासिल करें और मेरी बन्दगी का ए'तिराफ़ करें। येही वजह है कि मैं ने आप (صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ) से कलाम किया और आप (صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ)

को फ़ज़ीलत अता फ़रमाई कि मैं ने आप (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को आप (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के इश्तियाक़ की वजह से ज़माल का मुशाहदा करवाया और आप (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को अपने ख़िताब की लज़ज़त से बहरा मन्द किया। अब यह ख़िताब आप (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की कुव्वते समाअत को दूसरे तमाम ख़िताबात से महफूज़ कर देगा। मैं ने आप (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को अपने कुर्ब की शराबे तहूर का ज़ाम पिला दिया है। लिहाज़ा अब आप (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم) वापस जा कर उन लोगों को बता दें जो मुझ से गाफ़िल और मेरे विसाल से दूर हैं।

इमाम अबू जा'फ़र मुहम्मद बिन जरीर त़बरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوٰی तफ़्सीरे त़बरी में एक रिवायत नक़ल करते हैं कि “जब हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्र मुबारक इक्यावन (51) बरस नव माह हुई तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم को चाहे ज़मज़म और मक़ामे इब्राहीम के माबैन मक़ाम से ले कर बैतुल मुक़द्दस तक रात के वक़्त सैर कराई गई। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم का सीनए मुबारका चाक किया गया और क़ल्बे अतहर निकाल कर बीमारियों से शिफ़ा देने वाले आबे ज़मज़म से धोया गया, और ईमान व हिक्मत से भरने के बा'द वापस अपनी जगह रख दिया गया, इस के बा'द आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم को सब से ज़ियादा इज़ज़त वाले मक़ाम की सैर कराई गई।

रात के वक़्त सैर कराने में जो राज़ है वोह अक्लों से मख़्फ़ी और मख़्लूके खुदा की समझ से बाला तर है और इस की वजह यह है कि जब आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का यह मुबारक फ़रमान नाज़िल हुवा :

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا

0 (प. २२, अ. ५०)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ग़ैब की ख़बरें बताने वाले (नबी) बेशक हम ने तुम्हें भेजा हाज़िर नाज़िर और खुश ख़बरी देता और डर सुनाता।

तो शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइषे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم ने अर्ज़ की : “या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तू ने मेरे लिये तो यह क़ानून बनाया है कि गवाह बिग़ैर देखे गवाही नहीं दे सकता। तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم को जानिब वहूय फ़रमाई कि हम आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم को रात के वक़्त अपनी बारगाह की सैर कराएंगे, ताकि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم मलकूते आ'ला का मुशाहदा कर लें और लोगों को मुशाहदा की हुई चीज़ों की ख़बर दें जिन्हें आंखें जन्नत या दोज़ख़ में देखेंगी।”

मन्कूल है कि जब आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم आस्मान की जानिब बुलन्द हुए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपनी ज़ात का मुशाहदा कराया और इश्शाद फ़रमाया : “ऐ मेरे नबी ! तुम ने मेरी ज़ात का मुशाहदा कर लिया, लिहाज़ा अब मेरी खुदाई के गवाह बन जाओ।” आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم ने अर्ज़ की : “ऐ मेरे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं कैसे तेरी गवाही दूँ?” तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इश्शाद फ़रमाया : “तुम (मेरी तरफ़ से) यूँ कहो : “जो मेरी बारगाह में हाज़िर हो और इस बात की गवाही देता हो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़ास रसूल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हैं तो मैं उस के ज़ाहिरी व बातिनी तमाम गुनाह मुआफ़ कर दूंगा।”



एक कौल येह है कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने आप صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से तमाम हिजाबात उठा दिये, ज़मीन को लपेट दिया, और मस्जिदे अक्सा को आप صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم के करीब कर दिया। आप صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم को अपनी बारगाहे मुक़द्दसा में हाज़िरी का शरफ़ बख़्शा। फिर इरशाद फ़रमाया : “ऐ मुहम्मद (صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) मेरा दीदार करो और लोगों को मेरे मुतअल्लिक़ ख़बर दो।” इस के बा’द जब भी लोग आप صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم से जो भी बात पूछते तो आप **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की तरफ़ मुतवज्जेह हो जाते और आंखों से देख कर और मुशाहदए हक़ कर के जवाब देते, यकीनन **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ हर चाहे पर क़ादिर है। लोगों की ज़बानें आप صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم की बात सुन कर गुंग हो गई।

फिर आप صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم ने इन्हें बैतुल मुक़द्दस से आस्मानों तक बुलन्द होने का वाकिआ सुनाया। पस जब आप صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم का रात की आने वाहिद में मक्कए मुकर्रमा से बैतुल मुक़द्दस तक सफ़र करना षाबित हो गया हालांकि दोनों मक़ामात के दरमियान तेज़ रफ़्तार मुसाफ़िर की एक माह की मसाफ़त है तो वोह आप صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم के आस्मानी सफ़र को मानने पर भी मजबूर हो गए। क्यूँकि वोह ज़ात जो सख़्त ज़मीन को समेटने पर क़ादिर है, वोह हल्की फ़ज़ा को लपेटने पर क्यूँकर क़ादिर न होगी ?

सरकारे मदीना, करारे क़ल्बो सीना, बाइषे नुजूले सकीना **अल्लाह** صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में अर्ज की गई : “या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم हम ने आप صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم से सुना है कि हज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَى نَبِیْنَا وَعَلِیْہِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पानी पर चला करते थे।” तो आप صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “हां वाक़ेई, ऐसा ही है, और अगर वोह हवा पर चलना चाहते तो ऐसा भी कर सकते थे लेकिन साहिबुल असरा (صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم) का अदब लाज़िम था।” क्यूँकि आस्मानी सफ़र मुस्तफ़ा करीम صَلَّय اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم के साथ ख़ास था, जब आप صَلَّय اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم आस्मानों की तरफ़ बुलन्द हुए और जंगलों, बयाबानों को तै कर गए और आप की खातिर अन्धेरे के एक हज़ार हिजाबात और रोशनी के एक हज़ार हिजाबात उठा दिये गए। और हवा पर चलना पानी पर चलने से ज़ियादा तअज्जुब अंगेज़ है क्यूँकि हवा पानी से ज़ियादा हल्की है, नीज़ पानी पर तो नेक व बद और मोमिन व काफ़िर सभी किसी लकड़ी, तख़्ते या कश्ती के ज़रीए चल सकते हैं, लेकिन हवा पर इन चीज़ों के ज़रीए वोही चल सकता है जिस पर रब्ब की ख़ास इनायत हो।

बा’ज उ-लमाए किराम رَحْمَہُمُ اللہ تعالیٰ फ़रमाते हैं कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّय اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم के रफीक़ हज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام थे और आप صَلَّय اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم के बुराक़ की रिकाब हज़रते सय्यिदुना मीकाईल عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने पकड़ रखी थी जब कि दामने रहूमत हज़रते सय्यिदुना इसराफ़ील عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के दस्ते अक्दस में था और आप صَلَّय اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم को आस्मानों पर बुलाने वाला खुद रब्बे जलील عَزَّ وَجَلَّ था और जिन को बुलाया गया था वोह हज़रते सय्यिदुना मुहम्मदे मुस्तफ़ा صَلَّय اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم थे, दा’वत का मक़ाम قَابِ قَوْسَیْنِ اَوْ اَدْنٰی था, और ख़िलअत (خِلْعَت) गुनहगाराने उम्मत की शफ़अत थी, इसी लिये **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿3﴾ وَلَسَوْفَ يُعْطِيكَ رَبُّكَ فَتَرْضَىٰ ۝

(प. २०: الضحی: ५)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और बेशक करीब है कि तुम्हारा रबब तुम्हें इतना देगा कि तुम राजी हो जाओगे। (1)

हजरते सय्यिदुना शैख़ इमाम अबू फ़रज बिन जौज़ी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَىٰ अपनी एक किताब में जिफ़्र फ़रमाते हैं कि “**اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ ने हजरते सय्यिदुना जिब्राईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام की तरफ़ वह्य फ़रमाई कि अपनी उबूदियत के कदमों पर रुक जा और मेरी रबूबियत के मर्तबे का ए'तिराफ़ कर और मेरे शुक्र के मैदान में खुशी से झूम जा और मेरी कुदरत व शान की अज़मत जान। अब मैं तुझ पर एक एहसान करने वाला हूं लिहाज़ा जो कुछ मैं वह्य करूं उसे तवज्जोह से सुन। तो हजरते सय्यिदुना जिब्राईले अमीन عَلَيْهِ الصَّلَوةُ وَالسَّلَام ने अर्ज़ की : “ऐ मेरे मौला عَزَّ وَجَلَّ तू मेहरबान है और मैं कमज़ोर व बे बस हूं, तू ताक़त व कुदरत वाला है और मैं मोहताज व मग़लूब हूं।”

**اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : “ऐ जिब्राईल (عليه الصَّلَوةُ وَالسَّلَام) हिदायत का झन्डा, इनायत का बुराक़, क़बूलियत व विलायत की पोशाक, रिसालत का लिबास और अज़मत व जलालत की ज़बान ले कर सत्तर हज़ार मलाइका के साथ रसूलों के सालार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार (صَلَّى اللَّهُ تَعَالَىٰ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) के दरबार में हाज़िर हो जा और उन के दरवाज़े पर खड़ा रह और उन की बारगाह से फ़ैज़ हासिल कर कि आज रात तू उन का हम रिकाब होगा। और

①.....मुफ़स्सिरे शहीर ख़लीफ़ आ'ला हज़रत सदरुल अफ़ज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَىٰ तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारक के तहत फ़रमाते हैं “**اَللّٰهُ** तआला का अपने हबीब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَىٰ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से यह वा'दए करीमा उन ने'मतों को भी शामिल है जो आप को दुन्या में अता फ़रमाई। कमाले नफ़्स और उलूमे अव्वलीन व आख़िरीन और जुहूरे अम्र और ए'लाए दीन और वोह फ़ुतूहात जो अहदे मुबारक में हुई और अहदे सहाबा में हुई और ता क़ियामत मुसलमानों को होती रहेंगी और दा'वत का आम होना और इस्लाम का मशारिक़ व मग़ारिब में फैल जाना और आप की उम्मत का बेहतरीन उमम होना और आप के वोह करामात व कमालात जिन का **اَللّٰهُ** ही आलिम और आख़िरत की इज़ज़त व तकरीम को भी शामिल है कि **اَللّٰهُ** तआला ने आप को शफ़ाअते आम्मा व खास्सा और मक़ामे महमूद वग़ैरा जलील ने'मतें अता फ़रमाई। मुस्लिम शरीफ़ की हदीष में है नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَىٰ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने दोनों दस्ते मुबारक उठा कर उम्मत के हक़ में रो कर दुआ फ़रमाई और अर्ज़ किया : **اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اُمِّیْ** **اَللّٰهُ** तआला ने जिब्रील को हुक्म दिया की मुहम्मद (مُحَمَّدٌ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَىٰ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) की ख़िदमत में जा कर दरयाफ़्त करो, रोने का क्या सबब है वा वुजूद यह कि **اَللّٰهُ** तआला दाना है। जिब्रील ने हस्बे हुक्म हाज़िर हो कर दरयाफ़्त किया। सय्यिदे आलम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَىٰ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने उन्हें तमाम हाल बताया और गुमे उम्मत का इज़हार फ़रमाया, जिब्रीले अमीन ने बारगाहे इलाही में अर्ज़ किया कि तेरे हबीब यह फ़रमाते हैं बावुजूद यह कि वोह ख़ूब जानने वाला है। **اَللّٰهُ** तआला ने जिब्रील को हुक्म दिया, जाओ और मेरे हबीब (صَلَّى اللَّهُ تَعَالَىٰ عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ) से कहो कि हम आप को आप की उम्मत के बारे में अज़ करीब राज़ी करेंगे और आप को गिरां खातिर न होने देंगे। हदीष शरीफ़ में है कि जब यह आयत नाज़िल हुई सय्यिदे आलम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَىٰ عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया कि जब तक मेरा एक उम्मती भी दोज़ख़ में रहे मैं राज़ी न होऊंगा। आयते करीमा साफ़ दलालत करती है कि **اَللّٰهُ** तआला वोही करेगा जिस में रसूल राज़ी हों और अहादीषे शफ़ाअत से पाबित है कि रसूल صَلَّى اللَّهُ تَعَالَىٰ عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की रिज़ा इसी में है कि सब गुनहगाराने उम्मत बख़्श दिये जाएं। तो आयत व अहादीष से क़तई तौर पर यह नतीजा निकलता है कि हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَىٰ عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की शफ़ाअत मक़बूल और हस्बे मरज़िये मुबारक गुनहगाराने उम्मत बख़्शे जाएंगे। **سُبْحَانَ اللَّهِ** क्या रत्बए उलया है कि जिस परवर दगार को राज़ी करने के लिये तमाम मुक़रबीन तक्लीफ़ें बरदाश्त करते और महनतें उठाते हैं वोह इस हबीबे अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَىٰ عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ को राज़ी करने के लिये अता आम करता है।

ऐ मीकाईल (عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام) तू भी अलमे कबूलियत को थाम ले और सत्तर हज़ार फिरशों को ले कर हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के दरे दौलत पर हाज़िर हो जा कि आज रात तू भी उन की खिदमत पर मामूर है। ऐ इसराफ़ील व इज़राईल (عليهما السلام) तुम दोनों भी वैसे ही करो जैसे जिब्राईल व मीकाईल कर रहे हैं। आज रात तुम सब ने सय्यिदुल अव्वलीन व आखिरीन (صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) की बारगाह में हाज़िर होना है। ऐ जिब्राईल (عَلَيْهِ السَّلَام) सूरज की रोशनी के ज़रीए चांद की रोशनी में कुछ इज़ाफ़ा कर दे और चांद के नूर के ज़रीए सितारों के नूर में ज़ियादती कर दे। फिर शम्सो क़मर को शम्भू बना कर बारगाहे नबवी में पेश कर दे।”

जिब्राईले अमीन عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने अर्ज़ की : “या इलाही عَزَّ وَجَلَّ क्या क़ियामत क़रीब आ गई है ?” **अब्लूह** ने इरशाद फ़रमाया : “नहीं, बल्कि मैं चाहता हूं कि अपने हबीब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को अपना कुर्ब अता करूं और उन्हें अपने असरार से आगाह फ़रमा कर उन्हें अन्वार व तजल्लियात का खिलअते नूर पहनाऊं और वोह मुहम्मदे मुस्तफ़ा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ हैं, जिन्हें सिद्को वफ़ा के साथ ख़ास किया गया है। लिहाज़ा उन की बारगाह में हाज़िर हो जा और इस रात उन का खिदमतगार और हम रिकाब होने का शरफ़ हासिल कर ले।”

चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की खिदमते अक्दस में बिशारत व मुबारक बाद के पैग़ामात लेकर हाज़िर हो गए। आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ हज़रते सय्यिदुना उम्मे हानी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا के काशानए अक्दस में मह्वे आराम थे। हज़रते सय्यिदुना जिब्राईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ने आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ को निदा दी : “ऐ नबिय्ये मुख्तार **अब्लूह** عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की बारगाह में हाज़िर होने के लिये तय्यार हो जाइये कि फिरिश्ते आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के इन्तिज़ार में सफ़बस्ता हैं। आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ दीदारे इलाही عَزَّ وَجَلَّ के शौक में उठ खड़े हुए। हज़रते सय्यिदुना जिब्राईले अमीन عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ को बुराक़ पर सुवार कराया और फिर खुद भी सुवार हो कर मस्जिदे हराम से मस्जिदे अक्सा जा पहुंचे, बेहद व बे हिसाब सफ़र तै किया और मलाइका भी आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के साथ साथ चलते हुए दुरूदो सलाम के नज़राने पेश कर रहे थे और यूं अर्ज़ कर रहे थे : “يَا أَيُّهَا السَّيِّدُ الْكَرِيمُ وَالرُّسُولُ الْعَظِيمُ الْتَفَتَ بِنَظَرِكَ إِلَيْنَا وَتَفَضَّلَ بِحُسْنِ عَطْفِكَ عَلَيْنَا” या’नी ऐ मोहतरम व मुकर्रम और अज़ीम रसूल ! हम पर नज़रे क़रम के साथ तवज्जोह व इल्तिफ़ात फ़रमाइये और शफ़क़त व मेहरबानी फ़रमाइये।” तो आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जान लो ! जिस ने अपने महबूब के ग़ैर की तरफ़ एक क़दम बढ़ाया यकीनन उस ने अपने आप को थकाया और जो ग़ैरे मतलूब के लिये एक क़दम चला उस ने महज़ मशक्क़त उठाई और जो महबूब व मतलूब को पाने में कामयाब हो गया वोह कैसे ग़ैरुल्लाह की तरफ़ मुतवज्जेह हो सकता है ? और जब उस के इरादे की पुख़्तगी सहीह हो गई और वोह तमाम मख़्लूक से गाफ़िल हो कर सिर्फ़ ख़ालिक़ क़ुल्लुल क़ौल की तरफ़ मुतवज्जेह हो गया तो उस ने शुक्र की ज़बान हासिल कर ली और अब वोह किसी क़िस्म की सुस्ती न करेगा।”



नीज इरशाद फरमाया : “अगर मैं भी उस की इबादत में कोताही करूं तो मेरी भी कोई हैषियत नहीं।” और जब आप ﷺ इल्मो अदब की सिफात से मुकम्मल तौर पर मुत्तसिफ हो गए तो **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप ﷺ को मरातिबे ता’जीम के मज़ीद करीब किया। चुनान्चे, **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में इरशाद फरमाता है :

﴿4﴾ ثُمَّ دَنَا فَتَدَلَّىۙ فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ أَوْ

أَدْنَىٰ (پ ۲۷، النجم: ۸-۹)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :** फिर वोह जल्वा नज़दीक हुवा फिर खूब उतर आया तो उस जल्वे और उस महबूब में दो हाथ का फ़सिला रहा बल्कि इस से भी कम। (1)

इस के बा’द आप ﷺ को पुकारा गया : “ऐ मुहम्मद (ﷺ) हमारी मेहमान हैं कि आप (ﷺ) हमारी बारगाह में हाज़िर हुए और हमारे कुर्ब की लज़्ज़त हासिल की। अब आप (ﷺ) ही बताएं कि आप (ﷺ) की मेहमान नवाज़ी कैसे की जाए ? और आप (ﷺ) क्या चाहते हैं ?” तो आप ﷺ ने अर्ज़ की : “या इलाही (ﷺ) मुझ से पहले अम्बिया को इन्आम व इकराम की जो पोशाकें अता फ़रमाई गईं, मैं उन में से कोई भी नहीं चाहता।” आप ﷺ से पूछा गया : “ऐ मेरे हबीब (ﷺ) फिर कौन सी चीज़ तुम्हें राज़ी करेगी ? और तुम किस चीज़ से खुश होगे ?” जब आप ﷺ को यकीनी तौर पर अपनी तमन्नाएं बर आती दिखाई दीं तो ज़बाने हाल से अर्ज़ करने लगे : “ऐ जूदो करम वाले मालिके हकीकी عَزَّوَجَلَّ तू बेहतर जानता है कि मेरा मक्सूद व मतलूब क्या है।” तो इरशाद फ़रमाया गया : “ऐ शफ़अत करने वाले और वोह जिस की शफ़अत मक्बूल है ! अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें अन्वार व तजल्लियात का ऐसा हुल्ला अता करूं जो किसी को न मिला, न किसी ने इस की ख़्वाहिश की और न ही किसी कान ने इस के मुतअल्लिक सुना तो ठहर जाओ और हमारे करम के खज़ानों में दाख़िल हो कर हमारे दीदार की पोशाक ज़ैबे तन कर लो।

①.....मुफ़स्सिरे शहीर खलीफ़ए आ’ला हज़रत, सदरुल अफ़ज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी علیه ورحمة الله الباری  
तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं : “इस (دَنَا) के मा’ना में भी मुफ़स्सिरीन के कई कौल हैं : **एक कौल** यह है कि हज़रते जिब्रैल का सय्यिदे आलम ﷺ से करीब होना मुराद है कि वोह अपनी सूरते अस्ली दिखा देने के बा’द हुज़ूर सय्यिदे आलम ﷺ के कुर्ब में हाज़िर हुए। **दूसरे मा’ना** यह है कि सय्यिदे आलम ﷺ हज़रते हक के कुर्ब से मुशरफ़ हुए। तीसरा यह कि **अब्बाह** तआला ने अपने हबीब ﷺ को अपने कुर्ब की ने’मत से नवाज़ा और यह ही सहीद तर है। (فَدَلَّى) में चन्द कौल हैं एक तो यह कि नज़दीक होने से हुज़ूर का उरूज व वुसूल मुराद है और उतर आने से नुज़ूल व रूजूअ। तो हासिल मा’ना यह है कि हक तआला के कुर्ब में बारयाब हुए फिर विसाल की ने’मतों से फ़ैज़ याब हो कर ख़ल्क की तरफ़ मुतवज्जेह हुए। दूसरा कौल यह है कि हज़रत रब्बुल इज्ज़त अपने लुत्फ़ो रहमत के साथ अपने हबीब से करीब हुवा और इस कुर्ब में ज़ियादती फ़रमाई। तीसरा कौल यह है कि सय्यिदे आलम ﷺ ने मुकर्रबे दरगाहे रबूबियत हो कर सजदए ताअत अदा किया। बुखारी व मुस्लिम की हदीष में है कि “करीब हुवा जब्बार रब्बुल इज्ज़त.... (فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ أَوْ أَدْنَىٰ) यह इशारा है ताकीदे कुर्ब की तरफ़ कि कुर्ब अपने कमाल को पहुँचा और बा अदब अहब्बा में जो नज़दीकी मुतसव्वर हो सकती है वोह अपनी ग़ायत को पहुँची।”

और दीदारे इलाही عَزَّ وَجَلَّ के वक्त महबूबे खुदा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की षाबित क़दमी को कुरआने पाक यूँ बयान फ़रमाता है :

﴿5﴾ مَا زَاغَ الْبَصَرُ وَمَا طَغَى ۝ (پ २७، النجم: १७)

तर्जमए कन्जुल ईमान : आंख न किसी तरफ़ फिरी न हृद से बढ़ी । (1)

और उस महबूब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की शान तो येह है :

﴿6﴾ لَقَدْ رَأَى مِنْ آيَاتِ رَبِّهِ الْكُبْرَى ۝ (پ २७، النجم: १८)

तर्जमए कन्जुल ईमान : बेशक अपने रब्ब की बहुत बड़ी निशानियां देखीं । (2)

हुजूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को दीदारे खुदावन्दी की ने'मते उज़्मा का ताज पहनाया गया (और दिल ने इस की तस्दीक की) । चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿7﴾ مَا كَذَبَ الْفُؤَادُ مَا رَأَى ۝ (پ २७، النجم: १९)

तर्जमए कन्जुल ईमान : दिल ने झूट न कहा जो देखा । (3)

1...मुफ़स्सिरे शहीर ख़लीफ़े आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारक के तहत फ़रमाते हैं : इस में सय्यिदे आलम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के कमाले कुव्वत का इज़हार है कि इस मक़ाम में जहां अक्लें हैरत ज़दा हैं आप षाबित रहे, और जिस नूर का दीदार मक्सूद था उस से बहरा अन्दोज़ हुए । दाहिने बाएं, किसी तरफ़ मुलतफ़्त न हुए, न मक्सूद की दीद से आंख फेरी, न हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की तरह बेहोश हुए बल्कि इस मक़ामे अज़ीम में षाबित रहे ।"

2...मुफ़स्सिरे शहीर ख़लीफ़े आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारक के तहत फ़रमाते हैं : "या'नी हुजूर सय्यिदे आलम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने शबे मे'राज अज़ाइबे मुल्क व मलकूत को मुलाहज़ा फ़रमाया और आप का इल्म तमाम मा'लूमाते ग़ैबिय्या मलकूतिय्या पर मुहीत हो गया । जैसा कि हदीषे इख़्तिसामे मलाइका (या'नी फ़िरिशतों का झगड़ना) में वारिद हुवा है और दूसरी और अहादीष में आया है ।" (रूहुल बयान)

3...मुफ़स्सिरे शहीर ख़लीफ़े आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारक के तहत फ़रमाते हैं : या'नी सय्यिदे आलम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के क़ल्बे मुबारक ने उस की तस्दीक की जो चश्मे मुबारक ने देखा । मा'ना येह है कि आंख से देखा । दिल से पहचाना और इस रूइय्यत व मा'रिफ़त में शक व तरहुद ने राह न पाई । अब येह बात कि क्या देखा । बा'ज मुफ़स्सिरीन का कौल येह है कि हज़रते जिब्रईल को देखा । लेकिन मज़हबे सहीह येह है कि सय्यिदे आलम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने अपने रब्ब तबारक व तआला को देखा और येह देखना किस तरह था, चश्मे सर से या चश्मे दिल से ? इस में मुफ़स्सिरीन के दोनों कौल पाए जाते हैं । हज़रते इब्ने अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا का कौल है कि "सय्यिदे आलम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने रब्बुल इज़ज़त को अपने क़ल्बे मुबारक से दो बार देखा । (रवाहे मुस्लिम) एक जमाअत इस तरफ़ गई है कि आप ने रब्ब عَزَّ وَجَلَّ को हकीकतन चश्मे मुबारक से देखा । येह कौल हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक और हसन व इकरिमा का है । और हज़रते इब्ने अब्बास रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से मरवी है कि **अल्लाह** तआला ने हज़रते इब्राहीम को खुल्लत और हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को कलाम और सय्यिदे आलम मुहम्मदे मुस्त्फ़ा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ को अपने दीदार से इम्तियाज़ बख़्शा (صلوات اللّٰه تعالیٰ علیهم) का'ब ने फ़रमाया कि **अल्लाह** तआला ने हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से दो बार कलाम फ़रमाया और हज़रते मुहम्मदे मुस्त्फ़ा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने **अल्लाह** तआला को दो मरतबा देखा । (तिर्मिज़ी) लेकिन हज़रते आइशा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا ने दीदार का इन्कार किया और आयत को जिब्रिल عَلَيْهِ السَّلَام के दीदार पर महमूल किया और फ़रमाया जो कोई कहे कि मुहम्मद (صلى الله تعالى عليه وآله وسلم) ने अपने रब्ब को देखा उस ने झूट कहा और सनद में (या'नी दलील के तौर पर) "لَا تُؤْمِرُكَ الْأَبْصَارُ" तिलावत फ़रमाई । यहां चन्द बातें काबिले लिहाज़ है : एक येह कि हज़रते आइशा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا का कौल नफी में है और हज़रते इब्ने अब्बास रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا का इषबात में और मुषबत ही मुक़द्दम होता है ।.... बकिया अगले सफ़हा पर

फिर कहा गया : “ऐ मुहम्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) क्या तुम जानते हो कि इस वक्त कहाँ हो ? और किस मक़ामे रफ़ीअ पर फ़ाइज़ हो ?” अर्ज़ की : “या **अल्लाह** غَرْ وَجَلْ तू ही बेहतर जानता है और तू ही सब से ज़ियादा जानने वाला है ।” तो **अल्लाह** तआला ने इरशाद फ़रमाया : “(ऐ महबूब ! ) तुम्हारा येह मक़ाम व मर्तबा मख़्लूक में से किसी ने नहीं देखा, मैं ने तुम्हें एक मन्ज़िल से दूसरी मन्ज़िल, एक जहां से दूसरे जहां और एक मे’राज से दूसरी मे’राज तक मुन्तक़िल फ़रमाया, यहां तक कि ज़मीनो आस्मां की बादशाही में कोई अज़ीबो ग़रीब चीज़ ऐसी नहीं जिस पर मैं ने तुम्हें आगाह न कर दिया हो और न ही कोई ऐसा कमाल व मर्तबा है जिस तक मैं ने तुम्हें न पहुंचाया हो ।”

जब आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बारगाहे लम यज़ल में हाज़िर हुए और उस की बे नियाज़ी का जाम नोश किया तो सारी काइनात आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की चमक से मुनव्वर हो गई और आस्मानी फ़िरिश्तों ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अपना मक़सूद पाने पर मुबारक बाद पेश की, फिर एक आवाज़ सुनाई दी, लेकिन कोई दिखाई न दिया : “**अल्लाह** غَرْ وَجَلْ ही आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मालिक व मौला है । लिहाज़ा आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم उस की ने’मतों पर उस का शुक्र अदा करें ।” सरकारे अ़ाली वक़ार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते हैं कि “मुझे येह कलिमात इल्हाम किये गए : **اَلتَّحِيَّاتُ الْمُبَارَكُ الصَّلَوَاتُ الطَّيِّبَاتُ لِلّٰهِ** तो मुझे जवाब मिला : **اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ وَعَلٰی عِبَادِ اللّٰهِ الصّٰلِحِیْنَ** मैं ने तमाम अम्बिया और अपनी उम्मत को भी इस फ़ज़ले कामिल और अज़े अज़ीम में शरीक कर लिया जिस के साथ मुझे ख़ास किया गया था । तो मलाइका ने जवाबन कहा : **اَشْهَدُ اَنْ لَا اِلَهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنْ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ** फिर दोबारा आवाज़ आई : “ऐ मुहम्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) क़रीब हो,” तो मैं क़रीब हो गया :

एक क़ौल येह है कि : आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم **अल्लाह** غَرْ وَجَلْ की मा’रिफ़त के साथ उस के क़रीब हुए और उस की महबूबत का कुर्ब पा लिया । चुनान्चे, **अल्लाह** غَرْ وَجَلْ इरशाद फ़रमाता है :

﴿8﴾ ثُمَّ دَنَا فَتَدَلَّى ﴿٢٧﴾ النجم: ٨

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : फिर वोह जल्वा नज़दीक हुवा फिर ख़ूब उतर आया ।

या’नी आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم महबूबत के साथ हक़ तआला से क़रीब हुए और **अल्लाह** रब्बुल इज़ज़त غَرْ وَجَلْ की तरफ़ से रहमत व लताफ़त के कुर्ब का नुज़ूल हुवा । और येह कुर्ब किसी क़िस्म की मसाफ़त तै करने का न था बल्कि वहां तो जुदाई व फ़िराक़ का सुवाल ही ख़त्म हो गया था ।

क्यूंकि नाफ़ी किसी चीज़ की नफ़ी इस लिये करता है कि उस ने नहीं सुना और मुषबत इषबात इस लिये करता है कि उस ने सुना और जाना तो इल्म मुषबत के पास है । इलावा बरी हज़रते आइशा रَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने येह कलाम हुज़ूर से नक़ल नहीं किया बल्कि आयत से अपनी इस्तिम्बात पर ए’तिमाद फ़रमाया । येह हज़रते सिद्दीका रَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا की राए है और आयत में इदराक या’नी इहाता की नफ़ी है, न रूइय्यत की । **मस्अला** : सहीह येह है कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم दीदारे इलाही से मुशरफ़ फ़रमाए गए । मुस्लिम शरीफ़ की हदीषे मरफूअ से भी येही पाबित है । हज़रते इब्ने अब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا जो बहरुल उम्मह हैं, वोह भी इसी पर हैं । मुस्लिम की हदीषे है : “رَأَيْتُ رَأٰی بَعْثِی وَیَقْبٰلِی (या’नी) मैं ने अपने रब्ब को अपनी आंख और अपने दिल से देखा ।” हज़रते हसन बसरी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ कसम खाते थे कि “मुहम्मदे मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم ने शबे मे’राज अपने रब्ब को देखा । हज़रते इमाम अहमद रَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया कि “मैं हदीषे हज़रते इब्ने अब्बास रَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا का काइल हूं हुज़ूर ने अपने रब्ब को देखा और उस को देखा और उस को देखा । इमाम साहिब येह फ़रमाते ही रहे यहां तक कि सांस ख़त्म हो गया ।”



क्योंकि, **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿9﴾ فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ أَوْ أَدْنَىٰ

(प: २७, नम: ९)

तर्जमए कन्जुल ईमान : तो उस जल्वे और उस महबूब में दो हाथ का फ़ासिला रहा बल्कि इस से भी कम ।

वहां ज़मान व मकान ख़त्म हो गए, बल्कि आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ऐसी जगह थे, न उस की जहत थी, न मकान, न वक़्त, न ज़मान, न सामाने हयात, न हीं अफ़लाक व काइनात । बल्कि जब आप सफ़रे मे'राज से वापस तशरीफ़ लाए, तो बहुत ज़ियादा खुश व ख़ुर्रम और मसरूर थे, और आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ हर तरह की सआदत से बहरा मन्द हो गए ।

वापसी पर आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की मुलाकात हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह **अल्लाह** صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से हुई तो उन्होंने ने अर्ज़ की : “ऐ करीम नबी صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ आप ने आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की उम्मत पर कितनी नमाज़ें फ़र्ज़ फ़रमाई ?” आप ने ज़ाबाने दिया : “दिन रात में पचास नमाज़ें ।” उन्होंने ने फिर अर्ज़ की : “ऐ सारी मख़्लूक के सरदार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ अपने रब्ब عَزَّ وَجَلَّ के पास दोबारा जाइये और अपनी उम्मत के लिये तख़्फ़ीफ़ का सुवाल कीजिये, यकीनन इन में कुछ अज़िज़ व कमज़ोर बन्दे भी होंगे ।” हज़रते सय्यिदुना मूसा (عَلَيْ نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام) को इसी तरह **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की बारगाह में वापस भेजते रहे, यहां तक कि **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ ने हमेशा के लिये सिर्फ़ पांच नमाज़ें फ़र्ज़ फ़रमा दीं । हज़रते सय्यिदुना मूसा (عَلَيْ نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام) के आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ को बारगाहे इलाही عَزَّ وَجَلَّ में बारबार जाने के लिये अर्ज़ करने में एक राज़ येह भी था कि जब आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ उस अज़ली व लाज़वाल हुस्ने खुदावन्दी का मुशाहदा कर के आएँ और उस की चमक आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के चेहरए अक़दस में ज़ाहिर हो तो वोह भी उस हुस्न का जल्वा देख लें ।

जब **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ के प्यारे हबीब, हबीबे लबीब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अपनी मुराद पा ली और ख़लवत में अपने रब्ब तआला के हुस्नो जमाल का मुशाहदा कर लिया तो आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ से इरशाद फ़रमाया गया : “ख़्वाहिश का इज़हार कीजिये और जो चाहते हैं हम से त़लब कीजिये, हम ने आप (صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) को हर शै त़लब करने और हर मक्सद तक पहुंचने की इजाज़त दे दी है ।” आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने अर्ज़ की : “मैं चाहता हूं कि मेरी उम्मत को भी वैसा ही शरफ़ अता किया जाए जिस की पोशाक मुझे पहनाई गई है ताकि वोह भी मेरी रहूमत से अपना इन्आम पा ले ।” तो आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ को इरशाद फ़रमाया गया : “ऐ काइनात के सरदार (صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ) ऐ वोह ज़ात जिस के क़दमों की बरकत से ज़मीनो आस्मां ने शरफ़ पाया है ! हम ने आप (صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ) की उम्मत को पांच ख़िलअतें अता कर दी हैं लिहाज़ा उन की सआदतों के सितारे बुजुर्गी की इफ़क़ पर जगमगाएंगे, और वोह पांच ख़िलअतें, पांच नमाज़ें हैं । जिन से आप (صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ) की उम्मत, ख़ल्वत में राहत पाएगी । “आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने

अर्ज की : “जिन ख़िलअतों का नूर काइनात में फैला हुआ है और चमक रहा है, इन की पहचान और अवसाफ़ क्या है ? दुनिया में इन के नाम क्या है ?” जवाब मिला : “ऐ हबीबे मोहतरम (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) कुर्ब के मरातिब पर तशरीफ़ रखिये, येह आप (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के सामने एक एक कर के अपने जल्वे ज़ाहिर करेंगी।”

सब से पहले जो दुल्हन आई उस पर रोशन व चमकदार अन्वार वाजेहू थे, जिस की खुशबू तमाम जहान में फैली हुई थी, उस का नूर अहले अक्ल व बसीरत के सामने वाजेहू तौर पर चमक रहा था। उस वक़्त आप (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को पुकारा गया : “ऐ वोह हस्ती जो हमारा विसाल पा कर हिजरो फिराक़ के ग़म से महफूज़ हो गई और ऐ वोह हस्ती जिस की बरकत से उस की उम्मत को बहुत बड़ा अज़्रो षवाब हासिल हुआ ! इस ख़िलअत को नमाज़े फ़ज़्र से पहचाना जाएगा। “इस के बा’द आप (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने सफ़ेद व रोशन लिबास में दूसरी दुल्हन को मुलाहज़ा फ़रमाया तो आप (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم) को आवाज़ दी गई : “ऐ आ’ला मरातिब के मालिक (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم) और वोह ज़ात जिस की उम्मत को नमाज़ (के लिये सारी ज़मीन को मस्जिद बना कर) और (पाक ज़मीन से) त़हारत का हुक्म दे कर दीगर तमाम उम्मतों पर फ़ज़ीलत दी गई है ! इस नूरानी पोशाक का नाम नमाज़े ज़ोहर है।” फिर आप (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم) के सामने वाजेहू नूरानी लिबास में मल्बूस तीसरी दुल्हन ज़ाहिर हुई। उस के चमकते चेहरे के नूर से काइनात जगमगा उठी, आप (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم) को बताया गया : “ऐ वोह ज़ात जिस की सिफ़ात की कोई हद नहीं ! और जिसे रो’ब व दबदबा और नुसरते खुदावन्दी की तल्वार अ़ता की गई है ! इस जगमगाते हुल्ले का नाम नमाज़े अ़स् है।” फिर आप (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم) की ख़िदमते अक्दस में बा कमाल लिबास में मल्बूस चौथी दुल्हन ज़ाहिर हुई तो आप (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم) को कहा गया “ऐ मुक़र्रब व मुहज़ज़ब अफ़राद में सब से ज़ियादा कुर्ब व शरफ़ पाने वाले ! इस ख़िलअत का नाम नमाज़े मग़रिब है।” फिर आप (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم) के सामने वफ़ के हुल्ले ज़ेबे बदन किये हुए पांचवीं दुल्हन आई। और बिला शुबा आप (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم) निहायत इज़ज़त व शरफ़ के मक़ाम पर फ़ाइज़ हुए और मुत्तबा व मुस्त्फ़ा बन गए और आप (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰी عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم) को बताया गया : “ऐ तमाम मख़्लूक में सब से बेहतर और हसीन हस्ती (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم) इस ख़िलअते फ़ाख़िरा का नाम नमाज़े इ़शा है। पस आप (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم) की उम्मत इन पांच नमाज़ों की पाबन्द होगी लेकिन अज़्रो षवाब पचास का पाएगी और ऐ हौज़े कौषर के मालिक (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم) मैं तुझे इस से भी ज़ियादा अ़ता करूंगा और उसी का ज़िक़्र क़बूल करूंगा जो मेरे ज़िक़्र के साथ तेरा ज़िक़्र भी करे।”

जब आप (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم) पर पांचों नमाज़ें दुल्हनों के लिबास में ज़ाहिर हो चुकीं तो आप (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰी عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم) ने एक आवाज़ सुनी : खुशख़बरी है उस के लिये जो इन नमाज़ों की पाबन्दी करे, पस वोही अपने मक़सूद व मुराद को पहुंचेगा। जिस ने आज तक अपनी ख़्वाहिश की कैद से छुटकारा हासिल न किया और इस से बचने की कोई राह तलाश न की, उस से कह दो कि वोह

अपने गुज़्शता आ'माल पर अफ़सोस करते हुए अपने नफ़्स पर रोए, और अगर आंसू नहीं बहा सकता तो कम अज़ कम रोने वाली शक़ल बना ले।

जब आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मे'राज से वापस तशरीफ़ लाए तो काइनात आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के नूर से रोशन हो गई, और तमाम मौजूदात आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की महक से मुअत्तर हो गई। जब आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने अपने रब्ब عَزَّ وَجَلَّ की अता कर्दा फ़ज़ीलत और जाह व मर्तबे की ख़बर लोगों को दी तो अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने सब से पहले आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की तस्दीक़ की और आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ को बिशारत व मुबारक बाद पेश की और आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की बात में ज़रा भर शक न किया।

पाक है वोह ज़ात जिस ने अपने हबीब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ को शरफ़ व कुर्ब के ख़िलअते फ़ाख़िरा से नवाज़ा और आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ को इताअत का मर्कज़ बनाया और जहन्म और उस की आग से छुटकारे के लिये आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ को शफ़ाअत का महवर बनाया और वा'दा फ़रमाया कि जो आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ पर दुरूदे पाक पड़ेगा उस की दुआ क़बूल कर ली जाएगी और सीना कुशादा कर दिया जाएगा। क्यूंकि, **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ مُّجِيبٌ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ (البقرة: १८६)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और ऐ महबूब जब तुम से मेरे बन्दे मुझे पूछें तो मैं नज़दीक हूँ दुआ क़बूल करता हूँ पुकारने वाले की जब मुझे पुकारे।”

या **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ तेरे प्यारे रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के मर्तबए कमाल और इस तअल्लुक़ व वासिते का सदक़ा, जो मे'राज की रात तेरे और तेरे महबूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के दरमियान ज़ाहिर हुवा, हमारे कबीरा गुनाह मुआफ़ फ़रमा दे और हमें क़बूलियत की पोशाकें अता फ़रमा दे। हमारी मुरादों और उमंगों को पूरा फ़रमा दे। हम सब को दुन्या व आख़िरत की भलाइयां अता फ़रमा और अपनी रहमत से अज़ाबे नार से गुलू ख़लासी अता फ़रमा। और ऐ सब से बड़ कर रहम करने वाले ! हम पर अपनी ख़ास रहमत नाज़िल फ़रमा।

وَصَلَّى اللهُ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِهِ وَصَحْبِهِ وَسَلَّمَ





बयान 25 :

## आलिहीन की हिक्कायात

घर में क़ब्र :

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन सम्माक वाइज़ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि “एक दफ़आ मेरे सामने एक अ़बिद की ता’रीफ़ की गई। चुनान्चे, मैं उस की ज़ियारत के लिये चल पड़ा। मैं ने उस को घर में पाया और देखा कि उस ने एक क़ब्र खोद रखी है और क़ब्र के कनारे बैठ कर, अपने सामने खजूर के पत्ते सीधे कर रहा है। मैं ने उसे सलाम किया, उस ने धीमी आवाज़ में सलाम का जवाब देने के बा’द पूछा : “आप कौन हैं ?” मैं ने कहा : “मुहम्मद बिन सम्माक।” वोह बोला : “मुहम्मद बिन सम्माक वाइज़ ?” मैं ने हां में जवाब दिया। उस ने खजूर के पत्ते रख दिये और कहने लगा : “ऐ इब्ने सम्माक رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ सुनने वाले के लिये वाइज़ इसी तरह है जैसे बीमार के लिये तबीब। लिहाज़ा आप मुझे कुछ नसीहत कीजिये।”

मैं ने उसे वा’ज़ व नसीहत करते हुए कहा : “क्या आप इस से डरते नहीं कि आप की ख़ताएं भुलाई न जाएंगी और आप के गुनाह मिटाए न जाएंगे। फिर आप के सामने कितनी सख़्तियां, हौलनाकियां, तकालीफ़ और मसाइब व आलाम हैं। जिन में से पहली क़ब्र की तारीकी है, फिर हश्र व नश्र की तारीकी, फिर पुल सिरात की तारीकी, फिर आ’माल का वज़्न किया जाना, फिर उम्मीदों का मुक़त़ेअ हो जाना और फिर **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** का ग़ज़ब फ़रमाना।” येह सुन कर वोह शिदत से रोने लग गया। फिर कहने लगा : “ऐ इब्ने सम्माक ! इस के बा’द क्या होगा ?” मैं ने कहा : “इस के बा’द गुनाहों का भारी बोझ उठा कर जहन्नम की आग पर से गुज़रना है और सब से बढ़ कर **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** का ज़ज़्रो तौबीख़ फ़रमाना है।” उस ने जब येह सुना तो एक ज़ोरदार चीख़ मारी और क़ब्र में जा गिरा। एक बहुत बुढ़ी औरत बाहर निकली, वोह उस के चेहरे से मिट्टी साफ़ करते हुए कह रही थी : “इन दो आंखों पर मेरे मां बाप कुरबान ! इन्हों ने अ़र्सए दराज़ से **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की इताअत में शब बेदारी की और अ़र्सए दराज़ तक **اَلलّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** के ख़ौफ़ से रोती रहीं। फिर उस ने उसे हरकत दी और देखा तो उस का ताइरे रूह क़फ़से उन्सूरी से परवाज़ कर चुका था। मैं उस के घर से निकला तो अचानक हज़रते सय्यिदुना सर्री सक़ती, हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम, हज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ और अ़बिदों का एक काफ़िला देखा। उन्होंने ने मुझ से पूछा : “क्या हज़रते सय्यिदुना अबू यज़ीद ख़व्वास रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ का इन्तिक़ाल हो गया ?” मैं ने कहा : “जी हां।” फिर मैं ने उन को उन के घर का रास्ता बताया। वोह अन्दर दाख़िल हुए ताकि उसे क़ब्र से निकाल कर गुस्ल व कफ़न का इन्तिज़ाम करें तो उस को इस हाल में पाया कि उसे गुस्ल दिया जा चुका था और पाकीज़ा कफ़न भी पहना दिया गया था। फिर मुसलमानों ने उस की नमाज़े जनाज़ा पढ़ी और मैं अपने घर लौट आया। उस वक़्त मैं अपने आप को बहुत ज़लील व हक़ीर महसूस कर रहा था।”

## खौफ़े खुदा عزّ وجلّ से रोने वाला मदनी मुन्ना :

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन वासान رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं : एक दिन मैं बसरा की गलियों में से गुज़र रहा था कि मैं ने एक बच्चे को गिराया व ज़ारी करते देखा और पूछा : “ऐ बेटे ! तुझे किस चीज़ ने रुलाया ?” उस ने जवाब में कहा : “जहन्नम के खौफ़ ने ।” मैं ने कहा : “ऐ मेरे बेटे ! तू छोटा है, फिर भी जहन्नम से डरता है ।” वोह कहने लगा : “ऐ मेरे मोहतरम ! मैं ने अपनी अम्मी जान को देखा कि वोह आग जलाते हुए पहले छोटी लकड़ियां जलाती हैं, फिर बड़ी । तो मैं ने पूछा : “ऐ अम्मी जान ! आप पहले छोटी लकड़ियां क्यूं जलाती हैं और बा’द में बड़ी लकड़ियां क्यूं ?” तो उन्होंने ने जवाब दिया : “ऐ मेरे बच्चे ! छोटी लकड़ियां ही बड़ी लकड़ियों को जलाती हैं ।” बस इसी बात ने मुझे रुला दिया ।” मैं ने उस लड़के से कहा : “ऐ बेटे ! क्या तू मेरी सोहबत इख़्तियार करेगा, ताकि तू ऐसा इल्म सीख जाए जो तुझे नफ़ा दे ?” उस ने कहा : “एक शर्त पर अगर आप वोह शर्त क़बूल फ़रमा लें तो मैं आप की सोहबत इख़्तियार कर लूंगा, और आप की इताअत भी करूंगा ।” मैं ने कहा : “वोह शर्त क्या है ?” वोह बोला : “अगर मुझे भूक लगे तो आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى मुझे खाना खिलाएंगे, और अगर मैं प्यासा हो जाऊं तो आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى मुझे सैराब करेंगे, अगर मुझ से ख़ता हो जाए तो आप रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى मुझे मुआफ़ फ़रमा देंगे, और अगर मैं मर जाऊं तो आप रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى मुझे ज़िन्दा करेंगे ।” मैं ने उसे कहा : “ऐ मेरे बेटे ! मैं तो इन कामों पर क़ादिर नहीं ।” तो उस ने कहा : “ऐ मेरे मोहतरम ! फिर मुझे छोड़ दीजिये, इस लिये कि मैं उस के दरवाज़े पर खड़ा होना चाहता हूं जो येह सारे काम कर सकता हो ।”

## अल्लाह عزّ وجلّ के नाम पर वक्फ़ कर के वापस न लो :

जब हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान पौरी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى की उम्र पन्दरह बरस हुई तो अपनी मां से अर्ज़ की : “ऐ अम्मी जान ! मुझे राहे खुदा عزّ وجلّ में वक्फ़ फ़रमा दीजिये ।” तो आप रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى की वालिदा कहने लगीं : “ऐ मेरे बेटे ! बादशाहों को वोह चीज़ हदिय्या की जाती है, जो उन की शायाने शान हो, और तुझ में ऐसी कोई ख़ूबी नहीं कि **अल्लाह** عزّ وجلّ की शान के मुताबिक़ हो ।” आप रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى को हया आई और एक कमरे में दाख़िल हो कर पांच साल तक वहीं इबादत करते रहे । इस के बा’द आप रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى की वालिदए मोहतरमा आप रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى के पास आई और देखा कि आप रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى इबादत में मसरूफ़ हैं और आप रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى पर सआदत के आषार नुमायां हैं, तो उन्होंने ने आप रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى की आंखों के दरमियान बोसा दिया और फ़रमाया : “ऐ मेरे बेटे ! अब मैं तुझे **अल्लाह** عزّ وجلّ की राह में वक्फ़ करती हूं ।” चुनान्चे, आप रَحْمَةُ اللَّهِ तَعَالَى वहां से निकले और दस साल सफ़र में रहे और इबादत से लज़ज़त हासिल करते रहे । फिर आप रَحْمَةُ اللَّهِ तَعَالَى को अपनी वालिदए मोहतरमा की ज़ियारत का इशतियाक़ हुवा तो घर की तरफ़ चल पड़े । जब आप रَحْمَةُ اللَّهِ तَعَالَى ने रात के वक़्त दरवाज़ा खटखटाया तो आप रَحْمَةُ اللَّهِ तَعَالَى की वालिदए मोहतरमा ने पर्दे के पीछे से आवाज़ दी : “ऐ सुफ़यान (رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى) जो **अल्लाह** عزّ وجلّ के नाम पर कोई चीज़ वक्फ़ कर देता है वोह वापस नहीं

लेता और मैं ने तुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम पर पेश कर दिया है, अब मैं तुझे सिर्फ उसी के सामने देखना चाहती हूं।

### वासिल बिल्लाह नौजवान :

हजरते सय्यिदुना मन्सूर बिन अम्मार رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ इरशाद फरमाते हैं कि मैं ने इराक के एक शहर में ऐसा नसीहत भरा बयान किया कि जिस से पथ्थर दिल भी पिघल जाते और जिगर पाश पाश हो जाते, लेकिन मेरी उस महफिल में किसी ने आंसू का एक क़तरा तक न बहाया, और ऐसी बात नहीं थी कि मेरी तक़रीर उन के कानों के रास्ते दिलों में न उतर रही हो। मेरी गुफ़्तगू की सहर अंगेज़ी ने दिलों को दम ब खुद कर रखा था, और लोगों की अरवाह जल्वए महबूब में खोई हुई थीं, अचानक मैं ने साफ़ सुथरे लिबास में मल्बूस एक ख़ूब सूरत नौजवान देखा, उस ने खड़े हो कर चीख़ मारी, फिर घबरा कर बैठ गया, लेकिन उस की इस चीख़ से मेरे बयान में ख़लल आ गया। मैं अपने मिम्बर से नीचे उतर आया, और उस के मदहोशी से इफ़ाका पाने तक इन्तिज़ार करता रहा। जब वोह होश में आया तो मैं ने उस के पास जा कर पूछा : “ऐ मेरे मोहतरम ! आप के वजदान के घोड़े कहां तक रसाई पा चुके हैं ? (या’नी आप कुर्बे इलाही عَزَّوَجَلَّ की किस मन्ज़िल तक पहुंच चुके हैं ?) ” तो उस ने जवाब दिया : “मेरे वज्द व सुरूर के घोड़ों ने अपना मक़सूद पा लिया।” मैं ने पूछा : “आप को विसाले बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ की येह दौलत कैसे नसीब हुई ?” तो उस ने जवाब दिया : “तवील मशक़त व थकावट के बा’द मैं ने इस राहत व विसाल को पाया।” मैं ने पूछा : “किस शर्त पर आप ने अपना मक़सूद पाया ?” जवाब मिला : “मुझे अपने मक़सूद की इन्तिहाई त़लब की वजह से कामयाबी मिली।” मैं ने पूछा : “क्या आप का गुज़र बारगाहे कुर्ब से भी हुवा ?” जवाब मिला : हां वोही मेरे हुसूले फ़ैज़ की जगह है।” मैं ने पूछा : “क्या आप ने साहिबे वक़ार मर्दों का मुशाहदा कर लिया और उन के कुर्ब में आप की झिझक ख़त्म हो गई ?” जवाब मिला : “ऐ इब्ने अम्मार ! बिग़ैर हिचकिचाए आगे बढ़ना ही मेरा तरीका है ?” मैं ने पूछा : “फिर आप किस वसीले से बारगाहे कुर्ब तक पहुंचे ?” जवाब मिला : मैं देरे रहूमत पर खड़ा रहा और उस के आदाब को हर लम्हे मल्हूजे ख़ातिर रखा। जब **अल्लाह** रब्बुल अ़लमीन عَزَّوَجَلَّ ने मेरे इन्तिहाई शौक को मुलाहज़ा फ़रमाया तो मुझ पर करम के बादल बरसाते हुए अपनी रहूमत के दरवाजे खोल दिये, और सारे हिजाबात उठा दिये और मुझे निदा दी : “तमाम हिजाबात उठे हुए हैं, लिहाज़ा तुम मेरे दीदार से कैफ़ व सुरूर हासिल कर लो।”

### एक राहिब का कबूले इस्लाम :

मन्कूल है कि अबुल कासिम हजरते सय्यिदुना जुनैद رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ और सूफी फ़ुकरा का एक काफ़िला हज़ के लिये रवाना हुवा। रास्ते में कुछ दिनों के बा’द पानी ख़त्म हो गया। काफ़िले ने एक पहाड़ के दामन में पड़ाऊ किया हुवा था, आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने अपने एक मुरीद से कहा : “येह मशकीज़ा लो और उस पहाड़ की चोटी पर चढ़ कर पाक मिट्टी ले आओ ताकि हम इस से तयम्मुम करें, क्यूंकि नमाज़ का वक़्त हो चुका है।” उस ने हस्बे हुक्म मशकीज़ा लिया और पहाड़ पर



चढ़ कर मश्कीज़े में मिट्टी डालने लगा। अचानक उस ने एक आवाज़ सुनी। इधर उधर देखा तो गिरजा घर में एक राहिब नज़र आया। राहिब ने पूछा : “इस मिट्टी का क्या करोगे ?” उस ने जवाब दिया : “हम उम्मत मुहम्मदिय्या عَلَى صَاحِبِهَا الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के लोग हैं। जब पानी नहीं मिलता तो हम मिट्टी से तयम्मूम कर लेते हैं।” राहिब बोला : मेरे हां एक साफ़ व शफ़्फ़ाफ़ कुंवां है, तुम इस से पानी भी पी लो और वुजू भी कर लो।” उस मुरीद ने कहा : “पहाड़ के नीचे हमारा एक काफ़िला ठहरा हुआ है।” राहिब ने कहा : “तुम जाओ और सब को बुला लाओ।” वोह हज़रते सय्यिदुना जुनैद رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की खिदमत में हाज़िर हुआ और राहिब के मुतअल्लिक़ बताया। आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने उसे फ़रमाया : “जा कर उसे कहो, हम सत्तर अफ़राद हैं, क्या उस खन्दर में आ जाएंगे ?” वोह मुरीद दोबारा गया और राहिब को जा कर सारी बात बताई तो उस ने कहा : “अगर्चे एक हज़ार ही क्यूं न हों क्यूंकि मैं मुहम्मद (صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) और आप की उम्मत की क़द्र करता और उन से महबूब करता हूं।” जब मुरीद ने वापस जा कर आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को बताया तो आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعालَى عَلَيْهِ सारे काफ़िले को ले कर पहाड़ पर चढ़ गए। राहिब ने उस खन्दर का दरवाज़ा खोल दिया। सभी ने ख़ूब सैर हो कर उस कुंवे से पानी पिया और वुजू कर के नमाज़ अदा की। जब फ़ारिग़ हुए तो राहिब ने सब को एक एक बड़ी प्लेट पेश की जिस में तरह तरह के खाने थे। सब ने खाना खाया। फिर एक तश्त और लौटा हाज़िर किया, सब ने अपने हाथों को धो कर मुश्क लगाई। जब राहिब ने मेहमान नवाज़ी कर ली तो पूछा : “क्या तुम में से कोई इस मुनासबत से कुरआने करीम की तिलावत करने वाला है ?” हज़रते सय्यिदुना जुनैद رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने एक मुरीद को इशारा किया तो उस ने इस आयते करीमा की तिलावत शुरू की :

﴿١﴾ إِنَّ الدِّينَ سَبَقَتْ لَهُم مِّنَّا الْحُسْنَىٰ  
أُولَٰئِكَ عَنْهَا مُبْعَدُونَ (١٧٦-١٧٧ الانبياء: ١٠١)

**तर्जमए कज्जुल ईमान :** बेशक वोह जिन के लिये हमारा वा'दा भलाई का हो चुका वोह जहन्नम से दूर रखे गए हैं।

आयते मुबारका सुन कर राहिब की चीखें निकल गई और कहने लगा : “रब्बे का'बा عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! हम ने सुल्ह कर ली।” जब क़ारी ने कुरआने करीम की तिलावत मुकम्मल की तो उस ने फिर कहा : “मैं तुम्हें क़सम दे कर पूछता हूं कि क्या तुम में कोई अच्छा शे'र कहने वाला है ? क्यूंकि मैं समाज को पसन्द करता हूं।” आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने एक मुरीद की तरफ़ इशारा किया तो उस ने चन्द अश'आर पढ़े, जिन का मफ़हूम येह है : “उस ने तवील अर्सा तक दूरियों को बरक़ार रखा, तो उसे मा'लूम हुआ कि उज़्र ख़्वाही के रास्ते कैसे हैं ? फिर भी दूरी बरक़ार रखने को उस ने पसन्द किया और फ़िराक़ के समन्दर में ग़ौता ज़न रहा। और वोह येह नहीं जानता था कि वफ़ा के साथ नाइन्साफ़ी के ज़ख़्म अगर्चे ख़त्म भी हो जाएं तब भी उन के निशानात नहीं मिटते।” इन अश'आर को सुन कर राहिब काफ़ी देर तक रोता रहा, फिर बोला : “मज़ीद अश'आर सुनाइये।” मुरीद ने दोबारा इसी तरह का शे'र पढ़ा, जिस का मफ़हूम येह है : “मैं हाज़िर हूं, ऐ वोह जो अज़ल से मुझे अपनी तरफ़ बुलाता रहा और अपने पोशीदा लुत्फ़ो करम से बार बार अपनी बारगाह की तरफ़ मेरी रहनुमाई फ़रमाता रहा (लेकिन मैं उस से रूग़र्दानी करता रहा)।” राहिब ने फिर चीख

मारी और कहा : “मैं हाज़िर हूं, ऐ मेरे मालिक ! मैं हाज़िर हूं, ऐ मेरे मालिक غُرُوجِلُ तू ने मुझे अपनी रहमत की तरफ़ बुलाया है, اَنَا اَشْهَدُ اَنْ لَا اِلَهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ या'नी मैं गवाही देता हूं कि **اَللّٰهُ** غُرُوجِلُ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मुहम्मद صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रसूल हैं ।” जुन्नार को तोड़ दिया, ईसाइयों का लिबास उतार दिया । हज़रते सय्यिदुना जुनैद رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی ने उस को गुदड़ी पहनाई और आप और आप का काफ़िला उस के इस्लाम लाने और उस की गर्दन जहन्नम से आज़ाद होने पर बहुत मसरूर हुए । आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی ने हज़ार दीनार निकाल कर उस को दिये जो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی के पास जम्अ थे । फिर वोह राहिब अपने गिर्जा घर वगैरा को छोड़ कर चेहरा छुपाए हुए कहीं चला गया, नहीं मा'लूम कि वोह किस सम्त गया ।

जब हज़रते सय्यिदुना जुनैद رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی का काफ़िला मक्कए मुकर्रमा पहुंचा और हरमे पाक में दाख़िल हुवा और तवाफ़ कर के जब सब एक जगह इकठ्ठे हुए तो एक शख्स को का'बतुल्लाह शरीफ़ के ग़िलाफ़ से लिपटा हुवा देखा, वोह कह रहा था : “ ऐ मेरे रब्ब غُرُوجِلُ तू ने मुझ पर अपना पर्दा उठा दिया हत्ता कि मैं ने तेरी वहदानिय्यत की गवाही दी, तू ने मुझे अपनी बारगाह में बुलाया तो मैं “लब्बैक” कहते हुए हाज़िर हो गया, ऐ वोह ज़ात जिस ने मुझे इरफ़ान की दौलत अता फ़रमाई तो मुझे उस की मा'रिफ़त हासिल हो गई ! मुझे अपनी रिज़ा के लिये हज़ करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा । हज़रते सय्यिदुना जुनैद رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی ने एक मुरीद से फ़रमाया : “देखो ! येह कलाम करने वाला कौन है ?” वोह मुरीद उस के पास गया तो देखा कि येह तो वोही राहिब है । जब उसे हज़रते सय्यिदुना जुनैद रَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی की ख़िदमत में हाज़िर होने के लिये कहा गया तो राहिब ने कहा : “ऐ भाई ! हज़रते सय्यिदुना जुनैद रَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی की बारगाह में मेरा सलाम अर्ज करना और येह भी अर्ज करना कि मैं ने आप को अपने पास ठहराया और खाना भी हाज़िर किया तो **اَللّٰهُ** غُرُوجِلُ ने मुझे इस्लाम की दौलत अता फ़रमाई और इज़ज़त के लिबास से नवाज़ा, यहां तक कि मैं एहराम बांध कर हरमे पाक में दाख़िल हो गया हूं, अब मेरी इज़ज़त व ज़िल्लत उसी के पास है ।” चुनान्वे, मुरीद लौटा और आप रَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی को उस के मुतअल्लिक़ बताया तो आप रَحْمَةُ اللّٰهِ तَعَالٰی खुद उठ कर उस के पास चले गए, और उसे सीने से लगा कर आंखों के दरमियान बोसा दिया और इरशाद फ़रमाया : “ऐ मेरे दोस्त ! आप को कुर्बे इलाही غُرُوجِلُ की लज़ज़त कैसे नसीब हुई ?” उस ने जवाब दिया : “ऐ मेरे सरदार ! जब मैं ने खन्डरात को छोड़ा और सफ़र इख़्तियार किये तो मुझ पर क़बूलिय्यत की हवाएं चलने लगीं, और **اَلलّٰهُ** غُرُوجِلُ ने अपनी बारगाह तक पहुंचने का दरवाज़ा खोल दिया, जिस से मेरे लिये अपने मक्सूद तक रसाई हासिल करना मुमकिन हो गया ।” फिर उस ने एक चीख़ मारी और ज़मीन पर तशरीफ़ ले आया । जब हम ने देखा तो उस की जान जाने आफ़रीं के सिपुर्द हो चुकी थी ।

मेरा हर अमल बस तेरे वासिते हो

कर इख़लास ऐसा अता या इलाही غُرُوجِلُ

तू अपनी विलायत की ख़ैरात दे दे

मेरे गौष का वासिता या इलाही غُرُوجِلُ

ख़ुदा غُرُوجِلُ की क़सम ! येह रब्बानी कोशिशें हैं और वहदानिय्यत में इख़लास इख़्तियार करने की निशानियां हैं ।

मरीजे इश्क़े इलाही غَزَّوَجَلَّ :

**अल्लाह** غَزَّوَجَلَّ के एक वली फ़रमाते हैं मैं ने एक गुलाम को देखा कि वोह राख बिछा कर उस पर लौट पौट हो कर शिद्दत से रो रहा था। मैं ने अपने एक दोस्त से कहा : “चलो, इस बीमार की इयादत करते हैं।” वोह बोला : “येह बीमार नहीं बल्कि मुहिब्बीन में से है और इसे “उबैद मजनून” कहा जाता है।” आप फ़रमाते हैं कि मैं उस की तरफ़ बढ़ा तो देखा कि वोह एक नौजवान है, और उस पर ऊन का जुब्बा है, वोह कह रहा है : “ऐ मेरे मालिको मौला ! तअज्जुब है उस पर जिसे तेरी मा’रिफ़त की दौलत हासिल हुई और तेरी महबूबत की मिठास से लुत्फ़ अन्दोज़ हुवा फिर तेरी बारगाह से कैसे हट गया ?” वोह नौजवान येही बात दोहराता रहा यहां तक कि उस पर ग़शी तारी हो गई। मैं ने अपने उस दोस्त से कहा : “**अल्लाह** غَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मजनून तो वोह होता है जो इस मक़ाम व मर्तबे तक न पहुंचा हो।” जब उसे इफ़ाका हुवा तो हमारी तरफ़ देख कर कहने लगा : “तुम मेरी तरफ़ क्यूं देख रहे हो ?” हम ने कहा : “हमारे पास एक दवा है, शायद ! वोह आप को इस बीमारी से शिफ़ा दे दे।” तो वोह कहने लगा : “इस की दवा उसी के पास है जिस ने मुझे इस बीमारी में मुब्तला किया है, लेकिन वोह चाहता है कि पहले मुझे बीमार करे फिर इस का इलाज करे।” मैं ने कहा : “येह बीमारी कैसे आती है ?” उस ने जवाब दिया : “हराम को छोड़ने, गुनाहों का इर्तीकाब न करने, **अल्लाह** غَزَّوَجَلَّ को हर लम्हा पेशे नज़र रखने, रात को तहज्जुद अदा करने जब कि लोग सो रहे हों, गुज़र बसर का सामान कम लेने, खुश हाली और तंग दस्ती की हालत में आफ़ात व बलिय्यात पर सब्र करने, पाक दामनी इख़्तियार करने, इस्तिताअत होते हुए कम खाने, मौत की तय्यारी करने, मुन्कर नकीर के सुवालात के जवाबात की तय्यारी करने और **अल्लाह** غَزَّوَجَلَّ के सामने हाज़िर होने की तय्यारी करने से इस बीमारी की दौलत नसीब होती है, इस के बा’द या तो जन्नत ठिकाना होगा या जहन्म में जाना होगा।” इतना कहने के बा’द वोह बुलन्द आवाज़ से रोने लगा, हमें भी रोना आ गया, हम ने उस से कहा : “हम आप के मेहमान हैं, लिहाज़ा हमारे लिये दुआ फ़रमाएं।” उस ने कहा : “मैं इस मैदान का शहसुवार नहीं (या’नी मैं इस मर्तबे का अहल नहीं)।” हम ने उसे क़सम दी कि आप ज़रूर दुआ फ़रमाएं तो उस ने दुआ देते हुए कहा : “**अल्लाह** غَزَّوَجَلَّ आप को जन्नत में जगह अता फ़रमाए, मेरी और आप की मौत आसान कर दे।” वोह वलिय्युल्लाह फ़रमाते हैं : “फिर हम वहां से लौट आए और हमारे दिल उस के हसीन अल्फ़ाज़ और वा’ज़ व नसीहत से ज़िन्दा हो गए और उस के कलाम और महबूबत की मिठास ने हमें बहुत राहत व मसरत पहुंचाई।”

ऐ मेरे इस्लामी भाइयो ! येह दीवानों के हालात हैं, पस ऐ गुमगीन व मिस्कीन रोने वाले ! तेरी अक्ल कहां है ?



## वज़ारत क्यूं तर्क की ?

ख़लीफ़ा हारुनुरशीद के वज़ीर हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मुशर्रफ़ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ एक दिन उस के सामने बैठे हुए थे। इन्होंने ने पूछा : “ऐ ख़लीफ़तल मुस्लिमीन अगर कोई शख्स आप के दरबार में दरख़्वास्त करे कि मेरा गुलाम फ़रार हो कर आप के पास आ गया है लिहाज़ा आप मुझे मेरा गुलाम लौटा दें, तो क्या आप उस को उस का गुलाम वापस कर देंगे ?” तो ख़लीफ़ा ने कहा : “क्यूं नहीं।” तो उन्होंने ने फ़रमाया : “जनाब ! मैं भी **अबुल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ का गुलाम हूँ, जो अपने मालिके हकीक़ी عَزَّ وَجَلَّ की बारगाह से फ़रार हो कर आया है, आप मुझे उस की ख़िदमत में हाज़िर होने के लिये छोड़ दें, ताकि मैं दोबारा उस की बारगाह में हाज़िर हो जाऊँ।” हारुनुरशीद और तमाम हाज़िरीन रो दिये फिर ख़लीफ़ा कहने लगे : “हम में से येह शख्स नजात पा गया, जब कि हम यहां बैठे इस की तरफ़ देख रहे हैं।” फिर ख़लीफ़ा हारुनुरशीद ने उन्हें जाने की इजाज़त दे दी तो वोह उसी वक़्त एहराम बांध कर “**لَيْكَ اللَّهُمَّ نَيْبُكَ**” कहते हुए हरमे पाक की तरफ़ चल पड़े। रास्ते में हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान घौरी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ उन से मिले और देखा कि वोह ज़मीन पर महवे ख़्वाब हैं और हवा मिट्टी उड़ा उड़ा कर उन के चेहरे पर डाल रही है। आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने इन को सलाम करने के बा'द दरयाफ़्त फ़रमाया : “ऐ अब्दुल्लाह ! सब कुछ छोड़ने का इवज़ **अबुल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने तुझे क्या दिया ?” वोह बोले : “ऐ सुफ़यान ! अपनी वज़ारत वग़ैरा छोड़ने का इवज़ **अबुल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ ने मुझे येह दिया कि उस ने मुझे अपनी रिज़ा अता फ़रमा दी जिस में, मैं इस वक़्त हूँ।” जब हरमे पाक के मशाइख़ को उन के आने की ख़बर हुई तो वोह सलाम पेश करने के लिये निकल पड़े। इन की ला-ग़री और गुबार आलूदगी को देख कर उन्होंने ने पूछा : “बे आबो गयाह चटियल मैदान का सफ़र आप ने कैसे बर्दाशत कर लिया ?” हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मुशर्रफ़ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने जवाब दिया : “जिस मुजरिम गुलाम का दिल उसे आका के दरवाज़े की तरफ़ ले जा रहा हो, वोह अपने आका की बारगाह में कैसे आता है ? अगर मुझे कुदरत होती तो मैं सर के बल आता।” इस के बा'द वोह रोने लगे, पूछा गया : “क्यूं रो रहे हैं ?” इरशाद फ़रमाया : “मैं ने अपना शफ़ीअ आगे भेज दिया है, शायद ! उस की शफ़ाअत क़बूल हो जाए।” और जब उन की नज़र बैतुल्लाह शरीफ़ पर पड़ी तो जोरदार चीख़ मारी और उन की रूह जिस्म से जुदा हो गई।

बे सबब बख़्शा दे न पूछ अमल

नाम गफ़ार है तेरा या रब्ब عَزَّ وَجَلَّ

## दुन्या व आख़िरत की पसन्दीदा चीज़ें :

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन सम्माक رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि एक मरतबा मेरे सामने शाम के एक पहाड़ में रहने वाले आबिद की ता'रीफ़ की गई तो मैं उस के पास चला गया और सलाम पेश किया, उस ने सलाम का जवाब देने के बा'द मुझ से पूछा : “ऐ इब्ने सम्माक ! आप को इस जगह कौन ले कर आया ?” मैं ने अर्ज़ की : “मैं ने आप की ता'रीफ़ सुनी और ज़ियारत के लिये हाज़िर हो गया।” येह सुन कर उस आबिद ने कहा : “आप को मेरे मुतअल्लिक़ बताने वाले ने धोका दिया है, मैं तो अपने नफ़्स को ग़ैरे खुदा में मुअल्लिक़ समझता हूँ। ऐ इब्ने सम्माक ! अक्लमन्द

तो वोह है जो हलाकत से पहले ख़लासी पाने और नजात हासिल करने की कोशिश करे।" जब मैं ने उस का कलाम सुना तो बे इख़्तियार रो पड़ा। जब मैं ने वापसी का इरादा किया तो पूछा : "आप की कोई हाजत हो तो फ़रमाइये?" उस ने कहा : "जो ऐसे वीराने में रहता हो, उसे किसी इन्सान से कोई हाजत नहीं हो सकती।" फिर वोह कहने लगा : "ऐ इब्ने सम्माक ! अगर तुम्हें किसी किस्म की हाजत हो तो बताइये?" मैं ने कहा : "मैं आप को **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की क़सम देता हूँ कि जो मैं पूछूँ, आप उस का जवाब देंगे। आप को दुनिया व आख़िरत की कौन सी चीज़ पसन्द है?" तो उस ने रोते हुए कहा : "अगर आप **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की क़सम न देते तो मैं कभी भी न बताता, मुझे दुनिया की येह चीज़ें पसन्द हैं : इताअत व इबादत पर कुव्वत, ज़ोहद, क़नाअत, ख़्वाहिशात से दूर रहने वाला नफ़्स और ख़ौफ़े खुदा से लबरेज़ दिल। और आख़िरत में मुझे येह पसन्द है कि मैं बारगाहे खुदावन्दी **عَزَّوَجَلَّ** से येह ए'लान सुनूँ कि जा, तुझे बख़्श दिया गया।"

फिर उस ने एक आहे सर्द दिले पुर दर्द से खींची और ज़मीन पर तशरीफ़ ले आया और सफ़रे आख़िरत पर रवाना हो गया। मुझे उस के हाल और मुआमले से बड़ी हैरत हुई। और मैं ने उस को गुस्ल व कफ़न देने का इरादा किया तो अपने पीछे से हातिफ़े ग़ैबी की आवाज़ सुनी : "ऐ इब्ने सम्माक ! फ़िक़््र न कर, क्यूँकि इस का मुआमला तेरे सिपुर्द नहीं।" फिर उस का जिस्म मेरी निगाहों से ओझल हो गया और उस को गुस्ल दिये जाने की आवाज़ सुनाई दी, लेकिन कोई दिखाई न दिया, और मैं ने किसी कहने वाले को येह कहते सुना : "ऐ **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** के दोस्त ! तुझे मुबारक हो, क़ियामत के दिन तुझे ख़ौफ़ से अम्न अता कर दिया गया है।"

इम्तिहां के कहाँ काबिल हूँ मैं प्यारे **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ**  
बे सबब बख़्श दे मौला **عَزَّوَجَلَّ** तेरा क्या जाता है

### शराब ख़ाना और सदाए हक़ :

हज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन अम्मार **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار** जो इराक़ के मशहूर मुबल्लिग़ थे, फ़रमाते हैं कि "एक रात आलमे ख़्वाब में मैं ने आस्मान में एक खुला हुवा दरवाज़ा देखा, उस से एक इन्तिहाई नूरानी फ़िरिश्ता उतरा और मुझ से कहने लगा : "ऐ इब्ने अम्मार ! खुदाए जब्बार व क़ह्हार, दिन रात का ख़ालिक **عَزَّوَجَلَّ** तुम्हें सलाम फ़रमाता है और हुक्म फ़रमाता है कि कल अपना मिम्बर शराब ख़ाने में रख कर वहीं दिल से नसीहत भरा बयान करना कि इस में हमारे बहुत से राज़ पोशीदा हैं और हम तुम्हें अपनी अज़ीब निशानियां दिखाएंगे।" चुनान्चे, मैं घबरा कर नींद से बेदार हुवा और सोचा कि येह अज़ीब मुआमला है, शायद ! मेरा वहम हो। मैं ने "إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ" पढ़ा और सोचने लगा कि सहीह अहादीष ना अहलों के सामने कैसे बयान की जाए ? और शराब के मटकों और प्यालों के दरमियान किस तरह कुरआने करीम की तिलावत की जाए ? नसीहतों और आयाते मुक़द्दसा को शराबियों के सामने और वोह भी शराब ख़ाने में कैसे पेश किया जाए ? चुनान्चे, मैं ने वुजू किया और दो रकअत नमाज़ पढ़ कर दोबारा सो गया। वोही फ़िरिश्ता ख़्वाब में दोबारा

नज़र आया और कहने लगा : “ऐ मन्सूर ! मैं **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ ही के हुक्म से आया हूं, **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : तुम उठो और शराब खाने में बयान करो तुम्हारी हिफ़ाज़त हमारे ज़िम्मे करम पर है।” चुनान्वे, मैं नींद से बेदार हुआ, मुझे इस मुआमले से बड़ा तअज्जुब हुआ, सोच व बिचार के बा’द मैं ने दिल में कहा : “मिम्बर उठाने के लिये किसी को लाता हूं।”

येह सोच ही रहा था कि किसी ने दरवाज़े पर दस्तक दी। मैं ने पूछा : “कौन ?” जवाब आया : “ऐ मेरे मोहतरम ! मैं मिम्बर उठाने के लिये हाज़िर हुआ हूं, आप चाहें तो आप के लिये शराब खाने के दरमियान मिम्बर रख दूं या मटकों के दरमियान ?” मैं ने पूछा : “तुझ पर येह राज़ कैसे मुन्कशिफ़ (या’नी ज़ाहिर) हुआ ?” उस ने बताया : “येह मुझ पर उसी ने ज़ाहिर किया है जो किसी शै को “कुन” (या’नी हो जा) फ़रमाता है तो वोह हो जाती है। हुज़ूर ! जो फ़िरिश्ता आज रात आप के पास आया था, वोही आप के बा’द मेरे पास भी आया था और मुझे हुक्म दिया कि मैं आप के लिये शराब खाने में मिम्बर बिछा दूं।” मैं ने कहा : “ऐ मेरे दोस्त ! अगर मुआमला ऐसा ही है जैसे तुम कह रहे हो तो वोही करो जिस का तुम्हें हुक्म दिया गया है।” जब सुब्ह खूब रोशन हो गई, तो मैं ने हुक्म की बजा आवरी में जल्दी की, मैं ने देखा कि तमाम शराबी हल्का बनाए इन्तिज़ार में बैठे हैं, बहर हाल मैं मिम्बर पर बैठ गया और कुछ देर के लिये सर झुका लिया फिर मैं ने अपना सर उठाया और नसीहत भरा बयान शुरू कर दिया :

الْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ सब खूबियां उस ज़ात के लिये हैं जिस ने अपने महबूब बन्दों के दिलों को अपने कुर्ब की लज़्ज़त अता फ़रमाई और उन्हें अपने मयख़ाने विसाल में दाख़िल किया और अपनी शराबे तहूर से सैराब कर के अपने गैर से बे ख़बर कर दिया। और मुहिब्ब अपने महबूब के इलावा किसी शै में मशगूल नहीं होता। जब उस रब्बे जलील **عَزَّوَجَلَّ** ने उन पर तजल्ली फ़रमाई तो जमाले कुदरत के मुशाहदे के वक़्त उन के होश उड़ गए। ऐ ख़्वाहिशात की शराब में बद मस्त होने वालो ! अगर तुम महबूबते इलाही **عَزَّوَجَلَّ** के मयख़ाने में दाख़िल हो जाओ और शराब के मटकों की बजाए कुर्ब के घड़ों का मुशाहदा करो, बख़्शने वाले रब्ब **عَزَّوَجَلَّ** की बारगाह में साहिबे वफ़ा मर्दों को देखो कि उन पर खुशी व मसरत के जाम गर्दिश कर रहे हैं, ख़ालिस शराबे तहूर के प्यालों ने उन को दुन्या की शराब से बे परवाह कर दिया है, उन के प्याले उन की खुशी व मसरत है। उन की शराब ज़िक्रे इलाही **عَزَّوَجَلَّ** है। उन की खुशबू उन का कुरआन है। उन की शम्अ उन की समाअत है। उन के नग़मे तौबा व इस्तिग़फ़र हैं। जब रात तारीक होती है और सब लोग सो जाते हैं तो रब्बे काइनात **عَزَّوَجَلَّ** उन पर तजल्ली फ़रमाता और पर्दे उठा देता है, और उस के महबूब बन्दे ऐसे जहां का मुशाहदा करते हैं कि जिस का तसव्वुर किसी की अक्ल में आया, न किसी के जेहन में इस का ख़याल गुज़रा।

ऐ अक्ल मन्दो ! ज़रा गौर तो करो कि अख़रोट और उस के छिलके के दरमियान कितना फ़ासिला होता है, दिलों की टेहनियों को हरकत देने वाले और हज़रते सय्यिदुना



या'कूब व यूसुफ़ علی نبینا وعلیهما الصلوٰۃ والسلام को मिलाने वाले ने मुझे यहां बैठने का इस लिये हुक्म फ़रमाया है ताकि वोह तुम्हारे गुनाहों और नाफ़रमानियों को बख़्शा दे और अफ़व व रिज़ा की दौलत का ताज तुम्हारे सर पर रख दे, माज़ी के गुनाहों को मिटा दे, मुजरिमों से दर गुज़र फ़रमाए और धुत्कारे हुआओं और नाफ़रमानों की तौबा क़बूल फ़रमाए। (अरे ! ग़ौर करो कि) महबूबे हकीकी عَزَّوَجَلَّ मौजूद है, उस की रिज़ा की आंख तुम्हें देख रही है, और मुसीबत तुम से टाल दी गई है, तो क्या तुम में तौबा का अज़्मे मुसम्मम करने वाला कोई नहीं ? बेशक सुल्ह के जाम तुम्हारे इर्द गिर्द घूम रहे हैं और तुम पर सखावत की हवाएं चल रही हैं।”

हज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन अम्मार رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْهِ फ़रमाते हैं : “मेरा कलाम व बयान अभी मुकम्मल न हुवा था कि नशे में मदहोश व मजनून एक नौजवान हाथ में शराब से भरा प्याला लिये मेरे सामने खड़ा हो गया और कहने लगा : ‘ऐ इब्ने अम्मार ! बताइये, क्या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे इस हालत में भी क़बूल फ़रमा लेगा ?’ मैं ने कहा : ‘ऐ मेरे दोस्त ! कैसे नहीं क़बूल फ़रमाएगा हालांकि वोह खुद कुरआने हकीम में इरशाद फ़रमाता है :

﴿2﴾ وَهُوَ الَّذِي يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهِ

(प २०, शूरो: २०)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और वोही है जो अपने बन्दों की तौबा क़बूल फ़रमाता ।

येह सुन कर उस नौजवान ने प्याला हाथ से फेंका और हैरान व सरगर्दा बाहर निकल गया और अपनी ग़फ़लत की नींद से बेदार हो गया। इस के बा'द नशे में चूर एक बुढ़ा शख्स हाथ में तम्बूरा (एक किस्म का बाजा) लिये खड़ा हो कर कहने लगा : “ऐ इब्ने अम्मार ! क्या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस शख्स की तौबा क़बूल फ़रमाएगा जिस की तमाम उम्र नाफ़रमानी और गुनाहों में जा'एअ हो गई है ?” मैं ने कहा : “ऐ मोहतरम ! वोह कैसे न बख़्शेगा, हालांकि वोह खुद फ़रमाता है : “

وَإِنِّي لَغَفَّارٌ (प १६, अल-अन्ब्या: ८४)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक मैं बहुत बख़्शाने वाला हूं।”

उस ने तौबा करने वालों को खुश ख़बरी दी है और उन के लिये रहमो करम का दरवाज़ा खोल दिया है।”

जब उस बुढ़े ने मेरा कलाम सुना तो तम्बूरा फेंक दिया, और ग़मगीन हालत में जिधर रुख़ था उधर निकल गया। फिर मेरे सामने शराब से खेलता हुवा एक नौजवान खड़ा हुवा जिस पर वज्द और मस्ती छाई हुई थी, वोह कहने लगा : “ऐ मन्सूर ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हें हुक्म दिया है कि मुझ से अहद लो, अब तो अहद का ज़माना गुज़र चुका है और वा'दा पूरा होने वाला है और मतलूब व मक़सूद के हुसूल का वक़्त आ चुका है।” मैं ने पूछा : “ऐ नौजवान ! तुम्हें इस मक़ामे कुर्ब पर किस ने फ़ाइज़ किया ?” उस ने जवाब दिया : “मेरी ही वजह से ख़्वाब में आप को वा'ज का हुक्म दिया गया और आप के पास **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से फ़िरिश्ता आया।” मैं ने कहा : “ऐ मेरे दोस्त ! येह तो बताओ कि तुम पर येह राज़ किस ने मुन्कशिफ़ किया ?” उस ने जवाब में येह आयते मुबारका तिलावत की :

﴿3﴾ يَعْلَمُ خَائِنَةَ الْأَعْيُنِ وَمَا تُخْفِي الصُّدُورُ

(प २६, المؤمن: १९)

तर्जमए कन्जुल ईमान : **अल्लाह** जातना है चोरी छुपे की निगाह और जो कुछ सीनों में छुपा है ।

फिर कहने लगा : ‘ऐ मन्सूर ! जिस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लुप्तफो करम की खुशगवार हवाएं चलती हैं वोह साहिबे कश्फ बन जाता है ।’ मैं ने फिर दरयाप्त किया : ‘ऐ मोहतरम ! लुप्तफो करम की येह खुशगवार हवाएं तुम पर कब चलीं ?’ वोह बोला : ‘‘आज रात, जब कि आप सो रहे थे ।’’ फिर कहने लगा : ‘‘ऐ इब्ने अम्मार ! आप मेरी रहनुमाई और उस की बारगाह में कुर्ब का सबब बने हैं, तो क्या उस की बारगाह में आप को किसी किस्म की कोई हाजत है ?’’ मैं ने पूछा : ‘‘तुम्हारी मुराद क्या है ?’’ कहने लगा : ‘‘ऐ मन्सूर ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाहे कुर्ब में, ऐसे दोस्तों के दरमियान जिन पर महबूबत व उन्स के प्याले गर्दिश करते हैं, और हिजाब उठा दिये जाते हैं, अगर आप मुझे देखना चाहते हैं तो कल वहां मुझ से मुलाकात कीजियेगा ।’’ वोह हवा में उड़ता हुवा मेरी निगाहों से गाइब हो गया, और मैं उसे देर तक टिक-टिकी बांधे देखता रहा । फिर मैं ने उसे चन्द अशआर पढ़ते सुना, जिन का मफहूम येह है :

‘‘मेरे महबूबे हकीकी عَزَّوَجَلَّ ने मुझे पुकारा है, उस से विसाल की घड़ियां करीब आ गई हैं । अब अगर उस ने पूछा कि तू क्या चाहता है तो मैं कह दूंगा : तेरी महबूबत का ऐसा जाम कि जिस के नशे में अर्सीए दराज तक हैरान व सरगर्दा रहूं । ऐ मेरी आंखों के नूर ! मैं तुझ को ऐसी नजर से देखना चाहता हूं जिस में दूरी की बजाए सिर्फ कुर्ब हो कि अब इस शौक में तो मेरी अक्ल खत्म हो चुकी है । ऐ मेरे महबूब ! मेरी ज़बान पर सिवाए तेरे जिक्र के कुछ नहीं । और जब से तू ने मुझे विसाल की खुश ख़बरी दी है और मैं ने इस पर लब्बैक कहा है तो उस के बा’द कभी भी हाजिर होने में सुस्ती का मुजाहरा नहीं किया । हालांकि मेरी हालत तो येह थी कि लगातार गुनाहों में डूबा हुवा था लेकिन तू ने मुझ पर करम किया और मेरे दिल की बीमारियों का इलाज अपने विसाल से किया । मुझे अपनी बारगाह से दूर न किया । मैं गुनाहों के गढ़े के कनारे पर था लेकिन तू ने मुझे इस में गिरने से बचा लिया । और मुझे उस रास्ते की पहचान करवा दी जो तेरी बारगाह तक पहुंचाने वाला है । अब मैं इस पर चल कर यकीनन अपना मक्सूद पा लूंगा ।

रहूं मस्तो बे खुद मैं तेरी विला में

पिला जाम ऐसा पिला या इलाही عَزَّوَجَلَّ

وَصَلَّى اللَّهُ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِهِ وَصَحْبِهِ وَسَلَّمَ



बयान 26 :

## आलिहीन के फग़ाइल

हम्मे बारी तझाला :

सब खूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जो अपनी अज़मत व जलाल में ग़ालिब व क़वी है, अपने कमाल में यक्ता है, अपने अफ़ाल की ईजाद में तन्हा है जिस ने हिक्मत के जवाहिर को अहले मा'रिफ़त के कुलूब के सन्दूक में रखा, और इन पर अपने पुख़्ता ताले लगा दिये, उन को अपनी बारगाह में बुलाया और खुद उन की मदद की तो वोह सब को छोड़ कर उस की बारगाह में निकल पड़े, और जिन्दगी के सफ़र में मा'मूली शै पर क़नाअत की और रात के वक़्त इस तरह निकले जैसे कैदी कैद से निकलता है, और रात की तारीकी में अपने मौला عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में नमाज़े तहज्जुद में क़ियाम किया, फिर जब सुब्ह हुई तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें अपना फ़ज़लो करम अता कर के उन पर एहसान फ़रमाया, उन्होंने ने महबूबे हकीकी عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा की खातिर मशक्कतें बर्दाश्त कीं, आफ़ात की कड़वाहट पर सब्र किया, धोका देही और दूरी से बचते रहे, और सब्र पर इस्तिक्ामत के साथ काइम रहे हालांकि हर कोई इस पर क़ादिर नहीं होता, उन्होंने ने अपना जानो माल उस की महब्बत में कुरबान कर दिया तो उन्हें फ़रहत व मसरत हासिल हुई और मुहिब्ब तो हमेशा अपने महबूब पर मालो जान लुटाने के लिये तय्यार रहता है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें अपनी हम नशीनी के जाम से सैराब फ़रमाया तो वोह ऐसे दीवाने हो गए कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की फ़र्ते महब्बत से उन पर कैफ़ो सुख़र तारी होने लगा, और वोह सब अपने आस पास से बे ख़बर हो गए, पस अरिफ़ीन ने अपनी नींद की लज़्ज़त को तर्क कर दिया, खाइफ़ीन ने आजिज़ी व इन्क़िसारी और खुशूअ व खुजूअ की चादर ओढ़ ली, गुनहगार रो रो कर अशक़ बरसाने लगे, दीवानगाने इश्क़ अपनी ठन्डी छाऊं और गहरे साए से निकल पड़े, ज़लील व हकीर अपनी दूरी की वजह से हसरत व अफ़सोस में गौता ज़न हो गए, नाफ़रमान अपने वज्द (या'नी इश्क़ व महब्बत) की आग में जलने लगे और उश्शाक़ अपनी हृद से निकल कर ज़बाने हाल से कहने लगे : “ऐ वोह ज़ात जिस ने मेरे दिल को अपने विसाल का जाम पिलाया और अपने हुस्नो जमाल का नज़ारा कराने के लिये इस जाम को मेरे लिये मुबाह फ़रमाया।”

ऐ मेरे इस्लामी भाइयो ! वोह लोग कहां गए जिन के बारे में फ़रमाया गया :

كَانُوا قَلِيلًا مِّنَ النَّاسِ مَا يَهْجَعُونَ ۚ وَبِالْأَسْحَارِ هُمْ يَسْتَفْهِمُونَ (پ ۲۶، النّٰریت: ۱۸۰، ۱۷)

तर्जमए कन्जुल ईमान : वोह रात में कम सोया करते और पिछली रात इस्तिग़फ़ार करते।

और कहां हैं वोह लोग जिन की शान यूं बयान की गई :

تَسْجَأُفِيْ جُنُوْبِهِمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ (پ ۲۱، السّٰحٰة: ۱۶)

तर्जमए कन्जुल ईमान : उन की करवटें जुदा होती हैं ख़ाब गाहों से।  
कहां हैं वोह लोग जो अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में रुकूअ व सुजूद करते हुए रातें गुज़ारते ? और कहां हैं वोह जिन्हें हिदायत व तौफीक़ की दौलत से सरफ़राज़ किया गया ?



## कामयाब नौमुस्लिम :

हजरते सय्यिदुना अब्दुल वाहिद बिन जैद رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि हम फुकरा के एक क़ाफ़िले की मईय्यत में समन्दर के सफ़र पर निकले, तेज़ हवा चली और हमें समन्दर के एक जज़ीरे की तरफ़ बहा कर ले गई। हम ने वहां एक शख्स को बुत परस्ती करते हुए देखा। हम ने उस से पूछा : “तुम किस की इबादत कर रहे हो ?” उस ने अपनी उंगली से बुत की तरफ़ इशारा किया। हम ने कहा : “ऐ मिस्कीन ! हमारे साथ कश्ती में एक रफ़ीक़ है जो इस तरह की चीज़ों का बहुत अच्छा कारीगर है और येह बुत इस लाइक़ नहीं कि इस की इबादत की जाए।” तो वोह कहने लगा : “फिर तुम लोग किस की इबादत करते हो ?” हम ने जवाब दिया : “हम तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत करते हैं।” उस ने पूछा : “**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ कौन है ?” हम ने कहा : “जिस का अर्श आस्मान पर है, जिस की सल्तनत ज़मीन में है, जो समन्दर को रास्ता बना देता, ज़िन्दों और मुर्दों में उसी का फैसला नाफ़िज़ होता है।” उस ने फिर पूछा : “तुम्हें येह सब कैसे मा'लूम हुवा ?” हम ने कहा : “उस ने हमारी तरफ़ अपना एक रसूल भेजा जिस ने हमें येह सब कुछ बताया।” उस ने फिर पूछा : “रसूल ने क्या किया ?” हम ने जवाब दिया : “जब उस ने बादशाहे हकीकी عَزَّوَجَلَّ का पैग़ाम मुकम्मल तौर पर पहुंचा दिया तो उस ने अपने रसूल को अपने पास वापस बुला लिया।” उस ने फिर पूछा : “क्या उस रसूल ने तुम्हारे पास **अल्लाह** तआला की कोई निशानी भी छोड़ी है ?” हम ने कहा : “क्यों नहीं, हमारे पास **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की किताब है।” उस ने कहा : “तो फिर मुझे दिखाओ क्यूंकि बादशाहों की किताबें बहुत अच्छी होती हैं।”

हम मुस्हफ़ शरीफ़ लाए तो उस ने कहा : “मैं पढ़ना नहीं जानता।” हम ने एक सूरत पढ़ कर सुनाई तो वोह रोने लगा हत्ता कि सूरत ख़त्म हो गई। फिर वोह बोला : “ऐसे कलाम वाले ही के लिये ज़ैबा है कि उस की नाफ़रमानी न की जाए।” चुनान्चे, वोह इस्लाम की दौलत से सरफ़राज़ हो गया, हम ने उस को अपने साथ सुवार कर लिया और उसे अहकामे शरीअत और कुरआने करीम की कुछ आयात सिखाई। जब रात हुई तो हम नमाज़े इशा पढ़ कर सोने के लिये अपने ठिकानों पर चले गए, उस ने पूछा : “ऐ लोगो ! जिस मा'बूद की तरफ़ तुम ने मेरी रहनुमाई की है, क्या वोह सोता है ?” हम ने कहा : “नहीं, वोह ज़िन्दा है, क़य्यूम है, उसे न ऊंच आती है, न नींद।” उस ने कहा : “तुम कितने बुरे लोग हो कि तुम सोते हो और तुम्हारा मालिक नहीं सोता।” हमें उस की येह बात बड़ी पसन्द आई। फिर जब हम आबादी तक पहुंच गए और जुदा होने का इरादा किया तो हम ने चन्द दिरहम इकठ्ठे कर के उसे दिये और कहा : “येह रख लें, ज़रूरत के वक़्त खर्च कर लीजियेगा।” तो उस ने नाराज़ी का इज़हार किया और कहने लगा : “**لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** या'नी **अल्लाह** के सिवा कोई मा'बूद नहीं। तुम ने जिस रास्ते की तरफ़ मेरी रहनुमाई की खुद उस पर नहीं चलते। मैं समन्दर के एक जज़ीरे में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को छोड़ कर बुत की इबादत करता था, उस वक़्त उस ने मुझे हलाकत में न डाला तो अब कहां डालेगा ? अब तो मुझे उस की मा'रिफ़त भी हासिल हो चुकी है।” हम ने उसे छोड़ दिया, और वोह चला गया।

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल वाहिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَاحِد फ़रमाते हैं : “चन्द दिन बा’द किसी ने मुझे उस के मुतअल्लिक़ बताया कि वोह फुलां जगह मौत की सख़्तियों से दो चार है।” चुनान्चे, मैं उस के पास गया और पूछा : “आप को किसी किस्म की हाज़त हो तो फ़रमाइये ?” उस ने जवाब दिया : “मेरी सब हाज़तें उस ने पूरी कर दी हैं जिस की मैं ने मा’रिफ़त हासिल की है।” मैं उस से गुफ़्तगू कर रहा था कि इस दौरान मुझ पर नींद का ग़लबा हो गया। मैं ने ख़्वाब में एक बाग़ देखा, जिस में एक कुब्बा है, और उस में एक ऐसा तख़्त है जिस पर सूरज व चांद से भी ज़ियादा ख़ूब सूरत चेहरे वाली हूर बैठी कह रही है : “मैं तुम्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम देती हूँ कि उसे जल्दी से मेरे पास भेज दो।” मैं बैदार हुवा और देखा तो उस की रूह क़फ़से उन्सुरी से परवाज़ कर चुकी थी। मैं ने उस को कफ़न दे कर क़ब्र में दफ़न कर दिया और जब मैं सोया तो ख़्वाब में उसी कुब्बे को देखा जिस को पहले देखा था। वोह नौ मुस्लिम भी उस कुब्बे में था। हूर उस की एक जानिब खड़ी हुई थी और वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमाने आलीशान की तिलावत कर रहा था :

﴿۱﴾ وَالْمَلَكُ يَدْخُلُونَ عَلَيْهِمْ مِنْ كُلِّ بَابٍ ۝

سَلَامٌ عَلَيْهِمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ ۝

(پ ۱۳، الرعد: ۲۳-۲۴)

ऐ मेरे इस्लामी भाइयो ! फ़क़ की पोशाक जैबे तन किये रखो, क्यूंकि उस पर इज़ज़त व वक़ार के अन्वार हैं।

﴿۲﴾ وَلَكُمْ فِيهَا جَمَالٌ حِينَ تُرْيَهُنَّ وَحِينَ

تَسْرَحُنَّ ۝ (پ ۴، النحل: ۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और फिरشته हर दरवाज़े से उन पर येह कहते आएंगे सलामती हो तुम पर तुम्हारे सन्न का बदला तो पिछला घर क्या ही ख़ूब मिला।

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और तुम्हारा उन में तजम्मुल है जब उन्हें शाम को वापस लाते हो और जब चरने को छोड़ते हो।

मदीने के ताजदार, दो आलम के मालिको मुख़्तार, बिइज़्ने परवर दगार صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : “बहुत से परागन्दा सर और गुबार आलूद ऐसे हैं जिन्हें कोई हैषियत नहीं दी जाती, अगर वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर (किसी बात की) क़सम खा लें तो वोह उन की क़सम पूरी फ़रमा दे।”

(جامع الترمذی، ابواب المناقب، باب مناقب البراء بن مالک، الحديث ۳۴۵۴، ص ۴۷-۲۰)

बिखरे बाल, आजुर्दा सूरत होते हैं कुछ अहले महब्वत

बद्र मगर येह शान है, उन की बात न टाले रब्बुल इज़ज़त

**शुद्धी में ला’ल :**

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन मुन्कदिर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالٰی फ़रमाते हैं : “मैं मस्जिदे नबवी शरीफ़ صَلَّام وَالسَّلَام علی صَاحِبِهَا الصَّلٰوة وَالسَّلَام में रात के वक़्त एक सुतून के पास बैठा करता था। एक साल अहले मदीना क़हूत में मुब्तला हो गए। बारिश के लिये दुआ करने सब शहर से बाहर निकल पड़े लेकिन फिर भी बारिश न हुई। जब रात हुई तो मैं इशा की नमाज़ के बा’द हस्बे आदत सुतून से टेक लगा कर बैठ गया। इसी अषना में एक शख़्स जिस के चेहरे पर ज़र्दी ग़ालिब

थी, चादर ओढ़े हुए सुतून की जानिब बढ़ा। मैं उस सुतून के पीछे हो गया और इस को ख़बर न हुई। उस ने दो रकअत नमाज़ अदा करने के बा'द बैठ कर दुआ मांगते हुए अर्ज़ की : “या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तेरे हबीब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के हरम वाले बारिश की दुआ के लिये निकले लेकिन बारिश न हुई, ऐ मौला ! तुझे अपने हबीब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की इज़्ज़त का वासिता ! बारिश बरसा दे।”

हज़रते सय्यिदुना इब्ने मुन्कदिर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि उस ने अभी अपने हाथ न हटाए थे कि मैं ने बिजली के गरजने की आवाज़ सुनी और साथ ही आस्मान से बारिश बरसने लगी हत्ता कि मेरा घर वापस लौटना भी मुश्किल हो गया। जब उस को बारिश का इल्म हुवा तो उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ऐसी हम्दो षना की जैसी मैं ने आज तक न सुनी थी। फिर वोह खड़ा हो गया और नमाज़ पढ़ता रहा हत्ता कि फ़ज़्र का वक़्त करीब हो गया। फिर उस ने वित्र अदा किये और दो रकअत नमाज़ अदा की। फिर नमाज़ की इक़ामत कही गई। लोगों ने नमाज़ अदा की। उस ने भी उन के साथ मिल कर नमाज़ पढ़ी। जब इमाम साहिब ने सलाम फेरा तो वोह जल्दी से बाहर की तरफ़ चल पड़ा। मैं भी उस के पीछे हो लिया यहां तक कि वोह मस्जिद के दरवाज़े तक पहुंच गया और चादर हटा कर बारिश के पानी में गौता ज़न हो गया। मैं उसे हसरत व चाहत की निगाहों से देखता रह गया। मा'लूम नहीं कि इस के बा'द वोह कहाँ गया।”

**प्यारे इस्लामी भाइयो !** हर मुसाफ़िर हाजी नहीं होता, न हर घर मक्कए मुकर्रमा है, न हर जादे राह मक्सूद तक पहुंचाता है, न हर पहाड़ अरफ़ात है और न ही अरफ़ात में ठहरने वाला हर शख्स वुकूफ़े अरफ़ा करता है।

### एक जन्नती नौजवान :

हज़रते सय्यिदुना जुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْفَوَى फ़रमाते हैं कि एक साल मैं ने बैतुल्लाह शरीफ़ का हज किया, वुकूफ़े अरफ़ा के दौरान मैं ने एक नौजवान को देखा जिस पर जर्दी, ला-गरी, परेशानी और अफ़सूदगी के आधार नुमायां थे। मैं समझ गया कि इसे महब्बते इलाही عَزَّوَجَلَّ का कुछ हिस्सा अता किया गया है। मैं ने उस को येह कहते हुए सुना : “मैं तेरी बारगाह में कैसे हाज़िरी दूं? क्या नाफ़रमान ज़बान ले कर आऊं या ऐसा दिल ले कर आऊं जो तेरी बारगाह से दूर है? या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ येह लम्हात कितने हसीन हैं जब कि तू मेरे साथ महुवे कलाम है और इस जगह तू मुझे पुकार रहा है।”

हज़रते सय्यिदुना जुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْفَوَى फ़रमाते हैं कि मैं उस की तरफ़ बढ़ा। जब उस ने मुझे देखा तो कहने लगा : “मरहबा ! ऐ जुन्नून !” मैं ने पूछा : “आप ने मुझे कैसे पहचान लिया ?” उस ने जवाब दिया : “आप के मुतअल्लिक़ मुझे उस ज़ात ने ख़बर दी है जो मुझे पहचानती और मुझ से महब्बत करती है।” फिर कहने लगा : “ऐ जुन्नून ! उस की महब्बत ने मुझे लाग़र कर दिया है, मा'लूम नहीं, मैं उस का कुर्ब हासिल करने में कब कामयाब होऊंगा ? और कब महबूबे हकीकी عَزَّوَجَلَّ जूदो करम करते हुए पर्दे उठाएगा ?” मैं ने कहा : “आप कहां से आए हैं ?”



तो उस ने जवाब दिया : “दिल के शहर से आया हूं और बारगाहे रब्बुल इज्जत में हाज़िरी का इरादा है।” मैं ने पूछा : “आप के पास कोई जादे राह है?” उस ने जवाब दिया : “जी हां, उस की शराबे उन्स व महब्बत का एक क़तरा है, मुझे उम्मीद है कि मैं इस से मुक़द्दस बारगाह में पहुंच जाऊंगा।” मैं ने पूछा : “आप के पास कोई सुवारी है?” उस ने जवाब दिया : “जी हां ! निय्यत की सफ़ाई, दुन्या से मुकम्मल बे रग़बती और महबूबे हकीकी عَزَّوَجَلَّ की पाकी व तस्बीह की सुवारी मेरे पास है।” फिर कहने लगा : “ऐ जुन्नून ! मुझ से दूर हो जाएं, वोह घड़ी कितनी बुरी है जो उस की इताअत के बिगैर गुज़रे।” फिर वोह मुझे छोड़ कर चला गया। जब मैं मिना में पहुंचा तो मैं ने उस को देखा कि वोह लोगों को अपने जानवरों की कुरबानियां करते हुए देख रहा था। फिर उस की आंखों से सैले अश्क रवां हो गया और उस की हिचकियां बढ़ गईं, उस के ख़ौफ़ व ख़शिय्यते इलाही عَزَّوَجَلَّ में इज़ाफ़ा हो गया तो वोह अर्ज गुज़ार हुवा : “इलाही عَزَّوَجَلَّ तेरा कुर्ब हासिल करने के लिये लोग अपनी अपनी कुरबानियां पेश कर रहे हैं, मेरे पास तो कुछ भी नहीं, एक नाफ़रमान गाफ़िल जान है, तेरा कुर्ब हासिल करने के लिये उसी को मैं तेरी बारगाह में बतौर नज़राना पेश करता हूं, अगर तू इस को क़बूल फ़रमा ले तो इस को जल्द अज़ जल्द उठा ले।” फिर उस ने एक चीख़ मारी और एक आहे सर्द दिले पुर दर्द से खींची और ज़मीन पर तशरीफ़ ले आया। फिर मैं ने हातिफ़े ग़ैबी की आवाज़ सुनी : “तअज्जुब है ! उस नौजवान को जन्नतुल फिरदौस जाने की कितनी जल्दी है !”

हज़रते सय्यिदुना जुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं कि “मैं उस के सिरहाने खड़ा सोच व बिचार कर रहा था कि अचानक एक बुढ़िया दिखाई दी कि उस ने खुद को उस के क़रीब गिरा दिया, और रन्जो ग़म से निढ़ाल हो कर आंसू बहाते हुए कहने लगी : “तुझे मुबारक हो ! ऐ वोह शख्स जिस की आदत कुरबानी देना और वफ़ादारी करना थी ! जो अपने मालिक عَزَّوَجَلَّ की बारगाह से कभी गाफ़िल न रहा और जो इताअत की चादर ओढ़ कर रातों में तवील क़ियाम करता रहा, जो शाम अप्सुर्दगी में गुज़ारता और सुब्ह बीमारी में।” हज़रते सय्यिदुना जुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : “मैं ने उस से पूछा : “इस नौजवान से आप का क्या तअल्लुक़ है ?” उस ने जवाब दिया : “येह मेरा बेटा है, जंगलात में ज़िन्दगी के अय्याम गुज़ारता, हर साल यहां मीक़ात में हम एक दूसरे से मुलाक़ात करते, फिर मैं अगले साल तक इस को देखने के लिये वापस न आती, इस मरतबा जब मैं अरफ़ात में ठहरी और हस्बे मा'मूल इस को तलाश किया तो हातिफ़े ग़ैबी ने आवाज़ दी : “तेरे बेटे का इन्तिक़ाल हो चुका है और उस की रूह को आ'ला दर्जात पर पहुंचा दिया गया है।” इस के बा'द उस बुढ़ी औरत ने दुआ की : “ऐ मेरे मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ उस तअल्लुक़ की क़सम जो तेरे और मेरे दरमियान तन्हाई में तै हुवा ! और तेरी उस महब्बत की क़सम जो तू ने मेरे दिल में डाल रखी है ! मेरी नाफ़रमान जान को इस दारे फ़ानी से नजात दे कर अपने बेटे के साथ बाकी रहने वाले घर में पहुंचा दे।” हज़रते सय्यिदुना जुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं कि फिर उस ने एक लम्बा सांस लिया और अपने बेटे के पहलू में गिर गई और उस की रूह भी ख़ालिके हकीकी عَزَّوَجَلَّ से जा मिली।

## सल्तनत दे कर दुश्वेशी खरीदी :

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم खुरासान के बादशाह थे, एक दिन अपने लश्कर के दरमियान घोड़े पर सुवार थे कि आप ने घोड़े की ज़ीन से किसी पुकारने वाले की निंदा सुनी : “ऐ इब्राहीम ! हमारे बन्दे इस लिये नहीं पैदा किये गए, और न ही हम से महबूब करने वालों को इस का हुक्म दिया गया है, लिहाज़ा अपनी चाहत को मेरी चाहत पर कुरबान कर दो, वगर्ना तुम अहले इनाद में से हो जाओगे।” आप फ़रमाते हैं : “उस आवाज़ ने मेरे दिल में तीर पैवस्त कर दिया, मैं ने अपने मुल्क व सल्तनत और अहलो इयाल को छोड़ा और उसी की तरफ़ हैरान व परेशान निकल गया जिस पर मुझे भरोसा व ए’तिमाद है।”

जब हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم अपने मुल्क व सल्तनत को छोड़ कर मालिके हकीकी عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में हाज़िरी के लिये सफ़र करते हुए एक गाउं में दाख़िल हुए, तो आप ग़म से निढाल हो चुके थे। रास्ते में अपने रफ़ीक़ से बिछड़ गए, सात दिन तक न तो पानी का घूंट पिया और न ही कोई लुक़्मा खाया। शैतान को आप की सदाक़त पर ग़ैरत आई, क्योंकि वोह हकीक़त के बादशाहों और त़रीक़त के सलातीन, अकाबिरीन पर ग़ैरत करता है। और उसे ग़ैरत आनी भी चाहिये क्योंकि इन्हों ने वोह मुबारक लिबास पहन लिया जो शैतान से उतार लिया गया था, और इन्हों ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के कुर्ब को हासिल कर लिया जिस से शैतान को धुत्कारा गया था। चुनान्चे, शैतान एक नेक बुजुर्ग की शक़ल में ज़ाहिर हुवा और कहने लगा : “ऐ इब्राहीम ! बात सूनो, मैं तुम्हें नसीहत करता हूँ कि वोह महबूब जिस की वजह से तुम ने सल्तनत छोड़ दी और जिस की महबूबत में तुम ने मसाइब व आफ़ात और हलाक़त के घोड़ों पर सुवारी की, उस ने तो तुम्हारा नुक़सान किया और तुम्हें मौत के करीब कर दिया।” तो आप ने इरशाद फ़रमाया : “जब अपने मक़सूद के ज़ाएअ हो जाने से अमान हासिल हो जाए तो मौत के आने में कोई नुक़सान नहीं।”

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم अभी इसी हैरानगी के आलम में थे कि एक ख़ूब सूरत शख़्स आप के पास आया, जिस की खुशबू सब को मुअ़त्तर कर रही थी और कहने लगा : “ऐ इब्राहीम ! क्या आप इस्मे आ’ज़म सीखना चाहते हैं जिस की बदौलत आप को पानी पिलाया जाए और खाना भी खिलाया जाए।” आप ने फ़रमाया : “जी हां।” तो उस ने आप को इस्मे आ’ज़म सिखा दिया। आप ने उस से पूछा : “आप कौन हैं?” जवाब दिया : ‘मैं आप का भाई ख़िज़्र (عَلَى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام) हूँ।” फिर हज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र (عَلَى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام) ने इरशाद फ़रमाया : “अगर आप चाहें तो मेरी सोहबत इख़्तियार कर सकते हैं।” आप ने फ़रमाया : “नहीं।” उन्होंने ने पूछा : “क्यूँ?” तो इरशाद फ़रमाया : “इस लिये कि सोहबत, शिर्क़त से हासिल होती है और मैं जिस की महबूबत में गिरिफ़्तार हूँ, उस में किसी को शरीक़ नहीं करना चाहता, और न ही इस के इलावा किसी की सोहबत इख़्तियार करना चाहता हूँ और मैं किसी ग़ैर की सोहबत इख़्तियार करने में उस से डरता हूँ क्योंकि वोह बहुत ज़ियादा ग़ैरत मन्द है, लिहाज़ा मुझे इस की हाज़त नहीं।”

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم ने जब अपनी जौजए मोहतरमा को छोड़ा था तो वोह हामिला थी, उन के हां बेटा पैदा हुवा, जिस का नाम घर वालों ने दादा के नाम पर रखा। जब बड़ा हुवा और जवानी की हुदूद में क़दम रखा तो अपनी वालिदा से पूछा : “ऐ मेरी मां ! क्या मेरे वालिद नहीं ?” तो वालिदा ने जवाब दिया : “क्यूं नहीं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तुम्हारे वालिद हैं।” उस ने फिर पूछा : “वोह कहां चले गए ?” मां ने जवाब दिया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा की तलाश में।” नौजवान बेटे ने अर्ज़ की : “ऐ मेरी वालिदए मोहतरमा ! फिर आप मुझे भी जाने दें, मैं भी उसी को तलाश करता हूं जिसे मेरे मालिदे मोहतरम तलाश कर रहे हैं, शायद ! मैं अपने मक़सद में कामयाब हो जाऊं।” मां ने कहा : “तुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! ऐ मेरे बेटे ! तेरे बाप की जुदाई से मेरा दिल बहुत जला है, अब तू अपने फ़िराक़ से मेरे दिल को मज़ीद न जला।” चुनान्वे, वोह फ़रमा बरदार बेटा अपनी मां की खुशी की ख़ातिर रुक गया हत्ता कि मां का इन्तिक़ाल हो गया तो वोह बहुत ग़मगीन रहने लगा, क्यूंकि अब न उस की मां थी, न उसे बाप का पता था। फिर वोह नौजवान नंगे पाउं घर से निकल पड़ा, लोगों से डरते डरते वीरान मसाजिद में रातें गुज़ारता, दरवाज़ों से खाने के लुक़मों का सुवाल करता, यहां तक कि मक्कए मुकर्रमा पहुंच गया। हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم तवाफ़ में मशगूल थे, और आप के कुछ मुरीद भी आप के साथ तवाफ़ कर रहे थे। जब आप की नज़र एक नौजवान लड़के पर पड़ी तो बे साख़्ता आप की निगाहें उस पर जम गई, आप के इरादत मन्दों ने अर्ज़ की : “हुज़ूर ! इस अज़ीम मक़ाम और बा बरकत वक़्त में येह कैसी ग़फ़लत है कि आप एक ख़ूब सूरत नौजवान लड़के को ग़ौर से देख रहे हैं। आप रोने लगे और एक मुरीद से फ़रमाया : “उस के पास जाओ और पूछो, येह कौन है ?” मुरीद ने उस के पास जा कर सलाम किया, और बा’दे सलाम पूछा : “ऐ नौजवान ! कहां से आए हो ?” उस ने जवाब दिया : “अज़म के शहर बल्ख़ से।” फिर पूछा : “किस के बेटे हो ?” जवाब दिया : “येह तो मुझे मा’लूम नहीं, हां ! मेरी वालिदए मोहतरमा ने मुझे बताया था कि तुम्हारे बाप का नाम इब्राहीम बिन अदहम (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم) है।” फिर उस के रुख़सार पर मोतियों की तरह आंसूओं की लड़ी बन गई।

वोह मुरीद फ़रमाते हैं : “मैं अपने पीरो मुशीद हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم के पास लौटा और देखा कि आप भी रो रहे हैं हत्ता कि आप बेहोश हो गए, तो मैं आप के सरे अक्दस के पास बैठ गया और जब आप को इफ़ाका हुवा तो मैं ने अर्ज़ की : “ऐ मेरे मुशीद ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप से इस नौजवान बेटे का हक़ ज़रूर वुसूल करेगा।” आप ने फ़रमाया : “खुदा की क़सम ! येह मेरा बेटा है, इस को मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये छोड़ दिया था, अब मैं इस को वापस लेना नहीं चाहता।” मैं ने अर्ज़ की : “हुज़ूर ! मैं आप को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का वासिता देता हूं कि उस के पास चलिये।” चुनान्वे, आप तशरीफ़ ले गए, उस ने पूछा : “आप कौन हैं ?”



फरमाया : “मैं तुम्हारा बाप इब्राहीम बिन अदहम हूं।” फिर आप ने उस को अपने सीने से लगा लिया और बारगाहे रब्बुल इज्जत में अर्ज गुज़ार हुए : “या **अब्लाह** عَزَّوَجَلَّ येह मेरा बेटा, मेरे जिगर का टुकड़ा मेरी तलाश में आया है, और तू जानता है कि मेरे दिल में इस के लिये कितनी जगह है, और येह भी जानता है कि मैं इस के लिये वक्त नहीं निकाल सकता, और तू अपने बन्दों की मस्लेहतों को भी ख़ूब जानता है।” इस के बा’द सात दिन न गुज़रे थे कि आप के बेटे का इन्तिकाल हो गया। आप ने अपने हाथों से उस को गुस्ल दिया, फिर एक मोटी चादर में कफ़न दिया। जब आप उस का सर ढांपते तो पाउं ज़ाहिर हो जाते, और जब पाउं ढांपते तो सर से चादर कम पड़ जाती। आप फरमा रहे थे : “ऐ मेरी आंखों की ठंडक ! **अब्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मेरी और तुम्हारी मुलाक़ात बरोज़े महशर होगी।”

وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّآلِهِ وَصَحْبِهِ أَجْمَعِينَ



### بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ के चार मदनी फूल

﴿1﴾ जो कोई सोते वक्त بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ 21 बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ ले **إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** उस रात शैतान, चोरी, अचानक मौत और हर तरह की आफ़त व बला से महफूज़ रहे। ﴿2﴾ जो किसी ज़ालिम के सामने بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ 50 बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़े उस ज़ालिम के दिल में पढ़ने वाले की हैबत पैदा हो और उस के शर से बचा रहे। ﴿3﴾ जो शख्स तुलूए आफ़ताब के वक्त सूरज की तरफ़ रुख कर के **بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ** 300 बार और (कोई भी) दुरूद शरीफ़ 300 बार पढ़े **अब्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को ऐसी जगह से रिज़क अता फ़रमाएगा जहां उस का गुमान भी न होगा और (रोज़ाना पढ़ने से) **إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** एक साल के अन्दर अन्दर अमीर व कबीर हो जाएगा। ﴿4﴾ कुन्द ज़ेहन **بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ** 786 बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर पानी पर दम कर के पी ले तो **إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** उस का हाफ़िज़ा मज़बूत हो जाए और जो बात सुने याद रहे। (شمس المعارف مترجم ص ۷۳)

बयान 27 :

## बीक और शर्हों का जिक्र

हम्मे बारी तआला :

सब खूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने काइनात और इस की हर चीज को मजबूत बनाया और इस की इकट्ठी और जुदा जुदा अश्या को पुख्ता बनाया। मैं उस की हम्द करता हूं जिस के मुझ पर बहुत एहसानात हैं और ए'तिराफ़ करता हूं कि मैं उस के एहसानात का शुक्र अदा करने से क़ासिर रहा। मैं गवाही देता हूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं, वोह यक्ता है, उस का कोई शरीक नहीं, वोही बादशाह और बहुत ज़ियादा एहसान फ़रमाने वाला है और गवाही देता हूं कि हज़रते सय्यिदुना मुहम्मदे मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस के बन्दे और रसूल है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन को सरापा हिदायत बना कर भेजा और आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मो'जिज़ कुरआनी के ज़रीए कुफ़्र के अन्धेरों में हैरत ज़दा लोगों को हिदायत अता फ़रमाई और तमाम ता'रीफें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने दीने इस्लाम को तमाम अदयान पर ग़लबा अता फ़रमाया और आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आल पर और सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان पर हर घड़ी और हर वक़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की दाइमी रहमत का नुज़ूल हो। **अल्लाह** وَلَوْلَا رِجَالٌ مُّؤْمِنُونَ وَنِسَاءٌ مُّؤْمِنَاتٌ (प. २६, अ. २५) कुरआने पाक में मोमिन औरतों का ज़िक्र यूँ फ़रमाता है : **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान** : और अगर येह न होता कुछ मुसलमान मर्द और कुछ मुसलमान औरतें।"

और मज़ीद इरशाद फ़रमाया :

إِنَّ الْمُسْلِمِينَ وَالْمُسْلِمَاتِ وَالْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْقَنَاتِ وَالصَّادِقِينَ وَالصَّادِقَاتِ وَالصَّابِرِينَ وَالصَّابِرَاتِ وَالْخَاشِعِينَ وَالْخَاشِعَاتِ وَالْمُتَصَدِّقِينَ وَالْمُتَصَدِّقَاتِ وَالصَّالِحِينَ وَالصَّالِحَاتِ وَالْحَفِظِينَ وَالْحَفِظَاتِ وَالذَّكِرِينَ وَالذَّكِرَاتِ ۚ أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ مَغْفِرَةً وَأَجْرًا عَظِيمًا (प. २२, अ. ३०)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान** : बेशक मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतें और ईमान वाले और ईमान वालियां और फ़रमा बरदार और फ़रमा बरदारें और सच्चे और सच्चियां और सब्र वाले और सब्र वालियां और अज़िज़ी करने वाले और अज़िज़ी करने वालियां और ख़ैरात करने वाले और ख़ैरात करने वालियां और रोज़े वाले और रोज़े वालियां और अपनी पारसाई निगाह रखने वाले और निगाह रखने वालियां और **अल्लाह** को बहुत याद करने वाले और याद करने वालियां इन सब के लिये **अल्लाह** ने बख़्शिश और बड़ा षवाब तय्यार कर रखा है।" (1)

①....मुफ़स्सरे शहीर ख़लीफ़ आ'ला हज़रत सदरुल अफ़ज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِي तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारक़ के तहत फ़रमाते हैं **शाने नुज़ूल** : अस्मा बिनते उमैस जब अपने शोहर जा'फ़र बिन अबी तालिब के साथ हब्शा से वापस आई। तो अज़वाजे नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मिल कर उन्होंने ने दरयाफ़्त किया कि क्या औरतों के बाब में भी कोई आयत नाज़िल हुई है। उन्होंने ने फ़रमाया : नहीं। तो अस्मा ने हुज़ूर सय्यिदे आलम صَلَّय दे आलम عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अर्ज़ किया कि "हुज़ूर औरतें बड़े टोटे (या'नी ख़सारे) में हैं।" फ़रमाया : क्यूँ? अर्ज़ किया कि .....(बक़िय्या अगले सफ़हे पर)

इन आयाते मुबारका में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने नेक औरतों का जिक्र नेक मर्दों के साथ किया है। मर्दों की तरह औरतों के भी मुख्तलिफ़ अहवाल हैं, उन में भी जोहदो तक्वा और खैरो भलाई की सिफ़ात मुकम्मल तौर पर पाई जाती हैं, उन में भी अवरादो वज़ाइफ़ करने वाली और जंगलात व खंडरात की सियाहत करने वाली औरतें होती हैं। और बा'ज को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ कश्फ़ वगैरा की खुसूसिय्यात भी अता फ़रमाता है जैसा कि पहले दौर में राबिअ़ा अदविyyा, शा'वाना, रैहाना, उम्मुल खैर رحمّة الله تعالى علیهن और इन के इलावा मा'रूफ़ और गैर मा'रूफ़ पाक बाज औरतें गुज़री हैं।

**तजक्किरु हज़रते सय्यदतुना राबिअ़ा बसरिया** رحمّة الله تعالى علیها :

हज़रते सय्यदतुना राबिअ़ा अदविyyा बसरिया رحمّة الله تعالى علیها के बारे में मन्कूल है कि आप इशा की नमाज़ पढ़ कर मकान की छत पर खड़ी हो जाती और अपने दूपट्टे और चादर को अच्छी तरह ओढ़ कर बारगाहे रब्बुल इज़ज़त عَزَّوَجَلَّ में यूँ अर्ज गुज़ार होती : “या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सितारे चमक रहे हैं, सब की आंखें सोई हुई हैं, बादशाहों ने अपने दरवाजे बन्द कर लिये हैं, हर मुहिब्ब अपने महबूब के साथ तन्हाई में है और मैं तेरी बारगाह में तन्हा खड़ी हूँ।” फिर आप नमाज़ अदा करती रहती, जब सहरा का वक़्त होता और फ़ज़्र तुलूअ हो जाती तो बारगाहे रब्बुल इज़ज़त में अर्ज करती : “या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ये रात गुज़र गई, दिन ख़ूब रोशन हो गया। काश ! मुझे मा'लूम हो जाए कि क्या मेरी रात की इबादत क़बूल हुई तो मुझे मुबारक बाद दी जाए, या अगर मर्दूद हुई तो मेरी ढारस बंधाई जाए, तेरी इज़ज़त की क़सम ! जब तक तू मुझे जिन्दा रखेगा और मेरी मदद करता रहेगा मैं इसी अ़ादत पर काइम रहूंगी, और तेरी इज़ज़त की क़सम ! अगर तू मुझे अपनी बारगाह से मर्दूद कर देता फिर भी मैं इस से दूर न होती क्यूँकि मेरे दिल में तेरी महब्बत बस चुकी है।”

(बक़िया)..... “इन का जिक्र खैर के साथ होता ही नहीं जैसा कि मर्दों का होता है। इस पर ये आयते करीमा नाज़िल हुई और इन के दस मरातिब मर्दों के साथ जिक्र किये गए और इन के साथ इन की मदद फ़रमाई गई और मरातिब में से पहला मर्तबा इस्लाम है जो खुदा और रसूल की फ़रमां बरदारी है। दूसरा ईमान कि वोह ए'तिकादे सहीह और ज़ाहिर व बातिन का मुवाफ़िक़ होना है। तीसरा मर्तबा कुनूत या'नी ताअत है। इस में चौथा मर्तबे का बयान है कि वोह सिद्क़े नियात व सिद्क़े अक्वाल व अफ़आल है। इस के बा'द पांचवां मर्तबा सब्र का बयान है कि ताअतों को पाबन्दी करना और ममनूअ़ात से एहतिराज़ रखना। ख़्वाह नफ़्स पर कितना ही शाक़ और गिरां हो। रिज़ाए इलाही के लिये इख़्तियार किया जाए। इस के बा'द फिर छटा मर्तबा खुशूअ़ का बयान है। जो ताअतों और इबादतों में कुलूब व ज़वारेह के साथ मुतवाज़ेअ़ होना है। इस के बा'द सातवां मर्तबा सदक़ा का बयान है। जो **अल्लाह** तआला के अता किये हुए माल में से उस की राह में व त्रीके फ़र्ज व नफ़ल देना है। फिर आठवीं मर्तबा सौम का बयान है। ये भी फ़र्ज व नफ़ल दोनों को शामिल है। मन्कूल है कि “जिस ने हर हफ़्ता एक दिरम सदक़ा किया वोह मुतसद्दीक़ीन में और जिस ने हर महीने अय्यामे बीज के तीन रोज़े ख़रे वोह साइमीन में शुमार किया जाता है। इस के बा'द नवां मर्तबा इफ़फ़्त का बयान है और वोह ये है कि अपनी पार साई को महफूज़ रखे और जो हलाल नहीं है उस से बचे। सब से आख़िर में दसवीं मर्तबा कषरते जिक्र का बयान है। जिक्र में तस्बीह, तहमीद, तहलील, तक्बीर, क़िराअते कुरआन, इल्मे दीन का पढ़ना पढ़ाना, नमाज़, वा'ज़ व नसीहत, मीलाद शरीफ़, ना'त शरीफ़ पढ़ना सब दाख़िल हैं, कहा गया है कि बन्दा ज़किरीन में तब शुमार होता है जब कि वोह खड़े, बैठे, लैटे हर हाल में **अल्लाह** का जिक्र करे।”



फिर आप चन्द अशआर पढ़तीं, जिन का मफहूम यह है :

“ऐ मेरे सुरूर व उम्मीद और मक्सूद ! तू ही मेरे दिल की राहत और तू ही मेरा महबूब है, और तेरी दीद का शौक ही मेरा साजो सामान है। ऐ मेरी ज़िन्दगी और महबूबत के मालिक ! अगर तेरी महबूबत न होती तो मैं इन वसीअ शहरों में न भटकती। कितनी ही मरतबा तेरे एहसानात मुझ पर ज़ाहिर हुए और मैं ने कितनी ही ने'मते तुझ से हासिल कीं। पस अब तेरी महबूबत ही मेरी ख्वाहिश, मेरा मक्सूद और मेरे जलते हुए दिल की आंख का नूर है, मैं जब तक ज़िन्दा रहूँ, मुझे कोई चैन व सुकून नहीं। रात की तारीकी में भी मेरी उम्मीद सिर्फ तू ही तू है। ऐ मेरे दिल की उम्मीद ! अब अगर तू मुझ से राजी हो गया तो मैं भी खुद को सआदत मन्द समझूंगी।”

**दीदारे इलाही عَزَّوَجَلَّ की तालिबा :**

हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन उप्मान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْمَنَّان फ़रमाते हैं कि एक मरतबा मैं हज़रते सय्यिदुना जुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي के साथ उस चटियल मैदान से गुज़र रहा था जहां बनी इसराईल एक अर्से तक हैरान व सरगर्दा भटकते फिरते रहे। वहां हम ने किसी इन्सान को आते देखा। मैं ने अर्ज़ की : “ऐ मेरे उस्ताज़े मोहतरम ! कोई शख्स आ रहा है आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने फ़रमाया : “जाओ देखो कौन है ? यहां तो कोई सिद्दीक ही आ सकता है।” मैं ने देखा तो वोह कोई औरत थी। आप ने फ़रमाया : “रब्बे का'बा की क़सम ! येह तो कोई सिद्दीका है।” चुनान्चे, आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ जल्दी से उस के पास गए, और सलाम पेश किया तो कहने लगी : “मर्दों को क्या हो गया है कि औरतों को मुखातब करते हैं ?” आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने फ़रमाया : “मैं आप का भाई जुन्नून हूँ, तोहमत वालों में से नहीं हूँ।” तो उस ने कहा : “खुश आमदीद ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप को सलामत रखे।” आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने इस्तिफ़सार फ़रमाया : “आप को इस वीराने में आने पर किस ने उभारा ?” उस ने जवाब दिया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमाने आलीशान ने :

﴿1﴾ اَلَمْ تَكُنْ اَرْضُ اللّٰهِ وَاَسِعَتْ فِتْنَهَا جُرُؤًا

فِيْهَا ط (پ ۵۰ النساء: ۹۷)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :** क्या **अल्लाह** की ज़मीन

कुशादा न थी कि तुम उस में हिजरत करते।

फिर आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने फ़रमाया : “महबूबते इलाही عَزَّوَجَلَّ के बारे में कुछ बयान कीजिये।” तो वोह कहने लगी : “سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ आप उस को खूब जानते हैं, खुद मा'रिफ़त की ज़बान में कलाम करते हैं फिर भी उस के मुतअल्लिक मुझ से पूछ रहे हैं।” आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने फ़रमाया सुवाल करने वाला जवाब का हक़दार है।” तो उस ने चन्द अशआर पढ़े, जिन का मफहूम यह है :

“ऐ मेरे मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ मैं तुझ से शदीद महबूबत करती हूँ क्योंकि तू ही इस का हक़ रखता है। महबूबत ऐसा ज़िक्र है जो तेरे इलावा सब से बे ख़बर कर देता है। तू ही महबूबत का अहल है लिहाज़ा मेरे सामने से पर्दे उठा दे ताकि मैं तेरा दीदार कर सकूँ। मेरे नज़दीक इधर उधर की चीज़ों की कोई ता'रीफ़ नहीं बल्कि हर चीज़ में तेरी ही हम्दो षना है।”

फिर उस ने येह अशआर पढ़े :

فَارْحَمِ الْيَوْمَ مُذْنِبًا قَدْ آتَاكَ  
قَدْ آتَى الْقَلْبُ أَنْ يُحِبَّ سِوَاكَ

يَا حَيِّبَ الْقَلْبِ مَا لِي سِوَاكَ  
يَا رَحَائِي وَرَاحَتِي وَسُرُورِي

**तर्जमा :** ऐ दिल के दोस्त ! तेरे सिवा मेरा कोई नहीं, अपनी बारगाह में हाज़िर इस गुनहगार पर रहम फ़रमा, ऐ मेरी उम्मीद, मेरी राहत और ऐ मेरे सरवर ! दिल ने तेरे सिवा किसी और से महबूब करने से इन्कार कर दिया है।

**हज़रते सय्यिदतुना राबिअ़ा बशरिया** رحمه الله تعالى **के चार सुवालात :**

मन्कूल है कि जब हज़रते सय्यिदतुना राबिअ़ा अदविय्या رحمه الله تعالى के शोहर का इन्तिक़ाल हो गया तो हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَوَى ने अपने चन्द अहबाब के साथ उन के पास आने की इजाज़त चाही तो इन्हों ने इजाज़त दे दी और एक पर्दा दरमियान में हाइल कर के उस के पीछे बैठ गई। हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَوَى के दोस्तों ने इस्तिफ़सार किया : “आप के शोहर इन्तिक़ाल फ़रमा चुके हैं, लिहाज़ा अब आप को निकाह कर लेना चाहिये।” हज़रते सय्यिदतुना राबिअ़ा अदविय्या رحمه الله تعالى ने फ़रमाया : “मैं तुम्हारी राए का एहतिराम करते हुए बड़ी महबूबत व इज़्ज़त से निकाह कर लूंगी, लेकिन मुझे येह बताइये कि आप में सब से बड़ा अ़ालिम कौन है ? ताकि मैं उस से निकाह करूं।” वोह बोले : “हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَوَى ने इरशाद फ़रमाया : “पूछो, अगर **अब्बाह** तअ़ला ने तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाई तो जवाब दूंगा।”

चुनान्चे, उन्हों ने दर्जे ज़ैल सुवालात किये :

(1).....फ़कीह अ़ालिम क्या कहता है कि जब मैं मर जाऊंगी तो क्या दुन्या से मुसलमान जाऊंगी या काफ़िरा ? आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى ने जवाबन फ़रमाया : “येह तो ग़ैब है, जिसे **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई नहीं जानता।”

(2).....जब मुझे क़ब्र में रखा जाएगा और मुन्कर नकीर सुवालात करेंगे तो मैं जवाबात दे पाऊंगी या नहीं ? आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى ने फ़रमाया : “येह भी ग़ैब है।”

(3).....जब लोग क़ियामत में उठेंगे, और आ'माल नामे खोल कर बा'जों के दाएं हाथ में दिये जाएंगे और बा'जों के बाएं हाथ में, तो क्या मेरा नाम आ'माल मुझे सीधे हाथ में दिया जाएगा या उलटे में ? हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَوَى ने फिर येही जवाब दिया कि “येह भी ग़ैब है।”

(4).....जब तमाम मख़्लूक में से हर जन्नती और दोज़खी गुरौह को पुकारा जाएगा और बुलाया जाएगा तो मैं किस गुरौह में से होऊंगी ? तो इस के जवाब में भी आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى ने येही फ़रमाया कि “येह भी ग़ैब है, और ग़ैब को **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ के इलावा कोई नहीं जानता।”

इस के बा'द हज़रते सय्यिदतुना राबिआ अदविyyा رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عليها ने इरशाद फ़रमाया :  
“जब मुआमला ऐसा है (या'नी जब दुन्या से मुसलमान रुख़्सत होने, नकीरैन के सुवालात के जवाबात देने, नामए आ'माल के दाएं हाथ में मिलने और जन्नती गुरौह में शामिल होने का इल्म नहीं) तो मैं इस की वजह से सख़्त परेशान व मुज़तरिब हूं लिहाज़ा मुझे कैसे शोहर की हाज़त हो सकती है? और कैसे उस के लिये फ़ारिग़ वक़्त निकाल सकती हूं।”

### सितार बजाने वाली की तौबा :

हज़रते सय्यिदुना सालेह मुरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَلَى फ़रमाते हैं कि मैं ने एक लड़की को देखा जो सितार बजाती थी। एक दिन वोह किसी क़ारिये कुरआन के पास से गुज़री जो इस आयते मुबारका की तिलावत कर रहा था :

﴿2﴾ وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيطَةٌ بِالْكَافِرِينَ ۝

(प १०, النوبة: ६९)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक जहन्नम घेरे हुए है काफ़िरों को ।

आयते मुबारका सुनते ही उस ने सितार फेंक दिया, एक ज़ोरदार चीख़ मारी और बेहोश हो कर ज़मीन पर गिर गई। जब इफ़ाका हुवा तो उस ने सितार को तोड़ दिया और इबादत व रियाज़त में मशगूल हो गई, यहां तक कि इबादत की वजह से मा'रूफ़ व मशहूर हो गई। एक दिन मैं उस के पास गया, और उसे कहा : “अपने नफ़्स के लिये नर्मी इख़्तियार करो।” तो वोह रोने लग गई और कहने लगी : “काश ! मुझे मा'लूम हो जाए कि जहन्नमी अपनी क़ब्रों से कैसे निकलेंगे ? पुल सिरात कैसे उबूर करेंगे ? क़ियामत की हौलनाकियों से कैसे नजात पाएं ? खोलते हुए गर्म पानी को कैसे घूंट घूंट कर के पियेंगे ? और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की डांट को कैसे सुन सकेंगे ? फिर वोह बेहोश हो कर गिर पड़ी। जब इफ़ाका हुवा तो इल्तिजा करने लगी : “या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं ने जवानी में तेरी नाफ़रमानी की और अब कमज़ोरी की हालत में तेरी इताअत कर रही हूं, क्या तू मेरी इबादत क़बूल फ़रमा लेगा ?” फिर उस ने एक आहे सर्द दिले पुर दर्द से खींची और कहा : “आह ! कल क़ियामत कितने ही लोगों के ऐब खोल देगी।” फिर उस ने एक चीख़ मारी और आहो बुका करने लगी। मजलिस के सभी लोग उस की शिद्दे गिर्या व ज़ारी से बेहोश हो गए।

### जियारत बैतुल्लाह शरीफ़ क़ अन्नोखा शौक़ :

हज़रते सय्यिदुना जुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَلَى फ़रमाते हैं कि उम्मे दाब رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهَا का शुमार बुलन्द पाया सालिहात व अ़बिदात में होता है। उन की उम्र नव्वे (90) बरस हो चुकी थी। हर साल मदीनए मुनव्वरा رَزَاكَ اللَّهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا से मक्कए मुअज़्ज़मा رَزَاكَ اللَّهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا पैदल चल कर हज़ करने आती थीं। उन की बीनाई चली गई। जब हज़ का मौसिम आया, औरतें उन के पास उन की ज़ियारत के लिये हाज़िर हुईं, उन को आप की बीनाई चले जाने का बहुत ग़म हुवा, आप ने गिर्या व



जारी करते हुए अपने सर को आस्मान की तरफ बुलन्द कर के बारगाहे रब्बुल इज्जत में यूँ अर्ज की :  
 “या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तेरी इज्जत की कसम ! मेरी आंखों का नूर चला गया तो क्या हुवा ? तेरी बारगाह में हाजिरी के शौक के अन्वार तो अभी बाकी हैं ।” फिर एहराम बांध कर “بَيْتُكَ اللَّهُمَّ بَيْتِي” कहते हुए अपनी रुफ़का के साथ चल पड़ी । आप उन के साथ चलते हुए कभी आगे निकल जातीं । हज़रते सय्यिदुना जुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं कि मुझे उस के हाल पर बड़ा तअज्जुब हुवा तो हातिफ़े ग़ैबी से आवाज़ आई : “ऐ जुन्नून ! क्या तुम इस बुद्धिया पर तअज्जुब करते हो जिसे अपने मौला عَزَّوَجَلَّ के घर का शौक था पस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने लुत्फ़ो करम फ़रमाते हुए उसे अपने घर की तरफ़ चला दिया और इस की ताक़त अता फ़रमाई ।”

### चार मक्बूल लड़कियाँ :

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन मरवान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْمَنَان जो फ़क्र व तक्वा और परहेज़गारी इख़्तियार करने वालों में से थे, फ़रमाते हैं कि एक मरतबा मैं का'बए मुशरफ़ा رَاحَهُ اللَّهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا में रुकने यमानी के क़रीब तवाफ़ में मशगूल था कि अचानक चार लड़कियों को आते देखा, उन पर मक्बूलियत के आषार नुमायां थे । इन में सब से बड़ी ने ग़िलाफ़ से लिपट कर अज़िज़ी व इन्किसारी का इज़हार करते हुए बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में अर्ज की :

إِلَيْكَ حَاجِي لَا لِلْبَيْتِ وَالْحَجَرِ وَلَا طَوَافَ بَارِكَانَ وَلَا حُجْرٍ

तर्जमा : मेरा हज़ तो सिर्फ़ तेरे लिये है, न बैतुल्लाह शरीफ़ का, न हज़रे अस्वद का, न अरकान का तवाफ़ और न ही दीवारों का ।

फिर उस ने अपने सर को बुलन्द कर के अर्ज की : “या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तेरी महब्वत ने मुझे मुज़तरिब कर दिया है और मैं इश्को महब्वत में गिरिफ़्तार हो गई हूँ, अब मैं तेरी बारगाह में हाज़िर हूँ, या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अगर मेरी लगज़िशों ने मुझे तेरी बारगाह से लौटा दिया तो मुझे मेरी महब्वत तेरे दरवाज़े पर खींच लाएगी । अगर मेरे गुनाहों ने मुझे तेरे दरवाज़े से दूर कर दिया तो तेरे अफ़वो करम की उम्मीद मुझे तेरे क़रीब कर देगी । अगर मेरी ख़ताओं ने मुझे कैद करा दिया तो तेरी तरफ़ रुजूअ में मेरा इख़लास मुझे आज़ाद करा देगा । या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे तेरा विसाल कब हासिल होगा, तेरी बारगाहे जमाल तक कब पहुंचूंगी ? ऐ वहशत ज़दों के दोस्त ! ऐ मुहिब्बीन के महबूब ! ऐ ख़ाइफ़ीन को पनाह देने वाले ! ऐ गुनहगारों पर रहम करने वाले और ऐ ताइबीन की तौबा कबूल फ़रमाने वाले ! ऐ सब से बढ़ कर रहम फ़रमाने वाले ! मुझ पर अपनी ख़ास रहमत का नुज़ूल फ़रमा और मेरी मग़फ़िरत फ़रमा ।” फिर उस ने लम्बा सांस लिया और चन्द अशआर पढ़े :

وَمِنْ دُنُوبِي وَتَفَرِّطِي وَأَصْرَارِي  
 أَمْسَكْتُ حَبْلَ الرَّجَاءِ يَا خَيْرَ غَفَّارِ

أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ مِمَّا كَانَ مِنْ زُلْمِي  
 يَا رَبِّ هَبْ لِي دُنُوبِي يَا كَرِيمُ فَقَدْ

**तर्जमा :** मैं अपने गुनाहों, ख़ताओं और गुनाह पर इसरार से मग़फ़िरत चाहती हूँ, ऐ मेरे रब्ब **عَزَّوَجَلَّ** ऐ करीम मेरे गुनाहों की मग़फ़िरत फ़रमा दे, ऐ बख़्शने वाले मेहरबान ! मैं ने उम्मीद की रस्सी को मजबूती से थाम लिया है ।

फिर वोह गुमगीन व परेशान बैठ गई । और दूसरी मुज़तरिब व बे क़रार हो कर गिर्या व ज़ारी करते हुए पुकारने लगी : “ऐ तमाम उम्मीदों की इन्तिहा ! ऐ नेकों को नेक आ'माल पर उभारने वाले ! ऐ अरिफ़ीन के दिलों में महबूबत की किन्दीलें रोशन करने वाले ! ऐ वहशत ज़दों के अनीस ! ऐ दिलों के तबीब ! ऐ गुनाहों को बख़्शने वाले ! मेरा जिस्म तेरी महबूबत से पिघल रहा है, मुझे तेरी बारगाह में पेश होने से शर्म आती है, ऐ सब से बढ़ कर रहूम फ़रमाने वाले ! मुझ पर अपनी खास रहूमत का नुज़ूल फ़रमा और मुझ से दर गुज़र फ़रमा ।” फिर वोह इधर उधर घूमने लगी और येह अशआर पढ़ रही थी :

وَعِنْدَكَ يَا مُنَى قَلْبِي دَوَائِي  
فِيرَحْمَ عِبْرَتِي وَ يَرَى بُكَائِي  
وَمَنْ يَنْظُرُ فِيهَا شِفَائِي

اَتَيْتُكَ اَسْتَكِي سُقْمِي وَ دَائِي  
فَلَا اَحَدٌ سِوَاكَ اِلَيْهِ اَشْكُو  
فَيَا مُوَلَّى الْوَرَى جُدْ لِي بِعَفْوٍ

**तर्जमा :** मैं तेरी बारगाह में अपनी कमज़ोरी व बीमारी की दरख्वास्त ले कर हाज़िर हुई हूँ, ऐ मेरे दिल की आरजू ! मेरे मरज़ की दवा तेरे पास है । तेरे सिवा कोई नहीं जिसे मैं अपनी बीमारी बता सकूँ और वोह मेरी गिर्या व ज़ारी को देखे और मेरे आंसूओं पर रहूम करे । ऐ सारी मख़्लूक के मालिको मौला **عَزَّوَجَلَّ** अपनी बख़्शिश व करम फ़रमा कर मुझ पर एहसान फ़रमा, और ऐसी नज़रे रहूमत फ़रमा दे जिस में मेरी शिफा हो ।

फिर वोह बैठ गई और तीसरी खड़ी हुई, वोह भी काफ़ी देर तक रोती रही । फिर अर्ज करने लगी : “या **اَللّٰهُ** **عَزَّوَجَلَّ** मेरे गुनाहों ने मुझे तेरे दरवाज़े से धुत्कार दिया है और हमेशा की गुफ़लत ने तेरी बारगाह से दूर कर दिया है, मैं तेरे दरवाज़े पर ज़िल्लत व मोहताजी के साथ गुनाहों और ख़ताओं की मुआफ़ी की आस लगाए खड़ी हूँ, मैं तेरे अज़ाब से फ़रार हो कर तेरी पनाह में आ गई हूँ,” फिर उस ने भी चन्द अशआर पढ़े, जो येह हैं :

وَمَا لِيْ مِنْ اَرْحُوَةٍ يَا خَيْرَ وَاٰهِبٍ  
لَا تُعْطَى مِنَ الْاَفْضَالِ اَسْنَى الْمَوَاهِبِ  
عَلَيْكَ فَلَا بَلْعُثْ مِنْكَ مَا رَبِّىْ

يَسَابِكَ رَبِّىْ قَدْ اَنْعَشْتُ رَكَائِيْ  
سِوَاكَ فَجُدْ لِيْ بِالَّذِى اَنْتَ اَهْلُهُ  
اِذَا لَمْ اَمُتْ شَوْقًا اِلَيْكَ وَحَسْرَةً

**तर्जमा :** ऐ मेरे मालिक **عَزَّوَجَلَّ** तेरे दरवाज़े पर मैं ने डेरा लगा लिया है, ऐ बेहतर अज़ा करने वाले ! तेरे इलावा मेरा कौन है जिस से मैं उम्मीद रखूँ, मुझ पर अपनी शान के मुताबिक़ जूदो करम फ़रमा और मुझे अपना बेहतरीन फ़ज़ल अज़ा फ़रमा, अगर मैं तेरे शौके दीदार और हसरते दीदार में न मरी तो अपने मक़सूद को न पहुंची ।

इस के बा'द वोह अपनी आंखों से आंसूओं की लड़ी बहाते हुए बैठ गई और चौथी लड़की रोते हुए खड़ी हुई, वोह हसरत के आलम में अपने गुनाहों की मुआफ़ी तलब कर रही थी। चुनान्वे, उस ने अर्ज़ की : “या इलाही عَزَّوَجَلَّ तू ने इबादत व रियाज़त करने वालों को हुक्म दिया कि वोह तेरे दरवाज़े पर खड़े हों और मुझे मा'लूम नहीं कि मैं इन में से हूँ या नहीं। या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अगर मुआफ़ करना तेरी सिफ़त न होती तो इबादत व कोशिश करने वाले जब गुनाहों में मुब्तला होते तो तेरी बारगाह में न आते। या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अगर तू मुआफ़ न कर सकता तो मैं तुझ से मग़फ़िरत की उम्मीद न रखती। बेशक तेरी ही येह शान है कि तू मुझ पर अपनी वसीअ़ रहमत के साथ करम फ़रमा सकता है। ऐ वोह ज़ात जिस से कोई पोशीदा से पोशीदा शै भी मख़्फ़ी नहीं ! ऐ वोह ज़ात जिस की ने'मतें कभी ख़त्म नहीं होती ! तू मेरे गुनाहों की पर्दा पोशी फ़रमा, तू ही मेरा मतलूब व मक्सूद है।” फिर उस ने दर्जे ज़ैल अशआर पढ़े :

تَعَطَّطْتُ بِفَضْلِ مَنِّكَ يَا مَالِكَ الْوَرَى  
فَأَنْتَ مَلَأَيْتَ سِدْرِي وَمُعِينِي  
لَيْنَ أَبْعَدَنِي عَنْ جَنَابِكَ زَلَّيِي  
فَإِنْ رَجَأْتَنِي فِيكَ حُسْنُ يُمِينِي  
وَقَطَّنِي حِمْلِي إِنَّنِي مِنْكَ أَرْتَجِي  
عَوَاطِفُكَ الْحُسْنَى فَعُدُّ بِيَمِينِي

**तर्जमा :** ऐ मख़लूक के मालिक عَزَّوَجَلَّ अपने फ़ज़ल से मुझ पर इनायत की हवा चला दे। तू मेरी पनाह गाह, मेरा मालिक और मेरी मदद फ़रमाने वाला है। अगर मेरी लगज़िशों ने मुझे तेरी बारगाह से दूर कर दिया है तो कोई ग़म नहीं क्योंकि तेरे मुतअल्लिक मुझे हुस्ने ज़न है। मेरा हुस्ने ज़न येह है कि मैं तुझ से तेरे इन्आम व इकराम की उम्मीद रखूँ लिहाज़ा मेरी दस्तगीरी फ़रमा।

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन मरवान رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि मुझे उन की गुफ़्तगू और दुआ सुन कर बहुत सुकून मिला और उन के नसीहत भरे बयानात से मेरी आंखें अशकबार हो गई।

**एक खाइफ़ा का ख़ौफ़े खुदा عَزَّوَجَلَّ:**

मन्कूल है कि एक औरत का'बतुल्लाह शरीफ़ رَاذَا اللَّهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا के पास रहती थी, जिस का नाम हकीमा था। जब का'बए मुशर्रफ़ा رَاذَا اللَّهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا के दरवाज़े को खुलता हुवा देखती तो जोरदार चीख़ मार कर बे होश हो जाती। एक दिन उस के अ़दम मौजूदगी में दरवाज़ा खोला गया। जब वोह आई तो उस से कहा गया : “ऐ हकीमा ! आज (तेरी अ़दम मौजूदगी में) बैतुल्लाह शरीफ़ का दरवाज़ा खोला गया, अगर तू तवाफ़ करने वालों को हालते एहराम में तल्बिय्या (“يَبِّكَ اللَّهُمَّ يَبِّكَ”) कहते हुए देख लेती तो तेरी आंखे ठंडी हो जातीं। क्योंकि इन में से हर एक का दिल शौक़ से ज़ख़्मी था और वोह अपने रब्ब की तरफ़ से रहमत व मग़फ़िरत का इन्तिज़ार करते हुए अ़जिज़ी व इन्किसारी से गिर्या कुनां था।” येह सुनते ही उस ने ऐसी चीख़ मारी जिस से दिल घबरा जाएं, और फिर कुछ देर तड़पती रही यहां तक कि इस अफ़सोस में उस ने अपनी जान कुरबान कर दी कि वोह अपना मतलूब न पा सकी और नेक बन्दों के गुरौह में का'बए मुशर्रफ़ा رَاذَا اللَّهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا की ज़ियारत न कर सकी और दुनिया में कोई चीज़ उस के लिये इस ने'मत का इवज़ या बदला न बनाई गई लिहाज़ा उस ने अपनी जान कुरबान कर दी।



### एक खुदा शनाश मजनूना :

हज़रते सय्यिदुना जुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं मुझे ये ख़बर पहुंची कि ज़बले मक़तम के करीब एक आबिदा लड़की रहती है। मैं ने चाहा कि उस की ज़ियारत करूं। चुनान्चे, मैं उस पहाड़ के करीब जा कर तलाश करता रहा लेकिन वोह दिखाई न दी, मेरी मुलाक़ात आबिदों की एक जमाअत से हुई, मैं ने उन से उस के मुतअल्लिक दरयाफ़्त किया तो वोह कहने लगे : “तुम एक मजनूना के बारे में पूछते हो और अक्ल मन्दों के मुतअल्लिक नहीं पूछते ?” मैं ने कहा : “मुझे उसी के मुतअल्लिक बताओ, अगरचें वोह मजनूना है।” वोह फिर कहने लगे : “हम उसे अपने करीब से गुज़रते हुए देखते हैं कि वोह कभी गिरती है तो कभी खड़ी हो जाती है, कभी चीख़ो पुकार करती है तो कभी ख़ामोश हो जाती है, कभी रोती है तो कभी हंसती है।” मैं ने कहा : “मुझे उस का पता बताओ।” तो उन में से एक ने बताया कि “आप फुला वादी में चले जाएं।” चुनान्चे, मैं उस की तलाश में चल पड़ा। जब मैं उस के करीब पहुंचा तो धीमी धीमी आवाज़ में उसे चन्द अशआर पढ़ते सुना, जिन का मफ़हूम येह है :

“ऐ वोह ज़ात जिस के ज़िक्र से दिल उन्स महसूस करते हैं ! मख़्लूक से कनारा कश हो कर मेरी उम्मीद सिर्फ़ तेरी ही ज़ाते करीमाना है। ऐ वोह ज़ात कि तमाम लोग जिस के बन्दे हैं ! ज़माना गुज़र जाएगा मगर तेरी महब्वत दिलों में हर दम तरो ताज़ा रहेगी।”

आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं कि मैं इस आवाज़ के पीछे चल पड़ा तो एक लड़की को देखा, वोह बहुत बड़ी चट्टान पर बैठी थी। मैं ने उसे सलाम किया तो वोह जवाब देने के बा'द कहने लगी : “ऐ जुन्नून ! क्या हुवा कि एक मजनूना को ढूँड रहे हैं ?” मैं ने पूछा : “क्या तुम मजनूना हो ?” बोली : “जी हां, अगर मैं मजनूना न होती तो मुझे ऐसा क्यूं कहा जाता ?” फिर मैं ने पूछा : “किस वजह से तुम मजनूना हो गई हो ?” तो उस ने जवाब दिया : “ऐ जुन्नून ! महबूबे हकीकी عَزَّوَجَلَّ की महब्वत ने मुझे बांध रखा है और उसी के इश्क़ ने मुझे बेचैन कर दिया है।” फिर मैं ने पूछा : “तुम्हारे इश्क़ व महब्वत का मक़ाम क्या है ?” तो उस ने जवाब दिया : “ऐ जुन्नून ! महब्वत व इश्क़ का मक़ाम दिल है और वज्द का मक़ाम बातिन है।” फिर वोह शदीद गिर्या कुनां हुई, यहां तक कि उस पर ग़शी तारी हो गई। जब इफ़ाका हुवा तो शिद्ते महब्वत से एक आहे सद् दिले पुर दर्द से खींचते हुए कहा : “ऐ जुन्नून ! महबूबे हकीकी عَزَّوَجَلَّ से महब्वत करने वालों की मौत यूं आती है।” फिर एक ज़ोरदार चीख़ मार कर ज़मीन पर गिर गई, मैं ने उसे हिला जुला कर देखा तो उस की रूह परवाज़ कर चुकी थी।

### एक आरिफ़ा का आरिफ़ाना कलाम :

हज़रते सय्यिदुना जा'फ़र ख़ादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي फ़रमाते हैं : मैं ने हज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي को फ़रमाते सुना कि मैं ने एक साल तन्हा हज़ किया और मक्काए मुकर्रमा زَادَهَا اللَّهُ شَرَفًا وَعَظِيمًا में ही ठहर गया। जब रात तारीक हो गई तो तवाफ़ के लिये मताफ़ (या'नी तवाफ़ की जगह)

में दाखिल हुवा। दौराने तवाफ़ मैं ने एक लड़की देखी जो बैतुल्लाह शरीफ़ का तवाफ़ कर रही थी। वोह कुछ अशआर पढ़ रही थी, जिन का मफ़हूम येह है : “महबूबते इलाही عَزَّوَجَلَّ ने पोशीदा रहने से इन्कार कर दिया। मैं ने उसे बहुत छुपाया मगर उस ने मेरे पास डेरे डाल लिये। जब मेरा इश्क़ शिद्दत इख़्तियार करता है तो महबूबे हकीकी عَزَّوَجَلَّ की याद से मेरा दिल दीवाना हो जाता है। अगर मैं अपने महबूब से कुर्ब हासिल करने का इरादा करूं और वोह मुझे विसाल की दौलत से सरशार कर दे तो मेरा दिल मुतमइन हो जाए और मुझ पर मदहोशी तारी हो जाए यहां तक कि मैं उस के दीदार की लज़्ज़त उठाऊं और खुशी से झूम जाऊं।”

हज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي फ़रमाते हैं कि मैं ने कहा : ऐ सआदत मन्द लड़की ! क्या तुम्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर भरोसा नहीं कि इस अज़ीम मक़ाम पर ऐसा कलाम कर रही हो, तो वोह मेरी तरफ़ मुतवज्जेह हुई और कहने लगी : “ऐ जुनैद ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस से महबूबत करने वाले के दरमियान हाइल न हो।” फिर उस ने चन्द अशआर पढ़े, जिन का मफ़हूम येह है :

“अगर महबूबे हकीकी عَزَّوَجَلَّ से मुलाक़ात का मुआमला न होता तो आप मुझे मीठी नींद छोड़ ने वाला न देखते। महबूबते इलाही عَزَّوَجَلَّ ने मुझे बे वतन कर दिया है जैसे आप मेरे वतन के मुतअल्लिक़ ख़याल कर रहे हैं। मैं ने अपने महबूबे हकीकी عَزَّوَجَلَّ से मुलाक़ात का पुख़्ता इरादा कर लिया है पस उस की महबूबत ने मुझे दीवाना बना दिया है।”

फिर कहने लगी : ऐ जुनैद ! आप का'बए मुशरफ़ رَافِعُ اللَّهِ شَرَفًاوَتَعْظِيمًا का तवाफ़ कर रहे हैं क्या आप ने का'बे के रब्ब عَزَّوَجَلَّ को देखा है ? मैं ने कहा : “आप को इस दा'वे की दलील काइम करनी होगी तो उस ने अपना सर आस्मान की तरफ़ उठा लिया और कहने लगी : तू पाक है, तू पाक है, तेरी शान कितनी बुलन्द है ! तेरी बादशाही कितनी इज़्ज़त वाली है ! येह लोग पथ्थरों जैसे हैं जो अहले मा'रिफ़त का इन्कार करते हुए तवाफ़ कर रहे हैं।” फिर उस ने चन्द अशआर पढ़े, जिन का मफ़हूम येह है :

“लोग **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का कुर्ब हासिल करने के लिये बैतुल्लाह शरीफ़ का तवाफ़ कर रहे हैं जब कि उन के दिल चट्टानों से ज़ियादा सख़्त हैं। अगर वोह तन्हाई में मुख़्लिस होते तो इन की सिफ़ात उम्दा हो जातीं और उन की ज़ात में बयान करने के लिये सिफ़ाते हक़ काइम हो जातीं।” हज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي फ़रमाते हैं कि उस का आरिफ़ाना कलाम सुन कर मुझ पर ग़शी तारी हो गई, जब इफ़ाका हुवा तो मैं ने उसे बहुत तलाश किया मगर कहीं न पाया।

**एक आबिदा की नशीहत भरी बातें :**

हज़रते सय्यिदुना जुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं कि मेरे सामने एक आबिदा व ज़ाहिदा की ता'रीफ़ की गई जो बहुत बा अमल और कषरत से इबादत करने वाली थी। मैं ने उस की तरफ़ जाने का इरादा कर लिया। चुनान्चे, मैं ने देखा कि वोह दिन को रोज़े रखती, रात को क़ियाम

करती, न तो इबादत से कभी गाफिल होती और न ही नेकियों से उसे कोई उक्ताहत होती। वोह एक राहब खाने में रहती थी। रात के वक्त जब अंधेरा छा गया तो मैं ने उसे येह कहते हुए सुना : “मेरा मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ नहीं सोता और नींद उस के शायाने शान नहीं, तो फिर उस की बन्दी कैसे सो जाए, तेरी इज्जतो जलाल की कसम ! आज रात मैं नहीं सोऊंगी।” जब सुब्ह हुई तो मैं ने उसे सलाम किया और उस ने जवाब दिया। मैं ने कहा : “ऐ लड़की ! तू ईसाइयों के ठिकाने में रहती है जब कि तू इबादत में इस मक़ाम पर है ?” तो वोह कहने लगी : “ऐ जुन्नून ! ऐसी छोटी बात न करें, आप तो उस अज़ीम मक़ाम पर फ़ाइज़ हैं कि आप के दिल में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इलावा किसी का ख़याल नहीं आता, और न ही कोई वहम पैदा होता है।” मैं ने उस से कहा : “क्या तुम इस गिर्जे में वहशत महसूस नहीं करती ?” उस ने कहा : “वोह ज़ात जिस ने मेरे दिल को अपनी लतीफ़ हिकमत से भर दिया और मुझे अपनी महबूबत अता कर दी, मैं अपने दिल में उस के इलावा किसी के लिये कोई जगह नहीं पाती और न ही मेरे जिस्म में कोई ऐसी रग है जो उस की महबूबत व मा'रिफ़त से लबरैज़ न हो, तो मैं क्यूंकर उस के ज़िक्र से मानूस न होऊंगी, मैं तो हमेशा उस की बारगाह में होती हूं।”

फिर मैं ने कहा : “आप ने राहे सुलूक की तरफ़ मेरी रहनुमाई फ़रमाई है, पस मुझे भी ऐसी क़ौम के रास्ते पर चलाइये, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की कसम ! मैं गुनाहों के समन्दर में ग़र्क़ हूं।” तो उस ने नसीहत करते हुए कहा : “ऐ जुन्नून ! तक्वा को अपना तोशा बना लो और आख़िरत को अपना मक्सद बना लो, जोहदो तक्वा को अपनी सुवारी बना लो और सब से कट कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ मुतवज्जेह रहने को अपनी आदत बना लो, और इस दुनिया को अपने दिल से निकाल दो, येह आप के **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से रुजूअ का सबब होगा। और खाइफ़ीन के रास्ते को अपना कर, नाफ़रमानों के रास्ते को तर्क कर दीजिये, मुवहिद्दीन की फ़ेहरिस्त में आप लिखे जाएंगे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में आप की हाज़िरी इस हाल में होगी कि आप के और उस के दरमियान कोई हिजाब न होगा, और न ही कोई दरबान आप को रोकेगा।” हज़रते सय्यिदुना जुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْفَوْی फ़रमाते हैं कि उस के कलाम ने मेरे दिल पर बहुत अषर किया और वोही मेरे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ रुजूअ का सबब बना, फिर उस ने मुझे वहीं छोड़ा और चली गई।

وَصَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَآلِهِ وَصَحْبِهِ أَجْمَعِينَ





बयान 28 :

## सूर फूंकने का बयान

﴿وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَصَعِقَ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ إِلَّا مَنْ شَاءَ اللَّهُ ثُمَّ نُفِخَ فِيهِ أُخْرَىٰ فَإِذَا هُمْ قِيَامٌ يَنْظُرُونَ﴾ (پ ۲۴، الزمر: ۶۸)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और सूर फूंक जाएगा, तो बे होश हो जाएंगे, जितने आस्मानों में हैं और जितने ज़मीन में, मगर जिसे **अल्लाह** चाहे, फिर वोह दोबारा फूंक जाएगा जभी वोह देखते हुए खड़े हो जाएंगे । (1)

### हम्मे बारी तआला :

सब खूबियां उस ज़ात के लिये हैं वहम व गुमान जिस का इदराक नहीं कर सकते, न आंखें उस का इहाता कर सकती हैं । न उसे आफात आती हैं न मौत । उस ने किताब को नाज़िल फ़रमाया, बादल बरसाया, तर फलों को खुश्क टहनियों से निकाला और इन्सान को खुश्क बजती मिट्टी से पैदा किया जो अस्ल में एक सियाह, बूदार गारा थी । वोह खुद अपनी कुदरते कामिला को यूं बयान फ़रमाता है : “ **तर्जमए कन्जुल ईमान** : और जब किसी बात का हुक्म फ़रमाए तो उस से येही फ़रमाता है कि हो जा, वोह फ़ौरन हो जाती है ।

उस की कुदरत से सब कुछ पैदा हुवा । उस की रहमत से लगातार ने'मतें मिलीं । उस की हिक्मत से ज़मीनो आस्मान शक़ हुए । उस की मशिय्यत व इरादे से सआदत व शकावत लिखी गई ।

कुरआने पाक में **अल्लाह** عزّوجلّ इरशाद फ़रमाता है :

①....मुफ़स्सिरे शहीर खलीफ़ आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عليه رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِي  
तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारक के तहत फ़रमाते हैं : “येह पहले नफ़्खे का बयान है । इस नफ़्खे से जो बे होशी तारी होगी उस का येह अषर होगा कि मलाइका और ज़मीन वालों से उस वक़्त जो लोग ज़िन्दा होंगे, जिन पर मौत न आई होगी, वोह इस से मर जाएंगे और जिन पर मौत वारिद हो चुकी फिर **अल्लाह** तआला ने उन्हें हयात इनायत की वोह अपनी क़ब्रों में ज़िन्दा हैं । जैसे कि अम्बिया व शुहदा । उन पर इस नफ़्खे से बे होशी की सी कैफ़ियत तारी होगी और जो लोग क़ब्रों में मरे पड़े हैं उन्हें इस नफ़्खे का शुज़र भी न होगा । (जमल वगैरा) । इस इस्तिषना में कौन कौन दाख़िल है । इस में मुफ़स्सिरीन के बहुत अक्वाल हैं : “हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि नफ़्खे सड़क से तमाम आस्मान और ज़मीन वाले मर जाएंगे सिवाए जिब्रईल व मीकाईल व इसराफ़ील व मलकुल मौत के । फिर **अल्लाह** तआला दोनों नफ़्खों के दरमियान जो चालीस बरस की मुदत है, इस में उन फ़िरिशतों को भी मौत देगा । दूसरा कौल येह है कि मुस्तषना शुहदा हैं जिन के लिये कुरआने मजीद में “بِلْ اَحْيَاء” आया है । हदीष शरीफ़ में भी है कि वोह शुहदा हैं जो तल्वारें हमाइल किये गिर्दे अर्श हाज़िर होंगे । तीसरा कौल हज़रते जाबिर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया कि “मुस्तषना हज़रते मूसा عليه السّلام हैं । चूँकि आप तूर पर बे होश हो चुके हैं इस लिये इस नफ़्खे से आप बे होश न होंगे । बल्कि आप मुतीक़ज़, होशियार रहेंगे । चौथा कौल येह है कि मुस्तषना जन्नत की हुरें और अर्श व कुरसी के रहने वाले हैं । ज़ह्हाक का कौल है कि “मुस्तषना रिज़वान और हुरें और वोह फ़िरिशते जो जहन्नम पर मामूर हैं वोह और जहन्नम के सांप बिच्छू हैं । (तफ़्सीरे कबीर व जमल) । येह नफ़्ख़ए पानिय्या है जिस से मुर्दे ज़िन्दा किये जाएंगे अपनी क़ब्रों से और देखते हुए खड़े होने से या तो येह मुराद है कि वोह हैरत में आ कर मबहूत की तरह हर तरफ़ निगाहें उठा उठा कर देखेंगे । या येह मा'ना है कि “वोह येह देखते होंगे कि अब इन्हें क्या मुआमला पेश आएगा और मोअमिनीन की क़ब्रों पर **अल्लाह** तआला की रहमत से सुवारियां हाज़िर की जाएंगी । जैसा कि **अल्लाह** तआला ने वा'दा फ़रमाया, “يَوْمَ نَحْشُرُ الْمُتَّقِينَ إِلَى الرُّحْمَنِ وَقَدْ”

**तर्जमए कन्जुल ईमान :** अज़ाब देता है जिसे चाहे और रहम फ़रमाता है जिस पर चाहे और तुम्हें उसी की तरफ़ फिरना है ।

अक़ल मन्दों के सीनों को शिफ़ा देता और अपनी पुख़्ता तख़्तीकात से हर शको शुबा दूर करता है । चुनान्चे, खुद इरशाद फ़रमाता है (प २१, रूम: २०) **तर्जमए कन्जुल ईमान :** और उस की निशानियों से है यह कि तुम्हें पैदा किया मिट्टी से फिर ज़मीन तुम इन्सान हो दुनिया में फैले हुए ।

उस ने अपनी हिक्मत के कामिला से मुख़्तलिफ़ किस्म की अश्या पैदा फ़रमाई और गुज़श्ता व आयन्दा की अश्या को एक अन्दाजे से रखा और तौबा करने वाले के तमाम गुनाह मुआफ़ फ़रमा दिये । चुनान्चे, इरशाद फ़रमाता है : (प २०, शूर: २०) **तर्जमए कन्जुल ईमान :** और वोही है जो अपने बन्दों की तौबा क़बूल फ़रमाता और गुनाहों से दरगुज़र फ़रमाता है और जानता है जो कुछ तुम करते हो ।” (1)

**अल्लाह** عزّ وجلّ नए नए ज़माने ईजाद करता है । मां के पेट में मर्दों, औरतों की सूरतें बनाता है । क़ब्र वालों को उठाएगा तो वोह ज़िन्दा हो कर उठ खड़े होंगे । चुनान्चे, कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है : (प २३, स: ५१) **तर्जमए कन्जुल ईमान :** और फूँका जाएगा सूर ज़मीन वोह क़ब्रों से अपने रब्ब की तरफ़ दौड़ते चलेंगे । और अपनी कुदरत की निशानी, सूरज के मुतअल्लिक़ फ़रमाता है :

**तर्जमए कन्जुल ईमान :** और सूरज को चराग (किया) । **وَجَعَلَ الشَّمْسُ سِرَاجًا** (प २९, नوح: १२)

**अल्लाह** عزّ وجلّ ने बदलियों से ज़ोर का पानी उतारा और अगर वोह चाहे तो उसे ख़ारी कर दे फिर उस का शुक्र क्यूं नहीं करते जो करीम है, क़द्र फ़रमाने वाला है, मेहरबान है, बख़्शने वाला है, अपने फ़ैसलों में जुल्म व सितम से पाक है, ज़मीनो आस्मान का ख़ालिक़ है । खुद कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है : (प १, अल: १) **तर्जमए कन्जुल ईमान :** जिस ने आस्मान और ज़मीन बनाए, और अन्धेरियां और रोशनी पैदा की, इस पर काफ़िर लोग अपने रब्ब के बराबर ठहराते हैं । (2)

①.....मुफ़स्सिरे शहीर ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी **عليه ورحمة الله تعالى** तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयत मुबारका के तहत फ़रमाते हैं :

**मस्अला :** तौबा हर एक गुनाह से वाजिब है और तौबा की हकीक़त यह है कि आदमी बदी व मा'सियत से बाज़ आए और जो गुनाह इस से सादिर हुवा इस पर नादिम हो और हमेशा गुनाह से मुजतनिब रहने का पुख़्ता इरादा करे और अगर गुनाह में किसी बन्दे की हक़ तलफ़ी भी थी तो उस हक़ से बतरीक़े शरई ओहदा बर आ हो ।”

②.....मुफ़स्सिरे शहीर ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत सदरुल अफ़ज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी **عليه ورحمة الله تعالى** तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयत मुबारका के तहत फ़रमाते हैं : “हज़रते का'बुल अहबार **رضي الله تعالى عنه** ने फ़रमाया : “तौरेत में सब से अव्वल येही आयत है । इस आयत में बन्दों को शाने इस्तिग़ना के साथ हम्द की ता'लीम फ़रमाई गई और पैदाइशे आसमान व ज़मीन का ज़िक़्र इस लिये है कि इन में नाज़िरीन के लिये बहुत अज़ाब के कुदरत व ग़राब के हिक्मत और इब्रतें व मनाफ़ेअ हैं । या'नी हर एक अन्धेरी और रोशनी ख़्वाह वोह अन्धेरी शब की हो या कुफ़्र की या जहल की या जहन्नम की और रोशनी ख़्वाह दिन की हो या ईमान व हिदायत व इल्म व जन्नत की । जुल्मात को जम्अ और नूर को वाहिद के सीगे से ज़िक़्र फ़रमाने में इस तरफ़ इशारा है कि बाति़ल की राहें बहुत कपीर हैं और राहें हक़ सिर्फ़ एक दीने इस्लाम । या'नी बा वुजूद ऐसे दलाइल पर मुतलअ होने और ऐसे निशान हाए कुदरत देखने के, दूसरों को हुता कि पथरों को पूजते हैं । बा वुजूद यह कि उस के मुक़िर हैं कि आस्मानों और ज़मीन का पैदा करने वाला **अल्लाह** है ।”

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तूल व अर्ज में फैली हुई तमाम अश्या का भी मालिक है, अपने बन्दों के फ़राइज व सुनन क़बूल फ़रमाता है, सब को उसी की तरफ़ लौटना और उसी की बारगाह में पेश होना है। चुनान्चे, अपनी वसीअ़ कुदरत के बारे में इरशाद फ़रमाता है :

وَلَهُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ كُلُّ لَهٗ قٰنُوْنٌ 0 (प २१, الروम: २१)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :** और उसी के हैं जो कोई आस्मानों और ज़मीन में हैं, सब उसी के जेरे हुक्म हैं।

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन्सान को मज़बूत व मुस्तहक़म पैदा फ़रमाया, और उस में ताक़त व कुव्वत को वदीअ़त फ़रमाया। जैसा कि कुरआने मजीद में फ़रमाता है :

وَهُوَ الَّذِي اَنْشَاَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَّاحِدَةٍ فَمُسْتَقَرٌّ وَمُسْتَوْدَعٌ قَدْ فَضَّلْنَا الْاٰیٰتِ لِقَوْمٍ يَفْقَهُوْنَ 0 (प ७, الانعام: ९८)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :** और वोही है जिस ने तुम को एक जान से पैदा किया फिर कहीं तुम्हें ठहरना है और कहीं अमानत रहना बेशक हम ने मुफ़स्सल आयतें बयान कर दीं समझ वालों के लिये।

उस ने राहे हिदायत को ज़ाहिर फ़रमाया और उस के तमाम रास्तों को बयान फ़रमाया, और अपने बन्दों पर अपनी पै दर पै मिलने वाली ने'मतों की तक्मील फ़रमाई, और वहदानिय्यत का इक़रार करने वालों के चेहरे रोशन फ़रमाए तो इन के चेहरे मुस्कुराते और खिल खिलाते हैं। चुनान्चे,

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में ऐसों की शान यूँ बयान फ़रमाता है :

**तर्जमए कन्जुल ईमान :** لَا يَخْزِيْهِمْ الْفِرْعٰنُ الْاَكْبَرُ وَتَتَلَقَّيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةُ هٰذَا يَوْمُكُمْ الَّذِي كُنْتُمْ تُوعَدُوْنَ 0 (प १७, الانبياء: १०३) उन्हें ग़म में न डालेगी वोह सब से बड़ी घबराहट और फ़िरिश्ते उन की पेशवाई को आएंगे कि येह है तुम्हारा वोह दिन जिस का तुम से वा'दा था।

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने बदलियों से पानी उतारा, और अपने फ़ज़लो करम से कामिल तौर पर ने'मतें अता फ़रमाई, अपने बन्दों के मुतअल्लिक़ जो चाहता है फैसला फ़रमाता है। क्यूँकि, खुद इरशाद फ़रमाता है : **तर्जमए कन्जुल ईमान :** لَا يُسْئَلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ يُسْئَلُوْنَ 0 (प १७, الانبياء: २३) उस से नहीं पूछा जाता जो वोह करे और उन सब से सुवाल होगा।

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तख़लीक़े काइनात की कारीगरी को मज़बूत व मुस्तहक़म किया, अपनी मख़्लूक को वसीअ़ रिज़क़ अता फ़रमा कर इन पर एहसान व इन्आम फ़रमाया, और इन के मुब्हम राज़ों को जानता है। जैसा कि कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

لَا جَرَمَ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ط (प १६, النحل: २३)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :** फ़िल हकीक़त **अल्लाह** जानता है जो छुपाते और जो ज़ाहिर करते हैं।

رَبُّ الْمَشْرِقَيْنِ وَرَبُّ الْمَغْرِبَيْنِ 0 (प २८, الرحمن: १८)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :** दोनों पूरब का रब्ब और दोनों पच्छिम का रब्ब।

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने काइनात को दो नूरों के साथ मुनव्वर फ़रमाया या'नी हर चीज़ के दो जोड़े बनाए। चुनान्चे, खुद इरशाद फ़रमाता है : وَمِنْ كُلِّ شَيْءٍ خَلَقْنَا زَوْجَيْنِ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ 0 (प २७, धरित: ६९)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :** और हम ने हर चीज़ को दो जोड़े बनाए कि तुम ध्यान करो।



## मिष्लियत से पाक जात :

**अल्लाह** عز وجل ने अक़ल वालों पर पर्दे डाल दिये कि वोह उस का इहाता कर सकें तो वोह हैरान व परेशान हैं, और उन्हें अपनी तौहीद की निशानियां दिखाई तो उन्होंने ने न मुख़ालफ़त की और न ही मिष्ल होने का दा'वा किया और **अल्लाह** عز وجل ने अपनी बुजुर्गी व अज़मत का ज़िक्र उन के दिलों में डाला तो वोह उस की याद में मस्त हो गए और कहने लगे : “**अल्लाह** عز وجل के सिवा किसी की बन्दगी नहीं और **अल्लाह** ही पर ईमान वाले भरोसा करें।” उस ने अपने औलियाए किराम **اللّٰهُ تَعَالٰی** पर फ़ज़लो करम करते हुए उन्हें बड़ी बड़ी ने'मतें अता फ़रमाई, और अपने दुश्मनों के लिये दर्द नाक अज़ाब तय्यार किया। और अपना इदराक करने से लोगों की आंखों पर पर्दे डाल दिये लिहाज़ा वोह किसी के मुतअल्लिक उस के मिष्ल या मुशाबेह होने का वहम तक नहीं करते। चुनान्चे,

**अल्लाह** عز وجل अपनी बे मिष्ल व बे मिषाल शान यूं बयान फ़रमाता है :

﴿1﴾ سُبْحٰنَهُ وَتَعَالٰی عَمَّا يُشْرِكُوْنَ (प ११, यूनस: १८)

**तर्जमए कन्जुल ईमान** : उसे पाकी और बरतरी है उन के शिर्क से।

﴿2﴾ لَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ (प २०, الشورى: ११)

**तर्जमए कन्जुल ईमान** : उस जैसा कोई नहीं।

**अल्लाह** عز وجل की फैली हुई फ़ज़ीलत से बुलन्द शै कोई नहीं, और उस की राह पर चलने वाले को कोई गुमराही नहीं आ सकती। उसी का फ़रमाने हकीक़त निशान है :

﴿3﴾ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَيُحْيِي الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَكَذٰلِكَ تُخْرَجُونَ (प २१, الروम: १९)

**तर्जमए कन्जुल ईमान** : वोह ज़िन्दा को निकालता है मुर्दे से और मुर्दे को निकालता है ज़िन्दा से और ज़मीन को जिलाता (या'नी ज़िन्दा करता) है उस के मरे पीछे और यूंही तुम निकाले जाओगे।

मैं **अल्लाह** عز وجل की ऐसी हम्दो षना करता हूं जिस के ज़रीए मुक़र्रबीन उस के मज़ीद कुर्ब की लज़ज़त हासिल करते हैं, और मैं गवाही देता हूं कि **अल्लाह** عز وجل के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, वोह यक्ता है, उस का कोई शरीक नहीं, येह ऐसी गवाही है जो गवाही देने वाले को उस रोज़ नफ़अ बख़्शोगी जिस दिन न माल नफ़अ देगा न अवलाद, और मैं गवाही देता हूं कि हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** **अल्लाह** عز وجل के बन्दे और रसूल हैं, जो अरबी नबी हैं और अमीन व मामून हैं। **अल्लाह** عز وجل आप **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर, आप **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की आल व अस्ह़ाब **عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان** अज़वाजे मुतहहरात **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمْ أَجْمَعِينَ** और पाक अवलाद पर दुरूदो सलाम भेजे जिन्हों ने हक़ के मुताबिक़ फैसले किये और जो हक़ के साथ अदलो इन्साफ़ करते हैं।

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत का हौलनाक मन्ज़र बयान करते हुए इरशाद फ़रमाता है :

﴿4﴾ وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَصَبَقَ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ

وَمَنْ فِي الْأَرْضِ إِلَّا مَنْ شَاءَ اللَّهُ ط ثُمَّ نُفِخَ فِيهِ

أُخْرَى فَإِذَا هُمْ قِيَامٌ يَنْظُرُونَ 0 (प २४, الزمر: ६८)

हज़रते सय्यिदुना इसराफ़ील عَلَيْهِ السَّلَام (अल्लाह के हुक्म से) सूर फूंकेंगे, जब कि सूर सींग नुमा होगा। और बा'ज के नज़दीक हज़रते सय्यिदुना हसन की क़िराअत के मुताबिक़ यह "صورة" की जम्अ है। इन्होंने "و" "وَنُفِخَ فِي الصُّورِ" को फ़त्ह के साथ पढ़ा है।

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : "हज़रते सय्यिदुना इसराफ़ील عَلَيْهِ السَّلَام ने कभी आंख नहीं झपकाई।" या'नी जब से इन के ज़िम्मे यह काम लगा है, वोह एक पलक को दूसरी पर नहीं रखते कि कहीं पलक झपकने से पहले उन्हें (सूर फूंकने का) हुक्म न दे दिया जाए। और इस नफ़ख़े से मुराद नफ़ख़ उला है। "صَعَقَ" का मा'ना है कि वोह घबराहट और आवाज़ की शिद्दत से मर जाएंगे।

"إِلَّا مَنْ شَاءَ اللَّهُ" का मतलब यह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिन्हें चाहेगा उन्हें घबराहट से महफूज़ रखेगा। और यह कौन लोग होंगे, इस बारे में मुख़्तलिफ़ अक्वाल हैं। चुनान्वे, एक कौल यह है कि वोह शुहदा हैं। बा'ज के नज़दीक इन से मुराद जिब्राईल, मीकाईल व इज़राईल और इसराफ़ील عَلَيْهِ السَّلَام हैं। और बा'ज ने कहा "वोह अर्श उठाने वाले फ़िरिश्ते हैं। एक कौल यह है कि तमाम फ़िरिश्ते मुराद हैं, जब कि एक कौल यह भी है कि इन से हूरे ऐन मुराद हैं। फिर दूसरी बार सूर फूंका जाएगा और यह दोबारा उठाए जाने के लिये होगा।

(المستدرک، کتاب الاحوال، باب ينتظر صاحب الصور متى يؤمر بنفخه، الحديث ٨٧١٩، ج ٥، ص ٧٧٤ - العظمة لابی الشیخ)

الاصبهانی، صفة اسرافیل علیه السلام، الحديث ٣٩٤/٣٩٣، ص ١٤٥، بتغییر قلیل)

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है, हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने हक्कीक़त निशान है : "अजसाम ज़मीन से इस तरह निकलेंगे जैसे सब्ज़ा, और रूहे शहद की मख़िख़यों की तरह निकलेंगी और नाक के बांसों से जिस्मों में इस तरह सरायत कर जाएंगी जैसे ज़हर, ज़हर खुरदा के जिस्म में सरायत कर जाता है और वोह सब इन हौलनाकियों को देखते हुए खड़े हो जाएंगे जिन का उन से वा'दा किया गया था।"

(شعب الایمان للبيهقي، باب فی حشر الناس بعد ما یبعثون من قبورهم، فصل فی صفة يوم القيامة، الحديث ٣٥٣، ج ١، ص ٣٠٩، بتغییر قلیل)

**ऐ मेरे इस्लामी भाइयो ! ग़ौर करो ! तुम्हारे सब दोस्त, अहबाब अपने हक्कीक़ी घरों की तरफ़ कूच कर गए, अُن क़रीब तुम्हें भी यह सफ़र तै करना और क़ब्र में उतरना पड़ेगा, वोह सब दुन्यवी मालो दौलत और अपने वतन छोड़ कर चल बसे और बहुत जल्द तुम्हें भी यह सब कुछ छोड़ कर जाना पड़ेगा, उन्होंने ने जुदाई का प्याला घूट घूट कर के पिया अब तुम्हें भी पीना पड़ेगा, जिस तरह उन्हें अपने आ'माल का सामना करना पड़ा तुम्हें भी करना पड़ेगा, इन्हें अपने बुरे**

आ'माल पर नदामत व शर्मिन्दगी उठाना पड़ी अंन करीब तुम्हें भी उठाना पड़ेगी, वक्त को फुजूलिय्यात में बरबाद करने पर वोह हसरत व अफसोस की आफत में मुब्तला हैं अंन करीब तुम्हें भी हसरत की आफत में मुब्तला होना पड़ेगा, वोह मौत की सख्तियों से हम कनार हुए और जल्द ही तुम्हें भी उन सख्तियों का शिकार होना पड़ेगा, उन्होंने ने अपनी आंखों से हौलनाकियों को देखा अंन करीब तुम भी देख लोगे । इन से उन के आ'माल का हिसाब लिया गया और जल्द ही तुम से भी लिया जाएगा, इन में से कोई तमन्ना करेगा कि काश ! माल के बदले अज़ाब से नजात मिल जाए अंन करीब तुम भी उस की तमन्ना करोगे, लिहाज़ा जल्दी करो ! हिसाब किताब के दिन और ख़्वाहिशों की ज़िल्लत से पहले पहले तौबा कर लो, अभी जवानी की बहार है, बहुत जल्द उसे मौत के हाथो फ़ना होना है, अंन करीब तुम अचानक आने वाली मौत के साए में होगे जिस का तुम से वा'दा किया गया है । चुनान्वे, **अल्लाह** तआला फ़रमाता है :

وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَصَعِقَ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ إِلَّا مَنْ شَاءَ اللَّهُ ثُمَّ نُفِخَ فِيهِ أُخْرَىٰ فَإِذَا هُمْ قِيَامٌ يَنْظُرُونَ 0 (प ४, ५, الزمر: ६८)

ऐ इब्ने आदम ! उस वक्त तेरा क्या हाल होगा जब सूर फूँका जाएगा और क़ब्र वाले मुन्तशिर हो जाएंगे, जो सीनों में होगा ज़ाहिर हो जाएगा, मुआमलात तंग हो जाएंगे, छुपा हुआ सब ज़ाहिर हो जाएगा और सारी मख़्लूक क़ब्रों से उठ खड़ी होगी ।

فَإِذَا هُمْ قِيَامٌ يَنْظُرُونَ 0 (प ४, ५, الزمر: ६८)

वोह सब से बड़ा कैसा अज़ीब दिन होगा जिस में ज़लज़ले होंगे और पहाड़ों को चलाया जाएगा, यके बा'द दीगर हौलनाकियों का सिलसिला होगा, उम्मीदें ख़त्म हो जाएंगी, हीले कम हो जाएंगे, बाई जानिब वाले ख़सारे में होंगे, जूही सूर फूँका जाएगा सब लोग कांपते हुए अपनी क़ब्रों से निकलेंगे ।

فَإِذَا هُمْ قِيَامٌ يَنْظُرُونَ 0 (प ४, ५, الزمر: ६८)

वोह ऐसा दिन है जिस में क़दम फिसल रहे होंगे, अक्लें कमज़ोर हो जाएंगी, कुछ समझ न आएगा, तवील अर्सा खड़ा रहना पड़ेगा, गुनाह ज़ाहिर हो जाएंगे, किसी को बोलने की जुरअत न होगी और मौत का जाम पीने के बा'द लोग क़ब्रों से ज़िन्दा निकलते होंगे ।

فَإِذَا هُمْ قِيَامٌ يَنْظُرُونَ 0 (प ४, ५, الزمر: ६८)

पस वोह कियामत का दिन है, हसरत व नदामत का दिन है, ज़लज़लों और झटकों का दिन है, उस दिन गुनहगार और नाफ़रमान अपने गुनाहों और बदकारियों को देख लेगा और लोग क़ब्रों से उठ कर वा'दे की जगह पर जा रहे होंगे ।

فَإِذَا هُمْ قِيَامٌ يَنْظُرُونَ 0 (प ४, ५, الزمر: ६८)

﴿5﴾ يَوْمَ تَبْلَى السَّرَافِرُ 0 (प ३०, الطارق: ९)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और सूर फूँका जाएगा, तो बेहोश हो जाएंगे, जितने आस्मानों में हैं और जितने ज़मीन में, मगर जिसे **अल्लाह** चाहे, फिर वोह दोबारा फूँका जाएगा जभी वोह देखते हुए खड़े हो जाएंगे ।

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जभी वोह देखते हुए खड़े हो जाएंगे ।

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जभी वोह देखते हुए खड़े हो जाएंगे ।

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जभी वोह देखते हुए खड़े हो जाएंगे ।

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जभी वोह देखते हुए खड़े हो जाएंगे ।

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जिस दिन छुपी बातों की जांच होगी ।



**पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इलिमिया (दा' वते इस्लामी)**



खाली वापस लौटा दिया ? कौन है जिस ने हमारी जनाब में इल्तिजा की और हम ने उसे धुतकार दिया ? कौन है जिस ने हम से तौबा की और हम ने क़बूल न की ? कौन है जिस ने हम से मांगा और हम ने अता न किया ? कौन है जिस ने गुनाहों से मुआफी चाही और हम ने उसे धुतकार दिया ? क्योंकि मैं सब से बढ़ कर ख़ताओं को बख़्शने वाला, सब से बढ़ कर ऐबों की पर्दा पोशी करने वाला, सब से बढ़ कर मुसीबत ज़दों की मदद करने वाला, गिर्या व ज़ारी करने वाले पर सब से ज़ियादा मेहरबान और सब से ज़ियादा ग़ैबो की ख़बर रखता हूं। ऐ मेरे बन्दे ! मेरे दर पे खड़ा हो जा मैं तेरा नाम अपने दोस्तों में लिख दूंगा, सहरी में मेरे कलाम से लुफ़् अन्दोज़ हो मैं तुझे अपने तलबगारों में शामिल कर दूंगा, मेरी बारगाह में हाज़िरी से लज़्ज़त हासिल कर मैं तुझे लज़ीज़ (पाकीज़ा) शराब पिलाऊंगा, ग़ैरों को छोड़ दे, फ़क्क को लाज़िम पकड़ ले, सहरी के वक़्त अज़िज़ी व इन्क़िसारी की ज़बान के साथ मुनाजात कर ।”

**ऐ मेरे इस्लामी भाइयो !** मीज़ान पर खड़े हो कर आ'माल का हिसाब देना बहुत दुश्वार है, और **اَبْلَاح** عَزَّوَجَلَّ के सामने अपने गुनाहों भरे वुजूद को ले कर खड़ा होना इन्तिहाई मुश्किल है। पस तुम कब तक खेल कूद में वक़्त बरबाद करते रहोगे ? ज़िन्दगी तो बहुत मुख़्तसर है। अभी तो तुम उन हौलनाकियों से बे ख़बर हो जिन का तुम्हें सामना करना पड़ेगा जब क़ब्र वालों को उठाया जाएगा और सूर फूँका जाएगा और जो कुछ सीनों में पोशीदा है सब ज़ाहिर हो जाएगा तो उस वक़्त तुम्हें सख़्त नदामत व शर्मिन्दगी का सामना करना पड़ेगा।

**ऐ मेरे इस्लामी भाइयो !** जब दिल गले के पास आ जाएंगे, और हसरत व नदामत खन्जर की तरह कलेजे फाड़ देगी और नाफ़रमानों की प्यास सख़्त गर्मी की वजह से जोश मारेगी। तो ऐ नाफ़रमान शख्स ! गुनाह तर्क कर के जल्दी से अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में हाज़िर हो जा और नफ़अ की बहारों को हासिल कर ले इस से पहले कि वोह (बहारें) गुज़र जाएं और सूर फूँक दिया जाए।

अफ़्सोस है उन दिलों पर जो लोहे से ज़ियादा सख़्त हैं ! अफ़्सोस है उन जानों पर जो हिदायत के रास्ते से भटकी हुई हैं ! अफ़्सोस है उन आंखों पर जो चट्टानों की सख़्ती से ज़ियादा जमी हुई हैं (कि **اَبْلَاح** عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ से आंसू नहीं बहातीं ! ) अन् करीब ख़्वाहिशाते नफ़सानिय्या की पैरवी करने वाले पीप की शराब पियेंगे, जब उन के बुरे आ'माल ज़ाहिर होंगे तो उन के होश व ह्वास उड़ जाएंगे।

(پ ۲۴، الزمر: ۶۸) فَإِذَا هُمْ قِيَامٌ يَنْظُرُونَ

**तर्जमए कन्जुल ईमान :** जभी वोह देखते हुए खड़े हो जाएंगे।

काहिली व सुस्ती ने कितने नौजवानों को खाइब व खासिर कर दिया। और कितने गाफ़िलों के दिल ग़फ़्लत ने बेकार कर दिये। और कितने उम्मीद बांधने वालों की आखों पर उन की उम्मीदों ने पर्दा डाल दिया। और कितने ख़ौफ़े इलाही عَزَّوَجَلَّ रखने वालों के दिलों को अस्बाब ने कमज़ोर कर दिया, उन के और उन की ख़्वाहिशात के दरमियान रुकावट बन गए।

(پ ۲۴، الزمر: ۶۸) فَإِذَا هُمْ قِيَامٌ يَنْظُرُونَ

**तर्जमए कन्जुल ईमान :** जभी वोह देखते हुए खड़े हो जाएंगे।



क्या मौत की तकालीफ़ सुन कर तुम्हारी आंखें नहीं बहतीं ? क्या मौत की वहशत से तुम्हारे दिल नहीं घबराते ? क्या वा'ज व नसीहत की तरफ़ तुम्हारे कान मुतवज्जेह हो कर कुछ नहीं सुनते ? क्या फ़ना होने वाली शै की तलब से तुम्हारे पेट सैर नहीं होते ? **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! ("और ज़रूर तुम से तुम्हारे काम पूछे जाएंगे ।" जैसा कि खुद रब्ब तआला इरशाद फ़रमाता है) :

﴿۸﴾ وَلَتُسْأَلُنَّ عَمَّا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ (प ६, النحل: ९३)

فَإِذَا هُمْ قِيَامٌ يَنْظُرُونَ (प ६, الزمر: ६८)

**तर्जमए कन्जुल ईमान** : और ज़रूर तुम से तुम्हारे काम पूछे जाएंगे ।

**तर्जमए कन्जुल ईमान** : जभी वोह देखते हुए खड़े हो जाएंगे ।

### उक मुरीद की तौबा :

मन्कूल है कि एक मुरीद को तौबा की तौफीक़ मिली लेकिन वोह दोबारा अपनी गुनाहों भरी हालत पर लौट आया । फिर उसे नदामत व शर्मिन्दगी हुई और दिल ही दिल में कहने लगा : "अगर मैं अपने गुनाहों से तौबा कर लूं तो मेरे रब्ब **عَزَّوَجَلَّ** के साथ मेरा क्या मुआमला होगा ?" अचानक एक आवाज़ आई : "ऐ नौजवान ! तू ने हमारी नाफ़रमानी की तो हम ने पर्दा पोशी की, तू ने हमें छोड़ दिया तो हम ने मोहलत दी, अब अगर तू हमारी तरफ़ लौट आए तो हम क़बूल फ़रमा लेंगे, अगर तू हमारी तरफ़ मुतवज्जेह हो तो हम तेरी तरफ़ नज़रे रहूमत फ़रमाएंगे, तू ने अर्सए दराज़ तक अलानिय्या हमारी नाफ़रमानी की लेकिन हम ने ख़ताओं को ढांप दिया, तू ने हम से कितनी दूरी इख़्तियार की फिर भी हम ने अपने क़रीब किया, तू ने नाफ़रमानियों के साथ हमारा मुक़ालबा किया फिर भी हम ने दरगुज़र किया, अब भी तू हमारी तरफ़ लौट आए और हम से सुल्ह कर ले तो हम भी सुल्ह कर लेंगे ।"

हज़रते सय्यिदुना अली बिन मुवप्फ़क़ **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** अपनी मुनाजात में अर्ज किया करते थे : "ऐ मेरे मालिको मौला **عَزَّوَجَلَّ** तेरी इज़्ज़तो जलाल की क़सम ! मैं तेरे दरवाज़े से नहीं हटूंगा अगर्चे तू मुझे धुतकार दे । मैं तेरी बारगाह से नहीं फिरूंगा अगर्चे तू मुझे दूर भी कर दे । मैं तेरे विसाल से दूरी इख़्तियार नहीं करूंगा अगर्चे तू मुझ से तअल्लुक तोड़ ले । मैं तेरी महब्बत को दिल से नहीं निकालूंगा अगर्चे तू मुझे अज़ाब दे । ऐ मेरे मालिको मौला **عَزَّوَجَلَّ** अगर तू मेरी निगाहों से पोशीदा है तो क्या हुवा तेरी महब्बत तो मेरे दिल में है । अगर तू मुझे छोड़ दे और दूर कर दे तो फिर भी तेरी महब्बत मेरे दिल में छुपी रहेगी ।"

### रिक्कत अंगेज़ दुआ :

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** ज़िल्लत व अज़िज़ी के साथ हाथों को बुलन्द कर लो, और अपनी आंखों से मुसलाधार आंसू बहाते हुए तन्हाई में और ए'लानिय्या बुलन्द आवाज़ से दुआ

करो : ऐ हमारे मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ तेरे गुनाहगार व नाफरमान बन्दे गुनाहों से मुआफी की आस लगाए तेरी बारगाह में हाज़िर हैं। हम राहे हक़ से बहक चुके हैं और हमारी हलाकत ने हमें जहन्नम के करीब कर दिया है। या इलाहल आलमीन عَزَّوَجَلَّ हम तेरी बारगाह में अपनी आजिजी व इन्किसारी, नदामत व शर्मिन्दगी और आंसू की कषरत बतौरै शफीअ पेश करते हैं। या इलाही عَزَّوَجَلَّ अगर्चे गुनाह हमें तेरे अज़ाब से डराते हैं लेकिन हमारा हुस्ने ज़न हमें तेरे अफ़्को करम की हिर्स दिलाता है। अगर तू मुआफ़ फ़रमाए तो तुझ से ज़ियादा इस के लाइक कौन है ? और अगर तू अज़ाब दे तो तुझ से बढ़ कर आदिल कौन है ?

या रब्बल आलमीन عَزَّوَجَلَّ अगर तू सिर्फ़ इबादत गुज़ारों पर रहूम फ़रमाएगा तो इबादत में कोताही करने वालों का पुरसाने हाल कौन होगा ? अगर तू सिर्फ़ मुख़्तस लोगों का ही अमल क़बूल फ़रमाएगा तो रियाकारों का क्या बनेगा ? या इलाही عَزَّوَجَلَّ मेरी हसरत कितनी बड़ी है कि मैं दूसरों को नसीहत करता हूँ और खुद तुझ से ग़ाफ़िल हूँ। ऐ मेरे मालिक عَزَّوَجَلَّ मेरी मुसीबत कितनी शदीद है कि मैं दूसरों को बेदार करता हूँ और खुद ग़फ़लत की नींद सोया हुआ हूँ। ऐ मेरे आका व मौला عَزَّوَجَلَّ मेरा क़िस्सा व माजरा कितना अजीब है कि मैं राहे हक़ की तरफ़ दूसरों की रहनुमाई करता हूँ जब कि खुद ज़ालिम हूँ। या **अब्लाह** عَزَّوَجَلَّ नसीहत करने वाले को भी बख़्श दे और सुनने वाले की भी बख़्शिश फ़रमा दे। ऐ मेरे रहीम व करीम मौला عَزَّوَجَلَّ जब मैं किसी को तेरी बारगाह का रास्ता दिखाऊँ और वोह वहां तक रसाई हासिल कर ले तो क्या तू इसे क़बूल कर लेगा जिस की रहनुमाई की गई और रहनुमाई करने वाले को धुतकार देगा ? ऐ इख़्लास की दौलत अता फ़रमाने वाले मौला عَزَّوَجَلَّ अगर मेरा कलाम ख़ालिस तेरी रिज़ा के लिये नहीं तो मेरे इस इजतिमाअ में कोई शख़्स तो ऐसा होगा जो सिर्फ़ और सिर्फ़ तेरी रिज़ा के लिये आया होगा। ऐ मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ उस के सदके मेरी तक्सीर व कोताही मुआफ़ फ़रमा दे और ऐ सब से बढ़ कर रहूम फ़रमाने वाले ! हम सब पर अपना ख़ास रहूमो करम फ़रमा। (आमीन)

وَصَلَّى اللَّهُ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِهِ وَصَحْبِهِ وَسَلَّمَ تَسْلِيمًا كَثِيرًا



बयान 29 :

बेकी के बाकि आल

हम्मे बारी तआला :

तमाम ता'रीफें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने औलियाए किराम رَحْمَهُمُ اللَّهُ تَعَالَى को अपनी बादशाही में आ'ला बसीरत से नवाजा और उन्हें अपनी अनोखी निशानियां दिखाई और उन की अरवाह को अपने महले कुर्ब की सैर कराई और उन को मुत्तकी और पारसा लोगों में किया और अपना मुख़्लिस बन्दा बना कर बुजुर्गी और आ'ला नसब से मुशर्रफ़ फ़रमाया और सख़्त तारीकी में उन्हें षाबित क़दमी अता फ़रमाई, और उन पर तारीकी तवील कर दी गई, और क़लमों के लिखे हुए पर उन्हें मुत्तलअ फ़रमाया जब कि क़लमों ने कोई बात न छोड़ी, और उन के दिलों में अन्वार दाख़िल फ़रमाए जिन के ज़रीए वोह आलमे ग़ैब का मुशाहदा करते और दूरो नज़दीक की हर चीज़ देख लेते हैं, और उन पर कश्फ़ व इत्तिलाअ का भी एहसान फ़रमाया जिस के ज़रीए वोह हर छुपी चीज़ को देख लेते हैं, और उन्हें हुस्नो जमाल, रो'ब व दबदबा, क़राबत और तहज़ीब व शाइस्तगी का लिबास पहनाया, और उन के दिल अपनी तरफ़ मुतवज्जेह कर लिये और खुश बख़्त व सईद है वोह शख्स जिस का दिल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपनी तरफ़ माइल कर ले। और उन्हें अपने पाकीज़ा ख़िताब से नवाजा जिस ने उन के रंजो ग़म दूर कर दिये, बे चैनियों और परेशानियों को ख़त्म कर दिया, और जब येह उस की इबादत में थक गए तो उन को ऐसी राहत पहुंचाई कि थकन का कोई एहसास ही न रहा, और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने सहर की ख़लवतों में उन्हें अपना हम नशीन बनाया तो उन्होंने ने अपना पाकीज़ा वक़्त शब बेदारी में बसर किया, और उन्हें "لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ" की बिशारतों के साथ अपनी बारगाह में बुलाया, और सब से लज़ीज़ मशरूब पिलाया, उन पर महबूबे हकीकी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तजल्ली फ़रमाई, और अपनी महबूबत में कैद दिलों को अपना जमाल दिखाया।

वोह औलियाए किराम رَحْمَهُمُ اللَّهُ تَعَالَى का महबूब, इन का हम नशीन, इन का हम नवा और इन का दोस्त है। बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपनी बारगाह में उन के मर्तबों को बुलन्द फ़रमाया, जब वोह लोगों से छुप जाते हैं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाहे अक़दस में कुर्ब की लज़्ज़तें पाते हैं, और जब लोगों के पास तशरीफ़ फ़रमा होते हैं तो इन से अजीबो ग़रीब बातें करते हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन के तुफ़ैल अहले ज़मीन पर बारिश बरसाता है और ऐसी ज़मीन से घास उगाता है जो घास उगाने के काबिल नहीं होती, खुश्क और क़हूत ज़दा ज़मीन से सब्ज़ा उगाता है, इन के सदके दुआएं क़बूल होती और बलाएं दूर होती हैं, येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बर्गुज़ीदा बन्दे हैं, इन्होंने ने अपने महबूबे हकीकी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की खातिर दुनिया को तर्क किया यहां तक कि इन की नज़र में सोना और पथ्थर यक्सां हो गए और इन्होंने ने हर चीज़ के बदले रिज़ाए इलाही **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को इख़्तियार किया, येह इरादा करते ही अपना मक्सद पा लेते हैं, जब रात होती है तो अपने दामन को पकड़ लेते और अपना मुहासबा करते हैं, और जब रिश्वत ख़ोर गाइब हो जाते और पहरादार सो जाते हैं तो येह



अपने महबूबे हकीकी عَزَّوَجَلَّ के कुर्ब के लिये बेचैन व बे क़रार हो कर तड़पने लगते हैं, और जब सुब्ह होती है तो मुसलसल आंसू बहाते हुए कहते हैं : “काश ! रात न जाती, काश ! वोह ठहर जाती, ऐ काश ! मशरिक़ मग़रिब बन जाता ।”

### ग़ैबी अशरफ़ियां :

एक मर्दे सालेह का बयान है कि मैं एक देहात में था, जहां एक क़ाफ़िला आया । मैं ने अपने सामने एक शख्स को पाया तो मैं जल्दी से उस के पास गया देखा तो वोह एक औरत थी, उस के हाथ में लाठी थी और बहुत आहिस्ता आहिस्ता चल रही थी । मैं समझा कि शायद येह अपना कुछ साजो सामान जाएअ कर चुकी है । चुनान्चे, मैं ने जेब में हाथ डाला और बीस दिरहम निकाल कर कहा : “येह लो, और मेरे पास ठहर जाओ, जब क़ाफ़िला पहुंचे तो उस को किराया दे देना और रात को आराम करने के लिये मेरे पास आ जाना ताकि मैं तेरी परेशानी दूर कर दूं ।” येह सुन कर उस ने अपना हाथ हवा में लहराते हुए कहा : “परेशानी तो यूं दूर हो जाएगी ।” मैं ने देखा तो उस की हथेली में ग़ैब से सोने की अशरफ़ियां आ चुकी थीं, और कहने लगी : “तुम ने जेब से चांदी की अशरफ़ियां लीं, जब कि मैं ने ग़ैब से सोने की अशरफ़ियां ले लीं ।”

पाक है वोह जात जिस ने अपनी मख़्लूक में से कुछ बन्दों को ख़ास किया । उन के लिये हिदायत वाली ज़मीन को बिछोना बनाया । उन को तौफ़ीक़ व हिदायत अता फ़रमाई और तौशए सफ़र भी फ़राहम किया । उन के लिये लुत्फ़ो करम की खिड़कियां नस्ब कर दीं और उन को अपने रास्तों पर चलाया और उन के गिर्द रहूँगे करम के प्यालों को गरदिश दी । लिहाज़ा उन के दिल उस की महबूबत में धड़कते हैं । उन के जिस्म उस की जुदाई के ख़ौफ़ से लाग़र व नातूवां हैं । वोह विसाले महबूबे हकीकी عَزَّوَجَلَّ के बागीचों में आसूदा हाल रहते और उनसे इलाही عَزَّوَجَلَّ के बागात में लुत्फ़ उठाते हैं और उन्हें क़ियामत की हौलनाकियों का कोई ख़ौफ़ नहीं, क्यूँकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने अलीशान है :

﴿1﴾ أَلَا إِنَّ أَوْلِيَاءَ اللَّهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ

يَخْزَنُونَ 0 (प ११, सूरत: १०)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : सुन लो बेशक **अल्लाह**

के वलियों पर न कुछ ख़ौफ़ है न कुछ ग़म ।

### चोर वली बन गया :

मन्कूल है कि एक चोर रात के वक़्त हज़रते सय्यिदतुना राबिअ़ा बसरिया अ़दविय्या رحمة الله تعالى عليها के घर दाख़िल हुवा, उस ने दाएं बाएं हर तरफ़ पूरे घर की तलाशी ली लेकिन सिवाए एक लोटे के कोई चीज़ न पाई । जब उस ने निकलने का इरादा किया तो आप رحمة الله تعالى عليها ने फ़रमाया : “अगर तुम चालाक व होशियार चोर हो तो कोई शै लिये बिग़ैर नहीं जाओगे ।” उस ने कहा : “मुझे तो कोई शै नहीं मिली ।” आप رحمة الله تعالى عليها ने फ़रमाया : “ऐ ग़रीब शख्स ! इस

लोटे से वुजू कर के कमरे में दाखिल हो जा और दो रकअत नमाज़ अदा कर, यहां से कुछ न कुछ ले के जाएगा ।” उस ने आप رحمة الله تعالى عليها के कहने के मुताबिक वुजू किया और जब नमाज़ के लिये खड़ा हुवा तो हज़रते सय्यिदतुना राबिआ अदविय्या رحمة الله تعالى عليها ने अपनी निगाहें आस्मान की तरफ उठा कर यूँ दुआ की : “ऐ मेरे आका व मौला عَزَّوَجَلَّ येह शख्स मेरे पास आया लेकिन इस को कुछ न मिला, अब मैं ने इसे तेरी बारगाह में खड़ा कर दिया है, इसे अपने फज़लो करम से महरूम न करना ।” जब वोह नमाज़ से फ़ारिग हुवा तो उस को इबादत की लज़ज़त नसीब हुई । चुनान्चे, रात के आखिरी हिस्से तक वोह नमाज़ में मशगूल रहा । जब सहरा का वक़्त हुवा तो आप رحمة الله تعالى عليها उस के पास तशरीफ़ ले गई तो उसे हालते सजदा में अपने नफ़्स को डांटते हुए और येह कहते हुए पाया : जब मेरा रब्ब عَزَّوَجَلَّ मुझ से पूछेगा : “क्या तुझे हया न आई कि तू मेरी नाफ़रमानी करता रहा ? और मेरी मख़्लूक से गुनाह छुपाता रहा और अब गुनाहों की गठड़ी ले कर मेरी बारगाह में पेश है, जब वोह मुझे इताब करेगा और अपनी बारगाहे रहमत से दूर कर देगा तो उस वक़्त मैं क्या जवाब दूंगा ? आप رحمة الله تعالى عليها ने पूछा : “ऐ भाई ! रात कैसी गुज़री ?” बोला : “खैरियत से गुज़री, अजिजी व इन्किसारी से मैं अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में खड़ा रहा तो उस ने मेरे टेढ़े पन को दुरुस्त कर दिया, मेरा उज़्र क़बूल फ़रमा लिया और मेरे गुनाहों को बख़्श दिया और मुझे मेरे मतलूब व मक्सूद तक पहुंचा दिया ।” फिर वोह शख्स चेहरे पर हैरानी व परेशानी के आषार लिये चला गया । हज़रते सय्यिदतुना राबिआ बसरिया رحمة الله تعالى عليها ने अपने हाथों को आस्मान की तरफ उठाया और अर्ज़ की : “ऐ मेरे आका व मौला عَزَّوَجَلَّ येह शख्स तेरी बारगाह में एक घड़ी खड़ा हुवा तो तूने इसे क़बूल कर लिया और मैं कब से तेरी बारगाह में खड़ी हूँ तो क्या तू ने मुझे भी क़बूल फ़रमा लिया है ?” अचानक आप رحمة الله تعالى عليها ने दिल के कानों से येह आवाज़ सुनी : “ऐ राबिआ ! हम ने इसे तेरी ही वजह से क़बूल किया और तेरी ही वजह से अपना कुर्ब अता फ़रमाया ।”

يَا سَيِّدِي عَبْدُكَ الْمُسْكِينُ فِي بَابِكَ  
حَاشَاكَ تَسُدُّلُ حِجَابِكَ دُونَ طَلَابِكَ  
يَرْجُو رِضَاكَ فَجِدْ بِالْعَفْوِ أَوْلَى بِكَ  
أَوْ تَبْتَلِي بِعَذَابِكَ قَلْبَ أَحِبَابِكَ

**तर्जमा :** (1)....ऐ मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ तेरा मिस्कीन बन्दा तेरी रिज़ा की उम्मीद लगाए तेरे दर पर हाज़िर है पस मुआफ़ी के साथ जूदो करम करना तेरे शायाने शान है ।

(2).....(या इलाही عَزَّوَجَلَّ तेरी पनाह कि तू अपने तलबगारों पर अपने विसाल से पर्दा डाले या अपने दोस्तों के दिलों को अज़ाब में मुब्तला करे ।

**ऐ मेरे इस्लामी भाई !** पुख़्ता अज़म वाले तुझ से सबक़त ले गए और तू ग़फ़लत की नींद सोया हुवा है । उठ और अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ के दर पर नादिम शख्स की तरह खड़ा हो जा और ज़िल्लत से सर को झुका कर यूँ कह कि “मैं ज़ालिम हूँ ।” और सहरा के वक़्त यूँ अर्ज़ कर कि “मैं गुनहगार

व नाफ़मान हूं, ऐ मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ मैं तेरे अफ़वो करम की उम्मीद लिये तेरे दरबार में हाज़िर हूं, मुझे मुआफ़ फ़रमा दे ।” और उस के नेक बन्दों से मुशाबहत इख़्तियार कर अगर्चे अमल के ए’तिबार से तू इन में से नहीं फिर भी इन का कुर्ब इख़्तियार कर ।

ऐ मेरे इस्लामी भाइयो ! अरिफ़ीन बसीरत की निगाह से देखते और अपने इल्म पर अमल करते हैं, इन्हों ने नींद को छोड़ कर तारीक रातों में क़ियाम किया और आंसूओं से चेहरों को धोया पस ज़ब्रो तौबीख़ वाली आयात की तिलावत ने इन्हें बेचैन कर दिया ।

**अस्माए हुस्ना का वसीला काम आ गया :**

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि “नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के ज़मानए अक्दस में एक शख्स शाम के शहरों से मदीना और मदीना से शाम तिजारत के लिये जाया करता ।

**अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ पर तवक्कुल करते हुवे काफ़िले के बिगैर सफ़र करता । एक मरतबा वोह शाम से मदीना आ रहा था कि एक घोड़े सुवार चोर की ज़द में आ गया । चोर ने उसे रुकने को कहा तो वोह रुक गया और कहने लगा : “तुम्हें माल चाहिये तो माल ले लो और मेरा रास्ता छोड़ दो ।” चोर ने कहा : “माल तो अब मेरा ही है, मगर मुझे तुम्हारी भी ज़रूरत है, लिहाज़ा मेरे साथ चलो । ताजिर ने कहा : “मेरा क्या करोगे, माल ले लो और मेरा रास्ता छोड़ दो ।” चोर ने दोबारा वोही अलफ़ाज़ कहे । तो ताजिर ने कहा : “फिर थोड़ी देर मेरा इन्तिज़ार करो, मैं वुजू कर के दो रकअत नमाज़ अदा कर लूं और **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ कर लूं ।” चोर ने कहा : “ठीक है, जो बेहतर समझो कर लो ।” चुनान्चे, ताजिर उठा और वुजू कर के चार रकअत नमाज़ अदा कर लीं, फिर अपने हाथों को आस्मान की तरफ़ बुलन्द कर दिया और तीन मरतबा येह दुआ मांगी :

”يَا وَدُودُ! يَا وَدُودُ! يَا دَا الْعَرْشِ الْمَجِيدِ! يَا مُبْدِئُ! يَا مُعِيدُ! يَا فَعَّالُ! لَمَّا يَرِيدُ! أَسْأَلُكَ بِنُورِ وَجْهِكَ الَّذِي مَلَأَ أَرْكَانَ عَرْشِكَ وَبِقُدْرَتِكَ الَّتِي قَدَّرْتَ بِهَا عَلَى خَلْقِكَ وَبِرَحْمَتِكَ الَّتِي وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ أَنْتَ الَّذِي وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ رَحْمَةً وَعِلْمًا لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ يَا مُغِيثُ اغْنِنِي“

या’नी ऐ अपने बन्दों से बहुत ज़ियादा महब्वत करने वाले ! ऐ अपने बन्दों से बहुत ज़ियादा महब्वत करने वाले ! ऐ अर्शे अज़ीम के मालिक عَزَّوَجَلَّ को पैदा करने वाले ! ऐ लौटाने वाले ! ऐ हमेशा जो चाहे, कर लेने वाले ! मैं तुझ से तेरे नूर के वसीले से सुवाल करता हूं जिस ने तेरे अर्श को घेर रखा है और तेरी उस कुदरत के वासिते सुवाल करता हूं जिस के साथ तू अपनी मख़्तूक पर कादिर है और तेरी उस रहमत के वसीले से सुवाल करता हूं जो हर शै को घेरे हुए है, तू ने रहमत और इल्म के ए’तिबार से हर शै का इहाता किया, तेरे सिवा कोई मा’बूद नहीं, ऐ मदद करने वाले ! मेरी मदद फ़रमा ।”

जब वोह दुआ से फ़ारिग़ हुवा तो सियाह घोड़े पर सुवार एक शख्स देखा । जिस ने सब्ज़ रंग के कपड़े जैबे तन कर रखे थे, उस के हाथ में चमकता हुवा नेज़ा था । चोर ने घोड़े सुवार को



देखा तो ताजिर को छोड़ कर उस की जानिब बढ़ा। जब उस के करीब हुवा तो उस ने तेजी से अपना नेज़ा मार कर चोर को घोड़े से गिरा दिया और फिर ताजिर के पास आया और कहने लगा : “उठो, और जा कर इसे क़त्ल कर दो।” ताजिर ने पूछा : “आप कौन हैं ? मैं ने कभी किसी को क़त्ल नहीं किया और न ही इसे क़त्ल करना पसन्द करता हूँ।” फिर घोड़े सुवार ने खुद ही चोर का काम तमाम कर दिया और ताजिर के पास आ कर कहा : “मैं तीसरे आस्मान का फ़िरिश्ता हूँ। जब आप ने पहली मरतबा दुआ की थी तो हम ने आस्मान के दरवाज़ों की खट-खटाहट सुनी। हम ने कहा : आज कोई नई बात हुई है। फिर दूसरी मरतबा दुआ की तो आस्मान के दरवाज़े खोल दिये गए और इन से आग की चिंगारियों जैसी चिंगारियां ज़ाहिर हुईं।

फिर जब तीसरी मरतबा दुआ की तो हज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام हमारे पास तशरीफ़ लाए और यह पूछा : “उस ग़मज़दा की मदद कौन करेगा।” मैं ने अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ से दुआ की, कि मुझे इस चोर के क़त्ल की तौफ़ीक़ अता की जाए, लिहाज़ा ऐ शख्स ! जान ले कि जो शख्स किसी भी रंज व ग़म और मुसीबत व तकलीफ़ में यह दुआ करेगा **اَللّٰهُمَّ** उस की मदद करते हुए उस से मसाइब व आफ़ात दूर फ़रमा देगा।”

हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि उस ताजिर ने बख़ैर व अफ़ियत मदीना शरीफ़ पहुंच कर हुज़ूर सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, जनाबे रहमतुल्लिल अलमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की खिदमत अक़दस में हाज़िरी दी और यह वाक़िआ आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के गोश गुज़ार किया तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “**اَللّٰهُمَّ** ने तुझे अपने अस्माए हुस्ना तल्कीन फ़रमाए हैं कि जब इन के वसीले से दुआ की जाए तो क़बूल होती है और जब कुछ मांगा जाए तो अता किया जाता है।”

(الموسوعة لابن ابي الدنيا، كتاب محابى الدعوة، الحديث ٢٣، ج ٢، ص ٣٢١، بتغير واختصار)

### रिक्कत अंगेज़ दुआ :

या **اَللّٰهُمَّ** अरिफ़ीन मा'रिफ़त के ज़रीए तुझ तक पहुंच गए और इबादत की क़षरत करने वाले तेरी बारगाह में खड़े हैं। या **اَللّٰهُمَّ** मुतकब्बिरीन तेरे जलाल की हैबत से लरज़ते हैं, ज़ालिम व जाबिर तेरे कमाले इक़्तिदार से कांपते और तेरे जमाल का मुशाहदा कर के राहत पाते हैं। या **اَللّٰهُمَّ** सुवाली तेरे दरवाज़े पर खड़े हैं, महब्बत करने वालों के ज़िगर तेरी त़लब में पाश पाश हुए जाते हैं, क़ियाम करने वाले तेरी मुनाजात की लज़ज़त से कामयाबी का हार पहनते हैं, बा अमल लोग तेरे षवाब से नफ़अ मन्द होते हैं और हर लम्हे तुझे पेशे नज़र रखने वाले तेरे कुर्ब में हाज़िर होते हैं।

या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तेरी बारगाह में गुनहगार अपने गुनाहों पर नादिम हैं, नाफरमान शर्मसार हैं, तेरी कड़ी निगरानी से हया के मारे सर झुकाए खड़े हैं। ख़ताकार तेरी हैबत से ख़ामोश हैं। ख़ाइफ़ीन तेरी अज़ीम ताक़त से पारा पारा हो रहे हैं। या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अगर तू सिर्फ़ इबादत गुज़ारों पर रहूँ फ़रमाएगा तो ख़्वाबे ग़फ़लत में सोने वालों पर रहूँ कौन करेगा ? या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अगर तू सिर्फ़ बा अमल बन्दों पर ही नज़रे रहूँ फ़रमाएगा तो कोताहों का क्या बनेगा ? या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मोहताजों की नहरों को अपने इन्आम के समन्दर से जारी कर दे। ग़मज़दों के जिगरों को अपने अफ़वो करम के पानी से सैराब फ़रमा दे। या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपनी बारगाह से भटके हुआओं को अपनी मा'रिफ़त के दरवाज़े की तरफ़ लौटा दे। और भटके हुआओं के दिलों को अपनी मेहरबानी और लुत्फ़ो करम के अन्वार से हिदायत अता फ़रमा और ऐ सब से बढ़ कर रहूँ फ़रमाने वाले ! इन सब को अपने सायए अफ़वो करम में दाख़िल फ़रमा दे और इन को अपनी मग़फ़िरत से नवाज़ दे। (आमीन)

وَصَلَّى اللّٰهُ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِهِ وَصَحْبِهِ وَسَلَّمَ



### बढ़ निगाही की सज़ा

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं कि “एक शख्स नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर हुवा उस का खून बह रहा था तो आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم ने उस से इस्तिफ़सार फ़रमाया : “तुझे क्या हुवा ?” उस ने अर्ज़ की : “मेरे पास से एक औरत गुज़री तो मैं ने उस की तरफ़ देखा और मेरी निगाहें मुसलसल उस का पीछा करती रहीं कि अचानक मेरे सामने एक दीवार आ गई जिस ने मुझे ज़ख़्मी कर दिया और मेरा येह हाल कर दिया जिसे आप मुलाहज़ा फ़रमा रहे हैं।” तो नबिय्ये करीम, रऊफ़रहीम رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : “**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जब किसी बन्दे से भलाई का इरादा फ़रमाता है तो उसे दुन्या ही में उस की सज़ा दे देता है।”

(مجمع الزوائد، کتاب التوبة، باب فیمن عوقب بذنبه فی الدنيا، رقم ۱۷۴۷۱، ج ۱۰، ص ۳۱۳)

## बयान 30 : औलियाए किराम رَحْمَهُمُ اللَّهُ تَعَالَى के अहवालें गिब्दगी हम्दे बारी तझाला :

सब खूबियां उस ज़ात के लिये हैं जिस ने अपने मुहिब्बीन के दिलों को अपनी महब्बत के असरार से लबरेज़ किया और इन के चेहरों को अपने नूर से मुनव्वर किया और चमकते दमकते ताजों से इन को इज़्ज़त व वजाहत अता फ़रमाई और इन के लिये वाजेह तौर पर विलायत का फ़ैसला फ़रमा दिया और इन्हें राहे मा'रिफ़त की हिदायत दी तो वोह हमेशा उस की बारगाह में इबादत करते रहे। इन के अहवाल में तब्दीली न आई। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन्हें अपने भेदों पर आगाह फ़रमाया और इन के दिलों पर तजल्ली फ़रमाई तो इन के ख़ालिस जवाहिर को पाक व साफ़ फ़रमा कर इन्हें मज़ीद हिदायत व बसीरत अता फ़रमा दी। इन्हें अपने दीदार की पाकीज़ा शराब अता फ़रमाई और पदें उठा दिये, और फ़रमाया : “मेरे महबूब बन्दों को खुश आमदीद ! आज तुम किसी ग़म से न डरो।” तो कुछ खुशी से झुम उठे, कुछ ऐसे थे कि जब इन पर तजल्लियाते इलाहिय्या की मज़ीद बारिश हुई तो इन पर राज़ मुन्कशिफ़ होने लगे और बा'ज ने बारगाहे ख़ालिक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का कुर्ब पसन्द कर लिया। ऐसों की ही शान में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

إِنَّ الْأَبْرَارَ يَشْرَبُونَ مِنْ كَأْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُورًا ۝ (अल्-अहक़: २९)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक नेक पीयेंगे उस ज़ाम में से जिस की मलूनी काफ़ूर है।

येही लोग बारगाहे रब्बुल इज़्ज़त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ में क़ियाम कर के हुजूरी से लुत्फ़ अन्दोज़ होते हैं, उस की ने'मतों में गौता ज़न रहते हैं, सरकशों को तोड़ते और टूटे हुआं को जोड़ते हैं। और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन की शान बयान फ़रमाता है : “يُوفُونَ بِالنَّذْرِ وَيَخَافُونَ يَوْمًا كَانَ شَرُّهُ مُسْتَطِيرًا ۝ (अल्-अहक़: २९)।”

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अपनी मन्नतें पूरी करते हैं और उस दिन से डरते हैं जिस की बुराई फैली हुई है।

उन का अख़्लाक़ सन्न व शुक्र और शिआरे खुशूअ या'नी गिड़ गिड़ाना है, उन के अफ़आल रुकूअ व सुजूद हैं, उन की पसलियां भूक से लिपट जाती हैं, वोह साइल और फ़कीर को अपनी ज़ात पर तरजीह देते हैं। चुनान्वे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ कुरआने हकीम में इरशाद फ़रमाता है : وَطُغْمُونَ الطَّعَامَ عَلَىٰ حُبِّهِ مِسْكِينًا وَيَتِيمًا وَأَسِيرًا ۝ (अल्-अहक़: २९)।

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और खाना खिलाते हैं उस की महब्बत पर मिस्कीन और यतीम और असीर को।

उन की निगाहें झुकी झुकी, ज़बानें खामोश और चेहरे गुबार आलूद होते हैं और वोह फुक़रा व मसाकीन से नर्म लहजे में बात करते और कहते हैं :

إِنَّمَا نَطْعِمُكُمْ لَوَجْهِ اللَّهِ لَا نُرِيدُ مِنْكُمْ جَزَاءً وَلَا شُكْرًا ۝ (अल्-अहक़: २९)।

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** उन से कहते हैं हम तुम्हें ख़ास **अल्लाह** के लिये खाना देते हैं तुम से कोई बदला या शुक्रगुज़ारी नहीं मांगते।



उन्होंने ने महबूबते इलाही عزَّوَجَلَّ के जाम पिये तो उन के चेहरे मुशाहदए खुदावन्दी عزَّوَجَلَّ के अन्वार से आपताब की तरफ चमक उठे और उन के सामने दुन्या को दुल्हन की तरह सजा कर पेश किया गया लेकिन उन्होंने ने कहा : (अल्दहर: २९, १०) **تَرْجَمَ عَ كَنْزُجُلِ إِيْمَانُ** : बेशक हमें अपने रब्ब से एक ऐसे दिन का डर है जो बहुत तुर्श निहायत सख्त है ।

येह वोह दिन है जिस की हौलनाकियों से तमाम लोग मुतहय्यिर व परेशान होंगे, उस की शिद्दत से आंखों से नींद उड़ जाएगी । (मगर नेक लोग शादां व फ़रहां होंगे) जैसा कि **اَللّٰهُ** عزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

**تَرْجَمَ عَ كَنْزُجُلِ إِيْمَانُ** : तो उन्हें **اَللّٰهُ** عزَّوَجَلَّ ने उस दिन के शर से बचा लिया और उन्हें ताज़गी और शादमानी दी ।”

मुक़रबीने बारगाहे इलाही عزَّوَجَلَّ ने अन्वार के पर्दे फाड़ डाले और ऐसे बागात में अज़ीज़ व ग़फ़ार रब्ब عزَّوَجَلَّ का कुर्ब पाने में कामयाब हो गए जिन के नीचे नहरें बहती हैं, मलाइका शबो रोज़ इन की खिदमत करते हैं । जैसा कि **اَللّٰهُ** عزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : (अल्दहर: २९, ११)

**تَرْजَمَ عَ كَنْزُجُلِ إِيْمَانُ** : और इन के आस पास खिदमत में फिरेंगे हमेशा रहने वाले लड़के, जब तू उन्हें देखे तो इन्हें समझे कि मोती हैं बिखरे हुए ।

येह वोह लोग हैं जिन्हें बरोजे क़ियामत बड़ी घबराहट ग़मगीन न करेगी, न हसरत व नदामत पशेमान करेगी, येह ब खैरियत तवील सफ़र के बा'द खुश व खुरम बाला ख़ानों और महल्लात में सुकूनत पजीर होंगे, फिर इन्हें जन्नत में बिशारत व खुश ख़बरी देते हुए कहा जाएगा :

(अल्दहर: २९, २२) **إِنَّ هَذَا كَانَ لَكُمْ جَزَاءً وَكَانَ سَعْيُكُمْ مَشْكُورًا**

**تَرْजَمَ عَ كَنْزُجُلِ إِيْمَانُ** : उन से फ़रमाया जाएगा येह तुम्हारा सिला है और तुम्हारी मेहनत ठिकाने लगी ।

इन का मालिक عزَّوَجَلَّ इन को अपनी बारगाह में हाज़िर कर के अपना कुर्ब अता फ़रमाएगा, फिर अपनी महबूबत व उन्स के प्याले में पाकीज़ा शराब से इन को सैराब करेगा और इरशाद फ़रमाएगा : “ऐ मेरे महबूब बन्दो ! तवील अर्सा तुम मेरे दरवाज़े पर खड़े हो कर मेरी बारगाह में इबादत से लुत्फ़ अन्दोज़ होते रहे, तुम ने मेरी नाज़िल कर्दा मुसीबतों पर सब्र किया, मैं तुम्हें ने'मतों वाले घर या'नी जन्नत में ठिकाना अता करूंगा और तुम्हारी आंखों को अपने लाज़वाल हुस्नो जमाल के दीदार से सैराब करूंगा और तुम्हें बहुत ज़ियादा अज़्रो षवाब अता करूंगा ।”

**लकड़ी का बुशदा मैदा बन गया :**

हज़रते सय्यिदुना अबू मुस्लिम खौलानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ सदका व ईषार को बहुत ज़ियादा पसन्द करते थे । बा'ज अवकात अपनी ग़िज़ा भी सदका कर देते और खुद रात को भूके सोते । एक सुब्ह इस हालत में की, कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ के घर सिवाए एक दिरहम के कुछ न था ।

आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की जौजए मोहतरमा ने अर्ज की : “इस दिरहम से आटा खरीद लाएं ताकि हम इसे गुंध कर बच्चों के लिये रोटी पका लें, बच्चे मजीद भूक बरदाश्त नहीं करेंगे।” आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने एक दिरहम और तौशादान (खाने का बरतन) लिया और बाजार की तरफ चल पड़े। सदी बहुत शदीद थी, रास्ते में आप को एक साइल मिला, आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ वहां से हट कर दूसरी तरफ से जाने लगे तो उस ने आप को रोक लिया और अपनी तंग दस्ती बयान करते हुए आप को क़सम दी। आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने वोह दिरहम उसे दे दिया। फिर येह फ़िक्र लाहिक् हो गई कि अपने अहलो इयाल के पास क्या ले कर जाऊंगा। चुनान्चे, इसी फ़िक्र में आप रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ एक मजबूत दरख्त के करीब से गुजरे लोग उस को चीर रहे थे। इन्होंने ने तौशादान खोला और आरे से चीरे जाने के बाइष जो बुरादा गिर रहा था उस से तौशादान भर कर मुंह बन्द कर दिया और घर जा कर बीवी को कुछ बताए बिगैर रख दिया और खुद मस्जिद की तरफ चल पड़े। जब आप रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की अहलियाए मोहतरमा ने तौशादान खोल कर देखा तो उस में सफ़ेद बारीक मैदा मौजूद था। इस ने गुंध कर बच्चों के लिये खाना पाकाया। बच्चों ने ख़ूब सैर हो कर खाया और फिर खेलने लग गए। जब सूरज ख़ूब बुलन्द हो गया तो आप रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ बीवी, बच्चों की भूक का खौफ़ महसूस करते हुए घर तशरीफ़ लाए। जब आप रَحْمَةُ اللَّهِ تَعालَى عَلَيْهِ बैठ गए तो आप रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की बीवी ने दस्तरख़्वान और खाना ला कर सामने रखा, आप रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ खाना खा कर फ़ारिग़ हुए तो पूछ : “येह खाना कहां से आया ?” अर्ज की : “मेरे सरताज ! इसी तौशादान से जो आप ले कर आए थे।” आप रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ बहुत हैरान हुए और **अल्लाह** के लुत्फ़ो करम और हुस्ने कारीगरी पर उस का शुक्र अदा किया।

**ऐ मेरे इस्लामी भाइयो ! देखो ! अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने औलियाए किराम رَحْمَهُمُ اللَّهُ تَعَالَى पर कैसा लुत्फ़ो करम फ़रमाता है और औलियाए किराम رَحْمَهُمُ اللَّهُ تَعَالَى भी कैसा तवक्कुल करते हैं पस दुन्या के मुआमले में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन के लिये काफ़ी हो जाता है और इन्हें अपने फ़ज़लो करम से रिज़्क अता फ़रमाता है और इन के साथ अपने शायाने शान मुआमला फ़रमाता है।

हज़रते सय्यिदुना अबू मुआविया अस्वद रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ नाबीना थे। क़िराअते कुरआन बहुत ज़ियादा पसन्द थी। जब आप रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ कुरआने करीम खोलते तो आप रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की बीनाई लौट आती और जब क़िराअत से फ़ारिग़ होते तो बीनाई चली जाती। एक मरतबा आप रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को निदा की गई : “हम ने तुम्हारी बीनाई इस वजह से ज़ाइल नहीं की, कि हम तेरे मुआमले में बख़ील हैं बल्कि हमें इस पर ग़ैरत आई कि तुम हमारे सिवा किसी को देखो।”

**दिल होश में न रहा :**

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम साइह रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि मैं ने तवाफ़े बैतुल्लाह शरीफ़ के दौरान एक लड़की को का'बे के पर्दों से लिपटे हुए येह कहते सुना : “हाए ! महब्बते

इलाही **عَزَّوَجَلَّ** के बा'द मैं तन्हा हो गई, हाए ! इज़्ज़त पाने के बा'द मैं ज़लील हो गई, हाए ! अमीरी के बा'द फ़कीरी में मुब्तला हो गई, हाए ! इतनी बड़ी मुसीबत नाज़िल हो गई ।" मैं ने पूछा : "ऐ लड़की ! तुझ पर कौन सी मुसीबत नाज़िल हुई ?" उस ने कहा : "मेरा दिल होश में नहीं रहा ।" मैं ने कहा : "येह तो मा'मूली मुसीबत है । कहने लगी : "भला दिल की बे होशी और महबूब की जुदाई से बढ़ कर भी कोई मुसीबत हो सकती है ?" मैं ने पूछा : "तुम अपनी आवाज़ पस्त क्यों नहीं करती ?" तो वोह जवाबन पूछने लगी : "बताइये ! येह घर किस का है, आप का या **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** का ?" मैं ने कहा : "**अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** का ।" कहने लगी : "येह हरम आप का है या खुदा **عَزَّوَجَلَّ** का ?" मैं ने कहा : "उसी का है ।" उस ने फिर पूछा : "अच्छ ! येह बताइये कि कौन हमें इस की ज़ियारत की तौफ़ीक़ अता फ़रमाता है ?" मैं ने कहा : "**अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ**" तो वोह कहने लगी : "फिर मुझे छोड़ दो कि मैं उस की बारगाह में अज़िज़ी व इन्किसारी करूं जैसा कि उस ने हमें अपने हरम शरीफ़ में हाज़िरी की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई और इस की तरफ़ हमारी रहनुमाई फ़रमाई ।" फिर उस ने अपने हाथ आस्मान की तरफ़ बुलन्द कर लिये और यूं दुआ की : "या **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** तेरी मेरे साथ महबूबत का वासिता ! मेरे दिल को होश अता फ़रमा दे ।" मैं ने उसे कहा : "तुम्हें कैसे मा'लूम हुवा कि वोह तुम से मोहबूबत करता है ?" उस ने जवाब दिया : "वोह इस तरह कि उस की ख़ास इनायत ने हमेशा मेरी तरफ़ सबक़त की क्योंकि उस ने मेरी तलाश में लश्क़रों को भेजा, उस ने माल ख़र्च किये और उस के बन्दों ने जिहाद किया यहां तक कि मुझे शिर्क के शहर से निकाल कर तौहीद के शहर में ला खड़ा किया । और फिर उस ने मुझे अपने रास्ते की मा'रिफ़त अता की और हुस्ने तौफ़ीक़ के साथ अपनी बारगाह की तरफ़ रहनुमाई की, मुझे इस का शुज़र भी न था मगर अब मैं उस की बारगाह में हाज़िर हूं ।"

### राहिबों का कबूले इस्लाम :

हज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू मदन **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** बुलन्द मर्तबे के मालिक और अब्दाल में से थे, कम वक़्त में तवील मसाफ़त तै कर लेते, आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** का ज़िक्र ज़बां ज़दे आम था, और आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** साहिबे करामात व तसरूफ़ात बुजुर्ग़ थे । आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** उन्दुलुस की जामेअ मस्जिदे ख़िज़्र में नमाज़े फ़ज़्र के बा'द बयान फ़रमाया करते थे । ईसाई राहिबों को जब मा'लूम हुवा तो उन्होंने ने पूरे मुल्क के गिरजों की ता'दाद मा'लूम की तो वोह सत्तर थे । दस बड़े राहिब आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** को आजमाने के लिये भेस बदल कर मुसलमानों के लिबास में लोगों के साथ मस्जिद में बैठ गए और किसी को ख़बर तक न हुई । जब आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** बयान शुरू करने लगे तो थोड़ी देर के लिये ख़ामोश हो गए, फिर एक दरज़ी हाज़िर हुवा । आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने इस्तिफ़सार फ़रमाया : "इतनी देर क्यों लगा दी ?" उस ने अर्ज़ की, "हुज़ूर ! आप के हुक्म पर रात को टोपियां बनाते हुए देर हो गई ।" आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने उस से टोपियां



लीं और खड़े हो कर सब राहियों को पहना दीं। लोगों को इस से बड़ा तअज्जुब हुवा लेकिन मुआमला अभी तक वाजेह न हुवा था। फिर आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने बयान शुरू कर दिया, जिस में यह जुम्ला भी फरमाया : “ऐ फुकरा ! जब **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ की तरफ से तौफीक की हवाएं सआदत मन्द दिलों पर चलती हैं तो वोह हर रोशनी को बुझा देती हैं।” फिर आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने सांस लिया जिस से मस्जिद की तकरीबन तीस (30) किन्दीलें बुझ गईं। फिर आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ सर झुकाए हुए खामोश हो गए और आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की हैबत से किसी को जुरअत न हुई कि कोई बात या हरकत करे। फिर आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने अपना सर उठा कर फरमाया : “**اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं, ऐ फुकरा ! जब इनायत के अन्वार मुर्दा दिलों पर रोशनी करते हैं तो वोह राहत व सुकून से जिन्दगी बसर करते हैं और हर जुलमत उन के लिये रोशन हो जाती है।” फिर आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने सांस लिया तो तमाम किन्दीलों की रोशनी लौट आई, और वोह इतनी बे चैनी से जलीं कि क़रीब था कि एक दूसरे पर गिर पड़तीं। फिर आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने आयते सजदा की तफ़सीर बयान करते हुए जब सजदा किया और लोगों ने भी सजदा किया तो राहिब भी रुस्वाई के खौफ़ से लोगों के साथ सजदे में गिर गए। आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने सजदे में यूं दुआ की : “या **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ तू अपनी मख़्लूक की तदबीर और अपने बन्दों की मस्लेहत बेहतर जानता है, येह राहिब मुसलमानों के लिबास में मुसलमानों के साथ तेरी बारगाह में सजदे किये हुए हैं, मैं ने इन के ज़ाहिर को तब्दील कर दिया, इन के बातिल को तब्दील करने पर तेरे सिवा कोई कादिर नहीं, मैं ने इन्हें तेरे दस्तरख़्वाने करम पर बिठा दिया है तू इन को कुफ़्र की तारीकी से निकाल कर नूरे ईमान में दाख़िल फ़रमा दे। राहियों ने अभी सर सजदे से न उठाए थे कि उन से कुफ़्रो शिर्क की नापाकी दूर हो गई और वोह इस्लाम में दाख़िल हो गए, और अपने मक्सूद को हासिल कर लिया। फिर आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की खिदमत में हाज़िर हुए और आप के दस्ते अक़दस पर तौबा कर ली और अपने किये पर नदामत से आंसू बहाने लगे हत्ता कि उन की चीखों पुकार की आवाज़ मस्जिद में गुंज उठी। वोह दिन गवाह है कि तीन शख्स इसी इजतिमाअ में इन्तिक़ाल कर गए। जब बादशाह तक येह बात पहुंची तो उस ने इन सब के साथ अच्छा बरताव किया और इन्आम व इकराम से नवाज़ा और हज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू मदन्यन رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ भी उन के क़बूले इस्लाम से बहुत खुश हुए।

### रिक्कत अंगेज़ दुआ :

या इलाहल आलमीन عَزَّوَجَلَّ सुवाली तेरे दरवाजे पर खड़े हैं, गुनहगार तेरी बारगाह में पनाह लिये हुए हैं, हाज़त मन्द अपनी हाज़ात पेश कर रहे हैं, इस्यां शिआरों ने तेरे सामने अज़िज़ी व इन्किसारी से अपने सर झुका लिये हैं, कोताही करने वालों के पास उज़्र पेश करने के लिये दलाइल ख़त्म हो गए हैं, साइलीन की कश्ती तेरे बहरे करम के साहिल पर खड़ी है, सब उस

इजाजत नामे की उम्मीद किये हुए हैं जो तेरी रहमत के कनारे तक पहुंचा दे, इन्हों ने अपने हाथ तेरे जूदो करम की मूसलाधार बारिश की तरफ बढ़ा दिये हैं, खाइफीन के दिल तेरी वईदों के खौफ से बेचैन हैं कि वोह कैसे जवाब देंगे जब कि तेरा अफ़वो करम तमाम बन्दों को शामिल है, या इलाही عَزَّوَجَلَّ अगर साइलीन को तेरी बारगाह से ही मर्दूद कर दिया गया तो वोह किस के पास जाएंगे ? अगर गुनाहगारों को तेरे ही दरवाजे से धुतकार दिया गया तो उन का वाली कौन होगा ? अगर तेरी बारगाह से दूर रहने वालों को मायूस कर दिया गया तो उन का सहारा कौन होगा ? या इलाही عَزَّوَجَلَّ जब ताइबीन तेरी बारगाह में रुजूअ करते हैं तो तू ही उन की तौबा क़बूल फ़रमाता है ।

या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आरिफीन मा'रिफ़त के ज़रीए तुझ तक पहुंच गए और इबादत की कषरत करने वालों की तेरी बारगाह में हाज़िरी हो गई । या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुतकब्बिरीन तेरे जलाल की हैबत से लरज़ते हैं ज़ालिमों जाबिर तेरे कमाले इक़्तदार से कांपते हैं और तेरे दीदार की तड़प रखने वाले तेरे जमाल का मुशाहदा कर के राहत पाते हैं । या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुहिब्बीन के ज़िगर तेरी त़लब में पाश पाश हुए जाते हैं, क़ियाम करने वाले तेरी मुनाजात की लज़ज़त से कामयाबी का हार पहनते हैं, बा अमल लोग तेरे षवाब से नफ़अ मन्द होते हैं और हर लम्हा तुझे पेशे नज़र रखने वाले तेरे कुर्ब में हाज़िर होते हैं ।

या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तेरी बारगाह में गुनाहगार अपने गुनाहों पर नादिम, नाफ़रमान शर्मिन्दा हैं, तेरी कड़ी निगरानी से हया के मारे सर झुकाए खड़े हैं, ख़ताकार तेरी हैबत से ख़ामोश हैं, खाइफीन तेरी अज़ीम ताक़त से पारा पारा हो रहे हैं, या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अगर तू सिर्फ़ इबादत गुज़ारों पर रहूम फ़रमाएगा तो ख़्वाबे ग़फ़लत में सोने वालों पर रहूम कौन करेगा ? या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अगर तू सिर्फ़ बा अमल बन्दों पर ही नज़रे रहमत फ़रमाएगा तो कोताहों का क्या बनेगा ? या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपनी बारगाह से भटके हुआँ को अपनी मा'रिफ़त के दरवाजों की तरफ़ लौटा दे, और भटके हुआँ के दिलों को अपनी मेहरबानी और लुत्फ़ो करम के अन्वार से हिदायत अता फ़रमा और ऐ सब से बढ़ कर रहूम फ़रमाने वाले ! इन सब को अपने साथे अफ़वो करम में दाख़िल फ़रमा कर इन को अपनी मग़फ़िरत से नवाज़ दे । (आमीन)

وَصَلَّى اللّٰهُ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِهِ وَصَحْبِهِ وَسَلَّمَ



हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मुबारक رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से पूछा गया कि “इन्सान कौन हैं ?”  
 इरशाद फ़रमाया : “उ-लमा ।” फिर पूछा गया कि “बादशाह कौन हैं ?” फ़रमाया : “आख़िरत के लिये दुनिया से रू गर्दानी करने वाले ।” फिर पूछा गया कि “बेवकूफ़ कौन हैं ?” फ़रमाया : “अपने दीन के बदले दुनिया कमाने वाले लोग ।”

(المحدث الفاضل، ج ١، ص ٢٠٥)

## हमदे बारी तझाला :

सब खूबियां **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने दिलों के कुफल (ताले) खुशी व मसरत की चाबियों से खोले और सुब्ह के वक्त चलने वाली हवा के आरास्ता पैरास्ता खुशगवार झोंकों से दिलों को जिन्दगी और रूहों को राहत अता फरमाई। अपने औलियाए किराम رَحْمَهُمُ اللَّهُ تَعَالَى के दिलों के बाग अपने जूदो करम और ने'मतों के बादल से सैराब किये तो उस की अज़ीम अताए फैल कर आम हो गई, और तमजीद की बुलबुलों को तौहीद की टहनियों पर छोड़ दिया। अब वोह सुब्ह व शाम अपने मा'बूद का शुक्र बजा लाते हुए उस की हम्द व घना में मशगूल हैं। उन के दिलों की कलियों को उन के पाकीज़ा ज़िक्र के साथ मुअत्तर फरमाया तो उन की खुशबूएं खूब फैल गई, उन्हें अपनी बारगाहे कुर्ब में रात के खैमे तले जम्अ किया और अपनी महब्बत का साफ़ व शफ़फ़ाक़ जाम पिला कर सखावत के प्यालों से सैराब किया। जब दरख़्तों के पत्तों ने तालियां बजाई, बादे नसीम ने अशआर में जवानी के दिनों का तज़क़िरा किया और हज़ार दास्तान<sup>(1)</sup> ने अपनी नर्म व नाजुक सुरीली आवाज़ में गीत गाए तो हर अशिके सादिक अपने पुराने वा'दे का मुश्ताक़ हो कर बे क़रार हो गया। इन में कुछ ऐसे भी थे जो मदहोश होने के बा'द होश में आ गए और कुछ ऐसे भी थे जिन्होंने अपने निशानात को ही ख़त्म कर दिया। बा'ज़ झूमते और लड़ खड़ाते हुए हैरान व सरगर्दा फिरने लगे, बा'ज़ ने इश्के इलाही عَزَّوَجَلَّ को छुपाया, बा'ज़ ज़ाहिर हो गए, किसी ने अज़िज़ी व इन्किसारी और खुशूअ व ख़ुजूअ का लिबास पहन लिया जब कि बा'ज़ आवारा हो कर रुस्वा हो गए और लिबासे शोहरत पहन लिया या'नी ऐसा लिबास जिस से बन्दा नेक ज़ाहिर हो। बहर हाल येह सब सहरी की ख़ल्वतों में फटे पुराने कपड़ों की धज्जियां बिखैर डालते और महब्बते इलाही عَزَّوَجَلَّ में पर्दों को चाक कर देते, तो मालिके दो जहां, ख़ालिके इन्सो जां **अब्बाह** रब्बुल आलमीन عَزَّوَجَلَّ ने इन पर रहम फरमाते हुए इन्हें मुआफ़ कर दिया और इरशाद फरमाया :

تَرْجَمَہٗ کَنْزُۡلِ اِیْمَانٍ : تُوْمَ پَر کُحْھِ گُناہِ نہیۡں ۔ (پ۲، البقرہ: ۱۹۸)

## शियाहफ़म गुलाम :

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ बयान फ़रमाते हैं कि “एक साल मैं हज़ के इरादे से निकला, जब मैं मक्का मुकर्रमा पहुंचा तो देखा कि लोग शहर से बाहर नमाज़े इस्तिस्का के लिये जा रहे हैं। मैं भी तीन दिन इन के साथ जाता रहा मगर बारिश न हुई। मैं इन्हें इसी हालत में छोड़ कर हज़रे अस्वद के पास चला आया। आचानक मैं ने सब्ज़ लुबादे में मल्बूस एक ज़र्द चेहरे वाला सियाहफ़ाम शख्स देखा, उस पर दो चादरें थीं, एक तहबन्द के तौर पर और दूसरी जिस्म पर लपेटी हुई थी। वोह इस कदर रोया कि आंसुओं से उस के कपड़े भीग गए,

①.....एक खुश इल्हान परन्दे का नाम है, इसे फारसी में हजार दास्तान कहते हैं।



फिर आस्मान की तरफ मुंह उठा कर कहने लगा : “गुनाहों और ऐबों की कषरत की वजह से चेहरे रुखा हो गए हैं। ऐ मेरे मालिक عَزَّوَجَلَّ नाफरमानियों की कषरत की वजह से तेरे बन्दों से बारिश रोक दी गई है, तेरी मख्लूक कहतू से हलाक हो रही है और भूक में मुब्तला है और तू सब कुछ जानने वाला है, बच्चे मुजतरिब व परेशान हैं, मवेशी हलाक हो रहे हैं। मैं तुझे तेरे महबूब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की इज्जत व वजाहत के वसीले से कसम देता हूं कि इसी लम्हे बादल से सैराब फरमा दे, मैं तेरी बारगाह में तेरा ही वसीला पेश करता हूं और तुझ पर ही मेरा ए'तिमाद व भरोसा है लिहाजा अपनी बारगाह में हाजिर होने वालों के गुनाह मुआफ़ फरमा दे और इन के जुर्मों का मुआख़जा न फरमा। ऐ मेरे मालिक व मौला عَزَّوَجَلَّ इसी वक़्त बारिश नाज़िल फरमा दे।”

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फरमाते हैं कि अभी उस की दुआ मुकम्मल न हुई थी कि बादल छा गए और हर तरफ़ मुसलाधार बारिश होने लगी। मैं बैठ कर रोता रहा यहां तक कि जब वोह शख्स हज़रे अस्वद से दूर जाने लगा तो मैं भी उस के पीछ हो लिया और उस के ठिकाने को पहचान लिया। मैं उस की क़ियामगाह का दरवाज़ा देख कर अपने घर लौट आया लेकिन सारी रात मुझे नींद न आई। जब सुब्ह हुई तो मुंह अन्धेरे ही मैं ने नमाज़े फ़त्र अदा कर ली और उस मक़ाम पर पहुंच गया, अन्दर दाख़िल हुवा तो एक ख़ूबसूरत नौजवान से मुलाक़ात हुई। मैं ने सलाम किया, उस ने सलाम का जवाब दिया और मुझ से पूछा : “ऐ अबू अब्दुर्रहमान ! क्या किसी काम से आए हो ?” मैं ने कहा : “हां, मैं एक गुलाम ख़रीदना चाहता हूं।” उस ने कहा : “मेरे पास दस गुलाम हैं, इन में से जो आप को पसन्द आए ले जाएं।” फिर उस ने एक मोटे से गुलाम को बुला कर उस के औसाफ़ बयान किये। मैं ने कहा : “मुझे इस की ज़रूरत नहीं।” फिर उस ने एक एक कर के दस गुलाम मेरे सामने पेश कर दिये लेकिन मैं ने येही कहा कि “मुझे इन में से किसी की ज़रूरत नहीं।” अब वोह बोला : “मेरे पास एक ज़र्द रंग के लाग़र बदन, सियाह फ़ाम गुलाम के सिवा कोई भी बाक़ी नहीं बचा लेकिन उस की हालत येह है कि अगर लोग हंसते हैं तो वोह रोने लगता है और अगर लोग अपने कामों में मसरूफ़ होते हैं तो वोह नमाज़ पढ़ने लगता है, सारी रात नहीं सोता, हां ! बा'ज अवक़ात हसरत व यास से किसी को पुकारता रहता है, अपनी कमज़ोरी की ज़ियादती की वजह से किसी की ख़िदमत के काबिल नहीं, इस के बा वुजूद मेरा दिल उस को पसन्द करता है और उसे देख कर मैं बरकत हासिल करता हूं।”

फिर उस ने मैमून को आवाज़ दी। जब वोह गुलाम बाहर आया तो मैं ने उसे देख कर पहचान लिया कि येह वोही शख्स है। मैं ने कहा : “मैं येही गुलाम ख़रीदना चाहता हूं।” वोह नौजवान बोला, “मैं तो इस को बेचने की कोई वजह नहीं पाता।” मैं ने पूछा, “तुम इसे क्यूं नहीं बेचना चाहते ?” वोह नौजवान बोला, “मैं इस से मानूस हो गया हूं और इस को देख कर बरकत हासिल करता हूं, इस के साथ साथ मुझे इस पर कुछ खर्च भी नहीं करना पड़ता। **अब्लाह** عَزَّوَجَلَّ की कसम ! येह मेरे पास चराग़ की रस्सी को बट कर और खजूर के पत्तों से कुछ बना कर इस के इवज़

ही कुछ खाता है और इस के बिगैर खाना भी नहीं खाता । सारा दिन निस्फ़ दानिक़ (या'नी दिरहम के छटे हिस्से) के बदले काम करता है । अगर कोई चीज़ बिक जाए तो खाना खा लेता है वरना भूका ही रात बसर करता है । मेरे दूसरे गुलामों ने मुझे बताया है कि येह सारी रात इबादत करता है ।” येह सुन कर मैं ने कहा, “**اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की क़सम ! अगर तुम ने येह गुलाम मुझे न बेचा तो मैं हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान षौरी और हज़रते सय्यिदुना फुजैल बिन अयाज़ **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی** को साथ ले आऊंगा । तो वोह बोला, “अगर ऐसा है तो मैं आप की ज़रूरत पूरी करता हूं ।”

चुनान्चे, वोह गुलाम मैं ने उस से ख़रीद लिया । फिर उस का हाथ पकड़ कर रास्ते पर चलने लगा । रास्ते में वोह मेरी जानिब मुतवज्जेह हो कर कहने लगा : “ऐ मेरे आका !” मैं ने कहा, “लब्बैक ।” तो वोह बोला : “आप लब्बैक न कहें कि गुलाम इस बात का ज़ियादा हक़दार है कि लब्बैक कहे ।” फिर कहने लगा, “मैं **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की क़सम दे कर आप से पूछता हूं कि येह तो बताएं कि आप ने मुझ जैसे कमज़ोर व नातवां गुलाम को क्यूं ख़रीदा हालांकि मेरे मालिक ने मुझ से ज़ियादा उम्दा गुलाम आप के सामने पेश किये थे और मैं तो किसी की ख़िदमत करने से भी कासिर हूं ।” मैं ने उसे कहा, “**اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की क़सम ! मैं तेरा ख़ादिम बन कर रहूंगा और तुझ से अपना कोई काम नहीं लूंगा ।” तो वोह बोला “**اَلलّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** के नाम पर आप मुझे बताएं कि आप ने मुझे किस वजह से ख़रीदा ।” तो मैं ने उस को गुज़स्ता वाकिआ बता दिया इस पर वोह कहने लगा : “यकीनन आप **اَلलّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** के नेक बन्दे हैं क्यूंकि **اَلलّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की मख़्लूक में सितूदा सिफ़ात के मालिक औलियाए किराम **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی** मौजूद हैं और वोह इन का मक़ाम व मर्तबा अपने बन्दों में उन्हीं पर ज़ाहिर फ़रमाता है जिन्हें वोह पसन्द फ़रमा ले ।”

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मुबारक **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ** फ़रमाते हैं : पैदल चलते चलते हमारा गुज़र एक मस्जिद के पास से हुवा तो उस गुलाम ने मुझ से कहा, “ऐ मेरे आका ! अगर आप की इजाज़त हो तो इस मस्जिद में दो रक्अत नमाज़ अदा कर लूं ।” मैं ने कहा, “अभी तो हम हज़रते सय्यिदुना फुजैल बिन अयाज़ **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ** के घर जा रहे हैं, वहां जा कर जितनी चाहे रक्अतें पढ़ लेना ।” वोह बोला, “मुझे क्या मा'लूम कि मैं उन के घर पहुंचने तक ज़िन्दा भी रहूंगा या नहीं ? जब कि शहनशाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, रसूले बे मिषाल, बीबी आमिना के लाल **صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का फ़रमाने अ़लीशान है : “जिस के लिये भलाई का दरवाज़ा खोला जाए तो उसे चाहिये कि भलाई का काम मुकम्मल करे क्यूंकि वोह नहीं जानता कि कब दरवाज़ा बन्द हो जाए ।”

(الزهد لابن المبارك، باب ما جاء في فضل العباد، الحديث ١٧١، ص ٣٨ “فلينتم بدله” فليتنهزه)

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मुबारक **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ** फ़रमाते हैं : कि हम मस्जिद में दाख़िल हो गए और दोनों ने नमाज़ अदा की लेकिन उस की नमाज़ तवील हो गई, मैं उस का इन्तिज़ार करने लगा । जब उस ने सलाम फेरा तो कहने लगा : “ऐ मेरे आका ! मेरी मौत का वक़्त क़रीब आ चुका है, ऐ मेरे आका ! मेरे और परवर दगार **عَزَّوَجَلَّ** के दरमियान बड़ा उम्दा मुआमला

है, जिस को आप मुलाहज़ा फ़रमा चुके हैं और अब आप दूसरों को भी बताएं और मैं नहीं चाहता कि मेरा राज़ किसी पर जाहिर हो।" फिर वोह सजदे में गिर कर मुसलसल रोने और कलिमए शहादत पढ़ने लगा यहां तक कि उस के जिस्म की हरकत रुक गई। मैं ने उसे हरकत दी तो वासिले बहक़ पाया (या'नी उस की रूह क़फ़से उन्सूरी से परवाज़ कर चुकी थी)।

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : मैं उस को वहीं छोड़ कर हज़रते सय्यिदुना फुज़ैल और हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمَا को बुला लाया, हम ने मिल कर उस की तजहीज़ व तक्फ़ीन की। इस के बा'द मैं घर आया तो मेरे दिल में इक आग सी लगी हुई थी। जब रात हुई तो मैं अपने अवरादो वज़ाइफ़ से फ़ारिग़ हो कर सो गया। ख़्वाब में अचानक वोही गुलाम मैमून रेशम के दो शिम्लों में मल्बूस मेरे पास आया, वोह मुस्कुरा रहा था और उस के हाथ में कोई चीज़ थी। मुझे सलाम कर के कहने लगा : "ऐ मेरे आका ! जब मैं तमाम आकाओं के आका عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में हाज़िर हुवा तो मैं ने खुल कर अपना हाल बयान किया और येह भी अर्ज़ किया कि आप ने बिगैर किसी नफ़अ व ख़िदमत के मुझे ख़रीदा तो मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ मैमून ! मैं पोशीदा व मख़फ़ी बातों को जानता हूं और दिलों में छुपी बातों से भी बा ख़बर हूं, अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने महज़ मेरी रिज़ा की ख़ातिर तुझे ख़रीदा था। लिहाज़ा मैं ने तेरे सबब और मेरी बारगाह में तेरे मक़ाम व मर्तबे की वजह से इसे जहन्म की आग से आज़ाद कर दिया है।" (फिर गुलाम ने कहा) ऐ मेरे आका ! आप ने मेरी जो कीमत अदा की थी, येह लें।" हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : "मैं रोने लगा और जब बेदार हुवा तो देखा कि, वोह दिरहम मेरे हाथ में हैं। **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जब भी मुझे मैमून की याद आती है तो उस की जुदाई पर रोने लगता हूं।"

### चट्टान से चश्मा बह निकला :

हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि एक सफ़र के दौरान मुझे सख़्त प्यास लगी तो मैं पानी की तलाश में अपने रास्ते से हट कर एक वादी की जानिब चल पड़ा। अचानक मैं ने एक ख़ौफ़नाक आवाज़ सुनी, मैं ने सोचा : शायद ! येह कोई दरिन्दा है जो मेरी तरफ़ आ रहा है। चुनान्चे, मैं भागने ही वाला था कि पहाड़ों से किसी पुकारने वाले ने मुझे पुकार कर कहा : "ऐ इन्सान ! ऐसा कोई मुआमला नहीं जिस तरह तुम समझ रहे हो, येह तो **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ का एक वली है जिस ने शिद्दते हसरत से एक लम्बी सांस ली तो इस की आवाज़ बुलन्द हो गई।" जब मैं अपने रास्ते की जानिब वापस मुंडा तो एक नौजवान को इबादत में मशगूल पाया। मैं ने उसे सलाम किया और अपनी प्यास का बताया तो उस ने कहा : "ऐ मालिक ! इतनी बड़ी सल्तनत में तुझे पानी का एक क़तरा भी नहीं मिला ?" फिर वोह चट्टान की तरफ़ गया और पाउं की ठोकर मार कर कहा : "उस ज़ात की कुदरत से हमें पानी से सैराब कर जो बोसीदा हड्डियों को भी ज़िन्दा फ़रमाने पर कादिर है।" अचानक चट्टान से पानी ऐसे बहने लगा जैसे चश्मे से बहता है। मैं ने जी भर



कर पीने के बा'द अर्ज की : “मुझे ऐसी चीज की नसीहत फ़रमाइये जिस से मुझे नफ़अ होता रहे ।” तो उस ने नसीहत करते हुए फ़रमाया : “तन्हाई में **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की इबादत में मशगूल हो जाइये, वोह आप को जंगलात में पानी से सैराब कर देगा ।” इतना कह कर वोह अपने रास्ते पर चला गया ।

### फ़नाफ़िल्लाह नौजवान :

एक बुजुर्ग फ़रमाते हैं कि मैं ने एक नौजवान को आबादी और लोगों से अलग थलग तन्हा जंगल में मसरूफ़े इबादत देखा । मेरे सलाम करने पर उस ने जवाब दिया, तो मैं ने कहा : “ऐ नौजवान ! तुम ऐसी वीरान जगह में हो जहां तुम्हारा कोई मददगार है, न रफ़ीक़ ।” उस ने कहा : “क्यूं नहीं, मेरे रब्ब **عَزَّوَجَلَّ** की क़सम ! मेरा मददगार भी है और रफ़ीक़ भी ।” मैं ने पूछा : “कहां है ?” जवाब दिया : “वोह अपनी इज़्ज़त के साथ मेरे ऊपर, इल्म व हिक्मत से मेरे साथ, हिदायत के साथ मेरे सामने और ने'मत व अज़मत के साथ मेरे दाएं बाएं है ।” जब मैं ने येह कलाम सुना तो अर्ज की : “क्या आप मुझे अपनी सोहबत इख़्तियार करने की इजाज़त देंगे ?” तो वोह कहने लगा : “आप की रफ़ाक़त मुझे इबादत से गा़फ़िल कर देगी और मैं इस को पसन्द नहीं करता, मशरिफ़ व मगरिब तक का बादशाह मेरे लिये काफ़ी है ।” मैंने फिर पूछा : “आप को यहां वहशत महसूस नहीं होती ?” उस ने जवाब दिया : “जिस का हबीब व अनिस **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** हो उसे क्यूंकर वहशत होगी ।” मैं ने मज़ीद पूछा : “खाना कहां से खाते हैं ?” जवाब दिया : “जब मैं छोटा था तो उस ने अपने लुत्फ़ो करम से मां के तारीक़ पेट में मुझे ग़िज़ा दी और अब जब कि मैं बड़ा हो गया हूं तो क्या वोह मेरी कफ़ालत नहीं फ़रमाएगा, मेरे लिये उस के पास मुक़रर रिज़्क है और उस का वक़्त भी लिखा हुवा है ।”

फिर मैं ने उसे दुआ की दरख़्वास्त की तो उस ने मुझे यूं दुआ दी : “**اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** आप की आंखों को अपनी नाफ़रमानी से महफूज़ फ़रमाए, आप के दिल को अपने ख़ौफ़ से भर दे और आप को उन लोगों से न बनाए जो उस के ग़ैर में मशगूल हो कर इबादत से गा़फ़िल हो जाते हैं । इस के बा'द जब वोह जाने के लिये खड़ा हुवा तो मैं ने उस के क़रीब जा कर अर्ज की : “फिर कब आप से मुलाक़ात होगी ?” तो वोह मुस्कुरा कर कहने लगा : “आज के बा'द दुन्या में तो आप से मुलाक़ात न होगी और बरोज़े क़ियामत जब सब लोग जम्अ होंगे तो अगर आप मुझ से मिलना चाहें तो दीदारे इलाही **عَزَّوَجَلَّ** करने वालों में मुझे तलाश कीजियेगा ।” मैं ने पूछा : “आप को येह कैसे मा'लूम हो गया ?” जवाब दिया “उस की इज़्ज़त की क़सम ! उसी के सबब मा'लूम हुवा क्यूंकि मैं ने अपनी आंख को महरमात से बचा कर रखा, अपने नफ़्स को ख़्वाहिशात के हुसूल से बाज़ रखा और तारीक़ रातों में उस की इबादत के लिये तन्हाई इख़्तियार की लिहाज़ा इस के बदले वोह मुझे अपना दीदार कराएगा ।” फिर वोह गाइब हो गया । इस के बा'द कभी भी उस से मुलाक़ात न हुई ।

﴿**اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी मग़फ़िरत हो । آمین بحمد النبی الامین ﷺ﴾

## हमेशा दीदारे इलाही عَزَّوَجَلَّ करने वाला लड़का :

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़व्वास عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं एक दफ़आ मैं शदीद गर्मी वाले साल हज़ के इरादे से निकला । एक दिन जब कि हम हज़्जाजे मुक़द्दस में थे, मैं क़ाफ़िले से बिछड़ गया और मुझे हल्की सी नींद आने लगी, मुझे इतना ही इल्म था कि मैं जंगल में तन्हा हूं । अचानक एक शख्स मेरे सामने ज़ाहिर हुवा, मैं जल्दी से उसे जा मिला, वोह एक कमसिन लड़का था जिस का चेहरा चौदहवीं के चांद या दोपहर के सूरज की तरह चमक रहा था, उस पर खुश हाली व रहनुमाई के आषार नुमायां थे । मैं ने उसे सलाम किया तो उस ने यूं जवाब दिया :

“وَعَلَيْكُمُ السَّلَامُ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ، يَا إِبْرَاهِيمُ!” मुझे इस से बड़ा तअज्जुब हुवा, मैं ने पूछा : “तुम मुझे कैसे पहचानते हो हालांकि इस से पहले तुम ने मुझे कभी नहीं देखा ? तो वोह कहने लगा : “ऐ इब्राहीम ! जब से मुझे मा'रिफ़त नसीब हुई है तब से मैं नावाक़िफ़ न रहा और जब से मुझे **अल्लाह** तआला के विसाल की दौलत मिली है तब से मैं जुदाई से न आजमाया गया ।” मैं ने पूछा : “इतनी शदीद गर्मी वाले साल इस जंगल में कैसे आ गए हो ?” तो उस ने जवाब दिया : “ऐ इब्राहीम ! मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इलावा कभी किसी से महब्बत न की, न उस के ग़ैर से कभी मुलाक़ात की है और मुकम्मल तौर पर उसी की तरफ़ मुतवज्जेह रहता हूं और उस का बन्दा होने का इक़रार करता हूं ।” मैं ने उस से पूछा : “खाते पीते कहां से हो ?” तो बोला : “मेरा महबूब मेरी कफ़़ालत करता है ।” जब उस ने मुझे येह जवाब दिया तो उस के आंसूओं की लड़ी रुख़्सार पर मोतियों की तरह उमंड आई । फिर उस ने चन्द अशआर पढ़े, जिन का मफ़हूम कुछ इस तरह है :

“कौन है जो मुझे चटयल मैदान में जाने से डरा रहा है, मैं तो ज़रूर इस ज़मीन से गुज़र कर अपने महबूब तक पहुँचूंगा और मैं उस पर पहले ही ईमान ला चुका हूं, महब्बत व शौक़ मुझे मुजतरिब किये हुए हैं और जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का मुहिब्ब हो वोह किसी इन्सान से नहीं डरता, क्या आज आप मेरी कमसिनी की वजह से मुझे हकीर जान रहे हैं, मेरे साथ जो बीती है इस की वजह से मुझ पर मलामत करना छोड़ दें ।”

इस के बा'द उस ने मुझ से पूछा : “ऐ इब्राहीम ! क्या तुम क़ाफ़िले से बिछड़ गए हो ?” मैं ने जवाब दिया : “जी हां ।” आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं कि मैं ने उस कमसिन लड़के को देखा कि वोह अपनी निगाहें आस्मान की तरफ़ उठा कर कुछ पढ़ने का इरादा कर रहा था, उसी वक़्त मुझ पर नींद का ग़लबा हो गया । जब आंख खुली तो मैं ने अपने आप को क़ाफ़िले में पाया और मुझे मेरा रफ़ीक़ कह रहा है : “ऐ इब्राहीम ! ख़याल रखना, कहीं सुवारी से गिर न जाओ । मुझे मा'लूम भी न हुवा कि वोह कमसिन लड़का कहां गया, आस्मान पर चढ़ गया या ज़मीन में उतर गया । जब मैं मैदाने अरफ़ात पहुंचा और हरमे पाक में दाख़िल हुवा तो उस लड़के को का'बा शरीफ़

के पर्दों से लिपट कर रोते हुए येह मुनाजात करते देखा : “मैं का’बए मुकर्रमा رَاَدَهَا اللَّهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا के ग़िलाफ़ से चिमटा हुआ हूं, ऐ मेरे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तू दिलों के भेद और पोशीदा बातों को खूब जानता है, मैं तेरी बारगाह में पैदल चल कर हाज़िर हुआ हूं क्योंकि मैं तेरी महबूबत में मुब्तला हूं, मैं तो बचपन से ही तेरी महबूबत व चाहत में गिरिफ़्तार हो गया था जिस वक़्त मुझे महबूबत का सहीह मफ़हूम भी मा’लूम न था । ऐ लोगो ! मुझे मलामत न करो क्यूं कि मैं तो अभी महबूबत के उसूल सीख रहा हूं और ऐ मेरे महबूबे हकीक़ी عَزَّوَجَلَّ अगर मेरी मौत का वक़्त करीब आ चुका है तो फिर मुझे उम्मीद है कि मैं तेरा विसाल पा कर अपनी महबूबत का हिस्सा हासिल कर लूंगा ।” फिर वोह सजदे में गिर गया । मैं उस की तरफ़ देखता रहा । जब उस का सजदा बहुत तवील हो गया तो मैं ने उस को हरकत दी तो मा’लूम हुआ कि उस की रूह कफ़से उन्सूरी से परवाज़ कर चुकी है । मुझे बहुत अफ़सोस हुआ, मैं अपनी सुवारी के जानवर की तरफ़ गया और कफ़न के लिये एक कपड़ा लिया और गुस्ल देने वाले की मदद त़लब की । जब वापस उस लड़के के पास पहुंचा तो वहां कोई मौजूद न था । उस के मुतअल्लिक़ तमाम हाजियों से पूछा मगर मुझे कोई ऐसा शख्स न मिला जिस ने उसे ज़िन्दा या मुर्दा देखा हो तो मैं समझ गया कि वोह लड़का मख़्लूक़ की नज़रों से पोशीदा था और उसे मेरे इलावा किसी ने न देखा, मैं अपनी क़ियाम गाह में आ कर सो गया ।

ख़्वाब में, मैं ने उसे एक बहुत बड़ी जमाअत के आगे आगे देखा कि उस पर खुशी के आषार नुमायां थे । मैं ने उस से पूछा : “क्या तुम मेरे साथ न थे ?” तो उस ने जवाब दिया : “यकीनन मैं आप के साथ ही था ।” मैं ने उस से पूछा : “क्या तुम मर नहीं गए थे ?” तो उस ने जवाब दिया : “ऐसा ही है ।” मैं ने कहा : “मैं तो तुम्हें कफ़न देने के लिये तलाश कर रहा था कि तजहीज़ व तक्फ़ीन के बा’द तुम्हारी तदफ़ीन अमल में लाऊं, मगर जब मैं वापस आया तो तुम मौजूद ही न थे ।” तो उस ने जवाब दिया : “ऐ इब्राहीम ! जिस ज़ात ने मुझे शहर से निकाला और अपनी महबूबत का शौक़ अता किया और मेरे घर वालों से मुझे दूर कर दिया, उसी ने मुझे सब की नज़रों से छुपा कर कफ़न भी दे दिया ।”

फिर मैं ने पूछा : “**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हारे साथ क्या मुआमला फ़रमाया ?” उस ने जवाब दिया : “मुझे मेरे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने सामने खड़ा किया और फ़रमाया : “तुझे क्या चाहिये ?” मैं ने अर्ज़ की : “या इलाही عَزَّوَجَلَّ तू खूब जानता है ।” उस ने इरशाद फ़रमाया : “तू मेरा सच्चा बन्दा है, मेरे नज़दीक़ तेरा मक़ाम येह है कि मेरे और तेरे दरमियान कभी हिजाब न होगा ।” फिर मज़ीद इरशाद फ़रमाया : “और भी कुछ चाहिये ?” मैं ने अर्ज़ की : “मैं जिस बस्ती में रहता था उस के हक़ में मेरी शफ़ाअत क़बूल फ़रमा ।” इरशाद फ़रमाया : “मैं ने उस बस्ती के हक़ में तेरी शफ़ाअत क़बूल फ़रमाई ।” हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़व्वास عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى



फ़रमाते हैं कि फिर उस ने मुझ से मुसाफ़हा किया। इस के बा'द मैं बेदार हो गया और अरकाने हज अदा करने के बा'द काफ़िले वालों के साथ चल पड़ा। जिस से भी मेरी मुलाकात होती वोह येही कहता : “आप के हाथों की पाकीज़ा खुशबू से सब लोग हैरान हैं।” इस वाक़िए के नाक़िल (नक़ल करने वाले) का कहना है कि हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़व्वास عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی के हाथ से मरते दम तक वोह खुशबू आती रही।

وَصَلَّى اللهُ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِهِ وَصَحْبِهِ وَسَلَّمَ



### हुस्ने सुलूक की फ़ज़ीलत

नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने ज़ीशान है : “अगर कोई किसी का कफ़ील (या'नी परवरिश करने वाला) है तो उस को चाहिये कि वोह उस के साथ हुस्ने सुलूक करे।” एक शख्स ने अर्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मेरी न अवलाद है न बीवी और न ही ख़ानदान, सिर्फ़ एक मुर्गी है।” आप صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “अगर तू ने उस के दाना पानी में एक दिन भी कोताही की तो **अल्लाह** तबारक व तअ़ाला तुझे हुस्ने सुलूक करने वालों में न लिखेगा।”

सय्यिदुल मुबल्लिगीन रहमतुल्लिल अलमीन صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने खुशबूदार है : “तुम में सब से बेहतर वोह है जो अपने अहल के साथ अच्छा सुलूक करता है और मैं तुम सब से ज़ियादा अपने घर वालों से अच्छा सुलूक करने वाला हूँ और औरतों की इज़ज़त सिर्फ़ करीम शख्स ही करता है और उन की इहानत व तौहीन सिर्फ़ कमीना व बद बख़्त ही करता है।”

(फ़रे العیون مترجم، ص ۸۳-۸۴)

बयान 32 : **तजकिशु इमामे आ'जम अबू हनीफा** رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ

शिराजुल उम्मा, इमामुल अइम्मा, कशिफुल शुम्मा, फकीहे अप्पुम हजरते

सय्यिदुना इमामे आ'जम अबू हनीफा नो'मान बिन साबित رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ

**हम्मे बारी तआला :**

सब खूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जो कदीम की सिफ़त से मुत्तसिफ़ है, हर मौजूद शै के वुजूद से पहले है, फज़्लो करम और जूदो अता उस के अवसाफ़ हैं, वोह अपनी वहदानिय्यत में अवलाद और आबाओ अजदाद से पाक है। न उस की बीवी है, न शौहर, न उस की कोई अवलाद है, न वोह किसी की अवलाद। वोह रैत के ज़रों, पानी के क़तरों और बालियों और अंगूर के ख़ौशों वगैरा के दानों की ता'दाद भी जानता है। वोह सख़्त अन्धेरी व तारीक रातों में खुशकी व तरी के हर ज़र्रे की हरकत को मुलाहज़ा फ़रमा रहा है। ऐसा हिक्मत वाला है जो सख़्त मजबूत चट्टानों से नहरें निकालता है। खुशक दरख़्तों से तरोताज़ा फल पैदा करता है। फ़िक्रें उस की तस्वीर कशी नहीं कर सकतीं। सिम्तें उस का इहाता नहीं कर सकतीं। तक्दीर उस के लिये रुकावट नहीं बन सकती। ज़माने उसे फ़ना नहीं कर सकते। आंखों में उस के इदराक की ताक़त नहीं। वोह यकता मा'बूद है, उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं। वोह अता करने वाला है, उस की अता में कोई रुकावट डालने वाला नहीं। उस के फैसले को टालने वाला कोई नहीं। वोह ऐसा करीम है कि बन्दा कितनी ही मरतबा उस के दरवाज़े से ए'राज़ करे फिर भी उसे बड़े बड़े इन्आमात अता फ़रमाता है। वोह ऐसा हलीम है कि इन्सान को गुनाहों में मुब्तला देखता है फिर भी अपने हिल्म और मेहरबानी से इस की पर्दापोशी फ़रमाता है। वोह ऐसा ग़फ़ार है जो गुनाहों को बख़्शता, ऐबों को छुपाता और पिछले गुनाह मुआफ़ फ़रमा देता है। वोह ऐसा क़हहार है जो सब जाबिरों और ज़ालिमों पर ग़ालिब है, सब शिकस्त देने वालों को शिकस्त देता है और बुग़ज़ व इनाद की तल्वार सोंतने वालों को शिद्दत व सख़्ती की मार मारता है।

पाक है वोह ज़ात जिस ने इन्सानी फ़िक्रों को अपने अज़मत व जलाल और अन्वार व तजल्लियात के इदराक से गुम ग़तए राह कर दिया और अक्लों को अपनी क़दीम ज़ात की हकीक़त तक पहुंचने से अज़िज़ कर दिया। उस ने वज़ाहत और कलाम के बा'द अपने असरार को इशारों से ता'बीर करने से ज़बानों को गूंगा कर दिया और अपना इहाता करने से दिलों को हैरान ज़दा कर दिया और इस का मक़सद वहम में मुब्तला करना नहीं। वोह करीम है, अज़मत व बुजुर्गी वाला है, हमेशा से है, तन्हा है, न उस की कोई अवलाद है, न वोह किसी की अवलाद, उस का कोई शरीक नहीं, वोह किसी का मोहताज नहीं, वोह हर तरह के मुमाषिल, मुशाबेह, ज़िद और नकीज़ से पाक है। तमाम एहसानात पर शुक्र और तमाम ता'रीफ़ों का मुस्तहिक् वोह है जिस ने अपने गुनहगार व ज़लील बन्दों पर अपना ख़ूबसूरत पर्दा डाल रखा है। वोह अपने बन्दों को देख रहा है। उन का मुशाहदा कर रहा है। रबूबिय्यत उस की पहचान है। उलूहिय्यत उस की सिफ़त है। वोह अपनी हकीक़ते वहदानिय्यत में मुन्फ़रिद है। ख़याल व गुमान से पाक है। अपनी बका में फ़ना और

मिषलियत (या'नी हम मिषल होने) से पाक है। हर ज़ाहिर व पोशदा शै से बा ख़बर है। अक्लें उस की अज़मत में हैरान व शशदर हैं और नहीं जान सकीं कि वोह कहां है ? फ़िक्रें उस की बे नियाज़ी का इदराक करने से अज़िज़ हैं, क्यूंकि उसे उलूमे अक्लिय्या से नहीं जाना जा सकता। पाक है वोह मा'बूदे अज़ीम जो मुमाषिल व मुनासिब चीज़ों पर ग़ालिब है और मशारिक व मसाहिब से पाक व बरी है। ताइब की तौबा क़बूल फ़रमाता है, उस के दरबार का कोई दरबान नहीं। जो उस के ग़ैर से उम्मीद रखे वोह बद बख़्त व नामुराद है और जो उस के दरवाज़े रहूमत पर पड़ाव डाल ले वोह अपने मक्सद को पाने में कामयाब है। जो उस के उन्स का मज़ा चख लेता है वोह उस के लुत्फ़ो करम से अज़ीबो ग़रीब चीज़ें मुलाहज़ा कर लेता है और जो उस के इलावा हर चीज़ से मुंह मोड़ लेता है तो वोह न सिर्फ़ उसे बुलन्दी अता फ़रमाता है बल्कि तरक्की अता फ़रमा कर आ'ला तरीन मरातिब तक पहुंचा देता है। उस से ज़रर व नुक़सान को दूर करता और टूटे दिलों को जोड़ देता है, और रात के अख़िरी हिस्से में निदा फ़रमाता है : "है कोई बख़्शिश मांगने वाला ? है कोई तौबा करने वाला ?" वोह साइलीन की हाज़ात पूरी फ़रमाता है और क़बूलियत व इनायत की पोशाकों के साथ ताइबीन पर जूदो करम फ़रमाता है।

पाक है वोह ज़ात जिस की पाकीज़गी की गवाही तमाम आस्मान और उस में मौजूद अज़ाइबाते कुदरत देते हैं। जिस की रबूबियत का इक़रार मशारिक व मग़ारिब की ज़मीनें करती हैं। उस ने अपना काइम व दाइम दीन ले कर आने वाले और ख़साइले हमीदा और औसाफ़े जमीला से मुत्तसिफ़ नबी हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद ﷺ का इन्तिखाब फ़रमाया और काइनात को आप ﷺ के वुजूदे बा जूद से मुशरफ़ फ़रमाया और आप ﷺ को सआदते कामिला अता फ़रमाई और बुलन्दो बाला मरातिब पर फ़ाइज़ फ़रमाया। आप ﷺ के सहाबए किराम व खुलफ़ाए उज़्ज़ाम رضوان الله تعالى عليهم أجمعين को चुना और फिर उन की सोहबत में रहने वालों को ताबेईन बनाया। आप ﷺ की उम्मत में से ब तौरे ख़ास ताबेईन पर एहसान फ़रमाया जो ज़माना गुज़र जाने के बावजूद शरीअते इस्लाम पर काइम रहे। फिर इन में से चार हस्तियों का इन्तिखाब फ़रमाया जिन्होंने ने ईमान के सुतूनों की बुन्याद डाली और बन्दों को **अल्लाह** عزّ وجلّ की इबादत की तरफ़ बुलाया पस उन के उलूम से सारी काइनात भर गई। इन में से एक हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई رحمه الله تعالى عنه हैं जिन का नसब शरीफ़ बनू अदनान से जा मिलता है। दूसरे हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस असजी رحمه الله تعالى عنه हैं जो बुलन्द शान व मर्तबा के मालिक हैं। तीसरे हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल رحمه الله تعالى عنه हैं जो अपने इल्म के जरीए ज़ाहिरी व बातिनी तौर पर काबिले ता'रीफ़ रास्ते पर चले। चौथे हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رحمه الله تعالى عنه हैं। **अल्लाह** عزّ وجلّ ने इन चारों बुजुर्गों और इन के उलूम से लोगों को नफ़अ दिया और इन से तक्लीफ़, जहालत और गुमराही व सरकशी दूर फ़रमाई।

﴿अल्लाह عزّ وجلّ की उन पर रहूमत हो..और..उन के सदके हमारी मग़फ़िरत हो।﴾



ता'रुफे इमामे आ'जम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم :

सिराजुल उम्मा, इमामुल अइम्मा हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'जम अबू हनीफ़ा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का पूरा नाम अबू हनीफ़ा नो'मान बिन षाबित बिन जुवती है। आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ 80 सिने हिजरी अम्बार में पैदा हुए, 150 हि. में वफ़ात पाई और 70 साल की उम्र पाई। आप रَضِيَ اللَّهُ तَعَالَى عَنْهُ की विलादते बा सआदत सहाबए किराम أَجْمَعِينَ के मुबारक दौर में हुई और ताबेईन के दौर में आप رَضِيَ اللَّهُ तَعَالَى عَنْهُ अज़ीम फ़कीह बन गए। हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र बिन षाबित मउरख़ रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'जम अबू हनीफ़ा रَضِيَ اللَّهُ तَعَالَى عَنْهُ के दादा अबू षाबित ने हज़रते सय्यिदुना अली बिन अबी तालिब रَضِيَ اللَّهُ तَعَالَى عَنْهُ को नवरोज़ (या'नी आतश परस्तों के कौमी तहवार) के दिन हदिये में फ़ालूदा पेश किया। बा'ज ने कहा : वोह महरजान (या'नी आतश परस्तों के सब से बड़े कौमी तहवार) का दिन था। इमामे आ'जम अबू हनीफ़ा रَضِيَ اللَّهُ तَعَالَى عَنْهُ के वालिदे माजिद हज़रते सय्यिदुना षाबित रَحْمَةُ اللَّهِ तَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : “मैं अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा क़र्रमُ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم की उस दुआ की बरकत से हूं जो उन्होंने ने मेरे हक़ में फ़रमाई।” हज़रते सय्यिदुना ज़मिरी रَحْمَةُ اللَّهِ तَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'जम अबू हनीफ़ा रَضِيَ اللَّهُ तَعَالَى عَنْهُ की हैयत व हालत, चेहरा, लिबास और जूते अच्छे होते थे और अपने पास आने वाले हर शख्स की मदद फ़रमाते। आप रَضِيَ اللَّهُ तَعَالَى عَنْهُ का क़द दरमियाना था, न ज़ियादा लम्बा था, न पस्त। तमाम लोगों से ज़ियादा अहसन अन्दाज़ में कलाम फ़रमाते। एक मरतबा आप रَضِيَ اللَّهُ तَعَالَى عَنْهُ की गोद में सांप गिर गया। लोगों ने भागना शुरू कर दिया लेकिन आप रَضِيَ اللَّهُ तَعَالَى عَنْهُ ने सांप को हटा दिया और खुद वहीं बैठे रहे और बिल्कुल इधर उधर न हुए। हज़रते सय्यिदुना अबू नईम عليه رحمة الله الرحيم फ़रमाया करते : “इमामे आ'जम रَضِيَ اللَّهُ तَعَالَى عَنْهُ खूबसूरत चेहरे और सुथरे कपड़ों वाले, अच्छी खुशबू वाले, बहुत करम फ़रमाने वाले और अपने भाइयों की मदद फ़रमाने वाले थे। और आप रَضِيَ اللَّهُ तَعَالَى عَنْهُ बहुत बड़े आबिदो ज़ाहिद, **अब्बाह** غَزَوَجَل की मा'रिफ़त और उस का ख़ौफ़ रखने वाले थे, अपने इल्म से हमेशा रिज़ाए इलाही غَزَوَجَل तलाश करते।

(تاريخ بغداد، الرقم ٧٢٩٧، النعمان بن ثابت ابوحنيفة التيمي، ج ١، ص ٣٢٧-٣٣١-٣٣٧)

इबादते इमामे आ'जम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى :

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मुबारक रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि “हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'जम अबू हनीफ़ा रَضِيَ اللَّهُ तَعَالَى عَنْهُ कषरत से नवाफ़िल पढ़ने वाले और बा मुरव्वत थे।”

हज़रते सय्यिदुना हम्माद बिन अबी सुलैमान रَحْمَةُ اللَّهِ तَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : “इमामे आ'जम अबू हनीफ़ा रَضِيَ اللَّهُ तَعَالَى عَنْهُ सारी रात बेदार रह कर गुजारते। हज़रते सय्यिदुना अली बिन सदाई रَحْمَةُ اللَّهِ तَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं मैं ने इमामे आ'जम अबू हनीफ़ा रَضِيَ اللَّهُ तَعَالَى عَنْهُ को देखा कि वोह माहे रमज़ान में साठ बार कुरआने पाक ख़त्म फ़रमाते, रोज़ाना दिन रात में एक एक बार।

हज़रते सय्यिदुना अबू ज़वैरिया رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि मैं ने हज़रते सय्यिदुना हम्माद बिन सुलैमान, सय्यिदुना अल्कमा बिन मुरषद, सय्यिदुना महारिब बिन दषार और सय्यिदुना औन बिन अब्दुल्लाह (رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمْ) की सोहबत इख़्तियार की और इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की सोहबत में भी रहा मगर आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से ज़ियादा शब बेदारी करने वाला कोई नहीं देखा, मैं आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की सोहबत में छे माह रहा मगर किसी रात आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को सोते हुए न देखा। मन्कूल है कि आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ निस्फ़ रात जागा करते थे। एक मरतबा आप रَضِيَ اللَّهُ تَعालَى عَنْهُ कहीं तशरीफ़ ले जा रहे थे कि किसी ने आप रَضِيَ اللَّهُ تَعालَى عَنْهُ की तरफ़ इशारा कर के दूसरे शख्स को बताया कि येही वोह हैं जो तमाम रात जाग कर गुज़ारते हैं। इस के बा'द आप रَضِيَ اللَّهُ تَعालَى عَنْهُ सारी रात इबादत में बसर करने लगे। और फ़रमाया : “मुझे अब्बाह عَزَّ وَجَلَّ से हया आती है कि उस इबादत के साथ मेरी ता'रीफ़ की जाए जो मैं नहीं करता।”

(المرجع السابق، ج ۱۳، ص ۳۵۳ تا ۳۶۰ - التذكرة الحمدونية، باب أول، فصل رابع في أخبار تابعين وسائر طبقات الصالحين رضى الله عنهم وكلامهم ومواعظهم، ج ۱، ص ۵۴)

**जोहदो तक्वउ इमामे आ'ज़म रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ :**

हज़रते सय्यिदुना बिशर बिन वलीद رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से मन्कूल है कि ख़लीफ़ा अबू जा'फ़र मन्सूर ने इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की तरफ़ कासिद भेजा और ओहदए क़ज़ा आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के सिपुर्द करने का इरादा किया लेकिन आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इन्कार फ़रमा दिया। अबू जा'फ़र ने क़सम खाई कि तुम्हें येह काम ज़रूर करना पड़ेगा। आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने भी क़सम खाई कि मैं हरगिज़ नहीं करूंगा। हज़रते सय्यिदुना रबीअ रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने अर्ज़ की : “आप देखते नहीं कि ख़लीफ़ा क़सम खा रहा है।” तो फ़रमाया : “ख़लीफ़ा अपनी क़सम का कप्फ़ारा देने पर मुझ से ज़ियादा कादिर है।” चुनान्वे, ख़लीफ़ा ने आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को कैद करने का हुक्म दे दिया। कैद ख़ाने में ही आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का इन्तिक़ाल हुवा और आप रَضِيَ اللَّهُ तَعَالَى عَنْهُ को ख़ीज़रान के क़ब्रिस्तान में सिपुर्दे खाक किया गया।

(تاريخ بغداد، الرقم ۷۲۹۷، النعمان بن ثابت ابوحنيفة التيمي، ذكر قدوم ابي حنيفة بغداد وموته بها، ج ۱۳، ص ۳۲۹/۴۲६)

दूसरी रिवायत में है कि ख़लीफ़ा अबू जा'फ़र मन्सूर ने हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा, हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान पौरी और हज़रते सय्यिदुना शरीक (رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمْ) को बुलवाया। तीनों तशरीफ़ ले गए। उस ने हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान पौरी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से कहा कि आप बसरा में ओहदए क़ज़ा संभाल लें। हज़रते सय्यिदुना शरीक رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से कहा कि वोह कूफ़ा में क़ज़ा का ओहदा संभाल लें और हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से कहा कि मेरे शहर और इस के कुर्बो जवार की क़ज़ा का मन्सब आप के सिपुर्द किया जाता है। आप तीनों अपनी ज़िम्मेदारियां संभाल ले। फिर अपने दरबान से कहा कि इन के ज़िम्मेदार बन कर साथ जाओ, अगर इन में से कोई इन्कार करे तो उस को सो कोड़े लगाना। चुनान्वे, सय्यिदुना शरीक رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने तो मन्सबे क़ज़ा क़बूल कर लिया लेकिन हज़रते सय्यिदुना

رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ सुफ़्यान घौरी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ यमन तशरीफ़ ले गए और इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने भी क़बूल न किया तो आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को सो कोड़े लगाए गए और फिर कैद कर दिया गया यहां तक कि वहीं आप रَضِيَ اللَّهُ तَعَالَى عَنْهُ का इन्ति़क़ाल हो गया ।

(مناب الإمام الأعظم للكردي، الفصل السادس في وفاة الإمام، وذكر الشيخ عبد الله بن نصر الزاغوني، ج ٢، ص ٢١، بتغير)

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मुबारक रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के सामने हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का तज़क़िरा हुवा तो आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इरशाद फ़रमाया : “क्या तुम उस शख्स की बात करते हो जिस के सामने सारी दुन्या पेश की गई फिर भी उस ने ठुकरा दी ।” (التذكرة الحمدونية، باب اول، فصل رابع في اخبار تابعين وسائر طبقات الصالحين رضى الله عنهم..... الخ، ج ١، ص ٥٤)

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन शुजा' रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से मन्कूल है कि हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की बारगाह में अर्ज़ की गई : “ख़लीफ़ा अबू जा'फ़र ने आप को दस हज़ार दिरहम देने का हुक्म दिया है ।” मगर आप उस पर राज़ी न हुए । जब माल देने का दिन आया तो आप रَضِيَ اللَّهُ तَعَالَى عَنْهُ ने नमाज़े फ़ज़्र पढ़ते ही खुद को अपने कपड़ों से ढांप लिया और किसी से कोई बात न की । जब हसन बिन क़हतबा का क़ासिद माल ले कर आया तो आप रَضِيَ اللَّهُ तَعَالَى عَنْهُ ने उस से भी कोई कलाम न फ़रमाया । फिर आप रَضِيَ اللَّهُ तَعालَى عَنْهُ ने फ़रमाया : जो शख्स हमारे पास आया है वोह हम से यूं कलाम करेगा कि एक कलिमे के बा'द दूसरा कलिमा बोलेंगा या'नी आप रَضِيَ اللَّهُ तَعَالَى عَنْهُ ने उस की आदत बताई । फिर फ़रमाया : “इस माल को जराब में डाल कर घर के किसी कोने में फैंक आओ ।” इस के बा'द जब आप रَضِيَ اللَّهُ तَعَالَى عَنْهُ ने घर के सामान के मुतअल्लिक़ वसिय्यत की तो बेटे को इरशाद फ़रमाया : “जब मेरी वफ़ात हो और लोग मुझे दफ़न कर दें तो येह थेली हसन बिन क़हतबा को दे देना और कहना : “येह आप की अमानत है जो आप ने अबू हनीफ़ा (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ) के पास रखी थी ।” साहिबज़ादे फ़रमाते हैं कि मैं ने अपने वालिदे मोहतरम के हुक्म पर अमल किया । येह देख कर हसन बिन क़हतबा कहने लगा : “तुम्हारे वालिद पर अब्बाह की रहमत हो, वोह अपने दीन पर किस क़दर हरीस थे ।” (المرجع السابق، ص ५५)

**आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का इल्मी मक़ाम :**

हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा रَضِيَ اللَّهُ तَعَالَى عَنْهُ का उख़रवी और दीनी मुआमलात का इल्म और आप रَضِيَ اللَّهُ तَعَالَى عَنْهُ की मा'रिफ़ते इलाही غَرْوَجَل आप रَضِيَ اللَّهُ तَعَالَى عَنْهُ के शदीद ख़ौफ़े इलाही और दुन्या से बे रग़बती पर दलालत करती है ।

हज़रते सय्यिदुना इब्ने जरीज रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने लोगों से फ़रमाया : “मैं ने तुम्हारे इस कूफ़ी इमाम नो'मान बिन षाबित रَضِيَ اللَّهُ तَعَالَى عَنْهُ के बारे में सुना है कि आप रَضِيَ اللَّهُ तَعَالَى عَنْهُ ख़ौफ़े इलाही के पैकर हैं ।” (تاريخ بغداد، الرقم ٧٢٩٧، ج ١٣، ص ३५५)

हज़रते सय्यिदुना शरीक रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : “हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा रَضِيَ اللَّهُ तَعَالَى عَنْهُ बहुत ज़ियादा ख़ामोश और हमेशा मुतफ़क्किर रहते और लोगों से बहुत कम बात करते ।” (التذكرة الحمدونية، باب اول، فصل رابع في اخبار تابعين وسائر طبقات الصالحين رضى الله عنهم..... الخ، ج ١، ص ५४)



येह इस बात की वाजेह अलामत है कि आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ बातिनी इल्म रखते और अहम दीनी मक़ासिद में मसरूफ़ रहते थे और जिसे ख़ामोशी और जोहद दिया गया उसे सारा इल्म अता कर दिया गया ।

### ख़ारिजी शुरैह ताइब हो गया :

मन्कूल है कि एक दिन हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ मस्जिद में तशरीफ़ फ़रमा थे कि ख़वारिज के कुछ सरगने अपनी तल्वारें लहराते हुए आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के पास आए और कहने लगे : “ऐ अबू हनीफ़ा (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ) हम तुम से दो मस्अले पूछते हैं, अगर तुम ने जवाब दे दिया तो बच जाओगे वरना तुम्हें क़त्ल कर देंगे (مَعَاذَ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ) ।” आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया “अपनी तल्वारें मियान में डाल लो क्यूँकि इन्हें देख कर मेरा दिल मशगूल हो जाएगा ।” वोह कहने लगे : “हम इन को कैसे छुपा लें हालांकि हम तुम्हारी गर्दन में डाल कर बहुत ज़ियादा अज़्रो षबाब पाएंगे ।” आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : “चलो, जो पूछना है पूछो ।” उन्होंने ने पूछा : “दरवाजे पर दो जनाजे हैं : इन में एक शराबी है, उस को उच्छू<sup>(1)</sup> लगा और नशे की हालत में मर गया और दूसरा जनाजा ज़िना से हामिला औरत का है जो तौबा से क़बूल ही बच्चे की विलादत से मर गई तो क्या वोह दोनों काफ़िर मरे या मुसलमान ? इन सुवाल करने वाले ख़ारिजियों का मज़हब येह था कि अगर कोई मुसलमान एक गुनाह भी कर ले तो वोह काफ़िर हो जाता है । अब अगर इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ इन दोनों को मुसलमान कहते तो वोह आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को क़त्ल कर देते । आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इस्तिफ़सार फ़रमाया : “इन का तअल्लुक किस फ़िर्के से था ? क्या यहूदी थे ?” उन्होंने ने कहा : नहीं । फिर पूछा, क्या ईसाई थे ? तो कहने लगे नहीं तो आप रَضِيَ اللَّهُ تَعालَى عَنْهُ ने पूछा क्या मजूसी या'नी आग की पूजा करने वाले थे ? जवाब मिला, “नहीं” तो आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने पूछा : बुत परस्त थे ?” फिर भी जवाब नफ़ी में पाया तो आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फिर पूछा : “आख़िर वोह कौन थे ?” उन्होंने ने कहा : “वोह मुसलमान थे ।” तो आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इरशाद फ़रमाया : “जवाब तो तुम ने खुद ही दे दिया है ।” कहने लगे, “वोह कैसे ?” आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : “तुम ने ए'तिराफ़ किया है कि वोह मुसलमान थे । लिहाज़ा तुम किसी मुसलमान को कैसे काफ़िर क़रार दे सकते हो ?” उन्होंने ने फिर पूछा “क्या वोह जन्मती हैं या दोज़ख़ी ?” तो आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इरशाद फ़रमाया : “मैं उन के मुतअल्लिक वोही कहूँगा जो हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम الصّلوٰةُ وَالسّٰلَامُ ने अपनी उम्मत के शरीर व नाफ़रमान लोगों के मुतअल्लिक **اَللّٰهُ عَزَّ وَجَلَّ** की बारगाह में अर्ज़ की थी कि,

﴿١﴾ فَمَنْ تَبِعَنِي فَإِنَّهُ مِنِّيَّ وَمَنْ عَصَانِي

فَأَنَاكَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ٥ (پ ۱۳، ابراهیم: ۳۶)

تर्जमए कन्जुल ईमान : तो जिस ने मेरा साथ दिया वोह तो मेरा है और जिस ने मेरा कहा न माना तो बेशक तू बख़्शने वाला मेहरबान है ।”

① .....पानी पीने के दौरान बा'ज़ अवकात गले में फन्दा सा लगता है और खांसी उठती है इस को “उच्छू लगना” कहते हैं ।

और वोही कहूंगा जो हज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने बारगाहे खुदावन्दी में अपने नाफ़रमान उम्मतियों के मुतअल्लिक अर्ज की थी :

﴿٢﴾ إِنَّ تَعَذُّبَهُمْ فَإِنَّهُمْ عِبَادُكَ وَإِنْ تَغْفِرَ لَهُمْ

فَأِنَّكَ أَنْتَ الْغَزِيرُ الْحَكِيمُ 0 (प १७, المائدة: ११८)

तर्जमए कन्जुल ईमान : अगर तू इन्हें अज़ाब करे तो वोह तेरे बन्दे हैं और अगर तू इन्हें बख़्श दे तो बेशक तू ही है ग़ालिब हिक्मत वाला ।

चुनान्चे, वोह ख़वारिज ताइब हुए और आप से माज़ेरत की ।

(مناقب الامام الاعظم ابی حنیفة رحمۃ اللہ تعالیٰ للامام الموفق بن احمد المکی رحمۃ اللہ، ج ۱، ص ۴۲)

मन्कूल है कि एक औरत हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'जम अबू हनीफ़ा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की मस्जिद में हाज़िर हुई । आप रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ अपने रुफ़का के दरमियान तशरीफ़ फ़रमा थे । उस ने एक सेब निकाला जो एक तरफ़ से सुख़ और दूसरी जानिब से ज़र्द था । उस ने बिगैर कोई बात किये सेब आप रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के सामने रख दिया । आप रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने उस के दो टुकड़े कर दिये, औरत चली गई । आप रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के अहबाब इस माज़रे को न समझ सके । चुनान्चे, उन्होंने ने आप रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से पूछा तो आप रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया : “उस औरत को कभी सेब की एक जानिब की तरह सुख़ ख़ून आता है और कभी दूसरी जानिब की तरह ज़र्द ख़ून आता है गोया वोह पूछ रही थी कि वोह ख़ून हैज़ का है या तुहर का । तो मैं ने सैब को तोड़ कर इस का अन्दरूनी हिस्सा दिखाया जिस से मेरी मुराद येह थी कि जब तक इस सैब की अन्दरूनी सफ़ैदी की तरह सफ़ैदी दिखाई न दे, तुहर नहीं होगा तो वोह चली गई ।”

सिराजुल उम्मा, इमामे आ'जम अबू हनीफ़ा रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि मैं बसरा में दाख़िल हुवा । सोचा था कि जो भी मुझ से सुवाल करेगा मैं उस को जवाब दूंगा लेकिन बसरा वालों ने मुझ से ऐसे सुवालात किये कि मेरे पास इन का कोई जवाब न था । फिर मैं ने अज़म कर लिया कि आयन्दा अपने उस्ताज़ हज़रते सय्यिदुना हम्माद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الرَّؤُوف की सोहबत कभी न छोड़ूंगा । चुनान्चे, बीस साल उन की सोहबत में रहा । आप रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : “मैं हर नमाज़ में अपने वालिदैन्, तमाम असातज़ा और बिल खुसूस हज़रते सय्यिदुना हम्माद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَنْهُ के लिये दुआए मग़फ़िरत करता हूं ।”

(تاریخ بغداد، الرقم ۷۲۹۷، النعمان بن ثابت ابو حنیفة التیمی، ذکر خبر ابتداء ابی حنیفة بالنظر فی العلم، ج ۳، ص ۳۴ - بتغییر)

हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'जम अबू हनीफ़ा रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि मैं ने ख़्वाब में देखा गोया मैं सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार बिइज़ने परवर दगार दगार وَسَلَّم وَالْهِ وَسَلَّم की क़ब्रे अक्दस खोद कर हड्डियां निकाल रहा हूं और इन को साफ़ कर रहा हूं । इस से मुझे बहुत ज़ियादा डर महसूस हुवा । मैं ने हज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने सीरीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَنْهُ के सामने अपना ख़्वाब बयान किया तो उन्होंने ने फ़रमाया : “अगर येह ख़्वाब सच्चा है तो आप रसूले अकरम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नत को ज़िन्दा करेंगे ।”

(مناقب الامام الاعظم للموفق بن احمد المکی، الباب الخامس فی ابتداء جلوسه للفتيا والتدريس، ج ۱، ص ۶۷ - بتغییر)

हज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ बिन सबाग़ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि मुझे किसी ने बताया कि मैं ने ख़्वाब में हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मख़ज़ने जूदो सखावत, पैकरे अज़मतो शराफ़त, महबूबे रब्बुल इज़ज़त, मोहसिने इन्सानिय्यत وَاللّٰهُ وَاسَّلَام की कब्रे अन्वर को खोदते हुए देखा तो किसी को बताए बिगैर हज़रते सय्यिदुना इब्ने सीरीन رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से इस की ता'बीर पूछी। उन्होंने ने फ़रमाया : “येह शख्स हज़रते सय्यिदुना मुहम्मदे मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत को ज़िन्दा करेगा।” (تاریخ بغداد، الرقم ۷۲۹۷ النعمان بن ثابت ابو حنیفة التیمی، ذکر خبر ابتداء ابی حنیفة بالنظر فی العلم، ج ۱۳، ص ۳۳۵- بتغییر)

हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाया करते : “हमें हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुरहीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से जो बात पहुंचे हम उसे सर आंखों पर क़बूल करेंगे और सहाबए किराम الرّضوان عَلَيْهِمُ الرّضوان से मिले उस में से इख़्तियार करेंगे और उन के कौल से बाहर नहीं निकलेंगे और जो बात ताबेईने इज़्ज़ामِ अجمَعین رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمُ अجمَعین से पहुंचे तो वोह भी हमारी तरह इन्सान हैं और इन के इलावा को बिल्कुल नहीं सुनेंगे।”

(سير اعلام النبلاء، الرقم ۹۹۴- ابو حنیفة النعمان بن ثابت، ج ۶، ص ۵۳۶- بدون “عن التابعین”)

### मजालिसे उ-लमा का अदब :

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल अज़ीज़ दरावरदी रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि मैं ने हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ और हज़रते सय्यिदुना इमामे मालिक बिन अनस عَلَى صَاحِبِهَا الصَّلَوةُ وَالسَّلَام को ईशा के आखिरी वक़्त के बा'द मस्जिदे नबवी में बहष व मुबाहषा करते हुए देखा। जब इन में से एक अपना मौक़िफ़ पेश कर के ख़ामोश हो जाता तो दूसरा भी डांटे, झिड़के या दूसरे को ग़लत़ क़रार दिये बिगैर चुप हो जाता। फिर वोह दोनों इसी मजलिस में सुब्ह तक नवाफ़िल पढ़ते रहते।

आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के इन्साफ़ और ए'तिराफ़े हक़ का अलम येह है कि इरशाद फ़रमाया करते : “हमारा येह कौल एक राए है और येह हमारे क़ियास में से बेहतरीन राए है। अब जिस ने इस से भी अच्छी राए पेश की तो वोही ज़ियादा बेहतर है।”

(تاریخ بغداد، الرقم ۷۲۹۷ النعمان بن ثابت ابو حنیفة التیمی، ما قیل فی فقه ابی حنیفة، ج ۱۳، ص ۳۵۱)

### क़ियामे हक़ के लिये कोशिशें :

जब हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ कोई बुराई देखते तो आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की नर्मी सख़्ती में बदल जाती, आंखें सुख़ हो कर चढ़ जाती, रंगें फूल जाती और जब भी कोई ख़िलाफ़े शरअ़ काम देखते तो इस का क़ल्अ क़म्अ कर देते। एक दिन एक शख्स के पास कुछ आलाते लहव व ला'ब देखे तो उस से ले लिये। उस ने अन्जाने में आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को ज़ोरदार ज़र्ब लगाई, इस के बा वुजूद आप रَضِيَ اللَّهُ तَعَالَى عَنْهُ ने उन आलात को तोड़ दिया और घर लौट आए, और इस शिद्दे ज़र्ब की वजह से दो माह तक घर में तन्हा रहे।



हज़रते सय्यिदुना ख़तीब बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي इरशाद फ़रमाते हैं : “एक मरतबा हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान घौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى की बारगाह में अर्ज़ की गई कि इमामे आ’ज़म अबू हनीफ़ा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ गीबत से इतने दूर रहते हैं कि मैं ने कभी उन को दुश्मन की गीबत करते हुए भी नहीं सुना । तो आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इरशाद फ़रमाया : **“اَللّٰهُمَّ عَزَّ وَجَلَّ** की क़सम ! आप इस मुआमले में बहुत समझदार हैं कि किसी ऐसी चीज़ को अपनी नेकियों पर मुसल्लत करें जो इन्हें (दूसरे के नामए आ’माल में) मुन्तक़िल कर दे ।” हज़रते सय्यिदुना अली बिन आसिम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى ने इरशाद फ़रमाया : “अगर निस्फ़ अहले ज़मीन की अक्लें से इमामे आ’ज़म अबू हनीफ़ा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की अक्ल का मुवाज़ना किया जाए तो भी आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की अक्ल ज़ियादा होगी ।”

(تاريخ بغداد، الرقم ٧٢٩٧، النعمان بن ثابت أبو حنيفة التيمي، ما ذكر من وفور عقل أبي حنيفة وفطنته وتلطفه، ج ١٣، ص ٣٦١)

मन्कूल है कि इमामे आ’ज़म अबू हनीफ़ा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से दरयाफ़्त किया गया कि हज़रते सय्यिदुना अलक़मा और हज़रते सय्यिदुना अस्वद رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ में से अफ़ज़ल कौन है ? तो आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने ज़वाब में फ़रमाया : **“اَللّٰهُمَّ عَزَّ وَجَلَّ** की क़सम ! मैं उस मक़ाम पर नहीं कि इन का मुवाज़ना करूं सिवाए इस के कि इन की इज़ज़त व अज़मत के पेशे नज़र इन के लिये दुआ व इस्तिग़फ़ार करता हूं और मैं नहीं जानता कि इन में अफ़ज़ल कौन है ।”

(ربيع الابراز، باب التفاضل والتفاوت والاختلاف والاشتباه وما قارب ذلك ووفاء، ج ١، ص ٣٥٣)

**जूदो करमे इमामे आ’ज़म** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى :

हज़रते सय्यिदुना कैस बिन रबीअ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना इमामे आ’ज़म अबू हनीफ़ा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ अपनी कमाई से माले तिजारत जम्अ करते फिर इस से कपड़े ख़रीद कर मशाइख़, मुहद्दिषीन और हाज़त मन्दों को पेश करते और फ़रमाते : **“اَللّٰهُمَّ عَزَّ وَجَلَّ** की हम्दो घना करो कि उसी ने तुम्हें येह अता फ़रमाया । **اَللّٰهُمَّ عَزَّ وَجَلَّ** की क़सम ! मैं ने अपने माल में से कुछ भी नहीं दिया । आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की ख़िदमत में कोई शख़्स हाज़िर होता तो उस के मुतअल्लिक़ दरयाफ़्त करते, अगर वोह मोहताज होता तो कुछ अता फ़रमाते । चुनान्चे, एक शख़्स आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की बारगाह में हाज़िर हुवा, उस के कपड़े बोसीदा थे, जब लोग चले गए तो आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने उसे बैठने का हुक्म दिया जब वोह तन्हा रह गया तो इरशाद फ़रमाया : “इस मुसल्ले को उठाओ और नीचे से हज़ार दिरहम ले कर अपनी हालत अच्छी कर लो ।” उस ने अर्ज़ की : “हुज़ूर ! मैं तो खुश हाल हूं, ने’मतों में हूं ।” तो आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इरशाद फ़रमाया : “क्या तुम्हें येह हदीष नहीं पहुंची कि **“اَللّٰهُمَّ عَزَّ وَجَلَّ** पसन्द फ़रमाता है कि वोह अपनी ने’मत का अषर बन्दे पर देखे ।” (جامع الترمذی، ابواب الادب، باب ما جاء ان الله عز وجل يحب ان يرى اثر نعمته على عبده، الحديث ٢٨١٩، ص ٩٣٤) तुझे अपनी हालत बदलनी चाहिये ताकि तेरा दोस्त तेरी हालत से ग़मगीन न हो ।

(تاريخ بغداد، الرقم ٧٢٩٧، النعمان بن ثابت أبو حنيفة التيمي، ما ذكر من جود أبي حنيفة وسماحه وحسن عهده، ج ١٣، ص ٣٥٧-٣٥٨، بتغير)

जो भी आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से अपनी हाज़त का सुवाल करता आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ उसे पूरा फ़रमा देते ।

## कपड़ों की कीमत सदका कर दी :

हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ हर शुबा वाली चीज़ से मुकम्मल इजतिनाब फ़रमाते । आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के शरीके तिजारात हज़रते सय्यिदुना हफ़्स बिन अब्दुरहमान رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ मेरे साथ तिजारात करते थे और मुझे माले तिजारात भेजते हुए फ़रमाया करते : “ऐ हफ़्स ! फुलां कपड़े में कुछ ऐब है । जब तुम इसे फ़रोख़्त करो तो ऐब बयान कर देना । हज़रते सय्यिदुना हफ़्स ने एक मरतबा माले तिजारात फ़रोख़्त किया और बेचते हुए ऐब बताना भूल गए । जब इमामे आ'ज़म रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ को इल्म हुवा तो आप रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने तमाम कपड़ों की कीमत सदका कर दी ।”

(المرجع السابق، ص ३०६)

हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के तक्वा की एक और मिषाल येह है कि आप रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के ज़माने में एक बकरी चोरी हो गई तो अन्दाज़तन जितना अर्सा वोह बकरी ज़िन्दा रह सकती थी उस मुद्दत में आप रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने किसी बकरी का गोश्त न खाया ।

मन्कूल है कि ख़लीफ़ा वक़्त (अबू जा'फ़र मन्सूर) ने हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ और हज़रते सय्यिदुना इब्ने अबी ज़इब رَحْمَةُ اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْه की तरफ़ कुछ माल भेजा तो हज़रते सय्यिदुना इब्ने अबी ज़इब रَحْمَةُ اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْه ने इरशाद फ़रमाया : “मैं ख़लीफ़ा के लिये इस माल पर राज़ी नहीं तो अपने लिये कैसे राज़ी हो जाऊँ ?” और इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने इरशाद फ़रमाया : “अगर मुझे मारा जाए कि इन में से एक दिरहम को सिर्फ़ हाथ लगा दो फिर भी मैं इसे न छूऊंगा ।”

(منابغ الامام الاعظم للامام البرازي الكردي، الفصل الخامس، جمع المنصور مالكاواين ابى ذئب والامام ومقاتلهم له، ج २، ص १६)

मन्कूल है कि ख़लीफ़ा वक़्त ने हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ को बुलवा कर दरयाफ़्त किया : “ऐ अबू हनीफ़ा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ आज़ाद मर्द के लिये कितनी आज़ाद औरतें हलाल हैं ?” आप रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने फ़रमाया : “चार ।” तो ख़लीफ़ा ने अपनी बीवी की तरफ़ मुतवज्जेह हो कर कहा : “ऐ आज़ाद औरत ! मेरी बात सुन ।” तो आप रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने फ़ौरन इरशाद फ़रमाया : “ऐ ख़लीफ़तुल मुसलिमीन ! मगर आप के लिये सिर्फ़ एक हलाल है ।” तो ख़लीफ़ा ने ग़ज़बनाक हो कर कहा : “अभी तो आप ने कहा था कि चार हलाल हैं ।” आप रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने फ़रमाया : “ऐ ख़लीफ़तुल मुसलिमीन ! **اَبْلَاهُ** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿3﴾ فَأَنْكِحُوا مَا طَابَ لَكُمْ مِنَ النِّسَاءِ مَثْنَى وَثُلَاثَ وَرُبْعَ

فَإِنْ خِفْتُمْ أَلَّا تُعَدُّوا فَوَاحِدَةً (پ ६، النساء ३)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो निकाह में लाओ जो औरतें तुम्हें खुश आए दो दो और तीन तीन और चार चार फिर अगर डरो कि दो बीबीयों को बराबर न रख सकोगे तो एक ही करो ।

जब मैं ने आप को अपनी बीवी से येह कहते सुना : “ऐ आज़ाद औरत ! मेरी बात सुन ।” तो मैं ने जान लिया कि आप अद्ल नहीं करेंगे । लिहाज़ा मैं ने कह दिया कि आप के लिये सिर्फ़ एक

हलाल है।” जब आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ वहां से रुख्सत हुए तो खलीफ़ा की जौजा ने आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की तरफ़ हजार दिरहम भिजवाए और आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का शुक्रिया अदा किया और तारीफ़ भी की लेकिन आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने दिरहम क़बूल न किये और वापस भेज दिये और साथ ही कहला भेजा कि मैं ने येह बात तुझे खुश करने के लिये नहीं की थी बल्कि रिज़ाए इलाही عَزَّ وَجَلَّ के लिये की थी पस इस का षवाब भी **اللَّهُ** عَزَّ وَجَلَّ ही देगा।

हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ख़शियते इलाही عَزَّ وَجَلَّ के पैकर और कषरत से सदका करने वाले थे।

हज़रते सय्यिदुना ख़तीब बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي नक़ल फ़रमाते हैं कि “अगर आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ अपने अहलो इयाल पर कुछ ख़र्च करते तो इसी क़दर सदका भी कर देते। जब आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ कोई नया कपड़ा पहनते तो इसी कीमत का कपड़ा उ-लमा को भी ख़रीद कर देते और आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के सामने जब खाना लगाया जाता तो जितना खुद खाते इतना ही छोड़ देते फिर वोह खाना किसी फ़कीर को खिला देते या घर में किसी को ज़रूरत होती तो उसे खिला देते। रिज़ाए रब्बुल अनाम عَزَّ وَجَلَّ को हर चीज़ पर तरजीह देते और हुक्मे इलाही عَزَّ وَजَلَّ के मुआमले में अगर तल्वार का वार भी किया जाता तो आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ बर्दाश्त कर लेते। आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ हमेशा येह दो अशआर पढ़ा करते थे :

عَطَاءُ ذِي الْعَرْشِ خَيْرٌ مِنْ عَطَائِكُمْ      وَفَضْلُهُ وَاسِعٌ يُرْجَى وَيُنْتَظَرُ  
تَكْذُرُونَ الْعَطَاءَ مِنْكُمْ بِمِثْلِكُمْ      وَاللَّهُ يُعْطِي فَلَامَنْ وَلَا كَدَرَ

**तर्जमा :** (1).....अर्श के मालिक की अता तुम्हारी अता से बेहतर है। और उस का फज़लो करम वसीअ है जिस की उम्मीद और इन्तिज़ार किया जाता है।

(2).....तुम अपनी अता को एहसान जतलाने से मिला देते हो जब कि **اللَّهُ** عَزَّ وَجَلَّ एहसान जतलाए और गदला किये बिगैर अता फ़रमाता है।

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन हुशैन लैषी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं कि मैं कूफ़ा आया और अहले कूफ़ा से वहां के सब से बड़े आबिद के मुतअल्लिक् दरयाफ़्त किया तो मुझे इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का बताया गया। फिर मैं दोबारा बुढ़ापे में यहां आया और सब से बड़े फ़कीह के बारे में पूछा तो मुझे आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का ही नाम बताया गया।”

(तारीख بغداد، الرقم ٧٢٩٧، النعمان بن ثابت ابو حنيفة التيمي، ما ذكر من عبادة ابي حنيفة وورعه، ج ١٣، ص ٣٥١-٣٥٦-٣٥٧، بتغير)

मशहूर ज़ाहिद व मुत्तकी हज़रते सय्यिदुना मसउर बिन कदाम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं कि मैं इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के इजतिमाए पाक में हाज़िर हुवा तो मैं ने आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को नमाज़े फ़ज़्र में पाया फिर आप रَضِيَ اللَّهُ تَعालَى عَنْهُ नमाज़े ज़ोहर तक महफ़िले इल्म में तशरीफ़ फ़रमा रहे, नमाज़े ज़ोहर पढ़ कर अस्स तक महफ़िल जारी रही, नमाज़े अस्स पढ़ ली तो मग़रिब तक बैठे रहे, नमाज़े मग़रिब के बा'द इशा तक फिर बैठ गए। मैं ने दिल में कहा कि इस शख़्स की मसरूफ़ियत येह है तो इबादत के लिये कब फ़ारिग़ होता होगा, आज रात मैं ज़रूर देख भाल करूंगा। चुनान्चे, मैं ने निगरानी शुरू कर दी। जब सब लोग रुख़्सत हो गए तो



आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ मस्जिद में तशरीफ ले गए और तुलूए फ़ज़ तक नमाज़ अदा करते रहे फिर घर तशरीफ लाए। कपड़े पहन कर मस्जिद की तरफ चल दिये। दूसरे दिन और रात भी आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का येही मा'मूल रहा। मैं ने तहिय्या कर लिया कि आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की सोहबत में ही रहूंगा यहां तक कि मैं मर जाऊं या आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का इन्तिक़ाल हो जाए।” हज़रते सय्यिदुना इब्ने अबी मुआज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं कि मुझे येह ख़बर पहुंची है कि हज़रते सय्यिदुना मसज़र عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى का इन्तिक़ाल इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की मस्जिद में हालते सजदा में हुवा। (المرجع السابق، ج ۱۳، ص ۳۵۴)

हज़रते सय्यिदुना कासिम बिन मअन رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि एक बार इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इस आयते मुबारका की तिलावत फ़रमाई : **تَرْجَمَاف كَنْزُجُل إِمَان :** बल्कि इन का वा'दा कियामत पर है और कियामत निहायत कड़ी और सख़्त कड़वी। और तुलूए फ़ज़ तक येही आयते तय्यिबा दोहराते रहे और गिर्या व ज़ारी करते रहे।

(سير اعلام النبلاء، الرقم ۹۹، ابوحنيفة النعمان بن ثابت، ج ۶، ص ۵۳۵ - تاريخ بغداد، الرقم ۷۲۹۷، ما ذكر من عبادة ابي حنيفة..... الخ، ج ۱۳، ص ۳۵۲ - ۳۵۶)

हज़रते सय्यिदुना हफ़्स बिन अब्दुरहमान رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ तीस साल तक सारी रात एक रकअत में कुरआने करीम की तिलावत फ़रमाते रहे। हज़रते सय्यिदुना असद बिन अम्र रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَضِيَ اللَّهُ تَعालَى عَنْهُ ने चालीस साल तक इशा के वुजू से नमाज़े फ़ज़ पढ़ी। रात के वक़्त आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की आह व बुका की इतनी शदीद आवाज़ सुनाई देती कि पड़ोसियों को आप पर तर्स आ जाता। कहा जाता है कि जिस जगह आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की वफ़ात हुई उस मक़ाम पर आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने छे हज़ार मर्तबा कुरआने करीम ख़त्म किया। हज़रते सय्यिदुना इब्ने अबी ज़ाइद عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं कि मैं ने हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के साथ नमाज़े इशा अदा की। नमाज़ के बा'द लोग चले गए और मैं मस्जिद में ही ठहर गया। मेरा इरादा था कि आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से एक मस्अला दरयाफ़्त करूंगा लेकिन आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को मस्जिद में मेरी मौजूदगी का इल्म न हुवा और आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने कुरआने करीम की तिलावत शुरू कर दी और इस आयते करीमा पर पहुंचे : **تَرْجَمَاف كَنْزُجُل إِمَان :** तो **اَبْلَاف** ने हम पर एहसान किया और हमें लू के अज़ाब से बचा लिया।” तो तुलूए फ़ज़ तक इसे दोहराते रहे। मन्कूल है कि एक रात आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने मस्जिद में किसी का रिये कुरआन को येह आयते मुबारका तिलावत करते हुवे सुना **تَرْजَمَاف كَنْزُجُل إِمَان :** जब ज़मीन थर थरा दी जाए जैसा इस का थर थराना ठहरा है।” तो शिद्ते ख़ौफ़ से फ़ज़ तक अपनी दाढ़ी मुबारक हाथ में पकड़े येही कहते रहे : “हमें ज़रा भर गुनाह की भी सज़ा दी जाएगी।”

**विशाले इमामे आ'ज़म** رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ :

अहमद बिन कामिल और अब्दुल बाकी बिन कानेअ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ का बयान है कि हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का विसाले बा कमाल रजबुल मुरज्जब या

शा'बानुल मअज़्ज़म के महीने 150 हि. बग़दाद में हुवा, उस वक़्त आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की उम्र मुबारक सत्तर (70) बरस थी। (تاریخ بغداد، الرقم ٧٢٩٧، النعمان بن ثابت ابوحنيفة التيمي، ذكر ما قاله العلماء..... الخ، ج ١٣، ص ٤٢٤)

एक कौल यह भी है कि आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को ज़हर दिया गया जिस के अषर से आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की मौत वाक़ेअ हुई। आप रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की नमाज़े जनाज़ा काज़िउल कुज़्ज़ात हज़रते सय्यिदुना हसन बिन अम्मारा ने बहुत बड़ी जमाअत के साथ पढ़ाई।

(مناقب الامام الاعظم للموفق بن احمد المكي، الباب الثامن والعشرون، سبب آخر في وفاة الامام رضى الله عنه، ج ٢، ص ١٨٣)

**इमामे आ'जम रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को बख़्श दिया गया :**

हज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन हसन रَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि मैं ने हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'जम अबू हनीफ़ा रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को ख़्वाब में देख कर पूछा : "يَا نَبِيَّ اللَّهِ مَا فَعَلَ اللَّهُ بِكَ؟" **अल्लाह** ने आप के साथ क्या मुआमला फ़रमाया ? जवाब दिया : "मुझे बख़्श दिया गया।

(مناقب الامام الاعظم للموفق بن احمد المكي، الباب الثامن والعشرون، ج ٢، ص ١٨٦)

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल हमीद बिन अब्दुरहमान जमानी रَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि मैं ने ख़्वाब में हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'जम अबू हनीफ़ा रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को यूँ देखा गोया कि एक सितारा आस्मान से गिर पड़ा है, और कहा गया : यह इमामे आ'जम अबू हनीफ़ा रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ हैं। फिर दूसरा सितारा गिरा तो कहा गया : यह हज़रते सय्यिदुना मसउर रَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ हैं। फिर तीसरा सितारा गिरा तो कहा गया : यह हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान घौरी रَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ हैं। चुनान्चे, तीनों में सब से पहले हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'जम अबू हनीफ़ा रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का इन्तिक़ाल हुवा, फिर हज़रते सय्यिदुना मसउर रَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ का और आख़िर में हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान घौरी रَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ का हुवा।

हज़रते सय्यिदुना सदक़ा रَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ मुस्तजाबुद्दा'वात बुजुर्ग थे, फ़रमाते हैं कि जब इमामे आ'जम अबू हनीफ़ा रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को ख़ीज़रान के क़ब्रिस्तान में दफ़न किया गया तो मैं ने तीन रात मुसलसल यह आवाज़ सुनी :

دَهَبَ الْفَيْقُ فَلَا فَيْقَ لَكُمْ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَكُونُوا خَلَفًا  
مَاتَ النَّعْمَانُ فَمَنْ هَذَا الَّذِي بَعْدَ يُحْيِي لَيْلَهُ إِنْ سَحَفَا

**तर्जमा :** (1).....फ़कीह चला गया, अब तुम्हारे पास ऐसा फ़कीह कोई नहीं, लिहाज़ा **अल्लाह** से डरो और इमामे आ'जम रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के बेहतरीन जानशीन बनो।

(2).....इमामे आ'जम नो'मान बिन षाबित रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का विसाल हो गया। तो अब कौन है जो इन के बा'द तारीक रातों में बेदार रहे।

وَصَلَّى اللّٰهُ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِهِ وَصَحْبِهِ أَجْمَعِينَ



बयान 33 :

कशमातें औलिया رَحْمَهُمُ اللَّهُ تَعَالَى

हम्दे बारी तझाला :

तमाम खूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जो दलील के साथ ग़ालिब हुवा और अपने मुहिब्बीन पर तजल्ली फ़रमाई। सारी काइनात में तसरुफ़ फ़रमाता है, वाली मुकर्रर करता और मा'जूल करता है। अपने बन्दों में से जिसे चाहे राहे खुदा عَزَّوَجَلَّ में बड़ चढ़ कर जिहाद करने की तौफीक अता फ़रमाता है फिर वोह पीठ नहीं फेरता, और अपने बन्दे को क़ियामुल लैल की तौफीक अता फ़रमाता है तो वोह उस की इताअत व इबादत में ख़ूब कोशिश करता है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से सरगोशियों में लज़्ज़त हासिल करता है। और खुश बख़्त वोह है जो मालिक व मौला عَزَّوَجَلَّ के मुशाहदे से कैफ़ो सुरूर में रातें गुज़ारता है। रब्ब तअाला उसे महब्बत के प्यालों से कुर्ब के जाम भर भर कर पिलाता है तो अशिके सादिक का दिल ग़लबए शौक से बेचैन हो जाता है पस वोह ज़बाने जौक से पुकार उठता है :

“सहरी के वक़्त साक़ी ने जामे महब्बत के साथ तजल्ली फ़रमाई। उस के कुर्ब से वहशत दूर हो गई” और कहा गया : “ऐ वोह शख्स जो विसाले इलाही की त़लब में बे चैन है, सुन ले ! हिजरो फ़िराक़ का ज़माना गुज़र गया, जुदाई का वक़्त ख़त्म हो गया और दूर किये हुए को कुर्ब मिल गया। ऐ मेरे महबूब बन्दो ! अब वक़्त है, अगर तुम्हारा अज़्म पुख़्ता है तो रात की उन तन्हाइयों में रूहों को थकाओ जिन में कोई मलामत करने वाला भी न हो और मुहिब्बे हकीकी किसी मलामत करने वाले की परवाह नहीं करता।

पाक है वोह ज़ात जिस ने नज़रे हुस्ने इन्तिखाब से अपने औलिया को देखा और इन्हें अपनी अता से ने'मतों और फ़ज़ीलतों से नवाज़ा। उस ने इन पर अताएं और एहसानात फ़रमाए फिर इन्हें मसाइब में मुब्तला किया और इन्हें आजमाइश में डाला तो इन्होंने उस की अताओं पर शुक्र और आजमाइशों पर सब्र का दामन थामे रखा। इरादए अज़ली में इन के लिये सआदत मन्दी से सरफ़राज़ी लिख दी गई। चुनान्चे, वोह उन भलाई वालों में से हो गए जिन के लिये भलाई (या'नी जन्नत) और इस से भी ज़ाइद ने'मत (या'नी दीदारे इलाही عَزَّوَجَلَّ) है क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन्हें इस का अहल बना दिया है।

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस गुरौह में से हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ करखी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوَى को भलाई के साथ ख़ास फ़रमाया तो वोह उस की महब्बत में सफ़ों की सफ़ें चीर कर आगे निकल गए और हलाकतों की जोलान गाह में घूमते रहे। मगर उस की महब्बत से पीछे हटे न ही पीठ फेरी। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन्हें अपनी महब्बत की तौफीक दी और अपनी पाक बारगाह का कुर्ब व विसाल बख़्शा। और जब इन को मर्तबए इत्तिसाल की तरफ़ तरक्की दी तो जामे विसाल से सैराब फ़रमाया पस वोह उस का कुर्ब पाने में कामयाब हो गए और कैफ़ सुरूर में ज़बाने हाल से कुछ यूं गोया हुए :



“जब से मैं ने अपने महबूब के जेवरे हुस्न से आरास्ता जल्वों को आश्कार देखा तो अपने शौक की बे चैनी को बढ़ा दिया और कुर्ब व विसाल को पा लिया पस इसी लिये इस मुआमले में वुजूदे महबूब के सबब मुझे खुली मारिफत हासिल हो गई और मेरा पैमाना भर गया।”

**अल्लाह** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْمَجِيد ने हज़रते सय्यिदुना अबू यज़ीद अल्लुह मजिद पर दूसरों से बढ़ कर कर्म फ़रमाया तो उन्होंने ने दुनिया से कनारा कशी इख़्तियार कर ली और मीठे चश्मे के हर मुतलाशी व मुरीद पर अपने अहवाल को डाल दिया और अपने वज्द की तर्जुमानी करते हुए, अपनी ज़िन्दगी के हासिल पर हैरत करते हुए और अपने अहवाल से आगाही देते हुए ज़बाने हाल से कहने लगे :

“कितना बद नसीब है वोह शख्स जो तेरे विसाल का अहल नहीं है। वोह अपने मक्सद से दूर और बे ख़बर है अगर वोह हकीकी इश्क़ व महबूब का मज़ा चख़ लेता तो इश्क़ व महबूब की आग से बे चैन व बे क़रार हो जाता।”

इनायते इलाही عَزَّوَجَلَّ की किरनें हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र शिब्ली رَحْمَةُ اللَّهِ الْفَوَّی के लिये रोशन हुई तो वोह हिदायत के अन्वार और महबूब के असरार के ख़्वाहिश मन्द हुए क्यूंकि इन्हीं लोगों के दरमियान जामे महबूब पिलाया गया था और ख़ल्वत व तन्हाई में महबूबते इलाही عَزَّوَجَلَّ ने इन को मुखातब किया था और वोह अपने दिल में इस से कहने लगे : “مَرْحَبًا أَهْلًا وَسَهْلًا”

**अल्लाह** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى ने हज़रते सय्यिदुना फुज़ैल बिन अयाज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى पर ख़ास फज़ल फ़रमाया तो वोह उस की इबादत में मुस्तइद हो गए और राहे तरीक़त को तै कर के हक़ आशनाई के लिये षाबित क़दम हो गए और हकीकी मन्फ़अत के इवज़ अपने क़ल्बी राजों को ज़ाहिर फ़रमा दिया।

**अल्लाह** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى ने हज़रते सय्यिदुना मन्सूर हल्लाज عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى पर मिज़ाज की तब्दीली को दाइर फ़रमाया तो वोह इश्के हकीकी के नशे में मस्त हो गए। और ज़ाहिर शरीअत से निकल गए और शौके इलाही عَزَّوَجَلَّ की आग में रातों को उलट-पलट होने लगे और जब इन्होंने ने साकी शहूद को अपने वुजूद में तजल्ली फ़रमा देखा तो ज़बाने वज्द से ऐसी बात ज़ाहिर हुई कि ज़ाहिरी हुदूद से बाहर हो गए। (इस पर हाशिया 166 सफ़हा पर देखें)

**तजक्किरु इब्दरीस बिन अबी ख़ौला** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى :

हज़रते सय्यिदुना सहल बिन अब्दुल्लाह عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ तَعَالَى के एक वली शदीद बीमार हो गए। जब लोगों ने देखा तो अक़षर कहने लगे : इन को तो जुनून हो गया है। जब येह बात लोगों में आम हो गई तो कुछ लोगों ने अर्ज़ की : “हम आप का इलाज करना चाहते हैं।” तो इन्होंने ने फ़रमाया : “ऐ लोगो ! जान लो ! मेरे पास ऐसा तबीब है कि अगर मैं उसे इलाज के लिये अर्ज़ करूं तो वोह मेरा इलाज कर दे लेकिन मैं उस से दरख़्वास्त नहीं करूंगा। इन से दरयाफ़्त किया गया : “आप इलाज क्यूं नहीं कराते हालांकि आप को दवा की शदीद हाज़त है ?” तो इन्होंने ने इरशाद फ़रमाया : “मैं डरता हूं कि अगर मैं इस बीमारी से शिफ़ा पा गया तो कहीं सरकशी

में न पड़ जाऊं।” लोगों ने अर्ज की : “हमारे हां एक पागल रहता है, आप अपने उस तबीब से पूछें कि क्या वोह उस का इलाज कर सकता है ?” तो **अल्लाह** तआला के इस नेक बन्दे ने जवाब दिया : “हां ! वोह कर सकता है। तुम उस मजनून को ले आओ।” लोग उस को ले आए, उस की गर्दन में बेड़ियां पड़ी हुई थीं और बहुत भारी जन्जीरों से हाथों को गर्दन के साथ बांध दिया गया था। उस की बीमारी शदीद थी। उस **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के वली ने लोगों से फ़रमाया : “मुझे और इसे तन्हा छोड़ दो।” चुनान्चे, उन जाहिल लोगों ने मजनून के हाथों को खोल दिया और उस घर में अकेला दाखिल कर दिया जिस में **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के वली रहते थे। फिर दरवाज़ा बन्द कर दिया और गुमान करने लगे कि येह पागल इन के साथ कोई ना पसन्दीदा हरकत करेगा। थोड़ी देर बा’द जब लोगों ने आवाज़ दी तो मजनून ने इन को जवाब दिया और बाहर निकल कर सलाम किया और एक समझदार आदमी की तरह गुफ्तगू की इस हाल में कि वोह शदीद रो रहा था। लोगों ने पूछा : “बताओ, क्या मुआमला हुवा ?” तो वोह कहने लगा : “मैं इस शख्स के पास गया और तुम लोग जानते हो कि मैं पागल था। इस ने मुझे अपने बिल्कुल करीब किया और एक हाथ मेरे सीने पर फेरा और दूसरा मेरे सर पर फेरा। फिर मैं ने अफ़ियत महसूस की और मेरा जुनून ख़त्म हो गया।” लोगों ने कहा : चलो ! “हमे उस के पास ले चलो ताकि हम उस से दुआ की दरख़ास्त करे जब वोह लोगों को ले कर अन्दर दाखिल हुवा तो देखा कि वोह बुजुर्ग वहां मौजूद ही न थे, **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ने उन को लोगों की नज़रों से छुपा लिया था। हज़रते सय्यिदुना सहल बिन अब्दुल्लाह **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى** फ़रमाते हैं कि वोह बुजुर्ग बैतुल मुक़द्दस से तशरीफ़ लाए थे और उन का नाम इदरीस बिन अबी ख़ौला **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى** था।

(صفة الصّفة، ذكر المصطفين من عباد بيت المقدس، الرقم ٧٧٢، ادريس بن ابی حولة الانطاکی، ج ٤، ص ٢٠٦)

### सय्यिदुना जुनैद बग़दादी और काले रंग का आदमी :

हज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي** फ़रमाते हैं कि मैं एक साल हज़ के लिये हाज़िर हुवा और मक्का मुकर्रमा **رَأَاهَا اللَّهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا** में ही रहने लगा। एक दिन ज़म ज़म शरीफ़ के कुंवें की तरफ़ गया ताकि पानी से सैराब हो जाऊं लेकिन वहां पर कोई रस्सी, डोल या मश्कीज़ा न था। मैं इसी हालत में खड़ा था कि एक सियाह रंग का आदमी आया, उस के हाथ में डोल और रस्सी थी। उस ने डोल को रस्सी बांध कर कुएं में लटका दिया लेकिन वोह पानी तक न पहुंच सका। तो वोह डोल, रस्सी उठा कर कहने लगा : “तेरी इज़ज़त की क़सम ! अगर तूने मुझे पानी न पिलाया तो मैं ज़रूर तुझ से नाराज़ हो जाऊंगा।” यका यक पानी कुंवें के कनारों से बहने लगा, उस ने वुजू किया और खुद पीने के बा’द अपने डोल को भी भर लिया, पानी दोबारा कुंवें के पैदे तक पहुंच गया। जब वोह शख्स ख़वाना हुवा तो मैं भी उस के पीछे हो लिया और अर्ज की : “ऐ मेरे दोस्त ! तुम किस पर गुस्सा हो रहे थे ?” उस ने जवाब दिया : “ऐ जुनैद ! ऐसी बात नहीं जिसे तुम समझ रहे हो, मैं तो अपने नफ़्स पर ग़ज़बनाक हो रहा था कि (अगर मुझे पानी न मिलता तो) क़ियामत तक उसे प्यासा रखता। लेकिन जब मेरे मालिक **عَزَّوَجَلَّ** ने मुझे अपने दा’वे में सच्चा देखा तो मेरे लिये पानी को जारी कर दिया।” इस के बा’द वोह शख्स मेरी नज़रों से औझल हो गया फिर कभी नज़र न आया।

मक्कमे मा'रुफ عليه رحمة الله الرؤف :

हज़रते सय्यिदुना मा'रुफ करखी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَنِي की बारगाह में अर्ज की गई : “हुज़ूर ! आप कैसे मा'रुफ हुए और आप महबूब की किस सिफ़त से मुतसिफ़ हैं ?” तो आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने इरशाद फ़रमाया : “ऐ लोगो ! तुम पर तअज्जुब है, क्या मा'रुफ़ को जाहिल रखा जाता है ? क्या महबूब को नापसन्द किया जाता है ? क्या नाबीने के इलावा चांद किसी पर पोशीदा होता है ? क्या तुम मेरे दिल को गिरिफ़्तारे महबूबत नहीं पाते ? क्या मेरे दिमाग़ को मुश्ताफ़े दीदार और मेरी अक्ल को खोया हुवा नहीं देखते ? मैं ने महबूबते इलाही में कितने ही ऊनी जुब्बे फाड़ डाले और मौत के कितने प्याले घूंट घूंट कर के पिये और कितनी ही बार महबूबत के मुश्किल रूमज़ को पढ़ा यहां तक कि मैं अहले महबूबत के दरमियान मा'रुफ़ हो गया । अगर मैं मा'रुफ़ न होता तो सआदत के रास्ते से फ़िरा हुवा होता । क्यूंकि गुरुर की चादर में छुपने वाला सब पर ज़ाहिर हो जाता है और झूटा दा'वा करने वाले का दा'वा रद्द कर दिया जाता है ।”

सय्यिदुना फुज़ैल बिन इयाज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى की तौबा :

हज़रते सय्यिदुना फुज़ैल बिन इयाज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى से पूछा गया : “ऐ फुज़ैल ! आप डकैती से राहे हिदायत पर कैसे आए ? और बदबख़्तों के गुरौह से निकल कर खुश बख़्तों के गुरौह में कैसे शामिल हुए ?” तो आप ने जवाब दिया : “मैं तौफ़ीक़ से बहुत दूर और राहे हिदायत से भटका हुवा था । मगर **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे गुनाहों के समन्दर से निकाल कर नवाज़िशाद व इन्आमात से ढांप दिया ।” अर्ज की गई : “यैह कैसे हुवा और किस तरह राहे हक़ आप के क़रीब हुई ?” जवाब में फ़रमाया : “हस्बे मा'मूल एक दिन में रहज़नी करने के लिये निकला, मेरे (बुराई पर उभारने वाले) नफ़्स ने मुझे शर की बेड़ियां डाल रखी थी, ज़माने ने मुझे धोके में डाला हुवा था, शैतान मुझ पर ग़ालिब था । चुनान्चे, मैं क़त्लो ग़ारत गिरी और सुवारियों को परेशान करने चल पड़ा । मैं तारिकी के पर्दों में छुपा हुवा आ रहा था और राहे हिदायत का कोई दरवाज़ा मुझे मा'लूम न था कि अचानक हिदायत की तौफ़ीक़ की जगह मुझ पर ज़ाहिर हुई, वोह यूं कि एक क़ारिये कुरआन इस आयते मुबारका की तिलावत कर रहा था :”

﴿١﴾ اَلَمْ يَأْنِ لِلَّذِينَ اٰمَنُوْۤا اَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ (پ ۲۷، الحديد: ۱۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : क्या ईमान वालों को अभी वोह वक़्त न आया कि उन के दिल झुक जाएं **اَللّٰهُ** की याद के लिये ।

मैं ने उस की तरफ़ अपने कान लगा दिये । सुनते ही मेरी आंखों से आंसू जारी हो गए और मेरे दिल के होश उड़ गए । इसी का अषर है कि मैं ने अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ रुजूअ कर लिया और कलामे बारी तअ़ाला का जवाब देते हुए अर्ज की : “क्यूं नहीं, **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ की क़सम !



वोह वक्त आ चुका है मेरे रहमान की तरफ़ रुजूअ करने और नाफ़रमानी से खौफ़ज़दा होने का वक्त आ चुका है।" लेकिन डरने वाले के लिये अमान भी ज़रूरी है पस कुरआने करीम ने मुझे दाइमी अमान की खुश ख़बरी दी :

﴿2﴾ وَلَمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ جِئْنِ 0

(प २७, الرحمن: ६६)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो अपने रब्ब के हुज़ूर खड़े होने से डरे उस के लिये दो जन्नतें हैं।

फिर मैं डकैती से मुसल्ले पर आ गया, राहे शकावत तर्क कर के सआदत के रास्ते पर पलट आया, उस के क़हरे कुदरत का कैदी बन गया और उस के दरवाज़े रहमत पर फ़कीर बन कर खड़ा हो गया। उस के दरवाज़े इज़्ज़त पर आजिज़ी व इन्किसारी का सर झुका दिया और मैं ने अर्ज़ की : "या **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ तेरा बन्दा भागे हुए गुलाम की तरह तेरी बारगाह में लौट आया है और तेरे गुज़श्ता फ़ज़्लो करम का तलबगार है, सुबह मैं शिकारी बन कर निकला था अब खुद शिकार हो गया हूँ, काइद बन कर निकला था अब मुतीअ व फ़रमा बरदार बन कर तेरे दरवाज़े पर लौट आया हूँ।"

(عيون الحكايات، الحكاية الخامسة عشرة بعد المائتين، توبة الفضيل بن عياض، ص २१२)

**राजी ब रिज़ाए इलाही रहने वाला आबिद :**

बनी इसराइल में एक आबिद किसी पहाड़ के एक ग़ार में रहा करता था। न लोग उस को देखते न वोह लोगों को देखता था। उस के हां पानी का एक चश्मा भी था, वोह इस से वुजू करता और पानी पीता। ज़मीन में उगे हुए फलों से ग़िज़ा हासिल किया करता था। दिन को रोज़ा रखता और रात को क़ियाम करता। इबादत में बिल्कुल सुस्ती न करता। उस पर सआदत के आषार नुमायां थे। जब हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने उस का शोहरा सुना तो उस से मुलाक़ात करने का इरादा किया। जब दिन में तशरीफ़ ले गए तो वोह आदिब नमाज़ और ज़िक्रो अज़कार में मशगूल था और जब रात को जाना हुवा तो वोह **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की बारगाह में मुनाजात में मुस्तगरक़ था। हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने उसे सलाम करने के बा'द फ़रमाया : "ऐ शख्स ! अपनी जान पर नर्मी करो।" उस ने अर्ज़ की : "ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ के नबी عَلَيْهِ السَّلَام मुझे डर है कि कहीं गाफ़िल न हो जाऊं, मौत का वक्त आ जाए और मैं इबादते इलाही **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ में कोताही करने वालों में न हो जाऊं।" फिर हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने इस्तिफ़सार फ़रमाया : "क्या कोई हाज़त व ज़रूरत है ?" उस ने अर्ज़ की : "बारगाहे इलाही **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ में अर्ज़ कीजिये कि वोह मुझे अपनी रिज़ा व खुशनूदी अता फ़रमा दे और ता दमे आखिर अपने इलावा किसी की तरफ़ माइल न करे।" चुनान्चे, जब हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام जबले तूर पर मुनाजात के लिये हाज़िर हुए और कलामे बारी तआला की लज़्ज़त में मुस्तगरक़ हो गए तो आप عَلَيْهِ السَّلَام को उस आबिद की बात याद न रही। **अल्लाह** عَلَيْهِ السَّلَام ने खुद ही इरशाद फ़रमाया : "ऐ मूसा ! तुझे मेरे आबिद बन्दे ने क्या कहा ?" आप عَلَيْهِ السَّلَام ने अर्ज़ की : "या इलाही **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ तू ख़ूब जानता है, उस ने मुझे कहा है कि मैं तुझ से दुआ करूँ कि उसे अपनी रिज़ा व खुशनूदी अता फ़रमा दे और अपने इलावा किसी में मशगूल न कर यहां तक कि

वोह तुझ से आ मिले ।” **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फरमाया : “ऐ मूसा ! उसे जा कर कह दो कि वोह दिन रात मेरी जितनी चाहे इबादत कर ले, फिर भी अपने गुज़श्ता गुनाहों और बुराइयों की वजह से जहन्नमी है और मुझे उस की ऐसी ज़लील व रुस्वा कुन बातों का भी इल्म है जो मेरे इलावा कोई नहीं जानता ।” चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام उस के पास तशरीफ लाए, उसे रब्ब عَزَّوَجَلَّ का फ़रमान सुनाया और उस के गुज़श्ता बड़े बड़े गुनाहों के मुतअल्लिक बताया तो उस ने कहा : “मरहबा ! मैं अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ का फैसला और हुक्म दिलो जान से तस्लीम करता हूं, वोह हर शै को देखने वाला है, उसे हर शै का इल्म है, उस के हुक्म को रद्द करने वाला कोई नहीं, उस के फैसले को फेरने वाला कोई नहीं । येह कह कर वोह बहुत ज़ियादा रोने लगा और अर्ज की : “ऐ मूसा عَلَيْهِ السَّلَام उस की इज़्ज़त व जलाल की क़सम ! वोह अगर मुझे अपने दरवाजे से धुत्कार भी दे तो भी मैं उसी के दरवाजे पर पड़ा रहूंगा, कभी न हटूंगा, और अगर मुझे जला दे या मेरे टुकड़े टुकड़े कर दे, तो भी मैं उस की बारगाह से कभी न फिरूंगा ।”

जब हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام मुनाजात के लिये जबले तूर पर तशरीफ ले गए तो अर्ज की : “या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तू खूब जानता है तेरे आबिद बन्दे ने क्या जवाब दिया है ।” **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फरमाया : “ऐ मूसा ! उस को खुश ख़बरी सुना दो कि वोह अहले जन्नत में से है और उसे मेरी रहूमत व एहसान ने घेर लिया है और उसे येह भी कहना कि तू ने मेरे फैसले को सब्रो रिज़ा से गले लगा लिया और मेरे सख्त हुक्म व फैसले के बा वुजूद राजी रहा । अब अगर तेरे गुनाहों से ज़मीन व आस्मां और दरमियानी फज़ा भी भर जाए और तमाम समन्दर भी भर जाएं तो भी मैं तेरी मग़फ़िरत फ़रमा दूंगा क्यूंकि मैं बहुत करीम और बख़्शने वाला मेहरबान हूं ।” जब हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالसَّلَام ने आबिद को येह खुश ख़बर दी तो वोह सजदे में गिर पड़ा और अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ की हम्द की और सजदे में पड़ा रहा यहां तक कि उस का ताइरे रूह क़फ़से उ़नसुरी से परवाज़ कर गया ।

ऐ शक में पड़ने वालो ! कब तक तुम्हें तुम्हारा रब्ब عَزَّوَجَلَّ बुलाता रहेगा और तुम जवाब देने से ए'राज़ करते रहोगे, उस ने तुम्हें किस क़दर एहसानात से नवाज़ा फिर भी तुम नाफ़रमानियों से उस का मुक़ाबला करते हो, हालांकि तुम पर उस की तरफ़ से मुहाफ़िज़ फ़िरिशते मुक़रर है । जल्दी से तौबा कर लो कि वोह तुम्हारे बहुत करीब है और उसी से हिदायत व तौफीक का सुवाल करो और ग़म व तंगदस्ती को दूर करने के लिये उसी का क़स्द करो । बेशक उस का क़स्द करने वाला ख़सारे में नहीं होता और उसे राजी करने वाले आ'माल करो और उस की नाफ़रमानी के कामों से बचो, वोह (इल्म व कुदरत के साथ) हर जगह मौजूद है, गाइब नहीं ।

मुनाजात के वक़्त उस की बारगाह में दुआ करो इस लिये कि वोह दुआ करने वाले की दुआ क़बूल फ़रमा लेता है । उसी वक़्त उस के सामने गिर्या व ज़ारी और गिड़ गिड़ाते हुए सिद्क दिल से तौबा कर लो । मुमकिन है कि वोह अपनी इनायत के लिये तुम्हें चुन ले और तुम्हें हिदायत से बहरावर कर दे, क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिसे चाहे अपने कुर्ब के लिये चुन लेता है और जो उस की तरफ़ रुजूअ करता है वोह उसे अपनी राह दिखाता है ।

## नशीहत भरी बातें :

ऐ मेरे इस्लामी भाई ! तेरा रब्ब عَزَّوَجَلَّ चाहता है कि तू उस की बारगाह में हाज़िर हो जा और तू है कि गाइब रहता है। जब तक अपनी लगज़िशों और ख़ताओं की बीमारी में मुब्तला रहेगा। तू अपनी बीमारी बयान नहीं करता कि तबीब तेरा इलाज करे। ऐ गुनाहों और ख़ताओं के समन्दर में ग़र्क ! ऐ बुराइयों और ऐबों में मशहूर ! ऐ अल्लामुल गुयूब عَزَّوَجَلَّ की इबादत से ए'राज़ करने वाले ! अगर तू गुनाहों से वहशत ज़दा हो चुका है तो जान ले कि रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ का दरवाज़ा उस बन्दे के लिये खुला है जो उस की बारगाह की तरफ़ रुजूअ करे और तौबा करे। ऐ महब्बते इलाही عَزَّوَجَلَّ की रस्सी को छोड़ने वाले ! राहे हक़ को मुश्किल समझ न तौफीक़ को दूर ख़याल कर। बहुत से कमज़ोरों को उठा लिया गया और बहुत से भटके हुआओं को मन्ज़िल तक पहुंचा दिया गया, तू भी अपने हिम्मत के घोड़े पर सुवार हो जा और पुख़्ता इरादे की रिकाबों पर क़दम रख ले। अगर तेरे पास तक्वा का तौशा नहीं तो अपने शिक्वे को तौशा बना ले और इसे जलते दिल की जलन पर उंडेल और दिल पर बहते आंसूओं का बादल बरसा। जब भड़कते दिल का धुवां बुलन्द हो जाए और तेरी हसरतों की सांसें गर्म हो जाएं तो जवाब के इन्तिज़ार में उस के दरवाज़े पर खड़ा हो जा और जब इताब करते हुए तुझे कहा जाए कि कौन अजनबी दरवाज़े पर खड़ा है ? तो यूं अर्ज़ करना :

“तेरा बन्दा एक भिकारी की तरह सर झुकाए, आंसू बहाते हुए खड़ा है, जिस का अस्ल माल उस का दिल है जो ख़राब हो चुका है, हाए ! हसरत व लापरवाही ने मेरे अस्ल माल को छीन लिया।” फिर अगर तुझे जवाब में कहा जाए : “तू ने अपना मतलूब हासिल करने में ताख़ीर क्यों की ?” किस चीज़ ने तुझे तेरे महबूबे हकीक़ी عَزَّوَجَلَّ से दूर कर दिया ?” तो तुम यूं कहना : “मैं जहालत व नादानी के सबब अपने दोस्तों से मुलाक़ात के वक़्त की क़िल्लत न जान सका यहां तक कि मैं हिज़्रो फ़िराक़ का शिकार हो गया तो मेरे दिल पर इन के विसाल से पर्दे डाल दिये गए, मेरी उम्र गुज़रती जा रही है, न जाने कब तक येह रुकावट बर क़रार रहेगी। ऐ मेरे दोस्तो ! वापस आ जाओ, तुम्हारी ज़िन्दगी की क़सम ! मैं तौबा करता हूं।”

फिर अगर तुझ से कहा गया, “कब तक तौबा करता और तोड़ता रहेगा, कब तक हम तुझ पर नज़रे करम करते रहेंगे और तू हमारी बारगाह से मुंह मोड़ता रहेगा।” तो तुम अर्ज़ करना, “अगर अब तू मुझे मुआफ़ कर दे तो मेरा दिल सुधर जाएगा और मेरी हालत हर तरह की परा गन्दगियों से साफ़ सुथरी हो जाएगी और नाराज़ी के बा'द हमारी सुल्ह हो जाएगी।” फिर तुम तन्हाई को ख़त्म होता पाओगे और देखोगे कि जुदाई के बा'द विसाल कैसा होता है और मक्सूद



तक रसाई कैसे होती है। मैं हैरान व परेशान रहूंगा यहां तक कि वोह दिन आ जाए जब मैं अपने महबूब के हुस्नो जमाल का दीदार करूं और उस की मुलाकात से मेरा शिकस्ता दिल जुड़ जाए, मैं हादिये मुकर्रम, शफीए मुअज्जम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के रौजए अतहर पर हाजिरी दूं। उन पर बुलन्द व बाला आस्मानों का मालिक عَزَّوَجَلَّ खूब दुरूद भेजे और मेरा दिल हमेशा उन की तरफ़ मुतवज्जेह हो कर झूमता रहे।

وَصَلَّى اللَّهُ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِهِ وَصَحْبِهِ أَجْمَعِينَ



### आस्मानों में शोहरत रखने वाले

हजरते सय्यिदुना अबू हरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज्जहुन अनिल उयूब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने आलीशान है :  
“दुनिया में भूके रहने वाले लोगों की अरवाह को **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ कब्ज़ फ़रमाता है और उन का हाल येह होता है कि अगर गाइब हो जाएं तो उन्हें तलाश नहीं किया जाता, अगर मौजूद हों तो पहचाने नहीं जाते, दुनिया में पोशीदा होते हैं मगर आस्मानों में उन की शोहरत होती है, जब जाहिल व बे इल्म शख्स इन्हें देखता है तो इन को बीमार गुमान करता है जब कि वोह बीमार नहीं होते बल्कि इन्हें **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ का खौफ़ दामन गीर होता है, क़ियामत के दिन येह लोग अर्श के साए में होंगे जिस दिन उस के इलावा कोई साया न होगा।”

(مسند فردوس الاخبار، الحديث: ١٦٥٩، ج ١، ص ٢٣٥)

बयान 34 : **बनफिरु मा'रुफ करखी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَنِي  
हम्दे बारी तझाला :

सब खूबियां **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के लिये जो रऊफुरहीम, करीम और इन्तिहाई मेहरबान है। भलाई के बदले भलाई (या'नी जन्नत) अता फरमाने वाला। वोह ऐसा वाहिद व यक्ता है कि वहदत उस पर अषर अन्दाज नहीं होती और न ही बन्दों से इन्तिहाई महब्बत पर फख्र है। वोह अपनी बादशाहत में वजीर, मुशीर और करीबी से बे नियाज है। सितारों से ऊपर और जमीन की सरहदों से आगे जो कुछ है उसी के इल्म में है। पर्दे गैब उस पर खुला हुवा है। उस ने अपनी शान के लाइक अर्श पर इस्तिवा फरमाया जो हरकत, जुलूस और ठहरने से पाक है। मैं **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की हम्द करता हूँ कि उस ने खौफनाक चीजों को दूर फरमा दिया। और मैं गवाही देता हूँ कि **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ के सिवा कोई इबादत के लाइक नहीं, वोह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं, ऐसी गवाही जैसी हुजूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने सच्चाई की इन्तिहा को पहुंची हुई अपनी मुबारक ज़बान से दी। क्योंकि **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ ने आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ज़बाने अत्हर को गैरे हक और बेजा की तरफ जाने से रोक दिया। और मैं गवाही देता हूँ कि बेशक हमारे सरदार हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ के बन्दे और रसूल हैं जिन्हें **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ ने मुअज़्ज़ज लोगों की तरफ मबऊष फरमाया है। और आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने उस जन्नत की खुश ख़बरी दी जिस के (फलों के) खोशे झुके हुए हैं और उस आग से डराया जो सख़्त भड़कती और शो'ले मारती है। आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने ऊन का लिबास पहना और पैवन्द लगे ना'लैन मुबारक इस्ति'माल फरमाए। हालांकि आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ की बारगाह में बुलन्दो बाला मर्तबे पर फ़ाइज़ और तमाम खूबियों से मौसूफ़ हैं। ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ इस नबिय्ये करीम, हमारे सरदार हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद मुस्तफ़ा, अहमदे मुजतबा रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ पर रहूमत नाज़िल फरमा और इन के आल व अस्हाब **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ पर जो सरदाराने ज़माना हैं। और आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर और आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के आल व अस्हाब **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ पर सलामती भेज जब तक बाजमाअत नमाज़ों में क़तार दर क़तार सफ़ें काइम होती रहें।

**इब्तिदाई हालात :**

आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَنِي का नामे नामी, इस्मे गिरामी मा'रुफ और कुन्यत अबू महफूज़ है, वालिदे माजिद का नाम मुबारक फ़ीरोज़ है। (बा'ज ने "फ़ीरोज़ान" लिखा है) बग़दाद के अलाके कर्ख की निस्बत से आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَنِي कर्खी कहलाते हैं। आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَنِي के वालिदैन् ईसाई थे। आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَنِي भलाई की सिफ़त से मुत्तसिफ़ थे, बचपन ही से मुसलमान बच्चों के साथ मिल कर नमाज़ पढ़ा करते और वालिदैन् को दा'वते इस्लाम पेश करते रहते लेकिन वोह आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَنِي को डांटते हुए उलझ पड़ते। एक दिन इन्हों ने

आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को ईसाई मजहब की ता'लीम सीखने के लिये एक पादरी के सिपुर्द कर दिया। उस ने आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को सामने बिठाया और पूछा : “ऐ बेटे ! तुम, तुम्हारा बाप और तुम्हारी मां तीनों मिल कर कितने हुए ?” आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने फ़रमाया, तीन। तो कहने लगा, “अब कहो ! खुदा तीन हैं।” फ़ौरन सदाएँ ग़ैरत बुलन्द हुई : “**अल्लाह** वाह़िद عَزَّوَجَلَّ के सिवा किसी का ज़िक्र करने से बच कि कहीं तू हैरत के गढ़े में न जा पड़े और खुदाएँ अहद عَزَّوَجَلَّ से किसी दूसरे की तरफ़ तजावुज़ करने से बच, कहीं ऐसा न हो कि तुझे हिज़्रो फ़िराक़ के कोड़े मारे जाएं।” हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्खी رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَنِيّ फ़रमाते हैं : “मुझे वोह आवाज़ बहुत पसन्द आई।” फिर मेरे सामने से हिजाब उठा दिये गए और मैं ने महबूबत व इख़लास का जाम देखा, जिस की एक तरफ़ क़बूलियत व इख़ितासास के क़लम से लिखा था :

﴿1﴾ وَاللّٰهُمَّ اِلٰهَ وَاَحَدٌ ج (प २, البقرة: १६३)

और दूसरी जानिब लिखा था :

﴿2﴾ لَا تَتَّخِذُوا الْهَيْنِ اثْنَيْنِ اِنْ مَّا هُوَ اِلٰهٌ وَاَحَدٌ ج (प १४, النحل: ५१)

और तीसरी سمت लिखा था :

﴿3﴾ لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْا اِنَّ اللّٰهَ ثَالِثُ ثَلٰثَةٍ وَمَا مِنْ اِلٰهٍ اِلَّا اِلٰهٌ وَاَحَدٌ ط (प ६, المائدة: ७३)

जब कि चौथी तरफ़ लिखा था :

﴿4﴾ اِنِّىْ اَنَا اللّٰهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنَا فَاعْبُدْنِىْ لَا (प १६, طه: १६)

जब मैं ने वोह जाम पिया तो खौफ़ मुझ से दूर हो गया और शुकूक व शुब्हात और इताअत न करने की फ़ज़ा भी छट गई तो मैं अपनी ही हस्ती में खो गया और हुजूरी मिलने पर खुश हो कर मैं ने अपनी सोच की ज़बान से पुकारा :

“मेरा जिस्म तो हमेशा से कमज़ोर व ना तुवां है और आंखें आंसू ही बहा रही हैं, जब कि दिल तुम्हारी हिफ़ाज़त व रिज़ा मन्दी के ताबेअ है और सिद्क व सफ़ा के क़दमों पर सअयू और तवाफ़ कर रहा है और कितनी ही दफ़आ मुझे इरफ़ान की दौलत मिल चुकी पस अब क्यूंकर मेरी हालत का इन्कार किया जा सकता है ? फ़ज़ल येही है कि मा'रूफ़ का इन्कार न किया जाए।”

पादरी ने फिर कहा : “कहो ! खुदा तीन हैं।” आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने फ़रमाया : “नहीं, खुदा वहदहू ला शरीक है।” तो पादरी ने आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को मारना शुरूअ कर दिया और फिर कहने लगा : अब कहो ! खुदा तीन हैं।” मगर आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ खुदा तअ़ाला की

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और तुम्हारा मा'बूद एक मा'बूद है।

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : दो खुदा न ठहराओ वोह तो एक ही मा'बूद है।

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक काफ़िर हैं वोह जो कहते हैं **अल्लाह** तीन खुदाओं में का तीसरा है और खुदा तो नहीं मगर एक खुदा।

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक मैं ही हूँ **अल्लाह** कि मेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं तो मेरी बन्दगी कर।



वहदानिय्यत पर काइम रहे, तो उस ने पहले से ज़ियादा सख़्त मारा, पिटा और आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के वालिदैन् से कहा : “इस को जेल ख़ाने में कैद करा दो ।” चुनान्चे, आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ तीन दिन जेल ख़ाने में रहे, रोज़ाना आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के सामने एक रोटी फैंकी जाती और पीने को एक घूंट पानी दिया जाता । आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की वालिदा ने रोते रोते आप के वालिद से कहा : “आप का बेटा बहुत छोटा है, मुझे डर है कि कहीं पागल न हो जाए, इस को जेल से रिहा करा दो ।” चुनान्चे, जब दरवाज़ा खोला गया तो तीनों रोटियां वैसी की वैसी पड़ी थीं, वालिदैन् ने चलने को कहा तो आप रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने इन्कार कर दिया फिर इन्होंने पूछा, “तुम कैद ख़ाने में क्यों कैद रहना चाहते हो ?” तो आप रَحْمَةُ اللَّهِ تَعालَى عَلَيْهِ ने इरशाद फ़रमाया : “जिस महबूब की वजह से तुम ने मुझे कैद किया मैं ने उसी को यहां अपने पास पाया और वोह भी मुझ से महबूबत करता है ।” जब जेल वालों ने आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को कैद से आज़ाद कर दिया तो आप रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ घर से कहीं दूर चले गए । कई दिन तक न कुछ खाया पीया, न ही किसी दीवार के साए में बैठे । आप रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के वालिदैन् रो रो कर कहते : “काश ! हमारा बेटा लौट आए, चाहे किसी भी दिन पर हो हम उस की पैरवी करेंगे और उस के मज़हब को अपनाने के लिये तय्यार हैं । कुछ अर्से बा’द आप रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने घर का दरवाज़ा खट खटाया, आवाज़ आई, “कौन ?” फ़रमाया, मा’रूफ़ ।” वालिदैन् ने पूछा : “तुम्हारा दिन कौन सा है ?” फ़रमाया, “इस्लाम ।” वालिदैन् ने बाहर निकल कर आप रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को गले से लगा लिया । फिर आप रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के हाथों पर इस्लाम क़बूल कर लिया ।

### आप रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से मशविय्यात :

«۱».....हज़रते सय्यिदुना मा’रूफ़ कर्खी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَنَى अपनी सनद के साथ हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक और हज़रते सय्यिदुना इब्ने उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ से रिवायत करते हैं कि “एक शख्स ने सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइषे नुज़ूले सकीना صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ख़िदमते सरापा रहमत व बरकत में हाज़िर हो कर अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ कोई ऐसा अमल इरशाद फ़रमाइये जो मुझे जन्नत में दाख़िल कर दे ।” तो आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “गुस्सा छोड़ दो ।” उस ने अर्ज़ की : “अगर येह न हो सके तो ?” आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “रोज़ाना बा’द नमाज़े अ़स् सत्तर मरतबा **اَللّٰهُمَّ** عَزَّ وَجَلَّ से इस्तिग़फ़ार करो तो वोह तेरे सत्तर बरस के गुनाह बख़्श देगा ।” अर्ज़ की : “अगर मेरे सत्तर बरस के गुनाह न हों तो ?” इरशाद फ़रमाया : “फिर तेरी वालिदा के सत्तर बरस के गुनाह मुआफ़ कर दिये जाएंगे ।” फिर अर्ज़ की : “अगर मेरी मां दुनिया से कूच कर चुकी हो और इस पर भी सत्तर साल के गुनाह न हों तो ?” आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “तेरे क़रीबी रिश्तेदारों के सत्तर बरस के गुनाह मुआफ़ कर दिये जाएंगे ।”

(तاريخ بغداد، الرقم ۷۷۸۰، ابوعلی المفلوح، ج ۱، ص ۴۲۵ - حلیۃ الاولیاء، معروف الکرخی، الحدیث ۱۲۷۱۹، ج ۸، ص ۴۱۱)

﴿2﴾.....हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्खी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَنِي अपनी सनद के साथ हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक عَنْهُ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत करते हैं कि “जिस ने अपने मुसलमान भाई की किसी हाज़त को पूरा किया उस के लिये हज़ व उमरा करने वाले की मिष्ट षवाब है।”

(तारिख بغداد، الرقم २८७६، احمد بن محمد ابو الحسن النورى، ج ५، ص ३३९)

﴿3﴾.....हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्खी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَنِي अपनी सनद के साथ हज़रते सय्यिदुना अम्र बिन दीनार عَنْهُ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَفَّار से रिवायत करते हैं कि हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास अम्र बिन दीनार عَنْهُ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : “जिस ने सोते वक़्त येह दुआ पढ़ी :

اللَّهُمَّ اٰمَنًا مِنْ مُكْرَكٍ وَلَا تَنْسِنَا ذِكْرَكَ وَلَا تَكْشِفْ عَنْاَسْرَكَ وَلَا تَجْعَلْنَا مِنَ الْغَافِلِينَ، اللَّهُمَّ اِنْعِنَّا فِي أَحَبِّ السَّاعَاتِ إِلَيْكَ حَتَّى نَذْكُرَكَ فَتَذْكُرَنَا وَنَسْأَلَكَ فَتُعْطِيَنَا وَنَدْعُوكَ فَتَسْتَجِيبَ لَنَا وَتَسْتَفْهَرَكَ فَتُفَهِّرَ لَنَا

या'नी : ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ हमें अपनी खुफ़या तदबीर से महफूज़ फ़रमा, हमें अपना ज़िक्र न भुला, हमारे गुनाहों को छुपाए रख, हमें ग़ाफ़िलों में से न कर, ऐ **अल्लाह** हमें अपने पसन्दीदा लम्हात में बेदार फ़रमा कि हम तेरा ज़िक्र करें तो तू हमारा चर्चा कर, हम तुझ से सुवाल करें तो तू हमें अता कर हम तुझ से दुआ करें तो तू हमारी दुआ कबूल कर, हम तुझ से मग़फ़िरत चाहें तो तू हमें बख़्श दे।” तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस के पास अपनी पसन्दीदा साअत में (या'नी तहज्जुद के वक़्त) बेदार करने के लिये एक फ़िरिश्ता भेजता है अगर वोह बेदार हो जाए तो फ़बिहा (या'नी ठीक है), वरना वोह फ़िरिश्ता आस्मान पर चला जाता है और दूसरा फ़िरिश्ता भेजा जाता है वोह बेदार करता है अगर वोह उठ कर नमाज़ अदा कर ले तो फ़बिहा वरना वोह फ़िरिश्ता भी अपने रफ़ीक़ के साथ जा कर खड़ा हो जाता है। फिर अगर वोह शख्स उठ कर नमाज़ तहज्जुद पढ़े और दुआ करे तो उस की दुआ कबूल कर ली जाती है और अगर नमाज़ न पढ़े तो भी **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ उस के लिये उन मलाइका का षवाब लिख देता है।” (کنز العمال، کتاب المعیشتی والاعادات قسم الاقوال، باب رابع بفضل اول، الحديث ٤١٣١٩، ج ١٥، ص ١٤٩-١٥٠ بتغییر قلیلی)

**आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى की करामात :**

हज़रते सय्यिदुना इब्ने मरदविया عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं कि हम हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्खी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَنِي की सोहबत में बैठे हुवे थे, उस दिन मैं ने आप عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى का चेहरा मुबारक खिला हुआ देख कर अर्ज़ की : “ऐ अबू महफूज़ मुझे पता चला है कि आप पानी पर चलते हैं?” तो इरशाद फ़रमाया : “मैं कभी पानी पर नहीं चला बल्कि जब मैं पानी उबूर करने का इरादा करता हूँ तो इस की दोनों तरफ़ें इकछी हो जाती हैं और मैं इस पर क़दम रख कर चलने लग जाता हूँ।

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन वासेअ عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं कि मैं अजाने मग़रिब के वक़्त हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्खी عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ الْعَنِي के पास था उस वक़्त आप عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى के चेहरे पर किसी चोट का निशान न था लेकिन जब अगले दिन हाज़िर हुवा तो चोट का निशान देखा। मैं ने अपने साथ बैठे हुए बुजुर्ग जो कि आप عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى से ख़ासे मानूस थे, से अर्ज़ की, कि “आप इन से इस की वजह पूछिये।” चुनान्चे, उन्होंने ने पूछा : “ऐ अबू महफूज़ ! कल तक तो आप के चेहरे पर कोई निशान न था, फिर आज येह निशान कैसे बना ?” इरशाद फ़रमाया : “**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ तुम्हें मुआफ़ फ़रमाए ! फुजूल बातों के मुतअल्लिक़ सुवाल मत करो।” लेकिन

उस बुजुर्ग ने फिर अर्ज की : “मैं आप को **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की क़सम देता हूँ कि आप हमें ज़रूर बताइये ?” हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्खी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِي** ने पूछा : “**اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** तुम पर रहम करे, तुम्हें किस ने येह बात पूछने पर उभारा ?” फिर आप **رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ** का चेहरा मुतगय्यिर हो गया फिर इरशाद फ़रमाया : “रात नमाज़े इशा के बा'द मेरे दिल ने बैतुल्लाह शरीफ़ का तवाफ़ करने की ख़्वाहिश की तो मैं मक्का शरीफ़ जा पहुंचा । तवाफ़ कर के ज़म ज़म शरीफ़ की तरफ़ पानी पीने गया तो अचानक एक हसीन सूरत दिखाई दी । मेरी नज़र उस पर ज़म गई तो अचानक मेरा पाउं दरवाज़े में फिसल गया जिस से मेरे चेहरे पर चोट लग गई । फिर मैं ने किसी की आवाज़ सुनी : “अगर तुम मज़ीद देखते तो मज़ीद चोटें खाते ।”

हज़रते सय्यिदुना अली हसन बिन अब्दुल वहहाब **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی** फ़रमाते हैं : “लोग कहते हैं कि हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्खी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِي** पानी पर चलते हैं, अगर मुझे कहा जाए कि आप **رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ** हवा में उड़ते हैं तो मैं इस बात की भी तस्दीक करूंगा ।”

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल वहहाब **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی** फ़रमाते हैं कि मैं ने हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्खी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِي** से बड़ा ज़ाहिद कोई नहीं देखा ।

(تاریخ بغداد، الرقم ۷۱۷۷ معروف بن الفیرزان ابو محفوظ العابد المعروف بالکرخی، ج ۱، ص ۲۰۷)

### आप **رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ** के इरशादाते आलिया :

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बका **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی** फ़रमाते हैं कि मैं ने हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्खी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِي** को इरशाद फ़रमाते सुना : “जब **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** किसी बन्दे से भलाई का इरादा फ़रमाता है तो उस के लिये अमल का दरवाज़ा खोल देता है और बहूष व मुबाहषा का दरवाज़ा बन्द कर देता है और जब **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** किसी बन्दे से शर का इरादा फ़रमाता है तो उस के लिये अमल का दरवाज़ा बन्द कर देता है और बहूष व मुबाहषा का दरवाज़ा खोल देता है ।”

(حلیۃ الاولیاء، معروف الکرخی، الحدیث ۱۲۶۹۰، ج ۸، ص ۴۰۵)

हज़रते सय्यिदुना यहूया बिन मुईन और हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल **رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْہُمَا** दोनों आप **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی** की ख़िदमत में हाज़िर हुए । हज़रते सय्यिदुना यहूया बिन मुईन **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی** ने कहा कि मैं इन से सजदए सहव के मुतअल्लिक पूछना चाहता हूँ । हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی** ने ख़ामोश रहने का हुक्म दिया लेकिन वोह ख़ामोश न रहे और अर्ज की : “ऐ अबू महफूज़ ! आप सजदए सहव के मुतअल्लिक क्या फ़रमाते हैं ?” हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्खी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِي** ने इरशाद फ़रमाया : ये दिल के लिये सज़ा है कि वोह नमाज़ से गाफ़िल हो कर दूसरी तरफ़ क्यूं मुतवज्जेह हुवा ।” येह सुन कर हज़रते सय्यिदुना अहमद बिन हम्बल **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی** ने इरशाद फ़रमाया : “येह बात आप की ज़हानत पर दलालत करती है ।” (تاریخ بغداد، الرقم ۷۱۷۷ معروف بن الفیرزان ابو محفوظ العابد المعروف بالکرخی، ج ۱، ص ۲۰۱)

एक दिन हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्खी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی** ने नमाज़ के लिये इक़मत कही । फिर हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन अबी तौबा **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی** से इरशाद फ़रमाया : “आगे बढ़ कर



हमें नमाज़ पढ़ाइये। इस की वजह यह थी कि आप ﷺ इमामत नहीं करते थे, बल्कि सिर्फ अज़ान व इक़ामत कहते थे जब कि इमामत कोई और करता था।” हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन अबी तौबा ﷺ ने अर्ज़ की : “अगर मैं तुम्हें यह नमाज़ पढ़ाऊं तो दूसरी नमाज़ की इमामत नहीं करूंगा।” यह सुन कर आप ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : “क्या तुम दूसरी नमाज़ की उम्मीद करते हो ? हम लम्बी उम्मीदों से **अल्लाह** عزّ وجلّ की पनाह त़लब करते हैं क्योंकि यह बेहतरीन अमल से रोक देती है।”

(حلیۃ الاولیاء، معروف الکرخی، الحدیث ۱۲۶۸، ج ۸، ص ۴۰۵)

हज़रते सय्यिदुना मा'रुफ़ कर्खी ﷺ फ़रमाया करते थे : “दुनिया चार चीज़ों का नाम है : (1)....माल (2)....कलाम (3)....सोना और (4)....खाना। क्योंकि माल सरकशी का सबब है, कलाम लहव व ला'ब में मुब्तला कर देता है, नौद ग़फ़िल कर देती है और खाना दिल की सख़्ती का बाइष है।

हज़रते सय्यिदुना सरी सक्ती ﷺ फ़रमाते हैं कि मैं ने हज़रते सय्यिदुना मा'रुफ़ कर्खी ﷺ को यह इरशाद फ़रमाते सुना : “जिस ने **अल्लाह** عزّ وجلّ के मुक़ाबले में बड़ाई चाहने का इरादा किया तो वोह उसे बुरी तरह पछाड़ देगा, जिस ने उस से लड़ाई का इरादा किया तो वोह उसे ज़लील कर देगा, जिस ने उस को धोका देना चाहा तो वोह उसे इस की सज़ा देगा और जिस ने उस पर भरोसा किया तो वोह उसे नफ़अ देगा और जिस ने उस के लिये अज़िज़ी की तो वोह उसे बुलन्द रुतबा अता फ़रमाएगा। (218) (سير اعلام النبلاء، الرقم ۴۲۵ معروف الکرخی، ج ۸، ص ۲۱۸)

हज़रते सय्यिदुना मा'रुफ़ कर्खी ﷺ की बारगाह में अर्ज़ की गई : “दिल से दुनिया की महबूत निकालने का नुस्खा क्या है ?” इरशाद फ़रमाया : “**अल्लाह** عزّ وجلّ से सच्ची महबूत और लोगों के साथ अच्छा बरताव करना। और ख़ालिस महबूत की अलामात तीन हैं : (1)...वा'दा पूरा करना (2)....बिग़ैर सुवाल के अता करना और (3)....कोई सखावत न करे फिर भी उस की ता'रीफ़ करना। और मुहिब्बीन की अलामात भी तीन हैं (1)...रिज़ाए इलाही عزّ وجلّ की जुस्तजू में रहना (2)....उसी की ज़ात में मशगूल रहना और (3)....हमेशा उसी की पनाह त़लब करना।”

(حلیۃ الاولیاء، معروف الکرخی، الحدیث ۱۲۷۱۸، ج ۸، ص ۴۱۱)

**मशाइब पर सब कुर्बे इलाही का ज़रीआ है :**

एक शख्स हज़रते सय्यिदुना मा'रुफ़ कर्खी ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अर्ज़ गुज़ार हुवा : “या सय्यिदी ! मुझे बताइये कि मैं **अल्लाह** عزّ وجلّ की बारगाह तक कैसे रसाई हासिल कर सकता हूँ ?” तो आप ﷺ उस का हाथ पकड़ कर एक अमीर के दरवाजे पर ले गए। दरवाजे पर एक गुलाम खड़ा हुवा था जिस की एक टांग टूटी हुई थी। आप ﷺ ने उस गुलाम की त़फ़ इशारा किया और उस शख्स का हाथ पकड़ कर इरशाद फ़रमाया : “इस की मिष्ल हो जाओ, खुद ही **अल्लाह** عزّ وجلّ तक रसाई हासिल कर लोगे।” (या'नी जिस तरह यह गुलाम टूटी हुई टांग के बा वुजूद अपने आका के दरवाजे पर हाज़िर है इस तरह तू भी हर हाल में अपने रब्ब عزّ وجلّ की रिज़ा पर राज़ी रहे और उस की इबादत करता रह)।

**आप ﷺ का खौफ़ खूबहा :** عَزَّوَجَلَّ

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र बिन अबी तालिब ﷺ फ़रमाते हैं कि मैं हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्खी ﷺ की मस्जिद में दाखिल हुवा। आप ﷺ घर में तशरीफ़ फ़रमा थे। फिर आप ﷺ हमारे पास तशरीफ़ लाए। हम काफ़िले की सूरत में थे। आप ﷺ ने हमें सलाम किया हम ने भी जवाबन सलाम पेश किया। फिर हमें दुआ देते हुए फ़रमाया : **“اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْأَلُكَ اَنْ تَجْعَلَ لِّىْ رِزْقًا يَّوْمًا بَعْدَ يَوْمٍ”** आप सब को इस्लामी ममलुकत में सलामती के साथ ज़िन्दा रखे और दुनिया में हम सब को एहसान की ने'मत से नवाजे और आखिरत में हमारी मग़फ़िरत फ़रमाए।” फिर आप ﷺ ने अज़ान देनी शुरू की। जब आप ﷺ पर पहुंचे तो आप ﷺ पर शिद्दे इज़्तिराब से लर्जा तारी हो गया और अबू और दाढ़ी के बाल खड़े हो गए और आप ﷺ इस क़दर बेचैन हुए कि मुझे खौफ़ हुवा कि अज़ान मुकम्मल न कर सकेंगे फिर आप ﷺ इस क़दर झुक गए कि करीब था कि गिर जाते।

(حلیۃ الاولیاء، معروف الکرخی، الحدیث ۱۲۶۸۵، ج ۸، ص ۴۰۴)

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद वरक़ि ﷺ फ़रमाते हैं कि कभी कभार हम हज़रते सय्यिदुना अबू महफूज़ ﷺ की मजलिस में होते और आप ﷺ बैठ कर ग़ौरो फ़िक्र कर रहे होते, फिर अचानक आप ﷺ पर बेचैनी तारी हो जाती और बारगाहे इलाही में अर्ज़ गुज़ार होते : **“وَاَعُوْذُ”** ऐ मेरे मददगार ! (या'नी अपने हकीकी मददगार को पुकारते)।”

(المرجع السابق، الحدیث ۱۲۷۰۹، ص ۴۰۹)

हज़रते सय्यिदुना कासिम बग़दादी ﷺ फ़रमाते हैं : **“मैं हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्खी ﷺ का पड़ोसी था, एक रात मैं ने आप ﷺ को गिर्या व जारी करते और दर्जे ज़ैल अशआर पढ़ते सुना :**

أَيُّ شَيْءٍ تُرِيدُ مِنِّي الدُّنُوبُ شَفَعْتُ بِى فَلَيْسَ عِنْدِي تَغِيْبُ  
مَا يَضُرُّ الدُّنُوبُ لَوْ اُغْتَفِنِي رَحْمَةً لِّىْ فَقَدْ عَلَانِي الْمَشِيْبُ

**तर्जमा :** (1)...कौन सी चीज़ मुझ से गुनाह कराना चाहती है, मुझे गुनाहों में मशगूल रखती है और मुझ से दूर नहीं होती।

(2)...अगर तू मुझे रहम फ़रमाते हुए बख़्श दे तो गुनाह मुझे कुछ नुक़सान नहीं पहुंचा सकते अब तो मुझ पर बुढ़ापा आ चुका है। (صفة الصّفة، ذكر المصطفين من اهل بغداد، الرقم ۲۶۰ معروف بن الفيزان الکرخی، ج ۲، ص ۲۱۲)

**एक नौजवान की हिक्कायत :**

हज़रते सय्यिदुना यहूया बिन हसन ﷺ फ़रमाते हैं कि मैं ने हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्खी ﷺ को फ़रमाते सुना : **“मैं ने एक बस्ती में ख़ूबसूरत और साफ़ सुथरे लिबास में मल्बूस एक नौजवान देखा, उस ने जुल्फ़ें रखी हुई थीं, सर पर ऊनी चादर, जिस्म पर सूती कपड़े की कमीस और पाउं में लकड़ी का जूता था। मुझे उस को इस जगह देख कर बड़ी हैरानगी हुई। फिर मैं ने उसे सलाम किया और उस ने भी सलाम का जवाब दिया। मैं ने पूछा :**

“कहां से आ रहे हो ?” कहने लगा : “दिमशक से आ रहा हूं।” मैं ने फिर पूछा : वहां से कब चले थे ?” जवाब दिया : “दोपहर के वक्त वहां से चला था।” मुझे उस पर बड़ा तअज्जुब हुआ क्योंकि दिमशक और इस बस्ती के दरमियान बहुत ज़ियादा मसाफ़त और कई मन्ज़िलें थीं। बहर हाल मैं ने फिर पूछा : “कहां का इरादा है ?” तो उस ने जवाब दिया : “मक्कए मुकर्रमा رَاَدَهُ اللّٰهُ شَرْفًاوَّ تَعْظِيمًا وَ تَكْرِيمًا जाने का इरादा है।” मैं समझ गया कि उस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का खास लुत्फ़ो करम है। ख़ैर, मैं ने उसे अलवदाअ कहा और वोह चला गया। तीन साल के बा'द एक दिन मैं अपने घर में बैठा सोच में डूबा हुआ था कि दरवाज़े पर दस्तक हुई। मैं ने दरवाज़ा खोला तो वोही शख्स था। मैं ने सलाम करने के बा'द कहा : “खुश आमदीद ! और उसे अपने घर आने की इजाज़त दे दी। ऐसा लग रहा था जैसे वोह हसरत ज़दा, परेशान और ग़मगीन हो। मैं ने पूछा : “क्या हुआ ?” तो उस ने बताया : “ऐ उस्ताज़े मोहतरम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का मुझ पर खास करम है यहां तक कि पहले उस ने मुझे मुसीबत में मुब्तला किया फिर इस से नजात दी। वोह मुझ पर कभी तो अपने लुत्फ़ो करम की बारिश बरसाता है और कभी ख़ौफ़ में मुब्तला कर देता है। कभी भूका रखता है और कभी मोअज़्ज़ज बना देता है। काश ! एक मरतबा वोह मुझे अपने किसी खास बन्दे के भेदों पर आगाह फ़रमा दे फिर मेरे साथ जो चाहे करे।” हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्खी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं कि उस के इस कलाम से मुझे रोना आ गया। मैं ने मज़ीद पूछा : “जब से तुम मुझ से जुदा हुए उस वक्त से तुम्हारे साथ क्या क्या मुआमलात पेश आए ? उस ने कहा : मैं तो इन को ज़ाहिर करना चाहता हूं लेकिन वोह मख़फ़ी रखना चाहता है।” फिर वोह रोने लगा। तो मैं ने उस से पूछा : “बताओ तो सही कि तुम्हारे साथ क्या हुआ ?” चुनान्चे, उस ने बताना शुरूअ किया : “आप से मुलाक़ात के बा'द मैं तीस (30) दिन तक भूका रहा। एक वादी में पहुंचा जहां ककड़ियां काशत की हुई थीं। मैं पत्तों को तोड़ कर खाने बैठ गया। मालिक ने जब देखा तो मुझे पकड़ लिया और मेरी पुश्त और पेट पर मुक्के मारते हुए कहने लगा : “ऐ चोर ! तेरे इलावा मेरी ककड़ियां किसी ने नहीं तोड़ीं, मैं कब से तेरी ताक में था कि तू आए और मैं तुझे पकड़ लूं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अब तो मैं तुझे सख़्त सज़ा दूंगा।” वोह अभी मुझे मार ही रहा था कि एक घोड़े सुवार बड़ी तेज़ी से घोड़े को सरपट दौड़ाता हुआ आया, उस के सर पर कोड़ा बरसाया और कहने लगा : “तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के एक दोस्त को चोर कह रहे हो और इस को मारते और डांटते हो हालांकि इस ने तो पत्तों के इलावा कोई चीज़ नहीं खाई।” येह सुन कर वोह मालिक मेरे पास आया और मेरे हाथों और सर को चूमने लगा। फिर मुझ से मा'ज़ेरत की और अपने घर ले जा कर बहुत इज़्ज़त की और हुस्ने सुलूक से पेश आया। मेरे लिये अपनी ककड़ियां फ़ुकरा व मसाकीन को सदका कर दीं। फिर जब मैं ने बताया कि मैं हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्खी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی के दोस्तों में से हूं तो उस ने आप عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی के बारे में कुछ बयान करने को कहा। मैं ने आप عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللّٰهِ तَعَالٰी के कुछ औसाफ़ बयान किये तो उस ने पहचान लिया।” अभी उस नौजवान की गुफ़्तगू पूरी भी न हुई थी कि



ककड़ियों के मालिक ने दरवाजे पर दस्तक दी और हमारे पास आ गया। वोह बहुत खुश हाल था। और अपना सारा माल फुकरा पर सदाका कर के एक साल उस नौजवान की सोहबत में रहा। फिर वोह दोनों हज के लिये खाना हुआ, हज व उमरा किया और दोनों का वहीं इन्तिकाल हो गया और मक्का मुकर्रमा के क़ब्रिस्तान “जन्नतुल मा’ला” में मदफून हुए।”

(صفة الصفوة، ذكر المصطفين من عباد اهل الشام المحبولى الاسماء، الرقم ٨١٣، عابد آخر، ج ٤، ص ٢٤٠)

हज़रते सय्यिदुना मा’रुफ़ कर्खी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي इस तरह दुआ किया करते थे :  
“اللَّهُمَّ يَا مَنْ وَفَّقَ أَهْلَ الْخَيْرِ لِلْخَيْرِ وَأَعَانَهُمْ عَلَيْهِ وَفَقَّنَا لِلْخَيْرِ وَأَعَانَ عَلَيْنَا” या’नी ऐ **अल्लाह** ऐ वोह जात जिस ने नेक बन्दों को उमरे खैर की तौफ़ीक़ दी और इस पर उन की मदद भी फ़रमाई ! हमें भी भलाई की तौफ़ीक़ अता फ़रमा और इस पर हमारी मदद भी फ़रमा।”

**दुआए मा’रुफ़ की बरकत :**

एक शख्स ने हज़रते सय्यिदुना मा’रुफ़ कर्खी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अर्ज की : “दुआ फ़रमाएं कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ मेरे दिल को नर्म कर दे।” तो आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى ने उसे इस दुआ की तल्कीन फ़रमाई : “يَا مُلَيِّنَ الْقُلُوبِ لِيَنْ قَلْبِي قَبْلَ أَنْ تُلَيِّنَهُ عِنْدَ الْمَوْتِ” या’नी ऐ दिलों को नर्म फ़रमाने वाले ! मेरे दिल को भी नर्म कर दे इस से पहले कि तू मौत के वक़्त इसे नर्म करे।” (आमीन)  
.....हज़रते सय्यिदुना सर्री सक़ती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَنِي फ़रमाते हैं कि मैं दिल की सख़्ती के मरज़ में मुब्तला था तो मुझे हज़रते सय्यिदुना मा’रुफ़ कर्खी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي की दुआ की बरकत से छुटकारा मिल गया। हुवा यूं कि मैं नमाज़े ईद पढ़ने के बा’द वापस लौट रहा था कि हज़रते सय्यिदुना मा’रुफ़ कर्खी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى को देखा। आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى के साथ एक बच्चा भी था जिस के बाल उलझे हुए थे। दिल टूटने के सबब रोए जा रहा था। मैं ने अर्ज की : “या सय्यिदी ! क्या हुवा ? आप के साथ येह बच्चा क्यूं रोए जा रहा है ?” तो आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى ने जवाब दिया : “मैं ने चन्द बच्चों को खेलते हुए देखा लेकिन येह बच्चा एक तरफ़ खड़ा हुवा था। उन बच्चों के साथ न खेलने की वजह से इस का दिल टूट गया है। मैं ने बच्चे से पूछा तो इस ने बताया : “मैं यतीम हूं, मेरा बाप इन्तिकाल कर गया है, मेरा कोई सहारा नहीं और मेरे पास कुछ रक़म भी नहीं कि मैं अख़रोट ख़रीद कर उन बच्चों के साथ खेल सकूं।” चुनान्चे, मैं उस को अपने साथ ले आया हूं ताकि उस के लिये घुटलियां इकठ्ठी करूं जिन से येह अख़रोट ख़रीद कर दूसरे बच्चों के साथ खेल सके।” मैं ने अर्ज की : “आप येह बच्चा मुझे दे दें ताकि मैं इस की हालत बदल सकूं।” आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى ने फ़रमाया : “चलो इस को पकड़ लो, **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ तुम्हारा दिल ईमान की बरकत से ग़नी करे और अपने रास्ते की जाहिरी व बातिनी पहचान अता फ़रमा दे।”

हज़रते सय्यिदुना सर्री सक़ती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : “मैं उस बच्चे को ले कर बाज़ार चला गया और अच्छे कपड़े पहनाए, अख़रोट ख़रीद कर दिये और वोह ईद के दिन दूसरे बच्चों के साथ खेलने चला गया। दूसरे बच्चों ने पूछा : “तुझ पर येह एहसान किस ने किया ?” उस ने जवाब

दिया : “हज़रते सय्यिदुना मा’रूफ़ कर्खी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي और सर्री सक़ती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي ने ।” जब बच्चे खेल कूद के बा’द चले गए तो वोह बच्चा खुशी खुशी मेरे पास आया । मैं ने उस से पूछा : “बताओ ! ईद का दिन कैसा गुज़रा ?” उस ने कहा : “ऐ मेरे मोहतरम ! आप ने मुझे अच्छा कपड़ा पहनाया, मुझे खुश कर के बच्चों के साथ खेलने के लिये भेजा, मेरे टूटे हुए दिल को जोड़ा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप को अपनी बारगाह में हाज़िरी की कमी पूरी करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और आप के लिये अपना रास्ता खोल दे ।” हज़रते सय्यिदुना सर्री सक़ती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं कि मुझे बच्चे के इस कलाम से बेहद खुशी हुई जिस ने ईद की खुशिया दो बाला कर दीं ।

(تذكرة الاولياء، ج ۱، حصه اول، حضرت سيّدنا معروف کرختی علیہ رحمۃ اللہ الغنی، ص ۲۴۲-۲۴۳، ملخصاً)

### ईसाई वालिदैन का कबूलें इस्लाम :

﴿2﴾.....हज़रते सय्यिदुना अमिर बिन अब्दुल्लाह कर्खी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं कि मेरे पड़ोस में एक ईसाई रहा करता था । एक दिन मैं अपने घर में मौजूद था कि वोह मेरे पास आया और कहने लगा : “ऐ अबू अमिर ! पड़ोसी होने की हैषियत से मेरा आप पर हक़ है, मैं आप को रात और दिन के ख़ालिफ़ का वासिता दे कर कहता हूं कि “मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के किसी वली के पास ले चलिये ताकि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मेरे लिये बेटे की दुआ करे । मेरे दिल में अवलाद की बहुत ख़्वाहिश है और मेरा जिगर जलता रहता है ।” चुनान्चे, मैं उस को साथ ले कर हज़रते सय्यिदुना मा’रूफ़ कर्खी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي की ख़िदमत में हाज़िर हुवा और आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى की बारगाह में उस ईसाई का मुआमला अर्ज किया । आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى ने उसे इस्लाम की दा’वत दी तो कहने लगा : “ऐ मा’रूफ़ ! जब तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे हिदायत न दे आप नहीं दे सकते, मैं आप के पास सिर्फ़ दुआ के लिये हाज़िर हुवा हूं ।”

आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى ने अपने हाथों को बुलन्द कर के दुआ की : “या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं तेरी बारगाह में अर्ज करता हूं कि इसे ऐसा लड़का अता फ़रमा जो वालिदैन के साथ हुस्ने सुलूक करे और वोह इस के हाथ पर मुसलमान हो जाएं ।” चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप की दुआ कबूल फ़रमाई और उस को एक ऐसा लड़का अता फ़रमाया जो अपनी अक्ले कामिल के सबब तमाम अहले ज़माना पर फ़ौक़ियत ले गया, वोह अपनी शराफ़त की बुलन्दी के बाइष अपने जैसे तमाम लड़कों पर बुलन्द मक़ाम रखता था । जब वोह कुछ बड़ा हुवा तो बाप उसे ईसाइयत की ता’लीम दिलाने के लिये एक पादरी के पास छोड़ आया । पादरी ने उसे सामने बिठाया और हाथ में तख़्ती पकड़ा कर अभी “बोलो” ही कहा था तो वोह बच्चा कहने लगा : “क्या बोलूं ? मेरी ज़बान तुम्हारे तीन खुदा मानने के अक्कीदे से रोक दी गई है और मेरा दिल मेरे रब्ब عَزَّوَجَلَّ की महब्वत में मशगूल है ।” पादरी कहने लगा : ऐ बेटे मैं ने तुझे येह तो नहीं कहा था । तो बच्चे ने कहा : “फिर तुम ने मुझे क्या कहा था ?” पादरी ने कहा : “तुम मेरे पास जिस ता’लीम के लिये आए हो मैं तो तुम्हें वोह सिखा रहा हूं जब कि तुम ने मुझे पढ़ाना शुरू कर दिया ।” येह सुन कर बच्चा कहने लगा : “फिर मुझे कोई ऐसी बात बतलाइये, जिसे मेरी अक्ल भी कबूल करे और मेरा ज़ेहन भी तस्लीम करे ।”

उस्ताद ने कहा : “ठीक है, तो फिर कहो ! الف” बच्चे ने कहा : “الف तो वस्ली या’नी मिलाने वाला है, जिस ने हर दिल को उस महबूबे हकीकी عَزَّوَجَلَّ का गिरवीदा कर दिया जिस की सिफात अज़ली हैं।” उस्ताद ने कहा : “ऐ बेटे ! कहो ! باء” बच्चे ने कहा : “باء से मुराद हकीकी बका है, जिस ने दिलों को ज़िन्दा किया और इन में महबूबते इलाही عَزَّوَجَلَّ के सिवा कुछ न छोड़ा।” उस्ताद ने कहा : “ऐ बेटे ! कहो ! تاء” तो बच्चे ने कहा : “ता से मुराद दिल का ज़ब्बा व शौक है जो जाते बारी तआला के मुतअल्लिक दिल में खटकने वाले तमाम शुक्क व शुब्हात को दूर करता है।” पादरी ने कहा : “ऐ बेटे ! कहो ! ثاء” तो बच्चे ने कहा : “ثاء से मुराद उस नूरानी लिबास के लिये पर्दा है जो मक़ामे कुर्ब पाने वालों को षाबित रखे हुए है। उस्ताद ने कहा : “ऐ बेटे कहो ! جيم” तो बच्चे ने कहा : “जिम तो नूरे जमाले इलाही عَزَّوَجَلَّ का नाम है, जो इन्सानों पर सुब्हो शाम अपने अन्वार व तजल्लियात डालता है।” उस्ताद ने कहा : “ऐ बेटे पढ़ो ! حاء” तो बच्चे ने कहा : “حاء से मुराद अब्बाह عَزَّوَجَلَّ की हम्द है, जिस ने दिलों की हिफ़ाज़त की और बुरी ख़स्लतों से पाक व साफ़ कर दिया।” उस्ताद ने कहा : “ऐ बेटे ! कहो ! خاء” तो बच्चे ने कहा : “خاء से मुराद खौफ़े खुदा عَزَّوَجَلَّ है, जिस ने बरगुज़ीदा बन्दों की तमाम तकालीफ़ और दुख दर्द दूर कर दिये।”

यहां तक कि पादरी बच्चे को एक एक हर्फ़ पढ़ने के लिये कहता रहा और बच्चा उस हर्फ़ के मुतअल्लिक हम वज़्न व मन्ज़ूम कलाम से जवाब देता रहा। पादरी की अक्ल दंग रह गई और ऐसी गुफ़्तगू सुन कर उस का दिल ज़िन्दा हो गया और उस ने जान लिया कि दीने इस्लाम ही सच्चा दीन है। फिर कहने लगा : ऐ वहदानिय्यते इलाही عَزَّوَجَلَّ को मानने वाले प्यारे बच्चे ! मैं तुझे शाबाश देता हूं।” इस के बा’द बच्चे ने चन्द अशआर पढ़े, जिन का मफ़हूम कुछ यूं है :

“क्या वोही बर हक़ नहीं जो रुलाता व हंसाता, ज़िन्दगी व मौत देता और मख़्लूक के लिये खेती उगाता है ? यकीनन वोही मा’बूदे हकीकी عَزَّوَجَلَّ है लिहाज़ा जो उस का दरवाज़ा छोड़ कर किसी और के दरवाज़े पर जाता है वोह नुक़सान उठाता है और जो उसे छोड़ कर किसी दूसरे की इबादत करता है गुमराह हो जाता है। ऐ खाइब व खासिर कोशिश करने वाले ! जब बन्दे का मक्सूदे हकीकी वोही ज़ात है तो अब कौन इस मक्सद के ग़ैर की तरफ़ कामयाब कोशिश कर सकता है ? पस वोही बरतर, ग़ालिब और रहीम है कि उस की ताक़त के बिग़ैर कोई किसी को नफ़अ व नुक़सान नहीं पहुंचा सकता। वोह अपने बन्दे को गुनाह करते हुए देखता है फिर भी उस की पर्दा पोशी फ़रमाता है और उस को बिन मांगे अता करता है। आसियों और गुनहगारों से बख़्शिश का मुआमला करता है और हिजरो फ़िराक़ के मारों को विसाल की दौलत से नवाज़ता है। पाक है वोह ज़ात जिस के इलावा हकीकी परवर दगार कोई नहीं, वोह अपने उस बन्दे को पसन्द करता है जो उस का हुक्म तवज्जोह से सुनता है।”

रावी कहते हैं कि जब पादरी ने बच्चे का ऐसा कलाम सुना जिस ने उस के होश उड़ा दिये और उसे रंजो ग़म में मुब्तला कर दिया तो उस ने जान लिया और उसे यकीन हो गया कि इस बच्चे को कुव्वते गोयाई अता करने वाला वोही है जिस ने मुझे पैदा किया है। चुनान्वे, उस ने दिल ही दिल में कलिमए शहादत “أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ” पढ़ा। फिर बच्चे को उस के बाप



के पास ले आया। जब बाप ने उन दोनों को आते देखा तो उस का चेहरा खुशी से दमक उठा। उस ने पादरी से पूछा : “आप ने मेरे बच्चे की ज़हानत को कैसा पाया ?” तो वोह कहने लगा : “ज़रा इस का अरिफ़ाना कलाम तो सुनें।” फिर उस ने सारी गुफ़्तगू बच्चे के बाप को सुना दी। येह सुन कर बाप बोला : “उस खुदा की क़सम जो हर लाचारो बे बस की मदद फ़रमाता है ! मेरा बेटा महज़ हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्खी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى की दुआ की बरकत से इस मक़ाम व मर्तबे तक पहुंचा है।” फिर कहने लगा : “ऐ मेरे बेटे ! सब ख़ूबियां खुदाए वाहिद عَزَّ وَجَلَّ के लिये हैं जिस ने तेरे सबब हम सब को गुमराही से नजात अता फ़रमाई। मैं गवाही देता हूं कि **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ उस के सच्चे रसूल हैं।” इस के बा'द बच्चे की मां और तमाम घर वाले इस्लाम ले आए और अपने गले से (ईसाइयों के निशान) सलीब को उतार फेंका। **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ ने हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्खी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى की दुआ की बदौलत उन सब को जहन्नम से छुटकारा दे दिया।

**मजाराते औलिया عَلَيْهِمُ الرَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى की बरकत :**

हज़रते सय्यिदुना अहमद बिन अब्बास عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं कि मैं बग़दाद से हज़ के इरादे से निकला तो एक ऐसे शख्स से मुलाक़ात हुई जिस पर इबादत के आषार नुमायां थे। उस ने पूछा : “आप कहां से आ रहे हैं ?” मैं ने जवाब दिया : “बग़दाद से भाग कर आ रहा हूं क्योंकि मैं ने वहां फ़साद देखा है, मुझे खौफ़ है कि अहले बग़दाद को चांद गहन न लग जाए।” उस बुजुर्ग ने फ़रमाया : “आप वापस चले जाए और डरिये मत, क्योंकि बग़दाद में चार ऐसे औलियाए किराम عَلَيْهِمُ الرَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى की क़ब्रें हैं जिन की बरकत से अहले बग़दाद तमाम बलाओं और मसाइब से महफूज़ हैं।” मैं ने पूछा : “वोह कौन हैं ?” जवाब दिया : “वोह हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल, हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्खी, हज़रते सय्यिदुना बिशर हाफ़ी और हज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन अम्मार عَلَيْهِمُ الرَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى हैं।” चुनान्वे, मैं वापस आ गया और इन मरदाने हक़ की क़ब्रों की ज़ियारत की तो मुझे बहुत कैफ़ो सुरूर हासिल हुवा।

(تاريخ بغداد، باب ما ذكر في مقابر بغداد المخصوصة بالعلماء والزهاد، ج ١، ص ١٣٣)

**जिश् का अमल हो बे गरज़ उस की जज़ा कुछ और है :**

हज़रते सय्यिदुना अबुल फ़तह बिन बिशर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं : “मैं ने अलमे ख़्वाब में हज़रते सय्यिदुना बिशर हाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى को एक बागीचे में देखा। आप عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ तَعَالَى के सामने एक दस्तरख़्वांन बिछा हुवा था। मैं ने पूछा : “مَا فَعَلَ اللَّهُ بِكَ ؟” या'नी **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआमला फ़रमाया ? तो आप عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ तَعَالَى ने जवाब देते हुए फ़रमाया : “उस ने रहम फ़रमाते हुए मुझे बख़्शा दिया और तख़्त पर बिठा कर फ़रमाया : इस दस्तरख़्वांन पर मौजूद फ़लों में से जो चाहो खाओ और लुफ़ उठाओ क्योंकि तुम दुन्या में अपने नफ़्स को ख़्वाहिशात से

रोकते थे।" मैं ने पूछा : "आप के भाई हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ कहां हैं?" फ़रमाया : "वोह जन्नत के दरवाजे पर खड़े अहले सुन्नत के उन अफ़्साद की शफ़ाअत कर रहे हैं जिन का अक़ीदा था कि **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ का कलाम कुरआने करीम ग़ैर मख़्लूक है।" मैं ने फिर पूछा : "**اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ ने हज़रते सय्यिदुना मा'रुफ़ कर्खी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَنَى के साथ क्या मुआमला फ़रमाया?" तो आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने जवाबन फ़रमाया : "अफ़सोस ! मुझे मा'लूम नहीं क्यूंकि हमारे और उन के दरमियान पर्दे हाइल हैं, उन्होंने ने जन्नत के शौक़ या जहन्नम के डर से **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ की इबादत न की थी बल्कि उन की इबादत तो महज़ दीदारे इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये थी। चुनान्चे, **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें आ'ला तरीन मक़ाम अता फ़रमाया और अपने और उन के दरमियान सब पर्दे उठा दिये। अब जिस ने **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में कोई हाजत पेश करनी हो तो उसे चाहिये कि हज़रते सय्यिदुना मा'रुफ़ कर्खी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَنَى के मज़ारे पुर अन्वार पर हाज़िर हो कर दुआ करे, إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ उस की दुआ क़बूल की जाएगी।"

(صفة الصفوة، ذكر المصطفين من اهل بغداد، الرقم ٢٦٠، ج ٢، ص ٢١٤)

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान जोहरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى का बयान है कि मैं ने अपने बाप हज़रते सय्यिदुना अब्दुर्रहमान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى को येह फ़रमाते सुना कि "हज़रते सय्यिदुना मा'रुफ़ कर्खी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَنَى की क़ब्रे अन्वर पर तमाम हाजात पूरी होती हैं।"

हज़रते सय्यिदुना यहया बिन सुलैमान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَان फ़रमाते हैं कि मुझे एक हाजत थी और मैं काफ़ी तंगदस्त था। हज़रते सय्यिदुना मा'रुफ़ कर्खी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَنَى की क़ब्रे अन्वर पर मेरी हाज़िरी हुई, मैं ने तीन बार सूरए इख़्लास की तिलावत की और इस का षवाब आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى को और तमाम मुसलमानों की अरवाह को पहुंचाया, फिर अपनी हाजत बयान की। जू ही मैं वहां से वापस गया मेरी हाजत पूरी हो चुकी थी।

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र खय्यात عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْجَوَاد फ़रमाते हैं कि मैं ने आलमे ख़्वाब में खुद को क़ब्रिस्तान में देखा। क़ब्र वाले अपनी क़ब्रों पर बैठे हुए हैं और उन के सामने फूलों के पौदे हैं। अचानक हज़रते सय्यिदुना मा'रुफ़ कर्खी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَنَى को उन के दरमियान खड़ा पाया कि कभी इधर जाते हैं और कभी उधर। मैं ने पूछा : "ऐ अबू महफूज़ ! " مَا فَعَلَ اللَّهُ بِكَ ؟ " या'नी **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआमला फ़रमाया?" और क्या आप इस दुन्या से कूच नहीं कर चुके?" तो आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى ने जवाबन फ़रमाया : "क्यूं नहीं, फिर चन्द अशअर पढ़े, जिन का मफ़हूम कुछ यूं है :

"मुत्तकी इन्सान की मौत दर हक़ीक़त हयाते जाविदानी है या'नी ऐसी ज़िन्दगी है जो ख़त्म होने वाली नहीं। कई लोग इस जहाने फ़ानी से कूच कर चुके हैं लेकिन उन का नाम अभी तक लोगों में (अच्छाई के साथ) ज़िन्दा है। फ़ख़्र करना सिर्फ़ अहले इल्म को रवा है क्यूंकि वोह हिदायत पर होते हैं और जो भी उन से हिदायत हासिल करना चाहे, यक़ीनन हिदायत पा जाता है। वोह खुद तो इस जहाने फ़ानी से कूच कर गए लेकिन उन के चाहने वाले उन के विसाल के बा'द भी उन का नाम ज़िन्दा रखे हुए हैं और हम भी उन्ही मरने वालों की सफ़ में हैं जो ज़िन्दा हैं।"

**आप ﷺ का विशाले बा कमाल :**

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र अज़री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى का बयान है कि हज़रते सय्यिदुना पा'लिब عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं : “हज़रते सय्यिदुना मा'रुफ़ कर्खी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى की वफ़ात 200 हि. में हुई।” हज़रते सय्यिदुना अबुल कासिम नज़री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى जिन का तअल्लुक़ कबीला बनू नज़िर बिन मुईन से है, फ़रमाते हैं कि “मुझे ये ख़बर मिली है कि हज़रते सय्यिदुना मा'रुफ़ कर्खी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى की नमाज़े जनाज़ा में तीन लाख अफ़राद ने शिर्कत की।”

हज़रते सय्यिदुना अब्दुर्रहमान बिन मुहम्मद वर्राक़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं कि एक शामी शख़्स हज़रते सय्यिदुना मा'रुफ़ कर्खी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى की ख़िदमते बा बरकत में हाज़िर हुवा, सलाम अर्ज़ करने के बा'द कहने लगा : “मुझे ख़्वाब में हुक्म हुवा है कि हज़रते सय्यिदुना मा'रुफ़ कर्खी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى की ख़िदमत में हाज़िर हो कर सलाम अर्ज़ करूँ क्योंकि वोह ज़मीनो आस्मान वालों में मशहूर मा'रुफ़ हैं।”

एक बुजुर्ग़ से मन्कूल है कि मैं ने अपने भाई को मरने के एक साल बा'द ख़्वाब में देख कर पूछा : “ऐ मेरे भाई ! ” مَا فَعَلَ اللَّهُ بِكَ ؟ या'नी **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआमला फ़रमाया ?” तो उस ने जवाब दिया : “अब मुझे आज़ाद कर दिया गया है क्योंकि जब हज़रते सय्यिदुना मा'रुफ़ कर्खी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى हमारे पास मदफ़ून हुए तो आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى के दाएं, बाएं, आगे, पीछे से अज़ाब में गिरिफ़्तार तीस तीस हज़ार गुनहगारों को नजात दे दी गई।” **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रहमत हो..और..उन के सदके हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بحمدہ النبی الامین ﷺ

وَصَلَّى اللَّهُ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِهِ وَصَحْبِهِ أَجْمَعِينَ



दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबियत के मदनी काफ़िलों में सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए मदनी इन्आमात का रिसाला पुर कर के हर मदनी (इस्लामी) माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के (दावते इस्लामी के) ज़िम्मेदार को जम्अ करवाने का मा'मूल बना लीजिये إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।



बयान 35 :

## बेक लोगों की निशानी शानें

हम्मे बारी तआला :

सब खूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये जिस ने अपने हुस्ने इन्तिखाब से नेकूकार औलिया में ख़्वास को ख़ास फ़रमाया : उस ने हुसूले मक़ासिद वाली रात में इन में से अफ़ज़ल व आ'ला हस्तियों को आलमे असरार की सैर कराई । और वोह उस के हुक्क की अदाएगी के लिये कमर बस्ता हो गए तो उस ने इन्हें अपने आज़ाद और गुलाम सब बन्दों पर अमीन बना दिया । इन के हाथों मांगने वालों को मुरादें मिलती और इन की बरकतों से ख़ता कारों की ख़ताएं और गुनाह मुआफ़ होते हैं । येह शहरियों और देहातियों को नफ़अ पहुंचाने के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से दुन्या में तसरुफ़ करते हैं । इन में कुछ नक़्बा हैं तो कुछ अब्दाल, बा'ज नजबा हैं तो बा'ज रिजाल, बा'ज अक़ताब हैं और कोई गौष कि उस के वसीले से बारिशें बरसती, इस की बरकत से (चोपायों के) थन दूध से भरते और फल और खेतियां सर सब्ज व शादाब होती हैं । ❀....नक़्बा 70 हैं और येह मिस्र में हैं, किसी दूसरे शहर में नहीं होते । ❀....अब्दाल 40 हैं और येह शाम में हैं और मा'रिफ़त व बसीरत रखने वालों को नज़र आते हैं । ❀...नजबा 300 हैं । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन्हें मगरिब में (शयातीन व कुफ़ार से) जंग के लिये मुकर्रर फ़रमाया । येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दीन के मुहाफ़िज़ व मददगार हैं । ❀....रिजालुल ग़ैब 10 हैं और येह इराक़ में हैं । और इन का जामे महब्बत हर तरह की आमेज़िश से पाक व साफ़ और शफ़फ़ाफ़ है । ❀...अक़ताब 7 हैं । जिन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने शहरों और अत्राफ़े आलम में बसने वालों के नफ़अ के लिये सात मुल्कों में पैदा फ़रमाया । ❀...और गौष (हर ज़माने में) सिर्फ़ एक होता है । जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इज़्ज़त व अज़मत वाले शहर मक्कतुल मुकर्रमा (رَادَهَا اللَّهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا) पर मामूर फ़रमाता है ।<sup>(1)</sup>

❶.....मुजद्दिदे आ'ज़म, इमामे अहले सुन्नत, हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ इरशाद फ़रमाते हैं : “गौष बिल यक़ीन इस (या'नी वली मुसम्म बिल ख़िज़्र) से अफ़ज़ल होता है कि वोह अपने दौर में सुलताने कुल औलिया है । यूंही इमामैन, यूंही अफ़राद, यूंही अवताद, यूंही बुदला, यूंही अब्दाल कि येह सब यके बा'द दीगरे बाक़ी औलियाए दौरा (या'नी ज़माना) से अफ़ज़ल होते हैं । इमाम अब्दुल वह्हाब शा'रानी قُدِّيسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِي किताब “البراهين والحواس في بيان عقائد الأكاير” में फ़रमाते हैं :”

إِنَّ أَكْبَرَ الْأَوْلِيَاءِ بَعْدَ الصَّحَابَةِ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ الْقَطُّبُ ثُمَّ الْأَفْرَادُ عَلَى خِلَافٍ فِي ذَلِكَ ثُمَّ الْإِمَامَانِ ثُمَّ الْأَوْتَادُ ثُمَّ الْأَبْدَالُ أَمَّا الْقَوْلُ: وَالْمُرَادُ بِالْأَبْدَالِ الْبِدَلَةُ السَّبْعَةُ لِمَا ذَكَرَ بَعْدَهُ أَنَّ الْأَبْدَالَ السَّبْعَةُ لَا يَزِيدُونَ وَلَا يَنْقُصُونَ وَهَؤُلَاءِ هُمُ الْبِدَلَةُ أَمَّا الْأَبْدَالُ فَارْبَعُونَ نَبْلَ سَبْعُونَ كَمَا فِي الْأَحَادِيثِ. (فتاوى الرضوية، ج 3، ص 84)

सहाबए किराम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ के बा'द सब से बड़ा वली कुतुब होता है, फिर अफ़राद, इस में इख़िलाफ़ है, फिर अमामान, फिर अवताद, फिर अब्दाल, मैं कहता हूं : अब्दाल से मुराद सात बुदला हैं, इस दलील की वजह से जो इस के बा'द मज़कूर है कि बेशक अब्दाल सात हैं, न ज़ियादा होते हैं न कम, और येही बुदला हैं । रहे अब्दाल तो वोह चालीस बल्कि सत्तर हैं जैसा कि अहादीष में हैं । (त).....(बक़िया अगले सफ़हा पर)

पस येह बरगुज़ीदा बन्दे **अल्लाह** عزوجل के महफूज राज और पोशीदा इल्म के खज़ानों पर अमीन हैं हत्ता कि उम्रें खत्म हो जाएं। अगर इन हस्तियों का वुजूद न हो तो चश्मे और नहरें खुश्क हो जाएं। अगर इन के रकूअ व सुजूद न हों तो बारिशें बन्द हो जाएं, ज़मीन खेती उगाना और दरख्त फल देना छोड़ दें। येह इरादए इलाही عزوجل के दाइरे में रहते हैं। इन्हें बारगाहे इलाही عزوجل में हाज़िर होने से न तो ग़फ़लत रोकती है, न ही उस से दूरी में क़रार आता है। जब बादशाहों के दरवाजे बन्द हो जाते हैं तो इन के लिये पर्दों को उठा दिया जाता है। जब सलातीन के पर्दे आवेज़ां (आवेज़ा) हो जाते हैं तो इन के लिये **अल्लाह** वाहिदो कहहार عزوجل तजल्ली फ़रमाता है। पस अगर वोह तजल्ली इन में से किसी से पलक झपकने की देर छुप जाए तो पहाड़ टूट कर ज़मीन बोस हो जाएं और दुन्या में ज़लजला आ जाए।

(बकिया हाशिया) ..... और हज़रते सय्यदुना इमाम, मुहक्किफ़, अल्लामा मुहम्मद यूसुफ़ नब्हानी قدس سره الشّرفاني अपनी किताब **جامع کرامات اولیاء** में इन मुबारक हस्तियों की अक़साम की वज़ाहत यूं करते हैं: “**अक़ताब** : येह हज़रात अस्लतन या नियाबतन सब अहवाल व मक़ामात के जामेए होते हैं....मशाइख़ की इस्तिलाह में जब येह लफ़्ज़ बिगैर इज़ाफ़त इस्ति’माल हो तो ऐसे अज़ीम इन्सान पर इस का इतलाफ़ होता है जो ज़माना भर में सिर्फ़ एक ही होता है, इसी को गौष भी कहते हैं। येह मुक़रबीने खुदा से होते हैं और अपने ज़माने में गुरौहे औलिया के आका होते हैं....**अवताद** : येह सिर्फ़ चार हज़रात होते हैं। किसी दौर में इन में कमी बेशी नहीं होती .....इन चार में से एक के ज़रीए **अल्लाह** عزوجل मशरिफ़ की हिफ़ाज़त फ़रमाता है और एक की विलायत मशरिफ़ में होती है, दूसरा मगरिब में, तीसरा जुनूब और चौथा शिमाल में विलायत का मर्कज़ होता है। इन के मुआमलात की तक्सीम का’बए (मुअज़्जमा) से शुरू होती है....इन चारों के अलकाब और सिफ़ाती नाम येह है : अब्दुल हय, अब्दुल अलीम, अब्दुल कादिर और अब्दुल मरीद....**अब्दाल** : येह सात से कमोबेश नहीं होते **अल्लाह** عزوجل इन के ज़रीए अक़ालीमे सब्आ की हिफ़ाज़त फ़रमाता है। हर बदल की एक अक़लीम होती है जहां उस की विलायत का सिक्का चलता है।.....**नक़बा** : हर दौर में सिर्फ़ बारह नक़ीब होते हैं। आस्मान के बारह ही बुर्ज हैं और एक नक़ीब एक एक बुरुज की खासियतों का आलिम होता है। **अल्लाह** عزوجل ने इन नक़बाए किराम के हाथों में शरीअतों के नाज़िल किये हुए उलूम दे दिये हैं। नुफूस में छुपी अश्या और आफ़ाते नुफूस का इन्हें इल्म होता है। नुफूस के मकर व खुदाअ के इस्तिख़राज पर येह कादिर होते हैं। इब्लीस उन के सामने यूं मुन्कशिफ़ होता है कि उस की मख़फ़ी कुव्वतों को भी येह जानते हैं जिन्हें वोह खुद नहीं जानता। उन के इल्म की येह कैफ़ियत होती है कि अगर किसी का नक़से पा ज़मीन पर लगा देख लें तो उन्हें उस के शक़ी व सईद होने का पता चल जाता है .....**नजबा** : हर दौर में आठ से कमो बेश नहीं होते। इन हज़रात के अहवाल से ही क़बूलियत की अ़लामात ज़ाहिर होती हैं हालांकि इन अ़लामात पर ज़रूरी नहीं कि इन्हें इख़्तायर भी हो। बस हाल का इन पर गुलबा होता है, इस हाल के गुलबे को सिर्फ़ वोह हज़रात पहचान सकते हैं जो रुत्बे में इन से ऊपर होते हैं। इन से कम मर्तबा लोग नहीं पहचान सकते .....**रिजालुल ग़ैब** : येह दस हज़रात होते हैं। कमो बेश नहीं होते। हमेशा इन के अहवाल पर अन्वारे इलाही का नुज़ूल रहता है लिहाज़ा येह अहले खुशूअ होते हैं। और सरगोशी में बात करते हैं....येह मस्तूर (या’नी नज़रो से ओझल) रहते हैं। ज़मीनो आस्मान में छुपे रहते हैं, इन की मुनाजात सिर्फ़ हक़ तआला से होती है और इन के शहूद का मर्कज़ भी वोही जाते बे मिषाल होती है....वोह मुसम्मए हया होते हैं, अगर किसी को बुलन्द आवाज़ से बोलता सुनते हैं तो हैरान रह जाते हैं और इन के पट्टे कांपने लगते हैं और अहलुल्लाह जब भी लफ़्ज़ रिजालुल ग़ैब इस्ति’माल फ़रमाते हैं तो इन का मतलब येही हज़रात होते हैं। कभी इस लफ़्ज़ से वोह इन्सान भी मुराद लिये जाते हैं जो निगाहों से ओझल हो जाते हैं। कभी रिजालुल ग़ैब से नेक और मोमिन जिन भी मुराद लिये जाते हैं। कभी उन लोगों को भी रिजालुल ग़ैब कह दिया जाता है जो इल्म और रिज़्क महसूस, हिस्सी दुन्या से नहीं लेते बल्कि ग़ैब की दुन्या से इल्म व रिज़्क उन्हें मिलता है।”

(جامع کرامات اولیاء (مترجم) ج ۱، ص ۲۳۹ تا ۲۴۰ ملخصاً)

पाक है वोह जात जिस ने बा'ज बन्दों को अपनी बारगाह के करीब फ़रमाया और उन्हें अपने मासिवा से छुपा लिया। और कुछ बन्दों को दूर किया और दूरी व फ़ासिले की तलवार उन पर चला दी। उस ने सय्यिद (या'नी हज़रते सय्यिदुना जुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْفَوَى) के लिये दामे महबूत को नसब कर लिया। और तनाबे महबूत से हज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادَى को वाबस्ता कर दिया तो वोह काबिले इज़ज़त व बाइषे फ़ख़्र मक़ाम पर फ़ाइज़ हो गए। उस ने तेज़ निगाहे तौफ़ीक़ को हज़रते सय्यिदुना शकीक़ बलख़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَلَى की तरफ़ भेजा तो उन्होंने ने शिकस्तगी और फ़क्र की रस्सी से इसे अपनी तरफ़ खींच लिया। उस ने हज़रते सय्यिदुना अबू यज़ीद عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ الْمَجِيد पर दूसरों से बढ़ कर करम फ़रमाया तो उन्होंने ने दुन्या से कनारा कशी को लाज़िम कर लिया और मज़ीद फ़ज़्लो करम के तलबगार हुए। उस ने हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्खी عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ الْفَوَى पर भलाई की सखावत फ़रमाई तो इन का दिल मा'रिफ़त, व बसीरत से आबाद हो गया। उस ने हज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى पर फ़ज़्ले खास फ़रमाया तो वोह इन्तिहाई दर्जे की इबादत के लिये मुस्तइद् (مُسْتَعِد) या'नी आमादा व तय्यार) हो गए और कुर्बे इलाही عَزَّ وَجَلَّ के हुसूल के लिये शब बेदारियां शुरू कर दीं। और उस ने हज़रते सय्यिदुना मन्सूर हल्लाज عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ الْوَهَّاب को मिज़ाज की तब्दीली का ज़ाम पिलाया तो वोह इश्के हकीकी के नशे में मस्त हो गए, जोश बढ़ गया, असरारे इलाही عَزَّ وَجَلَّ को ज़ाहिर कर दिया ज़बाने वज्द से ऐसी बात ज़ाहिर हुई कि ज़ाहिरी हुदूद से बाहर हो गए और सब्र का पैमाना लबरेज़ हो गया।

इरशादे बारी तआला है :

﴿إِنَّا أَوْلِيَاءُ اللَّهِ لَا خَوْفُ عَلَيْهِمْ

وَلَا لَهُمْ يَحْزَنُونَ ۝﴾ (प ११ यूनस: २४)

तर्जमए कन्जुल ईमान : सुन लो ! बेशक **अल्लाह**

के वलियों पर न कुछ ख़ौफ़ है न कुछ ग़म।

इस आयते मुबारका की तफ़सीर में मुफ़स्सिरे कुरआन, हिब्रुल उम्माह हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ फ़रमाते हैं : “औलियाए किराम पर दुन्या में कोई ख़ौफ़ नहीं, न ही वोह आखिरत में ग़मगीन होंगे बल्कि रब्व तआला खुशी व इज़ज़त के साथ उन का इस्तिक़बाल फ़रमाएगा और उन्हें हमेशा रहने वाली ने'मतें अता करेगा।”

**शाने औलिया ब ज़बाने इमामुल अम्बिया** صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ :

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की बारगाह में अर्ज़ की गई : “**अल्लाह** صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ?” तो आप عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ तَعَالَى ने इरशाद फ़रमाया : “**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के औलिया वोह हैं कि जब लोग दुन्या का ज़ाहिर देखते हैं तो वोह उस का बातिन देखते हैं और जब लोग दुन्या की जल्द आने वाली शै का एहतिमाम करते हैं तो वोह उस की देर से आने वाली शै का एहतिमाम करते हैं। वोह दुन्या की हर उस चीज़ को



ख़त्म कर देते हैं जिस के मुतअल्लिक उन्हें ख़ौफ़ हो कि वोह उन्हें ख़त्म कर देगी और दुन्या की हर उस चीज़ को छोड़ देते हैं जिस के मुतअल्लिक मा'लूम हो कि अ़न क़रीब वोह उन्हें छोड़ देगी। दुन्या के अतिर्यात में से कोई चीज़ उन के आड़े आए तो वोह उस को छोड़ देते हैं और उस की रिफ़अतों में से कोई चीज़ उन्हें धोका दे तो वोह उसे तर्क कर देते हैं। दुन्या उन के नज़दीक पुरानी हो चुकी है, वोह दोबारा इसे नया नहीं करते। येह उन के सामने वीरान हो चुकी है, वोह उसे आबाद नहीं करते। येह उन के सीनों में मर चुकी है, वोह उसे ज़िन्दा नहीं करते बल्कि सिरे से गिरा देते हैं। दुन्या से अपनी आख़िरत की बुन्याद रखते हैं और उसे बेच कर बाक़ी रहने वाली चीज़ ख़रीदते हैं। उन की नज़र में दुन्यादार वोह नीम मुर्दा लोग हैं जिन के लिये इब्रतनाक सज़ा लिख दी गई है। लिहाज़ा दुन्यादार जिस चीज़ की उम्मीद रखते हैं वोह उसे अमान नहीं समझते और जिस चीज़ से अहले दुन्या डरते हैं वोह उस से ख़ौफ़ज़दा नहीं होते।”

(الفتوحات المكية لمحي الحق والدين المعروف بابن عربي، الباب الموفى ستين.....الخ، ج ٨، ص ٤٦١)

### सय्यिदुना अबू यज़ीद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْمَجِيد का जौके इबादत :

हज़रते सय्यिदुना इब्ने ज़फ़र عليه رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَرِيم बयान फ़रमाते हैं कि “हज़रते सय्यिदुना अबू यज़ीद बिस्तामी قَدَسَ سِرُّهُ الشُّرَاقِي को बचपन में जब मद्रसा दाख़िल किया गया और आप कुरआने करीम की ता'लीम हासिल करते हुए इस आयते मुबारका पर पहुंचे : **يَا أَيُّهَا الْمَرْمُلُ 0 ثُمَّ اللَّيْلُ إِلَّا قَلِيلًا 0** (प २९, मज़मूल १-२) : **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान** : ऐ झुरमट मारने वाले ! रात में क़ियाम फ़रमा सिवा कुछ रात के।” तो अपने वालिदे मोहतरम हज़रते सय्यिदुना तैफ़ूर बिन ईसा عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى की ख़िदमत में अर्ज की : “यहां **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ किस से मुख़तिब है ?” तो उन्होंने ने जवाब देते हुए फ़रमाया : “ऐ मेरे बेटे ! येह हमारे आका व मौला हज़रते सय्यिदुना अहमदे मुजतबा, महम्मदे मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत पर अमल क्यूं नहीं करते। “तो उन्होंने ने जवाब दिया : “प्यारे बेटे ! येह हुक्म ख़ास हुज़ूर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाया गया फिर सूरए ताहा में इस में तख़फ़ीफ़ कर दी गई।”

जब आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى का सबक़ इस आयते मुबारका पर पहुंचा :

إِنَّ رَبَّكَ يَعْلَمُ أَنَّكَ تَقُومُ أَدْنَىٰ مِنْ ثُلَاثِي إِلَيَّ وَنِصْفَهُ وَلَئِنَّكَ مِنَ الَّذِينَ مَعَكَط (प २९, मज़मूल २०)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान** : बेशक़ तुम्हारा रब्ब जानता है कि तुम क़ियाम करते हो कभी दो तिहाई रात के क़रीब कभी आधी रात कभी तिहाई और एक जमाअत तुम्हारे साथ वाली। तो फिर पूछने लगे : “ऐ मेरे वालिदे मोहतरम ! मैं सुन रहा हूं कि इस में एक ऐसे गुरौह का ज़िक़रे ख़ैर भी है जो रातों को क़ियाम करता है।” तो वालिदे मोहतरम ने बताया : “जी हां ! वोह हमारे प्यारे आका, दो अ़लम के दाता عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى हैं।” तो आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى के सहाबए किराम أَجْمَعِينَ صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

ने अर्ज की : “उस चीज़ को तर्क करने में कोई भलाई नहीं जो रसूलुल्लाह ﷺ और आप ﷺ के सहाबए किराम رَضَوُا اللّٰهَ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِينَ किया करते थे चुनान्चे, इस के बा’द आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ के वालिदे मोहतरम सारी सारी रात कियाम करने लगे। एक रात आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ बेदार हुए और अपने वालिदे मोहतरम से अर्ज की : “मुझे भी सिखलाइये, मैं भी आप के साथ नमाज़ अदा करूंगा।” वालिद साहिब फ़रमाने लगे : “बेटे ! अभी तुम छोटे हो।” अर्ज की : “ऐ मेरे अब्बा जान ! जिस दिन लोग अलग अलग अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर हाज़िर होंगे ताकि अपने आ’माल देखें, और अगर मेरे रब्ब عَزَّوَجَلَّ ने मुझ से पूछ लिया, “ऐ अबू यज़ीद ! तुम ने क्या किया ?” तो मैं जवाब दूंगा : मैं ने अपने वालिदे मोहतरम से अर्ज की थी कि मुझे सिखलाइये ताकि मैं भी आप के साथ नमाज़ पढ़ा करूं तो इन्होंने ने मुझे कहा था अभी तुम छोटे हो। येह सुन कर फ़ौरन आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ के वालिदे मोहतरम कहने लगे : “नहीं, खुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं नहीं चाहता कि तुम ऐसी बात कहो।” फिर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ को वालिद साहिब ने नमाज़ सिखाई और आप रَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ भी रात का अकषर हिस्सा नमाज़ अदा करते रहते।

اللّٰهُ سُبْحٰن क्या शान है उन लोगों की जिन के ज़ौको शौक की सुवारी मक्सद के हुसूल के लिये रातों को चलती रहती यहां तक कि वोह अपनी मन्ज़िले मुराद पर पहुंच जाते और उन्हें इनायते खुदावन्दी हासिल हो जाती।

### जहन्नम की आग से बराअत नामा :

हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ रात के वक़्त ग़ैर आबाद मसाजिद में तशरीफ़ ले जाते और वहां नमाज़ अदा करते रहते जिस से **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ खुश होता। जब सहरा की वक़्त होता तो पेशानी ज़मीन पर रख कर रुख़सार मिट्टी पर रगड़ते हुए तुलूए फ़त्र तक रोते रहते। एक रात हस्बे मा’मूल जब आप ने ऐसा किया और फिर जब फ़ारिग़ हो कर सर उठाया तो एक सब्ज़ पर्चा मिला जिस का नूर आस्मान तक फैला हुवा था। उस पर लिखा था : “هَذِهِ بَرَاءَةٌ مِّنَ النَّارِ مِنَ الْمَلِكِ الْعَزِيزِ لِعَبْدِهِ عُمَرَ بْنِ عَبْدِ الْعَزِيزِ” या’नी खुदाए मालिक व ग़ालिब **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से येह “जहन्नम की आग से बराअत नामा” है जो उस के बन्दे उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ को अता हुवा है।

(تفسير روح البيان، اللّٰخّان، تحت الاية ٣، ج ٨، ص ٤٠٢)

### एक नौजवान की तौबा :

मन्कूल है “एक दिन हज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन अम्मार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار लोगों को वा’ज व नसीहत करने के लिये मिम्बर पर तशरीफ़ लाए और इन्हें अज़ाबे इलाही عَزَّوَجَلَّ से डराने और गुनाहों पर डांटने लगे। क़रीब था कि लोग शिद्दे इज्तिराब से तड़प तड़प कर मर जाते। इस

महफिल में एक गुनहगार नौजवान भी मौजूद था जो अपने गुनाहों की वजह से क़ब्र में उतरने के मुतअल्लिक़ काफ़ी परेशान था। जब वोह आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के इजतिमाअ से वापस गया तो यूँ लगता था जैसे बयान उस के दिल पर बहुत ज़ियादा अघर अन्दाज़ हो चुका हो। वोह अपने गुनाहों पर नादिम हो कर अपनी मां की खिदमत में हाज़िर हुवा और अर्ज़ की : “ऐ मेरी अम्मी जान ! तुम चाहती थी कि मैं शैतानी लहव लअूब और खुदाए रहमान عزّوجلّ की नाफ़रमानी छोड़ दूँ लिहाज़ा आज से मैं इसे तर्क करता हूँ।” और उस ने अपनी अम्मी जान को येह भी बताया कि मैं हज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन अम्मार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَفَّار के इजतिमाए पाक में हाज़िर हुवा और अपने गुनाहों पर बहुत नादिम हुवा। चुनान्चे, मां ने कहा : “ऐ मेरे बेटे ! तमाम खूबियां **अल्लाह** عزّوجلّ के लिये हैं जिस ने तुझे बड़े अच्छे अन्दाज़ से अपनी बारगाह की तरफ़ लौटाया और गुनाहों की बीमारी से शिफ़ा अता फ़रमाई और मुझे क़वी उम्मीद है कि **अल्लाह** عزّوجلّ मेरे तुझ पर रोने के सबब तुझ पर ज़रूर रहम फ़रमाएगा और तुझे क़बूल फ़रमा कर तुझ पर एहसान फ़रमाएगा, फिर उस ने पूछा : ऐ बेटे ! नसीहत भरा बयान सुनते वक़्त तेरा क्या हाल था ?” तो उस ने जवाब में चन्द अशआर पढ़े, जिन का मफ़हूम येह है :

“मैं ने तौबा के लिये अपना दामन फैला दिया है और अपने आप को मलामत करते हुए मुतीअ व फ़रमां बरदार बन गया हूँ। जब बयान करने वाले ने मेरे दिल को इताअते खुदावन्दी की तरफ़ बुलाया तो मेरे दिल के तमाम कुफ़ल (या'नी ताले ) खुल गए। ऐ मेरी अम्मी जान ! क्या मेरा मालिको मौला عزّوجلّ मेरी गुनाहों भरी जिन्दगी के बा वुजूद मुझे क़बूल फ़रमा लेगा ? हाए अफ़सोस ! अगर मेरा मालिक मुझे ना काम व ना मुराद वापस लौटा दे या अपनी बारगाह में हाज़िर होने से रोक दे तो मैं हलाक हो जाऊंगा।”

फिर वोह नौजवान दिन को रोज़े रखता और रातों को क़ियाम करता यहां तक कि उस का जिस्म लाग़र व कमज़ोर हो गया, गोश्त झड़ गया, हड्डियां खुश्क हो गईं और रंग ज़र्द हो गया। एक दिन उस की वालिदए मोहतरमा उस के लिये प्याले में सत्तू ले कर आई और इसरार करते हुए कहा : “मैं तुझे **अल्लाह** عزّوجلّ की क़सम दे कर कहती हूँ कि येह पी लो, तुम्हारा जिस्म बहुत मशक़त उठा चुका है।” चुनान्चे, मां की बात मानते हुए जब उस ने प्याला हाथ में लिया तो बेचैनी व परेशानी से रोने लगा और **अल्लाह** عزّوجلّ के इस फ़रमाने अल्लिशान को याद करने लगा :

(2) يَتَجَرَّعُهُ وَلَا يَكَادُ يُسِيغُهُ (پ ۱۳: ابراهيم: ۱۷) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान** : ब मुश्किल उस का थोड़ा थोड़ा घूंट लेगा और गले से निचे उतारने की उम्मीद न होगी।

फिर उस ने जोर जोर से रोना शुरूअ कर दिया और ज़मीन पर गिर गया। देखते ही देखते उस का ताइरे रूह क़फ़से उ़नसुरी से परवाज़ कर गया।

**अल्लाह** عزّوجلّ की क़सम ! येह है ख़शिश्यते इलाही عزّوجلّ का आ'ला मक़ाम। ऐ वोह शख़्स जिस ने अपनी सारी जिन्दगी येह कहते हुए जाएअ कर दी कि अ़न क़रीब तौबा कर के नेक आ'माल शुरूअ कर दूंगा।



ऐ रात की तारीकियों में अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ से तअल्लुक जोड़ने वाले पाक बाज बन्दो ! ऐ गुरौहे ताईबीन ! तमाम खूबियां उसी के लिये हैं जिस ने तुम्हें अपनी इबादत की तौफीक अता की और हमें पीछे रखा, सब ता'रीफें उसी के लिये हैं जिस ने तुम्हें अपना कुर्ब अता फरमाया और हमें दूर रखा । (क्योंकि वोह सब कुछ कर सकता है । चुनान्चे, फरमाने बारी तआला है :)

إِنْ نَحْنُ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ وَلَكِنَّ اللَّهَ يَمُنُّ عَلَىٰ ﴿٣﴾

مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ ط (پ ۱۳، ابراهيم: ۱۱)

तर्जमए कन्जुल ईमान : हम हैं तो तुम्हारी तरह इन्सान मगर **अल्लाह** अपने बन्दों में जिस पर चाहे एहसान फरमाता है ।

### सारंगी बजाने वाली लड़की की तौबा :

हजरते सय्यिदुना जुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَظِيمِ फरमाते हैं : एक दिन मेरा दिल कुछ बेचैनी सी महसूस कर रहा था । चुनान्चे, मैं दरयाए नील के कनारे सैर करने के लिये निकला । मेरे दिल में इसे उबूर करने का खयाल आया तो मैं ने किशती में सुवार हो कर अपना सर घुंटनों में छुपा लिया और फिर न उठाया । जब किशती दरया के दरमियान पहुंची तो मैं ने अपना सर घुंटनों से उठाया तो अपनी दाई जानिब एक हसीन लड़की दिखाई दी जिस की गोद में सारंगी पड़ी हुई थी उस के सामने शराब और दाई जानिब साफ़ सुथरे लिबास में मल्बूस एक खूब सूरत नौजवान खड़ा था । मैं ने दिल में कहा : ऐ नफ़्स ! तू सत्तर साल की इबादत के बा'द भी इस किशती में एक ऐसी शराबी कौम के दरमियान फंस गया है जो ए'लानिया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाफरमानी करती है । इतने में वोह लड़की मेरी तरफ़ मुतवज्जेह हुई और बोली : “ऐ बुजुर्ग इन्सान ! क्या आप कुछ पीना चाहेंगे ?” मैं ने जवाब दिया : “अगर मेरे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे कुछ पिलाया तो पी लूंगा ।” चुनान्चे, उस लड़की ने अपने गुलाम को इशारा किया कि वोह मेरे लिये शराब का प्याला भर दे, उस ने हुक्म के मुताबिक़ शराब का जाम भर कर मुझे पेश कर दिया । जब प्याला मेरे हाथ में आया तो मुझ पर कपकपी तारी हो गई । लड़की ने पूछा : “ऐ शैख ! शराब क्यों नहीं पीते ?” क्या तुम चाहते हो कि मैं गाना गाऊं ताकि तुम शराब पियो, फिर तुम गाना गाओ ताकि हम शराब पियें ? मैं ने कहा : मैं नग़मा सुनाता हूं, तुम शराब पियो । वोह बोली : “ठीक है, तुम सुनाओ, हम तुम्हारा नग़मा सुनते हैं । फिर मैं ने कुछ अशआर पढ़े, जिन का मफ़हूम येह है :

“कुरआने पाक पढ़ने वाले फ़ारी की तिलावत रात की तारीकी में गाना गाने वाली लड़की और बांसरी से बढ़ कर खूब सूरत है । ऐ कुरआने मजीद को दिलकश आवाज़ से पढ़ने वाले ! तेरी क्या शान है ! इस खूब सूरत क़िराअत को रब्बे जलील عَزَّوَجَلَّ समाअत फरमा रहा है, तेरे आंसू बह रहे हैं, रुख़सार मिट्टी में लत पत हैं और दिल महबूबते इलाही عَزَّوَجَلَّ में मगन, येह कह रहा है : ऐ मेरे मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ मुझे गुनाहों के बोझ ने तुझ से ग़ाफ़िल रखा । मेरे गुनाह बख़्श दे क्योंकि अब येह बहुत बढ़ चुके हैं । ऐ मेरे रब्बे जलील عَزَّوَجَلَّ तू ने हमेशा मेरे ऐबों पर पर्दा डाला । पस

ऐसे कारिये कुरआन का ठिकाना कल बरोजे कियामत जन्नत में होगा और वोह कुर्बे इलाही عَزَّوَجَلَّ पाएगा और अपनी रफीकए जन्नत के साथ रहेगा। ऐ उस के लिये बेहतरीन इख्तियार करने वाले जो तुझे इख्तियार करता है !”

जब उस लड़की ने ऐसे पुर अषर अशआर सुने तो बे होश हो कर गिर पड़ी। जब इफ़का हुवा तो रेशमी लिबास तबदील कर के सारंगी तोड़ दी और शराब दरया में बहा दी और फिर अर्ज करने लगी : “ऐ मोहतरम बुजुर्ग ! अगर मैं तौबा कर लूं तो क्या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे क़बूल फ़रमा लेगा ? मैं ने कहा : “क्यूं नहीं, जब कि वोह अपनी मुक़द्दस किताब में खुद इरशाद फ़रमाता है :

وَهُوَ الَّذِي يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهِ وَيَعْفُو (4)

عَنِ السَّيِّئَاتِ (प २०, शूरु: २०)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और वोही है जो अपने बन्दों की तौबा क़बूल फ़रमाता और गुनाहों से दरगुज़र फ़रमाता है।

फिर उस ने मुंह से निकाब हटाया और कहने लगी : “ऐ मोहतरम बुजुर्ग ! आप मेरी इस्ताह का सबब बने हैं लिहाज़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में मेरे गुज़स्ता गुनाहों की मुआफ़ी और दरगुज़र का सुवाल करें।” हज़रते सय्यिदुना जुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : “फिर हम सब किशती से उतर कर एक दूसरे से जुदा हो गए। इस के बा'द वोह लड़की मुझे कहीं नज़र न आई। फिर एक दफ़आ मैं हज़ की सआदत से बहरा मन्द हुवा तो वहां एक परागन्दा बालों वाली लड़की देखी। वोह का'बतुल्लाह शरीफ़ تَكْرِيماً وَتَعْظِيماً رَازَاهَا اللَّهُ شَرَفًاوُ تَعْظِيماً के ग़िलाफ़ से लिपट कर रो रो कर अर्ज कर रही थी : “ऐ मेरे मा'बूद ! मेरी रात की मदहोशी और नशे का वासिता ! आज मेरे गुनाहों को बख़्श दे।” मैं ने कहा : “रुक जा ! ऐसे इज़्ज़त वाले मक़ाम पर कैसा कलाम कर रही हो ?” उस ने जवाब दिया : “ऐ जुन्नून ! मुझ से दूर हो जाओ ! क्यूंकि जब मैं ने गुज़स्ता रात खुशी व मसरत से महब्बत हकीकी का जाम पिया तो आज यूं सुब्ह की, कि अपने आका व मौला عَزَّوَجَلَّ की महब्बत में मदहोश थी।” मैं ने पूछा : “तुम्हें मेरा नाम किस ने बताया।” कहने लगी : “मैं वोही लड़की हूं जो मिस्र के दरयाए नील में आप के हाथों पर ताइब हुई थी।” मैंने पूछा : “तुम्हारा हुस्नो जमाल कहां गया ?” तो उस ने जवाब में दर्जे ज़ैल अशआर पढ़े :

دَهَبَتْ لَدُنَّ الصَّبَا فِي الْمَعَاصِي وَبَقِيَ بَعْدَ ذَلِكَ أَخَذَ النَّوَاصِي  
وَمَضَى الْحُسْنُ وَالْجَمَالُ وَمَالِي عَمَلٌ أَرْتَجِيهِ يَوْمَ الْخَلَاصِ  
غَيْرَ ظَنِّي بِأَلَّهِ وَهُوَ جَمِيلٌ فِيهِ أَخْلَصْتُ غَايَةَ الْإِحْلَاصِ

तर्जमा : (1).....बचपन की लज़्ज़त गुनाहों में ख़त्म हो गई और इस के बा'द सिर्फ़ अफ़्सोस से पेशानी पकड़ना बाकी रह गया है।

(2).....सब हुस्नो जमाल चला गया और मेरे पास कोई ऐसा अमल भी नहीं जिस की वजह से बरोजे कियामत नजात की उम्मीद कर सकूं।

(3).....अलबत्ता **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से हुस्ने ज़न की दौलत है और उस में मेरी निय्यत बिल्कुल ख़ालिस है।

इस के बा'द कहने लगी : “ऐ जुन्नून ! मेरे वापस आने तक इसी जगह ठहरिये ।” फिर वोह एक लम्हे में गाइब हो गई । जब वापस आई तो उस के हाथ में एक प्लेट थी जिस में एक तरफ़ तर खजूरें और दूसरी तरफ़ अन्जीर और अंगूर रखे हुए थे । उस ने प्लेट मेरे सामने रख दी । मैं ने अपने दिल में सोचा कि सत्तर साल इबादत करने के बा वुजूद मैं इस मक़ाम तक न पहुंच सका जहां येह लड़की चन्द दिनों में पहुंच गई । फिर कहने लगी : “ऐ शैख़ ! जब मैं ने बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में हाज़िर हो कर गुनाहों का ए'तिराफ़ किया और सच्ची तौबा की तो उस ने मुझे सच्चा तवक्कुल अता फ़रमाया । फिर उस ने मज़ीद अशआर पढ़े :

عَشْ غَرِيْبًا وَلَا تَذَلُّ لِحَلْقِي  
وَأَطْلُبِ الرِّزْقَ فِي بِلَادِ الْحَبِيْبِ  
ثُمَّ يَرْفُئِ الْبِلَادِ شَرْفًا وَغَرَبًا  
وَتَوَكَّلْ عَلَى الْقَرِيْبِ الْمُحِيْبِ  
فَعَسَى أَنْ تَنَالَ مَا تَرْجُوهُ  
يَسِدِ اللَّطْفِ مِنْ مَّكَانٍ قَرِيْبِ

तर्जमा : (1).....दुन्या में अजनबी की सी जिन्दगी गुज़ार, मख़्लूक के सामने कभी न झुक और अपना रिज़क़ महबूबे हकीकी عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तलाश कर ।

(2).....फिर मशरिफ़ व मगरिब के मुमालिक में सैरो सियाहत कर और हमेशा शह रग से ज़ियादा करीब और दुआएं कबूल करने वाले पर ही भरोसा कर ।

(3).....करीब है कि तू अपने नज़दीक से ही **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दस्ते फज़ल व एहसान से उस चीज़ को पा ले जिस की तुझे उम्मीद है ।

हज़रते सय्यिदुना जुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : “फिर मैं उस की तरफ़ मुतवज्जेह हुवा लेकिन वोह आंखों से ओझल हो चुकी थी ।”

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! येह हैं ताइबीन की सिफ़ात और मुक़र्रबीन की अलामात । ऐ भाई ! अपने मौला की बारगाह से कभी मत हटना अगर्चे वोह तुझे धुतकार दे और उस के बाबे रहमत से कभी क़दम न हटाना अगर्चे वोह तुझे कबूल न करे ।

**हज़रते सय्यिदुना आदम** عَلَيْهِ السَّلَام की तौबा :

मन्कूल है, जब हज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ السَّلَام ने ममनूआ दरख़्त से खाया और आप عَلَيْهِ السَّلَام को रब्ब عَزَّوَجَلَّ से किया हुवा वा'दा भुला दिया गया तो जन्नती लिबास अलाहिदा हो गया । वहां की हर चीज़ आप عَلَيْهِ السَّلَام से ना मानूस हो गई । चुनान्वे, आप عَلَيْهِ السَّلَام जल्दी से भागते हुए जन्नती दरख़्तों के पत्तों में छुप गए । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने पूछा : “ऐ आदम ! क्या तुम मुझ से भागते हो ?” अर्ज़ की : “नहीं, ऐ मेरे रब्ब عَزَّوَجَلَّ बल्कि मुझे तुझ से हया आती है ।” तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : “क्या मैं ने तुझे अपने दस्ते कुदरत से पैदा नहीं किया ? क्या मैं ने तेरे लिये मलाइका को सजदा करने का हुक्म न दिया ? क्या मैं ने तुझ में अपनी तरफ़ की ख़ास रूह न फूँकी ? क्या मैं ने तुझे अपने कुर्ब में जगह अता न फ़रमाई ? क्या मैं ने तेरे लिये अपनी जन्नत मुबाह न की ? पस यहां से अलग हो जा क्यूंकि



लगजिश वाला यहां नहीं रहता ।” इस पर हज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام जिस क़दर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने चाहा, रोते रहे । फिर अर्ज की : “ऐ मेरे मा’बूद ! अगर तू मुझ पर रहम न करेगा तो कौन करेगा ?” तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने वही फ़रमाई कि यूँ दुआ कर :

“سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ عَمِلْتُ شَوْءًا وَكَلِمَةً نَفْسِي قُتِبَ عَلَيَّ إِنَّكَ أَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ”

या’नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तू हर ऐब से पाक है और ता’रीफ़ के लाइफ़ तेरी ही ज़ात है, तेरे सिवा कोई मा’बूद नहीं, मुझ से लगजिश हुई और मैं ने अपनी जान पर ज़ियादती की पस तू मेरी तौबा क़बूल फ़रमा । बेशक तू बहुत तौबा क़बूल फ़रमाने वाला और मेहरबान है ।”

(मज़कूरा कलिमात के मुतअल्लिक) हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَاحِد** और मुफ़स्सिरीन के एक गुरौह का कोल है कि “येह वोह कलिमात हैं जो हज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ से सीखे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की तौबा क़बूल फ़रमाई ।”

**रहमतें खुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ मां की महब्वत से बढ़ कर है :**

हज़रते सय्यिदुना का’बुल अहबार رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ रिवायत फ़रमाते हैं : “बरोजे क़ियामत जब अद्न के समन्दर की गहराई से आग निकलेगी तो तमाम लोग मैदाने महशर की तरफ़ हांके जाएंगे । मैदाने क़ियामत की होलनाकियों से लोग मुतहय्यिर, प्यासे, मदहोश और कांपते होंगे कि इसी दौरान **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तजल्ली फ़रमाएगा तो उस के नूर से ज़मीन रोशन हो जाएगी और मख़्लूक एक दूसरे को देख लेगी और मां अपने बेटे को देखेगी जिस से दुन्या में वोह बहुत महब्वत करती थी । वोह उसे पहचान कर कहेगी : “ऐ मेरे बेटे ! क्या मेरा पेट तेरी पनाह गाह न था ? क्या मेरी गोद तेरे लिये नर्म बिस्तर न थी ? क्या मेरा दूध तेरे लिये सैराबी का बाइष न था ?” तो बेटा पूछेगा : “ऐ मेरी मां ! तू क्या चाहती है ?” वोह कहेगी : “मेरे गुनाह मुझ पर भारी हो गए हैं तू इन में से सिर्फ़ एक गुनाह उठा ले ।” तो वोह कहेगा : “येह बात नामुमकिन है ! आज हर जान अपने अमलों में गिरवी (या’नी रेहन) है । ऐ मेरी मां ! अगर मैं तेरा बोझ उठा लूं तो मेरा बोझ कौन उठाएगा इसी दौरान **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की जानिब से एक मुनादी एलान करेगा : ऐ फुलां बिन फुलां ! आओ, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में पेश हो जाओ ।” येह ए’लान सुनते ही उस शख्स का रंग मुतगय्यिर हो जाएगा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से हया के सबब इस के आ’ज़ा बेचैन हो जाएंगे । जब मां अपने बेटे की घबराहट मुलाहज़ा करेगी तो पूछेगी : “ऐ मेरे बेटे ! क्या हुवा ?” वोह जवाब में कहेगा : “ऐ मेरी मां ! मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में पेश होने के लिये बुलाया गया है, अब मैं उस से भाग कर कहा छुपूं या मेरा छुटकारा कैसे हो ?” इसी दौरान दो फ़िरिशते उस की तरफ़ बढ़ेंगे और उसे पकड़ कर घसीटना शुरू कर देंगे । जब उस की मां देखेगी तो उसे सीने की तरफ़ खींचेगी और अपने बालों से छुपाएगी और अपनी पूरी ताक़त से फ़िरिशतों को उस से दूर करने की कोशिश करेगी लेकिन दूर न कर सकेगी । जब देखेगी कि वोह उन से अपना बेटा नहीं ले सकती

तो रोते हुए फ़िरिश्तों से कहेगी : “उस ज़ात की क़सम जिस ने मुझे मेरी क़ब्र से उठाया है ! अगर मेरे बस में होता तो मैं तुम दोनों को अपना बेटा न ले जाने देती ।” फिर वोह उसे रोते हुए अलवदाअ करेगी और कहेगी : “ऐ मेरे बेटे ! मैं तुझे उस ज़ात की क़सम देती हूँ जिस ने अपनी बारगाह में पेशी और हिसाब किताब के लिये तुझे बुलाया ! अगर तुझे नजात मिले तो मुझे मत भूलना । मैं बहुत देर से खड़ी हूँ, बहुत हसरत ज़दा हूँ और मेरी तकलीफ़ और प्यास बहुत शिदत इख़्तियार कर गई है ।”

हज़रते सय्यिदुना का’बुल अहबार رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं : “फिर दो फ़िरिश्ते उस के बेटे को “सिद्रतुल मुन्तहा” पर मुक़र्रर फ़िरिश्ते के सिपुर्द कर देंगे ।” वोह पूछेगा : “तुम्हारा तअल्लुक किस उम्मत से है ?” तो लड़का जवाब में कहेगा : “मैं हज़रते सय्यिदुना मुहम्मदे मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का उम्मती हूँ ।” फिरिश्ता कहेगा : “ख़ुशख़बरी है तेरे लिये और उम्मते मुहम्मदिया عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के लिये ।” फिर वोह फ़िरिश्ता उसे नूर में दाख़िल कर देगा । कोई अन्दाज़े से नहीं जान सकता कि वोह कहां जाएगा, दाएं या बाएं, आगे या पीछे । (وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِالصَّوَابِ) अचानक उसे **अल्लाह** غَرْوَجَل की तरफ़ से एक आवाज़ सुनाई देगी : “ठहर जा ! मैं तेरा रब्ब हूँ, अपने आ’जा को पुर सुकून रहने दे और अपने दिल को इतमीनान दे । मेरे इज़्ज़त व जलाल की क़सम ! तुझे तेरी मां अपनी तरफ़ खींच रही थी और अपने सीने से चिमटा रही थी तो मैं तुझ पर इस से भी बढ़ कर शफ़ीक़ हूँ ।” फिर इरशाद होगा : “ऐ मेरे बन्दे ! अपना नामए आ’माल पढ़ ।” तो वोह उसे पढ़ेगा लेकिन जब कोई गुनाह पाएगा तो आवाज़ आहिस्ता कर लेगा और जब कोई नेकी पाएगा तो आवाज़ बुलन्द कर लेगा । तो **अल्लाह** غَرْوَجَل फ़रमाएगा : “ऐ मेरे बन्दे ! अपनी नेकी को बुलन्द आवाज़ से और बुराई को पस्त आवाज़ से क्यूं पढ़ता है ?” तो वोह रोते हुए अर्ज़ करेगा : “या **अल्लाह** غَرْوَجَل मुझे मा’लूम है कि तू अच्छाई को ज़ाहिर करता है और बुराई की पर्दा पोशी फ़रमाता है ।”

फिर **अल्लाह** غَرْوَجَل फ़रमाएगा : “ऐ मेरे बन्दे ! मैं ने तेरे गुनाहों और ऐबों को मख़्लूक से कैसे पोशीदा रखा जब कि तू ने इन के ज़रीए मेरा मुकाबला किया । क्या तुझे मा’लूम न था कि मैं तुझ से बा ख़बर था और तुझे देख रहा था ?” वोह अर्ज़ करेगा : “ऐ मेरे मालिको मौला غَرْوَجَل मुझ में तेरी डांट डपट सुनने की ताक़त नहीं तू मुझे जहन्नम में जाने का हुक्म दे दे ।” **अल्लाह** غَرْوَجَل फ़रमाएगा : “अगर मैं तुझे जहन्नम में जाने का हुक्म दे दूँ तो मेरा जूदो करम और अफ़वो दर गुज़र किस के लिये होगा ? (फिर **अल्लाह** غَرْوَجَل फ़रमाएगा ) ऐ फ़िरिश्तो ! मेरे बन्दे को मेरे फ़ज़्लो रहमत से जन्नत में ले जाओ ।” वोह फिर अर्ज़ करेगा : “ऐ मेरे मा’बूद व मालिक غَرْوَجَل मेरी वालिदा दुन्या में मुझे बहुत चाहती थी और मुझ पर बहुत शफ़क़त करती थी और आज उस ने मुझे देखा तो मुझ से मदद मांगी और चाहा कि मैं उस की मदद करूँ । ऐ मेरे मौला غَرْوَجَل अगर

तू ने मुझे मुआफ़ कर दिया है तो मेरा ठिकाना मेरे बजाए मेरी वालिदा को बख़्श दे, अब वोह जिस अज़ाब में है उस से बरदाश्त नहीं हो रहा।” तो **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : “मेरे इज़्ज़तो जलाल की क़सम ! मैं तुम दोनों को एक दूसरे से जुदा नहीं करता बल्कि मैं तुम पर रहूम कर चुका हूं।” (फिर फ़रमाएगा) “ऐ मेरे फ़िरिश्तो ! इन दोनों को मेरी जन्नत में ले जाओ और मैं सब से बढ़ कर रहूम फ़रमाने वाला हूं।”

وَصَلَّى اللّٰهُ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِهِ وَصَحْبِهِ أَجْمَعِينَ



### दर्दे सर का इलाज

कैसरे रूम ने अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ को ख़त लिखा कि मुझे दाइमी दर्दे सर की शिकायत है अगर आप के पास इस की दवा हो तो भेज दीजिये ! हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने उस को एक टोपी भेज दी। कैसरे रूम उस टोपी को पहनता तो उस का दर्दे सर काफ़ूर हो जाता और जब सर से उतारता तो दर्दे सर फिर लौट आता। उसे बड़ा तअज्जुब हुआ। आख़िरे कार उस ने उस टोपी को उधेडा तो उस में से एक काग़ज़ बर आमद हुआ जिस पर بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ लिखा था। (तफ़्सीरे कबीर जि. 1 स. 155)



## बयान 36 : मुबारक “दरयाए नील” का जिक्र खैर हमरे बारी तअाला :

सब खूबियां **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये जिस ने ज़ालिमों को हलाक किया। बन्दों को सताने वालों का रो'ब व दबदबा खाक में मिला दिया। उस ने दाने को फाड़ कर इस से गन्दुम को उगाया। उस ने खुश्क व तर घास उगाया और जानवरों के लिये मुकर्रर फ़रमाया। और (उस का फ़रमाने आलीशान है) (الفرقان: १९) وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ مِنَ الْمَاءِ بَشَرًا فَجَعَلَهُ نَسَبًا وَصِهْرًا ط) तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और वोही है जिस ने पानी से बनाया आदमी फिर उस के रिश्ते और सुसराल मुकर्रर की।”....सारी काइनात उस के फ़ज़ल के गुन गा रही है। पस येह कोई तअज़्जुब की बात नहीं कि ज़बानें उस के शुक्र में उस के ज़िक्र से तर हैं। और (फ़रमाने इलाही عَزَّوَجَلَّ है) (الزمر: २३) تَرْجَمَ كَنْزُুলُ اِئْمَانٍ : फिर इस से ज़मीन में चश्मे बनाए।” ..... और उन्हें अपनी हिक्मत के मुताबिक़ लम्बाई और चौड़ाई में तक्सीम फ़रमा दिया तो उन से नहरें बह निकलीं और कच्चे तालाबों से पानी ज़ोर व जोश के साथ निकलने लगा। और उस ने तुम्हारे लिये “दरयाए नील” को एक बड़ी निशानी बनाया। इस की मजबूती तअज़्जुब खेज़, बहाव खुशगवार और खुशबू निहायत पाकीज़ा है। अज़मत व शान का हामिल है। **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ ने इसे अपनी कुदरत व हिक्मत के अज़ाइब व ग़राइब पर दलील बनाया है।

पाक है वोह ज़ात जिस ने इस दरया को मिस्र के साथ ख़ास फ़रमाया : येह अज़ीम दरया बड़ा तअज़्जुब खेज़ है कि गरमियों में भर जाता है, सर्दियों में उतर जाता है, जब दूसरे पानी रुक जाते हैं तो येह बहने लगता है और जब सर्दी ज़ाहिर होने लगती है तो येह दरया हाजात व मक़ासिद बर लाता है। दिलों को फ़रहत व मसरत से लबरेज़ करता है। पस जब किसी लम्बी जुदाई के सबब इस में इज़तिराब व बे क़रारी पैदा होती है तो ग़ैरत की ज़ियादती वाले की तरह इस की भी ख़्वाहिश बढ़ जाती है और खुश्की व तरी की खुशियों की मिष्ट मौजें मारता है। तो ग़ौर करो कि मौजें मारने के अय्याम में इस की मिक्दार की हालत कैसी होगी। उस का बन्द दहाना (دِهَان) खेलने से क़ब्ल ही कोई तदबीर कर लो। क्यूंकि येह जब भी कोई लम्बा सांस लेता है तो लम्बाई व चौड़ाई में गढ़ों को भर देता है। शहरों को अन्दर बाहर, चहार तरफ़ से घेर लेता है। हर बन्दे को इस के अषरात पहुंचते हैं। तो इस से निकलने वाली छोटी नहर टूटने से कितने तकब्बुर टूट जाते हैं। और येह दरया अपनी रवानी से तुम्हारे ग़म दूर कर देता है और अपने बहाव से तुम्हारा गर्म कलेजा ठंडा कर देता है।

जब बागात ख़ाली हो जाते हैं और कुंवे कषरत के बा'द कमी की शिकायत करते हैं और इन की प्यास अत्राफ़ में नमी व सख़्ती से हंगामा करती है तो तौबा करने पर फ़रयाद रस करम फ़रमाता है। (और इरशादे बारी तअाला है) (النمل: ३०) اِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ط) (الم: २०) (نشر: ६)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :** बेशक दुश्वारी के साथ आसानी है । ....और उस ने अपनी तरफ़ रुजूअ करने वाले पर नर्म चलने वाली हवाओं के साथ अपनी अता व बरिख़ाश भेजी । चुनान्वे, ज़मीन खुशक हो जाने के बा'द तरो ताज़ा और सर सबज़ व शादाब हो गई । और इस ने अपनी मुफ़िलसी व नादारी के बा'द सबज़ हुल्ले पा लिये (या'नी सबज़ा ज़ार हो गई) ।

पाक है वोह जात जिस की कुदरत की मिषाल नहीं । उस की हिक्मत का कोई मुक़ाबिल नहीं । उस की ने'मत का शुमार नहीं । वोह गुनहगारों को बहुत ज़ियादा मुआफ़ फ़रमाने वाला और फ़रमा बरदारों को बहुत ज़ियादा अज़्रो षवाब अता फ़रमाने वाला है । उस की बारगाह से मुंह मोड़ने वाला नुक़सान व ख़सारा ही उठाता है और उस के दर से फिरने वाला अपने शीरें मशरूब को भी कड़वा पाता है । तो ऐ सरकशी व नाफ़रमानी की चरागाह में भटकने वाले ! बेशक तू ने बहुत बुरी बात का इर्तिकाब किया । और ऐ कुफ़्र व बेदीनी के बयाबान में सरगर्दा ! बेशक तू ऐसी बात पर अड़ा हुवा है जिस की तुझे ख़बर नहीं । क्या तुझे हलाकत का डर नहीं ? (सुन वोह क्या फ़रमा रहा है :) (پ ۱۹، النمل: ۵۰)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :** और इन्होंने ने अपना सा मक्र किया और हम ने अपनी खुफ़्या तदबीर फ़रमाई और वोह गाफ़िल रहे । क़सम ब खुदा ! उस ने तेरे लिये हिदायत का रास्ता बिल्कुल वाजेह फ़रमा दिया है तो अब किसी गुनहगार को उज़्र की गुन्जाइश नहीं । और उस ने येह बात कुरआने हकीम में वाजेह फ़रमा दी है : **وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ ۚ وَذُرْ خُمُودًا** **तर्जमए कन्जुल ईमान :** और कोई बोझ उठाने वाली जान किसी दूसरे का बोझ न उठाएगी । <sup>(1)</sup> आरिफ़ीन (औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللَّهُ تَعَالَى) की ख़ूबी व कमाल, **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ की अता व मेहरबानी है कि वोह अपने मालिको मौला عَزَّ وَجَلَّ की इबादत के लिये दुन्या की फ़रैब कारियों से बेदार व होशियार रहे और इन्होंने ने अपने अवकात (या'नी रात दिन) को उस की तस्बीह व ज़िक्र में फ़ना कर डाला । **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ ने इन के दिलों को अपनी महब्बत में गर्मा कर अंगारा कर दिया । और इन पर अपनी महब्बत के जामों से बार बार शराबे महब्बत को घुमाया । पस जब साकी ने शराबे महब्बत को घुमा दिया और गाने वालों ने ज़िक्रे इलाही عَزَّ وَجَلَّ के नग़मात गाए तो आरिफ़ीन (औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللَّهُ تَعَالَى) इन आवाज़ों की तरफ़ माइल हो गए कि कोई तरब व मदहोशी में **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ को याद कर रहा है ।

तो ऐ सुनने वाले ! निगाहे फ़िक्र से देख कि मख़्लूक के आ़म नफ़अ के लिये कुदरत ने किस तरह दरयाए नील को मिस्र के बालाई शहरों से गुज़ारा । येह तमाम अश्या से ज़ियादा

①...**मुफ़स्सिरे शहीर** ख़लीफ़ आ'ला हज़रत सदरुल अफ़ज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं "मा'ना येह है कि रोज़े क़ियामत हर एक जान पर उसी के गुनाहों का बार होगा, जो उस ने किये हैं और कोई जान किसी दूसरे के इवज़ न पकड़ी जाएगी । अलबत्ता जो गुमराह करने वाले हैं उन के गुमराह करने से जो लोग गुमराह हुए, उन की तमाम गुमराहियों का बारां गुमराहों पर भी होगा और उन गुमराह करने वालों पर भी जैसा की कलामे करीम में इरशाद हुवा (العنکبوت: ۱۳) **وَلَيَحْمِلُنَّ أَثْقَالَهُمْ وَأَثْقَالًا مَّعَ أَثْقَالِهِمْ** और दर हकीकत येह उन की अपनी कमाई है दूसरे की नहीं ।"

तअज्जुब खेज और अनोखा है, इस का मन्ज़र हसीन तर और उम्दा तरीन है और उस का पानी सब पानियों से ज़ियादा ठन्डा और मीठा है। पाकी है उसे जिस ने इस के ज़रीए खयालात को पुख़्ता किया, आंखों को क़रार बख़्शा और अरवाह के लिये ह्यात का सामान किया। पस येह कुदरते इलाही عَزَّوَجَلَّ से फैल गया। पौदों और दरख़्तों को उगाने के लिये जहतों और अतराफ़ में बहने लगा। और उस के इन्आम के दरया से इक्राम की नहरों की तरफ़ चलने लगा। (चुनान्वे, वोह फ़रमाता है:)

هُوَ الَّذِي أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً لَكُمْ مِنْهُ شَرَابٌ وَمِنْهُ شَجَرٌ فِيهِ تُسِيمُونَ ۝ يُثْبِتُ لَكُمْ بِهِ الزَّرْعَ وَالزَّيْتُونَ وَالنَّخِيلَ وَالْأَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ (پ ۱۴، النحل: ۱۱۰)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** वोही है जिस ने आस्मान से पानी उतारा इस से तुम्हारा पीना है और इस से दरख़्त हैं जिन से चराते हो इस पानी से तुम्हारे लिये खेती उगाता है और जैतून और खजूर और अंगूर और हर किस्म के फल बेशक इस में निशानी है ध्यान करने वालों को।”

तो वोही ज़ात है जिस ने इस दरया को अपनी हिक्मत से जारी और अपनी कुदरत से ज़ाहिर फ़रमाया। उस ने बन्दों के गुमानों को नाकाम नहीं किया। और उस ने हुक्क व हुदूद की पासदारी के सबब उस की चमकती मौजों को हुस्ने निज़ाम व क़ानून के तहत रुकावट के खातिमे और इस का दहाना (فساده) खोलने की इजाज़त दे दी। और उस ने रुकावट को तोड़ कर हर ग़मगीन के दिल को जोड़ दिया। और इस दरया की बरकतें कच्चे तालाबों और नहरों को आम मिलने लगीं। और वोह ब हुक्मे इलाही शहरों की तरफ़ बहने लगा। पस प्यासे इस से सैराब होने लगे और पेट इसे देख कर भरने लगे। (चुनान्वे, इरशादे बारी तआला है:)

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا نَسُوقُ الْمَاءَ إِلَى الْأَرْضِ الْجُرُزِ فَنُخْرِجُ بِهِ زَرْعًا تَأْكُلُ مِنْهُ أَنْعَامُهُمْ وَأَنْفُسُهُمْ ۖ أَفَلَا يُبْصِرُونَ (پ ۲۱، السجده: ۲۷)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और क्या नहीं देखते कि हम पानी भेजते हैं खुशक ज़मीन की तरफ़ फिर इस से खेती निकालते हैं कि उस में से उन के चोपाए और वोह खुद खाते हैं तो क्या उन्हें सुझता नहीं।

**दरयाए नील के मुतअल्लिक हिक्कयत :**

मन्कूल है कि फ़िरऔन ज़मीन में सरकशी के साथ साथ खुदाई का भी दा'वेदार था। उस ने अपनी क़ौम को दरयाए नील के ज़रीए गुमराह कर रखा था वोह यूं कि जब **يَوْمَ نَبْرُؤُ** (या'नी आतश परस्तों की ईद का दिन) आता और दरयाए नील इन्तिहाई ठाठें मारने लगता तो लोगों में येह ए'लान कर दिया जाता कि तुम्हारे लिये फ़िरऔन ने दरयाए नील को पुर जोश कर दिया है लिहाज़ा तुम उसे सजदा करो तो जाहिल लोग उस की बात पर यकीन करते हुए उसे सजदा करते। एक साल दरयाए नील का पानी कम होना शुरूअ हुवा तो **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ ने उसे पुर शोर मौजें मारने की इजाज़त न दी। लोग भूक के सबब निढ़ाल हो गए और क़हत में मुब्तला हो गए। चुनान्वे, पूरी क़ौम इकठ्ठी हो कर फ़िरऔन के पास गई और उस से मुतालबा किया, “हमारे अहलो इयाल, अवलाद और जानवर सब हलाक हुए जा रहे हैं, अगर तुम हमारे खुदा हो तो दरयाए नील का पानी जारी कर दो।”



तो उस लईन ने जवाब दिया : ऐसा ही होगा ।” फिर वोह ऊनी लिबास, बालों की बनी हुई टोपी और राख भरी थेली ले कर एक वीरान जज़ीरे की तरफ़ चला गया जो अब तक “मक़यास” के नाम से मशहूर व मा’रूफ़ है । और हुक्म दिया कि उस की रिआया और क़ौम में से कोई शख्स उस के पीछे न आए । उस ने जज़ीरे में दाख़िल होते ही शाही लिबास और सर का ताज उतार कर ऊनी लिबास और बालों से बनी हुई टोपी पहन ली और राख ज़मीन पर बिख़ैर कर इस पर लोट पोट होने लगा और रोते हुए बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में सजदा रेज़ हो गया और अपना चेहरा राख पर लत-पत करते हुए कहने लगा :

“ऐ मेरे मालिको मौला ! मैं जानता हूँ कि तू ही ज़मीनो आस्मान का मालिक और अव्वलीन व आख़िरीन का मा’बूद है । लेकिन मुझ पर बदबख़्ती ग़ालिब आ गई, मैं तेरी नाफ़रमानी व सर कशी में बहुत आगे बढ़ गया । तू मेरा मा’बूद है और मैं तेरा बन्दा हूँ, तू ने मेरे मुतअल्लिक़ जो फ़ैसला फ़रमा दिया, फ़रमा दिया । मौला ! अब मुझे मेरी क़ौम में ज़लील व रुस्वा न कर और तू ही सब से बढ़ कर करम फ़रमाने वाला है ।”

अभी फ़िरऔन की बात पूरी न हुई थी कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उसी वक़्त दरयाए नील को जारी होने का हुक्म दे दिया और उसे फ़रमाया कि जहां तक फ़िरऔन जाए वोह भी उस के साथ साथ चले । चुनान्चे, फ़िरऔन अपनी क़ौम में इस हालत में जा रहा था कि दरया का पानी उस के दामन को तर करते हुए साथ साथ जा रहा था और लोग अपनी आस्तियों को पानी और कीचड़ में डुबो कर खुशी से एक दूसरे को मार रहे थे । उस वक़्त से अब तक मिस्र में खुशी मनाने का येह तरीक़ा राइज है और अहले मिस्र इसे **यौमे नव रोज़** या’नी दरयाए नील की तुग़यानी का दिन कहते हैं ।

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** देखा आपने ! फ़िरऔन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का दुश्मन था जो लम्हा भर उस के लिये मुख़्लिस हुवा तो इसे बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ से त़लब के मुताबिक़ अता किया गया, इस की पर्दा पोशी की गई और क़ौम में इस को ज़लीलो रुस्वा होने से बचा लिया गया । तो जो शख्स सारी ज़िन्दगी इख़्लास से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इताअत व इबादत करता रहे तो वोह उसे किस क़दर इन्आमात से नवाजेगा और उसे आख़िरत में क्या कुछ अता न फ़रमाएगा । इसी तरह जब नाफ़रमान बन्दा अपने गुनाहों से ताइब हो जाए और अपनी ख़ामियों और गुनाहों का ए’तिराफ़ कर ले । बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में ऊंची और आहिस्ता आवाज़ से गिड़ गिड़ाए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस से पाक है कि बरोजे क़ियामत उसे अज़ाब दे या सब के सामने ज़लीलो रुस्वा करे ।

**रोजेदार पर ख़ास इनायते ख़ुदावन्दी** عَزَّوَجَلَّ :

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मसऊद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : “जब क़ियामत का दिन होगा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किसी बन्दे से भलाई का इरादा फ़रमाएगा तो उसे ए’लानिया तौर पर नामए आ’माल दे कर फ़रमाएगा : “इसे आहिस्ता आवाज़ में पढ़ ।” ताकि मख़्लूक में

जलीलो ख़्वार न हो। पस वोह अपना नामए आ'माल इस क़दर पस्त आवाज़ में पढ़ेगा कि कोई भी न सुन सकेगा। फिरिश्ते अर्ज़ करेंगे : “ऐ हमारे मा'बूदे बर हक़ ! येह ऐसी इनायत है जो पहले किसी नाफ़रमान पर नहीं की गई जब कि तू ने अपने नाफ़रमान को अज़ाब देने और जहन्म में जलाने की वईद फ़रमाई है।” इस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : “ऐ मेरे फिरिश्तो ! मैं ने दुन्या में इसे माहे रमज़ान की शदीद गर्मी में भूक और प्यास की आग से जलाया तो आज इसे जहन्म की आग में नहीं जलाऊंगा। मैं ने इसे बख़्श दिया और इस के साबिका गुनाहों और नाफ़रमानियों को मुआफ़ फ़रमा दिया और मैं ही करम व एहसान फ़रमाने वाला हूं।”

### दरयाए नील के नाम एक ख़त :

मन्कूल है : “फ़िरऔन का तरीका येह था कि जब दरयाए नील का पानी कम हो जाता तो वोह अहले मिस्र को हुक्म देता कि वोह अपनी एक नौजवान दोशीज़ा को तरह तरह के ज़ेवरात से आरास्ता करें, रंग बिरंगे फ़ख़्रिया लिबास पहनाएं और हर तरह की ज़ैब व ज़ीनत से उसे दुल्हन की तरह मुज़य्यन करें जो शबे ज़फ़ाफ़ (या'नी शादी की पहली रात) अपने शोहर के पास आरास्ता पैरास्ता हो कर जाती है। फिर इस को दरयाए नील में डाल दें। चुनान्चे, लोग हर साल ऐसा ही करते। अक़षर जाहिल लोगों का येह बातिल अक़ीदा था कि दरयाए नील की सतहें आब तब तक बुलन्द नहीं होती जब तक कि इस में दुल्हन की तरह सजा संवार कर कोई लड़की न डाल दी जाए। येही तरीका अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर बिन ख़त्ताब رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के ज़माने ख़िलाफ़त तक राइज रहा। मिस्र में आप रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के गवर्नर हज़रते सय्यिदुना अम्र बिन अ़ास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ थे। जब उन को येह बात मा'लूम हुई तो उन्होंने ने अहले मिस्र की इस बुरी आदत को इन्तिहाई नापसन्द किया और अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आज़म रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ को ख़त लिखा जिस में सारी सूरेतें हाल बयान की। तो आप रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने फ़ौरन ख़त का जवाब लिखा और एक रुक़आ भी लिखा जिस में लिखा था :

**अल्लाह** तआला के बन्दे उमर बिन ख़त्ताब की जानिब से मिस्र के दरया “नील” की तरफ़ !

### أَمَّا بَعْدُ!

“ऐ नील ! अगर तू अपनी मरज़ी से जारी होता है तो मत जारी हो और अगर खुदाए वाहिद व क़्हार عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से जारी होता है तो हम उस की बारगाह में अर्ज़ करते हैं कि वोह तुझे जारी फ़रमा दे।”

हज़रते सय्यिदुना अम्र बिन अ़ास रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने वोह रुक़आ दरयाए नील में डाल दिया और अहले मिस्र ने यक़ीन कर लिया कि अब येह ठाठें मारने लग जाएगा। चुनान्चे, जब लोगों ने सुब्ह की तो देखा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने दरयाए नील को जारी होने का हुक्म फ़रमा दिया है और वोह एक ही रात में सोला गज़ बुलन्द हो गया।

(العظمة لابی الشیخ الاصبهانی، باب صفة النيل ومنتهاه، الحديث ٩٤٠، ص ٣١٨)

चाहें तो इशारों से अपने काया ही पलट दें दुनिया की  
येह शान है खिदमत गारों की सरकार का आलम क्या होगा

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! येह सब कुछ हज़रते सय्यिदुना उमर बिन ख़त्ताब  
رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की बरकात और हुस्ने ईमान की वजह से था कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने मिस्र के  
मुसलमानों को इस बुरी बिदअत से नजात अता फ़रमाई । हज़रते सय्यिदुना अम्र बिन आस  
رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने लोगों को हुक्म दिया कि वोह **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ का शुक्र अदा करें, उसी की  
ता'रीफ़ व तौसीफ़ करें और गुनाहों से सच्ची तौबा करें । और आप रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने तमाम बुरे  
अफ़आल और लड़कियों को दरया में फेंकने की आदते बद ख़त्म कर दी ।

### किब्तियों की मकरूह चाल :

जब किब्तियों (या'नी मिस्र के क़दीम ईसाई बाशिन्दों) ने देखा कि अमीरुल मोअमिनीन  
हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ का ख़त डालने से दरया मौजज़न हो गया  
तो उन्हें बड़ी तकलीफ़ हुई और वोह अपने मज़हब को मज़बूत करने के लिये मुख़्तलिफ़ हीले करने  
लगे ताकि येह वाकिआ उन की तरफ़ मन्सूब हो जाए । लिहाज़ा उन्होंने येह मकरूह चाल चली कि  
जब दरया की खास तुग़यानी का वक़्त करीब आता तो किसी को शहीद क़रार दे कर उस का ताबूत  
दरया में फेंक देते और उन्होंने ने इस दिन को "ईद" बना लिया जो आज तक (या'नी साहिबे किताब  
के ज़माने तक) इसी तरह है ।

इसी तरह अहले मिस्र ने साल के अय्याम में पांच दिनों की ज़ियादती कर रखी थी जिस  
को वोह "النّسيء" कहते । चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने कुरआने पाक में इस का रद्दे बलीग़ करते  
हुए इरशाद फ़रमाया :

إِنَّمَا النَّسِيءُ زِيَادَةٌ فِي الْكُفْرِ يُضَلُّ بِهِ ﴿٨﴾  
الَّذِينَ كَفَرُوا يُحْلِلُونَ عَمَّا وَيَحَرِّمُونَ عَمَّا  
يُحِلُّونَ عِدَّةً مَّا حَرَّمَ اللَّهُ فَيَحْلِلُونَ مَّا حَرَّمَ اللَّهُ  
زَيْنَ لَهُمْ سَوَاءٌ أَعْمَالِهِمْ ط وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ  
الْكَافِرِينَ ٥ (پ ۱۰، النّوبه: ۳۷)

तर्जमए कन्जुल ईमान : इन का महीने पीछे हटाना नहीं  
मगर और कुफ़्र में बढ़ना इस से काफ़िर बहकाए जाते हैं  
एक बरस इसे हलाल ठहराते हैं और दूसरे बरस इसे ह़राम  
मानते हैं कि उस गिनती के बराबर हो जाएं जो **अल्लाह**  
ने ह़राम फ़रमाई, और **अल्लाह** के ह़राम किये हुए हलाल  
कर लें उन के बुरे काम उन की आंखों में भले लगते हैं और  
**अल्लाह** काफ़िरों को राह नहीं देता । <sup>(1)</sup>

①.....मुफ़स्सिरे शहीर ख़लीफ़ आ'ला हज़रत सदरुल अफ़ज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी  
तफ़सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं नसई लुगत में वक़्त के मुअख़्ख़र करने को कहते हैं  
और यहां शहरे ह़राम की हुरमत का दूसरे महीने की तरफ़ हटा देना मुराद है ज़मानए जाहिलिय्यत में अरब अशहरे हुर्म  
(या'नी जुल का'दा, जुल हिज्जा, मुहर्रम, रजब) की हुरमत व अज़मत के मो'तकिद थे । तो जब कभी लड़ाई के ज़माने में येह  
हुरमत वाले महीने आ जाते तो उन को बहुत शाक़ गुज़रते । इस लिये उन्होंने येह किया कि एक महीने की हुरमत दूसरे की तरफ़  
हटाने लगे, मुहर्रम की हुरमत सफ़र की तरफ़ हटा कर मुहर्रम में जंग जारी रखते..... बक़िया अगले सफ़हा पर



येह दीन में उन की सरकशी की अलामत है। **अब्ल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र है कि उस ने हमें सब से ज़ियादा शरफ़ वाले दीन के साथ ख़ास फ़रमाया और इस में हमारे लिये ईमान के बहुत से रास्ते वाज़ेह किये और बिल खुसूस बनी अदनान के सरदार, सरकारे अब्दे क़रार, शाफ़ेए रोज़े शुमार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअत से बेहरा मन्द फ़रमाया।

وَصَلَّى اللّٰهُ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِهِ وَصَحْبِهِ أَجْمَعِينَ



दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबियत के मदनी काफ़िलों में सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए मदनी इन्आमात का रिसाला पुर कर के हर मदनी (इस्लामी) माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के (दावते इस्लामी के) ज़िम्मेदार को जम्अ कर वाने का मा'मूल बना लीजिये **إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** इस की बरकत से **पाबन्दे सुन्नत** बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की हिफ़ाज़त** के लिये कुड़ने का ज़ेहन बनेगा।

बक़िया हाशिया.....और बजाए इस के सफ़र को माहे ह़राम बना लेते और जब इस से भी तहरीम हटाने की हाज़त समझते तो इस में भी जंग हलाल कर लेते और रबीउल अब्वल को माहे ह़राम क़रार देते। इस तरह तहरीम साल के तमाम महीनों में घुमती और उन के इस तर्ज़े अमल से माहहाए ह़राम की तख़सीस ही बाक़ी न रही। इस तरह हज़ को मुख़लिफ़ महीनों में घुमाते फिरते थे। सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़जतुल वदाअ में ए'लान फ़रमाया कि नसई के महीने गए गुज़रे हुए। अब महीनों के अवक़ात की वजहे इलाही के मुताबिक़ हिफ़ाज़त की जाए और कोई महीना अपनी जगह से न हटाया जाए और इस आयत में नसई को ममनूअ क़रार दिया गया और कुफ़्र पर कुफ़्र की ज़ियादती बताया गया। क्यूंकि इस में माह हाए ह़राम में तहरीमे क़िताल को हलाल जानना और खुदा के ह़राम किये हुए को हलाल कर लेना पाया जाता है।”

बयान 37 : **फ़नाइले सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अजीज** رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ  
हम्दे बारी तझाला :

सब खूबियां **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये जो अपनी वहदानिय्यत (या'नी एक होने) में मजबूत व ताकतवर है। पस वो वाहिद व ग़ालिब है। वोह अपनी अजलिय्यत (हमेशा से होने) में यक्ता व बे मिष्ल है। उस ने सारे जहान को हैरत व बे बसी के समन्दर में गर्क कर दिया। उस ने मौजूदात को हिक्मत से बनाया और उस की बनाने की हिक्मत में कोई ऐब है न कमजोरी। उस ने आस्मानी पोशाक को ख़ूब सूरती और उम्दा व अहसन तरीक़े के साथ चमकते सितारों से ज़ीनत बख़्शी। उस के सामने चांद और सूरज के नक्श बनाए गोया कि ख़ालिस चांदी और ख़ालिस सोना है। शहाबे षाकिब (या'नी टूटने वाले चमकदार सितारे) के ज़रीए चोरी छुपे सुनने से मुकम्मल हिफ़ाज़त फ़रमाई और इसे निगाहे इब्रत रखने वाले अक्लमन्दों के लिये निशानी बनाया। उस ने पानी की तह पर ज़मीन को बिछाया और इसे अपनी कुदरते कामिला से बेहतरीन तरीक़े पर नुमायां फ़रमाया और पहाड़ों की मैखों के ज़रीए इसे क़रार बख़्शा। और मरदाने ग़ैब (औलिया की एक किस्म), अक़ताब और मुख़्तिस नेक़ूकारों का उसे मसकन बनाया। और इन ख़ास बन्दों को इज़्ज़त व करामत की ख़िलअत (या'नी अतिर्या) अता फ़रमाई। दुन्या को इन से फेर दिया तो वोह नहीं जानते कि “माल बचाना और जम्अ करना” किसे कहते हैं। **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन्हें, इशारा व किनाया को समझ जाने वालों के लिये हक़ को काइम करने वाले खुलफ़ा बनाया। और इन में से बा'ज को अपनी ममलुकत में नर्मी व आसानी और अपने बन्दों को नसीहत करने के लिये ख़ास फ़रमाया जैसा कि सहाबए किराम और ताबेईने उज़्ज़ाम जैसे हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अजीज رَضُوا اللَّهَ عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ ।

**आप** رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ **का नाम व नसब :**

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन सा'द رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : “आप का पूरा नाम उमर बिन अब्दुल अजीज बिन मरवान बिन हकम बिन अबी आस बिन उमय्या बिन अब्दुशशम्स” और वालिदए माजिदा का नाम “उम्मे आसिम बन्ते आसिम बिन उमर बिन ख़त्ताब रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ है। और कुन्यत “अबू हफ़्स” है।

**विलादते बा सआदत :**

आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की विलादते बा सआदत सन तिरसठ (63) हिजरी मदीना शरीफ़ में हुई। इसी साल उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना मैमूना रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا का इन्तिक़ाल हुवा था।

(الطبقات الكبرى لابن سعد، الرقم 990 عمر بن عبد العزيز، ج 5، ص 203-204 - تاريخ الاسلام للذّهبي، حرف العين، عمر بن عبد العزيز، ج 2، ص 326)

## जमाने का बेहतरीन शख्स :

हज़रते सय्यिदुना अब्बास बिन राशिद عليه السلام फ़रमाते हैं : “हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ हमारे पास तशरीफ़ लाए और जब वापस जाने लगे तो मेरे आका ने मुझे हुक्म फ़रमाया : “तुम भी इन के साथ जाओ।” चुनान्चे, मैं भी आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के साथ जाने के लिये सुवार हुवा। जब हमारा गुज़र एक वादी से हुवा तो इस में रास्ते पर एक मुर्दा सांप पड़ा हुवा था। आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ अपनी सुवारी से नीचे उतरे और सांप को दफ़न कर के फिर सुवार हो गए और हम अपनी मन्ज़िल की तरफ़ चल पड़े। इतने में एक ग़ैबी आवाज़ आई : “يا خرقاء! يا خرقاء!” हम आवाज़ तो सुन रहे थे लेकिन कोई नज़र न आ रहा था। हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : “ऐ ग़ैबी आवाज़ देने वाले ! मैं तुझे **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ का वासिता दे कर पूछता हूँ कि अगर तुम सामने आ सकते हो तो आ कर हमें बताओ कि येह ख़िरका क्या है ? उस ने जवाब दिया : “ख़िरका वोही सांप है जिस को आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने दफ़न कर दिया है। मैं ने एक दिन हुजुरे पुरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को इस सांप से येह फ़रमाते सुना था, “ऐ ख़िरका ! तुम चटियल ज़मीन में मरोगे और ज़माने का सब से बेहतर मोमिन तुम्हें दफ़न करेगा।” आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने पूछा : “**अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ तुम पर रहूम फ़रमाए ! येह तो बताओ कि तुम कौन हो ?” उस ने बताया “मैं उन सात जिन्नात में से हूँ जिन्होंने ने इस वादी में रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की बैअत की थी।” आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने दोबारा पूछा : “क्या वाक़ेई तुम ने येह बात **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ के रसूल رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से सुनी है ?” उस ने कहा : “जी हां।” येह सुनना था कि आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ वहां से चल दिये।”

(तاريخ دمشق لابن عساکر، الرقم ٥٢٤٢، عمر بن عبد العزيز، ج ٤٥، ص ١٤٥-١٤٦) (حلیة الاولیاء، عمر بن عبد العزیز، الحديث ٧٤٦٠، ج ٥، ص ٣٧٥)

हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عليه السلام फ़रमाते हैं : “खुलफ़ाए राशिदीन और हिदायत याफ़्ता इमाम सात हैं। जिन में से पांच दुन्या से रुख़्सत हो गए और दो बाक़ी हैं। हज़रते सय्यिदुना ख़ारिजा رَحِمَهُ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : उन पांच के नाम येह हैं :

- (1).....अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ
- (2).....अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'जम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ
- (3).....अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'जम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ
- (4).....अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم
- (5).....अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ

(سنن ابی داؤد، کتاب السنة، باب فی التفضیل، الحديث ٤٦٣١، ص ١٥٦٣)



**आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का मुहासबउ नफ़स :**

हज़रते सय्यिदुना जैद बिन अस्लम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : “हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के पास एक टोकरी थी जिस में एक ऊनी जुब्बा और तौक होता था । आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के लिये मकान के दरमियान एक कमरा मख़्पूस था जहां आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ नमाज़ अदा करते । आप रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के इलावा इस कमरे में कोई दाख़िल न होता था । जब रात का आख़िरी वक़्त होता तो आप रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ टोकरी को खोलते और जुब्बा पहन कर तौक अपनी गर्दन में डाल लेते और तुलूए फ़ज़ तक बारगाहे इलाही عَزَّ وَجَلَّ में मुनाजात और गिर्या व ज़ारी में मशगूल रहते । फिर उस जुब्बे और तौक को टोकरी में रख देते । सारी ज़िन्दगी आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का येही मा'मूल रहा ।” (حلیۃ الاولیاء، عمر بن عبد العزیز، الحدیث ۷۲۶۸، ج ۵، ص ۳۲۴)

**दुन्या को तीन त़लाकें :**

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के पड़ोसी हज़रते सय्यिदुना हरिष बिन जैद رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : “खुदा عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! जब रात की तारीकी छा जाती और सितारे रोशन हो जाते तो आप रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ मरीज़ की तरह बेचैन व मुज़तरिब हो जाते और ग़म ज़दा इन्सान की तरह रोने लगते । गोया मैं आप रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को येह कहते सुन रहा हूं कि “ऐ दुन्या ! तू क्यूं मेरा पीछा करती है या मुझ में दिलचस्पी क्यूं लेती है ? जा, मुझ से दूर हो जा, किसी और को धोका दे, मैं तो तुझे तीन त़लाकें दे चुका हूं, अब दोबारा तुझ से रूजूअ नहीं हो सकता । तेरी उम्र कम, लज़्ज़ात हकीर और ख़तरात ज़ियादा हैं । हाए ! अफ़सोस ! ज़ादे राह कम, सफ़र तवील और रास्ता पुर ख़तर है ।”

आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ जब नमाज़े फ़ज़ पढ़ लेते तो कुरआने हकीम को (पढ़ने के लिये) अपनी गोद में रख लेते । आप रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के आंसूओं से दाढ़ी शरीफ़ तर हो जाती फिर जब किसी आयते ख़ौफ़ की तिलावत फ़रमाते तो बार बार उस को दोहराते रहते और बहुत ज़ियादा रोने की वजह से आप रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ उस आयत से आगे न बढ़ सकते और तुलूए आफ़ताब तक येही कैफ़ियत रहती । سُبْحٰنَ اللّٰهِ उन नूरानी चेहरों को देखने का कितना शौक है ? उन की बातें सुन कर कितनी खुशी होती है ? और उन की निशानियां मिट जाने पर किस क़दर ग़म होता है ?

हज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन ख़ौशब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : “मैं ने हज़रते सय्यिदुना हसन रَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ और हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से बढ़ कर ख़ौफ़ खाने वाला कोई नहीं देखा गोया जहन्नम इन ही के लिये पैदा की गई है । आप रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ जब मौत को याद करते तो आप रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के बदन के जोड़ लरज़ने लग जाते ।”

(الطبقات الکبری لابن سعد، الرقم ۹۹۵، عمر بن عبد العزیز، ج ۵، ص ۳۱۱-حلیۃ الاولیاء، عمر بن عبد العزیز، الحدیث ۷۳۵۲، ج ۵، ص ۳۴۹)

**आप रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की दुनिया से बे रग़बती :**

मन्कूल है कि एक दिन हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने इस आयते मुबारका की तिलावत फ़रमाई :

وَمَا تَكُونُ فِي شَأْنٍ وَمَا تَتْلُوا مِنْهُ مِنْ قُرْآنٍ وَلَا تَعْمَلُونَ مِنْ عَمَلٍ إِلَّا كُنَّا عَلَيْكُمْ شُهُودًا إِذْ تُفِيضُونَ فِيهِ (پ ۱۱، یونس: ۶۱)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और तुम किसी काम में हो और उस की तरफ़ से कुछ कुरआन पढ़ो और तुम लोग कोई काम करो हम तुम पर गवाह होते हैं जब तुम इस को शुरू करते हो ।”

तो इस शिद्दत से गिर्यो जारी करने लगे कि घरवालों ने आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की आवाज़ सुन ली । आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की ज़ौजए मोहतरमा हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा علیها رحمة الله تعالى हाज़िर हुई और आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के रोने के सबब बैठ कर खुद भी रोने लगीं । फिर इन दोनों के रोने की वजह से तमाम घर वाले भी रोने लगे । आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के बेटे अब्दुल मलिक ने आ कर देखा कि सब रो रहे हैं तो अर्ज़ की : “ऐ अब्बा जान ! किस चीज़ ने आप को रुला दिया है ?” तो आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने जवाब दिया : ऐ मेरे बेटे ! तेरे बाप की ख़्वाहिश थी कि न वोह दुनिया को पहचाने और न ही दुनिया इस को पहचाने लेकिन **اَللّٰهُ** عزّ وجلّ की कसम ! अब तो मुझे डर है कि कहीं जहन्नमियों में न हो जाऊं ।”

(موسوعة لابن ابي الدنيا، كتاب الرقة والبيداء، الحديث ۹۱، ج ۳، ص ۱۸۷)

ऐ इस्लामी भाई ! हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ आदिल होने के बा वुजूद **اَللّٰهُ** عزّ وجلّ से इस क़दर डरते थे और तू जुल्मो सितम करने के बा वुजूद इस क़दर निडर हो चुका है । ऐ वोह शख्स जो तक्दीर से बे ख़ौफ़ है और जिस के पास **اَللّٰهُ** عزّ وجلّ की बारगाह में पेश करने के लिये कोई उज़्र नहीं ! ग़ौर से सुन ! विसाल के बारह साल बा’द आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को ख़्वाब में देखा गया तो आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने इरशाद फ़रमाया : “अभी अभी हिसाब से फ़ारिग़ हुवा हूं ।”

हज़रते सय्यिदुना अता عليه رحمة ربّ العالی फ़रमाते हैं कि “हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ हर रात फुक़हाए किराम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ को इकठ्ठा करते और मौत, क़ियामत और आख़िरत की बातें होती रहतीं और सब इस तरह़ रोते रहते गोया इन के सामने कोई जनाज़ा हाज़िर है ।”

(تاریخ دمشق، الرقم ۵۲۴ عمر بن عبد العزيز، ج ۴، ص ۲۳۹ - تاریخ الخلفاء للسيوطی، عمر بن عبد العزيز، ص ۱۹۱)

हज़रते सय्यिदुना इब्ने हब्बान رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ ف़रमाते हैं : “मैं ने हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के पीछे सुब्ह की नमाज़ अदा की । आप ने इस आयत की तिलावत फ़रमाई (۱) **تَرْجَمَ کَنْزُالْ اِیْمَان :** और इन्हें ठहराओ इन से पूछना है ।”

(۲۴: الصَّفَّت: ۲۳)

फ़िर इस को दोहराते रहे यहां तक कि बहुत ज़ियादा रोने की वजह से इस से तजावुज़ न फ़रमा सके ।”

(موسوعة لابن ابي الدنيا، كتاب الرقة والبيداء، الحديث ۹۴، ج ۳، ص ۱۸۸)

①.....मुफ़सिरे शहीर खलीफ़ आ’ला हज़रत सदरुल अफ़ज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी तफ़सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़न में इस आयते मुबारका के तहत् फ़रमाते हैं हदीस शरीफ़ में है कि “रोज़े क़ियामत बन्दा जगह से हिल न सकेगा जब तक चार बातें उस से न पूछ ली जाएं । एक उस कि उम्र की किस काम में गुज़री, दूसरे उस का इल्म कि इस पर क्या अमल किया, तीसरे उस का माल कि कहां से कमाया ? कहां खर्च किया ? चौथे उस का जिस्म कि इस को किस काम में लाया ?”

**आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की फ़िक्रें आखिरत :**

हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान घौरी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि एक दफ़आ हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ख़ामोश बैठे थे जब कि आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के दोस्त गुफ़्तगू में मशगूल थे। आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से अर्ज़ की गई, “ऐ अमीरल मोअमिनीन ! आप को क्या हुवा कि आप कलाम नहीं फ़रमा रहे ?” तो आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इरशाद फ़रमाया : “मैं अहले जन्नत के मुतअल्लिक़ सोच रहा हूं कि वोह जन्नत में कैसे एक दूसरे की ज़ियारत करेंगे ? और अहले दोज़ख़ के बारे में सोच रहा हूं कि वोह जहन्नम में कैसे चिल्लाएंगे ?” फिर आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ रोने लगे।” (الموسوعة لابن ابي الدنيا، كتاب الرقة والبكاء، الحديث ٦٤، ج ٣، ص ١٨٢)

**आंसूओं से परनाला बह पड़ा :**

खुरासान के एक बुजुर्ग का बयान है कि जब ख़लीफ़ा अबू जा'फ़र मन्सूर ने बैतुल मुक़द़स जाने का इरादा किया तो उन्होंने ने एक ऐसे राहिब के पास पड़ाव किया जहां हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने भी पड़ाव किया हुवा था। उस ने राहिब से पूछा : “ऐ राहिब ! मुझे येह बताओ कि तुम ने हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ में सब से अज़ीब बात कौन सी देखी ?” तो उस ने जवाब दिया : “जी हां ! ऐ ख़लीफ़ा ! एक रात हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ मेरे इस कमरे की संगे मर मर से बनी हुई छत पर थे और मैं इस के नीचे गुद्दी (या'नी गर्दन के पिछले हिस्से) के बल लैटा हुवा था कि अचानक परनाले से पानी के क़तरे मेरे सीने पर गिरने लगे। मैं ने सोचा, **اَللّٰهُمَّ** की क़सम ! न मेरे पास पानी है और न ही आस्मान से बरस रहा है।” चुनान्चे, हकीक़ते हाल से आगाही के लिये मैं छत पर चढ़ा तो क्या देखता हूं कि उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ सजदा रेज़ हैं और आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के आंसू परनाले से नीचे गिर रहे हैं।” (المرجع السابق، الحديث ١٢٧، ج ٣، ص ١٩٦)

हज़रते सय्यिदुना हसन बिन हसन رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि “मैं ने हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को खून के आंसू रोते देखा है।”

(الزهد للامام احمد بن حنبل، اخبار عمر بن عبد العزيز، الحديث ٦٨٩، ص ٢٩٨)

मन्कूल है कि जब से आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को ओहदए ख़िलाफ़त सिपुर्द किया गया तब से आप रَضِيَ اللَّهُ تَعालَى عَنْهُ की इमरत में इज़ाफ़ा हुवा, न जानवरों में और न ही बीवियों या लौंडियों में। यहां तक कि आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को **اَللّٰهُمَّ** को प्यारे हो गए।

हज़रते सय्यिदुना उमर बिन मुहाजिर عليه رحمة الله الناصر फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने मुझे हुक्म फ़रमाया कि जब मुझे हक़ से हटता पाओ तो अपने हाथ मेरे गिरेबान में डाल कर झिड़ते हुए कहना। “ऐ उमर ! क्या कर रहे हो ?”

(حلية الاولياء، عمر بن عبد العزيز، الحديث ٧٢٧٢، ج ٥، ص ٣٢٦)



**मीठे मीठे इस्लामी भाईयो !** इन्तिहाई तअज्जुब की बात है कि हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ कामिल होने के बा वुजूद इस क़दर खौफ़ रखते थे और तुम नाक़िस होने के बा वुजूद कितने बे खौफ़ हो ? दुनिया आख़िरत का आईना है, जो दुनिया में करोगे आख़िरत में देखोगे, आज अमल करोगे कल देखोगे, अगर तुम अक्लमन्द हो तो अपने बुरे आ'माल पर रोया करो और अगर ग़फ़लत की नींद में हो तो अंन क़रीब नींद की येह लज़ज़त तुम से दूर चली जाएगी ।

**ऐ मेरे इस्लामी भाईयो !** दुनिया जब सलफ़े सालिहीन के पास आती है तो वोह इसे आख़िरत के लिये आगे भेज देते हैं । हमारा उन से क्या मुवाज़ना है ? हम में से कितने शब बेदारी करते और कितने ख़्वाबे ग़फ़लत में रात गुज़ार देते हैं ।

**आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का तक्वा :**

हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के पास यमन का (माले) ख़िराज आता तो आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ उसे बैतुल माल में जम्अ करा देते और खुद तारीकी में रात गुज़ारते और इरशाद फ़रमाया करते : “जब मैं अ़वाम के मुअमलात निपटाने के लिये बेदार रहता हूं तो बैतुल माल का चराग़ जलाता हूं और जब अपने काम के लिये जागता हूं तो ज़ाती माल से चराग़ जलाता हूं ।”

(الطبقات الكبرى لابن سعد، الرقم ٩٩٥ عمر بن عبد العزيز، ج ٥، ص ٣١١-٣١٢- بتغير)

मन्कूल है कि एक मरतबा यमन का ख़िराज आया । जिस में बारह (12) ख़च्चरों पर लदा हुवा अम्बर (م) भी था । पहले माल आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की ख़िदमत में पेश किया गया तो आप ने बैतुल माल में जम्अ कराने का हुक्म दिया फिर अम्बर लाने का हुक्म दिया । जब अम्बर लाया गया आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अपनी नाक बन्द कर ली और हुक्म दिया कि इस को भी बैतुल माल में जम्अ कर दो । अर्ज़ की गई : “हुज़ूर ! येह अम्बर है, येह खुशबू सूंघने से कम नहीं होता ।” तो इरशाद फ़रमाया : “इस की खुशबू ही से नफ़अ उठाया जाता है ।”

(حلیۃ الاولیاء، عمر بن عبد العزيز، الحديث ٧٣٩٨، ج ٥، ص ٣٦٠، بتغير - تاریخ دمشق لابن عساکر، الرقم ٥٢٤٢، عمر بن عبد العزيز،

ج ٤٥، ص ٢١٧، بتغير - سیر اعلام النبلاء، الرقم ٦٦٢، عمر بن عبد العزيز، ج ٥، ص ٥٩٢- بتغير)

मन्कूल है कि हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की बेटी ने आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के पास एक चमकदार मोती भेजा और अर्ज़ की, कि अगर आप मुनासिब समझें तो इस क़िस्म का एक और मोती मुझे भेज दें ताकि मैं इन को अपने दोनों कानों में डाल सकूं । तो आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने दो अंगारे अपनी बेटी की तरफ़ भेजे और इरशाद फ़रमाया : “अगर तुम अपने कानों में इन दो अंगारों को डालने की ताक़त रखती हो तो मैं तुम्हारी तरफ़ मोती भेज दूंगा ।”

हज़रते सय्यिदुना ईसा बिन सनान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ फ़रमाते हैं कि “हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने कोई घर ता’मीर नहीं किया। आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से वजह पूछी गई तो इरशाद फ़रमाया : “येह नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की सुन्ते मुबारका है। आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ इस हाल में दुन्या से पर्दा फ़रमा गए कि ईंट पर ईंट रखी न सरकन्डे (या’नी काने) पर सरकन्डा (या’नी आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने कोई इमारत न बनाई)।

(شعب الايمان للبيهقي، باب في الزهد وقصر الامل، فصل في ذم بناء ما لا..... الخ، الحديث ١٠٧٢٦ ج ١، ص ٧٩٥)

**आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का फ़क्र :**

हज़रते सय्यिदुना अबू दावूद वसी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं कि : “हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की एक सीढ़ी थी जिस पर आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ चढ़ा करते तो उस से आवाज़ें आती थीं और कमज़ोर होने के सबब वोह हिलने लगती। आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के दोस्तों में से किसी ने इस को गारे से मज़बूत कर दिया। जब आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ उस पर चढ़े तो देखा कि अब की बार आवाज़ नहीं आ रही। दरयाफ़्त करने पर अर्ज़ की गई : “फुलां ने इसे ठीक कर दिया है।” तो आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इरशाद फ़रमाया : “इस को वापस अपनी हालत पर कर दो। क्यूंकि जब से मुझे ख़िलाफ़त की ज़िम्मेदारी सौंपी गई मैं ने **अल्लाह** سے अहद कर रखा है कि कोई दीवार बनाऊंगा न इमारत।”

ऐ ता’मीरे दुन्या में उम्र बरबाद करने वाले ! ग़ौर से सुन ! इस का नफ़अ बहुत कम और नुक़सान बहुत ज़ियादा है। हमारे अस्लाफ़े किराम رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ दुन्या बरबाद कर के आख़िरत आबाद करते थे जब कि तुम दुन्या आबाद कर के आख़िरत बरबाद करते हो।

ऐ इमारतों और घरों के दिलदादह ! मौत के जाम तुझ पर गरदिश कर रहे हैं। ऐ तारीक दिल वाले ! दिल में नूर कहां से आए जब कि तेरा बातिन ख़राब है और ज़ाहिर आबाद है। अगर तू क़ब्रों को याद करता तो दुन्या आबाद करने की फ़िक्र न करता। ऐ मग़रूर ! अंन क़रीब तुझ से दिनों और महीनों का हिसाब लिया जाएगा। ऐ वोह शख़्स जो हुजूरिये क़ल्ब के बिगैर नमाज़ पढ़ता है और जिस का रोज़ा ग़ीबत में छुपा हुवा है ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ कब तक तुझ पर लुतफ़ो करम करता रहेगा और तू उस से दूरी इख़्तियार करता रहेगा। ऐ नाशुके ! कब तक वोह तुझ पर एहसान फ़रमाता रहेगा और तू छुप छुप कर गुनाहों से उस का मुक़ाबला करता रहेगा और कब तक वोह तुझे मोहलत देता रहेगा कि तू तौबा कर ले क्यूंकि वोह तो ग़फ़ूरो रहीम है और जानता है चोरी छुपे की निगाह और जो कुछ सीनों में छुपा है (या’नी निगाहों की ख़ियानत और चोरी ना महरम को देखना और ममनूअ़ात पर नज़र डालना। बहवाला ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)।

## हदिय्या कबूल करने से इजतिनाब :

हज़रते सय्यिदुना इमाम औज़ाई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं, हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ सब्ज़ी से सहरी और इफ्तारी करते। अकषर अवकात रोटी को नमक से मिला कर तनावुल फ़रमाते थे। एक मरतबा किसी ने आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को एक प्लेट बतौर हदिय्या पेश की, इस में सेब और मुख़लिफ़ फल रखे थे। आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इस में से कुछ खाए बिगैर वापस लौटा दिया तो आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से अर्ज़ की गई : “क्या नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर وَسَلَّم وَالْه وَسَلَّم صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّم हदिय्या कबूल न फ़रमाते थे ?” आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इरशाद फ़रमाया : “क्यूं नहीं, लेकिन रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम وَسَلَّم وَالْه وَسَلَّم صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّم की तरफ़ भेजा हुवा हदिय्या, हदिय्या था जब कि हमारे और हमारे बा’द वालों के लिये रिश्त है।” (حلیۃ الاولیاء، عمر بن عبد العزیز، الحدیث ۷۲۷۷، ج ۵، ص ۳۲۷)

हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ अपने नफ़्स को ख़्वाहिशात से बाज़ रखते और लोगों को अतिरिक्त से नवाज़ते थे। हज़रते सय्यिदुना खुज़ैमा अबू मुहम्मद अब्दुल अज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَاحِد का बयान है कि हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाया करते थे : “मैं किसी को माल देता हूं तो इसे कम ख़याल करता हूं क्यूंकि मुझे हया आती है कि عَزَّوَجَلَّ से अपने भाई के लिये जन्नत मांगूं और खुद इस पर (माले) दुन्या में बुख़ल करूं।” (موسوعة لابن ابی الدنيا، کتاب الاخوان، باب فی سخاء..... الخ، الحدیث ۱۶۰، ج ۸، ص ۱۸۱)

## आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने लोगों को ग़नी कर दिया :

हज़रते सय्यिदुना अब्दुरहमान बिन जैद बिन ख़त्ताब عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَهَّاب फ़रमाते हैं कि “हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ अढ़ाई साल मन्सबे ख़िलाफ़त पर फ़ाइज़ रहे। आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के विसाल से पहले एक शख़्स कषीर माल ले कर हमारे पास आया और कहने लगा : “जहां मुनासिब समझो येह माल फुकरा में तक्सीम कर दो।” मगर उसे अपना माल ले कर वापस जाना पड़ा क्यूंकि हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अपने अतिरिक्त से लोगों को ग़नी कर दिया था।

(دلائل النبوة للبيهقي، باب ما جاء فی اخباره صلى الله عليه وآله وسلم بالشّر الذي -- يعمرين عبد العزيز..... الخ، ج ۶، ص ۹۳)

## नोकशानी को पंखा झलने वाला ख़लीफ़ा :

हज़रते सय्यिदुना नज़र बिन सहल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى अपने वालिदे मोहतरम के हवाले से बयान फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने एक दिन अपनी नोकशानी से फ़रमाया : “मुझे पंखे से हवा दो ताकि मैं सो सकूं।” तो वोह आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को पंखा झलने लगी और आप रَضِيَ اللَّهُ تَعालَى عَنْهُ सो गए और नींद के ग़लबे से उस की भी आंख लग गई। जब आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ बेदार हुए तो उसे पंखा झलने लगे। जब कनीज़



बेदार हुई और आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को पंखा झलते हुए देखा तो उस की चीखें निकल गई । इस पर आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इरशाद फ़रमाया : “तू भी मेरी तरह इन्सान है, तुझे भी मेरी तरह गर्मी लगती है । लिहाज़ा मैं ने चाहा कि तुझे पंखा झलूं जैसे तू मुझे झल रही थी ।”

(البداية والنهاية لابن كثير، عمر بن عبد العزيز، ج ٦، ص ٣٤٨، مختصراً)

رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ हमारे सलफ़े सालिहीन सचिन् लहलहा को अपना शिआर बनाया, तक्वा को अपनी चादर बनाया और दुन्या के लहव व लअब और धोको से बचे रहे । दुन्या इन के सामने मुजय्यन हो कर आई मगर जब इन्हों ने इसे आरिख्यतन दिये हुए कपड़े की तरह पाया तो ठुकरा दिया, इस दुन्या ने कितनों को फ़िक्रे आखिरत से रोके रखा, कितनी आंखें अन्धी कर दीं और कितनों ने इस के डर से इस का लिहाज़ रखा फिर भी इस ने दिन रात इन से कोई रियायत न बरती ।

पस ऐ इस्लामी भाई ! अपने पुख़्ता अज़्म के साथ इस से दूरी इख़्तियार कर ले और आखिरत को अपना ठिकाना बना ले और इस के तकलीफ़ देह लिबास से इजतिनाब कर क्यूंकि ऐसा लिबास पहनने वाले कितने ही लोगों ने शर्मिन्दगी का लिबास पहना ।

हज़रते सय्यिदुना हिलाल बिन कैस رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : “हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ 101 हिजरी माहे रजबुल मुरज्जब की इब्तिदा में मरजुल मौत में मुब्तला हुए और आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का येह मरज़ बीस दिन तक रहा ।”

(الطبقات الكبرى لابن سعد، الرقم ٩٩٥ عمر بن عبد العزيز، ج ٥، ص ٣١٦)

**आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को ज़हर दिया गया :**

वलीद बिन हिश्शाम का बयान है । “मेरी एक यहूदी से मुलाकात हुई । उस ने हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के ख़लीफ़ा बनने से पहले ही मुझे बता दिया था कि आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ख़लीफ़ा बनेंगे और अद्ल करेंगे । मैं ने हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मिल कर इन्हें येह बात बता दी । जब आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ख़लीफ़ा बन गए और चन्द रोज़ बा’द दोबारा उसी यहूदी से मेरी मुलाकात हुई तो वोह कहने लगा : “क्या मैं ने तुम्हें बताया न था कि आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ अज़ीज़ ख़लीफ़ा बन जाएंगे ? और वोही हुवा जो मैं ने कहा था ।” मैं ने कहा : “हां, ऐसा ही हुवा ।” फिर उस ने मुझे बताया कि अब आप रَضِيَ اللَّهُ तَعَالَى عَنْهُ ने ज़हर पी लिया है, लिहाज़ा इन्हें कहो कि अपना इलाज मुआलजा कर के जान की हिफ़ाज़त करें । वलीद बिन हिश्शाम का कहना है कि “फिर मेरी मुलाकात हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रَضِيَ اللَّهُ तَعَالَى عَنْهُ से हुई, मैं ने ज़हर का मुआमला ज़िक्र किया तो आप रَضِيَ اللَّهُ तَعَالَى عَنْهُ ने इरशाद फ़रमाया : “**اَبْلَاؤُ** عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! मैं वोह घड़ी जानता हूं जिस में मुझे ज़हर दिया गया था, अगर मेरी शिफ़ा अपने कानों की लौ छूने या खुशबू सूंघने में होती तो भी मैं इन्कार ही करता रहता ।”

(حلية الاولياء، عمر بن عبد العزيز، الحديث ٧٤٦٨، ج ٥، ص ٣٧٧، بتغیی)

## जहर पिलाने वाला गुलाम आजाद :

हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَاحِد फ़रमाते हैं : “हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अपने मरजुल मौत में मुझ से दरयाफ़्त फ़रमाया : “लोग मेरे मुतअल्लिक क्या कहते हैं ?” मैं ने अर्ज़ की : “लोग कहते हैं कि आप पर जादू किया गया है ।” तो इरशाद फ़रमाया : “मुझ पर कोई जादू नहीं किया गया, हां ! मुझे ज़हर पिलाया गया है ।” फिर गुलाम को बुलवाया और इस्तिफ़सार फ़रमाया : “तू ने मुझे ज़हर क्यूँ दिया था ? वोह कहने लगा : “मुझे एक हज़ार दीनार दिये गए और आज़ादी का भी वा'दा किया गया ।” आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : “वोह हज़ार दीनार लाओ ।” पस वोह रक़म ले आया तो आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने उसे बैतुल माल में जम्आ करवा दिया और गुलाम से फ़रमाया : “जहां जी चाहे चले जाओ, आज से तुम आज़ाद हो ।”

(سير اعلام النبلاء، الرقم ٦٢٢ عمر بن عبد العزيز، ج ٥، ص ٥٩٥ - بتغير)

## ख़्वाब में अच्छे ख़ातिमे की बिशारत :

हज़रते सय्यिदुना अबू हाज़िम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَاحِد फ़रमाते हैं कि मैं ने देखा कि एक बार हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ किसी तकलीफ़ पहुंचने के फ़ौरन बा'द महवे ख़्वाब थे । पहले आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ रोए, फिर मुस्कुराने लगे ।” जब आंख खुली तो मैं ने अर्ज़ की, “ऐ अमीरल मोअमिनीन ! ख़्वाब में कैसा मुआमला पेश आया कि आप रो पड़े, फिर मुस्कुराने लगे ।” आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने पूछ : क्या तुम ने देख लिया था ?” मैं ने अर्ज़ की : “जी हां ! और इर्द गिर्द के तमाम लोगों ने भी देख लिया था ।” फिर आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने बताया : “मैं ने देखा कि क़ियामत काइम हो चुकी है, क़ब्रों से उठने के बा'द लोगों की एक सो बीस सफ़ें हैं जिन में से अस्सी (80) “उम्मते मुहम्मदिय्या وَالسَّلَام की हैं । अचानक मुनादी ने निदा दी : “(हज़रते सय्यिदुना) अब्दुल्लाह बिन अबी क़हाफ़ (अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ) कहां हैं ? आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने लबैक कहा तो फिरिश्तों ने आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को बारगाहे खुदावन्दी में खड़ा कर दिया और आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से आसान हिसाब लिया गया । फ़ारिग़ होने के बा'द आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को हुक्म फ़रमाया गया कि दाएं जानिब वालों (या'नी जन्नतियों) की तरफ़ जाओ । फिर अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर बिन ख़त्ताब رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को लाया गया । आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का हिसाब किताब भी ब आसानी मुकम्मल हो गया फिर दोनों हज़रात (या'नी अबू बक्र व उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا) को दुखूलें जन्नत का हुक्म दिया गया । इस के बा'द अमीरुल मोअमिनीन उष्माने ग़नी रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को लाया गया । आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से भी वैसा ही हिसाब लिया गया फिर जन्नत में जाने का हुक्म दिया गया ।” फिर अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलियुल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم को लाया गया । आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से भी वैसा ही हिसाब लिया गया और दुखूलें जन्नत का हुक्म दिया गया ।”

हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अजीज رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं, “जब पुकारा गया कि “उमर बिन अब्दुल अजीज कहां है ? तो मुझे पसीना आ गया और मलाइका ने मुझे पकड़ कर बारगाहे इलाही عَزَّ وَجَلَّ में खड़ा कर दिया। **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने मुझ से मा'मूली मा'मूली चीज़ों और मेरे तमाम फैसलों के मुतअल्लिक पूछ गछ फ़रमाई, फिर मुझे बख़्शा दिया और जन्नत में जाने का हुक्म हुवा। फिर मेरा गुज़र एक नीम मुर्दा शख्स पर हुवा। मैं ने मलाइका से इस के मुतअल्लिक दरयाफ़्त किया तो उन्होंने ने जवाब दिया कि आप खुद इस से पूछें येह जवाब देगा। मैं ने अपने पाउं से उसे ठोकर मारी तो उस ने सर उठा कर अपनी आंखें खोल दीं। मैं ने पूछा, “तुम कौन हो ?” तो वोह कहने लगा, आप कौन हैं ? मैं ने अपना नाम बताया। उस ने फिर पूछा, **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ ने आप के साथ क्या मुआमला फ़रमाया ? मैं ने जवाब दिया : “उस ने मुझ पर अपना रहमो करम फ़रमाया और मेरे साथ भी वोही मुआमला फ़रमाया जो गुज़स्ता खुलफ़ा (या'नी चारों खुलफ़ाए राशिदीन رَضُواْ اللّهُ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ) के साथ फ़रमाया।” येह सुन कर उस ने मुझे मुबारक बाद दी। मैं ने फिर अपना सुवाल दोहराते हुए पूछा : “तुम कौन हो ?” जवाब मिला “मैं हज्जाज बिन यूसुफ़ षक़फ़ी हूं, मुझे **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की बारगाह में पेश किया गया तो मैं ने उसे शदीद ग़ज़ब में पाया। मुझे मेरे हर मक़तूल के बदले क़त्ल किया गया और हज़रते सय्यिदुना सईद बिन जुबैर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के बदले सत्तर मरतबा क़त्ल किया गया और अब मैं अपने रब्ब عَزَّ وَجَلَّ की बारगाह में उसी चीज़ का इन्तिज़ार कर रहा हूं जिस का तमाम कल्मागो इन्तिज़ार कर रहे हैं या'नी जन्नत या जहन्नम।” हज़रते सय्यिदुना अबू हाज़िम رَحِمَهُ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : “हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अजीज رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से येह ख़्वाब सुनने के बा'द मैं ने **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ से अहद कर लिया कि आयन्दा किसी भी **رَأْسِ الْأَثَلِ مُحَمَّدٌ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ** पढ़ने वाले को आग की तकलीफ़ नहीं दूंगा।”

(حلیۃ الاولیاء، عمر بن عبد العزیز، الحدیث ۷۲۹۸، ج ۵، ص ۳۳۲، بتغییر)

**प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो !** गुनाहों के बोझ की वजह से ज़ालिमों के लिये हलाकत है, उन को दुन्या भर में बुरे नामों से याद किया जाता है। उन के लिये बतौरें नंग व अ़ार येही काफ़ी है कि उन्हें “अशरार” या'नी बुरे लोग कहा गया। उन के जुल्म की लज़्ज़ात ख़त्म हो गई और सिर्फ़ शर्मिन्दगी बाक़ी रह गई। उन्होंने ने अज़ाब के घर में ठिकाना बना लिया और उन के घरों पर ग़ैरों ने क़ब्ज़ा जमा लिया। उन ज़ालिमों को जहन्नम के कुंवों और पथ्थरों में अज़ाब के लिये तन्हा छोड़ दिया गया। अब उन के लिये राहत है न सुकून और न ही क़रार। येह कषरत से नहरों की मिष्ल आंसू बहाएंगे। उन्होंने ने लम्बी उम्मीदों की इमारत को बहुत मज़बूत बनाया था मगर वोह अचानक गिर गई। हज्जाज बिन यूसुफ़ ने कितने क़त्ल किये। जुल्म के कितने पहाड़ तोड़े। क्या उसे मा'लूम न था कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ जुल्म व सितम करने वालों से इन्तिक़ाम लेगा ? बरोज़े क़ियामत जब वोह उठेंगे तो उन का ह़शर फ़जिरो के साथ होगा। **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :



سَرَابِيلُهُمْ مِّنْ قَطْرَانٍ وَتَغَشَىٰ وُجُوهُهُمْ ﴿١﴾  
النَّارُ ۝ (پ ۱۳، ابراهيم: ۵۰)

तर्जमए कन्जुल ईमान : उन के कुर्ते राल के होंगे और इन के चेहरे आग ढांप लेगी । (१)

### आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के खानदान का वसी :

मुस्लमा बिन अब्दुल मलिक हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के मरजुल मौत में उन के पास हाज़िर हो कर अर्ज गुज़ार हुए : “या अमीरल मोअमिनीन ! आप अपने खानदान का वसी किस को मुक़र्रर करते हैं ? इरशाद फ़रमाया : “मेरा वसी वोह है कि जब मैं ज़िक्रे इलाही से ग़ाफ़िल हो जाऊं तो वोह मुझे याद दिलाए ।” मुस्लमा ने दोबारा पूछा : “अपने खानदान का वसी किस को बनाएंगे ?” तो इरशाद फ़रमाया “उन का वाली **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ है और वोही सालिहीन का वाली है ।”  
(الطبقات الكبرى، الرقم ۹۹۵، عمر بن عبد العزيز، ج ۵، ص ۳۱۷)

### बा'दे विशाल चेहरा जगमगा उठा :

हज़रते सय्यिदुना रजा बिन हयात رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि “हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अपने मरजे विसाल में मुझे हुक्म फ़रमाया : “ऐ रजा ! तुम मुझे गुस्ल देने, कफ़न पहनाने और लहद में उतारने वालों में रहना । जब लोग मुझे लहद में उतार दें तो कफ़न की गिरह खोल कर मेरा चेहरा देखना क्यूंकि मैं ने तीन खुलफ़ा को दफ़न किया है । जब इन्हें कब्र में उतार कर कफ़न की गिरह खोली और चेहरा देखा तो वोह क़िब्ला से फिर कर सियाह हो चुका था ।” हज़रते सय्यिदुना रजा रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ का बयान है : “जब आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने इन्तिकाल फ़रमाया तो मैं भी आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को गुस्ल देने वालों में शामिल था । तदफ़ीन के बा'द जब मैं ने गिरह खोल कर आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعालَى عَلَيْهِ का चेहराए अन्वर देखा तो वोह क़िब्ला रुख़ था और चौदहवीं के चांद की तरह चमक दमक रहा था । येह देख कर मुझे बेहद खुशी हुई ।”

(الطبقات الكبرى لابن سعد، الرقم ۹۹۵، عمر بن عبد العزيز، ج ۵، ص ۳۱۸ - بتغير قليل)

हज़रते सय्यिदुना उबैदा बिन हस्सान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि जब हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का वक्ते विसाल क़रीब आया तो आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : “सब मेरे पास से चले जाओ, यहां कोई शख्स न रहे । मुस्लमा बिन अब्दुल मलिक भी वहां मौजूद थे । चुनान्चे, सब लोग बाहर चले गए जब कि मुस्लमा बिन अब्दुल मलिक और

①...मुफ़स्सिरे शहीर ख़लीफ़ आ'ला हज़रत सदरुल अफ़ज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं : “सियाह रंग, बदबूदार जिन से आग के शो'ले और ज़ियादा तेज़ हो जाएं । (मदारिक व ख़ाज़िन) तफ़्सीरे बैज़ावी में है कि इन के बदनों पर राल लेप दी जाएगी । वोह मिल्ल कुर्ते के हो जाएगी, इस की सोज़िश और इस के रंग की वहशत व बदबू से तकलीफ़ पाएंगे ।”

इन की बहन हज़रते सय्यिदुना फ़ातिमा رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهَا जो कि हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की अहलिया थी, दरवाजे की देहलीज़ पर बैठ गए। फिर लोगों ने आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को यह फ़रमाते सुना : “इन मुबारक चेहरों को मरहबा ! येह प्यारी सूरतें न इन्सानों की हैं, न जिन्नों की।” रावी का बयान है कि “हम ने घर के एक कोने से इस आयए करीमा की तिलावत सुनी :

تِلْكَ الدَّارُ الْآخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِينَ لَا يُرِيدُونَ عُلُوًّا فِي

الْأَرْضِ وَلَا فُسَادًا عِوَالِ الْعَاقِبَةِ لِلْمُتَّقِينَ (پ ۲، الفصص: ۸۳)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :** येह आख़िरत का घर हम उन के लिये करते हैं जो ज़मीन में तकबुर नहीं चाहते और न फ़साद, और अ़क़िबत परहेज़गारों ही की है।

फिर जब लोग कमरे में आए तो आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ सफ़रे आख़िरत पर रवाना हो चुके थे। आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का चेहरा अक्दस क़िल्बा रू था और आंखें और मुंह बंद थे।

(سير اعلام النبلاء، الرقم ۶۶۲ عمر بن عبد العزيز، ج ۵، ص ۵۹۶ - الطبقات الكبرى لابن سعد، الرقم ۹۹ عمر بن عبد العزيز، ج ۵، ص ۳۱۸)

हज़रते सय्यिदुना इमाम औज़ाई رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهُ फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इरशाद फ़रमाया : “मैं पसन्द नहीं करता कि मुझ पर मौत की सख़्तियों को आसान कर दिया जाए क्यूंकि येही तो वोह आख़िरी चीज़ है जो बन्दए मोमिन को अज़्रो षवाब अ़ता करती है।”

(حلية الاولياء، عمر بن عبد العزيز، الحديث ۷۳۵، ج ۵، ص ۳۵۰، بتغير)

येह भी मन्कूल है कि हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इरशाद फ़रमाया : “मैं पसन्द नहीं करता कि मुझ से मौत की सख़्तियां आसान कर दी जाएं क्यूंकि येही तो वोह आख़िरी चीज़ है जिस के ज़रीए बन्दए मोमिन के गुनाह मिटा दिये जाते हैं।”

(الزهد للامام احمد بن حنبل، اخبار عمر بن عبد العزيز، الحديث ۱۷۱۸، ص ۳۰६، بتغير)

**आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के कफ़न की कीमत :**

मन्कूल है कि जब हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की बीमारी बढ़ गई तो आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने मुस्लमा बिन अब्दुल मलिक को हुक्म फ़रमाया : “मेरे माल में से दो दीनार ले कर मेरे लिये कफ़न ख़रीद लाओ।” उस ने अर्ज़ की : “ऐ अमीरल मोअमिनीन ! आप जैसी क़द आवर शख़्सियत का कफ़न दो दीनार में नहीं मिल सकता।” तो इरशाद फ़रमाया : “ऐ मुस्लमा ! अगर **अब्बाह** غَزَّوَجَلَّ मुझ से राज़ी हुवा तो इस कम कीमत कफ़न को इस से बेहतर से बदल देगा और अगर नाराज़ हुवा तो येह आग का ईधन बन जाएगा।”

मन्कूल है कि आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को कच्चे धागे से बुने हुए कपड़े का कफ़न पहनाया गया। एक कौल के मुताबिक़ वोह यमनी चादर का था और आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का मक़बरा सर ज़मीने हुम्स, दैरे समअन में है।

## आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के मक़ामे दफ़न की कीमत :

हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने उस ज़मीन के मालिक को अपनी क़ब्र की जगह की कीमत भेजी तो उस ने अर्ज़ की : “ऐ अमीरल मोअमिनीन ! **अल्लाह** की क़सम ! मैं आप की क़ब्रे अन्वर से बरकत हासिल करूंगा, मैं ने येह जगह आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के लिये मुबाह कर दी है ।” लेकिन आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने बिना कीमत जगह लेने से इन्कार कर दिया ।

(الطبقات الكبرى لابن سعد، الرقم ۹۹۵ عمر بن عبد العزيز، ج ۵، ص ۳۱۶ - بتغییر)

दूसरी रिवायत में है कि आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने ज़मीन के मालिकों से अपनी क़ब्र की जगह दो दीनार के इवज़ ख़रीदी थी । फिर उन से इरशाद फ़रमाया : “मुझे अपनी ज़मीन के दरमियान में जगह दो और जब मैं दफ़न कर दिया जाऊं तो तुम अपनी ज़मीन में हल चलाना और खेती बाड़ी करना और इमारत बनाना चाहो तो वोह भी बना सकते हो बल्कि इस ज़मीन से जिस तरह चाहो नफ़ा उठाओ कि मुझे इन में से कोई चीज़ नुक़सान न पहुंचाएगी ।”

(الطبقات الكبرى لابن سعد، الرقم ۹۹۵ عمر بن عبد العزيز، ج ۵، ص ۳۱۶)

## मुह्वते ख़िलाफ़त और विशाले बा क़माल :

मन्कूल है कि हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की मुह्वते ख़िलाफ़त दस दिन कम तीस महीने थी और आप रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की वफ़ाते हसरत आयात पैतालीस (45) साल की उम्र में हुई ।

(الطبقات الكبرى، الرقم ۹۹۵، ج ۵، ص ۳۱۹، بتغییر)

हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद रबई رَحِمَهُ اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : “तौरात में लिखा हुवा है कि ज़मीन व आस्मान हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के विसाल पर चालीस दिन तक आहो फुगां करते रहेंगे ।”

(حلیة الاولیاء، عمر بن عبد العزيز، الحديث ۷۴۶۵، ج ۵، ص ۳۷۷)

## आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के विशाल पर अहले बसरा का ग़म व अलम :

मन्कूल है कि हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का कासिद जब भी बसरा पहुंचता तो लोग खुशी और मसरत से उस का इस्तिक़बाल करते क्यूंकि जब भी वोह आता तो फुकरा की ख़बर गीरी कर के उन पर बख़्शिश व अता और माल व दौलत निछावर करता । चुनान्चे, जब कासिद मौत की ख़बर ले कर बसरा पहुंचा तो लोग अपनी आदत के मुताबिक़ खुश व खुर्रम उस के पास आए । लेकिन जब उस ने उन्हें आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के विसाल की ख़बर सुनाई तो सब लोग फूट फूट कर रोने लगे । अहले बसरा को आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के मरने का ग़म इस लिये ज़ियादा था क्यूंकि येह उन के लिये बहुत बड़ी मुसीबत थी ।



मन्कूल है कि एक जिन्न ने इन अल्फ़ाज़ में आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का मरषिया कहा (या'नी इज़हारे ग़म के अशआर कहे) :

عَنَّا جَزَاكَ مَلِيكَ النَّاسِ صَالِحَةً  
فِي جَنَّةِ الْخُلْدِ وَالْفَرْدَوْسِ يَا عَمْرًا  
أَنْتَ الْبُذْيُ لَا نَرَى عَدْلًا نَسْرِبُهُ  
مَنْ بَعْدَهُ مَا جَزَى شَمْسٌ وَلَا قَمَرٌ

तर्जमा : (1).....ऐ सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ लोगों का अज़ीम बादशाह ग़ज़ْوَجَل आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को हमारी तरफ़ से जन्नतुल खुल्द और जन्नतुल फिरदौस में बेहतरीन जज़ा अता फ़रमाए। (आमीन)

(2).....जब तक सूरज चांद तुलूअ होते रहेंगे, हम आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के बा'द ऐसा आदिल ख़लीफ़ा कभी न पाएंगे जिस से हम फ़रयाद कर सकें।

(اخبار مكة للفاكهي، ذكر السمر والحديث في المسجد الحرام، الحديث ١٣٣٩، ج ٢، ص ١٥١)

जब हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इन्तिक़ाल फ़रमाया तो मशहूर अरबी शाइर जरीर ने आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का मरषिया इन अल्फ़ाज़ में लिखा :

تَنْعَى النُّعَاةَ أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ لَنَا  
مُفَضَّلًا حَجَّ بَيْتِ اللَّهِ وَاعْتَمَرَ  
حَمَلَتْ أُمًّا عَظِيمًا فَاسْتَطَعَتْ لَهُ  
وَسَرَتْ فِيهِ بِأَمْرِ اللَّهِ مُؤْتَمَرًا

तर्जमा : (1).....ख़बर देने वालों ने अमीरुल मोअमिनीन रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के विसाल की ख़बर को हज़ व उमरह के साथ मिला दिया। इन्हों ने एक बहुत बड़ी बात को बरदाश्त किया और मैं ने इस अलम नाक ख़बर को महज़ इस वजह से बरदाश्त कर लिया कि मैं अहक़ामे इलाही ग़ज़ْوَجَل की बजा आवरी में मगन था।

(حلية الاولياء، عمر بن عبد العزيز، الحديث ٧٣٧٤، ج ٥، ص ٣٥٥ - بتغير)

**अइम्मए हुदा के साथ ठिकाना :**

मुस्लमा बिन अब्दुल मलिक का बयान है कि मैं ने हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के विसाल के बा'द आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को ख़्वाब में देख कर पूछा : “ऐ अमीरल मोअमिनीन ! कैसे हालात पेश आए ?” इरशाद फ़रमाया : “ऐ मुसलमा ! अब मैं फ़ारिग़ हूँ, ब खुदा मैं ने दुन्या में कभी आराम न किया।” मैं ने अर्ज की : “ऐ अमीरल मोअमिनीन ! आप इस वक़्त कहां हैं ?” जवाब दिया : “मैं हिदायत याफ़ता इमामों के साथ जन्नते अदन में हूँ।”

(تاريخ دمشق، الرقم ٥٢٤٢، عمر بن عبد العزيز، ج ٤٥، ص ٢٦٢)

**सब्ज़ पर्चा :**

हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ रात के वक़्त ग़ैर आबाद मसाजिद में तशरीफ़ ले जाते और **अब्लाह** ग़ज़ْوَجَل की खुशूदी हासिल करने के लिये नमाज़ पढ़ते रहते।

जब सहरी का वक्त होता तो पेशानी ज़मीन पर रख देते और मिट्टी पर अपने रुख़सार मलने लगते और फिर तुलूए फ़त्र तक रोते रहते । इसी तरह जब एक रात अपनी आदत के मुताबिक़ इन्हों ने किया और फिर जब फ़ारिग़ हो कर सर उठाया तो एक सब्ज़ पर्चा मिला जिस का नूर आस्मान तक फैला हुवा था । उस पर लिखा था :

”هَذِهِ بَرَاءَةٌ مِنَ النَّارِ مِنَ الْمَلِكِ الْعَزِيزِ لِعَبْدِهِ عَمَرَ بْنِ عَبْدِ الْعَزِيزِ“ या'नी खुदाए मालिक व ग़ालिब **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की तरफ़ से येह “जहन्म की आग से बराअत नामा” है जो उस के बन्दे उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ को अता हुवा है ।”

(تفسير روح البيان، سورة الدخان، تحت الآية ٣، ج ٨، ص ٤٠٢)

وَصَلَّى اللَّهُ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِهِ وَصَحْبِهِ أَجْمَعِينَ



## क़ब्र की डांट

सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना, सुलताने बा क़रीना  
 صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ  
 का फ़रमाने इब्रत निशान है “जब मय्यित को क़ब्र में रखा जाता है तो क़ब्र उस से कहती है : “ ऐ इन्सान ! तेरी हलाकत हो, तुझे मेरे बारे में किस ने धोके में डाला ? क्या तुझे मा'लूम न था, कि मैं फ़ितनों का घर, अन्धेरी कोठड़ी, तन्हाई और वहशत की जगह और किड़ों मकोड़ों का ठिकाना हूं । तुझे मेरे बारे में किस चीज़ ने धोके में डाला कि तू मेरे ऊपर अकड़ अकड़ कर चलता था, अगर मुर्दा नेक हो तो उस की तरफ़ से कोई जवाब देने वाला क़ब्र को जवाब देता है और कहता है : “क्या तुझे मा'लूम नहीं कि येह शख्स नेकी का हुक्म देता और बुराई से मन्अ करता था ।” तो क़ब्र कहती है : “अगर येह बात है तो मैं इस पर सर सब्ज़ व शादाब हो जाती हूं, और उस का जिस्म नूर में बदल जाएगा और रूह **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की तरफ़ परवाज़ कर जाएगी ।”

(المعجم الكبير، الحديث ٩٤٢، ج ٢٢، ص ٣٧٧-المعجم الاوسط، الحديث ٨٦١٣، ج ٦، ص ٢٣٢)

बयान 38 :

عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي **तमकिरु इमाम शाफेई**

**हम्दे बारी तझाला :**

तमाम ता'रीफें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये जिस ने उ-लमा को आ'ला और बुलन्द मरातिब पर फ़ाइज़ फ़रमाया, और उस ने जब अपने अस्मा व सिफ़ात के असरार की समझ के लिये इन्हें चुन लिया तो मरातिब को इन के लिये पस्त कर दिया और इन्हें अह्वाले मा'रिफ़त के लिये झुका दिया। इन की अक्लों के मोतियों को (खरे खोटे की) तमीज़ के धागे में मज़बूती से पिरो दिया। इन की निशानियां तमाम आलम में फैला दीं। इन की क़लमों से हिक्मतों के चश्मे जारी कर दिये। तो इन में से हर कोई अपने मज़हब (या'नी फ़िक्ह) के मुताबिक़ लिखता है। चुनान्चे,

हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा नो'मान बिन षाबित رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने'मते इलाही عَزَّوَجَلَّ और इल्म व फ़हम में इस गुरौहे उ-लमा के बादशाह हैं। और हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ इस गुरौह में फ़ज़्लो क़माल में फ़ाइक़ हैं, इन्होंने ने हदीषे पाक की राह हमवार की और अपने हिस्से के अहक़ाम मुत्तब फ़रमाए। और हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي इल्म की बहुत ज़ियादा चाहत रखने वाले हैं और इन्होंने ने उ-लमा को इल्म से बड़ा हिस्सा पहुंचाया। और हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ उ-लमा के सरदार हैं, इन पर ए'तिमाद किया जाता है पस वोह अपने पास किसी ग़म से नहीं घबराते। और येह तमाम अहले इल्म अपने मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ से अपनी नेक त़लब के पूरा होने के इन्तिहाई ख़्वाहिश मन्द और इस फ़रमाने ज़ीशान की अमली तफ़सीर हैं जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने हबीब, हबीबे लबीब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर नाज़िल फ़रमाया है : (ب 16: 114) **وَقُلْ رَبِّ زِدْنِي عِلْمًا** "तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अर्ज़ करो कि ऐ मेरे रब्ब ! मुझे इल्म ज़ियादा दे।"

मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ऐसी हम्द बजा लाता हूं जिस के ज़रीए इख़लास का कुछ हिस्सा पाने में कामयाब हो जाऊं। और मैं इस कलिमे "لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ" (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, वोह अकेला है, उस का कोई शरीक नहीं) की गवाही देता हूं ताकि इस के ज़रीए अपने गुनाहों को मिटा लूं और गवाही देता हूं कि हज़रते सय्यिदुना मुहम्मदे मुस्तफ़ा, अहमदे मुजतबा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के खास बन्दे और रसूल हैं। जिन की शरीअत के तुफ़ैल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने दिलों से ग़म दूर फ़रमा दिये। आप पर दुरूदो सलाम हो और आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की आल व अस्हाब, अज़वाजे मुतहहरात और अवलादे अमज़ाद पर रहमत व सलामती नाज़िल हो जिन को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़ज़्ल व शरफ़ के आस्मान पर सितारों की मानिन्द तुलूअ फ़रमाया।



ता'रुफ़े इमामे शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي :

मुअर्रिखीन (तारीख़ लिखने वाले) फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन इदरीस शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي फ़िलिस्तीन के एक कस्बे में पैदा हुए। आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की उम्र दो साल थी कि वालिदे मोहतरम इन्तिक़ाल फ़रमा गए। वालिदे माजिदा आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللَّهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا ले आईं। वहीं आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने परवरिश पाई और अहले इल्म के इजतिमाअत में शिर्कत फ़रमाई। पस अब्बाह عَزَّ وَجَلَّ ने आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ पर इल्म का वोह दरवाज़ा खोला जो किसी पर न खोला था। यहां तक कि जब उम्र मुबारक पन्दरह बरस हुई तो मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللَّهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا के मुफ़ितये अ'ज़म हज़रते सय्यिदुना मुस्लिम बिन ख़ालिद ज़नजी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَنِي को फ़तवा की तरगीब देने लगे।

(كتاب النفقات لابن حبان، باب الميم، الرقم २९९७ محمد بن ادریس الشافعی، ج ५، ص ६०)

**आप का नाम व नसब :**

आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का पूरा नाम मुहम्मद बिन इदरीस बिन अब्बास बिन उम्मान बिन शाफ़ेअ है और नसब मुबारक अब्दे मुनाफ़ से जा कर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से जा मिलता है। आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने बग़दाद शरीफ़ का सफ़र किया और दो साल वहां क़ियाम फ़रमाया। फिर मक्कए मुकर्रमा लौट आए और यहां चन्द माह क़ियाम फ़रमाया। फिर मिस्र तशरीफ़ ले गए और वहीं इन्तिक़ाल फ़रमाया।

आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ रात को तीन हिस्सों में तक्सीम फ़रमा लेते : “तिहाई इल्म के लिये, तिहाई नमाज़ के लिये और तिहाई नींद के लिये।”

(احیاء علوم الدین، کتاب العلم، باب ثانی فی العلم المحمود والمذموم واقسامهما واحکامهما، ج ۱، ص ۴۴)

हज़रते सय्यिदुना रबीअ علیه رحمة الله الجلی का बयान है कि “हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي रोज़ाना एक कुरआने अज़ीम ख़त्म किया करते थे ”

(تاریخ بغداد، الرقم ۴۵۴ محمد بن ادریس الشافعی، ج ۲، ص ۶۱)

मज़ीद फ़रमाते हैं कि “हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي माहे रमज़ानुल मुबारक के नवाफ़िल में साठ (60) बार कुरआने पाक ख़त्म करते थे।”

(احیاء علوم الدین، کتاب العلم، باب ثانی فی العلم المحمود والمذموم واقسامهما واحکامهما، ج ۱، ص ۴۴)

**आप की तिलावत :**

हज़रते सय्यिदुना हसन कराबीसी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं : “मैं ने कई बार हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي की मइय्यत में रात गुज़ारी। मैं ने देखा कि आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ एक तिहाई रात नमाज़ पढ़ते और कभी पचास आयात से ज़ियादा तिलावत न करते, अगर कभी ज़ियादा पढ़ते तो भी सो (100) आयात तक पहुंचते। जब किसी आयते रहूमत की तिलावत करते तो बारगाहे इलाही عَزَّ وَجَلَّ में अपने लिये और तमाम मोअमिनीन के लिये इताअत

**पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इलिमिया (दा' वते इस्लामी)**

के हां पुरी मुअत्ता पढ़ी और जब दोबारा हाज़िर खिदमत हुए तो इमामे मालिक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इरशाद फ़रमाया : “कोई ऐसा शख्स तलाश करो जो तुम्हें पढ़ाए।” तो हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي ने अर्ज़ की : “हुज़ूर ! मैं चाहता हूँ कि आप खुद मेरा पढ़ना समाअत फ़रमाएं, अगर अच्छा न पढ़ सकूँ तो कोई पढ़ाने वाला तलाश कर लूंगा।” इमामे मालिक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इरशाद फ़रमाया : “अच्छ ! ठीक है, पढ़िये !” तो हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي ने अज़ अव्वल ता आखिर पूरी मुअत्ता शरीफ़ ज़बानी पढ़ डाली। आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : “इस पर हज़रते सय्यिदुना इमामे मालिक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने मुझे दुआ दी और इन्तिहाई खुशी का इज़हार फ़रमाया।”

(حلیة الاولیاء، الامام الشافعی، الحديث ۱۳۱۷۷/۱۳۱۷۸/۱۳۱۸۰، ج ۹، ص ۷۸، بتغییر)

हज़रते सय्यिदुना रबीअ बिन सुलैमान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي ने इरशाद फ़रमाया : “एक बार मैं ने मुहम्मद बिन हसन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى से लदा हुवा बुख़्ती ऊंट लिया जिस पर मेरे इन से सुने हुए इल्म के सिवा कुछ न था।”

(حلیة الاولیاء، الامام الشافعی، الحديث ۱۳۱۹۸، ج ۹، ص ۸۶)

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्दुल हक़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي ने इरशाद फ़रमाया : “मैं ने बचपन ही में इल्म की तलाश शुरू कर दी थी जब कि मेरे पास कोई माल न होता था। चुनान्वे, मैं मक्तब जाता और तीर के छोटे छोटे टुकड़े ले कर इन पर अहादीषे मुबारका लिख लिया करता था।”

(حلیة الاولیاء، الامام الشافعی، الحديث ۱۳۱۹۵، ج ۹، ص ۸۵ - بدون “فی الصغر”)

**ऐ मेरे इस्लामी भाइयो !** लगातार मेहनत कर के येह लोग मुराद को पहुंचे, सच्ची तलब की बदौलत इन को तौफ़ीक़ की दौलत मिली और अज़ीम हिम्मत की वजह से लोगों के पेशवा बन गए। ऐ सुनने वाले ! याद रख ! बुलन्द हिम्मतें इन्सान को अहम दर्जात के करीब कर देती हैं। जो अपने आप को थकाता है वोही आराम पाता है। ऐ फुज़ूल कामों में उम्र बरबाद करने वाले ! तू हलाक हुवा जब कि बाक़ी लोग अपना मक्सद पा कर कामयाब हो गए। ऐ बुरे अन्जाम से अपनी निगाहें हटाने वाले ! फ़ज़ाइल व मनाफ़िब को जाएअ करने से बच। तू ने खेल कूद में जो उम्र गुज़ारी वोह तुझे काफ़ी न हुई और अपनी हालत की तब्दीली से भी तू ने कोई वा'ज व नसीहत हासिल न की और तेरी सारी उम्र नुक़सान की कमाई में गुज़र गई और तू आखिरत में इस हालत में आएगा जो तुझे खुश न करेगी।

हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي फ़रमाते हैं : “जिस ने दा'वा किया कि मैं ने दुन्या और ख़ालिके दुन्या की महब्वत अपने दिल में जम्अ कर ली तो उस ने झूट बोला।”

(احیاء علوم الدین، کتاب العلم، باب ثانی فی العلم المحمود والمذموم واقسامهما واحکامهما، ج ۱، ص ۴۵)



**सखावते इमाम शाफेई** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي :

हज़रते सय्यिदुना हमीदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं : “हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफेई अपने किसी काम के सिलसिले में यमन तशरीफ़ ले गए। जब वापस मक्काए मुकर्रमा मुकर्रमा आए तो आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के पास दस हज़ार दिरहम थे। आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने मक्का शरीफ़ से बाहर ही ख़ैमा नसब कर लिया। लोग आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के पास आते रहे। जब आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ख़ैमे से बाहर निकले तो सारा माल राहे खुदा عَزَّ وَجَلَّ में तक्सीम कर चुके थे।”

एक दफ़ा हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي हम्माम से बाहर निकले। आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के पास बहुत सा माल था। आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने सारा माल हम्मामी को दे दिया।

(المرجع السابق، ج ١، ص ٤٥، بتغير قليل)

एक दिन आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ सुवार थे कि कोड़ा हाथ से गिर गया। एक शख्स ने उठा कर पेश किया तो आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने उसे सोने के पचास दीनार अता फ़रमाए।

(المرجع السابق، ج ١، ص ٤٥، بتغير قليل)

**मज़ाक़ करने वाले दरज़ी को भी हुआ ख़ैर :**

मन्कूल है कि एक बार हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي ने किसी दरज़ी से क़मीस सिलवाई। वोह आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के मक़ाम व मर्तबे से ना वाकिफ़ था। उस ने मज़ाक़ करते हुए दाईं आस्तीन इतनी तंग कर दी कि इस में आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का हाथ ब मुश्किल दाख़िल होता और बाईं इतनी कुशादा कर दी कि इस में सर भी दाख़िल हो सकता था। जब क़मीस आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की ख़िदमत में पेश की गई तो आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : **“اللّٰهُمَّ** तुझे जज़ाए ख़ैर अता फ़रमाए ! तंग आस्तीन वुजू में ऊपर चढ़ाने के लिये बेहतर है और खुली आस्तीन किताब रखने के लिये मौजू है।” इसी दौरान ख़लीफ़ए वक़्त का क़ासिद दस हज़ार दिरहम ले कर आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की ख़िदमत में हाज़िर हुवा। दरज़ी के पास ही उस की आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मुलाक़ात हो गई। आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने क़ासिद को फ़रमाया : “इस दरज़ी को कपड़ों की सिलाई दे दो।” जब दरज़ी ने क़ासिद से आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के मुतअल्लिक़ पूछा तो उस ने बताया : “येह हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي हैं।” येह सुनते ही वोह आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के पीछे हो लिया और क़दम बोसी कर के मा'ज़ेरत की, फिर आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की ख़िदमत में ही रहने लगा और आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के हल्क़ए अहबाब में शामिल हो गया।

हज़रते सय्यिदुना रबीअ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَلِي फ़रमाते हैं : “जब मेरा निकाह हुवा तो हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي ने दरयाफ़्त फ़रमाया : “तू ने कितना महर मुकर्रर किया ?”

अर्ज की : “तीस (30) दीनार ।” आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फिर पूछा : “अपनी अहलिया को कितनी रक़म दी ?” मैं ने अर्ज की : “छे दीनार ।” तो आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने मुझे एक थेली भिजवाई जिस में चोबीस (24) दीनार थे और 201 सिने हिजरी मुझे जामेअ मस्जिद में मुअज़्ज़िन लगाव दिया ।”

(شعب الايمان للبيهقي، باب في الجود والسخاء، الحديث ١٠٩٦٢، ج ٧، ص ٤٥٢)

आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का इरशादे पाक है कि “अपनी जान पर सब से ज़ियादा जुल्म करने वाला वोह है कि जब वोह कोई मर्तबा हासिल कर ले तो अपने अज़ीज़ व अक़रिब पर जुल्म करे, शनासा व वाकिफ़े कार लोगों को न पहचाने, शुरफ़ा को हक़ीर जाने और साहिबे फ़ज़ल पर तकब्बुर करे ।”

**आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का ख़ौफ़े खुदावन्दी :**

एक दिन किसी ने हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي के सामने इस आयते मुबारका की तिलावत की :

هَذَا يَوْمٌ لَا يَنْطَفُونَ وَلَا يُؤَدُّ لَهُمْ ﴿١﴾

فَيُغْتَلَبُونَ ﴿٢﴾ (المरسل: ३०-३१)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :** येह दिन है कि वोह बोल न सकेंगे । और न उन्हें इजाज़त मिले कि उज़्र करें । (1)

तो आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का रंग मुतगय्यिर हो गया, रोंगटे खड़े हो गए और जिस्म के जोड़ कप-कपाने लगे और आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ बेहोश हो कर ज़मीन पर तशरीफ़ ले आए । जब इफ़का हुवा तो अर्ज की : “या इलाही عَزَّ وَجَلَّ मैं झूटों के ठिकाने और ग़ाफ़िल लोगों के मुंह फेरने से तेरी पनाह चाहता हूं । या **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ अहले मा'रिफ़त के दिल तेरे लिये झुक गए और मुश्ताक़ लोगों की गर्दन तेरी हैबत के सामने झुक गई । ऐ मेरे मालिको मौला عَزَّ وَجَلَّ मुझे अपना फ़ज़लो करम अता फ़रमा और अपने पर्दे बख़्शिश में छुपा ले और अपने लुत्फ़ो करम से मेरी कोताहियां मुआफ़ फ़रमा दे ।”

(احياء علوم الدين، كتاب العلم، باب ثانی فی العلم المحمود والمذموم واقسامهما واحكامهما، ج ١، ص ٤٥)

**ऐ मेरे इस्लामी भाई ! देख !** जब हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई रَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي का इतने इल्म के बा वुजूद येह हाल है तो तू बे इल्म होने के बा वुजूद कैसे बे ख़ौफ़ है । ग़ाफ़िल जाहिलों के लिये बरबादी है ! इन की उम्रें छीन ली जाएंगी । ज़िन्दगी के शबो रोज़ ख़त्म हो जाएंगे और गुनाह लिख दिये जाएंगे । अब वोह नसीहत हासिल करने से बहरे या अन्धे हैं जब कि नसीहतें तो वाजेह हैं ।

①....मुफ़स्सिर शहीर ख़लीफ़ आ'ला हज़रत सदरुल अफ़ज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي علیه तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं : “न कोई ऐसी हुज्जत पेश कर सकेंगे जो इन्हें काम दे ।” हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि “रोज़े क़ियामत बहुत से मौक़ेअ होंगे, बा'ज में कलाम करेंगे, बा'ज में कुछ बोल न सकेंगे । और दर हक़ीक़त उन के पास कोई उज़्र ही न होगा क्यूंकि दुन्या में हुज्जतें तमाम कर दी गई और आख़िरत के लिये कोई जाए उज़्र बाकी नहीं रखी गई । अलबत्ता उन्हें येह ख़याले फ़ासिद आएगा कि कुछ हीले बहाने बनाएं । येह हीले पेश करने की इजाज़त न होगी । जुनैद रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया कि “उस को उज़्र ही क्या है, जिस ने ने'मत देने वाले से रूग़दानी की, उस की ने'मतों को झुटलाया, उस के एहसानों की नसपासी की ।”

जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ कुरआने हकीम में इरशाद फ़रमाता है :

﴿2﴾ فَمَالِ هَؤُلَاءِ الْقَوْمِ لَا يَكَادُونَ يَفْقَهُونَ

حَدِيثُنَا 0 (प ०५, النساء: ७८)

सख़्त दिल वाले ज़िक्क के इजतिमाआत से ऐसे ही निकलते हैं जैसे दाख़िल हुए थे। चुनान्चे, रब्बे अज़ीम عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿3﴾ وَسَوَاءٌ عَلَيْهِمْ ءَأَنذَرْتَهُمْ أَمْ لَمْ تُنذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ 0

(प २२, यूस: १०)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो उन लोगों को क्या हुवा कोई बात समझते मा'लूम ही नहीं होते।

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और उन्हें एक सा है तुम उन्हें डराओ या न डराओ वोह ईमान लाने के नहीं।

नसीहतें इन के दिलों के गिर्द घूमती रहती हैं मगर दाख़िल होने का रास्ता नहीं पातें।

**अल्लाह** क़दीर عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿4﴾ خَتَمَ اللَّهُ عَلَى قُلُوبِهِمْ وَعَلَى سَمْعِهِمْ ط

وَعَلَى أَبْصَارِهِمْ غِشَاوَةٌ (प १, البقرة: ७)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** ने उन के दिलों पर और कानों पर मोहर कर दी और उन की आंखों पर घटा टोप है। (1)

इस के बा वुजूद मायूस नहीं होना चाहिये, इस लिये कि शराब एक रात में सिक्रा बन जाती है। चुनान्चे, मुक़ल्लिबुल कुलूब रब्ब عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿5﴾ يُقَلِّبُ اللَّهُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ ط (प १८, النور: ४६)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** बदली करता है रात और दिन की।

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ इस्लाम लाने से पहले घर से निकले तो सख़्त दिल थे लेकिन जब ईमान लाए तो दिल साफ़ होने पर नर्म पड़ गए।

ऐ इस्लामी भाई ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझे पर रहूम फ़रमाए ! अगर तुझे अंधेरे ढांप लें तो उ-लमाए इस्लाम رَحِمَهُمُ اللَّهُ السَّلَام की पैरवी कर।

①....मुफ़स्सिरे शहीर ख़लीफ़ आ'ला हज़रत सदरुल अफ़ज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं : “ख़ुलासए मतलब येह है कि कुफ़ार ज़लालत व गुमराही में ऐसे डूबे हुए हैं कि हक़ देखने, सुनने, समझने से इस तरह महरूम हो गए जैसे किसी के दिल और कानों पर मोहर लगी हो और आंखों पर पर्दा पड़ा हो। मस्अला : इस आयत से मा'लूम हुवा कि बन्दों के अफ़आल भी तहूते कुदरते इलाही عَزَّوَجَلَّ हैं।”



## एक नौजवान को नसीहत :

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बलवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : “मैं हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي के साथ बग़दाद के किसी अलाके में था। आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने एक नौजवान को देखा जो अच्छे तरीक़े से वुजू न कर रहा था। तो उसे इरशाद फ़रमाया : “ऐ लड़के ! अपना वुजू ठीक कर, **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ दुनिया व आख़िरत में तुझ पर एहसान फ़रमाएगा।” फिर आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ तशरीफ़ ले गए। नौजवान ने जल्दी से वुजू मुकम्मल किया और आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से जा मिला। वोह आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को पहचानता न था। आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ उस की तरफ़ मुतवज्जेह हुए और इस्तिफ़सार फ़रमाया : “क्या कोई काम है ?” अर्ज़ की : “जी हां ! मुझे भी वोह इल्म सिखाइये जो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने आप को सिखाया है।” तो आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : “जान ले ! जिस ने **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ की मा'रिफ़त पा ली वोह नजात पा गया। जिस ने अपने दीन के मुआमले में ख़ौफ़ किया वोह तबाही से बच गया। जिस ने दुनिया में ज़ोहद इख़्तियार किया तो कल (बरोज़े क़ियामत) जब वोह **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ की तरफ़ से इस का षवाब देखेगा तो इस की आंखें ठंडी होंगी।”

(फिर फ़रमाया) “क्या तुझे कुछ मज़ीद न बताऊं ?” उस ने अर्ज़ की : “जी हां ! ज़रूर बताइये।” तो आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इरशाद फ़रमाया : “जिस में तीन खूबियां जम्अ हो गई उस का ईमान मुकम्मल हो गया : (1).....जो नेकी का हुक्म दे और खुद भी इस पर अमल करे (2)....जो बुराई से मन्अ करे और खुद भी इस से बाज़ रहे और (3).....जो हुदूदे इलाही عَزَّ وَجَلَّ की हिफ़ाज़त करे।” फिर इरशाद फ़रमाया : “क्या कुछ और भी बताऊं ?” अर्ज़ की : “क्यूं नहीं, ज़रूर बताइये।” तो इरशाद फ़रमाया : “दुनिया से बे रग़बत और आख़िरत का शौक़ रखने वाला हो जा और अपने हर काम में **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ से सच का मुआमला कर नजात पाने वालों के साथ नजात पा जाएगा।” फिर आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ चल दिये। बा'द में उस नौजवान ने आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के मुतअल्लिक पूछा तो उसे बताया गया : “येह हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई (احياء علوم الدين، كتاب العلم، باب ثاني في العلم المحمود والمذموم.....، الخ، ج ١، ص ٤٥، بتغير) थे।”

आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ इरशाद फ़रमाते हैं : “मैं चाहता हूं कि लोग (मेरे) इस इल्म से फ़ाइदा उठाएं और मेरी तरफ़ इस में से किसी शै को मन्सूब न करें।” (المرجع السابق، ج ١، ص ٤٦)

आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : “मैं ने जिस से भी मुनाज़रा किया तो येही ख़्वाहिश रही कि उसे हक़ की तौफ़ीक़ मिले, वोह सीधे रास्ते पर रहे, उस की मदद की जाए और उसे **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ की हिफ़ाज़त व रिआयत हासिल हो। मैं ने जिस से भी कलाम किया तो येही पसन्द किया

कि उस के सामने हक़ ज़ाहिर हो और उस की क़तअन कोई परवाह न की, कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरी ज़बान पर हक़ वाज़ेह करता है या दूसरे की ज़बान पर ।”

(حلیۃ الاولیاء، الامام الشافعی، الحدیث ۱۳۳۴۱، ج ۹، ص ۱۲۵ - المرجع السابق، ج ۱، ص ۴۶، بتغییر)

आप **रَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ** इरशाद फ़रमाते हैं : “मैं ने जिस पर हक़ और दलील काइम की और उस की महबूबत मेरे दिल में बैठ गई । और जिस ने हक़ बात में मेरा इन्कार किया और मेरी दलील की (बेजा) मुख़ालफ़त की तो वोह मेरी निगाहों से गिर गया और मैं ने उसे छोड़ दिया ।” (حلیۃ الاولیاء، الامام الشافعی، الحدیث ۱۳۳۳۷، ج ۹، ص ۱۲۵)

हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल **رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ** फ़रमाते हैं : “मैं चालीस साल से जो भी नमाज़ पढ़ता हूं इस में हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई **رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِی** के लिये दुआ ज़रूर करता हूं ।” आप **رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ** के साहिब ज़ादे ने अर्ज़ की : “ऐ वालिदे मोहतरम ! येह शाफ़ेई कौन शख़्स है जिस के लिये आप दुआ करते हैं ? तो हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल **رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِی** ने इरशाद फ़रमाया : “ऐ मेरे बेटे ! हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई **رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِی** दुन्या के लिये सूरज की तरह और लोगों के लिये अफ़ियत का बाइष थे तो अब बताओ ! क्या इन दो सिफ़ात में कोई उन का नाइब है ?” (احیاء علوم الدین، کتاب العلم، باب ثانی فی العلم المحمود والمذموم، ج ۱، ص ۴۶)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** ऐसे ही सालेह व पाक बाज़ उ-लमाए किराम **رَحْمَتُهُمُ اللّٰهُ السَّلَام** दुन्या के लिये सूरज की तरह और लोगों के लिये अफ़ियत का बाइष हैं । इन का नाइब भी कोई नहीं । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन की बरकत से बलाएं दूर करता और आसानियां नाज़िल फ़रमाता है । बरकत आम होती है और रहमत बटती है ।

**سُبْحَانَ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** येह कैसे अज़ीम लोग थे । दुन्या से कनारा कशी इख़्तियार कर के बारगाहे इलाही **عَزَّوَجَلَّ** में हाज़िर हो जाते थे जब कि तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को छोड़ कर दुन्या की तरफ़ भागते हो । अस्लाफ़े किराम **رَحْمَتُهُمُ اللّٰهُ السَّلَام** शैतान को नामुराद करते थे जब कि तुम से शैतान मस्ख़री करता है । तुम्हारे और उन के दरमियान कितनी दूरी है ? दुन्या तुम पर हुक्मरानी कर रही है जब कि वोह दुन्या पर हुक्मरानी करते थे । पस तुम दुन्या के गुलाम हो जब कि वोह इस की गुलामी से आज़ाद थे । उन के पास सफ़रे आख़िरत का ज़ादे राह था इस लिये उन्हें शर्मिन्दगी न उठानी पड़ी । उन्होंने ने ज़माने की क़द्र जानी तो ज़िन्दगी में होशियार रहे । अगर तुम सहरा के वक़्त उन का दीदार करो तो उन्हें हिदायत के सितारे पाओगे । नहीं, बल्कि वोह तो हिदायत के चांद हैं जो रात की तारीकी में बारगाहे इलाही में खड़े हो कर उज़्र पेश करते रहते हैं जब कि तुम नींद और ग़फ़लत के तूफ़ानी समन्दरों में डूबे हुए हो ।

**आप **رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ** की दुन्या से बे रग़बती :**

हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई **رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِی** को दुन्या से कोई रग़बत न थी । लग़व और बेहूदा बातों से इजतिनाब फ़रमाते थे । चुनान्वे, एक रोज़ आप **رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ** एक आदमी

के पास से गुज़रे जो किसी अ़लम की बुराई कर रहा था । आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ हमारी तरफ़ मुतवज्जेह हुए और फ़रमाया : “अपने कानों को गीबत सुनने से पाक रखो जैसे अपनी ज़बान को गीबत करने से बचाते हो । इस लिये कि गीबत सुनने वाला भी करने वाले का शरीक होता है । बिला शुबा बे वुकूफ़ शख्स जब अपने बरतन में गंदगी देखता है तो इसे तुम्हारे बरतनों में उंडेलना चाहता है । अगर बे वुकूफ़ की बात का सख़्ती से इन्कार कर दिया गया तो इन्कार करने वाला इसी तरह खुश बख़्ती से सरफ़राज़ हो जैसे बे वुकूफ़ बद बख़्ती का मुस्तहिक् बनता है ।”

(حلیۃ الاولیاء، الامام الشافعی، الحدیث ۱۳۳۶، ج ۹، ص ۱۳۰)

मन्कूल है कि हज़रते सय्यिदुना अब्दुल काहिर बिन अब्दुल अज़ीज़ عليه رحمة الله الكبير एक मुत्तकी और नेक शख्स थे । वोह हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِي से तक्वा के मसाइल दरयाफ़्त करते तो आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ इन के तक्वा की वजह से इन की तरफ़ तवज्जोह फ़रमाते । एक बार इन्होंने ने अर्ज़ की : ‘सब्र, आज़माइश और ताक़त व कुदरत में से कौन सी चीज़ अफ़ज़ल है ?’ तो आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने जवाब दिया : “ताक़त, कि येह अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام का दर्जा है और आज़माइश के बा’द ही ताक़त मिलती है । जब किसी की आज़माइश होती है और वोह सब्र करता है तो उसे ताक़त दी जाती है । क्या आप देखते नहीं कि **अल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को आज़माइश में डाला फिर उन्हें ताक़त अता फ़रमाई । हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को आज़माइश में मुब्तला फ़रमाया फिर उन्हें कुव्वत अता फ़रमाई । इसी तरह हज़रते सय्यिदुना अय्यूब عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का इम्तिहान लिया फिर उन्हें भी ताक़त दी और हज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को भी आज़माइश में मुब्तला फ़रमाया कर अज़ीम बादशाहत अता फ़रमाई । पस ताक़त का दर्जा सब से बुलन्द है ।” (احیاء علوم الدین، کتاب العلم، باب ثانی فی العلم المحمود والمذموم واقسامهما واحکامهما، ج ۱، ص ۴۶)

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल मलिक बिन अब्दुल हमीद मैमूनी رَحْمَةُ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं : “मैं हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की बारगाह में हाज़िर था कि हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِي का ज़िक्रे ख़ैर हुवा तो मैं ने देखा कि इमाम अहमद रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ इन की बहुत ता’जीम कर रहे थे । फिर इरशाद फ़रमाया : “मुझे येह हदीष पहुंची है कि **अल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के महबूब दानाए गुयूब, मुनज़ज़हुन अनिल उयूब وَ اِلٰهٍ وَسَلَّم का फ़रमाने रहमत निशान है : “**अल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام इस उम्मत में हर सो साल के सिरे पर एक ऐसा शख्स भेजेगा जो इस (उम्मत) के लिये उस के दीन को काइम करेगा ।”

(سنن ابی داؤد، کتاب الملاحم، باب ما ی ذکر فی قرن المائۃ، الحدیث ۴۲۹۱، ص ۱۵۳)

(फिर फ़रमाया) हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ पहली सदी के मुजद्दीद थे और मैं उम्मीद करता हूँ कि हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِي दूसरी सदी के मुजद्दीद हैं ।” (المستدرک، کتاب الفتن والملاحم، باب ذکر بعض المجرّدين فی هذه الامۃ، رواية استاذ ابی الولید، تحت الحدیث ۸۶۳۹، ج ۵، ص ۷۳)



हज़रते सय्यिदुना हारून बिन सईद बिन हैषम ईली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَلِي ने इरशाद फ़रमाया :  
 “मैं ने हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई الْكَافِي عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْجَافِي जैसा कोई न देखा । आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ मिस्त्र में हमारे पास तशरीफ़ लाए तो लोगों ने कहा : “एक कुरैशी फ़कीह हमारे पास आए हैं ।”  
 पस हम आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के पास हाज़िर हुए तो आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ नमाज़ पढ़ रहे थे । हम ने आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से ज़ियादा ख़ूब सूत चेहरे वाला और आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से अच्छी नमाज़ पढ़ने वाला कोई नहीं देखा । हम इन्तिज़ार करते रहे जब आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने नमाज़ अदा कर ली तो गुफ़्तू का आगाज़ फ़रमाया । हम ने आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से अच्छा कलाम करने वाला भी कोई न देखा ।”

हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई الْكَافِي عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ अम तौर पर हकीकत, दुनिया से बे रग़बती और दिलों के भेदों के मुतअल्लिक कलाम फ़रमाया करते थे । आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाया करते : “वोह शख़्स दुनिया से कैसे बे रग़बत हो सकता है जो आख़िरत की मा'रिफ़त नहीं रखता ? वोह कैसे दुनिया से ख़लासी पा सकता है जो खुद को झूटी तम्अ से ख़ाली न करे ? वोह कैसे सलामती पा सकता है जिस की ज़बान और हाथ से लोग महफूज़ न हो ? वोह कैसे हिकमत पा सकता है जिस का कलाम रिज़ाए इलाही غَرْوَجَل के लिये न हो ?”

किसी ने आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से पूछा : “रिया क्या है ?” तो आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इरशाद फ़रमाया : “जब तुझे अपने अमल में खुद पसन्दी का डर हो तो देख ! तू किस की रिज़ा का तालिब है ? किस षवाब की तरफ़ रग़बत रखता है ? किस अज़ाब से डरता है ? किस अफ़ियत का शुक्र अदा करता है ? और किस मुसीबत को याद करता है ?” (जब तू इन में से किसी चीज़ में ग़ौरो फ़िक्र करेगा तो अपने आ'माल को हकीर पाएगा ।)

(احياء علوم الدين، كتاب العلم، باب ثانی فی العلم المحمود والمذموم واقسامهما واحكامهما، ج ۱، ص ۴۶)

### इमामे शाफ़ेई عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ के चन्द अश़्कार

हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई الْكَافِي عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ के बहुत से अश़्कार हैं जो हिकमत व नसीहत पर मुश्तमिल हैं । हम यहां पर उन का ज़िक्र करेंगे जो हम तक पहुंचे और आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से सहीह तौर पर षाबित हैं ।

आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का कलाम हफ़ाइक़ और दकीक़ मअ़ानी पर भी मुश्तमिल है । जिस में से कुछ हज़रते सय्यिदुना सुवैद बिन सईद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْحَمِيد ने नक़ल फ़रमाए हैं । चुनान्चे, फ़रमाते हैं कि “हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई الْكَافِي عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ मदीनए मुनव्वरा में नमाज़े फ़ज़्र के बा'द बैठे हुए थे कि एक आदमी हाज़िरे ख़िदमत हुवा और अर्ज़ की : “मैं गुनाहों के सबब इस बात से ख़ौफ़ज़दा हूं कि अपने रब्ब غَرْوَجَل के हुज़ूर पेशी के वक़्त मेरे पास सिवाए तौहीद के कोई अमल न होगा ।” हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई الْكَافِي عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ ने इरशाद फ़रमाया : “ऐ बन्दए

मोमिन ! अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझे मुआफी से मायूस करने का इरादा भी कर ले तो भी तेरे गुनाह बख़्शाना उस के लिये नामुमकिन नहीं । क्योंकि वोह खुद इरशाद फ़रमाता है :

وَمَنْ يَغْفِرِ الذُّنُوبَ إِلَّا اللَّهُ ﴿٦﴾

(प ६, अल عمران: १३०)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और गुनाह कौन बख़्शे सिवा **अल्लाह** के ।

और अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुझे जहन्नम की सज़ा और हमेशा उस में ठहराने का इरादा फ़रमा लिया होता तो तुझे तौहीद व मा'रिफ़त की तौफीक़ न देता । फिर आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने चन्द अशआर पढ़े, जो येह हैं :

إِنْ كُنْتَ تَغْدُو فِي الذُّنُوبِ جَلِيدًا  
فَلَقَدْ نَاكَ مِنَ الْمُهْمِيمِ غَفْوَةً  
لَا تَيَاسَسَنَّ مِنْ لُطْفِ رَبِّكَ فِي الْحَشَا  
لَوْ شَاءَ لَنُتْصِلِيَ جَهَنَّمَ خَالِدًا  
وَتَخَافُ فِي يَوْمِ الْمَعَادِ وَجِيدًا  
وَتَأَخَّجُ مِنْ نِعَمِ عَلَيْكَ مَزِيدًا  
فِي بَطْنِ أُمِّكَ مُضْغَةً وَوَلِيدًا  
مَا كَانَ لَهُمْ قَلْبُكَ التَّوَجِيدًا

तर्जमा : अगर तू गुनाहों में पिघल कर बर्फ़ बन चुका है और अब क़ियामत के दिन की सज़ा से डर रहा है तो याद रख ! हिफ़ाज़त फ़रमाने वाला खुदा عَزَّوَجَلَّ तुझ पर अफ़वो करम फ़रमाएगा और तुझे अपनी मज़ीद ने'मतें फ़राहम करेगा । ऐ शख़्स ! तू अपनी मां के पेट के अन्दर लोथड़े और नोज़ाईदा बच्चे की तरह था तो तब भी उस ने अपने लुत्फ़े करम से तुझे मायूस न किया । अगर वोह तुझे हमेशा जहन्नम में जलाना चाहता तो तेरे दिल में अपनी वहदत पर ईमान दाख़िल न करता ।

येह सुन कर वोह आदमी रो पड़ा और इबादत शुरू कर दी । वोह आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के कलाम से बहुत मसरूर हुआ ।

**इमामे शाफ़ेई** رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की बख़्श दुआएं

आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने कई अशआर और दुआएं इरशाद फ़रमाई हैं । हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मरवान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ फ़रमाते हैं : मैं हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई الْكَافِي के इल्मी हल्के में बैठता और आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से सीख कर लिखा करता । एक सुब्ह मैं आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के पास हाज़िर हुवा तो आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को मस्जिद में मौजूद पाया । आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ नमाज़ अदा फ़रमा रहे थे । मैं बैठ गया हत्ता कि आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो दुआएं फ़रमाई । इन में से कुछ मैं ने याद कर लीं । जिन में से एक येह है :

اللَّهُمَّ اٰمَنْ عَلَيْنَا بِصَفَاءِ الْمَعْرِفَةِ وَهَبْ لَنَا تَصْحِيحَ الْمَعَامَلَةِ فِيمَا بَيْنَنَا وَبَيْنَكَ عَلَى السُّنَّةِ وَاَرْزُقْنَا صِدْقَ التَّوَكُّلِ  
عَلَيْكَ وَخَسِّنِ الظَّنَّ بِكَ وَاٰمَنْ عَلَيْنَا بِكُلِّ مَا يَغْرِثُنَا الْبَيْتَ مَقْرُونًا بِعَوَافِي الدَّارَيْنِ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ

या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम पर एहसान फ़रमाते हुए ख़ालिस मा'रिफ़त अता फ़रमा । हमें उन मुआमलात की दुरुस्तगी अता फ़रमा जो हमारे और तेरे दरमियान हैं । और अपनी ज़ात पर सच्चा तवक्कुल और हुस्ने यकीन अता फ़रमा । ऐ सब से बढ़ कर रहम फ़रमाने वाले ! अपनी ख़ास रहमत से हमें हर वोह भलाई अता फ़रमा जो दुन्या व आख़िरत की अफ़ियतों के साथ साथ तेरा कुर्ब बख़्शे ।" (आमीन)

हज़रते अब्दुल्लाह عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं : “जब आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ दुआ से फ़ारिग हुए तो मस्जिद से बाहर तशरीफ़ ले गए। मैं भी आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के पीछे हो लिया। फिर आप ठहर गए और आस्मान को देख कर ज़ेरे लब कुछ अशआर पढ़ने लगे।

**मौला अली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى ने अंगूठी अता फ़रमाई :**

हज़रते सय्यिदुना रबीअु عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِی़ फ़रमातें हैं, मैं ने हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ الْكَاف़ी को फ़रमाते सुना : “क़ियामे यमन के दौरान मैं ने ख़्वाब में देखा गया कि मैं तवाफ़ की जगह बैठा हूँ। इसी दौरान शेर ख़ुदा, हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा की जगह बैठा हूँ। इसी दौरान शेर ख़ुदा, हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा की तशरीफ़ लाए। मैं जल्दी से आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की तरफ़ लपका, सलाम अर्ज किया और मुसाफ़हा किया। आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने मुझे सीने से लगा लिया और अपनी उंगली से अंगूठी निकाल कर मेरी उंगली में पहना दी।” सुब्ह के वक़्त जब मैं नींद से बेदार हुआ तो मुअब्बिर (या'नी ख़्वाब की ता'बीर बताने वाले) से अपना ख़्वाब बयान किया तो उस ने मुझे बताया : “ऐ अबू अब्दुल्लाह ! आप को खुश ख़बरी हो ! आप का मस्जिदे ह़राम में हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा का दीदार करना अज़ाबे नार से नजात की बिशारत है। आप का इन से मुसाफ़हा करना यौमे हिसाब में अमान है और रहा इन का आप की उंगली में अंगूठी पहनाना तो इस का मतलब यह है कि अंन क़रीब सारी दुनिया में आप की शोहरत ऐसी होगी जैसी हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा की है।” (تاریخ بغداد، الرقم ٤٥٤، محمد بن ادریس الشافعی، ج ٢، ص ٥٨، بتغییر)

**इमामे शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَاف़ी की दुआ :**

या रब्बुल आलमीन عَزَّ وَجَلَّ मैं तेरी पाकीज़गी के नूर व अज़मत और तेरे जलाल की बरकत की पनाह मांगता हूँ हर आफ़त व मुसीबत और शरीर ज़िन्न व इन्स के पेश आने से, सिवाए उस के जो ख़ैर लाए। ऐ **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ तू ही मेरी पनाह गाह और जाए क़रार है लिहाज़ा मैं तुझी से पनाह त़लब करता हूँ। ऐ वोह ज़ात जिस के आगे बड़े बड़े जाबिरों की गर्दनें झुक जाती हैं और बड़े बड़े सरकशों की गर्दनें ख़म हो जाती हैं। या इलाही عَزَّ وَجَلَّ मैं तेरे सामने रुस्वा होने, ऐबों का पर्दा चाक होने, तेरी याद भूल जाने और तेरे शुक्र से मुंह मोड़ने से तेरे जलाल व करम की पनाह में आता हूँ। मेरे दिन रात, आराम व सुकून, और सफ़र तेरे हिफ़ज़ व अमान में हैं। तेरी हम्दो षना मेरा ओढ़ना बिछोना है। तेरे सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं। मैं हर ऐब से तेरी पाकी बयान करता हूँ और तेरे वजहे करीम की तकरीम करता हूँ। ऐ सब से बढ़ कर रहूम फ़रमाने वाले ! मुझे रुस्वाई और अपने बन्दों के शर से महफूज़ फ़रमा और बुरी खुफ़्या तदबीर से महफूज़ फ़रमा। मुझ पर अपनी हिफ़ाज़त के ख़ैमे ओढ़ा दे और मुझे अपनी इनायत की हिफ़ाज़त में दाख़िल फ़रमा दे। (आमीन)

(حلیۃ الاولیاء، الامام الشافعی، الحدیث ١٣٢٠/١٣٢٠/٣، ج ٩، ص ٨٧)



ऐ मेरे इस्लामी भाइयो ! सलफे सालेहीन, उ-लमाए किराम और मुजतहिदीने उज़्जाम رَحْمَهُمُ اللَّهُ السَّلَام इस दुन्याए फ़ानी से कूच कर गए लेकिन उन की निशानियां बाकी हैं, उन के तरीके मिटा दिये गए मगर उन की खूबियां और अच्छी बातें नहीं मिटाई जा सकीं ।

**इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي का सोना हमारी इबादत से बेहतर है :**

हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي की बहुत ज़ियादा इज़्ज़त करते थे । कषरत से आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का ज़िक्रे खैर करते और आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की ता'रीफ़ करते । हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي की एक नेक सीरत बेटी थी जो रात शब बेदारी में और दिन रोज़े में गुज़ारती । वोह सालेहीन के वाकिआत को बहुत पसन्द करती थी और हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي को देखना चाहती थी क्यूंकि उन के वालिदे मोहतरम इमाम अहमद رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की बहुत ज़ियादा अज़मत व शान बयान करते थे । एक दफ़ा इत्तिफ़ाक़न हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي ने हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के हां रात गुज़ारी । आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की बेटी बहुत खुश हुई । उसे उम्मीद थी कि आज इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي के अफ़अल या'नी उन की इबादत, और कलाम को देखने और सुनने का ख़ूब मौक़अ मिलेगा । जब रात हुई तो हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ नमाज़ और यादे इलाही عَزَّ وَجَلَّ के लिये खड़े हो गए जब कि हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي चित लैटे रहे । बच्ची फ़ज़्र तक आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को इसी हालत में देखती रही और सुब्ह अपने बाप से अर्ज़ की : “मैं ने देखा कि आप हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي की बहुत ता'ज़ीम करते हैं लेकिन मैं ने तो उन को आज रात नमाज़, ज़िक्र या दीगर औरादो वज़ाइफ़ में मशगूल नहीं पाया ।” अभी येही गुफ़्तगू हो रही थी कि हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي तशरीफ़ ले आए । हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से पूछा : “रात कैसी गुज़री ?” इरशाद फ़रमाया : “इस से ज़ियादा बरकत व नफ़अ वाली और अच्छी रात मैं ने पहले कभी न देखी ।” हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने पूछा : “वोह कैसे ?” तो फ़रमाने लगे : “वोह यू कि मैं ने आज रात पीठ के बल लैटे लैटे सो मसाइल अख़ज़ किये, जो तमाम के तमाम मुसलमानों के नफ़अ के लिये हैं ।” फिर आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने रुख़सत ली और तशरीफ़ ले गए । हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अपनी साहिब ज़ादी से फ़रमाया : “येह हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي का आज रात का अमल था । वोह सोए हुए इस से अफ़ज़ल अमल कर रहे थे जो मैं ने खड़े हो कर इबादत करते हुए किया ।”

ऐ मेरे इस्लामी भाई ! इन बर्गुज़ीदा बन्दों की हरकात व सकनात **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये थी । इन के अफ़्आल व अहवाल उसी के लिये थे । इन का ज़िक्रो फ़िक्र भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही के लिये था । इन का क़ियाम इताअते इलाही عَزَّوَجَلَّ था । इन की नींद सदका थी । इन का ज़िक्र रब्ब की तस्बीह करना था । इन का सुकूत फ़िक्रे आख़िरत था । इन का इल्म उम्मत के लिये शिफ़ा और रहमत था । बिला शुबा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन्हें बहुत कुछ अता फ़रमाया, इन की ता'रीफ़ व तौसीफ़ फ़रमाई और इन्हें इस्लाम का इमाम और लोगों का पेशवा बनाया ।

मन्कूल है कि हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي इल्मी मुआमलात और ज़िक्रे इलाही عَزَّوَجَلَّ में रात गुज़ारते, हड़ाइक व असरार की सरज़मीन में घूमते और फ़िक्रे आख़िरत के पाकीज़ा बाग़ात में सैर व सियाहत करते । जब सहरी की हलकी हलकी हवा के झोंके महसूस होते तो आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ बेचैन हो जाते, रंग मुतगय्यिर हो जाता और महब्बत की आग भड़क उठती और ऐसी हालत त़ारी हो जाती जैसे अरबाबे अहवाल (या'नी अहले मा'रिफ़त) के इलावा कोई नहीं जान सकता । आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से इस की वजह पूछी गई तो इरशाद फ़रमाया : “अगर सहरी के वक़्त तुम पर वोह बातें ज़ाहिर हों जो मुझ पर होती हैं तो दुन्या से बे रग़बत हो जाओ और आख़िरत की तय्यारी पर कमर बस्ता हो जाओ ।”

وَصَلَّى اللَّهُ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِهِ وَصَحْبِهِ أَجْمَعِينَ



दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबियत के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए मदनी इन्आमात का रिसाला पुर कर के हर मदनी (इस्लामी) माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के (दावते इस्लामी के) ज़िम्मेदार को जम्अ करवाने का मा'मूल बना लीजिये اِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की हिफ़ाज़त के लिय कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा ।

बयान : 39

بَلَّغْكِ رَحْمَةُ إِيْمَانِ مَالِكِ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ

हम्दे बारी तआला :

तमाम खूबियां **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के लिये जिस ने उ-लमा के लिये इल्म को दलील व षुबूत बनाया और उन्हें इस के जरीए गनी कर दिया अगर्चे वोह माल व नसब में कम हों। और इसी इल्म के जरीए हज़रते सय्यिदुना इदरीस **عَلَيْهِ السَّلَام** जन्नत से सरफ़राज़ हुए और **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने इन्हें रिफ़अत व बुलन्दी अता फ़रमाई और मुन्तख़ब फ़रमाया। इसी इल्म की तलब में हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह **عَلَيْهِ السَّلَام** और हज़रते सय्यिदुना यूशअ बिन नून **عَلَيْهِ السَّلَام** ने पुख़्ता अज़म कर के सफ़र इख़्तियार फ़रमाया यहां तक कि सफ़र में मशक्कत उठाई। (कुरआने पाक में बयान फ़रमाया :)

”وَإِذْ قَالَ مُوسَى لِفَتَاهُ لَا أَبْرَحُ حَتَّى أَبْلُغَ مَجْمَعَ الْبَحْرَيْنِ أَوْ أَمْضِيَ حُقُبًا“ (الكهف: ६०)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और (याद करो) जब मूसा ने अपने खादिम से कहा मैं बाज़ न रहूंगा जब तक वहां न पहुँचूँ जहां दो समन्दर मिले हैं या क़रनों (मुद्दतों तक) चला जाऊँ।<sup>(1)</sup>

इसी इल्म के सबब **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने हज़रते सय्यिदुना आदम **عَلَيْهِ السَّلَام** को तमाम इन्सानों का बाप बनाया और फिरिश्तों को हुक्म दिया कि आप **عَلَيْهِ السَّلَام** को सजदा करें। तो सब ने सजदा किया मगर इब्लीस (या'नी शैतान) ने सजदा करने से इन्कार कर दिया (और ला'नत का मुस्तहिक् ठहरा)।

**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने हज़रते सय्यिदुना आदम **عَلَيْهِ السَّلَام** की अवलाद से मुख़लिफ़ कबीले और ख़ानदान बनाए और तक्दीर का फैसला उन पर जारी फ़रमाया। और उस ने हर शै के लिये एक ज़रीआ बनाया। उ-लमा को अपनी इनायत से तौफ़ीक़ बख़्शी तो वोह रग़बत व शौक़ से ख़िदमते इल्म में लग गए। उस ने उन्हें अपने अहक़ाम की समझ और पहचान अता फ़रमाई जिस के ज़रीए इन्होंने ने क़द्रो मन्ज़िलत और मरातिब हासिल किये। उस ने इन्हें दुन्या में मख़्लूक के लिये सरदार और राहनुमा बनाया जिस के ज़रीए इन्होंने ने बुजुर्गी व अख़्लाक़ हासिल किया। उस ने इन के दिलों में ऐसे अन्वार दाख़िल फ़रमा दिये जिन की रोशनी में वोह ऐसी बईद बातों तक पहुँच जाते हैं

①.....मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुदीन मुरादाबादी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي** तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान मे इस आयते मुबारका के तहूत फ़रमाते हैं : “जिन (या'नी खादिम) का नाम यूशअ इब्ने नून है जो हज़रते सय्यिदुना मूसा **عَلَيْهِ السَّلَام** की ख़िदमत व सोहबत में रहते थे और आप से इल्म अख़ज़ करते थे और आप के बा'द आप के वलिये अहद हैं। बहरे फ़ारस व बहरे रूम जानिबे मशरिक् में और मजमउल बहरैन वोह मक़ाम है जहां हज़रते सय्यिदुना मूसा **عَلَيْهِ السَّلَام** को हज़रते ख़िज़्र **عَلَيْهِ السَّلَام** की मुलाक़ात का वा'दा दिया गया था। इस लिये आप ने वहां पहुचने का अज़मे मुसम्मम किया और फ़रमाया कि मैं अपनी सअय जारी रखूंगा जब तक कि वहां पहुँचूँ। अगर वोह जगह दूर हो (तो मुद्दतों चलता रहूंगा) फिर येह हज़रात रोटी और नमकीन भुनी मछली जम्बील में तौशा के तौर पर ले कर ख़ाना हुए।”



जिन तक रसाई मुश्किल हो। उस ने उन्हें इल्म के जरीए इज्जत व जलालत और रो'ब व हैबत का लिबास पहनाया तो वोह बर गुज़ीदा व मुन्तख़ब बन्दे हो गए। उस ने उन्हें अपने अहक़ाम की हलावत अता फ़रमा दी लिहाज़ा उन्हें तलबे इल्म के सफ़र में कोई थकन न हुई और जब वोह क़ियामत के दिन गुरौह दर गुरौह हाज़िर होंगे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन्हें करामत के ताज पहनाएगा और उन के लिये येह निदा होगी : “أَهْلًا وَسَهْلًا مَرَحَبًا”

मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ऐसी हम्द करता हूँ जिसे नजात का वसीला बना सकूँ। और मैं इस कलिमे “لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ” (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई इबादत के लाइक नहीं, वोह अकेला है, उस का कोई शरीक नहीं) की गवाही देता हूँ ताकि खुश करने वाली इज्जत व रिफ़अत का सामान हो जाए। और मैं गवाही देता हूँ कि हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद मुस्तफ़ा, अहमदे मुजतबा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के खास बन्दे और रसूल हैं और जो खास नबी और पसन्दीदा पैग़म्बर हैं। आप पर दुरूदो सलाम हो और आप **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के आल व अस्हाब, अज़वाजे मुतहहरात और नेक व पसन्दीदा अवलाद पर हमेशा रहमत व सलामती नाज़िल हो जब तक आस्मान बादल ज़ाहिर करता रहे और मूसलाधार बारिश बरसाता रहे। (आमीन)

**तआरफ़े इमाम मालिक** رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ :

हज़रते सय्यिदुना हाफ़िज़ अबू उमर बिन अब्दुल बर **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْبَر** ने किताब “الْأَنْسَاب” में तहरीर फ़रमाया है कि हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस बिन अबी अमिर अस्बही **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْبَر** मदीनतुर्रसूल **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के इमाम हैं। यहीं से हक़ ज़ाहिर और गाबिल हुवा। यहीं से दीन की इब्तिदा और इसे शोहरत मिली। यहीं से शहर फ़तह किये गए और मुसलसल मदद मिली। इमाम मालिक **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** को “अलामे मदीना” कहा जाता है। आप **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** के इल्म की शोहरत हर तरफ़ फैली और आप **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** से इक़तिसाबे इल्म के लिये लोगों ने दूरो दराज़ के सफ़र तै किये। (سير اعلام النبلاء، الرقم ۱۱۸۰، مالک الامام، ج ۷، ص ۳۸۸، مفهوماً)

**फ़तावा नवेसी :**

हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** सतरह (17) बरस की उम्र में तदरीसे इल्म की मसनद पर तशरीफ़ फ़रमा हुए। आप **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** के असातिज़ा भी आप **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** के पास मसाइल के हल के लिये आते थे। आप **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने तक्रीबन नव्वे (90) साल की उम्र पाई और सत्तर साल तक फ़तावा नवेसी फ़रमाई और लोगों को इल्म सिखाते रहे।

जलीलुल क़द्र ताबेईने किराम **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمْ** से फ़िक़ह और हदीष का इल्म हासिल करते रहे। मशहूर अइम्माए हदीष और इ-लमाए किराम **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمْ**

से अहदीष रिवायत कीं । जिन में से चन्द के नाम येह हैं : (१).....इमामुल सुन्ना हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन शुहाब जोहरी (२).....फ़कीहे अहले मदीना, हज़रते सय्यिदुना रबीअ बिन अब्दुर्रहमान (३).....हज़रते सय्यिदुना यहूया बिन सईद अन्सारी और (४).....हज़रते सय्यिदुना मूसा बिन अक़बा (رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ) येह तमाम आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के असातिज़ए किराम رَحِمَهُمُ اللَّهُ السَّلَام हैं और इन सब ने आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से अहदीष रिवायत कीं ।” (سير اعلام النبلاء، الرقم ١١٨٠، مالک الامام، ج ٧، ص ٣٨٥، مفصلاً)

### अलिमे मदीना कौन हैं ?

ताबेईन व तब्‍य ताबेईन عليهم رحمة الله عليهم फ़रमाते हैं कि इमाम मालिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الرَّزَّاق वोह अलिमे हैं जिन की बिशारत हुज़ूर सय्यिदुल मुबल्लिगीन, जनाबे रहमतुल्लिल अलमीन صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने दी थी । चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ईसा मुहम्मद बिन ईसा तर्मिज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي अपनी किताब “जामेए तर्मिज़ी” में हदीष शरीफ़ नक्ल फ़रमाते हैं : “इल्म मुन्कतेअ हो जाएगा तो अलिमे मदीना से ज़ियादा इल्म वाला बाकी न रहेगा ।”

(جامع الترمذی، ابواب العلم، باب ماجاء فی عالم المدينة، الحديث ٢٦٨٠، ص ١٩٢٢، مختصراً)

दूसरी हदीषे पाक में है : “दुन्या में इस (अलिमे मदीना) से बढ़ कर कोई अलिमे न होगा, लोग इस की तरफ़ सफ़र कर के आएंगे ।”

(ترتيب المدارك وتقريب المسالك، الفصل الاول فی ترجيحه من طريق النقل، ج ١، ص ١٨)

एक हदीषे पाक में यूं है “अन करीब लोग (इल्म के लिये) सफ़र करेंगे तो अलिमे मदीना से ज़ियादा इल्म वाला कोई न पाएंगे ।” (المستدرک، کتاب العلم، باب يوشک الناس ..... الخ، الحديث ٣١٢، ج ١، ص ٢٨٠)

हज़रते सय्यिदुना इब्ने उयैना رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : “मुहदिषीने किराम के नजदीक “अलिमे मदीना” से मुराद हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ हैं ।

(التمهيد لابن عبد البر، زيد بن رباح، تحت الحديث ١٢٢، ج ٢، ص ٦٧٤)

हज़रते सय्यिदुना अब्दुर्रज़ाक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : “हमारी राए येह है कि हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के इलावा कोई भी “अलिमे मदीना” के नाम से मा'रूफ़ नहीं । लोगों ने हुसूले इल्म के लिये आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की तरफ़ जितना सफ़र किया इतना किसी की तरफ़ नहीं किया ।” (جامع الترمذی، ابواب العلم، باب ماجاء فی عالم المدينة، تحت الحديث ٢٦٨٠، ص ١٩٢٢، مختصراً)

हज़रते सय्यिदुना अबू मुसअब عليه رحمة الرب ف़रमाते हैं : “हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के दरवाज़े पर लोगों का हुजूम लगा रहता और लोग बहुत ज़ियादा भीड़ की वजह से तलबे इल्म के शौक में एक दूसरे से लड़ पड़ते ।”

(سير اعلام النبلاء، الرقم ١١٨٠، مالک الامام، ج ٧، ص ٤٢٢، بتغير قلیل)

हज़रते सय्यिदुना यहूया बिन शा'बा عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ फ़रमाते हैं : “मैं मदीनए मुनव्वरा में सिन 144 हिजरी में हज़िर हुवा । उस वक़्त हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की दाढ़ी और सर के बाल सियाह थे । लोग आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के गिर्द ख़ामोश बैठे थे । आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के रो'ब की वजह से किसी को बात करने की हिम्मत न थी । मस्जिदे नबवी शरीफ़ में आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के इलावा कोई फ़तवा न देता था । मैं आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के सामने बैठ गया और एक सुवाल किया तो आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने मुझे हदीषे पाक से जवाब दिया । मैं ने फिर सुवाल किया तो आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फिर जवाब इरशाद फ़रमाया । फिर आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के दोस्तों ने मुझे झन्झोड़ा तो मैं ख़ामोश हो गया ।”

(ترتيب المدارك وتقريب المسالك، باب صفة مجلس مالك للعلم، ج ١، ص ٤٨)

आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इरशाद फ़रमाया : “मैं इफ़्ता और हदीष के लिये उस वक़्त तक मसनद नशीन न हुवा जब तक कि सत्तर (70) उ-लमाए किराम व मशाइख़े इज़्ज़ाम رَحِمَهُمُ اللَّهُ السّلام ने मेरी अहलियत की गवाही न दे दी ।”

(ترتيب المدارك وتقريب المسالك، باب في ابتداء ظهوره في العلم وعوده للفتوى والتعليم، ج ١، ص ٣٤)

हज़रते सय्यिदुना हम्माद बिन ज़ैद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَاحِد की ख़िदमत में एक शख़्स कोई मस्अला पूछने आया जिस में लोगों का इख़िलाफ़ था तो आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने फ़रमाया : “ऐ भाई ! अगर तू अपने दीन की सलामती चाहता है तो आलिमे मदीना से पूछ और उन की बात तवज्जोह से सुन क्योंकि वोह हुज्जत (या'नी दलील) हैं और लोगों के इमाम हैं ।” (المرجع السابق، ص ३७)

हज़रते सय्यिदुना हम्माद बिन सलमा عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ इरशाद फ़रमाते हैं : “अगर मुझे कहा जाए कि उम्मेते मुहम्मदिय्या के लिये कोई इमाम इख़्तियार करो जिस से लोग इल्मे दीन हासिल करें तो मैं हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को इस का हक़ दार और अहल समझता हूं और मेरी ये राए उम्मत की बेहतरी के लिये है ।” (المرجع السابق، ص ३६)

हज़रते सय्यिदुना लैष बिन सा'द عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَاحِد फ़रमाते हैं : “हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का इल्म परहेज़गारी का इल्म है और उस के लिये हिफ़ज़ व अमान का बाइष है जो इसे हासिल करे ।”

(ترتيب المدارك وتقريب المسالك، باب شهادة السلف الصالح واهل العلم له بالامامة في العلم، ج ١، ص ३६)

हज़रते सय्यिदुना अब्दुरहमान बिन कासिम رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाया करते थे : “मैं अपने दीन में दो आदमियों की पैरवी करता हूं : अमल में हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की और तक्वा में हज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन कासिम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى की ।”

(حلية الاولياء، مالك بن انس، الحديث ٨٨٤٨، ج ٢، ص ३५०)



سُبْحَنَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ यह कैसे अज़ीम लोग थे, जिन्होंने ने अपनी जानें लोगों के नफ़अ के लिये राहे खुदा عَزَّوَجَلَّ में वक्फ कर दीं, इन्हें मुश्किलात में डाला और तलबे इल्म में ख़ूब जिद्दो जहद की तो **अल्लाह** रहमान عَزَّوَجَلَّ ने इन्हें कामयाबी अता फ़रमाई ।

शहनशाहे मदीना, करारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइषे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : “जो शख्स तलबे इल्म के लिये किसी रास्ते पर चले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये जन्नत का रास्ता आसान फ़रमा देता है ।”

(صحيح مسلم، كتاب الذكر والدعاء، باب فضل الاجتماع على تلاوة القرآن وعلى الذكر، الحديث ٢٦٩٩، ص ١١٤٧)  
हदीषे पाक में है : “एक अ़लिम, शैतान पर हजार आबिद से भारी है ।”

(جامع الترمذی، ابواب العلم، باب ماجاء فی فضل الفقه على العبادة، الحديث ٢٦٨١، ص ٩٢٢) “العالم” بدلہ “فقیہ”

अगर इस्लाम में एक अ़बिद फ़ौत हो जाए तो इस में सिर्फ़ एक शख्स की कमी होगी और अगर एक अ़लिम चल बसे तो गोया लोगों में से एक क़बीला फ़ौत हो गया । रूए ज़मीन पर जब कोई अ़लिम इन्तिक़ाल कर जाए तो इस्लाम में एक ऐसा शिगाफ़ पड़ता है जिसे उस वक़्त तक कोई बन्द नहीं कर सकता जब तक दिन रात आते जाते रहेंगे ।

जान लो ! “तलबे इल्म के अ़मल से खुश हो कर उस के लिये मलाइका अपने पर बिछा देते हैं ।” (الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان، كتاب الطهارة، باب المسح على الخفين وغيرهما، الحديث ١٣١٦، ج ٢، ص ٣٠٧)

उ-लमा के क़लमों की सियाही **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हां शुहदा के खून से अफ़ज़ल है ।

(الجامع الصغير، الحديث ٩٦١٩، ص ٥٧١ - مفهوماً)

बरोज़े क़ियामत जब राहे खुदा عَزَّوَجَلَّ में शहीद होने वाले उ-लमा की फ़ज़ीलत देखेंगे तो तमन्ना करेंगे : काश ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें भी उ-लमा में उठाता । जिस ने इल्म को पा लिया तहक़ीक़ उस ने दुनिया व आख़िरत की भलाइयों को पा लिया और जिस ने उ-लमा को अज़िय्यत दी उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से ए'लाने जंग किया ।

**इमाम मालिक** رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ **पर सरकार** صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **कब करम :**

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन रमह رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِ इरशाद फ़रमाते हैं : “मेरे बचपन का वाक़ेअ है जब कि मैं अभी नाबालिग़ था । मैं अपने वालिदे मोहतरम के साथ हज़ को गया । मैं मस्जिदे नबवी <sup>(1)</sup> عَلَى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में मज़ारे अक़दस और मिम्बर शरीफ़ के दरमियान जन्नत की क्यारी में

①.....शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत हज़रते अल्लामा व मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्य़ास अत्तार कादिरि के **“रफ़ीकुल हुरमैन”** के सफ़हा 218 पर तह़रीर फ़रमाते हैं : ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मज़ारे पुर अन्वार है) और मिम्बरे अक़दस (जहां आप खुतबा इरशाद फ़रमाते थे) के दरमियान का हिस्सा **“जन्नत की क्यारी”** है । चुनान्वे, हमारे प्यारे आका صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : “मेरे घर और मिम्बर की दरमियानी जगह जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है ।”

(الصحيح البخاری، كتاب فضل الصلوة في مسجد مكة والمدينة، باب فضل ما بين القبر والمنبر، الحديث: ١١٩٥، ص ٩٣)

आराम कर रहा था कि मुझे नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत हुई।

आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र व उमर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को पहलू में लिये मज़रे पुर अन्वार से बाहर तशरीफ़ लाए। मैं ने खड़े हो कर सलाम अर्ज किया तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे जवाब मरहूमत फ़रमाया। मैं ने अर्ज की : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आप कहां तशरीफ़ ले जा रहे हैं ?” इरशाद फ़रमाया : “मालिक के लिये सीधी राह काइम कर रहा हूं।” बेदार होने के बा’द जब मैं और मेरे वालिदे मोहतरम बाहर आए तो लोगों को हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के पास जम्अ देखा। आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने मुअत्ता शरीफ़ निकाली हुई थी और येह मुअत्ता शरीफ़ की पहली आमद थी।”

(ترتيب المدارك وتقريب المسالك، باب ذكر المؤطأ وتأليف مالك اياه، ج ١، ص ٦٠، بتغير قليل)

### मुअत्ता इमाम मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की अज़मत व शान :

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन अब्दुल हक़म عليه رحمة الله المکرم का बयान है कि मैं हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन अबू सिर्री अस्क़लानी رَحِمَهُ اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ को फ़रमाते सुना कि मैं ख़्बाब में सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार बिइज़ने परवर दगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत से मुशरफ़ हुवा और अर्ज की : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुझे इल्म की ऐसी बात इरशाद फ़रमाइये जिसे मैं आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हवाले से बयान करूं।” तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “मैं ने मालिक को एक ख़ज़ाना अता फ़रमाया है जो वोह तुम में तक्सीम करेगा।” आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ ले जाने लगे तो मैं भी आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पीछे चल पड़ा और दोबारा अर्ज की : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुझे कुछ इल्म अता फ़रमाइये जिसे मैं आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हवाले से बयान करूं।” आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फिर वोही जवाब इरशाद फ़रमाया : “मैं ने मालिक को एक ख़ज़ाना अता फ़रमाया है जो वोह तुम में तक्सीम करेगा।” फिर जब आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ ले जाने लगे तो मैं आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰी عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पीछे हो लिया और तीसरी बार भी येही अर्ज की : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुझे कोई इल्म की बात इरशाद फ़रमा दीजिये जिसे मैं आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हवाले से बयान करूं।” तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “ऐ इब्ने सिर्री ! मैं ने मालिक को एक ख़ज़ाना दिया है जो वोह तक्सीम करेगा। सुन ले ! वोह मुअत्ता है और कुरआने मजीद और मेरी सुन्नत के बा’द मुसलमानों के गुरौह में “मुअत्ता” (इमाम मालिक) से ज़ियादा सहीह किताब कोई नहीं।

(موطأ امام محمد مع التعليق الممجد على الموطأ، ج ١، ص ٧٢) “लिहाज़ा तू इसे सुन कर इस से नफ़अ हासिल कर।”

## इमाम मालिक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ और इल्म की क़दर :

हज़रते सय्यिदुना अतीक़ बिन या'कूब ज़बीरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : “एक दफ़आ ख़लीफ़ा हारूरुर्शीद मदीनए मुनव्वरा رَادَّهَا اللَّهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا हाज़िर हुए और इन्हें येह ख़बर पहुंची कि हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के पास अहादीष की “मुअत्ता” नामी किताब है जो वोह लोगों को पढ़ कर सुनाते हैं। तो ख़लीफ़ा हारूरुर्शीद ने (अपने वज़ीर) बरमकी को आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की तरफ़ येह कहते हुए भेजा कि इमाम मालिक बिन अनस رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को मेरा सलाम कहना और कहना कि वोह किताब ले कर मेरे पास आएँ और मुझे पढ़ कर सुनाएं। बरमकी ने जब आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अर्ज की तो आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने इरशाद फ़रमाया : “जाओ, ख़लीफ़ा को मेरा सलाम कहो और फिर कहो : “इल्म के पास जाना पड़ता है, येह खुद किसी के पास नहीं आता और इल्म हासिल करना पड़ता है, येह खुद हासिल नहीं होता।” बरमकी ने ख़लीफ़ा हारूरुर्शीद के पास आ कर जब येह सब बयान किया तो उस वक़्त दरबार में काज़ी अबू यूसुफ़ भी बैठे हुए थे। वोह कहने लगे : “ऐ अमीरल मोअमिनीन अहले इराक़ को येह बात पहुंच सकती है कि आप ने इमाम मालिक बिन अनस رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को हुक्म दिया मगर इन्हों ने नाफ़रमानी की लिहाज़ा आप इन पर सख़्ती करें।”

अभी येह गुफ़्तगू चल रही थी कि हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ तशरीफ़ ले आए और सलाम कर के बैठ गए। ख़लीफ़ा हारूरुर्शीद ने पूछा : “ऐ इब्ने अबी अमिर ! मैं ने आप को पैग़ाम भेजा था और आप ने इन्कार कर दिया।” तो आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : “ऐ अमीरल मोअमिनीन ! हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन षाबित رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है, फ़रमाते हैं : “मैं रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की बारगाह में वहूय लिखा करता था, मैं ने येह आयते मुबारका लिखी : “لَا يَسْتَوِي الْقَاعِدُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُجَاهِدُونَ” तर्जमा : बराबर नहीं वोह मुसलमान कि जिहाद से बैठे रहे और वोह कि जिहाद करते हैं।” उस वक़्त हज़रते सय्यिदुना इब्ने उम्मे मक्तूम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मख़्ज़ने जुदो सखावत, पैकरे अज़मतो शराफ़त, महबूबे रब्बुल इज़ज़त, मोहसिने इन्सानिय्यत صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ख़िदमते सरापा अज़मत में हाज़िर थे। इन्हों ने अर्ज की : “या रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मैं एक नाबीना व मा'ज़ूर शख्स हूं और आप जानते हैं कि **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ ने जिहाद की बहुत फ़ज़ीलत इरशाद फ़रमाई।” तो हुज़ूर नबिय्ये पाक साहिबे लौलाक صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “मैं अपने अन्दाजे से नहीं जानता (कि मा'ज़ूर क्या करें)।” हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन षाबित رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ



फ़रमाते हैं। मेरा क़लम अभी रोशनाई से तर था, खुशक भी नहीं हुवा था कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइषे नुज़ूले सकीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रान मुबारक (वह्य के बोझ से) मुझ पर भारी होने लगी। जब आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इफ़ाका हुवा तो इरशाद फ़रमाया : “ऐ ज़ैद अब लिखो : ”غَيْرُ أُولَى الضَّرَرِ“ (या’नी आयते मुबारका की तरतीब इस तरह हो गई

لَا يَسْتَوِي الْقُعْدُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ غَيْرُ أُولَى الضَّرَرِ وَالْمُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللّٰهِ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ (پ ۵، النساء: ۹۵)

**तर्मजए कन्ज़ुल ईमान :** बराबर नहीं वोह मुसलमान कि बे उज़्र जिहाद से बैठे रहें और वोह कि राहे खुदा में अपने मालों और जानों से जिहाद करते हैं।

(फिर फ़रमाया) ऐ अमीरल मोअमिनीन ! जब एक हर्फ़ के लिये हज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام और दीगर फ़िरिशतों ने पांच हज़ार साल की मसाफ़त बर्दाश्त की तो क्या मुझ पर इस की इज़्ज़त व जलालत का पास रखना ज़रूरी नहीं ? और आप को तो **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ ने बुलन्द मर्तबा अता फ़रमाया और मस्नदे ख़िलाफ़त पर फ़ाइज़ किया है। पस आप इल्म का मर्तबा घटाने वाले सब से पहले शख़्स न बनियें वरना **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ आप की क़द्रो मन्ज़िलत कम कर देगा।” रावी फ़रमाते हैं कि ख़लीफ़ा हारूरुर्शीद उठे और हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के साथ उन के घर की तरफ़ चल पड़े ताकि आप से मुअत्ता सुनें। आप ने ख़लीफ़ा को अपने साथ मस्नद पर बिठाया। जब ख़लीफ़ा ने आप से मुअत्ता पढ़ने का इरादा किया तो कहने लगे : “आप मुझे पढ़ कर सुनाएं।” आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने इरशाद फ़रमाया : “ऐ ख़लीफ़तल मुस्लेमीन ! मैं ने आज तक किसी को पढ़ कर नहीं सुनाया।” हारूरुर्शीद ने कहा : लोग बाहर चले जाएं तो मैं पढ़ कर सुनाता हूं।” आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया : “जब ख़ास लोगों की वजह से अ़ाम लोगों से इल्म को रोक दिया जाए तो **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ ख़ास लोगों को भी इस से नफ़अ न देगा।” फिर आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने उसे फ़रमाया : “मअन बिन ईसा क़ज़ाज़ को पढ़ कर सुनाओ।” जब ख़लीफ़ा ने पढ़ना शुरू किया तो आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया : “ऐ अमीरल मोअमिनीन मैं ने अपने मुल्क के उ-लमा को देखा है कि वोह इल्म के लिये अज़िज़ी करना पसन्द करते हैं। येह सुन कर हारूरुर्शीद मस्नद से नीचे उतरे और आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के सामने बैठ गए।”

(तारिख़ دمشق لابن عساکر، الرقم ۴۱۲۰، عبد العزيز بن عبد القريب ابویعلی، ج ۳، ص ۳۱۱-۳۱۲)

हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से हुसूले इल्म के मुतअल्लिक़ सुवाल हुवा तो इरशाद फ़रमाया : “इल्म सीखना बहुत अच्छा है। लेकिन येह ख़याल रखो कि जो शख़्स सुब्ह से शाम तक तुम्हारे साथ रहे तुम भी उसे लाज़िम पकड़ो।”

(حلیة الاولیاء، مالک بن انس، الحديث ۸۸۷۰، ج ۶، ص ۳۴۹)

हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ इल्मे दीन की ह़द दर्जा ता’ज़ीम फ़रमाते थे। यहां तक कि जब हदीषे पाक बयान करने का इरादा फ़रमाते तो वुजू कर के दो नफ़ल

पढ़ते फिर दाढ़ी में कंधी करते, खुशबू लगाते और इज्जत व वक़ार के साथ अपनी मस्नद के सद्र मक़ाम पर तशरीफ़ फ़रमा हो कर हदीषे पाक बयान करते। आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से इस की वजह पूछी गई तो इरशाद फ़रमाया : “मुझे येह बात ज़ियादा पसन्द है कि **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की हदीषे पाक की ता’जीम करूं।”

(حلیۃ الاولیاء، مالک بن انس، الحدیث ۸۸۵۸، ج ۶، ص ۳۴۷)

यूँ ही इल्म की ता’जीम की जाती है। उ-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام जब इल्म की ता’जीम करते हैं तो **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ लोगों के दिलों में उन की अज़मत डाल देता है और बादशाहों और दूसरे अफ़राद के दिलों में उन का रो’ब व दबदबा बिठा देता है।

ऐ इल्म के तलबगार ! इल्म के लिये अज़िज़ी इख़्तियार कर। जो इस के लिये अज़िज़ी करता है हकीकतन वोह **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये अज़िज़ी करता है और जो **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये अज़िज़ी करता है **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ उस का मर्तबा बुलन्द फ़रमा देता है। बिला शुबा मिट्टी क़दमों के नीचे आ कर हकीर होती है तो चेहरे के लिये पाकी का बाइष बन जाती है। चुनान्चे, इरशादे बारी तअ़ाला है :

﴿۳﴾ فَاَمْسَحُوا بِوُجُوْهِكُمْ وَاَيْدِيكُمْ مِنْهُ ط  
(پ ۷، المائدہ)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो अपने मुंह और हाथों का इस (मिट्टी) से मस्ह करो।

ऐ मेरे इस्लामी भाई ! इल्म के इजतिमाअ में हाज़िरी को इस तरह यकीनी बना ले जिस तरह बच्चा हर वक़्त दूध का मोहताज होता है मगर जब वोह बड़ा होता है तो इसे छोड़ने पर सब्र कर लेता है। याद रख ! फ़ज़ाइल का रास्ता मुसीबतों से भरा हुवा है ताकि नापुख़्ता इरादे वाला रास्ते ही से लौट आए। ऐ नौजवान ! तेरे नफ़्स का मोती इल्म सीखना है और इस का ज़ेवर इल्म है। अगर तू ने मेरी नसीहत मान ली तो तेरे लिये मस्नदे सदरत है या मिम्बर की ऊंचाई।

وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْعِلْمِ صَانُوْهُ صَانُهُمْ  
اَعْرِسُوْهُ عِرًّا وَاَجْنِيْهِ ذَلَّةٌ  
تَعْلَمُ فَلَيْسَ الْمَرْءُ يَخْلُقُ عَالِمًا  
وَاِنَّ كَثِيْرَ الْقَوْمِ لَا عِلْمَ عَنْدهُ  
وَلَوْ عَظَّمُوْهُ فِى النُّفُوْسِ لَعَظَمًا  
اِذَا فَاتَبَاعَ الْجَهْلُ قَدْ كَانَ اَحْزَمًا  
وَلَيْسَ اَخُوْ عِلْمٍ كَمَنْ هُوَ جَاهِلٌ  
صَغِيْرٌ اِذَا التَّفَتَ عَلَيْهِ الْمُحَافِلُ

तर्जमा : अगर उ-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام इल्म की हिफ़ाज़त करेंगे तो येह उन की हिफ़ाज़त करेगा। अगर वोह दिल से इस की ता’जीम करेंगे तो येह भी उन को इज्जत देगा। क्या मैं इज्जत का बीज बो कर ज़िल्लत का फल तोड़ूंगा ? अगर ऐसा है तो जाहिल की इत्तिबाअ में ही एहतियात है। ऐ भाई ! इल्म हासिल कर क्यूंकि इन्सान पैदाइशी तौर पर अ़ालिम नहीं होता और इल्म वाला जाहिल की तरह नहीं हो सकता। क़ौम का बे इल्म सरदार छोटा है जब कि लोग इस से मुंह मोड़ लें।

मन्कूल है कि जब हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के इल्म का शोहरा हुवा और आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का ज़िक्रे खैर और फ़ज़ीलत दूसरे मुमालिक तक फैल गई तो आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की ख़िदमत में इल्म की तरवीजो इशाअत के लिये मालो दौलत हाज़िर किया जाता। आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ इस को अपने दोस्त व अहबाब में तक्सीम फ़रमा देते और आप रَضِيَ اللَّهُ तَعَالَى عَنْهُ के दोस्त आप रَضِيَ اللَّهُ तَعَالَى عَنْهُ की पैरवी में इसे भलाई के कामों में खर्च कर डालते। इस में से कुछ भी आप रَضِيَ اللَّهُ तَعَالَى عَنْهُ बचा कर न रखते और फ़रमाया करते : “जोहद (या’नी दुन्या से बे रग़बती) माल न होने का नाम नहीं बल्कि जोहद तो येह है कि दिल इस से फ़ारिग़ हो।”

(احياء علوم الدين، كتاب العلم، باب ثانی فی العلم المحمود والمذموم واقسامهما واحكامهما، ج ۱، ص ۴۸)

मज़िद इरशाद फ़रमाया : “जो बन्दा हदीष के बयान में सच्चा होता है और झूट नहीं बोलता **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ उसे उस की अक्ल से नफ़अ अता फ़रमाता है और बुढ़ापे में उसे कोई आफ़त नहीं पहुंचती और न ही उस की अक्ल ख़राब होती है।” (المرجع السابق، ص ۴۷)

हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अबू सलमा عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ फ़रमाते हैं : “जब मैं ने मुअत्ता इमाम मालिक पढ़ी तो ख़्वाब में एक आने वाला आया और कहने लगा : “बिला शुबा येह शहनशाहे मदीना, करारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइषे नुज़ूले सकीना صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का क़लाम है।” (التمهيد لابن عبد البر، مقدمة المصنف، باب ذکر عیون من اخبار مالک و ذکر فضل موطنه، ج ۱، ص ۶۰)

मन्कूल है कि जब हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अपनी किताब “मुअत्ता” तालीफ़ करने का इरादा फ़रमाया तो इस में ग़ौरो फ़िक्क करने लगे कि इस का नाम क्या रखा जाए ? फ़रमाते हैं कि एक दिन जब मैं सोया तो सरकारे मदीना, करारे क़ल्बो सीना, बाइषे नुज़ूले सकीना صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ज़ियारत से फ़ैज़याब हुवा। आप صَلَّی اللَّهُ तَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “وَيَطَىٰ هَذَا الْعِلْمُ لِلنَّاسِ يا’नी इस इल्म को लोगों के लिये आसान (या तय्यार) कर दो।” लिहाज़ा आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इस का नाम “मुअत्ता” रखा।

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मुबारक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं : “हम हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की ख़िदमत में हाज़िर थे और आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ हमें हदीषे पाक बयान फ़रमा रहे थे। अचानक एक बिच्छू ने आप رَضِيَ اللَّهُ तَعَالَى عَنْهُ को सोलह (16) मरतबा डंक मारा। आप رَضِيَ اللَّهُ तَعَالَى عَنْهُ के चेहरे का रंग बदल कर ज़र्द पड़ गया। इस के बा वुजूद आप रَضِيَ اللَّهُ तَعَالَى عَنْهُ हदीषे पाक बयान करते रहे। जब सब लोग चले गए तो मैं ने अर्ज की : “ऐ अबू अब्दुल्लाह ! आज मैं ने आप की अजीब हालत देखी है ?” तो इरशाद फ़रमाया : “हां मैं ने हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللَّهُ तَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की हदीषे पाक की ता’ज़ीम करते हुए सब्र किया है।”

(ترتيب المدارك وتقريب المسالك، باب صفة مجلس مالک للعلم، ج ۱، ص ۴۵)

हज़रते सय्यिदुना मुसअब बिन अब्दुल्लाह عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَضِيَ اللَّهُ तَعَالَى عَنْهُ जब हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक,



सय्याहे अफ़लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का नामे नामी, इस्मे गिरामी लेते तो आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का रंग बदल जाता और आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ पर कप-कपी तारी हो जाती यहां तक कि हाज़िरीने इजतिमाअ पर बर्दाश्त मुशकिल हो जाती। जब आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से वजह दरयाफ़्त की गई तो फ़रमाया : “अगर तुम भी उसे देख लेते जो मैं देखता हूं तो तुम पर गिरां न गुज़रता।”

(ترتيب المدارك وتقريب المسالك، باب في ذكر عبادة مالك وورعه وعزلته وإجابة دعائه، ج ١، ص ٥٥)

हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ रास्ते में या खड़े खड़े या जल्दी में हदीषे पाक बयान करने को नापसन्द फ़रमाते और इरशाद फ़रमाया करते : “मुझे येह पसन्द है कि हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम وَسَلَّم की हदीषे पाक की ता’जीम करूं।”

(حلیۃ الاولیاء، مالک بن انس، الحدیث ٨٨٥٨، ج ٦، ص ٣٤٧ - بتقدّم وتأخر)

**सरकरे दो अ़ालम ने अंगूठी पहनाई :**

हज़रते सय्यिदुना इमाम दरावर्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : “मैं ने ख़्वाब में अपने आप को मस्जिदे नबवी में यूं हाज़िर पाया कि मैं नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जलवए नूरबार से ज़ियाबार हो रहा हूं और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم लोगों के सामने बयान फ़रमा रहे हैं। इसी दौरान हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ हाज़िरे ख़िदमत हुए। जब नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन्हें देखा तो इरशाद फ़रमाया : “इधर मेरे पास आओ।” आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ करीब हुए तो सरकारे दो अ़ालम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी उंगली से अंगूठी उतारी और आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की छुंगलिया में पहना दी। मेरे ख़याल में इस से मुराद इल्म है जो हुज़ूर नबिय्ये पाक رَحْمَتُهُمُ اللّٰهُ السَّلَام आप ने उन्हें अता फ़रमाया। इल्म के सबब उ-लमाए किराम आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की पैरवी करते। उमरा आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعालٰی عَنْهُ की राए से रोशनी पाते। अ़ाम लोग आप रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का फ़रमान दिलो जान से तस्लीम करते। आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का हुकम बिगैर दलील के नाफ़िज़ होता। आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ जब किसी सुवाल का जवाब इरशाद फ़रमा देते तो उस में मज़ीद मश्वरे की ज़रूरत न रहती।”

(سير اعلام النبلاء، الرقم ١١٨٠، مالک الامام، ج ٧، ص ٤٠٢، بتغییر - حلیۃ الاولیاء، مالک بن انس، الحدیث ٨٨٦٣، ج ٦، ص ٣٤٨)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** खुदाए जुल जलाल عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! येह उन उ-लमा की सिफ़ात हैं जिन के विसाल पर ज़मीनो आस्मान रोते हैं। जिन के सदके बन्दों पर करम होता है। जिन की बरकत से शहर आफ़ात से महफूज़ रहते हैं। येह वोह उ-लमा हैं जिन की सीरत में दुन्या से बे रग़बती झलकती है। जो इख़लास व सदाक़त के ज़ेवर से आरास्ता होते हैं। लोगों के दिल इन के दीदार के मुश्ताक़ होते हैं। लोग इन के सामने सरे तस्लीम ख़म कर लेते हैं। इन के सामने बड़ी बड़ी

मुश्किलात आसान हो जाती हैं और बड़े बड़े जाबिरों के सर झुक जाते हैं। येह दुन्या के तमाम गोशों में सूरज चांद की तरह अपने इल्म की रोशनी फैलाते हैं। बिला शुबा इन का जिक्रे खैर किताबों में लिखा जा चुका है। अलबत्ता ! जो अपने अमल में रियाकारी करता है और अहले दुन्या के लिये अच्छे आ'माल करता है। उसे झूटी उम्मीदों ने धोके में डाल रखा है। वोह ऐसी खूबियों पर अपनी ता'रीफ़ चाहता है जो उस में नहीं पाई जाती (या'नी अपनी झूटी ता'रीफ़ की ख्वाहिश करता है) तो येह उन लोगों में से है जो उलटे दिमाग़ और घटया सोच के मालिक होते हैं। ऐसे लोग जब कोई ऐसी बात सुनते हैं जो इन की समझ में नहीं आती और इन का इल्म इस से कासिर होता है तो इन के उसूल व क़्वाइद बिगड़ जाते हैं। इन के लिये अपने मक़्सद का हुसूल मुश्तबा हो जाता है। नेकियों की सूरत में गुनाह करने लग जाते हैं। बुराइयों को अच्छाइयां समझ कर इन के मुर्तकिब हो जाते हैं। और यूं अमल में ख़ियानत करते और हुसूले मुराद में ना काम व बे मुराद हो जाते हैं।

तअज्जुब उस पर नहीं जो नावाक़िफ़ है और जहालत की वजह से मुर्तकिबे गुनाह हुवा और नाफ़रमानी का ए'तिराफ़ भी कर चुका है क्यूंकि उस के लिये तो बख़्शिश है। जैसा कि, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है।

﴿٣﴾ قُلْ لِلَّذِينَ كَفَرُوا إِن يَنْتَهُوا يُغْفَرْ لَهُمْ مَا

قَدْ سَلَفَ ج (پ ۹، الانفال: ۳۸)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :** तुम काफ़िरों से फ़रमाओ ! अगर वोह बाज़ रहे तो जो हो गुज़रा वोह उन्हें मुआफ़ फ़रमा दिया जाएगा।

बल्कि तअज्जुब तो उस पर है जो इल्म का दा'वा करे मगर इस का मक़्सद हुसूले दुन्या हो। ऐसे शख्स को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में मलामत की जाएगी। येह लोगों के नज़दिक काबिले मज़मूत और अज़्रो षवाब से महरूम है। येही वोह लोग हैं जिन्होंने ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दीन को हंसी मज़ाक़ और खेल कूद बना लिया। इन्होंने ने अपने मवाइज़ व बयानात को खुश कुन और तेज़ तर कर लिया लेकिन इन की बात दिल से नहीं सुनी जाती। येह वा'ज़ व नसीहत करते हैं मगर इन का बयान लोगों के दिल पर अषर नहीं करता और न ही आंखों से अशक़ जारी होते हैं।

चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ कुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाता है :

﴿٥﴾ وَهُمْ يَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ يُحْسِنُونَ صُنْعًا ۝

(پ ۶، الکہف: ۱۰۴)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :** और वोह इस ख़याल में हैं कि हम अच्छा काम कर रहे हैं।

जब येह कोई हुक्म सुनते हैं तो उस में तब्दीली और तहरीफ़ कर लेते हैं और जब कोई चीज़ नाप तोल कर देते हैं तो कमी कर देते हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! येह सब शरीअत में ह़राम है। चुनान्चे, **अल्लाह** तआला इरशाद फ़रमाता है :

وَهُمْ يَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ يُحْسِنُونَ صُنْعًا ۝

(پ ۶، الکہف: ۱-۴)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :** और वोह इस ख़याल में हैं कि हम अच्छा काम कर रहे हैं।

येह लोग बिगैर अज़्म व हौसले के इज़हारे गुम करते हैं, बिगैर इल्म के बहूष मुबाहषा करते हैं और बिला सोचे समझे सुवाल करते हैं। यकीनन येही वोह लोग हैं जो जहालत की तलवार से पछाड़ खाए हुए हैं। रब्बे अज़ीम جَلَّ جَلَالُهُ इरशाद फ़रमाता है :

وَهُمْ يَحْسِبُونَ أَنَّهُمْ يُحْسِنُونَ صُنْعًا

(प १७, الکہف: १०६)

तर्जमए कन्जुल इमान : और वोह इस खयाल में हैं कि हम अच्छा काम कर रहे हैं।

हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ सहरी के वक्त कषरत के साथ नमाज़, ज़िक्रे इलाही और अवरादो वज़ाइफ़ का एहतिमाम फ़रमाते। फिर दर्स व तदरीस में मशगूल हो जाते। आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ऐसे खुश बख़्त हैं जिन की ता'रीफ़ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के प्यारे महबूब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ज़बाने हक्के तर्जुमान से हुई मगर आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इस पर कभी फ़ख्र न किया यहां तक कि हुसूले इल्म के लिये मुशिकल तरीन रास्तों का सफ़र किया और आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इल्म हासिल करने की खातिर तमाम मुशिकलात का सामना किया।

ऐ गाफ़िल इन्सान ! तू जहालत के गढ़े में गिरा हुआ है और **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के अहकाम को छोड़ बैठा है।

**इमाम मालिक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ और ता'जीमे खाके मदीना :**

हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيَّهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي फ़रमाते हैं : “मैं ने हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के दरवाजे पर खुरासान या मिस्र के घोड़े बन्धे हुए देखे जो आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को बतौर हदिय्या पेश किये गए थे। इन से ज़ियादा उम्दा घोड़े मैं ने कभी न देखे थे। चुनान्चे, मैं ने अर्ज की : “येह कितने उम्दा घोड़े हैं।” तो आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : “मैं येह सब आप को तोहफ़े में देता हूं।” मैं ने अर्ज की : “एक घोड़ा आप अपने लिये रख लें।” तो फ़रमाया : “मुझे **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ से हया आती है कि इस मुबारक ज़मीन को अपने घोड़े के कदमों तले रौंदूं जिस में उस के प्यारे रसूल, रसूले मक्बूल, बीबी आमिना के गुलशन के महकते फूल का रौज़ए अन्वर है।”

(احياء علوم الدين، كتاب العلم، باب ثاني في العلم المحمود والمذموم واقسامهما واحكامهما، ج ١، ص ٤٨)

हज़रते सय्यिदुना यह्या बिन सईद عَلَيَّهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْمَجِيد फ़रमाते हैं : “हज़रते इमाम मालिक बिन अनस رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ इस उम्मत के लिये रहमत हैं।”

हज़रते सय्यिदुना अबू क़दामा عَلَيَّهِ رَحْمَةُ اللَّهِ फ़रमाते हैं : “हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ अपने ज़माने के सब से बड़े “हाफ़िज़ुल हदीष” थे।

(ترتيب المدارك وتقريب المسالك، باب شهادة السلف الصالح واهل العلم له بالامامة في العلم، ج ١، ص ٣٧)



हज़रते सय्यिदुना अबू अब्दुल्लाह मन्ताब عليه رحمة الله التواب फ़रमाते हैं : “हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को एक लाख (1,00,000) अहादीष याद थीं ।”

(شرح الزرقاني على موطأ الإمام مالك، ج ١، ص ٣٥)

हज़रते सय्यिदुना लैष बिन सा'द عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْآخِذ फ़रमाते हैं : “**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की कसम ! मुझे रूए ज़मीन पर सब से ज़ियादा महबूबत हज़रते इमाम मालिक बिन अनस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से है ।” आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ येह दुआ फ़रमाया करते : “या **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ मेरी उम्र भी इमाम मालिक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को लगा दे ।”

हज़रते सय्यिदुना इमाम औज़ाई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की बहुत ता'जीम किया करते और आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की बात करते तो अज़ीम अलकाबात से याद फ़रमाते हुए यूं गोया होते : “अलिमुल उ-लमा ने यूं कहा, अलिमे मदीना ने येह फ़रमाया और मुफ़्तये हरमैन का फ़रमान येह है ।”

(سير اعلام النبلاء، الرقم ١١٨، مالك الامام، ج ٧، ص ٤١٢ - ترتيب المدارك وتقريب المسالك، الفصل الاول في ترجيحه من طريق النقل، ج ١، ص ١٩)

हज़रते सय्यिदुना मषनी बिन सईद कसीर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَدِير फ़रमाते हैं, मैं ने हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को येह फ़रमाते सुना : “मैं हर रात सरकारे अबद क़ार (حلية الاولياء، مالك بن انس، الحديث ٨٨٥٥، ج ٦، ص ٣٤٦) का दीदार करता हूं ।”

### जहन्नम से नजात की बिशारत :

हज़रते सय्यिदुना इब्ने क़ासिम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं कि हम हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के मरजे विसाल में आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की ख़िदमत में हाज़िर थे । हज़रते सय्यिदुना इब्ने दरावदी हाज़िर हुए और अर्ज़ की : “ऐ अबू अब्दुल्लाह ! गुज़श्ता रात मैं ने एक ख़्वाब देखा है, क्या आप सुनना पसन्द फ़रमाएंगे ?” आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इरशाद फ़रमाया : “सुनाइये ।” तो इन्हों ने ख़्वाब बयान करते हुए कहा : “मैं ने सफ़ेद लिबास में मलबूस एक आदमी देखा जो आस्मान से उतरा । उस के हाथ में एक ऐसा रजिस्टर था जो ज़मीनो आस्मान के दरमियान फैला हुवा था । उस ने तीन मरतबा कहा : “هَذَا بَرَاءَةٌ لِمَالِكٍ مِنَ النَّارِ” या'नी येह हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के लिये दोज़ख़ से बराअत नामा है ।” अभी येह गुफ़्तू चल ही रही थी कि ख़लीफ़ा का क़ासिद हाज़िर हो कर अर्ज़ गुज़ार हुवा : “ऐ अबू अब्दुल्लाह ! मस्जिदे नबवी शरीफ़ الصّلوّة والسلام के मुअज़्ज़िन ने गुज़श्ता रात एक ख़्वाब देखा है जो मैं ने उस से सुना है । चुनान्चे, उस ने भी पहले ख़्वाब की मिफ़्ल ख़्वाब सुनाया ।” इस पर हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इरशाद फ़रमाया : “**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ही हकीकी मददगार है वोह जो चाहता है करता है ।”

## २७ ज़मीन का सब से बड़ा अल्लिम :

हज़रते सय्यिदुना अबू ज़करिया عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं, मैं ने हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन इदरीस शाफ़ेई عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى को येह फ़रमाते सुना : “जब हम मक्का में मुक़ीम थे तो मुझे मेरी फूफी ने बताया कि मैं ने आज रात एक ख़ाब देखा है। मैं ने कहा : “सुनाइये, क्या ख़ाब है ?” तो उन्होंने ने फ़रमाया : “मैं ने फुलां को येह कहते सुना कि आज रात अहले ज़मीन का सब से बड़ा अल्लिम फ़ौत हो गया है।” जब हम ने हिसाब लगाया तो वोह हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के इन्तिकाल का दिन था।”

(حلیۃ الاولیاء، مالک بن انس، الحدیث ۸۹۳۴، ج ۶، ص ۳۶۰-ترتیب المدارک وتقريب المسالك، باب ذکر وفاة مالک، ج ۱، ص ۷۸)

हज़रते सय्यिदुना यूनस बिन अब्दुल आ'ला عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं, मैं ने हज़रते सय्यिदुना बिशर बिन बक्र عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْبَر को येह फ़रमाते सुना कि मैं ने हज़रते सय्यिदुना इमाम औज़ाई عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى को उ-लमाए किराम رَحْمَتُهُمُ اللَّهُ السَّلَام के एक गुरौह के साथ जन्नत में देख कर पूछा : “हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ कहां हैं ? तो उन्होंने ने बताया : “इन के दर्जात बहुत बुलन्द हैं।” मैं ने पूछा : “वोह कैसे ?” जवाब मिला : “इन की सच्चाई की बदौलत।”

(التهمید لابن عبد البر، مقدمة المصنف، باب ذکر عیون من اخبار مالک و ذکر فضل موطنه، ج ۱، ص ۵۶)

## एक कलिमे के सबब बरिक्शिश :

किसी नेक बुजुर्ग عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى ने हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को बा'दे विसाल ख़ाब में देख कर पूछा : “يا'नी **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआमला फ़रमाया ? “इरशाद फ़रमाया : “उस ने मुझे बख़्शा दिया।” पूछा : “किस सबब से ?” फ़रमाया : एक कलिमे के सबब जो मैं ने अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उम्माने ग़नी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के मुतअल्लिक किसी से सुना था कि जब आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ किसी मुर्दे को देखते तो पढ़ते : “يَا'للهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ، سُبْحَانَ الْحَيِّ الَّذِي لَا يَمُوتُ” : “कोई इबादत के लाइक नहीं, वोह आप ज़िन्दा है, दूसरों को काइम रखने वाला है, पाक है वोह जात जो खुद ज़िन्दा है कि उसे कभी मौत नहीं।” तो मैं भी अपनी ज़िन्दगी में जब किसी मुर्दे को देखता तो हमेशा येह कलिमा पढ़ा करता जिस की बरकत से **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने मुझे जन्नत में दाख़िल फ़रमा दिया।”

(ترتيب المدارک وتقريب المسالك، باب ذکر وفاة مالک، ج ۱، ص ۷۸)

## आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का विशाल व तजहीज व तक्फीन :

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल अज़ीज عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ الْعَزِيز फ़रमाते हैं : “हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का विसाल 10 रबीउल अव्वल सिने 179 हिजरी में हुवा।

आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ हफ़्ते के दिन बीमार हुए और उसी दिन इस दारे फ़ानी से रुख़्सत हो गए। आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने नव्वे (90) बरस की उम्र पाई। आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने वसियत फ़रमाई कि मुझे मेरे अपने कपड़ों में ही कफ़न दिया जाए और जनाज़ा गाह में नमाज़े जनाज़ा अदा की जाए। आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की नमाज़े जनाज़ा कषीर लोगों ने अदा की जिन में हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास, हज़रते सय्यिदुना हाशिम, हज़रते सय्यिदुना इब्ने किनाना, हज़रते सय्यिदुना शा'बा बिन दावूद, आप के कातिब हज़रते सय्यिदुना हबीब और इन के बेटे (رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ) जैसी शख़्सियात भी शामिल थीं। कई लोग आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की क़ब्रे मुबारक में भी उतरे।”

(التمهيد لابن عبد البر، مقدمة المصنف، باب ذكر عيون من اخبار مالك وذكر فضل موطنه، ج ١، ص ٦٧)

(سير اعلام النبلاء، الرقم ١٨٠، مالك الامام، وفاة مالك، ج ٧، ص ٤٣٥)

### आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के विसाल पर अहले इराक़ का सदमा :

जब हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के विसाल की ख़बर इराक़ पहुंची तो गोया इराक़ की सर ज़मीन लरज़ ने लगी। वहां के लोगों को आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की वफ़ात पर बहुत सदमा पहुंचा। एक आदमी ने हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान बिन उयैना رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से अर्ज़ की : “ऐ अबू मुहम्मद ! एक शख़्स की ख़्वाहिश है कि वोह किसी ऐसे अ़लिम से मस्अला दरयाफ़्त करे जो इस के और **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ के दरमियान दलील हो।” तो आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने इरशाद फ़रमाया : “ऐसे अ़लिम तो हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ही हैं कि जिन्हें आदमी अपने और **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ के दरमियान दलील बना सकता है।” लेकिन जब आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को बताया गया कि वोह तो विसाल फ़रमा चुके हैं तो बसद हसरत व अफ़सोस कहने लगे : “ हाए ! अच्छे लोग दुन्या से चले गए।”

### आदमी का नसब ही उस का मकान है :

हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ दुन्या से बहुत ज़ियादा बे रग़बत रहते और उमूरे आख़िरत में ग़ौरो फ़िक्क करते रहते थे। हुसूले इल्म में बहुत कोशां रहते और मोअमिनीन की ख़ैर ख़्वाही करते थे।” ख़लीफ़तुल मुस्लिमीन महदी ने आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से पूछा : “क्या आप का कोई मकान है ?” तो आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने जवाब में फ़रमाया : “नहीं। लेकिन मैं आप को एक हदीषे पाक सुनाता हूं, मैं ने हज़रते सय्यिदुना रबीअ बिन अबी अब्दुरहमान رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को फ़रमाते सुना : “आदमी का नसब ही उस का मकान है।”

(احياء علوم الدين، كتاب العلم، الباب الثاني في العلم المحمود والمذموم واقسامهما واحكامهما، ج ١، ص ٤٧)

(ترتيب المدارك وتقريب المسالك، باب في مجلسه وطيبه.....الخ، ج ١، ص ٣٠)



## इमाम मालिक رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने मकान न बनाया :

हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से ख़लीफ़ा हारूरुशीद ने पूछा : “क्या आप का कोई मकान है ?” तो आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने फ़रमाया : “नहीं ।” उस ने तीन हज़ार दीनार पेश करते हुए कहा कि इन से मकान ख़रीद लें । आप रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने दीनार ले लिये लेकिन इन्हें ख़र्च न किया । जब हारूरुशीद ने बग़दाद रवानगी का इरादा किया तो आप रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से अर्ज़ की : “आप भी मेरे साथ चलें, मैं ने अज़म किया है कि लोगों को इसी तरह मुअत्ता की तरगीब दिलाऊं जिस तरह अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उषमाने ग़नी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने लोगों को कुरआन की तरगीब दिलाई ।” तो आप रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने इरशाद फ़रमाया : “लोगों को मुअत्ता शरीफ़ की तरगीब दिलाने की हाज़त नहीं क्यूंकि हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुख़्तलिफ़ शहरों में फैल गए और लोगों को अहादीषे मुबारका बयान करते रहे जिस की बदौलत आज हर शहर में कपीर इल्मे हदीष मौजूद है ।”

(احياء علوم الدين، ج ١، ص ٤٧ - حلیۃ الاولیاء، مالک بن انس، الحدیث ٨٩٤٢، ج ٦، ص ٣٦١)

और हुज़ूर सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, जनाबे रहमतुल्लिल अलमीन صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रहमत निशान है : “يَا أَيُّهَا أُمَّتِي رَحْمَةً”

(شرح صحيح مسلم للنووي، كتاب الوصية، باب ترك الوصية.....الخ، ج ١١، ص ٩١)

और तुम्हारे साथ बग़दाद जाने की भी ज़रूरत नहीं, क्यूंकि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुरहीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अलीशान है, “उन (लोगों) के लिये मदीना बेहतर था अगर वोह जानते ।”

(صحيح مسلم، كتاب الحج، باب المدينة تنفی خبثها.....الخ، الحدیث ١٣٨١، ص ٩٠٤)

और सरकारे अली वक़ार, शाफ़े़ रोज़े शुमार صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जीशान है : “मदीना मुनव्वरा मैल कुचेल को यूं दूर करता है जैसे भट्टी लोहे का मैल दूर करती है ।”

(صحيح مسلم، كتاب الحج، باب المدينة تنفی خبثها وتسمى طابة وطيبة، الحدیث ١٣٨١/١٣٨٣، ص ٩٠٤)

और येह हैं तुम्हारे दीनार, जैसे तुम ने दिये थे वैसे ही हैं । अगर चाहो तो ले लो और चाहो तो छोड़ दो या'नी तुम ने येह दीनार दे कर मुझे मदीना मुनव्वरा छोड़ने पर मजबूर किया है । लिहाज़ा अब तुम इन्हें वापस ले लो क्यूंकि मैं मदीनतुरसूल علی صَاحِبِهَا الصَّلَوةُ وَالسَّلَام पर दुन्या व माफ़ीहा (या'नी दुन्या और जो कुछ इस में है) को तरजीह नहीं दूंगा ।”

(حلیۃ الاولیاء، مالک بن انس، الحدیث ٨٩٤٢، ج ٦، ص ٣٦١ - احیاء علوم الدین، کتاب العلم، ج ١، ص ٤٧)

## अइम्माए अरबआ और मजहिबे अरबआ हकहैं :

एक बुजुर्ग رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ का बयान है, मैं ने ख़्वाब में अपने आप को जन्नत में पाया । क्या देखता हूं कि इस के दरमियान एक नूरानी सुतून है । उस की चारों सिम्तों में चार अफ़राद हैं जो चार जन्जीरों से उसे अपनी अपनी तरफ़ खींच रहे हैं लेकिन वोह इतनी मजबूती के साथ अपनी जगह पर काइम है कि ज़रा बराबर हरकत नहीं करता । मैं ने कहा : कितने तअज्जुब की बात है ! अगर येह लोग एक ही सिम्त से खींचते तो इन को आसानी होती ।” फिर मैं ने एक फ़िरिश्ते से इस के मुतअल्लिक पूछा तो उस ने बताया : येह सुतून दीने इस्लाम है और येह चार जन्जीरें मजहिबे अरबआ (या’नी हनफी, शाफ़ेई, हम्बली, मालिकी) हैं और जो हज़रात इस को खींच रहे हैं वोह अइम्माए इस्लाम हैं : हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन इदरीस शाफ़ेई, हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस , हज़रते सय्यिदुना इमामे आ’ज़म अबू हनीफ़ा नो’मान बिन षाबित और हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल (رَضَوَانُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ) जिस बात पर येह मुत्तफ़िक़ हो जाएं वोह फ़र्ज़ है, इन के अक्वाल हक़ हैं और इन का इख़िलाफ़ मुसलमानों के लिये रहूमत हैं ।”

وَصَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِهِ وَصَحْبِهِ أَجْمَعِينَ



## मदीनए मुनव्वरा की फ़ज़ीलत व अज़मत

मक्काए मुकर्रमा के बा’द मदीनए मुनव्वरा से अफ़ज़ल कोई ज़मीन नहीं । शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने फ़ज़ीलत निशान है : “मेरी इस मस्जिद में एक नमाज़ पढ़ना मस्जिदे हराम के इलावा दीगर मसाजिद की एक हज़ार नमाज़ों से बेहतर है ।”

(صحيح البخارى، كتاب فضل الصلاة في مسجد مكة والمدينة، باب فضل الصلاة في مسجد..... الخ، الحديث: ۱۱۹۰، ص ۹۲)

## बयान 40 : **बनक्तिशु इमाम अहमद बिन हम्बल** رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ हम्दे बारी तआला :

तमाम ता'रीफें **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के लिये हैं जिस ने राहे सुलूक पर चलने वाले हर शख्स के लिये अपनी मा'रिफत के रास्ते वाजेह फरमाए। वोह अज़मत व किब्रियाई और इक़तिदार में यक्ता है। वोह ऐसा मा'बूदे बर हक़ है जिस का कोई वज़ीर है न बीवी और न ही कोई शरीक। वोह बे नियाज़ है। जिस्म व जोहर और अर्ज़ से पाक है। उस के लिये फ़ना है न मौत। जो हो चुका या आयन्दा होगा और जो बात सीने में है और जो तेरे लिये लिख दिया गया है वोह सब को जानता है। वोह ऐसा बसीर है कि इन्तिहाई सियाह रात में रहूम की तारीकी में बच्चे की ग़िज़ा देख लेता है। वोह ऐसा समीअ है जो हर एक की पुकार भी सुनता है और अल्फ़ाज़ व अक़वाल अदा करते वक़्त जो होंट हिलते हैं उस को भी सुनता है। ख़ैरो शर उसी के इरादे के ताबेअ है। वोह अर्श पर अपनी शान के मुताबिक़ मुतमक्किन है जैसा कि उस ने खुद फरमाया, “न कि जैसे तेरे दिल में खटके।” उस के लिये उतरना, चढ़ना और हरकत करना नहीं और जो दिल में गुमान गुज़रता है वोह उस से पाक है। येह मुसलमानों का ए'तिकाद है। इसी पर इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा, इमाम अहमद, इमाम शाफ़ेई और इमाम मालिक رَضُوا اللَّه تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ मुत्तफ़िक़ हैं।

ऐ बन्दए ख़ता कार ! उठ और अपने मालिके हक़ीकी के हुज़ूर जबीने नियाज़ झुका दे और अपनी मोहताजी में उस की तरफ़ मुतवज्जेह हो और उस की बारगाह में अपनी बिगड़ी हुई हालत संवारने की दरख़्वास्त कर कि वोह तेरी हालत ख़ूब जानता है। तंगी व खुशहाली में उस की ता'रीफ़ कर और मुसीबत व कुशादगी में उस का शुक्र अदा कर। और इस बात की गवाही दे कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं, उस का कोई शरीक नहीं, वोह इज़्ज़त वाला और हमेशा रहने वाला है और येह भी गवाही दे कि हज़रते सय्यिदुना मुहम्मदे मुस्तफ़ा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के ख़ास बन्दे और रसूल हैं। **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर और आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के आल व अस्हाब رَضُوا اللَّه تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ पर अपनी रहमतें नाज़िल फरमाए। (आमीन)

## तआरुफ़े इमाम अहमद बिन हम्बल : رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ :

हज़रते सय्यिदुना इदरीस हद्दाद عليه رَحْمَةُ اللَّهِ الْبَرَاء फरमाते हैं : “हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन मुहम्मद बिन हम्बल शैबानी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ हदीषे पाक में साहिबे रिवायत थे और आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के ज़माने में आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ जैसा कोई न था।”



हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ इन्तिहाई सालेह व मुत्तकी थे और आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ में सच्चे ईमानदारों की अलामात पाई जाती थीं। चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना इदरीस हद्दाद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ ने आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के बेटे हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के लिये रोटी और कुछ सालन देना अपने ज़िम्मे ले रखा था। जब वोह काज़ी बन गए तो आप रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने रोटी क़बूल करने से इन्कार कर दिया और इरशाद फ़रमाया : **“اَبْلَاهُ عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! मैं इस से कभी खाना न खाऊंगा।”** और मरते दम तक आप रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ अपने इस कौल पर कारबन्द रहे।”

(تذكرة الاولياء، ص ۹۷)

हज़रते इदरीस हद्दाद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ फ़रमाते हैं : “मैं ने हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को हमेशा नमाज़ पढ़ते, तिलावते कुरआन करते या कोई किताब पढ़ते देखा और कभी किसी दुन्यवी मुअमले में मशगूल न पाया। और जब इन मज़कूरा कामों में शिद्दत आ जाती तो एक, दो या तीन दिन तक कुछ न खाते। जब अपने घर वालों को देखते तो पानी पी लेते जिस से वोह समझते कि आप रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ का पेट भरा हुवा है।”

हज़रते सय्यिदुना मरूज़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْه फ़रमाते हैं, जब हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को कुरआने पाक को ग़ैरे मख़्लूक मानने पर ख़लीफ़ा वाषिक के कैदख़ान में डाला गया। तो एक दिन दारोग़ा ज़ैल आप रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के पास आया और पूछने लगा : “ऐ अबू अब्दुल्लाह ! क्या वोह हदीष सहीह है जो ज़ालिमों और उन के मददगारों के मुतअल्लिक है ? आप रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : “जी हां ! सहीह है।” उस ने कहा : फिर तो मैं भी ज़ालिमों के मददगारों में से हूँ। तो आप रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : नहीं (तू ज़ालिमों का मददगार नहीं)।” उस ने कहा “क्यूँ नहीं ? फ़रमाया : “ज़ालिमों का मददगार तो वोह है जो तेरे बाल संवारे, कपड़े धोए और तेरे लिये खाना लाए जब कि तू तो खुद ज़ालिम है !”

(صيد الخاطر لابن الجوزي، فصل التطلع بلا عمل، ص ۱۴۲)

हज़रते सय्यिदुना इदरीस हद्दाद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ फ़रमाते हैं : “जब हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की इब्तिला व आजमाइश की घड़ियां ख़त्म हुई तो आप रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को घर लाया गया और आप रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की तुरफ़ कषीर माल भेजा गया। आप रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने ज़रूरत के बा वुजूद सारा माल वापस कर दिया और उस में से कुछ न लिया। आप रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के चचा हज़रते सय्यिदुना इस्हाक़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرّزاق ने आप रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के इस दिन के लौटाए हुए माल का हिसाब लगाया तो वोह पचास हज़ार दीनार का था। इस पर आप रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने चचा से फ़रमाया : “ऐ चचा ! मैं आप को ऐसे हिसाब में मशगूल पाता हूँ जो आप के लिये बे फ़ाइदा है।” चचा ने कहा : “आज तुम ने इतना माल वापस कर दिया हालांकि तुम्हें एक एक दाने की ज़रूरत है।” आप रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : “अगर हम इसे त़लब करते तो येह न मिलता और जब हम ने इसे छोड़ दिया है तो येह हमारे पास आया है।”

(سير اعلام النبلاء، الرقم ۱۸۷۶، احمد بن حنبل رضى الله تعالى عنه، ج ۹، ص ۵۱۱)

हज़रते सय्यिदुना सईद राजी عليه رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं : “एक दिन हम हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के साथ ख़लीफ़तुल मुतवक्किल के दरवाज़े पर पहुंचे । जब दरबारियों ने आप को ख़ास दरवाज़े से अन्दर दाख़िल किया तो आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने हमें इरशाद फ़रमाया : “वापस लौट जाओ ! **اَللّٰهُمَّ** عَزَّ وَجَلَّ तुम्हें अफ़ियत अता फ़रमाए ।” चुनान्चे, आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की दुआ की बरकत से आज तक हम में से कोई बीमार न हुवा ।” (المرجع السابق، ص ५१२)

हज़रते सय्यिदुना हिलाल बिन अ़ला عليه رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं : “चार शख़्सियात ऐसी हैं जिन का इस्लाम पर एहसान है : (1) हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ जो अज़ियत व तक्लीफ़ पर षाबित क़दम रहे और कुरआने अज़ीम को मख़्लूक न कहा (2).....हज़रते सय्यिदुना अबू अब्दुल्लाह शाफ़ेई رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ जिन्होंने ने किताब व सुन्नत पर फ़िक़ह की बुन्याद रखी (3).....हज़रते सय्यिदुना अबू अब्दुल्लाह कासिम बिन सलाम عليه رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى जिन्होंने ने हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक وَسَلَّمَ की हदीष की तशरीह फ़रमाई और (4).....हज़रते सय्यिदुना अबू ज़करिया عليه رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى जिन्होंने ने सहीह और ग़ैरे सहीह अहदीष में फ़र्क़ वाज़ेह किया ।”

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन मूसा عليه رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं : “हज़रते सय्यिदुना हुसैन बिन अब्दुल अज़ीज عليه رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى की तरफ़ मिस्र से बहुत सा माले विरासत भेजा गया तो इन्होंने ने हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की ख़िदमत में तीन थेले पेश किये । हर थेले में हजार दीनार थे और अर्ज़ की : ऐ अबू अब्दुल्लाह ! इसे अपने घर वालों पर खर्च कर लीजिये । तो आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : मुझे इस माल की कोई ज़रूरत नहीं, मुझे मेरा **اَللّٰهُمَّ** عَزَّ وَجَلَّ काफी है और सारा माल लौटा दिया । (حلية الاولياء، الامام احمد بن حنبل رضى الله تعالى عنه، الحديث १३५८، ج ९، ص १९२)

हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के बेटे हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह عليه رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं : “मेरे वालिदे मोहतरम हर रात एक मन्ज़िल कुरआने हकीम पढ़ते और सात दिन में कुरआने मजीद ख़तम फ़रमाते फिर सुब्ह तक खड़े हो कर इबादत करते रहते । आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ हर दिन तीन सो रक्अत नमाज़ अदा करते थे । जब आप رَضِيَ اللَّهُ تَعालَى عَنْهُ पर कोड़े बरसाए गए तो आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ कमज़ोर पड़ गए । और फिर हर दिन एक सो पचास (150) रक्अत अदा फ़रमाते थे । आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ तीन बार सुकून में आते और तीन बार आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की चीख़ बुलन्द होती ।”

(حلية الاولياء، الامام احمد بن حنبل رضى الله تعالى عنه، الحديث १३५८، ج ९، ص १९२)

**सय्यिदुना शैबान राई عليه رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى का जवाबे ला जवाब :**

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह عليه رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं : “एक रोज़ मेरे वालिदे मोहतरम हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عليه رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى के

पास बैठे हुए थे कि उन के करीब से हज़रते सय्यिदुना शैबान राई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى का गुज़र हुवा। उन्होंने ने ऊनी जुब्बा पहन रखा था। हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي से फ़रमाया : “ऐ अबू अब्दुल्लाह ! क्या मैं इस नावाकिफ़ को इस की नावाकिफ़ियत पर आगाह न करूं ?” हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي ने फ़रमाया : “छोड़िये ! इसे अपने हाल पर रहने दीजिये।” हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : “नहीं, इसे समझाना बहुत ज़रूरी है।” फिर आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने हज़रते सय्यिदुना शैबान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْمَنَان को अपने पास बुला कर इस्तिफ़सार फ़रमाया : “ऐ शैबान ! उस शख्स के मुतअल्लिक क्या कहते हो जो किसी दिन अपनी नमाज़ भूल गया और नहीं जानता कि कौन सी नमाज़ थी तो अब उस पर क्या वाजिब है ?” तो हज़रते सय्यिदुना शैबान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْمَنَان ने जवाबन इरशाद फ़रमाया : “ऐ अहमद ! ऐसे शख्स का दिल यादे इलाही عَزَّ وَجَلَّ से गाफ़िल है और वोह भूला हुवा गाफ़िल है। लिहाज़ा उस पर लाज़िम है कि वोह सीखे ताकि दोबारा कभी नमाज़ से गाफ़िल न हो और उस दिन की सारी नमाज़ें भी क़ज़ा करे। फिर वोह हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ और हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي की तरफ़ मुतवज्जेह हुए और फ़रमाया : “क्या आप दोनों मेरे जवाब का रद्द कर सकते हैं ?” येह सुन कर हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ खुशी से चिल्ला उठे और फ़रमाया : “नहीं, **अब्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! येही जवाब सहीह है।” फिर उन को वहीं छोड़ कर हज़रते सय्यिदुना शैबान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْمَنَان तशरीफ़ ले गए।”

हज़रते सय्यिदुना इदरीस عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं, हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ सिला हुवा लिबास न पहनते थे बल्कि कच्ची सिलाई कर के दरमियान से गोल काट लेते और सर में दाख़िल कर लेते और फ़रमाते : “जो मर जाएगा उस के लिये इतना ही काफ़ी है।” आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ज़ियादा तर ख़ूदरू ज़मीनी सब्जी तनावुल करते और फ़रमाते : “**अब्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! येह वोह हलाल चीज़ है जिस में कोई हिसाबो किताब नहीं।”

### मशअल की रोशनी में सूत न कातो :

हज़रते सय्यिदुना इदरीस عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं, एक रोज़ आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के रुफ़का की औरतों का एक गुरौह आप رَضِيَ اللَّهُ تَعालَى عَنْهُ की ख़िदमत में हाज़िर था कि एक औरत आगे बढ़ कर अर्ज़ करने लगी : “या सय्यिदी ! हम अपने घरों में सूत कात रही होती हैं तो करीब से सिपाही मशअल ले कर गुज़रते हैं तो क्या हमारे लिये इन मशअलों की रोशनी में ऊन कातना जाइज़ है ? आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने पूछा : “तुम कौन हो ?” उस ने अर्ज़ की : “हज़रते सय्यिदुना बिशरे हाफ़ी عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي की बहन।” तो आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : “तुम्हारे घर से तक्वा का जुहूर हुवा इस लिये तुम इस की रोशनी में ऊन मत कातो।”

(وفيات الاعيان لابن خلكان، حرف الباء، الرقم ١١٤، الحافى، ج ١، ص ٢٦٨، بتغير)



हज़रते सय्यिदुना इदरीस हद्दाद رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि एक बार हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ हज़ के लिये मक्काए मुकर्रमा زادها الله شرفاً و تعظيماً मुकर्रमा हुआ। वहां आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ पर तंग दस्ती ग़ालिब आ गई। आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के पास एक बालटी थी। वोह आप रَضِيَ اللَّهُ تَعालَى عَنْهُ ने किसी चीज़ के बदले एक सब्ज़ी फ़रोश के पास गिरवी रख दी। जब **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ ने आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की तंग दस्ती दूर फ़रमा दी तो आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ उस सब्ज़ी फ़रोश के पास आए और उसे रक़म दे कर अपनी बालटी का मुतालबा किया। सब्ज़ी फ़रोश खड़ा हुवा और एक जैसी दो बालटियां हाज़िर कर दीं और कहने लगा : “मुझ पर आप की बालटी मुश्तबा हो गई है, आप इन में से जो चाहें ले लें।” तो आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : “मुझ पर भी मुआमला मुश्तबा हो गया है कि कौन सी बालटी मेरी है ? **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! मैं इसे बिल्कुल न लूंगा।” सब्ज़ी फ़रोश ने कहा : “**अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! मैं भी इस को दिये बिगैर न छोड़ूंगा।” आखिर कार दोनों उस को फ़रोख़्त कर के रक़म सदका करने पर रिज़ा मन्द हो गए।

(حلية الاولياء، الامام احمد بن حنبل رضى الله تعالى عنه، الحديث ۱۳۶۰، ج ۹، ص ۱۸۱، بتغير)

हज़रते सय्यिदुना इदरीस हद्दाद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं : “जब भी हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ किसी जनाजे में जाते तो उस दिन न खाना खाते, न उस रात सोते। आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ जब कोई क़ब्र देखते तो इस तरह रोते जैसे वोह औरत रोती है जिस का बच्चा फ़ौत हो चुका हो।”

**इमाम अहमद रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का आंखों का कुप्ले मदीना : (1)**

एक रोज़ हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ अचानक घर से बाहर निकले तो एक औरत पर नज़र पड़ी जिस का चेहरा खुला हुवा था। आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़ौरन पढ़ा : “لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ” या’नी बुलन्द व बरतर परवर दगार के सिवा कोई ताक़त व कुव्वत नहीं।” और क़सम खाई कि आयन्दा जब भी निकलूंगा चेहरा ढांप कर निकलूंगा ताकि किसी औरत पर नज़र न पड़े।

जब भी कोई नया वाक़िआ या मस्अला दर पेश होता तो आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ उस को उस वक़्त तक न लिखते जब तक उ-लमाए किराम رَحْمَتُهُمُ اللَّهُ السَّلَام की ख़िदमत में पेश न फ़रमा लेते। अगर आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की राए इन की राए के मुताबिक़ होती तो लिख लेते वरना छोड़ देते और दिल में आने वाली बात पर इस्तिग़फ़ार करते।

हज़रते सय्यिदुना इदरीस हद्दाद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के ज़ोहद व वरअ का येह आलम था कि जब आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का क़लम

①....दा’वते इस्लामी के मदनी माहोल में आंखों को बद निगाही से बचाने को “आंखों का कुप्ले मदीना” कहते हैं।

खुश्क हो जाता तो इसे अपने सर से पौछते, अपने कपड़े से न पौछते। आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से वजह दरयाफ्त की गई तो फ़रमाया : “येह रोशनाई इल्म का बाकी मांदा हिस्सा है लिहाज़ा मैं इसे कपड़ों से साफ़ नहीं करता कि हो सकता है वोह कपड़ा गन्दगी में डाल दिया जाए।”

### आठ लाख, साठ हजार शूरक़ाए जनाज़ा :

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन मूसा عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ فَرमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ सिन 164 हिजरी में पैदा हुए और ब वक़्ते विसाल आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की उम्र मुबारक 77 बरस थी। आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को जुमुआ की नमाज़ के बा'द दफ़नाया गया। कषीर लोग आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के जनाज़े में इकठ्ठे हुए। हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन ताहिर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الظاهر ने आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई। जब नमाज़े जनाज़ा में हाज़िरीन को शुमार किया गया तो आठ लाख (8,00,000) मर्द और साठ हजार (60,000) औरतें थीं। जिस जगह आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की नमाज़े जनाज़ा अदा की गई वोह चोसठ (64) जरीब <sup>(1)</sup> थी। आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की ता'ज़ियत के लिये ख़लीफ़ा मुतवक्किल या ख़लीफ़ा वाषिक़ बैठा तो हुक़मा व उमरा और ख़ास लोगों से कहा गया कि ख़लीफ़ा से ता'ज़ियत करें।

(حلیۃ الاولیاء، الامام احمد بن حنبل رضی اللہ تعالیٰ عنہ، الحدیث ۱۳۵۶۳، ج ۹، ص ۱۷۴ - الطبقات الكبرى للشعرانی، الرقم ۹۴، الامام احمد بن حنبل رضی اللہ تعالیٰ عنہ، ج ۱، ص ۸۰)

### दस लाख अहादीष लिखने वाला इमाम :

हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ अपने ज़माने के सब से बड़े ज़ाहिद, मुतकी, फ़कीह और परहेज़गार थे। हदीषे पाक को सब से ज़ियादा जानते थे। आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने सहीह अहादीष को ग़ैर सहीह अहादीष से अ़लाहिदा कर के निशान देही की। आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ रिजाले हदीष (या'नी हदीष के रावियों) और उन में से सच्चे रावियों के मुतअल्लिक़ भी सब से ज़ियादा इल्म रखते थे। आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने दस लाख (10,00,000) अहादीष तहरीर फ़रमाई। जिन में सनद और मतन वाली अहादीष की ता'दाद एक लाख पचास हजार (1,50,000) है।

मन्कूल है कि जब आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ पर तशहूद किया गया और मसाइब व आलाम ढाए गए तो आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ षाबित क़दम रहे। जिस की वजह से अहले मशरिक़ व मग़रिब के महबूब बन गए। आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ हमेशा लोगों की निगाहों में बा इज़्ज़त रहे यहां तक कि जब लोग आप रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को देखते तो गोया वोह किसी शेर को देख रहे होते।

①.....जरीब : ज़मीन की उस मा'लूम मिक्दार को कहते हैं जो दस क़फ़ीज़ के बराबर होती है और हर क़फ़ीज़ चालीस हाथ का होता है। (لسان العرب، ج ۱، ص ۵۶۵)

हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَاحِد हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के मरजे विसाल में उस वक़्त हाज़िर हुए जब आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ क़रीबुल मर्ग थे। वोह आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को देख कर रोने लगे और अर्ज की : “ऐ अबू अब्दुल्लाह ! मुझे कुछ वसियत फ़रमाइये।” आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अपनी ज़बाने मुबारक की तरफ़ इशारा करते हुए येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई :

﴿ اَلَمْ يَلَمْ هَذَا فَاَلَيْعَمَلِ الْعَمَلُونَ ﴾ (٢٣، الصّٰفّٰت: ٦١) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐसी ही बात के लिये कामियों को काम करना चाहिये।

फिर आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने दाइये अजल को लब्बैक कहा और आप का ताइरे रूह क़फ़से उ़नसुरी से परवाज़ कर गया।

**अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ की आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ पर रहमत हो और आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के सदके हमारी मग़फ़िरत हो। (आमीन)

وَصَلَّى اللَّهُ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِهِ وَصَحْبِهِ أَجْمَعِينَ



### हिफ़जते ज़बान की फज़ीलत

शहनशाहे नबुव्वत, पैकरे जूदो हिक्मत صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने जन्नत निशान है :

مَنْ يَتَكْفَّلْ لِيْ مَا بَيْنَ لِحْيَتَيْهِ وَرَجْلَيْهِ أَتَكْفُلْ لَهُ بِالْجَنَّةِ

**तर्जमा :** जो शख्स मुझे दो जबड़ों के दरमियान वाली चीज़ (या'नी ज़बान) और दो टांगों के दरमियान वाली चीज़ (या'नी शर्मगाह) की ज़मानत दे मैं उसे जन्नत की ज़मानत देता हूँ।

(صحيح البخارى، كتاب الرقاق، باب حفظ اللسان، الحديث ٦٤٧٤، ص ٥٤٣، مفهوماً)



बयान 41 :

चन्द हिक्कायात

हम्दे बारी तआला :

तमाम ता'रीफे **अल्लाह** عزوجل के लिये हैं जिस ने आस्मान को अपनी कुदरत से बुलन्द फ़रमाया । अफ़लाक को इन के मदार में घुमाया । अपनी मशिय्यत से ज़मीन को फैलाया और इसे चलने के लिये आसान किया, आस्मान को काबिले तस्खीर बनाया । उस ने सल्तनत बनाई और मख़्लूक को इस में बसाया । वोह खुद ज़िन्दा है और औरों को काइम रखने वाला है, उसे ऊँघ आती है न नींद । उस ने मौत और ज़िन्दगी को पैदा फ़रमाया । नजात और हलाकत को मुक़र्रर फ़रमाया, वोह हमेशा से है और सब को पैदा करने वाला है, पैदा करने और हुक्म देने का मुख़्तारे हकीकी वोही है, मुआफ़ करना और सज़ा देना उसी के दस्ते कुदरत में है, उसी ने लौहो क़लम पैदा फ़रमाए । इन्सान को वोह कुछ सिखाया जो वोह न जानता था, उसे अक़ले कामिल, समझ बूझ और फ़हम व फ़िरासत अता फ़रमाई । वोही दरया की गहराइयों में गर्क होने वालों को हलाकत का यकीनी मुशाहदा कर लेने के बा'द बचाने वाला है और तमाम हीलों के ख़त्म होने के बा'द हलाक होने वाले को बचाने वाला भी वोही है और सख़्त बेड़ियों में बन्धे कैदियों को आज़ाद करने वाला और कैद से छुटकारा अता कर के इन की हाज़त रवाई फ़रमाने वाला भी वोही है, वोह बन्दों से बे परवाह है, इन्हें फ़रमां बरदारी और ईमान का हुक्म देता है और इन के लिये कुफ़्रो शिर्क पर राज़ी नहीं, इताअत उसे नफ़अ दे सकती है न ही नाफ़रमानी नुक़सान दे सकती है ।

ऐ गुनहगार ! बेशक वोह तुझे फ़रमां बरदारी का हुक्म देता और नाफ़रमानी से मन्अ फ़रमाता है ताकि तुझे यकीन की आंख से अपनी कुदरत का मुशाहदा कराए और तेरे लिये दीन व दुन्या का मुआमला वाजेह फ़रमाए । हर वक़्त उस की त़रफ़ मुतवज्जेह रह, उस से डरता रह और उस की नाफ़रमानी से बच । अगर तू उसे नहीं देख पाता तो येह यकीन रख कि वोह तो तुझे देख रहा है । नमाज़ों की पाबन्दी कर जिन का उस ने तुझे ताकिदी हुक्म दिया है और सहूरी के वक़्त आज़िज़ी व इन्क़िसारी से उस की बारगाह में खड़ा हो, बेशक वोह तुझ पर अपनी रोशन ने'मतें निछावर फ़रमाएगा और तुझे अपने मक़सूद तक पहुंचा कर तुझ पर एहसान फ़रमाएगा । क्या उस ने मां के पेट में तेरी हिफ़ाज़त नहीं की और अपने लुत्फ़ो करम से तुझे ख़ूराक मुहय्या नहीं की ? क्या उस ने तुझे कमज़ोर पैदा कर के फिर रिज़्क़ फ़राहम करते हुए तुझे क़वी नहीं किया ? क्या उस ने तरी पैदाइश और परवरिश अच्छी त़रह न की ? क्या तुझे इज़्ज़त व इकराम नहीं बख़्शा ? क्या तुझे हिदायत व तक्वा जैसी अज़ीम दौलत से मुज़य्यन नहीं किया ? क्या तुझे अक़ल दे कर ईमान की त़रफ़ तेरी रहनुमाई नहीं फ़रमाई ? क्या तुझे अपनी ने'मतें अता नहीं फ़रमाई ? क्या तुझे अपनी फ़रमा बरदारी का हुक्म नहीं दिया, और ताकीद नहीं की और तुझे अपनी नाफ़रमानी से नहीं बचाया ? क्या तुझे निदा दे कर अपने दरे रहमत पर नहीं बुलाया ? क्या सहूरी के वक़्त तुझे अपने मुक़र्रम ख़िताब से बेदार नहीं किया और तुझ से राज़ की बातें न कीं ? क्या तुझ से

आखिरत में कामयाबी और जज़ा का वा'दा नहीं फ़रमाया ? क्या तू ने सुवाल किया और दुआ की तो उस ने तेरे सुवाल का जवाब नहीं दिया और तेरी दुआ क़बूल नहीं की ? जब तू ने मुसीबतों में मदद मांगी तो क्या उस ने तेरी मदद नहीं फ़रमाई और तुझे नजात अता नहीं की ? और जब तू ने नाफ़रमानी की तो क्या उस ने अपनी बुर्द बारी से तेरी पर्दा पोशी नहीं फ़रमाई और तुझे अपनी रहमत से नहीं ढापा ? क्या तू ने कई मरतबा अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ के गुज़ब को दा'वत नहीं दी ? लेकिन फिर भी उस ने तुझे राज़ी रखा ! तो क्या तुझे ज़ैब देता है कि तू गुनाहों और नाफ़रमानियों से उस का मुक़ाबला करे ? उस ने तुझ पर अपना रिज़्क कुशादा किया और तू उस की नाफ़रमानी में इज़ाफ़ा करता है। तू लोगों से तो छुप जाता है मगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से न छुप सकेगा। वोह तुझे देख रहा है, कब तक तू गुमराही और ख़्वाहिशात के समन्दर में ग़र्क़ रहेगा ? अगर तू नजात चाहता है तो नदामत की कश्ती पर सुवार हो जा और अपने मौला عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में सच्ची तौबा कर के फ़ाइदा उठा। अपने आप को इख़लास के साहिल पर डाल दे वोह तुझे नजात और ख़लासी अता फ़रमाएगा।

पाक है वोह ज़ात जिस ने अपने ख़ास बन्दों पर ख़ास नज़रे करम फ़रमाई। इन के दिलों को अपनी तौहीद का घर बनाया और अपनी वह्दानियत का इक़रार करने वाला बनाया और इन के सीनों को अपने ज़िक्र और अपनी बुजुर्गी की जगह बनाया। जब कभी उफ़ुक़े तौफ़ीक़ से कोई सितारा तुलूअ होता है या तहक़ीक़ की बिजलियों से कोई नूर चमकता है तो इन के दिल महबूब के ज़िक्र से कुशादा और शराबे महब्बत से सैराब हो कर खुश हो जाते हैं और इन के सामने से पोशीदा राज़ों से पर्दे उठा दिये जाते हैं।

हज़रते सय्यिदुना अबू जैद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَاحِدِ फ़रमाते हैं : “मैं जब भी अपने नफ़्स को इबादते इलाही عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ राग़िब करता तो वोह रोने लगता लेकिन मैं इसे मुसलसल रग़बत दिलाता रहा यहां तक कि वोह उस पर खुश हो गया। जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मा'रिफ़त पा लेता है हर शै उस के ताबेअ हो जाती है।”

### शेर से पर्दा करने वाली वलिय्या :

हज़रते सय्यिदुना असमई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं : “एक दफ़ा मैं शाम के रास्ते हज़्जे बैतुल्लाह शरीफ़ رَآهَهَا اللهُ شَرَفًاوَتَعْظِيمًا के इरादे से निकला। दौराने सफ़र एक बहुत बड़ा ख़ौफ़नाक शेर नुमूदार हुवा और रास्ते में हाइल हो गया। मैं ने बराबर वाले शख्स से पूछा : “क्या काफ़िले में कोई ऐसा आदमी नहीं जो तल्वार ले और इस शेर को यहां से हटा दे ?” तो उस ने जवाब दिया : “मैं किसी ऐसे आदमी को नहीं जानता, अलबत्ता ! एक औरत है जो इसे बिगैर तल्वार के भी हटा सकती है।” मैं ने उस के मुतअल्लिक़ पूछा और हम दोनों उठ खड़े हुए और क़रीब ही एक सुवारी के कजावे के पास पहुंचे तो उस ने पुकारा : “ऐ बेटी ! नीचे उतरो और हम से इस शेर को दूर कर दो।” अन्दर से आवाज़ आई : “ऐ मेरे वालिदे मोहतरम ! क्या आप का दिल बरदाशत करता है कि मुझे शेर देखे, वोह मुज़क्कर है और मैं मुअन्नष। लेकिन ऐ अब्बा जान ! शेर को जा कर कह दीजिये कि मेरी बेटी फ़ातिमा तुझे सलाम कहती है और उस ज़ात की क़सम देती है जिसे न नौद आती है, न ऊंघ। तू हमारे

रास्ते से हट जा ।” हज़रते सय्यिदुना इमाम असमई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं : “**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! अभी उस की गुफ़्तगू ख़त्म न हुई थी कि मैं ने देखा कि शेर सामने से जा रहा था ।”

**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! येह सालिहीन की अलामतें और अरिफ़ीन की निशानियां हैं ।

**आबे ज़म ज़म सत्तू, दूध और शहद बन गया :**

हज़रते सय्यिदुना सईद बिन इस्हाक़ बसरी عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं : “मैं सहरी के वक़्त आबे ज़म ज़म शरीफ़ के कुंवें के पास था कि अचानक एक बुजुर्ग तशरीफ़ लाए, डोल भरा और पानी पी कर चल दिये । मैं ने उन का जूठा पानी पिया तो वोह मीठे सत्तू की तरह था । ऐसा शरबत मैं ने पहले कभी न पिया था । जब मैं उन की तरफ़ मुतवज्जेह हुवा तो वोह जा चुके थे । मैं दूसरे दिन दोबारा ज़म ज़म के कुंवें के पास आ गया । वोह बुजुर्ग फिर तशरीफ़ लाए और डोल भर कर पानी नोश फ़रमाया । अब मैं ने उन का बचा हुवा पानी पिया तो वोह खुशबूदार मीठे शहद की तरह था । ऐसा लज़ीज़ मशरूब मैं ने पहले कभी न चखा था । मैं दोबारा मुतवज्जेह हुवा तो वोह बुजुर्ग तशरीफ़ ले जा चुके थे । तीसरे रोज़ मैं सहरी के वक़्त ज़मज़म शरीफ़ के कुंवें पर मौजूद था कि वोह बुजुर्ग फिर तशरीफ़ लाए और डोल भर कर पानी पिया । मैं ने उन का जूठा पानी पिया तो मीठे दूध की तरह था । ऐसा लज़ीज़ दूध मैं ने कभी न पिया था । मैं ने अर्ज़ की : “ इस घर की हुर्मत की क़सम ! येह बताइये ! आप कौन हैं ?” तो उन्होंने ने फ़रमाया : “क्या मेरी मौत तक इसे ज़ाहिर तो न करोगे ?” मैं ने अर्ज़ की : “जी हां ।” तो उन्होंने ने बताया : “मैं सुफ़्यान घौरी हूं ।”

**तीन चीज़ों के सबब बरिश्श हो गई :**

हज़रते सय्यिदुना अबू यूसुफ़ ग़सलौनी عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं : “एक दिन मैं शाम की एक मस्जिद में बैठा हुवा था कि हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى तशरीफ़ लाए और मुझे फ़रमाया : “ऐ ग़सलौनी ! आज मैं ने एक अज़ीब बात देखी ।” मैं ने पूछा : “वोह क्या है ?” फ़रमाने लगे : “मैं क़ब्रिस्तान में एक क़ब्र के पास खड़ा था कि अचानक एक सफ़ेद रीश बूढ़े की क़ब्र शक़ हुई । उस ने मुझ से कहा : “ऐ इब्राहीम मुझ से कुछ पूछना है तो पूछ लो कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने मुझे आप के लिये जिन्दा किया है !” तो मैं ने पूछा : “**अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ ने आप के साथ क्या मुआमला फ़रमाया ?” उस ने जवाब दिया : “मैं **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ के हुज़ूर गुनाहों का बोझ लिये हज़िर हुवा लेकिन उस ने मुझ से फ़रमाया : “मैं ने तुझे तीन चीज़ों के सबब बरिश्श दिया : (1).....तू मेरे पास इस हाल में आया कि तुझे उस से महबूब है जो मेरा महबूब है (2).....तेरे सीने में ज़र्रा बराबर हराम शराब नहीं और (3).....तेरे बाल सफ़ेद हैं और मुझे हया आती है कि किसी सफ़ेद बालों वाले बुढ़े को आग का अज़ाब दूं । हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं : “फिर बुढ़े की क़ब्र बन्द हो गई ।” हज़रते सय्यिदुना ग़सलौनी ने अर्ज़ की : “ऐ अबू इस्हाक़ ! क्या आप मुझे उस क़ब्र की ज़ियारत न करवाएंगे ?” तो आप عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى ने फ़रमाया : ऐ ग़सलौनी



**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझ पर रहम फ़रमाए ! उस के साथ अपना मुआमला दुरुस्त रख तो वोह तुझे अपनी क़ुदरत के अज़ाइबात दिखाएगा और उस की महबूबत में तमाम ग़ैरों से ग़ाफ़िल व बे नियाज़ हो जा ।”

### अंगूरों की ग़ैबी टोकरी :

हज़रते सय्यिदुना लैष बिन सा’द عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَاحِد फ़रमाते हैं : “एक मरतबा मैं जब हज़ के इरादे से मक्काए मुकर्रमा زادها الله شرفاً وتَعْظِيماً हाज़िर हुवा । मैं ने नमाज़े अस् अदा की फिर जबले अबी कुबैस की तरफ़ चल पड़ा । वहां मैं ने देखा कि एक शख्स बैठा येह दुआ कर रहा था : “या रब्ब عَزَّوَجَلَّ या रब्ब عَزَّوَجَلَّ” यहां तक कि उस की सांस फूल गई । फिर कहने लगा : या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ” यहां तक कि उस की सांस फूल गई । फिर कहा : “या हय्यु, या कय्युम عَزَّوَجَلَّ” यहां तक कि उस की सांस फूल गई । फिर कहने लगा : “या रहमान عَزَّوَجَلَّ या रहमान عَزَّوَجَلَّ” यहां तक कि उस की सांस फूल गई । फिर “या अरहमर्राहिमीन” का विर्द करता रहा हत्ता कि उस की सांस फूल गई ।” जब वोह दुआ से फ़ारिग़ हुवा तो अर्ज करने लगा : “या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अंगूर खाने की ख़्वाहिश है मुझे अंगूर खिला दे और मेरी चादर फट गई है मुझे नई चादर अता कर दे ।” हज़रते सय्यिदुना लैष बिन सा’द عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَاحِد फ़रमाते हैं : “**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! उस की बात अभी पूरी न हुई थी कि मैं ने एक टोकरी देखी जो अंगूरों से भरी हुई थी हालांकि उन दिनों अंगूरों का मौसिम न था । साथ ही दो चादरें भी थीं । जब उस ने खाने का इरादा किया तो मैं ने कहा : मैं भी आप का शरीक हूं । उस ने पूछा : वोह कैसे ? मैं ने अर्ज की जब आप ने दुआ की थी तो मैं ने आमीन कहा था । उस ने कहा : “तो आओ, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नाम ले कर खाओ और कोई चीज़ बचा कर न रखना ।” मैं ने आगे बढ़ कर अंगूर खाना शुरू कर दिया । और वोह अंगूर बीज के बिगैर था मैं ने ऐसा उम्दा अंगूर पहले कभी न खाया था । पस मैंने खूब सैर हो कर खाया । मगर टोकरी में से कुछ भी कम न हुवा । फिर उस ने कहा : इन चादरों में से जो पसन्द हो ले लो ।” मैं ने कहा : “मुझे चादर की ज़रूरत नहीं फिर वोह कहने लगा की तुम थोड़ी देर छुप जाओ कि मैं चादरें पहन लूं । मैं औट में हो गया । उस ने एक चादर को तहबन्द के तौर पर इस्ति’माल किया और दूसरी ऊपर ओढ़ ली फिर दूसरी दो चादरें अपने हाथ में ले लीं जो पहले से उस के पास मौजूद थीं और चल दिया । मैं भी उस के पीछे चल पड़ा यहां तक कि जब वोह सफ़ा व मर्वा के मक़ाम पर पहुंचा तो उसे एक आदमी मिला और कहने लगा : “ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे रसूल صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चचाज़ाद ! मुझे लिबास पहनाइये, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप को पहनाए ।” उस ने दोनों चादरें मांगने वाले के हवाले कर दीं । मैं ने उस आदमी से पूछा : “**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप पर रहम फ़रमाए, येह कौन थे ?” उस ने जवाब दिया : “येह हज़रते सय्यिदुना जा’फ़र बिन मुहम्मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَاحِد थे ।” हज़रते सय्यिदुना लैष عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالٰی फ़रमाते हैं : “इस के बा’द मैं ने आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ तलाश किया मगर कहीं न पाया । मुझे आप عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ की जुदाई पर बहुत सदमा हुवा ।”

**हम अपने आप को खिलाते तो येह मछली न निकलती :**

हज़रते सय्यिदुना अबू नसर सय्याद عليه الرحمة الجوار फ़रमाते हैं : “हज़रते सय्यिदुना बिशर हाफ़ी एक दफ़आ मेरे पास से गुज़रे जब कि मैं जामेअ मस्जिद के दरवाज़े पर खड़ा था । लोग नमाज़े जुमुआ पढ़ कर वापस आ रहे थे । आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने इस्तिफ़सार फ़रमाया : “क्या बात है मैं तुम्हें इस वक़्त यहां देख रहा हूं ? मैं ने अर्ज़ की : “हुज़ूर ! घर में न आटा है, न रोटी, न दिरहम और न कोई दूसरी चीज़ जो बेची जा सके ।” आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने फ़रमाया : “**अल्लाह** मददगार है । अपना जाल उठाओ और आओ वादी की तरफ़ चलते हैं ।” हज़रते सय्यिदुना अबू नसर عليه الرحمة الجوار फ़रमाते हैं : “मैं ने जाल उठाया और आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के साथ चल दिया । जब हम वादी के पास पहुंचे तो आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने फ़रमाया : “वुज़ू करो और दो रक्अत नमाज़ अदा करो ।” मैं ने ऐसा ही किया तो उस के बा’द मुझे फ़रमाया : “**अल्लाह** عزّ وجلّ का नाम ले कर जाल डाल दो ।” मैं ने **अल्लाह** عزّ وجلّ का नाम लिया और जाल डाल दिया । उस में कोई भारी चीज़ फंस गई । मैं ने उस को खींचा तो मुझे बहुत दुश्चारी हुई । मैं ने हज़रते सय्यिदुना बिशर हाफ़ी عليه الرحمة الجवार से अर्ज़ की, कि मेरा हाथ पकड़ें और मेरी मदद करें । मुझे अन्देशा है कि जाल फट जाएगा । आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ आगे बढ़े और मेरे साथ मिल कर जाल खींचा तो देखा कि उस में एक बहुत बड़ी मछली थी । आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعालَى عَلَيْهِ ने फ़रमाया : “इसे लो, बेचो और इस की कीमत से घर वालों के लिये ज़रूरत की अश्या ख़रीदो ।” हज़रते सय्यिदुना अबू नसर عليه الرحمة الجवार फ़रमाते हैं : “मैं उसे ले कर शहर के दरवाज़े पर आया । वहां मुझे एक आदमी मिला । उस ने मुझ से पूछा, “येह मछली कितने की है ?” मैं ने कहा, “दस दिरहम की ।” उस ने कहा, “मैं इस को ख़रीदता हूं ।” चुनान्चे, उस ने तोल कर दस दिरहम की ख़रीद ली । मैं ने घर वालों की अश्याए ज़रूरियात ख़रीद लीं । फिर दो चपातियों में हलवा रखा और इन्हें ले कर आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की ख़िदमत में हाज़िर हो गया और दरवाज़ा खट खटाया । अन्दर से आवाज़ आई “तू कौन है ?” मैं ने अर्ज़ की, “अबू नसर ।” तो आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने इरशाद फ़रमाया : “दरवाज़ा खोलो और जो पास है वोह दरवाज़े पर ही रख कर अन्दर आ जाओ ।” मैं अन्दर दाख़िल हुवा और जो कुछ किया था आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की ख़िदमत में अर्ज़ किया । आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने फ़रमाया : “इस इन्आमे खुदावन्दी عزّ وجلّ पर उस का शुक्र है ।” मैं ने अर्ज़ की : “मैं ने घर में कुछ तय्यार किया था । हम सब घर वालों ने खा लिया है, येह मेरे पास दो रोटियां हैं जिन में हलवा रखा हुवा है (आप क़बूल फ़रमा लीजिये) ।” तो आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने इरशाद फ़रमाया : “ऐ अबू नसर ! अगर हम अपने आप को खिलाते तो येह मछली न निकलती । तुम जाओ और इस में से खुद भी खाओ और घर वालों को भी खिलाओ ।”

## दरया पर चलने वाला कुतुब :

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन अबी हवारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْبَارِي फ़रमाते हैं : “मोसुल शहर में एक ग़मज़दा आशिके इलाही रहा करता था जिस का नाम सा’दून था । मैं उस के साथ हुस्ने सुलूक से पेश आता । एक दिन मैं ने उस से पूछा : “तुम्हारे ग़म और महबूबत का सबब क्या है ?” उस ने जवाब दिया : “एक दिन मैं सैर व सियाहूत करते हुए निकला ताकि किसी ऐसे बन्दे से मिलूं जो मेरे दिल को पाक कर दे और मुझे रब्ब عَزَّوَجَلَّ के रास्ते की मा’रिफ़त करा दे । मैं ने एक आदमी को देखा जो शेर पर सुवार था । मैं उस से ख़ौफ़ज़दा हुवा तो उस ने मुझे पुकारा : “क्या तुम अपने जैसी मख़्लूक से डरते हो ?” फिर उस ने शेर को भगा दिया और पैदल चलने लगा । मैं उस के पीछे हो लिया और उसे सलाम किया, उस ने सलाम का जवाब दिया । मैं ने अर्ज़ की : “उस ज़ात की क़सम जिस ने आप को येह मर्तबा और कुर्ब अता फ़रमाया है ! मुझे भी इस रास्ते की रहनुमाई फ़रमाइये ।” उस ने फ़रमाया : दुनिया को कैद ख़ाना और आख़िरत को ठिकाना और क़ल्आ जानो, अपनी आंखों को गिर्या व ज़ारी और बेदारी का आदी करो, सहरी के वक़्त बारगाहे खुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में हाज़िरी को लाज़िम पकड़ो और उस ज़ात से ख़ौफ़ ज़दा रहो । मैं ने अर्ज़ की : “या सय्यिदी ! मज़ीद कुछ फ़रमाइये ।” तो इरशाद फ़रमाया । “ऐ सा’दून ! तू अक्ल मन्द है या मजनून ? **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जब तुझे राहे खुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ की मा’रिफ़त मिल जाए तो तेरा वुजूद ताबेअ हो जाएगा और सियाही दूर हो जाएगी ।” मैं ने अर्ज़ की “या सय्यिदी ! उस ज़ात का वासिता जिस ने आप को भेदों पर आगाह फ़रमाया और आप का दिल अपने अन्वार से मा’मूर फ़रमाया ! मुझे इजाज़त दीजिये कि दिन का बक़िया हिस्सा आप की सोहबत में गुज़ारूं ।” तो फ़रमाने लगे : “इस शर्त पर कि तुम जो देखोगे इसे मेरे ज़िन्दा रहने तक छुपाए रखोगे ।” मैं ने हामी भर ली । फिर फ़रमाया : “मेरे साथ चलो हम किसी के जनाजे पर हाज़िर होंगे ।”

फिर हम चलते चलते एक दरया पर जा पहुंचे । उन्होंने ने दरया पर अपनी चादर बिछाई और मेरे हाथ को थाम लिया । हम चादर पर बैठ गए यहां तक कि हम दरया के दरमियान एक जज़ीरे पर पहुंच गए । वहां हम ने एक आदमी को देखा जो चित लैटा हुवा था, वोह सकराते मौत में था । जब उस का इन्तिकाल हो गया तो हम ने उस के गुस्ल व कफ़न का एहतिमाम किया, उस पर नमाजे जनाज़ा पढ़ी फिर उसे क़ब्र में दफ़न कर दिया । मैं ने अर्ज़ की : “या सय्यिदी ! येह कौन हैं और इन का नाम क्या है ?” इरशाद फ़रमाया : “येह हज़रते सय्यिदुना अब्दुल वहहाब عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْبَارِي हैं जो सात कुतुबों में से एक थे, अब मुझे इन की जगह दी गई है ।” मैं ने उन से उन के अपने मुतअल्लिक भी पूछना चाहा मगर उन्होंने ने बताने से इन्कार कर दिया और मुझे छोड़ कर तशरीफ़ ले गए । मैं जज़ीरे में अकेला रह जाने की वजह से शिद्दत से रो पड़ा । फिर मैं ने उस क़ब्र पर तिलावते कुरआने करीम की आवाज़ सुनी लेकिन पढ़ने वाला नज़र न आ रहा था । मैं उस से मानूस हो गया और क़ब्र के पास ही बैठ गया । मैं सोने और जागने की कैफ़ियत में था कि मुझे ख़ाब में एक हसीनो जमील बुजुर्ग का दीदार हुवा ।



मैं ने अर्ज की : “या सय्यिदी ! उस ज्ञात कि क़सम जिस ने आप को अपनी रिज़ा और क़बूलियत की पौशाक अता फ़रमाई है उस बुजुर्ग का नाम क्या है जो मुझे इस जज़ीरे में तन्हा छोड़ गए हैं ?” उन्होंने ने इरशाद फ़रमाया : “येह साहिबे इल्मे रब्बानी हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह यूनानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ थे, वोह मेरी जगह कुतुब बनाए गए हैं, कल वोह तुम्हारे पास आएंगे और तुम्हें वापस पहुंचा देंगे, लेकिन जब तुम्हारी उन से मुलाक़ात हो तो मेरी तरफ़ से कहना कि “मेरे और अपने दरमियान किये हुए वा’दे को न भूलना ।”

हज़रते सय्यिदुना सा’दून رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : “मैं बेदार हुवा तो फ़ज़्र हो चुकी थी । मैं ने वुजू कर के नमाज़ पढ़ी और कुरआने हकीम की तिलावत करने के बा’द कुछ देर के लिये लैट गया तो अचानक मुझे ऊंध आ गई और मुझे तब पता चला जब वोह बुजुर्ग मुझे बेदार कर रहे थे । मैं ने उन की दस्त बोसी करते हुए मा’जेरत की । उन्होंने मेरा हाथ पकड़ा और दरया की तरफ़ चल पड़े यहां तक कि हम खुशकी पर पहुंच गए । जब मैं ने लौटने का इरादा किया तो उन्होंने ने फ़रमाया : “शैख़ की वसियत कहां है ?” मैं ने अर्ज की : “या सय्यिदी ! आप अच्छी तरह जानते हैं कि आप के और उन के दरमियान क्या वा’दा है, उन्होंने ने फ़रमाया है कि उसे न भूलना ।” तो आप ने फ़रमाया : “मैं वा’दा भूलने वाला नहीं ।” मैं ने अर्ज की : “या सय्यिदी ! मुझे इरशाद फ़रमाइये ! आप के और उन के दरमियान कौन सा वा’दा है ।” आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ ने फ़रमाया : “उन्होंने ने मुझ से अहद लिया है कि मैं हर रोज़ उन की ज़ियारत के लिये आया करूंगा ।” मैं ने अर्ज की : “या सय्यिदी ! उस ज्ञात की क़सम जिस ने आप को अपनी मा’रिफ़त अता फ़रमाई और अपनी विलायत से मुशरफ़ फ़रमाया ! मुझे ऐसा तौशए सफ़र अता फ़रमा दें जो मेरे लिये दुन्या व आख़िरत में नफ़अ बख़्श हो ।” तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ ने इरशाद फ़रमाया : “हिदायत के रास्ते पर चलते रहो, गुमराह मर्दूद लोगों से कनारा कश रहो, आज के रिज़क़ पर क़नाअत करो और कल की फ़िक्क न करो, रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ पर राज़ी रहो और आजमाइश और क़ज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ पर सब्र करो ।” फिर मुझे वहीं छोड़ कर वोह रुख़्सत हो गए । फिर हज़रते सय्यिदुना सा’दून رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ ने फ़रमाया : “येही वाकिआ मेरी महबूबत, दीवानगी और शौक़े दीदारे इलाही عَزَّوَجَلَّ का सबब है ।”

तमाम खूबियां उस ज्ञात के लिये हैं जिस ने दूर को क़रीब और क़रीब को दूर किया । दुश्मन को दूर किया और दोस्त को क़रीब किया । नाफ़रमान को ज़लील किया और फ़रमां बरदार, तौबा करने वाले को इज़्ज़त से नवाज़ा । वोह मालिके हक़ीकी के जो भी उसे पुकारे वोह लम्बैक कहते हुए जवाब देता है और जो भी उस से मांगे वोह अपने फ़ज़्लो करम से उस के सुवाल से ज़ियादा अता फ़रमाता है । पस ऐ गुनहगार इन्सान ! अपने क़ब्र में ठहरने को याद कर और अपने नफ़्स की कड़ी निगरानी कर और जब तक तेरी जवानी की टहनी तरो ताज़ा और शगुफ़्ता रहे रोज़े जज़ा और अपनी आख़िरत के लिये अमल करता रह । कब तक तू अपनी लगज़िश की बीमारी में मुब्तला रहेगा और इस के लिये शिफ़ा बख़्श दवा या हकीम न पाएगा । रात की तारीकी में बेदार हो और उस ज्ञात से मुनाजात कर जो

हमेशा समीअ व करीब है। अपने मौला عَزَّوَجَلَّ के हुजूर गिड़ गिड़ा, दुनिया में अजनबी बन कर रह सुब्हो शाम उस के सायए रहमत की पनाह तलब कर और उस के बाबे करम पर खड़ा हो जा तू उस के दरवाजे को खुला और उस की बारगाह को कुशादा पाएगा, और सहूरी में मा'जिरत ख्वाहाना अन्दाज़ से उस को पुकार और उस शख्स की तरह दुआ कर जो अपने गुनाहों पर ग़म ज़दा और दिल शिकस्ता है।

**ऐ मेरे इस्लामी भाइयो !** उस शख्स का हाल कितना अच्छा है जिस ने अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ के हुजूर फ़रयाद की ! उस शख्स का हाल कितना पाकीज़ा है जिस ने औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللَّهُ السَّلَام को वसीला बनाया ! मुहिब्बीने इलाही ! की गुफ्तगू कितनी प्यारी है ! परहेज़गारों की बातें कितनी उम्दा हैं ! बा अमल लोगों का साज़ो सामान कितना नफ़अ बख़्श है ! कोशिश करने वालों के चेहरे कितने रोशन हैं ! ज़िक्रे इलाही عَزَّوَجَلَّ करने वालों की सांसों कितनी खुशबूदार हैं ! शौके इलाही عَزَّوَجَلَّ रखने वालों का झिड़कना भी कितना कैफ़ो सुरूर रखता है ! ग़मज़दों की गिर्या व ज़ारी कितनी नफ़अ बख़्श है ! क़ियाम करने वालों की मुनाजात कितनी मीठी है ! रोके हुआओं की ज़िन्दगी किन्ती कड़वी है ! ख़ताकारों की जानें कितनी ज़लील हैं ! महरूमों का हाल कितना बुरा है ! ग़ाफ़िलों का पछतावा कितना संगीन है ! धुतकारे हुआओं की ज़िन्दगी कितनी बुरी है ! ज़ालिमों के दिल कितने अन्धे हैं और नाफ़रमानों और गुनहगारों के चेहरे कितने बुरे हैं !

### बनी इसराईल का एक गुनहगार :

बनी इसराईल में एक गुनहगार शख्स था। जूँ जूँ उस के गुनाहों और नाफ़रमानियों का सिलसिला बढ़ता जाता **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर अपना रिज़क और एहसान भी बढ़ाता जाता। जब उस ने हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام से गुनाहों और बुराइयों में मुलव्विष रहने वाले के लिये अज़ाब का बयान सुना तो कहने लगा : “ऐ मूसा (عَلَيْهِ السَّلَام) मेरा रब्ब عَزَّوَجَلَّ क्या चाहता है ? क्योंकि मैं जब भी गुनाहों में ज़ियादती करता हूँ तो वोह मुझे अपना मज़ीद फ़ज़ल व ने'मत अता फ़रमाता है ” उस की इस बात से आप عَلَيْهِ السَّلَام बहुत हैरान हुए। जब आप عَلَيْهِ السَّلَام कोहे तूर पर मुनाजात के लिये हाज़िर हुए तो अर्ज़ की : “या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तू जानता है जो तेरे नाफ़रमान बन्दे ने कहा है कि जब भी वोह गुनाह करता है तो तू उस पर मज़ीद एहसान फ़रमाता है।” तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया : “ऐ मूसा ! मैं उस को अज़ाब देता हूँ लेकिन वोह जानता नहीं।” हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने अर्ज़ की : “मौला ! तू उसे कैसे अज़ाब देता है हालांकि तू उस के रिज़क को कुशादा करता और उसे ढील दे देता है।” जवाब मिला : “मैं उसे अपनी बारगाह से दूरी और अपने फ़ज़लो करम से महरूमी का अज़ाब देता हूँ, अपनी इताअत से ग़ाफ़िल कर देता हूँ, अपने हुजूर मुनाजात की लज़ज़त से सुलाए रखता हूँ और सहूरी में अपने इताब और अपने दिल नवाज़ ख़िताब की लज़ज़त से महरूम कर देता हूँ। मेरे इज़ज़त व जलाल की क़सम ! मैं उसे ज़रूर अपना दर्दनाक अज़ाब चखाऊंगा और अपने इन्आम व इकराम की ज़ियादती से महरूम कर दूंगा।”

प्यारे इस्लामी भाइयो ! गुनाहों में मुक़ाबला करने वालों को देख कि उन को बहुत ज़ियादा मोहलत दे दी गई और उन को अज़ाब देने में जल्दी न की गई बल्कि उन्हें ढील दे दी गई मगर वोह गुनाहों की लज़्ज़ात पर खुश हैं हालांकि येही लज़्ज़ात उन के लिये ग़म का बाइष बन जाएंगी। चुनान्वे, रब्बे अज़ीम عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿١﴾ اَيَحْسَبُونَ اَنَّمَا نُمِلُّهُمْ بِهِ مِنْ مَّالٍ وَبَيْنَ ۙ  
نُسَارِعُ لَهُمْ فِي الْخَيْرِ ۚ ط بَلْ لَا يَشْعُرُونَ ۙ  
(١٨٠ المؤمنون: ٥٦)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन की सामाने ज़ीनत से मुजय्यन रूगर्दानी को वाजेह कर दिया (और उस की मिषाल यूं बयान फ़रमाई :)

﴿٢﴾ فَجَعَلْنَهَا حَصِيدًا كَانَ لَمْ تَعْنِ بِالْأَمْسِ ط كَذَلِكَ  
نُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ۙ  
(١١ يونس: ٢٤)

दुन्या की लज़्ज़तों में मशगूल रहने वालो ! तुम्हारा रब्बे अक्बर عَزَّوَجَلَّ वाजेह तौर पर फ़रमा रहा है :

﴿٣﴾ اِنَّا اَنْذَرْنٰكُمْ عَذَابًا قَرِيْبًا  
(٣٠ النبأ: ٤٠)

तर्जमए कन्जुल इमान : क्या येह खयाल कर रहे हैं कि वोह जो हम उन की मदद कर रहे हैं माल और बेटों से। येह जल्द जल्द उन को भलाइयां देते हैं बल्कि उन्हें ख़बर नहीं।

तर्जमए कन्जुल इमान : तो हम ने उसे कर दिया काटी हुई गोया कल थी ही नहीं, हम यूंही आयतें मुफ़त्सल बयान करते हैं गौर करने वालों के लिये। (1)

तर्जमए कन्जुल इमान : हम तुम्हें एक अज़ाब से डराते हैं कि नज़दीक आ गया।

उस दिन उन्हें किस क़दर रुसवाई होगी जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन्हें उन की बद आ'मालियों पर ख़बर दार फ़रमाएगा और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हर चीज़ का इल्म रखने वाला है।

ऐ मेरे इस्लामी भाइयो ! गुनाहों के भयानक अन्जाम पर गौर करो। कैसे लज़्ज़तें ख़त्म हो जाएंगी और ख़ामियां बाकी रह जाएंगी। मैं तुम्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम देता हूं कि गुनाह की त़लब से बचो कि येह बहुत बुरी त़लब है और उस के अषरात चेहरों और दिलों पर कितने बुरे हैं। سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ वोह बन्दा कितना खुश बख़्त है जिस ने अपने दिल को साफ़ सुथरा कर लिया, अपने नामए आ'माल को गुनाहों से पाक कर लिया और अपने ज़ाहिरो बातिन को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये ख़ालिस कर लिया।

①.....मुफ़त्सरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत सदरुल अफ़ज़िल सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِي तफ़्सीरे ख़जाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तहत्त फ़रमाते हैं : “येह उन लोगों के हाल की एक तमषील है जो दुन्या के शेफ़्ता (या'नी दिलदादाह) हैं और आख़िरत की इन्हें कुछ परवाह नहीं। इस में बहुत दिल पज़ीर तरीक़े पर ख़ातिर गुर्जी किया गया है कि दुन्यवी ज़िन्दगानी उम्मीदों का सब्ज़ बाग़ है, इस में उम्र खो कर जब आदमी इस ग़ायत पर पहुंचता है जहां उस को हुसूले मुराद का इत्मीनान हो और वोह कामयाबी के नशे में मस्त हो, अचानक उस को मौत पहुंचती है और वोह तमाम ने'मतों और लज़्ज़तों से महरूम हो जाता है। क़तादा ने कहा कि दुन्या का त़लबगार जब बिल्कुल बे फ़िक्र होता है उस वक़्त उस पर अज़ाबे इलाही عَزَّوَجَلَّ आता है और उस का तमाम सरो सामान जिस से उस की उम्मीदें वाबस्ता थीं, ग़ारत हो जाता है। ताकि वोह नफ़्अ हासिल करें और जुल्माते शुक्कूव व अवहाम से नजात पाएं और दुन्याए नापाएदार की बे षबाती से बा ख़बर हों।”



## खौफे खुदा عزَّوَجَلَّ के सबब आंख निकल दी :

मन्कूल है, एक मरतबा हज़रते सय्यिदुना ईसा बिन मरयम علی نبینا وعلیہما الصلوٰۃ والسلام शहर से बाहर तशरीफ़ लाए ताकि लोगों के लिये बारिश तलब करें लेकिन **अब्बाह** عزَّوَجَلَّ ने वहय़ फ़रमाई : “ऐ ईसा ! बारिश का मुतालबा न करो क्यूंकि तुम्हारे साथ ख़ता कार हैं ।” हज़रते सय्यिदुना ईसा बिन मरयम علی نبینا وعلیہما الصلوٰۃ والسلام ने इन्हें इस बात की ख़बर दी और ए’लान फ़रमाया : “हमारे साथ जो भी गुनहगार है वोह जुदा हो जाए ।” रावी फ़रमाते हैं : “सिवाए एक शख्स के तमाम लोग चले गए । उस की दाई आंख ख़राब थी । आप **عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** ने उस से पूछा : “तुम लोगों के साथ क्यूं नहीं गए ।” उस ने अर्ज की : “ऐ **رُحْلِلَّاہُ وَالسَّلَام** मैं ने एक लम्हा भी **अब्बाह** عزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी नहीं की । एक दिन बिला इरादा एक औरत के पाउं पर नज़र पड़ी थी तो मैं ने इस आंख को निकाल दिया । अगर मेरी दूसरी आंख पड़ती तो उसे भी निकाल फेंकता ।” रावी फ़रमाते हैं : “येह सुन कर हज़रते सय्यिदुना ईसा बिन मरयम علی نبینا وعلیہما الصلوٰۃ والسلام रोने लग गए यहां तक कि आंसूओं से रीश मुबारक तर हो गई । फिर आप **عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** ने उस नेक बन्दे से इरशाद फ़रमाया : “हमारे लिये बारगाहे इलाही **عَزَّوَجَلَّ** में दुआ करें ।” उस ने अर्ज की : “**अब्बाह** عزَّوَجَلَّ की पनाह कि (आप के होते हुए) मैं दुआ करूं हालांकि आप **رُحْلِلَّاہُ** और कलिमतुल्लाह हैं ।” फिर हज़रते सय्यिदुना ईसा बिन मरयम علی نبینا وعلیہما الصلوٰۃ والسلام ने दुआ के लिये अपने हाथ बुलन्द कर लिये और अर्ज की : “या **अब्बाह** عزَّوَجَلَّ तूने हमें पैदा फ़रमाया और तू ही हमारे रिज़क का कफ़ील हैं लिहाज़ा अब हम पर मूसला धार बारिश नाज़िल फ़रमा ।” अभी हज़रते सय्यिदुना ईसा **عَلَيْهِ السَّلَام** की दुआ ख़तम न हुई थी कि बाराने रहमत बरसने लगी और तमाम शहरों और मख़लूक पर खुल कर बरसी । (عیون الحکایات، الحکایة تخامس والاربعون، ص ٦٤)

**ऐ मेरे इस्लामी भाइयो !** दिनों और महीनों के गुज़रने के साथ ज़माने ने हमें नसीहत की, हम ने मसरत के बा’द ग़म देख लिया और जान लिया कि ज़माना अपने अहल को मसाइब व आलाम में मुब्तला करता है और हमें यकीन हो गया कि बिल आख़िर क़ब्रों का मुंह देखना है । पस परहेज़गार ही हकीकी शुक्र गुज़ार है । दुन्या ने कितने चांद जैसे हसीनों को छुपा दिया और कितने महल्लात व मकानात वीरान हो गए । तो क्या अब भी हमारी आंखें नाबीना या अन्धी हैं । बल्कि, **अब्बाह** बसीर **عَزَّوَجَلَّ** तो इरशाद फ़रमाता है :

﴿٢﴾ فَإِنَّهَا لَا تَعْمَى الْأَبْصَارَ وَلَكِنْ تَعْمَى الْقُلُوبَ الَّتِي فِي الصُّدُورِ (پہ ١٧، الحج ٤٦)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :** तो येह कि आंखें अन्धी नहीं होतीं बल्कि वोह दिल अन्धे होते हैं जो सीनों में हैं ।

## नदामत हो तो ऐसी हो :

बसरा में एक नौजवान रहता था जिस का नाम रिज़वान था । वोह अकषर खेल कूद और नाफ़रमानियों में मुब्तला रहता, आवारा गर्दी और सरकशी में मुब्तला रहता, रात भर शराब के नशे में मस्त रहता । उस पर बदबख्ती ग़ालिब थी और शैतान ने उसे गुमराह कर रखा था । एक दिन जब वोह शराब के नशे में मदहोश था और नाफ़रमान दोस्त भी उस के साथ थे कि उस ने एक फ़कीर देखा जो रास्ते पर चलते चलते चन्द अशआर गुनगुना रहा था, जिन का मफ़हूम कुछ यूं है :

“जब तू किसी दिन अहले ज़माना से तन्हाई में हो तो यूँ न कह कि मैं ख़ल्वत में हूँ बल्कि यूँ कह कि मुझ पर एक निगहबान है और **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** को लम्हा भर भी ग़ाफ़िल न जान और न येह गुमान कर कि उस पर कोई छुपी बात पोशीदा है।”

येह नसीहत भरा कलाम सुनते ही नौजवान रोने लग गया, उस ने फ़कीर को **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** का वासिता दे कर कहा कि वोह येह अशआर दोबारा पढ़े। फ़कीर ने दोबारा पढ़े। नौजवान ने उसे अपनी मजलिस में आने का इसरार किया। चुनान्चे, वोह चला आया, नौजवान कहने लगा। “या सय्यिदी ! **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** की क़सम ! आप की ज़ियारत हमारे लिये बाइषे सआदत है, हमें आप की आवाज़ और नग़मा भला लगा। लिहाज़ा अपने नग़मों से हमारी ज़िन्दगी को पाकीज़ा कर दो।” चुनान्चे, फ़कीर ने चन्द अशआर पढ़ना शुरू कर दिये, जिन का मफ़हूम कुछ इस तरह है :

“**अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** का रिज़क़ खा कर भी तू उस की नाफ़रमानी करता है। जब तू उस की मख़लूक से छुपता है तो वोह तुझे देख रहा होता है। ऐ इन्सान ! **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** की नाफ़रमानी से बच। तू जो भी गुनाह करता है वोह तुझे देख रहा होता है और जानता है।”

नौजवान फिर रोने लगा और बेहोश हो कर गिर पड़ा। जब उसे होश आया तो उस ने शराब के बरतन तोड़ डाले और फ़कीर की तरफ़ मुतवज्जेह हो कर अर्ज़ की : “या सय्यिदी ! क्या मेरी तौबा क़बूल हो जाएगी ?” उस ने जवाब दिया : “येह रब्ब **عَزَّوَجَلَّ** से सुल्ह की घड़ी है, **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ने तुझे नेकी के दरवाज़े पर लौटने की तौफीक़ अता फ़रमाई है, आज तेरे गुनाह मुआफ़ कर दिये जाएं तो तेरे लिये कितनी बड़ी सआदत है ! (लिहाज़ा तू बारगाहे इलाही **عَزَّوَجَلَّ** में सच्ची तौबा कर ले)।” नौजवान ने फिर चीख़ मारी, उस पर ग़शी तारी हो गई और ज़मीन पर गिर गया। जब इफ़का हुवा तो अर्ज़ करने लगा : “या सय्यिदी ! क्या मुझ से गुज़स्ता गुनाहों का मुआख़ज़ा होगा ?” फ़कीर ने कहा : “नहीं, **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** की क़सम ! ख़ालिस महब्बत कितनी उम्दा है ! मुहिब्बीन के लिये दूरी के बा'द लज़्ज़ते कुर्ब कितनी अच्छी है ! फिर कुर्ब के बा'द हिज़्रो फ़िराक़ की घड़ी कितनी शदीद है ! ऐ (**अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** से किये हुए) अहदे महब्बत को भूलने वाले ! तू ने अपने रब्ब **عَزَّوَجَلَّ** से मुआमला किया फिर ग़फ़लत की मीठी नींद सो गया। तू किस फुज़ूल काम में मशगूल है ? उस से तू ने क्या पाया ? नहीं, बल्कि तू ने तो अपना मक़सूद जाएअ कर दिया। आज ही नेकियों पर कमर बस्ता हो जा और गुज़स्ता गुनाहों को तर्क कर दे और दुरवेशी इख़्तियार कर ले। तेरे साबिका गुनाह मुआफ़ कर दिये जाएंगे।” इस पर नौजवान के आंसू बह पड़े और उस के दोस्त भी रोने लगे फिर उन्होंने ने तौबा की और लिबासे ज़ैबो ज़ीनत उतार फेंका। नौजवान ने रब्ब **عَزَّوَجَلَّ** के हुज़ूर सच्ची तौबा की और अपने पिछले बुरे अफ़आल पर बेहद शर्मसार हुवा। उस ने सारी रात आहो बुका, गिर्या व ज़ारी और हसरत व नदामत से पछाड़ें खाते हुए फ़कीर के पास गुज़ारी। जब सहूरी का वक़्त हुवा तो उसे फिर अपने गुनाह और नाफ़रमानियां याद आ गईं। चुनान्चे, उस के मुंह से एक जोर दार चीख़ निकली और आंखों से सैले अशक़ रवां हो गया और उस पर ग़शी तारी हो गई। जब फ़कीर ने उसे हरकत दे कर देखा तो वोह दुन्याए फ़ानी से रुख़सत हो चुका था।

ऐ मेरे इस्लामी भाइयो ! कब तक तुम सुन्तों और फ़र्जों को जाँच करते रहोगे ? कब तक मिट्टी से तय्यमुम करते रहोगे हालांकि पानी बह रहा है ? ऐ इताअते इलाही عَزَّوَجَلَّ में सुस्ती करने वाले ! वोह तेरी नाफ़रमानी पर ख़बर दार है । खुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जिस का दिल खुद वा'ज व नसीहत करने वाला न हो उसे वा'ज भी नफ़अ नहीं देता ।

**हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान पौरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ पर एक रुक़अ का अषर :**

मन्कूल है : “हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान पौरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ लोगों के सामने नसीहत आमेज़ बयान फ़रमाते और उन को बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ का शौक़ दिलाते । उस के इन्आमात की रग़बत दिलाते और उस के अज़ाब से डराते । यूँ लोगों का आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ के पास आना जाना लगा रहता । एक दिन आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ हस्बे आदत मिम्बर शरीफ़ पर तशरीफ़ फ़रमा हुए और बयान शुरू करने का इरादा किया तो एक औरत ने एक रुक़आ बढ़ाया । जब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ ने उसे पढ़ा तो चेहरे का रंग उड़ गया । आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ शिदत से आहो बुका और गिर्या व ज़ारी करने लगे और फिर मिम्बर शरीफ़ से उतर आए और कोई गुफ़्तगू न की । आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ के दोस्तों ने पूछा : “इस रुक़ए में क्या लिखा है ?” तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ ने उन को पढ़ कर सुनाया । उस में इस मफ़हूम के चन्द अशआर थे :

“ऐ दूसरों को ता'लीम देने वाले ! तू अपने आप को येह ता'लीम क्यूँ नहीं देता ? तू बीमारों और कमज़ोरों के लिये तो दवा तजवीज़ करता है मगर वोह कैसे शिफ़ा पाएंगे जब कि तू खुद बीमार है । हम ने देखा कि तू हमे रुशदो हिदायत करता है जब कि खुद इस से दूर रहता है । पहले, अपने नफ़्स से इब्तिदा कर और इसे सरकशी से रोक । जब तू ने इसे रोक लिया तो समझ ले कि तू साहिबे हिक्मत है । फिर तेरी बात क़बूल की जाएगी, तेरा बयान नफ़अ बख़्श होगा और इस पर अमल किया जाएगा । लोगों को ऐसे काम से न रोक जो तू खुद करता है । अगर तू ने ऐसा किया तो तुझ पर बहुत बड़ा ता'ना है ।”

“रुक़आ पढ़ने के बा'द आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ शिदत से रोने धोने लग गए यहां तक कि बेहोश हो गए । जब इफ़ाका हुवा तो दोस्तों ने अर्ज़ की : “आप का कलाम बेहतर और दामन पाक है, आप के बयान से दिल शिफ़ा पाते और ग़म ज़दा तसल्ली पाते हैं, ऐसा कलाम आप के दिल पर कैसे अषर न करे ? जब कि आप तो इमाम हैं और इमाम भी कैसे हैं (जिन की अज़मत दुनिया जानती है)” आप रَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ को फिर रोना आ गया और इरशाद फ़रमाया : “मेरे लिये येह दुरुस्त नहीं कि लोगों के सामने बयान करूं जब कि मैं अपने आप को इस मक़ाम पर नहीं पाता ।” फिर आप रَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ के आंसू छलक पड़े और आप रَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ इश्के इलाही عَزَّوَجَلَّ और सोज़िशे ग़म में मशगूल हो गए । इस के बा'द न किसी ने आप रَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ का कलाम सुना, और न ही आप रَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ को देखा यहां तक कि आप रَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ इस जहाने फ़ानी से कूच फ़रमा गए ।



ऐ मेरे इस्लामी भाइयो ! क्या तुम उन बर गुज़ीदा बन्दों के दिल नहीं देखते ? जो साफ़ सफ़फ़ाफ़ शीशे की मानिन्द नर्म थे जिन में नसीहत भरा बयान अषर करता था और वा'ज़ व नसीहत इन की इश्के इलाही عَزَّوَجَلَّ की आग को मज़ीद भड़का देती थी। और तुम भी बयानात सुनते हो मगर तुम्हारे दिलों पर अषर नहीं होता। तुम अपने गुनाहों की मैल कुचेल आंसूओं से नहीं धोते बल्कि नफ़्थ मन्द चीज़ें पसे पुश्त डाल देते हो और खेल कूद और बेहूदा बातों की तरफ़ पेश क़दमी करते हो।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! तुम्हारे दिलो दिमाग़ पर ग़फ़लत ने क़ब्ज़ा जमा लिया और मोहलत के दिनों ने तुम्हें धोका दिया। तो ऐ अपने जुल्म के सबब धोके में मुब्तला होने वालो ! सुनो कुरआने पाक वाशिगाफ़ अल्फ़ाज़ में फ़रमा रहा है :

﴿٥﴾ وَلَا تَحْسَبَنَّ اللَّهَ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ الظَّالِمُونَ ط

(प १३, अब्राहिम: ४२)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और हरगिज़ अब्बाह को बे ख़बर न जानना ज़ालिमों के काम से।

और यह मोहलत मुकम्मल तौर पर नहीं बल्कि, रब्बे क़दीर عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿٦﴾ إِنَّمَا يُؤَخِّرُهُمْ لِيَوْمٍ تَشْخَصُ فِيهِ الْأَبْصَارُ ۝

(प १३, अब्राहिम: ४२)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : उन्हें ढील नहीं दे रहा है मगर ऐसे दिन के लिये जिस में आंखें खुली की खुली रह जाएंगी।

जब यह ढील ख़त्म हो जाएगी तो वोह मज़ीद मोहलत मांगते हुए कहेंगे :

﴿٧﴾ أَخْرَجْنَا آلَیْ أَجَلٍ قَرِيبٍ لَا (प १३, अब्राहिम: ४४)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : थोड़ी देर हमें मोहलत दे।

फिर उन को डांट डपट का सामना होगा और कहा जाएगा :

﴿٨﴾ أَوَلَمْ نُعَمِّرْكُم (प २२, फातर: ३७)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और क्या हम ने तुम्हें वोह उम्र न दी थी।

रोज़े महशर तुम उन्हें देखोगे कि वोह अपनी क़ब्रों से बोखलाए हुए निकलेंगे। जिस दिन पहला सूर फूँका जाएगा तो वोह खुदाए क़हहार व जब्बार عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर इस तरह हाज़िर होंगे कि उन के पहलू कांप रहे होंगे और बदबख़्ती की अलामात उन पर वाज़ेह होंगी। चुनान्चे, रब्बुल इबाद عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿٩﴾ يُعْرِفُ الْمُجْرِمُونَ بِسِيمِهِمْ (प २७, الرحمن: ४१)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : मुजरिम अपने चेहरे से पहचाने जाएंगे।

जब उन की भूक बढ़ेगी तो,

﴿١٠﴾ لَيْسَ لَهُمْ طَعَامٌ إِلَّا مِنْ صَرِيْعٍ ۝

(प ३०, الغاشية: ६)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : उन के लिये कुछ खाना नहीं मगर आग के कांटे

जब प्यास की शिहत जोश मारेगी तो,

﴿١١﴾ وَسُقُوا مَاءً حَمِيمًا فَقَطَّعَ أَمْعَاءَهُمْ ۝  
(پ ۲۶، محمد: ۱۵)

नंगे बदन उन के लिबास से बेहतर हैं क्योंकि उन के लिबास तारकोल के होंगे जब वोह पानी मांगेंगे :

﴿١٢﴾ يُغَاثُوا بِمَاءٍ كَالْمُهْلِ يَشْوِي الْوُجُوهُ ط  
(پ ۱۵، الکهف: ۲۹)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और उन्हें खोलता पानी पिलाया जाए कि आंतों के टुकड़े टुकड़े कर दे । (१)

तर्जमए कन्जुल ईमान : तो उन की फ़रयाद रसी होगी उस पानी से कि चर्ख़ दिये हुए (खोलते हुए) धात की तरह है कि उन के मुंह भून देगा । (२)

क्या तूने नाफ़रमानों को नहीं देखा कि वोह सूतने ही नहीं ? हालांकि कुरआने पाक वाजेह तौर पर फ़रमा रहा है कि,

﴿١٣﴾ إِنَّ يَوْمَ الْفُصْلِ مِيقَاتُهُمْ أَجْمَعِينَ ۝  
(پ ۲۵، الدخان: ४०)

तर्जमए कन्जुल ईमान : बेशक फ़ैसले का दिन उन सब की मीआद है ।

जब इन मुजरिमों को आग देखेगी जिन्होंने ने एक लम्हे की लज्ज़त के बदले बरसों का अज़ाब ख़रीदा तो,

﴿١٤﴾ تَكَادُ تَمَيِّزُ مِنَ الْغَيْظِ ط (پ ॲ९، الملك: ८)

तर्जमए कन्जुल ईमान : मा'लूम होता है कि शिहते ग़ज़ब में फट जाएगी ।

लिहाज़ा जो अज़ाबे नार से छुटकारा चाहता है उसे चाहिये कि तौबा कर ले,

﴿١٥﴾ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَتَمَاسَّجَ (پ ॲ८، المجادلة: ४)

तर्जमए कन्जुल ईमान : क़ब्ल इस के कि एक दूसरे को हाथ लगाएं ।

①....मुफ़स्सिरे शहीर ख़लीफ़ आ'ला हज़रत सदरुल अफ़ज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुदीन मुरादाबादी عَلَيهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं : “अज़ाब तरह तरह का होगा और जो लोग अज़ाब दिये जाएंगे उन के बहुत तबके होंगे । बा'ज को ज़कूम खाने को दिया जाएगा, बा'ज को ग़िस्लीन (या'नी दो ज़ख़ियों की पोप), बा'ज को आग के कांटे ।”

②....मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ आ'ला हज़रत सदरुल अफ़ज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुदीन मुरादाबादी عَلَيهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं : “हज़रते इब्ने अब्बास عَلَيْهِمَا رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا ने फ़रमाया : “वोह ग़लीज़ पानी है रौनैने ज़ैतून की तिलछट की तरह ।” तर्मिज़ी की हदीष में है कि “जब वोह मुंह के क़रीब किया जाएगा तो मुंह की खाल उस से जल कर गिर पड़ेगी ।” बा'ज मुफ़स्सिरीन का कौल है कि वोह पिघलाया हुवा रांग (या'नी सीसा या नर्म धात) और पीतल है ।”

ऐ इस्लामी भाइयो ! जब पाकीजा बयानात तुम्हारे मैले दिल पर अषर नहीं करते और अजाब व खौफ की धमकियां तुम्हारे दिलों को हैरान व परेशान नहीं करते तो रब्ब عَزَّوَجَلَّ के पाकीजा कलाम की आयाते बय्यिनात तुम पर तिलावत की जाती हैं :

﴿١٦﴾ فَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَرَهُ ۖ وَمَنْ

يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَرَهُ ۖ (پ ۳۰، الزلزال: ۷-۸)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :** तो जो एक जरा भर भलाई करे उसे देखेगा और जो एक जरा भर बुराई करे उसे देखेगा । (1)

ऐ अहकामे इलाही عَزَّوَجَلَّ की बजा आवरी में ग़लत बरतने वाले ! ऐ उम्मे अजीज को बेकार गंवाने वाले ! कब तक लहव ला'ब में मुब्तला रहेगा जब कि तेरे गुनाह लिखे जा रहे हैं । सफ़रे आखिरत में तेरी हालत कैसी होगी जब कि तेरा रास्ता पुर ख़तर है । अज़ क़रीब तू उस तराजू को देख लेगा जो मा'मूली सी बात भी ज़ाहिर कर देगा : فَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَرَهُ ۖ وَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَرَهُ ۖ

ऐ गाफ़िल इन्सान ! मौत तेरा पीछा किये हुए है । उस वक़्त तेरा क्या हाल होगा जब तू आस्मान को फटता हुआ देखेगा और तुझ पर मुक़रर फ़िरिश्ता तेरी अच्छाइयों और बुराइयों को जम्अ कर के इन का दफ़्तर बन्द कर चुका होगा । तुझ पर हुज्जत काइम हो चुकी होगी । कोई उज़्र या बहाना न चलेगा । वहां हर इन्सान अपनी आगे भेजी हुई नेकी या बदी को मुलाहज़ा करेगा : فَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَرَهُ ۖ وَمَنْ يَعْمَلْ مِथقال ذرّة شرّاً يَرَهُ ۖ

وَصَلَّى اللّٰهُ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِهِ وَصَحْبِهِ أَجْمَعِينَ



①.....मुफ़स्सिरे शहीर खलीफ़ आ'ला हज़रत सदरुल अफ़ज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुदीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِي رضی اللّٰهُ تعالیٰ عنہما तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं : “हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास तफ़्सीरे ने फ़रमाया कि “हर मोमिन व काफ़िर को रोज़े कियामत उस के नेक व बद आ'माल दिखाए जाएंगे । मोमिन को उस की नेकियां और बदियां दिखा कर अब्बास तअ़ाला बदियां बख़्श देगा और नेकियों पर षवाब अता फ़रमाएगा और काफ़िर की नेकियां रद्द कर दी जाएंगी क्यूंकि कुफ़्र के सबब अकारत हो चुकीं और बदियों पर उस को अज़ाब किया जाएगा ।” मुहम्मद बिन का'ब कुर्ज़ी ने फ़रमाया कि “काफ़िर ने ज़रा भर नेकी की होगी तो वोह उस की जज़ा दुन्या ही में देख लेगा यहां तक कि जब दुन्या से निकलेगा तो उस के पास कोई नेकी न होगी और मोमिन अपनी बदियों की सज़ा दुन्या में पाएगा तो आखिरत में उस के साथ कोई बदी न होगी ।” इस आयत में तरगीब है कि “नेकी थोड़ी सी भी कार आमद है और तरहीब है कि “गुनाह छोटा सा भी बवाल है ।” बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया है कि “पहली आयत मोअमिनीन के हक़ में है और पिछली कुफ़ार के (हक़ में) ।”



बयान 42 :

## आशूरा के फनाइल

हम्दे बारी तझाला :

सब खूबियां **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जो इब्तिदा से इन्तिहा तक ग़ालिब है, उस की ने'मत मोमिन व काफ़िर दोनों की क़िफ़ालत करती है और उस की कुदरत रोशनी और तारीकी ज़ाहिर करती है, उस की रहूमत उसे भी शामिल है जिस ने अपनी ज़िन्दगी नाफ़रमानियों में ज़ाएअ कर दी, कितने ही अमीरों को उस ने फ़कीर बनाया और कितने ही फ़कीरों को ग़नी कर दिया, मिस्कीन पर रहूम फ़रमाया, टूटे हुए को जोड़ा, गुनाहों को मुआफ़ किया, वीरान दिलों को आबाद किया, सीनों को कुशादगी अता फ़रमाई, मज़लूमों की ख़ातिर अपना दरे रहूमत खोल दिया, फ़िरिश्ते भी उस की हैबत से थर थर कांपते हैं पस वोह कषरत से उस की तक्बीर व तहलील करते हैं, उसी के हुक्म से कश्ती चलती है, उस ने अपनी रहूमत को षाबित कर दिया है और फ़िरिश्तों को अपनी इस बात पर गवाह बना लिया है कि वोह हमेशा ख़ताओं को बख़्शने वाला है, अज़मत व तक्दीस वाला है, उसी को याद किया जाता है, वोही मा'बूदे अज़ीम है, उसी का हम्द व शुक्र किया जाता है, वोह नीचे से नीची चीज़ को भी मुलाहज़ा फ़रमाता है क्यूंकि वोह समीअ व बसीर (या'नी सुनने, देखने वाला) है। ज़ेहन में पैदा होने वाली सोच को भी जानता है क्यूंकि वोह अलीम व ख़बीर (या'नी जानने वाला और बा ख़बर) है, सब कुछ फ़ना हो जाएगा मगर वोह बाक़ी रहेगा और वोह उस पर कुदरत रखता है, ज़िन्दे को मुर्दे से निकालता है और उस ने हर शै को पैदा फ़रमाया और उस का एक ख़ास अन्दाज़ा रखा और ऐ इन्सान ! तेरे गुनाहों को जानने के बा वुजूद तुझे अता किया। चुनान्चे, खुद इरशाद फ़रमाया : (۲۰: ۱۵) وَمَا كَانَ عِظَاءُ رَبِّكَ مُخْطَرًا (پس اسرارِ تیرا)

उस पर न तो किसी किस्म का हिजाब है कि वोह छुपा हुवा हो और न ही वोह जिस्म रखता है कि मुक़य्यद हो, उस ने ज़िम्मेदार लोगों का इन्तिखाब फ़रमाया, उन के चेहरों को नूर अता फ़रमाया, उन के दिलों को अपनी महबूबत और कैफ़ो सुरू से भर दिया और उन्हें अपनी मा'रिफ़त का वाफ़िर हिस्सा अता फ़रमाया। जब अहले मा'रिफ़त ने हिजरो फ़िराक़ का शिकवा (شک-وه) किया तो उस ने इन के लिये अमान नामा लिख दिया। इन को ग़ाफ़िल लोगों के दरमियान बेदार किये रखा और इन के और ग़ाफ़िलों के दरमियान पर्दा हाइल कर दिया। जब इन्होंने ने उस की इबादत में अपने आप को थकाया और अपने चेहरों को तारीकियों के पर्दों में छुपाया तो उस ने बा'ज को मख़लूक के दरमियान (विलायत का) सूरज और बा'ज को (विलायत का) चांद बना दिया, उन्हें अपने ख़िताब की अच्छी तरह समझ अता फ़रमाई और अपने इताब की लज़्ज़त से लुत्फ़ अन्दोज़ किया, अपने कुर्ब के जाम से शराबे तहूर पिला कर इन्हें मक़ामे कुर्ब अता फ़रमाया और फिर बन्द दरवाज़े खोल कर इन के सामने से तमाम हिजाबात उठा दिये।

पाक है वोह मा'बूद जिस ने सालों और ज़मानों को फेरा और कुछ दिनों और महीनों को दूसरों पर शरफ़ अता फ़रमाया और अवकाते इबादात को दूसरे तमाम अवकात पर फ़ज़ीलत अता फ़रमाई और यौमे आशूरा को खुसूसी फ़ज़ीलत व बरकत वाला बनाया, उस दिन अपने नबी हज़रते

सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से ख़िताब फ़रमाया और अपने ख़िताब की पाकीज़ा शराब का जाम पिलाया, इन की मुनाजात की समाप्त के लिये मक़ामे तूर का इन्तिखाब फ़रमाया फिर इन्हें अपने कुर्ब से नवाज़ कर इसी आशूरा के दिन इन से ख़िताब फ़रमाया और इन्हें बहुत ज़ियादा फ़ज़ल से नवाज़ा। बनी इसराईल पर इस दिन का रोज़ा फ़र्ज़ किया और रोज़ेदार के लिये बहुत ज़ियादा अज़्र तय्यार फ़रमाया। इसी दिन हज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ السَّلَام को तौबा क़बूल फ़रमाई और इन को ताज़गी और सुरूर अता फ़रमाया। इसी दिन हज़रते सय्यिदुना नूह عَلَيْهِ السَّلَام को सफ़ीने में तूफ़ान से निकाला और इन्हें हृद दर्जा चैन व सुकून अता फ़रमाया। इसी दिन हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام को नारे नमरूद के शो'लों से नजात अता फ़रमाई। इसी दिन हज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने कैद से रिहाई पाई जब कि आप बहुत ज़ियादा सब्र करने वाले थे। इसी दिन हज़रते सय्यिदुना या'कूब عَلَيْهِ السَّلَام की बसारत का जो'फ़ जाता रहा। हज़रते सय्यिदुना अय्यूब عَلَيْهِ السَّلَام की तक्लीफ़ दूर हुई और हज़रते सय्यिदुना दावूद عَلَيْهِ السَّلَام की लगज़िश मुआफ़ हुई। ज़बाने कुदरत कुरआने पाक में इस फ़रमाने आलीशान से इन्हें बिशारत दे रही है : إِنْ هَذَا كَانَ لَكُمْ جَزَاءً وَكَانَ سَعْيُكُمْ مَشْكُورًا (پ ۲۹، الدھر: ۲۲)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** उन से फ़रमाया जाएगा येह तुम्हारा सिला है और तुम्हारी मेहनत ठिकाने लगी। हज़रते सय्यिदुना अबू क़तादा अन्सारी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है, **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल ड़्यूब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने आलीशान है : “यौमे आशूरा का रोज़ा एक साल क़बूल के गुनाह मिटा देता है।”

(الكامل فى ضعفاء الرجال لابن عدى، الرقم ۱۰۳۸/۷ عبد الله بن معبد، ج ۵، ص ۳۷۲)

**“या हुसैन, या शहीदे क़श्बला ही दूर हर रन्गी बला” के इक्तीश**  
**हुस्फ़ की निश्चत से यौमे आशूरा के इक्तीश खुशूसियात**

हज़रते सय्यिदुना अबू हुसैना رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है, हुज़ूर नबिय्ये मुक़र्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने बरकत निशान है : <sup>(1)</sup>

.....**اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ ने बनी इसराईल पर साल में एक दिन का रोज़ा फ़र्ज़ किया और वोह यौमे आशूरा का रोज़ा है और इस से मुराद माहे मुह्र्रम का दसवां दिन है। लिहाज़ा तुम भी इस दिन का रोज़ा रखो और अपने घर वालों पर खुला खर्च करो (शुअबुल ईमान में है :) “जो इस दिन अपने अहलो इयाल पर माल में फ़राखी व कुशादगी करता है **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ उस पर तमाम साल रिज़्क वाफ़िर फ़रमाएगा।”

(شُعَبُ الْاِيْمَان، باب فى الصيام، صوم التاسع مع العشر، الحديث ۳۷۹۵، ج ۳، ص ۳۶۶)

**①**..इस रिवायत को अल्लामा इब्ने जौज़ी, अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती और अल्लामा अब्दुल हक़ मुहद्दिषे देहलवी (الموضوعات، ج ۲، ص ۲۰-۲-الآلئ المصنوعة فى الاحاديث الموضوعية، ج ۲، ص ۹۲-۹۳-ماثبت بالسنة مترجم، ص ۲۲) “...مأثبت بالسنة مترجم، ص ۲۲” ने मौज़ूअ क़रार दिया है। यह भी फ़रमाया है कि “इस के रावी षक्का हैं जिस से साफ़ ज़ाहिर होता है कि बा'द वालों ने इस को वज़अ कर के इन सनदों के साथ तरतीब दे दी।” लिहाज़ा इसे हदीष कह कर बयान न किया जाए। नोट : इस रिवायत में बयान कर्दा बा'ज बातें दीगर अह्दादीष से षाबित हैं। ( इल्मिय्या )

पस तुम इस दिन का रोज़ा रखो कि ﴿2﴾.....इसी दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की तौबा क़बूल फ़रमा कर उन्हें सफ़िय्युल्लाह के मक़ाम पर फ़ाइज़ फ़रमाया ﴿3﴾.....इसी दिन हज़रते सय्यिदुना इदरीस عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام को आ'ला मक़ाम पर फ़ाइज़ फ़रमाया ﴿4﴾.....इसी दिन हज़रते सय्यिदुना नूह नजिय्युल्लाह عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام को कश्ती में तूफ़ान से निकाला ﴿5﴾.....इसी दिन हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام को आग से नजात मिली ﴿6﴾.....इसी दिन हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام पर तौरात नाज़िल फ़रमाई ﴿7﴾.....इसी दिन हज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام को कैद से रिहाई मिली ﴿8﴾.....इसी दिन हज़रते सय्यिदुना या'कूब عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की बीनाई का जौ'फ़ दूर हुवा ﴿9﴾.....इसी दिन हज़रते सय्यिदुना अय्यूब عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की तकलीफ़ रफ़अ की गई ﴿10﴾.....इसी दिन हज़रते सय्यिदुना यूनस عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام मछली के पेट से निकाले गए ﴿11﴾.....इसी दिन दरया ने फट कर बनी इसराईल को रास्ता दिया ﴿12﴾.....इसी दिन हज़रते सय्यिदुना दावूद عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की लगज़िश मुआफ़ हुई ﴿13﴾.....इसी दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام को मुल्के अज़ीम अता फ़रमाया और ﴿14﴾.....येही वोह दिन है जिस दिन नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को आप के सबब आप के अगलों पिछलों के गुनाह मुआफ़ करने का मुज़दए जां फ़िज़ा सुनाया गया ﴿15﴾.....येही वोह पहला दिन है जिस में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने दुन्या को पैदा किया ﴿16﴾.....इसी दिन आस्मान से पहली बारिश बरसी और ﴿17﴾.....ज़मीन पर सब से पहली रहमत भी इसी दिन उतरी ﴿18﴾.....जिस ने यौमे आशूरा का रोज़ा रखा गोया उस ने सारा ज़माना रोज़ा रखा कि येह अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام का रोज़ा है ﴿19﴾.....जिस ने शबे आशूरा को शब बेदारी की गोया उस ने सातों आस्मान वालों के बराबर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत की ﴿20﴾.....जिस ने इस रात चार रक्अत इस तरह अदा कीं, कि हर रक्अत में एक मर्तबा सूरए फ़ातिहा और इक्यावन<sup>(51)</sup> बार सूरए इख़्लास पढ़ी तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के पचास साल के गुनाह मुआफ़ फ़रमा देगा ﴿21﴾.....जिस ने आशूरा के दिन किसी को पानी पिलाया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बड़ी प्यास के दिन (या'नी बरोज़े क़ियामत) इसे ऐसा जाम पिलाएगा कि उस के बा'द वोह कभी प्यासा न होगा और वोह ऐसा हो जाएगा गोया उस ने लम्हा भर भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी नहीं की ﴿22﴾.....जिस ने इस दिन कुछ सदक़ा किया गोया उस ने किसी साइल को कभी ख़ाली नहीं लौटाया ﴿23﴾.....जिस ने आशूरा के दिन गुस्ल किया तो वोह मरज़े मौत के सिवा किसी मरज़ में मुब्तला न होगा ﴿24﴾.....जिस ने इस दिन किसी यतीम के सर पर हाथ रखा या उस से हुस्ने सुलूक किया गोया वोह तमाम अवलादे आदम के यतीमों के साथ हुस्ने सुलूक से पेश आया ﴿25﴾.....जिस ने इस दिन किसी मरीज़ की इयादत की गोया उस ने बनी आदम के तमाम मरीज़ों की इयादत की ﴿26﴾.....इसी दिन अर्श ﴿27﴾.....लौह और ﴿28﴾.....क़लम पैदा किये गए ﴿29﴾.....इसी दिन



**अब्बाह** .....इसी दिन हज़रते सय्यिदुना जिब्राईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام को पैदा फ़रमाया ﴿30﴾.....इसी दिन हज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام को आस्मानों की तरफ़ उठाया गया और ﴿31﴾.....इसी दिन क़ियामत का़िम होगी ।”

(الموضوعات لابن الجوزي، كتاب الصيام، باب في ذكر عاشوراء، ج ٢، ص ٢٠٠-اللع المصنوعة في الاحاديث الموضوعه،

كتاب الصيام، ج ٢، ص ٩٢-٩٣-حاشية اعانة الطالبين، باب الصوم، فصل في صوم التطوع، ج ٢، ص ٤٤٤-٤٤٥)

**अब्बाह** कुरआने मुक़द्दस में इरशाद फ़रमाता है :

﴿٣﴾ مَوْعِدُكُمْ يَوْمَ الزَّيْنَةِ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम्हारा वा'दा मेले का दिन है ।** (1)

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا इस आयते मुबारका की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : “يَوْمَ الزَّيْنَةِ” से मुराद दसवीं मुहर्रम का दिन है ।”

वोह बन्दा मुबारक बाद का मुस्तहिक् है जो इस मुबारक दिन में अमले सालेह करे और नेकी के काम कर के आख़िरत के लिये नफ़्अ मन्द तिजारत करे, अपने गुनाहों और ख़ताओं से तौबा करे, नेक बन कर **अब्बाह** की तरफ़ मुतवज्जेह हो जाए और दूसरों से नसीहत हासिल करे, नासेह (या'नी नसीहत करने वाले) की बात क़बूल करे, तकब्बुर और दा'वे छोड़ दे और तक्वा के रास्ते पर चले ।

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है, हुज़ूर सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, जनाबे रहमतुल्लिल आलमीन صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने फ़ज़ीलत निशान है : “माहे रमज़ान के बा'द अफ़ज़ल रोज़े **अब्बाह** के महीने मुहर्रम के रोज़े हैं ।”

(صحيح مسلم، كتاب الصيام، باب فضل صوم المحرم، الحديث ١١٦٣، ص ٨٦٦)

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से यौमे आशूरा के रोज़े के मुतअल्लिक् पूछा गया तो आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इरशाद फ़रमाया : “मैं नहीं जानता कि **अब्बाह** के प्यारे रसूल صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के रोज़े के इलावा किसी दिन का और बाकी महीनों पर फ़ज़ीलत के तौर पर यौमे आशूरा के इलावा किसी महीने का रोज़ा रखा हो ।”

(صحيح مسلم، كتاب الصيام، باب صوم يوم عاشوراء، الحديث ١١٣٢، ص ٨٥٩)

हज़रते सय्यिदुना हमीद बिन अब्दुर्रहमान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ रिवायत करते हैं, मैं ने हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुअविyyा बिन अबू सुफ़य़ान رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا को जिस साल इन्होंने ने हज़ किया था, बर सरे मिम्बर येह फ़रमाते सुना : ऐ अहले मदीना ! तुम्हारे उ-लमाए किराम कहां हैं ? मैं ने सरकारे

①.....मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي रिवायत करते हैं : “इस मेले से फ़िरऔनियों का मेला मुराद है जो उन की ईद थी, और इस में वोह जीनतें कर के जम्अ होते थे । हज़रते इब्ने अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि “येह दिन आशूरा या'नी दसवीं मुहर्रम का था ।”

वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफीए रोजे शुमार, दो आलम के मालिको मुख्तार, बिइजने परवर दगार **وَاللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ الْاِلهِ وَ سَلَّمَ** को येह इरशाद फरमाते सुना : “येह आशूरा का दिन है, **اَللّٰهُ** ने तुम पर इस का रोज़ा फर्ज न किया जब कि मैं खुद रोजे से हूं, अब तुम में से जिस का जी चाहे वोह रोज़ा रख ले और जो न चाहे न रखे ।”

(صحيح البخارى، كتاب الصوم، باب صوم يوم عاشوراء، الحديث ۲۰۰۳، ص ۱۵۶)

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا** और दीगर कई रावियों से मरवी है, ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सखावत, पैकरे अज़मतो शराफ़त, महबूबे रब्बुल इज़ज़त, मोहसिने इन्सानिय्यत **وَاللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ الْاِلهِ وَ سَلَّمَ** ने इरशाद फरमाया : “अगर मैं आयन्दा साल तक हयात रहा तो ज़रूर नवीं और दसवीं मुहर्रम का रोज़ा रखूंगा ।” लेकिन आप **وَاللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ الْاِلهِ وَ سَلَّمَ** इस से क़ब्ल ही विसाल फरमा गए ।

(صحيح مسلم، كتاب الصيام، باب ای يوم صام فی عاشوراء، الحديث ۱۱۳۴، ص ۸۶۰، شعب الايمان للبيهقي، باب فی الصيام، صوم التاسع مع العاشر، الحديث ۳۷۸۷، ج ۳، ص ۳۶۴)

यहां येह भी हो सकता है कि आप **وَاللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ الْاِلهِ وَ سَلَّمَ** ने अपने दीगर रोज़ों को दस मुहर्रम के रोजे के साथ मिलाने का इरादा फरमाया हो और येह भी हो सकता है कि आप **وَاللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ الْاِلهِ وَ سَلَّمَ** की मुराद दसवीं के साथ नववीं मुहर्रम का रोज़ा रखना हो । लिहाज़ा हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई **رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِي** और दीगर अइम्माए किराम **رَحْمَتُهُمُ اللّٰهُ السَّلَام** ने एहतिyयातन दोनों (या'नी नववीं और दसवीं मुहर्रम) का रोज़ा मुस्तहब करार दिया है । चुनान्वे, हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا** से मरवी है, नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर **وَاللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ الْاِلهِ وَ سَلَّمَ** का फरमाने अज़मत निशान है : “नववीं और दसवीं (मुहर्रम) का रोज़ा रखो और यहूदियों की मुशाबहत इख़्तियार न करो ।”

(جامع الترمذی، ابواب الصوم، باب ماجاء فی عاشوراء ای يوم هو، الحديث ۷۵۵، ص ۱۷۲۱)

उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا** से मरवी है, **اَللّٰهُ** का फरमाने शफ़ाअत निशान है : “जिस ने यौमे आशूरा तक मुहर्रम के दस रोजे रखे वोह फ़िरदौसे आ'ला का वारिष होगा ।”

(نزہة المجالس، كتاب الصوم، باب فضل صيام عاشوراء ..... الخ، ج ۱، ص ۲۳۱)

**اَللّٰهُ** ने अपने इस फरमाने आलीशान में इन दस दिनों की तरफ़ इशारा फरमाया :

﴿۴﴾ **وَوَاعَدْنَا مُوسَى ثَلَاثِينَ لَيْلَةً وَأَتَمَمْنَاهَا**

**بِعَشْرِ** (پ ۹، الاعراف: ۱۴۲)

**تर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और हम ने मूसा से तीस रात का वा'दा फरमाया और इन में दस और बढ़ा कर पूरी कीं ।

मुहर्रमुल हराम के पहले अशरे के बहुत ज़ियादा फ़ज़ाइल व बरकात हैं । इन्ही में से एक येह भी है जो हज़रते सय्यिदुना मुआविय्या बिन कुर्रा **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ** से मरवी है कि “हज़रते सय्यिदुना नूह **عَزَّ وَجَلَّ** और आप **عَلَيْهِ الصَّلَوةُ وَالسَّلَام** के साथ कश्ती में सुवार लोगों ने **اَللّٰهُ**

का शुक्र बजा लाते हुए यौमे अशूरा का रोज़ा रखा क्योंकि जिस दिन **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ ने इन्हें तूफ़ान से नजात अता फ़रमाई और इन की कश्ती जूदी पहाड़ पर ठहरी तो वोह भी अशूरा का दिन था ।”

(المعجم الكبير، الحديث ٥٥٣٨، ج ٦، ص ٦٩، بتغير)

हज़रते सय्यिदुना या'कूब **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ के हवाले से **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿٥﴾ **سَوْفَ اَسْتَغْفِرُ لَكُمْ رَبِّيْ ط (ب ١٣، يوسف: ٩٨)** **तर्जमए कन्जुल इमान :** जल्द मैं तुम्हारी बख़्शिाश अपने रब्ब से चाहूंगा ।

इस आयते मुबारका के तहत हज़रते सय्यिदुना ताऊस **رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِ** फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना या'कूब **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ ने इस दुआए मग़फ़िरत करने को शबे जुमुआ तक मुअख़ब़र फ़रमाया जो कि शबे अशूरा भी थी ।

(تفسير البغوى، سورة يوسف، تحت الآية ٩٨، ج ٢، ص ٣٧٧)

हज़रते सय्यिदुना इब्ने शहहाब **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَهَّاب** इरशाद फ़रमाते हैं : “हमें सहाबए किराम व ताबेईने उज़्ज़ाम **رَضُوْاْ اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْنَ** से येह बात पहुंची है कि हज़रते सय्यिदुना अली बिन अबी तालिब, हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्शरी, हज़रते सय्यिदुना अली बिन हुसैन और हज़रते सय्यिदुना सईद बिन जुबैर **رَضُوْاْ اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْنَ** यौमे अशूरा का रोज़ा रखा करते थे ।”

(المسند للإمام احمد بن حنبل، مسند على بن ابي طالب، الحديث ١٠٦٩، ج ١، ص ٢٧٣، مختصراً)

## यौमे अशूरा के मुस्तहब्बात :

यौमे अशूरा के मुस्तहब्बात पहले बयान किये जा चुके हैं । अब कुछ ऐसे उमूर ज़िक्र किये जाते हैं जो पहले बयान नहीं हुए । इस दिन गुस्ल करना मुस्तहब है । मन्कूल है : “**اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ मुह्र्रम की दसवीं रात आबे ज़मज़म शरीफ़ को दुन्या के तमाम पानियों में मिला देता है लिहाज़ा जो शख़्स इस दिन गुस्ल करे तमाम साल बीमारी से महफूज़ रहेगा ।”

इस दिन येह उमूर भी मुस्तहब हैं : सदका करना, यतीम के सर पर शफ़क़त का हाथ रखना, रोज़ादार को इफ़्तार कराना, पानी पिलाना, रिज़ाए इलाही **عَزَّوَجَلَّ** के लिये अपने मुसलमान भाई से मुलाक़ात करना, मरीज़ों की इयादत करना, रोज़ा रखना, घर वालों पर खर्च में कुशादगी करना, वालिदेन के साथ इज़्ज़त व इकराम से पेश आना, जनाज़ों में शिक़त करना, रास्ते से तकलीफ़ देह चीज़ हटाना, गुस्सा पी जाना, ज़ालिम को मुआफ़ कर देना नफ़ल पढ़ना और ज़िक्रे इलाही **عَزَّوَجَلَّ** की कषरत करना ।

नीज़ येह भी मुस्तहब है जो कि अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा **كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم** से मरवी है : “जिस ने अशूरा के दिन हज़ार मरतबा सूरए इख़्लास पढ़ी खुदाए रहमान **عَزَّوَجَلَّ** उस पर नज़रे रहमत फ़रमाएगा और जिस पर रहमान **عَزَّوَجَلَّ** नज़रे रहमत फ़रमाएगा तो वोह उसे कभी अज़ाब न देगा ।”

(نزهة المجالس، كتاب الصوم، باب فضل صيام عاشوراء.....الخ، ج ١، ص ٢٣١، مختصراً)



हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मसऊद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है : “हुस्ने अख़्लाक के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अकबर وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : “**अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ ने हज़रते सय्यिदुना मूसा बिन इमरान عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام पर तौरात में नाज़िल फ़रमाया कि जिस ने यौमे आशूरा का रोज़ा रखा गोया उस ने सारा साल रोज़ा रखा ।”

(نزهة المجالس، كتاب الصوم، باب فضل صيام عاشوراء..... الخ، ج ١، ص ٢٣٣)

हज़रते सय्यिदुना सलमा बिन अकवब رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है : “शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइषे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक शख्स को हुक्म फ़रमाया कि लोगों में ए'लान कर दे : “जिस ने कुछ खा लिया है वोह बकिय्या दिन कुछ न खाए और जिस ने कुछ नहीं खाया वोह रोज़ा रख ले क्यूंकि आज आशूरा का दिन है ।” (صحيح البخاری، كتاب الصوم، باب صوم يوم عاشوراء، الحديث ٢٠٠٧، ص ١٥٦)

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से मरवी है : “जब सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइषे नुज़ूले सकीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मदीनए मुनव्वरा तशरीफ़ लाए तो यहूदियों को आशूरा के दिन का रोज़ा रखते हुए देखा । आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन से दरयाफ़्त फ़रमाया : “येह कैसा रोज़ा है ?” तो उन्होंने जवाब दिया : “येह बरकत वाला दिन है, इसी दिन **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ ने हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام और बनी इसराईल को दुश्मन से नजात अता फ़रमाई तो आप عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने **अब्बाह** عَزَّ وَजَلَّ का शुक्र अदा करते हुए रोज़ा रखा और इसी वजह से हम भी रोज़ा रखते हैं ।” इस पर हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़रहीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “हम तुम से ज़ियादा मूसा (عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام) से तअल्लुक़ के हक़दार हैं ।” चुनान्चे, आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने खुद भी रोज़ा रखा और दूसरों को भी रोज़ा रखने का हुक्म फ़रमाया ।”

(صحيح البخاری، كتاب الصوم، باب صوم يوم عاشوراء، الحديث ٢٠٠٤، ص ١٥٦)

## आशूरा सदके का दिन है :

आशूरा के दिन सदका व ख़ैरात, नेकी, ईषार, रिश्तेदारों पर एहसान, सिलए रहूमी, रहूमत और फुक़रा व मसाकीन पर नर्मी व शफ़क़त करना दुगने अज़्र का बाइष है । चुनान्चे,

## आशूरा में सदके की बरक़त से यहूदी मुसलमान हो गया :

मन्कूल है, एक इयाल दार फ़कीर ने अपने अहलो इयाल के साथ मिल कर आशूरा के दिन रोज़ा रखा । उन के पास खाने को कुछ न था लिहाज़ा वोह ख़ूराक की तलाश में घर से निकला ताकि इफ़्तारी का एहतियाम कर सके लेकिन कुछ न मिला । फिर वोह सुनारों के बाज़ार में दाख़िल हुवा और एक आदमी को देखा कि अपनी दुकान में क़ीमती चमड़े के टुकड़े बिछ कर उन पर सोने चांदी के ढेर उलट रहा है । वोह उस के पास गया और सलाम कर के कहा : “जनाब ! मैं हाज़त मन्द हूं, मुमकिन हो तो मुझे एक दिरहम क़र्ज़ दे दो ताकि मैं अपने घर वालों के लिये इफ़्तारी का सामान ख़रीद सकूं, मैं आज के बा बरक़त दिन आप के लिये दुआ करूंगा ।” लेकिन सुनार ने अपना मुंह फेर

लिया और फ़कीर को कुछ न दिया, फ़कीर का दिल टूट गया। वोह वापस आ रहा था और उस के आंसू रुख़सार पर बह रहे थे कि सुनार के एक यहूदी पड़ोसी ने उसे देख लिया और दुकान से निकल कर उस फ़कीर के पास आया और कहने लगा : “ मैं तुझे देख रहा था कि तू मेरे फुलां पड़ोसी सुनार से कुछ बात कर रहा था ?” फ़कीर ने बताया : “मैं ने उस से एक दरिहम मांगा था ताकि अपने घर वालों की इफ़्तारी का बन्दोबस्त कर सकूं लेकिन उस ने मुझे ख़ाली लौटा दिया, मैं ने उसे येह भी कहा था कि मैं आज के बा बरकत दिन तुम्हारे हक़ में दुआ करूंगा।” यहूदी ने पूछा : “आज कौन सा दिन है ?” फ़कीर ने उसे बताया : “आज आशूरा का दिन है और फिर इस के बा’ज फ़ज़ा़इल बयान किये। तो यहूदी ने उस फ़कीर को दस दरिहम दिये और कहा : “इस दिन की अज़मत की खातिर येह क़बूल कर लो और अपने घर वालों पर खर्च करो।” फ़कीर वहां से रवाना हुवा तो उस का दिल खुशी से फूला हुवा था। उस ने घर वालों पर अच्छी तरह खर्च किया। जब रात हुई तो उस मुसलमान सुनार ने ख़्वाब देखा कि क़ियामत का़इम हो चुकी है। प्यास और मसाइब शिद्दत इख़्तियार कर चुके हैं। फिर उस ने अचानक एक सफ़ेद मोतियों का महल देखा जिस के दरवाज़े याकूत के थे। उस ने सर उठा कर कहा : “ऐ इस महल के मालिक ! मुझे थोड़ा सा पानी पिला दे।” तो उसे एक आवाज़ सुनाई दी : “कल शाम तक येह महल तेरा था लेकिन जब तू ने फ़कीर का दिल तोड़ा और उसे कुछ न दिया तो इस महल से तेरा नाम मिटा कर तेरे उस यहूदी पड़ोसी का नाम लिख दिया गया है जिस ने उस फ़कीर की हाज़त पूरी की और उस को दस दरिहम दिये।” चुनान्चे, बेदार होने के बा’द सुनार घबराते हुए और खुद को मलामत करते हुए अपने यहूदी पड़ोसी के पास आया और कहने लगा : “तुम मेरे पड़ोसी हो, मेरा तुम पर हक़ है और मुझे तुम से एक ज़रूरी काम है।” यहूदी ने पूछा : “बताओ ! क्या हाज़त है ?” उस ने कहा : “कल शाम तुम ने जो दस दरिहम फ़कीर को दिये थे इन का षवाब सो दरिहम के बदले मुझे दे दो।” तो उस ने जवाब दिया : “**अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** की क़सम ! मैं एक लाख दीनार के बदले भी न दूंगा बल्कि अगर आप ने उस महल के दरवाज़े में भी दाख़िल होने की ख़्वाहिश की जो आप ने कल रात ख़्वाब में देखा था तो मैं उस की भी इजाज़त न दूंगा।” मुसलमान सुनार ने पूछा : “आप को इस राज़ की ख़बर कैसे हुई ?” तो यहूदी ने जवाब दिया : “इस की ख़बर मुझे उस ज़ात ने दी है जो किसी भी चीज़ को कहती है : “हो जा तो वोह हो जाती है।” और मैं गवाही देता हूं कि **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के सिवा कोई मा’बूद नहीं, वोह यक्ता है उस का कोई शरीक नहीं और येह भी गवाही देता हूं कि हज़रते सय्यिदुना मुहम्मदे मुस्तफ़ा **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** उस के ख़ास बन्दे और रसूल हैं।”

(حاشية اعانة الطالبين، باب الصوم، فصل في صوم التطوع، ج ٢، ص ٤٤٥)

**ऐ मेरे इस्लामी भाइयो !** येह तो यहूदी था जिस ने यौमे आशूरा के मुतअल्लिक हुस्ने ज़न रखा हालांकि वोह आशूरा की फ़ज़ीलत नहीं जानता था तो **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ने उसे बे शुमार अज़ा किया और इस्लाम की दौलत से नवाज़ा। तो वोह मुसलमान कितना बद बख़्त है जो इस दिन की

**पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इलिमिया (दा' वते इस्लामी)**



का कासिद आया तो वोह कूच कर गए और लम्हा भर भी न ठहर सके। कितने ही सुतूनों जैसे लोग थे जिन्हें शहवात व लज़्ज़ात के साथ मज़बूत किया गया था मगर वोह भी गिर गए। कितने ही मौजूद थे जो इस दिन के आने से पहले पहले फ़ना हो गए।

**ऐ मेरे इस्लामी भाई !** अज़न करीब तेरा भी येही हाल होगा लेकिन दुन्या का धोका इसे तुझ से छुपाता है और तेरा भी येही अन्जाम होगा। लिहाज़ा ग़ौरो फ़िक़र कर कि तू किस डगर पर चल रहा है। गोया मैं देख रहा हूँ कि तेरी तन्दुरुस्ती बीमारी में बदल गई है, अफ़ियत ख़त्म हो चुकी है, क़लम ने तेरी तक्दीर में मुसीबतें लिख दी हैं, **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की क़ज़ा व क़द्र के मुताबिक़ तेरी उम्र ख़त्म चुकी है, तेरी मौत का वक़्त करीब आ चुका है और रूह हंसली की हड्डी तक पहुंच चुकी है और तू ने 'मतों की लज़्ज़त भूल चुका है, दिल दोस्तों की जुदाई पर हसरत का शिकार है और छुपे हुए आंसू बह निकले हैं। तेरी येह हालत महज़ एक लम्हा होगी फिर रूह परवाज़ कर जाएगी और दुख डेरें डाल लेगा और तू इन्तिहाई वहशत नाक तारीक़ घर में क़ियाम करेगा। अफ़सोस है तुझ पर ! अगर तुझे तेरे परवर दगार **عَزَّوَجَلَّ** ने गुनाहों की सज़ा दी और तुझ से अपनी नाफ़रमानियों का इन्तिक़ाम लिया। अफ़सोस है तुझ पर ! अगर पुल सिरात से तेरे क़दम फिसल गए। हाए ! उस पर हसरत व अफ़सोस ! जिस की हालत ऐसी होगी, वोह कब तक ख़्वाहिशात की इस ग़फ़लत में मुब्तला रहेगा ?

**सेब से जन्नती पोशाक बर आमद हुवा :**

मन्कूल है कि मिस्र में खजूरों का एक ताजिर रहता था जिस का नाम अतिय्या बिन ख़लफ़ था। वोह बहुत मालदार था फिर अचानक फ़कीर हो गया कि उस के पास तन ढांपने के लिये एक कपड़े के सिवा कुछ भी बाकी न बचा। जब आशूरा का दिन आया तो उस ने जामेअ मस्जिद अम्र बिन आस में नमाज़े फ़ज़्र अदा की। आम तौर पर इस मस्जिद में आशूरा के दिन ही औरतें दुआ के लिये आती थीं। वोह ताजिर भी बाकी लोगों के साथ खड़ा हो कर दुआ मांगने लगा। वोह औरतों से हट कर एक तरफ़ खड़ा था कि एक औरत अपने साथ यतीम बच्चों को ले कर उस के पास आई और अर्ज़ की : “जनाब ! मैं **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** के नाम पर सुवाल करती हूँ कि आप मेरी मुश्किल आसान कर दीजिये, मुझे कुछ इनायत फ़रमाइये जिस से मैं इन बच्चों की ग़िज़ा हासिल कर सकूँ क्यूँकि इन का बाप मर चुका है और उस ने इन के लिये कुछ नहीं छोड़ा। मैं एक इज़्ज़त दार ख़ातून हूँ। मेरा कोई वाकिफ़े कार भी नहीं कि उस के पास जा सकूँ। आज महज़ इस ज़रूरत व हाज़त की वजह से मुझे ज़लील हो कर घर से निकलना पड़ा और न ही मुझे मांगने की आदत है।” ताजिर ने अपने दिल में सोचा कि मैं तो किसी चीज़ का मालिक नहीं और इस लिबास के सिवा मेरे पास कोई चीज़ भी नहीं। अब अगर मैं येह लिबास इस को देता हूँ तो खुद बरहना हो जाऊंगा और अगर इस को ख़ाली लौटाता हूँ तो **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** के प्यारे हबीब, हबीबे लबीब **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** की बारगाह में क्या उज़्र पेश करूंगा। बहर हाल उस ने औरत से कहा : “मेरे साथ चलो, मैं तुम्हें कुछ दूंगा।” वोह औरत उस के साथ उस के घर गई। ताजिर ने उस को दरवाज़े पर खड़ा कर दिया और खुद घर में

दाखिल हो कर अपने कपड़े उतार कर एक फटा पुराना कपड़ा लपेट लिया और फिर दरवाजे की दराड़ में से वोह लिबास उस औरत को दे दिया। औरत ने उस के हक में दुआ की : “**اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ आप को जन्नती पोशाक पहनाए और आप को बकिय्या उम्र किसी का मोहताज न करे।” ताजिर औरत की दुआ सुन कर बहुत खुश हुवा। उस ने दरवाजा बन्द किया और फिर घर में दाखिल हो कर रात गए तक जिक्रे इलाही **عَزَّوَجَلَّ** में मशगूल हो गया। जब रात को सोया तो ख़्वाब में एक ऐसी हसीनो जमील हूर देखी जिस की मिष्ल देखने वालों ने न देखी होगी। उस के हाथ में एक सेब था जिस की खुशबू आस्मानो ज़मीन के दरमियान फैली हुई थी। हूर ने वोह सेब ताजिर को दिया तो उस में से एक जन्नती हुल्ला निकला जिस की कीमत सारी दुन्या भी न बन सके। उस ने वोह लिबास ताजिर को पहनाया और खुद उस के क़रीब बैठ गई। ताजिर ने पूछा : “तुम कौन हो ?” बोली : “मेरा नाम आशूरा है और मैं तेरी जन्नती बीवी हूं।” ताजिर ने पूछा : “मुझे येह मक़ाम व मर्तबा कैसे मिला ?” तो उस ने जवाब दिया : “उस बेवा और यतीम बच्चों की दुआ की वजह से जिन पर तू ने कल एहसान किया था।” जब ताजिर बेदार हुवा तो वोह इतना खुश था जिसे **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई नहीं जानता। उस का सारा घर जन्नती लिबास की खुशबू से मुअत्तर था। उस ने वुजू कर के **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र बजा लाते हुए दो रकअत नमाज़ अदा की। फिर आस्मान की जानिब मुंह उठा कर अर्ज की : “ऐ मेरे परवर दगार **عَزَّوَجَلَّ** अगर मेरा ख़्वाब सच्चा है और जन्नत में मेरी बीवी आशूरा होगी तो मुझे अपनी बारगाह में वापस बुला ले।” अभी उस की दुआ पूरी भी न हुई थी कि **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ ने उस की रूह को जन्नत में भेज दिया।

(نزهة المجالس، كتاب الصوم، باب فضل صيام عاشوراء.....الخ، ج ۱، ص ۲۳۳)

**ऐ मेरे इस्लामी भाइयो !** येह चन्द एक बिशारतें हैं जो बन्दए मोमिन को मौत के वक़्त मिलती हैं तो अब इस की तय्यारी करने वाले कहां हैं ? वोह लोग कहां हैं जिन्होंने ने दुन्या में भलाई का बीज बोया और आखिरत में ता'रीफ़ की फ़स्ल काटेंगे ? सद्के से माल में कमी नहीं आती बल्कि ज़ियादा होता है। वोह लोग कहां गए जिन्होंने ने ख़ज़ाने जम्अ किये और शहरों को आबाद किया ? और वोह कहां हैं जिन्होंने ने लश्क़रों की क़ियादत की और लोगों को अपना गुलाम बनाया ? वोह कहां हैं जिन्होंने ने पुख़्ता महल्लात बनाए ? इन के आबा व अजदाद कहां हैं ?

**سُبْحَنَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ !** वोह लोग कितने अज़ीम हैं जिन्होंने ने अपनी ज़िन्दगी में अच्छे आ'माल में जल्दी की और हया व वक़ार को अपना ओढ़ना बिछौना बना लिया और उस दिन के लिये अच्छे आ'माल किये जिस के बारे में है :

(۲۵) ﴿كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ رَهِيْنَةٌ ۚ﴾ (پ ۲۹، المائدہ: ۳۸)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** हर जान अपनी करनी (आ'माल) में गिरवी है।

**हज़रते सय्यिदुना नूह عَلَيْهِ السَّلَام का मो'जिज़ा :**

इस दिन की क़द्रो मन्ज़िल मा'रुफ़ है कि इसी दिन **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ ने हज़रते सय्यिदुना नूह عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام को तूफ़ान से नजात अता फ़रमाई। जब आप عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام अपने रुफ़का के

साथ कश्ती से बाहर तशरीफ़ लाए तो आप عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के रुफ़का ने भूक की शिकायत की क्योंकि इन का तमाम खाने का सामान ख़त्म हो चुका था। आप عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने उन्हें बचा हुआ खाना लाने का हुक्म फ़रमाया। कोई मुठ्ठी भर गन्दुम ले आया तो कोई मुठ्ठी भर मसूर की दाल, कोई लोबिया की मुठ्ठी लाया तो कोई भुने हुए चने ले आया यहां तक कि मुख़लिफ़ अनाजों की सात मुठ्ठियां जम्अ हो गईं। और वोह आशूरा का दिन था। हज़रते सय्यिदुना नूह عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने उस अनाज पर बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़ी और इसे पका कर सब ने खाया और आप عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالसَّلَام की बरक़त से सब का पेट भर गया। और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आलीशान है :

﴿٤﴾ قِيلَ يٰنُوحُ اهْبِطْ بِسَلَامٍ مِّنَّا وَبَرَكَاتٍ

عَلَيْكَ وَعَلَىٰ اٰمَمٍ مِّمَّنْ مَعَكَ ط (प १२, हुद: ४८)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** फ़रमाया गया ऐ नूह ! कश्ती से उतर हमारी तरफ़ से सलाम और बरक़तों के साथ जो तुझ पर हैं और तेरे साथ के कुछ गुरौहों पर।

और येह वोह पहला खाना था जो तूफ़ान के बा'द रूए ज़मीन पर पकाया गया। फिर लोगों ने इसे यौमे आशूरा की सुन्नत बना लिया। पस जो इस दिन खाना पकाए और फुकरा व मसाकीन को खिलाए तो उस के लिये अज़्रे अज़ीम है।

(तفسير روح البیان، سورة हुद، تحت الآية ४८، ج ४، ص १४२)

मन्कूल है, जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام से वा'दा फ़रमाया कि वोह उस से मुख़ातब होगा और कलाम फ़रमाएगा नीज़ उसे तख़्तियों की सूरात में तौरात अता फ़रमाएगा तो आप عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالसَّلَام को तीस रोज़े रखने का हुक्म दिया। आप عَلَيْهِ الصَّلَام ने रोज़े रखे और वोह जुल हिज्जतिल ह़राम का महीना था। आप عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالसَّلَام ने मे'दा ख़ाली होने की वजह से पैदा होने वाली मुंह की बू को ना गवार जाना और ख़रूब (या'नी कीरब, येह एक दरख़्त का नाम है) की लकड़ी की मिस्वाक फ़रमा ली। एक कौल के मुताबिक़ वो जैतून की थी जब कि एक कौल येह है कि किसी दूसरी लकड़ी की थी। आप عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالसَّلَام को फ़रमाया गया : “ऐ हमारे हुक्म से रोज़े रखने वाले ! तू ने अपनी राए से कैसे इफ़्तार कर लिया ? क्या तू नहीं जानता कि रोज़े़रदार के मुंह की बू **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक कस्तूरी की खुशबू से भी ज़ियादा पाक है ?” फिर आप عَلَيْهِ الصَّلَام के इस फ़े'ल पर बतौर कफ़फ़ारा मज़ीद दस रोज़े रखने का हुक्म दिया।

चुनान्चे, कुरआने पाक में इरशादे रब्बानी है :

﴿٨﴾ وَوَعَدْنَا مُوسَىٰ ثَلَاثِينَ لَيْلَةً وَأَتَمَمْنَهَا

بِعَشْرِ (پ ९, الاعراف: १४२)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और हम ने मूसा से तीस रात का वा'दा फ़रमाया और उन में दस और बढ़ा कर पूरी कीं।

एक कौल के मुताबिक़ “**بِعَشْرِ**” से मुराद मुहर्रम का पहला अशरह था। दूसरा कौल येह है कि येह जुल हिज्जतिल ह़राम का पहला अशरह था। पहले कौल के मुताबिक़ आख़िरी दिन यौमे आशूरा का था और येही वोह दिन है जिस में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلَيْهِ الصَّلَام से कलाम फ़रमाया और इन पर अपनी किताब तौरात नाज़िल फ़रमाई।



येह ऐसा अज़ीम दिन है कि इस में नेकियों का अज़्र दुगना कर दिया जाता है और हर गुनाह मुआफ़ कर दिया जाता है। इसी दिन **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने हज़रते सय्यिदुना आदम सफ़ियुल्लाह की तौबा क़बूल फ़रमाई। इसी रोज़ हज़रते सय्यिदुना नूह नजियुल्लाह की तौबा क़बूल फ़रमाई। इसी दिन हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह की तौबा क़बूल फ़रमाई। इसी दिन हज़रते सय्यिदुना अय्यूब को मुसीबत से छुटकारा अता फ़रमाया। इसी रोज़ हज़रते सय्यिदुना या'कूब के तबील दुख दर्द के बा'द हज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ को उन से मिलाया। इसी दिन हज़रते सय्यिदुना यूनस को मछली के पेट से बाहर निकाला। इसी दिन बनी इस्राईल के लिये दरया में रास्ते बनाए गए ताकि वोह इसे पार कर के फ़िरा'उन से नजात पाए। इसी दिन हज़रते सय्यिदुना दावूद की लगज़िश मुआफ़ हुई। इसी दिन हज़रते सय्यिदुना सुलैमान को सल्तनते अज़ीम अता की गई। इसी दिन **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह को हम कलामी का शरफ़ बख़्शा और हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह को आस्मान पर उठा लिया। इसी दिन हज़रते सय्यिदुना जिब्राईले अमीन को रहमते बारी तआला ले कर नाज़िल हुए। और येही वोह अज़ीम दिन है जिस में हुज़ूर सय्यिदुल मुरसलीन, जनाबे रहमतुल्लिल आलमीन صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदके आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अगलों पिछलों के गुनाह मुआफ़ फ़रमाने की खुश ख़बरी सुनाई गई।

इस दिन की अज़मत व शराफ़त के लिये तुम्हारे लिये इतना ही काफ़ी है कि जिस ने इस दिन का रोज़ा रखा गोया उस ने सारी ज़िन्दगी रोज़ा रखा और जिस ने अशूरा की रात क़ियाम किया तो वोह बड़ा अज़्र और बड़ी अता पा कर कामयाब हुवा और जिस ने इस दिन किसी बे लिबास को कपड़े पहनाए या भलाई का कोई काम किया **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ उस को दर्दनाक अज़ाब से महफूज़ फ़रमा देगा। जिस ने इस दिन किसी यतीम की हाज़त पूरी की या किसी भूके को खाना ख़िलाया या किसी को पानी का एक घूंट पिलाया **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ उस को जन्नत के दस्तरख़्वान पर खाना ख़िलाएगा और मोहर लगी हुई शराबे तहूर और सलसबील (या'नी जन्नती चश्मे) का पानी पिलाएगा। जिस ने इस दिन सदका किया बरोजे क़ियामत वोह अपने सदके के घने साए में होगा। जिस ने इस दिन अपने घर वालों पर खर्च में फ़राखी की उस के रिज़्क में कुशादगी कर दी जाएगी और उस की सीरतो सूरत को अच्छा कर दिया जाएगा। पस इस दिन **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ की ख़ूब पाकी बोलो और कलिमए तय्यिबा शरीफ़ की कषरत करो और **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ की बारगाह में जल्दी जल्दी तौबा कर लो और आ'माले सालेहा के ज़रीए तबील सफ़र के लिये ज़ादे राह तय्यार कर लो। इस दिन की फ़ज़ीलत पर इन्आमात व इकरामात की रिवायात इस कषरत से आई हैं कि इन के इज़हार से हर ज़बान कासिर है।

(نزهة المجالس، کتاب الصوم، باب فضل صیام عاشوراء..... الخ، ج ۱، ص ۲۳۲)

ऐ हमारे प्यारे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें इस फ़ज़ीलत वाले महीने में अपने मक़बूल बन्दों में शुमार कर और बहुत ज़ियादा अज़्रो षवाब मर्हमत फ़रमा, हमारे तमाम गुनाहे कबीरा मुआफ़ फ़रमा, हमारी पुश्तों को तमाम बोझिल गुनाहों से हलका कर के हमारी छोटी छोटी नेकियां भी अपनी आली बारगाह में क़बूल फ़रमा। बेशक तू थोड़े अमल को भी क़बूल फ़रमा लेता है। आशूरा के दिन हमारे हर अच्छे अमल पर अपनी मशियत के मुताबिक़ अज़्र अता फ़रमा और बरोजे महशर हमें उस हस्ती के झन्डे तले इकठ्ठा फ़रमा जिस पर तू ने कुरआने पाक में येह आयते मुबारका नाज़िल फ़रमाई :

(۹) ﴿حَسْبُنَا اللَّهُ وَنِعْمَ الْوَكِيلُ﴾ (پ ۴، آل عمران: ۱۷۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** हम को बस है और क्या अच्छा कारसाज़ ।

وَصَلَّى اللَّهُ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِهِ وَصَحْبِهِ أَجْمَعِينَ



### .....छे अफ़राद पर ला'नत.....

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : “छे तरह के लोगों पर मैं ला'नत करता हूं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ भी उन पर ला'नत फ़रमाता है और हर नबी की दुआ क़बूल है, छे अश्व़ास येह हैं (1) किताबुल्लाह में इज़ाफ़ा करने वाला (2) तक्दीर को झुटलाने वाला (3) मेरी उम्मत पर जुल्म के साथ तसल्लुत करने वाला कि उस शख़्स को इज़ज़त देता है जिस को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ज़लील किया और उस को ज़लील करता है जिस को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इज़ज़त अता फ़रमाई (4) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हरम (या'नी हरमे मक्का) को हलाल ठहराने वाला (5) मेरे अहले बैत की हुरमत जिस का **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हुक्म दिया है उस को पामाल करने वाला और (6) मेरी सुन्नत को छोड़ने वाला ।”

(الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان، الحديث: ۵۷۱۹، ج ۷، ص ۵۰۱)

बयान 43 :

मीलादे मुश्ताफा ﷺ

हम्दे बारी तआला :

तमाम खूबियां **अल्लाह** عز وجل के लिये हैं जिस का इन्कार नहीं किया जा सकता। वोह ऐसा “अहद” है जो अपनी सिफते सर मदियत (या’नी अज़ली व अबदी हो) में यक्ता है। वोह ऐसा “फ़र्द” है जो अपनी सिफते रबूबियत (या’नी रब होने) में यक्ता है। वोह ऐसा “शकूर” है जिस के इलावा हकीकतन किसी का शुक्र किया जाता है न किसी की हम्द। वोह ऐसा “ग़फूर” है जो सच्ची तौबा करने वालों के गुनाहों को बहुत ज़ियादा बख़्शने वाला है। वोह ऐसा बादशाह हकीकी है जिस ने सब मुमालिक और बादशाहों को फ़ना किया जब कि उस की सलतनत को कभी ज़वाल न आएगा। वोह ऐसा बुलन्द रुत्बा है जिस की तरफ़ पाकीज़ा कलिमात बुलन्द होते हैं। वोह ऐसा हाकिमे मुतलक है जिस ने तमाम अहले दुन्या की मौत का अटल फैसला फ़रमा दिया है लिहाज़ा कोई भी इस दुन्या में हमेशा न रहेगा। उस ने अपने बर गुज़ीदा रसूलों को मबरूष फ़रमाया ताकि वोह काबिले हम्द व सताइश राहे हक़ की तरफ़ लोगों की राहनुमाई फ़रमाएं और उन्हें उस हस्ती के सामने पर्दा बनाए रखा जिस के लिये बरोज़े कियामत शफ़अत और लिवाउल हम्द (या’नी हम्द के झन्डे) का वा’दा है और उस हस्ती को ख़ातिमुल अम्बिया ﷺ बना कर भेजा ताकि वोह लोगों के लिये राहे हिदायत वाज़ेह फ़रमाएं। इसी लिये **अल्लाह** عز وجل ने कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाया :

”وَأَذَقْنَا لِعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ بَيْنِي إِسْرَءِيلَ أَنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرَةِ وَمُبَشِّرًا بِرَسُولٍ يَأْتِي مِنْ بَعْدِي اسْمُهُ أَحْمَدُ فَلَمَّا جَاءَهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ قَالُوا هَذَا سِحْرٌ مُبِينٌ“ (प 28, الصف: 6)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और याद करो जब ईसा बिन मरयम ने कहा : ऐ बनी इसराईल ! मैं तुम्हारी तरफ़ **अल्लाह** का रसूल हूं अपने से पहली किताब तोरैत की तस्दीक़ करता हुवा। और उन रसूल की बिशारत सुनाता हुवा जो मेरे बा’द तशरीफ़ लाएंगे, उन का नाम अहमद है, फिर जब अहमद उन के पास रोशन निशानियां ले कर तशरीफ़ लाए बोले येह खुला जादू है।”

**अल्लाह** عز وجل ने अपने हबीबे मुकर्रम ﷺ की क़द्रो मन्ज़िलत का इज़हार और ता’ज़ीम व तौकीर करते हुए उन का ज़िक्र बुलन्द फ़रमाया। आप ﷺ के ज़रीए मुशरिकीन की शिर्क की आग को बुझाया और मोअमिनीन के लिये नूरे ईमान ज़ाहिर फ़रमाया। आप ﷺ के ज़रीए आप की उम्मत को कामिल फ़रहत व सुरूर अता फ़रमाया। आप ﷺ को सारी इन्सानिय्यत के लिये बशीरो नज़ीर (या’नी खुश ख़बरी देने वाला और डर सुनाने वाला) बना कर मबरूष फ़रमाया। आप ﷺ को **अल्लाह** عز وجل की तरफ़ उस के हुक्म से बुलाने वाला और चमका देने वाला आफ़ताब बना कर भेजा। आप ﷺ के मुबारक नूर से सारी काइनात को मुनव्वर फ़रमाया। चुनान्चे, **अल्लाह** عز وجل इरशाद फ़रमाता है :

”يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ۚ وَدَاعِيًا إِلَى اللَّهِ بِأَذْنِهِ وَسِرَاجًا مُنِيرًا“ (प 22, الاحزاب: 45-46)



तर्जमए कन्जुल ईमान : ऐ गैब की ख़बरें बताने वाले (नबी) ! बेशक हम ने तुम्हें भेजा हाज़िर नाज़िर और खुश ख़बरी देता और डर सुनाता और **अब्बाह** की तरफ़ उस के हुक्म से बुलाता और चमका देने वाला आपताब ।” (1)

हुज़ूर नबिय्ये पाक साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सय्यिदुल मुरसलीन, इमामुल मुत्तकीन हैं। आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को **अब्बाह** غَزَوْجَل ने तमाम मख़्लूक़ात पर बरतर व बाला मक़ाम अता फ़रमाया और उस वक़्त नबुव्वत अता फ़रमा दी थी जब कि हज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ السَّلَام पानी और मिट्टी के दरमियान थे। (या'नी अभी आदम عَلَيْهِ السَّلَام की तख़लीक़ भी मुकम्मल न हुई थी) और आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को सारी मख़्लूक़ का रसूल बनाया और कुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाया : (١٧٠: ١٧٠) وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا رَحْمَةً لِّلْعَالَمِينَ 0

तर्जमए कन्जुल ईमान : और हम ने तुम्हें न भेजा मगर रहमत सारे ज़हान के लिये ।” (2)

**अब्बाह** غَزَوْجَل ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बुलन्द मक़ाम अता फ़रमाया। आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अज़ीब हुस्न से नवाज़ा और आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादते बा सआदत को मोअमिनीन के लिये बहार बनाया। आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बरकत से दीने

①....मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِي तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं : “शाहिद का तर्जमा हाज़िर व नाज़िर बहुत बेहतरीन तर्जमा है। “मुफ़रिदाते राग़िब” में है : “الشُّهُودُ وَالشَّهَادَةُ الْحُضُورُ مَعَ الْمُشَاهَدَةِ أَمَّا بِالْبَصَرِ أَوْ بِالْبَصِيرَةِ : या'नी शहूद और शहादत के मा'ना हैं हाज़िर होना मअ नाज़िर होने के, बसर के साथ हो या बसीरत के साथ। और गवाह को भी इसी लिये शाहिद कहते हैं कि वोह मुशाहदा के साथ जो इल्म रखता है उस को बयान करता है। सय्यिदे आलम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तमाम आलम की तरफ़ मबरूष हैं। आप की रिसालत आम्मा है। जैसा कि सूरे फ़ुरक़ान की पहली आयत में बयान हुवा तो हुज़ूरे पुर नूर तस्दीक, तकज़ीब, हिदायत, जलाल सब का मुशाहदा फ़रमाते हैं। (अबू सऊद व जमल) सिराज का तर्जमा कुरआने करीम के बिल्कुल मुताबिक़ है कि इस में आपताब को सिराज फ़रमाया गया है। जैसा कि सूरे नूह में وَخَلَعَ الشَّمْسُ سِرَاجًا और आख़िर पारह की पहली सूरेत में है وَجَعَلْنَا سِرَاجًا وَفَاجًا और दर हकीक़त हज़ारों आपताबों से ज़ियादा रोशनी आप के नूरे नबुव्वत ने पहुंचाई और कुफ़्र व शिर्क के जुलमाते शदीदा को अपने नूरे हकीक़त अपरोज़ से दूर कर दिया और ख़ल्क के लिये मा'रिफ़त व तोहीदे इलाही तक पहुंचने की राहें रोशन और वाजेह कर दीं और ज़लालत के वादिये तारीक़ में राह गुम करने वालों को अपने अन्वारे हिदायत से राह याब फ़रमाया और अपने नूरे नबुव्वत से ज़माइर व बसाइर और कुलूब व अरवाह को मुनव्वर किया। हकीक़त में आप का वुजूदे मुबारक ऐसा आपताबे आलम ताब है जिस ने हज़ारहा आपताब बना दिये इसी लिये इस की सिफ़त में मुनीर इरशाद फ़रमाया गया।

②....मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِي तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं : “कोई हो, जिन्न हो, या इन्स, मोमिन हो या काफ़िर। हज़रते इब्ने अब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि हुज़ूर का रहमत होना आम है ईमान वाले के लिये भी और उस के लिये भी जो ईमान न लाया। मोमिन के लिये तो आप दुन्या व आख़िरत दोनों में रहमत हैं और जो ईमान न लाया उस के लिये आप दुन्या में रहमत हैं कि आप की बदीलत ताख़ीरे अज़ाब हुई और हस्फ़ व मस्ख़ और इस्तीसाल के अज़ाब उठा दिये गए। तफ़्सीरे रूहुल बयान में इस आयत की तफ़्सीर में अकाबिर का येह कौल नक्ल किया है कि आयत के मा'ना येह है कि हम ने आप को नहीं भेजा मगर रहमते मुतलक़ ताम्मा कामिला आम्मा शामिली जामिआ मुहीता बेह जमीए मुकय्यदात रहमते ग़ैबिय्या व शहादते इल्मिय्या व ऐनिय्या व वुजूदिय्या व शुहूदिय्या व साबिका वला हक्का वग़ैरा ज़ालिक तमाम ज़हानों के लिये आलमे अरवाह हों या आलमे अजसाम, ज़वील इकूल हों या ग़ैरे ज़वील इकूल और जो तमाम आलमों के लिये रहमत हो लाज़िम है कि वोह तमाम ज़हान से अफ़ज़ल हो।”

इस्लाम हमेशा बुलन्द व मजबूत होता रहेगा और कुफ़्र व शिर्क कमजोर व ज़लील होता रहेगा। आप ﷺ को पाक पुश्तों से पाक रहमों में मुन्तक़िल फ़रमाया। आप ﷺ पर शाहे ईरान के महल “किसरा” में ज़लज़ला आ गया, उस की बुन्यादें कमजोर पड़ गईं और वोह गिरने के करीब हो गया। **अल्लाह** عزّ وجلّ ने आप ﷺ की अज़मते शान की खातिर आप को उम्मत के गुनहगारों का शफ़ीअ बनाया। उम्मत को आप ﷺ के फ़रामीन तवज्जोह से सुनने और अहक़ाम की बजा आवरी का हुक्म फ़रमाया। आप ﷺ को दुनिया में इस उम्मत का रसूल और आख़िरत में शफ़ीअ बनाया और आप ﷺ को लोगों के सामने अपनी अज़मत व शरफ़ बयान करने का हुक्म देते हुए इरशाद फ़रमाया :

”قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ جَمِيعًا (پ: १, الاعراف: १०८)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तुम फ़रमाओ ऐ लोगो ! मैं तुम सब की तरफ़ उस **अल्लाह** का रसूल हूँ।” (1)

**अल्लाह** عزّ وجلّ ने हुजुरे पुरनूर, शाहे ग़यूर ﷺ को इज़्ज़त का ताज पहनाया और सारी काइनात को आप ﷺ के नूर से मुनव्वर फ़रमाया। देहाती और शहरी लोगों को आप ﷺ के ज़रीए इज़्ज़त अता फ़रमाई। आप ﷺ को हर किस्म के गदले पन से महफूज़ रखा और आप ﷺ के मुबारक नूर से फ़ारस का सदियों से जलने वाला आतश कदा बुझा दिया। **अल्लाह** عزّ وجلّ ने आप ﷺ की विलादत की बरकत से हनादिस (या'नी आख़िरे माह की तीन इन्तिहाई सियाह रातों) की तारीकियों को रोशनी अता फ़रमाई। आप ﷺ को हैबत व जलाल की पोशाक अता फ़रमाई। आप ﷺ पर सिलसिलए नबुव्वत व रिसालत को ख़त्म फ़रमाया। कुरआने करीम में आप ﷺ की और सहाबए किराम الرضوان की शान यूँ बयान फ़रमाई :

”مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللَّهِ وَالَّذِينَ مَعَهُ أَشِدَّاءُ عَلَى الْكُفَّارِ (پ: २, الفتح: २९)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** मुहम्मद **अल्लाह** के रसूल हैं और उन के साथ वाले काफ़िरों पर सख़्त हैं।” (2)

①....मुफ़स्सिरे शहीर ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत सदरुल अफ़ज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी علیه رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं : “येह आयत सय्यिदे अमल ﷺ के इमूमे रिसालत की दलील है कि आप तमाम खल्क के रसूल हैं और कुल जहां आप की उम्मत। बुख़ारी व मुस्लिम की हदीष है, हुजूर फ़रमाते हैं : “पांच चीज़ें मुझे ऐसी अता हुईं जो मुझ से पहले किसी को न मिलीं : हर नबी खास कौम की तरफ़ मबक़ूष होता था और मैं सुख़् व सियाह की तरफ़ मबक़ूष फ़रमाया गया। मेरे लिये ग़नीमतें हलाल की गईं और मुझ से पहले किसी के लिये नहीं हुई थीं। मेरे लिये ज़मीन पाक और पाक करने वाली (काबिले तयम्मूम) और मस्जिद की गई जिस किसी को कहीं नमाज़ का वक़्त आए वहीं पढ़ ले। दुश्मन पर एक माह की मसाफ़त तक मेरा रो'ब डाल कर मेरी मदद फ़रमाई गई और मुझे शफ़ाअत इनायत की गई।” मुस्लिम शरीफ़ की हदीष में येह भी है कि “मैं तमाम खल्क की तरफ़ रसूल बनाया गया और मेरे साथ अम्बिया ख़त्म किये गए।”

②....मुफ़स्सिरे शहीर ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत सदरुल अफ़ज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी علیه رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं : “सहाबा का तशहद कुफ़्फ़ार के साथ इस हद पर था कि वोह लिहाज़ रखते थे कि उन का बदन किसी काफ़िर के बदन से न छू जाए और उन के कपड़े से किसी काफ़िर का कपड़ा न लगने पाए।” (मदारिक)

हुजूर नबिय्ये रहमत صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ऐसे नबी हैं कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने आप صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को शानदार इज्जत व मक़ाम पर फ़ाइज फ़रमाया और बड़ी बड़ी ने'मतें अता फ़रमाई। ईसाई पादरियों और यहूदी राहिबों ने आप صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم की नबुव्वत की बिशारत दी और काहिनों ने आप صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी की खुश ख़बरी दी। **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने आप صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم के उम्दा अवसाफ़ और अच्छी ता'रीफ़ सारी काइनात में आम कर दी। रब्बे काइनात ने रबीउल अव्वल जैसे मुबारक महीने में आप صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم की जलवा नुमाई फ़रमाई और आप صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم को सारी मख़्लूक से अफ़ज़ल बनाया और इज्जत व वक़ार के अज़ीम जुब्बे पहनाए। लोगों को आप صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم की रिसालत के ज़रीए मुतनब्बेह फ़रमाया। और अपनी लारैब किताब कुरआने मजीद, फ़ुरक़ाने हमीद में इरशाद फ़रमाया :

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान** : बेशक **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ "إِنَّا أَرْسَلْنَا إِلَيْكُمْ رَسُولًا شَاهِدًا عَلَيْكُمْ كَمَا أَرْسَلْنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ رَسُولًا" (प. २९, म. १०) हम ने तुम्हारी तरफ़ एक रसूल भेजे कि तुम पर हाज़िर नाज़िर हैं जैसे हम ने फ़िरऔन की तरफ़ रसूल भेजे।

**ऐ मेरे दानिशमन्द इस्लामी भाइयो !** ज़रा देखो तो सही कि **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ ने अपने इस मोहतरम नबी عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के लिये कैसे कैसे आ'ला इन्आमात, ए'जाज़ और अज़ीम फ़ज़ाइल तय्यार कर रखे हैं। पस येही वोह रसूल हैं जो खुल्के अज़ीम और इज्जत व अज़मत की सिफ़त से मुत्तसिफ़ हैं। **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ ने आप की शान बयान करते हुए कुरआने करीम में इरशाद फ़रमाया : "لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِّنْ أَنفُسِكُمْ عَزِيزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِينَ رَؤُوفٌ رَّحِيمٌ" (التوبة: १२८) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान** : बेशक तुम्हारे पास तशरीफ़ लाए तुम में से वोह रसूल, जिन पर तुम्हारा मशक्कत में पड़ना गिरां है तुम्हारी भलाई के निहायत चाहने वाले मुसलमानों पर कमाल मेहरबान मेहरबान।" (१)

बेशक इन्सान ने सब से पहले जिस कलाम से इब्तिदा की और ज़बान ने कुव्वते गोयाई हासिल की वोह उस ज़ात का कलाम है जिस ने सारी मख़्लूक को पैदा किया और कुव्वते गोयाई अता फ़रमाना महज़ उस ख़ालिके काइनात جَلَّ جَلَالُهُ का मख़्लूक पर फ़ज़्लो एहसान है। उसे किसी हाज़त ने मख़्लूक की पैदाइश पर मजबूर नहीं किया था और न ही कोई ज़रूरत ऐसी थी जिस की वजह से वोह मोहताज़ था कि मख़्लूक उस की इताअत करे क्यूंकि वोह तो मुतलकन ग़नी व बे परवाह है और वोह तो ऐसी ज़ात है जिस के ख़ज़ाने बहुत ज़ियादा खर्च करने के बा वुजूद ख़त्म नहीं होते और उस का

①.....मुफ़स्सिरे शहीर ख़लीफ़ आ'ला हज़रत सदरुल अफ़ज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِي तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं : "(या'नी) मुहम्मदे मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आया है। इस के मा'ना है कि तुम में से नफ़ीस तर और अशरफ़ व अफ़ज़ल। इस आयते करीमा में सय्यिदे आलम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी या'नी आप के मीलादे मुबारक का बयान है। तिमिज़ी की हदीष से भी पाबित है कि सय्यिदे आलम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم ने अपनी पैदाइश का बयान कियाम कर के फ़रमाया। **मरअला** : इस से मा'लूम हुवा कि महफ़िले मीलादे मुबारक की अस्ल कुरआन व हदीष से पाबित है। इस आयत में **अल्लाह** तबारक व तआला ने अपने हबीब صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم को अपने दो नामों से मुशरफ़ फ़रमाया। येह कमाले तकरीम है इस सरवरे अन्वर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم की !"



अपने बन्दों पर सब से बड़ा फ़ज़ल व एहसान यह है कि उस ने उन के पास अपने मुख़लिस व मेहरबान, अज़मत व जलाल वाले नबी और सच्चे और अमानत दार रसूल صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को भेजा जिन के पैग़ामे रब्बानी पहुंचाने की ख़ूबी बयान करते हुए वोह खुद इरशाद फ़रमाता है :

”وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِينٍ ۚ (پ ۳۰، التکویر: ۲۴) और यह नबी ग़ैब बताने में बख़ील नहीं ।”

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अहमदे मुजतबा, मुहम्मदे मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नूरी वुजूद से कुफ़्र की तारीकियां दूर फ़रमा दीं, आस्माने ईमान पर सितारों को चमकाया और आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अन्वार व तजल्लियात से महीने की आख़िरी इन्तिहाई तारीक तीन रातों को रोशन फ़रमाया । आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी पर ईरान का शो'ला ज़न आतश कदा बुझा दिया । शाहे ईरान को उस के सल्तनत के ज़वाल से डराते हुए उस के महल “किसरा” में शिगाफ़ डाल दिये । शाहे रूम कैसर ने अपनी हलाकत पर दलालत करने वाला ख़्वाब देख लिया ।

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस उम्मत को अपने महबूब नबी صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदेक़े तमाम उम्मतों पर फ़ज़ीलत व रिफ़अत अता फ़रमाई और आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पुख़्ता इरादों की तल्वार की बरकत से इस उम्मत के सामने बुलन्द व बाला चोटियों को सरनिगूँ कर दिया । इस लिये उम्मत पर लाज़िम है कि मीलादुन्नबी صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم (या'नी बारह रबीउन्नुर शरीफ़) को अपनी सब से बड़ी ईद बना लें और सरकार صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم की विलादत पर हृद दर्जा खुशियां मनाएं और गुरबा व मसाकीन पर सद्का व ख़ैरात कर के आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم की खुश नूदी हासिल करें और यतीमों, बेवाओं और कमज़ोरों की इमदाद कर के आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم की वसिय्यत पर अमल करें । उ-लमाए किराम और मुबल्लिगीन लोगों के सामने आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم की विलादते बा सआदत के वाकिआत बयान करें । और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने महबूब صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم के वुजूदे मसऊद की बरकत से लोगों पर जो मेहरबानियां फ़रमाई इन को और आप के ख़साइले हमीदा को लोगों के सामने षाबित करें ताकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم को जिस मक़ाम व मर्तबा और कुदरत व ताक़त से नवाज़ा है वोह उन के दिलों में रासिख़ हो जाए नीज़ वोह येह बात भी जान लें कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم की मिष्ल कोई इन्सान पैदा नहीं फ़रमाया ।

**विलादते मुस्तफ़ा (صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) का बयान :**

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आओ !** मैं तुम्हारे सामने हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم की विलादते बा सआदत के मुतअल्लिक़ सच्चे अइम्मे हदीष से मरवी चन्द अहादीष बयान करता हूं और इस का आगाज़ कुरआने मजीद, फुरक़ाने हमीद की इस आयते मुबारका की तिलावत से करता हूं । चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ कुरआने अज़ीम में इरशाद फ़रमाता है :

﴿۱﴾ قَتَبَرَك اللّٰهُ اَحْسَنُ الْخٰلِقِیْنَ ۝ (پ ۱۸، المؤمنون: ۱۴) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो बड़ी बरकत वाला है **अल्लाह**, सब से बेहतर बनाने वाला है ।

हज़रते मख़ज़ूम बिन हानी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ अपने बाप से जिन की उम्र डेढ़सो (150) साल थी, रिवायत करते हैं : “हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बारह (12) रबीउन्नूर शरीफ़ बरोज़ पीर अमूलफील<sup>(1)</sup> शाहे ईरान, नौशेरवां से बयालीस (42) साल और बादशाह अम्र बिन हिन्द से साढ़े आठ साल बा’द इस जहाने फ़ानी में जल्वा गर हुए।”

(السيرة النبوية لابن هشام، ولادة رسول الله ﷺ، ج ١، ص ١٦١)

एक रात हज़रते सय्यिदुना अब्दुल मुत्तलिब رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ वादिये अब्तह में मह्वे आराम थे कि आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने ख़्वाब में अपने जिस्मे अतहर से एक सफ़ेद ज़न्जीर निकलती देखी, इस के चार कनारे थे। एक कनारा मशरिक में जा पहुंचा, दूसरा मग़रिब में, तीसरा आस्मान तक और चौथा कनारा वापस लौट आया यहां तक कि वोह एक सब्ज़ दरख़्त बन गया। जब सुबह हुई और आप रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इस की ता’बीर मा’लूम की तो बताने वालों ने बताया : “अगर आप का ख़्वाब सच्चा है तो यकीनन आप की मुबारक पुश्त से एक ऐसी हस्ती का जुहूर होगा जिस पर तमाम ज़मीनो व आस्मान वाले ईमान लाएंगे।” (السيرة النبوية لابن كثير، كتاب مبعث رسول الله ﷺ، ذكر اخبار غريبة، ج ١، ص ٣١٠، بتغير)

### नूरे मुहम्मदी की जौफ़िशानियां :

हज़रते सय्यिदुना का’बुल अहबार रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है : “जब **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ ने मौजूदात को पैदा फ़रमाने का इरादा किया और ज़मीन को बिछाया और आस्मान को बुलन्द फ़रमाया तो अपने फ़ैज़जात से मुठ्ठी भर ले कर उस से इरशाद फ़रमाया : “ऐ नूर ! मुहम्मद बन जा।” उस नूर ने एक नूरी सुतून की सूत इख़्तियार कर ली और इस क़दर रोशन हुवा कि अज़मत के पर्दे तक जा पहुंचा और रब्बे काइनात عَزَّ وَجَلَّ को सजदा किया और कहा : الْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّ وَجَلَّ या’नी सब खूबिया **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ के लिये हैं। तो **अब्बाह** عَزَّ وَजَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : “मैं ने तुझे इसी लिये पैदा फ़रमाया और तेरा नाम मुहम्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) रखा है, तुझी से अपनी मख़्लूक की इब्तिदा करूंगा और तुझी पर अपनी रिसालत का सिलसिला ख़त्म करूंगा।” फिर **अब्बाह** عَزَّ وَजَلَّ ने इस नूर के चार हिस्से कर के एक हिस्से से लौहे महफूज़ और दूसरे से क़लम को पैदा फ़रमाया फिर क़लम से इरशाद फ़रमाया : “लिख ! तो क़लम पर एक हज़ार साल तक हैबते इलाही से लर्ज़ा तारी रहा। इस के बा’द क़लम ने अर्ज़ की : “ऐ मेरे रब्ब عَزَّ وَजَلَّ क्या लिखूं ?” इरशाद फ़रमाया : “लिख ! لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُحَمَّدٌ رَّسُولُ اللَّهِ” पस क़लम ने लिखा और मख़्लूक के मुतअल्लिक इल्मे इलाही पर रसाई पा ली। फिर उस ने येह बातें लिखीं : (1).....हज़रते सय्यिदुना आदम عَزَّ وَجَلَّ जो इताअते इलाही पर रसाई पा ली। फिर उस ने येह बातें लिखीं : (2).....जो इताअते इलाही पर रसाई पा ली। फिर उस ने येह बातें लिखीं : (3).....हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام

.....आमूल फ़ील वोह साल है जिस में अब्रहा बादशाह ने हाथियों का लश्कर ले कर ख़ानए का’बा पर चढ़ाई की थी।

(अल मदीनतुल इल्मिया)

हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلَى نَبِيْنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام और हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلَى نَبِيْنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की उम्मतों के मुतअल्लिक भी लिखा यहां तक कि जब हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की उम्मत के मुतअल्लिक लिखा कि जिस ने **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की इताअत की वोह उसे जन्नत में दाखिल फरमाएगा और जिस ने **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की नाफरमानी की..., कलम येह जुम्ला “वोह उसे जहन्नम में डाल देगा” अभी लिखना ही चाहता था कि **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ की तरफ से निदा आई : “ऐ कलम ! ज़रा अदब से ।” तो वोह हैबत व जलाले इलाही عَزَّ وَجَلَّ से शक हो गया फिर दस्ते कुदरत से तराशा गया । तब से कलम में येह बात जारी हो गई कि तराशे बिगैर नहीं लिखता । फिर **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने कलम से इरशाद फरमाया इस उम्मत के मुतअल्लिक लिख “येह उम्मत गुनहगार है और रब्ब عَزَّ وَجَلَّ ग़फ़ार (या’नी बहुत बख़्शाने वाला) है ।” फिर **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ ने तीसरे हिस्से से अर्श को पैदा किया । फिर चौथे हिस्से के मज़ीद चार हिस्से कर के पहले हिस्से से अक्ल, दूसरे से मा’रिफ़त, तीसरे से सूरज-चांद और आंखों का नूर और दिन की रोशनी पैदा फरमाई और येह सब हकीकतन नबिय्ये मुख्तार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ही के अन्वार हैं । पस आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ तमाम काइनात की अस्त हैं । इस के बा’द **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने नूर की इस चौथी किस्म के चौथे हिस्से को बतौर अमानत अर्श के नीचे रख दिया । फिर जब **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने हज़रते सय्यिदुना आदम सफ़ियुल्लाह عَلَى نَبِيْنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام को पैदा फरमाया तो वोह नूर उन की पुश्ते मुबारक में रखा । फिर फ़िरिशतों से आप عَلَيْهِ السَّلَام को सजदा करवाया और जन्नत में दाखिल कर दिया । फ़िरिशते सफ़ दर सफ़ आप عَلَيْهِ السَّلَام की पुश्ते मुबारक के पीछे खड़े हो कर नूरे मुहम्मदी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ज़ियारत किया करते । आप عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की बारगाह में अर्ज की : “या **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ येह फ़िरिशते मेरी पुश्त के पीछे सफ़ बांध कर क्यूं खड़े रहते हैं ?” इरशाद फरमाया : “ऐ आदम ! येह फ़िरिशते मेरे हबीब, खातमुल अम्बिया, मुहम्मदे मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के नूर की ज़ियारत करते हैं, जिसे मैं तेरी पुश्त से पैदा फरमाऊंगा ।” हज़रते सय्यिदुना आदम عَلَى نَبِيْنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने अर्ज की : “या इलाही عَزَّ وَجَلَّ इस मुबारक नूर को मेरी पेशानी में रख दे ताकि येह फ़िरिशते मेरे सामने रहे, पुश्त की तरफ न जाएं !” तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने नूरे मुहम्मदी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को आप عَلَيْهِ السَّلَام की पेशानी में रख दिया । फ़िरिशते हज़रते सय्यिदुना आदम عَلَى نَبِيْنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के सामने खड़े हो जाते और नूरे मुहम्मदी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर दुरूदो सलाम के नज़राने पेश करते रहते । हज़रते सय्यिदुना आदम عَلَى نَبِيْنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने अर्ज की : “या इलाही عَزَّ وَجَلَّ में भी इस मुबारक नूर की ज़ियारत करना चाहता हूं, लिहाज़ा इसे मेरी पेशानी से निकाल कर किसी ऐसी जगह रख दे जहां मैं इस की ज़ियारत कर सकूं ।” तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने नूरे मुहम्मदी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ हज़रते सय्यिदुना आदम عَلَى نَبِيْنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की अंगुश्ते शहादत में मुत्तकिल फरमा दिया । फ़िरिशते तस्बीह पढ़ते तो आप عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की अंगुश्ते मुबारक में वोह नूर भी तस्बीह ख़वानी करता । इसी वजह से इस उंगली को “**الْمُسَبِّحَةُ**” (या’नी तस्बीह वाली उंगली) कहते हैं ।



(مُصَنَّف عبد الرزَّاق، الجزء المفقود من الجزء الأوَّل، كتاب الايمان، باب في تخليق نور محمد صلى الله عليه وآله، الحديث ١٨، ص ٦٣ - بالفاظ مختلفة)

جَبَّ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ پَیْدَا هُوَ تُو نُوْرُ مُهَمَّمَدِی عَلَی نَبِیْنَا وَآلِیْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ شَیْطَانِ دُنا جَازِی

❶...हुजूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक के सिलसिलए नसब के मुतअल्लिक हज़रते सय्यिदुना अल्लामा सय्यिदुना यूसुफ़ बिन इस्माईल नब्हानी قُدَسَ سِرُّهُ التَّوَرَانِ फ़रमाते हैं : “हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मा’द बिन अदनान तक के सिलसिलए नसब पर उम्मत का इजमाअ है और इस से ऊपर हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام तक मज़कूर नसब काबिले ए’तिमाद नहीं (या’नी नामों में इख़िलाफ़ है)।” (وسائل الوصول الى شمائل الرسول، ص ٤٨)

उन से नाहूर, उन से तारिख<sup>(1)</sup> उन से हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام, उन से क़ैज़ार, उन से नब्ब, उन से सलामान, उन से हमैसअ, उन से यसअ, उन से उदद, उन से उद्द, उन से अदनान, उन से मअद्द, उन से निज़ार, उन से मुज़र, उन से इल्यास, उन से मुदरिका, उन से खुजैमा, उन से किनाना, उन से नज़्र, उन से मालिक, उन से फ़िहर, उन से ग़ालिब, उन से लुअय्य, उन से का'ब, उन से मुरा, उन से किलाब, उन से कुसय्य, उन से अबदे मनाफ़, उन से हाशिम, उन से हज़रते सय्यिदुना अब्दुल मुत्तलिब رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ और उन से हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ तक पहुंचा जो नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के वालिदे मोहतरम हैं।

(الرَّوْضُ الْأَنْفُ فِي تَفْسِيرِ السِّيَرَةِ النَّبَوِيَّةِ لِابْنِ هِشَامٍ، ج ١، ص ٢٣ تا ٣٧)

किसी शाइर ने ख़ूब कहा है :

مَا زَالَ نُورُ مُحَمَّدٍ مُنْتَقِلًا فِي الطَّبِيبِينَ الطَّاهِرِينَ أُولَى الْعَالَا  
حَتَّى لِعَبْدِ اللَّهِ جَاءَ مُطَهَّرًا وَمُكْرَمًا وَمُعَظَّمًا وَمُجَلَّلًا

**तर्जमा :** हज़रते सय्यिदुना मुहम्मदे मुस्तफ़ा صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का मुबारक नूर हमेशा तय्यिब व ताहिर और बरतर व बाला लोगों में मुन्तक़िल होता रहा। यहां तक कि पाक व साफ़ और मुअज़्ज़म व मुकर्रम हालत में हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ तक पहुंचा।

①....यहां अस्ल किताब में तारिख के बा'द आज्र का ज़िक्र है। इस के मुतअल्लिक फ़कीहुल अस्र, हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती जलालुद्दीन अहमद अमजदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَنِي फ़रमाते हैं : “हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के वालिद के नाम में इख़िलाफ़ है। उ-लमाए अहले सुन्नत के नज़दीक तहक़ीक़ येह है कि आप عَلَيْهِ الصَّلَام के वालिद का नाम तारख़ था और आज्र आप عَلَيْهِ الصَّلَام के चचा का नाम था।” (फ़ावौ फ़िय़ुल रसूल, ज २, व ५६८) “إِنَّمَا قَالَ إِبْرَاهِيمُ لِأَبْنِهِ أَزْزَرُ (٧: ١٧، الانعام: ٧٤)” इस फ़रमाने बारी तअ़ाला عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ الْغَنِي इस फ़रमाने बारी तअ़ाला (आज़र) कौन था ?” इस में गुफ़्तगू है। इमाम जलालुद्दीन सुयूती के तहत तफ़्सीरे नईमी में तहरीर फ़रमाते हैं : “(आज़र) कौन था ?” इस में गुफ़्तगू है। इमाम जलालुद्दीन सुयूती “مسالك الحقائق” में फ़रमाया और “मुफ़रीदाते इमाम राग़िब, तफ़्सीरे कबीर, तफ़्सीरे रूहुल मअनी” वग़ैरा में है कि आज्र हज़रते इब्राहीम (عليه السلام) का चचा था, आज्र बुत परस्त था। आप (عليه السلام) के वालिद का नाम “तारिख़” है जो मोमिने मुवहिहद थे। “तफ़्सीरे इब्ने कषीर” ने भी येही कहा। बा'ज़ ने फ़रमाया कि आज्र हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلَام का कोई और खानदानी बुजुर्ग था। हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلَام के वालिद का नाम तारिख़ है। (मज़ीद फ़रमाते हैं) खयाल रहे कि अरबी में “अब” और “वालिद” दोनों के मा'ना हैं, बाप। मगर “अब” आम है कि सगे बाप को भी “अब” कहते हैं और सोतेले बाप दादा, चचा, बल्कि सारे उसूले खानदान को, बल्कि उस्ताज़ को, बल्कि शैख़ को, बल्कि “मुर्बबी” को भी “अब” कह देते हैं।” देखो “لَا تَكُونُوا مَنَّا نَكُحَ آبَائِكُمْ” यहां “आबा” से मुराद सारे उसूल हैं। बाप, दादा, परदादा कि उन सब की मन्क़हा बीवियां हम पर हराम हैं। “إِنَّا كُفِّرْنَا عَنْهُمْ وَاسْمَعِيلَ وَاسْحَقَ” यहां “आबा” में चचा भी दाख़िल हैं। हज़रते इस्माइल जनाबे या'कूब के चचा थे। “مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ الْإِيمَانُ” में “आबा” से मुराद उस्ताज़ भी हैं। सरकार “رُفُّوا عَلَى أَبِي” (यानी) मेरे बाप अब्बास को मेरे पास लाओ”। यहां “अब” से मुराद चचा है। बहर हाल “अब” बहुत आम है मगर “वालिद” अकषर सगे बाप को कहते हैं, “وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا” यूही लफ़ज़ आम है सगी मां। सोतेली मां, दूध की मां, दादी, नानी, चची, सास सब को “उम्म” कह देते हैं। देखो ! “أَمَّا أَنْتُمْ الْآخِي أَرْضَعْنَكُمْ” में दाई दूध पिलाने वाली को “उम्म” फ़रमाया। “حَرَمْتُ عَلَيْكُمْ أُمَّهَاتِكُمْ” में सगी मां, सोतेली मां, दादी नानी को “उम्म” फ़रमाया। मगर वालिदा को उमूमन सगी मां कहते हैं। “وَالْوَالِدَاتُ يُرْضِعْنَ أَوْلَادَهُنَّ حَوْلَيْنِ كَامِلَيْنِ” या जैसे “अब” عَلَيْهِ الصَّلَام का “अब” “وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا” जब येह समझ लिया तो समझो कि कुरआने करीम ने हर जगह आज्र को हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلَام का “अब” फ़रमाया है, कहीं वालिद नहीं फ़रमाया। मा'लूम हुवा कि वोह आप का सगा बाप न था।” (नफ़्सीरे नईमी, जि.7, स.495)

## नूरे मुस्तफ़ा صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुन्तकिली पर जश्न का समां :

जब **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ ने नूरे मुहम्मदी صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को रफ़ीउश्शान सुलबों से बुलन्द रुत्बा सय्यिदा आमिना رَضِیَ اللہ تعالیٰ عَنْہَا के बतने अतहर की तरफ़ मुन्तकिल फ़रमाया तो इस मुन्तकिली के साथ ही बड़ी बड़ी निशानियां ज़ाहिर होने लगीं। सारी मख़्लूक एक दूसरे को बिशारतें देने लगी, ज़मीनो आस्मान में ए'लान कर दिया गया : “ऐ अर्श ! वफ़ार व सन्जीदगी का निफ़ाब ओढ़ ले। ऐ कुरसी ! फ़ख़ की ज़िर्ह पहन ले। ऐ सिद्रतुल मुन्तहा ! खुशी से झूम जा। ऐ हैबत और रो'ब व दबदबे के अन्वार ! तुम भी ख़ूब रोशन हो जाओ। ऐ जन्नत ! ख़ूब आरास्ता पेरास्ता हो जा। ऐ महल्लात की हूरो ! तुम भी बुलन्दी से देखो। ऐ रिज़वान (बाग़बाने जन्नत) ! जन्नत के दरवाज़े खोल दे और हूरो ग़िलमां को सामाने ज़ीनत से आरास्ता पेरास्ता कर के काइनात को खुशबूओं से मुअत्तर कर दे। ऐ मालिक (दारोग़े जहन्नम) ! जहन्नम के दरवाज़े बन्द कर दे। क्यूंकि आज की रात मेरी कुदरत के ख़ज़ानों में छुपा हुवा नूर और राज़ अब्दुल्लाह से जुदा हो कर आमिना के बतन में मुन्तकिल होने वाला है और जिस घड़ी येह नूर मुन्तकिल होगा उसी लम्हे में अपने महबूब صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मुकम्मल सूरत दे दूंगा और येह लोगों के सामने इन्साने कामिल ज़ाहिर होगा।”

## हर चोपाया बोलने लगा :

**अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ ने यकुम रजबुल मुरज्जब शबे जुमुअ नूरे मुहम्मदी صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुन्तकिली का ए'लान फ़रमाया। जब कि हज़रते सय्यिदुना इमाम वाकिदी رَحْمَةُ اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ के नज़दीक येह जुमादिल आख़िर की पन्दरहवीं रात थी। नूरे मुहम्मदी صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुन्तकिली की रात हर घर और मकान में नूर दाख़िल हो गया और हर चोपाया मह्वे कलाम हो गया। हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِیَ اللہ تعالیٰ عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : “हज़रते सय्यिदतुना आमिना رَضِیَ اللہ تعالیٰ عَنْہَا के रसूले पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से हामिला होने की दलील येह है कि उस रात कुरैश के हर चोपाए ने (ब ज़बाने फ़सीह) कलाम करते हुए कहा : “रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपनी वालिदए माजिदा के शिकमे अतहर में जलवा फ़रमा हो चुके हैं, रब्बे का'बा की क़सम ! आप صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم दुनिया के लिये अमान और अहले दुनिया के चराग़ हैं।” (رسائل میلاد مصطفیٰ ﷺ، رسالة مولد النبی ﷺ لابن حجر مکی علیہ رحمة اللہ القوی، ص ۱۹)

हज़रते सय्यिदतुना आमिना رَضِیَ اللہ تعالیٰ عَنْہَا इरशाद फ़रमाती हैं : “जब हमल को छे माह हुए तो आप صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم के वालिदे मोहतरम मेरे सरताज हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह रَضِیَ اللہ تعالیٰ عَنْہُ इस जहाने फ़ानी से कूच फ़रमा गए। और किसी ने ख़्वाब में आ कर मुझे पाउं की जुम्बिश से उठाया और इरशाद फ़रमाया : “ऐ आमिना ! तुझे बिशारत हो कि तेरे शिकमे अतहर में परवरिश पाने वाली ज़ात तमाम जहानों से बेहतर है, जब इन की विलादत हो जाए तो इन का नाम मुहम्मद (صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم) रखना और अपने इस मुआमले पर किसी को आगाह न करना।”

(البدایة والنهاية لابن كثير، كتاب الشمائل، باب ماعطى رسول الله ﷺ..... الخ، ج ۴، ص ۷۲۰)



## विलादते मुबारक और अजाइबाते विलादत :

हज़रते सय्यिदतुना आमिना رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا इरशाद फ़रमाती हैं : “जब तक आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मेरे शिकम में तशरीफ़ फ़रमा रहे मैं ने कभी दर्द व अलम, बोझ या पेट में मरोड़ महसूस न किया । हम्ल ठहरने के कामिल नव (9) माह बा’द आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की विलादते बा सआदत हो गई । जब वक्ते विलादत क़रीब आया तो अ़ाम औरतों की तरह मुझ पर भी घबराहट त़ारी हो गई । मेरे ख़ानदान वाले मेरी इस कैफ़ियत से वाक़िफ़ न थे, मैं घर में तन्हा थी । हज़रते सय्यिदुना अब्दुल मुत्तलिब त़वाफ़े ख़ानए का’बा رَاَدَهَا اللَّهُ شَرْفًا وَتَعْظِيمًا में मशगूल थे । लिहाज़ा मैं ने दस्ते त़लब उस ज़ात के सामने दराज़ कर दिया जिस पर कोई पोशीदा चीज़ भी मख़फ़ी नहीं । अचानक मैं ने देखा कि मेरी ग़म गुसार बहन फिरऔन की बीवी हज़रते सय्यिदतुना आसिया رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا तशरीफ़ ले आई । फिर मैं ने एक नूर देखा जिस से सारा मकान रोशन हो गया । येह हज़रते सय्यिदतुना मरयम बिनते इमरान رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا थीं । फिर मैं ने चौदहवीं के चांद जैसे चमकते दमकते चेहरे देखे, येह हूरों का काफ़िला था । जब दर्दे ज़ेह की तकलीफ़ ज़ियादा हुई तो मैं ने उन ख़वातीन से टेक लगा ली । फिर अ़ालिमुल ग़ैब वशहादह عَزَّ وَجَلَّ ने मुझ पर विलादत आसान फ़रमा दी और मेरे बतून से हबीबे खुदा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ तशरीफ़ ले आए और अ़ालम येह था कि आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ अपने हाथों पर झुके हुए टिकटिकी बांधे आस्मान की तरफ़ देख रहे थे । हज़रते सय्यिदतुना आसिया رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ पर शफ़क़त करने लगीं, हज़रते सय्यिदतुना मरयम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا भी जल्दी जल्दी हाज़िर हो गई । हूरों ने आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के क़दमैने शरीफ़ैन के बोसे लिये ।

हज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَيْهِ السّلام भी काशानए अक्दस में हाज़िर हो गए । हज़रते सय्यिदुना मीकाईल عَلَيْهِ السّلام ने आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ को अपने परों से ढांप लिया, हज़रते सय्यिदुना इसराफ़ील عَلَيْهِ السّلام भी ख़िदमते अक्दस में हाज़िर हो गए । फिर फिरिश्ते आकाए नामदार मदीने के ताजदार, हबीबे परवर दगार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ को निगाहों से ओझल ले गए और आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ को सारी काइनात की सैर कराने लगे, तमाम जन्नती नहरों को आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के गुस्ल फ़रमाने से फ़ैज़ याब किया और आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ का इस्मे गिरामी जन्नती दरख़्तों के पत्तों पर रक़म कर दिया । फिर लम्हा भर में आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ को वापस भी ले आए । और आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ को सारी काइनात पर फ़ज़ीलत दी गई । हज़रते सय्यिदतुना आसिया رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا ने आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ को सुरमा लगाना चाहा तो देखा कि आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की चश्माने करम में अच्छी तरह सुरमा लगा हुआ था । हज़रते सय्यिदतुना मरयम رَضِيَ اللَّهُ تَعालَى عَنْهَا ने आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की नाफ़ मुबारक काटना चाही तो देखा कि वोह पहले से कटी हुई थी और उस से इज़ाफ़ी हिस्सा ज़ा़िल हो चुका था । फिर हूरेऐन (या’नी बड़ी बड़ी आंखों वाली हूर) ने हबीबे खुदा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ को मुख़लिफ़ खुशबूएं लगाईं । इस के बा’द तीन फिरिश्ते आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के चेहरए अक्दस की जानिब जल्दी

जल्दी बढ़े। एक के पास सुर्ख सोने का थाल, दूसरे के पास मोतियों से बना हुवा जग और तीसरे के पास सब्ज रेशमी रूमाल था। उन्होंने ने हबीबे खुदा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के नूरानी चेहरे को जग के पानी से धोया। फिर चोगे से खत्मे नबुव्वत व तस्दीक की मोहर निकाली जो इन्तिहाई रोशन व चमकदार थी और इस मेहरबान नबी صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की पुश्ते मुबारक पर लगा दी। पस यूँ आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर सआदत व तौफीक की तक्मील हुई। आप صَلَّى اللَّهُ तَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की वालिदए माजिदा हज़रते सय्यिदतुना आमिना رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا को हुक्म हुवा : “मुक़र्रब फिरिश्तों से पहले दुन्या में से किसी को महबूबे करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ज़ियारत के लिये न बुलाएं।”

आप صَلَّى اللَّهُ तَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की विलादत पर अर्श खुशी से झूम उठा और कुरसी भी खुशी से इतराने लगी और जिनों को आस्मान पर जाने से रोक दिया गया तो एक दूसरे से कहने लगे : “बेशक हमें अपने रास्ते में बड़ी मशक्कत का सामना हुवा है।” और फिरिश्ते इन्तिहाई खुशी व रो'ब से तस्बीह ख़ानी करने लगे, हवाएं झूम झूम कर चलने लगीं और इन्होंने ने बादलों को ज़ाहिर कर दिया, बागात में टहनियां झुकने लगीं और काइनात के गोशे गोशे से أَهْلًا وَسَهْلًا مَرَحَبًا की सदाएं आने लगीं।”

पाक है वोह ज़ात जिस ने अपने महबूब صَلَّى اللَّهُ तَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की फ़ीरोज़ बख़्तियों के सितारे काइनात में ज़ाहिर फ़रमाए तो काइनात रोशन हो गई और आप صَلَّى اللَّهُ तَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की जूदो अ़ता की बिजलियों को चमकाया तो वोह चमकने दमकने लगीं। और रिसालते मुस्तफ़वी صَلَّى اللَّهُ तَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के चांद नुमा दलाइल के अन्वार को फैलाया तो वोह ख़ूब जगमगाने लगे। और कुफ़फ़ार की उम्मीदों को ख़त्म कर दिया पस वोह खाक में मिल गई। और आप صَلَّى اللَّهُ तَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ को ग़लबा अ़ता फ़रमा कर कुफ़फ़ार बादशाहों को ज़िल्लत व रुस्वाई से दो चार किया पस आप صَلَّى اللَّهُ तَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के रो'ब व दबदबे से इन के सरपरस्त हो गए और इन्हें गर्दन झुकानी पड़ी। आप صَلَّى اللَّهُ तَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की तशरीफ़ आवरी से इन्सानियत मानूस हो गई और इस ने रिफ़अत व बुलन्दी पा ली। जिन्न चोरी छुपे सुनने से रोक दिये गए। आस्मानी फिरिश्ते रूक़अ व सुजूद करने लगे। हज़रते सय्यिदतुना आमिना رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا हसीनो जमील हबीबे खुदा صَلَّى اللَّهُ तَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ को जनम दे कर कामयाबी व कामरानी के मक़ाम पर फ़ाइज़ हो गई और हज़रते सय्यिदतुना हलीमा सा'दिय्या رَضِيَ اللَّهُ तَعَالَى عَنْهَا जैसी दानिश मन्द खातून आप صَلَّى اللَّهُ तَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ को दूध पिलाने से मुशरफ़ हुई और काइनात भर में मद्दाहीन (या'नी ता'रीफ़ करने वालों) की ज़बानें शुक्र अदा करते हुए आप صَلَّى اللَّهُ तَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की ता'रीफ़ व तौसीफ़ में मगन हो गई।

وَصَلَّى اللَّهُ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِهِ وَصَحْبِهِ وَسَلَّمَ



## बयान 44 : अल्लाह वाली की बातें हम्दे बारी तआला :

तमाम ता'रीफें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये जिस के फ़ज़्लो करम का हर देहाती व शहरी ने ए'तिराफ़ किया। हर सुब्हो शाम आने वाला उस के दरियाए करम से सैराब हुवा। उसी के फ़ज़्लो करम से सुब्ह के बादल बरसे। चमकते दिन और रहनुमाई करने वाली रात ने उस की हम्द के साथ तस्बीह की। उस की हिक्मत से काइनात ने अहले अक्ल व दानिश के लिये गुफ़्तू की। चुनान्वे, आस्मान कहते हैं : “पाक है वोह ज़ात जिस ने अपनी कुदरत से हमें बुलन्द किया और अपनी कुदरत से रोके रखा, वोही हमारा सहारा है।” ज़मीन कहती है : “पाक है वोह ज़ात जिस ने हर शै को इल्म के ए'तिबार से वुस्अत दी और फ़र्शें ज़मीन को पानी पर बिछाया और इसे चलने के लिये नर्म किया पहाड़ कहता है : “पाक है वोह ज़ात जिस ने मेरे पहलूओं को कुव्वत दी और मेरी बुन्यादें और जड़ें मजबूत कीं। दरया कहता है : “पाक है वोह ज़ात जिस ने मुझे अपनी मरज़ी से चलाया, मुझ से नहरें जारी कीं और मुझे सैराब करने की कुव्वत अता की जो मेरा क़स्द कर के मेरे पास आए।” अरिफ़ कहता है : “पाक है वोह ज़ात जिस ने अपनी तरफ़ मेरी रहनुमाई फ़रमाई और अपनी ज़ात को मेरी पनाह गाह बनाया। अलीम कहता है : “पाक है वोह ज़ात जिस ने मेरे फ़हम के दरवाज़े खोले और दीन के अहकाम सीखने और मेहनत की तौफीक़ अता फ़रमाई। अबिद कहता है : “पाक है वोह ज़ात जिस ने मुझे अपना मक्सूद पाने के लिये रातों को बेदार रखा और मुझे ज़िक्र व अज़कार और वज़ाइफ़ के लिये क़ियाम की तौफीक़ अता फ़रमाई।” गुनहगार कहता है : “पाक है वोह ज़ात जिस ने मेरे गुनाहों पर बा ख़बर होने के बावजूद मेरी पर्दा पोशी फ़रमाई और मुझे “रहमत” से ढांपे रखा। जब मैं ने तौबा की तो “रहमत” से मुतवज्जेह हुवा और मुझे हिदायत दी और मेरे बुरे हाल के बा'द मुझे नेक बनने की सआदत अता फ़रमाई।

पाक है वोह जो मा'बूद है, वोह हर रात आस्माने दुन्या पर (अपनी शान के मुताबिक़) नुज़ूल फ़रमाता है और निदा देता है : “है कोई तौबा करने वाला ? कि मैं उस की तौबा क़बूल करूं और उस की तरफ़ नज़रे रहमत फ़रमाऊं। है कोई इस्तिग़फ़ार करने वाला ? कि मैं उस की मग़फ़िरत करूं और उसे हिदायत का रास्ता दिखाऊं। है कोई दुआ करने वाला ? कि मैं उस की दुआ क़बूल करूं और उस के लिये अपने फ़ज़ल का वा'दा पूरा फ़रमाऊं। है कोई मांगने वाला ? कि मैं उसे मुंह मांगा अता करूं और उस पर अपने इन्आम व इकराम की बारिश बरसाऊं।”

ऐ ग़ाफ़िल इन्सान ! कब तक इस ग़फ़लत और सरकशी में रहेगा ? नदामत और मा'ज़िरत के क़दमों पर खड़ा हो जा और अपने प्यासे दिल का इलाज मुसलसल ज़िक्रे इलाही عَزَّوَجَلَّ से कर और सहरी के वक़्त आजिजी व इन्किसारी के साथ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर खड़ा हो जा।



हज़रते सय्यिदुना षौबान رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है, “हुज़ूर सय्यिदुल मुबल्लिगीन, जनाबे रहमतुल्लिल आलमीन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने जन्नत निशान है : “मेरा हौज़ अदन से अमाने बलका तक फैला हुआ है, उस का पानी दूध से ज़ियादा सफ़ेद और शहद से ज़ियादा मीठा है और उस के प्याले आस्मानी सितारों की ता’दाद की बराबर हैं। जिस ने इस से एक बार पी लिया उस के बा’द वोह कभी प्यासा न होगा। उस पर लोगों में सब से पहले फुकरा व मुहाजिरीन हाज़िर होंगे।” अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ’जम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ वोह कौन लोग हैं ?” इरशाद फ़रमाया : “उन के बाल गुबार आलूद और कपड़े मैले होते हैं, वोह ऐश पसन्द औरतों से निकाह नहीं करते और उन के लिये दरवाज़े नहीं खोले जाते।”

(المسنद للإمام أحمد بن حنبل، حديث ثوبان، الحديث ٢٢٤٣٠، ج ٨، ص ٣٢١)

येही लोग औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام और **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ के खास बन्दे हैं।

### हम ने तेरी खातिर शराबी का दिल धो दिया :

हज़रते सय्यिदुना सर्री सक़ती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنَى एक शख्स के पास से गुज़रे जो नशे की हालत में ज़मीन पर पड़ा हुआ था। उस के मुंह से शराब बह रही थी। इस हालत में भी उस के मुंह से **अब्बाह**, **अब्बाह** की सदाएं बुलन्द हो रही थीं। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने अपनी निगाह ऊपर उठाई और अर्ज़ की : “या **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ येह बन्दा ऐसी हालत में तेरा ज़िक्र कर रहा है जो तेरे शायाने शान नहीं।” फिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने पानी मंगवाया, उस का मुंह धोया और उस को छोड़ कर चले गए। जब उस को होश आया तो लोगों ने उसे बताया कि हज़रते सय्यिदुना सर्री सक़ती عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللهِ الْغَنَى तशरीफ़ लाए थे। तुझे इस हालत में देखा तो तेरा मुंह धो कर चले गए। वो सख़्त पशेमान व शर्मसार हुआ और अपने नफ़्स को मलामत करते हुए कहने लगा : “ऐ नफ़्स ! तेरी बरबादी है, अगर तू **अब्बाह** عَزَّ وَजَلَّ और उस के औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام से भी हया नहीं करेगा तो किस से करेगा ?” फिर उस ने नादिम हो कर अपने गुनाहों से तौबा कर ली। रात को जब हज़रते सय्यिदुना सर्री सक़ती عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللهِ الْغَنَى मढ़वे आराम हुए तो ख़्वाब में किसी की आवाज़ सुनी : “ऐ सर्री ! तू ने हमारी रिज़ा के लिये उस शराबी का मुंह धोया तो हम ने तेरे लिये उस का दिल धो दिया है।” जब हज़रते सय्यिदुना सर्री सक़ती عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللهِ الْغَنَى सुब्ह बेदार हुए तो उस आदमी के मुतअल्लिक़ मा’लूम किया। आखिरे कार उसे एक मस्जिद में नमाज़ पढ़ते हुए पाया। जब वोह नमाज़ से फ़ारिग़ हुआ तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने इस्तिफ़सार फ़रमाया : “ऐ मेरे भाई ! कैसे हो ?” उस ने अर्ज़ की, या सय्यिदी ! आप मेरा हाल क्यूं पूछते हैं ? हालांकि उस करीम ज़ात جَلَّ جَلَالُهُ ने आप को आगाह फ़रमा दिया है कि उस ने आप की वजह से मेरा दिल धोया और मेरी हालत सुधारी।” आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने पूछा : “तुम्हें किस ने बताया ?” जवाब दिया : “जिस ने अपने ग़ैर से मेरा दिल पाक किया और मुझ पर अफ़्वा करम और रिज़ामन्दी की बारिश बरसाई।”



मिट्टी में लौट पौट हो रहे हैं। मैं ने पूछा : “आप यहां क्यूं बैठे हैं ?” जवाब दिया : “मैं ऐसी कौम के पास हूं जो मुझे अजिय्यत नहीं देती और अगर मैं गाइब हो जाऊं तो मेरी गीबत नहीं करती।” मैं ने अर्ज की : “रोटी महंगी हो गई है !” तो फ़रमाने लगे : “**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मुझे कोई परवाह नहीं, अगरचें एक दाना दीनार का मिले। हम पर उस की इबादत फ़र्ज़ है जैसा कि उस ने हमें हुक्म दिया है और हमारा रिज़्क उस के ज़िम्मए करम पर है जैसा कि उस ने हम से वा'दा कर रखा है।”

**ऐसी जन्नत कैद ख़ाना है जिस में कुर्बे इलाही عَزَّوَجَلَّ न हो :**

मन्कूल है कि हज़रते सय्यिदतुना राबिआ अदविय्या बसरिय्या رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهَا एक आदमी के पास से गुज़रीं जो जन्नत और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की उस में तय्यार की गई ने'मतों को याद कर रहा था। आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهَا ने उसे फ़रमाया : “ऐ शख्स ! कब तक खुदाए वाहिद عَزَّوَجَلَّ को छोड़ कर उस के ग़ैर में मशगूल रहेगा ? अरे ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझ पर रहम फ़रमाए ! तुझे चाहिये कि पहले कुर्बे इलाही عَزَّوَجَلَّ को देख फिर जन्नत को देख।” उस ने कहा : “ऐ पागल औरत ! यहां से चली जा।” आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهَا ने फ़रमाया : “मैं पागल नहीं। पागल तो वोह है जो मेरी बात न समझ सका। ऐ जन्नत के मोहताज ! ऐसी जन्नत तो एक कैद ख़ाना है जिस में कुर्बे इलाही عَزَّوَجَلَّ हासिल न हो और ऐसी दोज़ख़ भी उस के लिये तो एक बाग़ है जिस का मूनिस व ग़म गुसार **अल्लाह** तआला हो। क्या तुम देखते नहीं कि जब हज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ السَّلَام जन्नत में थे तो खाते पीते और मसरूर थे। जब दरख़्त का फल खाने से मन्अ किया गया तो वोही जन्नत आप عَلَيْهِ السَّلَام के लिये कैद बन गई। और हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम खलीलुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام ने जब अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ का राज़ महफूज़ रखा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें अपना मुक़रब व पसन्दीदा बना लिया और जब आप عَلَيْهِ السَّلَام को आग में दाख़िल किया गया तो वोह आप عَلَيْهِ السَّلَام पर सलामती और ठन्डक बन गई।”

**सय्यिदुना हबीब नज्जार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَفَّار की ईमान अपरोज़ हिक्कायत :**

हज़रते सय्यिदुना हबीब नज्जार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَفَّAR मुत्तकी परहेज़गार, औलियाए किराम में से थे। आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهَا रात भर इबादत करते और दिन भर रोज़ा रखते और इफ़्तार के लिये जो खाना हाज़िर किया जाता वोह दूसरों को दे देते और खुद सारी रात **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में भूके ही कियाम में गुज़ार देते। जब सुब्ह करीब होने को आती तो आजिज़ी व इन्किसारी भरे अल्फ़ाज़ में अर्ज़ करते : ‘मैं गुफ़लत के समन्दरों में डूबा रहा और गुनाह के मैदानों में चलता रहा। अपनी रुस्वाई के दामन को खींचता रहा। बद बख़्ती के जंगलों में हैरान व सरगर्दा भटकता रहा। या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तेरे सिवा मेरा कोई सहारा नहीं, मैं तेरे दर के इलावा कोई दर नहीं पाता कि जहां इल्तिजा करूं। या इलाही عَزَّوَجَلَّ येह तेरा ज़लील, गुनहगार और बीमार बन्दा तेरे बाबे



करम पर हाज़िर है और तुझ से पनाह का तलबगार है। हाए मेरी हलाकत व बरबादी ! अगर तू ने मुझ पर रहम न फ़रमाया और हाए मेरी तवील हसरत ! अगर तू ने मुझे मुआफ़ न फ़रमाया ।” फिर आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى सजदा करते और तुलूए फ़ज़ तक सर न उठाते। जब नमाज़ पढ़ लेते तो तिलावत शुरू कर देते और बाक़ी दिन में पूरा कुरआन पढ़ लेते। जब आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى ने इन्तिक़ाल फ़रमाया तो सूरए यासीन की येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमा रहे थे :

﴿إِنِّي إِذَا لَفَى ضَلَالٍ مُّبِينٍ﴾ (प २३, यिस: २६)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक जब तो मैं खुली गुमराही में हूँ।<sup>(1)</sup>

तदफ़ीन के बा'द जब फ़िरिशतों ने आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى से ईमान के मुतअल्लिक सुवाल किया तो आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى ने इस से अगली आयते मुबारका तिलावत की :

﴿إِنِّي آمَنْتُ بِرَبِّكُمْ فَاسْمِعُونِ﴾ قِيلَ ادْخُلِ الْجَنَّةَ قَالَ يَلَيْتُ قَوْمِي يَعْلَمُونَ بِمَا غَفَرَ لِي رَبِّي وَجَعَلَنِي مِنَ الْمُكْرَمِينَ﴾ (प २३, यिस: २७-२८)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** मुक़रर, मैं तुम्हारे रब्ब पर ईमान लाया तो मेरी सुनो। इस से फ़रमाया गया कि जन्नत में दाख़िल हो। कहा : किसी तरह मेरी कौम जानती जैसी मेरे रब्ब ने मेरी मग़फ़िरत की और मुझे इज़्ज़त वालों में किया।<sup>(2)</sup>

يَهْ سُبْحَنَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ येह कैसे अज़ीम लोग हैं जो अपने महबूबे हकीकी के हुज़ूर मुनाजात करते रहते हैं जब कि लोग सो रहे होते हैं, येह इश्क व महब्बत का भारी बोझ उठाते हैं। जब रात की तारीकी छ जाए तो खुश होते हैं। येही लोग कल जन्नतुल खुल्द में ने'मतें लूटेंगे और अपने महबूबे हकीकी के वजहे करीम का जल्वा देखेंगे।

इन की शान कुरआने पाक यूं बयान फ़रमाता है :

①.....मुफ़स्सिरे शहीर खलीफ़ आ'ला हज़रत सदरुल अफ़ज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तहूत फ़रमाते हैं : “जब हबीब नज्जार ने अपनी कौम से ऐसा नसीहत आमज़ कलाम किया तो वोह लोग इन पर यक्बारागी टूट पड़े और इन पर पथराव शुरू किया और पाउं से कुचला यहां तक कि क़त्ल कर डाला। क़ब्र इन की अन्ताकिय्या में है। जब कौम ने इन पर हम्ला शुरू किया तो इन्हों ने हज़रते ईसा عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي के फ़िरस्तादों से बहुत जल्दी कर के येह कहा।”

②.....मुफ़स्सिरे शहीर खलीफ़ आ'ला हज़रत सदरुल अफ़ज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तहूत फ़रमाते हैं : “जब वोह जन्नत में दाख़िल हुए और वहां की ने'मतें देखीं। हबीब नज्जार ने येह तमन्ना की, कि उन की कौम को मा'लूम हो जाए कि **अल्लाह** तआला ने हबीब की मग़फ़िरत की और इकराम फ़रमाया ताकि कौम को मुरसलीन के दीन की तरफ़ रग़बत हो। जब हबीब क़त्ल कर दिये गए तो **अल्लाह** रब्बुल इज़्ज़त का उस कौम पर ग़ज़ब हुवा और उन की अकूबत व सज़ा में ताख़ीर न फ़रमाई गई। हज़रते जिब्रईल को हुक्म हुवा और उन की एक ही हौलनाक आवाज़ से सब के सब मर गए।”

﴿٣﴾ اَلَا اِنَّ اَوْلِيَاءَ اللّٰهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا

هُم يَحْزَنُوْنَ ۝ (پ ۱۱ یونس: ۶۲)

तर्जमए कन्जुल ईमान : सुन लो बेशक **अल्लाह** के वलियों पर न कुछ खौफ है न कुछ गम । (1)

## कुरआन सुन कर रह निकल गई :

हजरते सय्यिदुना अबू बक्र बिन अब्दुल्लाह عليه ورحمة الله फरमाते हैं : “एक दफ़ा मैं इराक के जंगलों में कई दिन तक हैरान व सरगर्दा घूमता फिरता रहा । मैं ने कोई इन्सान न पाया जिस को अपना दोस्त बना सकूं । इसी दौरान चलते चलते मेरी नज़र किसी अरबी के बालों वाले खैमे पर पड़ी तो मैं उस की तरफ बढ़ा । जब मैं दरवाज़े के पास पहुंचा तो उस पर पर्दा लटक रहा था । मैं ने सलाम किया । अन्दर से निकाब पोश बुढ़ी ख़ातून ने पूछा : “कहां से आए हो ? मैं ने कहा : “मक्का से ।” पूछा : “कहां का इरादा है ?” मैं ने कहा : “शाम का ।” येह सुन कर वोह कहने लगी : “मैं देखती हूं कि तुम्हारा इस तरह घूमना बेकार लोगों के घूमने की तरह है । एक गोशे में ठहर कर **अल्लाह** की इबादत क्यों नहीं करते यहां तक कि तुम्हें मौत आ जाए । फिर तुम उस खाने के टुकड़े को देखो जो तुम ने खाया है, अगर येह हलाल है तो तेरे बातिन को रोशन कर देगा ।” फिर उस ने पूछा : “क्या तुम कुरआने पाक पढ़ते हो ?” मैं ने जवाब दिया : “जी हां ।” तो उस ने मुझे सूरए फुरक़ान की आखिरी आयात पढ़ने की फ़रमाइश की । जब मैं ने तिलावत की तो एक ज़ोरदार चीख़ निकली और वोह बेहोश हो गई । जब इफ़ाका हुवा तो मुझे कहने लगी, “जब तुम ने इन आयाते बय्यिनात की तिलावत की तो इन की क़िराअत की वजह से मेरे रोंगटे खड़े हो गए ।” फिर उस ने दोबारा पढ़ने

①....मुफ़स्सिरे शहीर ख़लीफ़ आ'ला हज़रत सदरुल अफ़ज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عليه ورحمة الله الهادي तपसीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं : “वली की अस्ल विला से है जो कुर्ब व नुसरत के मा'ना में है । वलियुल्लाह वोह है जो फ़राइज़ से कुर्ब इलाही हासिल करे और इताअते इलाही में मशगूल रहे और उस का दिल नूरे जलाले इलाही की मा'रिफ़त में मुस्तग़रक़ हो । जब देखे दलाइले कुदरते इलाही को देखे और जब सुने **अल्लाह** की आयतें ही सुने और जब बोले तो अपने रब्ब की घना ही के साथ बोले और जब हरकत करे ताअते इलाही में हरकत करे और जब कोशिश करे उसी अम्र में कोशिश करे जो ज़रीअए कुर्ब इलाही हो, **अल्लाह** के ज़िक्र से न थके और चश्मे दिल से खुदा के सिवा ग़ैर को न देखे । येह सिफ़त औलिया की है । बन्दा जब इस हाल पर पहुंचता है तो **अल्लाह** उस का वली व नासिर और मुईन व मददगार होता है । मुतकल्लिमीन कहते हैं वली वोह है जो ए'तिकादे सहीह मन्नी बर दलील रखता हो और आ'माले सालेहा शरीअत के मुताबिक़ बजा लाता हो । बा'ज अरिफ़ीन ने फ़रमाया कि “विलायत नाम है कुर्ब इलाही और हमेशा **अल्लाह** के साथ मशगूल रहने का । जब बन्दा इस मक़ाम पर पहुंचता है तो इस को किसी चीज़ का खौफ़ नहीं रहता और न किसी शै के फ़ौत होने का ग़म होता है । हज़रते इब्ने अब्बास رضي الله تعالى عنهم ने फ़रमाया कि “वली वोह है जिस को देखने से **अल्लाह** याद आए । येही तबरी की हदीष में भी है इब्ने जैद ने कहा कि “वली वोही है जिस में वोह सिफ़त हो जो इस आयत में मज़कूर है ।” **اَلَّذِينَ اٰمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ** ” या'नी ईमान व तक्वा दोनों का जामेअ हो । बा'ज उ-लमा ने फ़रमाया कि “वली वोह है जो ख़ालिस **अल्लाह** के लिये महबूब करें । औलिया की येह सिफ़त अहादीषे कपीरा में वारिद हुई है । बा'ज अकाबिर ने फ़रमाया : वली वोह है जो ताअत से कुर्ब इलाही की तलब करते हैं और **अल्लाह** तआला करामत से उन की कारसाज़ी फ़रमाता है या वोह जिन की हिदायत का बुरहान के साथ **अल्लाह** कफ़ील हो और वोह उस का हक्के बन्दगी अदा करने और उस की ख़ल्फ़ पर रहम करने के लिये वक्फ़ हो गए । येह मअानी और इबारात अगर्चे जुदागाना हैं लेकिन इन में इख़िलाफ़ कुछ भी नहीं है क्यूंकि हर एक इबारात में वली की एक एक सिफ़त बयान कर दी गई है जिसे कुर्ब इलाही हासिल होता है येह तमाम सिफ़ात उस में होती हैं । विलायत के दर्जे और मरातिब में हर एक ब क़दर अपने दर्जे के फ़ज़्लो शरफ़ रखता है ।”

का कहा तो उस की वोही हालत हो गई जैसे पहले हुई थी। काफ़ी देर उस पर येही हालत तारी रही। मैं ने दिल में कहा कि देखो तो सही येह फ़ौत हो गई है या ज़िन्दा है? लेकिन फिर मैं वापस पलट गया और अभी निस्फ़ मील ही चला था कि मुझे वादी में कुछ अरब नज़र आए। दो लड़के मेरी तरफ़ दौड़ते हुए आए, उन के साथ एक लड़की भी थी। उन में से एक ने मुझ से पूछा : “क्या आप फुलां जंगल में बालों वाले खैमे से हो कर आए हो?” मैं ने कहा, “हां।” कहने लगा, “क्या आप ने बुढ़ी औरत के पास कुरआने करीम पढ़ा था?” मैं ने जवाब दिया, “हां।” तो वोह बोला : “रब्बे का'बा की क़सम ! वोह इन्तिक़ाल कर चुकी है।” मैं उन लड़कों के साथ चल दिया और खैमे के पास आया। लड़की अन्दर दाख़िल हुई और बुढ़ी औरत के चेहरे से कपड़ा हटा कर देखा तो वोह विसाल फ़रमा चुकी थी। मैं उस लड़के के अन्दाज़े से बहुत हैरान हुवा और उस लड़की से पूछा : “येह दो लड़के कौन हैं?” तो उस ने बताया : “येह दोनों क़बीला जा'फ़र के मुअज़्ज़ज़ीन में से हैं। और येह मरने वाली इन की बहन है। तीस साल से इस ने किसी से कलाम नहीं किया। जब येह इस वादी में थे तो येह अ़लाहिदा हो गई और जंगल में तन्हा अपना खैमा बसा लिया और तीन दिन में सिर्फ़ एक बार खाना खाती थी।”

**ऐ मेरे मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** कब तक तुम फ़ानी लज़्ज़ात में खोए रहोगे और बाक़ी रहने वाली नेकियों से गाफ़िल रहोगे? ग़नीमत के अवक़ात में जल्दी करो, लगज़िशों को समझो और शुब्हात से कनारा कशी इख़्तियार करो। क्या बार बार मौत का ए'लान करने वालों ने तुम्हें बेदार न किया? क्या नेक मर्दों और औरतों के वाक़िआत ने तुम्हें जनजोड़ा नहीं? जब दिन आता है तो वोह (नेक मर्द और औरतें) लज़्ज़ाते दुन्या को तर्क (बाईकाट) करते हुए गुज़ारते हैं और जब रात आती है तो महब्बत भरी आवाज़ों से आहो फुगां करते हैं और अपने महबूबे हकीक़ी عَزَّوَجَلَّ के सिवा किसी की तरफ़ मुतवज्जेह नहीं होते। येही लोग हकीक़ी सरदार हैं।

**बरग़द के दरख़्त से खजूरें उतार लीं :**

हज़रते सय्यिदुना अब्दुर्रहमान क़रशी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَلِي फ़रमाते हैं : एक बार मैं हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَعْظَم के साथ सफ़र पर रवाना हुवा। हम हिजाज़ के रास्ते पर तीन दिन तक सफ़र करते रहे और हमें खाने पीने को कुछ न मिला। मैं भूक से बेचैन हो गया। मेरे चेहरे पर भूक के तअष्पूरात देख कर आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ बैठ गए। मैं भी पहलू में बैठ गया। अचानक एक ताज़ा रोटी मेरी गोद में गिरी। आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने उसे उठाया और मुझे फ़रमाया : “खाओ।” मैं ने आधी रोटी खाई और ख़ूब सैर हो गया और फिर सफ़र शुरू कर दिया। दौराने सफ़र हम एक काफ़िले के पास पहुंचे। शेर ने उन का रास्ता रोक रखा था। हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَعْظَم आगे बढ़े और शेर से फ़रमाया : “ऐ शेर ! अगर हमारे मुतअल्लिक़ तुझे कोई हुक्म है तो उस को कर गुज़र, वरना यहां से चला जा।” येह सुनते ही शेर पीछे मुड़ कर भाग गया। काफ़िले वाले आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अर्ज़ गुज़ार हुए :



“या सय्यिदी ! हमें कोई दुआ इरशाद फ़रमाइये जो हम पढ़ा करें क्यूंकि हम सफ़र में बहुत ख़ौफ़ महसूस करते हैं ।” आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने उन्हें येह दुआ इरशाद फ़रमाई :

“اللَّهُمَّ احْرُسْنَا بِعَيْنَيْكَ الَّتِي لَا تَنَامُ وَارْحَمْنَا بِقُدْرَتِكَ الَّتِي لَا يُضَامُ وَارْحَمْنَا بِقُدْرَتِكَ الَّتِي لَا تُهْلِكُ وَأَنْتَ رَجَاؤُنَا” या'नी ऐ **अल्लाह** अपनी नज़रे रहमत से हमारी हिफ़ाज़त फ़रमा जो कभी सोती नहीं और हमें अपने सायए रहमत की पनाह में रख कि जिस पर ज़र्ज़ बराबर जुल्म नहीं किया जा सकता और हम पर अपनी कुदरत के शायाने शान रहमो करम फ़रमा कि हम हलाक न हों, हमारी उम्मीदों का मर्कज़ व महवर तेरी ही ज़ात है ।”

हज़रते सय्यिदुना अब्दुर्रहमान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : “कुछ अर्से बा'द मेरी अहले क़ाफ़िला में से एक शख्स से मुलाक़ात हुई तो उस ने मुझे बताया : “**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! जब से हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَعْظَم ने हमें येह दुआ सिखाई है हम इसे पढ़ते हैं तो कोई दरिन्दा, चोर और ख़ौफ़ज़दा करने वाली चीज़ हमारे क़रीब नहीं आती ।”

हज़रते सय्यिदुना अब्दुर्रहमान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : “फिर वोह शख्स दरयाई सफ़र में हमारे साथ क़श्ती पर सुवार हो गया । अचानक तेज़ हवा चल पड़ी, पानी की मौज़ें बुलन्द होना शुरू हो गई, क़श्ती डोलने लगी और हमें डूबने का ख़ौफ़ लाहिक् हो गया । लोग रोने धोने और आहो बुका करने लगे । तो उस शख्स ने कहा : “ऐ लोगो ! हमारे साथ इस क़श्ती में एक परहेज़गार शख्स मौजूद है, और उस में फुलां फुलां खूबियां पाई जाती हैं । आओ ! उस से दुआ करवाएं ।” चुनान्चे, हम हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَعْظَم के पास हाज़िर हुए तो देखा कि आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ क़श्ती के एक कोने में चादर से सर ढांपे लैटे हुए हैं । हम ने आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को बेदार किया और अर्ज़ की : “हुज़ूर ! देखिये तो सही लोग किस क़दर मुश्किल में हैं !” आप عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ ने अपना सर उठाया और अर्ज़ की : “या **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ तूने हमें अपनी कुदरत दिखा दी, अब अपनी मेहरबानी भी दिखा दे ।” अभी आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की बात पूरी भी न हुई थी कि हवा थम गई, मौज़ें पुर सुकून हो गई और क़श्ती अपनी मा'मूल की रफ़्तार से चलने लगी ।”

हज़रते सय्यिदुना अब्दुर्रहमान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : “जब हम क़श्ती से उतरे तो चन्द दिन पैदल चलते रहे । मैं भूक की शिद्दत से मरने के क़रीब हो गया तो आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से भूक की शिकायत की । आप عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ ने एक थेला लिया और बरगद के दरख़्त पर चढ़ कर थेला भर लिया । फिर जब नीचे आए तो वोह ख़ूब सूरत खजूरें थीं । मैं ने ऐसी लज़ीज़ खजूरें पहले कभी न खाई थीं । रात के सफ़र में मुझे प्यास लगी तो मैं ने फिर अर्ज़ की । आप عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ ने फ़रमाया : “पियो ।” मैं ने देखा कि एक डोल हवा में लटका हुवा था । उस में ऐसा पानी था कि जिसे पी कर मैं न सिर्फ़ उस वक़्त सैराब हुवा बल्कि उस के बा'द शदीद गर्मियों में रोज़ा रखता तो मुझे कोई भूक प्यास न लगती ।” **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! येह **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ के चुने हुए बन्दे हैं ।

عَزَّوَجَلَّ क्या शान है उन लोगों की जिन्होंने अपने दिल में महबूबे हकीकी के सिवा किसी के लिये कोई जगह न छोड़ी, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के खौफ से अपने रुख्सारों पर आंसू बहाए और अपनी सांसों को हसरतों के साथ मिला दिया और बारगाहे रब्बुल इज्जत में यूँ अर्ज गुज़ार हुए : “ऐ वोह जात ! सिफात जिस का इहाता नहीं कर सकती ! आफात के जुल्म से हमारी हिफाजत फ़रमा ।”

अगर तुम उन्हें देखोगे तो पाओगे कि इन्तिहाई महबूबत ने उन्हें तराश दिया है और सोज़िशे इश्क ने उन्हें कमज़ोर व निढाल कर दिया है मगर उन्होंने किसी तकलीफ़ या नुक्सान की शिकायत न की । उन का महबूबे हकीकी عَزَّوَجَلَّ उन से सरगोशी करता है और सहूरी की पुर कैफ़ घड़ियों में उन का खैर मक़दम करता है । वोह रात के घोड़े पर सुवार हो कर (मा'रिफ़त के मैदान में) चल पड़ते हैं और सुब्ह को रात के सफ़र की ता'रीफ़ करते हैं ।

وَصَلَّى اللّٰهُ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِهِ وَصَحْبِهِ أَجْمَعِينَ



### खाने को शैतान से बचाओ

खाने से पहले बिस्मिल्लाह न पढ़ने से खाने में बे बरकती होती है । हज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं : “हम नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ख़िदमते सरापा रहूमत में हाज़िर थे । खाना पेश किया गया, इब्तिदा में इतनी बरकत हम ने किसी खाने में नहीं देखी मगर आख़िर में बड़ी बे बरकती देखी । हम ने अर्ज की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ऐसा क्यूँ हुवा ? इरशाद फ़रमाया : हम सब ने खाना खाते वक़्त बिस्मिल्लाह पढ़ी थी । फिर एक शख्स बिगैर बिस्मिल्लाह पढ़े खाने को बैठ गया, उस के साथ शैतान ने खाना खा लिया । (شرح السنة، الحديث: २८११، ج ६، ص ६२)

बयान : 45

महबूबते इलाही عز وجل का बयान

हम्मे बारी तआला :

तमाम ता'रीफें **अल्लाह** عز وجل के लिये हैं जो अपना जिक्र करने वाले का चर्चा करता है और अपना शुक्र करने वालों का शुक्र कबूल करता है। उस की रहमत अव्वल व आखिर को शामिल है। उस की ने'मत मोमिन व काफिर सब की क़िफ़ालत करती है। उस ने अपनी इबादत के लिये अहले महबूबत की आंखें बेदार फ़रमाई। पस सआदत मन्द वोह है जिस ने उस की इताअत में शब बेदारी की। उस ने अहले महबूबत को अपनी महबूबत में मशगूल किया और उस की मशक़त व तकलीफ़ को उन के लिये लुफ़ का सामान कर दिया और उन के तक्वा की महक ने दुन्या को खुशबूदार और मुअत्तर कर दिया। रात के वक़्त जब लोग गाफ़िल हो जाते हैं तो वोह अपने कुर्ब की तन्हाइयों में अपने प्यारों से कलाम फ़रमाता हैं। कितनी बड़ी कामयाबी है उन की जिन से उन का महबूब रात की तन्हाई में हम कलाम होता है। वोह अपनी ख़्वाहिशात के बागात को अपने ग़म के बहते आंसूओं से सैराब करते हैं तो उन के ईमान की क्यारियां चमकदार और हरी भरी हो जाती हैं। वोह दुन्या से बे रग़बती और आखिरत में रग़बत कर के अपनी ख़्वाहिशात की खेती बरबाद करते हैं तो उन का बागे तक्वा आबाद हो जाता है। **अल्लाह** عز وجل उन्हें अपने जमाल का मुशाहदा करने के लिये बुलाता और अपने जूदो नवाल से वाफ़िर हिस्सा अता फ़रमाता है।

पाकी है उसे जो हमेशा से अज़मत व कुदरत वाला, हिल्म वाला और बख़्शने वाला है, मेहरबान है, अपने बन्दों के गुनाह छुपाता और अपनी ग़ालिब कुव्वत से नाफ़रमान बन्दों पर क़हरो ग़ज़ब फ़रमाता है। अपने फैसलों में अद्ल व इन्साफ़ करता है, किसी से डरता नहीं, किसी पर जुल्म नहीं करता। जो उस के साथ नेकियों का मुआमला करता है वोह उसे नफ़अ बख़्शता है हालांकि वोह पहले नाकाम था। जो अपनी ज़िल्लत व मोहताजी में उस की पनाह त़लब करता है तो वोह उस की कमज़ोरी पर रहम फ़रमाता है और उस की मोहताजी को दूर फ़रमा देता है और जो ला इल्मी में उस की नाफ़रमानी कर बैठता है और फिर उस की बारगाह में अपने इस बुरे फ़ैल से तौबा करता है तो वोह उस के गुनाहों को मुआफ़ फ़रमा देता है। जो उसे अपने दिल में याद करता है वोह उसे अपने फ़िरिशों की मुक़द्दस जमाअत में याद करता है। “يا نَبِيَّ اللَّهِ مَنْ تَقَرَّبَ مِنِّي شَبْرًا تَقَرَّبْتُ مِنْهُ ذِرَاعًا” (جامع الترمذی، کتاب الدعوات، باب فی حسن الظن بالله، الحديث ۳۶۰۳، ص ۲۲) “मैं उस से एक हाथ क़रीब हो जाता हूं।” जो शख़्स सख़्ती व मुसीबत में उस को पुकारता है तो वोह उसे मुश्किल दूर फ़रमाने वाला और ज़िल्लत व रुस्वाई में मदद करने वाला पाता है।

मैं अव्वल व आखिर **अल्लाह** عز وجل की हम्द करता हूं और गवाही देता हूं कि उस के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, वोह यक्ता है, उस का कोई शरीक नहीं, येह ऐसी ख़ालिस गवाही है जिस में صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कोई शक व शुबा नहीं। और मैं गवाही देता हूं कि हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद मुस्तफ़ा



**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दे और उस के रसूल हैं, ऐसे रसूल कि जिन की मुबारक उंगलियों से पानी के चश्मे जारी हो गए। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर, आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर उस वक्त तक अपनी रहमत नाज़िल फ़रमाए जब तक हुदी ख़्वां गुनगुनाता रहे और रात को सफ़र करता रहे।” (آمِينَ يَا رَبَّ الْعَالَمِينَ)

## महब्बत क्या है ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जान लीजिये ! बेशक महब्बत फ़िक्रों से कट जाने और राजों से छुप जाने का नाम है। यह ख़वास के लिये नूर और अ़वाम के लिये नार (या'नी आग) है। जिस दिल में महब्बत दाख़िल हो जाती है उसे बेचैन व मुज़्तरिब और परेशान कर देती है। हुब्ब (या'नी महब्बत) दो हुरूफ़ का मजमूआ है, हा और बा, हा “حَف” से है या'नी काटना और बा “بَاء” से है या'नी आज़माइश। यह हक़ीक़तन एक बीमारी है जिस से दवा और शिफ़ा निकलती है। इस की इब्तिदा “फ़ना” और इन्तिहा “बक़ा” है। इस में बज़ाहिर मशक़क़त व कुल्फ़त है मगर बातिनी तौर पर सुरूर व लज़ज़त। यह नावाक़िफ़ों के लिये बद बख़्ती व बीमारी है जब कि अ़रिफ़ों के लिये शिफ़ा व तन्दुरुस्ती।

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿۱﴾ قُلْ هُوَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هٰدٰى وَّشَفَاعَةُ الْوَالِدِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ فِىْ اٰذَانِهِمْ وَقُرُوْهُ وَّهُوَ عَلَيْهِمْ عَمٰى ط  
(پ ۲۴، خم السجدة: ۴۴)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तुम फ़रमाओ वोह ईमान वालों के लिये हिदायत और शिफ़ा है और वोह जो ईमान नहीं लाते उन के कानों में टेन्ट (रूई) है और वोह उन पर अन्धापन है।

## काफ़िर और मोमिन की महब्बत का मुवाज़ना :

महब्बत करने वालों की कई अक़साम हैं लेकिन मुहिब्बीने इलाही ही ख़ालिस व मुख़्लिस लोग हैं।

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने महब्बत निशान है :

﴿۲﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اَشَدُّ حُبًّا لِلّٰهِ ط (البقرة: ۱۶۵)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और ईमान वालों को **अल्लाह** के बराबर किसी की महब्बत नहीं।

इस आयते मुबारका की तफ़्सीर में हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं :  
“اَشَدُّ” से मुराद पुख़्तगी और हमेशगी है। इस की वजह येह है कि मुशरिकीन जब किसी बुत की पूजा करते और फिर कोई उस से अच्छी चीज़ देख लेते तो उस बुत को छोड़ कर उस से अच्छी चीज़ की पूजा पाट शुरूअ कर देते (या'नी काफ़िर अपनी महब्बतें बदलते रहते थे जब कि मोमिन सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से महब्बत करते हैं)।” (التفسير الكبير للامام فخر الدين الرازى، سورة البقرة، تحت الآية: ۱۶۵، ج ۲، ص ۱۷۸)

हज़रते सय्यिदुना इकरमा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ इस की तफ़्सीर यूँ करते हैं : अहले ईमान आख़िरत में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से बहुत महब्बत करेंगे।

हज़रते सय्यिदुना क़तादा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : “बेशक काफ़िर मुसीबत के वक़्त अपने (बातिल) मा'बूद से मुंह मोड़ लेता है और **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की तरफ़ मुतवज्जेह हो जाता है।”

(التفسير البغوى، سورة البقرة، تحت الآية ١٦٥، ج ١، ص ٩٤)

चुनान्वे, इस बारे में **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿٣﴾ فَإِذَا زَكَّيْنَا فِي الْفُلْكِ دَعَوَا اللَّهَ

مُخْلِصِينَ لَهُ الْوَلَدَيْنِ ط (ب ٢١، العنكبوت: ٦٥)

मज़ीद इरशाद फ़रमाता है :

﴿٤﴾ وَإِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فِي الْبَحْرِ ضَلَّ مَنْ

تَدْعُونَ إِلَّا إِلَهًا ج (ب ١٥، بنی اسرائیل: ٦٧)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : फिर जब कश्ती में सुवार होते हैं **अल्लाह** को पुकारते हैं एक उसी पर अ़कीदा ला कर।

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जब तुम्हें दरिया में मुसीबत पहुंचती है तो उस के सिवा जिन्हें पूजते हैं सब गुम हो जाते हैं।

मोमिन मुसीबत व खुशहाली और आजमाइश वगैरा किसी हाल में भी बारगाहे खुदावन्दी से ए'राज़ नहीं करता और उस पर किसी को तरजीह नहीं देता। हज़रते सय्यिदुना हसन फ़रमाते हैं : काफ़िर वासिते के साथ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की इबादत करते हैं जैसा कि वोह अपने बुतों के मुतअल्लिक कहते थे, जिसे **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ कुरआने मुबीन में यूं बयान फ़रमाता है :

﴿٥﴾ مَا نَعْبُدُهُمْ إِلَّا لِيُقَرِّبُونَا إِلَى اللَّهِ زُلْفَى ط

(प २३, الزمر: ३)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : कहते हैं हम तो इन्हें सिर्फ़ इतनी बात के लिये पूजते हैं कि येह हमें **अल्लाह** के पास नज़दीक कर दें।

और वोह येह भी कहते थे :

﴿٦﴾ هَؤُلَاءِ شُفَعَاؤُنَا عِنْدَ اللَّهِ ط (प ११, یونس: १८)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : येह **अल्लाह** के यहां हमारे सिफ़ारिशी हैं।

इस के बर अक्स अहले ईमान किसी वासिते के बिगैर **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की इबादत करते हैं, जिसे **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ यूं बयान फ़रमाता है :

﴿٧﴾ وَالَّذِينَ آمَنُوا أَشَدُّ حُبًّا لِلَّهِ ط (प २, البقرة: १७०)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और ईमान वालों को **अल्लाह** के बराबर किसी की महब्बत नहीं।

मन्कूल है, “क्यूंकि मुशरिकीन अपने बहुत से (बातिल) मा'बूदों से महब्बत करते हैं इस लिये उन की महब्बत मुशतरक है जब कि मोअमिनीन की महब्बत गैर मुशतरक है क्यूंकि वोह सिर्फ़ खुदाए वाहिद عَزَّ وَجَلَّ से महब्बत करते हैं।”

और एक कौल येह है कि “कुफ़र के मा'बूद इन के अपने ही बनाए होते हैं जब कि मोअमिनीन **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ ही को हर चीज़ का बनाने वाला और हर मख़्लूक का ख़ालिक मानते हैं।”

और बा'ज ने कहा कि “काफ़िर बूतों को देख कर उन से महब्बत करते हैं जब कि मुसलमान बिन देखे **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ से महब्बत करते हैं बल्कि **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ पर ईमान भी बिन देखे लाते हैं। इसी वजह से इन से आख़िरत में दीदारे इलाही عَزَّ وَजَلَّ का वा'दा फ़रमाया गया।”

एक कौल यह भी है कि “**اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ” इस लिये फ़रमाया क्यूंकि पहले **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ ने ईमान वालों से महब्वत की फिर मोअमिनीन ने उस से महब्वत की और जिस की महब्वत की गवाही मा’बूदे बर हक़ **عَزَّ وَجَلَّ** दे यकीनन उस की महब्वत ज़ियादा कामिल और ज़ियादा सहीह है।”  
(تفسير البغوى، سورة البقرة، تحت الآية ١٦٥، ج ١، ص ٩٥)

चुनान्चे, **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ इन की शान में इरशाद फ़रमाता है :

﴿٨﴾ **يُحِبُّهُمْ وَيُحِبُّونَهُ** (پ ٦، المائدة: ٥٤) **तर्जमए कज़्ज़ुल ईमान** : कि वोह **اَللّٰهُ** के प्यारे और **اَللّٰهُ** उन का प्यारा ।

हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान षौरी **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِ** **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ के इस फ़रमाने आलीशान : **تَرْجَمَہ کَزْزُلِ اِیْمَان** : ऐ रब्ब हमारे ! और हम पर वोह बोझ न डाल जिस की हमें सहार (बरदाश्त) न हो ।” की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : “यहां बोझ से मुराद महब्वत है।” (تفسير البغوى، سورة البقرة، تحت الآية ٢٨٦، ج ١، ص ٩٠، “سفيان” بدله “ابراهيم”)

हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा **رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ** फ़रमाते हैं, हुज़ूर सय्यिदुल मुबल्लिगीन, जनाबे रहूमतुल्लिल आलमीन **صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इरशाद फ़रमाया : हज़रते सय्यिदुना दावूद **يُؤْتِي دُأَا كِيَا كَرَتَ :**

**اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْأَلُکَ حُبَّکَ وَحُبَّ مَنْ یُّحِبُّکَ وَالْعَمَلُ الَّذِیْ یُتْلَفِیْ حُبَّکَ، اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ حُبَّکَ اَحَبَّ اِلَیَّ مِنْ نَفْسِیْ وَاهْلِیْ وَمِنْ الْمَاءِ الْبَارِدِ**

या’नी ऐ मेरे **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ मैं तुझ से तेरी महब्वत और उस की महब्वत का सुवाल करता हूं जो तुझ से महब्वत करता है और उस के अमल की महब्वत का सुवाली हूं जो मुझे तेरी महब्वत तक पहुंचा दे । ऐ मेरे रब्ब मुझे अपनी जान, घर वालों और ठन्डे पानी से ज़ियादा अपनी महब्वत अता फ़रमा ।” (आमीन)

(جامع الترمذی، کتاب الدعوات، باب دعاء داؤد علیه السلام..... الخ، الحديث ٣٤٩٠، ص ١١٠)

हज़रते सय्यिदुना अनस **رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ** से मरवी है, सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख्तार, बिइज़ने परवर दगार **صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का फ़रमाने महब्वत निशान है : “जो **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ से महब्वत करता है उसे चाहिये कि वोह मुझ से महब्वत करे और जो मुझ से महब्वत करता है उसे चाहिये कि वोह मेरे सहाबा से महब्वत करे और जो मेरे सहाबा से महब्वत करता है उसे चाहिये कि वोह कुरआने पाक से महब्वत करे और जो कुरआने पाक से महब्वत करता है उसे चाहिये कि वोह मसाजिद से महब्वत करे । क्यूंकि येह ऐसी इमारतें हैं जिन्हें **اَلलّٰهُ** तआला ने बनाने और पाक रखने का हुक्म दिया और इन में बरकत रखी । पस येह खैरो बरकत वाली जगहें हैं और उन के रहने वाले भी खैरो बरकत में हैं । येह पसन्दीदा जगहें हैं और उन में रहने वाले भी पसन्दीदा हैं । येह लोग अपनी नमाज़ों में होते हैं तो **اَلलّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ उन की ज़रूरत पूरी फ़रमाता है । येह मसाजिद में होते हैं तो **اَلलّٰهُ** عَزَّ وَजَلَّ उन को अपने मक़सिद में कामयाबी अता फ़रमाता है ।”

(المحروحين لابن حبان، الرقم ١٢٧١، ابو معمر، ج ٢، ص ٥١٠، بتغییر)



हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं, शहनशाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़े रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिषाल, बीबी आमिना के लाल  
 صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : “**اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ जब किसी बन्दे से से महब्बत फ़रमाता है तो हज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام को बुलाता है।” और एक रिवायत में है कि हज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام को हुक्म फ़रमाता है “जमीनो आस्मान वालों में ए’लान कर दे कि **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ फुलां बन्दे से महब्बत फ़रमाता है लिहाज़ा तुम भी उस से महब्बत करो।” फिर उस की महब्बत ज़मीन में उतारी जाती है। वोह पानी में पड़ती है तो उसे नेक व बद सभी पीते हैं तो वोह भी उस से महब्बत करने लगते हैं। और जब **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ किसी बन्दे को नापसन्द करता है तो हज़रते जिब्राईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام को इस के बरअक्स हुक्म फ़रमाता है पस नेक व बद सभी उस से नफ़रत करने लगते हैं।”

(صحيح البخارى، كتاب التوحيد، باب كلام الرب تعالى..... الخ، الحديث ٤٢٨٥، ص ٢٢٢ - صحيح مسلم، كتاب البر، باب اذا احب الله تعالى عبداً..... الخ، الحديث ٢٦٣٤، ص ١٣٤، مفهوماً)

### महबूबाने खुदा رَحْمَتُهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی औलिया عَزَّ وَجَلَّ

मज़कूरा हदीषे पाक की रोशनी में हज़रते सय्यिदुना षाबित बुनानी قُدِّسَ سِرُّهُ التَّوْرَانِ के मुतअल्लिक़ एक हिक्कयत मन्कूल है : “एक दफ़आ आप رَحْمَةُ اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ किसी ख़लीफ़ा के पास तशरीफ़ ले गए। ख़लीफ़ा ने पूछा : “आप के दोस्त हज़रते सय्यिदुना सालेह यमानी رَحْمَةُ اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ क्या दुआ मांगते हैं ?” आप رَحْمَةُ اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ ने फ़रमाया, उन की दुआ येह है : “**اَللّٰهُمَّ حَبِّبْنِيْ اِلٰی قُلُوْبِ عِبَادِكَ**” या’नी ऐ **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ अपने बन्दों के दिलों में मेरी महब्बत डाल दे।” ख़लीफ़ा ने इस दुआ को कमतर समझते हुए कहा : “येह उन की दुआ है।” तो हज़रते सय्यिदुना षाबित رَحْمَةُ اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ ने फ़रमाया : “क्या तुम इस को मा’मूली ख़याल करते हो ? मैं ने हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को फ़रमाते सुना, आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि मैं ने हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक को इरशाद फ़रमाते सुना : **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ जब किसी बन्दे से महब्बत फ़रमाता है तो हज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام को निदा फ़रमाता है कि “मैं फुलां बन्दे से महब्बत करता हूं, तुम भी उस से महब्बत करो।” फिर आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने आख़िर तक हदीष बयान फ़रमाई।  
 (صحيح البخارى، كتاب الادب، باب المقة من الله، الحديث ٦٠٤٠، ص ٥١٠) हदीषे पाक सुनते ही ख़लीफ़ा कहने लगा : “मैं **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ की बारगाह में तौबा करता हूं और उस की तरफ़ रुजूअ करता हूं। हज़रते सय्यिदुना षाबित رَحْمَةُ اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ फ़रमाते हैं : “दूसरे दिन जब मैं हज़रते सय्यिदुना सालेह यमानी قُدِّسَ سِرُّهُ التَّوْرَانِ की ख़िदमत में हाज़िर हुवा तो आप رَحْمَةُ اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ खड़े हो गए और मुआनका फ़रमा कर (या’नी गले मिल कर) मेरे सर का बोसा लिया और इरशाद फ़रमाया : “**اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ तुझे खुश करे जैसे मुझे खुश किया। गुज़श्ता रात मैं ने ख़्वाब में देखा गोया मैं मस्जिदे नबवी وَالسَّلَام على صاحبِهَا الصَّلوة وَالسَّلَام में बारगाहे मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में हाज़िर हूं और आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमा रहे हैं : “अपनी इस दुआ **“اَللّٰهُمَّ حَبِّبْنِيْ اِلٰی قُلُوْبِ الْعِبَادِ”** पर काइम रहो। क्यूक़ि औलियाए किराम رَحْمَتُهُمُ اللّٰهُ तَعَالٰی किसी बन्दे से तभी महब्बत करते हैं जब कि **اَللّٰهُ** عَزَّ وَजَلَّ भी उस से महब्बत करता हो।” फिर मैं ने आप رَحْمَةُ اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ को सलाम किया और वापस लौट आया।”

हज़रते सय्यिदुना अबू यज़ीद बिस्तामी قُدّس سرّہ الرّیّانی यूँ दुआ मांगा करते थे : “या **अल्लाह** عزّ وجلّ मुझे उस बात पर तअज़्जुब नहीं कि मैं तुझ से महब्वत करता हूँ क्योंकि मैं तो तेरा एक हकीर बन्दा हूँ। बल्कि तअज़्जुब तो इस बात पर है कि तू मुझ से महब्वत फ़रमाता है हालांकि तू मालिक और कुदरत वाला है।”

हज़रते सय्यिदुना यह्या बिन मुआज़ राजी عليه رَحْمَةُ اللّٰهِ التّامّٰنى यूँ मुनाजात करते थे : “या **अल्लाह** عزّ وجلّ यह बात अजीब नहीं कि एक हकीर बन्दा अपने रब्बे जलील عزّ وجلّ से महब्वत करता है। बल्कि अजीब बात तो यह है कि रब्बे जलील عزّ وجلّ अपने ज़लील बन्दे से महब्वत करता है।”

बा'ज अरिफ़ीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْهِمِّيْن फ़रमाते हैं : “महब्वत एक दाना है जो दिलों की ज़मीन में काशत किया जाता और अक्लों के पानी से सैराब किया जाता है। पस वोह पानी की सफ़ाई और ज़मीन की उमदगी के मुताबिक़ फल देता है। जैसा कि **अल्लाह** عزّ وجلّ इरशाद फ़रमाता है,

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान** : और जो अच्छी ज़मीन है उस का सब्ज़ा **अल्लाह** के हुक्म से निकलता है और जो ख़राब है उस में नहीं निकलता मगर थोड़ा ब मुशिकल। وَالْبَلَدُ الطَّيِّبُ يَخْرِجُ نَبَاتُهُ بِإِذْنِ رَبِّهِ ج وَالَّذِي خُبْتُ لَا يَخْرِجُ إِلَّا نَكِدًا ط (٨٠, ٨١, ٨٢, ٨٣, ٨٤, ٨٥, ٨٦, ٨٧, ٨٨, ٨٩, ٩٠, ٩١, ٩٢, ٩٣, ٩٤, ٩٥, ٩٦, ٩٧, ٩٨, ٩٩, ١٠٠, ١٠١, ١٠٢, ١٠٣, ١٠٤, ١٠٥, ١٠٦, ١٠٧, ١٠٨, ١٠٩, ١١٠, ١١١, ١١٢, ١١٣, ١١٤, ١١٥, ١١٦, ١١٧, ١١٨, ١١٩, ١٢٠, ١٢١, ١٢٢, ١٢٣, ١٢٤, ١٢٥, ١٢٦, ١٢٧, ١٢٨, ١٢٩, ١٣٠, ١٣١, ١٣٢, ١٣٣, ١٣٤, ١٣٥, ١٣٦, ١٣٧, ١٣٨, ١٣٩, ١٤٠, ١٤١, ١٤٢, ١٤٣, ١٤٤, ١٤٥, ١٤٦, ١٤٧, ١٤٨, ١٤٩, ١٥٠, ١٥١, ١٥٢, ١٥٣, ١٥٤, ١٥٥, ١٥٦, ١٥٧, ١٥٨, ١٥٩, ١٦٠, ١٦١, ١٦٢, ١٦٣, ١٦٤, ١٦٥, ١٦٦, ١٦٧, ١٦٨, ١٦٩, ١٧٠, ١٧١, ١٧٢, ١٧٣, ١٧٤, ١٧٥, ١٧٦, ١٧٧, ١٧٨, ١٧٩, ١٨٠, ١٨١, ١٨٢, ١٨٣, ١٨٤, ١٨٥, ١٨٦, ١٨٧, ١٨٨, ١٨٩, ١٩٠, ١٩١, ١٩٢, ١٩٣, ١٩٤, ١٩٥, ١٩٦, ١٩٧, ١٩٨, ١٩٩, ٢٠٠, ٢٠١, ٢٠٢, ٢٠٣, ٢٠٤, ٢٠٥, ٢٠٦, ٢٠٧, ٢٠٨, ٢٠٩, ٢١٠, ٢١١, ٢١٢, ٢١٣, ٢١٤, ٢١٥, ٢١٦, ٢١٧, ٢١٨, ٢١٩, ٢٢٠, ٢٢١, ٢٢٢, ٢٢٣, ٢٢٤, ٢٢٥, ٢٢٦, ٢٢٧, ٢٢٨, ٢٢٩, ٢٣٠, ٢٣١, ٢٣٢, ٢٣٣, ٢٣٤, ٢٣٥, ٢٣٦, ٢٣٧, ٢٣٨, ٢٣٩, ٢٤٠, ٢٤١, ٢٤٢, ٢٤٣, ٢٤٤, ٢٤٥, ٢٤٦, ٢٤٧, ٢٤٨, ٢٤٩, ٢٥٠, ٢٥١, ٢٥٢, ٢٥٣, ٢٥٤, ٢٥٥, ٢٥٦, ٢٥٧, ٢٥٨, ٢٥٩, ٢٦٠, ٢٦١, ٢٦٢, ٢٦٣, ٢٦٤, ٢٦٥, ٢٦٦, ٢٦٧, ٢٦٨, ٢٦٩, ٢٧٠, ٢٧١, ٢٧٢, ٢٧٣, ٢٧٤, ٢٧٥, ٢٧٦, ٢٧٧, ٢٧٨, ٢٧٩, ٢٨٠, ٢٨١, ٢٨٢, ٢٨٣, ٢٨٤, ٢٨٥, ٢٨٦, ٢٨٧, ٢٨٨, ٢٨٩, ٢٩٠, ٢٩١, ٢٩٢, ٢٩٣, ٢٩٤, ٢٩٥, ٢٩٦, ٢٩٧, ٢٩٨, ٢٩٩, ٣٠٠, ٣٠١, ٣٠٢, ٣٠٣, ٣٠٤, ٣٠٥, ٣٠٦, ٣٠٧, ٣٠٨, ٣٠٩, ٣١٠, ٣١١, ٣١٢, ٣١٣, ٣١٤, ٣١٥, ٣١٦, ٣١٧, ٣١٨, ٣١٩, ٣٢٠, ٣٢١, ٣٢٢, ٣٢٣, ٣٢٤, ٣٢٥, ٣٢٦, ٣٢٧, ٣٢٨, ٣٢٩, ٣٣٠, ٣٣١, ٣٣٢, ٣٣٣, ٣٣٤, ٣٣٥, ٣٣٦, ٣٣٧, ٣٣٨, ٣٣٩, ٣٤٠, ٣٤١, ٣٤٢, ٣٤٣, ٣٤٤, ٣٤٥, ٣٤٦, ٣٤٧, ٣٤٨, ٣٤٩, ٣٥٠, ٣٥١, ٣٥٢, ٣٥٣, ٣٥٤, ٣٥٥, ٣٥٦, ٣٥٧, ٣٥٨, ٣٥٩, ٣٦٠, ٣٦١, ٣٦٢, ٣٦٣, ٣٦٤, ٣٦٥, ٣٦٦, ٣٦٧, ٣٦٨, ٣٦٩, ٣٧٠, ٣٧١, ٣٧٢, ٣٧٣, ٣٧٤, ٣٧٥, ٣٧٦, ٣٧٧, ٣٧٨, ٣٧٩, ٣٨٠, ٣٨١, ٣٨٢, ٣٨٣, ٣٨٤, ٣٨٥, ٣٨٦, ٣٨٧, ٣٨٨, ٣٨٩, ٣٩٠, ٣٩١, ٣٩٢, ٣٩٣, ٣٩٤, ٣٩٥, ٣٩٦, ٣٩٧, ٣٩٨, ٣٩٩, ٤٠٠, ٤٠١, ٤٠٢, ٤٠٣, ٤٠٤, ٤٠٥, ٤٠٦, ٤٠٧, ٤٠٨, ٤٠٩, ٤١٠, ٤١١, ٤١٢, ٤١٣, ٤١٤, ٤١٥, ٤١٦, ٤١٧, ٤١٨, ٤١٩, ٤٢٠, ٤٢١, ٤٢٢, ٤٢٣, ٤٢٤, ٤٢٥, ٤٢٦, ٤٢٧, ٤٢٨, ٤٢٩, ٤٣٠, ٤٣١, ٤٣٢, ٤٣٣, ٤٣٤, ٤٣٥, ٤٣٦, ٤٣٧, ٤٣٨, ٤٣٩, ٤٤٠, ٤٤١, ٤٤٢, ٤٤٣, ٤٤٤, ٤٤٥, ٤٤٦, ٤٤٧, ٤٤٨, ٤٤٩, ٤٥٠, ٤٥١, ٤٥٢, ٤٥٣, ٤٥٤, ٤٥٥, ٤٥٦, ٤٥٧, ٤٥٨, ٤٥٩, ٤٦٠, ٤٦١, ٤٦٢, ٤٦٣, ٤٦٤, ٤٦٥, ٤٦٦, ٤٦٧, ٤٦٨, ٤٦٩, ٤٧٠, ٤٧١, ٤٧٢, ٤٧٣, ٤٧٤, ٤٧٥, ٤٧٦, ٤٧٧, ٤٧٨, ٤٧٩, ٤٨٠, ٤٨١, ٤٨٢, ٤٨٣, ٤٨٤, ٤٨٥, ٤٨٦, ٤٨٧, ٤٨٨, ٤٨٩, ٤٩٠, ٤٩١, ٤٩٢, ٤٩٣, ٤٩٤, ٤٩٥, ٤٩٦, ٤٩٧, ٤٩٨, ٤٩٩, ٥٠०, ॥

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رضي الله تعالى عنه से मरवी है, हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूर मुजस्सम, शाहे बनी आदम صلى الله تعالى عليه و آله و سلم का फ़रमाने आलीशान है : “तीन ख़स्लतें जिस शख्स में होंगी वोह इस्लाम की हलावत पाएगा : (1).....**अल्लाह** عزّ وجلّ और उस का रसूल صلى الله تعالى عليه و آله و سلم उस के नज़दीक सब से ज़ियादा महबूब हों (2).....किसी से महब्वत करे तो सिर्फ़ **अल्लाह** عزّ وجلّ के लिये करे और (3).....इस्लाम लाने के बा'द दोबारा कुफ़्र में लौटने को इस तरह नापसन्द करे जैसे आग में डाले जाने को नापसन्द करता है।”

(صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب بیان خصال من.....الخ، الحديث ١٦٥، ص ٦٨٧)

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رضي الله تعالى عنه से मरवी है कि सरकारे वाला तबार, हम बेकसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार बिइज़ने परवर दगार صلى الله تعالى عليه و آله و سلم का फ़रमाने राहत निशान है : **अल्लाह** عزّ وجلّ बरोजे क़ियामत फ़रमाएगा : “मेरी खातिर बाहम महब्वत करने वाले कहां हैं ? आज मैं उन्हें अपने सायए (रहूमत) में जगह अता फ़रमाऊंगा, आज मेरे सायए (रहूमत) के सिवा कोई साया नहीं।” (1127) (صحیح مسلم، کتاب البر، باب فضل الحب في الله تعالى، الحديث 2066، ص 1127)

हज़रते सय्यिदुना मुआज़ رضي الله تعالى عنه रिवायत फ़रमाते हैं, मैं ने नबिय्ये करीम, रऊफ़रहीम صلى الله تعالى عليه و آله و سلم को फ़रमाते सुना कि **अल्लाह** عزّ وجلّ इरशाद फ़रमाता है : “मेरे लिये आपस में महब्वत करने वालों के लिये (बरोजे क़ियामत) नूर के मिम्बर होंगे जिन पर अम्बिया व शुहदा भी रश्क करेंगे।” (جامع الترمذی، ابواب الزهد، باب ماجاء في الحب في الله، الحديث 2390، ص 1892)

## अज़ीम ख़ादिमा :

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन हुसैन رحمته الله تعالى عليه फ़रमाते हैं : “मेरे पास एक अज़मी ख़ादिमा थी। एक रात वोह मट्वे आराम थी फिर मैं ने देखा कि उस ने उठ कर वुजू किया और

नमाज़ के लिये खड़ी हो गई। जब नमाज़ से फ़ारिग हुई तो सर ब सुजुद हो गई और अर्ज़ करने लगी : “ऐ मेरे मौला ! उस महबूबत की क़सम जो तुझे मुझ से है ! मेरी बख़्शिश फ़रमा दे ।” मैं ने कहा : “**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझ पर रहम करे ! यूँ न कह, बल्कि यूँ कह : उस महबूबत की क़सम जो मुझे तुझ से है ! क्यूँकि हो सकता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझ से महबूबत न करता हो ।” कहने लगी : “ऐ मेरे आका ! अगर उस को मुझ से महबूबत न होती तो वोह आप को सुला कर मुझे अपने हुज़ूर खड़ा न करता । उस की महबूबत है कि मुझे मुशरिकीन के मुल्क से निकाला और मोअमिनीन में दाख़िल फ़रमा दिया ।” यह सुन कर मैं ने कहा : “जा, मैं ने तुझे रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये आज़ाद किया ।” तो वोह कहने लगी : “ऐ मेरे आका ! आप ने मेरे साथ अच्छा नहीं किया, पहले मेरे लिये दो अज़्र थे, अब सिर्फ़ एक रह गया ।” फिर उस की ज़ोरदार चीख़ बुलन्द हुई और कहने लगी : “येह तो मेरे छोटे मालिक का आज़ाद करना है, हकीकी मालिक عَزَّوَجَلَّ का आज़ाद करना कैसा होगा ?” फिर वोह नीचे गिरी और उस की रूह कफ़से उन्सुरी से परवाज़ कर गई ।

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! येह मुहिब्बीन की सिफ़ात हैं जिन के दिल रब्बुल आलमीन عَزَّوَجَلَّ की महबूबत में मुअल्लक़ (या'नी अटके) रहते हैं । किसी मुहिब्ब से पूछा गया : “तू ने महबूबत को कैसा पाया ?” जवाब दिया : “मैं ठाठें मारते हुए समन्दर के साहिल पर खड़ा हुवा जिस का दूसरा कनारा नहीं मिलता, तो मुझे उस ज़ात ने कुर्ब बख़्शा जो फ़रमाता है : “مَنْ تَقَرَّبَ مِنِّي شَبْرًا تَقَرَّبْتُ مِنْهُ ذِرَاعًا” पस मैं उस के हुक्म से सुवारिये महबूबत पर सुवार हो गया तो रूह ने पुकारने वाले को जवाब दिया :

﴿۱۰﴾ بِسْمِ اللَّهِ مَجْرَهَا وَمُرْسَهَا (پ ۱۲، هود: ۴۱)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह** के नाम पर इस का चलना और इस का ठहरना । (1)

जब मैं बहरे महबूबत के दरमियान अथवा गहराइयों में पहुंचा तो मैं उस के रास्तों में परेशान हो गया । मुझ पर येही कैफ़ियत तारी रही यहां तक कि महबूबे हकीकी عَزَّوَجَلَّ ने मुझे “يُجِبُّهُمْ وَيُجِيبُونَهُ” या'नी वोह **अल्लाह** के प्यारे और **अल्लाह** उन का प्यारा ।” के पाकीज़ा इजतिमाअ में पहुंचा दिया । और अब मैं मक़ामे “बक़ा” और मक़ामे “फ़ना ” के दरमियान हूं यहां तक कि फ़ना को पा लूं ।”

**अनोखी मुनाजात :**

हज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान दारानी قُدَسِ سِرُّهُ التُّورَانِ अपनी मुनाजात में अर्ज़ करते : “ऐ मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ अगर तूने मेरे गुनाहों का मुआख़ज़ा किया तो मैं तुझ से बख़्शिश त़लब करूंगा । अगर तू ने मेरे बुख़ल के सबब पूछ गछ की तो मैं तुझ से ज़ूदो करम का सुवाल करूंगा । अगर तूने

①....मुफ़सिरे शहीर, खलीफ़े आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ाजिल, सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तहूत फ़रमाते हैं : “इस में ता'लीम है कि बन्दे को चाहिये जब कोई काम करना चाहे तो उस को बिस्मिल्लाह पढ़ कर शुरू करे ताकि उस काम में बरकत हो और वोह सबबे फ़लाह हो । ज़ह्हाक़ ने कहा कि “जब हज़रते नूह عَلَيْهِ السّلام चाहते थे कि कश्ती चले तो बिस्मिल्लाह फ़रमाते थे, कश्ती चलने लगती थी और जब चाहते थे कि ठहर जाए बिस्मिल्लाह फ़रमाते थे, ठहर जाती थी ।”



नाफरमानी पर मेरा हिसाब किताब लिया तो मैं तुझ से एहसान तलब करूंगा। अगर तू ने मुझे आग में दाखिल किया तो मैं अहले दोज़ख़ से कहूंगा कि मैं रब्ब عَزَّوَجَلَّ से महबूबत करता हूँ।” तो आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى को आवाज़ आई : “ऐ अबू सुलैमान ! हम तुझे जहन्नम में नहीं बल्कि जन्नत में दाखिल करेंगे कि तू अहले जन्नत को हमारी महबूबत के मुतअल्लिक़ बताए, अहले दोज़ख़ को हमारी महबूबत से आगाह न करे क्योंकि महबूबत करने वालों का ठिकाना जन्नत और दुश्मनों का ठिकाना जहन्नम है।”

**ऐ मेरे इस्लामी भाइयो !** महबूबत दुल्हनों की मानिन्द है और इस का हक्के मेहर जानों की कुरबानी है। इस की वजह से गर्दन और सर झुके रहते हैं। ये दिलों पर अपनी तजल्ली डालती और गदला पन दूर करती है। ये अरिफ़ के लिये नूर है तो जाहिल के लिये आग। जब महबूबत की पाकीज़ा शराब अहले सफ़ा को उकसाती है तो अहले वफ़ा के दिल हाज़िर हो जाते हैं। पस ज़िक्रे इलाही عَزَّوَجَلَّ इस का साज़ है तो तौहीदे बारी तआला इस का गुलदस्ता है। शुक्र इस का तर्जमान है तो हैबत इस की पहचान। अहले महबूबत के लिये बाग़ विसाले यार के दरवाज़े खोले जाएंगे, वोह सुब्हो शाम उस की ने'मतों से लुत्फ़ अन्दोज़ होंगे, महबूबे हकीकी عَزَّوَجَلَّ बिला हिजाब उन पर तजल्ली फ़रमाएगा और खुश रू मलाइका हर दरवाज़े से उन के पास हाज़िर होंगे। पस कुरआने हकीम की तिलावत करने वालों के लिये खुश ख़बरी और अच्छा ठिकाना है। और खौफ़े खुदा عَزَّوَجَلَّ रखने वाले और बुरे हिसाब से डरने वाले जन्नत में आरास्ता पैरास्ता सफ़ों से टेक लगाए होंगे। क्या ही अच्छा षवाब है उन का।

### जन्नत में याकूत का घर :

हज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ बिन हुसैन رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं, मैं ने हज़रते सय्यिदुना जुन्नून मिस्री رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى को फ़रमाते सुना : “मैं मिस्र की एक सड़क से गुज़र रहा था कि अचानक एक ख़ातून पर मेरी नज़र पड़ी जो चादर ओढ़े हुए न थी। मैं ने उसे कहा : “ऐ औरत ! क्या तुझे बिगैर चादर घूमते हुए हया नहीं आती ?” तो उस ने कहा : “ऐ जुन्नून ! जब चेहरे पर ज़र्दी ग़ालिब हो तो चादर का क्या काम ?” मैं ने पूछा : “तेरे चेहरे पर किस चीज़ की ज़र्दी छाई हुई है ?” जवाब दिया : “महबूबते इलाही عَزَّوَجَلَّ की।” मैं ने कहा : “ऐ औरत ! तेरे चेहरे से मा'लूम होता है कि तू ने शराब पी रखी है।” उस ने जवाब दिया : “ऐ फुज़ूल बात करने वाले ! चुप रह। मैं ने उस की महबूबत का जाम पिया, मसरूर हो कर सोई और महबूबते इलाही عَزَّوَجَلَّ के नशे में चूर हो कर सुब्ह की।” मैं ने कहा : “ऐ ख़ातून ! क्या मैं तुझ से कुछ मुफ़ीद बातें या वसियत हासिल कर सकता हूँ ?” तो वोह कहने लगी : “ऐ जुन्नून ! ख़ामोशी को लाज़िम पकड़ यहां तक कि लोग तुझे परेशान समझने लगें और अब्लाह عَزَّوَجَلَّ के दिये हुए रिज़क़ पर राज़ी रह, जन्नत में तेरे लिये याकूत का घर बनाया जाएगा।”

ऐ मा'रिफ़ते हक़ के तालिब ! जब महबूब की हवा दिल के खानों में चलती है तो यह महबूब की मुलाकात से ही राहत पाती है और तू सहरी के वक्त अहले मा'रिफ़त की मुनाजात सुनेगा तो उन में से हर एक ज़बाने ह़ाल से इसी के मुताबिक़ जवाब देगा जो अहवाल उस पर गुज़र रहे होंगे । पस अगर उस से पूछा जाए कि “ऐ ग़मगीन इन्सान ! तू हम तक कैसे पहुंचा ?” तो वोह जवाब में कहेगा : “मैं ने तवक्कुल और इश्के इलाही عَزَّوَجَلَّ को अपनाया तो मुझे पता भी न चला कि मुझे उस की हुज़ूरी मिल गई ।” और अगर उस से सुवाल किया जाए कि “ऐ मौत से खौफ़ खाने वाले ! तू ने मौत को कैसा पाया ?” तो वोह कहेगा : “मैं ने महबूबे हकीकी عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा में तक्लीफ़ को खुशगवार जाना । पस मैं ने उस के फ़ज़ल को सबक़त ले जाने वाला और अपने हौसले को पीछे रह जाने वाला पाया । मुझे उस से कामयाबी की उम्मीद क्यूं कर न हो हालांकि मैं उस की रहमत पर यकीन रखता हूं ।” और अगर उस से पूछा जाए कि “ऐ ज़ाहिद ! अब्बाह عَزَّوَجَلَّ के लिये खर्च करने वाली जगहों के मुतअल्लिक़ तेरा अहद कैसा है ?” तो उस का जवाब होगा : “मैं ने खैर के कामों में खर्च करने के मुतअल्लिक़ उस का यह फ़रमाने आलीशान सुना :

﴿مَاعِنْدَكُمْ يَنْفَدُ وَمَاعِنْدَ اللَّهِ بَاقٌ ط

(प १६, النحل ९६)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जो तुम्हारे पास है हो चुकेगा और जो अब्बाह के पास है हमेशा रहने वाला ।

तो जो कुछ मेरे पास था मैं ने इसे उस के लिये छोड़ दिया जो रब्ब عَزَّوَجَلَّ के पास है । मैं ने फ़ना हो जाने वाली चीज़ों से तवज्जोह हटा कर बाकी रहने वाली चीज़ों पर तवज्जोह दी ।” और अगर उस से सुवाल किया जाए कि “ऐ हम से महबूबत करने वाले ! तेरी हमारी बारगाह तक कैसे रसाई हुई ?” तो वोह कहेगा : “मैं ने बारगाहे खुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ से “يُحِبُّهُمْ” का जाम पिया जिस के नशे से “وَيُحِبُّونَهُ” की ख़ल्वत में खो गया और इस जामे इश्क़ की वजह से मुझ पर ग़शी तारी हो गई फिर जल्वए महबूब से ही इफ़ाका हुवा ।”

**भेड़िये बकरियों के मुहाफ़िज़ बन गए :**

हज़रते सय्यिदुना रबीअ बिन खैषम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَعْظَم के मुतअल्लिक़ मन्कूल है कि आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ हमेशा शब बेदारी करते थे । एक दिन आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की बेटी ने अर्ज़ की : “ऐ अब्बा जान ! अब्बाह عَزَّوَجَلَّ की मख़्लूक़ में सब से अफ़ज़ल कौन है ?” तो आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने फ़रमाया : “हमारे आका व मौला हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद रसूलुल्लाह وَآلِهِ وَسَلَّمَ यह सुन कर वोह कहने लगी : “हुरमते मुस्तफ़ा صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का वासिता ! आज रात आप सो जाएं ।” तो आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने बारगाहे खुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में अर्ज़ की : “ऐ मेरे रब्ब عَزَّوَجَلَّ तू जानता है कि मुझे शब बेदारी नींद से ज़ियादा प्यारी है लेकिन मेरी बेटी ने मुझे हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का वासिता दिया है इस बिना पर आज मुझे सोना पड़ेगा ।” चुनान्चे, आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ महवे आराम हो गए । ख़्वाब में देखा कि बसरा में एक मैमूना नामी ख़ादिमा है जो

जन्नत में इन की बीवी होगी। सुब्ह हुई तो आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ बसरा खाना हो गए। जब अहले बसरा ने आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की आमद का शोहरा सुना तो शानदार इस्तक़्बाल किया। जब आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ शहर में दाखिल हुए तो लोगों से पूछा : “क्या यहां कोई मैमूना नामी औरत है ?” लोगों ने अर्ज की : “आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ उस दीवानी मैमूना का पूछते हैं जो दिन में बकरियां चराती है और इस की मजदूरी से खजूर खरीदती है फिर उसे फुकरा में सदका कर देती है। रात को छत पर चढ़ जाती है और फिर कषरते गिर्या व ज़ारी और चीखो पुकार से किसी को सोने नहीं देती।” आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने पूछा : वोह अपनी आहो ज़ारी में क्या कहती है ?” तो उन्होंने ने जवाब दिया : वोह कहती है :

عَجَبًا لِلْمُحِبِّ كَيْفَ يَنَامُ كُلُّ نَوْمٍ عَلَى الْمُحِبِّ حَرَامٌ

तर्जमा : तअज्जुब है महब्वत करने वाले पर ! वोह कैसे सो जाता है। हालांकि मुहिब्व पर तो नींद हाराम हो जाती है।

येह सुन कर आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने फरमाया : “**अब्बाह** عزّ وجلّ की कसम ! येह दीवानों का कलाम नहीं, मुझे उस के पास ले चलो।” लोगों ने अर्ज की : “वोह जंगल में बकरियां चरा रही है।” आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ उस की तरफ़ तशरीफ़ ले गए तो देखा कि उस ने एक मेहराब बना रखा है और उस में नमाज़ पढ़ रही है। आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने देखा कि बकरियां चर रही हैं और भेड़िये उन की हिफ़ाज़त कर रहे हैं। आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ येह मन्ज़र देख कर बहुत हैरान हुए। आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फरमाते हैं कि “जब वोह नमाज़ से फ़ारिग़ हुई तो मैं ने कहा : السلام عليك ऐ मैमूना !” उस ने जवाब दिया : “وَعَلَيْكَ السَّلَامُ, ऐ रबीअ !” मैं ने पूछा : “तुम मेरा नाम कैसे जानती हो ?” उस ने कहा : سُبْحَانَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ मुझे उस ज़ात ने आप का नाम बताया है जिस ने गुज़श्ता रात ख़्वाब में आप को ख़बर दी कि मैं आप की जौजा हूं। लेकिन येह वा'दे की जगह नहीं बल्कि हमारे दरमियान वा'दे की जगह जन्नत है।” मैं ने पूछा : “येह भेड़ियों और बकरियों के इकठ्ठे रहने का मुआमला कैसा है ?” उस ने जवाब दिया : “जब मेरे दिल में **अब्बाह** عزّ وجلّ की महब्वत पैदा हुई और मैं ने दिल से दुन्या की महब्वत निकाल दी तो उस ज़ात ने भेड़ियों और बकरियों में सुल्ह करवा दी।” फिर उस ने कहा : “ऐ रबीअ ! मुझे मेरे मालिके हकीकी عزّ وجلّ का कलाम तो सुनाइये, मुझे उस के सुनने का बहुत शौक है।” तो मैं ने तिलावते कुरआन शुरू कर दी :

﴿١٢﴾ يَا أَيُّهَا الْمُرْمَلُ ۝ قُمْ الْيَلِ الْأَقِيلًا ۝

(प २९, म १-२)

तर्जमा कन्ज़ुल ईमान : ऐ झुरमुट मारने वाले !

रात में कियां फरमा सिवा कुछ रात के। (1)

①...मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عليه رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى هادي तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तहत फरमाते हैं : “या'नी अपने कपड़ों से लिपटने वाले। इस की शाने नुज़ूल में कई कौल हैं। बा'ज मुफ़स्सिरीन ने कहा कि “इब्तिदाए ज़मानए वह्य में सय्यिदे आलम व सलम व अल्ले व सलम ख़ौफ़ से अपने कपड़ों में लिपट जाते थे। ऐसी हालत में आप को हज़रते जिब्रील ने يَا أَيُّهَا الْمُرْمَلُ कह कर निदा की। एक कौल येह है कि सय्यिदे अलाम व सलम व अल्ले व सलम चादर शरीफ़ में लिपटे हुए आराम फरमा रहे थे, इस हालत में आप को निदा की गई يَا أَيُّهَا الْمُرْمَلُ बहर हाल येह निदा बाताती है कि महबूब की हर अदा प्यारी है। और येह भी कहा गया है कि इस के मा'ना येह है कि रिदाए नबुव्वत व चादरे रिसालत के हामिल व लाइक।”



वोह सुनती रही और रो रो कर तड़पती रही यहां तक कि जब मैं **अल्लाह** तआला के इस फ़रमाने आलीशान पर पहुंचा :

﴿١٣﴾ إِنَّ لَدَيْنَا أَنْكَالًا وَجَحِيمًا ۚ وَطَعَامًا

ذَاغَصَّةٍ وَعَذَابًا أَلِيمًا ۝ (प. २९, म. १२: १३)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :** बेशक हमारे पास भारी बेड़ियां हैं और भड़कती आग और गले में फंसता खाना और दर्दनाक अज़ाब

तो उस ने ज़ोरदार चीख मारी और नीचे गिर गई और उस की रूढ़ कफ़से उन्सुरी से परवाज़ कर गई । मैं उस की इस हालत पर परेशान था कि अचानक ख़्वातीन का एक काफ़िला आया । उन्होंने ने कहा : “हम इस के गुस्ल व कफ़न का एहतिमाम करेंगी ।” मैं ने पूछा : “तुम्हें इस के इन्तिक़ाल की इत्तिलाअ किस ने दी ?” उन्होंने ने बताया : “हम इस की दुआ सुना करती थीं कि “या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे हज़रते सय्यिदुना रबीअ علیه رَحْمَةُ اللّٰهِ السَّامِعِ के सामने मौत देना ।” जब हम ने सुना कि आप इस के पास तशरीफ़ लाए हैं तो हम ने जान लिया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस की दुआ क़बूल फ़रमा ली है ।”

**ऐ मेरे इस्लामी भाइयो !** जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बन्दों के दिल की ज़मीन संवारता है तो उसे ख़शियत के हल से उलटता पलटता है और उस में महबूत का बीज बो कर आंसूओं के पानी से सैराब करता है तो जो फ़सल उगती है, वोह येह है :

﴿١٤﴾ يُحِبُّهُمْ وَيُحِبُّونَهُ لَا (प. ७, म. १६: ५६)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :** कि वोह **अल्लाह** के प्यारे और **अल्लाह** उन का प्यारा ।

औलियाए किराम رَحْمَتُهُمُ اللّٰهُ السَّلَام महबूते इलाही عَزَّوَجَلَّ के दरया में तैरते हैं । उस के बाबे करम को लाज़िम पकड़ लेते हैं । उस की बारगाह में खड़े रहते हैं । उस के अहक़ाम की बजा आवरी पर हमेशगी इख़्तियार करते हैं और उस से वालिहाना प्यार करते हैं । इसी वजह से वोह रातों को आराम नहीं करते बल्कि बेदार रहते हैं । पस जब वोह उस की महबूत में दुन्या से जाते हैं तो उन्हें कोई मलामत नहीं होती ।

**मैं तेरी महबूत में कमज़ोर नहीं :**

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन फ़ज़ल رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ फ़रमाते हैं, जब हज़रते सय्यिदुना यह्या बिन मुआज़ राजी عليه رَحْمَةُ اللّٰهِ الباقي का इन्तिक़ाल हुवा और आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ को ख़्वाब में देख कर पूछा गया : “**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआमला फ़रमाया ?” जवाब दिया : “**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे बख़्श दिया ।” पूछा गया : “किस सबब से ?” फ़रमाया : मैं अपनी दुआ में अर्ज करता था, “या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अगर्चे मैं तेरी इबादत में कमज़ोर हूं मगर तेरी महबूत में कमज़ोर नहीं ।”

**रुहानी बदन और आश्मानी अक्लें :**

हज़रते सय्यिदुना जुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوٰی फ़रमाते हैं : “मैं ने यमन के एक बुजुर्ग के मुतअल्लिक सुना कि वोह महबूत करने वालों में बुलन्द मर्तबा और कोशिश करने वालों पर फ़ौक़ियत रखते हैं और वोह इल्मो हिक्मत का सर चश्मा हैं । चुनान्वे, मैं हज़ के इरादे से निकला

और जब अरकाने हज अदा कर लिये तो उन की तरफ़ चल पड़ा ताकि उन की गुफ़्तगू सुनूं और उन के बयान से नफ़अ उठाऊं। हम कई लोग येही सोच ले कर गए। हमारे साथ एक नौजवान भी था जिस में नेक लोगों की निशानियां और महब्वत करने वालों की अलामतें पाई जाती थीं। वोह बुजुर्ग हमें मिले। हम उन के पास बैठ गए। उसी नौजवान ने सलाम व कलाम से इब्तिदा की। बुजुर्ग ने उस से मुसाफ़हा किया और उस की तरफ़ मुतवज्जेह हुए। नौजवान ने अर्ज की : “या सय्यिदी ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप को बीमार दिलों का तबीब बनाया है, मुझे ऐसी बीमारी है कि तबीब इस के इलाज से अजिज आ चुके हैं। अगर आप मुझ पर अपना लुत्फ़े करम फ़रमाएं तो मेरा इलाज फ़रमा दीजिये।” बुजुर्ग ने पूछा : “जो मुआमला तुझ पर जाहिर हुवा है इस के मुताबिक़ पूछ।” उस ने अर्ज की : “महब्वते इलाही **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अलामत क्या है ?” बुजुर्ग ने जवाब दिया : “इस की अलामत येह है कि तू अपने आप को बीमार जान, क्या तू ने देखा नहीं कि बीमार मरज के खौफ़ से खाना नहीं खाता ?”

येह सुनते ही नौजवान ने बा आवाजे बुलन्द चीख़ मारी। हमें अन्देशा हुवा कि उस की रूह परवाज़ कर गई है। जब उसे इफ़ाका हुवा तो फिर अर्ज की : “**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप पर रहम फ़रमाए ! महब्वत करने वालों की अलामत क्या है ?” फ़रमाया : “महब्वत करने वालों का दर्जा बहुत बुलन्द है।” नौजवान ने फिर अर्ज की : “मुझे उन के अवसाफ़ बताइये ?” तो उन्होंने ने फ़रमाया : “**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से महब्वत करने वाले उस के नूरे जलाल को देखते हैं तो उन के जिस्म रूहानी और अक्लें आस्मानी हो जाती हैं जो मलाइका की सफ़ों के दरमियान वाजेह तौर पर चलती फिरती हैं और तमाम उमूरे आख़िरत का यकीनी तौर पर मुशाहदा करती हैं। पस वोह हस्बे इस्तिताअत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत करते हैं। उन को जन्नत की तम्अ होती है न दोज़ख़ का खौफ़।” इस पर उस नौजवान ने एक आहे सर्द दिले पुरदर्द से खींची और अपनी जान जाने आफ़रीं के सिपुर्द कर दी। वोह बुजुर्ग रो रो कर उसे बोसे देने लगे। फिर फ़रमाने लगे : “**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! येह खाइफ़ीन की मौत है और येह मुहिब्बीन का मक़ाम है।”

हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हज़रते सय्यिदुना दावूद عَلَى نَبِيِّنا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की तरफ़ व्ह्य फ़रमाई : “ऐ दावूद ! मुझ से महब्वत करो और मेरे मुहिब्बीन से भी महब्वत करो और मेरे बन्दों के दिलों में मेरी महब्वत डालो।” उन्होंने ने अर्ज की : “या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं तुझ से महब्वत करता हूं और तेरे मुहिब्बीन से भी महब्वत करता हूं लेकिन तेरे बन्दों के दिलों में तेरी महब्वत कैसे दाख़िल करूं ?” तो इरशाद फ़रमाया : “उन को मेरी ने'मतें और अताएं याद दिलाओ क्यूंकि वोह मुझे एहसान करने वाला ही जानते हैं।”

(احياء علوم الدين، كتاب الخوف والرجاء، بيان فضيلة الرجاء والترغيب فيه، ج ۴، ص ۸۷)

मन्कूल है, “**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَى نَبِيِّنا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की तरफ़ व्ह्य फ़रमाई : “तू मेरा ख़लील है और मैं तेरा ख़लील हूं। लिहाज़ा इस बात से बचना कि मैं तेरे दिल को अपने ग़ैर में मशगूल पाऊं, अगर ऐसा हुवा तो मैं तेरी महब्वत ख़त्म कर दूंगा। क्यूंकि मैं अपनी महब्वत के लिये ऐसे बन्दे का इन्तिखाब करता हूं कि अगर मैं उसे आग में भी जलाऊं तो भी उस

(حلية الاولياء، الحارث بن اسد المحاسبى، الحديث ١٤٦٤٨، ج ١٠، ص ٨٦، بتغيير)



(1).....जबान, महबूबे हकीकी عَزَّوَجَلَّ के जिक्र में मशगूल रहती है। जैसा कि **अल्लाह** तबारक व तआला इरशाद फरमाता है :

﴿١٦﴾ فَادْكُرُونِيْ اَذْكُرْكُمْ (پ ٢، البقرة: ١٥٢)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :** तो मेरी याद करो मैं तुम्हारा चर्चा करूंगा। (1)

(2)....कान, महबूबे हकीकी عَزَّوَجَلَّ के इन मीठे बोलों को सुनने के लिये बे ताब रहते हैं :

﴿١٧﴾ وَاِذَا سَاَلَكَ عِبَادِيْ عَنِّيْ فَاِنِّيْ قَرِيْبٌ ط (پ ٢، البقرة: ١٨٦)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :** और ऐ महबूब जब तुम से मेरे बन्दे मुझे पूछें तो मैं नजदीक हूँ। (2)

(3).....आंखें, जल्वए महबूब عَزَّوَجَلَّ देखने की आरजू मन्द रहती हैं। जैसा कि कुरआने पाक फरमाता है :

﴿١٨﴾ وَجُوْءٌ يُّوْمِنِيْدٌ نَّاْصِرَةٌ٥ اِلَى رَبِّهَا نَاْظِرَةٌ (پ ٢٩، القيامة: ٢٢-٢٣)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :** कुछ मुंह उस दिन तरों ताजा होंगे अपने रब्ब को देखते। (3)

①....मुफ़स्सिरे शहीर, खलीफ़ आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِي तफ़्सीरे ख़्वाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं : “जिक्र तीन तरह का होता है : (1)....जिक्र बिल्लिसान (2).....जिक्र बिलक़ल्ब (3).....जिक्र बिल जवारेह। जिक्रे लिसानी तस्बीह, तक्दीस, घना वगैरा बयान करना है, खुतबा, तौबा इस्तिग़फ़र, दुआ वगैरा इस में दाखिल है। जिक्रे कल्बी **अल्लाह** तआला की ने'मतों का याद करना, उस की अज़मत व किब्रियाई और उस के दलाइले कुदरत में गौर करना। उ-लमा का इस्तिम्बाते मसाइल में गौर करना भी इसी में दाखिल है। जिक्रे बिल जवारेह यह है कि आ'ज़ा ताअते इलाही में मशगूल हों जैसे हज़ के लिये सफ़र करना, यह जिक्र बिल जवारेह में दाखिल है। नमाज़ तीनों किस्म के जिक्र पर मुश्तमिल है। तस्बीह व तक्बीर, घना व किराअत तो जिक्रे लिसानी है और खुशूअ व ख़ुजुअ, इख़्लास जिक्रे कल्बी और क़ियाम, रुकूअ व सुजूद वगैरा जिक्र बिल जवारेह है। इन्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا ने फ़रमाया, **अल्लाह** तआला फ़रमाता है : “तुम ताअत बजा ला कर मुझे याद करो मैं तुम्हें अपनी इमदाद के साथ याद करूंगा। सहीहैन की हदीष में है कि **अल्लाह** तआला फ़रमाता है कि “अगर बन्दा मुझे तन्हाई में याद करता है तो मैं भी उस को ऐसे ही याद फ़रमाता हूँ और अगर वोह मुझे जमाअत में याद करता है तो मैं उस को इस से बेहतर जमाअत में याद करता हूँ। कुरआन व हदीष में जिक्र के बहुत फ़ज़ाइल वारिद हैं और यह हर तरह के जिक्र को शामिल हैं। जिक्र बिल जहर को भी और बिल इख़्म को भी।”

②....मुफ़स्सिरे शहीर, खलीफ़ आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِي तफ़्सीरे ख़्वाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं : “इस में तालिबाने हक़ की तलबे मौला का बयान है, जिन्होंने ने इश्के इलाही पर अपने हवाइज को कुरबान कर दिया। वोह उसी के तलबगार हैं, उन्हें कुर्ब व विसाल के मुज्दा से शाद काम फ़रमाया। **शाने नुज़ूल :** एक जमाअते सहाबा ने जज़बए इश्के इलाही में सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से दरयाफ़्त किया कि हमारा रब्ब कहां है ? इस पर नबीदे कुर्ब से सरफ़राज़ कर के बताया गया कि **अल्लाह** तआला मकान से पाक है। जो चीज़ किसी से मकानी कुर्ब रखती है वोह उस के दूर वाले से ज़रूर बुअद रखती है और **अल्लाह** तआला सब बन्दों से क़रीब है। मकानी की यह शान नहीं। मनाज़िले कुर्ब में रसाई बन्दे को अपनी ग़फ़लत दूर करने से मुयस्सर आती है। ”دوست نزدیک ترا من بمن است۔ ویل عجب ترکمن از دے دور”

③....मुफ़स्सिरे शहीर, खलीफ़ आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِي तफ़्सीरे ख़्वाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं : “इन्हें दीदारे इलाही की ने'मत से सरफ़राज़ फ़रमाया जाएगा। **मस्अला :** इस आयत से षाबित हुवा कि आख़िरत में मोअमिनीन को दीदारे इलाही मुयस्सर आएगा। येही अहले सुन्नत का अक्कीदा व कुरआनो हदीष व इजमाअ के दलाइले कषीरा इस पर काइम हैं और यह दीदार बे कैफ़ और बे जहत होगा।”

(4).....बदन महबूबे हकीकी عَزَّوَجَلَّ की इताअत में खड़े हो कर येह वजीफा पढ़ते रहते हैं :

﴿١٩﴾ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ 0 (प १, الفاتحة: ०)

तर्जमए कन्जुल ईमान : हम तुझी को पूजें और तुझी से मदद चाहें ।

(5)....दिल, यादे महबूब عَزَّوَجَلَّ में महब्वत के राबिते से जड़े रहते हैं । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿٢٠﴾ يُحِبُّهُمْ وَيُحِبُّوْنَہ لَا (प ६, المائدة: ०६)

तर्जमए कन्जुल ईमान : कि वोह **अल्लाह** के प्यारे और **अल्लाह** उन का प्यारा ।

(6).....राज, जल्वए महबूब عَزَّوَجَلَّ के मुशाहदे में खोए रहते हैं । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में फ़रमाता है :

﴿٢١﴾ وَ شَٰہِدٍ وَمَشْہُوْدٍ 0 (प ३०, البروج: ३)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और (कसम) उस दिन की जो गवाह है और उस दिन की जिस में हाज़िर होते हैं ।

(7).....रूहें, राहत और फूलों के ज़िक्र से सुकून हासिल करती हैं, चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿٢٢﴾ فَرُوْحٌ وَرِيْحَانٌ لَا (प २७, الواقعة: ८९)

तर्जमए कन्जुल ईमान : तो राहत है और फूल । (1)

पस अरिफ़ को बारगाहे खुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में हाज़िरी से ग़फ़लत नहीं होती ? और न ही आबिद अपने मा'बूदे हकीकी عَزَّوَجَلَّ से ग़ाफ़िल होता है ।

**दिल की सियाही कैसे दूर हो ?**

हज़रते सय्यिदुना जुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : “मैं ने एक नौजवान को देखा जो ब ज़ाहिर मजनून था मगर बातिन महब्वते इलाही عَزَّوَجَلَّ की दौलत से माला माल था । मैं समझ गया कि येह नौजवान **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इश्क में चूर है । मैं ने देखा कि वोह रो रहा था और येह दुआ कर रहा था : “या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तू ने महब्वत करने वालों को कुर्ब से नवाज़ा लेकिन मुझे दूर कर दिया, मेरा गुनाह क्या है ? उन को तू ने अपना विसाल अता किया और मुझे हिजरो फ़िराक़ से दो चार किया । हाए, मेरी मुसीबत ! तू ने उन को क़ियाम के लिये बेदार रखा और मुझे सुलाए रखा । हाए, मेरी रुस्वाई ! तू ने उन को सहरी के वक़्त मुनाजात की लज़्ज़त अता की और मुझे महरूम रखा । हाए, मेरा दुख !” फिर उस ने रोना शुरू कर दिया । हज़रते सय्यिदुना जुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : “मेरे जिस्म के पुर सुकून आ'ज़ा पर कप-कपी तारी हो गई । मेरा पोशीदा इश्क़ जोश मारने लगा तो मैं ने उस से पूछ : “ऐ नौजवान ! येह रोना कैसा ?” तो वोह कहने लगा : “ऐ जुन्नून ! मुझे बताइये कि कपड़े की मैल तो पानी और साबुन से दूर हो जाती है लेकिन दिल की सियाही कैसे

①.....मुफ़स्सरे शहीर, खलीफ़ आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِي तफ़सीरे खज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं : “अबुल आलिया ने कहा कि “मुक़रबीन से जो कोई दुया से मुफ़रक़त करता है उस के पास जन्नत के फूलों की डाली लाई जाती है, उस की खुशबू लेता है तब रूह क़ब्ज़ होती है ।”

दूर हो ?” मैं ने कहा : “**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं भी इसी की तलाश में हूँ जिस की तलाश में तू है।” मुझे उस नौजवान के वाक़िए से बड़ी हैरानगी हुई।”

**ऐ मेरे इस्लामी भाई !** जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की महबूबत दिलों में क़रार पकड़ लेती है तो उन्हें महबूबे हकीकी عَزَّوَجَلَّ के अन्वार से रोशन कर देती हैं। महबूबत की बदौलत दिल में सात षमरात फलते हैं, जिन के बिग़ैर मा'रिफ़ते इलाही عَزَّوَجَلَّ का चराग़ रोशन नहीं होता :

(1).....निय्यत में इख़लास (2).....ख़शिय्यते इलाही عَزَّوَجَلَّ (3).....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से षवाब की उम्मीद (4).....उस के साथ सच्चा रहना (5).....उसी पर तवक्कुल करना (6).....उस से अच्छा गुमान रखना और (7).....उसी की तरफ़ लगन व शौक़ होना। जिस तरह दर्जे ज़ैल सात अश्या के बिग़ैर चराग़ नहीं जलता जैसे (1).....जुन्नाद (वोह पथ्थर जिस को रगड़ कर आग निकाली जाती है) (2).....पथ्थर (3).....आग पकड़ लेने वाली कोई चीज़ मषलन कपड़ा (4).....गन्धक (5).....चराग़ दान (6).....तेल और (7).....फ़तीला। इसी तरह मजकूरा सात चीज़ों के बिग़ैर मा'रिफ़ते इलाही عَزَّوَجَلَّ का चराग़ भी रोशन नहीं होता।”

**ऐ मेरे इस्लामी भाई !** मा'लूम हुवा कि इन चीज़ों के बिग़ैर चराग़ रोशन करने का कोई तरीका नहीं। अगर तू अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ के मुशाहदे के लिये अपने दिल के चराग़ को रोशन करना चाहता है तो तेरे लिये सख़्त कोशिश का जुन्नाद, तकालीफ़ झेलने का पथ्थर, इश्क की आग, महबूबत की गन्धक, तवक्कुल का चरागदान, फ़िक्क का तेल और सब्र का फ़तीला ज़रूरी है।

फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर गिर्या व ज़ारी की ज़न्जीर में चराग़ को लटका दे तो इस तरह तेरे दिल में नूरे इलाही عَزَّوَجَلَّ रोशन होगा और तू जमाले इलाही عَزَّوَجَلَّ का मुशाहदा कर लेगा।

**हकीकी बन्दे और सच्चे महबूब :**

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन अहमद मुफ़ीद عليه رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَحِيد फ़रमाते हैं, मैं ने हज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को फ़रमाते सुना, मैं हज़रते सय्यिदुना सर्री सक़ती رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की ख़िदमत में सो रहा था कि आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने मुझे बेदार किया और फ़रमाने लगे : **ऐ जुनैद !** मैं ने देखा कि गोया मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर खड़ा हूँ और मुझे इरशाद फ़रमाया गया : “**ऐ सर्री !** मैं ने मख़्लूक पैदा की तो सब मेरी महबूबत का दा'वा करते थे। फिर मैं ने दुनिया पैदा की तो नव्वे फ़ीसद (90%) भाग गए और दस फ़ीसद (10%) बाकी रह गए। फिर मैं ने जन्नत पैदा की तो बक़िय्या में से भी नव्वे (90%) फ़ीसद भाग गए और सिर्फ़ दस फ़ीसद (10%) बच गए। फिर जब मैं ने उन पर ज़र्ज़ा भर आज़माइश नाज़िल की तो उस बाकी रह जाने वाली ता'दाद का भी सिर्फ़ दस फ़ीसद (10%) बचा और बाकी नव्वे फ़ीसद (90%) भाग गए। मैं ने बाकी रहने वालों से पूछा : “न तो तुम ने दुनिया को चाहा, न जन्नत त़लब की, न ही आज़माइश से भागे। आख़िर तुम क्या चाहते हो ? और तुम्हारा मक्सूद क्या है ?” तो उन्होंने ने अर्ज़ की : “हमारा मक्सूद तू ही तू है, अगर तू हम पर मसाइब



नाज़िल फ़रमाएगा तब भी हम तेरी महबूबत को न छोड़ेंगे।” मैं ने उन से कहा : “मैं तुम्हें ऐसी ऐसी मुसीबतों और आजमाइशों में मुब्तला करूंगा कि पहाड़ों को भी जिन के बरदाश्त की ताक़त नहीं, तो क्या तुम इन पर सब्र कर लोगे ?” उन्होंने ने अर्ज़ की : “क्यूं नहीं, मौला ! अगर तू आजमाइश में मुब्तला करने वाला है तो जैसे चाहे हमें आजमा ले।”

(फिर फ़रमाया :) ऐ सर्री ! येही मेरे हकीकी बन्दे और सच्चे महबूब हैं।”

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** से महबूब करने वालों पर आजमाइश मुक़र्र कर दी गई है, उस ने उन के जिस्मों को लाग़र व कमज़ोर कर दिया और उन के दिलों पर काबू पा लिया है। येह ऐसे ही रहेंगे यहां तक कि महबूबे हकीकी **عَزَّوَجَلَّ** की बारगाह में पहुंच जाएं।

**सय्यिदुना उतबा गुलाम** **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ السَّلَام** की हिक्कयत :

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़व्वास **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الرَّؤُوف** फ़रमाते हैं : “हज़रते सय्यिदुना उतबा गुलाम **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ السَّلَام** खास अहलुल्लाह में से थे और मुख़्लिसीन में मा'रूफ़ थे। आप **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى** बा'ज अवकात रात को मेरे पास तशरीफ़ लाया करते, हमेशा रोज़ा रखा करते थे। एक दफ़्आ मेरे पास रात गुज़ारी। जब मैं ने रात का खाना हाज़िर किया ताकि रोज़ा इफ़्तार करें तो आप **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى** ने सिर्फ़ पानी से इफ़्तार कर लिया। जब इशा की नमाज़ अदा कर ली तो इबादत पर कमर बस्ता हो गए और वक्ते सहूर तक नमाज़ पढ़ते रहे। मैं ने सुना कि आप **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى** यूं दुआ कर रहे थे : “ऐ मालिको मौला **عَزَّوَجَلَّ** अगर तू मुझे अज़ाब दे तो भी मैं तेरा मुहिब्व हूं और अगर मुझ पर रहम फ़रमाए तो भी तेरा मुहिब्व हूं।” फिर आप **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى** रोने लगे और ज़ोर दार आवाज़ निकाली और बे होश हो कर ज़मीन पर तशरीफ़ ले आए। जब इफ़ाका हुवा तो मैं ने अर्ज़ की : “ऐ उतबा ! आप की रात कैसी गुज़री ?” तो आप **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى** की चीख़ निकल गई और फ़रमाने लगे : “ऐ इब्राहीम ! बहुत जल्द हिसाब लेने वाले की बारगाह में पेशी की फ़िक्र ने मुहिब्वीन के जिस्म के जोड़ काट कर रख दिये।” फिर आप **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى** पर बेहोशी तारी हो गई। जब इफ़ाका हुवा तो सरे अक्दस उठाया और अर्ज़ करने लगे : “ऐ मेरे मालिको मौला **عَزَّوَجَلَّ** उस शख्स के मुतअल्लिक़ तेरा क्या इरादा है जो तुझ से महबूब करता है ? क्या तू उसे आग का अज़ाब देगा या उस के दिल को हिज्रो फ़िराक़ के अज़ाब में मुब्तला करेगा ?” तो आप **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى** को हातिफ़े ग़ैबी की येह आवाज़ सुनाई दी : “हरगिज़ नहीं, जो **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** का मुहिब्व हो और जिस को **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ने चुन लिया हो, उसे कोई अज़ाब न दिया जाएगा।”

وَصَلَّى اللَّهُ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِهِ وَصَحْبِهِ أَجْمَعِينَ



बयान 46 :

विशाले मुखफा (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ)

हम्मे बारी तझाला :

तमाम ता'रीफें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने हकीकी अक्लमन्दों को चुन लिया कि कुरबत से गुफ़लत को छोड़ कर उस की मा'रिफ़त के छुपे हुए मताल्लिब को तलाश करें। और उस ने पुख़्ता समझ की कश्तियों को, अपनी हमेशा रहने वाली सिफ़त के मुतअल्लिक सुवाल के दरयाओं की तेज़ लहरों में गर्क कर दिया। और ग़ौरो फ़िक्र के परन्दों के परो को कुंवें से आज़ाद कर के अपनी शाने बे नियाज़ी के मैदानों में पहुंचा दिया। और ह्वास व शुऊर के पैमानों की बुन्याद ना उम्मीदी के कद्दाल से गिरा दी, लिहाज़ा उस की सिफ़ात व कुदरत का अन्दाज़ा लगाने का कोई पैमाना नहीं। और अक्ल व दानिश के परन्दों को अपनी ज़ात की मा'रिफ़त के जाल में दाख़िल किया तो अफ़्लाक व इम्लाक सभी उस की शाने अहदिय्यत के इदराक से अज़िज़ आ गए और अक्लें उस के राजे यक्ताई के हुसूल के करीब पहुंचने से अज़िज़ आ गई। पस वोह अव्वल है जिस की अव्वलिय्यत पर सबक़त ले जाने वाला कोई नहीं। वोह आख़िर है जिस के आख़िरी होने पर कोई आख़िर नहीं। वोह ज़ाहिर है कि अपने अहले महबूबत पर दलील के साथ इयां है। वोह बातिन है कि ग़ौरो फ़िक्र के बा वुजूद दिल उस का तसव्वुर नहीं कर सकता। वोह ऐसा समीअ (या'नी सुनने वाला) है कि रहमे मादर के पर्दों की तारीकी में बच्चे के सांस की आवाज़ भी सुन लेता है। वोह ऐसा बसीर (या'नी देखने वाला) है कि रात के अन्धेरे में छुपी हुई सियाह चट्टान पर च्यूटी के रँगने का निशान भी देख लेता है। वोह अलीम है कि हर वोह बात जानता है जिसे बन्दा अपने दिल में छुपाता है। वोह जब्बार है कि हर जाबिर उस की बुलन्द हैबत के सामने झुका हुवा है। वोह क़हहार है कि हर मुतकब्बिर पर अपनी शाने इक़्तदार से गालिब है। सारी काइनात उस की तस्बीह बयान कर रही है और तमाम मख़्लूक उस की बुजुर्गी की मो'तरीफ़ है। और गरज उसे सराहती हुई उस की पाकी बोलती है और फ़िरिश्ते उस के डर से (या'नी उस की हैबत व जलाल से) उस की तस्बीह करते हैं।

ऐ आ'ला मक्सद के तलबगार ! रास्ते में बहुत ज़ियादा हलाकतें और दुश्वार गुज़ार घाटियां हैं। अगर तू ने यहां तौफ़ीके इलाही عَزَّوَجَلَّ को पा लिया तो अपनी मुलाक़ात में कामयाब हो जाएगा, अपनी उम्मीद की इन्तिहा को पा लेगा, फिर तू ऐसे जमाल को देखेगा जो कभी तेरे ख़याल में न आया था और ऐसे जवाब सुनेगा जो कभी तेरे दिल में न खटके होंगे, और तू ऐसा जाम पियेगा जो तुझे सैराब कर देगा और अहलो माल से बे परवाह कर देगा। अगर तू अपनी अक्ल व राए और मिषाल से उस की बारगाह में रसाई चाहेगा तो मुलाक़ात तो कुजा अपनी दीगर ने'मतों से भी हाथ धो बैठेगा और ख़सारा व अज़ाब मौल लेगा। अपने तजस्सुस और सुवाल में कमी कर और छान बीन और झगड़े से रुक जा। और जान ले कि (जिस तरह तू मक्सूद चाहता है) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मशिय्यत उस के बर अक्स है।

जाते इलाही عَزَّوَجَلَّ की मा'रिफ़त के मैदानों की तरफ़ कितने ही अक्लों के काफ़िले चले और भटकते रहे, लेकिन मन्ज़िल पर न पहुंच सके। बहुत सी अक्लों ने उस दरवाजे में दाख़िल होना चाहा

मगर वोह हमेशा बन्द रहा। अक्ल ने कितने ही पैगाम भेजे मगर वोह हैरानी के आलम में वापस लौट आए। अक्ल बिगैर बदले उस दर पर खड़ी है, फिर उस बारगाह में हमेशा से हाज़िर है, पुख्ता समझ उस की शाने बे नियाज़ी के इदराक में हैरान व शशदर है कि हवासे बा ख़ता हो चुकी है। अक्लें दंग हैं कि मा'कूल के ज़रीए उस की पहचान नहीं होती और अज़हान हक्का बक्का हैं कि मन्कूल के ज़रीए उस का इदराक नहीं होता।

पाक है जो मा'बूद है, कैसा ? कैसे हो कि वोह कैफ़ियत से पाक है। कहां ? कहां हो कि वोह किसी जगह में होने से पाक है। वोह हर शै से अव्वल है और उस के लिये इब्तिदा नहीं, वोह हर शै का आख़िर है और उस के लिये इन्तिहा नहीं। उस को किसी मिष्ल पर क़ियास किया जा सकता है न किसी मादी शै के साथ उसे मुत्तसिफ़ किया जा सकता है और न ही किसी जिस्म के साथ उस की पहचान हो सकती है। उस ने शर को पैदा किया और उसे लिख दिया, उस ने ख़ैर को पैदा किया और उसे पसन्द फ़रमाया। जिस ने उस की इताअत की उस पर रहूम फ़रमाता है और जिस ने नाफ़रमानी की उसे अज़ाब देता है, किसी फ़ैसले के बारे में पूछने का मोहताज नहीं। अपने औलिया से छुपता नहीं और न ही उन्हें हिजाब में रखता है। उस का येह अज़ली वा'दा है कि

يَأْتِيهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ۝ اُجِئْ إِلَىٰ رَبِّكَ رَاضِيَةً مُّرْضِيَةً ۝ (الفجر: २७-२८)  
**तर्जमए कन्जुल ईमान :** ऐ इतमीनान वाली जान ! अपने रब्ब की तरफ़ वापस हो यूं कि तू उस से राज़ी वोह तुझ से राज़ी ।”

पाक है मुल्क व मलकूत वाला, इज़्ज़त व अज़मत वाला, वोह ज़िन्दा है जिसे मौत नहीं। वोह पोशीदा राज़ों, दिलों की धड़कनों और छुपे हुए ख़यालों की आहतों को भी जानता है। उस ने अक्लों को अपनी मा'रिफ़त के ठाठें मारते हुए उस समन्दर में ग़र्क़ कर दिया जिस की कोई इब्तिदा है न इन्तिहा। वोह सोचों को पैगाम देने वाला है, उस की मा'रिफ़त की राह में सोच रुक गई और हैरान है मगर वोह हमेशा से बाकी है। एहसास का जासूस आया ताकि उस की बा'ज़ सिफ़ात को जान ले तो तक्दीर ने उसे आवाज़ दी कि ऐ हैरत ज़दा ! तू कहां चल दिया, दरवाज़े और रास्ते तो बन्द हैं। उस के इदराक की तरफ़ कोई राह नहीं। न ही उस की कोई शबीह व मषल है। ऐसा समन्दर है कि वहां से “जोहर” निकालना किसी “गौता ख़ोर” के लिये मुमकिन नहीं। ऐसी रात है कि बहुत चमकने वाला सितारा भी उस में आंख के लिये रोशनी नहीं कर सकता।

पाक है वोह ज़ात जिस ने तमाम मौजूदात को बनाया, ज़माने की तदबीर फ़रमाई, इन्सान को पैदा किया और फिर उसे बोलना सिखाया, कुरआने करीम उतारा, ईमान व कुफ़्र और इताअत व नाफ़रमानी को मुक़द्दर किया वोह भूल से पाक है, उसे एक काम दूसरे से गाफ़िल नहीं करता, ज़माने उसे नहीं बदल सकते, उमूर का बदलना उस पर मुख़्तलिफ़ नहीं होता। इख़्तियार को मुक़र्रर फ़रमाने वाला है और क़ियामत के दिन का मालिक है। उस की शान सब से बुलन्द है, और उसी के लिये हैं सब अच्छे नाम और बुलन्द सिफ़ात। और वोह फ़रमाता है :

”خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا ۝ ١٩ ۝ (الفرقان: ५९)  
**तर्जमए कन्जुल ईमान :** आस्मान और ज़मीन और जो कुछ इन के दरमियान है बनाए ।” और (طه: ५१)  
**तर्जमए कन्जुल ईमान :**



वोह बड़ी मेहर वाला उस ने अर्श पर इस्तिवा फ़रमाया जैसा कि उस की शान के लाइक़ है।" ज़माने उसे पुराना नहीं कर सकते, मिक्दार उसे रोक नहीं सकती, अतराफ़े आलम उसे घेर नहीं सकते और निगाहें उस का इहाता नहीं कर सकतीं। और उस का फ़रमाने जीशान है : (النّهار: २३) "يَكُونُ الزَّيْلُ عَلَى النَّهَارِ" तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : रात को दिन पर लपेटता है।" और (الرعد: ८) "وَكُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهُ بِمِقْدَارٍ" तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और हर चीज़ उस के पास एक अन्दाज़े से है।" उस की ज़ात दीगर ज़वात की तरह नहीं और उस की सिफ़ात दीगर सिफ़ात की मिश्ल नहीं। वोह दर्जात बुलन्द करने वाला, जिन्दों को मारने वाला और मुर्दों को जिन्दा करने वाला है। बोलियां उस पर मुश्तबा नहीं होतीं और न ही आवाज़ें उस पर मुख़्तलिफ़ होती हैं। हवास के तराजू से उस का अन्दाज़ा नहीं लगाया जा सकता। उसे नींद आए न ऊंच। औलिया उस की खुफ़िया तदबीर से डरते हैं। मलाइका उस के ख़ौफ़ से उस के ज़िक्र से गाफ़िल नहीं होते। ज़िन्न व इन्स उस के क़ब्जे व इक्तिदार में हैं। जन्नत व जहन्नम उस के "अम्र व नहय।" के तहत हैं। बयान करने वाले (जैसा उस का हक़ है) उस की ता'रीफ़ व तौसीफ़ नहीं कर सकते। गुमान उसे कैद नहीं कर सकते। उस पर किसी का एहसान नहीं। आंखें उसे खुल्लम खुल्ला नहीं देख सकतीं। वोह जब किसी शै को चाहे तो उस से फ़रमाए : "हो जा।" तो वोह फ़ौरन हो जाती है। मख़्लूक उस के ग़ालिब इरादे में मुक़य्यद है। उसी ने मख़्लूक और उन के आ'माल को पैदा फ़रमाया और वोह जानता है जो वोह करते हैं और वोह इरशाद फ़रमाता है :

"لَا يُسْتَلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ يُسْتَلُونَ" (النّبياء: २३)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : उस से नहीं पूछा जाता जो वोह करे और उन सब से सुवाल होगा।" (1)

पाक है वोह ज़ात जिस ने अपनी मा'रिफ़त तक जाने वाली हक़ाइक़ की राहों को कठिन व दुश्वार बना दिया पस इस पर चलने वाले चटयल मैदान में आ गए। उस ने मख़्लूक के इदराक को हैरन कर दिया तो अब वोह हैरत ज़दा हैं। उन्होंने ने अक्लों के तेल से मा'रिफ़त के चराग़ जलाए और ईमान की बिजली के नूर से रहनुमाई हासिल की। फ़रमाने बारी तआला है :

"كُلَّمَا أَصَاءَ لَهُمْ مَشْؤًا فِيهِ لَا (البقرة: २०) तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जब कुछ चमक हुई उस में चलने लगे।"

फिर उन्होंने ने अपने दिलों की तरफ़ रुजूअ किया तो दिल कहने लगे : "हम पाकीज़गी के घर हैं और घर वाला बेहतर जानता है कि घर में क्या है।" फिर उन्होंने ने सिफ़ात का दामन थामा तो वोह बोलें : "हमें उस के इज़हार की ताक़त नहीं।" इस के बा'द उन्होंने ने अक्ल की तरफ़ इशारा किया तो अक्ल ने मदहोशी व हैरत के आलम में उन से कहा : "मैं भी इस मुआमले में तुम्हारी तरह हैरान हूं, मैं उस का इहाता नहीं कर सकती कि उसे बयान करूं। मैं उस की सिफ़ात बयान नहीं कर सकती

1...मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी तफ़सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं "क्यूंकि वोह मालिके हक़ीकी है, जो चाहे करे, जिसे चाहे इज़्जत दे जिसे चाहे ज़िल्लत दे जिसे चाहे सआदत दे जिसे चाहे शक़ी करे, वोह सब का हाकिम है, कोई उस का हाकिम नहीं जो उस से पूछ सके। (और इन सब से सुवाल होगा) क्यूंकि सब उस के बन्दे हैं। ममलूक हैं। सब पर उस की फ़रमां बरदारी और इताअत लाज़िम है। उस से तौहीद की एक और दलील मुस्तफ़ाद होती है। जब सब ममलूक हैं तो इन में से कोई खुदा कैसे हो सकता है?"

कि उस की ता'रीफ़ व तौसीफ़ करूं और मैं नहीं जानती कि किस तरफ़ से उस तक रसाई हासिल करूं। तुम ने उस अम्र के मुतअल्लिक पूछा है जिसे मैं नहीं जानती और तुम उस राज़ का इज़हार चाहते हो जिसे हासिल करने में, मैं खुद हमेशा अज़िज़ रही। मुझे तो यहां सिर्फ़ हैरत व तअज़्जुब ही हासिल हुवा है। लेकिन ऐ मा'रिफ़ते इलाही عَزَّوَجَلَّ के बारे में हैरत ज़दा ! ऐ उस के मअानी के हुस्न में अक्ल को लुटा देने वाले ! अगर तू उस की मा'रिफ़त चाहता है तो तौफीके इलाही عَزَّوَجَلَّ की राह पर चल। क्योंकि वोह ऐसा करीब है कि तू जब चाहे उस की बारगाह में हाज़िर हो जाए और वोह बईद है मगर फ़ासिले के साथ नहीं कि तू उसे तै कर ले। अगर तू उस से ख़ालिस दोस्ती और तअल्लुक रखेगा तो वोह तुझे पाकीज़गी व पसन्दीदगी के जाम से सैराब फ़रमाएगा और अगर तू ने उस की महबूबत का जाम पी लिया तो येही जाम तुझे सैराब कर देगा और अगर तू उस के ज़िक्र और हम्दो षना के नग़मे सुनना चाहता है तो उसे किसी भी चीज़ से तशबीह देने से बचते हुए तौहीद व पाकी बयान करने वाली ज़बान से कह :

وَجَلَّ مَعْنَى فَلَيْسَ الْوَهْمُ يَحْوِيهِ	تَبَارَكَ اللَّهُ فِي عِلْيَاءِ عِزَّتِهِ
وَلَا شَرِيكَ لَهُ لَا شَكَّ لِي فِيهِ	وُجُودُهُ سَابِقٌ لِأَشْيَاءٍ يُشْبِهُهُ
لَا كَشْفُ يُظْهِرُهُ لَا جَهْرٌ يَدْرِيهِ	لَا كَوْنٌ يَحْضُرُهُ لَا عَوْنٌ يَنْصُرُهُ
لَا قَوْلٌ يَسْبِقُهُ لَا عَقْلٌ يَدْرِيهِ	لَا ذَهْرٌ يَحْلُقُهُ لَا نَفْسٌ يُلْحِقُهُ
وَلَيْسَ تُذَرِّكُ مَعْنَى مِنْ مَعَانِيهِ	حَارَتْ جَمِيعُ الْوَرَى فِي كُنْهِ قُدْرَتِهِ
وَجَلَّ لُطْفًا وَعِزًّا وَرَفِي تَعَالِيهِ	سُبْحَانَهُ وَتَعَالَى فِي جَلَالَتِهِ

**तर्जमा :** (1).....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपनी उलू इज़्ज़त के ए'तिबार से बुलन्द व बरतर है और वोह बड़ा है कि वहम उस का इहाता नहीं कर सकता। (2).....उस का वुजूद हमेशा से है, कोई शै उस के मुशाबेह नहीं और उस का कोई शरीक नहीं और मुझे उस में कोई शक नहीं। (3).....कोई जगह नहीं जो उसे घेर ले, कोई मददगार नहीं जो उस की मदद करे, कोई कश्फ़ नहीं जो उसे ज़ाहिर करे और कोई ए'लान नहीं जो उसे बयान करे। (4).....कोई ज़माना नहीं जिस ने उसे पैदा किया, कोई ऐब नहीं जो उस से मिल जाए, कोई ऐसी ज़ात नहीं जो उस से बढ़ जाए और कोई अक्ल नहीं जो उस का इदराक करे। (5).....सारी मख़्लूक उस की कुदरत की हकीकत में हैरान व सरगर्दा हैं मगर उस के मअानी में से एक मा'ना का भी इदराक नहीं कर सकी। (6).....वोह पाक है और उस की शानें बुलन्दो वाला हैं और वोह बड़ा ही मेहरबान और ताक़तवर व बरतर है।

पाक है वोह जो मा'बूद है, उस ने हज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام को अपने दस्ते कुदरत से बनाया, तमाम फ़िरिशतों से उन्हें सजदा करवाया, उन को अपनी वसीअ जन्मत में ठहराया। फिर हज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام और उन की तमाम अवलाद के बारे में मौत का फैसला फ़रमाया। उस ने अपने प्यारे महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को इस फैसले की ख़बर देते हुए इरशाद फ़रमाया :

**तर्जमाए कन्ज़ुल ईमान :** हर जान को मौत का मज़ा चखना है ।” (كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ ط (پ ۱۷، الانبیاء: ۳۵))





के नफ्से करीमा को भी विसाले ज़ाहिरी की ख़बर दी, आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को हवादिषे ज़माना से आगाह फ़रमाया, और मा क़ब्ल विसाल फ़रमाने वाले हज़रते अम्बिया व मुर्सलीन (की ज़ाहिरी वफ़ात) से आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को तसल्ली व इत्मीनान बख़्शा। चुनान्वे, **اِنَّكَ مَيِّتٌ وَّ اِنَّهُمْ مَيِّتُونَ** (प २३, الزمر: ३०) अपनी महफूज किताब में इरशाद फ़रमाता है : **تَرْجَمَاف كَنْزُالْ اِيْمَان** : बेशक तुम्हें इन्तिकाल फ़रमाना है और उन को भी मरना है।<sup>(१)</sup>

**सरकार** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ **ने कब पर्दा फ़रमाया ?**

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से मरवी है : “तुम्हारे नबिय्ये करीम, رَاَدَهَا اللهُ شَرْفًا وَتَعْظِيْمًا صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पीर के दिन पैदा हुए। पीर के दिन मक्कए मुर्करमा मुर्करमा से हिजरत की। पीर के दिन मदीनए मुनव्वरा رَاَدَهَا اللهُ شَرْفًا وَتَعْظِيْمًا तशरीफ़ लाए और विसाल भी बारह रबीउल अव्वल (रबीउन्नूर शरीफ़) पीर के दिन ही फ़रमाया। आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की मुहते मरज़ बारह दिन थी और आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का बुख़ार दर्दे सर के सबब था।”

(المعجم الكبير، الحديث १२९८، ج १२، ص १८३)

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अबी यज़ीद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : “सरकारे अब्दे क़रार, शाफ़ेए रोज़े शुमार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की विलादते बा सआदत आमुल फ़ील बारह रबीउल अव्वल शरीफ़ पीर के दिन हुई। इसी दिन आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने मक्कए मुर्करमा मुर्करमा से हिजरत फ़रमाई और इसी दिन मदीनए मुनव्वरा رَاَدَهَا اللهُ شَرْفًا وَتَعْظِيْمًا तशरीफ़ लाए। नीज़ आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ का विसाले ज़ाहिरी भी ग्यारह हिजरी बारह रबीउल अव्वल शरीफ़, पीर के दिन वक्ते चाशत और निस्फुनहार के दरमियान हुवा।”

(السيرة النبوية لابن هشام، ولادة رسول الله ﷺ، ج १، ص १६१ - المسند للإمام احمد بن حنبل، مسند عبد الله بن عباس، الحديث २५०६، ج १، ص ५९४)

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا रिवायत फ़रमाते हैं : “जब हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर येह सूरए मुबारका नाज़िल हुई :

**تَرْجَمَاف كَنْزُالْ اِيْمَان** : जब **اَبْلَاف** की मदद **اِذَا جَاءَ نَصْرُ اللهِ وَالْفَتْحُ** (प ३०، النصر: १) और फ़तह आए।

तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “मुझे मेरे इन्तिकाल की ख़बर दी गई है।” (سنن الدارمی، المقدمة، باب فی وفاة النبی صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ، الحديث ७९، ج १، ص ५१) फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीका رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا के घर इस हाल में तशरीफ़ लाए कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ को बुख़ार था।”

①...मुफ़स्सरे शहीर ख़लीफ़ आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी رَحِمَهُ اللهُ الْهَامِय तपस्रीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं “इस में कुफ़्फ़ार का रद्द है जो सय्यिदे आलम क़रीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की वफ़ात का इन्तिज़ार किया करते। उन्हें फ़रमाया गया कि “खुद मरने वाले हो कर दूसरे की मौत का इन्तिज़ार करना हिमाक़त है। कुफ़्फ़ार तो ज़िन्दगी में भी मरे हुए हैं और अम्बिया की मौत एक आन के लिये होती है फिर उन्हें हयात अता फ़रमाई जाती है। इस पर बहुत सी शरई बुरहानें (दलाइल) काइम हैं।”

## सय्यिदुना सिद्दीक़े अब्बर رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ को इमामत का हुक्म :

हज़रते सय्यिदुना बिलाल हब्शी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं : “जब मैं सुबह बेदार हो कर आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हुजरए अन्वर के पास हाज़िर हुवा और अर्ज़ की : “اَلَسَّلَامُ عَلَیْكُمْ” ऐ सर चश्मए नबुव्वत व रिसालत के अहले बैत “اَلصَّلٰوةُ جَامِعَةٌ !” तो आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना फ़ातिमतुज्जहरा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا को इरशाद फ़रमाया : “ऐ फ़ातिमा ! बिलाल (رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ) से कहो कि अबू बक्र (رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ) को सलाम कहो और कहो कि लोगों को नमाज़ पढ़ाएं।” हज़रते सय्यिदुना बिलाल रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं “मैं रोता हुवा वापस पलटा। मैं मदीने की गलियों में घूमता जाता और कहता जाता था “يَا نَبِيَّاهُ وَاسَيِّدَاہُ وَاَنْبِيَآہُ” मेरे सरदार, आह ! मेरे जलीलुल क़द्र नबी। काश ! बिलाल को इस की मां न जनती।” फ़रमाते हैं : “फिर मैं मस्जिद में आया तो वोह लोगों से खचा खच भरी हुई थी। मैं ने हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मुलाक़ात की और हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का सलाम व पैगाम पहुंचाया। फिर मैं ने “اَلصَّلٰوةُ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ” की सदा लगा कर नमाज़ के लिये इक़ामत कही। जब मैं ने “اَللّٰهُ اَكْبَرُ اللّٰهُ اَكْبَرُ” कहा तो मुसलमानों ने (जवाब में) “كَبِّرْ نَاہُ تَكْبِيرًا وَّعَظُمْنَاہُ تَعْظِيمًا” कहा। मैं ने “اَشْهَدُ اَنْ لَا اِلَهَ اِلَّا اللّٰهُ” कहा तो इन्हों ने “اَشْهَدُ اَنْ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ” कहा। जब मैं ने “اَشْهَدُ اَنْ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ” कहा तो मुझ पर गिर्या तारी हो गया, मैं भी रोने लगा और लोग भी रोने लगे (इक़ामत के बा'द) हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ आगे बढ़े और लोगों को इमामत कराई। जब आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने “بِسْمِ اللّٰهِ” शरीफ़ पढ़ कर सूरए फ़ातिहा की तिलावत शुरू की और आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की नज़र उस जगह पर पड़ी जहां सराकारे आली वक़ार صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने क़दमैंने शरीफ़ैन रखते थे तो रोने से आप रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की हिचकी बंध गई, और लोग भी रोने लगे। जब हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़लाक صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने लोगों का रोना धोना सुना तो हज़रते सय्यिदुना फ़ातिमा रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا से दरयाफ़्त फ़रमाया : “येह मस्जिद में आहो बुका और रोने की आवाज़ कैसी है?” उन्होंने अर्ज़ की : “लोगों ने आप को नमाज़ में न पाया (इस लिये रो रहे हैं)।” आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपना सरे अक़दस उठाया और येह दुआ की : “يَا اَبْلَاهُ عَزَّوَجَلَّ बुख़ार पर मामूर फिरिश्ते को हुक्म दे कि तेरे नबी पर तख़्फ़ीफ़ करे ताकि मैं बाहर जा कर लोगों को नमाज़ पढ़ा लूं और दुन्या छोड़ने से पहले अपने सहाबा को अलवदाअ कह लूं।”

## मरज़ में कमी :

रावी फ़रमाते हैं : “आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने बदन में बुख़ार की कमी पाई तो वुजू फ़रमाया और फिर हज़रते सय्यिदुना फ़ज़ल बिन अब्बास, हज़रते सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद और हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمْ का सहारा लिये घर से बाहर तशरीफ़ लाए। जब मुसलमानों ने हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अन्वार मस्जिद में दाख़िल होते देखे और आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم की आमद महसूस की तो वोह सफ़ दर सफ़ जुदा होते जाते

और आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ सफ़ों के दरमियान से गुज़रते जाते हत्ता कि आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मेहराबे अक़दस के पास पहुंच गए और हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के बराबर खड़े हो कर लोगों को नमाज़ पढ़ाई ।

**प्यारे आका क़ाख़िरी ख़ुतबा :**

जब हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़लाक صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो मिम्बरे अक़दस पर जलवा अफ़रोज़ हुए और ख़ुतबा इरशाद फ़रमाया । **अब्बाह** तआला की हम्दो षना की और अलवदाअ कहने वाले की तरह चेहराए अक़दस लोगों की तरफ़ मुतवज्जेह किया और फ़रमाया :

“ऐ लोगो ! क्या मैं ने तुम तक रिसालत न पहुंचा दी और नसीहत व अमानत अदा न कर दी ?” लोगों ने अर्ज़ की : “क्यूं नहीं, या रसूलल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ बेशक आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने रिसालत पहुंचा दी और अमानत अदा कर दी और उम्मत की खैर ख़्वाही की और **अब्बाह** की इबादत की यहां तक कि आप صَلَّى اللَّهُ तَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का आख़िरी वक़्त आ गया । **अब्बाह** हमारी तरफ़ से आप صَلَّى اللَّهُ तَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ को हर नबी عَلَيْهِ السَّلَام की जज़ा से अफ़ज़ल जज़ा दे जो उस ने हर नबी को उस की उम्मत की तरफ़ से अता की । फिर आप صَلَّى اللَّهُ तَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ मिम्बर शरीफ़ से नीचे उतरे और सहाबए किराम الرضوان عَلَيْهِمُ الرضوان को अलवदाअ कहा, उन से मुसाफ़हा फ़रमाया, सहाबए किराम الرضوان عَلَيْهِمُ الرضوان रो रहे थे ।

**मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام क़ा इजाज़त तलब करना :**

फ़िर सरकारे आली वकार, शाफ़ेए रोज़े शुमार, महबूबे ग़फ़ार صَلَّى اللَّهُ तَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीका رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا के घर तशरीफ़ ले गए और मरज़ में मुब्तला रहे यहां तक कि मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام एक आ'राबी के रूप में हाज़िरे ख़िदमत हुए और हुज़रए अक़दस के दरवाजे पर खड़े हो कर अर्ज़ की : “السَّلَامُ عَلَيْكُمْ” ऐ सर चश्माए नबुव्वत व रिसालत के अहले बैत क्या मुझे आप صَلَّى اللَّهُ तَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ख़िदमत में हाज़िरी की इजाज़त है ?” हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज्जहरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا ने जवाबन फ़रमाया : “ऐ आ'राबी ! आप صَلَّى اللَّهُ तَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ अपने आप में मशगूल हैं ।” उस ने फिर अर्ज़ की तो आप صَلَّى اللَّهُ तَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने दरवाजे से झांका और मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام को देख कर हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज्जहरा رَضِيَ اللَّهُ तَعَالَى عَنْهَا से इरशाद फ़रमाया : “जानती हो, तुम्हारा मुखातब हौन है ?” अर्ज़ की : “ऐ अब्बा जान ! कोई आ'राबी है ।” इरशाद फ़रमाया : “येह मलकुल मौत है, येह लज़ात को तोड़ने (या'नी शिकस्त देने) वाला है, इसे आने दो ।” पस वोह हाज़िरे ख़िदमत हुए और सलाम किया फिर अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللَّهُ तَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ **अब्बाह** ने मुझे येह हुक्म दे कर भेजा है कि आप صَلَّى اللَّهُ तَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की इजाज़त के बिगैर आप صَلَّى اللَّهُ तَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की रूह कब्ज़ न करूं, आप صَلَّى اللَّهُ तَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ



का क्या हुक्म है ?” आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “ठहर जाओ हत्ता कि हज़रते जिब्राईल (عَلَيْهِ السَّلَام) मेरे पास आएँ, येह उन के आने का वक़्त है।”

उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीका رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا फ़रमाती हैं : “हम ने ऐसी बात का सामना किया जिस के मुतअल्लिक हमारे पास कोई राए न थी। गोया हम पर कोई मुसीबत आन पड़ी हो, इस बात की बड़ाई और हैबत की वजह से घर वालों में से कोई भी बोल न सकता था। हज़रते सय्यिदुना जिब्राईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام हाज़िर हुए और अर्ज की : **اَللّٰهُمَّ** عَزَّ وَجَلَّ आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को सलाम फ़रमाता है और आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की मिज़ाज पुर्सी फ़रमाता है हालांकि वोह आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की हालत ख़ूब जानता है लेकिन वोह आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ को मज़ीद करामत व शरफ़ अता करना चाहता है।” आप عَلَيْهِ السَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : “ऐ जिब्राईले अमीन (عَلَيْهِ السَّلَام) मलकुल मौत (عَلَيْهِ السَّلَام) ने मुझ से इजाज़त त़लब की है और फिर आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने पूरी बात बताई।”

हज़रते सय्यिदुना जिब्राईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ने अर्ज की : “या मुहम्मद (صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ का रब्ब عَزَّ وَجَلَّ आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ का मुश्ताक़ है, क्या उस ने नहीं बताया कि वोह क्या करना चाहता है, खुदा عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام ने आज तक किसी से इजाज़त त़लब नहीं की, लेकिन **اَللّٰهُمَّ** عَزَّ وَجَلَّ आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के शरफ़ व मर्तबे को पूरा करने वाला है।” फिर हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “मलकुल मौत के आने तक आप यहां से न जाएं।” फिर आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने ख़वातीन को इजाज़त दी और इरशाद फ़रमाया : “ऐ फ़ातिमा ! मेरे क़रीब हो जाओ।” वोह हाज़िरे ख़िदमत हुई और आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की तरफ़ झुक गई। आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने उन के कान में सरगोशी फ़रमाई, उन्होंने ने अपना मुबारक सर उठाया तो आंखों से आंसू जारी थे। उन में बात करने की सकत न थी। सरकार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने फिर फ़रमाया : “अपना सर मेरे क़रीब करो।” तो वोह आप صَلَّى اللَّهُ تَعालَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की तरफ़ झुक गई। आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने दोबारा सरगोशी फ़रमाई, ख़ातूने जन्नत رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا ने सर उठाया तो वोह मुस्कुरा रही थीं लेकिन कलाम करने की ताक़त न थी।

उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीका رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا फ़रमाती हैं : “हमें उन की हालत से बहुत तअज्जुब हुवा। इस के बा'द जब उन से पूछा तो उन्होंने ने फ़रमाया : “मुझे रसूलुल्लाह (صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) ने बताया कि आज मैं इन्तिक़ाल कर जाऊंगा। तो मैं रोने लगी फिर फ़रमाया : “मैं ने दुआ की है कि **اَللّٰهُمَّ** عَزَّ وَجَلَّ मेरे घर वालों में से सब से पहले तूझे मुझ से मिलाए और मेरे साथ रखे।” चुनान्वे, इस बात ने मुझे खुश कर दिया।” फिर मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام हाज़िरे ख़िदमत हुए, सलाम किया और इजाज़त त़लब की। इजाज़त मिलने के बा'द अर्ज गुज़ार हुए : “या रसूलुल्लाह (صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ) अब मुझे आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ क्या

हुक्म फ़रमाते हैं ?” इरशाद हुवा : “मुझे मेरे रब्बे करीम عَزَّ وَجَلَّ से मिला दो ।” उन्होंने ने अर्ज की : “जी हां, आज ही मिला दूंगा, आप की साअत (या’नी इन्तिक़ाल की घड़ी) आप के सामने है ।” फिर वोह बाहर निकल गए और हज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام भी येह अर्ज करते हुए चल दिये : “या रसूलल्लाह (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) आज मैं आखिरी बार ज़मीन पर उतरा हूं, वह्य लपेट दी गई और दुन्या समेट दी गई, मुझे दुन्या में आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इलावा किसी से कोई काम न था और मुझे आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की महबूबत ही मक्सूद थी ।”

**सरकारे अली वक्कर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पसीनए खुशबूदार :**

उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا फ़रमाती हैं : “उस ज़ात की क़सम जिस ने हज़रते सय्यिदुना मुहम्मदे मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को हक़ के साथ मबऊष फ़रमाया ! घर में किसी को बोलने की ताब न थी और इस कलाम की अज़मत के पेशे नज़र कोई मर्दों को भी न बुला सकता था । हम सब सहमे हुए और खौफ़ ज़दा थे । आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا फ़रमाती हैं : “फिर मैं उठ कर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर हुई हत्ता कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم का सरे अन्वर अपनी छाती के साथ लगाया, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعालٰى عَلَيْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم के सीनए मुबारका को थाम लिया, आप صَلَّى اللّٰهُ तَعालٰى عَلَيْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم पर बेहोशी त़ारी हो गई यहां तक कि ग़ालिब आ गई । और आप صَلَّى اللّٰهُ तَعालٰى عَلَيْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم की पेशानी से इस क़दर पसीना टपकता था कि मैं ने कभी किसी इन्सान से इस क़दर नहीं देखा । मैं वोह पसीना पोंछती जाती थी और इस से ज़ियादा खुशबूदार चीज़ मैं ने कभी नहीं देखी । जब आप صَلَّى اللّٰهُ तَعालٰى عَلَيْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم को इफ़ाका हुवा तो मैं ने अर्ज की : “मेरे मां बाप, जान व माल और अहल आप صَلَّى اللّٰهُ तَعालٰى عَلَيْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم पर कुरबान ! आप صَلَّى اللّٰهُ तَعालٰى عَلَيْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم की पेशानी पर इस क़दर पसीना क्यूं है ?” इरशाद फ़रमाया : ऐ आइशा ! मोमिन की जान पसीने के ज़रीए निकलती है और काफ़िर की जान गधे की तरह उस की बाछों से निकलती है ।” उस वक़्त हम डर गए और अपने घर किसी को भेजा । सब से पहले मेरे भाई तशरीफ़ लाए लेकिन वोह आप صَلَّى اللّٰهُ तَعालٰى عَلَيْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم से मुलाक़ात न कर सके । उन्हें मेरे वालिदे माजिद (हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ रَضِيَ اللّٰهُ तَعालٰى عَنْهُ) ने मेरे पास भेजा था और किसी शख्स के आने से पहले ही आप صَلَّى اللّٰهُ तَعालٰى عَلَيْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم ने जान जाने आफ़रीं के सिपुर्द कर दी और **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने सब को रोक रखा था क्यूंकि उस ने आप صَلَّى اللّٰهُ तَعालٰى عَلَيْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم का मुआमला हज़रते जिब्राईल व मीकाईल व इसराफ़ील عَلَيْهِمُ السَّلَام के सिपुर्द कर रखा था । जब आप صَلَّى اللّٰهُ तَعालٰى عَلَيْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم पर बेहोशी त़ारी हुई तो इरशाद फ़रमाया : الرَّفِيقُ الْأَعْلٰى या’नी रफ़ीके आ’ला عَزَّ وَجَلَّ के पास जाना है ।”

(احياء علوم الدين، كتاب ذكر الموت وما بعده، الباب الرابع فى وفاة رسول الله ﷺ..... الخ، ج ٥، ص ٢٢٠/٢٢١)

**अज़मते सय्यिदा आइशा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا :**

उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا फ़रमाती हैं : “मेरे पास मेरे भाई हज़रते सय्यिदुना अब्दुर्रहमान رَضِيَ اللّٰهُ तَعालٰى عَنْهُ आए तो उन के हाथ में मिस्वाक थी । मेरे

सरताज, साहिबे मे'राज صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ उन की तरफ देखने लगे। मैं ने जान लिया कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मिस्वाक पसन्द फ़रमा रहे हैं। अर्ज की : “क्या आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के लिये उन से लूं?” तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने इशारे से फ़रमाया : “हां।” मैं ने मिस्वाक ली और आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ को पेश कर दी। आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने उस को अपने मुंह में दाखिल किया तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ को सख़्त लगी। मैं ने अर्ज की : क्या मैं इसे नर्म कर दूं?” आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने सर के इशारे से फ़रमाया : “हां।” मैं ने मिस्वाक चबा कर नर्म की और दस्ते अक्दस में दे दी। आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के सामने पानी का एक प्याला रखा हुआ था, उस में अपना दस्ते अक्दस दाखिल किया और फ़रमाया : “**اَللّٰهُمَّ** عَزَّ وَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं, बेशक मौत की सख़्तीयां बहुत है।” फिर अपना दस्ते अक्दस बुलन्द कर के इरशाद फ़रमाया : **اَللّٰهُمَّ الرَّفِيقَ الْاَعْلَى، اَللّٰهُمَّ الرَّفِيقَ الْاَعْلَى، اَللّٰهُمَّ الرَّفِيقَ الْاَعْلَى** या'नी ऐ **اَللّٰهُمَّ** **عَزَّ وَجَلَّ** तू ही आ'ला रफ़ीक है, ऐ **اَللّٰهُمَّ** **عَزَّ وَجَلَّ** तू ही आ'ला रफ़ीक है, ऐ **اَللّٰهُمَّ** **عَزَّ وَजَلَّ** तू ही आ'ला रफ़ीक है।” यहां तक कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का विसाल हो गया।”

(صحيح البخارى، كتاب المغازى، باب مرض النبي ﷺ ووفاته، الحديث ٤٤٩، ص ٣٦٥)

उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना अइशा सिद्दीक़ा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا फ़रमाती हैं : “नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने मेरे घर, मेरी बारी के दिन, मेरी गर्दन और सीने के दरमियान विसाल फ़रमाया और **اَللّٰهُمَّ** **عَزَّ وَجَلَّ** ने मौत के वक़्त मेरा और आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ का लुआबे अक्दस मिला दिया।”

हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के विसाल की ख़बर सब से पहले अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को हुई और आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ सब से पहले हाज़िर हुए। हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के चेहरए अक्दस पर यमनी चादर थी, आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने चेहरए अक्दस से चादर हटाई और बोसा लिया और रोते हुए अर्ज की : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ मेरे मां बाप आप (صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) पर कुरबान ! आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने पाकीज़ा ज़िन्दगी गुज़ारी और पाकीज़ा विसाल फ़रमाया। जो मौत **اَللّٰهُمَّ** **عَزَّ وَجَلَّ** ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के लिये लिख दी थी वोह आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने पा ली। इस्लाम के लिये ख़ैर ख़्वाही पर **اَللّٰهُمَّ** **عَزَّ وَجَلَّ** आप रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को बेहतरीन जज़ा अता फ़रमाए। फिर आप रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ लोगों की तरफ़ निकले और आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के इन्तिक़ाल की ख़बर दी।”

(صحيح البخارى، كتاب الجنائز، باب الدخول على الميت بعد الموت.....الخ، الحديث ١٢٤١، ص ٩٧ - بتغيير قليل)

### उम्मतें मुस्तफ़ा पर खुशूसी करम :

हज़रते सय्यिदुना इब्ने मसऊद रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़रहीम عَلَيْهِ السَّلَام से इस्तिफ़सार फ़रमाया : “मेरे बा'द मेरी उम्मत के लिये कौन होगा?” तो **اَللّٰهُمَّ** **عَزَّ وَجَلَّ** ने हज़रते सय्यिदुना



जिब्राईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام की तरफ वहत फरमाई कि मेरे महबूब (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَآلِهٖ وَسَلَّم) को खुश खबरी सुना दे कि “मैं उसे उस की उम्मत के सिलसिले में रुस्वा नहीं करूंगा और उसे येह बिशारत भी दे दे कि जब लोगों को क़ब्रों से बाहर निकाला जाएगा तो सब से पहले मेरा हबीब (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَآلِهٖ وَسَلَّم) बाहर तशरीफ़ लाएगा । जब लोग जम्अ होंगे तो मेरा महबूब (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَآلِهٖ وَسَلَّم) ही उन का सरदार होगा और जब तक उस की उम्मत जन्नत में दाख़िल न हो जाए तमाम उम्मतों पर वोह ह़राम रहेगी ।” (येह सुन कर) आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَآلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “अब मेरी आंखें ठन्डी हुई और मेरा दिल खुश हुवा ।”

(احياء علوم الدين، كتاب ذكر الموت وما بعده، الباب الرابع في وفاة رسول الله ﷺ..... الخ، ج ٥، ص ٢١٧)

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ हाज़िरे ख़िदमत हुए तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَآلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “ऐ अबू बक्र ! सुवाल करो ।” हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने पूछा : “या रसूलल्लाह صَلَّमُ عَلَيْهِ وَآلِهٖ وَسَلَّم क्या मौत का वक़्त करीब आ गया ?” इरशाद फ़रमाया : “मौत का वक़्त करीब आ गया और बहुत करीब आ गया ।” अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह صَلَّमُ عَلَيْهِ وَآलِهٖ وَسَلَّم आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَآलِهٖ وَسَلَّم को मुबारक हो जो **اَبْلَاح** عَزَّ وَجَلَّ ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَآलِهٖ وَسَلَّم के लिये तय्यार कर रखा है । काश ! मैं जानता कि आप कहां जा रहे हैं ?” तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَآलِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “**اَبْلَاح** عَزَّ وَجَلَّ की तरफ़, फिर सिद्रतुल मुन्तहा की तरफ़, फिर जन्नतुल मावा, अर्शे आ’ला और रफ़ीके आ’ला की तरफ़, फिर खुश गवार ज़िन्दगी से मिलने वाले हिस्से की तरफ़ ।” आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने अर्ज़ की : “आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَآलِهٖ وَسَلَّم को गुस्ल कौन देगा ?” इरशाद फ़रमाया : “मेरे घर के मदों में से सब से करीब तर ।” अर्ज़ की : “आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَآलِهٖ وَسَلَّم को किन कपड़ों में कफ़न दें ?” फ़रमाया : “मेरे इन्ही कपड़ों में और यमनी चादर और मिस्री सफ़ेद कपड़ों में ।” आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने अर्ज़ की : “आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَآलِهٖ وَسَلَّم पर नमाज़ का तरीक़ा क्या होगा ?” फिर आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ रोने लगे और हम भी रो दिये तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَآलِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “बस करो, **اَبْلَاح** عَزَّ وَجَلَّ तुम्हारी मग़फ़िरत फ़रमाए और तुम्हें अपने नबी صَلَّमُ عَلَيْهِ وَآलِهٖ وَسَلَّم की तरफ़ से अच्छा बदला अता फ़रमाए । जब तुम मुझे गुस्ल व कफ़न दे चुको तो मुझे मेरे इसी हुजरे में चार पाई पर रख देना और चार पाई क़ब्र के कनारे रख कर कुछ देर के लिये बाहर चले जाना । सब से पहले मुझ पर मेरा रब्ब عَزَّ وَجَلَّ दुरूद (या’नी रहमत) भेजेगा । खुद इरशाद फ़रमाता है :

﴿٢﴾ هُوَ الَّذِي يُصَلِّي عَلَيْكُمْ وَمَلَائِكَتُهُ

(پ ٢٢، الاحزاب: ٤٣)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : वोही है कि दुरूद भेजता है तुम पर वोह और उस के फिरश्ते । (1)

①...मुफ़सिरे शहीर, ख़लीफ़ आ’ला हज़रत, सदरुल अफ़ज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِي तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं “शाने नुज़ूल : हज़रते अनस रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने फ़रमाया कि जब आयत اِنَّ اللّٰهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ नाज़िल हुई तो हज़रते सिद्दीक़े अकबर ने अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّमُ عَلَيْهِ وَآलِهٖ وَسَلَّم जब आप को **اَبْلَاح** तअाला कोई फ़ज्लो शरफ़ अता फ़रमाता है तो हम नियाज़ मन्दों को भी आप के तुफ़ैल में नवाज़ ता है । इस पर **اَبْلَاح** तअाला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई ।

फिर **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ फिरिश्तों को मुझ पर दुआए रहमत की इजाजत देगा। तमाम मख्लूक में सब से पहले हज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام मुझ पर नमाज़ पढ़ेंगे (या'नी दुआए रहमत करेंगे), फिर हज़रते मीकाईल عَلَيْهِ السَّلَام फिर हज़रते इसराफ़ील عَلَيْهِ السَّلَام पढ़ेंगे। फिर हज़रते इज़राईल عَلَيْهِ السَّلَام मलाइका के बड़े बड़े लश्करों के साथ आएंगे। फिर तुम मुझ पर गुरौह दर गुरौह आना और ख़ूब सलाम पेश करना और चीखो पुकार और रोने धोने से मुझे अज़ियत न पहुंचाना। और तुम में से जो इمام हो वोह इब्तिदा करे फिर मेरे अहले बैत के क़राबत दार फिर ख़वातीन का गुरौह और फिर बच्चों का गुरौह।" हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अर्ज़ की : "आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को क़ब्रे अक़दस में कौन उतारेगा?" इरशад फ़रमाया : "मेरे अहले बैत के क़रीबी लोग और उन के साथ बेशुमार मलाइका होंगे, तुम उन को न देख सकोगे मगर वोह तुम्हें देख रहे होंगे। उठो और मेरी तरफ़ से बा'द वालों को सलाम पहुंचा दो।" (المرجع السابق، ص २१९)

**शरकार** عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان **का विशाल और सहाबए क़राम** **का हुज़्जो मलाल** :

जब हुज़्जो पुरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने पर्दा फ़रमाया तो लोग मस्जिद में जम्अ हो गए और ग़म व अलम से सिस्कियां ले ले कर रोने लगे और दुनिया तारीक हो गई। हज़रते सय्यिदुना बिलाल हब्शी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ पुकारने लगे : "وَإِنِّيَاءُ" ऐ मेरे जलीलुल क़द्र नबी !" हज़रते सय्यिदुना फ़ातिमतुज्जहरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا की फ़रयाद निकली : "وَإِبْسَاءُ" ऐ मेरे अज़ीम बाप !" हज़रते सय्यिदुना हसन व हज़रते सय्यिदुना हुसैन رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا ने सदा लगाई : "وَإَجْدَاءُ" ऐ हमारे ज़दे करीम !" और हर मुसलमान ने ग़म व अलम में डूब कर कहा : "وَإَحْزَنَاءُ" हाए हमारा रन्जो अलम !"

हुज़्जूर عَلَيْهِ السَّلَام के विसाले पुर मलाल पर शिद्दते ग़म से खुलफ़ाए राशिदीन अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'जम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उषमाने ग़नी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ और अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की आंखों से सैले अशक रवां हो गया।

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** इस दुनिया में रहने की तम्अ क्यूं की जाती है ? हालांकि नबिय्ये मुख्तार, महबूब ग़फ़ार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने भी इस को छोड़ दिया, आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के विसाले पुर मलाल पर जिगर जल रहा है और पल्के आंसूओं में डूब रही हैं, सब हाथों से जा रहा है और आंसू बह रहे हैं, आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की जुदाई की चोट ने तमाम मसाइब को कम कर दिया और आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की रुख़्सत ने दोस्तों की ज़िन्दगी बे कैफ़ कर दी। आंसूओं के हार को मुन्तशिर कर दिया। पस्लियों के दरमियान ग़म की आग रोशन कर दी। जमे हुए आंसूओं को पिघला दिया और ग़म की बुझी हुई आग को भड़का दिया।

तो ऐ ग़म ज़दा ! क्या हुज़ूर सय्यिदुल मुर्सलीन, जनाबे रहूमतुल्लिल आलमीन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के विसाल के बा'द भी इस दुन्या में हमेशा रहने की तम्अ करता है ? क्या तेरे लिये उन लोगों में इब्रत नहीं जिन्हें गुज़स्ता सालों में महीनों और ज़मानों ने ख़त्म कर दिया ? क्या तेरे लिये उन लोगों में कोई ग़ौरो फ़िक्र नहीं जिन्हें तुझ से पहले मौत ने पछाड़ दिया । इन में से कोई बुढ़ा था तो कोई अधेड़ उम्र, कोई नौजवान था तो कोई बच्चा जब कि कोई तो पैदा होते ही राहे आख़िरत पर चल पड़ा । क्या तू ने इन से इब्रत न पकड़ी जिन को तू ने क़ब्रों में दफ़्न किया जैसे दोस्त, अहबाब, भाई और हमसाए वग़ैरा । तू कब तक महज़ दुन्यवी तअल्लुक़ात की तरफ़ मुतवज्जेह रहेगा ? गोया तुझे मौत का यकीन नहीं । क्या मौत के मुतअल्लिक़ तुझे मोहलत ने धोके में डाला या ज़माने (के हालात) ने तुझ से धोका किया ।

तुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मेरी नसीहत क़बूल कर इस से पहले कि तेरी पेशानी अर्क़ आलूद हो, तुझ पर हालते नज़अ और ग़म की कैफ़ियत तारी हो और मुसलसल आंसू बहाए जाने लगें और तुझे अन्धेरी क़ब्र में डाल दिया जाए जिस में रोशनी बिल्कुल ज़ाहिर न होगी । इस में तो हर जान अपनी कमाई के बदले गिरवी रखी हुई होगी । क्या तू ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की वाजेह आयाते मुबारका न सुनीं :

﴿٣﴾ لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُولِ اللَّهِ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ  
(प २१, अल-अज़ाब: २१)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक तुम्हें रसूलुल्लाह की पैरवी बेहतर है । (१)

क्या तुझे इस फ़रमाने इलाही عَزَّوَجَلَّ ने न डराया ?

﴿٤﴾ كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ  
(प २७, अल-रहमन: २७)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ज़मीन पर जितने हैं सब को फ़ना है ।

क्या ज़माने ने तुझे नसीहत न की और येह खुदाई फ़ैसला न सुनाया ?

﴿٥﴾ كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ ط (प ४, अल-अमरान: १८०)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** हर जान को मौत चखनी है ।

जब मक़ामे महमूद पर फ़ाइज़ होने वाली हस्ती भी विसाल फ़रमा गई, जो हौज़े कौषर और लिवाउल हम्द के मालिक हैं और जिन के लिये बरोज़े क़ियामत शफ़ाअत का वा'दा है । तो तू क्या और तेरी हालत कैसी ? ऐ ठुकराए और धुत्कारे हुए इन्सान ! तेरा सारा नामए आ'माल गुनाहों से सियाह है, तेरे आ'माल को ठुकरा दिया गया है । ऐ फ़ानी ज़माने से धोका खाने वाले और बेकुसूरों पर मज़ालिम ढाने वाले ! खुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जुल्म बहुत बुरा है । ऐ लोगों को अपने जुल्म से डराने वाले ! कल बरोज़े क़ियामत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में सब मज़लूम (बदला लेने के लिये) जम्अ होंगे ।

①...मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِي तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयाते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं “इन का अच्छी तरह इत्तिबाअ करो और दीने इलाही की मदद करो और रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का साथ न छोड़ो और मसाइब पर सब्र करो और रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की सुन्तों पर चलो येह बेहतर है ।”



ऐ मेरे इस्लामी भाइयो ! तुम्हें रग़बत दिलाई गई लेकिन तुम राग़िब न हुए । तुम्हें ख़ौफ़ दिलाया गया लेकिन तुम मरऊब न हुए । मौत ने तुम से पहलों को हड़प कर के तुम्हें बेदार किया लेकिन तुम बेदार न हुवे । कुरआने हकीम ने तुम्हें नसीहत की लेकिन तुम बुराई से बाज़ न आए न नसीहत हासिल की । गोया कूच का नक्क़ारा बजाने वाला तुम्हारी महाफ़िल में निदा दे रहा है : “ऐ सोने वालो ! ख़्वाबे ग़फ़लत से बेदार हो जाओ, तुम्हारा बुलावा आ गया है ।” और पुकार रहा है :

जनाज़ा आगे बढ़ कर कह रहा है ऐ जहां वालो !

मेरे पीछे चले आओ तुम्हारा राहनुमा मैं हूँ

क्या महबूबे खुदा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के विसाल से भी तुम ने कोई इब्रत न पकड़ी ? क्या तुम्हें इस ज़बरदस्त चोट लगने से भी कोई नसीहत न मिली ? क्या आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के तशरीफ़ ले जाने से भी तुम्हें अपनी बेहोशी के नशे से इफ़ाका न हुवा ? क्या तुम्हारे मौत के क़रीब होने ने तुम्हें सोच में मुब्तला न किया ? क्या तुम ने अपने से पहले शुरफ़ा की मौत से इब्रत हासिल न की ? क्या तुम्हें अपने मां बाप और बच्चों को दफ़न कर के भी हसरत तारी न हुई ? तुम कैसे लज़्ज़ात से लुत्फ़ अन्दोज़ होते हो हालांकि हमारे साहिबे मो'जिज़ात आका صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने इब्रत निशान है : **إِنَّ لِّلْمَوْتِ لَسُكْرَاتٍ** या'नी मौत की सख़्तीयां बहुत हैं ।”

(صحيح البخارى، كتاب المغازى، باب مرض النبي ﷺ ووفاته، الحديث ٤٤٤٩، ص ٣٦٥)

क्या तुम्हारी एशो इशरत वाली ज़िन्दगी की मिठास कड़वी न हुई ? जब फ़ौत होने वाले ने मौत के वक़्त कहा : **“وَإِكْرَبَاةُ”** हाए मौत की सख़्ती ।” क्या तुम्हें हज़रते सय्यदतुना फ़ातिमतुज्जहरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا के दर्द ने न रुलाया ? जब आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا ने अपने वालिदे मोहतरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के विसाल पर कहा : **“يَا أَبْنَاهُ”** या'नी ऐ मेरे अब्बा जान ! आप की तक्लीफ़ से मुझे कितना ग़म हुवा ।” कहां हैं अक्ल वाले ? कहां हैं वोह जो अहम कामों में मशगूल रहते थे ? कहां हैं जो इस फ़ानी घर में हमेशा रहने के धोके में मुब्तला थे ? जब कि महबूबे खुदा, अहमदे मुजतबा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ भी इस दुन्या से विसाल फ़रमा गए ।

अम्बिया को भी अजल आनी है  
फिर उसी आन के बा'द उन की हयात  
रूह तो सब की है ज़िन्दा उन का  
औरों की रूह हो कितनी ही लतीफ़  
पाउं जिस खाक पे रख दें वोह भी  
उस की अज़वाज को जाइज़ है निकाह  
येह हैं हय्य अबदी इन को “रज़ा”

मगर ऐसी कि फ़क़त आनी है  
मिष्ले साबिक़ वोही जिस्मानी है  
जिस्म पुरनूर भी रूहानी है  
उन के अजसाम की कब षानी है  
रूह है पाक है नूरानी है  
उस का तर्का बटे जो फ़ानी है  
सिद्के वा'दा की क़ज़ा मानी है

وَصَلَّى اللهُ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِهِ وَصَحْبِهِ أَجْمَعِينَ



बयान 47 :

## अनीखे वाकिआत

हम्मे बारी तआला :

तमाम ता'रीफें **अल्लाह** तआला के लिये हैं जिस ने अपने बन्दों में से जिसे चुन लिया उसे अपनी इबादत के लिये पसन्द फरमाया। और अपने पसन्दीदा बन्दे को अपनी बारगाहे अक्दस की तरफ माइल फरमाया तो बन्दे ने भी उस की तरफ माइल होने और इताअत करने में जल्दी की। और उस ने अपने चाहने वाले बन्दे की ठहरी हुई हिम्मतों को हरकत दी तो येह उस की हुसूले मुराद का सबब बन गया और उस ने बन्दे से उन रुकावटों को दूर कर दिया। उसे दूरी के बा'द कुर्ब बख्शा। रात के आखिरी हिस्सों में उसे हम नशीनी का शरफ अता फरमाया। उसे असरार व रुमूज पर मुत्तलअ किया। और बन्दा महज अपनी ख्वाहिश व कोशिश से उस मक़ाम तक नहीं पहुंचा। और उसी ने उसे इस बात की तौफीक दी जो उस तक पहुंचाती है। और उसे अपनी हिदायत के रास्ते पर गामज़न किया। और जब उसे अपने अहद और महब्बत की हिफाज़त करने वाला पाया तो उस के दिल को अपनी महब्बत व चाहत से भर दिया और उस पर अपने फज़्तो इन्आम के ज़रीए तजल्ली फरमाई। जब कि दूसरी तरफ़ गाफ़िल बन्दा नींद और आराम की लज़्ज़तों में मुनहमिक है। हालांकि वोह तो फरमा रहा है कि “ऐ मेरे बन्दे ! सुन मैं ही तुझ पर तजल्ली फरमाने वाला और निगाहे करम करने वाला हूं।” और जिसे येह रुत्बा मिल गया बिला शुबा वोह अपना मक्सूद व सआदत मन्दी पाने में कामयाब हो गया।

अगर गाफ़िल बन्दा जान लेता कि उस ने क्या खोया तो वोह अकषर नौहा कुनां रहता। अगर वोह महबूब के अपने दोस्तों से ख़िताब को सुन लेता तो कभी भी वोह हसरत व यास उस के दिल से न निकलती। अगर वोह जलवए महबूब का मुशाहदा कर लेता तो जहान से अलग हो कर रह जाता। सबक़त ले जाने वाले सबक़त ले गए और काम तो पूरा हो चुका। और उस का फरमाने जीशान है :

وَاللّٰهُ يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهِ مَن يَّشَاءُ (پ ۱، البقرة: ۱۰۵)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और **अल्लाह** अपनी रहमत से ख़ास करता है जिसे चाहे।

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है, हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फरमाने रहमत निशान है : “जो कौम **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के घरों में से किसी घर में किताबुल्लाह की तिलावत और इस का बाहम दर्स देने के लिये जम्अ होती है तो उन पर सुकून नाज़िल होता है, रहमत उन्हें ढांप लेती है और **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उन का ज़िक्र फ़िरिश्तों में फरमाता है।”

(صحيح مسلم، كتاب الذکروالدعاء، باب فضل الاجتماع..... الخ، الحديث ۲۶۹۹، ص ۱۱۴۷)

कषरते इबादत करने वाला जन्नीती :

हज़रते सय्यिदुना राफ़ेअ बिन अब्दुल्लाह عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ फरमाते हैं, मुझे हज़रते सय्यिदुना हिश्शाम बिन यह्या किनानी قُدَسَ سِرُّهُ السُّورَانِ ने इरशाद फरमाया : “क्या मैं आप को वोह वाकिआ न बयान करूं जो मेरी आंखों ने देखा और उस वक़्त मैं खुद वहां मौजूद था ? **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने मुझे इस से नफ़अ दिया, उम्मीद है तुम्हें भी इस से नफ़अ होगा।” मैं ने कहा : “ऐ अबल बलीद ! मुझे

बयान कीजिये ।” तो उन्होंने ने बयान फ़रमाया : “हम ने सिने 88 हिजरी में रूम की सरज़मीन पर जिहाद किया । हमारे साथ सईद बिन हर्ष नामी एक नेक शख्स था, वोह कषरत से इबादते इलाही करता, दिन को रोज़ा रखता, रात को इबादत करता । जब हम चलते तो वोह कुरआने पाक की तिलावत करता । जब ठहरते तो **اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى رَسُوْلِكَ** का ज़िक्र करता । फिर एक रात ऐसी आई कि हम सख़्त खौफ़ में मुब्तला हो गए । मैं और अयास पहरादारी के लिये निकले, हम एक ऐसे क़लए का मुहासरा किये हुए थे जिस का मुआमला हम पर सख़्त दुश्वार हो चुका था । मैं ने हज़रते सय्यिदुना सईद बिन हर्ष **عليه رضى الله عنه** को उस रात भी इबादत में मशगूल पाया और मसाइब पर उस के सब्र करने से मुझे बहुत तअज्जुब हुवा । जब सुब्ह तुलूअ हुई तो मैं ने कहा : “**اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى رَسُوْلِكَ** आप पर रहम फ़रमाए, आप पर नफ़स का भी कुछ हक़ है, आप आराम क्यूं नहीं फ़रमाते ?” तो वोह रो दिये और फ़रमाया : “ऐ मेरे भाई ! येह सांसें शुमार की जा चुकी हैं, उम्र घट रही है, दिन पूरे हो चुके हैं, मेरे पीछे मौत है और मुझे अपनी रूह निकलने का इन्तिज़ार है ।”

रावी फ़रमाते हैं : “इस बात ने मुझे रुला दिया । मैं ने उन से कहा : “मैं आप को **اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى رَسُوْلِكَ** की क़सम देता हूँ कि आप ख़ैमे में दाख़िल हो कर आराम फ़रमाएं ।” जब मैं ख़ैमे में दाख़िल हुवा तो वोह सो चुके थे । मैं ख़ैमे के दरवाज़े पर बैठा हुवा था कि अचानक अन्दर से बातों की आवाज़ सुनाई दी तो मैं ने दिल में कहा : “ख़ैमे में इन के सिवा और तो कोई नहीं ।” बहर हाल मैं कुछ आगे बढ़ा तो देखा कि वोह नींद में मुस्कुरा रहे हैं और किसी से बातें कर रहे हैं । मैं ने उन की एक बात याद कर ली और वोह येह कह रहे थे : “मैं लौटना नहीं चाहता ।” फिर उन्होंने ने अपना दायां हाथ बुलन्द किया गोया कुछ ढूँढ रहे हों । फिर हंसते हुए आहिस्तागी से नीचे कर लिया । और हांपते हुए बेदार हो गए । मैं ने उन को सीने से लगा लिया तो उन्होंने ने दाएं बाएं मुड़ कर देखा फिर कुछ सुकून व इतमीनान हासिल हुवा और हवास बहाल हुए तो कलिमए तय्यिबा पढ़ने और तक्बीर कहने लगे । मैं ने अज़र्ज की : “क्या मुआमला है ?” फ़रमाया : “ख़ैर है ।” मैं ने पूछा : “मुझे बताइये क्यूंकि मैं ने आप को येह कहते हुए सुना है कि मैं वापस नहीं लौटना चाहता ।” फिर मैं ने देखा कि आप ने अपना हाथ बढ़ाया और कुछ देर बा’द आहिस्ता आहिस्ता नीचे कर लिया ।” उन्होंने ने जवाब दिया : “मैं नहीं बताऊंगा ।”

फिर जब मैं ने उन्हें क़सम दी तो फ़रमाया : “जब तक मैं ज़िन्दा रहूँ आप इस बात को ज़ाहिर नहीं करोगे ।” मैं ने कहा “हां ठीक है ।” तो फ़रमाने लगे : “मैं ने देखा गोया क्रियामत काइम हो चुकी है । लोग हक्के बक्के, अपने रब्ब **عَزَّوَجَلَّ** के हुक्म का इन्तिज़ार करते अपनी क़ब्रों से निकल रहे हैं । इसी दौरान दो आदमी मेरे पास आए, उन जैसा हसीन चेहरे वाला मैं ने न देखा था । उन्होंने ने मुझे सलाम किया, मैं ने सलाम का जवाब दिया फिर उन्होंने ने मुझ से कहा : “ऐ सईद ! आप को बिशारत हो । आप के गुनाह मुआफ़ कर दिये गए, मेहनत वुसूल हुई, अमल क़बूल हुवा और दुआ भी मक़बूल हुई, आप को जल्द खुश ख़बरी दी जाएगी, आप हमारे साथ चलें ताकि हम आप को



वोह ने 'मतें दिखाएं जो **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ ने आप के लिये तय्यार कर रखी हैं।" हज़रते सय्यिदुना सईद बिन हर्ष عليه رَحْمَةُ الرَّبِّ फ़रमाते हैं : "मैं उन के साथ चल दिया, उन्होंने ने मुझे मैदाने हशर से गाइब कर दिया तो अचानक एक ख़ूब सूरत घोड़ा हमारे सामने था जो दुन्यवी घोड़ों जैसा न था बल्कि उचकने वाली बिजली की मानिन्द या तेज़ चलने वाली हवा की तरह था। हम उस पर सुवार हो कर चल पड़े और देखते ही देखते एक ऐसे बुलन्द महल के पास जा पहुंचे जिस का कनारा दिखाई न देता था। वोह चांदी से जड़ा हुवा था और उस से रोशनी झलक रही थी। जब हम उस के दरवाजे पर पहुंचे तो वोह खुद ब खुद खुल गया। हम अन्दर दाख़िल हुए तो वहां ऐसी अश्या देखीं जिन की न कोई ता'रीफ़ बयान कर सकता है और न किसी इन्सानी दिल पर उस का खटका गुज़रा होगा। उस में हूरें थीं, सितारों की गिनती के बराबर खुद्दाम और गुलाम भी थे। उन्होंने ने हमें देखा तो सुरीली आवाज़ में येह नग़मे अलापने लगे : **اَهْلًا وَ سَهْلًا مَرْحَبًا** येह **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ का वली तशरीफ़ लाया है।"

हम चलते चलते एक ऐसे इजतिमाअ में पहुंचे जहां हीरे जवाहिरात से आरास्ता सोने के तख़्त बिछे हुए थे और इर्द गिर्द सोने की कुरसियों का घेरा था। हर तख़्त पर एक ऐसी ख़ूब सूरत ख़ातून बैठी थी जिस का वस्फ़ कोई मख़्लूक़ न बयान कर सके, और उन के बीच में एक ऐसी औरत जल्वा फ़रमा थी जो क़दो कामत, हुस्नो ज़माल और वस्फ़े क़माल में उन सब से बरतर थी। यहां पहुंच कर मेरे साथ वाले दोनों मर्द येह कह कर गाइब हो गए कि "येह आप का घर, ख़ानदान और आराम गाह है।"

उन के जाने के बा'द वोह ख़ूब सूरत औरतें "मरहूबा खुश आमदीद" कहते हुए मेरी तरफ़ ऐसे बढ़ीं जैसे कोई गाइब जब अपने अहल में वापस आता है तो उस के घर वाले उस की तरफ़ लपकते हैं। कुछ देर के बा'द उन्होंने ने मुझे दरमियाने तख़्त पर बैठी औरत के पास बिठा दिया और कहा : "येह आप की बीवी है और आप के लिये इस जैसी और भी हूरें हैं, वोह सब आप की मुन्तज़िर हैं।" हम ने आपस में गुफ़्तगू की तो मैं ने पूछा : "मैं कहां हूं?" उस ने जवाब दिया : "जन्नतुल मावा में।" मैं ने पूछा : "तुम कौन हो?" जवाब दिया : "मैं आप की हमेशा रहने वाली बीवी हूं।" मैं ने पूछा : "दूसरी कहां हैं?" उस ने कहा : "वोह आप के दूसरे महल्लात में हैं।" मैं ने कहा : "मैं आज आप के पास ठहरूंगा और कल उन के पास जाऊंगा।" फिर मैं ने उस की तरफ़ अपना हाथ बढ़ाया तो उस ने नर्मी से मेरा हाथ रोक लिया और कहा : "आज तो आप दुन्या की तरफ़ लौट जाएंगे और तीन दिन बा'द आएंगे।" मैं ने कहा : "मैं दुन्या की तरफ़ लौटना पसन्द नहीं करता।" तो उस ने कहा : "आप का दुन्या में लौटना ज़रूरी है और तीन दिन बा'द आप हमारे हां इफ़तार करेंगे।" फिर मैं उस मुबारक इजतिमाअ से उठा और वोह मुझे रुख़्सत करने उठी तो मेरी आंख खुल गई।" हज़रते सय्यिदुना हिशशाम رحمة الله عليه फ़रमाते हैं : "येह सुन कर मैं रोने लगा और उन से कहा : "ऐ सईद ! आप को मुबारक हो, **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा कीजिये, उस ने आप के अमल का षबाब दिखा दिया है।" उन्होंने ने दरयाफ़्त फ़रमाया "क्या जो आप ने देखा वोह किसी और ने भी देखा है?" तो मैं ने कहा : "नहीं।" इस पर उन्होंने ने फ़रमाया : "मैं आप को क़सम देता

हूं कि जब तक मेरी ज़िन्दगी है इस बात को छुपाएंगे।” फिर वोह खड़े हुए, वुजू किया, खुशबू लगाई और अपने हथियार उठा कर मैदाने जंग में पहुंच गए। वोह रोज़े से थे और रात तक लड़ते रहे फिर वापस आए। लोग इन की लड़ाई के मुतअल्लिक गुफ्तगू कर रहे थे और कह रहे थे : “हम ने ऐसा लड़ने वाला नहीं देखा, येह तो अपनी जान को दुश्मनों के तीरों और नेजों के आगे डाल देते हैं, और हर बार वोह पस्पा हुए।” तो मैं ने दिल में कहा : “अगर येह इन का मर्तबा देख लेते तो इन जैसा ही करते” फिर आखिर रात तक क़ियाम की हालत में रहे और सुब्ह रोज़े की हालत में की और दूसरे दिन पहले दिन से ज़ियादा लड़े और फिर रात को क़ियाम किया। सुब्ह फिर रोज़े की हालत में थे और पहले से भी ज़ियादा क़िताल किया। हज़रते सय्यिदुना अबुल वलीद عليه رحمة الله الوحيد फ़रमाते हैं : “मैं उन के साथ हो लिया ताकि देखूं कि वोह क्या करते हैं तो मैं ने देखा कि वोह पूरा दिन अपनी जान को हलाकतों में डाले रहे लेकिन उन्हें कोई नुक़सान न हुवा। बिल आखिर गुरुबे आफ़ताब के वक़्त एक तीर उन के गले में आ लगा जिस के सबब वोह ज़मीन पर तशरीफ़ ले आए। मैं उन्हीं को देख रहा था कि लोग चीखो पुकार करते हुए तेज़ी के साथ उन की तरफ़ बढ़े और उन्हें मैदाने कारज़ार से बाहर उठा लाए। जब मैं ने उन को देखा तो कहा : “ऐ सईद ! आप को मुबारक हो कि आज आप जन्नत में रोज़ा इफ़्तार करेंगे, काश ! मैं भी आप के साथ होता।” रावी फ़रमाते हैं : “उन्होंने ने अपने निचले होटों को हरकत दी और मुस्कुराते हुए कहा : “اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِي صَدَقْنَا وَعَدَهُ” या'नी सब ख़ूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने अपना वा'दा पूरा फ़रमाया।” फिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِ का विसाल हो गया। हज़रते सय्यिदुना हिश्शाम رَحْمَةُ اللهِ السَّالَم عَلَيْهِ कहते हैं : “मैं ने ब आवाज़े बुलन्द कहा : “ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दो !

(113: الطُّفَّت) ﴿لِمِثْلِ هَذَا فَلْيَعْمَلِ الْعَمِلُونَ﴾ **तर्जमए कन्ज़ुल इमान** : ऐसी ही बात के लिये कामियों को काम करना चाहिये।

मेरी बात सुनो ! मैं तुम्हें तुम्हारे इस भाई के मुतअल्लिक बताऊं।” लोग मुतवज्जेह हुए तो मैं ने उन्हें सारा मुआमला बताया तो वोह रोने लगे फिर उन्होंने ने तक्बीर कही जिस से पूरा लश्कर दहल गया और येह बात फैल गई। अमीर लश्कर हज़रते सय्यिदुना मुस्लमा عليه رحمة الله को मा'लूम हुवा तो वोह खुद तशरीफ़ लाए और हम ने उन की मय्यित को रखा ताकि नमाज़े जनाज़ा पढ़ें। मैं ने अमीर लश्कर हज़रते सय्यिदुना मुस्लमा عليه رحمة الله से अर्ज की : “आप इन की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाएं।” उन्होंने ने फ़रमाया : “इन की नमाज़े जनाज़ा वोह पढ़ाए जो इन की हालत के मुतअल्लिक जानता हो।” फिर हम ने उन की नमाज़े जनाज़ा अदा की और उन को उसी जगह दफ़न कर दिया। लोग रात को येही गुफ़्तगू करते हुए सो गए। जब सुब्ह हुई तो हम ने इस वाक़िअ का दोबारा ज़िक्र किया तो लोग यक्वारगी चिल्ला उठे और दुश्मन पर टूट पड़े। चुनान्वे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन की बरकत से उसी दिन क़लए पर फ़त्ह अता फ़रमाई।

(**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी मग़फ़िरत हो। आमीन)

**सरकार** صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का वशीला राहिबों के काम आ गया :

हज़रते सय्यिदुना अबू या'कूब तबरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَنِي फ़रमाते हैं : “एक दफ़आ मैं मुल्के शाम के इरादे से सफ़र पर निकला तो एक बे आबो गया मैदान में चन्द रोज़ इस तरह गुज़रे कि मैं हलाकत के करीब पहुँच गया। इसी हालत में, मैं ने दो राहिब इस तरह चलते देखे गोया वोह अपने घरों से निकल कर किसी करीबी गिर्जा की तरफ़ जा रहे हों। मैं उन की तरफ़ गया और उन से पूछा : “आप कहां जा रहे हैं ?” उन्होंने ने कहा : “हम नहीं जानते।” मैं ने पूछा “कहां से आ रहे हैं ?” जवाब दिया : “हम नहीं जानते।” मैं ने पूछा : “क्या आप जानते हैं कि आप कहां हैं ?” जवाब मिला : “हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मुल्क में हैं और उस के हुज़ूर हाज़िर हैं।” मैं ने अपने दिल में कहा : “येह दोनों राहिब तुझ से ज़ियादा हकीकी मुतवक्किल मा'लूम होते हैं।” मैं ने उन से कहा : “क्या आप मुझे अपने साथ रहने की इजाज़त देते हैं ?” कहने लगे : “आप की मरजी।” फिर हम चलने लगे। जब शाम हुई तो वोह नमाज़ के लिये खड़े हो गए और मैं ने भी तयम्मुम किया और नमाज़ मगरिब अदा की। वोह मुझे तयम्मुम कर के नमाज़ पढ़ते देख कर मुतअज्जिब हुए। जब वोह नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो एक ने ज़मीन को कुरेदा तो उस से पानी का चश्मा जारी हो गया, और उस के पहलू में खाना रखा हुआ था। मुझे इस से बड़ा तअज्जुब हुआ। फिर उन्होंने ने मुझे कहा : “करीब आएँ और खाएं पियें।” हम ने ख़ाया और पानी भी पिया। मैं ने पानी से बुजू किया। इस के बा'द पानी रुक गया। फिर वोह दोनों नमाज़ के लिये खड़े हो गए और मैं अलाहिदा नमाज़ पढ़ने लगा यहां तक कि सुब्ह हो गई। मैं ने नमाज़े फ़ज्र अदा की फिर वोह दोनों उठ खड़े हुए और रात तक चलते रहे। मैं भी साथ ही था। जब शाम हुई तो उन में से एक आगे बढ़ा और अपने साथी के साथ मिल कर नमाज़ पढ़ी और फिर दुआ कर के ज़मीन को कुरेदा तो पानी ज़ाहिर हुआ और खाना भी हाज़िर हो गया। उन्होंने ने कहा : “आओ खाना खाएं।” खाने पीने से फ़ारिग़ हो कर मैं ने नमाज़ के लिये बुजू किया। फिर पानी रुक गया। जब तीसरी रात आई तो उन्होंने ने मुझ से कहा : “ऐ मुसलमान ! आज रात तुम्हारी बारी है।” हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन या'कूब तबरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَنِي फ़रमाते हैं : “मुझे उन की बात से बड़ी शर्म आई। मैं सख़्त ग़म और अजीब मुआमले में फंस गया। खैर ! मैं ने दिल में कहा : “या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ गुनाहों की वजह से तेरी बारगाह में मेरा मक़ाम व मर्तबा तो नहीं, लेकिन मैं तुझे तेरे नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के उस मक़ाम व मर्तबे का वासिता देता हूँ जो तेरी बारगाह में नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ को हासिल है कि मुझे इन के सामने रुस्वा न करना और इन्हें मेरी और अपने नबी हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के दीन की तकलीफ़ से खुश न करना।” फ़रमाते हैं : “अचानक एक चश्मा जारी हो गया और कपीर खाना भी हाज़िर हो गया। हम ने ख़ाया पिया। हमारी येही हालत रही यहां तक कि रात आ गई और इस बार जब पानी और खाना ज़ाहिर हुआ तो मुझ पर रिक्कत तारी हो गई और मैं बे साख़्ता



रो पड़ा। वोह भी रोने लगे और रोते रोते हमारी आवाज़ें बुलन्द हो गईं। जब मुझे कुछ इफ़ाका हुवा तो उन दोनों ने पूछा : “आप क्यूं रो रहे हैं ?” मैं ने कहा : “मैं बहुत गुनहगार हूं, मेरा **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** की बारगाह में ख़ास मक़ाम व मर्तबा नहीं जो इस करामत को पहुंच सके।” उन्होंने ने पूछा : “तो फिर येह सब कैसे तुम्हारे लिये ज़ाहिर हुवा ?” मैं ने कहा : “मैं ने अपने प्यारे नबिय्ये करीम **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** की इज़ज़त व वजाहत का वसीला पेश किया और अर्ज़ की : “या **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** अगर्चे मैं बहुत गुनहगार हूं, और येह तेरे नबिय्ये मोहतरम **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** के दीन के दुश्मन हैं, मुझे इन के सामने दीन के मुआमले में रुस्वा न फ़रमा।” तो इस की बदौलत वोह कुछ ज़ाहिर हुवा जो तुम देख चुके हो, इस लिये इस में मेरी कोई करामत नहीं बल्कि येह सब मेरे नबिय्ये मोहतरम **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** का मो'जिज़ा है।”

येह सुन कर वोह कहने लगे : “**अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** की क़सम ! हम भी ऐसे ही थे। जब हम ने तुम्हें देखा तो तुम्हारी हालत देख कर मुतअष्विर हुए। जब वुजू और खाने का वक़्त हुवा तो हम ने तुम्हारी जैसी दुआ की और कहा : “या **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** अगर इस का दीन हक़ है और इस के नबी **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** बर हक़ हैं तो इस के नबी **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** के सदके हमारे लिये पानी और खाना ज़ाहिर फ़रमा दे।” इस दुआ से खाना ज़ाहिर हो गया जो तुम ने देखा। येह सब तुम्हारे नबिय्ये मोहतरम **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم** का मो'जिज़ा और बरकत है। अब हम ने जान लिया कि येह दीन हक़ है और नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मा **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم** **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** की बारगाह में अज़ीम हैं। अपना हाथ बढ़ाइये, हम गवाही देते हैं कि **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं और हज़रते मुहम्मद **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم** **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के रसूल हैं। उन्होंने ने इस्लाम क़बूल कर लिया। हम मक्कए मुकर्रमा **رَاٰهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَعَظِيْمًا** की तरफ़ इकठ्ठे निकले और एक मुदत तक वहां रहे। फिर जब हम शाम की तरफ़ रवाना हुए तो जुदा हो गए। **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** की क़सम ! जब भी मुझे येह वाकिआ याद आता है दुन्या मेरी नज़रों में हक़ीर हो जाती है।”

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** येह दोनों राहब थे, इन के लिये सुई के सर के बराबर ईमान चमका तो इन्होंने ने सीधा रास्ता देख लिया और सच्चाई के रास्ते पर चल पड़े। और ऐ मिस्कीन ! ग़ौर कर ! तेरी उम्र **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** की नाफ़रमानियों में कट गई, तेरी ज़िन्दगी ख़सारे में गुज़र गई, फिर भी तू दरयाए ग़फ़लत में गौता ज़न है ? कबूलिय्यत के खुश गवार झोंके चल चुके और तू अभी तक नाफ़रमानी की शराब से नशे में चूर है ? और तुझे होश ही नहीं आता ? हमारी बारगाह में इख़्लास व तस्दीक़ लिये जल्दी से ज़ाहिर हो जा। बेशक हम ने तेरे लिये राहे हिदायत खोल दिया और तौफ़ीक़ की तरफ़ तेरी रहनुमाई की।

**राहिब के 62 सुवालात और अबू यज़ीद बिस्तामी** **قَدَسَ سِرُّهُ التُّورَانِ के जवाबात :**

हज़रते सय्यिदुना अबू यज़ीद बिस्तामी **قَدَسَ سِرُّهُ التُّورَانِ** फ़रमाते हैं : “एक दिन मैं किसी सफ़र में अपनी ख़ल्वत व राहत से लुत्फ़ पा रहा था। ग़ौरो फ़िक्र में मशगूल और यादे इलाही **عَزَّوَجَلَّ** से मानूस था कि अचानक मेरे दिल में निदा दी गई : “ऐ अबू यज़दी ! समआन के गिर्जा घर में

जाओ और राहिबों के साथ उन की ईद और कुरबानी में शिरकत करो। इस में एक ख़बर और एक अहम मुआमला है।” फ़रमाते हैं : मैं ने इस ख़याल से **اَعْلَاهُ** **عَزَّوَجَلَّ** की पनाह त़लब की और कहा, “मैं इस की परवाह नहीं करूंगा।” जब रात हुई तो ख़्वाब में हातिफ़े ग़ैबी की आवाज़ आई। उस ने वोही बात दोहराई। मैं हांपते कांपते बेदार हो कर उठ बैठा और अभी इसी सोच में गुम था कि दिल में फिर निदा आई “तुम्हें डरने की ज़रूरत नहीं, तुम हमारे वली व नेक बन्दे हो, तुम्हारा नाम फ़रमां बरदारों के (दफ़्तर) रज़िस्टर में दर्ज है। लेकिन हमारी ख़ातिर राहिबों का सा लिबास और जुन्नार पहन लो, तुम पर कोई गुनाह नहीं।” आप फ़रमाते हैं : “मैं सुब्ह सवेरे उठा और हुक्म की बजा आवरी में जल्दी की। राहिबों का सा लिबास पहना और समआन के गिर्जा घर पहुंच गया। जब उन का बड़ा पादरी आया तो तमाम राहिब इकठ्ठे हो गए और उस को सुनने के लिये सब ने कान लगा दिये लेकिन इस के पाउं लड़ खड़ा गए और वोह कोई बात न कर सका गोया उस के मुंह में लगाम दे दी गई हो। येह कैफ़ियत देख कर पादरियों और राहिबों ने उस से पूछा : “ऐ सरदार ! कौन सी चीज़ आप को गुफ़्तगू से मानेअ है ? हम तो आप की बातों से हिदायत पाते और आप के इल्म की पैरवी करते हैं।” उस ने जवाब दिया : “मुझे येह चीज़ गुफ़्तगू से मानेअ है कि आज तुम्हारे दरमियान कोई मुहम्मदी बैठा है और वोह तुम्हारे दीन का इम्तिहान लेने और तुम पर हम्ला करने आया है।” उन्होंने ने कहा : “हमें दिखा दें हम उसे अभी क़त्ल कर देते हैं।” उस ने कहा : “उसे दलील व बुरहान के साथ क़त्ल करो, मैं उस से इम्तिहान लेना चाहता हूं, उस से इल्मुल अदयान (या’नी दीनों के इल्म) के मुतअल्लिक सुवालात करूंगा, अगर उस ने साफ़ साफ़ जवाबात दे दिये तो हम उसे कुछ न कहेंगे और अगर वज़ाहत न कर सका तो उसे क़त्ल कर देंगे। इम्तिहान के वक़्त ही आदमी इज़्ज़त पाता है या ज़लील होता है।” सब राहिब बोले : “आप जो चाहते हैं करें, हम यहां मुफ़ीद बातें सीखने के लिये ही हाज़िर हुए हैं।” अब उन का बड़ा सरदार खड़ा हुवा और ज़ोर से आवाज़ दी : “ऐ मुहम्मदी ! तुझे मुहम्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) का वासिता ! जहां भी है खड़ा हो जा ताकि सब तुझे देख लें। हज़रते सय्यिदुना अबू यज़ीद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَجِيد इस तरह खड़े हुए कि आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى की ज़बान पर हम्दो षना और ज़िक्रे इलाही **عَزَّوَجَلَّ** जारी था।” पादरियों के सरदार ने कहा : “ऐ मुहम्मदी ! मैं तुझ से कुछ सुवालात करूंगा और सुन ! अगर तू ने इन के जवाबात वज़ाहत के साथ दे दिये तो हम तेरी पैरवी करेंगे वरना तुझे क़त्ल कर देंगे।”

हज़रते सय्यिदुना अबू यज़ीद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَجِيد ने इरशाद फ़रमाया : “नक्ली व अक्ली उलूम में से जो चाहो पूछो, **اَعْلَاهُ** **عَزَّوَجَلَّ** हमारी गुफ़्तगू को मुलाहज़ा फ़रमा रहा है।” बड़े पादरी ने पूछा : **1**.....मुझे उस एक के मुतअल्लिक बताओ जिस का दूसरा नहीं **2**.....उन दो के मुतअल्लिक बताओ जिन का तीसरा नहीं **3**.....उन तीन के मुतअल्लिक बताओ जिन का चौथा नहीं **4**.....उन चार के मुतअल्लिक बताओ जिन का पांचवां नहीं **6**.....उन पांच के मुतअल्लिक बताओ जिन का छटा नहीं **6**.....उन छे के मुतअल्लिक बताओ जिन का सातवां नहीं

﴿7﴾.....उन सात के मुतअल्लिक़ बताओ जिन का आठवां नहीं ﴿8﴾.....उन आठ के मुतअल्लिक़ बताओ जिन का नववां नहीं ﴿9﴾.....उन नव के मुतअल्लिक़ बताओ जिन का दसवां नहीं ।  
 ﴿10﴾.....عَشْرَةٌ كَامِلَةٌ (या'नी मुकम्मल दस दिन) से मुराद कौन से दिन हैं ? ﴿11﴾.....उन ग्यारह के मुतअल्लिक़ बताओ जिन का बारहवां नहीं ﴿12﴾.....उन बारह के मुतअल्लिक़ बताओ जिन का तेरहवां नहीं ﴿13﴾.....उन तेरह के मुतअल्लिक़ बताओ जिन का चौदहवां नहीं ﴿14﴾.....ऐसी कौम के मुतअल्लिक़ बताओ जिन्होंने ने झूट बोला फिर भी जन्नत में दाखिल कर दिये गए ﴿15﴾.....उस कौम के मुतअल्लिक़ बताओ जिन्होंने ने सच बोला मगर आग में दाखिल कर दिये गए ﴿16﴾.....तुम्हारे जिस्म में तुम्हारे नाम का ठिकाना कहां है ? ﴿17﴾.....الذَّرِيبُ ذُرْوًا ﴿18﴾.....الْحَمِلُ وَفَرًا ﴿19﴾.....فَالْمَقْسَمُ أَمْرًا (پ ۲۶، الذَّرِيبُ: ۴ تا) ﴿20﴾.....और الْحَرِيبُ يُسْرًا ﴿19﴾.....कौन सी शै बिगैर रूह के सांस लेती है ? ﴿22﴾.....उन चौदह के मुतअल्लिक़ बताओ जिन्होंने ने रब्बुल आलमीन عَزَّوَجَلَّ से कलाम किया ? ﴿23﴾.....कौन सी क़ब्र साहिबे क़ब्र को ले कर चली ? ﴿24﴾.....वोह कौन सा पानी है जो न आस्मान से उतरा न ज़मीन से निकला ? ﴿25﴾.....उन चार के नाम बता जो बाप की पुश्त से पैदा हुए, न मां के बतन से ? ﴿26﴾.....ज़मीन पर सब से पहला खून किस का बहाया गया ? ﴿27﴾.....उस शै के मुतअल्लिक़ बताओ जिसे **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ ने पैदा किया और फिर खुद ही खरीद लिया ? ﴿28﴾.....ऐसी शै के मुतअल्लिक़ बताओ जिस को **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ ने पैदा किया और खुद ही नापसन्द फ़रमाया ? ﴿29﴾.....उस चीज़ के मुतअल्लिक़ बताओ जिस को **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ ने पैदा किया और अज़मत भी बख़्शी ? ﴿30﴾.....उस चीज़ के मुतअल्लिक़ बताओ जिस को **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ ने पैदा किया और फिर खुद ही इस के मुतअल्लिक़ सुवाल किया ? ﴿31﴾.....सब से अफ़ज़ल औरतें कौन हैं ? ﴿32﴾.....सब से अफ़ज़ल दरया कौन से हैं ? ﴿33﴾.....अफ़ज़ल तरीन पहाड़ कौन सा है ? ﴿34﴾.....सब से अफ़ज़ल चोपाया कौन सा है ? ﴿35﴾.....अफ़ज़ल तरीन महीना कौन सा है ? ﴿36﴾.....सब से अफ़ज़ल रात कौन सी है ? ﴿37﴾.....“الطَّائِمَةُ” से क्या मुराद है ? ﴿38﴾.....वोह कौन सा दरख़्त है जिस की बारह शाखें हैं, हर शाख़ पर तीस (30) पत्ते हैं और हर पत्ते में पांच रंग हैं, दो सूरज की रोशनी में और तीन साए में ? ﴿39﴾.....वोह कौन सी चीज़ है जिस ने बैतुल ह़राम का हज़ किया और तवाफ़ किया हालांकि उस में रूह नहीं और न ही उस पर हज़ फ़र्ज़ था ? ﴿40﴾.....**اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ ने कितने नबी पैदा फ़रमाए ? ﴿41﴾.....इन में से कितने मुर्सल और कितने ग़ैरे मुर्सल हैं ? ﴿42﴾.....वोह कौन सी चार चीज़ें हैं जिन का रंग और जाइका मुख़लिफ़ है मगर अस्ल एक है ? ﴿43﴾.....नकीर क्या है ? ﴿44﴾.....क़ितमीर क्या है ? ﴿45﴾.....फ़तील क्या है ? ﴿46﴾.....अस्सबद क्या है ? ﴿47﴾.....अल्लबद क्या है ? ﴿48﴾.....अत्तिम्म क्या है ? ﴿49﴾.....अर्रिम्म क्या है ? ﴿50﴾.....कुत्ता भौंकने में क्या कहता है ? ﴿51﴾.....गधा रेंगने में क्या कहता है ? ﴿52﴾.....बेल डकराने में क्या कहता है ? ﴿53﴾.....घोड़ा हनहनाने में क्या कहता है ? ﴿54﴾.....ऊंट बिलबिलाने में क्या कहता है ? ﴿55﴾.....मोर अपनी



चीखो पुकार में क्या कहता है ? ﴿56﴾.....तीतर अपनी सीटी में क्या कहता है ? ﴿57﴾.....बुलबुल अपने नगमों में क्या कहता है ? ﴿58﴾.....मेंडक अपनी तस्बीह में क्या कहता है ? ﴿59﴾.....नाकूस (नसारा का घंटा जिसे वोह अपनी इबादत के वक़्त बजाते हैं) अपनी आवाज़ में क्या कहता है ? ﴿60﴾.....ऐसी मख़्लूक के मुतअल्लिक़ बताओ जिन को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इल्हाम फ़रमाई वोह जिनमें से है, न इन्सानों में से और न ही फ़िरिशतों में से ? ﴿61﴾.....जब दिन निकलता है तो रात कहां चली जाती है और ﴿62﴾.....जब रात छा जाती है तो दिन कहां चला जाता है ?”

हज़रते सय्यिदुना अबू यज़ीद बिस्तामी قُدَسَ سِرُّهُ التُّورَان ने पूछा : “क्या इन के इलावा भी कोई सुवाल है ?” तो सब पादरियों ने कहा : “नहीं।” तो आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने इरशाद फ़रमाया : “अगर मैं ने इन के जवाबात सहीह तौर पर दे दिये तो क्या तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे रसूल رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ पर ईमान ले आओगे ?” सब ने कहा : “जी हां।” तो आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में अर्ज़ की : “या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तू इन की बातों पर गवाह है।” फिर फ़रमाया : “अब अपने सुवालात के जवाबात सुनते जाओ : ﴿1﴾.....वोह एक जिस का दूसरा नहीं तो वोह **अल्लाह** वाहिदे क़हहार है ﴿2﴾.....वोह दो जिन का तीसरा नहीं तो वोह दिन और रात हैं। जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आलीशान है : (پ ۱۵، بنی اسرائیل: ۱۲) : وَجَعَلْنَا اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ آيَتَيْنِ” तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और हम ने रात और दिन को दो निशानियां बनाया।” ﴿3﴾.....वोह तीन जिन का चौथा नहीं तो वोह अर्श, कुर्सी और क़लम हैं ﴿4﴾.....वोह चार जिन का पांचवा नहीं तो वोह आस्मानी किताबें “तौरात, इन्जील, ज़बूर और कुरआने पाक” हैं ﴿5﴾.....वोह पांच जिन का छट्टा नहीं तो वोह पांच नमाज़ें हैं जो हर मुसलमान मर्द औरत पर फ़र्ज़ हैं ﴿6﴾.....वोह छे जिन का सातवां नहीं तो वोह छे दिन हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन का ज़िक्र कुरआने पाक में फ़रमाता है : (پ ۲۶، ق: ۳۸) : وَلَقَدْ خَلَقْنَا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ” तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक हम ने आस्मानों और ज़मीन को और जो कुछ इन के दरमियान है छे दिन में बनाया।” ﴿7﴾.....वोह सात जिन का आठवां नहीं तो वोह सात आस्मान हैं। चुनान्वे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आलीशान है : “سَبْعَ سَمَوَاتٍ طِبَاقًا” (پ ۲۹، الملک: ۳) तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : सात आस्मान एक के ऊपर दूसरा।” ﴿8﴾.....वोह आठ जिन का नववां नहीं तो वोह अर्श उठाने वाले आठ फ़िरिशते हैं। जैसा कि कुरआने पाक में है : “وَيَحْمِلُ عَرْشَ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ ثَمَنِيَّةٌ” (پ ۲۹، الحاق: ۱۷) तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और उस दिन तुम्हारे रब का अर्श अपने ऊपर आठ फ़िरिशते उठाएंगे।” ﴿9﴾.....वोह नव जिन का दसवां नहीं तो वोह नव अफ़राद की जमाअत थी जो फ़साद बरपा करने वाले थे। चुनान्वे, फ़रमाने बारी तअ़ाला है :

❶...मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَامِي तफ़सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारक के तहत फ़रमाते हैं “हदीष शरीफ़ में है कि हामिलीने अर्श आज कुल चार हैं, रोज़े क़ियामत इन की ताईद के लिये चार का और इज़ाफ़ा किया जाएगा आठ हो जाएंगे। हज़रते इब्ने अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से मरवी है कि इस से मलाइका की आठ सफ़ें मुराद हैं, जिन की ता'दाद **अल्लाह** तअ़ाला ही जाने।”

और शहर कन्जुल ईमान : ”وَكَانَ فِي الْمَدِينَةِ تِسْعَةٌ رَهْطٌ يُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ وَلَا يُصْلِحُونَ ۝ (پ ۱۹، النمل: ۴۸) عَشْرَةَ كَامِلَةً..... ﴿10﴾” में नव शख्स थे कि ज़मीन में फ़साद करते और संवार न चाहते ।”

(या'नी मुकम्मल दस दिन) से मुराद वोह दस दिन हैं जिन में हज़्जे तमत्तोअ करने वाला हड्डी का जानवर न पाने की सूरत में रोज़े रखता है । चुनान्वे, रब्ब तआला इरशाद फ़रमाता है :

तर्जमए कन्जुल ईमान : तो तीन रोज़े فَصِيَّامٌ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ فِي الْحَجِّ وَسَبْعَةً إِذَا رَجَعْتُمْ ط تِلْكَ عَشْرَةُ كَامِلَةً ط (प २, البقره: १९६) हज़ के दिनों में रखे और सात जब अपने घर पलट कर जाओ येह पूरे दस हुवे ।

वोह ग्यारह जिन का बारहवां नहीं तो वोह हज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام का कौल हिक्कायत करते हुए इरशाद फ़रमाता है :

वोह ..... ﴿12﴾” तर्जमए कन्जुल ईमान : मैं ने ग्यारह तारे देखे ।”

तर्जमए कन्जुल ईमान : बेशक महीनों की गिनती اِنَّ عِدَّةَ الشُّهُورِ عِنْدَ اللَّهِ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا فِي كِتَابِ اللَّهِ (प १०, التوبة: ३६) के नजदीक बारा महीने है

वोह तेरह जिन का चौदहवां नहीं तो वोह हज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام का ख़्बाब है । जैसा कि रब्ब तआला इरशाद फ़रमाता है :

”اِنِّي رَأَيْتُ أَحَدَ عَشَرَ كَوْكَبًا وَالثَّمَسُ وَالْقَمَرُ رَأَيْتُهُمْ لِي سَجِدِينَ ۝ (प १२, يوسف: ४) तर्जमए कन्जुल ईमान : मैं ने ग्यारह तारे और सूरज और चांद देखे इन्हें अपने लिये सजदा करते देखा ।

वोह कौम जिन्हों ने झूट बोला फिर भी जन्नत में दाख़िल कर दिये गए तो वोह हज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के भाई हैं । जैसा कि रब्ब तआला इरशाद फ़रमाता है :

तर्जमए कन्जुल ईमान : बोले ऐ हमारे बाप ! قَالُوا يَا أَبَانَا إِنَّا ذَهَبْنَا نَسْتَبِقُ وَتَرَكْنَا يُوسُفَ عِنْدَ مَتَاعِنَا فَأَكَلَهُ الذِّئْبُ ج (प १२, يوسف: १४) हम दौड़ करते निकल गए और यूसुफ़ को अपने अस्बाब के पास छोड़ा तो उसे भेड़ियां खा गया ।”

वोह कौम जिन्हों ने सच बोला लेकिन जहन्नम में दाख़िल कर दिये गए तो वोह यहूदो नसारा हैं । और वोह उन का येह कौल है :

①...मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं “हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने ख़्बाब देखा कि आस्मान से ग्यारह सितारे उतरे और उन के साथ सूरज और चांद भी हैं, उन सब ने आप को सजदा किया । येह ख़्बाब शबे जुमुआ को देखा, येह रात शबे क़द्र थी । सितारों की ता'बीर आप के ग्यारह भाई हैं और सूरज आप के वालिद और चांद आप की वालिदा या ख़ाला । आप की वालिदए माजिदा का नाम राहील है । सदी का कौल है कि चूंकि राहील का इन्तिक़ाल हो चुका था इस लिये क़मर से आप की ख़ाला मुराद हैं और सजदा करने से तवाजोअ करना और मुतीअ होना मुराद है और एक कौल येह है कि हकीकतन सजदा मुराद है क्यूंकि उस ज़माने में सलाम की तरह सजदए तहिय्यत था । हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام की उम्र शरीफ़ उस वक़्त बारह साल की थी और सात और सतरह के कौल भी आए । हज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام को हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام से बहुत ज़ियादा महबूबत थी । इस लिये उन के साथ उन के भाई हसद करते थे और हज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام इस पर मुत्तलअ थे इस लिये जब हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने येह ख़्बाब देखा तो हज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام ने कहा : ऐ मेरे बच्चे ! अपना ख़्बाब अपने भाइयों से न कहना ।”

وَقَالَتِ الْيَهُودُ لَيْسَتِ الْبُصْرَى عَلَى شَيْءٍ وَقَالَتِ النَّصْرَى لَيْسَتِ الْيَهُودُ عَلَى شَيْءٍ وَلَا (البقرة: ११३)  
और यहूदी बोले नसरानी कुछ नहीं और नसरानी बोले यहूदी कुछ नहीं।<sup>(१)</sup> उन्होंने ने सच कहा लेकिन जहन्म में दाखिल कर दिये गए।<sup>(१६)</sup>....तुम्हारे जिस्म में तुम्हारे नाम का ठिकाना कान हैं (या'नी जब कोई नाम बोला जाता है तो कान ही सुनते हैं)<sup>(१७)</sup> "الَّذِينَ ذَرَوْا" (या'नी बखैर कर उड़ाने वालियां) से मुराद चार हवाएं हैं।<sup>(२)</sup> "الْحَمَلُ وَفُرًا" से मुराद बादल हैं। जैसा कि **अब्बाह** **عَزَّوَجَلَّ** इरशाद फ़रमाता है "وَالسَّحَابُ الْمُسَخَّرُ بَيْنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ (پ २, البقرة: १६६)  
और वोह बादल कि आस्मानो ज़मीन के बीच में हुक्म का बांधा है।"<sup>(१९)</sup> "الْبَحْرَيْنِ يُسْرًا" (या'नी नर्म चलने वालियां) से मुराद दरया में चलने वाली कशितयां हैं<sup>(२०)</sup>..... से मुराद मलाइका हैं जो लोगों का रिज़्क पन्दरह शा'बान से दूसरे साल पन्दरह शा'बान तक तक्सीम करते हैं<sup>(२१)</sup>....जिन चौदह ने रब्बुल आलमीन **عَزَّوَجَلَّ** से कलाम किया तो वोह सात आस्मान और सात ज़मीनें हैं। चुनान्वे, रब्ब तआला इरशाद फ़रमाता है "فَقَالَ لَهَا وَلِلْأَرْضِ آتِيَا طَوْعًا أَوْ كَرْهًا قَالَتَا أَتَيْنَا طَائِعِينَ 0 (پ २, حَم السجدة: ११):  
**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान** : तो इस (आस्मान) से और ज़मीन से फ़रमाया कि दोनों हाज़िर हो खुशी से चाहे ना खुशी से, दोनों ने अर्ज़ की, कि हम रग़बत के साथ हाज़िर हुए।"<sup>(२२)</sup>.....वोह क़ब्र जो साहिबे क़ब्र को साथ ले कर चली तो वोह हज़रते सय्यिदुना यूनुस **عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** की मछली है<sup>(२३)</sup>.....जो चीज़ बिला रूह है मगर सांस लेती है तो वोह सुब्ह है। जैसा कि **अब्बाह** **عَزَّوَجَلَّ** इरशाद फ़रमाता है "وَالصُّبْحُ إِذَا تَنَفَّسَ 0 (پ ३, التکویر: १८):  
**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान** : और सुब्ह की जब दम ले।"<sup>(२४)</sup>.....वोह पानी जो न आस्मान से उतरा, न ज़मीन से निकला तो वोह घोड़ों का पसीना है जिस को शीशे की बोतल में भर कर मलिका बिल्कीस ने हज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन दावूद **عَلَيْهِمَا الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** बिलकुल से हज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन दावूद **عَلَيْهِمَا الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** का इन्कार किया। इसी तरह नसरानी ने यहूद से कहा कि तुम्हारा दीन कुछ नहीं और तौरैत शरीफ़ व हज़रते मूसा **عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** का इन्कार किया। इस बाब में येह आयत नाज़िल हुई।"

①...मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي** तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं : **शाने नुज़ूल** : नज़रान के नसारा का वफ़द सय्यिदे आलम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की ख़दिमत में आया तो इ-लमाए यहूद आए और दोनों में मुनाज़रा शुरू हो गया। आवाज़ें बुलन्द हुई, शोर मचा। यहूद ने कहा कि नसारा का दीन कुछ नहीं और हज़रते ईसा **عَلَيْهِ الصَّلَام** और इन्जील शरीफ़ का इन्कार किया। इसी तरह नसरानी ने यहूद से कहा कि तुम्हारा दीन कुछ नहीं और तौरैत शरीफ़ व हज़रते मूसा **عَلَيْهِ الصَّلَام** का इन्कार किया। इस बाब में येह आयत नाज़िल हुई।"

②.....इन चार हवाओं के नाम येह हैं : (१)....पुरवा या'नी मशरिफ़ से मग़रिब की तरफ़ चलने वाली हवा (२)....पछवा या'नी मग़रिब से मशरिफ़ की तरफ़ चलने वाली हवा। (३)....जुनूबी या'नी जुनूब से शिमाल की तरफ़ चलने वाली हवा और **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** (४)....शिमाली या'नी शिमाल से जुनूब की तरफ़ चलने वाली हवा। नीज़ हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अम्म से रिवायत है, "हवाएं आठ किस्म की हैं। इन में चार बाइषे रहमत हैं : (१)..... **الْمُشْرِات** बादलों को उठाने और उड़ाने वाली हवाएं। (२)..... **الْمُبْرِات** बारिश की ख़बर देने वाली हवाएं (३)..... **الْكُرَيَات** : खाक वगैरा उड़ाने वाली हवाएं और (४)..... **الْمُوسَلَات** : मुसलसल चलने वाली हवाएं। और चार बाइषे ज़हमत हैं : (१)..... **الْمُغَاصَات** : तेज़ हवाएं आंधियां (२)..... **الْقَاصِبَات** : जोरदार गरज वाली हवाएं, येह दोनों तरी में चलती हैं। (३)..... **الْمُضَرَّرَات** : इन्तिहाई सर्द बरफ़ीली हवाएं या शदीद आवाज़ वाली हवाएं और (४)..... **الْمُعِيقَات** : बे बारिश हवा। आख़िरी दोनों हवाएं खुशकी में चलती हैं।"

(الموسوعة لابن ابي الدنيا، كتاب المطر والرعد والبرق والريح، باب في الريح، الحديث: १८، ج ८، ص २५)



को भेजा था ﴿25﴾....वोह चार नुफूस जो बाप की पुश्त से पैदा हुए, न मां के बतन से तो वोह हज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ السَّلَام, हज़रते सय्यिदुना हव्वा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا हज़रते सय्यिदुना इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام का मैदा और हज़रते सय्यिदुना सालेह عَلَيْهِ السَّلَام की ऊंटनी हैं ﴿26﴾....जमीन पर सब से पहला खून हाबील का बहाया गया जब काबील ने उसे क़त्ल किया ﴿27﴾....ऐसी चीज़ जिस को **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ ने पैदा किया फिर ख़रीद लिया तो वोह मोमिन की जान है। जैसा कि वोह खुद इरशाद फ़रमाता है : “إِنَّ اللَّهَ اشْتَرَىٰ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ أَنْفُسَهُمْ وَأَمْوَالَهُمْ بِأَنْ لَهُمُ الْجَنَّةُ (پ ۱، التوبة: ۱۱۱) ”

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक **अब्बाह** ने मुसलमानों से उन के माल और जान ख़रीद लिये हैं इस बदले पर कि उन के लिये जन्नत है। ﴿28﴾.....ऐसी शै जिसे **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ ने पैदा किया और नापसन्द किया तो वोह गधे की आवाज़ है। जैसा कि वोह खुद इरशाद फ़रमाता है :

“إِنَّ أَكْثَرَ الْأَصْوَاتِ لَصَوْتُ الْحَمِيرِ ۝ (پ ۲۱، لقمان: ۱۹) ” तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक सब आवाजों में बुरी आवाज़, आवाज़ गधे की। ﴿29﴾.....ऐसी चीज़ जिसे **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ ने पैदा किया और उसे बड़ा कहा तो वोह औरतों का मक्र है। चुनान्वे, इरशाद फ़रमाया : “إِنَّ كَيْدَ كُنَّ عَظِيمٌ ۝ (پ ۱۲، يوسف: ۲۸) ”

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक तुम्हारा चरित्र (फ़रैब) बड़ा है। ﴿30﴾..... वोह चीज़ जिसे **अब्बाह** तआला ने पैदा फ़रमाया फिर इस के मुतअल्लिक सुवाल किया तो वोह हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام का असा है। जैसा कि कुरआने पाक फ़रमाता है :

“وَمَا تِلْكَ بِيَمِينِكَ يُمُوسَىٰ ۝ قَالَ هِيَ عَصَايَ ۚ أَتَوَكَّلُ عَلَيْهَا فَيَهْجُرُنِي بِهَا عَلَىٰ غَتَمِي ۝ (پ ۱۶، طه: ۱۷-۱۸) ” तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और येह तेरे दाहिने हाथ में क्या है ? ऐ मूसा ! अर्ज़ की येह मेरा असा है, मैं इस पर तकिया लगाता हूं और इस से अपनी बकरियों पर पत्ते झाडता हूं। ﴿31﴾.....सब से अफ़ज़ल औरतें उम्मुल बशर हज़रते सय्यिदुना

①....मुफ़्स्सिरे शहीर, खलीफ़ए आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तहूत फ़रमाते हैं “राहे खुदा में जान व माल खर्च कर के जन्नत पाने वाले ईमान दारों की एक तमषील है जिस से कमाले लुत्फो करम का इज़हार होता है कि परवरदगारे आलम ने उन्हें जन्नत अता फ़रमाना उन के जान व माल का इवज़ करार दिया और अपने आप को ख़रीदार फ़रमाया। येह कमाले इज़ज़त अफ़ज़ाई है कि वोह हमारा ख़रीदार बने और हम से ख़रीदे किस चीज़ को ? जो न हमारी बनाई हुई न हमारी पैदा की हुई। जान है तो उस की पैदा की हुई, माल है तो उस का अता फ़रमाया हुवा। शाने नुज़ूल : जब अन्सार ने रसूले करीम صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से शबे उक्बा बैअत की तो अब्दुल्लाह बिन रवाहा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अर्ज़ की, कि या रसूलल्लाह ! अपने रब्ब के लिये और अपने लिये कुछ शर्त फ़रमा लीजिये जो आप चाहें। फ़रमाया : मैं अपने रब्ब के लिये तो येह शर्त करता हूं कि तुम उस की इबादत करो और किसी को उस का शरीक न ठहराओ और अपने लिये येह कि जिन चीज़ों से तुम अपने जान व माल को बचाते और महफूज़ रखते हो उस को मेरे लिये भी गवारा न करो।” उन्होंने न अर्ज़ किया कि “हम ऐसे करें तो हमें क्या मिलेगा ?” फ़रमाया : जन्नत।

②....मुफ़्स्सिरे शहीर, खलीफ़ए आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तहूत फ़रमाते हैं “मुद्आ येह है कि शोर मचाना और आवाज़ बुलन्द करना मकरूह व नापसन्दीदा है और इस में कुछ फज़ीलत नहीं है गधे की आवाज़ बा वुजूदे बुलन्द होने के मकरूह और वहशत अंगेज़ है नबिय्ये करीम صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को नर्म आवाज़ से कलाम करना पसन्द था और सख़्त आवाज़ से बोलने को नापसन्द रखते थे।”

③....मुफ़्स्सिरे शहीर, खलीफ़ए आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तहूत फ़रमाते हैं : “इस सुवाल की हिक्मत येह है कि हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام अपने असा को देख लें और येह बात कल्ब में ख़ूब रासिख़ हो जाए कि येह असा है ताकि जिस वक़्त वोह सांप की शक़ल में हो तो आप की ख़ातिर मुबारक पर कोई परेशानी न हो या येह हिक्मत है कि हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को मानूस किया जाए ताकि हैबते मुकालमत का अषर कम हो।” (मदारिक वगैरा) उस असा में ऊपर की जानिब दो शाखें थीं और उस का नाम “नबेह” था।

हृवा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا هَجَرْتِ سَیْیِدَتُنَا خَدِیجَتُलْ کُتُبَا رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا هَجَرْتِ سَیْیِدَتُنَا اِیْشَا  
 سِیْدِیْکَا رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا هَجَرْتِ سَیْیِدَتُنَا اَسِیْیَا رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا هَجَرْتِ سَیْیِدَتُنَا مَرْیَم  
 بِنْتِ اِمْرَان رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا ﴿32﴾.....सब से अफ़ज़ल दरया सीहून, जीहून, दिजला, फुरात और  
 मिस्र का दरयाए नील हैं ﴿33﴾.....सब से अफ़ज़ल पहाड़ तूर है ﴿34﴾.....सब से अफ़ज़ल चोपाया  
 घोड़ा है ﴿35﴾.....सब से अफ़ज़ल महीना माहे रमज़ानुल मुबारक है । जैसा कि **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ  
 इरशाद फ़रमाता है : “شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِي أُنْزِلَ فِيهِ الْقُرْآنُ (پ. ۲، البقرة: ۱۸۵) ” **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान** : रमज़ान का  
 महीना जिस में कुरआन उतरा ।” ﴿36﴾.....सब से अफ़ज़ल रात शबे क़द्र है । चुनान्चे, **اَللّٰهُ**  
 عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : “كَيْلَةُ الْقَدْرِ خَيْرٌ مِنْ أَلْفِ شَهْرٍ (پ. ۳، القدر: ۳) ” **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान** : शबे क़द्र  
 हज़ार महीनों से बेहतर ।” ﴿37﴾..... **اَلطَّائِمَةُ** से मुराद क़ियामत है ﴿38﴾.....वोह दरख़्त जिस की  
 बारह (12) शाखें हैं, हर शाख़ में तीस (30) पत्ते, हर पत्ते में पांच रंग, दो सूरज की रोशनी में और  
 तीन साए में, तो वोह दरख़्त साल है, बारह महीने इस की बारह शाखें हैं, तीस पत्ते तीस दिन हैं और  
 पांच रंग पांच नमाज़ें हैं, तीन साए में या'नी मग़रिब, इशा और फ़ज़्र, दो रोशनी में या'नी ज़ोहर और  
 अस्र ﴿39﴾.....वोह ऐसी चीज़ जिस में रूह नहीं और न ही उस पर हज़ वाजिब था फिर भी उस ने  
 का'बए मुबारका का तवाफ़ किया तो वोह हज़रते सय्यिदुना नूह नजिय्युल्लाह عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की  
 कश्ती है ﴿40﴾.....**اَللّٰهُ** तआलाने कमो बेश एक लाख चोबीस हज़ार (1,24,000) अम्बिया  
 पैदा फ़रमाए ﴿41﴾.....इन में से तीन सो तेरह (313) रसूल हैं ﴿42﴾.....चार अश्या जिन का  
 ज़ाइका और रंग मुख़्तलिफ़ है मगर अस्ल एक है तो वोह आंख, नाक, मुंह और कान है । आंख का  
 पानी नमकीन, मुंह का पानी मीठा, नाक का पानी तुर्श और कान का पानी कड़वा होता है ﴿43﴾.....नकीर  
 एक झिल्ली है जो घुटली के ऊपर होती है ﴿44﴾.....क़ितमीर अंडे के छिलके को कहते हैं  
 ﴿45﴾.....फ़तील से मुराद घुटली के अन्दर का गूदा है ﴿46﴾.....अस्सबद और ﴿47﴾.....अल्लबद  
 भेड़ और बकरी के बालों को कहते हैं ﴿48﴾.....अत्तिम्म और ﴿49﴾.....अरिम्म हमारे बाप हज़रते  
 सय्यिदुना आदम सफ़िय्युलाह عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام से पहले की जिन्नात कौमें हैं ﴿50﴾.....गधा  
 जब शैतान को देखता है तो कहता है : “**اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ (नाजाइज़) जिज़या (टेक्स) लेने वाले पर  
 ला'नत फ़रमाए ।” ﴿51﴾.....कुत्ता अपने भौंकने में कहता है **يَلْلُ لَأَهْلِي النَّارِ مِنْ غَضَبِ الْجَبَّارِ** या'नी  
 दोजख़ियों के लिये हलाकत है कि **اَللّٰهُ** तआला के ग़ज़ब में हैं ।” ﴿52﴾.....बेल अपने डकार  
 ने में कहता है : “**سُبْحَنَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ**” ﴿53﴾.....घोड़ा अपने हनहनाने में कहता है : “पाक है मेरी  
 हिफ़ाज़त फ़रमाने वाला जब जंगजू लड़ते हैं और मर्दाने कार लड़ाई में मसरूफ़ होते हैं ।”  
 ﴿54﴾.....ऊंट अपने बिलबिलाने में कहता है **حَسْبِيَ اللَّهُ وَكَفَى بِهِ وَكِيلًا** या'नी मेरे लिये **اَللّٰهُ**  
 ही काफ़ी और वोही मेरा कारसाज़ है ।” ﴿55﴾.....मोर अपनी चीख़ो पुकार में कहता है  
**الرَّحْمَنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوَى** (پ. ۱۶، طه: ۵) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान** : वोह बड़ी मेहर वाला उस ने अर्श  
 पर इस्तिवा फ़रमाया जैसा उस की शान के लाइक है ।” ﴿56﴾.....तीतर अपनी सीटी में कहता है,

“بِالشُّكْرِ تَذُرُّمُ الْيَعْمُ” या’नी **अब्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करने से ने’मतें हमेशा रहती हैं।”  
﴿57﴾.....बुलबुल अपने नगमों में यूँ गोया होता है : “سُبْحَانَ اللَّهِ حِينَ تُمْسُونَ وَحِينَ تُصْبِحُونَ ۝ (١٧: الروم: ٢١).....”

तर्जमए कन्जुल ईमान : तो **अब्लाह** की पाकी बोलो जब शाम करो और जब सुब्ह हो।” (1)

﴿58﴾.....मेंडक अपनी तस्बीह में कहता है : “سُبْحَانَ الْمَعْبُودِ فِي الْبَرَارِ وَالْقِفَارِ سُبْحَانَ الْمَلِكِ الْجَبَّارِ” या’नी पाक है जंगलों और चटयल मैदानों में अज़ीम मा’बूद, पाक है खुदाए जब्बार।” ﴿59﴾.....नाकूस

अपनी आवाज़ में कहता है : “**अब्लाह** عَزَّوَجَلَّ पाक है, वोह हक़ है। ऐ इब्ने आदम ! इस दुनिया के मशरिक् व मगरिब में देख ! किसी को हमेशा बाकी रहने वाला न पाएगा।” ﴿60﴾.....ऐसी मख्लूक

जिस को **अब्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इल्हाम फ़रमाया, वोह जिनों में से है, न इन्सानों में से और न ही मलाइका में से तो वोह शहद की मख़्खी है। चुनान्वे, **अब्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

“وَأَوْحَىٰ رَبُّكَ إِلَى النَّحْلِ أَنِ اتَّخِذِي مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا وَمِنَ الشَّجَرِ وَمِمَّا يَعْرِشُونَ ۝ (١٤: النحل: ٦٨).....” तर्जमए कन्जुल ईमान :

और तुम्हारे रब्ब ने शहद की मख़्खी को इल्हाम किया कि पहाड़ों में घर बना और दरख़्तों और छत्तों में।”

﴿61﴾.....जब दिन आता है तो रात कहां जाती है ? और ﴿62﴾.....जब रात छा जाती है तो दिन कहा चला जाता है ? येह तो **अब्लाह** عَزَّوَجَلَّ के पोशीदा इल्म में है, किसी नबी या मुक़र्रब फ़िरिश्ते पर भी ज़ाहिर नहीं।

मज़कूरा तमाम जवाबात देने के बा’द हज़रते सय्यिदुना अबू यज़ीद बिस्तामी قُدَسِ سِرُّهُ التُّورَانِ ने पूछा : “क्या तुम्हारा कोई सुवाल बाकी है ?” उन्होंने ने कहा : “नहीं।” तो आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने बड़े पादरी से फ़रमाया :

“बताओ आस्मानों और जन्नत की चाबी क्या है ?” उन का बड़ा पादरी ख़ामोश रहा तो सब ने उसे कहा : “आप ने इतने सुवाल पूछे और इन्हों ने सब के जवाब दिये, अब इन्हों ने एक ही सुवाल किया और आप जवाब देने से अज़िज़ आ गए।” पादरी ने कहा : “मैं अज़िज़ नहीं

आया लेकिन मुझे डर है कि मैं जवाब दूंगा तो तुम तस्लीम नहीं करोगे।” उन्होंने ने कहा : “क्यूँ नहीं, हम मानेंगे, क्यूँकि आप हमारे बुजुर्ग हैं, आप जो भी फ़रमाएंगे हम सरे तस्लीम ख़म करेंगे।” तो बड़े पादरी ने कहा :

“आस्मानों और जन्नत की चाबी कलिमए तय्यिबा لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُحَمَّدٌ رَّسُولُ اللَّهِ है।” जब दीगर पादरियों और राहिबों ने सुना तो वोह सब के सब मुसलमान हो गए। उन्होंने ने गिर्जाघर तोड़ कर उसे मस्जिद में तब्दील कर दिया और अपने अपने जुन्नार भी तोड़ दिये।

हज़रते सय्यिदुना अबू यज़ीद बिस्तामी قُدَسِ سِرُّهُ التُّورَانِ को ग़ैब से आवाज़ आई : “ऐ अबू यज़ीद ! तू ने हमारे लिये एक जुन्नार बांधा तो हम ने तेरी खातिर पांच सो जुन्नार तोड़ दिये।”

①....मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ’ला हज़रत, सदरुल अफ़ज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَامَاय तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारक के तहत फ़रमाते हैं “पाकी बोलने से या तो **अब्लाह** तआला की तस्बीह व षना मुराद है और उस की अहदीष में बहुत फ़ज़ीलतें वारिद हैं या इस से नमाज़ मुराद है। हज़रते इब्ने अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से दरयाफ़्त किया गया कि क्या पंजगाना नमाज़ों का बयान कुरआने पाक में है ?” फ़रमाया : “हां।” और येह आयतें तिलावत फ़रमाई और फ़रमाया कि इन में पांचों नमाज़ें और इन के अवकात मज़कूर हैं।”



## एक महफूज क़ल्आ औऱ उम्दा ज़िरह :

ऐ मेरे इस्लामी भाइयो ! येह सब कुफ़ की तारीकियों में भटक रहे थे पस **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन्हें नूरे हिदायत से रोशन किया और मर्दूद होने से महफूज फ़रमाया । येह सब मुबारक कलिमए तय्यिबा की बरकत है । इस पाकीज़ा कलिमे की शान देखो ! इस की बरकात कितनी अज़ीम हैं और येह हाजात को कैसे पूरा करता है । लिहाज़ा अपनी ज़बानें इस मुबारक कलिमे से तर रखो ताकि इस के एहसान की बरकत और करम की हलावत को पा सको और उस की अमान के हरम में दाख़िल हो जाओ । बिला शुबा येह महफूज क़ल्आ औऱ उम्दा ज़िरह है ।

**अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपनी किसी आस्मानी किताब में इरशाद फ़रमाया : “कलिमए तय्यिबा की कषरत करो । बेशक येह मेरा क़ल्आ है और जो मेरे क़ल्ए में दाख़िल हुवा वोह मेरे अज़ाब से महफूज हो गया ।”

(حلیة الاولیاء، محمد بن علی الباقر، الحدیث ۳۷۸، ج ۳، ص ۲۲۳)

एक सहाबिए रसूल फ़रमाते हैं : “जिस ने खुलूसे दिल से कलिमए तय्यिबा पढ़ा और ता’ज़ीम के साथ इसे खींच कर पढ़ा तो उस के चार हज़ार गुनाह मुआफ़ होंगे, अगर उस के गुनाह चार हज़ार न हुए तो उस के घर वालों और पड़ोसियों के गुनाह मुआफ़ हो जाएंगे ।”

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا इरशाद फ़रमाते हैं : “दिन रात में कुल चोबीस (24) घंटे हैं और कलिमए तय्यिबा के हुरूफ़ भी चोबीस हैं तो जो कोई एक बार कलिमए तय्यिबा पढ़ता है तो उस का हर हर्फ़ एक घंटे के गुनाहों का कफ़फ़ारा बन जाता है । पस जब बन्दा हर रोज़ एक मरतबा कलिमए तय्यिबा पढ़ता है तो उस पर कोई गुनाह बाकी नहीं रहता, तो जो इस की कषरत करता है और इसी को अपना मशग़ला बना लेता है उस का क्या मक़ाम व मरतबा होगा !”

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** अगर गुनहगार हो तो कलिमए तय्यिबा का वज़ीफ़ा पढ़ो । बेशक येह गुनाहों और नाफ़रमानियों को मिटा देता है । और अगर इताअत गुज़ार हो तो भी इस मुक़द्दस कलिमे के ज़रीए ईमान की तजदीद कर लो । बिला शुबा येह ईमान को जिद्दत देता और खुदाए हन्नान व मन्नान की तरफ़ से अम्नो अमान और मग़फ़िरत का परवाना दिलवाता है ।

وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰی سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلٰی آلِهِ وَصَحْبِهِ أَجْمَعِينَ



**बयान 48 :** **निकाहे अली व फातिमा** (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا)

**हम्दे बारी तआला :**

तमाम ता'रीफें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जो अजीम, महमूद, करीम, मकसूद, कदीम और मौजूद है। जिस ने अहले हकीकत के लिये आस्माने तौफीक के कनारों से सआदत के सितारे ज़ाहिर फ़रमाए और आरास्ता वुजूद को दरजए शुहूद के आईनों में चमकाया। तो जिस ने मतलूब को समझा वोह मकसूद को पहुंचा। उस ने मौसिमे बहार को दरख्तों के नए पत्तों के ज़रीए मुज़य्यन किया कि वोह ख़ूब सूरत व उम्दा पोशाक में, नर्म व नाजुक टहनियों के साथ झूमते हैं। और उन के पत्तों में ख़ूब सूरत आवाज़ वाले परन्दों को दरख्तों के मिम्बरों पर ठहराया कि सहर के वक़्त मालिक व मा'बूद عَزَّوَجَلَّ की हम्दो षना करते हैं। उस ने अक़ल को जुम्ला दलाइल में से इन्सानी आ'ज़ा और आंखों पर हाकिम बनाया और अक़ल ने उन्हें **अल्लाह** तआला की कारीगरी के अज़ाइबात में ग़ौरो फ़िक्र का हुक्म दिया। चुनान्वे, इन्हों ने अंगूर और गन्दुम के दानों के खोशों का मुशाहदा किया तो ग़ौरो फ़िक्र के बा'द बनाने वाले की कुदरत पर हैरत ज़दा हैं कि किस तरह उस ने सरकशी व मुन्किरीन (को समझाने) के लिये मुख़्तलिफ़ मौजूदात को पैदा फ़रमाया और क़तई दलाइल काइम फ़रमाए।

पाक है वोह ज़ात जिस ने सख़्त व मजबूत चट्टानों से नहरें जारी फ़रमाई, दरख्तों से फूलों को ज़ाहिर किया और लकड़ी से फलों को निकाला। उस ने आस्मान को चांद व सूरज से आरास्ता किया। बतहाए मक्का को हज़रते अबू बुक्र सिदीक व उमर फ़ारूक (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا) से फ़ज़ीलत बख़्शी। ख़ातूने जन्नत हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज्जह्रा (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا) को हज़रते हसनैन करीमैन (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا) से नवाज़ा और उन के नानाजान, रहूमते आलमिय्यान, सरवरे ज़ीशान (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا) को सब से ज़ियादा इज़्ज़त व शरफ़ अता फ़रमाया। कितने ही उस के मुश्ताक, हसरत व यास के पैकर बने हुए हैं कि उस के शौक में आ'ला नसबों ने जफ़कश टांगों के ज़रीए अन्थक कोशिशें कीं। पस उन्हीं ने हिजरो रुकावट के जंगल को तै कर लिया फिर जब वोह उस मजलिस में पहुंच जाते हैं तो तू उन्हें झूमता हुवा देखेगा और जब कोई हुदी ख़्वां उन के सामने हम्दे इलाही عَزَّوَجَلَّ का नग़मा गुनगुनाता है तो उन के रुख़्सारों पर आंसू रवां हो जाते हैं।

**इन्सानी हूर :**

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ) से मरवी है, रहूमते आलमिय्यान, सरवरे कौनो मकान, सय्यिदे इन्सो जान, महबूबे रहमान (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا) का फ़रमाने फ़ज़ीलत निशान है : “फ़ातिमा (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا) मेरे जिस्म का टुकड़ा है, फ़ातिमा इन्सानी हूर है।”

(صحيح البخارى، كتاب فضائل اصحاب النبي ﷺ، باب مناقب فاطمة، الحديث ३७१۷، ص ३०۶)

(تاريخ بغداد، الرقم ६७७२، غانم بن حميد بن يونس، ج १، ص ३۲۸ “انسية” بدله “آدمية”)

मरवी है : “हज़रते सय्यिदतुना ख़दीजतुल कुब्रा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने एक दिन सरकारे वाला तबार, महबूबे रब्बे ग़फ़ार, दो आलम के मालिको मुख़्तार बिइज़्जे परवर दगार صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में जन्नती फल देखने की ख्वाहिश की तो हज़रते सय्यिदुना जिब्राईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام सय्यिदुल कौनैन صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में जन्नत से दो सेब ले कर हाज़िर हो गए और अर्ज़ की : ऐ मुहम्मद (صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) खुदाए रहमान غَزَّ وَجَلَّ जिस ने हर शै का अन्दाज़ा रखा, फरमाता है : “एक सेब आप (صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) खाएं और दूसरा ख़दीजा (رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا) को खिलाएं फिर हक्के जौजियत अदा करें, मैं तुम दोनों से फ़ातिमतुज्ज़हरा को पैदा करूंगा।” चुनान्चे, हज़ूर नबिय्ये मुख़्तार, महबूबे ग़फ़ार صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना जिब्राईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام के कहने के मुताबिक़ अमल किया।”

जब कुफ़्फ़ार ने आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से कहा कि हमें चांद दो टुकड़े कर के दिखाएं। उन दिनों हज़रते सय्यिदतुना ख़दीजतुल कुब्रा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا को हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज्ज़हरा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا का हम्ल मुबारक ठहर चुका था। हज़रते सय्यिदतुना ख़दीजतुल कुब्रा रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने फ़रमाया : “उस की कितनी रुस्वाई है जिस ने हमारे आका मुहम्मद صَلَّय اللّٰهُ तَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को झुटलाया। आप صَلَّय اللّٰهُ तَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم सब से बेहतर रसूल और नबी हैं।” तो हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज्ज़हरा रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने उन के बतने अत्हर से निदा दी : ‘ऐ अम्मी जान ! आप ग़मज़दा न हों और न ही डरें, बेशक **अल्लाह** غَزَّ وَجَلَّ मेरे वालिदे मोहतरम के साथ है।”

जब मुदते हम्ल पूरी हुई और हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज्ज़हरा रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا की विलादत हुई तो सारी फ़ज़ा आप रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के चेहरे के नूर से मुनव्वर हो गई। नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّय اللّٰهُ तَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم को जब जन्नत और उस की ने'मतों का इश्तियाक़ होता तो हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज्ज़हरा रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا का बोसा ले लेते और उन की पाकीज़ा खुशबू को सूंघते। और जब उन की पाकीज़ा महक सूंघते तो फ़रमाते : “फ़ातिमा तू इन्सानी हूर है।”

**सय्यिदा फ़ातिमा रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا का निकाह :**

जब आस्माने रिसालत صَلَّय اللّٰهُ तَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم पर हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا का आफ़ताबे हुस्नो जमाल चमका और उफ़ुके अज़मत व जलाल पर आप रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا का बदे कमाल तुलूअ हुवा, तो नेक ख़स्लत ज़हनों में आप रَضِيَ اللّٰهُ तَعَالٰی عَلَیْهِ का ख़याल आया, मुहाजिरीन व अन्सार के मुअज़्ज़ीन ने पैग़ामे निकाह दिया। लेकिन रिज़ाए इलाही غَزَّ وَجَلَّ के साथ मख़सूस ज़ात ने इन्कार करते हुए फ़रमाया : “मैं खुदाई फैसले का मुन्तज़िर हूं।”

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ और हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म صَلَّय اللّٰهُ तَعَالٰی عَلَیْهِ ने भी पैग़ामे निकाह अर्ज़ किया तो उन से भी आप صَلَّय اللّٰهُ तَعَالٰی عَلَیْهِ ने येही इरशाद फ़रमाया : “येह मुअमला **अल्लाह** غَزَّ وَजَلَّ के ज़िम्मे करम पर है।”



**अबू बक्र व उमर (रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا) की सख्खिदुना अली (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ) के तश्गीब :**

एक दिन हज़रते सख्खिदुना अबू बक्र सिद्दीक (रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ) हज़रते सख्खिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म और हज़रते सख्खिदुना सा'द बिन मुआज़ (रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا) मस्जिदे नबवी शरीफ़ का ज़िक्रे ख़ैर चल निकला तो हज़रते सख्खिदुना अबू बक्र सिद्दीक (रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ) ने इरशाद फ़रमाया : “तमाम मुअज़्ज़िनी ने पैग़ामे निकाह अर्ज़ किया और आप صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इन्कार करते हुए येही इरशाद फ़रमाया : “येह मुआमला **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के ज़िम्माए करम पर है।” लेकिन हज़रते अली (كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم) ने पैग़ामे निकाह अर्ज़ नहीं किया और न ही इस का तज़क़िरा किया। मेरा ख़याल है कि इन्होंने ने गुर्बत के सबब ऐसा नहीं किया। मेरे दिल में येह बात आती है कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ और रसूल (صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) ने हज़रते फ़ातिमा (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا) का मुआमला शायद इसी लिये रोका हुवा है।” फिर हज़रते सख्खिदुना अबू बक्र सिद्दीक (रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ) ने हज़रते सख्खिदुना उमर फ़ारूक़ (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ) और हज़रते सख्खिदुना सा'द बिन मुआज़ (रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ) की तरफ़ मुतवज्जेह हो कर फ़रमाया : “आप इस बारे में क्या कहते हैं कि हम हज़रते अली (كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم) के पास चलें और उन से शहज़ादिये रसूल का मुआमला ज़िक्र करें, अगर उन्होंने ने तंग दस्ती की वजह से इन्कार किया तो हम उन की मदद करेंगे।” हज़रते सख्खिदुना सा'द (रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ) ने अर्ज़ की : “ऐ अबू बक्र (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ) **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ आप को इस काम की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।” (आमीन) फिर येह सब मस्जिदे नबवी शरीफ़ (صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) से निकल कर हज़रते सख्खिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा (كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم) की तलाश में इन की मस्जिद जा पहुंचे लेकिन उन्हें वहां न पाया। (फिर जब पता चला कि) हज़रते सख्खिदुना अली (रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ) उस वक़्त किसी अन्सारी के बाग़ में उजरत पर ऊंटों के ज़रीए पानी निकालने में मसरूफ़ हैं तो येह तीनों सहाबी उन की जानिब चल दिये। जब हज़रते सख्खिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा (كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْहَهُ الْكَरِيم) ने उन सब को देखा तो पूछा : “क्या मुआमला है?”

हज़रते सख्खिदुना अबू बक्र सिद्दीक (रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ) ने इरशाद फ़रमाया : “ऐ अली ! (बात येह है कि) कुरैश के मुअज़्ज़िनी ने बिन्ते रसूल के लिये पैग़ामे निकाह दिया लेकिन आप صَلَّی اللَّهُ तَعَالَى عَلَیْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने येह कह कर लौटा दिया कि “येह मुआमला **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ के ज़िम्माए करम पर है।” और (हम देखते हैं कि) आप हर अच्छी आदत से कामिल तौर पर मुत्तसिफ़ हैं और हुज़ूर सख्खिदे आलम (صَلَّی اللَّهُ तَعَالَى عَلَیْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ) के क़राबत दार भी हैं तो आप के लिये इस में क्या रुकावट है ? मुझे उम्मीद है कि **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ व रसूल (صَلَّی اللَّهُ तَعَالَى عَلَیْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ) ने उन का मुआमला आप के लिये रोका हुवा है। रावी फ़रमाते है : “हज़रते सख्खिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा (كَرَّمَ اللَّهُ तَعَالَى وَجْहَهُ الْكَरِيم) की आंखें अशक़ बार हो गई और अर्ज़ की : “ऐ अबू बक्र (رَضِيَ اللَّهُ तَعَالَى عَنْهُ) ! आप ने मुझे ऐसे काम पर उभारा है जो रुका हुवा था और मुझे ऐसे काम की तरफ़ मुतवज्जेह किया जिस

से मैं गाफ़िल था, **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! मुझे शहज़ादिये सरवरे कौनैन पसन्द हैं और ऐसे रिश्ते के लिये मेरे जैसा और कोई नहीं लेकिन गुर्बत ने मुझे इस से रोक रखा है।” हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने फ़रमाया : “ऐ अली ! ऐसा न कहो ! **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के नज़दीक़ दुनिया और जो कुछ इस में है, उड़ते गुबार की मानिन्द है।”

**हज़रते अली** رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ **की बारगाहे मुश्तफ़ा** عليه التحية والثناء **में हाज़िरी :**

फिर हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيم ने ऊंट खोला और अपने घर चल दिये। घर जा कर ऊंट बांधा और जूते पहन कर हज़रते सय्यिदुना उम्मे सलमा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا के घर की तरफ़ चल दिये, दरवाज़ा खट-खटाया तो हज़रते सय्यिदुना उम्मे सलमा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने पूछा : “कौन ?” तो सरकारे अली वफ़ार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “उठो और दरवाज़ा खोलो। येह वोह है जिस से **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ और उस का रसूल صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ महब्बत करता है और येह भी उन से महब्बत करता है।” हज़रते सय्यिदुना उम्मे सलमा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने अर्ज़ की : “मेरे मां बाप आप (صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) पर कुरबान ! येह कौन है ?” तो आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “येह मेरा भाई है और मुझे सारी मख़्लूक से बढ़ कर प्यारा है।” हज़रते सय्यिदुना उम्मे सलमा रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا फ़रमाती हैं : “मैं इस तेज़ी से उठी कि चादर में उलझने लगी थी। मैं ने दरवाज़ा खोला तो देखा कि हज़रते सय्यिदुना अली रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ हैं ! **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! जब तक उन्हें पता न चला कि मैं ओट में हो गई हूं, वोह अन्दर दाख़िल न हुए। फिर हाज़िरे ख़िदमते अक़दस हो कर उन्होंने ने सलाम अर्ज़ किया और आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने जवाब इनायत किया फिर फ़रमाया : “बैठो।” आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के सामने बैठ गए और ज़मीन कुरैदने लगे गोया कोई हाज़त अर्ज़ करने में हया कर रहे हों।

सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “ऐ अली ! कोई काम है तो बताओ हमारे हां तुम्हारी हर हाज़त पूरी होगी।” हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيم ने अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह صَلَّय اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! मेरे मां बाप आप صَلَّय اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ पर कुरबान ! आप صَلَّय اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ जानते हैं कि आप صَلَّय اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने मुझे अपने चचा और चची फ़ातिमा बन्ते असद से लिया, मैं उस वक़्त एक ना समझ बच्चा था। आप صَلَّय اللّٰهُ تَعालٰى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने मेरी राहनुमाई फ़रमाई, मुझे अदब सिखाया, मुझे शाइस्ता बनाया। आप صَلَّय اللّٰهُ تَعालٰى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने मुझ पर मां बाप से बढ़ कर शफ़क़त व एहसान फ़रमाया। **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने आप صَلَّय اللّٰهُ تَعालٰى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के ज़रीए मुझे हिदायत बख़्शी और उस शिर्क से बचाया जिस में मेरे वालिदैन् मुब्तला थे (इन की वालिदा फ़ातिमा बन्ते असद बा'द में ईमान ले आई थीं)। या रसूलल्लाह (صَلَّय اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ) आप صَلَّय اللّٰهُ تَعालٰى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ही दुनिया व

आखिरत में मेरा वसीला और ज़खीरा हैं, और मैं येह पसन्द करता हूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप के ज़रीए मेरी पुश्त पनाही इस तरह फ़रमाए कि मेरा भी एक घर और बीवी हो जिस में चैन हासिल करूं। येही गरज़ लिये मैं आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक्दस में हाज़िर हुवा हूं, या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपनी लख्ते ज़िगर हज़रते फ़ातिमतुज्ज़हरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا का अक्दे निकाह मेरे साथ फ़रमाना पसन्द फ़रमाएंगे ?”

### आस्मान पर निकाह और फ़िरिशतों की बाशत :

हज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं : “मैं ने देखा कि हुज़ूर सय्यिदुल मुबल्लिगीन, जनाबे रहूमतुल्लिल आलमीन صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का चेहरा एन्वर खुशी व मसरत से खिल उठा। फिर आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم ने मुस्कुरा कर हज़रते अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْکَرِیْم के चेहरे को देखा और इस्तिफ़सार फ़रमाया : “ऐ अली ! क्या तुम्हारे पास कोई चीज़ है जिस से तुम फ़ातिमा (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا) का हक्के महर अदा कर सको ?” हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْکَرِیْم ने अर्ज़ की : “**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की कसम ! या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم जानते हैं कि मैं एक ज़िरह, तल्वार और पानी लाने वाले एक ऊंट के इलावा किसी चीज़ का मालिक नहीं।” तो शहनशाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़े रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिषाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “अपनी तल्वार से तो तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद करोगे लिहाज़ा इस के बिगैर गुज़ारा नहीं और ऊंट से अपने घर वालों के लिये पानी भर कर लाओगे और सफ़र में भी इस पर अपना सामान लादोगे, लेकिन ज़िरह के बदले में, मैं अपनी बेटी का निकाह तुझ से करता हूं और मैं तुझ से खुश हूं, और ऐ अली ! तुम्हें मुबारक हो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ज़मीन पर फ़ातिमा से तुम्हारा निकाह करने से पहले आस्मान में तुम दोनों का निकाह कर दिया है और तुम्हारे आने से पहले आस्मानी फ़िरिश्ता मेरे पास हाज़िर हुवा जिस को मैं ने पहले कभी न देखा था। उस के कई चेहरे और पर थे, उस ने आ कर अर्ज़ की : “السلام علیکم یا रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) मुबारक मिलन और पाकीज़ा नस्ल की आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم को बिशारत हो।”

मैं ने पूछा : “ऐ फ़िरिश्ते ! क्या कह रहे हो ?” उस ने जवाब दिया : “या रसूलल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं सबताईल हूं और अर्श के एक पाए पर मुक़रर हूं, मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में गुज़ारिश की, कि वोह मुझ को इजाज़त दे कि मैं आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم को बिशारत सुनाऊं और हज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام भी मेरे पीछे पीछे फज़ल व करमे इलाही عَزَّوَجَلَّ की ख़बर ले कर आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم के पास पहुंचने वाले हैं।” सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार, बिइज़ने परवर दगार صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “अभी उस फ़िरिश्ते ने अपनी बात पूरी भी न की थी कि हज़रते जिब्राईले अमीन (عَلَيْهِ السَّلَام) ने आ कर सलाम किया और एक सफ़ेद रेशम



का टुकड़ा मेरे हाथों पर रख दिया जिस में दो सतरें नूर के साथ लिखी हुई थी।” मैं ने पूछा : “ऐ मेरे दोस्त जिब्राईल (عليه السلام) यह ख़त कैसा है ?” तो उन्होंने ने बताया : “या रसूलल्लाह (صلى الله تعالى عليه و آله وسلم) **अल्लाह** عز وجل ने दुनिया पर नज़रे रहमत फ़रमाई और अपनी रिसालत के लिये मख़्तूक में से आप (صلى الله تعالى عليه و آله وسلم) का इन्तिखाब फ़रमाया और आप (صلى الله تعالى عليه و آله وسلم) की बेटी हज़रते फ़ातिमा (رضى الله تعالى عنها) का निकाह फ़रमा दिया।” मैं ने पूछा : “ऐ जिब्राईल (عليه السلام) ज़रा यह तो बताओ कि यह मेरा हबीब कौन है ?” तो उन्होंने ने जवाब दिया : “आप (صلى الله تعالى عليه و آله وسلم) का चचा ज़ाद और दीनी भाई हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा (كرم الله تعالى وجهه الكريم) है और **अल्लाह** عز وجل ने सारी जन्नतों और हूरों को आरास्ता पैरास्ता होने, शजरे तूबा को ज़ेवरात से मुजय्यन होने और मलाइका को चौथे आस्मान में बैतुल मा’मूर के पास जम्अ होने का हुक्म दिया है, और रिज़वाने जन्नत ने **अल्लाह** عز وجل के हुक्म से बैतुल मा’मूर के दरवाज़े पर मिम्बरे करामत रख दिया है। यह वोही मिम्बर है कि जब **अल्लाह** عز وجل ने हज़रते सय्यिदुना आदम (عليه الصلوة والسلام) को तमाम अश्या के नाम सिखाए थे तो उन्होंने ने इस पर खुतबा दिया था।

फिर **अल्लाह** عز وجل के हुक्म से इस मिम्बर पर राहील नामी फिरिश्ते ने **अल्लाह** عز وجل के शायाने शान उस की हम्दो षना की तो आस्मान फ़रहत व सुरूर से झूम उठा।” फिर हज़रते जिब्राईल (عليه السلام) ने मज़ीद अर्ज़ की : **अल्लाह** عز وجل ने मुझे वह्य फ़रमाई कि “मैं ने अपने महबूब बन्दे अली का निकाह अपनी महबूब बन्दी और अपने रसूल की बेटी फ़ातिमा से कर दिया है, तुम इन का अक्दे निकाह कर दो।” पस मैं ने अक्दे निकाह कर दिया और इस पर फिरिश्तों को गवाह बनाया और उन की गवाही इस रेशम के टुकड़े में लिखी हुई है, **अल्लाह** عز وجل ने मुझे हुक्म दिया है कि मैं यह ख़त आप (صلى الله تعالى عليه و آله وسلم) के हुज़ूर पेश करूं और इस पर सफ़ेद कस्तूरी की मोहर लगा कर दारोगए जन्नत, रिज़वान के हवाले कर दूं। जब **अल्लाह** عز وجل ने मलाइका को इस निकाह पर गवाह बनाया तो शजरे तूबा को हुक्म दिया कि वोह अपने ज़ेवरात बिखरे। जब उस ने ज़ेवरात की बोछार की तो मलाइका और हूरों ने सब ज़ेवरात चुन लिये और हूरें क़ियामत तक यह ज़ेवरात एक दूसरे को तोहफ़े में देती रहेंगी और **अल्लाह** عز وجل ने मुझे हुक्म दिया है कि मैं आप (صلى الله تعالى عليه و آله وسلم) से यह अर्ज़ करूं कि आप (صلى الله تعالى عليه و آله وسلم) ज़मीन पर हज़रते फ़ातिमा (رضى الله تعالى عنها) की शादी हज़रते अलिय्युल मुर्तज़ा (كرم الله تعالى وجهه الكريم) से कर दें और मुझे यह भी हुक्म मिला है कि हज़रते फ़ातिमा (رضى الله تعالى عنها) को दो ऐसे शहज़ादों की बिशारत दूं जो इन्तिहाई सुथरे, उम्दा ख़साइल व फ़ज़ाइल के हामिल, पाकीज़ा फ़ितरत और दोनों जहां में भलाई वाले होंगे।” मक्की मदनी सुल्तान, रहमते आलमिय्यान, सरदारो दो जहान (صلى الله تعالى عليه و آله وسلم) ने इरशाद फ़रमाया : “ऐ अली (رضى الله تعالى عنه) अभी फिरिश्ता बुलन्द न हुवा था कि तुम ने दरवाज़े पर दस्तक दे दी। मैं तुम्हारे मुतअल्लिक हुक्मे इलाही عز وجل नाफ़िज़ कर रहा हूं, तुम मस्जिद में पहुंच जाओ, मैं भी आ रहा हूं। मैं लोगों की मौजुदगी में तुम्हारा निकाह करूंगा और तुम्हारे वोह फ़ज़ाइल बयान करूंगा जिन से तुम्हारी आंखें ठन्डी हों।”

हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा (كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم) इरशाद फ़रमाते हैं : “मैं बारगाहे रिसालत (صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) से निकला तो इतनी जल्दी में था कि खुशी व मसरत से अपना होश भी न था । रास्ते में हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ और हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا) से मुलाकात हुई, उन्होंने ने पूछ : “ऐ अली (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ) ख़ैरियत है, क्या हुआ है ? कि तुम इतनी जल्दी में हो ।” तो मैं ने बताया : “रसूलुल्लाह (صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) ने मेरा निकाह अपनी शहजादी से कर दिया है और यह भी बताया है कि **अल्लाह** (عَزَّ وَجَلَّ) ने मेरा निकाह आस्मानों में किया है, अब हुज़ूर (صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) मेरे पीछे पीछे मस्जिद में तशरीफ़ ला कर इस का ए’लान फ़रमाएंगे ।” वोह दोनों भी यह सुन कर खुश हो गए और मस्जिद की तरफ़ चल दिये । ब खुदा (عَزَّ وَجَلَّ) जब रसूलुल्लाह (صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ) हमारे पास तशरीफ़ लाए तो उन का चेहरा खुशी से दमक रहा था । आप (صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ) ने इरशाद फ़रमाया : “ऐ बिलाल (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ) मुहाजिरीन व अन्सार को जम्अ करो ।” हज़रते सय्यिदुना बिलाल (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ) ब हुक्मे नबिय्ये पाक (صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) तशरीफ़ ले गए । इमामुल अम्बिया (صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ) अपने मिम्बरे अक्दस के पास तशरीफ़ फ़रमा हो गए यहां तक कि जब सब लोग जम्अ हो गए तो आप (صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ) ने मिम्बरे अक्दस पर जल्वा अफ़रोज़ हो कर **अल्लाह** (عَزَّ وَجَلَّ) की हम्दो षना की और इरशाद फ़रमाया : “ऐ मुसलमानो ! अभी अभी हज़रते जिब्राईले अमीन (عليه السّلام) मेरे पास आए और यह ख़बर दी कि **अल्लाह** (عَزَّ وَجَلَّ) ने बैतुल मा’मूर के पास मलाइका को गवाह बना कर मेरी बेटी फ़ातिमा (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا) का निकाह अली (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ) से कर दिया है, और मुझे भी हुक्म फ़रमाया है कि मैं ज़मीन पर इन का निकाह कर दूं । मैं तुम सब को गवाह बनाता हूं कि मैं ने अपनी बेटी का निकाह अली (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ) से कर दिया है ।” फिर हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम (صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) मिम्बर से नीचे तशरीफ़ ले आए और हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा (كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم) से इरशाद फ़रमाया : “ऐ अली (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ) खड़े हो कर ख़ुतबए निकाह पढ़ो ।”

### ख़ुतबए निकाह :

हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा (كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم) ने खड़े हो कर **अल्लाह** तआला की हम्दो षना की और यह ख़ुतबा पढ़ा :

الْحَمْدُ لِلَّهِ وَشُكْرًا لِأَنْعَمِهِ وَآيَادِيهِ أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَلَا شَيْبَةَ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ  
نَبِيُّهُ النَّبِيُّ وَرَسُولُهُ الْوَجِيهُ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَعَلَى آلِهِ وَآصْحَابِهِ وَأَزْوَاجِهِ وَبَيْنِهِ صَلَوةٌ دَائِمَةٌ تَرْضِيهِ وَبَعْدُ

या’नी सब ता’रीफें **अल्लाह** (عَزَّ وَجَلَّ) के लिये हैं और उस के इन्आमात व एहसानात पर उस का शुक्र है, मैं गवाही देता हूं कि **अल्लाह** (عَزَّ وَजَلَّ) के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, वोह यक्ता है, उस का कोई शरीक व मिष्ल नहीं और गवाही देता हूं कि हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद (صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) उस के बन्दे और रसूल हैं, उस के मुअज़्ज़ज़ नबी और अज़ीमुश्शान रसूल हैं, उन पर और उन की

आल व अस्हाब, अजवाजे मुतहहरात और अवलादे अतहार **अल्लाह** पर **رَضَوْنَ اللّٰهَ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْنَ** को खुश कर दे (आमीन)।" इस के बा'द फ़रमाया : "निकाह **अल्लाह** **عَزَّ وَجَلَّ** के हुक्म पर अमल है और उस ने इस की इजाज़त दी है, रसूलुल्लाह **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** ने अपनी शहजादी हज़रते फ़ातिमा **عَنْهَا** का निकाह मुझ से कर दिया है और मेरी इस ज़िह को बतौर हक्के महर मुक़रर फ़रमाया है, मैं और आप **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** इस पर राज़ी हैं, तुम लोग आप **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** से पूछ लो और गवाह बन जाओ।" तो सब मुसलमानों ने कहा : "**अल्लाह** **عَزَّ وَجَلَّ** तुम्हारे जोड़े में बरकत अता फ़रमाए और तुम्हें इत्तिफ़ाक़ अता फ़रमाए।" फिर हुज़ूर नबिय्ये पाक साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ** अपनी अजवाजे मुतहहरात **عَنْهُنَّ** के पास तशरीफ़ लाए और उन्हें हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा **عَنْهَا** के निकाह पर दफ़ बजाने का हुक्म दिया तो उन्होंने ने आप **رَضَى اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا** के पास दफ़ बजाया।<sup>(1)</sup>

### सय्यिदा फ़ातिमा **رَضَى اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا** का जहेज़ :

हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा **كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم** इरशाद फ़रमाते हैं : "मैं ने अपनी ज़िह ली और बाज़ार में हज़रते सय्यिदुना उषमाने ग़नी **رَضَى اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ** को चार सो दिरहम में फ़रोख़्त कर दी। जब मैं ने दिरहमों पर और उन्होंने ने ज़िह पर कब्ज़ा कर लिया तो मुझ से फ़रमाने लगे : "ऐ अली ! क्या अब मैं आप से ज़ियादा ज़िह का और आप मुझ से दराहिम के हक्कदार नहीं ?" मैं ने कहा : "क्यूं नहीं।" तो कहने लगे : "फिर येह ज़िह मेरी तरफ़ से आप को हदिय्या है।" हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा **كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم** फ़रमाते हैं : "मैं ने ज़िह और दिरहम लिये और रसूलुल्लाह **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** की ख़िदमते अक्दस में हाज़िर हो कर हज़रते सय्यिदुना उषमान **رَضَى اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ** के हुस्ने सुलूक की ख़बर दी तो आप **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** ने उन्हें ख़ैरो बरकत की दुआ दी और फिर हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक **رَضَى اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ** को बुला कर मुठ्ठी भर दिरहम उन्हें दिये और फ़रमाया : "इन दराहिम के इवज़ फ़ातिमा **(رَضَى اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا)** के लिये मुनासिब अश्या ख़रीद लाओ। हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी और हज़रते सय्यिदुना बिलाल **رَضَى اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا** को ख़रीदी हुई अश्या उठाने में मदद के लिये साथ भेजा। हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक **رَضَى اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ** इरशाद फ़रमाते हैं : मुझे हुज़ूर नबिय्ये पाक **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** ने तिरसठ (63) दिरहम अता फ़रमाए थे, मैं ने रूई से भरा हुवा मोटे कपड़े का बिस्तर, चमड़े का दस्तर ख़्वान, चमड़े का तकया जिस में ख़जूर के पत्ते भरे हुए थे, पानी के लिये एक मशकीज़ा और कूज़ा और नर्म ऊन का एक पर्दा

①.....शादी में दफ़ बजाने के मुतअल्लिक़ सय्यिदी आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजहिदे दीनो मिल्लत, अश्शाह इमाम अहमद रज़ा खान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن** फ़रमाते हैं : "दफ़ कि बिला जलाजल या'नी बिगैर झांझन का हो और तालसम (या'नी सुर) की रियायत से न बजाया जाए और बजाने वाले न मर्द हों न ज़ी इज़ज़त औरतें, बल्कि कनीज़ें या ऐसी कम हैषियत औरतें। और वोह गैर महले फ़ितना में बजाएं तो न सिर्फ़ जाइज़ बल्कि मुस्तहब व मन्दूब है। हदीष में मशरूत दफ़ बजाने का हुक्म दिया गया और इस की तमाम कुयूद को फ़तावा शामी वगैरा में ज़िक्र कर दिया गया।" (फ़तावा रज्जबिया, जि.21 स.643)



खरीदा। फिर मैं, हज़रते सलमान और हज़रते बिलाल (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا) ने थोड़ा थोड़ा कर के वोह सामान उठा लिया और आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ख़िदमत में हाज़िर कर दिया। जब आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने देखा तो रोने लगे और आस्मान की जानिब निगाह उठा कर अर्ज़ की : “या **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ ऐसे लोगों को अपनी बरकत से नवाज़ जिन का शिआर ही तुझ से डरना है।”

हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمُ इरशाद फ़रमाते हैं : “आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने बक़िय्या दिरहम हज़रते सय्यिदुना उम्मे सलमा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا के हवाले कर दिये और इरशाद फ़रमाया : “इन दराहिम को अपने पास रखो।” फिर एक महीना तक शर्मो हया के बाइष मैं आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ख़िदमत में हाज़िर न हुवा। जब कभी रास्ते में आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ से मुलाक़ात होती तो आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ इरशाद फ़रमाते : “ऐ अली (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ) मैं ने तुम्हारा निकाह उस के साथ किया है जो तमाम जहानों की औरतों की सरदार है।”

**सय्यिदा फ़ातिमा रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا की रुख़्शती :**

हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمُ इरशाद फ़रमाते हैं : “जब महीना गुज़र गया तो मेरे भाई हज़रते अक़ील رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ मेरे पास तशरीफ़ लाए और कहने लगे : “ऐ मेरे भाई ! आज तक मैं इतना खुश नहीं हुवा जितना येह सुन कर खुश हुवा कि तुम्हारी शादी बिन्ते रसूल से हो गई है, अब अगर आप इन को अपने घर भी ले आएंगे तो इस से हमारे दिल खुश होंगे।” मैं ने जवाब दिया : “**اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! मैं भी येही चाहता हूं लेकिन मुझे सरकार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ से शर्म आती है।” उन्होंने ने कहा : “मैं आप को क़सम देता हूं कि आप मेरे साथ चलें।” लिहाज़ा हम आप صَلَّى اللَّهُ तَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की बारगाह में मुलाक़ात के इरादे से घर से निकले तो रास्ते में हमारी मुलाक़ात आप صَلَّى اللَّهُ तَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की ख़दिमा हज़रते उम्मे ऐमन रَضِيَ اللَّهُ तَعَالَى عَنْهَا से हो गई। हम ने उन से तज़क़िरा किया तो कहने लगीं : “ज़रा इन्तिज़ार करें, हम औरतें आप صَلَّى اللَّهُ तَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ से हज़रते फ़ातिमा رَضِيَ اللَّهُ तَعَالَى عَنْهَا के मुतअल्लिक़ बात करती हैं कि (इन मुअमलात में) मर्दों की निस्बत औरतों की बातें ज़ियादा मुअषिर होती हैं।” वोह वापस मुड़ कर हज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमा رَضِيَ اللَّهُ तَعَالَى عَنْهَا के पास गई और उन्हें और फिर दूसरी अज़वाजे मुतहहरात रَضِيَ اللَّهُ तَعَالَى عَنْهُنَّ को सारी बात बताई तो सब उम्मुहातुल मोअमिनीन रَضِيَ اللَّهُ तَعَالَى عَنْهُنَّ इकठ्ठी हो कर आप صَلَّى اللَّهُ तَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के पास हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीका रَضِيَ اللَّهُ तَعَالَى عَنْهَا के हुजरए मुबारका में हाज़िर हुई और आप صَلَّى اللَّهُ तَعَالَى عَلَيْهِ وَआलِهِ وَسَلَّمَ के चारों तरफ़ बैठ कर अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह (صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) हमारे मां बाप आप صَلَّى اللَّهُ तَعَالَى عَلَيْهِ وَआलِهِ وَسَلَّمَ पर कुरबान ! हम एक अहम मुअमले में आप صَلَّى اللَّهُ तَعालَى عَلَيْهِ وَआलِهِ وَسَلَّمَ के पास हाज़िर हुई हैं, काश ! अगर आज हज़रते ख़दीजा रَضِيَ اللَّهُ तَعَالَى عَنْهَا जिन्दा होतीं तो इस से उन की आंखें ठन्डी होतीं।”

हज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं : “जब हम ने हज़रते ख़दीजा रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا का तज़क़िरा किया तो आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आबदीदा हो गए और इरशाद फ़रमाया : “ख़दीजा रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا की मिष्ल कौन हो सकता है ? उस ने मेरी उस वक़्त तस्दीक़ की जब सब ने मुझे झुटला दिया और अपने माल से मेरे दीन व दुन्या के मुआमलात में मेरी इमदाद की ।” तो हज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमा रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) हां वाकेई हज़रते ख़दीजा रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ऐसी ही थीं मगर वोह अपने रब्ब عَزَّ وَجَلَّ के पास जा चुकी हैं, **अल्लाह** यकीनन हमें उन के साथ जन्त में जम्अ फ़रमाएगा । आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم के चचाज़ाद और दीनी भाई हज़रते अली रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ अपनी बीवी हज़रते फ़ातिमा रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا की रुख़्सती चाहते हैं ।” तो आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم ने हुक्म फ़रमाया : “उम्मे ऐमन रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا को अली (رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ) को बुलाने के लिये भेज दो ।” हज़रते उम्मे ऐमन रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا जब निकलीं और हज़रते अली रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को अपना मुन्तज़िर पाया तो उन से अर्ज़ की : “हुज़ूर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم के बुलावे पर लब्बैक कहें ।”

हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा क़र्रम ल्लّٰह तَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم फ़रमाते हैं : “जब मैं उम्मे ऐमन रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के साथ आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक्दस में हज़िर हुवा तो तमाम अज़वाजे मुतहहरात رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ अन्दर कमरे में तशरीफ़ ले गईं, मैं आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم के सामने सर झुका कर बैठ गया तो आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़सार फ़रमाया : “क्या तुम अपनी जौजा के साथ रहना चाहते हो ?” मैं ने अर्ज़ की : “जी हां ! या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم पर कुरबान !” आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “बड़ी महब्बत व इज़ज़त से, **إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّ وَجَلَّ** आज रात से तुम अपनी जौजा के साथ रहा करोगे । हज़रते सय्यिदुना अली क़र्रम ल्लّٰह तَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم फ़रमाते हैं : “फिर मैं आप صَلَّय اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे अक्दस से खुशी व मसरत की हालत में उठा ।”

**हज़रते सय्यिदुना अली रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का वलीमा :**

**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के रसूल, रसूले मक्बूल, बीबी आमिना के गुलशन के महकते फूल रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا को आरास्ता करने का हुक्म दिया और हज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमा रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के पास रखे हुए दराहिम में से दस दिरहम हज़रते अली क़र्रम ल्लّٰह तَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم को दिये और इरशाद फ़रमाया : “इन से खजूर, घी और पनीर ख़रीद लो ।” आप रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : “मैं येह चीज़ें ख़रीद कर आप صَلَّय اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हज़िर हो गया । आप صَلَّय اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم ने चमड़े का एक दस्तर ख़्वान मंगवाया और आस्तीनें चढ़ा कर खजूरों को घी में मसलने लगे और फिर पनीर के साथ इस तरह मिलाया कि वोह हल्वा बन गया फिर इरशाद फ़रमाया : “ऐ अली (رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ) जिसे चाहो बुला लाओ ।” मैं

मस्जिद गया और आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के सहाबए किराम رَضَوْنَ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ से कहा : “आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की दा'वत क़बूल करें।” सब लोग उठ कर चल दिये। जब मैं ने आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की बारगाह में अर्ज़ की, कि लोग बहुत ज़ियादा हैं तो आप صَلَّى اللَّهُ تَعालَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने चमड़े के दस्तर ख़्वान को एक रूमाल से ढांक दिया और इरशाद फ़रमाया : “दस दस अफ़ाद को दाख़िल करते जाओ।” मैं ने ऐसा ही किया। सहाबए किराम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ खा कर निकलते गए लेकिन खाने में बिल्कुल कमी न हुई यहां तक कि आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की बरकत से सात सो अफ़ाद ने वोह हल्वा खाया।”

इस के बा'द आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने हज़रते फ़ातिमा और हज़रते अली رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا को अपने पास बुलाया और हज़रते अली كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم को अपने दाएं और हज़रते फ़ातिमा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا को अपने बाएं तरफ़ बिठा कर सीने से लगाया और दोनों की आंखों के दरमियान पेशानी पर बोसा दिया और फिर हज़रते फ़ातिमा (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا) को हज़रते अली كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم के हवाले कर दिया और इरशाद फ़रमाया : “ऐ अली ! मैं ने कितनी अच्छी जौजा से तेरा निकाह किया है।” फिर उन दोनों के साथ उन के घर तक पैदल चले। फिर घर से बाहर निकल कर दरवाजे के किवाड़ पकड़े और येह दुआ फ़रमाई : “**اَللّٰهُمَّ** عَزَّ وَجَلَّ तुम दोनों को इत्तिफ़ाक़ व इत्तिहाद अता फ़रमाए, मैं तुम्हें **اَللّٰهُمَّ** عَزَّ وَجَلَّ के सिपुर्द करता हूं और तुम दोनों को उस की हिफ़ाज़त में देता हूं।”

### शादी की पहली रात :

हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا से महब्वत भरी गुफ़्तगू करने लगे यहां तक कि जब रात का अन्धेरा छा गया तो वोह रोने लगीं। हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم ने पूछा : “ऐ तमाम औरतों की सरदार ! क्या आप खुश नहीं कि मैं आप का शोहर हूं और आप मेरी बीवी हैं ?” कहने लगीं : “मैं क्यूं कर राज़ी न होऊंगी, आप तो मेरी रिज़ा बल्कि इस से भी बढ कर हैं, मैं तो अपनी उस हालत व मुआमले के मुतअल्लिक़ सोच रही हूं कि जब मेरी उम्र बीत जाएगी और मुझे क़ब्र में दाख़िल कर दिया जाएगा, आज मेरा इज़्ज़त व फ़ख़्र के बिस्तर में दाख़िल होना कल क़ब्र में दाख़िल होने की मानिन्द है। आज रात हम अपने रब्ब عَزَّ وَجَلَّ की बारगाह में खड़े हो कर इबादत करेंगे कि वोही इबादत का ज़ियादा हक़ रखता है।” इस के बा'द वोह दोनों इबादत की जगह खड़े हो कर रब्बे क़दीर عَزَّ وَجَلَّ की इबादत करने लगे।

### इबादत हो तो ऐसी :

ऐ मेरे इस्लामी भाइयो ! येह ऐसे लोग हैं कि जिन का पुख़्ता अज़्म, ख़्वाहिशात और मक्सूद न तो दुन्या और उस की लज़्ज़ात थीं और न ही नफ़्स की राहत व ख़्वाहिशात। बल्कि उन की बुलन्द हिम्मतों की परवाज़ हमेशा बाक़ी रहने वाले ठिकाने की तरफ़ थी। यकीनन उन का ज़िक़्र कुरआने पाक में लिख दिया गया और उन को बिशारत दे दी गई :



﴿۱﴾ اِنَّمَا يُرِيدُ اللّٰهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ اَهْلَ  
الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَ كُمْ تَطْهِيرًا ۝ (پ ۲۲، الاحزاب: ۳۳)

तर्जमए कञ्जुल ईमान : **अल्लाह** तो येही चाहता है ऐ नबी के घर वालों कि तुम से हर नापाकी दूर फरमा दे और तुम्हें पाक कर के खूब सुथरा कर दे।<sup>(१)</sup>

उन दोनों मुबारक हस्तियों ने अपनी लज्जात के बिस्तर को छोड़ दिया और **अल्लाह** की इबादत में मसरूफ हो गए, रात क़ियाम में तो दिन रोज़े की हालत में बसर होता हत्ता की तीन रोज़ इसी तरह गुज़र गए। फिर वोह दोनों अपने बिस्तर पर आराम फ़रमा हुए। चौथे दिन हज़रते सय्यिदुना जिब्राईले अमीन **عَلَى نَبِيْنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** आप **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** की ख़िदमते बा बरकत में हाज़िर हुए और अर्ज़ की : “**अल्लाह** तअ़ला आप **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** को सलाम भेजता है और इरशाद फ़रमाता है कि अली और फ़ातिमा ने तीन दिन से नींद और बिस्तर को तर्क कर रखा है और इबादत और रोज़ों में मसरूफ़ हैं, तुम उन के पास जाओ और उन से इरशाद फ़रमाओ कि **अल्लाह** तुम्हारी वजह से मलाइका पर फ़ख़्र फ़रमा रहा है और येह कि तुम दोनों बरोजे क़ियामत गुनहगारों की शफ़ाअत करोगे।” आप **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** फ़ौरन उन के घर तशरीफ़ लाए तो वहां हज़रते सय्यिदतुना अस्मा बिनते उमैस **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا** को पाया तो इस्तिफ़सार फ़रमाया : “किस चीज़ ने तुझे यहां ठहराया है ? हालांकि घर में एक मर्द भी मौजूद है।” उन्होंने ने अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** ! मेरे मां बाप आप **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** पर कुरबान ! जब कोई लड़की शादी की पहली रात अपने खावन्द के पास आती है तो उसे एक ऐसी औरत की ज़रूरत होती है जो उस की देख भाल करे और उस की ज़रूरियात पूरी करे। लिहाज़ा हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا** की ज़रूरियात पूरी करने के लिये मैं यहां ठहर गई।” इस पर आप **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** की चश्माने मुबारक नमनाक हो गई और दुआ फ़रमाई : ऐ अस्मा **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا** तेरी दुनिया व आख़िरत की तमाम हाज़ात पूरी फ़रमाए।

**हज़रते अली** **كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيم** **को आवाज़ की नसीहत :**

हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा **كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيم** फ़रमाते हैं : “वोह सुब्ह इन्तिहाई ठन्डी और शदीद सर्द थी, मैं और फ़ातिमा **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا** एक ही चादर में महवे आराम थे। जब हम ने आप **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** की मुबारक आवाज़ सुनी तो जल्दी से खड़े होने लगे मगर

①...मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِي** तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारक के तहत फ़रमाते हैं “या'नी गुनाहों की नजासत से तुम आलूदा न हो। इस आयत से अहले बैत की फ़ज़ीलत पाबित होती है और अहले बैत में नबिय्ये करीम **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** के अज़वाजे मुतहहारत और हज़रते ख़ातूने जन्नत फ़ातिमा ज़ह्रा और अली मुर्तज़ा और हसनैन करीमैन **(رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمْ)** सब दाख़िल हैं। आयात व अहादीष को जम्अ करने से येही नतीजा निकलता है और येही और हज़रते इमाम अबू मन्सूर मातरीदी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ** से मन्कूल है। इन आयात में अहले बैते रसूले करीम **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** को नसीहत फ़रमाई गई है ताकि वोह गुनाहों से बचें और तक्वा व परहेज़गारी के पाबन्द रहें, गुनाहों को नापाकी से और परहेज़गारी को पाकी से इस्तिआरा फ़रमाया गया क्यूंकि गुनाहों का मुर्तकिब उन से ऐसा ही मुलव्विष होता है जैसा जिस्म नजासतों से। इस तर्ज़े कलाम से मकसूद येह है कि अरबाबे उकूल को गुनाहों से नफ़्त दिलाई जाए और तक्वा व परहेज़गारी की तरगीब दी जाए।”

आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने हमें देख कर इरशाद फ़रमाया : “मैं तुम्हें अपने हक़ का वासिता देता हूँ कि इसी हालत में रहो यहां तक कि मैं भी तुम्हारे साथ शामिल हो जाऊँ।” हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा कَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمُ फ़रमाते हैं : हम इसी हालत में रहे और आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ आ कर हमारे सरों के क़रीब तशरीफ़ फ़रमा हो गए और अपने क़दमैन शरीफ़ैन हमारे दरमियान में रख दिये तो मैं ने आप صَلَّى اللَّهُ तَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का दायां पाउं पकड़ कर सीने से लगा लिया और हज़रते फ़ातिमा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا ने बायां पाउं थाम लिया। फिर हम दोनों आप صَلَّى اللَّهُ तَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के क़दमैन शरीफ़ैन को सर्दी से बचाने के लिये मलने लगे हत्ता की वोह गर्म हो गए। आप صَلَّى اللَّهُ तَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने हमें दुआए ख़ैर दी और फिर हज़रते अली رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से पूछा : “ऐ मेरी बेटी ! तू ने अपने शोहर को कैसा पाया ?” उन्होंने जवाब दिया : “वोह बेहतरीन शोहर हैं।” फिर आप صَلَّى اللَّهُ तَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने हज़रते अली रَضِيَ اللَّهُ तَعَالَى عَنْهُ को बुलाया और इरशाद फ़रमाया :

“अपनी ज़ौजा से नर्मी से पेश आना, बेशक़ फ़ातिमा رَضِيَ اللَّهُ तَعَالَى عَنْهَا मेरे जिस्म का टुकड़ा है, जो चीज़ इसे दुख देगी मुझे भी दुख देगी और जो इसे खुश करेगी मुझे भी खुश करेगी, मैं तुम दोनों को **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के सिपुर्द करता हूँ, और तुम दोनों को उस की हिफ़ाज़त में देता हूँ। उस ने तुम से नापाकी दूर कर दी और तुम्हें पाक कर के ख़ूब सुथरा कर दिया।”

हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा कَرَّمَ اللَّهُ तَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمُ फ़रमाते हैं : “**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! इस हुक्मे मुस्तफ़ा صَلَّى اللَّهُ तَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के बा'द मैं ने न तो कभी हज़रते फ़ातिमा रَضِيَ اللَّهُ तَعَالَى عَنْهَا पर गुस्सा किया और न ही किसी बात पर उन्हें नापसन्द किया यहां तक कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने उन को अपने पास बुला लिया, बल्कि वोह भी कभी मुझ से नाराज़ न हुई और न ही किसी बात में मेरी नाफ़रमानी की और जब भी मैं उन को देखता तो वोह मेरे दुख दर्द दूर करती दिखाई देती।”

وَصَلَّى اللَّهُ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِهِ وَصَحْبِهِ أَجْمَعِينَ



## बयान 49 : मौत और इस में गौरी फिक्र का बयान हम्दे बारी तझाला :

सब खूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने तन्हा मुख्तलिफ अश्या और मख्लूक़ात को पैदा किया। वोह जिस्म, तक्सीम और हैअत व सूरत से मुनज्जा है। शक्ल, मिष्ट, जगह और जहत से बहुत बुलन्द है। आ'यान, अलवान और कैफ़िय्यात से पाक है। क़दीम अस्मा व सिफ़ात से मौसूफ़ है। जो उसे पुकारता है उस के क़रीब है मगर मसाफ़त वाली कुर्बत से नहीं। जो इख़्लास भरी दुआओं के ज़रीए उस से मुनाजात करता, उस की दुआ को क़बूल फ़रमाने वाला है। वोह गुनाहों को मुआफ़ करता, ऐबों को छुपाता, अपने बन्दों की तौबा को क़बूल करता, बुराइयों से दरगुज़र फ़रमाता है। वोह दिल के पोशीदा राज़, छुपे अफ़कार और ओझल उमूर को जानने वाला है। वोह ऐसा ख़बरदार है जिस पर ज़मीनो आस्मान की ज़र्रा भर चीज़ मख़फ़ी नहीं। वोह ऐसा सुनने वाला है कि आवाज़ों का इख़्तिलाफ़ उस की समाअत से पोशीदा नहीं। वोह ऐसा देखने वाला है कि अन्धेरो में रैत पर च्यूंटी के रँगने का निशान उस से ओझल नहीं। वोह अकेला है, उस का कोई षानी नहीं। वोह यक्ता, बेनियाज़ और बेटों और बेटियों से पाक है। वोह हमेशा से है हमेशा रहेगा और हर कोई फ़ना हो जाएगा, वोही उन की मौत का फ़ैसला फ़रमाता है।

पाक है वोह जो ज़िन्दों को मारने और मुर्दों को ज़िन्दा करने वाला है। इन्सान जिस वक़्त दुन्या में शहवात की लज़्ज़त के सबब धोके में मुब्तला होता और ग़फ़लत के समन्दर में ग़र्क़ होता है तो ऐसे में जब उस के पास मौत आती है तो वोह उसे अपनी सख़्तियों के जाम घूंट घूंट पिलाती और इस पर अपने मसाइब को डाल देती है, उस वक़्त मौत की सख़्तियां उसे घेर लेती हैं और अपनी शिद्दत से उसे हसरतों में मुब्तला कर देती है। जिन लज़्ज़तों में वोह खोया हुवा था, मौत उसे उन से जुदा कर देती है। मां बाप को रुलाती और बेटे बेटियों को यतीम कर देती है। मरने वाले के मसाइब व आलाम पर इब्रतों का पहरा बैठ जाता है। लोग उसे कन्धों पर उठा कर वीरान क़ब्रिस्तान की तरफ़ ले चलते हैं। और वोह अपनी क़ब्र में रेज़ा रेज़ा हो जाएगा। इस तन्हाई में सिर्फ़ अच्छे बुरे आ'माल उस के साथ होंगे। वहां तक्वा व इबादात, भलाई व सदक़ात, नमाज़ और दुआओं के इलावा कुछ काम न आएगा। तो क्या अक्लमन्द इन्सान, मरने वाले की पकड़ व हलाक़त से अब भी इब्रत हासिल नहीं करता ? तहक़ीक़ पसीने वाली क़ब्रों ने मुर्दे पर क़ब्ज़ा कर लिया। आक़ा व गुलाम कहाँ गए ? तो फिर इन्सान ज़िन्दा रहने में किस तरह तमज़ करता है।

हालांकि, दलाइल व मो'जिज़ात के मालिक, दो आलम के दाता, मक्की मदनी आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने इब्रत निशान है : “बेशक मौत की सख़्तियां बहुत हैं।”

(صحيح البخارى، كتاب المغازى، باب مرض النّبي ﷺ ووفاته، الحديث ٤٤٤٩، ص ٣٦٥)



ऐ ग़फ़लों के शिकार ! अपनी मौजूदा हालत से ख़बरदार हो जा । और आख़िरत के तवील सफ़र के लिये ज़ादे राह तय्यार कर ले । क्योंकि ज़िन्दगी थोड़ी सी बाक़ी है जब कि जाने वाले के लिये मौत की सख़्तियों के जाम तय्यार हो चुके हैं ।

उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीका रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا रिवायत फ़रमाती हैं : “एक दिन मैं ने रसूले पाक صَلَّی اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को मुजाहिदीन के षवाब और उन के लिये **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ के जन्नत में तय्यार कर्दा अज़्रो षवाब के मुतअल्लिक़ बयान फ़रमाते सुना तो अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह صَلَّی اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ क्या मुजाहिदीन के इलावा भी आप صَلَّی اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के किसी उम्मती के लिये इतना अज़्र है ? ” तो आप صَلَّی اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “हां ! जो शख्स रोज़ाना बीस मरतबा मौत को याद करे (तो वोह भी मुजाहिदीन की मिष्ल अज़्रो षवाब पाएगा) ।”  
(قوت القلوب، ذکر التداوی وترکة للمتوکل، ج ۲، ص ۵۳، بتغییر)

### मलकुल मौत का उ'लान :

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है, हुज़ूर जाने रहमत, माहे नबुव्वत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने इब्रत निशान है : “कोई घर ऐसा नहीं जिस के दरवाजे पर मलकुल मौत (या'नी मौत का फ़िरिश्ता) रोज़ाना पांच मरतबा न खड़ा होता हो । जब वोह ऐसे इन्सान को पाता है जिस का रिज़क़ ख़त्म हो चुका होता और उम्र मुकम्मल हो चुकी होती है तो उस पर मौत का ग़म डाल देता है, फिर मौत की सख़्तियां उस बन्दे को ढांप लेती हैं । फिर जिस की घर वाली अपने बाल मुन्तशिर करती, चेहरा पिटती, गिर्या व ज़ारी करती और हलाकत व तबाही को पुकारती है तो मलकुल मौत कहता है : “तुम पर हलाकत हो, येह आहो बुका क्यूं करते हो ? मैं ने तो किसी का रिज़क़ नहीं छीना, न किसी की मौत उस के करीब की, न किसी के पास हुक्मे इलाही عَزَّوَجَلَّ के बिगैर आया और न उस के हुक्म के बिगैर किसी की रूह कब्ज़ की और मैं तो तुम्हारे पास बार बार आऊंगा हत्ता कि तुम में से किसी को ज़िन्दा न छोड़ूंगा ।”

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “उस ज़ात की कसम जिस के कब्ज़ए कुदरत में मुहम्मद (صَلَّی اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) की जान है ! अगर लोग मुर्दे का ठिकाना देख लें और उस का कलाम सुन लें तो अपनी मय्यित को भूल जाएं और अपनी जानों पर रोने लगें । यहां तक कि जब मुर्दे को तख़्त पर रखा जाता है तो उस की रूह तख़्त के ऊपर फड़ फड़ाते हुए पुकारती है : “ऐ मेरे अहलो इयाल ! दुन्या तुम्हारे साथ इस तरह न खेले जिस तरह मेरे साथ खेली । मैं ने हलाल व ग़ैरे हलाल माल जम्अ किया फिर वोह माल दूसरों के लिये छोड़ आया, इस का नफ़अ तुम्हारे लिये है और नुक़सान मेरे लिये । पस जो कुछ मुझ पर गुज़री है इस से मोहतात रहो (या'नी इब्रत हासिल करो) ।”

## हर उज्व मौत का शिकार :

कहते हैं, मौत की तकलीफ़ वोही जानता है जो उस का शिकार होता और उस की तकालीफ़ से दो चार होता है। मौत की तकलीफ़ तल्वार के वार से ज़ियादा दुश्वार है। उस का दर्द कैंचियों से काटे जाने और आरों से चीरे जाने से भी ज़ियादा सख़्त है। इस लिये कि तल्वार से कट जाने की तकलीफ़ बदन में सिर्फ़ उस वक़्त तक रहती है जब तक इस में कुव्वत (या'नी हयात) बाकी रहती है। इसी वजह से ज़ख़मी चिल्लाता और फ़रयाद करता है जब कि मौत का मुआमला तो इस के बर अक्स है क्योंकि मुर्दे के दिल पर तारी होने वाले कर्ब व इज़्तिराब की शिद्दत उस की आवाज़ को ख़त्म कर देती और कुव्वत को कमज़ोर कर देती है। मौत जिस्म के हर उज्व को इस तरह बेकार व बे जोर कर देती है कि उस से कुव्वते फ़रयाद भी छीन लेती है। अक़ल को मदहोश और ज़बान को ख़ामोश कर देती है। साथ ही दीगर आ'जा की ताक़त का भी ख़ातिमा कर देती है। मुर्दा चीख़ो पुकार कर के राहत चाहता है लेकिन करे क्या ? कुदरत नहीं। अगर्चे नज़्म रूह के वक़्त सुनने की कुव्वत बाकी रहती है। रूह निकलते वक़्त सीने और गले से गाए, बेल की मिष्ल आवाज़ें निकलती हैं। चेहरे का रंग सियाही माइल ख़ाकी रंग में बदल जाता है। आंखों के सियाह ढेले पपोटों की तरफ़ बुलन्द हो जाते हैं। खुसिये (या'नी फ़ौते) भी अपनी जगह से उठ जाते हैं। उंगलियां ज़र्द पड़ जाती हैं। हर उज्व जुदा जुदा मौत का शिकार होता है। सब से पहले पाउं फिर पिन्डलियां फिर रानें मौत की ज़द में आ जाती हैं। यूँ हर उज्व बार बार शिद्दत व सख़्ती और कर्ब व इज़्तिराब से दो चार होता है। बिल आख़िर जब रूह गले तक पहुँचती है तो दुनिया और अहले दुनिया नज़रों से ओझल हो जाते हैं और हसरत व नदामत उसे घेर लेते हैं।

मरवी है : “**اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم किसी मरीज़ के पास तशरीफ़ ले गए और फ़रमाया : “बेशक मैं इस की तकलीफ़ जानता हूँ, इस की हर रग, जुदा जुदा मौत की अज़िय्यत का शिकार है।”

(البحر الزخار بمسند البزار، مسند سلمان الفارسي، الحديث ٢٥١٢، ج ٦، ص ٤٨٠)

मरवी है, सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए रोज़े शुमार, महबूबे ग़फ़ार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपना दस्ते अक़्दस इस पास ब वक़्ते विसाल पानी का एक प्याला था। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने दस्ते अक़्दस इस में डालते फिर इसे चेहराए अन्वर पर फेरते और फ़रमाते : “**اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं, बेशक मौत की सख़्तिया बहुत हैं।” (صحيح البخاري، كتاب الغازی، باب مرض النبي ﷺ ووفاته، الحديث ٤٤٩٩، ص ٣٦٥)

एक रिवायत में है कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم येह दुआ फ़रमाते : “**ऐ اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ मुझ पर मौत की सख़्तियां आसान फ़रमा।”

(احياء علوم الدين، كتاب الذكر والموت وما بعدها، باب ثالث في سكرات الموت..... الخ، ج ٥، ص ٢١٠)

एक रिवायत में सरकार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की दुआ के अल्फ़ाज़ येह हैं : “मौत की सख़्तियों में मेरी मदद फ़रमा ।” (جامع الترمذی، ابواب الجنائز، باب ماجاء فی التشدید عند الموت، الحدیث ۹۷۸، ص ۱۷۴) .

हज़रते सय्यिदुना फ़तिमा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا ने अर्ज़ की : “ऐ मेरे बाबा जान ! हाए ! आप की तकलीफ़ पर मुझे कितना ग़म हुआ !” तो इरश़ाद फ़रमाया : “आज के बा’द तुम्हारे बाप पर कोई सख़्ती न होगी ।” (لاحسن بترتيب صحيح ابن حبان، كتاب التاريخ، باب وفاته رضي الله عنه، الحدیث ۱۶۲۹، ص ۲۵۷)

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمُ जिहाद की तरगीब दिलाते और फ़रमाते : “अगर तुम शहीद न होगे तो मर जाओगे । उस ज़ात की क़सम जिस के कब्ज़ए कुदरत में मेरी जान है ! तलवार की हज़ार ज़र्बें भी मेरे नज़दीक बिस्तर पर मरने से आसान हैं ।” (موسوعة لابن ابي الدنيا، كتاب الذکر الموت، الخوف من الله تعالى، الحدیث ۱۸۷، ج ۵، ص ۴۵۱)

हज़रते सय्यिदुना शद्दाद बिन औस رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : “अहले ईमान पर मौत दोनों ज़हान की तमाम तर होलनाकियों से ज़ियादा दर्दनाक है । मौत की तकलीफ़ कैचियों से काटे जाने, आरों से चीरे जाने और हंडियों में उबाले जाने से सख़्त तर हैं । अगर मरने वाला उठ कर दुनिया वालों को मौत की तकलीफ़ से आगाह कर दे तो इन का जीना दूभर हो जाए और नींद का सब मज़ा जाता रहे ।” (الموسوعة لابن ابي الدنيا، كتاب الذکر الموت، الخوف من الله تعالى، الحدیث ۱۷۰، ج ۵، ص ۴۴۶)

मन्कूल है : “हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلَيَّ نَبِيْنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की बारगाह में हाज़िर हुई तो खुदाए रहमान عَزَّ وَجَلَّ ने इस्तिफ़सार फ़रमाया : “ऐ मूसा ! तुम ने मौत को कैसा पाया ?” अर्ज़ की : “मैं ने खुद को चिड़या की मानिन्द पाया । जब उस को ज़िन्दा कड़ही में भूना जाए तो न वोह मरे कि राहत पाए और न नजात पाए कि उड़ जाए ।” (احياء علوم الدين، كتاب الذکر الموت وما بعدها، باب ثالث فی سكرات الموت..... الخ، ج ۵، ص ۲۱۰)

दूसरी रिवायत में है : “मैं ने खुद को ज़िन्दा बकरी की मिष्ल पाया जिस की खाल उतार दी जाए ।” (احياء علوم الدين، كتاب الذکر الموت وما بعدها، باب ثالث فی سكرات الموت..... الخ، ج ۵، ص ۲۱۰)

अल्लाह तआला का फ़रमाने आलीशान है :

﴿وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ذَلِكَ

مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيدُ ۝ (پ ۲۶: ۱۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और आई मौत की सख़्ती

हक़ के साथ, येह है जिस से तू भागता था ।

“بِالْحَقِّ” से मुराद मुआमलए आख़िरत की हकीक़त है कि जब मरने वाला आगाह होगा और ब चश्मे सर मौत को देखेगा, और मलकुल मौत का मुशाहदा और उसे देख कर दिल में पैदा होने वाला ख़ौफ़ और घबराहट एक ऐसा अम्र है जिस की हकीक़त बयान करने से हर बयान करने वाले की इबारत क़ासिर है और उस की हौलनाकी का इहाता करने से हर वज़ाहत करने वाला अज़िज़ है । इस की हकीक़त वोही जानता है जो इस मरहले से गुज़र चुका हो । चुनान्वे,



## ख़ौफ़नाक सूरत :

मन्कूल है : “हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह ﷺ ने मलकुल मौत ﷺ से फ़रमाया : “क्या तुम मुझे वोह सूरत दिखा सकते हो जिस में तशरीफ़ ला कर नाफ़रमानों की रूढ़ कब्ज़ करते हो ?” हज़रते सय्यिदुना इज़राईल ﷺ ने कहा : “आप ﷺ सह नहीं सकेंगे।” हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ﷺ ने कहा : “क्यूं नहीं (मैं देख लूंगा)।” उन्होंने ने कहा : “आप मुझ से अलग हो जाइये।” हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ﷺ अलग हो गए। फिर उधर मुतवज्जेह हुए तो मुलाहज़ा किया, काले कपड़ों में मलबूस एक सियाह फ़ाम शख्स है जिस के बाल खड़े हैं, बद बू आ रही है, उस के मुंह और नथनों से आग और धुवां निकल रहा है। (येह देख कर) हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ﷺ पर बेहोशी तारी हो गई। जब होश आया तो मलकुल मौत ﷺ अपनी अस्ल हालत पर आ चुके थे। आप ﷺ ने फ़रमाया : “ऐ मलकुल मौत (ﷺ) मौत के वक़्त सिर्फ़ तुम्हारी सूरत देखना ही फ़ासिक़ व फ़ाजिर के लिये बहुत बड़ा अज़ाब है।”

(احياء علوم الدين، كتاب الذكرو الموت وما بعدها، باب ثالث في سكرات الموت ..... الخ، ج ۵، ص ۲۱۰)

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह ﷺ ने कुछ लोगों को मय्यित पर रोते हुए देख कर इरशाद फ़रमाया : “अगर तुम मय्यित पर रोने की बजाए खुद अपनी जानों पर रोते तो तुम्हारे लिये बेहतर था कि मय्यित को तो तीन हौलनाक मराहिल से नजात मिल गई है : (1)....मलकुल मौत को उस ने देख लिया (2).....मौत का ज़ाइक़ा भी उस ने चख़ लिया और (3)....उसे (बुरे) ख़ातिमे का ख़ौफ़ भी न रहा।” लिहाज़ा अक्ल मन्द इन्सान को चाहिये कि अपनी जान पर रोए कि येही उस के ज़ियादा लाइक़ है और उसे इस बात से हरगिज़ गाफ़िल नहीं होना चाहिये कि मौत उस की तलाश में उस के पीछे पीछे है।

**ऐ मेरे इस्लामी भाइयो !** मौत जैसा वाइज़ व मुबल्लिग़ कोई नहीं, मगर तुम इस से इब्रत व नसीहत हासिल नहीं करते। वोह तुम्हारी तलाश में है और तुम उस से बे ख़बर। क्या तुम्हारा येह गुमान है कि तुम्हें दुन्या में हमेशा रहना है ? (सुनो ! ) मौत का जाम हर एक को पीना है। तौशा साथ ले लो, काफ़िला चलने को तय्यार है। दुन्या की रंगिनियों से धोका न खाना कि येह तो आरिज़ी हैं। झूटी उम्मीदों से बचो कि इन का ज़हर ज़हरे कातिल है। कब तक गुफ़लत व जहालत की चादर ओढ़े रहोगे ? कब तक दुन्यवी माल और अहलो इयाल के धोके में रहोगे ? कब तक इस हकीर व ज़लील दुन्या को आख़िरत पर तरजीह देते रहोगे ? हालांकि येह तुम्हारी हलाकत व बरबादी के लिये कोशां है। कब तक अपने से पहले जाने वालों के पास पहुंचने को भूले रहोगे ? कब तक कषरते मलामत व इताब तुम में बे अषर रहेगी ? कब तक अपना सारा माल व अस्बाब छोड़ कर कूच करने को याद

नहीं करोगे ? आखिर कब तक तुम्हें नसीहत समझ नहीं आएगी ? बेशक तुझे कहा गया “ जाग जा ओ बे ख़बर ! जाग जा । तेरे जैसे कितनों के साथ ख़्वाहिशात खेलीं ।” **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आलीशान है :

﴿٢﴾ اَلْهٰكُمُ التَّكَاثُرُ ۚ حَتّٰى زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ ۚ

(प. ३०, त्क़ाथर: २०)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तुम्हें गाफ़िल रखा माल की ज़ियादा त़लबी ने यहां तक कि तुम ने क़ब्रों का मुंह देखा ।

या'नी माल व अवलाद की ज़ियादा त़लबी ने तुम्हें मौत की तय्यारी से गाफ़िल रखा । हुज़ूर नबिय्ये रहूमत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “अज़ाबे क़ब्र से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह त़लब करो ।”

﴿٣﴾ کَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۚ

(प. ३०, त्क़ाथर: ३)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** हां हां जल्द जान जाओगे ।

या'नी मौत की सख़्तियों और हौलनाकियों के वक़्त तुम जान लोगे ।

﴿٤﴾ ثُمَّ کَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۚ

(प. ३०, त्क़ाथर: ३)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** फिर हां हां जल्द जान जाओगे ।

या'नी मौत के बा'द क़ब्र में मुन्कर नकीर को देख कर तुम जान लोगे ।

हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : “जब किसी बन्दए मोमिन को क़ब्र में रखा जाता है तो उस की क़ब्र सत्तर गज़ लम्बी और सत्तर गज़ चोड़ी कर दी जाती है । उस पर खुशबूदार ठन्डी हवाएं चलाई जाती हैं । उसे रेशमी लिबास पहनाया जाता है । फिर अगर उस के नामए आ'माल में कुछ तिलावते कुरआन भी हो तो इस का नूर ही उसे क़ब्र में काफ़ी होता है । और इस की मिषाल दुल्हन की सी है कि वोह सोती है तो उस का महबूब तरीन शख्स ही उसे बेदार करता है फिर वोह इस तरह बेदार होती है गोया अभी उस की नींद बाक़ी है । और फ़ाजिर व फ़ासिक और काफ़िर की क़ब्र को इस क़दर तंग कर दिया जाता है कि उस की पस्लियां टूट फूट कर एक दूसरे में पैवस्त हो जाती हैं । उस पर ऊंट की गर्दन की मानिन्द मोटे मोटे सांप छोड़ दिये जाते हैं । वोह उन का गोश्त खाते हैं यहां तक कि हड्डियों पर ज़रा बराबर गोश्त भी नहीं छोड़ते । फिर गूंगे, बहरे और अन्धे फ़िरिशतों को लोहे के गुर्जे दे कर उस पर मुसल्लत कर दिया जाता है । तो वोह उन गुर्जों से उसे मारते हैं, उन्हें सुनाई नहीं देता कि उस की चीखों पुकार सुन कर तरस खाएं, न उन्हें दिखाई देता है कि उस की हालते ज़ार देख कर उस पर नर्मी बरतें । उसे सुब्हो शाम आग पर पेश किया जाता है ।” (الامان والحفیظ)

(مصنف عبدالرزاق، کتاب الجنائز، باب الصبر والبكاء والنياحة، الحديث ٦٧٣١، ج ٣، ص ٣٧٤، بتغییر)

﴿يا اٰمِیْنِ بِجَاۗلِ النَّفْثِیْنَ ۝ اَلٰمِیْنِ عَلَی اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم﴾ हमें क़ब्र व आख़िरत की तय्यारी करने की तौफ़ीक़ अज़ा फ़रमा ।

## क़ब्र की डांट :

सरवरे जीशान, रहमते आलमिय्यान, महबूबे रहमान صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : “जब मय्यित को क़ब्र में उतार दिया जाता है तो क़ब्र उस से ख़िताब करती है : “ऐ आदमी तेरा नास हो ! तू ने किस लिये मुझे फ़रामोश कर रखा था ? क्या तुझे इतना भी पता न था कि मैं फ़ितनों का घर हूं, तारीकी का घर हूं, फिर तू किस बात पर मुझ पर अकड़ अकड़ कर चलता था ?” अगर वोह मुर्दा नेक बन्दे का हो तो एक ग़ैबी आवाज़ क़ब्र से कहती है, “ऐ क़ब्र ! अगर येह उन में से हो जो नेकी का हुक्म करते रहे और बुराई से मन्अ करते रहे तो फिर ! (तेरा सुलूक क्या होगा ?)” क़ब्र कहती है, “अगर येह बात हो तो मैं उस के लिये गुलज़ार बन जाती हूं।” चुनान्चे, फिर उस शख्स का बदन नूर में तब्दील हो जाता है और उस की रूह रब्बुल आलमीन عَزَّوَجَلَّ की बारगाह की तरफ़ परवाज़ कर जाती है।” (المعجم الكبير، الحديث ۹۴۲، ج ۲، ص ۳۷۷)

## क़ब्र की पुकार :

हज़रते सय्यिदुना का'ब رَضِيَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ इरशाद फ़रमाते हैं : “क़ब्र रोज़ाना पांच मरतबा येह निदा करती है, ऐ आदमी ! तू मेरी पीठ पर चलता है जब कि मेरा पेट तेरा ठिकाना है। ऐ आदमी ! तू मेरी पीठ पर हंसता है जल्द ही मेरे अन्दर आ कर रोएगा। ऐ आदमी ! तू मुझ पर हराम खाता है अ़न क़रीब मेरे पेट में तुझे कीड़े खाएंगे। ऐ आदमी ! तू मेरी पीठ पर खुशियां मनाता है अ़न क़रीब मुझ में ग़मगीन होगा।”

किसी ज़ाहिद से पूछा गया : “आप कैसे हैं ?” उस ने जवाब दिया : “उस शख्स का हाल कैसा होगा जो बिगैर ज़ादे राह के सफ़र करता है, कल जब मलकुल मौत आएंगे तो उस के पास कोई हुज्जत न होगी और जो वदशत नाक क़ब्र में बिला मूनिस रहेगा उस का हाल कैसा होगा ?”

## गिर्याउ उषमानी :

मन्कूल है, हज़रते सय्यिदुना उषमाने ग़नी رَضِيَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ जब किसी क़ब्र के क़रीब खड़े होते तो इस क़दर रोते कि आप رَضِيَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ की दाढ़ी मुबारक तर हो जाती। इस बारे में आप رَضِيَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से इस्तिफ़सार किया गया कि आप रَضِيَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ जन्नत व दोज़ख़ के तज़क़िरे पर नहीं रोते मगर जब किसी क़ब्र के क़रीब खड़े होते हैं तो इस क़दर गिर्या व ज़ारी फ़रमाते हैं, इस का क्या सबब है ?” हज़रते सय्यिदुना उषमाने ग़नी رَضِيَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : “मैं ने सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, शफ़ीउल मुज़निबीन, रहूमतुल्लिल आलमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना : “बेशक आख़िरत की सब से पहली मन्ज़िल क़ब्र है। क़ब्र वाले ने इस से नजात पाई तो बा'द का मुआमला आसान है और अगर इस से नजात न पाई तो बा'द का मुआमला ज़ियादा सख़्त है।”

(جامع الترمذی، ابواب الزہد، باب ماجاء فی فضاء القبر..... الخ، الحديث ۲۳۰۸، ص ۱۸۸۴)



ऐ मेरे इस्लामी भाइयो ! इस से बचो कि तुम रहे हिदायत से भर जाओ या तौबा का अहद कर के इसे तोड़ दो। जल्दी से दिल में इख़्लास पैदा कर लो। हर हाल में कामों के अन्जाम को याद करने वाले बन जाओ। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र व हम्द करते हुए हमेशा उस की इबादत को अपने लिये लाज़िम किये रखो। और इस बात से डरो कि जब परहेज़गारों को नफ़अ मिल रहा हो तो तुम नुक़सान में न रह जाओ। गोया मैं तुम्हें देख रहा हूँ कि मौत ग़लबा व इक़््तदार के साथ तुम पर मुसल्लत हो चुकी है।

### २०६ की दर्दनाक बातें :

मन्कूल है, “जब रूह जिस्म से जुदा होती है और इस पर सात दिन गुज़रते हैं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अर्ज़ करती है, “ऐ रब्ब عَزَّوَجَلَّ मुझे इजाज़त अता फ़रमा कि मैं अपने जिस्म का हाल दरयाफ़्त करूँ।” तो उसे इजाज़त मिल जाती है, फिर वोह क़ब्र की तरफ़ आती है, उसे दूर से देखती, और अपने जिस्म को मुलाहज़ा करती है कि वोह मुतग़थ़िर है और उस के नथनों, मुंह और आंखों से पानी रवां है। वोह अपने जिस्म से कहती है, “बे मिषाल हुस्नो जमाल के बा’द अब तू इस हाल में है !” येह कह कर चली जाती है। फिर सात दिन के बा’द इजाज़त ले कर दोबारा क़ब्र पर आती है और दूर से देखती है कि मुर्दे के मुंह का पानी खून मिली पीप, आंखों का पानी ख़ालिस पीप और नाक का पानी खून बन चुका है। तो उस से कहती है, “अब तू इस हाल को पहुंच चुका है !” येह कह कर परवाज़ कर जाती है। फिर सात रोज़ के बा’द इजाज़त ले कर इसी तरह दूर से देखती है, तो हालत येह होती है कि आंखों की पुतलियां चेहरे पर ढलक चुकी हैं, पीप कीड़ों में तब्दील हो चुकी है, कीड़े उस के मुंह से दाख़िल हो कर नाक से निकल रहे हैं। तब वोह जिस्म से कहती है, “तू नाज़ो ने’म में पलने के बा’द अब इस हाल को पहुंच गया है।”

ऐ मेरे इस्लामी भाइयो ! अपने हालात पर ग़ौर करो, मौत के बा’द तुम्हारा क्या बनेगा। क्यूं कर तुम दुनिया में वापस लौट सकोगे कि तुम ज़िन्दगी को खो चुके होगे। तुम अपने अन्जाम से यक्सर बे ख़बर हो। लम्बी लम्बी उम्मीदों के दरया में डूबे हुए हो। तुम्हारे कान नसीहत की बात सुनने से बहरे हो चुके हैं और तुम्हारे दिल इस्लाही बातों को क़बूल करने से अन्धे हो चुके हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तक्वा व नेक अमल के इलावा किसी चीज़ ने क़ब्र में किसी को फ़ाइदा न पहुंचाया।

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَي نَبِيِّنا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की बारगाह में अर्ज़ की गई : “हमें नसीहत की कोई ऐसी बात इरशाद फ़रमाइये जिस से हम नफ़अ उठाएं।” तो आप عَلَيهِ السَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : “जब तुम लोगों को दुनिया के कामों में मशगूल देखो तो तुम आख़िरत के कामों में मशगूल हो जाओ और जब उन को अपनी ज़ाहिरी हालत आरास्ता करते देखो तो तुम अपने बातिन को आरास्ता कर लो, और जब लोगों को बागात और महल्लात की ता’मीर में मसरूफ़ पाओ तो तुम अपनी क़ब्रों की ता’मीर में मसरूफ़ हो जाओ और जब लोग दूसरों के उयूब देखने में मशगूल हों

तो तुम अपने उयूब की तलाश में मशगूल हो जाओ, और जब लोगों को मख्लूक की खिदमत करते देखो तो तुम तमाम मख्लूक के परवर दगार, खालिक غَرْوَجَل की इबादत में खो जाओ।”

**ऐ मेरे इस्लामी भाई !** मुनादी की निदा आने से पहले अपने नफ्स को ख्वाबे गफ़लत से बेदार कर। सब्र की ज़िरह पहन कर शैतान से जिहाद कर। सरकशी व गुनाह के काम छोड़ कर अपने छुटकारे की तलाश कर। तुझ पर ऐसे आ'माल लाज़िम हैं जो क़ियामत में तुझे फ़ाइदा दें और अज़ाब से नजात दिलाएं।

हुस्ने अख़्लाक के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : “आदमी बुढ़ा हो जाता है मगर उस की दो चीज़ें जवान रहती हैं : (1)....हिर्स और (2)....लम्बी उम्मीद।”

(صحيح مسلم، كتاب الزكاة، باب كراهية الحرص على الدنيا، الحديث ٤٧٠٤، ١٠، ٨٤٢)

पस हिर्स भी हलाक कर देने वाली दो आफ़तों में से एक है।

### इब्ने आदम की हिर्स :

शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइषे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने हकीकत निशान है : “अगर इब्ने आदम के पास सोने की दो वादियां भी हों तब भी येह तीसरी की ख्वाहिश करेगा और इब्ने आदम का पेट क़ब्र की मिट्टी ही भर सकती है।”

(صحيح مسلم، كتاب الزكاة، باب لو ان لابن آدم.....الخ، الحديث ٨٠٤٨، ١٠، ٨٤٢)

हज़रते सय्यिदुना इब्ने उमर رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : “रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम, नबिय्ये मोहत्तशम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरे जिस्म के किसी हिस्से को पकड़ कर इरशाद फ़रमाया : “दुन्या में एक अजनबी और मुसाफ़िर की तरह रह और अपने आप को क़ब्र वालों में शुमार कर।”

(سنن ابن ماجه، ابواب الزهد، باب مثل الدنيا، الحديث ٤١١٤، ١٠، २७२७)

**ऐ गुनाहों के हरीस ! ऐ मौत के झटकों से गाफ़िल ! (सुन !)** यकीनन मौत अचानक आ जाएगी। माल व गुनाह की तम्अ किसी अक्ल मन्द का काम नहीं। तू गुनाहों में जल्दी करता और तौबा को आयन्दा साल तक मुअख़्खर करता है। क्या तुझे मा'लूम नहीं कि ग़नी का (क़र्ज की अदाएगी के मुआमले में) टाल मटोल करना जुल्म है ? **اَبْلَاهُ** غَرْوَجَل ने तुझे जवानी, सिह्हत और फ़रागत की दौलत से ग़नी कर दिया फिर भी तू तौबा में टाल मटोल करता है। दुन्या पर बादशाहत करने वाले, बड़े बड़े जाबिर और लिडर कहा चले गए ? बन्दों पर बड़ाई चाहने वालों को क्या हो गया ? कहां हैं कातिल और हम्ला करने वाले ? **اَبْلَاهُ** غَرْوَجَل की क़सम ! मौत के तीर उन सब में पैवस्त हो गए, वोह अब क़त्लगाहों में पड़े हैं। और मौत ने उन्हें फ़र्श और क़ालीन के बा'द पछाड़ कर पथ्थर की सिल और चट्टान के दरमियान रख दिया।

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने इब्रत निशान है :

وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ذَلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيدُ ۝ (٢٦: ١٩)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :** और आई मौत की सख़्ती हक़ के साथ, यह है जिस से तू भागता था ।

या'नी मौत की सख़्तियों का सामना, मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام को देखना और बन्दे पर इस का जन्नत या दोज़ख़ का ठिकाना ज़ाहिर होना ज़बरदस्त उमूर हैं और यह सकराते मौत के वक़्त ज़ाहिर होंगे और यह हक़ है, इस को हुज़ूर नबिय्ये मुक़र्रम, रसूले मोह़तशम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने ईमान बिल ग़ैब में बयान फ़रमाया है । फिर इस के बा'द मुन्कर नकीर के सुवालात का मर्हला है कि मय्यित को क़ब्र में उतारे जाने के बा'द सब से पहले इसी से दो चार होना पड़ता है । और मौत की सख़्तियां बयान हो चुकी हैं और यह हर शख्स पर उस के आ'माल के मुताबिक़ होंगी ।

इन को सकरात कहने की वजह यह है कि यह होश उड़ा देती हैं और ज़ेहन को गाइब कर देती हैं जैसे कोई नशे की हालत में होता है, और इस की वजह यह होगी कि आदमी पर इस के अच्छे बुरे आ'माल और इन की जज़ा मौत के वक़्त ज़ाहिर होगी । ग़ीबत करने वाले के होंटों को आग की कैंचियों से काटा जाएगा, ग़ीबत सुनने वाले के कानों में जहन्नम की आग की सीखें पिरोई जाएंगी और ज़ालिम का जिस्म टुकड़े टुकड़े हो कर हर मज़लूम के पास पहुंच जाएगा । हुराम ख़ोर को जहन्नम का कांटेदार दरख़्त, ज़कुम खाने को दिया जाएगा । इसी तरह दीगर अफ़़ाल की जज़ा और सज़ा दी जाएगी । इन सब का जुहूर मौत की सख़्तियों के वक़्त होगा और मय्यित को यके बा'द दीगरे इन से गुज़रना होगा, और आख़िर में इस की रूह कब्ज़ की जाएगी । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿٥﴾ ذَلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيدُ ۝ (٢٦: ١٩) **तर्जमए कन्जुल ईमान :** यह है जिस से तू भागता था ।

या'नी यह वोह मौत है लम्बी उम्मीदों और दुन्या में ज़िन्दा रहने की हिर्स के सबब जिस से तू भागता था ।

**सर और दाढ़ी के बाल सफ़ेद हो गए :**

हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام हज़रते सय्यिदुना नूह नजिय्युल्लाह عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के बेटे हज़रते सय्यिदुना साम عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالसَّلَام की क़ब्र से गुज़रे तो बनी इसराइल ने अर्ज़ की : “ऐ रूहुल्लाह (عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ फ़रमाएं कि वोह इस क़ब्र वाले को ज़िन्दा करे ताकि हम इस से मौत का तज़क़िरा सुनें ।” चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने उस क़ब्र के क़रीब दो रक्भूत नमाज़ अदा करने के बा'द **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से हज़रते सय्यिदुना साम बिन नूह عَلَيْهِمَا الصَّلَاةُ وَالسَّلَام को ज़िन्दा करने की दुआ की तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें ज़िन्दा फ़रमा दिया । वोह सर से मिट्टी झाड़ते हुए खड़े हो गए, उन के सर और दाढ़ी के बाल सफ़ेद थे । हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने इस्तिफ़सार



फ़रमाया : “ येह सफ़ेदी तो तुम्हारे ज़माने में नहीं थी ।” उन्होंने ने फ़रमाया : “या रूहल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام मैं आवाज़ सुन कर समझा कि क़ियामत काइम हो चुकी है, इस के ख़ौफ़ से मेरे सर और दाढ़ी के बाल सफ़ेद हो गए ।” हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام ने पूछा : “तुम्हारे इन्तिक़ाल को कितना अर्सा हो चुका ?” उन्होंने ने बताया : “चार हज़ार साल, मगर अब तक मौत की सख़्ती और कड़वाहट मुझ से नहीं गई ।”

**ऐ मेरे इस्लामी भाइयो !** जब एक बोसीदा ठिकाने की तरफ़ लौट कर जाना है तो फिर येह ग़फ़लत कैसी है ? जब उम्र बहुत क़लील है तो फिर येह सुस्ती क्यूंकर है ? बेशक डर सुनाने वाले नबी صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तुम्हें डर सुना चुके तो फिर गुनाहों में अपना वक़्त बरबाद करने में क्यूंकर मसरूफ़ हो ? **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की क़सम ! तुम्हारा महबूब के दरवाज़े से हट जाना तुम्हारे लिये बहुत बुरी तदबीर है । तुम्हारी येह अकड़ कब तक रहेगी ? याद रखो ! खुदाए निगहबान सब कुछ देख रहा है ।

**ऐ इस्लामी भाइयो !** क़ियामत को याद करो क्यूंकि क़ियामत का मुआमला बहुत सख़्त है । अपनी बक़िय्या उम्र नेकियों में गुज़ारो कि मरने के बा’द हसरत व नदामत कोई फ़ाइदा न देगी । अपने दिल वा’दा व वईद को समझने के लिये हाज़िर रखो । अपना मुहासबा करो इस से पहले कि तुम से हिसाब लिया जाए । तुम पर निगहबान मुक़र्रर है । मौत के लिये तय्यार हो जाओ । वोह तुम्हारे बहुत क़रीब है । उस ने न आज़ाद लोगों को छोड़ा है, न गुलामों को रहने दिया । **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** इरशाद फ़रमाता है :

وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ذَلِكُمْ مَا كُنْتُمْ

مِنْهُ تَحِيدُونَ (١٩: ٢٦)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और आई मौत की सख़्ती हक़ के साथ, येह है जिस से तू भागता था ।

कहां हैं तुम्हारे दोस्त, अहबब जो मौत का शिकार हो गए ? कहां हैं तुम्हारे आबा व अजदाद जो इस दुन्याए फ़ानी से कूच कर गए ? कहां हैं मालदार और उन के जा नशीन ? अब वोह सब अपने गुनाहों पर नादिम हैं । काश ! वोह पहले ही इस की हौलनाकी जान लेते जिस के ग़म ने बच्चों को बुढ़ा कर दिया । **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** का फ़रमाने नसीहत निशान है :

وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ذَلِكُمْ مَا كُنْتُمْ

مِنْهُ تَحِيدُونَ (١٩: ٢٦)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और आई मौत की सख़्ती हक़ के साथ, येह है जिस से तू भागता था ।

तअज्जुब है तुझ पर, ऐ शख्स ! तुझे कैसे कैसे **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की तरफ़ बुलाया गया और तू अकड़ा रहा । जब भी वाइज़ीन तुझे उस की तरफ़ बुलाते हैं तो तू इन्कार व सरकशी करता है । तेरे परवर दगार **عَزَّوَجَلَّ** ने कितनी बार तुझे सरकशी से मन्अ़ फ़रमाया मगर तू फिर भी बाज़ न आया । ऐ ज़िन्दा जिस्म और मुर्दा दिल वाले ! (सुन ! ) बहुत जल्द तू हसरतों और मौत की सख़्तियों के वक़्त वोह कुछ देखेगा जो तू नहीं देखना चाहता ।

चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ذَلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيدُ ۝ (१९:३:२६प)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :** और आई मौत की सख्ती हक़ के साथ, यह है जिस से तू भागता था ।

ऐ ग़ाफ़िल ! सुन ! मौत ने कितनों को उन के घरों से बाहर कर दिया और ने'मतों से लुप्त अन्दोज़ होने वालों से ऐसे बोसीदा घरों को आबाद किया जहां कोई नहीं जा सकता । उस ने कितनों को गुनाहों के बोझ समेत क़ब्र के घढ़ों में फेंक दिया । कितने रुख़्सारों को तरो ताज़गी और उन की सुख़्ती के बा'द मिट्टी में ज़लील कर दिया । पस ऐ शख़्स ! अभी अपने गुनाहों पर रो ले इस से पहले कि तू रोता रहे और तेरा रोना धोना तुझे कोई फ़ाइदा न दे । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ذَلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيدُ ۝ (१९:३:२६प)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :** और आई मौत की सख्ती हक़ के साथ, यह है जिस से तू भागता था ।

ऐ ग़ाफ़िल शख़्स ! ग़फ़लत की चादर उतार कर अभी से बेदार हो जा और यकीन कर ले कि यह दुनिया एक परेशान ख़्वाब के सिवा कुछ नहीं, बहुत जल्द यह फ़ना के घाट उतर जाएगी, यह ठहरने के क़ाबिल नहीं । अंन क़रीब तुझे मेरी बात समझ आ जाएगी । जब पर्दा उठ जाएगा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पकड़ यकीनी हो जाएगी तो सब पोशीदा अश्या तुझ पर मुकम्मल तौर पर ज़ाहिर हो जाएंगी । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ذَلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيدُ ۝ (१९:३:२६प)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :** और आई मौत की सख्ती हक़ के साथ, यह है जिस से तू भागता था ।

अफ़सोस है तुझ पर ! क्या तुझे नहीं मा'लूम कि तू रोज़ाना मौत के सफ़र की एक मन्ज़िल तै कर लेता है ? क्या तुझे ख़बर नहीं कि तेरे राई के दाने बराबर अमल भी शुमार किये जाते हैं ? और बहुत से उम्मीद रखने वाले अपनी उम्मीदों के हिसाब में नुक्सान उठाते हैं और मौत की वजह से अपने मक़ासिद तक नहीं पहुंच सकते । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ذَلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيدُ ۝ (१९:३:२६प)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :** और आई मौत की सख्ती हक़ के साथ, यह है जिस से तू भागता था ।

ऐ घाटे व ख़सारे के कामों में उम्र ज़ाएअ करने वाले ! ऐ ख़्वाहिशात की पैरवी कर के नूरे ईमान को बुझाने वाले ! ऐ नफ़्सानी ख़्वाहिशात के नशे में बद मस्त ! तू कब होश में आएगा ? क्या अभी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा करने का वक़्त नहीं आया ? या तू ने उस की नाराज़ी से अमान पा कर जान छुड़ा ली है ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ذَلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيدُ ۝ (١٩: ٢٦)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और आई मौत की सख्ती हक के साथ, येह है जिस से तू भागता था ।

ऐ बारगाहे खुदावन्दी عزوجل से मुंह मोड़ने वाले ! तू कब तक उस की बारगाह से रू गर्दानी करता रहेगा ? (होश में आ) दुन्यवी मक़सिद की तलब में तेरी जवानी चली जाएगी और तुझ से मुंह मोड़ लेगी । तुझ पर अफ़सोस ! क्या तू नहीं जानता कि तेरी उम्र ख़त्म हो रही है, तेरे आ'जा हर लम्हा टूट फूट का शिकार हो रहे हैं, सफ़रे आख़िरत के लिये जादे राह इकठ्ठा कर ले, **अल्लाह** عزوجل की क़सम ! सफ़र बहुत तबील है । **अल्लाह** عزوجل इरशाद फ़रमाता है :

وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ذَلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيدُ ۝ (١٩: ٢٦)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और आई मौत की सख्ती हक के साथ, येह है जिस से तू भागता था ।

ऐ महाफ़िले वा'ज में सिर्फ़ अपने जिस्म के साथ हाज़िर होने वाले ! तेरा दिल तो अस्बाबे दुन्या में मशगूल है । ऐ अपनी उम्र का अक़षर हिस्सा जाएअ कर के भी तौबा न करने वाले ! ऐ वोह शख्स जिस को नाफ़रमानियों और गुनाहों ने तारीक़ हिजाब वाला लिबास पहना दिया ! ऐ वोह शख्स जिस पर ख़्वाहिशाते नफ़्सानिय्या ने तक्वा का हर दरवाज़ा बन्द कर दिया ! अपने आप पर रो और अपने गुनाहों को शुमार कर कि बा'ज अवकात रोना धोना और गुनाहों को शुमार करना भी फ़ाइदा देता है । **अल्लाह** عزوجل इरशाद फ़रमाता है :

وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ذَلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيدُ ۝ (١٩: ٢٦)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और आई मौत की सख्ती हक के साथ, येह है जिस से तू भागता था ।

क्या तुझे मा'लूम नहीं कि मौत तेरी ताड़ में है । उस ने दूसरों का शिकार किया और अ़न क़रीब तेरा भी शिकार करेगी । क्या तुझे नहीं मा'लूम कि इस ने उन तमाम लोगों के साथ क्या किया ? क्या मौत से ग़फ़लत किसी शहर या गाऊं में तुझे उस से बचा लेगी ? क्या तू **अल्लाह** मजीद عزوجل के इस मुबारक फ़रमान को दिल के कानों से समाअत नहीं करता । **अल्लाह** عزوجل वाजेह तौर पर फ़रमाता है :

وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ذَلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيدُ ۝ (١٩: ٢٦)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और आई मौत की सख्ती हक के साथ, येह है जिस से तू भागता था ।

ऐ नुक़्सान देह चीज़ों की तरफ़ मुतवज्जेह होने वाले और नफ़अ मन्द चीज़ों से मुंह मोड़ने वाले और अपनी उम्र बरबाद करने वाले ! (सुन ! ) **अल्लाह** عزوجل ने उम्र को शुमार कर रखा है और इस पर एक निगहबान मुक़रर फ़रमा दिया है (ग़ौर तो कर ! ) मज़बूत महल्लात और महफूज़



कलओं में बन्द रहने वाले कहां चले गए ? तकबुर करने वाले ज़ालिम और नाशुके कहां हैं ? क्या मौत ने उन्हें उन के महल्लात और बंगलों से निकाल कर उन की लम्बी लम्बी उम्मीदों की रस्सी न काट डाली ? क्या सख्तियां और जुल्म करने वाले क़ब्रों की तारीकी में तन्हा नहीं रह गए ? क्या उन्होंने ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमाने हकीकत निशान नहीं सुना था :

وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ذَلِكَ مَا كُنْتَ

مِنْهُ تَحِيدُ 0 (प: २६, १९)

तर्जमए कन्जुल इमान : और आई मौत की सख्ती

हक़ के साथ, येह है जिस से तू भागता था ।

ऐ सब से बढ़ कर रहूँ फ़रमाने वाले ! हम पर अपना खास रहूँ करम फ़रमा । (आमीन)

وَصَلَّى اللَّهُ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِهِ وَصَحْبِهِ أَجْمَعِينَ



### बा जमाअत नमाज़ की फ़ज़ीलत

सय्यिदुल मुबल्लिगीन, रहूमतुल्लिल अलमीन صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने फ़ज़ीलत निशान है :

”صَلَاةُ الْجَمَاعَةِ تَفْضُلُ صَلَاةِ الْفَذِّ بِسَبْعٍ وَعِشْرَيْنِ دَرَجَةً

तर्जमा : बा जमाअत नमाज़ पढ़ना अकेले पढ़ने से सत्ताईस गुना अफ़ज़ल है ।”

(صحيح البخارى، كتاب الاذان، باب فضل صلاة الجماعة، الحديث ६५०، ص ५२)

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا ने फ़रमाया : “जो शख्स मुअज़्ज़िन की आवाज़ सुन कर उस का जवाब न दे उस ने भलाई का इरादा नहीं किया और न ही उस के साथ भलाई का इरादा किया गया ।” नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : “जो शख्स चालीस दिन बा जमाअत नमाज़ पढ़े और उस की तकबीरे ऊला (या'नी पहली तकबीर) फ़ौत न हो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये दो बराअतें लिख देता है :

(1) मुनाफ़क़त से बराअत (2) दोज़ख़ की आग से बराअत ।”

(جامع الترمذی، ابواب الصلاة، باب ما جاء في فضيلة التكبير الاولى، الحديث २६١، ص १६१، بتغير)

बयान 50 :

आली रुबबा खवालीन

हम्दे बारी तआला :

तमाम खूबियां **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये जो अपनी रबूबियत में मुअज़्ज़ज है। हमेशा से है हमेशा रहेगा। वोह अपनी हमेशगी में हर ऐब से पाक है। हमेशा से यक्ता व बे नियाज है। उस की हमेशगी (वाली सिफ़त) का कभी इदराक नहीं किया जा सकता और खयाल व नज़र उस के एक होने को शुमार नहीं कर सकते। वोह मदे मुक़ाबिल हम पल्ला, बीवी और अवलाद से पाक है। चुनान्चे, इरशादे बारी तआला है : (پ ۲۹، الجن: ۳) ”وَأَنَّهُ تَعَالَى جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَلَا وَلَدًا“  
**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान** : और येह कि हमारे रब्ब की शान बहुत बुलन्द है न उस ने औरत इख़्तियार की और न बच्चा।” लिहाज़ा जिस ने उसे तशबीह दी या उस की मषल बताई वोह अज़ाब का मुस्तहिक है तो हरगिज़ वोह उस के सिवा पनाह न पाएगा। जिस ने समन्दरे तौहीद के साहिल को भी तशबी और हद मुक़रर करने वाली आंख से देखा वोह इन्तिहाई हसरत व यास की मौत मरेगा और जिस ने बारबार ता'रीफ़ करने वाली और पाकी का इक़रार करने वाली आंख से देखा वोह हकाइक की गहराइयों पर मुत्तलअ होगा और वोह हिक्मतों और ख़ालिस हिस्से को इकठ्ठा कर लेगा। पर वोह अरिफ़ीन हैं जो उस की मा'रिफ़त के मैदान में खो जाते हैं तो उन्हें सआदत मन्दों वाली ज़िन्दगी अता की जाती है। वोह ख़ाइफ़ीन (या'नी डरने वाले) हैं जो उस के ग़लबे व इक्तिदार के क़हर की आग से जल जाते हैं तो वोह शुहदा की मौत पाते हैं। वोह मुहिब्बीन (या'नी महब्बत वाले) हैं कि राहत व इत्मीनान, मुनाजात का लिबास पहने उन के पास ही घूमते रहते हैं तो वोह आसूदा हाल ज़िन्दगी गुज़ारते हैं।

पस अगर तू उन्हें देखेगा तो वोह उस हालत में होंगे कि उन पर क़बूलियत के आधार वाजेह हैं। तब्दीली ने उन को नए नए कपड़े पहना दिये हैं। हवास बाख़्तगी ने उन को ऐसा जाम पिला दिया जिस के बा'द वोह किसी चश्मे से मीठा पानी त़लब नहीं करते। उन की आंखें आंसू बहाती हैं। दिल ख़ौफ़ज़दा हैं और उन के जिगर रन्जो ग़म से पिघल रहे होते हैं। येही वोह लोग हैं जिन से उन के रब्ब عَزَّوَجَلَّ रुशदो हिदायत का इरादा फ़रमाया है। उन्होंने ने दुन्या को यकीन की आंख से देखा तो जान लिया कि बेशक इन्सान को यूंही बिला हिसाबो किताब नहीं छोड़ दिया जाएगा। उन्होंने ने बेदारी की समाअत को खोले रखा तो सुना कि हम्दे इलाही عَزَّوَجَلَّ के नग़मे गुनगुनाने वाला गुनगुना रहा है। पस उन्होंने ने अपने बुलाने वाले (या'नी दुन्या व माफ़ीहा के सामाने ग़फ़लत) को छोड़ दिया और अपने गुनगुनाने वाले की तरफ़ बुलन्द होना शुरूअ कर दिया। तो दलील व बुरहान (या'नी किताबुल्लाह) उन्हें पुकारती है :

”إِنَّ عَلَيْنَا لَلْهُدَىٰ“ (پ ۳۰، البیل: ۱۲) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान** : बेशक हिदायत फ़रमाना हमारे जिम्मे है।”

तलाशे हक़ की राह में उन का पहला क़दम येह होता है कि उन में से नादारों को ऐसी ख़िलअत और लिबास अता किया जाता है जिस के सबब वोह ए'जाज़ व बड़ाई में बादशाहों से बुलन्द रुत्बा हो जाते हैं। और वोह उस सफ़र के लिये जादे राह हासिल कर के शब बेदारी की सुवारियों पर सुवार हो जाते हैं। फिर जब उन पर सहर की पुर कैफ़ हवाएं चलती हैं तो वोह बसीरत व मन्ज़िल को पा लेते हैं।

पारसा ख़वातीन की शान में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿1﴾ فَالْضُّلْحُ قَتِيتُ حَفِظْتُ لِلْغَيْبِ بِمَا

حَفِظَ اللَّهُ ط (प ५, النساء: ३६)

तर्जमए कन्जुल ईमान : तो नेक बख़्त औरतें अदब वालियां हैं, ख़ावन्द के पीछे हिफ़ाज़त रखती हैं जिस तरह **अल्लाह** ने हिफ़ाज़त का हुक्म दिया।

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : "فَالْضُّلْحُ قَتِيتُ" से मुराद फ़रमा बरदार ख़वातीन हैं। और "حَفِظْتُ لِلْغَيْبِ" से मुराद अपने शोहर की अदमे मौजूदगी में अपनी शर्मगाह की हिफ़ाज़त करने वालियां हैं।" एक कौल येह भी है कि इस से मुराद शोहर के राज़ की इस तरह हिफ़ाज़त करने वालियां हैं जिस तरह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हिफ़ाज़त का हुक्म दिया।

(تفسير بغوى، النساء، تحت الآية ३३، ج १، ص ३३५، بدون لفظ "ابن عباس")

जब कोई औरत रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ पाने और हुसूले षवाब के लिये अपनी शर्मगाह की हिफ़ाज़त करती और अपने आप को शोहर के लिये पाक रखती है तो उस के लिये इज़्ज़त व जन्नत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मे करम पर हो जाती है। चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿2﴾ وَالَّذِينَ هُمْ لِأَفْوَاجِهِمْ حَفِظُونَ ۝

أَزْوَاجِهِمْ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَإِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُومِينَ ۝

فَمَنْ ابْتَغَىٰ وَرَاءَ ذَلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْعُدُونَ ۝

وَالَّذِينَ هُمْ لِأَمْنَتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رَاعُونَ ۝

وَالَّذِينَ هُمْ بِشَهَادَتِهِمْ لَقَائِمُونَ ۝

وَالَّذِينَ هُمْ عَلَىٰ صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُونَ ۝

أُولَٰئِكَ فِي جَنَّةٍ مُّكْرَمُونَ ۝

(प २९, المعارج: २९-३०)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और वोह जो अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करते हैं। मगर अपनी बीबियों या अपने हाथ के माल कनीज़ों से कि उन पर कुछ मलामत नहीं। तो जो इन दो के सिवा और चाहे वोही हद से बढ़ने वाले हैं और वोह जो अपनी अमानतों और अपने अहद की हिफ़ाज़त करते हैं। और वोह जो अपनी गवाहियों पर क़इम हैं। और वोह जो अपनी नमाज़ की हिफ़ाज़त करते हैं। येह हैं जिन का बाग़ों में ए'जाज़ होगा।

मन्कूल है कि "एक सालेह शख़्स ने जंगल में किसी लड़की को तन्हा लंगड़ा कर चलते हुए देखा तो पूछा : "कहां से आई हो ?" उस ने जवाब दिया "महबूब के पास से।" फिर पूछा : "कहां जाना है ?" जवाब मिला : "महबूब के पास।" उस नेक शख़्स ने पूछा : "इस जंगल में तन्हा चलते हुए तुम्हें वहशत महसूस नहीं होती ?" तो उस लड़की ने बुलन्द आवाज़ से इस आयते मुबारक की तिलावत की :

﴿3﴾ يَعْلَمُ مَا يَلْعَجُ فِي الْأَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا

يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيهَا وَهُوَ مَعَكُمْ أَيْنَ مَا

كُنْتُمْ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝

(प २७, الحديد: ६)

तर्जमए कन्जुल ईमान : जानता है जो ज़मीन के अन्दर जाता है और जो इस से बाहर निकलता है और जो आस्मान से उतरता है और जो इस में चढ़ता और वोह तुम्हारे साथ है तुम कहीं हो और **अल्लाह** तुम्हारे काम देख रहा है।



फिर उस ने उस आदमी को मुखातब कर के कहा : “बहादुर नौजवान ! जिस शख्स ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की उन्सियत हासिल कर ली वोह दूसरों से वहशत महसूस करता है और जो रिज़ा का तालिब है तो वोह उस के फैसले पर सब्र करता है ।”

**दोनों हाथ शोने की अशरफियों से भर गए :**

हज़रते सय्यिदुना उषमान जुरजानी قَدَسَ سَيِّدُهُ السُّورَانِ फ़रमाते हैं : “मैं एक दिन बसरा जाने के लिये कूफ़ा से निकला तो रास्ते में एक ख़ातून पर मेरी नज़र पड़ी, उस ने ऊन का जुब्बा पहना और बालों का दूपट्टा ओढ़ा हुवा था और वोह चलते हुए कह रही थी : “ऐ मेरे मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ उस की मन्ज़िल कितनी दूर है जिस का राहनुमा नहीं । और उस का रास्ता कितना वहशत नाक है जिस का हम सफ़र नहीं ।” आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : “मैं ने करीब जा कर उसे सलाम किया । उस ने सलाम का जवाब दिया और पूछा : “**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप पर रहम फ़रमाए, आप कौन हैं ?” मैं ने अपना नाम बताया तो कहने लगी : “ऐ उषमान ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप की उम्र दराज़ फ़रमाए, कहां का इरादा है ?” मैं ने कहा : “बसरा का ।” पूछने लगी : “किस काम की ग़रज़ से ?” मैं ने जवाब दिया : “अपनी किसी हाज़त के लिये ।”

येह सुन कर वोह कहने लगी : “आप तमाम हाज़ात पूरी करने वाले को हाज़त क्यूं नहीं बताते कि वोह आप की तरफ़ तवज्जोह फ़रमाए और आप को इतनी मशक्कत न झेलनी पड़े ?” मैं ने कहा : “मुझे अभी उस की मा'रिफ़त हासिल नहीं हुई ।” उस ने कहा : “हुसूले मा'रिफ़त में कौन सी चीज़ रुकावट है ?” मैं ने जवाब दिया : “गुनाहों की क़षरत ।” उस ने कहा : “**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! येह बहुत बुरी बात है, गुनाह न किया करो । अगर आप अपनी रस्सी को उस की रस्सी से मज़बूत बांध दें तो वोह आप की हाज़त पूरी फ़रमा देगा और आप को कोई मशक्कत भी न उठानी पड़ेगी ।” उस औरत की येह बात सुन कर मुझे रोना आ गया । फिर मैं ने उस से दुआ की दरख़्वास्त की तो उस ने दुआ दी कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपनी इताअत करने और नाफ़रमानी से बचने पर आप की मदद फ़रमाए । जब मैं लौटने लगा तो अपनी जेब से दिरहम निकाल कर आधे उस को दिये और कहा : “येह रख लें, आप के काम आएंगे ।” उस ने पूछा : “येह आप ने कहां से हासिल किये हैं ?” मैं ने बताया : “मैं पहाड़ पर चढ़ कर वहां से लकड़ियों का ग़ठ्ठा इकठ्ठा करता हूं फिर इस को अपनी गर्दन पर उठा कर मुसलमानों के बाज़ार में फ़रोख़्त करता और इस के बदले रक़म ले लेता हूं ।” उस औरत ने कहा : “हां ! येह हलाल की कमाई है और इन्सान जो अपने हाथ से कमाता है उसे खाना हलाल है, लेकिन ऐ उषमान ! अगर आप सहीह मा'नों में अपने पालने वाले रब्बे जुल जलाल عَزَّوَجَلَّ की इताअत करें और उसी पर कामिल भरोसा करें तो पहाड़ों की बुलन्दी से लकड़ियों का ग़ठ्ठा उठाने की ज़हमत न करना पड़ेगी ।” मैं ने कहा : “फिर तो मेरे लिये रिज़क़ का कोई ज़ाहिरी सबब बाकी न रहेगा, मैं कहां से खाऊंगा और कहां से पियूंगा ?” उस ने कहा : “ऐ उषमान ! क्या आप चाहते हैं कि मैं आप को येह दिखाऊं कि मैं ने अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ से कैसा मुआमला और उस

पर कैसा भरोसा किया है ?” मैं ने कहा : “क्यूं नहीं, जरूर दिखाएं।” चुनान्वे, उस औरत ने अपने हाथ बढ़ा कर होंटों को अभी जुम्बिश देना ही चाही थी कि उस के दोनों हाथ सोने की अशरफियों से भर गए। फिर उस ने कहा : “ऐ उषमान ! येह लें, **اَعَزَّوَجَلَّ** की कसम ! येह सोने की अशरफियां ऐसी हैं कि इन पर किसी बादशाह व सुल्तान का नाम मुनक्कश (या'नी लिखा हुवा) नहीं और याद रखें कि अगर आप अपने रब्ब **اَعَزَّوَجَلَّ** से महब्वत करेंगे तो वोह आप को तमाम मख्लूक से बे नियाज कर देगा और सिर्फ वोही आप के लिये काफी होगा।”

**سُبْحَنَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ** उन लोगों की क्या शान है जो रातों को जाग कर सख्त तारीकी में अपने महबूब से मुनाजात करते, कषरत से इबादत करते हैं, यकीनन **اَعَزَّوَجَلَّ** ने अपने कलाम में इन्ही लोगों की मदह की है :

﴿٤﴾ اِنَّ الْمُسْلِمِينَ وَالْمُسْلِمَاتِ وَالْمُؤْمِنِينَ

وَالْمُؤْمِنَاتِ (پ ۲۲، الاحزاب : ۳۵)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :** बेशक मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतें और ईमान वाले और ईमान वालियां।<sup>(१)</sup>

**जालिम आका के हाथ शल हो गए :**

मन्कूल है, “बसरा में अस्मा नामी एक इबादत गुजार कनीज रहती थी। बहुत हुस्नो जमाल, शीरीं ज़बान और खूब सूरत आंखों वाली थी। उस का आका भी खुशहाल और साहिबे इक्तिदार था। एक दिन उस का हज़रते सय्यिदुना सालेह मुरी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي** के इजतिमाअ से गुजर हुवा। उस वक्त आप लोगों को वा'ज व नसीहत कर रहे थे, वोह वा'ज सुनने वाली औरतों की जानिब जा कर खड़ी हो कर वा'ज सुनने लगी। आप कियामत और जहन्नम की हौलनाकियों और जहन्नमियों के लिये **اَعَزَّوَجَلَّ** की तय्यार की हुई खौफनाक सज़ाओं, जन्जीरों और तौक वगैरा का जिक्र कर रहे थे। उस कनीज ने मर्दों, औरतों को आप के बयान के सबब गिर्या व ज़ारी करते हुए देखा तो उस के दिल में रिक्कत पैदा हो गई, उस के रोंगटे खड़े हो गए, आंखों से आंसू बहने लगे और उस की बेकरारी व इज़तिराब में इज़ाफ़ा होता चला गया।

जब हज़रते सय्यिदुना सालेह मुरी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي** उस की तरफ़ मुतवज्जेह हुए और उस को आंसू बहाते देखा तो लोगों से पूछा : “येह कौन है ?” बताया गया : “येह अस्मा है।”

.....  
**U**...मुफ़्त्सिरे शहीर, खलीफ़ आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي** तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका का शाने नुज़ूल बयान फ़रमाते हुए लिखते हैं : “अस्मा बिनते उमैस जब अपने शोहर जा'फ़र बिन अबी तालिब के साथ हब्शा से वापस आई तो अजवाजे नबिय्ये करीम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** से मिल कर उन्होंने ने दरयाफ़्त किया कि क्या औरतों के बाब में भी कोई आयत नाज़िल हुई है ? उन्होंने ने फ़रमाया : “नहीं।” तो अस्मा ने हुज़ूर सय्यिदे आलम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** से अर्ज़ किया कि “हुज़ूर ! औरतें बड़े टोटे में हैं।” फ़रमाया : क्यूं ?” अर्ज़ किया कि “इन का जिक्र खैर के साथ होता ही नहीं, जैसा कि मर्दों का होता है।” इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और उन के दस मरातिब मर्दों के साथ जिक्र किये गए और उन के साथ उन की मदह फ़रमाई गई और मरातिब में से पहला मरतबा इस्लाम है जो खुदा और रसूल की फ़रमां बरदारी है। दूसरा ईमान कि वोह ए'तिकादे सहीह और ज़ाहिर व बातिन का मुवाफ़िक़ होना है। तीसरा मर्तबा कुनूत या'नी ताअत है।”

फिर आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने अपना चेहरा अन्वर उस की तरफ किया और अपने वा'ज के तीर उस के दिल में पैवस्त करने के इरादे से कहा : “ऐ अपनी नर्म आवाज से चीखने वाली ! मैं देखता हूँ कि तू क़ियामत से ख़ौफ़ज़दा है गोया तू अपने किसी अज़ीम जुर्म का ए'तिराफ़ कर रही है और उस के सबब ख़ौफ़ में मुब्तला है। तू ने किरामन कातिबीन और मुहाफ़िज़ फ़िरिशतों को कई साल ज़हमत दी। कभी कभी गुनाहों में रातें गुज़ार दीं। कितने नौजवानों को तूने अपनी लचकदार आवाज से ज़लीलो ख़वार किया। अपने हुस्नो जमाल से कितनों को फ़ितने में डाला। कितनों को बुरे काम में रात भर बेदार और उन्हें रब्ब عَزَّوَجَلَّ की इताअत और नमाज़ से गाफ़िल रखा। मुहाफ़िज़ फ़िरिशते तेरे बुरे आ'माल पर गवाह होंगे। तेरे गुनाहों से वोह भी पनाह मांगते होंगे। क़ियामत की रुस्वाई से पहले ही जल्दी से तौबा कर ले और पुल सिरात से पाउं फ़िसलने से क़ब्ल ही अपने अन्दर ख़ौफ़े इलाही عَزَّوَجَلَّ पैदा कर ले। मसाइबे आख़िरत याद कर के अपने आप पर कुछ आंसू बहा ले, तुझे तस्बीह और दुआ बहुत ज़रूरी है।” उस बांदी ने जवाब में कहा : “ऐ सालेह ! माज़ी में मैं जहालत व ग़फ़लत की शिकार और अपनी इस्लाह से बे ख़बर थी। मुझे कहां ख़बर थी कि मेरे साथ येह होगा। बल्कि मेरा आका तो चाहता है कि मैं अर्सए दराज़ तक गाती रहूँ लेकिन अब मैं अपने पिछले गुनाहों से **अल्लाह** की बारगाह में सच्ची तौबा करती हूँ और अ़हद करती हूँ कि अब कभी भी गाना न गाऊंगी।”

हज़रते सय्यिदुना सालेह رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने इरशाद फ़रमाया : “ऐ अस्मा ! याद रख जो गानों की आवाज़ बुलन्द करता और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी पर डटा रहता है, उस का ठिकाना वोह सियाह आग है जो ताक़तवर व तुवाना जिस्मों को भी पिघला कर रख देगी। और ज़िल्लत व रुस्वाई उस का मुक़द्दर बन जाएगी।” फिर उस बांदी ने पुकार कर कहा : “ऐ सालेह ! पोशीदगी छट गई। बातिल का ख़ातिमा हो गया और हक़ ज़ाहिर हो गया और वफ़ा ने कुर्बत से नावाज़ा है।” येह कह कर वोह अपने घर चली गई, अपने आका के एक गुलाम से कहा : “ऐ गुलाम ! तुम जानते हो कि मैं तुम पर कितनी शफ़ीक़ हूँ, तो तुम मेरे मुआमले को छुपाए रखना। येह मेरे कपड़े तुम ले लो और अपना जुब्बा मुझे दे दो और सुनो ! मेरा येह राज़ किसी से मत कहना।” फिर उस बांदी ने अपना लिबास उतार कर गुलाम का जुब्बा पहन लिया और अपने बाल काट कर आका के घर में ही किसी खुफ़्या मक़ाम पर जा छुपी। सारी सारी रात इबादत करती, सारा सारा दिन रोज़े से रहती, सहरी के वक़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा व इस्तिग़फ़ार करती, गिर्या व ज़ारी करती और ख़ूब गिड़ गिड़ाती। उस का आका उस की जुदाई पर ग़मगीन होने की वजह से उस की तलाश में कई जगहों की खाक छानता रहा। फिर जब वोह ज़र्द रू और दुबली पतली हो गई तो अपने आका की ख़िदमत में हाज़िर हुई, रोज़ों और रातों के क़ियाम की कषरत ने उसे कमज़ोर कर दिया था, वज्द व इश्के इलाही عَزَّوَجَلَّ से उस का हुस्न मांद पड़ गया था। उस ने आका को सलाम किया, सलाम का जवाब देने के बा'द आका ने पूछा : “तुम कौन हो ?” उस ने जवाब दिया : “मैं आप के दिल का चैन व सुकून आप की बांदी अस्मा हूँ।” आका ने दरयाफ़्त किया : “तुम्हारी येह हालत कैसे हो गई ?” उस ने बताया : “नाफ़रमानियों की नुहूसत, जहन्नम और उस की हौलनाकियों



के खौफ ने मेरा येह हाल कर दिया है।" आका ने कहा : "अगर तू इस से बाज़ न आई और अपने कपड़े पहन कर खुद को न संवारा और अपने नफ़्स पर सख़्तीयां करना तर्क न कीं तो मैं तुझे बांध कर सख़्त सज़ा दूंगा।" बांदी ने जवाब दिया : "आप की सज़ा तो ख़त्म हो जाएगी लेकिन मेरे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का अज़ाब कभी ख़त्म होने वाला नहीं, तो अब जो आप के दिल में आए करें।"

येह बात सुन कर आका ने अपने गुलामो को हुक्म दिया कि इस बांदी को बांध कर कोड़ो से मारो, बांदी ने अपना सर आस्मान की तरफ़ उठा कर पुकारा : "ऐ अज़मत वाले आका عَزَّوَجَلَّ ऐ वोह जात जिस के लिये अस्माए हुस्ना हैं ! ऐ मेरे इस आका के भी मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ मेरी मदद फ़रमा और ऐ हलाक होने वालों को पनाह देने वाले ! ऐ ग़म ज़दों की पोशीदा और अलानिय्या मदद फ़रमाने वाले ! मुझे अपनी पनाह अता फ़रमा।" जब उस के आका ने मारने के लिये कोड़ा उठाया तो उस के हाथ शल हो गए और उस ने महसूस किया कि किसी ने पीछे से उस को खींचा है लेकिन जब पीछे देखा तो कोई दिखाई न दिया। फिर अचानक एक आवाज़ आई : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दुश्मन ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की वलिय्या को छोड़ दे।" येह सुन कर वोह धडाम से ज़मीन पर गिरा और बेहोश हो गया, और उस के हाथों से खून बहने लगा, उस की बांदी अस्मा खड़ी हुई और उस के हाथ से खून साफ़ करते हुए कहने लगी : "ऐ मिस्कीन शख़्स ! अपने गुनाहों और ख़ताओं से तौबा कर के अपने मालिके हकीकी عَزَّوَجَلَّ की इताअत इख़्तियार कर ले।" जब इफ़ाका हुवा तो उस ने बांदी से कहा : "ऐ नफ़्स को मारने वाली ! मुझे मा'लूम न था कि तुम इस मक़ाम पर पहुंच गई हो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अब मैं तुम्हारे रास्ते में रुकावट खड़ी नहीं करूंगा बल्कि तुम्हारा रफ़ीक़ बन कर हमेशा तुम्हारे साथ रहूंगा।" फिर वोह दोनों इकट्ठे इताअत व इबादत में मशगूल हो गए और अपना माल व दौलत तर्क कर के ब खुशी क़नाअत इख़्तियार कर ली।"

ऐ मेरे इस्लामी भाइयो ! जब औरतों ने मर्दों की तरह आ'माले सालेह इख़्तियार किये और उन्होंने ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दरे रहमत का क़स्द किया, उन से आ'माले सालेह ज़ाहिर हुए तो उन के अहवाल अच्छे हो गए, वोह अपने मक़ासिद के हुसूल में कामयाब हो गई, ऐ अपने आ'माले क़बीहा पर इसरार करने वाले और कषरते ग़फ़लत के सबब तौबा में टाल-मटोल करने वाले ! तू किस तरफ़ जा रहा है ?

**इश्के इलाही عَزَّوَجَلَّ में दीवानी :**

हज़रते सय्यिदुना सर्री सक़ती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوَي फ़रमाते हैं "एक रात मुझ पर रिक्कत तारी हुई तो मैं ग़मगीन हो गया, आंख भी नहीं लग रही थी, मैं ने अपने दिल में सोचा क्यूं न मैं क़ब्रिस्तान जाऊं, मुमकिन है ज़ियारते कुबूर, यौमे आख़िरत और दोबारा ज़िन्दा उठाए जाने के मुतअल्लिक़ ग़ौरो फ़िक्क़ से मेरा ग़म ज़ाइल हो जाए। चुनान्चे, मैं क़ब्रिस्तान चला गया, लेकिन वहां भी मैं ने अपने दिल को कुशादा नहीं पाया तो फिर मैं ने सोचा कि बाज़ार चलता हूं। हो सकता है कि लोगों से मिल जुल कर मैं अपनी बेक़रारी दूर कर सकूं। चुनान्चे, मैं ने ऐसा ही किया, फिर भी मेरे दिल की तंगी दूर न हुई। फिर मुझे पागल ख़ाने का ख़याल आया कि मजनून और पागल लोगों और उन के

अफ़आल को देख कर शायद मेरे दिल की घुटन ख़त्म हो जाए। वहां दाख़िल होते ही मैं ने अपने दिल से ग़म को दूर होता हुआ महसूस किया। मैं बारगाहे इलाही **عَزَّوَجَلَّ** में अर्ज़ गुज़ार हुआ : “या **اَللّٰهُ** **عَزَّوَجَلَّ** यहां आने के लिये तू ने मुझे चलाया और बेदार किया।” तो मुझे एक आवाज़ आई : “यहां हम तुम्हें अपनी हिक़मत के तहत लाए हैं।” हज़रते सय्यिदुना सर्री सक़ती **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَوَي** फ़रमाते हैं : “मैं पागलों की तरफ़ बढ़ा तो एक ज़र्द रू बांदी पर मेरी नज़र पड़ी, उस के हाथ उस की गर्दन के साथ बंधे हुए थे और वोह **اَللّٰهُ** **عَزَّوَجَلَّ** के ज़िक्र में मशगूल थी फिर मैं ने सुना कि वोह इस मफ़हूम के चन्द अशआर पढ़ रही थी :

“मैं **اَللّٰهُ** **عَزَّوَجَلَّ** की पनाह त़लब करती हूं कि बिग़ैर किसी जुर्म के मेरे हाथ गर्दन के साथ बांध दिये गए हैं हालांकि न तो मैं ने ख़ियानत की और न ही चोरी। मेरे सीने में भी एक दिल है जिसे मैं जलता हुआ महसूस करती हूं। ऐ मेरे दिल की आरज़ू ! तू यकीनन हक़ पर है। अगर मैं ने तुझे पूरा न किया तो महज़ अपनी गुफ़्तगू से तुझे धोके में मुब्तला कर रखा है।”

हज़रते सय्यिदुना सर्री सक़ती **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَوَي** फ़रमाते हैं : “मैं ने पागलों के क़रीब खड़े हुए लोगों से पूछा : “इसे क्या हुआ ?” तो उन्होंने ने जवाब दिया : “इस की अक़ल जाइल हो चुकी है, इस लिये इस के आका ने इसे कैद कर दिया है।” जब बांदी ने उन की येह बात सुनी तो गहरी सांस लेते हुए कुछ अशआर पढ़ने लगी, जिन का मफ़हूम येह है :

“ऐ लोगो ! मैं ने कोई जुर्म नहीं किया, बल्कि मैं तो दीवानी हूं और मेरा दिल ही मेरा महबूब दोस्त है और तुम ने मेरे हाथ बांध रखे हैं, हालांकि मैं ने सिवाए महबूब के कोई जुर्म नहीं किया, मैं तो अपने महबूब की महबूबत में फ़ना हूं और उस के दर से हटने वाली नहीं, तुम जो कुछ मेरे लिये बेहतर समझते हो वोह मेरे लिये बुरा है और जो मेरे लिये बुरा समझते हो वोह मेरे लिये बेहतर है।”

हज़रते सय्यिदुना सर्री सक़ती **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَوَي** फ़रमाते हैं : “उस का येह कलाम सुन कर मैं रोने लगा, मेरा दिल बेक़रार हो गया, जब उस ने मेरे चेहरे पर आंसू बहते हुए देखे तो कहने लगी : “ऐ सर्री ! अवसाफ़े इलाहिyyा **عَزَّوَجَلَّ** सुन कर आप का येह हाल हो गया तो अगर आप को उस का कमा हक़क़हु इरफ़ान हासिल हो जाए तो फिर आप का क्या हाल होगा ?” मैं ने कहा : “तअज़्जुब है मुझे येह बांदी कैसे पहचानती है ? जब कि मेरी इस से पहले कभी मुलाक़ात नहीं हुई।” तो उस ने कहा : “ऐ सर्री ! जब से मुझे मा’रिफ़त हासिल हुई है, मैं जाहिल नहीं रही। जब से इबादत में मशगूल हुई हूं तो कभी गा़फ़िल नहीं हुई, जब से विसाल हुआ कभी जुदाई नहीं हुई, जब से उस का दीदार किया तब से हिजाब हाइल न हुआ, और अहले दर्जात तो एक दूसरे को पहचान लेते हैं।” फिर उस ने इस मफ़हूम के अशआर पढ़े :

“मा’रिफ़ते इलाही **عَزَّوَجَلَّ** की हकीक़त मेरे बातिन के नूर में मुतहक्क़िक्क़ हो चुकी है, अब मेरा दिल ख़ालिसतन अपने महबूब ही के लिये है, अब मैं हमेशा अपने रब्ब **عَزَّوَجَلَّ** के अवसाफ़ बयान करती रहूंगी। क्या कोई अज़िज़ गुलाम अपने आका के अवसाफ़ बयान कर सकता है ?”

हज़रते सय्यिदुना सर्री सक़ती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوْی फ़रमाते हैं : “मैं ने कहा : मैं तुम्हें महब्वत का तज़क़िरा करते हुए देख रहा हूँ और येह कि तुम पर वज्द का जुहूर होता है, तुम किस से महब्वत करती हो ?” उस ने ज़वाब दिया : “उस ज़ात से जिस ने अपने रहमो करम से हमें अपनी मा'रिफ़त अता फ़रमाई, जिस ने अपने इन्आमात से हमें अपना महबूब बना लिया, जिस की अता के बादल हम पर बरसते हैं, जो दिलों के बहुत क़रीब है, ग़मों को दूर करता और नाफ़रमानों से दरगुज़र फ़रमाता है।” फिर मैं ने पूछा : “तुम्हें यहां किस ने कैद किया है ?” उस ने कहा : “हासिदीन और बुज़्ज रखने वालों ने, उन्होंने ने मुझ पर ज़ियादती की और मुझे मजनूना का नाम दे कर यहां डाल दिया हालांकि वोह खुद इस नाम के ज़ियादा हक़दार हैं।” फिर उस ने इस मफ़हूम के चन्द अशआर पढ़े।

“ऐ वोह बुजुर्ग व बरतर हस्ती जिस ने मेरी तन्हाई को देख कर मुझे अपने वस्ल के कुर्ब से मानूस और कैफ़ो सुरूर की लज़्ज़तों से आगाह किया ! मैं ग़ाफ़िल थी उस ने मुझे बेदार किया, मैं ऊंघ रही थी उस ने मुझे जगा दिया।”

हज़रते सय्यिदुना सर्री सक़ती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوْی फ़रमाते हैं : “मैं ने उस का नाम पूछा तो बोली : “नाम को छोड़िये जो आप ने मेरी बातें सुनीं पहचान के लिये वोही काफ़ी हैं।” अभी गुफ़्तगू जारी थी कि उस का आका भी आ गया, उस ने अपनी बांदी के निगरान से पूछा : “तोहफ़ा कहाँ है ?” निगरान ने ज़वाब दिया : “उस के पास हज़रते सय्यिदुना शैख़ सर्री सक़ती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوْی मौजूद हैं, उन्होंने ने उस से ऐसी गुफ़्तगू की, कि वोह उन की बातें बड़े ग़ौर से सुनने लगी।” उस का मालिक भी उन के पास चला आया और आप को देख कर ता'ज़ीमन दस्त बोसी की और अर्ज़ की : “या सय्यिदी ! आप की बरकत से येह बांदी नर्म दिल हो गई है।” आप ने दरयाफ़्त फ़रमाया : “तुम्हें इस की कौन सी आदत बुरी लगी ?” तो उस ने ज़वाब दिया : “या सय्यिदी ! येह बांदी सारंगी बजाती थी, मुझे अच्छी लगी मैं ने बीस हज़ार दिरहम में इसे ख़रीद लिया क्यूंकि येह बहुत ख़ूब सूरत थी और मुझे इस का सारंगी बजाना भी बहुत पसन्द था। मुझे उम्मीद थी कि मैं इस से दूगना नफ़अ हासिल करूंगा। एक दिन मैं इस के पास आया, सारंगी इस की गोद में थी और येह इस मफ़हूम के चन्द अशआर गुनगुना रही थी :

“तेरे हक़ की क़सम ! मैं ने न तो अपने अहद को तोड़ा और न ही अपनी महब्वत के साफ़ सुथरे चश्मे को गदला किया बल्कि मेरा सीना और दिल तो महब्वत से भरा हुवा है पस मुझे किस तरह क़रार और सुकून मिल सकता है। ऐ मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ तेरे सिवा मेरा कोई मा'बूद नहीं पस तू भी मुझे अपनी बन्दी देख कर मुझ से राज़ी हो जा।”

जब येह नग़मे से फ़ारिग़ हुई तो बहुत देर तक रोती रही, और सारंगी को ज़मीन पर मार कर तोड़ दिया और चीख़ने चिल्लाने लगी, इस की अक्ल ज़ाइल हो गई, मैं समझा कि येह किसी की महब्वत में गिरिफ़्तार है लेकिन जब मैं ने इस की हालत के मुतअल्लिक़ ग़ौर किया तो महब्वत का कोई निशान देखने में न आया।” हज़रते सय्यिदुना सर्री सक़ती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوْی फ़रमाते हैं : “मैं ने उस बांदी से पूछा : “क्या इसी तरह हुवा जैसा कि इन्होंने ने बताया है ?” तो उस ने ज़वाब में कुछ अशआर पढ़े, जिन का मफ़हूम येह है :



“हक़ तअ़ाला ने मेरे दिल को मुखातिब़ फ़रमाया तो वा'ज़ व नसीहत मेरी ज़बान पर जारी हो गई। पस उस ने जुदाई के बा'द मुझे अपना कुर्ब अता फ़रमाया, और मुझे अपनी खास बन्दी बना लिया। जब उस ने मुझे निदा दी तो मैं ने भी ब रिज़ा व रग़बत उस की निदा पर लब्बैक़ कहा।”

हज़रते सय्यिदुना सर्री सक़ती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي ने उस के आका से फ़रमाया : “तुम इस को आज़ाद कर दो मैं इस की कीमत अदा करता हूँ।” उस का आका ज़ोर से चिल्लाया और कहने लगा : “आप तो फ़कीर हैं, इस की कीमत कहां से चुकाएंगे ?” मैं ने कहा : “जल्दी न करो तुम यहीं रहो, मैं इस की कीमत का एहतिमाम करता हूँ।” हज़रते सय्यिदुना सर्री सक़ती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : “मैं अपने घर गया, मेरी आंखो से आंसू बह रहे थे और मेरा दिल उस बांदी के सबब ग़मगीन था, मैं ने वोह रात **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में गिर्या व ज़ारी करते, उस की तरफ़ तवज्जोह करते और अपनी हाज़त बर आने के लिये उसी पर तवक्कुल करते हुए गुज़ारी। सहूरी के वक़्त दरवाज़ा खट-खटाने की आवाज़ आई तो मैं ने पूछा : “दरवाज़े पर कौन है ?” जवाब मिला : “आप का दोस्त हूँ जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से किसी काम के लिये हाज़िर हुवा हूँ।” मैं ने दरवाज़ा खोला तो ख़ूब सूरत और साफ़ सुथरे लिबास में मल्बूस एक नौजवान खड़ा था, उस के साथ एक ख़ादिम, शम्अ और पांच बदर (या'नी माल की वोह थेली जिस में दस हज़ार दिरहम हों) ऊंटों पर थीं। मैं ने पूछा : “**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम पर रहम फ़रमाए, तुम कौन हो ?” उस ने जवाब दिया : मैं अहमद बिन मघ्नी हूँ, मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपनी अता व बख़िश से नवाज़ा है और उस ने बुख़ल नहीं किया और मुझे इतना माल अता फ़रमाया कि इन्सान उस को उठाने से अज़िज़ हैं, मैं सो रहा था कि एक आवाज़ आई : “ऐ अहमद ! क्या तुम हम से एक मुआमला करोगे ?” मेरी नींद उड़ गई, मैं ने कहा : “मुझ से ज़ियादा और कौन इस बात का हक़दार होगा कि उस से मुआमला किया जाए ?” आवाज़ आई : “पांच बदर माल सर्री सक़ती को दे दो कि वोह तोहफ़ा नामी कनीज़ के मालिक को दे कर उस को गुलामी की कैद से छुड़ाएगा और तुम हमारी जानिब से जहन्नम से आज़ादी का परवाना पाओगे कि हम ही उस पर नज़रे इनायत फ़रमाने वाले और लुत्फ़ो करम करने वाले हैं।” चुनान्चे, मैं माल ले कर आप की खिदमत में हाज़िर हो गया और सारी सूरते हाल भी बयान कर दी है।” हज़रते सय्यिदुना सर्री सक़ती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : “मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में सजदए शुक्र अदा किया। जब नमाज़े फ़ज़्र पढ़ ली और दिन की रोशनी फैल गई तो मैं अहमद बिन मघ्नी का हाथ पकड़ कर उसे पागल ख़ाने ले गया, तोहफ़ा का निगरान दाएं बाएं देख रहा था लेकिन जब उस ने मुझे देखा तो कहने लगा : “ख़ुश आमदीद ! तोहफ़ा के पास चलें, वोह बहुत ग़मज़दा है और उस का तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में बहुत बड़ा मक़ाम व मर्तबा है इस लिये कि कल शाम मुझे ग़ैब से येह आवाज़ सुनाई दी थी : “तोहफ़ा का तअल्लुक़ तो मुझ से है, वोह मेरी नवाज़िशत से किसी लम्हे भी ख़ाली नहीं होती, उस ने कुर्ब की घड़ियां पाई तो बुलन्द मर्तबा हासिल कर लिया।” मैं जल्दी से बेदार हुवा और हातिफ़े ग़ैबी के कलाम को दोहराता रहा यहां तक कि मैं ने आप को देख लिया।” हज़रते सय्यिदुना सर्री सक़ती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : “हम तोहफ़ा के पास गए तो उस को इस मफ़हूम के अशआर पढ़ते हुए सुना :

“मैं ने सब्र का दामन थामे रखा यहां तक कि मेरा सब्र तेरी महबूत पर फ़ख़र करने लगा, मैं ने अपनी दीवानगी को छुपाए रखा लेकिन तुझ से अपने मुआमले को मख़फ़ी न रख सकी, तेरी महबूत में मेरा बेड़ियां पहनना और कैद की तंगी सहना ही मेरा सब्र है, अगर तू मुझ पर इस हालत में राज़ी व खुश है तो ज़माने की तवालत की मुझे कोई परवाह नहीं कि तू ही मेरा सब से बड़ा ग़म गुसार है, और ऐ मेरे रब्ब **عَزَّوَجَلَّ** बेशक तू ही मेरा पालने वाला और मेरी मुसीबत टालने वाला है।”

हज़रते सय्यिदुना सर्री सक़ती **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكُوفَى** फ़रमाते हैं : “अशआर पढ़ने के दौरान ही उस का मालिक भी रोता हुवा आ गया, मैं ने कहा : “आप ने ज़हमत क्यूं की ? हम खुद आप के पास तोहफ़ा की कीमत ले कर आए हैं, और मजीद पांच हजार दिरहम बतौर नफ़अ भी लाए हैं। उस ने कहा : “**اللَّهُ** **عَزَّوَجَلَّ** की क़सम ! मैं नहीं लूंगा।” मैं ने कहा : “दस हजार दिरहम चाहते हो ?” उस ने क़सम खाते हुए कहा : “मैं नहीं लूंगा।” मैं ने कहा : “इतना मजीद नफ़अ चाहते हो ?” उस ने तीसरी बार कहा : “खुदा **عَزَّوَجَلَّ** की क़सम ! मैं नहीं लूंगा और अगर आप मुझे दुन्या और इस का तमाम माल व अस्बाब भी दे दें तब भी क़बूल नहीं करूंगा, मैं इस को रिज़ाए इलाही **عَزَّوَجَلَّ** के लिये आज़ाद करता हूं।” मैं ने पूछा : “मुझे बताओ, माजरा क्या है ?” उस ने कहा : “या सय्यिदी ! रात को ख़्वाब में किसी ने मुझे सख़्त कलिमात के साथ मलामत करते हुए कहा : “ऐ **اللَّهُ** **عَزَّوَجَلَّ** के दुश्मन ! तू **اللَّهُ** **عَزَّوَجَلَّ** की वलिय्या की तौहीन करता है।” मैं कांपते हुए बेदार हो गया अब मुझे दुन्या ज़लील लगने लगी है और अपनी तमाम अश्या को छोड़ कर अपने रब्ब **عَزَّوَجَلَّ** की तरफ़ भागना चाहता हूं। ये कह कर वोह रोता हुवा जिधर मुंह आया चल दिया। हज़रते सय्यिदुना सर्री सक़ती **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكُوفَى** फ़रमाते हैं : “मैं अहमद बिन मन्नी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَنِي** की तरफ़ मुतवज्जेह हुवा तो उन को भी रोते हुए पाया। उन पर क़बूलिय्यत के आधार नुमाया थे। मैं ने पूछा : “तुम क्यूं रोते हो ?” कहने लगे : “मैं अभी तक अपने रब्ब **عَزَّوَجَلَّ** को राज़ी न कर सका और न ही अपना माल क़बूलिय्यत के मक़ाम पर पाता हूं, अब मैं ये सब उस की रिज़ा के लिये सद्का करता हूं।” मैं ने कहा : “ये सब तोहफ़ा की बरकतें हैं !” फिर तोहफ़ा खड़ी हुई, अपना लिबास तब्दील कर के उन का जुब्बा पहन लिया और बालों का दूपट्टा ओढ़े मुंह आस्मान की तरफ़ बुलन्द कर के चल पड़ी, हम भी इस के साथ ही चलने लगे। वोह ये कहती हुई जा रही थी :

“मैं उस की बारगाह की तरफ़ भागी और उसी की महबूत में रोई और हक़ तो येह है कि वोही मेरा मालिके हक़ीकी है, मैं हमेशा उसी की बारगाह में हाज़िर रहूंगी यहां तक कि अपनी आरजूओं के मुताबिक़ अपना हिस्सा वुसूल कर लूं।”

हम उस के पीछे पीछे चलते रहे यहां तक कि वोह येह कहती हुई शहर से बाहर निकल गई :

“ऐ लोगों को खुशी और मसरत देने वाले ! मेरा सुरूर तो तू ही है। ऐ लोगों को ज़िन्दगी अता करने वाले ! मेरी राहत तो तुझी से है, मेरे लिये जन्नत व दोज़ख़, मेरी ने'मतें और मेरा ग़मगुसार सब कुछ तू ही तू है।”

हज़रते सय्यिदुना सर्री सक़ती **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكُوفَى** फ़रमाते हैं : “फिर चलते चलते वोह हमारी निगाहों से ओझल हो गई, उस के मालिक और अहमद बिन मन्नी ने कुछ अर्सा मेरी सोहबत इख़्तियार

की । जब उस के मालिक का इन्तिकाल हो गया तो हम हज के इरादे से बैतुल्लाह शरीफ पहुंचे । तवाफे का'बा के दौरान हमें येह दर्द भरी आवाज सुनाई दी : “मैं ने तेरी महबूबत में रुस्वाइयां झेलीं, अब तेरे कुर्ब की उम्मीद वार क्यों कर न होऊं कि तू ही अपने इश्क में गिरिफ्तार उन दिलों की शिकायत दूर करने वाला है जो हिज्रो फिराक का शिकार हैं । ऐ नफ़्स ! अगर **अल्लाह** عزّوجلّ ने गुनाहों की वजह से तेरा मुहासबा कर लिया तो तू बरबाद हो जाएगा लिहाजा अपने रब्ब عزّوجلّ से अप्पवो दरगुजर और रिज़ा मांग ले ।”

हज़रते सय्यिदुना सर्री सक़ती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : “मैं ने इस आवाज वाले को तलाश किया तो मुझे एक औरत दिखाई दी जिस की अक़ल और हालत कुछ ठीक दिखाई नहीं दे रही थी, उस ने मुझे देख कर कहा : “السَّلَامُ عَلَيْكُمْ ऐ सर्री !” मैं ने जवाब में عَلَيْكَ السَّلَام कहने के बा'द पूछा : “तुम कौन हो ?” वोह कहने लगी : खुदाए वहदहू लाशरीक की मा'रिफ़त के बा'द भी इज़हारे ना वाकिफ़ियत हो रहा है, आप अभी तक हिजाब में हैं, आप के दिल पर इश्क ने कब्ज़ा नहीं जमाया ।” येह कहने के बा'द उस ने बताया : “मेरा नाम तोहफ़ा है ।” मैं ने पूछा : “खुद को लोगों से अलग थलग करने के बा'द **अल्लाह** عزّوجلّ ने तुझे क्या नफ़अ दिया ?” उस ने कहा : “मेरे परवर दगार عزّوجلّ ने मेरी तमाम उम्मीदें और आरजूएं पूरी कर दीं और मेरे दिल को अपने गैर से ख़ाली कर दिया ।” इस के बा'द वोह रोती रही और उस पर बेचैनी की कैफ़ियत तारी हो गई । फिर उस ने अपना सर उठा कर यूँ अर्ज की : “या **अल्लाह** عزّوجلّ अहले तक्वा कामयाब हो गए, मुत्तकीन ने नजात पाई, और वोह शख्स ज़लीलो रुस्वा हुवा जिस के हिस्से में बद बख़्ती आई, ऐ मालिके हकीकी عزّوجلّ मैं तेरी बारगाह में इल्तिजा करती हूं कि अपने विसाल और मुलाक़ात से कुर्ब अता फ़रमा और मुझे अपने पास बुलाले कि मुझे दुनिया में रहने की हाजत नहीं ।” फिर उस ने एक जोरदार चीख़ मारी और ज़मीन पर तशरीफ़ ले आई । हम ने उसे हरक़त दी तो देखा कि उस की रूह कफ़से उनसुरी से परवाज़ कर चुकी थी । जब अहमद बिन मघ्नी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَنِي की उस पर नज़र पड़ी तो उन के दिल पर रिक्कत तारी हो गई और वोह भी जोर जोर से रोने लगे, फिर उन्होंने भी बुलन्द आवाज़ से चीख़ मारी और ज़मीन पर गिर पड़े और हमेशा के लिये दुनिया से कूच कर गए । हज़रते सय्यिदुना सर्री सक़ती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : “मैं दोनों की तजहीज़ व तक्फ़ीन के बा'द वापस आ गया । मुझे इस वाकिफ़ से बहुत तअज्जुब हुवा ।”

سُبْحَنَ اللَّهِ عزّوجلّ उन लोगों की ख़ूब शान है जिन्होंने ने अहकामे खुदावन्दी की बजा आवरी में कोई कोताही न की, काइनात को निगाहे इब्रत से देखा और ग़ौरो फ़िक्क किया और लगज़िशों को याद कर के फ़िक्के आख़िरत की और इब्रत हासिल की, इन को येह बात समझ आ गई कि मक्बूल बन्दे अपने महबूबे हकीकी عزّوجلّ से जा मिले और अपने मक़सिद पाने में कामयाब हो गए ।

وَصَلَّى اللَّهُ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِهِ وَصَحْبِهِ أَجْمَعِينَ





बयान 51 :

ईदों की ईद

हमड़े बारी तझाला :

सब ता'रीफें **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जो वुजूद के वुजूद से भी पहले से है। फज़लो करम और जूद जिस की सिफ़ात हैं। अपनी यक्ताई में अवलाद, आबा और अजदाद से मुनज़्ज़ा है। अपनी जात में बीबी, बेटा, बाप और अपनी तरफ़ हर मन्सूब से पाक है। ऐसा अलीम है कि रैत के ज़रात, पानी के क़तरात और खोशों और बालियों के दानों की ता'दाद को जानता हैं। ऐसा बसीर है कि खुश्क व तर में इन्तिहाई सियाह व तारीक रातों के अन्धेरो में भी छोटी सी च्यूटी की हरकात को देखता है। ऐसा हकीम है कि उस ने अपनी हिक्मत से मज़बूत और सख़्त चट्टानों से दरयाओं को जारी फ़रमाया। और खुश्क लकड़ियों से ताज़ा फ़ल निकाले। अक्लें उस की मिषाल नहीं दे सकती। अतराफ़े आलम उस का इहाता नहीं कर सकते। मिक्दार उस को रोक नहीं सकती। ज़माने उसे फ़ना नहीं कर सकते। आंखें उस का इदराक नहीं कर सकती। वोह ही तन्हा इबादत के लिये लाइक है। ऐसा अता फ़रमाने वाला है कि कोई उस की अता को रोक नहीं सकता और कोई भी उस के फ़ैसले को टाल नहीं सकता।

ऐसा करीम है कि बन्दे को अपनी बारगाहे आली से कितनी ही मरतबा रू गर्दानी करते हुवे देखता है फिर भी उसे बहुत बड़ा षवाब अता फ़रमाता है। ऐसा हलीम है कि गुनहगार को अपनी रहूमत में छुपा लेता है हालांकि कई मरतबा उसे अपनी नाफ़रमानी में मुस्तगरक़ देखता है। ऐसा ग़फ़ार है कि गुनाहों को बख़्श देता, ऐबों को छुपाता और गुज़स्ता ख़ताओं से दरगुज़र फ़रमाता है। ऐसा क़हहार है कि बड़े बड़े जाबिर उस के ग़लबे को रोक न सके। वोह सब पर ग़ालिब है और उस ने शिकस्त व रीख़त को बड़े बड़े हम्ला आवरों का मुक़द्दर कर दिया। और जिस ने उस के मुक़ाबले में इनाद की तल्वार को खींच कर तान लिया उस ने अपने कुर्ब से दूरी के नेजे से उस पर वार कर दिया। उस ने अपने अन्वार व तजल्लियात के इदराक में कोशां फ़िक्कों को हैरत ज़दा कर दिया। उस ने अपने क़दीम जलाल की हकीक़त तक अक्लों को रसाई से गाफ़िल कर दिया। उस ने ज़बानों को फ़साहत व क़ादिरुल कलामी के बा वुजूद अपने अफ़आल के राज़ के इशारात को बयान करने से गूंगा कर दिया। उस ने दिलों को अपना इहाता करने से हैरत में डाल दिया पस वहम व ख़याल से उस का क़स्द नहीं किया जा सकता।

वोह हमेशा से है। बुजुर्गी वाला है। बहुत अता फ़रमाने वाला है। तन्हा व यक्ता है। बेटे और बाप, शरीक व मुआविन से पाक है, अपने मुशाबेह व मुमाषिल और मुख़ालिफ़ व मुक़ाबिल से बुलन्द तर है। तमाम ने'मतों पर उस का शुक्र अदा किया जाता है। हर ख़ूबी व फ़ज़ीलत से सराहा जाता है। जो अपने कमज़ोर और नाफ़रमान बन्दे को अपनी रहूमत के पर्दे में छुपा लेता है। वोह हर लम्हा उसे देख और उस का मुशाहदा फ़रमा रहा है। वोही है जिसे रब्ब कहा जाता और जिस की इबादत की जाती है। हकीक़ते यक्ताई में मुन्फ़रिद है। ख़याली अवहाम से पाक है। वोह अपनी बका में फ़ना व

मिष्लियत से पाक है। हरविनहां व इयां चीज को जानता है। अक्लें उस की अज़मत व बड़ाई में हैरत ज़दा हैं। वोह उस के लिये कोई जगह पहचान न सकीं। अफ़कार ने उस की शाने बे नियाज़ी को शुमार करने का इरादा किया मगर अक्ली इलूम से उस की मा'रिफ़त नहीं हो सकती। वोह मुशाबेह व रिश्तेदार से बुलन्द व बरतर है। हिस्सादार व रफ़ीक़ से पाक है। तौबा करने वाले की तौबा क़बूल फ़रमाता और रुजूअ करने वाले को महबूब व दोस्त रखता है। उस के दरवाज़े पर कोई दरबान है न कोई रोकने वाला। जिस ने उस के इलावा से उम्मीद लगाई वोह बद बख़्त और ख़ाइबो ख़ासिर हुवा। और जिस ने उस की अ़ता के दरवाज़े पर पड़ाव डाला वोह मक़ासिद व मतालिब पाने में कामयाब हो गया। जो उस के कुर्ब की हलावत को चख़ लेता है वोह उस की कुदरतों के अज़ाइब व ग़राइब को देखता है। जो तमाम ज़हान से मुंह फेर कर उस से लौ लगाता है वोह उसे बुलन्दी और आ'ला मरातिब पर तरक्की अ़ता फ़रमाता है तो तंगी व परेशानी दूर हो जाती है। सहर के वक़्त ख़ास तजल्ली का जुहूर होता है और पुकारा जाता है : “है कोई मग़फ़िरत का त़लबगार। है कोई तौबा करने वाला।” और मांगने वालों की हाजतों को पुरा किया जाता है। और जूदो बख़्शिश की ख़िलअतों से तौबा करने वालों को नवाज़ा जाता है।

पाक है वोह जो सब का मा'बूद है। जिस की वहदानियत की गवाही आस्मान और उस में मौजूद तमाम अज़ाइबात ने दी। जिस की रबूबियत का इक़रार ज़मीन ने मशरिफ़ व मग़रिब हर जगह किया। पाक है वोह ज़ात जिस ने हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद मुस्तफ़ा, अहमदे मुजतबा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अपना ख़ास नबी बनाया। वोह नबी जो हमेशा काइम रहने वाला दीन ले कर तशरीफ़ लाए। जो तमाम अख़लाक़े हमीदा के हामिल हैं। **اَللّٰهُمَّ** عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सद्के नफ़से वुजूद को शरफ़ बख़्शा। सआदत को दर्ज क़माल अ़ता किया। और आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बुलन्द मरातिब पर फ़ाइज़ फ़रमाया। आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इस मुबारक महीने (या'नी रबीउन्नूर शरीफ़) में ज़ाहिर फ़रमाया। आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को हर ऐब से पाक व सलामत पैदा किया। आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादते बा सआदत की वजह से (ईरान के आतश कदा में एक हज़ार साल से रोशन) आग बुझ गई। आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी से बुत औंधे मुंह गिर पड़े। ऐवाने किसरा लर्ज़ा बर अन्दाम हो गया। सख़्तियां और मसाइब दूर कर दिये गए, शयातीन को आस्मान पर जाने से रोक दिया गया, और उन के कान आस्मानी कलाम सुनने से बहरे हो गए। जैसा कि इरशादे बारी तआला है :

لَا يَسْمَعُونَ إِلَى الْمَلَأِ الْأَعْلَى وَيُقَذَّفُونَ مِنْ كُلِّ جَانِبٍ ۖ دُحُورًا وَلَهُمْ عَذَابٌ وَاصِبٌ ۖ (الصفّ: २३-२४)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** आलमे बाला की तरफ़ कान नहीं लगा सकते और उन पर हर तरफ़ से मार फेंक होती है। उन्हें भगाने को और उन के लिये हमेशा का अज़ाब।”

येही वोह नबिय्ये मुकर्रम और रसूले मुअज़्ज़म صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं जिन पर कुरआने मजीद में येह आयते मुबारका नाज़िल हुई : **إِنَّا زَيْنَا السَّمَاءِ الدُّنْيَا بِرَبِّيَّةٍ ۖ نَزَّلْنَا الْكُورْآبَ ۖ (الصفّ: २३-२४)**  
**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और बेशक हम ने नीचे के आस्मान को तारों के सिंगार से आरास्ता किया।”

**अल्लाह** ने आप ﷺ को लूई बिन ग़ालिब की अवलाद से पैदा फ़रमाया । आप ﷺ को तमाम मशरिफ़ व मगरिब वालों पर फ़ज़ीलत दी । आप ﷺ की समाअते मुबारका ऐसी कि अर्श पर क़लम के चलने की आवाज़ सुन लेते हैं और बसारते मुबारका ऐसी कि सातों आस्मान नज़र में हैं । ज़बान मुबारक ऐसी कि कभी अपनी मरज़ी से कलाम फ़रमाया, न ही कभी झूठी बात मुंह से निकाली (क्योंकि आप ﷺ की हर बात वहुये इलाही **عَزَّ وَجَلَّ** से है) । हाथ ऐसे मुक़द्दस कि जिन की बरकात खाने पीने वाली अश्या में आम व ज़ाहिर । क़ल्बे अतहर ऐसा जो कभी ग़ाफ़िल होता, न ही कभी सोता, हर घड़ी हर लम्हा इबादते इलाही में मशगूल रहता । क़दम मुबारक वोह जिसे ऊंट बोसा दे तो उस का ख़ौफ़ दूर हो जाए । गोह (एक जानवर का नाम है) आप ﷺ पर ईमान लाई । दरख़्तों ने आप ﷺ को सलाम किया । पथरों ने आप ﷺ से कलाम किया और खज़ूर का तना आप ﷺ की महबूबत में दीवाना हो गया ।

मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबिय्यों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर **عَزَّ وَجَلَّ** ने फ़रमाया : “كُنْتُ نَبِيًّا وَآدَمُ بَيْنَ الْمَاءِ وَالطِّينِ” या'नी मैं उस वक़्त भी नबी था जब कि हज़रते आदम **عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** पानी और मिट्टी के दरमियान थे ।”

(الفتوحات المكية لابن عربي، الباب العاشر في معرفة دورة الملك.....الخ، ج ١، ص ٣٥)

हज़रते सय्यिदुना अबू मुहम्मद मक्की और हज़रते सय्यिदुना अबूल्लैष समर कन्दी फ़रमाते हैं : “जब हज़रते सय्यिदुना आदम **عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** को जन्नत से ज़मीन पर उतारा गया तो आप **عَلَيْهِ الصَّلَام** ने अर्ज़ की : “या **عَزَّ وَجَلَّ** ब हक्के मुस्तफ़ा **عَزَّ وَجَلَّ** मेरी लगज़िश मुआफ़ फ़रमा और मेरी तौबा क़बूल फ़रमा ।” तो **عَزَّ وَजَلَّ** ने इस्तिफ़सार फ़रमाया : “ऐ आदम **عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** तुझे मेरे महबूब **عَزَّ وَجَلَّ** की पहचान कैसे हासिल हुई ?” अर्ज़ की : “या **عَزَّ وَجَلَّ** जब तू ने मुझे पैदा किया तो मैं ने अपना सर तेरे अर्श की जानिब उठाया तो उस पर येह लिखा हुवा पाया، لا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللَّهِ तो मैं ने जान लिया कि तेरे नज़दीक इस हस्ती से बढ़ कर क़द्रो मन्ज़ित वाला कोई नहीं, पस मैं ने तेरी बारगाह में इन का वसीला पेश किया ।” जब हज़रते सय्यिदुना आदम **عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** ने दुआ की तो **عَزَّ وَجَلَّ** ने इन की तौबा क़बूल फ़रमाई और अपने हबीबे करीम, रऊफ़रहीम **عَزَّ وَجَلَّ** की बरकत से उन की लगज़िश मुआफ़ फ़रमा दी ।”

(المستدرک، کتاب آیات رسول الله ﷺ، باب استغفار آدم عليه السلام، الحديث ٤٢٨٦، ج ٣، ص ٥١٧، بتغی)

**नूरे मुहम्मदी** **عَزَّ وَجَلَّ** की चमक दमक :

**अल्लाह** ने नूरे मुहम्मदी **عَزَّ وَجَلَّ** को हज़रते सय्यिदुना आदम **عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** की पुश्ते मुबारक में बतौर अमानत रखा और इन को जन्नत में ठहरा कर फ़िरिशतों से सजदा कराया, इस के बा'द हज़रते सय्यिदुना आदम **عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** को इस वदीअत किये गए नूर की क़द्रो मन्ज़िलत की पहचान कराई और फ़रमाया : “दोनों पाक व साफ़ हो कर तस्बीह व तक्दीस करो फिर



अपनी अहलिय्या हव्वा का हक्के जौजिय्यत अदा करो कि मैं तुम दोनों से अपने फ़ैजे आधार नूर का जुहूर फ़रमाने वाला हूं।" पस आप عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने हुक्मे इलाही عَزَّ وَجَلَّ के मुताबिक़ अमल किया और **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ ने नूरे मुहम्मदी صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ हज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام से हज़रते सय्यिदतुना हव्वा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا में मुन्तक़िल फ़रमा दिया। यह शबे जुमुआ और रजबुल मुरज्जब की बारहवीं रात थी। फिर आप عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام इस नूर को हज़रते सय्यिदतुना हव्वा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا की पेशानी में सूरज की मानिन्द दाइरे की सूत में देखा करते। जब हज़रते सय्यिदुना शीष عَلَى نَبِيْنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام पैदा हुवे तो नूरे मुहम्मदी صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ आप عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की पेशानी में मुन्तक़िल कर दिया गया। जब आप عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام बड़े हुवे और जवानी की हुदूद में कदम रखा तो हज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने आप عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام से अहदों पैमान लिया कि वोह इस खुदाई राज़ को किसी पाक बाज़ बीबी में ही मुन्तक़िल फ़रमाएंगे ताकि येह किसी पाक बाज़ मर्द तक ही मुन्तक़िल हो। इस तरह येह मुबारक नूर नेक मर्दों की पुश्तों से नेक औरतों के रहमों में मुन्तक़िल होता रहा यहां तक कि वोह वक़्त आ गया कि येह हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुत्तलिब رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ तक पहुंच गया।

जब येह नूर हज़रते सय्यिदतुना आमिना رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا की तरफ़ मुन्तक़िल हुवा तो इस की बरकत से वोह हर किस्म के ख़ौफ़ से बे परवाह हो गई, जब **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ ने नूरे मुहम्मदी صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को रफ़ीउश्शान सुलबों से बुलन्द रुत्बा सय्यिदा आमिना رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا के बतने अतहर की तरफ़ मुन्तक़िल फ़रमाया तो इस मुन्तक़िली के साथ ही बड़ी बड़ी निशानियां ज़ाहिर होने लगीं। सारी मख़्लूक एक दूसरे को बिशारतें देने लगी, ज़मीनो आस्मान में ए'लान कर दिया गया : "ऐ अर्श ! वक़ार व सन्जीदगी का निक्काब ओढ़ ले। ऐ कुरसी फ़ख़्र की ज़िरह पहन ले। ऐ सिद्रतुल मुन्तहा ! खुशी से झूम जा। ऐ हैबत और रो'ब व दबदबा के अन्वार ! तुम भी ख़ूब रोशन हो जाओ। ऐ जन्नत ! ख़ूब आरास्ता व पैरास्ता हो जा। ऐ महल्लात की हूरो ! तुम भी बुलन्दी से देखो। ऐ रिज़वान (बाग़बाने जन्नत) ! जन्नत के दरवाज़े खोल दे और हूरो ग़िलमां को सामाने ज़ीनत से आरास्ता व पैरास्ता कर के काइनात को खुशबूओं से मुअत्तर कर दे। ऐ मालिक (दारोगए जहन्नम) ! जहन्नम के दरवाज़े बन्द कर दे। क्यूंकि आज की रात मेरी कुदरत के खज़ानों में छुपा हुवा नूर और राज़ अब्दुल्लाह से जुदा हो कर आमिना के बतन में मुन्तक़िल होने वाला है। और इस नूर के मुन्तक़िल होते ही आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا का ख़ालिस यक़ीन ज़ाहिर हो गया और आंतें आप के पेट के बच्चे से लिपट गईं।

आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के शिकमे मादर में मुन्तक़िल होने के पहले महीने शाहे ईरान के महल "किसरा" में ज़लज़ला बर्पा हो गया। दूसरे महीने काइनात बिशारतों से मुनव्वर हुई। तीसरे महीने दरयाए सावा खुश्क हो गया। चौथे महीने वादिये समावाह खुश्क हो गई। पांचवें महीने बह़ीरा तबरिय्या रुक गया। छठे महीने मालिके हक्कीकी के पोशीदा राज़ की बिना पर आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के वालिदे मोहतरम इस जहाने फ़ानी से कूच कर गए। सांतवे महीने ईरान का आतश कदा बुझ गया, आठवें महीने ऐवाने किसरा में दराड़ पड़ गई और किसरा ज़लीलो ख़्वार हुवा। नववें महीने किसरा के सर से ताज गिर गया और उस की मुसीबत व तक्लीफ़ शिद्दत इख़्तियार कर गई,

उस ने काहिनों और राहियों से इस बारे में दरयाफ्त किया तो उसे बताया गया कि बनी अदनान के सरदार की विलादत का वक्त करीब आ चुका है और वोह नबिय्ये आखिरुज्जमां صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को बुरहान के साथ मबरुफ़ फ़रमाया जाएगा, नीज उन के अवसाफ़ तौरात व इन्जील और ज़बूर में मौजूद हैं और उन का दीन तमाम अदयान पर ग़ालिब होगा ।

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अबी जैद رَحْمَةُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ ف़रमाते हैं : “शहनशाहे मदीना, करा़रे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइषे नुजुले सकीना, फैज़ गन्जीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की विलादते बा सअ़दत माहे रबीउल अव्वल शरीफ़ की बारह तारीख़ पीर के दिन अ़मूल फ़ील में हुई ।”

(السيرة النبوية لابن هشام، ولادة رسول الله ﷺ، ج ١، ص ١٦١)

## जिश् शुहानी घड़ी चमक्क तयबा क्क चांद :

इस अज़ीमुश्शान नबी صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दुन्या में तशरीफ़ आवरी पर सारी काइनात खुशी से झूम उठी । इस माहे मुबारक की पहली रात हज़रते सय्यिदतुना आमिना رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا को अजीब कैफ़ो सुरूर हासिल हुवा । दूसरी रात आप रَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا को हुसूले मतलूब का मुज्दा मिला । तीसरी रात आप रَضِیَ اللہُ तَعَالٰی عَنْہَا से कहा गया कि आप के शिकमे अतहर में जो हस्ती है वोह हमारी हम्द बजा लाने और शुक्र अदा करने वाली है । चौथी रात आप रَضِیَ اللہُ तَعَالٰی عَنْہَا ने मलाइका की तस्बीह सुनी जो आप صَلَّय اللہु तَعَالٰय عَلَय्ही वَاٰलِہٖ وَسَلَّم की आमद का ए'लान कर रहे थे । पांचवीं रात आप रَضِیَ اللہُ तَعَالٰय عَنْہَا ने ख़ाब में हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को देखा जो आप रَضِیَ اللہُ तَعَالٰय عَنْہَا को नूर वाले और बुलन्दियों के मालिक नबिय्ये करीम صَلَّय اللہु तَعَالٰय عَلَय्ही वَاٰलِہٖ وَسَلَّم की बिशारत दे रहे थे । छठी रात आप रَضِیَ اللہُ तَعَالٰय عَنْہَا को ऐसा दाइमी फ़रहत व सुरूर हासिल हुवा कि इस के बा'द आप रَضِी ल्हु तَعाल्ी عَنْहा न कमज़ोर पड़ीं, न आप को कभी थकावट हुई । सातवीं रात अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपनी रिज़ा का नूर फैलाया तो वोह हर तरफ़ फैल गया । आठवीं रात विलादते शहे दीं का वक्त करीब आने की वजह से मलाइका ने हज़रते सय्यिदतुना आमिना رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا के काशानए अक्दस का चक्कर लगाया । नववीं रात आप रَضِیَ اللہُ तَعَالٰय عَنْहा की सअ़दतों और तवंगरी की इब्तिदा हुई । दसवीं रात आप रَضِیَ ल्हु तَعाल्ी عَنْहा की थकावट व तकलीफ़ जाती रही । ग्यारहवीं रात हुज़ूर सय्यिदुल मुबल्लिगीन, जनाबे रहमतुल्लिल अ़लमीन صَلَّय ल्हु तَعाल्ी عَلय्ही वَاٰलِہٖ وَسَلَّم इस जहाने फ़ानी में तशरीफ़ लाए तो सारा घर नूर से मुनव्वर हो गया, आप रَضِी ल्हु तَعाल्ी عَنْहा का शको शुबा और डर ख़त्म हो गया, सफ़ा व मर्वा पहाड़ खुशी से झूम उठे, आप صَلَّय ल्हु तَعाल्ी عَلय्ही वَاٰलِہٖ وَسَلَّم ने दुन्या में जल्वागर होते ही अपने परवर दगारे हकीकी عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में सजदा किया और अपनी उंगली आस्मान की जानिब इस तरह बुलन्द की जैसे कोई शख्स अज़िजी व इन्किसारी से अपने मालिक के सामने हाथ बुलन्द करता है । आप صَلَّय ल्हु तَعाल्ी عَلय्ही वَاٰलِہٖ وَسَلَّم की खुशबू काइनात में बिखर गई, मलाइका ने तकबीर व तहलील (अल्लाहु अक्बर और لا اله الا الله) के ना'रे लगाए और आप صَلَّय ल्हु तَعाल्ी عَلय्ही वَاٰलِہٖ وَسَلَّم के अज़मत व जलालत वाले चेहरए अक्दस के मुबारक नूर से सारी ज़मीन बुक़अए नूर (या'नी नूर का टुकड़ा) बन गई ।

हज़रते सय्यिदतुना आमिना رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا फ़रमाती हैं कि “मैं ने सफ़ेद बादलों को आस्मान से उतरते हुवे देखा जिन्होंने ने नबिय्ये रहूमत, शफीए उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को मुझ से छुपा लिया फिर मैं ने किसी कहने वाले को येह कहते सुना : “ऐ फ़िरिशतों इन्हें मशरिफ़ व मगरिब का तवाफ़ कराओ, इन्हें तमाम समन्दरी मख़्लूक, जंगलों, जानवरों और ख़ाली जगहों में रहने वाले जिन्यों के पास से गुज़रो और इन्हें हर जी रूह पर पेश करो ताकि वोह इन्हें इन के नाम और अवसाफ़ के साथ पहचान लें, नीज़ इन्हें सब अम्बिया السّلام عَلَيْهِمُ السّلام की जाए विलादत का भी चक्कर लगवाओ ताकि इन की बरकत के आषार व निशानात उन को भी आम हों।”

हज़रते सय्यिदतुना आमिना رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا मज़ीद फ़रमाती हैं : “फिर वोह बादल आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से दूर हो गए तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ सफ़ेद ऊनी कपड़े में लिपटे हुवे थे और नीचे सब्ज़ रेशम बिछा हुआ था। तीन अफ़ाद बड़ी तेज़ी से आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की जानिब बढ़े एक के पास सुर्ख़ सोने का तश्त, दूसरे के पास मोतियों से जड़ा हुआ कूज़ा और तीसरे के पास सब्ज़ रेशम का रूमाल था। उन्होंने ने चेहरए हबीब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ को कूज़े के पानी से धोया फिर रूमाल से तस्दीक़ की मोहर निकाल कर पुशते नबवी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ पर षब्त कर दी। इस के साथ ही आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की सआदत और तौफीक़ मुकम्मल हो गई, फिर किसी की आवाज़ आई : “इन्हें लोगों की निगाहों से छुपा दो और इन्हें हज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ الصّلوّة والسلام की बरगुज़ीदगी, हज़रते सय्यिदुना शीष عَلَيْهِ الصّلوّة والسلام की मा'रिफ़त, हज़रते सय्यिदुना नूह عَلَيْهِ الصّلوّة والسلام की रिक्कत व नर्मी, हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَيْهِ الصّلوّة والسلام की गहरी दोस्ती, हज़रते सय्यिदुना इस्माईल عَلَيْهِ الصّلوّة والسلام की फ़रमा बरदारी, हज़रते सय्यिदुना अय्यूब عَلَيْهِ الصّلوّة والسلام का सब्र, हज़रते सय्यिदुना या'कूब عَلَيْهِ الصّلوّة والسلام की बुर्द बारी, हज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلَيْهِ الصّلوّة والسلام का हुस्नो जमाल, हज़रते सय्यिदुना दावूद عَلَيْهِ الصّلوّة والسلام की सुरीली आवाज़, हज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلَيْهِ الصّلوّة والسلام का हुक्म, हज़रते सय्यिदुना लुक्मान رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की हिक्मत, हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ الصّلوّة والسلام की ताक़त, हज़रते सय्यिदुना यह्य़ा عَلَيْهِ الصّلوّة والسلام का ज़ोहद और हज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ الصّلوّة والسلام की ख़न्दा पेशानी अता कर दो, बल्कि इन को तमाम अम्बिया व मुरसलीन عَلَيْهِمُ الصّلوّة والسلام के अख़्लाके हमीदा से मुत्तसिफ़ कर दो।”

(رسائل ميلاد مصطفى، باب مولد النبي صلى الله تعالى عليه وآله وسلم لابن حجر مكي عليه الرحمة، ص: ٢٤، مختصراً)

पाक है वोह ज़ात जिस ने शहनशाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिषाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को सब नबियों का सुल्तान बनाया और इन के ज़िक़रे ख़ैर को हर तरफ़ फैलाया, इन्हें बुलन्द मर्तबा अता फ़रमाया, इन की विलादते बा सआदत पर फ़ारस की आग बुझ गई, बसरा के महल्लात रोशन हो गए, बुत मुंह के बल गिर पड़े और ऐवाने किसरा में हलचल मच गई।



आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ही शफ़ाअते कुब्रा के मालिक हैं, आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को ज़रीए **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ ने न सिर्फ़ मौजूदात को शरफ़ बख़्शा बल्कि आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ को तमाम मौजूदात के लिये दुन्या व आख़िरत में बाइषे रहमत बनाया ।

हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है : “हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़लाक صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ सब से ज़ियादा शुजाअ व बहादुर, सब से हसीन और सब से ज़ियादा सखी थे । (صحيح مسلم، كتاب الفضائل، باب شجاعته صلى الله عليه وسلم، الحديث ٢٣٠٧، ص ١٠٨٥) तमाम लोगों से ज़ियादा सखी थे । (احياء علوم الدين، بيان جملة من محاسن اخلاقه ﷺ، ج ٢، ص ٤٤١) तमाम लोगों से ज़ियादा क़रीम थे । (اخلاق النبي عليه السلام لابی الشيخ الاصبهانی، باب ما روى فی كظمه الغیظ وحلمه، الحديث ٥٧، ج ١، ص ٦٠) सब से ज़ियादा आबिदो ज़हिद थे तमाम लोगों से ज़ियादा फ़सीह कलाम करने वाले थे । (احياء علوم الدين، كتاب آداب المعيشة و اخلاق النبوة، ج ٢، ص ٤٥٠) और सब से ज़ियादा अज़िज़ी व इन्क़िसारी फ़रमाने वाले थे । (المرجع السابق، بيان جملة من محاسن اخلاقه ﷺ، ج ٢، ص ٤٤٤) ईमान के ए'तिबार से सब से ज़ियादा सहीह और सब से बढ़ कर इन्साफ़ फ़रमाने वाले थे, नीज़ वसीउज़्ज़फ़ थे, कैदियों पर रहूम फ़रमाते, बड़ों की इज़्ज़त करते, ख़न्दा पेशानी से मुलाक़ात करते, गर्मियों की शिहत में भी रोज़ा रखते और तारीक रातों में क़ियाम करते । आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को रब्बे कुहूस عَزَّ وَجَلَّ ने यूं मुखातब फ़रमाया :

﴿يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا وَمُبَشِّرًا

وَنَذِيرًا ۝ وَدَاعِيًا إِلَى اللَّهِ بِأَذْنِهِ وَسِرَاجًا مُنِيرًا ۝

(پ ٢٢، الاحزاب: ٤٥، ٤٦)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ग़ैब की ख़बरें बताने वाले (नबी) ! बेशक हम ने तुम्हें भेजा हाज़िर नाज़िर और खुश ख़बरी देता और डर सुनाता । और **अब्बाह** की तरफ़ उस के हुक्म से बुलाता और चमका देने वाला आप़ताब ।

ऐ मेरे प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार, बिइज़ने परवर दगार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की तशरीफ़ आवरी हुई तो ज़िन्दगी में रौनक आ गई और बातिल ख़त्म हो गया, ईमान का चराग़ जला तो फिर कभी न बुझा । आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के मीलादे मुबारक की ख़बर देने वाली लतीफ़ व खुशगवार हवा सारी काइनात में चली और आप के नूरे मुबारक से सारी काइनात ने इज़्ज़त व शराफ़त का लिबास पहन लिया । जब इस का गुज़र फ़रस की ज़मीन से हुवा तो इस ने (सदियों से जलने वाले) आतश क़दे को बुझा दिया, और अहले फ़रस में से सब से पहले हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़रसी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इसे महसूस किया, आप बड़ी तेज़ी से हुसूले ईमान की ख़ातिर मन्ज़िलें तै करते हुवे हुज़ूर सय्यिदुल कौनैन صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की बारगाहे नाज़ में हाज़िर हुवे और **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ की वहदानियत का इक़रार कर के दाइए इस्लाम में दाख़िल हो गए, हज़रते सय्यिदुना सलमान रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने जान लिया कि हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की ख़्वाहिश क्या है । उन की कोशिश राइगां न गई बल्कि उन्हों ने आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की ज़बाने अक्दस से येह मुज्दए जां फ़िज़ा सुनने की कामयाबी हासिल कर ली कि “سَلَمَانُ مِنَّا” या'नी सलमान फ़ारसी (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ) हम में से हैं ।” (الطبقات الكبرى لابن سعد، الرقم ٣٥٩ سلمان فارسی، ج ٤، ص ٦٢)

जब इस लतीफ व खुश गवार हवा का गुजर अरजे रूम से हुवा तो सब से पहले अहले रूम के सरदार हजरते सय्यिदुना सुहैब रूमी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इस की महक को महसूस किया तो ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मख़्ज़ने जूदे सखावत, पैकरे अज़मतो शराफ़त, महबूबे रब्बुल इज़ज़त, मोहसिने इन्सानियत وَ اَلِه وَسَلَّم की बारगाहे अक्दस में हाज़िर हो कर दामने इस्लाम को थाम लिया और आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दीदार से फ़ैज़याब हो कर सहाबिय्यत का शरफ़ हासिल किया। जब मीलादे मुबारक की लतीफ व खुशगवार हवा मुल्के यमन की सर ज़मीन पर पहुंची तो इस की महक सब से पहले हजरते सय्यिदुना उवैस करनी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अपने ज़ाहिरो बातिन में महसूस की और मुस्तफ़ा जाने रहमत وَ اَلِه وَسَلَّم को पाने के लिये बिगैर किसी ज़ाहिरी मुआवजे के अपनी जान लड़ा दी और बा वुजूद वतन की दूरी के मुस्तफ़ा जाने का इनात صَلَّی اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ईमान लाए तो सय्यिदे अलम ने उन की तारीफ़ करते हुवे इरशाद फ़रमाया : “मैं यमन की तरफ़ से खुशबूए रहमान غُرَّ وَجَلَّ पाता हूँ (या'नी यमन रहमानी तजल्लियात के जुहूर का मक़ाम है। (مرقاة، ج ۱، ص ۲۳۶) ” (المسند للإمام احمد بن حنبل، مسند ابی هريرة، الحديث ۱۰۹۷۸، ج ۳، ص ۶۴۹)

आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के मक़ाम व मर्तबा और अज़मत व शान के लिये येही बात काफ़ी है कि **अब्बाह** صَلَّی اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब ने हजरते सय्यिदुना उमर फ़ारूक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को इरशाद फ़रमाया : “ऐ उमर (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) जब तुम उवैस करनी (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) से मिलो तो उसे सलाम कहना और कहना कि वोह तेरे लिये दुआए मग़फ़िरत करे क्यूंकि वोह कबीलए रबीआ और मज़र के बराबर लोगों की शफ़ाअत करेगा।”

(سير اعلام النبلاء، الرقم ۳۷۲، اويس قرنی، ج ۵، ص ۷۴)

जब आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मीलादे मुबारक की लतीफ व खुश गवार खुशबूदार हवा हबशा पहुंची तो वहां सब से पहले हजरते सय्यिदुना बिलाल हबशी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने लबैक कहा और उन्हें तस्दीक की तौफ़ीक़ ने ईमान तक पहुंचा दिया, फिर आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ अज़ानें दिया करते और यूं अपने ईमान का ए'लान करते और दीने इस्लाम के लिये परेशान रहते और हुस्ने अख़्लाक के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़िक्रे खैर के झन्डे जगह जगह गाड़ दिये तो नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन की खास तौर पर तारीफ़ फ़रमाते हुवे इरशाद फ़रमाया : “ऐ बिलाल (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) तुम मेरे तज़क़िरे आम करते और मेरी कद्रो मन्ज़िलत लोगों में उजागर करने की कोशिश करते हो, येही वजह है कि जब मैं जन्नत में दाख़िल हुवा तो मैं ने अपने आगे आगे तुम्हारे चलने की आवाज़ सुनी।”

(جامع الترمذی، ابواب المناقب، باب آیت علی قصر..... الخ، الحديث ۳۶۸۹، ص ۲۰۳، فيه “حشختک امامی” فقط)

ऐ मेरे प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! سُبْحَنَ اللّٰهِ غُرَّ وَجَلَّ इस हबशी गुलाम की तरफ़ इनायते रब्बानी सबक़त ले गई जब कि सरकारे अली वकार صَلَّی اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के कुरैशी चचा पर शकावत व बद बख़्ती ग़ालिब आ गई। जब हजरते सय्यिदुना सुहैब رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने रूम में

मा'रिफ़त की बू पाई तो महब्बते रसूल ﷺ में सरगर्दा व हैरान हो कर जंगलों में निकल गए और जब क़बूलिय्यत की लतीफ़ व खुश गवार हवाएं हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ पर चलीं तो घर वालों, वतन और सब से जुदा हो कर महज़ ज़ियारते नबी ﷺ की तलब में निकल खड़े हुवे। और जनाबे सादिको अमीन ﷺ ने अपने इस फ़रमाने आलीशान से हज़रते सय्यिदुना उवैस क़रनी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ को अच्छे वस्फ़ से मौसूफ़ कर दिया कि “मैं यमन की तरफ़ से खुशबूए रहमान عَزَّ وَجَلَّ पाता हूं।”

जब येही नसीमे सहूर यमन से गुज़री तो इस की महक पा कर हज़रते सय्यिदुना अमिर रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने बुतों की पूजा छोड़ कर इस्लाम का दामन थाम लिया और क़दम बोसिये रसूले करीम, रऊफ़ुरहीम ﷺ से मुशरफ़ हो गए और फिर महब्बत व इश्के रसूल ﷺ में मौत को गले लगा लिया। आप रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ का वाकिअ़ा अहले अक्ल व दानिश के लिये हैरान कुन है और वोह येह है कि इस्लाम लाने से क़ब्ल हज़रते सय्यिदुना अमिर रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ एक बुत की पूजा किया करते थे, आप की एक बेटी फ़ालिज व जुज़ाम की बीमारी में मुब्तला थी और चलने फिरने से क़ासिर थी, आप अपने बुत के पास बैठ जाते और अपनी बेटी को भी उस के सामने बिठा लेते और फिर कहते कि मेरी येह बेटी बीमार है इस का इलाज कर दे, अगर तेरे पास इस की शिफ़ा है तो इसे मुसीबत व बीमारी से छुटकारा दे दे, कई साल उस बुत से अपनी हाजत पूरी करने का मुतालबा करते रहे लेकिन उस ने उन की हाजत बरआरी न की। जब आप रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ पर तौफ़ीक़ व हिदायत की बादे इनायत चली तो आप रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने अपनी जौजए मोहतरमा से इरशाद फ़रमाया : “कब तक इस बहरे व गूंगे पथ्थर की इबादत करते रहेंगे जो न आवाज़ निकालता है, न बात करता है, मैं इसे दीने हक़ गुमान नहीं करता।” आप रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की बीवी ने अर्ज़ की : “आप हमें किसी रास्ते पर ले चलें। उम्मीद है कि हम राहे हक़ पा लेंगे, यकीनन इस मशरिफ़ व मगरिब का कोई तो खुदा होगा।”

हज़रते सय्यिदुना अमिर रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ अपने घर की छत पर बुत के सामने बैठे थे कि अचानक आप रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने एक नूर देखा जिस ने आफ़ाक़ को भर दिया और सारी मौजूदात को रोशनी से चमका दिया और फिर **اَبْلَاهُ** عَزَّ وَجَلَّ ने आप रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की निगाहे बसीरत से पर्दे हटा दिये ताकि आप ख़्वाबे ग़फ़लत से बेदार हो जाएं, फिर आप रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने देखा कि फ़िरिश्ते क़ितार दर क़ितार एक घर के गिर्द जम्अ हैं, पहाड़ सजदा रेज़, ज़मीन साकित व ज़ामिद और दरख़्त झुके हुवे हैं, खुशियां उरूज पर हैं और फिर एक आवाज़ सुनी कि हिदायत देने वाले नबिय्ये मोहतरम ﷺ की विलादत हो गई है, इस के बा'द आप अपने बुत के पास आए तो वोह भी औंधा पड़ा हुवा था, आप रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने अपनी बीवी से कहा : “येह क्या हो रहा है ? किस चीज़ का जुहूर हो रहा है ? येह कैसी ख़बर सुनाई दे रही है ?” फिर बुत को घूर कर देखा तो वोह कह रहा था : “तवज्जोह से सुनो ! एक बहुत बड़ी ख़बर का जुहूर हो चुका है और वोह येह कि आज वोह हस्ती दुन्या में तशरीफ़ ला चुकी है जो काइनात को शरफ़ व इफ़्तिख़ार बख़्शेगी,



वोह नबिय्ये आखिरुज्जमां صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ तशरीफ ला चुके हैं जिन का सदियों से इन्तिज़ार किया जा रहा था, जिन से हज़र व शजर गुफ्तगू फ़रमाएंगे, चांद उन की खातिर दो टुकड़े होगा और वोह बनी रबीआ व बनी मज़र के सरदार हैं।”

हज़रते सय्यिदुना अमिर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अपनी जौजा से इस्तिफ़सार फ़रमाया : “क्या तुम सुन रही हो ? येह बे जान पथ्थर क्या कह रहा है !” उस ने अर्ज़ की : “इस से उस मौलूदे मोहतरम का इस्मे गिरामी तो दरयाफ़्त करें।” आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने पूछा : “ऐ वोह गैबी आवाज़ जो इस सख़्त पथ्थर की ज़बान में गुफ़्तगू फ़रमा रही है ! तुझे उस ज़ात की क़सम जिस ने तुझे कुव्वते गोयाई अता फ़रमाई ! ज़रा येह तो बताओ कि इस पैदा होने वाली हस्ती का इस्मे गिरामी क्या है ?” आवाज़ आई : “हज़रते सय्यिदुना मुहम्मदे मुस्तफ़ा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ जो साहिबे ज़म ज़म व सफ़ा या’नी हज़रते सय्यिदुना इस्माईल عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के बेटे हैं, आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ज़मीन तहामा है, आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के दोनों कन्धों के दरमियान मोहरे नबुव्वत है और सख़्त गर्म धूम में बादल आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ पर साया फ़िगन रहेगा।”

हज़रते सय्यिदुना अमिर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अपनी अहलिय्या से इरशाद फ़रमाया : “चलो, आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की तलाश में निकलें, ताकि हम आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के सबब राहे हक़ पा लें।” अभी वोह दोनों मियां बीवी येह गुफ़्तगू कर ही रहे थे कि उन की बेटी जो नीचे घर में बीमार पड़ी थी, अचानक उन के पास छत पर आ खड़ी हुई और उन्हें पता भी न चला, आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने देखा तो पूछा : “ऐ बेटी ! कहां गया तेरा वोह दर्द और बीमारी जिस में तू हमेशा से मुब्तला थी ? और कहां गया तेरा बे क़रारी की वजह से रातों को जागना ?”

बेटी ने जवाब दिया : “ऐ मेरे वालिदे मोहतरम ! मैं ने ख़्वाब देखा कि मेरे सामने एक नूर है और एक शख़्स मेरे पास आया। मैं ने उस से दरयाफ़्त किया : “येह नूर किस का है जो मैं देख रही हूं ? और येह शख़्स कौन है जिस का नूरे मुबारक मुझ पर चमक रहा है ?” मुझे जवाब मिला : “येह नूर बनी अदनान के सरदार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ का है जिन से सारी काइनात मुअत्तर हो गई है।” मैं ने फिर पूछा : “इन का इस्मे गिरामी क्या है ?” तो जवाब मिला : “इन का नामे मुबारक मुहम्मद और अहमद صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ है, कैदियों और मुसीबत ज़दों पर रहम और मुजरिमों को मुआफ़ फ़रमाएंगे।”

मैं ने पूछा : “उन का दीन क्या है ?” जवाब मिला : “दीने हनीफ़।” मैं ने पूछा : “इन का नसब क्या है ?” जवाब मिला : “कुरैशी अदनानी।” मैं ने पूछा : “येह किस की इबादत करेंगे ?” जवाब मिला “खुदाए वहदहू लाशरीक عَزَّ وَجَلَّ की।” मैं ने पूछा : “ऐ मुझ से ख़िताब फ़रमाने वाले ! तू कौन है ?” जवाब मिला : “मैं उन की आमद की बिशारत देने वाले फ़िरिशतों में से एक हूं।”

मैं ने अर्ज़ की : “जिस दुख दर्द में मैं मुब्तला हूं इस के बारे में तेरा क्या ख़याल है ?” जवाब दिया : “बारगाहे रब्बुल इज़ज़त عَزَّ وَجَلَّ में उन की अज़मत और जाहो मर्तबा का वसीला पेश करो कि **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ ने खुद इरशाद फ़रमाया है : मैं ने अपना राज़ और अपनी बुरहान उन को वदीअत कर दी है, अब जिस ने भी उन के वसीले से मुझ से दुआ की मैं उस को ज़रूर क़बूल करूंगा

और क़ियामत के दिन अपने नाफ़रमान के हक़ में भी उन की शफ़ाअत क़बूल फ़रमाऊंगा।” पस मैं ने अपने हाथ फैला दिये और **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की बारगाह में आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मर्तबए कमाल का वासिता दे कर दुआ की और अपने हाथ जिस्म पर फेर लिये। अब जब कि मैं बेदार हुई तो बिल्कुल तन्दुरुस्त हो चुकी थी जैसा कि आप मुझे देख रहे हैं हज़रते सय्यिदुना अमिर रَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अपनी जौजा से फ़रमाया : “यक़ीनन इस मौलूदे मसऊद صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़बर खुश आइन्द और बड़ी दिल आवेज़ है, हम आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अज़ीबो ग़रीब निशानियां सुन और देख रहे हैं, मैं तो ज़रूर आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم की महबूत में वादियां और घाटियां उबूर करता हुवा आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم की बारगाह तक रसाई हासिल करूंगा।

चुनान्चे, वोह काफ़िले के हमराह घर से निकल खड़े हुवे और मक्कए मुकर्रमा **زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا** का क़स्द किया। वहां पहुंच कर हज़रते सय्यिदतुना आमिना رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के घर के मुतअल्लिक दरयाफ़्त किया, और फिर काशानए अक़दस के दरवाजे पर दस्तक दी। जवाब मिलने पर अर्ज़ की : “हमें उस नौ मौलूद हस्ती صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत करा दें जिस के नूर की बदौलत **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने मौजूदात को मुनव्वर फ़रमाया है और जिस की वजह से उस के आबाओ अजदाद शरफ़ वाले हो गए हैं।” इस पर हज़रते सय्यिदतुना आमिना रَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने इरशाद फ़रमाया : “मैं हरगिज़ इस हस्ती صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم को बाहर नहीं निकालूंगी क्यूंकि मुझे यहूदियों की जानिब से तक्लीफ़ पहुंचाए जाने का ख़तरा है।”

उन्होंने ने अर्ज़ की : “हम ने तो आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم की महबूत में अपने वतन से जुदाई गवारा की, हबीबे खुदा صَلَّय اللّٰهُ तَعَالٰय عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का हुस्नो जमाल देखने के लिये अपना दीन छोड़ा और अपने बदनो को थकावट से चूर चूर कर दिया।”

हज़रते सय्यिदतुना आमिना रَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने इरशाद फ़रमाया : “अगर ऐसा है तो फिर इन्तिज़ार करो, कुछ देर तक मज़ीद सब्र करो, क़तअन जल्द बाज़ी से काम न लो फिर आप रَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا कुछ देर के लिये दरवाजे के पास से हट गई और दोबारा वापस आ कर उन्हें इरशाद फ़रमाया : “अन्दर आ जाओ।” जब शम्फ़ रिसालत के परवानों ने इजाज़त पा कर बारयाबी का शरफ़ हासिल किया तो अन्वारे हबीब صَلَّय اللّٰهُ तَعَالٰय عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم के जल्वे देख कर निषार हो गए और बे इख़्तियार तकबीर व तहलील के ना‘रे ज़बानों पर जारी हो गए, और फिर जब रुख़े जैबा से निफ़ाब हटा तो आप صَلَّय اللّٰهُ तَعَالٰय عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم के चेहरए अक़दस से ऐसी रोशनी नुमूदार हुई जिस की किरनें आस्मान तक जा पहुंचीं। येह देख कर सब खुशी व मसरत से बे खुद हो गए। क़रीब था कि रो‘ब व दबदबे से बेहोश हो जाते लेकिन संभल गए और आगे बढ़ कर क़दम बोसी की सआदत हासिल की और आप صَلَّय اللّٰهُ तَعَالٰय عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم पर ईमान ले आए।

हज़रते सय्यिदतुना आमिना रَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने उन से इरशाद फ़रमाया : “जल्दी करो क्यूंकि आप صَلَّय اللّٰهُ तَعَالٰय عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم के दादाजान हज़रते सय्यिदुना अब्दुल मुत्तलिब रَضِیَ اللّٰهُ तَعَالٰی عَنْهُ ने वा‘दा ले रखा है कि मैं आप صَلَّय اللّٰهُ तَعَالٰय عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم को लोगों से छुपा कर रखूं और आप صَلَّय اللّٰهُ तَعَالٰय عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم के शान व मर्तबे को मख़्फ़ी रखूं।”

वोह हबीबे खुदा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की बारगाह से इस हाल में जुदा हुवे कि उन के दिलों में महबूब की आग भड़क रही थी फिर हज़रते सय्यिदुना आमिर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने बेखुदी में अपना हाथ दिल पर रख दिया और कहा : “मुझे वापस हज़रते सय्यिदतुना आमिना رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا के दरे दौलत पर ले चलो, उन से दूसरी बार रुखे मुस्तफ़ा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के हुस्नो जमाल की ज़ियारत की भीक मागते हैं। लिहाज़ा वोह सब इन की येह बे क़रारी देख कर वापस चल पड़े। जब हज़रते सय्यिदुना आमिर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को देखा तो दौड़ कर आप صَلَّى اللَّهُ تَعालَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के कदमैने शरीफ़ैन से लिपट गए और घुटी घुटी सांसें लेने लगे और फिर इसी हालत में इस जहाने फ़ानी से कूच कर गए और **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने इन की रूहे पाक को जन्नत में पहुंचा दिया।

**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! आशिकों और सच्ची महबूब करने वालों के येही अवसाफ़ होते हैं।

ऐ मेरे प्यारे इस्लामी भाइयो ! उस महबूबे खुदा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के अवसाफ़ हमीदा सुन लो, जिन्होंने ने सारी काइनात को इज़्ज़त और हुस्नो जमाल से मुजय्यन कर दिया है कि आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ का मुबारक नूर आफ़ाक में चमक रहा है, और **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ ने आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ को रो'ब व दबदबा और फ़ज़्लो करम का लुबादा ओढ़ा रखा है, महज़ आप صَلَّى اللَّهُ तَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की बरकत से हज़रते सय्यिदतुना आमिना رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا से हम्ल की तकालीफ़ को आसान कर दिया और आप صَلَّى اللَّهُ तَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ को इस जहाने फ़ानी में भेज कर पूरी काइनात को आप صَلَّى اللَّهُ तَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की महक व खुशबू से मुअत्तर कर दिया।

**सय्यिदतुना हलीमा सा'दिय्या रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا की सज़ादत मन्दी :**

हज़रते सय्यिदतुना आमिना رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا जुहूरे नफ़ास की वजह से कमज़ोरी महसूस करने लगीं और इस ग़म में मुब्तला हो गई कि वोह रसूले अकरम, नबिय्ये मोहतशम صَلَّى اللَّهُ तَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ को अपना दूध न पिला सकेंगी तो जानवरों, परन्दों और हवाओं में से हर एक येह दुआ करने लगा : “या **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ हमें इजाज़त दे कि हम तेरी मख़्लूक में तुझे सब से ज़ियादा पसन्दीदा व अज़ीज़ हस्ती की परवरिश की सआदत पाएं।”

फ़िरिशतों ने अर्ज़ की : “या **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ तू जानता है कि हमें तेरे महबूब صَلَّى اللَّهُ तَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ से कितनी महबूब है लिहाज़ा तू हमें उन की परवरिश करने की इजाज़त अता फ़रमा ताकि हम आप صَلَّى اللَّهُ तَعَالَى عَلَيْهِ وَआलِهِ وَسَلَّمَ के चेहरए अक़दस के नूर से शरफ़ पाएं और इस की बरकत से कुछ हिस्सा पाएं।” इन सब की इल्तिजा व फ़रयाद के जवाब में **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : “मैं इस बात पर क़ादिर हूं कि इन की परवरिश बिग़ैर किसी सबब और दूध पिलाने वाली के करूं लेकिन मैं फ़ैसला फ़रमा चुका हूं और मैं अपनी हिक्मत व दानाई के तहत जब किसी को कुछ अता कर दूं तो कभी उस से वापस नहीं लेता और मैं ने अज़ल में अपनी हिक्मत के मुताबिक़ येह लिख दिया था कि इस दुर्रे यतीम और नफ़से करीम को हिक्मत वाली हलीमा के इलावा कोई दूध नहीं पिलाएगा।”



उस वक़्त हज़रते सय्यिदतुना हलीमा सा'दिय्या رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا अपने शहर में किया मफ़रमा थीं तो ज़बाने कुदरत ने उन को पुकारा और हुदी ख़्वां ने हलीमा की सअ़ादत मन्दी का यूं नग़मा गुनगुनाया :

“ऐ हलीमा सा'दिय्या ! उठ जा और उस हस्ती की रज़ाअत का शरफ़ हासिल कर ले जिस का हुस्नो जमाल यक्ता है, और अगर वोह हस्ती न होती तो मरीजे इश्क़ गिरिफ़्तारे महबूबत न होता, और न ही फ़रहत व सुरूर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ले जाता, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तो वोह हस्ती हैं कि जिन का हुस्न बे मिषाल है, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़ातिर तो उश्शाक़ ने अपनी गर्दन तक कटा दी। ऐ हलीमा सा'दिय्या ! जब बारगाहे मुस्तफ़ा (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) में हाज़िरी की सअ़ादत हासिल करेगी तो ऐसे कुर्ब की बिशारत पाएंगी कि इस के बा'द कभी भी किसी तकलीफ़ का सामना न करेगी, आप की रज़ाअत की मेंहदी तेरे हाथों में रची हुई है, जब वद्दोहा के रोशन व मुनव्वर चेहरे की ज़ियारत करे और चांदी से मुज़य्यन व आरास्ता लब व रुख़्सार के जल्वे और बे मिष्ल हुस्न देखे तो अपने शोहर से कहना : “किसी किस्म का ख़ौफ़ न खा कि इस बा बरकत हस्ती के सदके हम अपना हर मक़सूद पाएंगे।”

आम तौर पर अहले मक्का की आदत थी कि वोह अपने शीर ख़्वार बच्चों को रज़ाअत के लिये मक्का से बाहर भेज देते थे, हज़रते सय्यिदतुना हलीमा सा'दिय्या رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا इरशाद फ़रमाती हैं : “एक साल हम क़हूत का शिकार हो गए न तो आस्मान से बाराने रहमत बरसा और न ही ज़मीन ने कुछ उगाया, हम चालीस (40) औरतें शीर ख़्वार बच्चों की तलाश में मक्का आईं ताकि उन बच्चों को दूध पिलाने के इवज़ उन के घर वाले हमारी कुछ मदद करें, हम मक्काए मुकर्रमा में दाख़िल हुई तो अहले मक्का अपने बच्चों को ले कर का'बए मुअज़्ज़मा رَاَدَهَا اللّٰهُ شَرْفًا وَتَعْظِيمًا आ गए, हर बाप अपने बेटे के पहलू में खड़ा हो गया, अब हर औरत आगे बढ़ती और एक शीर ख़्वार बच्चा उठा लेती लेकिन जब मैं ने अपनी बारी पर देखा तो सिवाए एक बच्चे के किसी को न पाया और उस के पहलू में भी कोई न था, मैं ने उस बच्चे के वालिद के मुतअल्लिक़ दरयाफ़्त किया तो मुझे बताया गया कि येह यतीम है, इस का बाप उस वक़्त दुन्या से कूच कर गया था जब इस की मां हामिला थी और अब वोह (या'नी बच्चे की मां) कमज़ोर व नातुवां है।” मैं ने अपने ख़ावन्द से कहा : “इस दुर् यतीम के सिवा अब कोई बच्चा बाकी नहीं।” तो उस ने कहा : “**اَللّٰهُ عَزَّ وَجَلَّ** तुम पर रहम फ़रमाए, इसी को ले लो, हम ख़ाली हाथ वापस नहीं जाएंगे, उम्मीद है कि **اَللّٰهُ عَزَّ وَجَلَّ** हमें इस का अज़्रो षवाब अ़ता फ़रमाएगा।” और मुअमला भी ऐसा ही था।

हज़रते सय्यिदतुना हलीमा सा'दिय्या رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं : “मैं ने उस दुर् यतीम को ले लिया, मैं उस वक़्त खुद भी बच्चे की पैदाइश की वजह से कमज़ोरी का शिकार थी और मेरी छाती में कमज़ोरी और भूक की वजह से दूध का एक क़तरा भी न था। लेकिन जब मैं ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को उठाया तो मेरी कमज़ोरी कुव्वत में बदल गई और जब अपना पिस्तान आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم के दहने मुबारक में रखा तो दुध बहने लगा, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم ने ख़ूब सैर हो कर पिया और मैं ने एक ग़ैबी आवाज़ सुनी : “ऐ हलीमा सा'दिय्या ! तुझे येह हाशिमी शहज़ादा मुबारक हो।”

हज़रते सय्यिदतुना हलीमा सा'दिय्या رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا फ़रमाती हैं : “फिर मैं अपनी सुवारी पर सुवार हुई जिस की हालत येह थी कि कमज़ोरी से चल भी न सकती थी। अब वोह काफ़िले की बाकी तमाम सुवारियों से आगे आगे भागने लगी। इस पर सब लोग हैरान थे। जब हम ने खुश्क दरख़्त तले पड़ाव किया तो वोह सर सब्ज़ हो गया और जब हम आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ले कर तारीक घर में दाख़िल हुवे तो आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का चेहरा अन्वर चराग़ की तरह चमकने लगा यहां तक कि आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का नूर चराग़ के नूर पर ग़ालिब आ गया।”

मैं ने अपने शोहर से अर्ज़ की : “क्या आप ने भी मुलाहज़ा किया है जो मैं देख रही हूं?” तो उन्होंने ने जवाब दिया : “क्या मैं ने न कहा था कि येह मुबारक हस्ती है!” आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا फ़रमाती हैं : “जब हम घर पहुंचे तो हमारे पास जो बकरियां थीं वोह बहुत कमज़ोर थीं। हम ने आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अपने हाथों पर उठाया और आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم को ले कर उन बकरियों के पास से गुज़रे तो देखा कि उन की हालत तब्दील हो चुकी थी। आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم की बरकत से हमारे रिज़क़ में कषरत हो गई हत्ता कि बाकी तमाम दूध पिलाने वाली औरतें आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم की वजह से हम पर रश्क करने लगीं।”

हज़रते सय्यिदतुना हलीमा सा'दिय्या رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا फ़रमाती हैं : “जब मैं आप صَلَّय اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم की तरफ़ वाला पिस्तान आप صَلَّय اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم के दहने मुबारक में रखती तो आप صَلَّय اللّٰهُ तَعَالٰى عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم दूध नोश फ़रमाते लेकिन जब आप صَلَّय اللّٰهُ तَعَالٰى عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم के रज़ाई भाई की तरफ़ वाला पिस्तान आप के मुंह में रखती तो दूध न पीते, लिहाज़ा मैं ने जान लिया कि आप صَلَّय लल्लु इन्साफ़ फ़रमाने वाले हैं।”

हज़रते सय्यिदतुना हलीमा सा'दिय्या رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا फ़रमाती हैं : एक मरतबा बारिश न हुई तो सब लोग कहने लगे : “ऐ हलीमा सा'दिय्या (رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا) तुम्हारे पास जो मुबारक बच्चा है, अगर तुम इस को अपने साथ ले लो तो हम इस की बरकत से बारिश त़लब करें तो येह हमारे लिये ख़ैरो बरकत का बाइष होगा।” आप फ़रमाती हैं : “मैं आप صَلَّय लल्लु त़लब की तो देखते ही देखते बादल ने इस क़दर मूसलाधार बारिश बरसाई कि हमें डूबने का ख़दशा लाहिक् हो गया।”

हज़रते सय्यिदतुना हलीमा सा'दिय्या رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا फ़रमाती हैं : “आप صَلَّय लल्लु मुद्दे रज़ाअ़त की तक्मील तक हमारे पास क़ियाम पज़ीर रहे। जब हम ने आप صَلَّय लल्लु को आप صَلَّय लल्लु की वालिदए मोहतरमा के पास वापस ले जाने का इरादा किया तो मेरे ख़ावन्द कहने लगे : “हम किसी तरह आप صَلَّय लल्लु को वापस ले आएंगे, हम ने आप صَلَّय लल्लु की बदौलत कई बरकतें और रहमतें हासिल की हैं।” आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا फ़रमाती हैं कि “हम आप صَلَّय लल्लु को ले कर आप صَلَّय लल्लु की वालिदए

माजिदा की खिदमते अक़दस में हाज़िर हुवे तो अर्ज़ की : “हम ने आप के ज़िगर गोशे की बदौलत बहुत ख़ैरो बरकत हासिल की है, हम आप से अर्ज़ करते हैं कि मज़ीद एक साल इन को हमारे पास रहने दें।” तो हज़रते सय्यिदतुना आमिना رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا ने इरशाद फ़रमाया : “ठीक है, तुम इन को अपने पास रख सकते हो।” लिहाज़ा हम आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को दोबारा पा कर बे इन्तिहा खुश हुवे।

आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ अपने रज़ाई भाई के साथ मिल कर बकरियां चराया करते थे, आप रज़ाई भाई एक दिन अपनी वालिदा से अर्ज़ करते हैं : “ऐ अम्मी जान ! मेरा हिजाज़ी भाई जब कभी किसी खुशक वादी में क़दम रखता है तो उस वादी की ताज़गी व हरयाली लौट आती है, और जब बकरियों को पानी पिलाने की ख़ातिर कुंवें के पास तशरीफ़ लाता है तो पानी खुद ब खुद कुंवें के मुंह तक बुलन्द हो जाता है और जब धूप में सो जाए तो बादल आ कर उस को सूरज की तपिश में साया मुहय्या करता है, सोते हुवे उस के पास दरिन्दे आते और क़दम बोसी करते हैं।” तो हज़रते सय्यिदतुना हलीमा सा’दिय्या رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا ने इरशाद फ़रमाया : “ऐ मेरे बेटे ! अपने भाई का ख़याल रखना।”

एक दिन दोनों भाई अपनी आदत के मुताबिक़ खेलने की ग़रज़ से बाहर निकल गए। आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का रज़ाई भाई घर वापस आया तो उस का रंग उड़ा हुवा था। वोह आ कर कहने लगा : “ऐ अम्मी जान ! मेरे हिजाज़ी भाई को देखिये, वोह ज़ख़्मी हो गया है।” पूछा : “उन को क्या हुवा ?” उस ने बताया : “मैं और मेरा भाई खेल रहे थे कि रोशन चेहरों वाले तीन अफ़राद आए, उन्होंने ने सब्ज़ लिबास पहने हुवे थे, उन के पास तश्त और सोने चांदी का कूज़ा था, उन्होंने ने मेरे भाई को उठाया और फिर लैटा कर सीनए मुबारका को शक कर के क़ल्बे अतहर को बाहर निकाल लिया।” हज़रते सय्यिदतुना हलीमा सा’दिय्या رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا फ़रमाती हैं : “हम तेज़ी से आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की तरफ़ भागे तो हम ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ को बिल्कुल सहीह व सालिम व खुश व ख़ुरम पाया, न तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ को कोई तक्लीफ़ थी और न ही आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के सीनए मुबारका पर कोई निशान था।”

(السيرة النبوية لابن هشام، ولاد رسول الله ﷺ ورضاعته، ج ١، ص ١٦٤، بتغيير)

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا ने इरशाद फ़रमाया : “**अब्बाह** غَزَّ وَجَلَّ ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की बारगाह में हज़रते सय्यिदुना जिब्राईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام, हज़रते सय्यिदुना मीकाईल عَلَيْهِ السَّلَام और हज़रते सय्यिदुना इसराफ़ील عَلَيْهِ السَّلَام को भेजा, इन के पास एक तश्त और कूज़ा था, जिस में जन्नत का पानी और मोहर बन्द पाकीज़ा शराब थी और सब्ज़ रेशम का रूमाल भी था। हज़रते सय्यिदुना जिब्राईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ को लिटाया और हुक्मे इलाही غَزَّ وَجَلَّ से आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ का सीनए मुबारका शक़ फ़रमाया,



फिर क़ल्बे अतहर को शक़ कर के उस में से एक काले रंग का लोथड़ा निकाल दिया और अर्ज़ की : “ऐ सय्यिदल मुरसलीन صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़ल्बे अतहर में येह शैतान का हिस्सा था ।” फिर क़ल्बे अतहर पर पानी उंडेल कर मुकम्मल तौर पर धोया गया इस के बा’द फिर पहले की तरह इस की जगह पर वापस रख दिया । आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم के सीनए खुशबूदार में इस शक़ किये जाने के बा’द दोबारा सीये जाने का निशान मौजूद था ।

(صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب الاسراء برسول اللّٰہ ﷺ..... الخ، الحدیث ۱۶۲، ص ۶۱ مفہوماً، راوی انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ)

हत्ता कि आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم इस ज़ाहिरी दुन्या से पर्दा फ़रमा गए । चुनान्चे, **अल्लाह** इरशाद फ़रमाता है :

﴿۲﴾ اَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ ۚ (پ ۳۰، الم نشرح : ۱)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** क्या हम ने तुम्हारे लिये सीना कुशादा न किया । (1)

फिर हज़रते सय्यिदुना जिब्राईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ने हज़रते सय्यिदुना मीकाईल عَلَيْهِ السَّلَام से इरशाद फ़रमाया : “इन का दस उम्मतियों के मुक़ाबले में वज़्न करें ।” जब हज़रते सय्यिदुना मीकाईल عَلَيْهِ السَّلَام ने वज़्न किया तो आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم उन सब पर ग़ालिब आ गए इस के बा’द हज़रते सय्यिदुना जिब्राईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ने हज़रते सय्यिदुना मीकाईल عَلَيْهِ السَّلَام से फ़रमाया : “तमाम अहले ज़मीन के मुक़ाबले में वज़्न करें ।” जब उन्होंने ने वज़्न किया तो आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم फिर भी सब पर ग़ालिब रहे । आप صَلَّय اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ही बदरे कमाल और हुस्नो जमाल का हसीन ताज, और शरफ़ व बुजुर्गी का हिलाल हैं, तमाम फ़ज़ाइल और क़ाबिले फ़ख़्र बातों के मालिक हैं और कल बरोजे क़ियामत दुरूदो सलाम का नज़राना पेश करने वालों की शफ़ाअत फ़रमाएंगे । (اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ)

**प्यारी प्यारी दुआ :**

या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम तेरे हबीब صَلَّय اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मीलादे पाक में हाज़िर हैं, हमें महज़ आप صَلَّय اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم की बरकत से इज़्ज़त का लिबास अता फ़रमा, जन्मतुल फ़िरदौस में आप صَلَّय اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस अता फ़रमा, और जन्मत में दीदारे मुस्तफ़ा صَلَّय اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم से बहरामन्द फ़रमा ।

①.....मुफ़्स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ आ’ला हज़रत, सदरुल अफ़ज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَامُय तपस्वीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारक के तहत फ़रमाते हैं : “या’नी हम ने आप के सीने को कुशादा और वसीअ किया हिदायत व मा’रिफ़त और मवईज़त व नबुव्वत और इल्मो हिकमत के लिये, यहां तक कि आलमे ग़ैब व शहादत इस की वुसूअत में समा गए और अज़ाइके जिस्मानिया अन्वारे रूहानिया के लिये मानेअ न हो सके और उलूमे लदुनिया व हुक्मे इलाहिया व मा’रिफ़ते रब्बानिया व हक़ाइके रहमानिया सीनए पाक में जल्वा नुमा हुवे और ज़ाहिरी शहें सदर भी बार बार हुवा इब्तिदाए उम्र शरीफ़ में और इब्तिदाए नुजूल वदय के वक़्त और शबे मे’राज जैसा कि अहदाीष में आया है । उस की शकल येह थी कि जिब्रीले अमीन ने सीनए पाक को चाक कर के क़ल्बे मुबारक निकाला और ज़ेरे त़श्त में आबे ज़मज़म से गुस्ल दिया और नूर व हिकमत से भर कर उस को उस की जगह रख दिया ।”

या **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ अपने नबिय्ये करीम रऊफुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ और आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की आले मुबारक का सदका ! हमारी इमदाद, मुआवनत और ग़म गुसारी फ़रमा, हमें जन्नत में ठिकाना अता फ़रमा और आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की बरकत से क़बूलिय्यत और इज़्ज़त व शरफ़ के मरातिब अता फ़रमा ।

या **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ हम तुझ से हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़लाक عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के वसीले के आल व अस्हाब के आल व अस्हाब के वसीले से सुवाल करते हैं कि हमारे गुनाह बख़्श दे और हर किस्म के ख़ौफ़ व हलाकत से हमारी हिफ़ाज़त फ़रमा, जन्नतुल फ़िरदौस में हमें आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का दीदार नसीब फ़रमा, हमारे ज़ाहिरी व बातिनी छोटे छोटे आ'माल भी क़बूल फ़रमा, महज़ अपनी कुदरते कामिला से हम सब पर रहमो करम फ़रमा और हमारी बख़्शिश फ़रमा कि यकीनन तू ही मुआफ़ फ़रमाने वाला और बख़्शाने वाला है । ऐ सब से बढ़ कर रहम फ़रमाने वाले ! हम पर अपना ख़ास रहम व फ़ज़ल फ़रमा । (आमीन)

وَصَلَّى اللهُ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِهِ وَصَحْبِهِ أَجْمَعِينَ



दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबियत के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र और रोज़ाना फ़िक्के मदीना के ज़रीए मदनी इन्आमात का रिसाला पुर कर के हर मदनी (इस्लामी) माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के (दा'वते इस्लामी के) ज़िम्मेदार को जम्अ करवाने का मा'मूल बना लीजिये اِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा ।

**बयान 52 :** **जियादतै शैजाण रसूल** صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ  
**हम्बे बारी तझाला :**

तमाम ता'रीफें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने अपने नेक बन्दों को शरफ व फजिलत वाले घर (या'नी खानए का'बा) और सब से बड़े मज़ारे अक़दस (या'नी रौज़ए रसूल صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) की तरफ बुलाया। उन के लिये इस राह को आसान कर दिया और तौफीक को उन का राहनुमा बनाया तो वोह अपने मक़ासिद व मतालिब तक पहुंचने में कामयाब हो गए। उस ने इन को अपने दरवाजे पर खड़ा कर के अपनी बारगाहे अली का कुर्ब बख़्शा तो उन को इज़्ज़त व मरतबा मिला और वोह अपनी किस्मत पर नाज़ करने लगे। उस ने उन को ज़ियाफ़त व मेहमानी के साथ ख़ास फ़रमाया तो उन्होंने ने उम्मुल कुरा (या'नी मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللَّهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا) की हाज़िरी के लिये बे आबो गयाह मैदानों का सफ़र तै किया। और उस ने इन बयाबानों के सफ़र में इन के लिये लज़्ज़त रख दी, उन के दिलों में ईमान को नक़्श फ़रमा दिया और उन्हें अपनी रिज़ा व खुश्नूदी का मुज़दा सुनाया। पस उन्होंने ने बैतुल्लाह शरीफ का मुकम्मल तवाफ़ किया। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने वादिये मिना<sup>(1)</sup> में उन्हें खुश ख़बरी दी। मक़ामे ख़ैफ़<sup>(2)</sup> में खौफ़ व मशक्क़त और तमाम ख़तरात से राहत व चैन बख़्शा। उन्हें फ़ैज़ान के लिये मैदाने अरफ़ात<sup>(3)</sup> पहुंचाया ताकि उन के गुनाहों और नाफ़रमानियों को मिटा दे। इस लिये वोह अपने गुनाहों को छोड़ कर बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में हाज़िर हुवे। उन्होंने ने मुज्दलिफ़ा<sup>(4)</sup> में खुशी व मसरत के साथ पाक बारगाह से षवाब पाया। मशअरे हराम<sup>(5)</sup> के पास **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन के लिये अपनी रिज़ा का इन्आम लिख दिया इस तरह कि इन्हें जहन्नम से नजात अता फ़रमा दी। उन बन्दों ने सरो को बरहना कर लिया। बाल मुन्डवा दिये। अपने मेहरबान बहुत ज़ियादा मुआफ़ फ़रमाने वाले मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ की तस्बीह व तक़दीस क़षरत से करने लगे। उन्होंने ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर अपनी कुरबानियां पेश कीं और जानवरों को ज़ब्ह किया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन से बहुत बड़े अज़्रो षवाब का वा'दा फ़रमा लिया और उन के गुनाहों के दफ़्तरों को मिटा दिया। रमिये जिमार (या'नी शैतान को कंकरियां मारने)<sup>(6)</sup> के वक़्त, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन को ग़मों से नजात अता फ़रमाई। फिर जब उन्होंने ने तवाफ़े वदाअ<sup>(7)</sup> कर लिया और

(1).....**मिना** : मस्जिदुल हराम से पांच (5) किलो मीटर पर वोह वादी जहां हाजी साहिबान क़ियाम करते हैं। "मिना" हरम में शामिल है (रफ़ीकुल हरमैन, स. 42) (2)....**ख़ैफ़** : मिना के क़रीब मक्का में एक जगह का नाम है (لسان العرب، ج 1، ص 1209) (वहां एक मस्जिद है जिसे) मस्जिदे ख़ैफ़ कहा जाता है। येह मिना के जुनूबी पहाड़ के दामन में वाक़ेअ है (जिस की वजह से इसे मस्जिदे मिना भी कह दिया जाता है)। (3).....**अरफ़ात** : मिना से तक़रीबन ग्यारह (11) किलो मीटर दूर मैदान जहां 9 जुल हिज्जा तमाम हाजी साहिबान जम्अ होते हैं। अरफ़ात हरम से ख़ारिज है। (रफ़ीकुल हरमैन, स. 42) (4)....**मुज्दलिफ़ा** : "मिना से अरफ़ात की तरफ़ तक़रीबन पांच (5) किलो मीटर पर वाक़ेअ मैदान जहां अरफ़ात से वापसी पर रात बसर करते हैं। और येह सुन्नत है और सुब्हे सादिक़ और तुलूए आफ़ताब के दरमियान कम अज़ कम एक लम्हा वुकूफ़ वाजिब है। (रफ़ीकुल हरमैन, स. 4243) (5)....**मशअरे हराम** : मुज्दलिफ़ा के क़रीब एक पहाड़ का नाम है जिसे जबले कुज़्ज़ह भी कहते हैं। (बहारे शरीअत, जि. अव्वल, हिस्सए शशुम की इस्तिलाहात, स.70) (6).....**जमरात** : मिना में तीन मक़ामात जहां कंकरियां मारी जाती हैं पहले का नाम "जम्रतुल उख़रा या जम्रतुल अक़बा" है। इसे बड़ा शैतान भी बोलेते हैं। दूसरे को जम्रतुल वुस्ता (मंज़ला शैतान) और तीसरे को जम्रतुल ऊला (छोटा शैतान) कहते हैं। (रफ़ीकुल हरमैन, स. 42) (7).....**तवाफ़े वदाअ** : हज़ के बा'द मक्कए मुकर्रमा से रुख़्सत होते हुवे किया जाता है। येह हर आफ़ाकी (या'नी मीक़ात के हूदू से बाहर रहने वाले) हाजी पर वाजिब है। (रफ़ीकुल हरमैन, स. 35)



लौटने का पुख्ता इरादा किया तो अपने शौक को मुकम्मल तौर पर बारगाहे नबिय्ये मुख्तार, शफीए रोजे शुमार में जल्द हाजिरी की तरफ़ मुतवज्जेह कर दिया। वोह नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जिन को **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ ने बे शुमार मो'जिज़ात और निशानियां दे कर मबऊष फ़रमाया। उन्हें सब से अशरफ़ व आ'ला कबीले में पैदा फ़रमाया। उन के ज़रीए मज़र और नज़्ज़ार कबीलों को इज़्ज़त व शरफ़ बख़्शा। उन के दीन को सब से सीधा रास्ता और उन की शरीअत को सलाह व ख़ैर बनाया। पस हुरूफ़े तहज्जी में से हर हर्फ़ इन के मक़ाम व मर्तबे की अज़मत व रिफ़अत पर गवाह है। चुनान्चे,

**हुस्फ़े तहज्जी और शाने मुस्तफ़ा** صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

(1)....“الف” आप صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़द व क़ामत की तरफ़ इशारा करता है।  
 (2)....“باء” से मुराद आप صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बहजत या'नी हुस्न व ख़ूब सूरती है जिस ने चांद और सूरज को रोशन किया और चमकाया। (3).....“تاء” से मुराद ताईद है जो आप صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की हर शैतान मर्दूद से हिफ़ाज़त करती है। (4).....“ثاء” से मुराद षबात है जिस की वजह से आप صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हर हाल में षाबित क़दम रहे लिहाज़ा हमेशा अदल फ़रमाया किसी पर जुल्म न किया। (5).....“جیم” से मुराद जूदो वफ़ा है जिस की तरफ़ हमा वक़्त मुतवज्जेह रहे। (6)....“حاء” से मुराद हिल्म व बुजुर्गी है जिसे **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये पसन्द फ़रमाया। (7).....“خاء” से मुराद इख़्तिसास व सफ़ा है या'नी **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को बे शुमार ख़ूबियां अता फ़रमा कर हर तरह के मैले पन से पाक व साफ़ रखा। (8).....“ذال” से मुराद दवामे एहसान या'नी बारगाहे इलाही **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ से नेकी व भलाई पर हमेशगी की तौफीक़ अता हुई पस आप صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की हैबत व जलाल से बुत औंधे मुंह गिर गए। (9).....“ذال” से मुराद ज़िल्लत से हिफ़ाज़त है या'नी आप صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ाते अ़ाली से ज़िल्लत व रुस्वाई दूर रही हत्ता कि वोह खुद ही हक़ारत व ज़िल्लत में मुब्तला हो गई। (10)....“زاء” से मुराद रहमत है जिस के साथ **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मबऊष फ़रमाया। (11)....“زاء” से मुराद आप صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का बे मिष्ल जोहद व क़नाअत है। (12).....“سین” से मुराद सियादत व सरदारी है कि **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को तमाम मख़्लूक की सरदारी से सरफ़राज़ कर के मुमताज़ फ़रमाया। (13).....“شین” से मुराद शफ़ाअत है कि रहूमतुल्लिल अ़ालमीन, शफीज़ल मुज़निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बरोजे क़ियामत गुनहगारों और नाफ़रमानों की शफ़ाअत व सिफ़ारिश फ़रमाएंगे। (14).....“صاد” से मुराद सियानत व हिफ़ाज़त है कि **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की हर ऐब से हिफ़ाज़त फ़रमाई और अमानत की

तल्वार आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के साथ कर दी। (15)....“صَاد” से मुराद ज़िया व अन्वार हैं जो **अब्बाह** ने आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को अता फ़रमाए। (16).....“طَاء” से मुराद तरीके इक्बाल (या’नी राहे उरूज) है जो **अब्बाह** ने आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के लिये खोल दी। (17)....“ظَاء” से मुराद जुल्म व गुमराही है कि **अब्बाह** ने आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ को तुफ़ैल आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की उम्मत को जुल्म व गुमराही से निकाल दिया। (18).....“فَاء” से मुराद फ़रहत व मसरत है कि आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की उम्मत आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की ज़बाने मुबारक से बिशारतें और खुश ख़बरियां सुन कर मसरूर हो गई। (19).....“قَاف” से मुराद काबा कौसैन (या’नी दो हाथ का फ़सिला) है कि **अब्बाह** ने आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ को शबे मे’राज इस कुर्ब से मुशरफ़ फ़रमाया। (20).....“كَاف” से मुराद कलामे इलाही है कि **अब्बाह** ने झूट से पाक अपने ला रैब कलाम के ज़रीए आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ को इज़्ज़त व बुजुर्गी अता फ़रमाई। (21).....“لَام” से मुराद लुफ़े इलाही है कि **अब्बाह** ने आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ पर शको शुबा से मुनज़्ज़ा लुफ़ो मेहरबानी फ़रमाई। (22).....“مِيم” से मुराद मन्न (या’नी एहसान) है कि **अब्बाह** ने आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ को असरार पर मुत्तलअ फ़रमा कर आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ पर एहसान फ़रमाया। (23).....“نُون” से मुराद नूरानिय्यते मुस्तफ़ा है कि **अब्बाह** के नूर की दुन्या में जल्वागरी होते ही ईरान का एक हजार साल से शो’ला ज़न आतश कदा बुझ गया। (24).....“هَ” से मुराद हैबत है कि **अब्बाह** ने आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ को ऐसा रो’ब व दबदबा अता फ़रमाया जिस से बड़े बड़े ताक़तवर शह सुवार ज़ेर हो गए। (25).....“وَاو” से मुराद वकार है कि आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ कमाले वकार व बुर्दबारी से मौसूफ़ हैं। (26).....“يَاء” से मुराद यकीन है जिस के ज़रीए **अब्बाह** ने आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ को तमाम ज़हानों में इम्तियाज़ अता फ़रमाया। आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ को अम्बिया व मुर्सलीन का “ख़ातम” (या’नी आख़िरी नबी) बनाया और फ़ज़्लो फ़ख़्र के साथ कुरआने हकीम में उन की ज़ाते वाला सिफ़ात पर येह आयते मुबारका नाज़िल फ़रमाई :

﴿ مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللَّهِ وَالَّذِينَ مَعَهُ أَشِدَّاءُ  
عَلَى الْكُفَّارِ ﴾ (٢٦٦، الفتح: ٢٩)

तर्जमए कन्जुल ईमान : मुहम्मद **अब्बाह** के रसूल हैं और इन के साथ वाले काफ़िरों पर सख़्त हैं।

नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने शफ़ाअत निशान है : “जिस ने मेरी क़ब्रे अक़दस की ज़ियारत की उस के लिये मेरी शफ़ाअत वाजिब हो गई।”

(سنن الدارقطني، كتاب الحج، باب المواقيت، الحديث ٢٦٩، ج ٢، ص ٣٥١)

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर  
 صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने हिदायत निशान है : “तीन मसाजिद के इलावा किसी और मस्जिद  
 की तरफ़ कजावे न बांधे जाएं : (1)....मस्जिदे हराम (2)....मेरी मस्जिद (या’नी मस्जिदे नबवी  
 शरीफ़) और (3)....मस्जिदे अक्सा।”<sup>(1)</sup> (صحيح مسلم، كتاب الحج، باب فضل المساجد الثلاثة، الحديث، १३९७، ج १، ص ९०९)

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ से मरवी है,  
 हुज़ूर सय्यिदुल मुबल्लिगीन صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने रहूमत निशान है : “जिस ने मेरी  
 वफ़ात के बा’द मेरी ज़ियारत की गोया उस ने मेरी हयात में मेरी ज़ियारत की, और जिस ने मेरी क़ब्रे  
 अक़दस की ज़ियारत न की उस ने मुझ से जफ़ा की।”

(سنن الدار قطنی، کتاب الحج، باب مواقيت الحج، الحديث، २६६८، ج २، ص ३०१-فردوس الاخبار للذیلمی، باب المیم، الحديث، ०७०८، ج २، ص २०२)

## जन्नत की क्यारी :

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़लाक صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने  
 रहूमत निशान है : “जिस ने मेरे क़ब्र में जाने के बा’द मेरी ज़ियारत की गोया उस ने मेरी हयात में मेरी  
 ज़ियारत की, और जो हरमैन तय्यिबैन में से किसी हरम में मरा वोह बरोज़े क़ियामत अमन वालों में उठाय  
 जाएगा, और बेशक मेरी क़ब्र और मेरे मिम्बर की दरमियानी जगह जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है।

(صحيح البخاری، کتاب فضل الصلاة في مسجد مكة والمدينة، باب فضل ما بين القبر والمنبر، الحديث، ११९५، ج १، ص ९३-)

سنن الدار قطنی، کتاب الحج، باب المواقيت، الحديث، २६६८، ج २، ص ३५१

①.....मुफ़रिस्से शहीर, हकीमुल उम्मत, मुफ़्ती अहमद यार ख़ान علیہ رحمۃ اللہان फ़रमाते हैं : “या’नी सिवाए इन मस्जिदों के  
 किसी और मस्जिद की तरफ़ इस लिये सफ़र कर के जाना कि वहां नमाज़ का षवाब ज़ियादा है, ममनूअ है। जैसे बा’जू लोग  
 जुमुआ पढ़ने बदायूं से देहली जाते थे ताकि वहां कि जामेअ मस्जिद में षवाब ज़ियादा मिले, येह ग़लत है। हर जगह की मस्जिदें  
 षवाब में बराबर हैं। इस तौजीह पर हदीष बिल्कुल वाजेह है। वहाबी हज़रात ने इस के मा’ना येह समझे कि सिवा उन तीन  
 मस्जिदों के किसी और मस्जिद की तरफ़ सफ़र ही हराम है लिहाज़ा उर्स, ज़ियारते कुबूर वगैरा के लिये सफ़र हराम। अगर येह  
 मतलब हो तो फिर तिजारत, इलाज, दोस्तों से मुलाक़ात, इल्मे दीन सीखने वगैरा तमाम कामों के लिये सफ़र हराम होंगे और रेल्वे  
 का महक़मा मतलब हो कर रह जाएगा और येह हदीष कुरआन के ख़िलाफ़ ही होगी और दीगर अहादीष के भी। رَوَّ وَجَلَ عَزَّ وَجَلَ  
 फ़रमाता है : “قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ ثُمَّ انظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكْذِبِينَ” : (साहिबे) मिरकात ने इसी जगह और (अल्लामा) शामी ने ज़ियारते  
 कुबूर में फ़रमाया कि चूंकि इन तीनों मसाजिद के सिवा तमाम मस्जिदे बराबर हैं इस लिये और मस्जिदों की तरफ़ सफ़र  
 ममनूअ है और औलिया उल्लाह की क़ब्रे फूयूज़ो बरकात में मुख़्तलिफ़ हैं। लिहाज़ा ज़ियारते कुबुर के लिये सफ़र जाइज़  
 (है)। क्या येह (बद मज़हब) जोहला अम्बियाए किराम की कुबूर की तरफ़ सफ़र (से) भी मन्अ करेंगे ?”

(مرآة المناجیح شرح مشکاة المصابیح، باب المساجد ومواضع الصلوة، الفصل الأول، ج १، ص ४३१-४३२)

इमाम यह्या बिन शरफ़ूदीन नववी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوْفَى “शर्हे मुस्लिम” में लिखते हैं हमारे अस्हबे शवाफ़ेअ, इमामुल  
 हरमैन और मोहबिककीन के नज़दीक येह (या’नी मज़ारात वगैरा के क़स्द से) सफ़र करना न हराम है, न मकरूह, अलबत्ता  
 (شرح المسلم للنووی، سفر المرأة مع محرم إلى حج وغيره، ج १، ص ४३३) “हैं।”



**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हबीब, हबीबे लबीब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने अज़मत निशान है : “जो मेरी वफ़ात के बा’द मेरी ज़ियारत करेगा और मुझ पर सलाम भेजेगा तो मैं जवाब में दस बार उस पर सलाम भेजूंगा और दस फ़िरिश्ते उस की ज़ियारत करेंगे और वोह सब उस पर सलाम भेजेंगे और जो अपने घर में मुझ पर सलाम भेजेगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझ में रूह लौटा देगा यहां तक कि मैं उस पर सलाम भेजूंगा।” (सनن ابی داؤद، کتاب المناسک، باب زیارة القبور، الحدیث ۲۰۴۱، ص ۱۳۷۳، مختصر)

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से मरवी है, शहनशाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, रसूले बे मिषाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने अलीशान है : “जिस ने मेरी वफ़ात के बा’द हज़ किया और मेरी क़ब्रे मुबारक की ज़ियारत की गोया उस ने मेरी हयात में मेरी ज़ियारत की।” (सनن الدارقطنی، کتاب الحج، باب المواقیف، الحدیث ۲۶۶۷، ج ۲، ص ۳۵۱)

### आ'राबी को नवीदे बख़्शिश मिल गई :

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم से मरवी है, आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की तदफ़ीन के तीन दिन बा’द एक आ'राबी आया और उस ने अपने आप को क़ब्रे अक़दस पर गिरा दिया और रौज़ए शरीफ़ की ख़ाके पाक सर पर डालने लगा फिर अर्ज़ करने लगा : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اَیُّ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल ! आप पर सलामती हो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप पर रहमत नाज़िल फ़रमाए।” जो आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया हम ने सुना और जो आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ पर नाज़िल हुवा उस में येह आयाते मुबारका भी है :

﴿۲﴾ وَلَوْ أَنَّهُمْ إِذْ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ جَاءُوكَ

فَاسْتَغْفَرُوا اللَّهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُولُ

لَوَجَدُوا اللَّهَ تَوَّابًا رَحِيمًا ۝ (پ ۵، النساء: ۶۴)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और अगर जब वोह अपनी जानों पर जुल्म करें तो ऐ महबूब तुम्हारे हुज़ूर हाज़िर हों और फिर **अल्लाह** से मुआफ़ी चाहें और रसूल उन की शफ़ाअत फ़रमाए तो ज़रूर **अल्लाह** को बहुत तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान पाएं। (1)

①.....मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِي फ़रमाते हैं : (या'नी अगर) मा'सिय्यत व नाफ़रमानी कर के (अपनी जानों पर जुल्म करें)। इस (आयते मुबारका) से मा'लूम हुवा कि बारगाहे इलाही में रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का वसीला और आप की शफ़ाअत कार बरआरी का ज़रीआ है।” (यहां पर आ'राबी का मजकूर वाक़िआ जिक्क करने के बा'द सदरुल अफ़ज़िल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِي फ़रमाते हैं : ) इस से चन्द मसाइल मा'लूम हुवे। मस्अला : **अल्लाह** तआला की बारगाह में अर्ज़ हाज़त के लिये उस के मक़बूलों को वसीला बनाना ज़रीअए कामयाबी है। मस्अला : क़ब्र पर हाज़त के लिये जाना भी “جاءوك” में दाख़िल और ख़ैरुल कुरून का मा'मूल है। मस्अला : बा'दे वफ़ात मक़बूलाने हक़ को या के साथ निदा करना जाइज़ है। मस्अला : मक़बूलाने हक़ मदद फ़रमाते हैं और उन की दुआ से हाज़त रवाई होती है।”

मैं ने अपने आप पर जुल्म किया है और अब मैं आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की बरगाह में हाज़िर हुवा हूं ताकि आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मुझे रब्ब तआला से बख़्शवाएं।” क़ब्रे अक्दस के अन्दर से निदा आई : “ऐ शख़्स ! तुझे बख़्श दिया गया ! ! !”

(تفسير القرطبي، سورة النساء، تحت الآية ٦٤، الجزء الخامس تحت ج ٣، ص ١٨٤)

हज़रते सय्यिदुना अबुल हसन सूफ़ी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : “हज़रते सय्यिदुना हातिमे असम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के रौज़ए अन्वर पर खड़े हो कर अर्ज़ की : “ऐ हमारे रब्ब عَزَّ وَجَلَّ हम ने तेरे हबीबे करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की क़ब्रे अतहर की ज़ियारत की, अब तू हमें नामुराद न लौटा। आवाज़ आई : “ऐ बन्दे ! हम ने तुझे अपने महबूब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की क़ब्रे अक्दस की ज़ियारत की इजाज़त ही तब दी जब तुझे पाक कर दिया। अब तू और तेरे साथ ज़ियारत करने वाले मग़फ़िरत याफ़ता लौट जाए, बेशक **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ तुझ से और उस से राज़ी हो गया जिस ने उस के प्यारे नबी मुहम्मद صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की क़ब्रे अक्दस की ज़ियारत की।”

हज़रते सय्यिदुना अबुल फ़ज़ल رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से मन्कूल है : “एक आ'राबी ने हुज़ूर सय्यिदुल मुबल्लिगीन, जनाबे रहमतुल्लिल आलमीन صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के रौज़ए मुतहहरा पर हाज़िर हो कर अर्ज़ की : “या **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ तू ने अपने महबूब बन्दों के मज़ारत के पास गुलाम आज़ाद करने का हुक्म दिया है, येह तेरे महबूब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ का मज़ार है और मैं तेरा बन्दा हूं। पस तू मुझे अपने महबूब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की क़ब्रे मुबारक के कुर्ब की वजह से नारे दोज़ख़ से आज़ादी का परवाना अता फ़रमा दे।” हातिफ़े ग़ैबी की आवाज़ आई : “तू ने सिर्फ़ अपने लिये जहन्नम से आज़ादी का सुवाल किया, तमाम मख़्लूक के लिये क्यूं नहीं किया ताकि मैं उन सब को अपने महबूब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की क़ब्रे पाक के सदक़े नारे जहन्नम से आज़ाद कर देता ? ऐ आ'राबी ! जा, हम ने तुझे आज़ाद कर दिया ! ! !”

**सरकार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने रोटी अता फ़रमाई :**

हज़रते सय्यिदुना अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन उला عليه السلام फ़रमाते हैं : “मैं ने मदीना शरीफ़ में हाज़िरी दी, मुझ पर भूक का ग़लबा था, हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ और शैख़ने करीमैन رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا के मज़ारे पाक की ज़ियारत की और सलाम किया, फिर अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ मैं आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की बारगाह में हाज़िर हुवा हूं, भूक और फ़ाके से मेरी हालत ऐसी हो चुकी है जिस को सिवाए **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के कोई नहीं जानता, मैं इस रात आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ का मेहमान हूं।” फिर मुझ पर नींद ग़ालिब हुई। ख़्वाब में नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की ज़ियारत हुई। आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने मुझे रोटी इनायत फ़रमाई। मैं ने निस्फ़ रोटी खा ली, जब बेदार हुवा तो रोटी का आधा टुकड़ा मेरे हाथ में था। मैं ने जान लिया कि नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ का येह फ़रमाने आलीशान

हक है : “जिस ने ख़्वाब में मेरी ज़ियारत की उस ने हकीकत में मेरी ही ज़ियारत की, कि शैतान मेरी सूरत में नहीं आ सकता।”  
(صحيح البخارى، كتاب التعبير، باب من رأى النبى ﷺ فى المنام، الحديث ٦٩٩٤، ص ٥٨٤)

फिर मुझे निदा की गई : “ऐ अब्दुल्लाह ! जो भी मेरी क़ब्र की ज़ियारत करेगा उस को बख़्श दिया जाएगा और कल बरोजे क़ियामत में उस की शफ़अत करूंगा।”

हज़रते सय्यिदुना अबुल फज़ल मुहम्मद बिन नईम عليه رضى الله عنه फ़रमाते हैं : “हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन या'ला किनानी عليه رضى الله تعالى عنه क़बरत से नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत صلى الله تعالى عليه وآله وسلم की क़ब्रे अन्वर की ज़ियारत किया करते थे, और आप को अक़षर ख़्वाब में नबिय्ये मुक़र्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अक़रम, शहनशाहे बनी आदम صلى الله تعالى عليه وآله وسلم का दीदार भी हो जाता। एक दिन ज़ियारते क़ब्रे अतह्र के क़स्द से निकले लेकिन पाउं में चोट लगने के सबब ज़ियारत से महरूम हो गए, हज़ करने वाले जा रहे थे, आप رحمة الله تعالى عليه ने एक रुक़आ लिख कर किसी हाजी को दिया और फ़रमाया : “जब तुम मज़ारे अक्दस पर पहुंचो तो मेरा येह रुक़आ मज़ार शरीफ़ के क़रीब रख कर अर्ज़ करना : “या रसूलल्लाह صلى الله تعالى عليه وآله وسلم किनानी आप صلى الله تعالى عليه وآله وسلم की बारगाह में सलाम अर्ज़ करते हुवे अर्ज़ गुज़ार है कि आप صلى الله تعالى عليه وآله وسلم जानते हैं किनानी को आप صلى الله تعالى عليه وآله وسلم की ज़ियारत से किस चीज़ ने रोक रखा है ?” चुनान्चे, जब उस शख़्स ने ऐसा किया तो हज़रते सय्यिदुना किनानी عليه رضى الله تعالى عنه को ख़्वाब में हुज़ूर صلى الله تعالى عليه وآله وسلم की ज़ियारत हुई। सरकारे आली वफ़ार صلى الله تعالى عليه وآله وسلم ने इरशाद फ़रमाया : “ऐ किनानी ! तुम्हारा ख़त पहुंच गया है और हम ने तुम्हारा उज़्र भी क़बूल कर लिया है।”

हज़रते सय्यिदुना उतबी عليه رضى الله تعالى عنه फ़रमाते हैं : “मैं आप صلى الله تعالى عليه وآله وسلم की क़ब्रे अन्वर के पास बैठा हुवा था कि एक आ'राबी को ऊंट पर आते देखा। ऊंट से उतर कर वोह नबिय्ये करीम صلى الله تعالى عليه وآله وسلم के मज़ारे पुर अन्वार पर हाज़िर हुवा और यूँ अर्ज़ गुज़ार हुवा : صلى الله تعالى عليه وآله وسلم या सफ़्वतल्लाह صلى الله تعالى عليه وآله وسلم या सलाम עליکم صلى الله تعالى عليه وآله وسلم या रसूलल्लाह صلى الله تعالى عليه وآله وسلم आप पर सलाम हो, ऐ **अल्लाह** के एज़्र عز وجل या'नी ऐ **अल्लाह** के पसन्दीदा रसूल صلى الله تعالى عليه وآله وسلم आप पर सलाम हो।” **अल्लाह** عز وجل ने आप صلى الله تعالى عليه وآله وسلم पर येह आयते मुबारका नाज़िल फ़रमाई है :

وَلَوْ أَنَّهُمْ إِذْ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ جَاءُوكَ  
فَاسْتَغْفَرُوا اللَّهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُولُ لَوَجَدُوا  
اللّهَ تَوَّابًا رَّحِيمًا 0 (٥٧، النساء: ٦٤)

तर्जमए कन्जुल इमान : और अगर जब वोह अपनी जानों पर जुल्म करें तो ऐ महबूब तुम्हारे हुज़ूर हाज़िर हों और फिर **अल्लाह** से मुआफी चाहें और रसूल उन की शफ़अत फ़रमाए तो ज़रूर **अल्लाह** को बहुत तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान पाएँ।

और मैं ने अपनी जान पर जुल्म किया है, अब मैं आप صلى الله تعالى عليه وآله وسلم की बारगाह में हाज़िर हूँ और अपने गुनाहों की मग़फ़िरत चाहता हूँ, आप صلى الله تعالى عليه وآله وسلم **अल्लाह** عز وجل की बारगाह में मेरी शफ़अत फ़रमाइयें।” हज़रते सय्यिदुना उतबी عليه رضى الله تعالى عنه फ़रमाते हैं :



“मुझ पर नौंद का ग़लबा हुवा और मुझे आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दीदार नसीब हुवा तो आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “ऐ उतबा ! इस आ'राबी को बिशारत दे दो कि **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ ने इसे बख़्श दिया ।”

(المغنی لابن قدامة، کتاب الحج، باب الفدیة وجزاء الصيد، مسئله ٦٩٩، فصل يستحب زیارة قبر النبی ﷺ، ج ٥، ص ٤٦٥)

मन्कूल है कि “मैं ने हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को रौज़ए रसूल पर हाज़िरी देते हुवे देखा कि आप रَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अपने हाथ उठाए हत्ता कि मैं समझा कि आप रَضِیَ اللّٰهُ तَعَالٰی عَنْهُ नमाज़ शुरू करने वाले हैं, आप रَضِیَ اللّٰهُ तَعَالٰی عَنْهُ ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰهُ तَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में सलाम पेश किया फिर वापस लौट गए ।” (ज ३, व ४१, ४१६, ४१७, ४१८, ४१९, ४२०, ४२१, ४२२, ४२३, ४२४, ४२५, ४२६, ४२७, ४२८, ४२९, ४३०, ४३१, ४३२, ४३३, ४३४, ४३५, ४३६, ४३७, ४३८, ४३९, ४४०, ४४१, ४४२, ४४३, ४४४, ४४५, ४४६, ४४७, ४४८, ४४९, ४५०, ४५१, ४५२, ४५३, ४५४, ४५५, ४५६, ४५७, ४५८, ४५९, ४६०, ४६१, ४६२, ४६३, ४६४, ४६५, ४६६, ४६७, ४६८, ४६९, ४७०, ४७१, ४७२, ४७३, ४७४, ४७५, ४७६, ४७७, ४७८, ४७९, ४८०, ४८१, ४८२, ४८३, ४८४, ४८५, ४८६, ४८७, ४८८, ४८९, ४९०, ४९१, ४९२, ४९३, ४९४, ४९५, ४९६, ४९७, ४९८, ४९९, ५००, ५०१, ५०२, ५०३, ५०४, ५०५, ५०६, ५०७, ५०८, ५०९, ५१०, ५११, ५१२, ५१३, ५१४, ५१५, ५१६, ५१७, ५१८, ५१९, ५२०, ५२१, ५२२, ५२३, ५२४, ५२५, ५२६, ५२७, ५२८, ५२९, ५३०, ५३१, ५३२, ५३३, ५३४, ५३५, ५३६, ५३७, ५३८, ५३९, ५४०, ५४१, ५४२, ५४३, ५४४, ५४५, ५४६, ५४७, ५४८, ५४९, ५५०, ५५१, ५५२, ५५३, ५५४, ५५५, ५५६, ५५७, ५५८, ५५९, ५६०, ५६१, ५६२, ५६३, ५६४, ५६५, ५६६, ५६७, ५६८, ५६९, ५७०, ५७१, ५७२, ५७३, ५७४, ५७५, ५७६, ५७७, ५७८, ५७९, ५८०, ५८१, ५८२, ५८३, ५८४, ५८५, ५८६, ५८७, ५८८, ५८९, ५९०, ५९१, ५९२, ५९३, ५९४, ५९५, ५९६, ५९७, ५९८, ५९९, ६००, ६०१, ६०२, ६०३, ६०४, ६०५, ६०६, ६०७, ६०८, ६०९, ६१०, ६११, ६१२, ६१३, ६१४, ६१५, ६१६, ६१७, ६१८, ६१९, ६२०, ६२१, ६२२, ६२३, ६२४, ६२५, ६२६, ६२७, ६२८, ६२९, ६३०, ६३१, ६३२, ६३३, ६३४, ६३५, ६३६, ६३७, ६३८, ६३९, ६४०, ६४१, ६४२, ६४३, ६४४, ६४५, ६४६, ६४७, ६४८, ६४९, ६५०, ६५१, ६५२, ६५३, ६५४, ६५५, ६५६, ६५७, ६५८, ६५९, ६६०, ६६१, ६६२, ६६३, ६६४, ६६५, ६६६, ६६७, ६६८, ६६९, ६७०, ६७१, ६७२, ६७३, ६७४, ६७५, ६७६, ६७७, ६७८, ६७९, ६८०, ६८१, ६८२, ६८३, ६८४, ६८५, ६८६, ६८७, ६८८, ६८९, ६९०, ६९१, ६९२, ६९३, ६९४, ६९५, ६९६, ६९७, ६९८, ६९९, ७००, ७०१, ७०२, ७०३, ७०४, ७०५, ७०६, ७०७, ७०८, ७०९, ७१०, ७११, ७१२, ७१३, ७१४, ७१५, ७१६, ७१७, ७१८, ७१९, ७२०, ७२१, ७२२, ७२३, ७२४, ७२५, ७२६, ७२७, ७२८, ७२९, ७३०, ७३१, ७३२, ७३३, ७३४, ७३५, ७३६, ७३७, ७३८, ७३९, ७४०, ७४१, ७४२, ७४३, ७४४, ७४५, ७४६, ७४७, ७४८, ७४९, ७५०, ७५१, ७५२, ७५३, ७५४, ७५५, ७५६, ७५७, ७५८, ७५९, ७६०, ७६१, ७६२, ७६३, ७६४, ७६५, ७६६, ७६७, ७६८, ७६९, ७७०, ७७१, ७७२, ७७३, ७७४, ७७५, ७७६, ७७७, ७७८, ७७९, ७८०, ७८१, ७८२, ७८३, ७८४, ७८५, ७८६, ७८७, ७८८, ७८९, ७९०, ७९१, ७९२, ७९३, ७९४, ७९५, ७९६, ७९७, ७९८, ७९९, ८००, ८०१, ८०२, ८०३, ८०४, ८०५, ८०६, ८०७, ८०८, ८०९, ८१०, ८११, ८१२, ८१३, ८१४, ८१५, ८१६, ८१७, ८१८, ८१९, ८२०, ८२१, ८२२, ८२३, ८२४, ८२५, ८२६, ८२७, ८२८, ८२९, ८३०, ८३१, ८३२, ८३३, ८३४, ८३५, ८३६, ८३७, ८३८, ८३९, ८४०, ८४१, ८४२, ८४३, ८४४, ८४५, ८४६, ८४७, ८४८, ८४९, ८५०, ८५१, ८५२, ८५३, ८५४, ८५५, ८५६, ८५७, ८५८, ८५९, ८६०, ८६१, ८६२, ८६३, ८६४, ८६५, ८६६, ८६७, ८६८, ८६९, ८७०, ८७१, ८७२, ८७३, ८७४, ८७५, ८७६, ८७७, ८७८, ८७९, ८८०, ८८१, ८८२, ८८३, ८८४, ८८५, ८८६, ८८७, ८८८, ८८९, ८९०, ८९१, ८९२, ८९३, ८९४, ८९५, ८९६, ८९७, ८९८, ८९९, ९००, ९०१, ९०२, ९०३, ९०४, ९०५, ९०६, ९०७, ९०८, ९०९, ९१०, ९११, ९१२, ९१३, ९१४, ९१५, ९१६, ९१७, ९१८, ९१९, ९२०, ९२१, ९२२, ९२३, ९२४, ९२५, ९२६, ९२७, ९२८, ९२९, ९३०, ९३१, ९३२, ९३३, ९३४, ९३५, ९३६, ९३७, ९३८, ९३९, ९४०, ९४१, ९४२, ९४३, ९४४, ९४५, ९४६, ९४७, ९४८, ९४९, ९५०, ९५१, ९५२, ९५३, ९५४, ९५५, ९५६, ९५७, ९५८, ९५९, ९६०, ९६१, ९६२, ९६३, ९६४, ९६५, ९६६, ९६७, ९६८, ९६९, ९७०, ९७१, ९७२, ९७३, ९७४, ९७५, ९७६, ९७७, ९७८, ९७९, ९८०, ९८१, ९८२, ९८३, ९८४, ९८५, ९८६, ९८७, ९८८, ९८९, ९९०, ९९१, ९९२, ९९३, ९९४, ९९५, ९९६, ९९७, ९९८, ९९९, १०००)

हज़रते सय्यिदुना इब्ने वहब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِ हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के मुतअल्लिक़ फ़रमाते हैं कि “जब इमामे मालिक रَضِیَ اللّٰهُ तَعَالٰی عَنْهُ शहनशाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिषाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰهُ तَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में सलाम अर्ज करते तो क़ब्रे अतहर के क़रीब हो जाते, अपना रुख़ क़ब्रे अतहर की तरफ़ कर के सलाम अर्ज करते और दुआ करते लेकिन क़ब्रे अक़दस को हाथ से मस न करते ।”

**जियारते रौज़ए अक़दस करने के दस फ़वाइद :**

सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार, बिइज़्ने परवर दगार صَلَّی اللّٰهُ तَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की क़ब्रे अक़दस की ज़ियारत करने वाले के लिये दस करामात या'नी इज़्ज़तें हैं : (1).....वोह बुलन्द मर्तबा होगा (2).....हुसूले मक़सद में कामयाब होगा (3).....उस की हाज़त पूरी होगी (4).....उसे अतिय्यात खर्च करने की तौफ़ीक़ मिलेगी (5).....वोह हलाक़त व बरबादी से अमन में रहेगा (6).....उयूब व नक़ाइस से पाक होगा (7).....उस की मुश्किलात आसान होंगी (8).....हादिषात से उस की हिफ़ाज़त होगी (9).....उसे आख़िरत में अच्छा बदला मिलेगा और (10).....मशरिफ़ व मग़रिब के रब्ब عَزَّ وَجَلَّ की रहमत मिलेगी ।”

मन्कूल है कि “एक शख़्स ने आप صَلَّی اللّٰهُ तَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ख़्वाब में देख कर अर्ज की : “या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰهُ तَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जो हुज्जाजे किराम वग़ैरा आप صَلَّय اللّٰهُ तَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में हाज़िर हो कर सलाम अर्ज करते हैं क्या आप صَلَّय اللّٰهُ तَعَالٰी عَلَیْهِ वَاٰलِهٖ وَسَلَّم उन की बात समझते हैं ? तो आप صَلَّय اللّٰهُ तَعَالٰी عَلَیْهِ वَاٰलِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “हां ! उन की बात का जवाब भी देता हूं ।”

**ऐ मेरे इस्लामी भाइयो !** इस महबूबे करीम صَلَّय اللّٰهُ तَعَالٰी عَلَیْهِ वَاٰलِهٖ وَسَلَّم की सिफ़ात पर ग़ौर करो कि वोह कितनी जमील हैं, वोह अपने क़रीब हाज़िर होने वाले की कितनी इज़्ज़त अफ़ज़ाई फ़रमाते हैं और उसे ज़वाबे सलाम से नवाज़ते हैं, अगर तू दूर से भी सलाम अर्ज करे तो वोह तेरे

सलाम का जवाब मरहूमत फ़रमाएंगे, तू शफ़ाअत त़लब करेगा तो वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तेरी शफ़ाअत फ़रमाएंगे, तू आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की क़ब्रे अक़दस की ज़ियारत से मुन्क़तेअ है जब कि वोह हमेशा तेरी हाज़िरी के मुश्ताक़ हैं, तू दुन्या में मशगूल होने के सबब और माल जम्अ करने की ख़ातिर सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की बारगाह में हाज़िर होने के लिये तय्यार नहीं मगर वोह ख़्वाब में भी जल्वे दिखा देते हैं, अगर तू दरबारे रिसालत में हाज़िर होने का अज़म करता है तो सुवारी पर सुवार हो जा, और अगर इन्साफ़ से काम ले तो तुझे सर के बल चलना चाहिये न कि क़दमों पर।

**हरम की ज़मीं और क़दम रख के चलना अरे सर का मौक़अ है ओ जाने वाले**

(हदाइके बख़्शिश)

हुजूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़लाक صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ दुन्या में तेरे गुनाहों की पर्दापोशी फ़रमाने वाले हैं, कल बरोजे क़ियामत तेरी शफ़ाअत फ़रमाने वाले हैं, सलामती के घर या'नी जन्नत तक तेरे रहबर व राहनुमा हैं।

**आज जो एब किसी पर नहीं खुलने देते ! कब वोह चाहेंगे मेरी हज़र में रुस्वाई हो**

(जौके ना'त)

क्या तू ने कोई ऐसा महबूब भी देखा है जो अपने मुहिब्बीन से ऐसा मुआमला करता हो या उन पर इतना मेहरबान हो ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! हरगिज़ नहीं, तू ने न देखा होगा, और न ही देखेगा। इस के बा वुजूद तू कैसे ठहरा हुआ है ? या कैसे तुझे अफ़सोस व हसरत नहीं होती ? महबूबे खुदा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने तुझे किताब व सुन्नत से आगाह किया तो तू देखने वाला हो गया। तुझ से जन्नत का वा'दा फ़रमाया। वोह तुझे बिशारत देने वाले हैं। पस ऐ हुजूर की महब्बत के दा'वेदार ! तू अपने दा'वे में झूटा है। तुझे उन की सुन्नतों से कहां मुवाफ़क़त है ? तेरे अफ़आल उन के अफ़आल व अक़वाल के ताबेअ कहां हैं ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तुझ पर उन की पैरवी का नामो निशान तक नहीं, क्या तुझे मा'लूम नहीं कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ सख़्त भूक में रात बसर करते थे ? सुब्ह तहज़ुद की नमाज़ अदा करते थे और रोज़ों के सबब ख़ाली पेट रहते थे ? आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ पर ख़ज़ाने पेश किये गए लेकिन आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने नज़र उठा कर भी न देखा। तमाम रात अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में जाग कर गुज़ार दी, दस्ते त़लब फैलाए और सर झुकाए रखा और अपनी ख़ल्वतों में अपनी उम्मत के लिये गुरौह दर गुरौह जन्नत में दाख़िले का सुवाल करते रहते।

**तमन्नाए ज़ियारत की दुआ :**

या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हज़रते सय्यिदुना मुहम्मदे मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर और आप के आल व अस्हाब رَضَوُاْ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ पर दुरूदो सलाम भेज। या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें उन की ज़ियारत से बहरामन्द फ़रमा और आख़िरत में उन की शफ़ाअत से बहरामन्द फ़रमा और हमें

उन के क़ाफ़िले में इकठ्ठा करना और उन का रखे रोशन दिखाना और उन के हौजे कौषर से सैराब करना और हमें उन लोगों में से करना जो उन की सोहबत में रह कर कामयाब हुवे और उन के रास्ते से न हटाना और हमें दुन्या व आख़िरत की भलाइयां अता फ़रमाना और अपनी रहमत से अज़ाबे जहन्नम से बचाना । ऐ मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ तू सब से बढ़ कर रहूम करने वाला है । या **अल्लाह** صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुहम्मदे मुस्तफ़ा هَجَرते सय्यिदुना मुहम्मदे मुस्तफ़ा رَضَوَانَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ أَجْمَعِیْنَ पर और आप के आल व अस्हाब पर बे हद व बे शुमार दुरूदो सलाम भेज ।

وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰی سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلٰی آلِهِ وَصَحْبِهِ أَجْمَعِیْنَ



”لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ

الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ“

पढ़ने की फज़ीलत

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : “जिस ने एक दिन में सो मरतबा येह कलिमा ”لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ“ पढ़ा तो येह उस के लिये दस गुलाम आज़ाद करने के बराबर है और उस के लिये सो नेकियां लिखी जाएंगी, उस के सो गुनाह मिटा दिये जाएंगे और येह कलिमा उस दिन शाम तक शैतान से उस की हिफ़ाज़त करेगा और उस दिन उस से अमल में कोई न बढ़ सकेगा मगर जो इस से ज़ियादा मरतबा पढ़े ।”

(صحيح بخارى، كتاب الدعوات، باب فضل التهليل، رقم ٦٤٠٣، ج ٤، ص ٢١٨)



बयान 53 :

## मनाफिबे खुलाफाए राशिदीन

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़, हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़, हज़रते सय्यिदुना उषमाने ग़नी और हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के फ़ज़ाइल

हम्बे बारी तआला :

सब खूबियाँ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जो मेहरबान, गुनाहों को मिटाने वाला, हिल्म वाला और बुराइयों पर पर्दा डालने वाला है, रात को दिन में दाख़िल फ़रमाने वाला है। हर चीज़ उस के पास एक अन्दाज़े से है। उस के फैसलों में इक़ूल व अज़हान हैरत ज़दा हैं। अहले बसीरत और निगाहे इब्रत वाले उस की शाने अबदिyyत (या'नी हमेशा रहने वाली सिफ़त) के मैदान में टिकटिकी बांधे देख रहे हैं। वोह अपनी बुलन्द इज़ज़त व इक्तदार से जाबिर बादशाहों पर ग़ालिब है। वोही वाहिद व क़हहार है। उस ने अपनी ग़ालिब कुव्वत से शाहाने फ़रस (या'नी इरान के बादशाहों) की शानो शौक़त और कुव्वते इक्तदार को टुकड़े टुकड़े कर दिया, पस वोही अज़मत वाला ज़बरदस्त है। उसी ने काइनात को वुजूद बख़्शा और ज़माने की तदबीर फ़रमाई। किसी भी मददगार और मुआविन का मोहताज नहीं। कोई उस की कुदरत में बराबरी नहीं कर सकता और उस के इलावा कोई इबादत के लाइक़ नहीं। उस का एहसान हर जगह और जमीअ अतराफ़े आलम को शामिल है या'नी हर एक पर एहसान है। वोह अन्धेरी रात में सियाह च्यूटी के क़दमों की आवाज़ को जानता है। ज़मीनो आस्मान और समन्दरों की गहराई में मौजूद कोई शै भी उस से पौशीदा नहीं। बन्दे के उलट पलट होते वक़्त भी उस के दिल की बात जानता और उस के इरादा व त़लब के वक़्त भी उस के दिल पर मुत्तलअ होता है। चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

”سَوَاءٌ مِنْكُمْ مَنْ أَسَرَ الْقَوْلَ وَمَنْ جَهَرَ بِهِ وَمَنْ هُوَ مُسْتَخْفٍ بِاللَّيْلِ وَسَارِبٌ بِالنَّهَارِ“ (الرعد: १०)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बराबर हैं जो तुम में बात आहिस्ता कहे और जो आवाज़ से और जो रात में छुपा है और जो दिन में राह चलता है।”

पाक है वोह मा'बूद जो अपने बन्दों में से जिसे चाहता है बरतरी व बर्गुज़ीदगी अता फ़रमाता है। जिसे चाहता है अपने लिये खास फ़रमाता है। जिसे चाहता है दूसरों से मुमताज़ कर देता है। जिसे चाहता है अपने कुर्ब व मईय्यत के लिये मुन्तख़ब फ़रमाता है और जिसे चाहता है पसन्द फ़रमाता है। उसी का इरशादे आली है : ”وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ وَيَخْتَارُ“ (ط २०، القصص: १८)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और तुम्हारा रब्ब पैदा करता है जो चाहे और पसन्द फ़रमाता है।”<sup>(1)</sup>...और...

उस ने हज़रते सय्यिदुना मुहम्मदे मुस्तफ़ा, अहमदे मुजतबा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अपना मुन्तख़ब

①.....मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़े आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारक के तहत फ़रमाते हैं : **शाने नुज़ूल** : येह आयत मुशरिकीन के जवाब में नाज़िल हुई। जिन्हों ने कहा था कि “**अल्लाह** तआला ने हज़रते मुहम्मद صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को नबुव्वत के लिये क्यूं बर्गुज़ीदा किया। येह कुरआन मक्का व ताइफ़ के किसी बड़े शख़्स पर क्यूं न उतारा। इस कलाम का काइल वलीद बिन मुग़ीरा था और बड़े आदमी से वोह अपने आप को और इर्वा बिन मसऊद षक़फ़ी को मुराद लेता था। इस के जवाब में येह आयते करीमा नाज़िल हुई और फ़रमाया गया कि रसूलों का भेजना उन लोगों के इख़्तियार से नहीं है। **अल्लाह** तआला की मरज़ी है, अपनी हिक्मत वोही जानता है, उन्हें उस की मरज़ी में दख़ल की क्या मजाल।

नबी और मुख्तार रसूल बना कर बरतरी व बुजुर्गी अता फरमाई....., हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को खास फरमा कर तस्दीक और वक़ार व हैबत की खुसूसियत से नवाज़ा....., हज़रते सय्यिदुना उमर बिन ख़त्ताब رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को दुरुस्त राए के लिये दूसरों से मुमताज़ फरमाया पस शहरियों और देहातियों के लिये आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का ज़िक्र बाड़षे हलावत और पाकीजगी है....., हज़रते सय्यिदुना उषमान बिन अफ़फ़ान رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को कुरआने पाक जम्अ करने के वासिते अपने कुर्ब व मइय्यत के लिये मुन्तख़ब फरमाया पस उन्होंने ने कुरआने पाक को छे या सात नुस्खों में जम्अ करवा दिया....., और हज़रते सय्यिदुना अली बिन अबी तालिब رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को लश्करो के मुन्तशिर करने, अज़ाइबात को ज़ाहिर करने और जुलफ़िक़ार (या'नी तल्वारे हैदरी) के अदलो इन्साफ़ को अ़ाम करने के लिये पसन्द फरमाया। येही वोह हस्तियां हैं जिन के हक़ में **اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلَىٰ هٰؤُلَاءِ** ने अपने हबीब, हबीबे लबीब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ज़बाने अक़दस पर येह आयते मुबारका नाज़िल फरमाई :

﴿٢﴾ مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللَّهِ وَالَّذِينَ مَعَهُ أَشِدَّاءُ عَلَى الْكُفَّارِ (پ ٢٦، الفتح: ٢٩)

तर्जमए कन्जुल ईमान : मुहम्मद **اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ** के रसूल हैं और इन के साथ वाले काफ़िरो पर सख़्त हैं।

चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ग़ार में हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के रफ़ीक़ हैं....., हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ असरारे इलाही पर आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के वज़ीर व अमीन हैं....., हज़रते सय्यिदुना उषमाने ग़नी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ दुश्मन के हाथों मक़तूल और अपने घर में शहीद होने वाले हैं....., और हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के चचा के बेटे, आप صَلَّى اللَّهُ تَعालَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के इल्म के वारिष और दुश्मनों पर पलट पलट कर हम्ला करने वाले शहसुवार हैं....., येही वोह मुक़दस हस्तियां हैं जो सय्यिदे आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के खुलफ़ा, वुज़रा और नेक सीरत पेशवायाने उम्मत हैं....., इन्हों ने हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से अपने अहद को पूरा किया....., और इन्हीं की सआदत मन्दियों के सबब दीनी अक़दार बामे उरूज पर पहुंची....., और आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने जो चाहा और पसन्द फरमाया, इन्हों ने इस पर आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की मुकम्मल पैरवी और बैअत की।

हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है, हुज़ूर सरापा नूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर, फैज़ गन्ज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फरमाने आलीशान है : “जिस ने मेरे किसी सहाबी को खुश किया उस ने मुझे खुश किया और जिस ने मुझे खुश किया उस ने **اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ** को खुश किया और जिस ने **اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ** को खुश किया तो **اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ** के ज़िम्माए करम पर है कि वोह उसे खुश कर के जन्नत में दाख़िल फरमा दे।”

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फरमाने हकीक़त निशान है : “इन चार की महब्बत सिवाए मोमिन के किसी के दिल में जम्अ न होगी : (1)....हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ (2)....हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ (3)....हज़रते सय्यिदुना उषमाने ग़नी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ और (4).....हज़रते अली बिन अबी तालिब رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ।”

(حلیۃ الاولیاء، عطاء بن میسرۃ، الحدیث ٦٩٣٦، ج ٥، ص ٢٣٠)

हुजूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अज़मत निशान है : “मैं क़ियामत के दिन इस हाल में आऊंगा कि मेरी दाई जानिब अबू बक्र सिद्दीक़, बाई जानिब उमर फ़ारूक़, पीछे उषमाने ग़नी और मेरे सामने अली बिन अबी त़ालिब (رَضِیَ اللہ تعالیٰ عَنْہُمْ) होंगे और अली के पास लिवाउल हम्द होगा, इस पर दो कपड़े के टुकड़े होंगे, एक सन्दस का और दूसरा इस्तिब्रक़ का ।” एक आ’राबी ने खड़े हो कर अर्ज़ की : “मेरे मां बाप आप पर कुरबान ! क्या हज़रते सय्यिदुना अली लिवाउल हम्द को उठा सकेंगे ?” इरशाद फ़रमाया : “क्यूं नहीं उठा सकेंगे कि इन को बहुत सी खूबियां अता की गई हैं : मेरे सब्र जैसा सब्र, हज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام जैसा हुस्न और हज़रते जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام जैसी कुव्वत अता हुई । लिवाउल हम्द अली बिन अबी त़ालिब के हाथ में होगा और उस दिन तमाम मख़्लूक मेरे लिवा (या’नी झन्डे) के नीचे होगी ।”

हज़रते सय्यिदुना अली बिन अबी त़ालिब کَرَّمَ اللہ تعالیٰ وَجْہَہُ الْکَرِیْم से मरवी है, ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मख़ज़ने जूदो सखावत, पैकरे अज़मतो शराफ़त, महबूबे रब्बुल इज़ज़त, मोहसिने इन्सानिय्यत صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जीशान है : “**अल्लाह** अबू बक्र (رَضِیَ اللہ تعالیٰ عَنْہُ) पर रहूम फ़रमाए, इन्हों ने अपनी बेटी मेरी जौजिय्यत में दी, मुझे अपनी ऊंटनी पर सुवार कर के मदीनए पाक ले गए और बिलाल को अपने माल से आज़ाद किया । **अल्लाह** उमर (رَضِیَ اللہ تعالیٰ عَنْہُ) पर रहूम फ़रमाए, वोह हक़ बोलते हैं अगर्चे क़डवा हो । **अल्लाह** उषमाने (رَضِیَ اللہ تعالیٰ عَنْہُ) पर रहूम फ़रमाए, मलाइका इन से हया करते हैं । **अल्लाह** अली (رَضِیَ اللہ تعالیٰ عَنْہُ) जहां चले हक़ को इस के साथ चला दे ।”

(جامع الترمذی، ابواب المناقب، باب مناقب علی..... الخ الحديث ۳۷۱، ص ۲۰۳)

मरवी है, **अल्लाह** के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ (رَضِیَ اللہ تعالیٰ عَنْہُ) से इरशाद फ़रमाया : ऐ अबू बक्र ! **अल्लाह** ने मुझे नूर के जोहर से पैदा फ़रमाया, पस इस जोहर पर नज़रे करम फ़रमाई और मुझे अपनी बारगाह में खड़ा किया तो मुझे हया से पसीना आ गया और पसीने के चार क़तरे गिर पड़े । ऐ अबू बक्र ! **अल्लाह** ने पहले क़तरे से तुम्हें पैदा फ़रमाया, दूसरे से उमर को, तीसरे से उषमान को और चौथे से अली को पैदा फ़रमाया, ऐ अबू बक्र ! तेरा, उमर, उषमान और अली का नूर मेरे नूर से है ।”

हुजूर सय्यिदुल अम्बिया व मुरसलीन صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते हैं : “बेशक **अल्लाह** ने मेरे सहाबए किराम को तमाम मख़्लूक पर फ़ज़ीलत दी सिवाए अम्बिया व मुरसलीन के, फिर मेरे सहाबा में से चार को फ़ज़ीलत दी : अबू बक्र, उमर, उषमान और अली (رَضُوا اللہ تعالیٰ عَنْہُمْ اَجْمَعِیْن)” (المجروحین لابن حبان، الرقم ۵۶۸ عبد الله بن صالح كاتب الليث المصری، ج ۱، ص ۵۳۵)

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللہ تعالیٰ وَجْہَہُ الْکَرِیْم से मरवी है कि नबिय्ये रहूमत, शफीए उम्मत صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने हक़ निशान है :



“बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम पर अबू बक्र, उमर, उषमान और अली की महब्बत को फर्ज कर दिया है, जैसे नमाज़, रोज़ा, ज़कात और हज़ को तुम पर फर्ज किया है तो जो इन में से किसी एक से भी बुज़ रखे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की न नमाज़ कबूल फ़रमाएगा, न ज़कात, न रोज़ा और न ही हज़। और उसे क़ब्र से जहन्नम में फेंक दिया जाएगा।” (फ़रदुस़ الاخبار للदिलमी، باب الالف، الحديث ११९، ج १، ص १०१)

### ख़ुलफ़ाए राशिदीन عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان की अज़मत व शान :

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है, नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशादे हकीकत बुन्याद है : “मेरे हौज़ के चार कोने हैं : पहले कोने पर अबू बक्र, दूसरे पर उमर, तीसरे पर उषमान और चौथे पर अली होंगे। जो अबू बक्र से महब्बत करे और उमर से बुज़ रखे उस को अबू बक्र सैराब नहीं करेंगे और जो उमर से महब्बत रखे और उषमान से बुज़ रखे उस को उमर सैराब नहीं करेंगे और जो उषमान से महब्बत करे और अली से बुज़ रखे उस को उषमान हौज़ से नहीं पिलाएंगे और जो अली से महब्बत करे मगर उषमान से बुज़ रखे उस को अली सैराब नहीं करेंगे तो जिस ने अबू बक्र से महब्बत की उस ने दीन को काइम किया और जिस ने उमर से महब्बत की वोह ईमान वालों में लिखा जाएगा, और जिस ने उषमान से महब्बत की वोह नूरे मुबीन से मुनव्वर हुवा और जिस ने अली से महब्बत की तो उस ने भलाई का काम किया और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ भलाई करने वालों को पसन्द फ़रमाता है। और जिस ने इन तमाम के मुतअल्लिक हुस्ने ज़न रखा वोह मोमिन है और जो बद गुमानी करे वोह मुनाफ़िक है।” (الثقات لابن حبان، كتاب من روى عن اتباع التابعين، الرقم ३३१، محمد بن مقاتل العباداني، ج ५، ص २२९)

(العلل المتناهية لابن الجوزي، حديث في فضل الاربعة، الحديث ४०، ج १، ص २५२)

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : “हम हुज़ूर सय्यिदुल मुबल्लिग़िन, जनाबे रहूमतुल्लिल आलमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इजतिमाए पाक में बैठे हुवे थे तो हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ हाज़िर हुवे, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस्तिक़बाल करते हुवे फ़रमाया : “अपने माल के साथ ग़म गुसारी करने वाले और दूसरों को खुद पर तरजीह देने वाले को खुश आमदीद !” फिर हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ हाज़िर ख़िदमत हुवे तो इरशाद फ़रमाया : “हक़ व बातिल के दरमियान फ़र्क़ करने वाले को मरहबा ! उस शख्स को खुश आमदीद जिस के ज़रीए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने दीन को कामिल किया और मुसलमानों को इज़्ज़त बख़्शी।” फिर हज़रते सय्यिदुना उषमाने ग़नी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ हाज़िर हुवे तो इरशाद फ़रमाया : “मेरे दामाद और मेरी दो बेटियों के शोहर को खुश आमदीद ! जिस में मेरा नूर जम्अ हुवा, जो अपनी ज़िन्दगी में सअदत मन्द और मौत में शहीद है, उस के क़ातिल के लिये नारे जहन्नम की बरबादी है।” फिर हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيم हाज़िर हुवे तो इरशाद फ़रमाया : “मेरे चचाज़ाद भाई को खुश आमदीद ! मुझे और इसे एक नूर से पैदा किया गया है।”

(फ़रदुस़ الاخبار للदिलमी، باب النحاء، الحديث २७७، ج १، ص ३७६ مختصر)

(फिर फरमाया :) ऐ गुरौहे मुस्लिमीन ! इन तमाम की महबूबत मोमिन के दिल में ही इकट्ठी हो सकती है और मुनाफ़िक के दिल में यक़्जा नहीं हो सकती। जो इन को महबूब बना ले **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ उस को महबूब बना लेता है और जो इन से बुग़्ज रखे **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ उसे ना पसन्द फ़रमाता है।”

हज़रते सय्यिदुना अबू सईद खुदरी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है, एक दिन हुस्ने अख़्लाक के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अकबर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “मैं जन्नत में दाख़िल हुवा। इसी दौरान जब कि मैं उस के बाग़ों, नहरों और दरख़्तों के गिर्द घूम रहा था कि मेरा हाथ एक फल से मस हुवा, मैं ने उसे पकड़ा तो वोह मेरे हाथ में चार टुकड़ों में बट गया, हर टुकड़े से एक हूर निकली, अगर वोह अपना एक नाखुन ज़ाहिर कर दे तो तमाम ज़मीनो आस्मान वालों को फ़ितने में मुब्तला कर दे, और अगर अपनी एक हथेली ज़ाहिर कर दे तो इस की रोशनी सूरज और चांद की रोशनी पर ग़ालिब आ जाए, अगर वोह तबस्सुम करे तो अपनी खुशबू से ज़मीनो आस्मान की दरमियानी जगह को कस्तूरी से भर दे, मैं ने पहली से पूछा : “तुम किस के लिये हो ?” बोली : “हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के लिये।” मैं ने उसे हुक्म दिया : “तुम अपने शोहर के महल की तरफ़ जाओ।” तो वोह चली गई। दूसरी से पूछा उस ने कहा : “मैं हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के लिये हूं।” उसे भी मैं ने हुक्म दिया कि तुम अपने ख़ावन्द के महल में चली जाओ।” तो वोह भी चली गई। तीसरी से भी पूछा : “उस ने जवाब दिया : “खून से लत पत जुल्मन शहीद किये गए, हज़रते सय्यिदुना उषमान बिन अफ़फ़ान رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के लिये।” उसे भी मैं ने अपने ख़ावन्द के महल की तरफ़ जाने का हुक्म दिया वोह भी चली गई। चौथी से सुवाल किया तो वोह कुछ देर ख़ामोश रही फिर उस ने कहा : “**अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे हज़रते सय्यिदुना फ़ातिमा रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا के हुस्न पर पैदा किया और मेरा नाम उन के नाम पर रखा और हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा के उमर के साथ निकाह होने से दो हज़ार साल कब्ल **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ ने हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मेरा निकाह कर दिया था।”

येह शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइषे नुजुले सकीना, फैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के खुलफ़ाए राशिदीन, अन्सार और सहाबए किराम رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمْ हैं, इन्हें बरोजे क़ियामत इज़्ज़त वाले घर या'नी जन्नत की तरफ़ एहतिराम व इकराम के साथ ले जाया जाएगा।

मन्कूल है, हज़रते सय्यिदुना उमर बिन ख़त्ताब रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ और हज़रते सय्यिदुना उषमाने ग़नी रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार, बिइज़्ने परवर दगार صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के किसी काम में मशगूल थे कि नमाज़े अ़स्स का वक़्त हो गया। हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने हज़रते सय्यिदुना उषमाने ग़नी रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ को आगे बढ़ कर इमामत कराने का कहा तो आप रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने अर्ज़ की : “आप इस के मुझ से ज़ियादा हक़दार हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आप को मुक़द्दम फ़रमाया और आप की ता'रीफ़ की।”

हज़रते सय्यिदुना उमर बिन ख़त्ताब رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : “मैं आप से आगे नहीं बढूंगा क्यूंकि मैं ने सरकारे मदीना, करारे क़ल्बो सीना, बाइषे नुज़ूले सकीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को येह इरशाद फ़रमाते सुना : “उषमान कितना अच्छा इन्सान है, मेरा दामाद है और मेरी दो बेटियों का शोहर है, **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ ने उस में मेरा नूर इकठ्ठा कर दिया है ।”

हज़रते सय्यिदुना उषमाने ग़नी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : “मैं आप से आगे नहीं बढूंगा क्यूंकि मैं ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना है कि “**اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ ने उमर के ज़रीए इस्लाम को मुकम्मल फ़रमाया ।”

(الریاض النضرة فی مناقب العشرة، مناقب امیر المؤمنین عمر، فصل تاسع، جزء ثانی، ج ۱، ص ۳۱۳ “اکمل” بدله “اعز”)

हज़रते सय्यिदुना उमर बिन ख़त्ताब رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : “मैं आप से आगे नहीं बढूंगा क्यूंकि मैं ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना है कि “उषमान से फ़िरिश्ते भी हया करते हैं ।”

(صحیح مسلم، کتاب فضائل الصحابة، باب من فضائل عثمان بن عفان، الحدیث ۲۴۰۱، ص ۱۱۰)

हज़रते सय्यिदुना उषमाने ग़नी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : “मैं आप से आगे नहीं बढूंगा क्यूंकि मैं ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना है कि “**اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ ने उमर के ज़रीए दीन की तकमील फ़रमाई और मुसलमानों को इज़्ज़त बख़्शी ।”

(الریاض النضرة فی مناقب العشرة، مناقب امیر المؤمنین عمر، فصل تاسع، جزء ثانی، ج ۱، ص ۳۱۳ “اکمل” بدله “اعز”)

हज़रते सय्यिदुना उमर बिन ख़त्ताब رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : “मैं आप से आगे नहीं बढूंगा क्यूंकि मैं ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना है कि “उषमान कुरआने पाक को जम्अ करेगा, और येह रहमान का महबूब है ।”

(المستدرک، کتاب التفسیر، باب جمع القرآن لم یکن مرة واحدة، ج ۲، ص ۲۰۳، مفهوماً)

हज़रते सय्यिदुना उषमाने ग़नी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : “मैं आप से आगे नहीं बढूंगा क्यूंकि मैं ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना कि “उमर कितना अच्छा इन्सान है, बेवाओं और यतीमों की ख़बर गीरी करता है, उन के लिये उस वक़्त खाना लाता है जब लोग अ़ालमे ख़्वाब में होते हैं ।”

(جامع الترمذی، ابواب المناقب، باب مناقب معاذ بن جبل، الحدیث ۳۷۹۵، ص ۲۰۴۲، مختصراً)

हज़रते सय्यिदुना उमर बिन ख़त्ताब رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : “मैं आप से आगे नहीं बढूंगा क्यूंकि मैं ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना है कि “**اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ ने जैशुल उसरह (या’नी ग़ज़वए तबूक का लश्कर) तय्यार करने वाले उषमान की मग़फ़िरत फ़रमा दी है ।”

(الکامل فی ضعفاء الرجال لابن عدی، الرقم ۱۶۹ اسحاق بن ابراهیم، ج ۱، ص ۵۵۳، بتغییر)

हज़रते सय्यिदुना उषमान रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : “मैं आप से आगे नहीं बढूंगा क्यूंकि मैं ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को येह दुआ फ़रमाते सुना कि “या **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ उमर बिन ख़त्ताब के ज़रीए इस्लाम को इज़्ज़त अता फ़रमा ।” और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم



ने आप का नाम फ़ारूक़ रखा । और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के ज़रीए हक़ व बातिल के दरमियान फ़र्क़ किया ।”

(सनन ابن ماجه، كتاب السنه، باب فضل عمر رضي الله عنه، الحديث ١٠٥، ص ٤٨٣ - الطبقات الكبرى لابن سعد، الرقم ٥٦، اسلام عمر، ج ٣، ص ٢٠٥)

इस वाकिए की ख़बर जब हुज़ूर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को हुई तो आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दोनों के लिये दुआ फ़रमाई और एक दूसरे से हुस्ने अदब के साथ पेश आने पर इन की ता’रीफ़ फ़रमाई ।

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है, एक दिन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र क़र्रम اللّٰهُ तَعَالٰی وَجْهَهُ الْکَرِیْم और मौला मुश्किल कुशा हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा क़र्रम اللّٰهُ तَعَالٰی وَجْهَهُ الْکَرِیْم आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हुजरए अक्दस के पास हाज़िर हुवे । हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा क़र्रम اللّٰهُ तَعَالٰی وَجْهَهُ الْکَرِیْم ने हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से अर्ज की : “आप आगे बढ़ कर दरवाज़े पर दस्तक दें और इसे खोलने की देरीना इल्तिजा करें ।” हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया : ऐ अली ! आप आगे बढ़िये ।”

हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा क़र्रम اللّٰهُ तَعَالٰی وَجْهَهُ الْکَرِیْم ने फ़रमाया : मैं ऐसे शख्स से आगे नहीं बढ़ूंगा जिस के मुतअल्लिक़ मैं ने आप صَلَّی اللّٰهُ तَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना है कि “मेरे बा’द किसी ऐसे शख्स पर सूरज तुलूअ व गुरुब न होगा जो अबू बक्र सिद्दीक़ से अफ़ज़ल हो ।”

(الثقات لابن حبان، كتاب اتباع التابعين، الرقم ٢٦٨٩ عبد الملك بن عبد العزيز، ج ٤، ص ٥٧)

(حلیه الاولیاء، عطاء بن ابی رباح، الحديث ٤٣١٥، ج ٣، ص ٣٧٣)

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया : मैं ऐसे शख्स से आगे नहीं बढ़ूंगा जिस के मुतअल्लिक़ हुज़ूर صَلَّی اللّٰهُ तَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “मैं ने सब से बेहतरीन ख़ातून (या’नी हज़रते फ़ातिमा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا) सब से बेहतरीन मर्द (या’नी हज़रते अली रَضِيَ اللّٰهُ तَعَالٰی عَنْهُ) को अता की ।”

हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा क़र्रम اللّٰهُ तَعَالٰی وَجْهَهُ الْکَرِیْم ने फ़रमाया : “मैं ऐसे शख्स से आगे नहीं बढ़ूंगा जिस के हक़ में हुज़ूर सय्यिदुल मुबल्लिगीन, जनाबे रहमतुल्लिल आलमीन عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : “जो हज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को देखना चाहे वोह अबू बक्र सिद्दीक़ का सीना देख ले ।”

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया : “मैं ऐसे शख्स से आगे नहीं बढ़ूंगा जिस की शान में हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक़ صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “जो हज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام, हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और उन का हुस्न, हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और उन की नमाज़, हज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और उन का जोह्द और मुझे और मेरी सूरत देखना चाहे वोह अली को देख ले ।”

हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمُ ने फ़रमाया : “मैं ऐसे शख्स से आगे नहीं बढ़ूंगा जिस के हक़ में नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जब क़ियामत की घड़ियों में हसरत व नदामत के दिन तमाम मख़्लूक ज़म्अ होगी तो हक़ तआला की तरफ़ से एक मुनादी निदा करेगा : “ऐ अबू बक्र ! तुम और तुम से महब्बत करने वाले जन्नत में दाख़िल हो जाएं।”

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : “मैं ऐसे शख्स से आगे नहीं बढ़ूंगा जिस की तरफ़ ग़ज़वए हुनैन और ग़ज़वए ख़ैबर के दिन नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने खज़ूर और दूध हदिय्यतन भेजा और इरशाद फ़रमाया : “येह फ़न्ह व नुसरत के तालिब की तरफ़ से अली बिन अबी तालिब की तरफ़ हदिय्या है।”

हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمُ ने फ़रमाया : “मैं ऐसे शख्स से आगे नहीं बढ़ूंगा जिस के हक़ में सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “ऐ अबू बक्र ! तुम मेरी आंख (की ठन्डक) हो।”

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : “मैं ऐसे शख्स से आगे नहीं बढ़ूंगा जिस के हक़ में ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मख़ज़ने जूदो सखावत صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “अली जन्नत की सुवारियों में से किसी सुवारी पर आएंगे, और एक मुनादी निदा करेगा : “ऐ मुहम्मद (صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) दुन्या में आप का हसीन वालिद और ख़ूब सूरत भाई था, हसीन वालिद हज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह हैं और ख़ूब सूरत भाई हज़रते अली हैं।”

हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمُ ने फ़रमाया : मैं ऐसे शख्स से आगे नहीं बढ़ूंगा जिस के हक़ में **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़ज़हुन अनिल उयूब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जब क़ियामत का दिन होगा तो दारोगए जन्नत हज़रते रिज़वान जन्नत और जहन्म की चाबियां लाएगा और कहेगा : “ऐ अबू बक्र ! **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ आप को सलाम कहता है और फ़रमाता है कि येह जन्नत व दोज़ख़ की चाबियां हैं जिसे चाहो जन्नत में भेज दो और जिसे चाहो जहन्म में भेज दो।”

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : “मैं ऐसे शख्स से आगे नहीं बढ़ूंगा जिस के हक़ में हुस्ने अख़्लाक के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “हज़रते जिब्राईल मेरे पास हाज़िर हुवे और अर्ज की : “या रसूलल्लाह ! **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को सलाम कहता है और फ़रमाता है कि मैं आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ से और अली से महब्बत करता हूं तो मैं ने सजदए शुक्र अदा किया, (फिर फ़रमाया :) मैं फ़ातिमा से महब्बत करता हूं तो मैं ने फिर सजदए शुक्र अदा किया, (फिर फ़रमाया :) मैं हसन व हुसैन से महब्बत करता हूं तो मैं ने फिर सजदए शुक्र अदा किया।”

हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمُ ने फ़रमाया : “मैं ऐसे शख्स से आगे नहीं बढ़ूंगा जिस के हक़ में सय्यिदुल मुबल्लिगीन, जनाबे रहमतुल्लिल अलमीन صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “अगर अबू बक्र का ईमान अहले ज़मीन के ईमान के साथ तोला जाए तो अबू बक्र का ईमान उन सब पर भारी हो जाए।”

(شعب الإيمان للبيهقي، باب القول في زيادة الإيمان..... الخ، الحديث ٣٦، ج ١، ص ٦٩، راوى عمر رضى الله تعالى عنه)

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : मैं ऐसे शख्स से आगे नहीं बढ़ूंगा जिस के हक़ में सरकारे मदीना, करारे कल्बो सीना, बाइषे नुजूल सकीना صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “अली क़ियामत के दिन अपनी अवलाद और जौजा के साथ ऊंटों की सुवारियों पर सुवार हो कर आएंगे, लोग पूछेंगे : “येह कौन से नबी हैं ?” तो एक मुनादी निदा करेगा : “येह **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ का दोस्त अली बिन अबी तालिब है !!!”

हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمُ ने फ़रमाया : मैं ऐसे शख्स से आगे नहीं बढ़ूंगा जिस के हक़ में नबिय्ये करीम, रऊफ़रहीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “कल बरोज़े क़ियामत अहले महशर जन्त के आठों दरवाज़ों से येह आवाज़ सुनेंगे : “ऐ सिद्दीके अकबर ! जिस दरवाज़े से चाहो (जन्त में) दाख़िल हो जाओ।”

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : “मैं ऐसे शख्स से आगे नहीं बढ़ूंगा जिस के हक़ में **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ के प्यारे हबीब, हबीबे लबीब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “(जन्त में) मेरे और हज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के महल के दरमियान अली बिन अबी तालिब का महल है।”

हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمُ ने फ़रमाया : “मैं ऐसे शख्स से आगे नहीं बढ़ूंगा जिस के हक़ में हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेय़ यौमुन्नुशूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “आस्मान वाले मुक़रबीने बारगाहे इलाही, नूरी फ़िरिश्ते और मलाए आ'ला रोज़ाना अबू बक्र सिद्दीक का दीदार करते हैं।”

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : मैं ऐसे शख्स से आगे नहीं बढ़ूंगा जिस की शान में और जिस के घर वालों की शान में **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿٣٦﴾ وَيُطْعَمُونَ الطَّعَامَ عَلَى حُبِّهِ مِسْكِينًا

وَيَسِيرًا ۝ (پ ۲۹، الدهر : ۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और खाना खिलाते हैं उस की महब्वत पर मिस्कीन और यतीम और असीर को । (1)

①...मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي तफ़्सीरी ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं : “या'नी ऐसी हालत में जब कि खुद इन्हें खाने की हाज़त व ख़्वाहिश हो और बा'ज मुफ़स्सिरीन ने इस के येह मा'ना लिये हैं कि **اَللّٰهُ** तआला की महब्वत में खिलाते हैं। शाने नुज़ूल : येह आयत हज़रते अली मुर्तज़ा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ और हज़रते फ़ातिमा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا और उन की कनीज़ फ़िज़्ज़ा के हक़ में नाज़िल हुई। हसनैने करीमैन رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا बीमार हुवे। उन हज़रात ने इन की सिद्दहत पर तीन रोज़ों की नज़्र मानी। **اَللّٰهُ** तआला ने सिद्दहत दी। नज़्र की वफ़ा का वक़्त आया। सब साहिबों ने रोज़े रखे। हज़रते अली मुर्तज़ा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ एक यहूदी से तीन साअ (साअ एक पैमाना है) जव लाए। हज़रते ख़ातूने जन्त ने एक एक साअ तीनों दिन पकाया लेकिन जब इफ़्तार का वक़्त आया और रोटियां सामने रखीं तो एक रोज़ मिस्कीन, एक रोज़ यतीम, एक रोज़ असीर (कैदी) आया और तीनों रोज़ येह सब रोटियां उन लोगों को दे दी गई और सिर्फ़ पानी से इफ़्तार कर के अगला रोज़ा रख लिया गया।”



हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمُ ने इरशाद फ़रमाया : मैं ऐसे शख्स से आगे नहीं बढ़ूंगा जिस की शान **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ यूँ बयान फ़रमाता है :

﴿٢٤﴾ وَالَّذِي جَاءَ بِالصِّدْقِ وَصَدَّقَ بِهِ

أُولَئِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ 0 (प २६, الزمر: ३३)

**तर्जमए कन्जुल ईमान** : और वोह जो येह सच ले कर तशरीफ़ लाए और वोह जिन्हों ने इन की तस्दीक की येही डर वाले हैं ।

**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की तरफ़ से हज़रते सय्यिदुना जिब्राईले अमीन عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की बारगाह में हाज़िर हो कर अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ आप को सलाम कहता है और फ़रमाता है कि सातों आस्मानों के मलाइका इस वक़्त अबू बक्र सिद्दीक़ और अलिय्युल मुर्तज़ा की तरफ़ देख रहे हैं और इन के माबैन होने वाले हुस्ने ज़वाब और हुस्ने अदब को समाअत कर रहे हैं, आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ उन के पास तशरीफ़ ले जाइये और तीसरे फ़र्द हो जाइये कि **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ की रिज़ा व रहमत ने उन्हें अपनी लपेट में ले रखा है, और उन के साथ हुस्ने अदब और हुस्ने इस्लाम व ईमान को ख़ास कर दिया है । चुनान्चे, हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुरहीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ उन दोनों के पास तशरीफ़ ले गए उन को वैसे ही पाया जैसा कि हज़रते सय्यिदुना जिब्राईले अमीन عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने बयान किया था फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने दोनों के चेहरों को बोसए रहमत से नवाज़ा और इरशाद फ़रमाया : “उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए कुदरत में मेरी जान है ! अगर तमाम समन्दर सियाही हो जाए, तमाम दरख़्त क़लम बन जाएं, आस्मान व ज़मीन वाले किताब बन जाएं तो भी तुम्हारे फ़ज़ल व मर्तबा और तुम्हारे अज़्रो षवाब को लिखने से अज़िज़ आ जाएंगे ।”

**इन्शानी चेहरे वाला जानवर :**

हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन इदरीस शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِي फ़रमाते हैं : “मैं ने मक्काए मुकर्रमा में एक नसरानी को तवाफ़ करते हुवे देखा जो अस्क़फ़ के नाम से मशहूर था, मैं ने पूछा : “किस चीज़ ने तुम्हें अपने आबाओ अजदाद के दीन से मुन्हरिफ़ किया ?” उस ने कहा : “मैं ने उस से बेहतर चीज़ इख़्तियार की ।” मैं ने पूछा : “येह सब कैसे हुवा ?” तो उस ने अपना वाक़िआ बयान किया : “मैं समन्दर में एक कश्ती पर सुवार था, थोड़ी दूर पहुंचने के बा’द कश्ती टूट गई । मैं उस के एक तख़्ते पर लटक गया, समन्दर की मौजें मुझे धकेलती रहीं यहां तक कि किसी जज़ीरे में डाल दिया, उस में क़बीर दरख़्त थे जिन के फल शहद से ज़ियादा मीठे और मख़खन से ज़ियादा नर्म थे । एक साफ़ व शफ़्फ़ाफ़ नहर थी । मैं ने इस पर **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ का शुक्र अदा किया और कहा : अब मैं येह फल खाऊंगा और नहर से पानी पियूंगा जब तक कि कोई रास्ता नहीं मिलता । जब रात हुई तो मैं जानवरों के ख़ौफ़ से दरख़्त पर चढ़ कर किसी टहनी पर सो गया, रात का कुछ हिस्सा गुज़रने के बा’द मैं ने सत्हे आब पर एक जानवर को ब ज़बाने फ़सीह तस्बीह करते हुवे देखा, जिस का मफ़हूम कुछ यूँ है ।



फिर उस जानवर ने मुझे से पूछा : “तुम यहां ठहरना चाहते हो या अपने अहलो इयाल की तरफ लौटना चाहते हो ?” मैं ने कहा : “मैं अपने घर वालों की तरफ लौटना चाहता हूं।” उस ने कहा : “तो फिर यहां खड़े रहो, एक कश्ती का यहां से गुजर होगा।” मैं वहां खड़ा रहा। वोह जानवर समन्दर में उतर कर मेरी आंखों से ओझल हो गया फिर एक कश्ती गुजरी जिस में चन्द अफ़ाद सुवार थे। मेरे इशारा करने पर उन्होंने ने मुझे भी सुवार कर लिया। उस में बारह नसरानी थे। जब मैं ने उन को अपना वाकिआ बताया तो सब के सब दाइराए इस्लाम में दाखिल हो गए। फिर मुझे यकीन हो गया कि इन लोगों का **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ के हां ज़रूर कोई राज है कि इन की बरकत से मुझे इस्लाम की दौलत मिली और बुलन्द मक़ाम नसीब हुवा।”

وَصَلَّى اللّٰهُ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِهِ وَصَحْبِهِ أَجْمَعِينَ



### नमाजी और सायउ रहमत

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि “हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने आलीशान है : “**अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ तीन अश्खास को अपने सायए रहमत में जगह अता फ़रमाएगा जिस दिन इस के इलावा कोई साया न होगा (1) अमानत दार ताजिर (2) आदिल हुकमरान और (3) दिन में सूरज की रिआयत करने वाला।” (या’नी वक़्त में नमाज़ पढ़ने वाला)

(کنز العمال، کتاب المواعظ..... الخ، الحدیث ۴۳۲۵۲، ج ۱۵، ص ۳۶)



## बयान 54 : अल्लाही अलाम का बयान हम्मे बारी तझाला :

सब खूबियां **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के लिये जिस की खुशबू महबूत से सच्चे दोस्त नर्म, हवा बन कर उभरे। उस ने रात के आखिरी हिस्सों में उन से महबूत भरी गुफ्तगू की, पस वोह उन का हम नसीन हो गया। उस ने मुनाजात की तन्हाई में पहले उन को पाक व साफ प्यालों से खालिस शराब (या'नी जामे महबूत) पिलाई फिर उन पर तजल्ली फ़रमाई तो वोह उस की महबूत में दीवाने हो गए। उन्हें अपनी महबूत का जाम पिलाने वाला उन की दीवानगी को जानता है। उस ने हिदायत के लिये उन को बसीरत से सरफ़राज़ फ़रमाया, तक्वा व परहेज़गारी की दौलत से माला माल किया और सीधे रास्ते पर चलाया। उस ने उन की तरफ़ मेहरबान रसूल और साहिबे अज़मतो शराफ़त नबी صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को भेजा और अपने प्यारे हबीब, हबीबे लबीब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के फ़ज़लो शरफ़ के लिये अपनी मुक़द्दस किताब “कुरआने करीम” में येह आयते मुबारका नाज़िल फ़रमाई :

هُوَ الَّذِي يُصَلِّيْ عَلَيْكُمْ وَمَلَائِكَتُهُ لِيُخْرِجَكُمْ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّوْرِ وَكَانَ بِالْمُؤْمِنِينَ رَحِيْمًا (٢٢, الاحزاب: ٤٣)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :** वोही है कि दरूद भेजता है तुम पर वोह और उस के फ़िरिशते कि तुम्हें अन्धेरियों से उजाले की तरफ़ निकाले और वोह मुसलमानों पर मेहरबान है।” (1)

**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने इस नबिय्ये रहूमत صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के ज़रीए आबे ज़म ज़म और हतीमे का'बा को मुशरफ़ फ़रमाया। आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ को मुज्ताबा और मुस्तफ़ा की शानों से खास किया। उस ने अपने मुबारक नामों में से दो नामों “रऊफ़ व रहीम” के साथ आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ का नाम रखा। लिहाज़ा जिस ने आप صَلَّى اللَّهُ तَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की शरीअत की पैरवी की उस ने बहुत बड़ा फ़ज़ल पा लिया और जन्नत में ताज़गी और ने'मतों को हासिल कर लिया। आप صَلَّى اللَّهُ तَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने कितने ही कैदियों को आज़ाद किया। कितने ही बे यारो मददगार मसाकीन को पनाह दी। कितने ही टूटे दिलों को जोड़ दिया, फ़कीरों को ग़नी कर दिया और यतीमों पर रहूम फ़रमाया। हज़रते सय्यिदुना आदम सफ़िय्युल्लाह عَلَى نَبِيْنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को वसीला बनाया पस उन्होंने ने आप صَلَّى اللَّهُ तَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की जाते गिरामी पर दुरूद शरीफ़ भेजा तो इज़्ज़त व करामत के साथ लौटे। हज़रते सय्यिदुना नूह नजिय्युल्लाह عَلَى نَبِيْنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने इन के तुफ़ैल दुआ की तो डूबने से महफूज़ रहे। हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَى نَبِيْنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने उन के वसीले से बारगाहे इलाही عَزَّ وَجَلَّ में अर्ज़ की तो

عَلَيْهِ وَحَمَةُ اللَّهِ الْهَادِي...मुफ़्सिरे शहीर, ख़लीफ़ आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी ने फ़रमाया तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं “शाने नुज़ूल : हज़रते अनस رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया कि जब आयत النّبيّ صَلَوَاتُ اللَّهِ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ नाज़िल हुई तो हज़रते सिद्दीके अकबर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह जब आप को **अल्लाह** तआला कोई फ़ज़लो शरफ़ अता फ़रमाता है तो हम नियाज़ मन्दों को भी आप के तुफ़ैल में नवाज़ता है। इस पर **अल्लाह** तआला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई।”

आग इन पर ठन्डी और सलामती वाली हो गई । जब हज़रते सय्यिदुना इस्माईल ज़बीहुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने आप عَلَى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام पर दुरुदो सलाम की कषरत की और उन के सदके मदद के ख्वास्तगार हुवे तो फ़िदये के ज़रीए मदद फ़रमाई गई और येह ने'मतें इज़ाफ़े के बा'द बर करार रहें । हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने आप عَلَى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام पर दुरुदे पाक पढ़ा तो उन्हें **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ से हम कलामी का शरफ़ अता हुवा और हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने हुज़ूरे अन्वर, शाफ़ेए महशर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की आमद की बिशारत व खुश ख़बरी दी तो उन्होंने ने रिफ़अत व सबक़त को पा लिया । और रहूमते आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की जाते वाला सिफ़ात ही है जिस पर दरख़्तों और पथ्थरों ने सलाम पढ़ा और मुक़द्दस फ़िरिश्तों ने दुरुदे पाक भेजा तो अब वोह रब्बे लम यज़ल عَزَّ وَجَلَّ की बारगाह में इस ने'मत पर नाज़ां हैं ।

ऐ नाफ़रमानों के गुरौह ! तुम्हें किस चीज़ ने मक्की मदनी सुल्तान, रहूमते आलमिय्यान, सरदारो दो जहान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर दुरुदे पाक पढ़ने से गाफ़िल कर रखा है । दुरुदे पाक तो वोह अज़ीम इबादत है जो बड़े बड़े गुनाहों को मिटा देती और पढ़ने वाले को इज़्ज़त व तकरीम अता करती है । पस तुम हुज़ूर नबिय्ये रहूमत, शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ पर कषरत से दुरुद शरीफ़ पढ़ा करो और उन की ऐसी ता'ज़ीम व अदब करो जिस का तुम्हारे मौला عَزَّ وَجَلَّ ने तुम्हें हुक्म फ़रमाया है । इस तरह तुम जन्नत और उस की ने'मतों से सरफ़राज़ किये जाओगे और अज़ाब व नारे दोज़ख़ से बच जाओगे । **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की उस शान को बयान फ़रमाया जो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के अख़्लाके अलिय्या और मख़्लूक के मुतअल्लिक है । चुनान्वे, इरशादे बारी तआला है :

وَكَانَ بِالْمُؤْمِنِينَ رَحِيمًا ﴿٢٢﴾ (الاحزاب: २३)

**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़रहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के उस उम्मतो को जन्नत में फ़ज़ीलत व मर्तबे की बिशारत दी है जिस ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ पर दुरुदे पाक पढ़ा । चुनान्वे, **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

تَحِيَّتُهُمْ يَوْمَ يَلْقَوْنَهُ سَلَامٌ وَأَعَدَّ لَهُمْ أَجْرًا كَرِيمًا ﴿٢٢﴾ (الاحزاب: २४)

“<sup>(1)</sup>” ।<sup>(1)</sup>”

①...मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़े आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِي तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं “मिलते वक़्त से मुराद या मौत का वक़्त है या क़ब्रों से निकलने का या जन्नत में दाख़िल होने का । मरवी है कि हज़रते मलकुल मौत किसी मोमिन की रूह उस को सलाम किये बिग़ैर कब्ज़ नहीं फ़रमाते । हज़रते इब्ने मसऊद رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है कि जब मलकुल मौत मोमिन की रूह कब्ज़ करने आते हैं तो कहते हैं कि तेरा रब्ब तुझे सलाम फ़रमाता है और येह भी वारिद हुवा है कि मोअमिनीन जब क़ब्रों से निकलेंगे तो मलाइका सलामती की बिशारत के तौर पर उन्हें सलाम करेंगे ।” (जमल व ख़ाज़िन)

तो ऐ इस्लामी भाइयो ! तुम मम्बए जूदो सखावत, क़ासिमे ने'मत, सरापा रहमत, शाफ़ेए उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद शरीफ़ की कषरत करो कि दुरूदे पाक ग़मों और मुसीबतों को दूर करता और बीमारियों से शिफ़ा देता है। और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ने का हुक्म तो खुद **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ ने दिया है। वोह तुम्हें ख़बरदार करते हुवे, समझाते हुवे, याद दिलाते हुवे और सिखाते हुवे इरशाद फ़रमा रहा है :

﴿اِنَّ اللّٰهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ۚ يَا أَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ۝۱०﴾

(प २२, अहज़ाब: ५६)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक **अब्बाह** और उस के फ़िरिश्ते दुरूद भेजते हैं उस ग़ैब बताने वाले (नबी) पर। ऐ ईमान वालों ! उन पर दुरूद और ख़ूब सलाम भेजो।

हज़रते सय्यिदुना अबू तलहा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ रिवायत फ़रमाते हैं कि मैं सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइषे नुजूले सकीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में हाज़िर हुवा, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चेहरे पर बिशाशत (या'नी खुशी) के आधार थे, मैं ने अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मैं ने कभी आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم को आज की तरह इतना खुश व ख़ुरम और हश्शाश बश्शाश नहीं देखा।” तो इरशाद फ़रमाया : “आज मैं क्यूं कर खुश न होऊंगा कि अभी मेरे पास जिब्राईले अमीन عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام आए और अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم पर एक बार दुरूद भेजे इस के इवज़ उस के लिये दस नेकियां लिखी जाती हैं, दस गुनाह मुआफ़ होते हैं और दस दर्जात बुलन्द होते हैं और मालिके हकीक़ी भी दुरूदे पाक भेजने वाले की मिष्ल कहता है।”

(المسند للإمام احمد بن حنبل، حديث ابى طلحة، الحديث १६३०२، ج ५، ص ५०९)

एक दूसरी रिवायत में है : “**अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ दुरूद पढ़ने वाले पर उस के क़ौल की मिष्ल रहमतें और बरकतें लौटाता है।”

**रुखे मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नूशानियत :**

उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना अइशा सिद्दीक़ा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا फ़रमाती हैं : “मैं वक्ते सहर कुछ सी रही थी कि सूई मेरे हाथ से गिर गई और चराग़ बुझ गया। इतने में हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुरहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ ले आए, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم के चेहरए अक्दस के नूर से सारा कमरा जगमगा उठा और सूई मिल गई। (बरादरे आ'ला हज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعَرْز फ़रमाते हैं) :

**सूज़ने गुम शुदा मिलती है तबस्सुम से तेरे**

**शाम को सुक़ बनाता है उजाला तेरा**

(जौके ना'त)

मैं ने अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم का चेहरए अन्वर कितना रोशन है ? तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ऐ अइशा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا (हलाक़त है उस के लिये जो बरोजे क़ियामत मुझे न देखेगा।” मैं ने अर्ज़ की : “बरोजे क़ियामत



आप ﷺ की ज़ियारत से कौन महरूम रहेगा ?” आप ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : “बख़ील ।” मैं ने पूछा : “या रसूलल्लाह ﷺ बख़ील कौन है ?” इरशाद फ़रमाया : “वोह है जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न भेजे ।”

(دلائل النبوة للإسماعيل الأصبهاني، فصل، الحديث ١١٧، ص ١١٣)

(السنن الكبرى للنسائي، كتاب العمل اليوم واللييلة، باب من البخيل، الحديث ٩٨٨٥، ج ٦، ص ٢٠)

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है, **अल्लाह** के प्यारे हबीब, हबीबे लबीब रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ इरशाद फ़रमाते हैं : “मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूद पढ़ना तुम्हारे लिये तहरात है और **अल्लाह** से मेरे लिये (मक़ामे) वसीला का सुवाल करो ।” सहाबए किराम رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمْ ने अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह ﷺ वसीला क्या है ?” इरशाद फ़रमाया : “जन्नत में सब से आ'ला दर्जा है जो सिर्फ़ एक शख्स को मिलेगा और मुझे उम्मीद है कि वोह मैं हूँ ।” (مصنف ابن ابی شبيبہ، کتاب الفضائل، باب ما اعطى اللّٰهُ تَعَالٰی محمداً ﷺ، الحديث ١٤٦، ج ٧، ص ٤٤٢)

(جامع الترمذی، ابواب المناقب، باب سلوا اللّٰهُ لی الوسيلة، الحديث ٣٦١٢، ص ٢٠٢٤)

हज़रते सय्यिदुना अली बिन अबी त़ालिब रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है, **अल्लाह** के प्यारे रसूल, रसूले मक़बूल रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का फ़रमाने अ़लीशान है : “जो मुझ पर जुमा'रात की शाम को दुरूदे पाक पढ़ता है फ़िरिश्ते अपने हाथों में चांदी के वरक़ और सोने के क़लम ले कर नाज़िल होते हैं और जो मुझ पर जुमा'रात की शाम, शबे जुमुआ, रोज़े जुमुआ और जुमुआ की शाम को दुरूदे पाक पढ़ता है वोह उस का दुरूद लिखते हैं । पस जुमुआ के दिन मुझ पर क़रत से दुरूदे पाक पढ़ो ।”

(نزہة المجالس، باب فضل الصلاة والتسليم..... الخ، ج ٢، ص ١٨٠)

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है, हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का फ़रमाने ज़ीशान है : “जो मुझ पर जुमुआ की रात या जुमुआ के दिन एक बार दुरूदे पाक पढ़ता है **अल्लाह** उस की सो उख़रवी हाजात और तीस दुन्यावी हाजात पूरी फ़रमाता है और मेरे पास एक फ़िरिश्ता भेजता है जो मेरी क़ब्र में दाख़िल हो कर मुझे उस दुरूद पढ़ने वाले के नाम व नसब और ख़ानदान के मुतअल्लिक़ बताता है फिर मैं उसे अपने पास सफ़ेद सहीफ़े में महफूज़ कर लेता हूँ ।”

(شعب الايمان للبيهقي، باب فی الصلوات/ فضل الصلوة علی النبی ﷺ، الجمعة، الحديث ٣٠٣٥، ج ٣، ص ١١١، بتغییر)

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ इरशाद फ़रमाते हैं : “बेशक **अल्लाह** के कुछ सियाहत करने वाले फ़िरिश्ते हैं, वोह मशरिक् व मग़रिब में मुझ पर दुरूद पढ़ने वाले का दुरूद शरीफ़ मुझ तक पहुंचाते हैं । पस जो शख्स हर जुमुआ के दिन मुझ पर अस्सी (80) बार दुरूदे पाक पढ़ेगा उस के अस्सी साल के गुनाह बख़्शा दिये जाएंगे ।”

(سنن النسائي، کتاب السهو، باب التسليم علی النبی ﷺ، الحديث ١٢٨٣، ص ٢١٧٠)

(تاریخ بغداد، الرقم ٧٣٢٦ وهب بن داؤد بن سليمان ابو القاسم المخرمی، ج ١٣، ص ٤٦٣)

ताजदारै हरम, शाहे अरबो अजम صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ و آلہ و سَلَّمَ का फ़रमाने रहमत निशान है : “मुझ पर महबूबत व शौक़ से दुरूदे पाक पढ़ा करो इस लिये कि वोह मुझ तक पहुंचता है ।”

(सनن अबी दाؤद, کتاب المناسک, باب زیارة القبور, الحديث ۴۲ : ۲, ص ۱۳۷۳, مفهوماً)

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अली बिन अबी तालिब رَضِيَ اللہ تعالیٰ عَنْهُ से मरवी है, नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ و آلہ و سَلَّمَ का फ़रमाने जन्नत निशान है : “क़ियामत के दिन लोगों में मेरे क़रीब तर वोह शख्स होगा जिस ने मुझ पर कषरत से दुरूदे पाक पढ़े होंगे और जो लोग अपनी महफ़िल में मुझ पर दुरूदे पाक नहीं पढ़ते बरोज़े क़ियामत उन पर हुज्जत होगी । अगर **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ चाहे तो उन्हें मुआफ़ फ़रमा दे और चाहे तो मुआख़ज़ा फ़रमाए ।”

(جامع الترمذی, ابواب الوتر, باب ماجاء فی فضل الصلاة علی النبی ﷺ, الحديث ۴۸۴, ص ۱۶۹, جامع الترمذی, کتاب الدعوات,

باب ما جاء فی القوم یجلسون..... الخ, الحديث ۳۳۸۰, ص ۱۹۹۹, الزهد لابن المبارك, باب فضل ذکر اللہ عزوجل, الحديث ۹۶۲, ص ۳۴۲)

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़लाक صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ و آلہ و سَلَّمَ का फ़रमाने रहमत निशान है : “जिस दिन सायए अर्श के सिवा कोई साया न होगा उस दिन तीन क़िस्म के लोग अर्शे इलाही عَزَّوَجَلَّ के साए में होंगे ।” अर्ज की गई : “या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ و آلہ و سَلَّمَ वोह कौन हैं ?” इरशाद फ़रमाया : “(1).....जिस ने मेरे किसी उम्मत की परेशानी दूर की (2).....जिस ने मेरी सुन्नत को ज़िन्दा किया और (3).....जिस ने मुझ पर कषरत से दुरूद पढ़ा ।”

(شرح الزرقانی علی موطأ الامام مالک, کتاب الشّعَر, باب ماجاء فی المتحابين فی اللہ, تحت الحديث ۱۸۴۱, ج ۴, ص ۴۶۹)

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللہ تعالیٰ عَنْهُ से मरवी है, **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब, हबीबे लबील صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ و آلہ و سَلَّمَ का फ़रमाने मग़फ़िरत निशान है : “जिस ने किसी किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा जब तक मेरा नाम उस किताब में रहेगा मलाइका उस के लिये इस्तिग़फ़ार करते रहेंगे ।”

(المعجم الاوسط, الحديث ۱۸۳۵, ج ۱, ص ۴۹۷)

सरकारे दो आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ و آلہ و سَلَّمَ का फ़रमाने बरकत निशान है : “जो मेरे हक़ की ता’जीम करते हुवे मुझ पर दुरूदे पाक भेजता है **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ उस से एक फ़िरिश्ता पैदा फ़रमाता है जिस का एक पर मशरिफ़ में, दूसरा मग़रिब में, उस की दोनों टांगें सातवीं ज़मीन में और गर्दन अर्श के नीचे होती है । **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ उसे फ़रमाता है : “तुम मेरे बन्दे पर इसी तरह दुरूदे पाक भेजो जिस तरह उस ने मेरे नबी पर भेजा ।” पस वोह फ़िरिश्ता ता क़ियामत उस बन्दे पर दुरूद भेजता रहेगा ।”

(فردوس الاخبار للديلمي, باب الالف, الحديث ۱۱۳۱, ج ۱, ص ۱۷۰)

नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ و آلہ و سَلَّمَ का फ़रमाने रहमत निशान है : “बेशक **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ इस्तिग़फ़ार के सबब तुम्हारे गुनाह बख़्शा देता है, पस जो सच्चे दिल से इस्तिग़फ़ार करे उस को बख़्शा दिया जाता है और जिस ने “لااله الا الله”

कहा उस का मीज़ान (या'नी नेकियों का पलड़ा) भारी होगा और जो मुझ पर दुरुद भेजे मैं क़ियामत के दिन उस का शफ़ीअ होऊंगा।" (२०। ज १, ११८, الحديث) فضل الاستغفار وثوابه، باب مختصر من فضل الاستغفار وثوابه، الحديث ११८، ج १، ص २०।

हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रहूमत निशान है :  
“बेशक **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने मेरी क़ब्रे अक़दस पर दो फ़िरिश्ते मुक़र्रर फ़रमाए हैं। जब किसी मुसलमान के पास मेरा ज़िक्र होता है और वोह मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ता है तो फ़िरिश्ते उस के जवाब में कहते हैं : “**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ तेरी मग़फ़िरत फ़रमाए।” उस के जवाब में अर्श उठाने वाले और दीगर फ़िरिश्ते आमीन कहते हैं जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरुदे पाक न भेजे तो वोह दोनों फ़िरिश्ते कहते हैं : “**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ तेरी मग़फ़िरत न फ़रमाए।” और अर्श उठाने वाले और दीगर फ़िरिश्ते उस के जवाब में आमीन कहते हैं।” (المعجم الكبير، الحديث २७५३، ج ३، ص ८९)

हुज़ूर सय्यिदुल मुबल्लिगीन, जनाबे रहूमतुल्लिल आलमीन صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : “जो लोग किसी मजलिस में जम्अ हों और फिर मुझ पर दुरुदे पाक पढ़े बिगैर एक दूसरे से जुदा हो जाएं तो वोह मुर्दार गधे से ज़ियादा बदबू छोड़ कर जुदा होते हैं।”  
और जिस (السنن الكبرى للنسائي، كتاب العمل اليوم والليلة، باب من جلس مجلساً..... الخ، الحديث १०२४४، بدون “الحمار”) इजतिमाअ में मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ा जाता है वहां से पाकीज़ा खुशबू फूटती है यहां तक कि वोह आस्मान की बुलन्दी तक पहुंच जाती है, फ़िरिश्ते कहते हैं : “येह उस इजतिमाअ की खुशबू है जिस में मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरुद पढ़ा गया है। यकीनन आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर भेजे गए दुरुदे पाक की खुशबू तमाम खुशबूओं पर फ़ौक़ियत रखती है, मलाइका इस को फ़ौरन पहचान लेते हैं और तमाम खुशबूओं से इस का इम्तियाज़ कर लेते हैं।”

सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख्तार, बिइज़्ने परवर दगार صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बख़्शिश निशान है : “जिस ने मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ा वोह दोज़ख में नहीं जाएगा।”

हुज़ूर नबिय्ये रहूमत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रहूमत निशान है :  
“जिस ने मुझ पर सो बार दुरुदे पाक भेजा तो आग उस से सो साल की दूरी पर हट जाएगी।”

नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रहूमत निशान है : “तुम में से ज़ियादा दुरुदे पाक पढ़ने वाले के लिये जन्नत में ज़ियादा बीवियां होंगी।”

हज़रते सय्यिदुना अब्दुर्रहमान बिन औफ़ صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मरवी है, हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :  
“ऐ मुहम्मद ! जो आप पर दुरुद भेजेगा मैं उस पर दुरुद भेजूंगा और जो आप पर सलाम भेजेगा मैं उस पर सलाम भेजूंगा।” (المسند للإمام أحمد بن حنبل، حديث عبد الرحمن بن عوف، الحديث १६६४، ج १، ص ४०७)



صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम का फ़रमाने रहमत निशान है : “बन्दा जब **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ से अपनी किसी हाज़त का सुवाल करता है लेकिन इस के बा’द मुझ पर दुरूदे पाक नहीं पढ़ता तो उस की हाज़त बादलों तक बुलन्द होती है। फिर जब वोह मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है तो उस की हाज़त पूरी हो जाती है और दुआ भी क़बूल हो जाती है और उस के लिये आस्मान के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं।”

हुज़ूर सय्यिदुल मुबल्लिगीन, जनाबे रहमतुल्लिल आलमीन صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने ज़ीशान है : “जो मुझ पर दुरूद भेजता है **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस पर मुकर्रर फ़िरिशतों को हुक्म देता है कि तीन दिन तक इस का कोई (बुरा) अमल न लिखें।”

(المستطرف فى كل فن مستظرف، باب ٨٤ فىما جاء فى فضل الصلاة..... الخ، ج ٢، ص ٥٠٥)

मरवी है : “जब क़ियामत के दिन मोमिन की नेकियां और बुराइयां तोली जाएंगी तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की तरफ़ से कुछ सहीफ़े उस की नेकियों वाले पलड़े में रखे जाएंगे जिस की वजह से नेकियां बुराइयों पर ग़ालिब आ जाएंगी। **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ फ़रमाएगा : “येह तेरा वोह दुरूदे पाक है जो तू ने मुहम्मदे मुस्तफ़ा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर भेजा था जिस के सबब तेरी नेकियों का वज़्न ज़ियादा हो गया, मैं ने इस को तेरे लिये महफूज़ कर रखा था।”

हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अब्दुल्लाह رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुलताने बहरो बर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने जन्नत निशान है : “जिस ने सुब्हो शाम येह दुरूदे पाक पढ़ा :

اللَّهُمَّ يَا رَبِّ مُحَمَّدٍ وَالْ مُحَمَّدٍ صَلَّى عَلَى مُحَمَّدٍ وَالْ مُحَمَّدٍ وَأَجْرُ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ مَا هُوَ أَهْلُهُ  
या’नी या **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ऐ (हज़रत) मुहम्मद (صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) और उन की आल के रब्ब और (हज़रत) मुहम्मद (صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) और उन की आल पर रहमत भेज और (हज़रत) मुहम्मद (صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) को उन के शायाने शान जज़ाए खैर अता फ़रमा।” तो उस ने आ’माल लिखने वाले फ़िरिशतों को एक हज़ार सुब्ह तक (इस का अज़्र लिखने) पर लगा दिया। और उस ने अपने नबी का हक़ अदा किया, **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ उस की और उस के वालिदैन् की मग़फ़िरत फ़रमाए और (हज़रत) मुहम्मद (صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) और आले मुहम्मद (صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) के साथ इस का हशर फ़रमाए।” (आमीन)

**हज़रते सय्यिदुना हव्वा रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا का हक्के महर :**

हज़रते सय्यिदुना वहब बिन मुनब्बेह رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : “जब **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ ने हज़रते सय्यिदुना आदम सफ़िय्युल्लाह عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام को पैदा फ़रमाया और इन में रूह फूँकी और इन्हों ने अपनी निगाहें खोलीं तो जन्नत के दरवाज़े पर येह लिखा हुवा देखा, **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللَّهِ** तो अर्ज़ की : “या **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ क्या तू ने किसी ऐसी हस्ती को भी पैदा फ़रमाया है जो तेरे नज़दीक मुझ से

भी ज़ियादा मुअज़्ज़ है ?” तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की जानिब से जवाब मिला : “हां ! वोह तेरी अवलाद में से एक नबी है ।” फिर जब **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने हज़रते सय्यिदतुना अम्मां हव्वा عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام को पैदा फ़रमा कर हज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام में शहवत रखी और आप عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने उन से निकाह की ख़्वाहिश की तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : “इस का हक्के महर अदा करो ।” आप عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالसَّلَام ने अर्ज़ की : “इस का हक्के महर क्या है ?” **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : “इस नाम वाले पर सो मरतबा दुरूदे पाक भेजो ।” अर्ज़ की : “या **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ अगर मैं ऐसा करूं तो क्या तू मेरा निकाह इस से कर देगा ?” तो **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ ने फ़रमाया : “हां ।” चुनान्वे, हज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने हुजूर नबिय्ये करीम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا पर सो मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा और येह हज़रते सय्यिदतुना हव्वा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا का महर था । फिर **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने आप عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام का निकाह हज़रते सय्यिदतुना हव्वा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا से कर दिया । (نزهة المجالس، باب مناقب فاطمة الزهراء رضى الله تعالى عنها، فصل فى تزويج حواء ..... الخ، ج ۲، ص ۳۱۷، مفهوماً)

### ऊंट बोल उठा :

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से मरवी है : “एक आ’राबी अपनी ऊंटनी को मस्जिद के दरवाजे पर बांध कर आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की खिदमते अक्दस में हाज़िर हो कर बैठ गया । जब उस का मक्सद पूरा हो गया तो खड़े होने का इरादा ही किया था कि कुछ लोगों ने अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ इस आ’राबी के पास जो ऊंटनी है, वोह चोरी की है ।” नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ उस की तरफ़ मुतवज्जेह हुवे और इरशाद फ़रमाया : “तुम क्या कहते हो ?” वोह सर झुका कर अपनी उंगली से ज़मीन कुरेदने लगा, **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने ऊंटनी को कुव्वते गोयाई अता फ़रमाई तो उस ने दरवाजे के पीछे से अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ उस ज़ात की क़सम जिस ने आप को बशीर व नज़ीर बना कर हक् के साथ भेजा ! इस शख्स ने मुझे नहीं चुराया बल्कि मुझे किसी और ने चुराया है इस ने तो कीमत दे कर मुझे उस से ख़रीदा है, येह मुजरिम नहीं है ।”

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने उस आ’राबी से इस्तिफ़सार फ़रमाया : “ऐ आ’राबी ! तुझे उस ज़ात की क़सम जिस ने तेरी बराअत के लिये ऊंटनी को कुव्वते गोयाई अता फ़रमाई ! येह तो बता कि सर झुका कर ज़मीन कुरेदते हुवे तू ने क्या कहा था ?” उस ने अर्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मैं ने अर्ज़ की थी :

اللَّهُمَّ لَسْتُ بِرَبِّ اسْتَحْدَثْنَاكَ وَلَا مَعَكَ شَرِيكَ فِي مُلْكِكَ أَغَانَكَ عَلَى

خَلْقِنَا أَنْتَ كَمَا تَقُولُ وَفَوْقَ كُلِّ مَا نَقُولُ، أَسْأَلُكَ يَا رَبِّ أَنْ تُصَلِّيَ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ وَتُبَرِّئَنِي بِرَاءً أَمَّا فِيهِ

या’नी या **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ तू ऐसा रब्ब नहीं कि जिस को हम ने अपने पास से घड़ लिया हो, और न ही तेरे मुल्क में तेरा कोई शरीक है जो हमारी तख़लीक़ पर तेरी इज़ानत करे, बेशक तू वैसा ही है जैसा कि तू फ़रमाता है और तू हमारे बयान से भी बहुत बुलन्द है, या **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ मैं तुझ से सुवाल करता हूं कि

मुहम्मदे मुस्तफ़ा صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और उन की आल पर रहमत भेज और मुझे इस मुसीबत से छुटकारा अता फ़रमा ।” तो हुजूर सय्यिदुल मुबल्लिगीन, रहमतुल्लिल आलमीन صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “उस ज़ात की क़सम जिस ने मुझे हक़ के साथ मबरूफ़ फ़रमाया ! मैं ने ग़लियों में मलाइका का इज़दहाम देखा जो तेरे इन कलिमात को लिख रहे थे, पस जो शख़्स ऐसी मुसीबत में मुब्तला हो जिस में तू मुब्तला हुवा और येह कलिमात कहे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे उस मुसीबत से नजात अता फ़रमाएगा ।” (المستدرک، کتاب آیات رسول اللہ عزوجل..... الخ، الحديث ٤٢٩٤، ج ٣، ص ٥٢٢)

मन्कूल है, मुहदिधीने किराम اللہ رَحْمَتُہُمْ क़ियामत के दिन अपने क़लमदान लिये हाज़िर होंगे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हज़रते सय्यिदुना जिब्राईले अमीन عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام से फ़रमाएगा : “ऐ जिब्राईल ! इन की तमाम हाजात पूरी कर दो क्यूंकि येह दुन्या में नबिय्ये करीम (صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) पर कषरत से दुरूद भेजते थे, और इन्हें हाथ पकड़ कर जन्नत में दाख़िल कर दो ।”

**बा आवाजे बुलन्द दुरूद पढ़ने वालों की बरिश्श हो गई :**

एक बुजुर्ग का बयान है, “मेरा एक गुनाहगार पड़ोसी था । उस की वफ़ात के बा’द मैं ने उसे ख़्वाब में जन्नत में देखा तो पूछा : “तुम्हें येह मक़ाम कैसे मिला ?” उस ने बताया : “मैं एक इजतिमाए ज़िक्र में हाज़िर हुवा । एक मुहदिष साहिब को रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का येह फ़रमान बयान करते सुना कि “जो शख़्स रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم पर बुलन्द आवाज़ से दुरूदे पाक भेजे उस के लिये जन्नत वाजिब हो जाती है ।” येह कहने के बा’द उन मुहदिष साहिब ने बा आवाजे बुलन्द दुरूदे पाक पढ़ा फिर मैं ने और तमाम अहले इजतिमाअ ने दुरूदे पाक पढ़ा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उसी दिन हमें बरिश्श दिया ।” (فضائل درودو سلام بحواله سعادة الدارين، ص ١٥٨)

शहनशाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिषाल, बीबी आमीना के लाल صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “एक दिन जिब्राईले अमीन عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने मेरे पास हाज़िर हो कर अर्ज की : “ऐ मुहम्मदे मुस्तफ़ा (صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم) मैं आप صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم के पास ऐसी खुश ख़बरी ले कर हाज़िर हुवा हूं जो आप صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم से पहले किसी के पास लाया न बा’द में (लाऊंगा), और वोह येह कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : “(ऐ महबूब ! ) तेरा जो उम्मती तुझ पर तीन मरतबा दुरूदे पाक पढ़ेगा अगर खड़ा था तो बैठने से पहले और अगर बैठा था तो खड़े होने से पहले उसे बरिश्श दिया जाएगा ।” येह सुन कर आप صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में सजदए शुक्र अदा किया ।” (المستطرف فی کل فن مستطرف، باب ٨٤ فیما جاء فی فضل الصلاة..... الخ، ج ٢، ص ٥٠٥)

मन्कूल है कि एक औरत अपने बेटे को मरने के बा’द क़ब्र में अज़ाब में मुब्तला देख कर बहुत ग़मगीन हुई और गिर्या व ज़ारी करने लगी । फिर उस औरत ने दोबारा अपने बेटे को रहमत व नूर की छमा छम बारिश में देख कर उस के मुतअल्लिक दरयाफ़्त किया तो उस ने जवाब दिया : “एक शख़्स इस क़ब्रिस्तान से गुज़रा उस ने हुजूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ कर इस का षवाब तमाम मुर्दों को पहुंचाया तो इस की बरकत से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे बरिश्श दिया ।”



एक अरिफ़ का बयान है कि “मैं एक रात नमाज़ पढ़ते हुवे तशह्हुद में सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख्तार बिइज़्ने परवर दगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया, मुझ पर नींद का ग़लबा हुवा और मैं सो गया। ख़्वाब में आकाए दो जहां, सरवरे ज़ीशां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दीदार नसीब हुवा। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “तू आज हम पर दुरूद भेजना भूल गया ?” मैं ने अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मैं **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की षना में मशगूल था।” आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “क्या तुझे मा’लूम नहीं कि मुझ पर दुरूदे पाक पढ़े बिगैर **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ अपनी षना भी क़बूल नहीं फ़रमाता, वोह ऐसी कोई दुआ क़बूल नहीं फ़रमाता जिस में मुझ पर दुरूद न भेजा गया हो और कोई हाज़त पूरी नहीं फ़रमाता जब तक कि मुझ पर दुरूदे पाक न भेजा जाए, क्या तुम ने **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ का येह मुबारक फ़रमान नहीं सुना ?

**तर्जमए कन्जुल ईमान** : उन पर दुरूद और ख़ूब **صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيْمًا** 0 (प २२, अलअर्राब: ५६) सलाम भेजो।

**सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने चेहरे की सियाही दूर फ़रमा दी :**

हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान घौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : “मैं ने दौराने तवाफ़ एक शख़्स को हर क़दम पर हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ते हुवे देखा तो उस से पूछा : “ऐ भाई **“لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ، سُبْحَنَ اللَّهُ”** के बजाए दुरूदे पाक का विर्द किये जा रहे हो, इस में तुम्हारा क्या राज़ है ?” तो वोह पूछने लगा : **“अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ आप को मुआफ़ फ़रमाए, आप कौन हैं ?” मैं ने बताया : “मैं सुफ़यान घौरी हूं।” तो उस ने कहा : “अगर आप अहले ज़माना में अजनबी न होते तो मैं आप को इस का राज़ न बताता, मैं अपने वालिदे गिरामी के साथ हज़्जे बैतुल्लाह के इरादे से चल पड़ा। अषनाए सफ़र मेरे वालिदे मोहतरम बीमार हो गए तो मैं अपने वालिदे मोहतरम के इलाज मुआलजे के लिये रुक गया। इलाज के दौरान उन का इन्तिक़ाल हो गया जब कि मैं उन के सर के करीब खड़ा था, उन का चेहरा सियाह हो गया। येह देख कर मैं ने फ़ौरन पढ़ा : **“إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ** 0 (प २, البقرة: १५६) हम **अल्लाह** के माल हैं और हम को उसी की तरफ़ फिरना<sup>(1)</sup>” फिर मैं ने उन के चेहरे पर चादर डाल दी। अचानक मुझ पर नींद का ग़लबा हुवा और मैं सो गया, मैं ने एक शख़्स को देखा कि उस से ज़ियादा हसीनो जमील मैं ने कभी नहीं देखा था। उस का लिबास इन्तिहाई साफ़ व शफ़फ़ था और उस से ऐसी खुशबू आ रही

①...मुफ़्स्सिरे शहीर, खलीफ़ आ’ला हज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِي तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं : “हदीष शरीफ़ में है कि वक्ते मुसीबत **“إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ”** पढ़ना रहमते इलाही का सबब होता है। येह भी हदीष में है कि मोमिन की तक्लीफ़ को **अल्लाह** तआला कफ़़रए गुनाह बनाता है।”

थी जो मैं ने कभी न सूंघी थी। वोह क़दम ब क़दम चलते हुवे मेरे वालिदे मोहतरम के क़रीब तशरीफ़ लाए और उन के चेहरे से चादर हटा कर अपना मुबारक हाथ चेहरे पर फेरने लगे। वालिद साहिब का चेहरा अचानक चमक उठा। फिर वोह पलटने लगे तो मैं उन के कपड़ों से लिपट गया और उन से दरयाफ़्त किया : “**اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ आप पर रहूम फ़रमाए, आप कौन हैं ? जिन के सबब **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ ने मेरे वालिदे मोहतरम पर इस वीराने में येह एहसान फ़रमाया है।” उन्होंने ने पूछा : “क्या तुम मुझे नहीं पहचानते ? मैं साहिबे कुरआन मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) हूं, तुम्हारे वालिदे गिरामी तो गुनाहगार थे लेकिन मुझ पर कषरत से दुरूदे पाक भेजते थे। जब येह इस बीमारी में मुब्तला हुवे तो मुझ से फ़रयाद की और बेशक जो मुझ पर कषरत से दुरूदे पाक पढ़ता है मैं उस की फ़रयाद रसी करता हूं।” फिर मैं बेदार हुवा तो देखा कि मेरे वालिदे गिरामी का चेहरा बिल्कुल सफ़ेद हो चुका था।

(تفسير روح البيان، سورة الاحزاب، تحت الآية ٥٢، ج ٤، ص ٢٢٥)

ऐ मेरे प्यारे इस्लामी भाइयो ! **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर कषरत से दुरूदे पाक पढ़ो। बेशक आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद भेजना गुनाहों की बख़्शिश का सबब और सीधे रास्ते की तरफ़ हिदायत का बाइष है, दुरूदे पाक भेजने वाला जहन्म के अज़ाब से महफूज़ रहेगा और जन्नत में अबदी ने'मतों का मुस्तहिक् होगा।

एक रिवायत में है कि “हुस्ने अख़्लाक के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद पढ़ने वालों के लिये दस इज़्ज़तें हैं :

(1).....**اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ की रहूमत (2).....नबिय्ये मुख्तार صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअत (3).....मुअज़्ज़ज मलाइका की मुवाफ़क़त (4).....मुनाफ़िक्कीन व कुफ़फ़र की मुख़ालफ़त (5).....ख़ताओं और गुनाहों की मुआफ़ी (6).....हाजात की तक्मील (7).....ज़हिरो बातिन की रोशनी (8).....जहन्म से नजात (9).....जन्नत में दाख़िला और (10).....रब्ब عَزَّوَجَلَّ के सलाम की बिशारत।”

**बाएगाहे खुदा عَزَّوَجَلَّ में हमारी इल्तिजा :**

या **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ तू हमारे सरदार मुहम्मदे मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर रहूमत भेज जिन को तू ने तमाम मख़्लूक पर फ़ज़ीलत और बुलन्द मक़ाम अता फ़रमाया, दीने इस्लाम की तरफ़ हिदायत देने वाला और राहे जन्नत की तरफ़ रहनुमाई करने वाला बनाया। या **اَلलّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ या रब्बल आलमीन ! हमारी तरफ़ से आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक भेज जैसे तू ने हमें दुरूद भेजने का हुक्म दिया है।

या **اَلलّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ हमें शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइषे नुज़ूले सकीना, फैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के गुरौह में उठा, आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

की इत्तिबाअ में कामयाबी हासिल करने वालो में रख, हमें शरीअते मुहम्मदिय्या عَلَى صَاحِبِهَا الصَّلَاةُ وَالسَّلَام का मुतीअ बना, आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की सुन्नत पर चला और सहाबए किराम رَضَوُا لِلَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ की इक्तिदा करने वाला बना ।

या **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ हमें हौजे कौषर पर हाजिर होना नसीब फरमा आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का दीदार अता फरमा, इन की शफाअत से महरूम न फरमा और ऐ जलाल व इकराम वाले ! हमें अपनी रहमत से रहमत व रिजवान वाले घर में आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का पड़ोस अता फरमा ।

وَصَلَّى اللَّهُ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِهِ وَصَحْبِهِ أَجْمَعِينَ



### हुस्ने सुलूक की फज़ीलत

नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फरमाने ज़िशन है : “अगर कोई किसी का कफ़ील (या’नी परवरिश करने वाला) है तो उस को चाहिये कि वोह उस के साथ हुस्ने सुलूक करे ।” एक शख्स ने अर्ज की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मेरी न अवलाद है न बीवी और न ही ख़ानदान, सिर्फ़ एक मुर्गी है ।” आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फरमाया : “अगर तू ने उस के दाना पानी में एक दिन भी कोताही की तो **अल्लाह** तबारक व तआला तुझे हुस्ने सुलूक करने वालों में न लिखेगा ।”

सय्यिदुल मुबल्लिगीन रहमतुल्लिल आलमीन صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फरमाने खुशबूदार है : “तुम में सब से बेहतर वोह है जो अपने अहल के साथ अच्छा सुलूक करता है और मैं तुम सब से ज़ियादा अपने घर वालों से अच्छा सुलूक करने वाला हूं और औरतों की इज़्ज़त सिर्फ़ करीम शख्स ही करता है और उन की इहानत व तौहीन सिर्फ़ कमीना व बद बख़्त ही करता है ।”

(قرة العيون مترجم، ص ۸۳-۸۴)



बयान 55 : **كَهْنَةُ كَفْجَاذِل وَ كَمَالَات**

(**अल्लाह** हम सब को इस कलिमे का अहल बनाए और हमारा इस कलिमे को पढ़ना अपनी बारगाह में क़बूल फ़रमाए । आमीन )

**हम्दे बारी तआला :**

तमाम ता'रीफें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये जिस की हकीकत को उस के इलावा कोई नहीं जानता । वोही गुनाहों को बख़्शता है और वोही ऐबों को छुपाता है । वोही दुखों को दूर करता है और वोही शिकस्ता दिलों को जोड़ता है । वोह अपनी नज़ीर और मुशाबेह से बुलन्द तर है । शुक्र व शुब्हात से पाक है । वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ है जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं । वोह "महमूद" है कि सख़्तियों और तकालीफ़ पर सिर्फ़ उसी की हम्द की जाती है । वोह "मशकूर" है कि खुश हाली और तंग दस्ती हर हाल में उस का शुक्र अदा किया जाता है । वोह ही हकीकी "करीम" है कि हकीकी जूदो करम से सिर्फ़ वोही पहचाना जाता है । वोह "रहीम" और "महबूबे आ'ज़म" है कि रुकूअ व सुजूद सिर्फ़ उस के लिये है । वोही "क़दीमुज्ज़ात" और "बदीउससिफ़ात" (या'नी बे मिष्ल सिफ़ात वाला) है कि दुखों को दूर करने के लिये उसी को पुकारा जाता है :

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और अगर **وَإِنْ يَمْسَسْكَ اللَّهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهُ إِلَّا هُوَ** (प ७, الانعام: १७) तुझे **अल्लाह** कोई बुराई पहुंचाए तो उस के सिवा इस का कोई दूर करने वाला नहीं ।"

ऐ बन्दो ! तुम्हारा हर मुआमला उसी की तरफ़ लौटता है, तुम्हारा रिज़क़ उसी के ज़िम्मे है, वोह तुम्हें काफ़ी है और वोही तुम्हारा परवर दगार है : **ذِكْرُكُمْ اللَّهُ رَبُّكُمْ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ** (प ७, الانعام: १०२) :

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** यह है **अल्लाह** तुम्हारा रब्ब और उस के सिवा किसी की बन्दगी नहीं । ....पथरीली ज़मीनों की चमक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अज़मत को बयान कर रहीं हैं और उस की यक्ताई पर निशानियां काइम हैं : **وَاللَّهُمَّ اللَّهُ وَاحِدٌ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ** (प २, البقرة: १६३) :

और तुम्हारा मा'बूद एक मा'बूद है उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं ।" .....सरकश और गुमराह लोग **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के वुजूद का इन्कार क्यूं कर करते हैं ? हालांकि वोह ज़िन्दा है, उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं । और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की वहदानिय्यत को कैसे झुटलाया जा सकता है ? या कैसे उस की यक्ताई का इन्कार किया जा सकता ? जब कि वोह फ़रमा रहा है :

**تَرْجَمَ ع كَنْزُ لْ إْمَان : اَللّٰهُ** ने गवाही दी कि उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं ।" .....उस ने अपनी हिक्मते बालिगा से अश्या का अन्दाज़ा रखा और अपनी कुदरते कामिला से अन्धेरे और रोशनी को पैदा किया और

**تَرْجَمَ ع كَنْزُ لْ إْمَان :** वोही है कि तुम्हारी तस्वीर बनाता है माओं के पेट में जैसी चाहे उस के सिवा किसी की इबादत नहीं ।" ...वोही ऐबों को छुपाने वाला और कमजोरों पर रहम फ़रमाने वाला और **وَعِنْدَهُ مَفَاتِيحُ الْغَيْبِ لَا يَعْلَمُهَا إِلَّا هُوَ** (प ७, الانعام: ५९) :

तर्जमए कन्जुल ईमान : और उसी के पास हैं कुन्जियां ग़ैब की इन्हें वोह जानता है ।” ....तो वोह क्यूँ उस की बख़्शिश न फ़रमाए जो उस की बारगाह में रुजूअ लाए । इस लिये कि उस की येह शान है : **تَرْجَمَہٗ کَنْجُلُ اِیْمَانٍ : غَافِرِ الذَّنْبِ وَقَابِلِ التَّوْبِ شَدِيدِ الْعِقَابِ لَا ذِي الطُّوْلِ ط لَا اِلَهَ اِلَّا هُوَ ط (پ ۲۴، المؤمن: ۳) :**

बख़्शाने वाला और तौबा क़बूल करने वाला सख़्त अज़ाब करने वाला बड़े इन्आम वाला उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं ।” ....तो ऐ **اَللّٰہ** غَرْ وَجَلْ को एक मानने वाले ! बारी तअ़ाला के हर ऐब से पाक होने की तल्वार से उन लोगों की गर्दन में उड़ा दे जो उस को मख़्लूक जैसा बताते हैं और खुद को उन बातों से बचा जो वोह बकते हैं और : **تَرْجَمَہٗ کَنْجُلُ اِیْمَانٍ : فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللّٰهُ لَا اِلَهَ اِلَّا هُوَ ط (پ ۱۱، التوبة: ۱۲۹) :**

**کَنْجُلُ اِیْمَانٍ :** फिर अगर वोह मुंह फ़ैरें तो तुम फ़रमा दो कि मुझे **اَللّٰہ** काफी है उस के सिवा किसी की बन्दगी नहीं ।” ....**اَللّٰہ** غَرْ وَجَلْ के औलिया हर वक़्त उस की ख़फ़ी तदबीर से डरते हैं, वोह किसी वक़्त उस की इबादत से गा़फ़िल होते हैं न उस के ज़िक्र में सुस्ती करते हैं जब कि कुफ़्र को येह दुश्वार है (जभी तो ईमान नहीं लाते) : **فَتَعَلٰی اللّٰهُ الْمَلِکَ الْحَقُّ لَا اِلَهَ اِلَّا هُوَ ج (پ ۱۸، المؤمنون: ۱۱۶) :**

**تَرْجَمَہٗ کَنْجُلُ اِیْمَانٍ :** तो बहुत बुलन्दी वाला है **اَللّٰہ** सच्चा बादशाह कोई मा'बूद नहीं सिवा उस के ।” .....तो ऐ बन्दे ! तेरा धोके बाज़ दुश्मन शैतान तुझे धोका न दे दे, और तू किसी कुफ़्र पर डट न जाना और दुन्या की ज़ियादा तलबी में पड़ कर फ़ख़्र व तकबुर में मुब्तला न हो जाना और :

**تَرْجَمَہٗ کَنْجُلُ اِیْمَانٍ :** और **اَللّٰہ** के साथ दूसरे खुदा को न पूज उस के सिवा कोई खुदा नहीं ।” **اَللّٰہ** غَرْ وَجَلْ का फ़रमाने आलीशान है :

﴿۱﴾ شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهُ لَا اِلَهَ اِلَّا هُوَ لَا الْمَلٰٓئِکَةُ  
وَاُولُو الْعِلْمِ قَائِمًا بِاَلْقِسْطِ ط لَا اِلَهَ اِلَّا هُوَ  
الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ ۝۱۰ الَّذِیْنَ عِنْدَ اللّٰهِ اِلِسْلَامُ ۝  
(پ ۳، آل عمران: ۱۸: ۱۹)

**تَرْجَمَہٗ کَنْجُلُ اِیْمَانٍ : اَللّٰہ** ने गवाही दी कि उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं और फ़िरिश्तों ने और आलिमों ने इन्साफ़ से क़ाइम हो कर, उस के सिवा किसी की इबादत नहीं, इज़्ज़त वाला ह़िकमत वाला । बेशक **اَللّٰہ** के यहां इस्लाम ही दीन है ।

हज़रते सय्यिदुना सईद बिन जुबैर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : “का'बा के गिर्द तीन सो साठ (360) बुत थे, जब मज़कूरा आयते मुबारका नाज़िल हुई तो तमाम बुत सजदा रेज़ हो गए ।”

(تفسير القرطبي، سورة آل عمران، تحت الآية ۱۸، ج ۲، الجزء الرابع، ص ۳۴)

हज़रते सय्यिदुना इब्ने कैसान से मन्कूल है : **اَللّٰہ** غَرْ وَجَلْ ने अपनी अज़ीब तदबीर, पुख़्ता सनाअत और मोहकम उमूर से खुद अपने लिये अपनी मख़्लूक के सामने गवाही दी कि उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं ।” (تفسير زاد المسیر لابن الجوزی، سورة آل عمران، تحت الآية ۱۸، ج ۱، ص ۳۱۱)

हज़रते सय्यिदुना ग़ालिब क़त्तान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰنِ फ़रमाते हैं कि “एक दफ़ा मैं ने तिजारत की गरज़ से कूफ़्र में हज़रते सय्यिदुना आ'मश عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی के क़रीब पड़ाव डाला । एकरात जब मैं ने बसरा जाने का इरादा किया तो वोह रात को तहज़ुद की नमाज़ पढ़ रहे थे जब इस आयते मुबारका पर पहुंचे :

”شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهُ لَا اِلَهَ اِلَّا هُوَ لَا الْمَلٰٓئِکَةُ وَاُولُو الْعِلْمِ قَائِمًا بِاَلْقِسْطِ ط لَا اِلَهَ اِلَّا هُوَ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ ۝۱۰ الَّذِیْنَ عِنْدَ اللّٰهِ اِلِسْلَامُ ۝“

तो कहने लगे : “मैं भी उस की गवाही देता हूँ जिस की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने गवाही दी, और इस गवाही को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिपुर्द करता हूँ, यह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के पास मेरी अमानत है। फिर उन्होंने ने इस आयते तय्यिबा को कई बार दोहराया। मैं ने दिल में सोचा कि जरूर इस के मुतअल्लिक उन्होंने ने कुछ सुन रखा है। चुनान्चे, मैं ने उन के साथ मिल कर नमाज़ अदा की और रुख़सत होते वक़्त अर्ज़ की : “मैं ने आप को यह आयते मुबारका बार बार पढ़ते सुना है, क्या आप ने इस के मुतअल्लिक कोई (फज़ीलत) सुनी है ?” तो उन्होंने ने फ़रमाया : “**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं एक साल तक नहीं बताऊंगा।”

चुनान्चे, मैं ने उन के दरवाज़े पर वोह दिन लिख दिया और साल गुज़रने का इन्तिज़ार करने लगा, साल गुज़रने पर मैं ने अर्ज़ की : “ऐ अबू मुहम्मद ! साल गुज़र चुका है।” तो इरशाद फ़रमाया : “मुझे हज़रते सय्यिदुना अबू वाइल رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत कर के बताया है कि रसूलुल्लाह وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “क़ियामत के दिन इस आयते मुबारका को पढ़ने वाला लाया जाएगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : “मेरे इस बन्दे का मेरे पास अ़हद है और मैं सब से ज़ियादा अ़हद को पूरा करने का हक़दार हूँ (ऐ फ़िरिश्तो ! ) मेरे बन्दे को जन्नत में दाख़िल कर दो।” (المعجم الكبير، الحديث ١٠٤٥٣، ج ١٠، ص ١٩٩)

मन्कूल है : “जिस ने सोते वक़्त मज़क़ूर आयते मुबरका पढ़ी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से एक फ़िरिश्ता पैदा फ़रमाएगा जो ता क़ियामत उस (पढ़ने वाले) के लिये इस्तिग़फ़ार करता रहेगा।”

(تفسير القرطبي، سورة آل عمران، تحت الآية ١٨، ج ٢، الجزء الرابع، ص ٣٤)

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमाने अलीशान (پ ٢٢، المؤمن ٣) غ़ाय़िर् الذُّنْبِ وَقَابِلِ التَّوْبِ की तफ़सीर में फ़रमाते हैं कि “**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के गुनाह बख़्शाने वाला और तौबा क़बूल करने वाला है जो उस की वहदानिय्यत की गवाही दे।”

और “شَدِيدِ الْعِقَابِ” (پ ٢٣، غافر ٣) की तफ़सीर में फ़रमाते हैं : “उस शख्स को सख़्त अज़ाब देने वाला है जो उस की वहदानिय्यत पर ईमान न लाए।” इरशादे बारी तअलाला है :

﴿٢﴾ **الْأَمِّنِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمَنِ عَهْدًا** 0 **तर्जमए कन्जुल ईमान : मगर वोही जिन्होंने ने रहमान के पास क़रार रखा है।** (1)

(پ ٦٦، مريم ٨٧)

..... ①..... मुफ़स्सिर कुरआन, हज़रते सय्यिदुना अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अहमद अन्सारी कुरतुबी عليه رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی इस आयत के तहत अ़हद की तफ़सीर बयान करते हुवे फ़रमाते हैं : “हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मसऊद رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है कि “रसूलुल्लाह وَسَلَّم ने अपने सहाबा عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से येह फ़रमाया : “क्या तुम इस बात से अज़िज़ हो कि सुब्हो शाम रब्ब عَزَّوَجَلَّ के पास एक अ़हद लो ?” अर्ज़ की : “वोह किस तरह ?” फ़रमाया : “सुब्हो शाम येह कहे !” “اللّٰهُمَّ فَاطِرَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ غَالِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ إِنِّيْ أَغْهَدُ إِلَيْكَ فِيْ هَذِهِ الْحَيَوةِ بِأَنِّيْ أَشْهَدُ أَنَّ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ لَا شَرِيْكَ لَكَ وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُكَ وَرَسُولُكَ فَلاَ تَكِلْنِيْ إِلَى نَفْسِيْ فَإِنَّكَ إِن تَكِلْنِيْ إِلَى نَفْسِيْ تُبَاعِدْنِيْ مِنَ الْخَيْرِ وَتَقْرِبْنِيْ إِلَى الشَّرِّ وَأِنِّيْ لَا أَقْبِلُ إِلَّا بِرَحْمَتِكَ فَاجْعَلْ لِّيْ عِنْدَكَ عَهْدًا تَوْفِيقِيْهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيعَادَ يَا نَبِيَّ” ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ऐ आस्मानों और ज़मीन को पैदा करने वाले ! ऐ पोशीदा व ज़ाहिर को जानने वाले ! मैं तेरे पास इस ज़िन्दगी में एक अ़हद रखता हूँ। वोह येह कि मैं गवाही देता हूँ कि तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं। तू अकेला है। तेरा कोई शरीक नहीं। और मैं गवाही देता हूँ कि हज़रते (सय्यिदुना) मुहम्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) तेरे बन्दे और.....



हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : “अहद येह है कि इस बात की गवाही देना कि **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं।”

(المعجم الاوسط، الحديث ٩٤٨١، ج ٦، ص ٤٨١ راوی ابن عمر، الأسماء والصفات للبيهقي، باب ما جاء في فضل الكلمة، الحديث ٢٠٥، ج ١، ص ٢١٩)

फ़रमाने बारी तअ़ाला है :

﴿٣﴾ وَالزَّمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوَى (پ ٢٦، الفتح: ٢٦)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और परहेज़गारी का कलिमा उन पर लाज़िम फ़रमाया ।

हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمُ फ़रमाते हैं : “कलिमतत्तक़्वा” से मुराद **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** कहना है ।”

(المستدرک، کتاب التفسیر، تفسیر سورة الفتح، باب كلمة التقوى..... الخ، الحديث ٣٧٦٩، ج ٣، ص ٢٦١)

फ़रमाने बारी तअ़ाला है : तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : उसी **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ कहना है ।” **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ से मुराद **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** कहना है ।” **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ की तरफ़ चढ़ता है पाकीज़ा कलाम ।” **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿٣﴾ مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ عَشْرُ أَمْثَالِهَا ج

(پ ٨، الانعام: ١٦٠)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जो एक नेकी लाए तो उस के लिये उस जैसी दस हैं ।<sup>(१)</sup>

यहां **اَلْحَسَنَةُ** से मुराद **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** कहना है ।”

बा'ज़ उ-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللَّهُ تَعَالَى फ़रमाते हैं : “कलिमए तय्यिबा एक मज़बूत ज़िरह और महफूज़ क़लआ है जिस ने कलिमए तय्यिबा पढ़ा वोह हर किस्म की बुराई से हिफ़ाज़त में हो गया । इस लिये कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने आलीशान है : **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** के ज़िक्र से अपने रब्ब **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ की अज़मत व बुजुर्गी बयान करो क्यूंकि **اَللّٰهُ** इरशाद फ़रमाता है : **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** मेरा क़लआ है, तो जो मेरे क़लए में दाख़िल हुवा वोह मेरे अज़ाब से महफूज़ हो गया ।”

(احياء علوم الدين، كتاب اسرار الصلاة، باب ثالث، بيان تفصيل ما..... الخ، ج ١، ص ٢٢٧)

(बक़िय्या) .....रसूल हैं । मुझे मेरे नफ़्स के हवाले न कर, क्यूंकि अगर तू ने मुझे मेरे नफ़्स के हवाले कर दिया तो वोह मुझे भलाई से दूर और बुराई के करीब कर देगा । मैं तेरी रहमत के इलावा, किसी चीज़ पर भरोसा नहीं करता, मेरे इस इक़्रार को बतौर अहद नामा महफूज़ फ़रमा और क़ियामत के दिन मुझे पूरा बदला अ़ता फ़रमा । बेशक तू वा'दे के ख़िलाफ़ नहीं करता । जो येह कहेगा **اَللّٰهُ** तअ़ाला उस पर मोहर लगा कर अर्श के नीचे रखेगा और जब क़ियामत का दिन होगा तो एक मुनादी निदा करेगा कि कहां हैं वोह लोग जिन का **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ के पास अहद है ? वोह शख़्स खड़ा होगा और उसे जन्नत में दाख़िल कर दिया जाएगा ।”

(تفسير قرطبي، سورة مريم، تحت الآية: ٨٧، ج ٦، ص ٦٣)

①...मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं “या'नी एक नेकी करने वाले को दस नेकियों की जज़ा और येह भी हद व निहायत के तरीके पर नहीं बल्कि **اَللّٰهُ** तअ़ाला जिस के लिये जितना चाहे उस की नेकियों को बढ़ाए । एक के सात सो करे या बे हिसाब अ़ता फ़रमाए । अस्ल येह है कि नेकियों का षवाब महज़ फ़ज़ल है । येही मज़हब है अहले सुन्नत का और बदी की उतनी ही जज़ा, येह अद्ल है ।”

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं “अगर गुनहगारों को मा'लूम हो जाए कि لَآ إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ में क्या अज़्र है तो इस का ज़िक्र क़षरत से करें। दिन रात में चौबीस (24) घन्टे हैं, और لَآ إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللَّهِ के हुरूफ़ भी चौबीस हैं, हर हर्फ़ एक घन्टे के गुनाहों का कफ़ारा है।”

मन्कूल है : “जब बन्दा दिन या रात के किसी लम्हे में कलिमए तय्यिबा पढ़ता है तो उस के नामए आ'माल में जो ख़ताएं और गुनाह होते हैं वोह मिट जाते हैं और इन की जगह नेकियां ले लेती हैं।” (مسند أبي يعلى الموصلي، مسند انس بن مالك، الحديث ३०९९، ج ३، ص २७२)

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुलताने बहरो बर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “सब से अफ़ज़ल बात जो मैं ने और मुझ से क़ब्ल अम्बिया ने कही वोह لَآ إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ कहना है।”

(الموطأ للإمام مالك، كتاب القرآن، باب ماجاء في الدعاء، الحديث ५०९، ج १، ص २०३)

हुज़ूर सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, जनाबे रहूमतुल्लिल आलमीन صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने हकीक़त निशान है : “मुझे लोगों से जिहाद का हुक्म दिया गया यहां तक कि वोह **अल्लाह** तआला की वह्दानियत पर ईमान ले आए।” (صحيح مسلم، كتاب الايمان، باب الامر بقتال الناس..... الخ، الحديث २१، ج ६، ص ६८)

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है, सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइषे नुज़ूले सकीना صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने आलीशान है लَآ إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ पढ़ने वालों पर न क़ब्र में कोई वहशत होगी और न क़ब्रों से ज़िन्दा उठने में और न ही क़ियामत में। गोया मैं उन्हें देख रहा हूं, जब वोह अपने सरों से मिट्टी झाड़ते हुवे क़ब्रों से निकलेंगे और لَآ إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ कहते हुवे जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे, फिर वोह कहेंगे : “الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَذْهَبَ عَنَّا الْحُزْنَ، إِنَّ رَبَّنَا لَغَفُورٌ شَكُورٌ” या'नी सब ख़ूबियां **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के लिये हैं जिस ने हम से गुम को दूर फ़रमाया, बेशक हमारा रब्ब बख़्शने वाला, शुक्र क़बूल करने वाला है।” (تاريخ بغداد، الرقم ५३८۰ عبد الرحمن بن واقد، ج १، ص २६४، احياء علوم الدين، كتاب الاذكار والدعوات، باب اول فضيلة التهليل، ج १، ص ३९४، المعجم الاوسط، الحديث ९४७८، ج ६، ص ४८०)

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुरहीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की बारगाह में अज़र् की गई : “कौन सा अमल सब से अफ़ज़ल है ?” इरशाद फ़रमाया : “मरते वक़्त तेरी ज़बान **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के ज़िक्र से तर हो।” (الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان، كتاب الرقائق، باب الاذكار، الحديث ८१५، ج २، ص ९३)

**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के प्यारे हबीब, हबीबे लबीब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ इरशाद फ़रमाते हैं : “**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ अपने फ़िरिश्तों से फ़रमाता है : “कलिमए तय्यिबा पढ़ने वालों को मेरे क़रीब कर दो, बेशक मैं उन से महबूबत करता हूं।” (فردوس الاخبار للديلمي، باب الياء، الحديث ८११५، ج २، ص ६०)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! मोअमिनीन सच की मजलिस में अज़ीम कुदरत वाले बादशाह के हुज़ूर हाज़िर हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन की पैदाइश से पहले ही अपनी महबूबत और अपना फ़रमा बरदार होना उन के लिये मुक़द्दर फ़रमा दिया था तो वोह वहबी (अताई) विलायत से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के वली बन गए। यकीनन आयाते तय्यिबात में उन की मदह फ़रमाई गई है।” चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿٥﴾ يُحِبُّهُمْ وَيُحِبُّونَهُ (پ ٦، المائدة: ٥٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : वोह **अल्लाह** के प्यारे और **अल्लाह** उन का प्यारा।

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़लाक **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** ने इरशाद फ़रमाया : “तुम अपने मुर्दों को **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** की तल्कीन करो कि येह गुनाहों को मिटाता है।” (الموسوعة لامام ابن ابى الدنيا، كتاب المحتضرين، الحديث ٣/٢، ج ٥، ص ٣٠٣)

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** ने इरशाद फ़रमाया : “जिस का आखिरी कलाम **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** हुवा वोह जन्नत में दाखिल होगा।” (سنن ابوداؤد، كتاب الحناثر، باب فى التلقين، الحديث ٣١١٦، ص ١٤٥٨)

हज़रते सय्यिदुना सनाबही **رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِ** फ़रमाते हैं : “मैं हज़रते सय्यिदुना उबादा बिन सामित **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ** की हालते नज़अ में उन के पास हाज़िर था। (उन की हालत देख कर) मैं रोने लगा तो उन्होंने ने इरशाद फ़रमाया : “चुप हो जाइये, आप क्यूं रोते हैं ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर मुझ से गवाही त़लब की गई तो मैं आप के हक़ में गवाही दूंगा, अगर मुझ से शफ़ाअत का कहा गया तो मैं आप की शफ़ाअत करूंगा, अगर मुझ से हो सका तो आप को हर क़िस्म का नफ़अ पहुंचाऊंगा।” फिर इरशाद फ़रमाया : “क़सम ब खुदा **عَزَّوَجَلَّ** मैं ने हुज़ूर रहूमते अ़ालम **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** से सुनी हुई तमाम अहदाीष, जिन में आप के लिये भलाई थी, आप को बयान कर दी हैं मगर एक हदीष बयान नहीं की, वोह आज बयान कर देता हूं और इसे मैं ने अपने दिल में महफूज़ रखा है (फिर इरशाद फ़रमाया) मैं ने ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मख़ज़ने जूदो सखावत, महबूबे रब्बुल इज़ज़त, मोहसिने इन्सानिय्यत **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** को येह इरशाद फ़रमाते सुना : “जो इस बात की गवाही दे कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और येह कि मैं उस का रसूल हूं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दोज़ख़ की आग़ ह़राम फ़रमा देता है।” (المستند للامام احمد بن حنبل، حديث عبادة بن الصامت، الحديث ٢٢٧٧٤، ج ٨، ص ٤٠٢)

हज़रते सय्यिदुना अबुल अस्वद दोइली **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ** फ़रमाते हैं कि मुझे हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ** ने बयान फ़रमाया कि “मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उयूब **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** की बारगाह में हाज़िर हुवा। आप **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** आराम फ़रमा रहे थे और आप **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** के ऊपर एक सफ़ेद कपड़ा था फिर दूसरी बार हाज़िर हुवा तो भी आप **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** आराम फ़रमा रहे थे। तीसरी बार हाज़िर हुवा तो



आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ बेदार थे । मैं बैठ गया, आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जो कोई لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ कहे, फिर इसी हालत पर मर जाए तो वोह जन्नत में दाखिल होगा ।” मैं ने अर्ज़ की : “अगर्चे वोह ज़ानी और चोर हो ।” तो आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “अगर्चे वोह ज़ानी और चोर हो ।” मैं ने फिर अर्ज़ की : “अगर्चे वोह ज़ानी और चोर हो ।” इरशाद फ़रमाया : “अगर्चे वोह ज़ानी और चोर हो ।” चौथी बार पूछने पर आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : “अबू ज़र की नाक खाक आलूद हो ।” (सरकार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने येह कलिमा अज़ राए महबूत फ़रमाया) । हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ इस हाल में वहां से निकले कि आप कह रहे थे : अबू ज़र की नाक खाक आलूद हो ।” (صحيح مسلم، كتاب الايمان، باب الدليل على من مات..... الخ، الحديث ٩٤، ص ٦٩٤)

### बाज़ार में दाखिल होने की दुआ :

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर बिन ख़त्ताब رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है, हुज़ूर सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, जनाबे रहूमतुल्लिल अलमीन صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने जन्नत निशान है : “जो बाज़ार में दाखिल हुवा और बुलन्द आवाज़ से येह कलिमात कहे : لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِي وَيُمِيتُ وَهُوَ حَيٌّ دَائِمٌ لَا يَمُوتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَاللَّهُ الْمَصِيرُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ तो **अल्लाह** उस के लिये दस लाख नेकियां लिख देता है, उस के दस लाख गुनाह मिटा देता है और दस लाख दर्जात बुलन्द फ़रमा देता है ।”

(جامع الترمذی، كتاب الدعوات، باب مايقول اذا دخل السوق، الحديث ٣٤٢٨، ص ٢٠٠٥)

जब हज़रते सय्यिदुना कुतैबा बिन मुस्लिम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने येह हदीषे पाक सुनी तो रोज़ाना अपनी सुवारी पर सुवार हो कर बाज़ार जाते और येह हदीषे पाक बयान कर के लौट आते, उस वक़्त आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ वहां के अमीर थे । (الاحاديث المختارة، مسند عمر فاروق رضى الله تعالى عنه، الحديث ١٨٧، ج ١، ص ٢٩٧)

**ऐ मेरे इस्लामी भाइयो ! देखो !** इन अहले तौहीद का किरदार देखो ! शर्मों हया इन को **अल्लाह** का ज़िक्र फैलाने से न रोकती थी और येह लोग तमाम मख़्लूक के सामने **अल्लाह** की पाकी बयान करने से पीछे नहीं हटते थे । **अल्लाह** का फ़रमाने अलीशान है : “فَاذْكُرُونِي اَذْكُرْكُمْ” (البقرة: १०२)

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है, शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिषाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जिस ने रोज़ाना सो बार कहा तो येह उस के लिये दस गुलाम आज़ाद करने के बराबर है, उस के लिये सो नेकियां लिखी जाएंगी और सो गुनाह मुआफ़ होंगे, उस दिन शाम तक शैतान से हिफ़ाज़त होगी और इस से अफ़ज़ल किसी का अमल न होगा मगर उसी शख्स का जो उस से ज़ियादा अमल करे ।”

(صحيح البخارى، كتاب الدعوات، باب فضل التهليل، الحديث ٦٤٠٣، ص ٥٣٨)

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है, सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोजे शुमार, दो आलम के मालिको मुख्तार, बिइज़े परवर दगार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरशादे रहमत बुन्याद है : “जिस ने दस बार قَدِيرُ كُلِّ شَيْءٍ فَيُذِيرُ का इरशादे रहमत बुन्याद है : “जिस ने दस बार هُجْرَتِ السَّالِمِ عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की अवलाद से चार जानों को आज़ाद किया ।” (صحيح البخارى، كتاب الدعوات، باب فضل التهليل، الحديث ٦٤٠٤، ٥٣٨)

ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सखावत, पैकरे अज़मतो शराफ़त, महबूबे रब्बुल इज़ज़त, मोहसिने इन्सानिय्यत صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने आलीशान है : “अपने मुर्दों को لَآ إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ की तल्कीन करो और उन्हें जन्नत की बिशारत दो क्योंकि दाना और बा ख़बर मर्द व औरत इस कलिमे को सुन कर खुश होते हैं ।”

(صحيح مسلم، كتاب الجنائز، باب تلقين الموت..... البخ، الحديث ٩١٦، ص ٨٢١- موسوعة للامام ابن ابي الدنيا، كتاب ذكر الموت، باب خوف من الله، الحديث ١٦٩، ج ٥ ص ٤٤٦)

ऐ मेरे प्यारे इस्लामी भाइयो ! **اَللّٰهُمَّ** غُرِّ وَجَلْ तुम पर रहूम फ़रमाए । (आमीन) देखो तो सही ! कलिमए इख़लास لَآ إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ कितना अज़ीमुश्शान है और **اَللّٰهُمَّ** غُرِّ وَجَلْ के नज़दीक इस का मक़ाम कितना बुलन्द है । इस का ज़िक्र कषरत से करो ताकि अज़्रे कषीर पाओ, इस से षवाबे कामिल और अज़्रे वाफ़िर मिलता है । मोमिन, काफ़िर से मुमताज़ हो जाता है । और जो बन्दा मुअज़्ज़िन को सुने और जिस तरह मुअज़्ज़िन कहता है उसी तरह कहे और जब मुअज़्ज़िन कहे **اَللّٰهُمَّ** तो वोह भी **اَللّٰهُمَّ** कहे और फिर तबर्क़कन अपने चेहरे और दाढ़ी पर हाथ फेर ले तो **اَللّٰهُمَّ** غُرِّ وَجَلْ उस के हर उस बाल के इवज़ जिस को उस के हाथ ने छुवा एक नेकी लिखता है और एक गुनाह मिटा देता है ।

एक सहाबिये रसूल का फ़रमान है : “जिस ने لَآ إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ की ता’ज़ीम की ख़ातिर इसे बुलन्द आवाज़ से कहा **اَللّٰهُمَّ** غُرِّ وَجَلْ उस के चार हज़ार गुनाह मुआफ़ फ़रमा देगा ।” और येह भी मन्कूल है : “अगर उस के चार हज़ार गुनाह न हों तो उस के घर वालों और पड़ोसियों के गुनाह मुआफ़ फ़रमा देगा ।” (فردوس الاخبار للديلمي، باب الميم، الحديث ٥٥١١، ج ٢ ص ٣٣)

**फज़ले ख़ुदा वन्दी غُرِّ وَجَلْ पर क़ुरबान :**

मन्कूल है : “क़ियामत के दिन एक शख्स को मीज़ान पर लाया जाएगा और उस के नामए आ’माल के (99) दफ़्तर (रजिस्टर) निकाले जाएंगे जिन में से हर दफ़्तर पर उस के गुनाह दर्ज होंगे और वोह दफ़्तर ता हद्दे निगाह वसीअ होंगे, उन को मीज़ान में रखा जाएगा फिर उंगली के पोरे

जितना कागज़ का एक टुकड़ा निकाला जाएगा जिस में **अल्लाह** तआला की वहदानियत और हज़रते मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिसालत की गवाही लिखी होगी। जब उस टुकड़े को तराजू के दूसरे पलड़े में रखा जाएगा तो वोह गुनाहों पर ग़ालिब आ जाएगा और **अल्लाह** महज़ इस कलिमे لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ की बरकत से उस को मुआफ़ फ़रमा कर जन्नत में ले जाने का हुक्म फ़रमा देगा।”

(تفسير الطبرى، سورة الاعراف، تحت الآية ٨، الحديث ١٢٣٢، ج ٥، ص ٢٣٢ - فردوس الاخبار للديلمي، باب الباء، الحديث ٨٢٤٢، ج ٢، ص ٩٨)

कलिमए तय्यिबा के इस क़दर फ़ज़ाइल हैं कि इन्हें शुमार नहीं किया जा सकता।

وَصَلَّى اللّٰهُ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِهِ وَصَحْبِهِ أَجْمَعِينَ



दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबियत के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए **मदनी इन्आमात** का रिसाला पुर कर के हर मदनी (इस्लामी) माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के (दा'वते इस्लामी के) ज़िम्मेदार को जम्अ करवाने का मा'मूल बना लीजिये إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से **पाबन्दे सुन्नत बनने**, **गुनाहों से नफ़रत करने** और **ईमान की हिफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।



## बयान 56 : रहमते इलाही की वृश्म का बयान हम्मे बारी तआला :

सब खूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये जो ऐसा “रहीम” है कि अपने रहम दिल बन्दों पर बे इन्तिहा रहम फरमाता है। वोह ऐसा “करीम” है जो नाफरमानों पर भी जूदो करम की बारिश बरसाता है। वोह ऐसा “हलीम” है कि जब किसी गुनाहगार को अपनी लगजिश व नाफरमानी पर हसरत व नदामत करते हुवे मुलाहज़ा फरमाता है तो उस की पर्दापोशी फरमाता है। वोह ऐसा “अलीम” है कि दिलों के भेद जानता है, निय्यतों पर मुत्तलअ है और ज़मीनो आस्मान की कोई शै भी उस से पोशीदा नहीं। वोह ऐसा “अज़ीम” है कि किसी भी गुनाह को मुआफ करना उस के लिये दुश्वार व मुश्किल नहीं। वोह किसी ऐब को देखता है तो महज़ अपने फज़ल व ने’मत से छुपा देता है क्यूंकि उस की रहमत उस के ग़ज़ब पर हावी है। उस ने मोअमिनीन को गुनाह और गुमराही से निकालने के लिये इरशाद फरमाया : “وَرَحْمَتِي وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ (پ ۹، الاعراف: ۱۵۶)।”

**तर्जमए कन्जुल ईमान :** और मेरी रहमत हर चीज़ को घेरे है।” पस वोह लगजिशों और गुनाहों को बख़्शा देता है। और जिस शख्स ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हराम कर्दा काम को मजबूर हो कर इख़्तियार किया वोह गुनाहगार न होगा। जिस ने उस की बारगाह में तौबा कर ली वोह उसे नजात अता फरमाएगा और जिस ने उस पर तवक्कुल व भरोसा किया वोह हर मुआमले में उसे काफ़ी हो जाएगा।

ऐ तौबा करने वालो ! तुम्हें अज़ाब से बचने की खुश ख़बरी हो। तुम इस ने’मत पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करो। क्यूंकि तुम्हारे रब्ब عَزَّوَجَلَّ ने अपनी ज़ात पर रहमत को लाज़िम कर लिया और तुम्हारे लिये सआदत मन्दी लिख दी है। उस ने अपनी मा’रिफ़त का इरादा करने वाले आरिफ़ीन के लिये इल्म को ज़ाहिर फरमा दिया। जन्नत में अपने महबूब बन्दों को अपने दीदार की इजाज़त अता फरमा दी। और उन्हें अपनी उन्सिय्यत व महब्वत के जामों से सैराब किया तो वोह उस की बारगाहे अक्दस में हाज़िर हो गए...., डर वालों ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये ताबे’दारी और अज़िजी को लाज़िम कर लिया और अपनी गुज़श्ता ख़ताओं पर आंसू बहाए तो उस ने उन के लिये येह फैसला फरमा दिया : **فَلْ يَبَادَى الَّذِينَ اسْرَفُوا عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوا مِنْ رَحْمَةِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ جَمِيعًا (پ ۲۴، الزمر: ۵۳)।**  
**तर्जमए कन्जुल ईमान :** तुम फरमाओ ऐमेरे वोह बन्दो जिन्होंने अपनी जानों पर ज़ियादती की **अल्लाह** की रहमत से ना उम्मीद न हो बेशक **अल्लाह** सब गुनाह बख़्शा देता है।”....पस उस ने मग़फ़िरत के ज़रीए अमान का ताज इन के सर पर सजा दिया जिस से पहचाने जाते हैं।

ऐ अपनी ज़िन्दगी के अय्याम गुफ़लत में जाएअ करने वाले ! ऐ अपने नामए आ’माल को गुनाहों से भरने वाले ! अपने मौला عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ खुलूस दिल और फरमां बरदार नफ़्स के साथ मुतवज्जेह हो जा क्यूंकि उस ने आ़म शफ़ाअत के मालिक, अपने महबूब नबी **فَإِنْ كَذَّبُوكَ فَقُلْ رَبُّكُمْ ذُو رَحْمَةٍ وَاسِعَةٍ (پ ۸، الانعام: ۱۴۷)।** سے इरशाद फरमा दिया है :

**तर्जमए कन्जुल ईमान :** फिर अगर वोह तुम्हें झुटलाएं तो तुम फरमाओ कि तुम्हारा रब वसीअ रहमत वाला है।

तो उस ने कितने ही गुनाह मुआफ़ फ़रमा दिये, कितने ही दिल खुश कर दिये और कितने ही पशेमानों को सनदे क़बूलियत जारी फ़रमा दी। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने अलीशान है :

﴿۱﴾ قُلْ يٰعِبَادِیَ الَّذِیْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰی اَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ اِنَّ اللّٰهَ یَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِیْعًا اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِیْمُ ۝ (پ ۲۴، الزمر: ۵۳)

मज़क़ूरा आयते मुबारका में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने गुनहगार, नाफ़रमान, फ़ासिक व फ़ाजिर और सरकश बन्दों को मुखातब फ़रमाया जिन्होंने येह समझ लिया कि उन की मग़फ़िरत न होगी और वोह रहमते इलाही عَزَّوَجَلَّ से मायूस हो गए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

قُلْ يٰعِبَادِیَ الَّذِیْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰی اَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ ۝ (پ ۲ॴ، الزمر: ۵۳)

या'नी उस के अफ़वो करम और मुआफ़ फ़रमाने से मायूस न होना। इस के बा'द इरशाद फ़रमाया :

اِنَّ اللّٰهَ یَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِیْعًا ۝ (پ ॲॴ، الزمر: ۵ॳ)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान** : तुम फ़रमाओ ऐ मेरे वोह बन्दो जिन्होंने अपनी जानों पर ज़ियादती की **अल्लाह** की रहमत से ना उम्मीद न हो, बेशक **अल्लाह** सब गुनाह बख़्श देता है, बेशक वोही बख़्शाने वाला मेहरबान है।

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान** : तुम फ़रमाओ ऐ मेरे वोह बन्दो जिन्होंने अपनी जानों पर ज़ियादती की **अल्लाह** की रहमत से ना उम्मीद न हो।

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान** : बेशक **अल्लाह** सब गुनाह बख़्श देता है।

या'नी वोह उस के गुनाह बख़्शता है जो तौबा करे, जुल्म से बाज़ आ जाए और बुरे अफ़़ाल से मुआफ़ी त़लब कर ले। और फ़रमाया : **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान** : बेशक वोही बख़्शाने वाला मेहरबान है। या'नी उस के लिये ग़फ़ूर है जो तौबा करे और अपने गुनाहों पर नदामत का इज़हार करे और उस के लिये रहीम है जो बुरे अफ़़ाल तर्क कर के नेक आ'माल की तरफ़ राग़िब हो जाए।

हज़रते सय्यिदुना इब्ने सीरीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمُبِیْن फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा मुर्तज़ा आयत से बढ़ कर वुस़त वाली नहीं। " (الموسوعة لابن ابی الدنيا، کتاب حسن الظن بالله، الحدیث ٦٨، ج ١، ص ٨٤)

हज़रते सय्यिदतुना अस्मा बिनते यज़ीद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से मरवी है, मैं ने हुस्ने अख़्लाक के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अकबर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इस आयते मुबारका की तिलावत करते हुवे सुना :

قُلْ يٰعِبَادِیَ الَّذِیْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰی اَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ اِنَّ اللّٰهَ یَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِیْعًا ۝ (پ ॲॴ، الزمر: ۵ॳ)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान** : तुम फ़रमाओ ! ऐ मेरे वोह बन्दो जिन्होंने अपनी जानों पर ज़ियादती की **अल्लाह** की रहमत से ना उम्मीद न हो, बेशक **अल्लाह** सब गुनाह बख़्श देता है।

फिर आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया और उसे कोई परवाह नहीं (या'नी सब के गुनाह बख़्शा दे तो भी उसे कोई परवाह नहीं)।" (جامع الترمذی، ابواب تفسیر القرآن، باب من سورة الزمر، الحديث ۳۲۳۷ ص ۱۹۸۲)

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मसऊद رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के मुस्हफ़ में है :  
"إِنَّ اللَّهَ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ جَمِيعًا لِمَنْ يَشَاءُ" (تفسير القرطبي، سورة الزمر، تحت الآية ۵۳، ج ۸، الجزء الخامس عشر، ص ۱۹۶) (इस में لِمَنْ يَشَاءُ का इज़ाफ़ा है)

हज़रते सय्यिदुना अबू कुनूद عليه رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَدُودُ बयान फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मसऊद رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ मस्जिद में दाख़िल हुवे तो एक वाइज़ को देखा जो लोगों को वा'ज़ व नसीहत कर रहा था और आग और बेडियों का ज़िक्र कर रहा था। आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने उस के पास खड़े हो कर इरशाद फ़रमाया : "ऐ वा'ज़ करने वाले ! लोगों को **अल्लाह** की रहमत से क्यूं मायूस करते हो ? फिर येही आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई :

قُلْ يَعْبادِي الَّذِينَ أَسْرَفُوا عَلَى أَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوا مِنْ رَحْمَةِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ جَمِيعًا إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ۝ (پ ۲۴، الزمر: ۵۳)

तर्जमए कन्जुल ईमान : तुम फ़रमाओ ऐ मेरे वोह बन्दो जिन्हों ने अपनी जानों पर ज़ियादती की **अल्लाह** की रहमत से ना उम्मीद न हो, बेशक **अल्लाह** सब गुनाह बख़्शा देता है, बेशक वोही बख़्शने वाला मेहरबान है।

(شعب الإيمان للبيهقي، باب في الرجاء من الله، الحديث ۱۰۵۳، ج ۲، ص ۲۱)

हज़रते सय्यिदुना जैद बिन अस्लम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है : "पहली उम्मतों में एक शख्स कषरते इबादत से अपने नफ़्स पर सख़्ती करता और लोगों को रहमत इलाही से मायूस करता। जब उस का इन्तिफ़ाल हुवा तो किसी ने ख़ाब में देखा कि वोह **अल्लाह** की बारगाह में हाज़िर है और अर्ज़ कर रहा है : "ऐ मेरे रब्ब عَزَّ وَجَلَّ मेरे लिये तेरी बारगाह में क्या (अज़्र) है ?" तो बारगाहे खुदावन्दी عَزَّ وَجَلَّ से जवाब मिला : "आग।" अर्ज़ की : "मेरी इबादत व रियाज़त कहां गई ?" इरशाद फ़रमाया : "तू दुन्या में लोगों को मेरी रहमत से मायूस करता था, आज मैं तुझे अपनी रहमत से मायूस कर दूंगा।" (جامع معمر بن راشد مع مصنف عبدالرزاق، كتاب الجامع، باب الاقنات، الحديث ۲۰۷۲۸، ج ۱۰، ص ۲۶۱)

ऐ मेरे प्यारे इस्लामी भाई ! अगर **अल्लाह** तुझे अपनी बारगाह में मुआफ़ी से मायूस करने का इरादा फ़रमा ले तो कौन है जो तेरे गुनाह बख़्शेगा ? **अल्लाह** ने खुद इरशाद फ़रमाया :

﴿۲﴾ وَمَنْ يَغْفِرِ الذُّنُوبَ إِلَّا اللَّهُ ۚ (پ ۴، آل عمران: ۱۳۵)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और गुनाह कौन बख़्शे सिवा **अल्लाह** के।

और फिर अपने वसीअ अफ़वो करम के पेशे नज़र फ़रमाया :

إِنَّ اللَّهَ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ جَمِيعًا (پ ۲۴، الزمر: ۵۳)

तर्जमए कन्जुल ईमान : बेशक **अल्लाह** सब गुनाह बख़्शा देता है।



## सय्यिदुना वहशी और इन के दोस्तों का कबूले इस्लाम :

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से मरवी है, **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल यूयूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने वहशी की तरफ़ एक कासिद भेजा जो उस को इस्लाम की दा'वत दे। जब वहशी को पैग़ाम मिला तो उस ने अर्ज़ की : “ऐ मुहम्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) आप कैसे मुझे दा'वते इस्लाम दे रहे हैं ? हालांकि आप तो फ़रमाते हैं कि “जिस ने किसी जान को क़त्ल किया या शरीक ठहराया या जिना किया क़ियामत के दिन उस के लिये अज़ाब दुगना कर दिया जाएगा और वोह हमेशा उसी में रहेगा।” मैं ने तो येह सब काम किये हैं, क्या मेरे लिये कोई रुख़्सत है ?” तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने येह आयते मुबारका नाज़िल फ़रमाई : **تَرْجَمَاف كَنْزُالْ إِمَان** : मगर जो तौबा करे और ईमान लाए और अच्छा काम करे।” (الفرقان: १७)

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़लाक صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने ब ज़रीअए कासिद येह आयते मुबारका वहशी और उस के दोस्तों की तरफ़ भेजी तो उस ने अर्ज़ की : “येह शर्त तो बहुत सख़्त है, मुमकिन है मैं इस पर अमल न कर सकूँ, क्या इस के इलावा (कोई रुख़्सत) है ?” तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने येह आयते मुबारका नाज़िल फ़रमाई : **إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَنْ يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَلِكَ لِمَنْ يَشَاءُ** (پہ النساء: ६४) **تَرْجَمَاف كَنْزُالْ إِمَان** : बेशक **अल्लाह** उसे नहीं बख़्शता कि उस के साथ कुफ़्र किया जाए और कुफ़्र से नीचे जो कुछ है जिसे चाहे मुआफ़ फ़रमा देता है।” (1)

येह आयते मुबारका जब वहशी की जानिब भेजी गई तो उस ने फिर कहा : “अभी येह शुबा बाकी है कि मुझे नहीं मा'लूम कि मेरी मग़फ़िरत भी होगी या नहीं ? क्या इस के इलावा (कोई रुख़्सत) है ?” तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने येह आयते मुबारका नाज़िल फ़रमाई :

”قُلْ يَبْعَادَى الَّذِينَ اسْرَفُوا عَلَى أَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوا مِنْ رَحْمَةِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ جَمِيعًا إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ” 0

येह आयत वहशी और उस के दोस्तों की तरफ़ भेजी गई तो वहशी ने कहा : “हां ! येह (हमारी बख़्शिश की गारंटी) है” चुनान्चे, वोह और उस के दोस्त हाज़िर हुवे और इस्लाम कबूल कर लिया। सहाबए किराम رَضُواْ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ ने अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ क्या येह हुक्म खास इन लोगों के लिये है या तमाम मुसलमानों के लिये ?” इरशाद फ़रमाया : “येह तमाम मुसलमानों के लिये है।” (المعجم الكبير، الحديث १४८०، ج १، ص १५८)

①...मुफ़्सिरे शहीर, ख़लीफ़ आ'ला हज़रत, सदरुल अफ़ज़िल, सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِي तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं “मा'ना येह है कि जो कुफ़्र पर मरे उस की बख़्शिश नहीं, उस के लिये हमेशगी का अज़ाब है और जिस ने कुफ़्र न किया हो वोह ख़्वाह कितना ही गुनहगार, मुर्तकिबे कबाइर हो और बे तौबा भी मर जाए तो उस के लिये खुलूद नहीं, इस की मग़फ़िरत **अल्लाह** की मशिय्यत में है, चाहे मुआफ़ फ़रमाए या उस के गुनाहों पर अज़ाब करे। फिर अपनी रहमत से जन्नत में दाख़िल फ़रमाए। इस आयत में यहूद को ईमान की तरगीब है और इस पर भी दलालत है कि यहूद पर उर्फ़ शरअ में मुशरिक का इत्लाक़ दुरुस्त है।”

ऐ मेरे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मोमिन को जहन्नम का अज़ाब देने और हमेशा उस में ठहराने का इरादा फ़रमाया होता तो अपनी मा'रिफ़त व तौहीद कभी उस के दिल में न डालता, क्यूंकि वोह खुद इरशाद फ़रमाता है :

﴿لَا يَضَلُّهَا إِلَّا الْأَشْقَى ۝ الَّذِي كَذَّبَ

وَتَوَلَّى ۝﴾ (پ ۳۰، البیل: ۱۰: ۶)

हज़रते सय्यिदुना क़तादा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : “हमें बताया गया है कि कुछ लोगों ने ज़मानए जाहिलिय्यत में बहुत गुनाह किये थे । जब इस्लाम आया तो इन को येह ख़ौफ़ था कि इन की तौबा क़बूल न होगी । चुनान्वे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस आयते मुबारका में इन को मुखातब फ़रमाया :

قُلْ يٰعِبَادِیَ الَّذِیْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰی اَنْفُسِهِمْ لَا

تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ اِنَّ اللّٰهَ یَغْفِرُ الذُّنُوْبَ

جَمِیْعًا طَاٰئِهٖ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِیْمُ ۝﴾ (پ ۲۴، الزمر: ۵۳)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान** : न जाएगा उस में मगर बड़ा बद बख़्त जिस ने झुटलाया और मुंह फेरा ।

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान** : तुम फ़रमाओ ऐ मेरे वोह बन्दो जिन्हों ने अपनी जानों पर ज़ियादती की **अल्लाह** की रहमत से ना उम्मीद न हो, बेशक **अल्लाह** सब गुनाह बख़्श देता है, बेशक वोही बख़्शने वाला मेहरबान है ।

(تفسیر طبری، سورة الزمر، تحت الآیة ۵۳، الحدیث ۳۰۱۷۸، ج ۱، ص ۱۵)

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है, शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइषे नुजूले सकीना, फैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़फ़िरत निशान है : “अगर तुम इतनी ख़ताएं करो कि वोह आस्मान तक पहुंच जाएं फिर तौबा करो तो **अल्लाह** (سنن ابن ماجه، ابواب الزهد، باب ذکر التوبة، الحدیث ۴۸، ۴۷، ص ۲۷۳) ”

सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइषे नुजूले सकीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : “ऐ मेरे बन्दो ! तुम रात दिन गुनाहों में बसर करते हो और मैं गुनाहों को बख़्शता रहता हूं और मुझे कोई परवाह नहीं । पस तुम मुझ से बख़्शिश त़लब करते रहो मैं तुम्हें बख़्शता रहूंगा ।” (صحيح مسلم، کتاب البر والصلة، باب تحريم الظلم، الحدیث ۲۵۷۷، ص ۱۱۲۹)

हज़रते सय्यिदुना मूसा अश्शअरी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है , हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुरहीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशादे रहमत बुन्याद है : “बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ रात के वक़्त अपना दस्ते कुदरत फैला देता है ताकि दिन में गुनाह करने वालों की तौबा क़बूल फ़रमाए और दिन में अपना दस्ते कुदरत फैला देता है ताकि रात के वक़्त गुनाह करने वालों की तौबा क़बूल फ़रमाए यहां तक कि सूरज मग़रिब से तुलूअ हो ।” (صحيح مسلم، کتاب التوبة، باب قبول التوبة.....، الخ، الحدیث ۲۷۵۹، ص ۱۱۵۶)

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब, हबीबे लबीब صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने हकीकत निशान है : “उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए कुदरत में मेरी जान है ! अगर तुम गुनाह न करो और बख़्शिश का सुवाल न करो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ज़रूर तुम्हारी जगह ऐसी क़ौम ले आएगा जो गुनाह कर के बख़्शिश का सुवाल करेंगे तो **अल्लाह** (صحيح مسلم، کتاب التوبة، باب سقوط الذنوب.....، الخ، الحدیث ۲۷۴۹، ص ۱۱۵۴) ”

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है, मैं ने नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़लाक وَسَلَّم صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को येह फ़रमाते सुना कि **اللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : “ऐ इब्ने आदम ! अगर तेरे गुनाह आस्मान की बुलन्दी तक पहुंच जाएं फिर तू मुझ से मग़फ़िरत का सुवाल करे तो मैं तेरी मग़फ़िरत फ़रमा दूंगा और इस की ज़रा बराबर परवाह न करूंगा । ऐ इब्ने आदम ! अगर तू ज़मीन के बराबर ख़ताएं ले कर मेरी बारगाह में हाज़िर हो तो मैं उस के मुताबिक़ तेरी बख़्शिश फ़रमा दूंगा बशर्ते कि तू ने मेरे साथ किसी को शरीक न ठहराया हो ।”

(جامع الترمذی، کتاب الدعوات، باب الحديث القدسی ..... الخ، الحديث ۳۵۴۰، ص ۱۶، ۲۰)

हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्शरी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है, हुज़ूर नबिय्ये मुक़र्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने अज़ीमुश्शान है : “मेरी उम्मत रहम की हुई उम्मत है, उस का अज़ाब दुन्या में ही ज़लज़लों और फ़ित्तों के ज़रीए हो जाएगा । जब क़ियामत का दिन होगा तो मेरे हर उम्मती को एक किताबी (या'नी ईसाई या यहूदी) दिया जाएगा और कहा जाएगा कि येह तेरी तरफ़ से जहन्नम में जाएगा ।”

(سنن ابی داؤد، کتاب الفتن، باب ما یرجی فی القتل، الحديث ۴۷۷/ ۱۵۳۴ - المسند للإمام احمد بن حنبل، حديث ابی موسیٰ لاشعری، الحديث ۱۹۶۷/ ج ۷، ص ۱۵۶، بتغییر)

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुलताने बहरो बर जनाबे रहमतुल्लिल आलमीन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “बरोजे क़ियामत **اللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ हमारे सामने खुश हो कर तजल्ली फ़रमाएगा और इरशाद फ़रमाएगा : “खुश हो जाओ, ऐ मुसलमानों के गुरौह ! तुम में से हर एक की जगह जहन्नम में यहूदी या नसरानी को डाला जाएगा ।”

(احیاء علوم الدین، کتاب ذکر الموت وما بعده، الشطر الثانی، سعة رحمة الله على سبیل التفاضل بذلك، ج ۵، ص ۳۱۲)

हज़रते सय्यिदुना सहल बिन सा'द सा'दी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है, हुज़ूर सय्यिदुल मुबल्लिगीन, जनाबे रहमतुल्लिल आलमीन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “बेशक **اللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ ने काइनात की तख़लीक़ से दो हज़ार साल क़ब्ल उम्मीद के एक काग़ज़ पर एक मुआहदा लिखा फिर उस को अर्श पर रखा और निदा दी : “ऐ उम्मते मुहम्मदिय्या ! बेशक मेरी रहमत मेरे ग़ज़ब पर सबक़त ले गई, मैं तुम्हारे सुवाल करने से पहले ही तुम्हें अता कर दूंगा और मग़फ़िरत का सुवाल करने से क़ब्ल ही तुम्हें बख़्श दूंगा, तुम में जो मुझ से मिले और येह गवाही देता हो कि **اللّٰهُ** عَزَّ وَजَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मुहम्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) मेरे बन्दे और रसूल हैं तो मैं उसे जन्नत में दाख़िल कर दूंगा ।”

(فردوس الاخبار للديلمی، باب الواو، فصل فی تفسیر القرآن، الحديث ۷۴۰۲، ج ۲، ص ۴۰۳)

शहनशाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिषाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने जन्नत निशान है : “जब क़ियामत का दिन होगा तो अर्श के नीचे से एक मुनादी निदा करेगा : “ऐ उम्मते मुहम्मदिय्या ! सुन, मेरा जो हक़ तेरे ज़िम्मे था वोह मैं ने मुआफ़ कर दिया, अब एक दूसरे को मुआफ़ कर के मेरी रहमत से जन्नत में दाख़िल हो जाओ ।”

(احیاء علوم الدین، کتاب ذکر الموت وما بعده، الشطر الثانی، سعة رحمة الله ..... الخ، ج ۵، ص ۳۱۳)





हज़रते सय्यिदुना सलमान رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है, हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफुरहीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अज़मत निशान है : “**اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ ने ज़मीनो आस्मान की तख़लीक के दिन सो रहूमतें पैदा फ़रमाई । हर रहूमत ज़मीनो आस्मान के दरमियान तह दर तह रख दी गई है । इन में से एक रहूमत ज़मीन पर नाज़िल हुई । इसी से वालिदा अपनी अवलाद पर, वहशी दरिन्दे और परन्दे एक दूसरे पर मेहरबान होते हैं, यहां तक कि घोड़ा अपना पाउं अपने बच्चे से दूर कर लेता है कि कहीं इसे चोट न लग जाए । जब क़ियामत का दिन होगा तो **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ इस रहूमत को दूसरी निनानवे (99) रहूमतों में मिला कर सो मुकम्मल फ़रमा देगा और बरोजे क़ियामत इस से अपने बन्दों पर रहूम फ़रमाएगा ।” (صحيح مسلم، كتاب التوبة، باب في سعة رحمة الله..... الخ، الحديث ۲۷۵۲/۵۳، ۱۱۵۵)

मेरे प्यारे इस्लामी भाइयो ! **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ से बढ़ कर कोई रहीमो करीम नहीं । इस नेमत पर उस का शुक्र अदा करो ।

**बे अमल लोगों पर श्री रहूमते खुदावन्दी** عَزَّ وَجَلَّ :

जिस हदीषे पाक में क़ियामत और पुल सिरात का बयान है उस के आख़िर में **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ फ़िरिशतों को हुक्म फ़रमाएगा : “जिस के दिल में एक ज़र्रे के बराबर भी नेकी पाओ उसे जहन्नम से निकाल दो ।” फ़िरिशते बहुत से लोगों को निकाल कर अर्ज करेंगे : “ऐ हमारे रब्ब عَزَّ وَجَلَّ जिन के मुतअल्लिक तू ने हुक्म दिया अब उन में से कोई भी बाक़ी न बचा ।” तो **اَللّٰهُ** عَزَّ وَजَلَّ फ़रमाएगा :

﴿۴﴾ رَحِمْتِي وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ (الاعراف: ۱۵۶)

**तर्जमए कन्जुल ईमान** : मेरी रहूमत हर चीज़ को घेरे है ।

हज़रते सय्यिदुना अबू सईद रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाया करते थे : “अगर तुम इस हदीषे पाक के मुतअल्लिक मेरी तस्दीक नहीं करते तो चाहो तो कुरआने पाक की येह आयते मुबारका पढ़ लो :

﴿۵﴾ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَظْلِمُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ وَّ اِنَّكَ

حَسَنَةً يُّضَعِفُهَا وَيُؤْتِ مِنْ لَّدُنْهُ اَجْرًا عَظِيْمًا

(پ۵، النساء: ۴۰)

**तर्जमए कन्जुल ईमान** : **اَللّٰهُ** एक ज़रा भर जुल्म नहीं फ़रमाता और अगर कोई नेकी हो तो उसे दूनी करता और अपने पास से बड़ा षवाब देता है ।

फिर **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ फ़रमाएगा : “फ़िरिशतों ने शफ़ाअत कर ली, अम्बिया ने शफ़ाअत कर ली, अब सिर्फ़ अरहमरहीमीन की जात बाक़ी है ।” पस वोह (अपनी शान के मुताबिक़) जहन्नम से एक मुठ्ठी भर कर ऐसे लोगों को निकालेगा जिन का तौहीद पर ईमान के इलावा कोई नेक अमल न होगा, उन का जिस्म कोइला बन चुका होगा । **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ उन को जन्नत के दरवाज़े पर आबे ह्यात की नहर में डालेगा तो वोह ऐसे निकलेंगे जैसे सैलाब के कीचड़ से दाना उगता है, वोह मोतियों की सूरत में निकालें जाएंगे उन की गर्दनों में सोने के पट्टे (या हार) होंगे । अहले जन्नत उन को पहचान कर कहेंगे : “येह **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ के आज़ाद कर्दा बन्दे हैं, जिन को वोह बिगैर किसी

अमल और नेकी के जन्नत में दाखिल करेगा।" उन से कहा जाएगा : "जन्नत में दाखिल हो जाओ, जो कुछ तुम देखोगे वोह तुम्हारे लिये है।" वोह अर्ज करेंगे : "ऐ हमारे रब्ब عَزَّوَجَلَّ तू ने हमें वोह कुछ अता किया जो मख्लूक में से किसी को न दिया।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फरमाएगा : "तुम्हारे लिये मेरे पास इस से भी अफ़ज़ल चीज़ है।" वोह अर्ज करेंगे : "इस से अफ़ज़ल शै कौन सी है?" तो इरशाद होगा : "मैं तुम से राज़ी हो गया हूं, अब कभी नाराज़ न होऊंगा।"

(صحيح مسلم، كتاب الايمان، باب معرفة طريق الرؤية، الحديث ١٨٣، ص ٧١١)

मरवी है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अवलादे आदम में से एक करोड़ दस लाख (1,10,00,000) के हक में हज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की शफ़ाअत क़बूल फ़रमाएगा।"

(المعجم الاوسط، الحديث ٦٨٤٠، ج ٥، ص ١٣٨، "الف الف" بدله "مائة الف الف")

हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अब्दुल्लाह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है, हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़फ़िरत निशान है : "मेरी शफ़ाअत मेरी उम्मत के कबीरा गुनाह वालों के लिये है।" हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : "जिन्होंने ने कबीरा गुनाहों का ईर्तिकाब नहीं किया उन्हें शफ़ाअत की क्या हाज़त ? या'नी वोह शफ़ाअत के मोहताज़ नहीं।"

(جامع الترمذی، ابواب صفة القيامة، باب منه حديث شفاعة لاهل الكبا ثرمن امتی، الحديث ٣٦ ٢٤، ص ١٨٩٧)

एक रिवायत में है, एक आ'राबी ने अर्ज की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मख्लूक का हिसाब कौन लेगा?" इरशाद फ़रमाया : "**अल्लाह** तबारक व तआला।" उस ने अर्ज की : "क्या वोह खुद लेगा?" आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "हां।" तो वोह आ'राबी मुस्कुरा दिया। आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस से मुस्कुराने की वजह पूछी तो उस ने अर्ज की : "करीम जब किसी पर कुदरत पाता है तो मुआफ़ कर देता है, जब हिसाब लेता है तो दरगुज़र फ़रमाता है।" आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "आ'राबी ने सच कहा, जान लो ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से बड़ा करीम कोई नहीं, वोह सब करीमों से बढ़ कर करीम है।"

(شعب الايمان للبيهقي، باب فی حشر الناس بعدما.....الخ، الحديث ٢٦٢، ج ١، ص ٢٤٦)

फिर उस आ'राबी ने अरबी में चन्द अशआर कहे, जिन का मफ़हूम कुछ यूं है :

(1)....करीम का हक़ जब किसी शख्स के नज़दीक मुतअय्यन हो जाए तो वोह अपनी इज़्ज़त की वजह से उसे मुआफ़ फ़रमा देता है।

(2).....वोह नाफ़रमान से दरगुज़र कर के उस के गुनाह बख़्श देता है हालांकि उस का गुनाहगार और मुजरिम होना षाबित है।

मशहूर हदीसे पाक है, "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने काइनात की तख़लीक़ से क़ब्ल येह तै कर लिया था कि मेरी रहमत मेरे ग़ज़ब पर ग़ालिब होगी।"

(احياء علوم الدين، كتاب الخوف والرجاء، بيان دواء الرجاء.....الخ، ج ٤، ص ١٨٤)



रिवायत में है, “जब क़ियामत का दिन होगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अर्श के नीचे से एक किताब निकालेगा जिस में लिखा होगा, मेरी रहमत मेरे ग़ज़ब पर सबक़त ले गई और मैं अरहमर्राहिमीन (या'नी सब से बढ़ कर रहम फ़रमाने वाला) हूँ फिर वोह अहले जन्नत के बराबर (जहन्नमियों को) दोज़ख़ से निकाल देगा।” (احياء علوم الدين، كتاب الذكر والموت وما بعدها، سعة رحمة الله على سبيل التفاؤل بذلك، ج ॥ २، ص ३१२)

मरवी है : “एक आ'राबी ने हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا को इस आयते मुबारका :

﴿١٦﴾ وَكُنْتُمْ عَلَى شَفَا حُفْرَةٍ مِّنَ النَّارِ

فَأَنقَذَكُم مِّنْهَا (پ، ६، ॥ ३، १०)

तर्जमए कन्ज़ुल इमान : और तुम एक गारे दोज़ख़ के کنارے پر थे तो उस ने तुम्हें इस से बचा दिया ।

की तिलावत करते हुवे सुना तो अर्ज़ की : “**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर रहमान व रहीम उन्हें जहन्नम में गिराने का इरादा फ़रमा लेता तो फिर उन्हें इस में गिरने से न बचाता ।” हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने इरशाद फ़रमाया : “आ'राबी की इस बात को पल्ले बांध लो हालांकि येह फ़कीह नहीं ।” (احياء علوم الدين، كتاب الذكر والموت وما بعدها، سعة رحمة الله على سبيل التفاؤل بذلك، ج ॥ २، ص ३१३)

मन्कूल है : “क़ियामत के दिन जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दे की पर्दापोशी चाहेगा और उसे सब के सामने रुस्वा न करने का इरादा फ़रमाएगा तो उस का गुनाहों भरा नामए आ'माल उस के दाएं हाथ में अ़ता फ़रमाएगा । वोह बन्दा इस की वजह से ख़ौफ़ ज़दा होगा जो उस के नामए आ'माल में होगा क्यूंकि उसे मा'लूम होगा कि उस के गुनाह बहुत ज़ियादा हैं । चुनान्वे, नामए आ'माल में जहां गुनाह लिखे होंगे वहां वोह आवाज़ आहिस्ता कर लेगा और अपने दिल में कहेगा : “سُبْحَنَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ मेरी तो एक नेकी भी नहीं ।” जब कि लोग कहेंगे : “سُبْحَنَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ इस बन्दे के नामए आ'माल में तो एक गुनाह भी नहीं ।” जब वोह आहिस्ता आवाज़ में पढ़ कर फ़ारिग़ होगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : “ऐ मेरे बन्दे ! तेरी नेकियों को मैं ने अपनी मख़्लूक पर ज़ाहिर किया और तेरी बुराइयों की दुनिया व आख़िरत में पर्दापोशी फ़रमाई, ऐ मेरे फ़िरिशते ! इस को मेरे अ़फ़वो करम से जन्नत में ले जाओ ।”

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है, नबिय्ये मुक़र्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बारगाहे इलाही **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ में अपनी उम्मत के गुनाहों के मुतअल्लिक़ दुआ की और अर्ज़ की : “या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तू इन का हिसाब मेरे हवाले कर दे ताकि इन की बुराइयों पर मेरे इलावा कोई और आगाह न हो ।” **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने वह्य़ फ़रमाई : “येह तेरी उम्मत है, मैं इस पर तुझ से ज़ियादा रहम फ़रमाने वाला हूँ, मैं इन का हिसाब किसी के हवाले नहीं करूंगा ताकि मेरे इलावा कोई इन की बुराइयां न देखे ।”

(احياء علوم الدين، كتاب الخوف والرجاء، بيان دواء الرجاء.....الخ، ج ॥ २، ص १८१)

हज़रते सय्यिदुना मुआविय्या बिन कुरा रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना इब्ने मसऊद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इरशाद फ़रमाया : “सूरतुन्निस्सा की येह चार आयात इस उम्मत के लिये दुन्या व माफ़ीहा (या'नी दुन्या और जो कुछ इस में है) से बेहतर हैं :

﴿٤﴾ إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَنْ يُشْرَكَ بِهِ

وَيَغْفِرُ مَا دُونُ ذَلِكَ لِمَنْ يَشَاءُ ج (प ५, النساء: ६८)

﴿٨﴾ وَلَوْ أَنَّهُمْ إِذْ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ جَاءُوكَ

فَاسْتَغْفَرُوا اللَّهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُولُ لَوَجَدُوا

اللَّهُ تَوَّابًا رَحِيمًا 0 (प ५, النساء: ६६)

﴿٩﴾ إِنْ تَحْسَبُوا كِبَايْرَ مَا تَنْهَوْنَ عَنْهُ تُكَفِّرْ

عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَنُدْخِلَكُمْ مُدْخَلًا كَرِيمًا 0

(प ५, النساء: ३१)

﴿١०﴾ وَمَنْ يَعْمَلْ سُوءًا أَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهُ ثُمَّ يَسْتَغْفِرِ

اللَّهُ يَجِدِ اللَّهَ غَفُورًا رَحِيمًا 0 (प ५, النساء: ११)

(شعب الایمان للبيهقي، باب فی معالجة کل ذنب بالتوبة الحديث ٧١٤١، ج ٥، ص ٤٢٥، بتغيير المعجم الكبير الحديث ٩٠٦٩، ج ٩، ص ٢٢٠)

हज़रते सय्यिदुना अबू ग़ालिब عليه रَحْمَةُ اللهِ الْغَالِب फ़रमाते हैं : “मैं अबू उमामा के पास शाम के वक़्त जाया करता था । एक दिन उन के पड़ोस में एक मरीज़ के पास गया तो वोह मरीज़ को झिड़क रहे थे और फ़रमा रहे थे : “अफ़सोस है तुझ पर, ऐ अपनी जान पर जुल्म करने वाले ! क्या मैं ने तुझे भलाई का हुक्म न दिया और बुराई से न रोका था ? तो वोह नौजवान बोला : “ऐ मेरे मोहतरम ! अगर **अल्लाह** غَزَّ وَجَلَّ मुझे मेरी मां के सिपुर्द कर दे और मेरा मुआमला उसी के हवाले फ़रमा दे तो मेरी मां मेरे साथ कैसा मुआमला फ़रमाएगी ?” तो उन्होंने ने जवाब दिया : “वोह तुझे जन्त में दाख़िल कर देगी ।” तो उस ने अर्ज़ की : “**अल्लाह** غَزَّ وَجَلَّ मुझ पर मेरी वालिदा से भी ज़ियादा मेहरबान है ।” फिर उस की रूह क़फ़से उन्सुरी से परवाज़ कर गई । चुनान्चे, जब उस के चचा ने उस के साथ क़ब्र में उतर कर उसे दफ़न किया और क़ब्र को बराबर कर दिया तो उस ने घबरा कर चीख़ मारी । मैं ने पूछा : “क्या हुवा ?” तो कहने लगा : “इस की क़ब्र वसीअ कर दी गई और नूर से भर दी गई है ।”

(شعب الایمان للبيهقي، باب فی معالجة کل ذنب بالتوبة الحديث ٧١١٥، ج ٥، ص ٤١٧)

हज़रते सय्यिदुना उमर बिन ख़त्ताब رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है, नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ख़िदमत में कैदियों को लाया

**पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इलिमिया (दा' वते इस्लामी)**



इस को लहद में उतार कर उस के नर्म नाजूक रुख़सार को सख़्त मिट्टी पर रख कर पलट जाते हैं तो वोह चीख़ता है : “हाए तन्हाई !” **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : “ऐ मेरे बन्दे ! क्या तुझे वहशत होती है जब कि मैं तेरा अनीस हूं, क्या तू अकेले पन की शिकायत करता है जब कि मैं तेरे क़रीब हूं। ऐ मेरे बन्दे ! क्या मैं तेरा रब्ब नहीं हूं ?” अर्ज़ करेगा : “क्यूं नहीं। ऐ मेरे रब्ब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : “ऐ मेरे बन्दे ! कैसे तू ने उस चीज़ को छोड़ दिया जिस का मैं ने तुझे हुक्म दिया था ? और कैसे उस का मुर्तकिब हुवा जिस से मैं ने तुझे मन्अ किया था ? क्या तुझे मा'लूम न था कि तुझे मेरी तरफ़ पलटना है ? तेरे आ'माल मेरे सामने पेश होंगे ? क्या तू ने मेरे अहद को भुला दिया था ? या तू मेरे वा'दे और वईद का मुन्किर था ? अब तेरे दोस्तों ने तुझे तन्हा छोड़ दिया, माल तेरे हाथ से छूट गया, माल ने तेरे मक़सद में तुझे कोई नफ़अ न दिया, न दोस्तों ने तुझे तेरे बुरे आ'माल से बचाया। अब तेरे पास क्या उज़्र है ?”

बन्दा अर्ज़ करेगा : “ऐ मेरे परवर दगार **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरा दिल मालो दौलत की महबूबत में गिरिफ़्तार हुवा, इन दोनों ने मुझे गुनाहों पर आमादा किया, अब मैं तेरे ज़वारे रहमत में हूं और तेरा इस रात मेहमान हूं तू मुझे अपनी आग से अज़ाब न देना, अगर तू ही मुझ पर रहम नहीं फ़रमाएगा तो फिर कौन रहम करेगा ?” **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : “ऐ मेरे बन्दे ! लोगों ने तुझे छोड़ दिया और अगर वोह तेरे पास रहते तो भी तुझे उन से नफ़अ न होता, उन्होंने ने तुझे मेरे दरवाज़े की तरफ़ मुतवज्जेह कर दिया और मेरे रहमो करम पर छोड़ कर गए हैं। ऐ मेरे बन्दे ! ठन्डा सांस ले और आंखों को भी ठन्डा कर ले कि तू आज रात मेरा मेहमान है और करीम अपने मेहमान को महरूम नहीं छोड़ता। ऐ फ़िरिश्तों ! अहसन तरीक़े से इस की मेहमान नवाज़ी करो और इस पर इस के घर वालों और क़राबतदारों से ज़ियादा मेहरबान हो जाओ।”

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है, हुज़ूर सय्यिदुल मुबल्लिगीन, जनाबे रहमतुल्लिल अलमीन صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने मग़फ़िरत निशान है : “अगर तुम्हारी ख़ताएं आस्मान तक पहुंच जाएं फिर तुम तौबा करो तो ज़रूर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारी तौबा क़बूल फ़रमा लेगा।”

(सनन ابن ماجه، ابواب الزهد، باب ذكر التوبة، الحديث ٤٢٤٨، ص ٢٧٣٥)

**रहमतें इलाही हर गुनहगार व नेक़्क़ार को शामिल है :**

मन्कूल है, हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلَيْ نَبِيِّنا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने अपनी मुनाजात में अर्ज़ किया : “या रब्ब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : “लब्बैक या मूसा !” आप عَلَيْهِ السَّلَام ने अर्ज़ की : “या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तू तो मालिक है, मेरी किया हैषियत कि तू मुझे लब्बैक कह कर जवाब दे।” तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : “मुझे येह पसन्द है कि कोई बन्दा मुझे “या रब्ब” पुकारे तो मैं उसे “लब्बैक” कह कर जवाब दूं।” हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام

ने अर्ज की : “या ربِّ عَزَّوَجَلَّ क्या येह हर मुतीअ बन्दे के लिये है ?” इरशाद हुवा : “हां ! बल्कि हर गुनहगार बन्दे के लिये भी है ।” तो हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने अर्ज की : “फ़रमा बरदार के लिये तो उस की इताअत के सबब है और गुनहगार पर येह करम किस वजह से ?” तो जवाब इरशाद हुवा : “ऐ मूसा ! अगर मैं भलाई करने वाले को उस की भलाई का बदला दूं और बुराई करने वाले पर उस की बुराई की वजह से एहसान न करूं तो मेरा जूदो करम कहां जाएगा ।”

### अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के पांच पशन्दीदा कलिमात :

मन्कूल है : “अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की तरफ़ वह्य फ़रमाई कि फुलां ज़मीन में मेरे एक वली का इन्तिक़ाल हो गया है तुम वहां जा कर उस को गुस्ल व कफ़न दो और उस की नमाज़े जनाज़ा अदा करो और मिट्टी में उस को दफ़न कर दो कि वोह जन्नत में तुम्हारा पड़ोसी है ।” चुनान्वे, हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام तशरीफ़ ले गए । उस को बयाबान में मुर्दा पाया । उस के पास कोई न था और न ही दुन्या में उस की मिल्कियत में कोई चीज़ थी । लोग उस की बुराई बयान करते और हर किस्म के गुनाह का मुर्तकिब क़रार देते । हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالसَّلَام ने गुस्ल व कफ़न दे कर उस की नमाज़े जनाज़ा पढ़ी और उसे दफ़न कर दिया । फिर अर्ज की : “या ربِّ عَزَّوَجَلَّ मैं ने इस मय्यित के मुतअल्लिक़ तेरे हुक्म पर अमल किया लेकिन लोग तो इस की बुराई बयान करते हैं, और हर किस्म के गुनाह का मुर्तकिब कहते हैं ।”

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : ऐ मूसा मेरे बन्दे सच कहते हैं , लेकिन मैं उन से ज़ियादा वोह कुछ जानता हूं जो वोह नहीं जानते । जब उस की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो उस ने पांच कलिमात से मुझ से मुनाजात की, जिस के सबब मैं ने उस की मग़फ़िरत फ़रमा दी । हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالसَّلَام ने अर्ज की : “वोह पांच कलिमात कौन से हैं ?” इरशाद हुवा : “ऐ मूसा ! वोह पांच कलिमात येह हैं :

- (1).....ऐ मेरे ربِّ عَزَّوَجَلَّ तू जानता है कि मैं नेकों से महबूबत करता हूं अगर्चे खुद नेक नहीं हूं ।
- (2).....या ربِّ عَزَّوَجَلَّ तू जानता है कि मैं फ़ासिकों से बुज़ रखता हूं अगर्चे मैं खुद फ़ासिक हूं ।
- (3).....या ربِّ عَزَّوَجَلَّ अगर मुझे मा'लूम हो जाए कि मेरे जन्नत में दाख़िल होने से तेरी मिल्कियत में कोई कमी आ जाएगी तो मैं तुझ से जन्नत का सुवाल न करूं ।
- (4)....या ربِّ عَزَّوَجَلَّ अगर मुझे मा'लूम हो जाए कि मेरे जहन्नम में दाख़िल होने से तेरी मिल्कियत में इज़ाफ़ा होगा तो मैं जहन्नम से तेरी पनाह न मांगूं ।
- (5)....या ربِّ عَزَّوَجَلَّ अगर तू मुझ पर रहम न करेगा तो फिर कौन करेगा ?

ऐ मूसा ! मैं ने उस पर रहम किया और क्या मेरे करम के लाइक था कि मैं उस को खाइक व खासिर लौटा देता । जब उस ने येह कलिमात कहे तो मैं ने उस से दरगुजर फरमाया और उस की मगफिरत फरमा दी और मैं ही बख्शने वाला, मेहरबान हूँ ।”

या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें दीन की समझ अता फरमा, मुश्किल उमूर की तशरीह करना सिखा और हमें जिल्लत व रुस्वाई से महफूज फरमा, ऐ हमारे मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ ऐ हक्के मुबीन जात ! हमें अपनी रहमत से अपना कामयाब बन्दा बना दे । या अरहमर्राहिमीन ! हम पर अपना खास रहमो करम फरमा । (अमिन بجاء النبى الامين صلى الله تعالى عليه واله وسلم)

وَصَلَّى اللّٰهُ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِهِ وَصَحْبِهِ أَجْمَعِينَ



### अल्लाह तआला के नजदीक नापसन्दीदा लोग

दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर **सल्लि अल्लै त्ताली एल्लै व अल्लै व सल्लै** का फरमाने आलीशान है : “**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ कियामत के दिन तीन शख्सों से न कलाम फरमाएगा, न उन्हें पाक करेगा और न ही उन पर नजरे रहमत फरमाएगा बल्कि उन के लिये दर्दनाक अज़ाब होगा और वोह तीन येह हैं : बुढ़ा ज़ानी, झूटा बादशाह, और मुतकब्बिर फ़कीर ।”

(صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب بیان غلط تحریم.....الخ، الحديث: २९६، ص ६९६)

सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार **सल्लि अल्लै त्ताली एल्लै व अल्लै व सल्लै** का फरमाने आलीशान है : “**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन चार लोगों को क़तअन पसन्द नहीं फरमाता :

- (1) कषरत से कस्में खाने वाला ताजिर
- (2) मुतकब्बिर फ़कीर
- (3) बूढ़ा ज़ानी और
- (4) ज़ालिम हुक्मरान ।”

(سنن النسائي، کتاب الزکاة، باب الفقير المختال، الحديث: २०७७، ص २०६)



## مآخذ و مراجع

نمبر شمار	کتاب	مصنف/مؤلف	مطبوعہ
	قرآن مجید	کلام باری تعالیٰ	ضیاء القرآن پبلیشرز لاہور
1	کنز الایمان فی ترجمۃ القرآن	اعلیٰ حضرت الامام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمن متوفی ۱۳۴۰ھ	ضیاء القرآن پبلیشرز
2	خزائن العرفان	صدر الافاضل مفتی نعیم الدین مراد آبادی علیہ رحمۃ اللہ الہادی متوفی ۱۳۶۷ھ	ضیاء القرآن پبلیشرز
3	تفسیر قرطبی	الامام محمد بن احمد القرطبی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ متوفی ۶۷۱ھ	دار الفکر بیروت
4	تفسیر الکبیر	الامام فخر الدین الرازی علیہ رحمۃ اللہ الباقی متوفی ۶۰۶ھ	دار احیاء التراث بیروت
5	تفسیر روح البیان	الامام الحافظ اسماعیل حقی البروسوی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ متوفی ۱۱۳۷ھ	کوئٹہ پاکستان
6	تفسیر زاد المسیر لابن الجوزی	الامام ابو الفرج عبدالرحمن بن علی بن الجوزی القرطبی علیہ رحمۃ متوفی ۵۹۷ھ	المکتبۃ الشاملۃ
7	تفسیر البغوی	الامام ابو حمید الحسن البغوی علیہ رحمۃ اللہ القوی متوفی ۵۱۲ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
8	تفسیر ابن کثیر	الامام الحافظ عماد الدین ابن کثیر متوفی ۷۷۴ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
9	الدر المنثور فی التفسیر بالمأثور	الامام الحافظ جلال الدین السیوطی الشافعی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ متوفی ۹۱۱ھ	دار الفکر بیروت
10	صحیح البخاری	الامام محمد بن اسماعیل البخاری رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ متوفی ۲۵۶ھ	دار السلام ریاض
11	صحیح مسلم	الامام مسلم بن حجاج نیشاپوری رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ متوفی ۲۶۱ھ	دار السلام ریاض
12	جامع الترمذی	امام محمد بن عیسیٰ الترمذی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ متوفی ۲۷۹ھ	دار السلام ریاض
13	سنن ابی داؤد	الامام ابو داؤد سلیمان ابن اشعث رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ متوفی ۲۷۵ھ	دار السلام ریاض
14	سنن نسائی	الامام احمد بن شعبہ النسائی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ متوفی ۳۰۳ھ	دار السلام ریاض
15	سنن ابن ماجہ	الامام محمد بن یزید القزوینی ابن ماجہ رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ متوفی ۲۷۳ھ	دار السلام ریاض
16	صحیح ابن خزمہ	الامام ابوبکر محمد بن اسحاق بن خزمہ رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ متوفی ۳۱۱ھ	المکتبۃ الاسلامیۃ بیروت
17	الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان	الحافظ محمد بن حبان رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ متوفی ۳۵۳ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
18	کتاب المراسیل لابی داؤد	الامام ابو داؤد سلیمان ابن اشعث رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ متوفی ۲۷۵ھ	مدینۃ الاولیاء ملتان پاکستان
19	مسند ابی یعلیٰ	ابو یعلیٰ احمد الموصلی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ متوفی ۳۰۷ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
20	مسند لالامام احمد بن حنبل	الامام احمد بن حنبل رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ متوفی ۲۴۱ھ	دار الفکر بیروت
21	الزهد للامام احمد بن حنبل	الامام احمد بن حنبل رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ متوفی ۲۴۱ھ	دار البغد الجدید المنصورۃ
22	ابحر الزخار المعروف بمسند الزیار	الامام ابو بکر احمد بن عمرو الزیار رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ متوفی ۲۹۲ھ	مکتبۃ العلوم والحکم المدینۃ المنورۃ
23	المعجم الکبیر	الحافظ سلیمان بن احمد الطبرانی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ متوفی ۳۲۰ھ	دار احیاء التراث بیروت
24	موسوعة لالامام ابن ابی الدنیا	الحافظ ابو بکر عبد اللہ بن محمد بن عیاد ابن ابی الدنیا رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ متوفی ۲۸۱ھ	دار الکتب العلمیۃ
25	مکارم اخلاق لابن ابی الدنیا	الحافظ ابو بکر عبد اللہ بن محمد بن عیاد ابن ابی الدنیا رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ متوفی ۲۸۱ھ	دار الکتب العلمیۃ
26	المعجم الاوسط	الحافظ سلیمان بن احمد الطبرانی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ متوفی ۳۲۰ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت

27	السيرة النبوية لابن كثير	الامام الحافظ عماد الدين ابن كثير متوفى ٧٤٣هـ	دار الكتب العلمية بيروت
28	السيرة النبوية لابن هشام	ابو محمد عبد الملك بن هشام متوفى ٢١٣هـ	دار الكتب العلمية بيروت
29	كتاب العضة	ابو محمد عبد الله بن محمد بن جعفر بن حيان عليه رحمة الرحمن متوفى ٣٩٦هـ	دار الكتب العلمية بيروت
30	سنن الدارمي	الامام عبد الله بن عبد الرحمن رحمة الله تعالى عليه متوفى ٢٥٥هـ	باب المدينة كراچی
31	الاسماء والصفات للبيهقي	الحافظ احمد بن الحسين البيهقي رحمة الله تعالى عليه متوفى ٣٥٨هـ	المكتبة الشاملة
32	امستدرک علی الصحیحین	الامام محمد بن عبد الله الحاكم رحمة الله تعالى عليه متوفى ٤٠٥هـ	دار المعرفة بيروت
33	دلائل النبوة للاصبهاني	اسماعيل بن محمد بن الفضل التيمي الاصبهاني عليه رحمة الله الوالي	المكتبة الالقية
		متوفى ٥٣٥هـ	
34	دلائل النبوة للبيهقي	الحافظ احمد بن الحسين البيهقي رحمة الله تعالى عليه متوفى ٣٥٨هـ	دار الكتب العلمية بيروت
35	السنن الكبرى للنسائي	الامام احمد بن شعيب النسائي رحمة الله تعالى عليه متوفى ٣٠٣هـ	دار الكتب العلمية بيروت
36	السنن الكبرى للبيهقي	الامام احمد بن الحسين البيهقي رحمة الله تعالى عليه متوفى ٣٥٨هـ	دار الكتب العلمية بيروت
37	شعب الایمان للبيهقي	الامام احمد بن الحسين البيهقي رحمة الله تعالى عليه متوفى ٣٥٨هـ	دار الكتب العلمية بيروت
38	البداية النهاية لابن كثير	الامام الحافظ عماد الدين ابن كثير متوفى ٧٤٣هـ	دار الكتب العلمية بيروت
39	ترتيب المدارك وتقريب المسالك	عياض بن موسى المعروف بالقاضي عياض رحمة الله تعالى عليه متوفى ٥٣٣هـ	المكتبة الشاملة
40	الاحاديث المختارة	الشيخ الامام ضياء الدين ابو عبد الله الحنبلي المقدسي رحمة الله متوفى ٣٩٦هـ	دار خضر
41	الثقات لابن حبان	الحافظ محمد بن حبان رحمة الله تعالى عليه متوفى ٣٥٣هـ	دار الكتب العلمية بيروت
42	موطأ امام مالك	الامام مالك بن انس رحمة الله تعالى عليه متوفى ١٤٩هـ	دار المعرفة بيروت
43	المصنف لابن ابي شيبة	الامام عبد الله بن محمد بن ابي شيبة رحمة الله تعالى عليه متوفى ٢٣٥هـ	دار الفكر بيروت
44	الجزء المفقود من الجزء الاول	الامام عبد الرزاق الصنعاني رحمة الله تعالى عليه متوفى ٢١١هـ	پاکستان
	المصنف		
45	مصنف عبد الرزاق	الامام عبد الرزاق الصنعاني رحمة الله تعالى عليه متوفى ٢١١هـ	دار الكتب العلمية بيروت
46	الحديقة الندية شرح الصريعة	عارف بالله الامام عبد الغني النابلسي عليه الرحمة الله الغني متوفى ١١٣٣هـ	پشاور پاکستان
	المحمدية		
47	تاريخ بغداد	الامام ابو بكر احمد بن علي الخطيب البغدادي رحمة الله تعالى عليه	دار الكتب العلمية بيروت
		متوفى ٣٢٣هـ	
48	تاريخ الخلفاء	الحافظ الامام جلال الدين السيوطي الشافعي عليه رحمة الله القوي متوفى ٩١١هـ	باب المدينة كراچی پاکستان
		٩١١هـ	
49	الكامل في ضعفاء الرجال	الامام ابو احمد عبد الله بن عدى الجرجاني رحمة الله تعالى عليه متوفى ٣٦٥هـ	دار الكتب العلمية بيروت
50	حلية الاولياء	الامام الحافظ ابو نعيم الاصبهاني رحمة الله تعالى عليه متوفى ٣٣٠هـ	دار الكتب العلمية بيروت
51	فتح الباري شرح صحيح البخاري	الامام الحافظ ابن حجر العسقلاني الشافعي رحمة الله تعالى عليه متوفى ٨٥٢هـ	دار الكتب العلمية بيروت
52	اخبار مكة للارزقي	محمد بن عبد الله بن احمد المكي الارزقي متوفى ٢٣٣هـ	مكتبة الشاملة
53	اخبار مكة للفاكهي	الامام ابو عبد الله محمد بن اسحاق الفاكهي متوفى ٢٨٥هـ	باب المدينة كراچی پاکستان
54	سير اعلام النبلاء	الامام شمس الدين محمد بن احمد الذهبي رحمة الله تعالى عليه متوفى ٧٤٨هـ	دار الفكر بيروت

55	المجروحین لابن حبان	الامام الحافظ محمد بن حبان رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ متوفی ۳۵۳ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
56	الإصابة فی تمييز الصحابة	الامام الحافظ احمد بن علی بن حجر العسقلانی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ متوفی ۸۵۲ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
57	كشف الخفاء ومزيل الالباس	الامام اسمعیل بن محمد بن الہادی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ متوفی ۱۱۶۲ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
58	قوت القلوب	الشیخ ابو طالب محمد بن علی المکی رحمۃ اللہ القوی متوفی ۳۸۶ھ	مرکز اہل السنۃ بمرکات رضا
59	اعانة الطالبین لشرح قرۃ العین	العلامہ ابو بکر عثمان بن محمد شطا الدیاطی البکری رحمۃ اللہ القوی متوفی ۱۳۰۰ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
60	الاعلام للزرکلی	خیر الدین زکلی متوفی ۱۳۹۶ھ	دار ابن حزم
61	معجم المؤلفین	عمر رضا کمالی متوفی ۱۳۰۸ھ	مؤسسۃ الرسالۃ
62	وفیات الاعیان لابن خلکان	ابوالعباس شمس الدین احمد بن محمد بن خلکان علیہ رحمۃ المنان متوفی ۶۸۱ھ	المکتبۃ الشاملۃ
63	تاریخ دمشق لابن عساکر	الامام الحافظ ابی القاسم علی بن الحسن المعروف بابن عساکر رحمۃ اللہ متوفی ۵۷۱ھ	المکتبۃ الشاملۃ
64	العلل المتناہیۃ لابن الجوزی	الامام ابو الفرج عبدالرحمن بن علی بن الجوزی القرطبی علیہ رحمۃ اللہ القوی متوفی ۵۹۷ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
65	الریاض النضرۃ فی مناقب العشرۃ	الامام شیخ ابو جعفر احمد الشہیر الطبری متوفی ۶۹۳ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
66	تحفة الاحوذی شرح جامع الترمذی	الامام الحافظ محمد بن عبدالرحمن کفوری متوفی ۱۳۵۳ھ	باب المدینۃ کراچی پاکستان
67	المستطرف فی کل فن مستطرف	شہاب الدین محمد بن ابی احمد ابی الفتح رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ متوفی ۸۵۰ھ	دار الفکر بیروت
68	کتاب الجامع	الامام الحافظ معمر بن راشد الازدی علیہ رحمۃ اللہ القوی متوفی ۱۵۱ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
69	مناقب امام اعظم للکردری	محمد بن محمد معروف بابن البزار الکردری علیہ رحمۃ اللہ القوی متوفی ۸۲۷ھ	کوئٹہ پاکستان
70	مناقب امام اعظم للموفق	الموفق بن احمد المکی علیہ رحمۃ اللہ القوی متوفی ۵۶۸ھ	کوئٹہ پاکستان
71	صيد الخاطر ابن الجوزی	الامام جمال الدین ابی الفرج بن جوزی علیہ رحمۃ اللہ القوی متوفی ۵۹۷ھ	المکتبۃ الشاملۃ
72	صفة الصفوة	الامام جمال الدین ابی الفرج بن جوزی علیہ رحمۃ اللہ القوی متوفی ۵۹۷ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
73	تذکرۃ الاولیاء	شیخ فہید الدین عطار علیہ رحمۃ اللہ الغفار متوفی ۶۲۰/۶۲۱ھ	انتشارات گنجینہ
74	تاریخ الاسلام للذہبی	الامام شمس الدین الذہبی علیہ رحمۃ اللہ القوی متوفی ۷۴۸ھ	المکتبۃ الشاملۃ
75	الطبقات الکبریٰ لابن سعد	محمد بن سعد بن منیع الهاشمی البصری علیہ رحمۃ اللہ القوی متوفی ۲۳۰ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
76	الطبقات الکبریٰ للشعرانی	الامام ابوالموہب عبدالوہاب الشعرانی قدس سرہ النورانی متوفی ۹۷۳ھ	دار الفکر بیروت
77	فردوس الاخبار للبدلیسی	الحافظ شہرہ بن شہر دار بن شہرہ الدیلمی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ متوفی ۵۰۹ھ	دار الفکر بیروت
78	کنز العمال	العلامہ علاء الدین علی المتقی الہندی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ متوفی ۹۷۵ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
79	الترغیب والترہیب	الامام زکی الدین عبد العظیم المنذری رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ متوفی ۶۵۲ھ	دار الفکر بیروت
80	الجامع الصغیر	الامام الحافظ جلال الدین السیوطی الشافعی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ متوفی ۹۱۱ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
81	فیض القدر شرح الجامع الصغیر	الامام محمد عبد الرؤوف المناوی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ متوفی ۱۰۳۱ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت



82	اتحاف السادة المتقين	العلامة مرتضى الزبيدي رحمة الله تعالى عليه متوفى ١٢٠٥ هـ	دار الكتب العلمية بيروت
83	مشكوة المصابيح	الشيخ محمد بن عبد الله الخطيب التبريزي رحمة الله تعالى عليه متوفى ٤٣١ هـ	دار الكتب العلمية بيروت
84	مرآة المناجيب شرح مشكوة المصابيح	حكيم الأمت مفتي احمد يار خان عليه رحمة الرحمن متوفى ١٣٩١ هـ	ضياء القرآن پبلي كيشنر لاهور
85	كشف الخفاء ومزيل الالباس	الامام اسمعيل بن محمد بن الهادي رحمة الله تعالى عليه متوفى ١١٢٢ هـ	دار الكتب العلمية بيروت
86	شرح زرقاني على المؤطا	محمد بن عبد الباقي بن يوسف الزرقاني عليه رحمة الله الوالي متوفى ١١٢٢ هـ	دار الاحياء التراث
87	التنبيه لابن عبد البر	الامام يوسف بن عبد الله محمد بن عبد البر رحمة الله تعالى عليه متوفى ٤٢٣ هـ	دار الكتب العلمية بيروت
88	سنن الدارقطني	الامام الكبير علي بن عمر الدارقطني رحمة الله تعالى عليه متوفى ٣٥٨ هـ	ملتان پاکستان
89	الترغيب في فضائل الاعمال وثواب	ابو حفص عمر بن احمد المعروف بابن شاهين رحمة الله تعالى عليه متوفى ٣٨٥ هـ	المكتبة الشاملة
90	تعلیق الممجد	مولانا عبد الحی لکھنوی علیہ رحمة الله القوی متوفى ١٣٠٣ هـ	باب المدينة کراچی پاکستان
91	الموضوعات	الامام ابو الفرج عبد الرحمن بن علي بن الجوزي القرشي عليه رحمة القوي متوفى ٥٩٤ هـ	دار الفكر بيروت
92	الفتوحات المكية لابن عربي	الامام الشيخ محي الدين ابن عربي عليه رحمة الله القوي متوفى ٥٢٨ هـ	دار الفكر بيروت
93	غذاء الألباب في شرح منظومة الآداب	-----	المكتبة الشاملة
94	وسائل الوصول الى شمائل الرسول	الامام المحقق المحدث علامه محمد يوسف بن اسماعيل نيهاني متوفى ١٣٥٠ هـ	دار المنهاج بيروت
95	الروض الانف	الامام ابو القاسم عبد الرحمن بن عبدالله النخعي السهيلي عليه رحمة الله الوالي متوفى ٥٨١ هـ	دار الكتب العلمية بيروت
96	احياء العلوم الدين	الامام ابو حامد محمد بن احمد طوسي الغزالي عليه رحمة الله الوالي متوفى ٥٠٥ هـ	دار صادر بيروت
97	التذكرة الحموانية	محمد بن الحسن بن محمد بن علي بن حمدون البغدادي متوفى ٥٢٢ هـ	المكتبة الشاملة
98	نزهة المجالس	العلامة عبد الرحمن بن عبد السلام الصفوري الشافعي متوفى ٨٩٣ هـ	دار الكتب العلمية بيروت
99	تنبيه الغافلين	الامام ابو حامد محمد بن احمد طوسي الغزالي عليه رحمة الله الوالي متوفى ٥٠٥ هـ	پشاور پاکستان
100	ربيع الابواب	ابو القاسم محمد بن عمرو بن احمد الزمخشري متوفى ٥٣٨ هـ	المكتبة الشاملة
101	الفتاوى الهندية	ملائ نظام الدين رحمة الله تعالى عليه متوفى ١١٦١ هـ و علمائ هند	کونٹہ پاکستان
102	الفتاوى الرضوية	المجدد الاعظم الامام احمد رضا خان القادري الحنفي رحمة الله عليه متوفى ١٣٣٠ هـ	رضافاؤ نڈيشن لاهور
103	بهار شريعة	صدر الشريعة مفتي محمد امجد علي الاعظمي رحمة الله تعالى عليه متوفى ١٣٦٤ هـ	ضياء القرآن پبلي كيشنر لاهور
104	ماثبات بالسنة	الشيخ المحقق عبد الحق محدث دهلوي رحمة الله تعالى عليه متوفى ١٠٥٢ هـ	باب المدينة کراچی
105	لسان العرب	العلامة ابو الفضل جمال الدين محمد بن مكرم ابن منظور الافريقي متوفى ٤١١ هـ	مؤسسة الاعلمي للطبوعات بيروت
106	جامع کرامات اولياء (مترجم)	الامام المحقق المحدث علامه محمد يوسف بن اسماعيل نيهاني متوفى ١٣٥٠ هـ	ضياء القرآن پبلي كيشنر لاهور
107	کوثر الخيرات	شيخ الحديث حضرت علامه مولانا محمد اشرف سيالوي دامت برکاتہم العالیہ	ضياء القرآن پبلي كيشنر لاهور
108	فيضان سنت	امير اہلسنت حضرت علامہ مولانا محمد الیاس عطار قادری دامت برکاتہم العالیہ	مکتبہ المدینہ باب المدینہ کراچی
109	رفیق الحرمین	امير اہلسنت حضرت علامہ مولانا محمد الیاس عطار قادری دامت برکاتہم العالیہ	مکتبہ المدینہ باب المدینہ کراچی
110	برے خاتمی کے اسباب	امير اہلسنت حضرت علامہ مولانا محمد الیاس عطار قادری دامت برکاتہم العالیہ	مکتبہ المدینہ باب المدینہ کراچی

## मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिया की तरफ से पेश कर्दा काबिले मुबालआ कुतुब

﴿شَوْ بَعْدُ كُتُبُهُ آتَا هَجَرَت عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى﴾

- (1) करन्सी नोट के शर्इ अहकामात :  
(अल किफ़लुल फ़कीहिल फ़ाहिम फ़ी किरतासिद्दाहिम) (कुल सफ़हात : 199)
- (2) विलायत का आसान रास्ता (तसव्वुरे शैख)  
(अल याकूतितुल वासितह) (कुल सफ़हात : 60)
- (3) ईमान की पहचान (हाशिया तम्हीदे ईमान) (कुल सफ़हात : 74)
- (4) मअशी तरक्की का राज़  
(हाशिया व तशरीह तदबीरे फ़लाहो नजात व इस्लाह) (कुल सफ़हात : 41)
- (5) शरीअत व तरीक़त  
(मक़ालुल उ-रफ़ाअ बि इ'ज़ाज़ि शर-इ व उ-लमाअ) (कुल सफ़हात : 57)
- (6) घुबूते हिलाल के तरीके (तुरुक़ि इस्बाति हिलाल) (कुल सफ़हात : 63)
- (7) आ'ला हज़रत से सुवाल जवाब  
(इज़हारिल हक्किल जली) (कुल सफ़हात : 100)
- (8) ईदैन में गले मिलना कैसा ?  
(विशाहुल जीद फ़ी तहलील मुआनि-क़तिल ईद) (कुल सफ़हात : 55)
- (9) राहे खुदा غَرْوَجَل में खर्च करने के फ़ज़ाइल  
(रदिल कहूति वल वबाअ बि दा'वतिल जीरानि व मुवासातिल फु-क़राअ) (कुल सफ़हात : 40)
- (10) वालिदैन, जौजैन और असातिज़ा के हुकूक  
(अल हुकूक लि तर्हि़ल उकूक) (कुल सफ़हात : 125)
- (11) फ़ज़ाइले दुआ (अह्सनुल विआअ लि आदाबिदुआअ मअ शर्ह जैलुल मुहआ लि अह्सनिल विआअ)  
(कुल सफ़हात : 326)

﴿शाउअ होने वाली अरबी कुतुब﴾

अज़ : इमामे अहले सुन्नत मुजहिदे दीनो मिल्लत

मौलाना अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ

- (12) किफ़लुल फ़कीहिल फ़ाहिम (कुल सफ़हात : 74)
- (13) तम्हीदुल ईमान (कुल सफ़हात : 77)
- (14) अल इजाज़ातुल मतीनह (कुल सफ़हात : 62)
- (15) इका-मतुल क़ियामह (कुल सफ़हात : 60)
- (16) अल फ़ज़लुल मौहबी (कुल सफ़हात : 46)
- (17) अजल ए'लाम (कुल सफ़हात : 70)
- (18) अज़ज़म-ज़-मतुल क़-मरिय्यह (कुल सफ़हात : 93)
- (19,20,21) जदिल मुम्तार अला रदिल मुहतार  
(अल मुजल्लद अल अव्वल वष्यानी)(कुल सफ़हात : 713,677,570)

«शो'बउ इस्लाही कुतुब»

- (22) खौफे खुदा عَزَّوَجَلَّ (कुल सफ़हात : 160)
- (23) इनफ़िरादी कोशिश (कुल सफ़हात : 200)
- (24) तंग दस्ती के अस्बाब (कुल सफ़हात : 33)
- (25) फिक्रे मदीना (कुल सफ़हात : 164)
- (26) इमतिहान की तय्यारी कैसे करें ? (कुल सफ़हात : 32)
- (27) नमाज़ में लुक्मा के मसाइल (कुल सफ़हात : 39)
- (28) जन्नत की दो चाबियां (कुल सफ़हात : 152)
- (29) काम्याब उस्ताज़ कौन ? (कुल सफ़हात : 43)
- (30) निसाबे मदनी काफ़िला (कुल सफ़हात : 196)
- (31) काम्याब तालिबे इल्म कौन ? (कुल सफ़हात : तक्रीबन 63)
- (32) फैज़ाने एह्याउल उलूम (कुल सफ़हात : 325)
- (33) मुफ़ितये दा'वते इस्लामी (कुल सफ़हात : 96)
- (34) हक़ व बातिल का फ़र्क (कुल सफ़हात : 50)
- (35) तहक़ीकात (कुल सफ़हात : 142)
- (36) अर-बईने ह-नफ़िय्यह (कुल सफ़हात : 112)
- (37) अत्तारी जिन्न का गुस्ले मय्यित (कुल सफ़हात : 24)
- (38) त़लाक़ के आसान मसाइल (कुल सफ़हात : 30)
- (39) तौबा की रिवायात व हिक्कायात (कुल सफ़हात : 124)
- (40) क़ब्र खुल गई (कुल सफ़हात : 48)
- (41) आदाबे मुर्शिदे कामिल (मुकम्मल पांच हिस्से) (कुल सफ़हात : 275)
- (42) टी वी और मूवी (कुल सफ़हात : 32)
- (43 ता 49) फ़तावा अहले सुन्नत (सात हिस्से)
- (50) क़ब्रिस्तान की चुडैल (कुल सफ़हात : 24)
- (51) ग़ौषे पाक رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के हालात (कुल सफ़हात : 106)
- (52) तअरूफ़े अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़हात : 100)
- (53) रहनुमाए जदवल बराए मदनी काफ़िला (कुल सफ़हात : 255)
- (54) दा'वते इस्लामी की जेलख़ाना जात में ख़िदमात (कुल सफ़हात : 24)
- (55) मदनी कामों की तक्सीम (कुल सफ़हात : 68)
- (56) दा'वते इस्लामी की मदनी बहारें (कुल सफ़हात : 220)
- (57) तर्बिय्यते अवलाद (कुल सफ़हात : 187)
- (58) आयाते कुरआनी के अन्वार (कुल सफ़हात : 62)
- (59) अहादीषे मुबारका के अन्वार (कुल सफ़हात : 66)
- (60) फैज़ाने चहल अहादीष (कुल सफ़हात : 120)
- (61) बद गुमानी (कुल सफ़हात : 57)



﴿शो'बउ तशजिमे कुतुब﴾

- (62) जन्नत में ले जाने वाले आ'माल  
(अल मुत्जरुरबिह फी षबाबिल अ-मलिस्सालेह) (कुल सफ़हात : 743)
- (63) शाहराहे औलिया (मिन्हाजुल अरिफ़ीन) (कुल सफ़हात : 36)
- (64) हुस्ने अख़्लाक (मकारिमुल अख़्लाक) (कुल सफ़हात : 74)
- (65) राहे इल्म (ता'लीमुल मु-तअल्लिम तरीकुतअल्लुम) (कुल सफ़हात : 102)
- (66) बेटे को नसीहत (अय्युहल वलद) (कुल सफ़हात : 64)
- (67) अद्वा'वति इलल फ़िक्र (कुल सफ़हात : 148)
- (68) आंसूओं का दरिया (बहूरुहुमूअ) (कुल सफ़हात : 300)
- (69) नेकियों की जज़ाएं और गुनाहों की सज़ाएं (कुरतुल उयून ) (कुल सफ़हात : 136)
- (70) उयूनुल हिक्कायात (मुतर्जम) (कुल सफ़हात : 412)

﴿शो'बउ दर्सी कुतुब﴾

- (71) ता'रीफ़ाते नहूविय्यह (कुल सफ़हात : 45)
- (72) किताबुल अकाइद (कुल सफ़हात : 64)
- (73) नुज़हतुन्नज़र शर्हे नख़बतुल फ़िक्र (कुल सफ़हात : 175)
- (74) अर-बईनिन न-वविय्यह (कुल सफ़हात : 121)
- (75) निसाबुत्तज्जीद (कुल सफ़हात : 79)
- (76) गुलदस्तए अकाइदो आ'माल (कुल सफ़हात : 180)
- (77) वक़ा-यतिन्नहूव फ़ी शर्हे हिदा-यतुन्नहूव
- (78) सर्फ़ बहाई मुतर्जम मअ हाशिया सर्फ़ बनाई

﴿शो'बउ तख़रीज﴾

- (79) अज़ाइबुल कुरआन मअ ग़राइबुल कुरआन (कुल सफ़हात : 422)
- (80) जन्नती ज़ेवर (कुल सफ़हात : 679)
- (81) बहारे शरीअत, जिल्द अब्वल (हिस्सा : 1 से 6)
- (82) बहारे शरीअत, जिल्द दुवुम (हिस्सा : 7 से 13)
- (83) बहारे शरीअत, जिल्द सिवुम (हिस्सा : 14 से 20)
- (84) इस्लामी ज़िन्दगी (कुल सफ़हात : 170)
- (85) आईनए कियामत (कुल सफ़हात : 108)
- (86) उम्महातुल मुअमिनीन (कुल सफ़हात : 59)
- (87) सहाबए किराम का इश्के रसूल (कुल सफ़हात : 274)

﴿शो'बउ अमीरे अहले शुन्नत﴾

- (88) सरकार صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पैग़ाम अतार के नाम (कुल सफ़हात : 49)
- (89) मुक़द्दस तहरीरात के अदब के बारे में सुवाल जवाब (कुल सफ़हात : 48)
- (90) इस्लाह का राज़ (मदनी चैनल की बहारें हिस्सए दुवुम) (कुल सफ़हात : 32)
- (91) 25 क्रिस्चैन कैदियों और पादरी का क़बूले इस्लाम (कुल सफ़हात : 33)
- (92) दा'वते इस्लामी की जेलख़ाना जात में ख़िदमात (कुल सफ़हात : 24)

- (93) वुजू के बारे में वस्वसे और इन का इलाज (कुल सफ़हात : 48)
- (94) तज़क़िए अमीरे अहले सुन्नत किस्त् सिवुम (सुन्नते निकाह) (कुल सफ़हात : 86)
- (95) आदाबे मुर्शिदे कामिल (मुकम्मल पांच हिस्से) (कुल सफ़हात : 275)
- (96) बुलन्द आवाज़ से ज़िक्र करने में हिकमत (कुल सफ़हात : 48)
- (97) क़ब्र खुल गई (कुल सफ़हात : 48)
- (98) पानी के बारे में अहम मा'लूमात (कुल सफ़हात : 48)
- (99) गूंगा मुबल्लिग (कुल सफ़हात : 55)
- (100) दा'वते इस्लामी की मदनी बहारें (कुल सफ़हात : 220)
- (101) गुम शुदा दुल्हा (कुल सफ़हात : 33)
- (102) मैं ने मदनी बुर्क़अ क्यूं पहना ? (कुल सफ़हात : 33)
- (103) जिननों की दुन्या (कुल सफ़हात : 32)
- (104) तज़क़िए अमीरे अहले सुन्नत किस्त् दुवुम (कुल सफ़हात : 48)
- (105) गाफिल दर्जी (कुल सफ़हात : 36)
- (106) मुख़ालिफ़त महबबत में कैसे बदली ? (कुल सफ़हात : 33)
- (107) मुर्दा बोल उठा (कुल सफ़हात : 32)
- (108) तज़क़िए अमीरे अहले सुन्नत किस्त् अव्वल (कुल सफ़हात : 49)
- (109) कफ़न की सलामती (कुल सफ़हात : 33)
- (110) तज़क़िए अमीरे अहले सुन्नत किस्त् चहारूम (कुल सफ़हात : 49)
- (111) चल मदीना की सआदत मिल गई (कुल सफ़हात : 32)
- (112) बद नसीब दुल्हा (कुल सफ़हात : 32)
- (113) मा'ज़ूर बच्ची मुबल्लिगा कैसे बनी ? (कुल सफ़हात : 32)
- (114) बे कुसूर की मदद (कुल सफ़हात : 32)
- (115) अत्तारी ज़िन्न का गुस्ले मय्यित (कुल सफ़हात : 24)
- (116) नूरानी चेहरे वाले बुजुर्ग (कुल सफ़हात : 32)
- (117) आंखों का तारा (कुल सफ़हात : 32)
- (118) वली से निस्बत की ब-रकत (कुल सफ़हात : 32)
- (119) बा बरकत रोटी (कुल सफ़हात : 32)
- (120) इग़ावा शुदा बच्चों की वापसी (कुल सफ़हात : 32)
- (121) मैं नेक कैसे बना ? (कुल सफ़हात : 32)
- (122) शराबी, मुअज़्ज़िन कैसे बना ? (कुल सफ़हात : 32)
- (123) बद किरदार की तौबा (कुल सफ़हात : 32)
- (124) खुश नसीबी की किरनें (कुल सफ़हात : 32)
- (125) नाकाम आशिक (कुल सफ़हात : 32)
- (126) नादान आशिक (कुल सफ़हात : 32)

- (127) हैरोइन्ची की तौबा (कुल सफ़हात : 32)  
 (128) नौ मुस्लिम की दर्दभरी दास्तान (कुल सफ़हात : 32)  
 (129) मदीने का मुसाफ़िर (कुल सफ़हात : 32)  
 (130) खौफ़नाक दांतो वाला बच्चा (कुल सफ़हात : 32)  
 (131) फ़िल्मी अदा कार की तौबा (कुल सफ़हात : 32)  
 (132) सास बहू में सुल्ह का राज़ (कुल सफ़हात : 32)  
 (133) कब्रिस्तान की चुड़ेल (कुल सफ़हात : 24)  
 (134) फैज़ाने अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़हात : 101)  
 (135) हैरत अंगेज़ हादिषा (कुल सफ़हात : 32)  
 (136) मोडर्न नौ जवान की तौबा (कुल सफ़हात : 32)  
 (137) क्रिस्चैन का क़बूले इस्लाम (कुल सफ़हात : 32)  
 (138) सलातो सलाम की आशिका (कुल सफ़हात : 33)  
 (139) क्रिस्चैन मुसलमान हो गया (कुल सफ़हात : 32)  
 (140) चमकती आंखों वाले बुर्जुग (कुल सफ़हात : 32)  
 (141) म्यूज़िकल शो का मतवाला (कुल सफ़हात : 32)  
 (142) म्यूज़िकल नौ जवान की तौबा (कुल सफ़हात : 32)

﴿मजलिसे तराजुमे कुतुब की तरफ़ से पेश कर्दा कुतुब﴾

बानिये दा'वते इस्लामी मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अतार कादिरि مَدَّ ظِلُّهُ الْعَالِي के इन रसाइल के अ-रबी तराजुम शाएअ हो चुके हैं :

- (1) बादशाहों की हड्डियां (इज़ामुल मलूक)
- (2) मुर्दे के सदमे (हुमूमिल मय्यित)
- (3) ज़ियाए दुरूदो सलाम (ज़ियाइस्सलाति वस्सलाम)
- (4) शजरए आलिया कादिरिया रज्विया अतारिया

﴿इन रसाइल के सिन्धी तराजुम भी शाएअ हो चुके हैं﴾

- (1) ज़ियाए दुरूदो सलाम
- (मुअल्लिफ़ : बानिये दा'वते इस्लामी मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अतार कादिरि مَدَّ ظِلُّهُ الْعَالِي)
- (2) ग़फ़लत (मुअल्लिफ़ : बानिये दा'वते इस्लामी मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अतार कादिरि مَدَّ ظِلُّهُ الْعَالِي)
- (3) अबू जहल की मौत
- (मुअल्लिफ़ : बानिये दा'वते इस्लामी मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अतार कादिरि مَدَّ ظِلُّهُ الْعَالِي)
- (4) एहतिरामे मुस्लिम
- (मुअल्लिफ़ : बानिये दा'वते इस्लामी मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अतार कादिरि مَدَّ ظِلُّهُ الْعَالِي)
- (5) दा'वते इस्लामी का तआरुफ़ ।

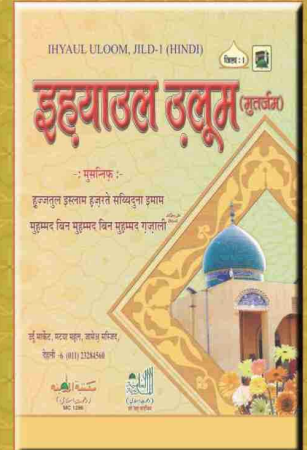
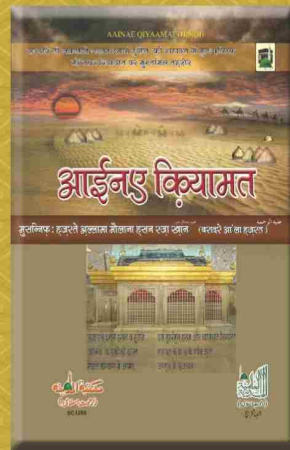
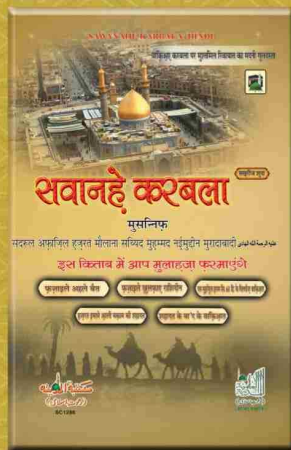
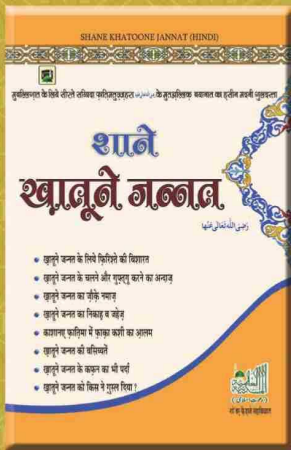


الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ اِنَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

## सुन्नत की बहारे

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक दा 'वते इस्लामी के महके महके मदनी माहोल में ब कषरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा 'रात इशा की नमाज़ के बा 'द आप के शहर में होने वाले दा 'वते इस्लामी के हफ़तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की मदनी इल्तिजा है, आशिक़ाने रसूल के मदनी काफ़िलों में ब निय्यते षवाब सुन्नतों की तर्बियत के लिये सफ़र और रोज़ाना "फ़िक्रे मदीना" के ज़रीए मदनी इन्आमात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह के इबतिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ करवाने का मा 'मूल बना लीजिये, اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि "मुझे अपनी और सारी दुनिया के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है।" اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह की कोशिश के लिये "मदनी इन्आमात" पर अमल और सारी दुनिया के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये "मदनी काफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ



**MAKTABATUL MADINA**

**421, URDU MARKET, MATYA MAHAL, JAMA MASJID**

**DELHI - 110006, PH : 011-23284560**

**email : maktabadelhi@gmail.com**

**web : www.dawateislami.net**

